

# भारत का विधान

## नया हिन्दी अनुवाद

वै १६ जनवरी १९५० के तारे भारत में लागू हुआ  
'भारत में जनरेली राज' के लेखक १० सुन्दरकाश द्वारा  
नए जनरेली से अनुवादित।

हर भारतीय का यह है कि जिस विधान के अन्तर्गत  
जनता का शासन इस समय चल रहा है उसे जनता की  
समस्या है।

जब यह सवाल आता है कि भारत में, जिस पर भारत का  
आज अधिकार है, शासन कर दिया गया है और  
काम चल रहा है तो जनता की समस्या यह है कि  
है कि आज इस प्रकार की चीजों से क्या है।

भारत में जिसे विधान के अन्तर्गत में किसी से जनता की  
और जनता से किसी बात को की सम्बन्धता दे ही नहीं है।  
भारत के हर घर में इस प्रकार का शासन चल रहा है।

भारत का शासन व्यवस्था का शासन जनता की नया शासन।  
भारत का नया शासन है। जनता की सुन्दर विधान। जनता के  
नये शासन का शासन।

विधान का शासन :-

लेखक 'नया विधान'  
१९५०, नई दिल्ली,  
दुर्गादासराव।

# भारत का उद्धान

## नया हिन्दी अनुवाद

जु १९ जनवरी १९५० से सारे भारत में लागू हुआ।  
'भारत में जनरेली राज' के लेखक पद्मनाभ सुन्दर लाल द्वारा  
नया अनुवादित।

हर भारतीय का यह है कि जिस विधान के अन्तर्गत  
भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे जनता की  
समस्या है।

जब यह सवाल आता है कि भारत में, जिस पर भारत का  
आज अधिकार है, शासन कर दिया गया है और  
काम चल रहा है तो जनता की समस्या यह है कि  
है कि आज इस प्रकार की चीजों से क्या है।

भारत में जिसे विधान के अन्तर्गत में किसी से जनता की  
और जनता से किसी बात को की सम्बन्धता दे ही नहीं है।  
भारत के हर घर में इस प्रकार का शासन चल रहा है।

भारत का शासन व्यवस्था का शासन जनता की नया शासन।  
भारत का नया शासन है। जनता की सुन्दर विधान। जनता के  
नये शासन का शासन।

लेखक 'नया विधान'  
१९५०, नई दिल्ली,  
दुर्गादासराव।



# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

सक्रसद

(१) एक गंमी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिससे सब हिन्दुस्तानी शामिल हो .

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरह का छापना .

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, समाओं, कानकरेन्सों, लेक्चरों में सब धर्मों, जातों, विरादरियों और क्रिक्तों में आपस का मेल बढ़ाना .

—६—

सांसाइटी के प्रेसीडेंट—मि० अच्युल मजीद खवाजा, वाइस प्रेसीडेंट—डा० भगवानदास और डा० अच्युल हकू: गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेंट—डा० भगवानदास: सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल .

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० संयद महसूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंजर अली सालता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदास, सेठ पूनम चन्द रांका, काजी माहम्मद अच्युल राफार और श्री आस प्रकाश पालीवाल . मेम्बरी के क्रायदों के लिये लिखिय .

मुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,  
४४५, मुट्ठी गज, इलाहाबाद .

नोट—सांसाइटी के नये क्रायद के अनुसार मेम्बरी को काम सिर्फ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्दू" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ छे रुपया बन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फीस देने वाले सांसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकेंगे या ज्यादा दामकी किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

# हन्दस्तानी क्लिप सोसाय्ती

मقصद

(१) एक ایسی هلدستانی کليپ کا ہونا، پھیلنا اور پیرچر کرنا جس میں سب هلدستانی شامل ہوں .

(۲) ایکٹا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پوهانی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسون، لکچروں سے سب دعواموں، جانوں، برادرियों اور فریقوں میں آفس کا مصل

پوهانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالعزیز خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس، اور ڈاکٹر عبدالحق کورنگ ہائی

کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس: سکریٹری—پنڈت سندرا

کورنگ ہائی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر نار، چند، مہوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی، لکھو: مسٹر ایس .

کے . ودار، پنڈت ہشیہر ناتھ، مہاتما بھگوان داس، سیتھ پووم چند رائ، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھے—

سندرا

سکریٹری، هلدستانی کليپ سوسائٹی،  
۱۳۵، مٹھی کليپ، 'الہ آباد' .

نوٹ—سوسائٹی نے نئے قاعدے کے अनुसार ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر لی گئی ہے . "نیا عہد" کے جو گلفک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چلندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کو علی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوئی منت لے سکیں گے .



## हिन्दू के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हिन्दू का जो नया विचार पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ लाख खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये. कीमत दो रुपये.

**मुस्लिम देश भक्त**—लेखक—श्री रतन लाल वंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान इथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामों की खजूरों से आजाद करने की कोशिश की. किनाब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. कीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल वंसल.

इस किताब में उन बोरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपने जान करवान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फिरकाबाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ दस रुपया.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिबे ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विरवास रखते हैं. कीमत पाँच आने.

## हन्द के उदहान की अंगरेजी हन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हन्द का जो नया उदहान पास हुआ है उसके एक बेक चोदह सौ खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हन्दैस्तानी शब्द महान्सा बेकगान दीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के उदहान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये. कीमत दो रुपये.

**मुस्लिम उदहान**—लेखक—श्री रतन लाल वंसल.

उन मुसलमान उदहान बेकगान के जीवन का हाल जल्हों ने अपनी जान हत्थेली पर रक्कर हन्दैस्तान और उदहानों में रहते हुए भारत माता को फलाम की उदहानों से आजाद करने की कोशिश की. किनाब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. कीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल वंसल.

इस किताब में उन बोरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपने जान करवान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फिरकाबाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ दस रुपया.

**कसान की पुकार**—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब कसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विरवास रखते हैं. कीमत पाँच आने.



## पांडत सुन्दरलाल की और किताबें :-

**हिन्दू मुसलिम एकता**— इस में वह चार लेखर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटो बोर्ड ग्वालियर की दाबत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफे की किताब. कीमत सिर्फ बारह आने.

**महात्मा गांधी के बलिदान से सबक्र**—साम्प्रदायिकता यानी फिरकापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मजदूरी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. जिसने आखिर में देस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रखने दिया. कीमत बारह आने.

**पंजाब हमें क्या सिखाता है**— महात्मा गांधी की सलाह से अक्टूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इ व छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. कीमत चार आने.

**बंगाल और उससे सबक्र**— इस छोटी सी किताब में सन १९४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरकें-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये खत्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. कीमत सिर्फ दो आने.

**मिस्त्रने का पता**—मैनेजर 'नया हिन्दू' १४५, सुद्रोगंज, इलाहाबाद.

## पंडत सुन्दरलाल की और किताबें :-

**हिन्दू मुसलिम एकता**— इस में वह चार लेखर जमा

कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटो बोर्ड ग्वालियर की दाबत पर ग्वालियर में दिये थे.

## महात्मा गांधी के बलिदान से सबक्र

साम्प्रदायिकता यानी फिरकापरस्ती की बीमारी पर राज काजी. मजदूरी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. जिसने आखिर में देस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रखने दिया.

कीमत बारह आने.

## पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्टूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इ व छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. कीमत चार आने.

## बंगाल और उस से सबक्र

इस छोटी सी किताब में सन १९४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरकें-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये खत्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. कीमत सिर्फ दो आने.

मिस्त्रने का पता—मैनेजर 'नया हिन्दू' १४५, सुद्रोगंज, इलाहाबाद.



ملفوظ کا بیسہ — مؤلف ’نیا ہلد‘ ۱۳۵، ممتی کالج، الہ آباد۔



अलग अलग मिल सकती हैं।

ढाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के खिस्मे होगा।

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अलो सोखता

२६ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने एक सुभाष के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांग्रेस का सारा सगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले हट्टमत से बाहर निकल कर एक लोक सेवक संघ बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घण्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ से उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अलो सोखता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक है.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ दो रुपये.

सिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, सुडी गंज, इलाहाबाद.

नहज्जे लकी सब क़ताबें नाली और अर्दो दुनो लक़ातों में  
 एक एक मल सकती हैं.  
 फ़ाक़ या रज़ल ख़रिज हर हालत में लक़ के नज़्मे हुवा.

## महात्मा गान्धेयि की وصیت

लेखक—श्री मुख्तर علی سوختہ

۱۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سچھاؤ کے روپ میں 'لوک سہوک سنگھ' کا ایک عہدہ ودھان تیار کیا تھا. اس ودھان میں انہوں نے صلح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگتوں توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکمریت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سہوک سنگھ' بنا کر کام کریں.

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ ٹہہتے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکرٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں. یہ چھوٹا سا ودھان دیس کے رام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ریکابیا گاندھی جی کے پریم بہکت شری मुख्तर علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سچھلے 'ور پیلانے' والے دیس کے ایلے گلے لیگوں میں سے ایک ہیں.

گاندھی واد کو سچھلنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے.  
 ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بلدی کذاب کی قیمت صرف دو روپے.

ملنے کا پتہ—منیجر 'نہا ہلد' ۱۴۵، منہی گلج، الہ آباد.



हो सकता है कि कृपलानी जी के साथियों को हमारी यह कड़वी बातें पसंद न आयें। फिर भी उन भाइयों से हम इतना तो जरूर अपेक्षा करेंगे कि उनमें से जो बोटी के कारखान हैं वह जान बूझ कर असेम्बली या पार्लियामेंट की मेम्बरी से अलग रहें। कम से कम कृपलानी जी और उनके साथ की अजीम हस्तियों को तो इस बारे में सतर्क रहना ही चाहिये। उनके लिये यही शोभा देगा कि बाहर रह कर अन्दर वालों की नकेल काबू में रखें और देस में वह स्वाँग न रखने दें जो काँग्रेस ने मचा रखा है।

२३-५-'५१

—सुरेश रामभाई

## नई किताब

## अहिंसात्मक इनक़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंजर अली सोखता

महात्मा गान्धी के 'लोक सेवक मंघ' की तजवीज़ को समाने रखकर श्री मंजर अली सोखता ने इस किताब में 'लोक सेवा संघ' की एक योजना देस के समाने रक्खी है। आज के हिंसा से भरे वातावरन में अहिंसात्मक इनक़लाब के क्या मानी हैं और यह कैसे लाया जा सकता है यह बड़ी खूबमूरती से इस किताब में समझाया गया है। देस की मौजूदा शांतीय हालत को बदलने की इच्छा रखने वाले सच देशप्रेमियों को चाहिये कि इस किताब को जरूर पढ़ें।

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है।

क़ीमत सिर्फ़ चार आना।

मिलने का पता—

मैनेजर—'नया हिन्द'

92/4, Market, ...

हो सकता है कि कृपलानी जी के सहानुभूतों को हमारी ये कड़वी बातें पसंद न आयें। यह भी उन भाइयों से हम इतना तो जरूर अपेक्षा करेंगे कि उनमें से जो बोटी के कारखान हैं वह जान बूझ कर असेम्बली या पार्लियामेंट की मेम्बरी से अलग रहें। कम से कम कृपलानी जी और उनके साथ की अजीम हस्तियों को तो इस बारे में सतर्क रहना ही चाहिये। उनके लिये यही शोभा देगा कि बाहर रह कर अन्दर वालों की नकेल काबू में रखें और देस में वह स्वाँग न रखने दें जो काँग्रेस ने मचा रखा है।

—सुरेश रामभाई

१३-५-'५१

## नई किताब

## अहिंसात्मक अन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंजर अली सोखता

महात्मा गान्धी के 'लोक सेवक मंघ' की तजवीज़ को समाने रखकर श्री मंजर अली सोखता ने इस किताब में 'लोक सेवा संघ' की एक योजना देस के समाने रक्खी है। आज के हिंसा से भरे वातावरन में अहिंसात्मक अन्क़लाब के क्या मानी हैं और यह कैसे लाया जा सकता है यह बड़ी खूबमूरती से इस किताब में समझाया गया है। देस की मौजूदा शांतीय हालत को बदलने की इच्छा रखने वाले सच देशप्रेमियों को चाहिये कि इस किताब को जरूर पढ़ें।

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है।

क़ीमत सिर्फ़ चार आना।

मैनेजर—'नया हिन्द'

92/4, Market, ...



लाजमी है—अहिंसा. अगर हम यह पाबन्दी छोड़ दें तब तो हमें यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि कम्युनिस्ट अव्वल दलों के सर्वोदय वाले निकलेंगे. लेकिन अगर हम यह पाबन्दी रखते हैं तो यह साफ है कि सोशलिस्ट लोग सर्वोदय के मानने वाले नहीं, कांग्रेस भी नहीं (जैसा कि १९४० की पूना वाली कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी को बैठक में साफ हो गया था) और हमें अक्रोस के साथ कहना है कि आचार्य कृपलानी भी नहीं क्योंकि पाकिस्तान के मामले में उन्होंने हथियार और क्रोज इस्तेमाल करने की सलाह दी थी. सर्वोदय का मानने वाली पार्टी या सरकार को कसौटी अहिंसा है. जिस हद तक हमारे तौर तरीकों में हिंसा रहेगी उस हद तक वह सर्वोदय के मुताबिक नहीं है.

एक बात और भी है. गाँधी जी मरने के एक दिन पहले कांग्रेस और देस के लिये कुछ वसीयत कर गये थे. मगर १९४८ में बम्बई में कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी की बैठक में जो नया कांग्रेस विधान बनाकर इस वसीयत को मिट्टी पलीद की गई है उसमें कृपलानी जी भी शरीक थे. इसका अलावा उत्तर प्रदेश में एक लोक सेवक संघ बना जिसके प्रधान कृपलानी जी हैं. लेकिन जहाँ तक हमारी जानकारी है इस लोक सेवक संघ ने अमली तौर पर कोई कदम ऐसा नहीं उठाया है जो अपनी वसीयत वाले वयान में गाँधी जी ने बताये हैं.

इसलिये हम कृपलानी जी से अपील करते हैं कि वह महज एक पार्टी बनाकर न रह जायें. कांग्रेस को तरह पार्टी खड़ी करके वह उसी तरह की पेचीदगियाँ, मुसोबते और उलझने पैदा कर देंगे जैसा कांग्रेस ने किया और जिनसे निकलना मुशकिल होगा. उन्हें तो जनता की सच्ची सेवा करने के लिये एक संगठन खड़ा करना चाहिये जिसके मेम्बर गाँधी जी के बताये लोक सेवक संघ के प्रोग्राम को सच्चे जी से अपनाने.

लिया है — अहन्दा. अगर हम यह पालिंदी चिपों लिये तब तो हमें यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि कम्युनिस्ट अव्वल दलों के सर्वोदय वाले निकलेंगे. लेकिन अगर हम यह पाबन्दी रखते हैं तो यह साफ है कि सोशलिस्ट लोग सर्वोदय के मानने वाले नहीं, कांग्रेस भी नहीं (जैसा कि १९४० की पूना वाली कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी को बैठक में साफ हो गया था) और हमें अक्रोस के साथ कहना है कि आचार्य कृपलानी भी नहीं क्योंकि पाकिस्तान के मामले में उन्होंने हथियार और क्रोज इस्तेमाल करने की सलाह दी थी. सर्वोदय का मानने वाली पार्टी या सरकार को कसौटी अहिंसा है. जिस हद तक हमारे तौर तरीकों में हिंसा रहेगी उस हद तक वह सर्वोदय के मुताबिक नहीं है.

एक बात और भी है. गाँधी जी मरने के एक दिन पहले कांग्रेस और देस के लिये कुछ वसीयत कर गये थे. मगर १९४८ में बम्बई में कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी की बैठक में जो नया कांग्रेस विधान बनाकर इस वसीयत को मिट्टी पलीद की गई है उसमें कृपलानी जी भी शरीक थे. इसका अलावा उत्तर प्रदेश में एक लोक सेवक संघ बना जिसके प्रधान कृपलानी जी हैं. लेकिन जहाँ तक हमारी जानकारी है इस लोक सेवक संघ ने अमली तौर पर कोई कदम ऐसा नहीं उठाया है जो अपनी वसीयत वाले वयान में गाँधी जी ने बताये हैं.

इसलिये हम कृपलानी जी से अपील करते हैं कि वह महज एक पार्टी बनाकर न रह जायें. कांग्रेस को तरह पार्टी खड़ी करके वह उसी तरह की पेचीदगियाँ, मुसोबते और उलझने पैदा कर देंगे जैसा कांग्रेस ने किया और जिनसे निकलना मुशकिल होगा. उन्हें तो जनता की सच्ची सेवा करने के लिये एक संगठन खड़ा करना चाहिये जिसके मेम्बर गाँधी जी के बताये लोक सेवक संघ के प्रोग्राम को सच्चे जी से अपनाने.



दे दिया है. उन्होंने अपने फैसले को अटल कहा है. कैसेले की वजह यह बताई है कि कांग्रेस लोकशाही के तरीके से अपना काम नहीं कर रही है. उनके अलावा आंध्र के बुजुर्ग, सेवक श्री टी. प्रकाशम ने भी स्तीफा दे दिया है और आये दिन स्तीफे दिये जा रहे हैं. उनके महीने में आचार्य जी पटना में इन सबकी एक बैठक करेंगे और फिर अपनी नई पार्टी बनाकर मुल्क के आगे अपना नया प्रोग्राम पेश करेंगे.

आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस का जो रोग बताया है उसे हर कोई जानता है. सद् टंडन जी भी उसमें बखूबी वाकिल हैं और जवाहरलाल जी तो उससे परेशान हैं ही. हम इस रोग को लाइ-लाज हालत पर पहुँचा हुआ पाते हैं और यह समझते हैं कि यह रोग बुढ़िया कांग्रेस को खाकर ही रहेगा. वृत्तनरी इसी में है—शान भी है—कि हम गन्धी गन्धी द्वायें देकर उसके आखरी वक्त में उसे उधाड़ा तंग न करें और एक शानि की मौत मरने दें.

लेकिन बुढ़िया आज मरे या कल उसकी झोलिद व खान्दान तो है ही जो हर तरह की सेवा चाहेगा. अद मवाल यत् है कि उनकी सेवा किस तरह की जाये कि वह अच्छी परवरिश पायें. इसलिये हमें यह देखना है कि कृपलानी जी किस तरह यह फल निभाने हैं.

आजकारे की खबर है कि वह सर्वोदय का प्रोग्राम रखेंगे और गांधी जी के बताये रास्ते पर हम आगे चलने की कोशिश करेंगे. अगर यह खबर सही है तो हमें बड़े अदब के साथ यह कहना है कि आज सर्वोदय की हर जगह चर्चा है, सोशलिस्ट पार्टी कहती है कि अगर कांग्रेस सर्वोदय प्रोग्राम अपनाये तो वह कांग्रेस में मिल जायें. और कांग्रेस का तो पुराना दवा है कि वह जनम की सर्वोदयवादी है. हम यह तो नहीं कह सकते कि सच्चा सर्वोदय क्या है. उसका असली पैरोकार तो इन गर्मियों में तेलंगान के इलाक़े में पैदल घूम रहा है. लेकिन हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि सर्वोदय की राह पर चलने के लिये एक चौख को पाबन्दी

दे दिया है. उनहों ने अपने फ़ैसले को अटल कहा है. फ़ैसले की वजह यह बताया है कि कांग्रेस लोक शाही के तरीक़े से अपना काम नही कर रही है. उनके علاوه अन्दरे के ब़ुरग़ सेवक श्री टी. प्रकाशम ने भी अस्तीफ़ा दे दिया है ओर अ़्ते दिन अस्तेफ़े दूने ज़ा रहे हों. उन के महीने में अज़ियेची पत्तले में अन सब की एक बीतेक़ क़िडके ओर प्यो. अिली न्नी पारती ब़दा क़ि मलक़ के अ़्के अिला निया प्रोबाम पेश करीने.

अज़िये क़िरलानी ने क़ांग्रेस का जो दुग़ ब़दिया है से क़ी क़ी ज़ाना है. सदर तंख़ान जी बी स से बख़ोमी अ़्क़ा हों ओर ज़ावोला जी तो स से पेशान हों ही. हम अस दुग़ क़ो अलज़ हालत ब़ प्योनिया हवा पाते हों ओर ये समझते हों क़े क़े दुग़ ब़दिया क़ांग्रेस को क़िया क़ी ही रहेगा. बेहरी अस में है.

शान भी है — क़े हम क़ुदमी क़ुदमी दरअिल्स दे के क़े अ़्के अ़्ख़री वक्त में से अ़्क़िदा तंक़ न्हियों क़ीन ओर अ़्क़ि शान्ती की मीत मरने दीन. ल्हक़न ब़रेग़िया अ़्ज मरे बा क़ल अ़्क़ी अ़्क़ी अ़्क़ान तो है ही

जो ह़ो तरिज की सीवो ज़ावोला. अ़ब सुनी ये है क़े अ़्क़ी सदा क़स्राज की ज़ांने क़े व़ अ़्क़ी पदोश पान्स. अस ल्हो ह़मों ह़े दिक़हना है क़े क़िरलानी जी क़स्राज ये फ़रुज सदांते ह़मों.

अख़दारों की ख़बर है क़े व़ सवोदे का प्रोबाम अ़्क़िने अ़्क़ी ज़ी के ब़तले रास्ते पर दीस को ले ज़िले की क़ोहल क़िदिने. अ़्क़ी ये ख़ब़र सल्लह है क़े ह़मों ब़रे अ़्क़ी के सान्ने ये क़िडहा है क़े अ़्क़ी सवोदे की क़े क़िडहा ज़ावोला है. सेविल्लसत पारती क़िदिने है क़े अ़्क़ी क़ांग्रेस सवोदे प्रोबाम अ़्क़िने तो व़ क़ांग्रेस में मल ज़ावोला ओर क़ांग्रेस का तो पुराना दवा है क़े अ़्क़ी ज़ावोला व़ादी है. शम ये तो न्हिय क़ेह सक़ते क़े सच्चा सवोदे क़िया है. अ़्क़ी अ़्क़ी मवोला तो अन क़ुर्मियों में तंख़ाने के एलामे में प़िडल क़ीनो रहेगा है. ल्हक़न हम ये अ़्क़ी तरिज ज़ांने ह़म के सवोदे. क़े अ़्क़ी ज़ावोला अ़्क़ी क़िडहा दान्द



महदान में अगर् दुशमन का जोर सर भर का हो ता हमारा मवा सर का यानी जितना हो उतना थोड़ा है। इसमें कोई रोक था म लगाना अपने पर पर कुल्हाड़ी चलाना है। इसलिय हम समझते हैं कि इस स्तीफे में मिस्टर बेवन कटी पतंग की तरह अलग जा गिरेंगे और एक आर की नेकनामी भले उनको मिल जाय कोई उनमें हमदर्दी भी नहीं करेगा।

मिस्टर बेवन ने इमी मिलसिले में हथियार कम करने की बात भी उठाई है और बर्तोनिया की कैबिनेट को इस पर अमल करने की सलाह दी है। पर बर्तोनिया की कैबिनेट उनकी सलाह मान कर हथियार कम करने की भूल उस वक्त तक नहीं कर सकते जब तक बर्तोनिया बाहर दूसरे मुल्कों में या दूसरे मुल्कों के पड़ोस में पाँव जमाए हुए है। तलवार पर भरोसा रखने वाले इस न नेग मेसा मोबने हैं न सांच सकते हैं और न सोचना चाहिये और बर्तोनिया के मिस्टर बेवन भले ही मजदूर दल के संस्वर हो हम उनमें यह आशा नहीं कर सकते कि वह कभी अहिंसा को आदर्श मान कर हथियार घटाने की बात सोचेंगे। अगर सचमुच उनमें ऐसी भावना जाग गई है तो उनके लिये यह उपाय बेहतर होगा कि वह बर्तोनिया की सरकार को यह सलाह दे कि वह हथियार चाहे जितने बढ़ाए पर सब से पहला कदम इस तरह उठाए कि बर्तोनिया के बाहर जहाँ जहाँ उनमें अपने अड़े जमा रखे हैं वहाँ से बिना लड़े भिड़े हँसी खुशी ऐसे ही चलें जैसे हिन्दुस्तान छोड़ कर चली गई है। अहिंसा की तरफ उसका पहला कदम यहाँ हो सकता है।

२३-५-१९

—सुरेश रामभाई

## आचार्य कृपलानी का स्तीफा—

बड़े उत्तार चढ़ाव के बाद आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस के सदर बापू पुरुषोत्तम दास टंडन का एक चिट्ठी भेजकर कांग्रेस से स्तीफा

—सिधू राम भाई

१३-०-१९

## आचार्य कृपलानी का अस्तेन्यी—

होने आर चोहा के पद आचार्य कृपलानी ने लॉकडौस के सदर बापू पुरुषोत्तम दास टंडन को एक चिट्ठी भेजकर लॉकडौस से अस्तेन्यी

कदम भी हो सके है।



नीति से गंभी नहीं है। आज सारा पच्छिमी योग्य अमरीका के इशारे पर चलने को मजबूर हो रहा है और अमरीका की फौजें पालिसी की बिना पर अपनी फौजी पालिसी ढालकर हमके मुताबिक तैयारी कर रहा है। इसके माने हैं फौजी मामलों में अमरीका का मुँह देखना और उसका मुहताज और गलास बनने जाना।

बहु भी साफ है कि जब ज्यादा ताकत लड़ाई के सामान बनाने और दूसरी नैवारी में लग जायेगी तो उसके लिये ज्यादा पैसों की दरकार होगी जिसकी वजह से हुकूमत को नए नए टैक्स लगाना पड़ेगे। साथ ही साथ यह भी है कि फौज की खातिर मामान खरीदने से देस में बीजों के दाम बढ़ जायेंगे और मंहगाई का बाजार और भी गरम हो जायेगा। इसका लाजमी नतीजा यह होगा कि आन खनता की दुशवारियाँ बढ़ेंगी और उसे मामूली चीजों या सहूलियतों के लिये तरसना पड़ेगा।

इस रोशनी में देखने पर हमें पता चलता है कि ब्रिगेजों के कैंबिनेट पहले से ही अमरीका की ताबेदार बनी हुई है। अंतरकीमी हलकों में आज इंग्लैन्ड की बहु शान नहीं है, डमकी वह इन्जन नहीं है जो एक अरसा पहले थी। यूनो की बैठको में वह अमरीका की हॉ में हॉ मिला रहा है और कोई अलग से उसकी आवाज ही नहीं है। इसलिये यह जरूरी हो जाता है कि उसका सारी फौजी नीति अमरीका की तरफ देख देव कर शकल में आये। यह चीज आज को नई नहीं है। मिस्टर बेवन जैसे जिम्मेदार आदमी इससे नाबकिक होंगे यह हम नहीं मान सकते। न यही हमारी समझ में आता है कि वह यह खयाल करने हो कि आजकल को लड़ाइयों में "बस इतनी तैयारी" "बस इसी हद तक" जैसी बातें

नैती से राखी नहीं है। आज सारा पच्छिमी योप अमरीके के इशारे पर चलने को मजबूर हो रहा है और अमरीके की फौजें पालिसी की बिना पर अपनी फौजी पालिसी ढाल कर रहा है। इसके माने हैं फौजी मामलों में अमरीका का मुँह देखना और उसका मुहताज और गलास बनने जाना।

यह भी साफ है कि जब ज्यादा ताकत लड़ाई के सामान बनाने और दूसरी तैयारी में लग जायेगी तो उसके लिये ज्यादा पैसों की दरकार होगी जिसकी वजह से हुकूमत को नए नए टैक्स लगाना पड़ेगे। साथ ही साथ यह भी है कि फौज की खातिर सामान खरीदने से देस में चीजों के दाम बढ़ जायेंगे और मंहगाई का बाजार और भी गरम हो जायेगा। इसका लाजमी नतीजा यह होगा कि आन खनता की दुशवारियाँ बढ़ेंगी और उसे मामूली चीजों या सहूलियतों के लिये तरसना पड़ेगा।

सुरा रोशनी में देखने पर हमें पता चलता है कि ब्रिगेजों के कैंबिनेट पहले से ही अमरीके की ताबेदार बनी हुई है। अंतरकीमी हलकों में आज इंग्लैन्ड की व शान नहीं है, डमकी वह इन्जन नहीं है जो एक अरसा पहले थी। यूनो की बैठको में वह अमरीका की हॉ में हॉ मिला रहा है और कोई अलग से उसकी आवाज ही नहीं है। इसलिये यह जरूरी हो जाता है कि उसका सारी फौजी नीति अमरीके की तरफ देख देव कर शकल में आये। यह चीज आज को नई नहीं है। मिस्टर बेवन जैसे जिम्मेदार आदमी इससे नाबकिक होंगे यह हम नहीं मान सकते। न यही हमारी समझ में आता है कि वह यह खयाल करने हो कि आजकल को लड़ाइयों में "बस इतनी तैयारी" "बस इसी हद तक" जैसी बातें







मुसलमान कह सकते हैं कि उसने इसलाम को धोका दिया क्योंकि कुरान की शान में उसने गीत गाए. हिन्दू कह सकते हैं कि उसने कुरान के गीत गाकर ढोंग रचा और हिन्दू धर्म को धोका दिया क्योंकि वह कई बार इज को गया और मुसलिम लीग का मेम्बर हुआ. कांग्रेस कह सकती है कि उसने कभी अहरारों में शामिल होकर और कभी लीगियों का साथ देकर कांग्रेस को धोका दिया. इसी तरह से लीग और अहरार वाले भी उस पर धोका देने का इलजाम लगा सकते हैं. एक तरीके से सभी तरफ से कोई न कोई धोका-देही के इलजाम की कोहरिस्त लाकर पेश कर सकता है. पर हम तो इतना ही कहेंगे कि हसरत साहब ने चाहे दुनिया भर को धोका दिया हो पर उन्होंने अपने जमीर यानी अंतरात्मा को कभी धोका नहीं दिया. वह उसके और अपने अंदर बैठे अल्लाह के सामने हमेशा सच्चे रहे. वह हर मिल्लत में शामिल होते थे सिर्फ इसलिये कि उनके अन्दर लगी हुई आग कहाँ और भडकती है और अगर उन्हें वहाँ पहुँच कर वह आग बुझती दिखाई देती थी तो उसे छोड़ चल देते थे. अगर वह फिर भी किसी को उसी मिल्लत से चिपटे माखूम होते थे तो यह उनका कमाल था. वह उस मिल्लत को अपने रंग में रंग कर और अपनी शायरी में लाकर अपना जी खुश करते रहते थे. वह तो 'नेति नेति' यानी 'यह भी नहीं' 'यह भी नहीं' कहने वाले रिशी की तरह असलियत की खोज में लगे और आखरी दम तक लगे रहे.

हम जवान की दो ख़ासियत मानते हैं—एक हिम्मत के साथ ‘नहीं’ कहने की काबलियत रखना, दूसरे अक़रत देखकर उस जगह पहुँचना जहाँ किसी ने बुलाया न हो. यह दोनों ख़ासियतें इसरत साहब में थीं. इसलिये वह ७२ बरस की उमर में भी जवान

[illegible]

جنگہ پہنچتا جہاں کسی نے بلایا نہ ہو۔ یہ دروں خصوصیتیں  
حسرت صاحبہ مہوں تھیں۔ اُس لئے وہ ۷۲ برس کی عمر میں  
’نہیں‘ کہنے کی قابلیت رکھتا، دیر سے ضرورت دیکر کب س  
ہم جوان کی در خواصیت مانتے تھے۔۔ ایک ہمت کے ساتھ



और बिरादरी के लोग भी विगडरा के बाहर वालों पर पाबन्दी के लिये बिरादरी की बात पर पूरा ध्यान कथें देंगे.

१६. ५-५१

—मुरेश रामभाई

## मौलाना हसरत मोहानी—

यह ठीक है कि ७२ बरस की उमर में १३ मंडों की शोषहर को तित के करिरे ने हसरत मोहानी साहब की रह कदच करलो. पर बतना हम हसरत साहब को जानने हैं हमने हम यह मानने के त्रये तैयार नहीं कि मौत को करिरे में उन्होंने घंटे दो घंटे बहम न ही हो और अगर मौत के करिरे को दुनियादारा में बोलने का मख्तियार हो तो वह यही कहेंगा कि अन्तःह हम तरह के इमानदार भावमी से कभी पाला न डालें!

हसरत साहब में जो सिकते थो बह थो तो पैदाइशी पर उनको जेला देने में बेगम मोहानी का कम हाथ नहीं था और उन बेगम मोहानी साहबा का जिन की कानपुर कांग्रेस में मन् १८८५ में इस बक्त की तसवीर हमारी आँखों के नामने हैं जब राजे शानोमी में पक्की दो मूरतें एक हम बामने मामने आ डटी थी. एक तरफ जी बेगम मोहानी और दूसरी तरफ थे कांग्रेस बालंटियर कोर के कप्तान जोग. जैसे ही जोग ने बेगम मोहानी को अदर जाने से रोका जैसे ही इस फटकार के साथ कि आज इंडिया कांग्रेस कमेटी के मेम्बर को तुम्हें रोकने का क्या हक एक चपत जोग के गाल पर पड़ी. कप्तान जोग के दोनों हाथ एक हम नीचे होगए और बह बोला—अच्छा भाप जा सकती है. यह थो हसरत मोहानी की बेगम. फिर हसरत साहब की पैदाइशी सिकतो को चार चाँद क्यों न लगते.

‘हमारी राई’  
जून سن ०१  
नया हल  
और बिरादरी के बग बिनी रदरी के बाहर वालों पर पाबन्दी के लिये बिरादरी की बात पर पूरा ध्यान कथें देंगे.

—सिंह राई बिहारी

१९-०-०१

## मौलाना हसरत मोहानी—

ये त्हेक है कि ७२ बरस की उमर में १३ मन् की दुनेर को तित के करिरे ने हसरत मोहानी साहब की (अ) क्त कर ली. पर बतना हम हसरत साहब को जानने हैं हमने हम यह मानने के त्रये तैयार नहीं कि मौत को करिरे में उन्होंने घंटे दो घंटे बहम न ही हो और अगर मौत के करिरे को दुनियादारा में बोलने का मख्तियार हो तो वह यही कहेंगा कि अन्तःह हम तरह के इमानदार भावमी से कभी पाला न डालें!

हसरत साहब में जो सिकते थो बह थो तो पैदाइशी पर उनको जेला देने में बेगम मोहानी का कम हाथ नहीं था और उन बेगम मोहानी साहबा का जिन की कानपुर कांग्रेस में मन् १८८५ में इस बक्त की तसवीर हमारी आँखों के नामने हैं जब राजे शानोमी में पक्की दो मूरतें एक हम बामने मामने आ डटी थी. एक तरफ जी बेगम मोहानी और दूसरी तरफ थे कांग्रेस बालंटियर कोर के कप्तान जोग. जैसे ही जोग ने बेगम मोहानी को अदर जाने से रोका जैसे ही इस फटकार के साथ कि आज इंडिया कांग्रेस कमेटी के मेम्बर को तुम्हें रोकने का क्या हक एक चपत जोग के गाल पर पड़ी. कप्तान जोग के दोनों हाथ एक हम नीचे होगए और बह बोला—अच्छा भाप जा सकती है. यह थो हसरत मोहानी की बेगम. फिर हसरत साहब की पैदाइशी सिकतो को चार चाँद क्यों न लगते.



सद गए जब दुम्हा पानी बंद करके आप किसी को घुला घुला कर मार डालें. अमरीका जानते हुए भी यह भूल जाना है कि यूनो में लडाका खोर भले हो लेकिन दुनिया को काफ़ी बड़ी ताकतें और बड़ी भारी आबादी वाली हथूमलें उसकी दुशमन हैं और कहीं ज्यादा बड़ी आबादी की हमदर्दी उसके खिलाफ नहीं तो उसके साथ भी नहीं है. इसलिये वह कितना ही हाथ पैर मारे दुनिया के मुल्कों की बड़ीयत ही उसके साथ रह सकती है न कि दुनिया की आबादी की. दुनिया की ज्यादा आबादी चीन के साथ हमदर्दी रखती है और दुनिया की कम आबादी में समाए ज्यादा मुल्क किसी बजह से अमरीका के साथ हैं.

मगर हमें डर है कि चीनकी नाकाबन्दी से तुक्सान दूसरे मुल्कों को ही होगा जिनका दोस्त होने का दावा अमरीका करना है. यह तुक्सान बरतानिया को होगा, हालैन्ड को होगा, फ्रांस को होगा. आस्ट्रेलिया को होगा. और इन्डोनीशिया, हिन्द और पाकिस्तान को जो होगा सो अलग. फिर जो चोट इससे जापान को पहुंचेगी उसका तो कहना ही क्या. गए थे नमाज वरुशवाने उलट्टे गजे गले पड़े—वाली ससल होने वाली है.

उसके अलावा दुनियादी तौर पर भी हम इस नाकाबन्दी को नासुनासिब समझते हैं. इटली की तरह हम चीन को न साम्राजवादी समझते हैं न किसी तरह का गुनहगार. बर्तानिया के प्रतिनिधि को हम सुबारकबाद देते हैं कि उसने खरी बात तो कह दी. अमरीका को हम यह सलाह देते हैं कि वह यूनों की मदद से चीन की नाकाबन्दी कराकर कोरिया के मामले में इतना आग नहीं बढ़ सकना जितना यूनों को यह सलाह देकर कि वह लाल चीन को अपने में शामिल करले. क्योंकि लाल चीन जब तक बिगटरी में शामिल ही

लडकै जब हक पानी बंद कर के आप किसी को लडा कर मार डालें. अमरीका जानते होते भी यह भूल जाना है कि यूनो में लडाका खोर भले हो लेकिन दुनिया को काफ़ी भारी ताकतें और बड़ी भारी आबादी वाली हथूमलें उसकी दुशमन हैं और कहीं ज्यादा बड़ी आबादी की हमदर्दी उसके खिलाफ नहीं तो उसके साथ भी नहीं है. इसलिये वह कितना ही हाथ पैर मारे दुनिया के मुल्कों की बड़ीयत ही उसके साथ रह सकती है न कि दुनिया की आबादी की. दुनिया की ज्यादा आबादी चीन के साथ हमदर्दी रखती है और दुनिया की कम आबादी में समाए ज्यादा मुल्क किसी बजह से अमरीका के साथ हैं.

मगर हमें डर है कि चीन की नाकाबन्दी से तुक्सान दूसरे मुल्कों को ही होगा जिन का दोस्त होने का दवा अमरीका करता है. यह तुक्सान बरतानिया को होगा, हालैन्ड को होगा, फ्रांस को होगा, आस्ट्रेलिया को होगा. और इन्डोनीशिया, हिन्द और पाकिस्तान को जो होगा सो अलग. फिर जो चोट इससे जापान को पहुंचेगी उसका तो कहना ही क्या. गए थे नमाज वरुशवाने उलट्टे गजे गले पड़े—वाली ससल होने वाली है.

इसके अलावा लुधियी तौर पर भी हम इस नाकाबन्दी को समझते हैं. इटली की तरह हम चीन को न साम्राजवादी समझते हैं न किसी तरह का गुनहगार. बर्तानिया के प्रतिनिधि को हम सुबारकबाद देते हैं कि उसने खरी बात तो कह दी. अमरीका को हम यह सलाह देते हैं कि वह यूनों की मदद से चीन की नाकाबन्दी कराकर कोरिया के मामले में इतना आग नहीं बढ़ सकना जितना यूनों को यह सलाह देकर कि वह लाल चीन को अपने में शामिल करले. क्योंकि लाल चीन जब तक बिगटरी में शामिल ही



लेकिन हम पहले यह बता दें कि चीन के साथ केवल अंगरेजी प्रसर वाले देशों ने ही व्योपार नहीं बढ़ाया बल्कि जापान ने भी बढ़ाया जिस को जनरल मैकडोनाल्ड ने पांच नौ दबा कर रखा था। गहिर है कि चीन जापान के व्योपार को बढ़ावा में जनरल साहब का पूरा हाथ था। हमें यकीन है कि यह बात उन्होंने जापान के पहले की खातिर की होगी लेकिन उसमें चीन का भी भला हो जाना नासुमकिन नहीं था। इसलिये केवल बर्तानिया को चीन के बड़े बड़े व्योपार का जिम्मेदार ठहराना आँखों में धूल भोँकने जैसा है।

मगर आजकल तो जिसकी लाठी उसकी भैंस, युतों की कमेटी में जब चीन के खिलाफ़ इम ठहराव पर बहस हो रही थी तब अंगरेजी उमायन्दे सर शाकास ने कहा कि हमें परेशान न किया जाए—हम एक हद तक ही जासकते हैं, ज्यादा की हमारी औकात ही नहीं है.

अभी यह ठहराव सिक्योरिटी कौन्सिल में जाणा और तब वस पर अमल हो सकेगा. लेकिन हम यह बता दे कि वह जमाने

[illegible]

اوقات ہی نہیں ہے ۔  
جائے — ہم ایک حد تک ہی جا سکتے ہیں ، زیادہ کی عمارتی  
انگریزی نمائندے سر شا کراس نے کہا کہ ، شعبوں پریشان رہ کہہ  
میں جب چین کے خلاف اس تہوار پر دست — ہو رہی تھی نہی نہر  
مگر آجکل تو جسکی لڑائی اسکی دیوشس ۔ یو ۔ کی کمیٹی

نہیں عمل ہو سکتا۔ لیکن نام یہ بتائیں کہ وہ زمانے ابھی یہ تھراؤ سہیورتی کونسل میں چلیکا اور تب



कौजी घेरा डालने की बात सोची तो फिर दुनिया यह समझले कि तीसरी बड़ी लड़ाई यहाँ से शुरू हो जायगी. यह धमकी दी तो ईरान ने है मगर हम यह कहेंगे कि ईरान को ऐसी धमकी देने के लिये मजबूर किया है बर्तानिया ने और अमरीका ने. अगर ईरान के तेल के मामले को लेकर तीसरी लड़ाई छिड़ गई तो हमारी नजरों में इसका निम्नोदर सबसे पहले अमरीका और बाद को बर्तानिया होगा क्योंकि बर्तानिया आज इतना मजबूत नहीं है कि वह अमरीका को शह पाए बगैर मैदान में कूदने की सोच.

१७. ५. ११.

—भगवानदीन

## ( ५५ ) चीन की नाकेबन्दी—

विरादरी से अलग कर देना या हुक्का पानी बंद कर देना हमेशा से हर समाज के हाथ में एक ऐसा साधन रहा है जिसके जरिये वह बदमाशों और गुमराहों को ठिकाने पग ले आए. यह माधन अच्छा है पर आजकल इस से बहुत कम ठीक काम लिया जाता है. इसमें काम लिया जाता है अच्छों को सनाने का और इसलिये इसको पूरी कामयाबी नहीं मिलती.

इसी बिना पर अंतरकोसी दायरे में कोई पंद्रह माल पहले इटली के खिलाफ कदम उठाया गया क्योंकि उसने अत्रोमीनिया जैसे मामूूस मेमने को भपट कर निगल जाने की कोशिश की. लेकिन स्वार्थ ऐसे जबरदस्त थे कि किसी ने उस पर अमल किया किसी ने नहीं किया और वह पाबन्द लगी न लगी बग़ावर होगई.

इसी तरह लाल चीन की नाकाबन्दी करने का ठहराव हाल में गन्तो की जनरल एसेम्बली ने पास किया है. अमरीका को

‘७’ जून सन् १९११ हमारी राय

नया हलद  
फुजी कैप्टन काले की बात सुची तो पुर दुनिया ये समझे ले के तिसरी बड़ी लड़ाई यहाँ से शुरू हो जायगी. यह धमकी दी तो ईरान ने है मगर हम यह कहेंगे कि ईरान को ऐसी धमकी देने के लिये मजबूर किया है बर्तानिया ने और अमरीका ने. अगर ईरान के तेल के मामले को लेकर तीसरी लड़ाई छिड़ गई तो हमारी नजरों में इसका निम्नोदर सबसे पहले अमरीका और बाद को बर्तानिया होगा क्योंकि बर्तानिया आज इतना मजबूत नहीं है कि वह अमरीका को शह पाए बगैर मैदान में कूदने की सोच.

१७-०-११

—भगवानदीन

( ५६ )

## चीन की नाकेबन्दी—

विरादरी से अलग कर देना या हुक्का पानी बंद कर देना हमेशा से हर समाज के हाथ में एक ऐसा साधन रहा है जिसके जरिये वह बदमाशों और गुमराहों को ठिकाने पग ले आए. यह माधन अच्छा है पर आज कल इस से बहुत कम ठीक काम लिया जाता है. इसमें काम लिया जाता है अच्छों को सनाने का और इसलिये इसको पूरी कामयाबी नहीं मिलती.

इसी बिना पर अंतरकोसी दायरे में कोई पंद्रह माल पहले इटली के खिलाफ कदम उठाया गया क्योंकि उसने अत्रोमीनिया जैसे मामूूस मेमने को भपट कर निगल जाने की कोशिश की. लेकिन स्वार्थ ऐसे जबरदस्त थे कि किसी ने उस पर अमल किया किसी ने नहीं किया और वह पाबन्द लगी न लगी बग़ावर होगई.

इसी तरह लाल चीन की नाकाबन्दी करने का ठहराव हाल में गन्तो की जनरल एसेम्बली ने पास किया है. अमरीका को



ईरान के तेल का मामला इतना साफ है और इतनी आसानी से समझा जा सकता है जितना खुले दिन में हाथ पर रक्खा हुआ आँवला। पर अमरीका न जाने क्यों उसमें तरह की उलझनें डालता रहता है।

ईरान के क्रोमियाने तेल के बारे में अमरीका वालों का रुस पर यह डलजाम लगाता कि वह ईरानी सरकार को भड़का रहा है बिल्कुल योथा मालूम होता है। हम थोड़ी देर के लिये यह मान लेते हैं कि रुस ने ही ईरानी सरकार को यह सलाह दी कि वह अपने तेल को क्रोमियाले और इसकी जगह कि कोई दूसरा मुल्क उसमें फायदा उठाए ईरान सरकार खुद फायदा उठाए। एक आदमी को अपने बीच के मालिक बनने की सलाह देना भड़काना कैसे हो सकता है। भड़काना और वहकना होता है यह कि जापानी पार्लिमेन्ट में यह तजवीज आ रही है कि जनरल मेकआर्थर को जापान का हमेशगी मइमान मान लिया जाय। भड़काना होता है यह कि एशिया के कम्यूनिज्म का कैबनेट से गैकने के लिये पारसूसा का घेरा डाल लिया जाय और प्रशान्त मार्ग में इसी तरह के और मौजी अड्डे बना लिये जायें।

योरप वाले एशिया पर मुहत्त से छाए रहे। पर भारत के आजाद हो जाने के बाद से एशिया के सारे मुल्क जाग गए हैं और अब जहाँ पर भी योरप वालों का झण्डा है, फिर चाहे वह कब्जा राजकाजी हो। आर्थिक हो या व्योपारी हो, वहाँ के लोग उस कब्जे को बालाकी से भरा और अपने देस के लिये बेहद टोटे का समझते हैं। वन्हें उस वक़्त तक कभी तसल्ली नहीं होगी जब तक कि योरप और अमरीका वाले एशिया को एक दम खाली न कर दें।

ईरान ने यह घमकी दी है कि बर्तनिया जल्दी से जल्दी उसके तेल के कुएँ उसके हवाले कर दे और अगर उसने ऐसा न करके

नया हलद  
 ईरान के तेल का मामला इतना साफ है और इतनी आसानी से समझा जा सकता है जितना खुले दिन में हाथ पर रक्खा हुआ आँवला। पर अमरीका न जाने क्यों उसमें तरह की उलझनें डालता रहता है।

ईरान के तेल कोमियाने के बारे में अमरीका वालों का रुस पर यह डलजाम लगाता है कि वह ईरानी सरकार को भड़का रहा है बिल्कुल योथा मालूम होता है। हम थोड़ी देर के लिये यह मान लेते हैं कि रुस ने ही ईरानी सरकार को यह सलाह दी कि वह अपने तेल को क्रोमियाले और इसकी जगह कि कोई दूसरा मुल्क उस में फायदा उठाए ईरान सरकार खुद फायदा उठाए। एक आदमी को अपने बीच के मालिक बनने की सलाह देना भड़काना कैसे हो सकता है। भड़काना और वहकना होता है यह कि जापानी पार्लिमेन्ट में यह तजवीज आ रही है कि जनरल मेकआर्थर को जापान का हमेशगी मइमान मान लिया जाय। भड़काना होता है यह कि एशिया के कम्यूनिज्म का कैबनेट से गैकने के लिये पारसूसा का घेरा डाल लिया जाय और प्रशान्त मार्ग में इसी तरह के और मौजी अड्डे बना लिये जायें।

योरप वाले ईशिया पर मुहत्त से छाए रहे। पर भारत के आजाद हो जाने के बाद से एशिया के सारे मुल्क जाग गए हैं और अब जहाँ पर भी योरप वालों का झण्डा है, फिर चाहे वह कब्जे राजकाजी हो। आर्थिक हो या व्योपारी हो, वहाँ के लोग उस कब्जे को बालाकी से भरा और अपने देस के लिये बेहद टोटे का समझते हैं। वन्हें उस वक़्त तक कभी तसल्ली नहीं होगी जब तक कि योरप और अमरीका वाले एशिया को एक दम खाली न कर दें।

ईरान ने यह घमकी दी है कि बर्तनिया जल्दी से जल्दी उसके तेल के कुएँ उसके हवाले कर दे और अगर उसने ऐसा न करके



कर सारे इंगन को उनका मालिक बनाना चाहती है। इस सीबी बात के सम्झने में किसी को विवक्षित नहीं होनी चाहिये और न शायद है।

अब लीजिये १६ मई की लंदन की एक खबर। वह यह कि यह संस्था जादू है कि अमरीका ने बर्तानिया और इंगन दोनों को लिखा है कि वह जहाँ तक हो सके मुलह की कोशिश करे और तेल के क्लीम्बियाने के भाड़े को आपस में तय करले। लेकिन साथ ही साथ उस खबर में यह भी कहा गया है कि अमरीका बर्तानिया का यह हक भंग मानता है कि बर्तानिया, बर्तानिया के उस जान मान की हिकायत कन सकता है जिसको वह खतरे में समझे।

है तो यह कौरी खबर। हमें इसको मार्के को ज्ञान नहीं समझना चाहिये। वन अगर यह एक सचबाई है तो इसे चालाकी में भरी राजनीति क नमूना मान लीजिये।

एक मिसाल लीजिये। कोई एक आदमी मेरे घर में आ बैठता है और वह मेरे एक बक्स को दबा कर बैठ जाता है। अब किसी का यह कहना कि बक्स तो आपही का है लेकिन अगर आप उसे हार्मिन करने के लिये इस आदमी को चोट पहुंचायेंगे या चांद पट्टा चाने की काशिश करेंगे तो उसके रिश्तेदारों को हक है कि वह अपने उस रिश्तेदार के जान बचाने के लिये, जो आपके बक्स को दबाते बैठे हैं, आपके घर पर चढ़ आएं।

अब अगर इंगन में बर्तानिया के जान माल का खतरा है तो बर्तानिया के चाहिये कि वह जल्दी से जल्दी या इंगनी सरकार में कुछ बक्स नंबर अपना माल वहाँ से हटाले और अपने जानदारों का वहाँ से वपस बुला ले। बस इस तरह मोचने से राजनीति की गुथी आसनों में मुलभ जाती है। पर जब दो मुलकों को लड़ना ही मंजूर होता है तो वह चालाक राजनीति के जोग्य ऐसी गुथियाँ मालूमने को जगह जान वृक्ष कर और उलभा लेते हैं।

एक सारे ایران को उन का मालक बनाना चाहती है। इस सधुय बत के समझने में किसी को दकत नहय हुयी चाहिये और न शायद है।

अब लीजिये १९ मई की लंदन की एक खबर। वह यह कि यह संस्था जादू है कि अमरीका ने बर्तानिया और इंगन दोनों को लिखा है कि वह जहाँ तक हो सके मुलह की कोशिश करे और तेल के क्लीम्बियाने के भाड़े को आपस में तय करले। लेकिन साथ ही साथ ही साथ उस खबर में यह भी कहा गया है कि अमरीका बर्तानिया के उस जान मान की हिकायत कन सकता है जिसको वह खतरे में समझे।

है तो यह कौरी खबर। हमें इसको मार्के को ज्ञान नहीं समझना चाहिये। वन अगर यह एक सचबाई है तो इसे चालाकी में भरी राजनीति क नमूना मान लीजिये।

एक मिसाल लीजिये। कोई एक आदमी मेरे घर में आ बैठता है और वह मेरे एक बक्स को दबा कर बैठ जाता है। अब किसी का यह कहना कि बक्स तो आपही का है लेकिन अगर आप उसे हार्मिन करने के लिये इस आदमी को चोट पहुंचायेंगे या चांद पट्टा चाने की काशिश करेंगे तो उसके रिश्तेदारों को हक है कि वह अपने उस रिश्तेदार के जान बचाने के लिये, जो आपके बक्स को दबाते बैठे हैं, आपके घर पर चढ़ आएं।

अब अगर इंगन में बर्तानिया के जान माल का खतरा है तो बर्तानिया के चाहिये कि वह जल्दी से जल्दी या इंगनी सरकार में कुछ बक्स नंबर अपना माल वहाँ से हटाले और अपने जानदारों का वहाँ से वपस बुला ले। बस इस तरह मोचने से राजनीति की गुथी आसनों में मुलभ जाती है। पर जब दो मुलकों को लड़ना ही मंजूर होता है तो वह चालाक राजनीति के जोग्य ऐसी गुथियाँ मालूमने को जगह जान वृक्ष कर और उलभा लेते हैं।



लेने के वक़्त जो वादे किये जाते हैं उनका कोई मतलब नहीं होता. अब बोट देने वाले यह समझ कर बोट हॉ नहीं देते कि जो उनसे कहा जा रहा है उस पर अमल होगा. अब तो वह यह समझ कर बोट देते हैं कि किसको बोट देने से उन्हें काले बाजार में आसानी रहेगी या और इसी तरह की आसानियाँ रहेगी. यह बात हम अपने खयाल से नहीं लिख रहे. हमारी तो शायद नज़र भी इस तक न पहुँचती. यह तो हम उस बचो के आधार पर लिख रहे हैं जो आए दिन रेल के डिब्बे में हमको सुनने को मिलती हैं.

मुनते हैं पटना में उन लोगों का जमाव जमने वाला है जो काँग्रेस से बिगड़े हुए हैं. मुनते हैं कि उस जमाव में आचार्य कृपलानी और उनके साथी भी शरीक होंगे और शायद उस जमाव के बाद ही जनता बह ठीक ठीकसमझ सकेगी कि डेमोक्रेटिक फ्रंट काँग्रेस के सागर में नमक की डली की तरह गह रहा है या पत्थर की गोली की तरह.

१५-५-५१

—भगवानदीन

## ईरान और तेल का कैमियाना—

सच्ची राजनीत इतनी सीधी होती है और इतनी सारु होती है जितनी सरकारी सड़क. उसे नौ बरस के बच्चे को भी समझने में दिक्कत नहीं हो सकती. पर चालाकी से भरी राजनीत इतनी टेढ़ी और चक्करदार होती है जिनकी भूल सुनौयाँ और उसको कभी कभी बड़े बड़े राजनेता भी नहीं समझ पाते और कोई दो राजनेता एक राय नहीं हो पाते.

ईरान के मुल्क में तेल के कुएँ हैं. अब तक अंगरेजी कम्पनी के हाथ में उनका ठेका था. अब ईरान की सरकार उन कुओं को क़ौमिया

जून सन् '५१

हमारी राई

नया हल

लेहने के रक्त जो वन्दे केँ जाते हैं उन का कौनो मसलब नैहें हूँ. अब ओरुठ दिखे वाले ये समझकर ओरुठ ही नैहें दिखे केँ जो न से क़ीा जा रहा है न से एरुठ हूँ. अब तो ये ये समझकर ओरुठ दिखे हूँ केँ किसी को ओरुठ दिखे से नैहें काले बाज़ार में आसानी रहेगी की आसानीयें रहेगी. यह बात हम अपने खयाल से नहीं लिख रहे. हमारी तो शायद नज़र भी इस तक न पहुँचती. यह तो हम उस बचो के आधार पर लिख रहे हैं जो आए दिन रेल के डिब्बे में हमको सुनने को मिलती हैं.

मुनते हैं पटना में उन लोगों का जमाव जमने वाला है जो काँग्रेस से बिगड़े हुए हैं. मुनते हैं कि उस जमाव में आचार्य कृपलानी और उनके साथी भी शरीक होंगे और शायद उस जमाव के बाद ही जनता बह ठीक ठीकसमझ सकेगी कि डेमोक्रेटिक फ्रंट काँग्रेस के सागर में नमक की डली की तरह गह रहा है या पत्थर की गोली की तरह.

—बिष्णुदान

१५-५-५१

## अिरान 'ओर तेल का कैमियाना—

सच्ची राज नीत इतनी सीधी होती है ओर इतनी सारु होती है जितनी सरकारी सड़क. उसे नौ बरस के बच्चे को भी समझने में दिक्कत नहीं हो सकती. पर चालाकी से भरी राजनीत इतनी टेढ़ी और चक्करदार होती है जिनकी भूल सुनौयाँ और उसको कभी कभी बड़े बड़े राजनेता भी नहीं समझ पाते और कोई दो राजनेता एक राय नहीं हो पाते.

अिरान के मुल्क में तेल के कुएँ हैं. अब तक अंगरेजी कम्पनी के हाथ में उनका ठेका था. अब अिरान की सरकार उन कुओं को क़ौमिया



पर ही छोड़ते हैं कि वही यह बताए कि फिर कांग्रेसी सरकार में इतने जोर की आपाधापी क्यों फैली हुई है कि बच्चे बच्चे की खान पर और हर घड़ी यही रहता है कि कांग्रेस के राज में किसी तरह का भी सुख न मिला.

१५.५.५१

— भगवानदीन

## डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—

आचार्य कृपलानी ने अपना लोकशाही मोरचा तोड़ कर बड़ी समझदारी का काम किया. पर कांग्रेस में जिम्मेदारी का कोई ओहदा न लेकर लोगों के दिल में पहली जैसी इज्जत बनार रखने में उन्हें और भी ज्यादा समझदारी की. अब जिसके जी में आए वह यह कह सकता है कि कांग्रेस में अब पूरा एका है और जिसका जी चाहे वह यह कह सकता है कि कांग्रेस की फूट की रजिस्ट्री होगई. आचार्य कृपलानी ने अपने आप को और अपने माथियों को रोज की कांग्रेस से निकाले जाने की धमकी से हमेशा के लिये आजाद कर दिया. अब वह नया दल बनाने या नए दल में शामिल होने के लिये आजाद हैं पर हम यह जरा भी विश्वास के साथ नहीं कह सकते कि अगर कोई नया दल खोला गया और अगर वह भी कांग्रेस वालों का कांग्रेस के लिये खतरनाक मालूम हुआ तो कांग्रेस फिर कोई नई धमकी की वान नहीं सोचेगी. हो सकता है इसके लिये भी कोई पेशबन्दी करली गई हो.

कांग्रेस एक हो. कांग्रेस में फूट पड़े. कांग्रेस नए दल नया करे या पुराने दल नए नाम रखें या अलग अलग लोग चुनाव के लिये खड़े हों, पर सब को यह याद रखना चाहिये कि जनता

पर ही चढ़ते हैं वह यही ये बताओ कि यह कांग्रेसी सरकार में आने की आशा क्यों बिली होती है कि बच्चे बच्चे की खान पर और हर घड़ी यही रहता है कि कांग्रेस के राज में किसी तरह का भी सुख न मिला.

— भगवानदीन

१०-०-५१

## डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—

आचार्य कृपलानी ने अंदा लोक शाही मोरचा तोड़ कर बड़ी समझदारी का काम किया. पर कांग्रेस में दमे दान का कोई ओहदा ने ले कर लोगों के दिल में पहली जैसी इज्जत बनार रखने में उन्हें और भी ज्यादा समझदारी की. अब जिसके जी में आए वह यह कह सकता है कि कांग्रेस में अब पूरा एका है और जिसका जी चाहे वह यह कह सकता है कि कांग्रेस की फूट की रजिस्ट्री होगई. आचार्य कृपलानी ने अपने आप को और अपने माथियों को रोज की कांग्रेस से निकाले जाने की धमकी से हमेशा के लिये आजाद कर दिया. अब वह नया दल बनाने या नए दल में शामिल होने के लिये आजाद हैं पर हम यह जरा भी विश्वास के साथ नहीं कह सकते कि अगर कोई नया दल खोला गया और अगर वह भी कांग्रेस वालों का कांग्रेस के लिये खतरनाक मालूम हुआ तो कांग्रेस फिर कोई नई धमकी की वान नहीं सोचेगी. हो सकता है इसके लिये भी कोई पेशबन्दी करली गई हो.

कांग्रेस एक हो. कांग्रेस में फूट पड़े. कांग्रेस नए दल नया करे या पुराने दल नए नाम रखें या अलग अलग लोग चुनाव के लिये खड़े हों, पर सब को यह याद रखना चाहिये कि जनता



पुलिस के आह्वान तक उस वक्त पहुँचे जब हिन्दुस्तानियों के नसीब में ब्रह्मा जी इतना बड़ा आह्वान लिख ही नहीं सकते थे। उनसे उनकी कामयाबी का हाल जानने के लिये एक दिन उनके मकान पर कलफते में हम सवाल उठा बैठे। उन्होंने हमारे सामने जी खोल कर रख दिया।

वह बोले, इसमें शक नहीं कि मैंने अपनी उमर में कभी रिशवत नहीं ली और अगर रिशवत लेता तो शायद इतने नफे में न रहता जितना मैं अब हूँ। पर मैं यह बताए देता हूँ कि मेरे रिशवत न लेने से मेरे नीचे काम करने वालों में रिशवत घटी नहीं और ज्यादा बढ़ी। और अगर मैं उनको रिशवत लेने से रोकता या गंकेन को कोशिश करता तो मैं डिप्टी सुपरिन्टेनडेंट पुलिस में सुपरिन्टेनडेंट-इन्ट पुलिस ता क्या हो जाता उल्टा बरखास कर दिया गया होता, या किसी जेलखाने में पंथर फाड़ रहा होता।

श्रीमत्पूजा—पं.सा. क्या ?

उन्होंने जवाब दिया—अपने मातहतों को ठीक रखने के लिये रिश्वत न लेना भर कार्का नही होता. उसके लिये यह भी जरूरी होता है कि आदमी हर तरह से ईमानदार हो, और अपनी जगह से हट जाने के लिये हर वक्त तैयार रहे. मातहतों पर असर सिर्फ वही वक़्त होता है जब उनका असर आपसी और घरेलू ढाँढी से छोटी बेइमानी से बचने की कोशिश करता हो.

आखीर में वह आसू भर कर यह बोले कि मैं लोगों की नजरो में रिशवत न लेने की वजह से कितना हों ईमानदार क्यों न जेलना होऊँ, मेरा दिल काला था और है। अगर ऐसा न होता तो मेरे मातहत कभी बेइमानी की हिस्मत नहीं कर सकते थे।

इन शब्दों के साथ हम वयोरो को ही जाने वाली श्री टंडन जी की सनद पर अपने दसखत किये देते हैं और अब हम यह बचीरो

333 333 333

三三

یہا ہندو  
پولیس کے ہمدے تک اس وقت پہنچے جب ہندوستانوں کے مصعب  
میں بڑھ چا اُندا بڑ عہدہ لکھو ہی نہیں سکتے تھے۔ اُن سے نکر  
کامیابی کا حارِ چہلے کے لئے ایک دن اُنکے مکان پر کلکتے میں  
ہم سوال اُٹھا بیٹھ۔ تہوں نے ہمارے سامنے جی کھول کر رکھ دیا۔

[illegible]

五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

انہوں نے جواب دیا — اپنے مانتکتوں کو تھپک رکھنے کے لئے دشت نہ لھٹا بہر ذمی نہیں ہوتا۔ اُسکے لئے یہ بھی ضروری ہوتا ہے کہ آدمی بد طرح سے ایسا دار ہو اور اپنی جگہ سے ہٹ جائے لے جس ہر وقت تیار رہے۔ مانتکتوں پر تو صرف اسی وقت ہونا ہے جب اُن کا افس ہسی اور گھبراو چھوٹی سی چھوٹی بے ایمانی سے

آخر میں وہ آنسو بہہ کر یہ بولے کہ میں لوگوں کی نظروں میں دشتوں نہ لہنے کی وجہ سے گنہگار ہی ایسا ہوں کہ جلدی! ہوں۔  
مہرا دار۔ کالا تھا اور ہے۔ اگر ایسا نہ ہوتا تو مہرے ماتحت کبھی نے ایسا ہی کی ہمت نہیں کر سکتے تھے۔

جی کی سند پر اپنے دستخط کیے دیتے ہیں اور اب ہم یہ ویزوں لندن



खुले दिल अनाज भेज ही रहा है. हो सकता है मनचले अमरीकी बीन और रूस के अनाज बिक्री में कोई राजकाजी चाल की गंवा पाते हों, तो यह चाल तो अमरीकी खुद भी चल सकते थे. पर वह तो चाल चल कर भी हिन्दुस्तान का पेट भरना नहीं चाहते.

अमरीका से अभी अनाज खाना होने की बात तय नहीं हुई. जब खाना होने की बात तय होगी तब मुमकिन है कि हिन्दुस्तान यह कह दे कि अब उसे अमरीका का अनाज किसी भाव भी नहीं चाहिये.

अमरीका इस धोके में न रहे कि वह जिन मुल्क को चाहे भूका मार सकता है और हिन्दुस्तान को चाहिये कि वह उस मुल्क से अनाज की उम्मीद न रखे जो अनाज का भाव बढ़ाने के लिये अनाज के खलियानों में आग लगा देता है और इस तरह ईश्वर को सोने के मोल खरीदने की बात करता है.

१६.५.११

--भगवानदास

## कांगरेसी वजोरी को सनद--

बुलंदशहर की एक आम मभा में २८ अप्रैल को बोलते हुए कांग्रेस के सभापति श्री टंडन जी ने कांग्रेसी वजोरी को यह सनद दे दी कि वह हर तरह से पाक है और जो इलाजाम उनके खिलाफ जनता और कांग्रेसियों ने लगाए हैं उनसे वह बरी है. हमें कोई हक नहीं कि हम यह कह सकें कि टंडन जी जो कुछ कह रहे हैं वह मच नहीं है. पर इस मिललिल में हम अपने एक मित्र की मन्ची बात लिख देना चाहते हैं.

वह बिहार के रहने वाले थे और सरकारी नौकरों में डिप्टी सपरिटेन्डेंट की हैसियत से भरती हुए और इन्स्पेक्टर जनरल

जून सन् ११

कहले दल अनाज बेच ही रहा है. हो सकता है मन्चले अमरीकी चीन और रूस के अनाज बिक्री में कोई राजकाजी चाल की गंवा पाते हों, तो यह चाल तो अमरीकी खुद भी चल सकते थे. पर वह तो चाल चल कर भी हिन्दुस्तान का पेट भरना नहीं चाहते.

अमरीका से अभी अनाज खाना होने की बात तय नहीं हुनी. जब खाना होने की बात तय होगी तब मुमकिन है कि हिन्दुस्तान यह कह दे कि अब उसे अमरीका का अनाज किसी भाव भी नहीं चाहिये.

अमरीका इस धोके में न रहे कि वह जिन मुल्क को चाहे भूका मार सकता है और हिन्दुस्तान को चाहिये कि वह उस मुल्क से अनाज की उम्मीद न रखे जो अनाज का भाव बढ़ाने के लिये अनाज के खलियानों में आग लगा देता है और इस तरह ईश्वर को सोने के मोल खरीदने की बात करता है.

--भगवानदास

१६.५.११

## कांग्रेसी वजोरी को सनद--

बुलंदशहर की एक आम मभा में २८ अप्रैल को बोलते हुए कांग्रेस के सभापति श्री टंडन जी ने कांग्रेसी वजोरी को यह सनद दे दी कि वह हर तरह से पाक है और जो इलाजाम उनके खिलाफ जनता और कांग्रेसियों ने लगाए हैं उनसे वह बरी है. हमें कोई हक नहीं कि हम यह कह सकें कि टंडन जी जो कुछ कह रहे हैं वह मच नहीं है. पर इस मिललिल में हम अपने एक मित्र की मन्ची बात लिख देना चाहते हैं.

वह बिहार के रहने वाले थे और सरकारी नौकरों में डिप्टी सपरिटेन्डेंट की हैसियत से भरती हुए और इन्स्पेक्टर जनरल







# हमारा

# राज



**अमरीका धोके में न रहे !**

हिन्दुस्तान गांधी का देस है. हिन्दुस्तान का आत्मा यह मानना है कि आत्मी कुछ इस तरह का बना है कि वह भूका उठता तो है पर भूका सोता नहीं. इसी तरह हिन्दुस्तान को यह भी विश्वास है कि ईश्वर है और वह सबकी सुध लेता है. कोई यह न समझे कि उस विश्वास ने हिन्दुस्तान को आलसी बनाया हो. हमने तो नलटा उसे चुस्त बनाया है. क्योंकि वह यह भी तो समझता है कि जो ईश्वर सुध लेता है वही ने दौड़ धूप के लिये दो पाँव और काम करने के लिये दो हाथ दे रखे हैं. अमरीका के नाज के भोग पर वह कब था और कब है ? अमरीका का उससे अपनापा हुआ है. किनने दिन ! वह तो बरसों से अनाज की कमी का मुकाबला करता रहा है, किसी तरह पूरा डालता रहा है और दूसरे मुल्कों को आड़े वक्त पर अनाज भजता रहा है. आज के अकाल के मौके पर अमरीका ने हिन्दुस्तान को अपनी समझ से भूका मार डालना जो जहरत से ज्यादा चालें चली. वह आज अनाज भेंज. कल अनाज भेंजे की टाढ मढेल में लगे रह कर बंमतलब यह साबित

**अमरीका देहोके में न रहे !**

हिन्दुस्तान लड्ढी का दीस है. हिन्दुस्तान ! तू 'ये माता' के آدمी कच्चे इस طारح का बना है कि 'व' नेहो' त्ता' न' है 'ये' नेहो' सोना नेहें. 'असी' टारच हिन्दुस्तान को 'ये' नेहें' माता' है. 'हे' 'ओ' 'सब' की सद्द लीता है. 'कोनी' ने 'सम्पत्ति' 'अस' 'मोला' है. 'हिन्दुस्तान' को 'असी' 'बन्या' 'हो'. 'असने' 'तो' 'अला' 'से' 'चिस्त' 'बन्या' 'है'. 'की' 'ने' 'ये' 'बही' 'तो' 'सम्पत्ति' 'है' 'के' 'हो' 'अशु' 'सद्द' 'बिदा' 'है' 'सी' 'ने' 'दु' 'दु' 'के' 'लिये' 'दो' 'पाँव' 'ओ' 'काम' 'करने' 'के' 'लिये' 'दो' 'हाथ' 'दे' 'रखे' 'हैं'. 'अमरीका' 'के' 'नाज' 'के' 'भोग' 'पर' 'वह' 'कब' 'था' 'और' 'कब' 'है' ? 'अमरीका' 'का' 'उससे' 'अपनापा' 'हु' 'हु' 'है'. 'किनने' 'दिन' ! 'वह' 'तो' 'बरसों' 'से' 'अनाज' 'की' 'कमी' 'का' 'मुकाबला' 'करता' 'रहा' 'है', 'किसी' 'तरह' 'पूरा' 'डालता' 'रहा' 'है' 'और' 'दूसरे' 'मुल्कों' 'को' 'आड़े' 'वक्त' 'पर' 'अनाज' 'भजता' 'रहा' 'है'. 'आज' 'के' 'अकाल' 'के' 'मौके' 'पर' 'अमरीका' 'ने' 'हिन्दुस्तान' 'को' 'अपनी' 'समझ' 'से' 'भूका' 'मार' 'डालना' 'जो' 'जहरत' 'से' 'अधिक' 'चालें' 'चली'. 'वह' 'आज' 'अनाज' 'भेंज'. 'कल' 'अनाज' 'भेंजे' 'की' 'टाढ' 'मढेल' 'में' 'लगे' 'रह' 'कर' 'बंमतलब' 'यह' 'साबित'



अपनी एक बच्ची को कैसा उम्दा सबक सिखा रहा है। वह भी क्या दूर था जब सुई तागा ले कर बापू सिलाई कर रहे थे !

उस समय यह सिर्फ मेरे लिये ही सबक था मगर आज हम सब के लिये सबक है। जब इतने बड़े महापुरुष भी अपने हाथ से सी कर कपड़ा इस्तेमाल करते थे तब आज जब कि आर्थे ने ज्यादा देस बासियों को फटा कपड़ा भी नहीं मिलता है, हमें क्या अधिकार है कि जरा सा फटा हुआ कपड़ा सीने को बजाय दूसरा नया ले ? कपड़े सी कर पहनने में हमें विलकुल शरम न होनी चाहिये, बल्कि हमें गर्व होना चाहिये कि हम ऐसा करके देस को कायदा पहुँचा रहे हैं। देस की सेवा कर रहे हैं।

आज भी वह शाल मेरे पास प्रसाद या पाठक रूप में मौजूद है।

## नुटकुले

बर्फ वाला—बाबू जी ! बर्फ लेजाइये, मस्ता है।

गाहक—क्या भाव है ?

बर्फ वाला—सिर्फ दो पैसों सेर।

गाहक—तब तो खरूर बासी होगा, कई दिन का बना होगा।

$$\begin{array}{c} \times \\ \times \end{array} \times \times \times \times$$
 दो लड़के स्कूल जा रहे थे। दोनों बड़े गप्पी थे। एक ने कहना शुरू किया—“कल जब मैं जल्दी जल्दी पैडिल मारता हुआ स्कूल पहुँचा तो रामू ने कहा—‘तुम्हारी साइकिल का चेन पीछे गिर पड़ा है’। इस पर मैं भट पट साइकिल पर चढ़ कर वापस दौड़ा और भाग्य से राह में मुझे चेन मिल गई। मैं उसे जेब में रखकर और साइकिल पर चढ़ कर भट पट स्कूल चला आया।”

बच्चों की दुनिया जून सन् '५९

नया हिन्द

अपनी एक बच्ची को किसा उम्दा सबक सिखा रहा है। वह भी क्या दूर था जब सुई तागा ले कर बापू सिलाई कर रहे थे !

उस समय यह सिर्फ मेरे लिये ही सबक था मगर आज हम सब के लिये सबक है। जब इतने बड़े महापुरुष भी अपने हाथ से सी कर कपड़ा इस्तेमाल करते थे तब आज जब कि आर्थे ने ज्यादा देस बासियों को फटा कपड़ा भी नहीं मिलता है, हमें क्या अधिकार है कि जरा सा फटा हुआ कपड़ा सीने को बजाय दूसरा नया ले ? कपड़े सी कर पहनने में हमें विलकुल शरम न होनी चाहिये, बल्कि हमें गर्व होना चाहिये कि हम ऐसा करके देस को कायदा पहुँचा रहे हैं। देस की सेवा कर रहे हैं।

आज भी वह शाल मेरे पास प्रसाद या पाठक रूप में मौजूद है।

## जटिल

बर्फ वाला—बाबू जी ! बर्फ ले जाइये, मस्ता है !

गाहक—क्या भाव है ?

बर्फ वाला—सिर्फ दो पैसों सेर।

गाहक—तब तो खरूर बासी होगा, कई दिन का बना होगा।

$$\begin{array}{c} \times \\ \times \end{array} \times \times \times \times$$
 दो लड़के स्कूल जा रहे थे। दोनों बड़े गप्पी थे। एक ने कहना शुरू किया—“कल जब मैं जल्दी जल्दी पैडिल मारता हुआ स्कूल पहुँचा तो रामू ने कहा—‘तुम्हारी साइकिल का चेन पीछे गिर पड़ा है’। इस पर मैं भट पट साइकिल पर चढ़ कर वापस दौड़ा और भाग्य से राह में मुझे चेन मिल गई। मैं उसे जेब में रखकर और साइकिल पर चढ़ कर भट पट स्कूल चला आया।”



माखिरा की. फिर पुराने शाल के बढले में जो नया शाल मेरे पास था, सिर पर डाल दिया. मगर दूसरा शाल सिर पर पहने ही बापू ने चौक कर उसको हाथ लगाया. वह बोले—  
“यह क्यों ? आज नया कपड़ा कहाँ से आया ?”

मैंने कहा—“मेरा शाल है. वह शाल तो अब पुराना होने में फट गया है. मेरे पास यह नया शाल बेकार है. आप अब इसे हस्तमाल कीजिये.”

मगर बापू कब मानने वाले थे. उन्होंने कहा—“हाँ, तुम्हारे लिये तो यही होगा. क्योंकि तुम्हारे पिता जी तुम्हें देने हैं न ? मगर मेरे पिता जी कहाँ हैं जो इस तरह नया शाल दोगे ? अगर तुम कमा कर यह शाल मुझे देती तब तो मैं ले लेता. मगर आज न तुम एक कौड़ी कमाती हो, न मैं कमाता हूँ. मैं तो हूँ गरीब आदमी. मेरा पुराना शाल मेरे पास लाओ. मैं उसे सी कर नया कर लूंगा.”

मैंने कहा—“आप क्यों सियें ? आप यह काम मुझे करगें कीजिये. मैं उसे सी दूंगी.”

मगर बापू न माने. उन्होंने अपने हाथ में सुई नागा लें कर वस्त्र शाल में पंचन्द लगा दिया. इस तरह उन्होंने उसे विलकुल नया सा शाल बना दिया.

जब वह शाल का मी कर उठे तब रान के ग्यारह बज गए थे. आध घंटा उनको सीने में लगा. फिर दिसम्बर की ठंड भी शुरू हो गई थी जब सीने का काम खतम कर लिया. तब बापू आनंद में बोले—“देखा. मैं होशियार दर्जी हूँ न ?”

मैं शर्म से यह इश्रय (नजारा) देख रही थी कि मैं कपूर के कारन यह ७५ साल का बुढ़ा जो दुनिया का महापुरुष है रान का

पूर आने. मेहन ने उन को आँचलिया. पुर पुर दीवार सर पर तिल की मालिश की. पुर पुराने शाल के बदले मेहन जो नया शाल मेरे पास तथा सर पर डाल दिया. मगर दोसरा शाल सर पर दने ही बापू ने चौक कर उसको हाथ लगाया. वह बोले—  
“यह क्यों ? आज नया कपड़ा कहाँ से आया ?”

मेहन ने कहा—“मेरा शाल है. ५० साल तो अब पुराना होने में फट गया है. मेरे पास यह नया शाल बेकार है. आप अब इसे हस्तमाल कीजिये.”

मगर बापू कब मानले वाले थे. मेहन ने कहा—“हाँ, तुम्हारे लिये तो यही होगा. क्योंकि तुम्हारे पिता जी तुम्हें देने हैं न ? मगर मेरे पिता जी कहाँ हैं जो इस तरह नया शाल दोगे ? अगर तुम कमा कर यह शाल मुझे देती तब तो मैं ले लेता. मगर आज न तुम एक कौड़ी कमाती हो, न मेहन कमाती हों. मैं तो हूँ गरीब आदमी. मेरा पुराना शाल मेरे पास लाओ. मैं उसे सी कर नया कर लूंगा.”

मेहन ने कहा—“तब क्यों सन्धें ? आप यह काम मुझे करगें कीजिये. मैं उसे सी दूंगी.”

मगर बापू न माने. मेहन ने अपने हाथ में सुई नागा लें कर वस्त्र शाल में पंचन्द लगा दिया. इस तरह उन्होंने उसे विलकुल नया सा शाल बना दिया.

जब ५० साल को सी कर तब तब रान के नजारा देख लिये. आध घंटा उनको सीने में लगा. पुर दोसरा की खलद नया शाल पहने. मेहन सीने का काम खतम कर लिया. तब बापू आनंद में बोले—“देखा. मैं होशियार दर्जी हूँ न ?”

मेहन शर्म से यह दर्शिका (दर्शारा) देख रही थी कि मैं कपूर के कारन यह ७५ साल का बुढ़ा जो महापुरुष है रान का



## बापू ने दरज़ी का काम किया

(कुमारी मनु बहन गान्धी)

यह घटना नोआखाली की है।

नोआखाली में अभी बापू की यात्रा शुरू नहीं हुई थी। यह यात्रा किसी देव-मंदिर के दर्शन के लिये नहीं थी। वहाँ भाई भांडे आपस में झगड़ते थे, मार काट करते थे। वहाँ बबे, वृद्ध, बहने सभी परेशान थे।

बापू तो सभी के पिता थे। उनके लिये सभी भाई बहन एक से थे। यह सब हाल सुन कर वह दिल्ली से नोआखाली को दौड़ गए। वह श्रीरामपुर नाम के एक गाँव में ठहरे। वह उस गाँव में एक ओपड़ी में रहते थे। फिर उन्होंने सोचा कि मासूम बंगुनाह और तो वहाँ पर खुलम हुआ है। इसलिये मुझे वहाँ जाना चाहिये और जहाँ यह सब हुआ है उसी जगह पहुँचना द्रष्टि नारायन भगवान की यात्रा के बराबर है। इसलिये बापू ने 'यात्रा' शब्द इस्तेमाल किया।

बापू के लिये भगवान या देवता कौन थे, यह हम अब समझ गए। अब मैं फिर दरज़ी वाली बात पर आती हूँ। अभी बापू श्रीरामपुर में थे। यह २५ दिसम्बर सन १९४६ की बात है।

बापू के पास पशमोने का एक क्रीमता गरम शाल था। बापू कभी उस शाल से सिर ढकते थे। कभी दोनों पैरों को ठंड से बचाते थे।

वह शाल पुराना होने के कारन फट गया था। मैंने सोचा, अब इस शाल की जगह दूसरा शाल बापू को दूँ। इसलिये मैंने दूसरा शाल रख दिया। रात के दस बज चुके थे। बापू सोने को खाट पर आए। मैंने उनको ओढ़ाया, फिर पैर दबा कर सिर पर तेल की

## बापू ने दरज़ी का काम किया

(कुमारी मनु बहन गान्धी)

ये कहकर नोआखाली की है।

नोआखाली में अभी बापू की यात्रा शुरु नहीं हुई थी। यह यात्रा किसी दिव्य मंदिर के दर्शन के लिये नहीं थी। वहाँ बहाने सभी परेशान थे।

बापू तो सभी के पिता थे। उनके लिये सभी बहाने सभी परेशान थे। यह सब हाल सुन कर वह दिल्ली से नोआखाली को दौड़ गए। वह श्रीरामपुर नाम के एक गाँव में ठहरे। वह उस गाँव में एक ओपड़ी में रहते थे। फिर उन्होंने सोचा कि मासूम बंगुनाह और तो वहाँ पर खुलम हुआ है। इसलिये मुझे वहाँ जाना चाहिये और जहाँ यह सब हुआ है उसी जगह पहुँचना द्रष्टि नारायन भगवान की यात्रा के बराबर है। इसलिये बापू ने 'यात्रा' शब्द इस्तेमाल किया।

बापू के लिये भगवान या देवता कौन थे, यह हम अब समझ गए। अब मैं फिर दरज़ी वाली बात पर आती हूँ। अभी बापू श्रीरामपुर में थे। यह २५ दिसम्बर सन १९४६ की बात है।

बापू के पास पशमोने का एक क्रीमता गरम शाल था। बापू कभी उस शाल से सिर ढकते थे। कभी दोनों पैरों को ठंड से बचाते थे।

वह शाल पुराना होने के कारन फट गया था। मैंने सोचा, अब इस शाल की जगह दूसरा शाल बापू को दूँ। इसलिये मैंने दूसरा शाल रख दिया। रात के दस बज चुके थे। बापू सोने को खाट पर आए। मैंने उनको ओढ़ाया, फिर पैर दबा कर सिर पर तेल की



# बच्चों की दुनिया



पट्टीटार—प्रेम भाई अर्द्धशतक

# बच्चों की दुनिया

## आओ घूमें

( भाई शिचार्यी, सम्पादक 'लल्ला' )

फुटक फुटक कर बिड़िया चहकी  
कली कली खिल कर के महकी  
दुनिया है कुछ और मुन्नह की.

आओ घूमें.

हवा चली है हलके हलके  
लहरें वठों, सरोवर छलके  
धिरके फूल, ओस कन ढलके

हम भी घूमें.

तार सोए सूरज जागा  
दूटा अधियारे का तागा  
हो न पाठशाला में नागा

पोथी चूमें.

## आँ गहूमि

( बेहती शकशरती 'समिदा' ला )

बेहक बेहक कर चहिया चहकी  
कली कली कल कर के महकी  
दनिया है कुछ और समिदा की  
आँ गहूमि.

हवा चली है हलके हलके  
लहरें वठों, सरोवर छलके  
धिरके फूल, ओस कन ढलके

हम भी चहूमि.

तार सोए सूरज जागा  
दूटा अधियारे का तागा  
हो न पाठशाला में नागा

पोथी चूमि.



आदिम जातियों के बारे में अंगरेजी में किताबें मिलती हैं पर वह इस निगाह से लिखी गई हैं कि उनको किस तरह से काबू में रखा जाय. हिन्दी में जो दो चार किताबें मिलती हैं वह या तो अंगरेजी किताबों की नक़ल हैं या आदिम जातियों के स्मॉरिवाज की कहानियाँ. पर कैला जी की यह किताब कुछ और ही ढंग से लिखी गई है. इसमें आदिम जातियों का मामूली हाल बताया गया है. उनकी सभ्यता, उनके गीत. उनकी कथाएँ, उनके त्योहार भी बताये गये हैं. साथ ही साथ यह भी बताया गया है कि भारत को स्वाधीन करने में इन जातियों का भी और. जातियों में कम हाथ नहीं है.

三

جیس سے یہ چاتیاں چاندی سے بنائے گئے تھے۔ ان کے بارے میں کچھ زیادتی تھی۔ وہ اتنا ہی کھوکھلے تھے جتنے ہر کام کے سکینر۔

تھیں۔ یہاں پہلے کی گئی ہے اور یہ کتاب تھاں موجود ہے۔

جو سچ ہے اسے باز شہر کے بہکت ہیں اُن کو یہ کذاب  
پوہلی مر جائے۔



इस नावेल के तीन भाग हैं. पहले भाग में आजाद हिन्द फौज के एक सिपाही नरैन का जीवन है. दूसरे भाग में सन् '४२ में शहीद होने वाले अलीम नाम के एक गाँव निवासी की भोली भाली नौजवान बीबी सबीना पर साम्राजवाद और इस गन्दे समाज के जरिये किये गए अत्याचारों की तस्वीर है. तीसरे भाग में मजदूर एकता, उन में भाई चारा और उनकी शक्ति का वर्नन है. कानपुर के गोली काँढ से शायद सभी परिचित हैं. उसी समय की हड़ताल, बेरहम गोली और लाठी बर्शा और मिल मालकों की साक्षिश की तस्वीर इस भाग में खींची गई है. पहले दोनों भाग अलग अलग भी पूरे हैं और एक लम्बी कहानी मालूम देते हैं. फिर भी तीनों भाग मिल कर एक नावेल बनाते हैं.

( ५५ )

लेखक ने मजदूरों के शान्तिमय आन्दोलन की ताकत का अनुभव इस नावेल में कराया है. इस ताकत की आत्मा है मजदूरों की एकता. इस नावेल में जगह जगह "संयुक्त मोरचा" के महत्व पर रोशनी डाली गई है. नए समाज को पैदा करने के लिये मिला जुला मोरचा ही एक मशाल है. आज इस मशाल की सखत जरूरत है.

माशा सरल, सुन्दर और बड़ी जानदार है. हाँ, तकनीक में काफ़ी गड़बड़ी है. अगर साट को दूसरी तकनीक में दिखाया जाता तो चित्रन में जो अस्वाभाविकपन आगया है वह न आता.

—मुजीब रिजवी

## हमारी आदिम जातियाँ—

लिखने वाले, श्री भगवान दास केला और श्री अश्विल विनय. निकालने वाले—भारतीय ग्रंथ माला. दारगंज. इलाहाबाद. लिखावट नागरी, सफे ३५६. दाम साठ तीन रुपये.

इस नावल के तीन भाग हैं. पहले भाग में आजाद हिन्द फौज के एक सिपाही नरैन का जीवन है. दूसरे भाग में सन् '४२ में शहीद होने वाले अलीम नाम के एक गाँव निवासी की भोली भाली नौजवान बीबी सबीना पर साम्राजवाद और इस गन्दे समाज के जरिये किये गए अत्याचारों की तस्वीर है. तीसरे भाग में मजदूर एकता, उन में भाई चारा और उनकी शक्ति का वर्नन है. कानपुर के गोली काँढ से शायद सभी परिचित हैं. उसी समय की हड़ताल, बेरहम गोली और लाठी बर्शा और मिल मालकों की साक्षिश की तस्वीर इस भाग में खींची गई है. पहले दोनों भाग अलग अलग भी पूरे हैं और एक लम्बी कहानी मालूम देते हैं. फिर भी तीनों भाग मिल कर एक नावेल बनाते हैं.

( ५४ )

लेखक ने मजदूरों के शांतिमय आन्दोलन की ताकत का अनुभव इस नावल में कराया है. इस ताकत की आत्मा है मजदूरों की एकता. इस नावल में जगह जगह "संयुक्त मोरचा" के महत्व पर रोशनी डाली गई है. नए समाज को पैदा करने के लिये मिला जुला मोरचा ही एक मशाल है. आज इस मशाल की सखत जरूरत है.

भाशा सरल, सुन्दर और बड़ी जानदार है. हाँ, तकनीक में काफ़ी गड़बड़ी है. अगर साट को दूसरी तकनीक में दिखाया जाता तो चित्रन में जो अस्वाभाविकपन आगया है वह न आता.

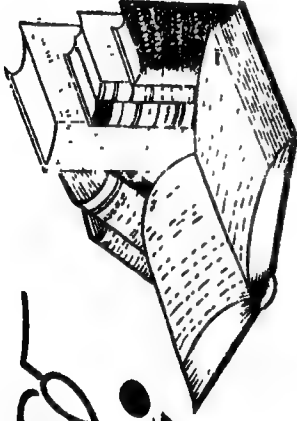
—महमूद रजवी

## हमारी आदिम जातियाँ—

लिखने वाले—श्री भगवान दास केला और श्री अश्विल विनय. निकालने वाले—भारतीय ग्रंथ माला. दारगंज. इलाहाबाद. लिखावट नागरी, सफे ३५६. दाम साठ तीन रुपये.



# कलकत्ता



कलकत्ता

## मशाल

( ३३ )

लिखने वाले—श्री भैरव प्रसाद गुप्त.

निकालने वाले—धारा प्रकाशन, ५ स्टैनली रोड, इलाहाबाद.

लिखाबट नागरी, सफा २४०, क्रीमल साढ़े तीन रुपए.

‘शोले’ के बाद ‘मशाल’ भैरव प्रसाद गुप्त का दूसरा नावेल है. इस में तिकोना प्रेम नहीं है, जिन्सी भूक नहीं है. इसमें खिन्दगी है. वह खिन्दगी जो पैदा हो रही है, जो उभर रही है. इस नावेल में वसी खिन्दगी का संदेश है, एक नए समाज की तरफ संकेत है. इस समाज में न कोई शोशक होगा न शोशित. न कोई जालिम होगा और न कोई मजदूर. कलास की दीवारें, धर्म की दीवारें, जात की दीवारें, जिन्स की दीवारें सब ढे जायँगी. एक नया मानव पैदा होगा. उस में मानवता होगी, भाई बारा होगा, हमदर्दों होगी. इसी पैदा होने वाले समाज के लिये एक संघर्ष का चित्रन मशाल में किया गया है. ‘ऐसा भी हो सकता है’ का चित्रन इस नावेल में नहीं है बल्कि ‘ऐसा हुआ है’ इस किताब के पन्नों पर अंकित किया गया है. यही इसकी विशेषता है.

## मशेल

लिखने वाले — श्री भैरव प्रसाद कित

निकालने वाले — दहारा प्रकाशन, ९ स्टैनली रोड, इलाहाबाद.

लिखाबट नागरी, सफा २४०, क्रीमल साढ़े तीन रुपए.

‘मशेल’ के बाद ‘मशेल’ भैरव प्रसाद कित का दूसरा नावेल है. इस में तिकोना प्रेम नहीं है. जिन्सी भूक नहीं है. इस में खिन्दगी है. वह खिन्दगी जो पैदा हो रही है, जो उभर रही है. इस नावेल में वसी खिन्दगी का संदेश है, एक नए समाज की तरफ संकेत है. इस समाज में न कोई शोशक होगा न शोशित. न कोई जालिम होगा और न कोई मजदूर. कलास की दीवारें, धर्म की दीवारें, जात की दीवारें, जिन्स की दीवारें सब ढे जायँगी. एक नया मानव पैदा होगा. उस में मानवता होगी, भाई बारा होगा, हमदर्दों होगी. इसी पैदा होने वाले समाज के लिये एक संघर्ष का चित्रन मशेल में किया गया है. ‘ऐसा भी हो सकता है’ का चित्रन इस नावेल में नहीं है बल्कि ‘ऐसा हुआ है’ इस किताब के पन्नों पर अंकित किया गया है. यही इसकी विशेषता है.

( ३३ )



अनुशासन भंग की कारवाई की जायगी ! क्या इस से भी बड़ी कोई आत्म-निन्दा कांग्रेस की और कांग्रेसी सरकारों की हो सकती है ? क्या इससे भी सारु इशारा बिहार के शराबबन्दी की हिमायत करने वालों को कांग्रेस छोड़ देने का किया जा सकता है ? अब सिर्फ यही बाक़ी रह गया है कि कोई उद्योगपति 'उत्तम शराब को कैक्टरी' भारत में क़ायम करे और किसी बर्बोर से उसका उद्घाटन ( इफ़तिहाद ) कराये ! यह घटना किसी भी समय घट सकती है.

वर्षों, २८-३-११

—कि. घ. मशरूवाला

अनुशासन बेल्क की कारवाई की जाये ! क्या इस से बेहो भोय कोनी आत्म नन्दा लाङ्ग्रेस की ओर लाङ्ग्रेसी सरकारों की हो सकती है ? क्या इस से बेहो भाव साफ़ आशारे बेहारे के शराब बेल्की की हिमायत करने वालों को लाङ्ग्रेस छोड़ देने का किया जा सकता है ? अब सिर्फ़ यही बाक़ी रह गया है कि कोई उद्योगपति 'उत्तम शराब को कैक्टरी' भारत में क़ायम करे और किसी बर्बोर से उसका उद्घाटन ( इफ़तिहाद ) कराये ! यह घटना किसी भी समय घट सकती है.

—क. ग. मशरूवाला

१९०१-०१

## सर्वोदय समाज का सन्देश

इस छोटी सी खिन्दगी में हम कसौटी पर हैं. इस संसार में जो कुछ थोड़े दिन हमें रहना है उन में सब को सबा और सबका प्रेम हासिल करने की कोशिश करनी चाहिये.

जिन्होंने ने इस दुनिया में आकर पैसा कमाया लेकिन प्रेम गाँवाया उन्होंने कुछ भी नहीं कमाया; जिन्होंने ज्ञान हासिल किया कर लिया मगर सब का प्रेम हासिल नहीं किया, उन्होंने ने कुछ भी हासिल नहीं किया; जिन्होंने ने शक्ति जमा की पर सब का प्रेम जमा नहीं किया. उन्होंने कुछ भी जमा नहीं किया.

इसलिये, भाइयो, सब से प्रेम करो और सब का प्रेम हासिल करो. यही सर्वोदय समाज का सन्देश है.

—बिनोबा

## सरोदये सबाज का सन्देश

इस ज़ेहती सी ज़न्दीगी में हम कसौटी पर हैं. इस संसार में जो कुछ थोड़े दिन हमें रहना है उन में सब की सबा और सब का प्रेम हासिल करने की कोशिश करनी चाहिये.

जिन्होंने ने इस दुनिया में आकर पैसा कमाया लेकिन प्रेम गाँवाया उन्होंने कुछ भी नहीं कमाया; जिन्होंने ज्ञान हासिल किया मगर सब का प्रेम हासिल नहीं किया, उन्होंने ने कुछ भी हासिल नहीं किया; जिन्होंने ने शक्ति जमा की पर सब का प्रेम जमा नहीं किया. उन्होंने कुछ भी जमा नहीं किया.

इसलिये, भाइयो, सब से प्रेम करो और सब का प्रेम हासिल करो.

यही सर्वोदये सबाज का सन्देश है.

—बिनोबा



## देस के लिये शराब पियो !

अभी तक हमारे नेताओं ने राष्ट्रीय संकट के समय जनता से इन्हीं शब्दों में अपील की है: ‘देसे के लिये करो’ या ‘देस के लिये मरो’ गांधी जी का अन्तिम आदेश था ‘करो या मरो’ और जन राष्ट्र पर सब से बड़ा संकट आया, तब उन्होंने राष्ट्र के लिये कर या मर कर हमें दिखा दिया।

इस में कोई शक नहीं कि आज तब भयानक आर्थिक संकट में फँसे हुए हैं लेकिन आमदनी हासिल करने की पागलपन भरी कोशिश में नया नारा ‘देस के लिये शराब पियो’ बन गया मालूम होता है ! मध्य प्रदेश के वाट उत्तर प्रदेश ने भी शराबबन्दी ज़ब्त कमेटी नियुक्त की है, उड़ीसा के प्रधान मंत्री ने शराबबन्दी के तरफ़ आगे न बढ़ने के लिये छमा मांगी है, बिहार उसी का अनुकरण कर रहा है, और बिहार प्रान्ती कांग्रेस कमेटी ने इस मतलब का एक छुट्टम निकाल कर अपने राज को आभारी बनाया है कि कोई भी कांग्रेसी प्रान्ती कांग्रेस कमेटी से इजाजत लिये बिना शराबबन्दी आन्दोलन में हिस्सा न ले ! कांग्रेस विधान के अनुसार किसी भी कांग्रेसी को शराब बग़रा नहीं पीना चाहिये, लेकिन अगर उसने अपने वहाँ की इजाजत लिये बिना दूसरों को भी नशेबाज़ी से बचाने की कोशिश की तो उसके खिलाफ़

## दिस के लिये शराब पियो !

अभी तक हमारे नेताओं ने राष्ट्रीय संकट के सन्दर्भ में इन्हीं शब्दों में अपील की है : दिस के लिये करो’ या ‘दिस के लिये मरो’। ग़ान्धी जी का अन्तिम आदेश था ‘करो या मरो’। और शराब आशुतोज़ से बड़ा संकट आया, तब दिस के लिये करो’ या ‘मरो’ का नारा लगा दिया।

इस में कोई शक नहीं कि आज तब भयानक आर्थिक संकट में फँसे हुए हैं लेकिन आमदनी हासिल करने की पागलपन भरी कोशिश में नया नारा ‘दिस के लिये शराब पियो’ बन गया मालूम होता है ! मध्य प्रदेश के वाट उत्तर प्रदेश ने भी शराबबन्दी ज़ब्त कमेटी नियुक्त की है, उड़ीसा के प्रधान मंत्री ने शराबबन्दी के तरफ़ आगे न बढ़ने के लिये छमा मांगी है, बिहार उसी का अनुकरण कर रहा है, और बिहार प्रान्ती कांग्रेस कमेटी ने इस मतलब का एक छुट्टम निकाल कर अपने राज को आभारी बनाया है कि कोई भी कांग्रेसी प्रान्ती कांग्रेस कमेटी से इजाजत लिये बिना शराबबन्दी आन्दोलन में हिस्सा न ले ! कांग्रेस विधान के अनुसार किसी भी कांग्रेसी को शराब बग़रा नहीं पीना चाहिये, लेकिन अगर उसने अपने वहाँ की इजाजत लिये बिना दूसरों को भी नशेबाज़ी से बचाने की कोशिश की तो उसके खिलाफ़



चीन में एक कहानी मशहूर है जिस में यह कहा गया है कि गौतम बुद्ध के गुरु दीपान्कर बुद्ध एक चीनी थे. दीपान्कर बुद्ध का चीनी नाम जान लेंगे था. दीपान्कर बुद्ध ताओ धर्म के मानने वाले थे और गौतम बुद्ध उनसे शिक्षा लेने चीन गए थे.

यह कहानी सच हो या न हो. अगर इस बात को ध्यान में रखा जाय कि भारत और चीन का तिजारती सम्बन्ध ईसा से सैकड़ों साल पहले आसाम और बरमा के रास्ते कायम हो चुका था तो यह मानना पड़ता है कि इसी रास्ते भारत और चीन में कलचर विचारों और धर्म का लेन देन भी जरूर होता रहा होगा.

## भंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'किराक'

पिञ्जले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख्याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज का उरदू शायरी गुल व बुलबुल और बसल व किराक तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मजदूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. गुलामी, अन्याय और लूट खसोट के खिलाफ आप एक ऐसा आवाज सुनेंगे जो आप के दिल का जोश से भर देगी.

नगरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. किताब १५ जुलाई तक छप जायगी और दाम ढाई रुपये होंगे.

नोट—३० जून तक जो भाई आर्डर के साथ चार आने के टिकट भेज देंगे उन से डाक खर्च न लिया जायगा.

मिलने का पता—

—मैनेजर 'नया हिन्दू'

१४५, मुद्रिगंज, इलाहाबाद,

नया हिन्दू भारत और चीन का कलचरी मल जून सन् '५१

चीन में एक कहानी मशहूर है जिस में यह कहा गया है कि गौतम बुद्ध के गुरु दीपान्कर बुद्ध एक चीनी थे. दीपान्कर बुद्ध का चीनी नाम जान लेंगे था. दीपान्कर बुद्ध ताओ धर्म के मानने वाले थे और गौतम बुद्ध उनसे शिक्षा लेने चीन गए थे.

यह कहानी सच हो या न हो. अगर इस बात को ध्यान में रखा जाय कि भारत और चीन का तिजारती सम्बन्ध ईसा से सैकड़ों साल पहले आसाम और बरमा के रास्ते कायम हो चुका था तो यह मानना पड़ता है कि इसी रास्ते भारत और चीन में कलचर विचारों और धर्म का लेन देन भी जरूर होता रहा होगा.

## जोहार

सिद्दाक — शरी रकृपति सहाय 'किराक'

पिञ्जले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख्याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज का उरदू शायरी गुल व बुलबुल और बसल व किराक तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मजदूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. गुलामी, अन्याय और लूट खसोट के खिलाफ आप एक ऐसा आवाज सुनेंगे जो आप के दिल को जोश से भर देगी.

नगरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. किताब १५ जुलाई तक छप जायगी और दाम ढाई रुपये होंगे.

नोट—३० जून तक जो भाई आर्डर के साथ चार आने के टिकट भेज देंगे उन से डाक खर्च न लिया जायगा.

मिलने का पता—

—मैनेजर 'नया हिन्दू'

१४५, मुद्रिगंज, इलाहाबाद,



नया हिन्द भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् '५१

इतिहासकार आर्थर वेले लिखते हैं—

“सब विद्वान इस बात को मानते हैं कि ( चीन का ) ईसा से तीसरी सदी पहले का तमाम साहित्य भारत की पौराणिक और भूगोली कहानियों से भरा पड़ा है. मुझे इस में शक की कोई वजह नहीं मिलती कि लिएज ने जिन पहाड़ी आदिमियों का शिक किया है वह सब भारतीय रिशी हैं. और जब हम चुआंगजु की किताबों में पढ़ते हैं कि ताओ मजहब के मानने वाले हिन्दू योगियों की तरह आसन किया करते थे तो यह बात बहुत मुमकिन मालूम होती है कि भारतीय रिशियों की योगी क्रियाएँ चीन तक पहुँच गई थीं. ( प्राचीन चीन के तीन धर्म )

श्री राधा कुरनन लिखते हैं—

“यह बहुत मुमकिन है कि ईसा से पहले छठी सदी से चौथी सदी तक जब कि ताओ धर्म शकल ले रहा था. उपनिषद् का फलसफा और योग की क्रियाएँ भारतीय और चीनी सौदागर भारत से चीन ले गए.....आदिर है कि ताओ धर्म की शुरू की अवस्था में उस पर भारत का असर जोरों से पड़ा.” ( भारत और चीन )

कुछ विद्वान इतिहासकारों की यह भी राय है कि चूँकि उस बहाने पुराने जमाने में भारत और चीन के बीच आने जाने की कोई बटनाएँ नहीं मिलती इसलिये हो सकता है कि इस तरह के मिलने जुलने विचार दोनों देशों में अपने अपने आजाद दँग से अलग अलग पैदा हुए हों. पर चीनी साहित्य में हमें इस से ज्यादा साफ भी कुछ बातें मिलती हैं.

चीन की एक मशहूर किताब “वाई लू” में लिखा है कि चूँकि लाभात्वे अपने धर्म का प्रचार करने के लिये भारत गए थे इसलिये उनका फलसफा भारतीय फलसफे से बहुत कुछ मिलता जुलता है.

निया हल्द भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् '०१

अन्हास का आन्तर विल्हे लकहे ह्येन —

“सब वद्वान इस बात को मानते ह्येन के ( ज्येन का ) ह्येन से तेहरी सदी पहल्ये का तमाम साह्ये ह्येन की युराक 'द्र भूगोली कहान्ये से भरा पुरा है. मज्जे इस मेल शक की कुन्ये वजे न्येन मेल्ये के लक्येने जे जेन ह्येन आदम्येन का डकुर कहा है वे सब ह्येनारी रशी ह्येन. और जब हम ज्योतक र्द की कताभ्ये मेल्ये पुरहेते ह्येन के ताव मज्जेब के मान्येने वाले ह्येनदु युरक्येन की एरुह अन् कया कुरे तेह तो ये बात ह्येन मसकन मेलुम ह्येन की ह्येनारी रशुभ्येन की युरी ह्येनान्येन ज्येन तक पहल्ये कुरी तेह्येन. ( युरा ज्येन ज्येन के तेन ह्येन )

शुन्य रादहा कुरहन लकहेते ह्येन —

“ये ह्येन मसकन है के ह्येन्येन से पहल्ये ज्येन्येन सदी से ज्येन्येन सदी तक ज्येनका ताव ह्येन शकल ले रहा तेहा' अड्येन का फलसफे 'द्र युरा की कुरान्येन ह्येनारी और ज्येन्येन सुदाकर ह्येनारी से ज्येन ले कुरे.....एलम है के ताव ह्येन की शुदुर की अरुसतेहा मेल्ये अन् युर ह्येनारी अन् युरुर से पुरा.” ( ह्येनारी और ज्येन )

क्येन वद्वान अन्हास कुरुर की ये ह्येन राले है के ज्येनका अन् ह्येन्येन युराने जमाने मेल्ये ह्येनारी और ज्येन के ह्येन अने जयने की कुन्ये कुरान्येन न्येन मेल्येन अन् ल्ये हो सकता है के इस एरुह के मेल्ये जल्ये ज्येनदुन्येन द्येन्येन मेल्ये अन् अने आरद ह्येनक से अन्क अलक पयदा ह्येन. युर ज्येन्येन साह्येबे मेल्ये ह्येन्येन अन् से ज्येनदे हाव ह्येन क्येन यान्येन मेल्ये ह्येन.

ज्येन की अलक मशहूर कताब “रान्ये लु” मेल्ये लकहा है के ज्येनका लुन्येने अने ह्येनका युरा कुरने के ल्ये ह्येनारी कुरे तेह अन् ल्ये



नया हिन्दू भारत आर चान का कलचरा मल जून सन् ५११  
भी काम करता है, वह इनसानों में अकलमंभ है. वह योगी  
और उसने अपना काम पूरा कर लिया है."

इन मिसालों से यह मालूम होता है कि गीता, उपनिशद् और  
ताओ के विचारों में गहरी समानता है.

ताओ धर्म और बौद्ध धर्म के नैतिक विचारों में भी काफी  
समानता है. इसकी दो मिसालें नीचे द 'जातीं .

( १ ) ताओ-ते-चिंग में लिखा है—“जो दूसरों पर क़ाबू  
पा सकता है, वह ताक़तवर है, पर जो अपने को क़ाबू में कर सकता  
है वह कहीं अधिक शक्तिशाली है और ताक़तवर है.”

बौद्ध धर्म की किताब धम्मपद में लिखा है—“अगर एक आदमी  
एक हज़ार बार एक हज़ार आदमियों को लड़ाई में हरा कर जीत  
जाय और दूसरा आदमी सिर्फ़ अपने को जीत ले तो दूसरा आदमी  
सभी जीतने वालों में सब से ऊँचा है.”

( २ ) बाओ-ते-चिंग में लिखा है—“इससे बढ़ कर कोई पाप  
नहीं कि आदमी किसी ऐसी चीज़ पर नज़र डाले जो उस में मोह  
पैदा कर दे; असंतोश से बढ़ कर कोई दूसरी बुराई नहीं: लालच  
से बढ़ कर कोई दूसरी तबाही नहीं.”

धम्मपद में लिखा है—“मोह से बढ़ कर कोई दूसरी ज़लाने  
वाली चीज़ नहीं, नकरत से बढ़ कर कोई दूसरी चिनगारी नहीं,  
माया से बढ़ कर कोई दूसरी फँसाऊ चीज़ नहीं, और लालच से बढ़  
कर कोई और ख़तर नाक बाढ़ नहीं.”

बौद्ध धर्म और ताओ धर्म में इसी तरह की बहुत सी मिलती  
जुलती बातें हैं.

बौद्ध धर्म, उपनिशद्, गीता और ताओ धर्म की इन तमाम  
समानताओं से मालूम होता है कि भारतीय फ़िलसफ़ा ईसा से पाँच  
या छे सौ साल पहले ही भारत से चीन जा चुका था.

बिहारत ओः च्छेन का लच्छो मेल जून सन ०१  
बेमी काम करता है, वे आन्सानों मेल मल्लन्द है . वे योकी है ओः स  
ने आला काम योरा कर लिया है .  
अन मल्लों से ये मल्लम होता है के क्योः आल्लन्द ओः ताओ के  
वचारों मेल क्योः सल्लता है .  
ताओ मल्लम ओः ओः मल्लम के नोतक वचारों मेल बेमी काली सल्लता  
है . अंस की दो मल्लों न्हेजे दी जाली मेल .  
( १ ) ताओते च्छेन मेल लक्या है— “ओः दोस्रोः पर क़ाबो  
या सक्या है वे मल्लन्द है पर जो अप्ने को क़ाबो मेल कर सक्या है वे क्योः  
अदक शक्य शाली ओः मल्लन्द है .  
ओः मल्लम की कल्ल मल्लम मेल लक्या है— “अः अक आदमी  
अक म्वाः बार अक म्वाः आदमों को लीअली मेल हरा कर ज्हेत जाले  
ओः दोसरा आदमी सर्फ अप्ने को ज्हेत ले तो दोसरा आदमी सभे ज्हेते  
वलों मेल सभ से आन्जा है .  
( २ ) ताओते च्छेन मेल लक्या है— “अंस से ओः ओः क्योः  
पल्ल न्हेन के आदमी कसी असी च्छेन पर न्ज़र काले जो स मेल मोः  
पेदा कर्देः अल्लन्द से ओः ओः क्योः दोसरी बरली मेल लल्ल से  
ओः ओः दोसरी तबाही न्हेन .  
ओः मेल लक्या है— “मोः से ओः क्योः दोसरी जाले वाली च्छेन  
न्हेन, न्ज़र से ओः ओः क्योः दोसरी च्छेन मेल मल्ल से ओः ओः  
क्योः दोसरी पेल्साओ च्छेन न्हेन ओः लल्ल से ओः ओः क्योः ओः खल्लनाक  
बार न्हेन .  
ओः मल्लम ओः ताओ मल्लम असी मल्ल की नेत स मल्ल  
जल्ल बाल्ल मेल .  
ओः मल्लम आल्लन्द, क्योः ओः ताओ मल्लम की अन लमाम  
मल्लम होता है के बिहारी फल्लन्द मेल से पल्ल या ओः सो मल्ल  
मेल बिहारी से च्छेन जल्लका त्हा .



चिरंढ संहिता में लिखा है—

“अगर साधक को जलती हुई आग में फेंक दिया जाय तो भी वह अपनी इस मुद्रा ( आग्नेय मुद्रा ) के कारण जिन्दा ही रहेगा, मरेगा नहीं.”

जैसा ऊपर बताया गया है, इस योग का मकसद ताओ तक पहुँचना है. ताओ तक पहुँचने के माती है. मोह से छुटकारा और खुदी का खाल्सा. जो आदमी योग के जरिये ताओ तक पहुँच जाता है उस के बारे में ‘ताओ-ते-चिंग’ में लिखा है—

“बहु काम नहीं करता फिर भी वह काम कर रहा है. जिस चीज में स्वाद नहीं है उस में भी वह स्वाद पाता है.

छोटों को वह बड़ा बना सकता है और थोड़ी सी चीज को ज्यादा कर सकता है.

बिना किसी मेहनत के धाव अच्छा करता है,

कम और होते हुए भी मुश्किल चीजों का सामना करता है,

खुद छोटा रहते हुए बड़ों से मुकाबला करता है.”

गीता का स्थितप्रज्ञ आदर्श कुछ इसी तरह का है. गीता में लिखा है—

“ए. अर्जुन ! जिसने अपने मन के अन्दर पैदा होने वाली तमाम ख्वाहिशों को जीत लिया. जो न दुख से डरता है और न सुख को इच्छा करता है, जिसे न किसी से राग, लगाव या मोह है. न किसी से डर और न किसी पर क्रोध. जिस की इन्द्रियों ( हवास ) उसके क़ाबू में हैं, उसी को ‘स्थितप्रज्ञ’ ( टिको हुई या सलीम आकलवाला ) समझना चाहिये.”

फिर लिखा है—

“बहु जो काम करके भी काम नहीं करता और काम न करके

१०

निरत नरु चरुन ० सधुरी सस

नहा हलद

कहने सलह: मीन लकहा है—

“अगर साहब को जलती होनी आक मीन पहेलक दया जाले नु भी वे अली अस मद: (अल्ले मदरा) के कारन नन्दे ही रहे ला मरे ला नहिस.”

जैसा ऊपर बताया गया है, इस योग का मकसद ताओ तक पहुँचने का है. ताओ तक पहुँचने के मयनी हान, मरे से जहेन्द्र: (रु खुरी) का खाने. जो आदमी योग के जरिये ताओ तक पहुँच जाता है उसके बारे में ‘ताओ-ते-चिंग’ में लिखा है—

“बहु काम नहीं करता फिर भी वह काम कर रहा है. जिस चीज में स्वाद नहीं है उस में भी वह स्वाद पाता है.

छोटों को वह बड़ा बना सकता है और थोड़ी सी चीज को ज्यादा कर सकता है.

बिना किसी मेहनत के धाव अच्छा करता है,

कम और होते हुए भी मुश्किल चीजों का सामना करता है,

खुद छोटा रहते हुए बड़ों से मुकाबला करता है.”

गीता का स्थितप्रज्ञ आदर्श कुछ इसी तरह का है. गीता में लिखा है—

“ए. अर्जुन ! जिसने अपने मन के अन्दर पैदा होने वाली तमाम ख्वाहिशों को जीत लिया. जो न दुख से डरता है और न सुख को इच्छा करता है, जिसे न किसी से राग, लगाव या मोह है. न किसी से डर और न किसी पर क्रोध. जिस की इन्द्रियों ( हवास ) उसके क़ाबू में हैं, उसी को ‘स्थितप्रज्ञ’ ( टिको हुई या सलीम आकलवाला ) समझना चाहिये.”

फिर लिखा है—

“बहु जो काम करके भी काम नहीं करता और काम न करके



नवा हिन्द्य भारत और चीन का कलचरी मेला जून सन् १९१९  
आप पढ़े हुए थे. ऐसा जान पड़ता था कि बाहरी दुनिया का पता  
आप को बिलकुल है ही नहीं. माबस होता है आप खुद अपने में  
खो गए थे."

लाभात्से ने जवाब दिया—"आप ठीक कहते हैं. मैं इस दुनिया  
की पैदाइश के बारे में सोच रहा था."

योग के फलस्फे पर भारत के रिशियों ने बहुत कुछ कहा है.  
योग शास्त्र पर पूरा एक दर्शन है. गीता में भी योग का जिक्र कई  
जगह आया है.

लिखा है—

"इस तरह का आदमी ( योगी ) किसी साक सुथरी जगह में  
बुपचाप, निहर और अकेला बैठ कर, अपने मन को रोक कर,  
अपने दिल से सब तरह की खबाहियों और सब चीजों के मोह को  
निकाल कर, आत्मा एक तरफ लगा कर..... सिर, गर्दन और  
बिस्म को बिलकुल सीधा और इन्द्रियों को अडोल रखते हुए, अपनी  
नाक के सिरे को एकटक देखता हुआ, इधर उधर निगाह न  
हालता हुआ..... अपनी आत्मा को शान्त रखते हुए, आत्मा की  
शुद्धि के लिये परमात्मा में ध्यान जमाए, तो धीरे धीरे उसे परम  
शान्ति और वह सब से बढ़कर हालत हासिल होगी जिस से फिर  
बढ़े से बड़ा सुख दुख भी उसे नहीं ढिगा सकता. उसी हालत का  
नाम मुक्ति यानी निजात है."

योग से जो रुहानी ताकत पैदा होती है उस का ज्ञान भी ताओ  
के जानकारों को था. लिखदूज कहता है—

"सब से ज्यादा ताकतवर आदमी यानी योगी आग पर  
बलेगा तो भी उस के पाँव जलेंगे नहीं. वह इस दुनिया की चोटी  
पर चलेगा तो भी उसके पाँव काँपेंगे नहीं."

नवा हिन्द्य भारत और चीन का कलचरी मेला जून सन् १९१९  
आप पढ़े हुए थे. ऐसा जान पड़ता था कि बाहरी दुनिया का  
पता आप को बिलकुल है ही नहीं. माबस होता है आप खुद अपने में  
खो गئے थे."

लाउज़े ने जवाब दिया—" आप तबिक कहते हैं. मैं इस  
दुनिया की पैदाइश के बारे में सोच रहा था."

कहा है —

" इस तरह का आदमी ( योगी ) किसी साफ स्तहो जगह में  
जमा चान्द, नदर और अकल बिभेकर अपने मन को रोक कर अपने दिल से  
सब तरह की खवाहशों और सब चीजों के मोह को निकाल कर, आत्मा एक  
तरफ लगा कर..... सिर, गर्दन और जसम को बालक सिधहा और  
अंदर में क्रिदोल रकिते हुंने अिली नाक के सरे को एक तक दिक्कहा  
हुं, अंदर अदर अदर नहा नहा हुं..... अिली अत्मा को शान्त रकिते  
हुंने, अत्मा की शदही के लीने परमात्मा में दहान जमाने तो दहरे  
दहरे असे परम शान्ति और वो सब से बूधकर हालत हासल हुंकी जस  
से परे परे से बड़ा सुख दुख भी असे नहें ठा सकता. असी हालत का  
नाम मुक्ति येली नजात है."

योग से जो रूहानी ताकत पैदा हुंती है अस का ज्ञान भी  
ताउ के जानकारों को था. लुंहे जो कहता है —

"सब से ज्यादा طاकतूर आदमी येली योगी अक पर जल्लहा  
तो भी अकसे पाऊं जल्लें को नहें. वो अस दुनिया को चोती पर जल्ले  
पर चलेगा तो भी उसके पाँव काँपेंगे नहीं."



तैत्रेय उपनिषद् में "ब्रह्म" के बारे में कहा गया है—

"ब्रह्म ही से सारी दुनिया पैदा होती है. वह सारी दुनिया को संभाले रहता है और आखिर में उसी में सारी दुनिया समा जाती है."

जैसे ताओ का फलसफा उपनिषद् और गीता के फलसफे से मिलता है, उसी तरह ताओ तक पहुँचने का तरीका योग के तरीके से मिलता है.

ताओ तक पहुँचने के लिये बुझांगजू ने योग करने की सलाह दी है. दुनिया की तमाम ऊपरी चीजों से ध्यान हटाकर ताओ पर ध्यान जमाने के लिये उसने आसन और प्रानायाम का उपदेश दिया है.

वह कहता है—

"हर आदमी को चाहिये कि वह किसी नदी के तट पर या किसी एकान्त जगह चला जाय, और अगर वह क्लृप्त से प्रेम करता है और फुरसत का समय क्षुशी से बिताना चाहता है तो वह नये तुले ढंग से सौस अंदर ले, फिर उसे बाहर निकाले और फिर ताजा हवा अन्दर ले." (बुझांगजू—२).

कहा जाता है एक बार कंगफूत्से लाओत्से से मिलने गए. उन्होंने देखा कि लाओत्से मुँह की तरह बेहरेकत पड़े हैं. कंगफूत्से बोड़ी देर यह तमाशा देखते रहे. जब लाओत्से होश में आए तब कंगफूत्से से न रहा गया और उन्होंने लाओत्से से कहा—

"क्या मेरी ढालें मुँह के घोका दे रही थीं या जो कुछ मैंने देखा वह सब था? कभी कभी आप ऐसे दिखाई पड़ रहे थे मानो आप कोई बेबान चीज हों. यों कहिये कि एक लकड़ी के लट्टे की तरह

तिर्रे अलेश्द मेल "ब्रह्म" के बारे में कहा गया है—

"ब्रह्म ही से सारी दुनिया पैदा होती है. वह सारी दुनिया को संभाले रहता है और आखिर में उसी में सारी दुनिया समा जाती है."

जैसे ताओ का फलसफा अलेश्द और किंका के फलसफे से मिलता है, उसी तरह ताओ तक पहुँचने का तरीका योग के तरीके से मिलता है.

ताओ तक पहुँचने के लिये बुझांगजू ने योग करने की सलाह दी है. दुनिया की तमाम चीजों से ध्यान हटाकर ताओ पर ध्यान जमाने के लिये उसने आसन और प्रानायाम का उपदेश दिया है.

वह कहता है—

"हर आदमी को चाहिये कि वह किसी नदी के तट पर या किसी एकान्त जगह चला जाय, और अगर वह क्लृप्त से प्रेम करता है और फुरसत का समय क्षुशी से बिताना चाहता है तो वह नये तुले ढंग से सौस अंदर ले, फिर उसे बाहर निकाले और फिर ताजा हवा अन्दर ले." (बुझांगजू—२).

कहा जाता है एक बार कंगफूत्से लाओत्से से मिलने गये. उन्होंने देखा कि लाओत्से मुँह की तरह बेहरेकत पड़े हैं. कंगफूत्से बोड़ी देर यह तमाशा देखते रहे. जब लाओत्से होश में आए तब कंगफूत्से से न रहा गया और उन्होंने लाओत्से से कहा—

"क्या मेरी ढालें मुँह के घोका दे रही हैं या जो कुछ मैंने देखा वह सब था? कभी कभी आप ऐसे दिखाई पड़ रहे थे मानो आप कोई बेबान चीज हों. यों कहिये कि एक लकड़ी के लट्टे की तरह



“वह दूसरों को पैदा करता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया। उसकी बजह से दूसरी सभी चीजें ज़हूर में आती हैं, उसे किसी ने जाहिर नहीं किया। वह खुद ही पैदा हुआ और खुद ही बाहिर हुआ।” (ताओत्से के बचन)।

गीता में लिखा है—

“वह कभी पैदा नहीं हुआ, उसका कोई शुरू नहीं है, वह सब दुनियाओं का मालिक है। सब देवता और महर्षि उसी से पैदा हुए हैं। इनसानी क्रोस के सब पुरखे, जिनकी नसलों से दुनिया के तमाम लोग पैदा हुए हैं, उस एक परमेश्वर के ही मानस पुत्र हैं यानी उसी के खयाल से पैदा हुए हैं। लोगों के दिलों में जितनी तरंगें उठती हैं, सब उसी से पैदा होती हैं। वही सारी दुनिया का पैदा करनेवाला है।”

“ईश्वर ही सारी दुनिया का पैदा करने वाला और उसे खतम करने वाला है। उसके अन्दर वह सब दुनिया इस तरह पिरोई हुई है जिस तरह एक डोरे के अन्दर माला के दाने। वह ईश्वर ही पानी के अन्दर रस, चाँद सूरज के अन्दर रोशनी, वेदों में ओम, आकाश में आवाज़, आदमियों में मरदानगी, मिट्टी में खुराद, आग में दमक, तपस्वियों का तप और सब जानदारों की जान है। वही सबका असली बीज है.....वह नित्य है और सबसे अलग है।”

कंगफूत्से ने ‘ताओ’ को ‘रास्ता’ कहा है। “पर ताओ रास्ता ही नहीं कुछ और भी है। वह रास्ता भी है और राही भी है। वह एक अनंत रास्ता है। इस रास्ते पर सभी जानदार और बेजान चीजें चलती हैं। किसी जानदार ने उसे बनाया नहीं है क्योंकि वह खुद अपनी ही जान है। वह हर चीज है और कुछ भी नहीं है। और हर चीज का कारन भी है और नतीजा भी। दुनिया की हर चीज ताओ से पैदा होती है और ताओ के ही रास्ते चलती है और अन्त में ताओ में समाती है।” (राधा कृष्णन • चीन बौद्ध धर्म)

नया हल्द भारत और चीन का कलबरी खेल जून सन् १९

“वे दूसरों को पैदा करता है” अरे किसी ने पैदा नहीं किया। उसी की वजह से दूसरी सब चीजें ظهور में आती हैं। अरे किसी ने ظاهر नहीं किया। वे खुद ही पैदा हुए और खुद ही ظاهر हुए। (लाओत्से के बचन)

गीता में लिखा है—

“वे कभी पैदा नहीं हुए” अस्का कौन्सी शुरु नहीं है” वे सब दैत्यों का मालक है। सब दैवता और मेवर्षी उसी से पैदा हुए हैं। इनसानी क्रोस के सब पुरखे, जल्की नसलों से दुनिया के तमाम लोग पैदा हुए हैं। उसी एक प्रमेश्वर के ही मानस पुत्र हैं यानी उसी के खयाल से पैदा हुए हैं। लोगों के दिलों में जितनी तरंगें उठती हैं, सब उसी से पैदा होती हैं। वही सारी दुनिया का पैदा करने वाला है।

“ईश्वर ही सारी दुनिया का पैदा करने वाला अरे खतम करने वाला है। अस्का अन्दर ये सब दुनिया इस तरह पिरोई हुई है जिस तरह एक डोरे के अन्दर माला के दाने। वे ईश्वर ही पानी के अन्दर रस, चाँद सूरज के अन्दर रोशनी, वेदों में ओम, आकाश में आवाज़, आदमियों में मरदानगी, मिट्टी में खुराद, आग में दमक, तपस्वियों का तप और सब जानदारों की जान है। वही सब का असली बीज है.....वह नित्य है और सबसे अलग है।”

कंगफूत्से ने ‘ताओ’ को ‘रास्ते’ कहा है। “पर ताओ रास्ते ही नहीं कुछ और भी है। वह रास्ते भी है और राही भी है। वह एक अनंत रास्ता है। इस रास्ते पर सभी जानदार और बेजान चीजें चलती हैं। किसी जानदार ने उसे बनाया नहीं है क्योंकि वह खुद अपनी ही जान है। वह हर चीज है और कुछ भी नहीं है। और हर चीज का कारन भी है और नतीजा भी। दुनिया की हर चीज ताओ से पैदा होती है और ताओ के ही रास्ते चलती है और अन्त में ताओ में समाती है।” (राधा कृष्णन • चीन बौद्ध धर्म)



नया हिन्दू भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् '५१

लाओत्से ईसा से ६०४ साल पहले पैदा हुए थे और युआंगजू और लिफत्सू ईसा से करीब चार सौ साल पहले. लाओत्से की सब से मशहूर धार्मिक किताब "ताओ-ते-चिंग" है.

ताओ-ते-चिंग और उपनिषदों के दुनियावी विचार बहुत कुछ मिलते जुलते हैं. इतिहासकार इलियट लिखता है—

"जो कोई भी उपनिषद् के फलसफे से वाकिफ है, वह ताओ-ते-चिंग को पढ़ कर यह महसूस किये बगैर नहीं रह सकता कि अगर 'ताओ' की जगह 'ब्रम्ह' शब्द रख दिया जाए तो हर हिन्दू, ताओ धर्म को अपना ही धर्म समझ बैठेगा." (हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म)

ताओ-ते-चिंग और उपनिषद् दोनों में यह बताया गया है कि यह दुनिया नाशवान (फानी) है और सच्चाई सिर्फ एक है और वही सब कुछ है. दुनिया में जा कुछ अदल बदल हम देखते हैं उस सब के पीछे एक बहुत बड़ी ताकत है जिसे जानना नामुमकिन है और जिस तक पहुँचना कठिन है.

"ताओ तक पहुँचना कितना कठिन है! ऐसा मालूम होता है कि दुनिया का सिरजनहार वही है. ताओ कितना पक्क और कितना साफ है! ऐसा मालूम होता है कि वह नित्य है." (लाओत्से के बचन)

"महान ताओ सारी दुनिया पर छाया हुआ है. वह हमारा बायाँ हाथ है और वही हमारा बायाँ हाथ भी है. दुनिया उसी के सहारे चल रही है और वह दुनिया को संभाले हुए है. दुनिया में जो कुछ होता है वह उसी का किया हुआ है, फिर भी वह नाम नहीं चाहता. वह दुनिया से प्रेम करता है पर अपना बइप्पन नहीं जताता. वह इच्छा से आबाद है. हम उसे छोटा भी कह सकते हैं और बड़ा भी. दुनिया की सभी चीजें लौट कर उसी में चली जाती हैं. फिर भी—

नया हल्द भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् ५१.

लाओत्से عيسى سے ۶۰۴ سال پہلے پیدا ہوئے تھے اور چوآنک ز اور لیفٹسو عیسیٰ سے قریب چار سو سال پہلے. لاوتزے کی سب سے مشہور دعاوی کتاب "تاوتے چنگ" ہے.

تاوتے چنگ اور ایشیدر کے بنیادی وچار بہت کچھ ملتے جلتے ہیں. ایتھاس کار ایلیٹ لکھتا ہے—

"جو کوئی بھی ایشید کے فلسفے سے واقف ہے، وہ تاوتے چنگ کو پڑھکر یہ محسوس کئے بغیر نہیں رہ سکتا کہ اگر 'تاوتے' کی جگہ 'برہم' شبد رکھدیا جائے تو ہر ہلدو تاوتے دھرم کو ایلا ہی دھرم سمجھ بیٹھ گا." (ہلدو دھرم اور بودھ دھرم)

تاوتے چنگ اور ایشید دونوں میں یہ بتایا گیا ہے کہ یہ دنیا ناہی وان (فانی) ہے اور سچائی صرف ایک ہے اور وہی سب کچھ ہے. دنیا میں جو کچھ ادل بدل ہم دیکھتے ہیں اُس سب کے پیچھے ایک بہت ہی طاقت ہے جسے جاننا ناممکن ہے اور جس تک پہنچنا کٹھن ہے.

"تاوتے تک پہنچنا کٹھن کٹھن ہے! ایسا معلوم ہوتا ہے کہ دنیا کا سرجن ہار وہی ہے. تاوتے کٹھن پاک اور کٹھن صاف ہے! ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ نعیہ ہے." (لاوتزے کے بچن)

"مہان تاوتے ساری دنیا پر چھایا ہوا ہے. وہ ہمارا دایاں ہاتھ ہے اور وہی ہمارا بایاں ہاتھ بھی ہے. دنیا اُسی کے سہارے چل رہی ہے اور وہ دنیا کو سنبھالے ہوئے ہے. دنیا میں جو کچھ ہوتا ہے وہ اُسی کا کیا ہوا ہے، یہ بھی وہ نام نہیں چاہتا. وہ دنیا سے پرہیز کرتا ہے پر ایلا ہرچھن نہیں چھتا. وہ اچھا سے آزاد ہے. ہم اُسے چھٹا بھی کہہ سکتے ہیں اور ہوا بھی. دنیا کی سبھی چیزیں وہ کر اُسی میں چلی جاتی ہیں. یہ بھی وہ ملک نہیں ہلتا چاہتا." (لاوتزے کے بچن)



नया हिन्दु भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् १९११

आने से चीन के लिये एक नई दुनिया का दरवाजा खुल गया। जिस समय चांगकिएन बल्लतियार में था, उसे यह देख कर अचरब हुआ कि चीन के दक्खिनी सुबों से पटसन और बाँस की बनी हुई चीखें बल्लतियार के बाजारों में बिक रही थीं। पता लगाने पर उसे मालूम हुआ कि यह माल भारत के सौदागर चीन से भारत और अफगानिस्तान के रास्ते बल्लतियार लाते थे।

चांगकिएन ने चीन लौट कर जो रिपोर्ट अपने बादशाह को दी उसमें उसने इन बातों का जिक्र किया और बीच एशिया होकर भारत में चीन तक एक रास्ता खोलने की तजवीज पेश की।

यहाँ यह बताना जरूरी है कि भारत और चीन के बीच हमसे पहले दो तिजारती रास्ते खुले हुए थे। इनमें एक रास्ता आसाम बरमा होकर चीन पहुँचता था और दूसरा समन्दरी रास्ता बंगाल की खाड़ी से होकर चीन के बन्दरगाह तोंकिन तक था। चांगकिएन को जिस रास्ते का पता लगा वह तीसरा रास्ता था। चांगकिएन की रिपोर्ट मिलने पर हान सम्राट ने दुर्गों और दूसरों बीच की कौमों को जीन कर ईसा की पहली सदी तक चीन की पक्खिमी सरहद्द पर भारत और चीन के बीच के इस तीसरे रास्ते को महफूज कर दिया। अब बीच एशिया होकर चीन और भारत का रास्ता मजहबी प्रचारकों, मुसाफ़रों और सौदागरों सब के लिये खुल गया। इस तरह ईसा की पहली सदी में भारत और चीन के बीच बौद्ध यात्रियों का आना जाना शुरू हुआ। यह भी पता चलता है कि ईसा से पाँच छै सौ साल पहले भी भारत और चीन के बीच काफी कलचरी लेन देन था। उपनिशदों, गीता और बौद्ध धर्म की बहुत सी बातें चीन के ताओ धर्म से इतनी मिलती जुलती हैं कि मालूम होता है कि ताओ धर्म के जन्मदाता लाओत्से और खास प्रचारक लिएतू और लुआंगजू पर उनका यानी उपनिशदों, गीता और बौद्ध धर्म का काफी असर पड़ा होगा।

नया हल्द भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् १९११

आने से चीन के लिये एक नई दुनिया का दरवाजा खुल गया जिससे जांग कल्लेन बख्तियार मल्ले, ये ये दिक्कर अजिज हवा के चीन के दक्खिनी सुबों से पटसन और बाँस की बनी हुई चीखें बख्तियार के बाजारों में बिक रही थीं। पता लगाने पर उसे मालूम हुआ कि यह माल भारत के सौदागर चीन से भारत और अफगानिस्तान के रास्ते बख्तियार लाते थे।

जांग कल्लेन ने चीन लौट कर जो रिपोर्ट अपने बादशाह को दी उसमें उसने इन बातों का जिक्र किया और बीच एशिया होकर भारत में चीन तक एक रास्ता खोलने की तजवीज पेश की।

यहाँ यह बताना जरूरी है कि भारत और चीन के बीच हमसे पहले दो तिजारती रास्ते खुले हुए थे। इनमें एक रास्ता आसाम बरमा होकर चीन पहुँचता था और दूसरा समन्दरी रास्ता बंगाल की खाड़ी से होकर चीन के बन्दरगाह तोंकिन तक था। चांगकिएन को जिस रास्ते का पता लगा वह तीसरा रास्ता था। चांगकिएन की रिपोर्ट मिलने पर हान सम्राट ने दुर्गों और दूसरों बीच की कौमों को जीन कर ईसा की पहली सदी तक चीन की पक्खिमी सरहद्द पर भारत और चीन के बीच के इस तीसरे रास्ते को महफूज कर दिया। अब बीच एशिया होकर चीन और भारत का रास्ता मजहबी प्रचारकों, मुसाफ़रों और सौदागरों सब के लिये खुल गया। इस तरह ईसा की पहली सदी में भारत और चीन के बीच बौद्ध यात्रियों का आना जाना शुरू हुआ। यह भी पता चलता है कि ईसा से पाँच छै सौ साल पहले भी भारत और चीन के बीच काफी कलचरी लेन देन था। उपनिशदों, गीता और बौद्ध धर्म की बहुत सी बातें चीन के ताओ धर्म से इतनी मिलती जुलती हैं कि मालूम होता है कि ताओ धर्म के जन्मदाता लाओत्से और खास प्रचारक लिएतू और लुआंगजू पर उनका यानी उपनिशदों, गीता और बौद्ध धर्म का काफी असर पड़ा होगा।



ننھا ہند भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् १९

مौरیہ راج کے پتن کے بعد ہندستان کئی تکرورں مہں بت ڈیا۔ اسی سے بختیار کے یونانیوں نے بھارت پر چوہائی کی اور دیکھتے دیکھتے پنجاب پر قبضہ کر لیا۔ اِن یونانیوں نے بھارتی کلچر کو اپنا لیا اور بھارتی سہیچا، بھارتی فلسفے اور بھارتی کلا کی کہانی بچھ ایشیا کے قبیلوں کو جاگر سدائی۔ کچھ دسوں بعد یورپ کا بھی پتن ہوا اور شک لوگ بچھ ایشیا سے اتر پنجاب مہں بس گئے۔ بچھ ایشیا کے اندر آکسس ندی کی کہانی مہں یوچی جات نے ایذا راج قائم کیا۔ اُنہوں کی ایک جات کشان کے نام سے مشہور ہے۔ عیسائی سے ایک صدی پہلے اسی کشان جاتی نے آکسس سے لے کر بئال تک ایک مہان پھاراج قائم کیا تھا۔

بچھ ایشیائی دیسوں سے بھارت کے تعلقات دن پر دن بڑھتے جا رہے تھے۔ دوسری طرف چھبے بھارت مہں موریہ سمرانیوں نے سارے دیس کو اپنے ادھوں کر کے پورے بھارت کو ایک کر لیا تھا اسی طرح چین مہں سن خاندان نے وہاں کے سب راجوں کو ملا کر سارے چین پر ایک حکومت قائم کی اور ایک وشال چینلی قوم کی نہو ڈالی۔

مہسوں سے قریب ۲۰۰ سال پہلے سن راج ٹھرانے کی جگہ ہان راج کھرانے لے۔ ہان بادشاہ چین کی سورنشا کے لئے پریشان تھے۔ اُن کو سب سے زیادہ خطرہ ہون جاتی سے تھا۔ ہون قبیلے چین کی پچھمی سرحد پر دھتے تھے۔ ہون کے مقابلے کے لئے ہان بادشاہ نے بھارت کی اتر پچھمی سرحد پر دھلے والے یوچی جاتی کے راجہ سے مدد لینا طے کیا۔ اِس مطلب سے اُس نے چانگ کٹھن نام کے 'پے ایک نوت کو آکسس کی کہانی بھینجا۔

چانگ کٹھن اپنے مشق مہں لاساب نہوں ہوا۔ لیکن اُسکے

( ۷۷۷ )  
 بیچ ایشیائی دسوں سے भारत کے تال्लुकात दिन पर दिन बढ़ते जा रहे थे. दूसरी तरफ जैसे भारत में मौर्य सम्राटों ने सारे देस को अपने अधीन करके पूरे भारत को एक कर लिया था वसी तरह चीन में सिन खानदान ने वहाँ के सब राज्यों को मिला कर सारे चीन पर एक द्दुमत कायम की और एक विशाल चीनी क्रौम की नींव डाली.

ईसा से करीब २०० साल पहले सिन राजघराने की जगह हान राजघराने ने ली. हान बादशाह चीन की सुरक्षा के लिये परेशान थे. उनको सबसे ज्यादा खतरा हुआ जाति से था. हुआ कबीले चीन की पच्छिमी सरहद पर रहते थे. हुआ के मुकाबले के लिये हान बादशाह ने भारत की उत्तर पच्छिमी सरहद पर रहने वाले युचि जाति के राजा से मदद लेना तय किया. इस मतलब से उसने चांगकिएन नाम के अपने एक दूत को आक्सस की घाटी मेंबा.

चांगकिएन अपने मिशन में कामयाब नहीं हुआ. लेकिन उसके



नया हिन्दु भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् '५१

चीन गए, उस समय वहाँ ताओ धर्म और कंगफूत्से का मजहब फैल चुका था. चीनी कलचर और सभ्यता काफ़ी तरक्की कर चुकी थी

चीन और भारत के बीच भारत के बौद्ध भिक्षुओं ने जो कलचरी नाता जोड़ा वह आज तक क्लायम है. उनकी खिन्दगी, उनके त्याग और उनकी क्रूरबानी ने उन्नीस सौ साल पहले भारत और चीन की एकता की जो नींव डाली. उस पर आज एक शानदार इमारत खड़ी है. कुदरत की आफ़तें और राजकाज के तूफ़ान उस इमारत को नहीं गिरा सके. वह हमें अब भी आपस के प्राचीन कलचरी सम्बन्ध की याद दिलाती रहती है.

भारत और चीन के बीच बौद्ध सुसाफ़ियों का आना जाना किस तरह शुरू हुआ, इसका समझने के लिये एशिया के उस समय के अंतरक्रौमी सम्बन्ध पर एक नज़र डालनी होगी.

मिकदर के हमले के बाद समूचे एशिया में भारतीय सभ्यता का आदर होने लगा था और एशिया की दूसरी क्रीमों पर भारतीय सभ्यता का असर पड़ना शुरू हो गया था.

सम्राट अशोक के समाने में ईसा से ढाई सौ साल पहले भारत का कलचरी सम्बन्ध एशिया के दूर दूर देशों से हुआ. सम्राट अशोक बौद्ध मजहब के मानने वाले थे. उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिये भारत की सरहद पर के सब देशों में भेजा था. उनके दूत मिश्र, सीरिया (शाम) और मक़दूनिया तक गए थे. पूरब में बहुत से बौद्ध भिक्षु जावा और सुमात्रा तक गए. बरमा में बौद्ध धर्म का प्रचार इन्हीं भिक्षुओं ने किया. लंका में भी अशोक के मजहबी दूतों ने गौतम बुद्ध का संदेश पहुंचाया. इस तरह अशोक के राज काल में एशिया में भारत का अन्तर-क्रौमी सम्बन्ध काफ़ी गहरा हो गया था.

भारत और चीन का कलचरी मेल जून सन् '५१  
चीन के अस से रहा. ताओ धर्म और कलकुत्से का मजहब फैल चुका था. चीनी कलचर और सभ्यता काफ़ी तरक्की कर चुकी थी.

चीन और भारत के बीच भारत के बौद्ध भिक्षुओं ने जो कलचरी नाता जोड़ा वह आज तक क्लायम है. उनकी खिन्दगी, उनके त्याग और उनकी क्रूरबानी ने उन्नीस सौ साल पहले भारत और चीन की एकता की जो नींव डाली. उस पर आज एक शानदार इमारत खड़ी है. कुदरत की आफ़तें और राजकाज के तूफ़ान उस इमारत को नहीं गिरा सके. वह हमें अब भी आपस के प्राचीन कलचरी सम्बन्ध की याद दिलाती रहती है.

भारत और चीन के बीच बौद्ध सुसाफ़ियों का आना जाना किस तरह शुरू हुआ, इसका समझने के लिये एशिया के उस समय के अंतरक्रौमी सम्बन्ध पर एक नज़र डालनी होगी.

मिकदर के हमले के बाद समूचे एशिया में भारतीय सभ्यता का आदर होने लगा था और एशिया की दूसरी क्रीमों पर भारतीय सभ्यता का अर पड़ना शुरू हो गया था.

सम्राट अशोक के समाने में ईसा से ढाई सौ साल पहले भारत का कलचरी सम्बन्ध एशिया के दूर दूर देशों से हुआ. सम्राट अशोक बौद्ध मजहब के मानने वाले थे. उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिये भारत की सरहद पर के सब देशों में भेजा था. उनके दूत मिश्र, सीरिया (शाम) और मक़दूनिया तक गए थे. पूरब में बहुत से बौद्ध भिक्षु जावा और सुमात्रा तक गए. बरमा में बौद्ध धर्म का प्रचार इन्हीं भिक्षुओं ने किया. लंका में भी अशोक के मजहबी दूतों ने गौतम बुद्ध का संदेश पहुंचाया. इस तरह अशोक के राज काल में एशिया में भारत का अन्तर-क्रौमी सम्बन्ध काफ़ी गहरा हो गया था.



## भारत और चीन का कलचरी मेल

( भाई आनन्द वर्मा )

सन् ६५ ईसवी में एक चीनी सम्राट की दावत पर गौतम बुद्ध का संदेस लेकर पहला बौद्ध भिक्षु चीन पहुँचा। उस समय से इन दोनों देशों में कलचरी सम्बन्ध तेजी के साथ बढ़ने लगा और ग्यारह सौ साल तक भारत और चीन के बीच बौद्ध यात्रियों का ताँता बँधा रहा। इन्हीं ग्यारह सौ बरस में चीन की धरती पर बौद्ध मजहब और बौद्ध कला दोनों छा गए। इस खरसे में भारत और चीन के बीच जो कलचरी लेन देन हुआ उसके निशान आज भी चीनी और भारतीय सिन्दगी में मौजूद हैं।

बौद्ध मजहब ने चीन को जिस तरह सर किया, वह दुनिया के धर्मों के इतिहास में बेमिसाल है। बौद्ध धर्म की इस जीत को रूहानी जीत ही कहा जा सकता है। इतिहासकार विलहेल्म लिखता है—

“बौद्ध मजहब ने चीन पर पूरी रूहानी फ़तह हासिल की। न सिर्फ चीनी शिल्पकारी (बुतसाजी) पर या एक मानी में चीनी नक्काशी पर ही उसका असर पड़ा बल्कि चीन की समूची हिमायी सिन्दगी पर बौद्ध धर्म छा गया।” ( चीनी सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास—सका २४५ )

जबकि योरप के धार्मिक प्रचारकों ने राजनैतिक मदद से और ज्यादातर राजनैतिक मतलबों के लिये पूरब के दूर दूर देशों में ईसाई मत का प्रचार किया, भारत के बौद्ध प्रचारकों ने बग़ैर किसी सिवासी मदद के या सिवासी मतलब के चीन जाकर बौद्ध धर्म का संदेश चीनी जनता तक पहुँचाया। जिस समय भारत से बौद्ध भिक्षु

## भारत और चीन का कलचरी मेल

( भाई आनन्द वर्मा )

सन् १० ईसवी में एक, चैनी सम्राट की دعवत पर कुनमन्द का सलदिस ले कर पैला बूदह बेकशु चोन पैलन्जा. उस से इन दुनोन दिसोन में कलचरी संबलदह तेजो ने सातह पैरले लेा और क्लारा सु साल तक भारत ओर चोन के बेज बूदह यात्रियों का तांता बल्लहा रलहा. इन्हें क्लारा सु बरस में चोन की देवोती पर बूदह मल्लह ओर बूदह क्ला दुनोन चला क्ले. इस एरसे में भारत ओर चोन के बेज जो कलचरी लेन देन हु. उस के नलान आ भी चैनी ओर भारती زندगी में मौजूद हैं.

बूदह मल्लह ने चोन को जिस तरह सर किया, वह दुनिया के देहमों के इतिहास में बेमल है. बूदह देहम की इस जीत को (रुहानी जीत ही कहा जा सकता है. इतिहासकार विलहेल्म लिखता है—

“बूदह मल्लह ने चोन पर पूरी (रुहानी) फ़तह हासिल की. न सिर्फ चैनी शिल्पकारी (बुतसाजी) पर या एक मानी में चैनी नक्काशी पर ही उसका अर पड़ा बल्कि चोन की समूची दमाफी زندगी पर बूदह देहम चला क्ले.” ( चैनी सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास—सल्लह २२० )

जबकि योरपा के देहामक प्रचारकों ने राज नेतक मद से ओर ज्यादातर राज नेतक मतलबों के ली देरुप के दूर दूर दिसोन में मसाली मत का प्रचार क्लेा. भारत के बूदह प्रचारकों ने बल्लर कसी सलसी मदद या सलसी मतलब के चोन चला बूदह देहम का सलदिस चैनी जल्ला. तक पैलन्जा. जिस से भारत से बूदह बेकशु



नया हिन्दू शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन जून सन् '५१

है कि माह में कम से कम २४ घंटे हम में से हर भाई खेती के काम में दे ही।

'सर्वोदय का कौँका हमारे सर पर टूट पड़ने' की क्रिस्त पर खुरा होते हुए सम्मेलन के इन्तजामकार ने सबका शुक्रिया अदा किया और अपनी स्वामियों की माफ़ी चाही। इसके बाद प्रार्थना हुई।

प्रार्थना खत्म होने पर अपने भाशन में विनोबा जी ने कहा कि सरकार में जो दोष है वह साये की शकल में जनता का ही दोष है। हमारा काम है जनता को तालीम दें। लेकिन भगवान से यह प्रार्थना हमेशा बनी रहे कि हे भगवान ! मेरी इच्छा सिर्फ़ मुक्त पर ही चले और उस इच्छा का बोफ़ किसी पर लादा नहीं जाए। अगर वह इच्छा किसी का पसंद हो तो अपने तरीके से यह उस पर चले। यह विचार कि कलौ चीख तो हो ही जानी चाहिये—इस में हिंसा भरी है। इसमें महायुद्ध के बीज हैं। किसी तरह के दबाव में हमारा यकीन नहीं होना चाहिये, तभी सदा बनी रहने वाली शक्ति हमारे अन्दर पैदा हो सकती है। पहले दिन के पाँचों सुभावों का उन्होंने एक लाइन में रख दिया—

अन्तः शुद्धिः, बहिः शुद्धिः, अमः, शान्तिः, समर्पणम्।

यानी १. शुद्ध ब्योहार आन्दोलन २. भंगी काम और ग्राम सफ़ाई ३. खेती व अम निरठा, ४. शान्ति सेना और ५. मृत गंडी दान—के पंचपहलू प्रोग्राम को अमल में लाएँ।

विनोबा जी का भाशन पूरा होने पर सर्वोदय समाज सम्मेलन की कारवाई खत्म हो गई। सम्मेलन के चार हजार मेम्बरों में से ( जिनमें सबा सौ विदेस के हैं ) करीब आठ सौ शिवरामपल्ली आये। ये सब को खुशी थी कि विनोबा जी की बानी सुनने को मिली। अब यह तो आगे चलकर ही पता चलेगा कि सेक लोगो ने जो सबक सीखा उसे वह कहाँ तक अपनी किन्दगी का हिस्सा बना सके और देस को उनकी जात से सचमुच कितना फायदा हुआ।

नया हलद शहोराम पल्ली सर्वोदय सम्मेलन जून सन् '५१

है कि माह में कम से कम १२ किल्ले हम में से हर भाई किल्ले के काम में दे ही।

'सर्वोदय का चहिलका हमारे सर पर टूट पड़ने' की क्रिस्त पर खुरा होते सम्मेलन के अन्तजाम करने सब का शक़ीर अदा किया और अपनी खामियों की معافی चाही। अके बाद प्रार्थना हुनी।

प्रार्थना खत्म होने पर अके भाशन में विनोबा जी ने कहा कि सरकार में जो दोष है वह साँने की शकल में जनता का ही दोष है। हमारा काम है जनता को तालीम दें। लेकिन भगवान से यह प्रार्थना हमेशा बनी रहे कि हे भगवान ! मेरी इच्छा सिर्फ़ मुक्त पर ही चले और अँस अँस का बोज़े किसी पर लादा नहूँ जाँने। अगर वह अँस किसी को पसंद हो तो अके तरीके से वह अँस पर चले। यह अँस पर चले तो हो ही जानी चाहँने— अँस में हलसा बेरी है। अँस में म्हायिदे के बिज हँन। किसी तरह के दबाव में हलसा यकीन नहूँ होना चाहँने, तभी सदा बनी रहने वाली शक़ी हलसा अँदर पैदा हो सकती है। पहले दान के पान्चों सज्जाओं को अँहों ने अँक लाँन में रक़्द दिया—

अन्तः शुद्धिः, बहिः शुद्धिः, अमः, शान्तिः, समर्पणम्।

यानी १. शुद्ध ब्योहार अँदरान २. भँगी काम और ग्राम सफ़ाई ३. खेती व शँर नशँता ४. शान्ति सेना और ५. मृत गँडी दान—के पँच पँहलू प्रोग्राम को अँमल में लाँन।

विनोबा जी का भाशन पूरा हुने पर सर्वोदय समाज सम्मेलन की काराँगी खँतम हुनी। सम्मेलन के चार हज़ार म्मबरों में से ( जिन में सबा सौ बँदिस के हँन ) करीब आँह सौ शहोराम पल्ली आँने। सब को खुशी तँनी कि विनोबा जी की बानी सुनँने को मली। अब यह तो आँगे चलकर ही पता चलेगा कि सेक लोगो ने जो सबक सीखा उसे वह कहाँ तक अपनी जिन्दगी का हँस्सा बना सँके और देस को उनकी जाँत से सचमुच कितना फायदा हुआ।



'विवेकयुक्त' (समझदार) समता का विकास चाहिये. मेरे जैसे को भी लगता है कि समता के दायरे में मुझे भी करने को काफ़ी है. हम मान रखें कि एक एक गुण के विकास में समाज के सैकड़ों हजारों साल लग जाते हैं. अगर समता के विकास में विवेक न रहने का दोषा रह गया तो फिर विवेक गुण का विकास करने के लिये इनसान-नियत के सैकड़ों हजारों साल फ़ज़ल जाएँगे. सूरज को देखिये, उसमें कितनी गर्मी है ? तभी तो हम सबकी गर्मी १८ डिग्री रह जाती है. इस समता के लिये हम सबको बहुत कुछ करना है. इस गुण का विकास एक दो दिन में नहीं होने वाला है. चौथे दिन का दोपहर तक का वक्त तो राजनीति वाली चर्चा में निकल गया. दूसरे वक्त थोड़ी-थोड़ी चर्चा कई चीज़ों पर हुई. शरीर श्रम ( जिस्मानी मेहनत ) से संस्थाएं बनाना, सत्याग्रह का स्थान, हरिजन सेवा का स्वरूप, और शान्ति सेना.

बहुत सख्तम होने पर जाजू जी ने सभापति की हैसियत से आखिरी भाशन दिया. उन्होंने कहा कि स्वराज के बाद हमारा और सरकार का मकसद एकसा हो जाता लेकिन काम करने के तरीके को बजह से सरकार हमारे खिलाफ़ दिखाई देती है. जिनना होना चाहिये वतना सहयोग होना मुसकिन नहीं दिखाई देता. आगे उन्होंने बताया कि सर्वोदय समाज का नाम लेकर किसी को काम नहीं करना है. बहुत से माइनों की ऐसी इच्छा मालूम होती है कि सब सेवा सब काम लठाले. शिकायत होती है कि मार्ग दर्शन या रोशनी नहीं मिलती. लेकिन असल चीज़—काम—पर किसी का ध्यान नहीं जाता. 'लोड' चाहने वाले भी अपनी इच्छा के मुताबिक़ काम करने की 'लोड' चाहते हैं, यह कैसे मुसकिन हो ? 'सर्वोदय' और 'हरिजन' पत्र निकलते हैं. अपने काम की सूचना उनमें भेजिये, दूसरों का इससे फ़ायदा होगा. करने को काम तो बेहद पड़ा है. क्वाई मंडल का काम, समय सेवा के सारे काम, शरीर-श्रम बरौता. मेरा सुझाव

विवेक यक्त (समझदार) समता का विकास चाहिये. मेरे जैसे को भी लगता है कि समता के दायरे में मुझे भी करने को काफ़ी है. हम मान रखें कि एक एक गुण के विकास में समाज के सैकड़ों हजारों साल लग जाते हैं. अगर समता के विकास में विवेक न रहने का दोषा रह गया तो फिर विवेक गुण का विकास करने के लिये इनसान-नियत के सैकड़ों हजारों साल फ़ज़ल जाएँगे. सूरज को देखिये, उसमें कितनी गर्मी है ? तभी तो हम सबकी गर्मी १८ डिग्री रह जाती है. इस समता के लिये हम सबको बहुत कुछ करना है. इस गुण का विकास एक दो दिन में नहीं होने वाला है. चौथे दिन का दोपहर तक का वक्त तो राजनीति वाली चर्चा में निकल गया. दूसरे वक्त थोड़ी-थोड़ी चर्चा कई चीज़ों पर हुई. शरीर श्रम ( जिस्मानी मेहनत ) से संस्थाएं बनाना, सत्याग्रह का स्थान, हरिजन सेवा का स्वरूप, और शान्ति सेना.

बच्चों खत्म होने पर जाचुजी ने सभापति की حیثیت سے آخری بھاشن دیا. انھوں نے کہا کہ سولاج کے بعد ہمارا اور سرکار کا مقصد ایک سا ہو جاتا لیکن کام کرنے کے طریقے کی وجہ سے سرکار ہمارے خلاف دکھائی دیتی ہے. جیٹھا ہونا چاہئے 'انڈا سپروگ' ہونا ممکن نہیں دکھائی دیتا. آگے انھوں نے بتایا کہ سرورڈے سماج کا نام لے کر کسی کو کام نہیں کرنا ہے. بہت سے بھائیوں کی ایسی اچھا معلوم ہوتی ہے کہ سرورڈے سلگے سب کام اٹھالے. شکایت ہوتی ہے کہ مارگ درشن یا روشنی نہیں ملتی. لیکن 'اصل' چوڑے — کام — پر کسی کا دھیان نہیں جاتا. 'لہڈ', 'چاٹلے' والے بھی اپنی اچھا کے مطابق کام کرنے کی 'لہڈ', 'چاٹلے' چاہتے ہیں. یہ کیسے ممکن ہو ؟ 'سرورڈے' اور 'هریجن' پتر نکلتے ہیں. اپنے کام کی سوچنا ان میں بھیجتے 'درسروں' کا اس سے فائدہ ہوگا. کرنے کو کام تو بے حد پڑا ہے. دعائی معلول کا کام 'سنگر' سہوا کے سارے کام 'شریر شرم' وغیرہ. سہوا سنجھا



महेशादत्त मिश्र (इलाहाबाद) शरीक हुए। इसी बीच काका साहब के बजाय ( जिनको बाहर जाना था ) सभापति की जगह भाई श्री कृष्ण दास जानू ने ली। माली बराबरी के बाद नई तालीम का विषय भाई आर्यनाथकम ने छेड़ा जिस में भाई जाकर हसन (हैदराबाद), करन भाई ( बनारस ) बगैरा शरीक हुए। इसके बाद भाई धीरेन्द्र मजूमदार ने एक गरम बोज पर चर्चा शुरू की— राजनीति की तरफ रुख। उन्होंने कहा कि हम देहाती जनता का संगठन कर उसे नैपथ्य करें ताकि ग्रामराज क्रायम किया जा सके। भाई शंकरराव देव ने जोरदार लफ्जों में कहा कि 'बल्लो दिल्ली' की जगह हमारा नारा होना चाहिये 'बल्लो देहात'। हम वोटरों को तालीम दें। एक वक्त्र आएगा कि आप के सम्मेलनों में प्रधान मंत्री का संदेश न आकर वह खुद आएँगे। इस विषय की चर्चा सम्मेलन के चौथे और आखरी रोज भी रही जिस में भाई लक्ष्मी बाबू ( बिहार ), भाई वैद्यनाथ चौधरी ( बिहार ), बाबा राघवदास जी, भाई श्री धर थत्ते ( बर्घो ), भाई बैकट राव ( गोरखपुर ) और दादा बर्मोधिहारी ( नागपुर ) बगैरा ने हिस्सा लिया।

तीसरे दिन की प्रार्थना में बिनोबा जी ने एक बहुत ही असरदार भाषान दिया जिसमें माली बराबरी के मसले को लिया। उन्होंने कहा कि हजारों लाखों बरस से हम यह सीखते चले आ रहे हैं कि दिया धर्म का मूल है। हमारे यहाँ दिया धर्म यानी कर्त्तव्य ( कर्ज ) है और समत्व ( बराबरी ) ब्रह्म लक्ष्य ( मकसद ) है। इधर सौ पचास बरस से समता की बात चल रही है। लेकिन दया का विरोध करके समता नहीं क्रायम करनी है। अब हम यह महसूस करने लग गए कि समता क्रायम करना सच्ची दया है। हमारे यहाँ ब्रह्म निर्बान अर्थात् पूर्ण समता ( पूरी बराबरी ) की प्राप्ति के व्यक्तिगत इत्यय (जाती मकसद) को माना गया था। लेकिन समाजी रूप से इस तरफ़

महेश दत्त मशर (अलहाद) शरीक हुये। इसी बीच काका साहब के बजाये ( जल्को बाहर जाता था ) सभा पति की जगह भाई श्रीकृष्ण दास जाजो ने ली। माली बराबरी के बाद नई तालिम का र्थ भाई बहाली आये नाथक ने जेधेबा, जस मेल बहाली जेधेर हसन (जहदाबाद), कर्न बहाली (बलारस) वधेर शरीक हुये। अके बाद बहाली देधेरिल्लेर मजुमदार ने अक करम जेधेर बर जेधेबा शुरुष की—राज न्है की तरफ र्ख। अन्होने कहा के हम देहाती जल्ला का सल्लेकन करे तेबा करीस ताके करम राज कालम कया जा सके। बहाली सल्लेर राओ देवो ने जेद दार लफ्जो मेल कहा के 'जलोदनी' की जेके हमारा नेचे हुना जेधेबा, जलो देवोत'। हम वोटरों को तालिम दीस। अक र्कत अन्है के अप के सम्मेलन मेल प्रदेहान सल्लेर का सल्लेसे न्ह ओर 'खुद अन्हैके'। इस र्थे की जेधेबा सल्लेर के जेधेबा ओर अखी (जो न्है र्थी जस मेल बहाली लक्ष्मी बाबो (बहार) बहाली हुद नाथे जेधेबा 'बहार') बाबा राधोदास जी, बहाली शरी देधेर तेहे (वोदेहा), बहाली विल्लक राओ (कोरकोधोर) ओर दादा देधेमा देधेकारी (नाथोर) वधेर ने हसे लया।

तेसरें दिन की प्रार्थना मेल वनोबा जी ने अक बेहत ही अठ्ठार बहालन दिया जस मेल माली बराबरी के मसल्ले को लया। अन्होने कहा के हजारों लाखों बरस से हम ये सल्लेके जले आये हेल के दिया देवोम का मूल है। हमारे येहा दिया देवोम येल्नी कोर्तये (फुर्ज) है ओर सल्लेर (बराबरी) बरम लक्ष्मे (मकसद) है। अदर सो पज्जस बरस से सल्ले की बात जल र्थी है। लोहन दिया का वोदेहा के सल्ले न्हैल कालम करी है। 'ब' हम ये मल्लेस कोर्ने लगे के सल्ले कालम करी सज्जी दिया है। हमारे येहा बरम नरोन अर्थात योन सल्ले (योरपी बराबरी) की प्रार्थी के विल्लकी लत देधेके (जाती मकसद) को माना कया तेहा लोहन सज्जी (रूप से इस



दूसरे दिन प्रार्थना के बाद अपने भाशन में बिनोबा जी ने काजकर्त्ताओं का ध्यान तीन खतरों की तरफ खींचा जिनसे खादी के काम में रुकावट पड़ रही है. एक तो है खेती के लिये शलत मोह. हम खेती करें; जिसमानी मेहनत में भरोसा रखें लेकिन खादी को नहीं भूलें. क्योंकि बगावत की निशानी खेती नहीं हो सकती, चरखा ही हो सकता है. दूसरी चीज है समय सेवा की तरफ मुकाब. यह भी ठीक है. लेकिन हमें यह हर दस ध्यान में रखना चाहिये कि हमारा समय सेवा चर्खे को केन्द्र मानकर चलनी चाहिये और तभी वह कामयाबी से चलेगी. तीसरा खतरा है खादी के लिये नये औजारों की खोज. इसके पीछे हारी हुई तबियत सी मालूम होती है. हम साधन या औजार जरूर ढूँढ़ें लेकिन यह खयाल रहे कि हमारा आचार चर्खा ही है. बिनोबा जी ने बिनती के साथ कहा कि आप सब उमे ध्यान पूर्वक पढ़ें जो महात्मा जी ने खादी के बारे में लिखा और कहा है. खादी उनकी महिमा है. अहिंसा के लिये तो वह निमित्त (जरिया) मात्र है लेकिन खादी के बारे में ऐसा नहीं. अगर उन्हें खादी की बात नहीं सूझी होती तो दूसरे किसी को सहज ही यह बात सूझने वाली नहीं थी.

सम्मेलन में बर्चा का सबसे खास विशय 'आर्थिक समानता' (माली बराबरी) था. सदर काका साहब ने सुझाव रखा कि समानता की जगह हमें न्याय (इनसाफ) लफ्ज इस्तेमाल करना चाहिये और यही बात भाई हरिभाऊ उपाध्याय ने कही जिन्होंने इस बर्चा को शुरू किया. उन्होंने इस सिलसिले में किशोर लाल भाई का एक लेख पढ़ कर सुनाया और माली इनसाफ के लिये शरीर श्रम जरूरी बताया. इस विशय की बहस में डाक्टर ओम प्रकाश गुप्त (बर्चा), भाई राम चन्द्र राव (नास्तिककेन्द्र, बैजबाबा, आंध्र), प्रोफेसर ठाकुर दास बंग (बर्चा), भाई हृदय नारायण चौबरी (बिहार), बहल गौरा देवी (पंजाब) और प्रोफेसर

दूसरे दिन प्रार्थना के बाद अपने भाशन में बिनोबा जी ने कर्त्ताओं का ध्यान तीन खतरों की तरफ कर्त्ताओं से खादी के काम में रुकावट पड़ रही है. एक तो है कर्त्ता के लिये शलत मोह. हम कर्त्ता करें; जिसमानी मेहनत में भरोसा रखें लेकिन खादी को नहीं भूलें. क्योंकि बगावत की निशानी कर्त्ता नहीं हो सकती, चरखा ही हो सकता है. दूसरी चीज है समय सेवा की तरफ मुकाब. यह भी ठीक है. लेकिन हमें यह हर दस ध्यान में रखना चाहिये कि हमारा समय सेवा चर्खे को केन्द्र मानकर चलनी चाहिये और तभी वह कामयाबी से चलेगी. तीसरा खतरा है खादी के लिये नये औजारों की खोज. इसके पीछे हारी हुई तबियत सी मालूम होती है. हम साधन या औजार जरूर ढूँढ़ें लेकिन यह खयाल रहे कि हमारा आचार चर्खा ही है. बिनोबा जी ने बिनती के साथ कहा कि आप सब उमे ध्यान पूर्वक पढ़ें जो महात्मा जी ने खादी के बारे में लिखा और कहा है. खादी उनकी महिमा है. अहिंसा के लिये तो वह निमित्त (जरिया) मात्र है लेकिन खादी के बारे में ऐसा नहीं. अगर उन्हें खादी की बात नहीं सूझी होती तो दूसरे किसी को सहज ही यह बात सूझने वाली नहीं थी.

सम्मेलन में चर्चा का सब से खास विशय 'आर्थिक समानता' (माली बराबरी) था. सदर काका साहब ने सुझाव रखा कि समानता की जगह हमें न्याय (इनसाफ) लफ्ज इस्तेमाल करना चाहिये और यही बात भाई हरिभाऊ उपाध्याय ने कही जिन्होंने इस बर्चा को शुरू किया. उन्होंने इस सिलसिले में किशोर लाल भाई का एक लेख पढ़ कर सुनाया और माली इनसाफ के लिये शरीर श्रम जरूरी बताया. इस विशय की बहस में डाक्टर ओम प्रकाश गुप्त (बर्चा), भाई राम चन्द्र राव (नास्तिककेन्द्र, बैजबाबा, आंध्र), प्रोफेसर ठाकुर दास बंग (बर्चा), भाई हृदय नारायण चौबरी (बिहार), बहल गौरा देवी (पंजाब) और प्रोफेसर



इस बहस में भी भाई सिद्ध राज ठड्डा (राजस्थान), भाई मंगल लाल शाह (बीजापुर), भाई सेठ कमल नयन बजाज (बम्बई), भाई लक्ष्मी नारायण (बिहार), भाई श्री मन नारायण अग्रवाल (बर्धा) और भाई महावीर प्रसाद पोद्दार (गोरखपुर) ने शिरकत की। उनके बाद विनोबा जी ने इस सवाल पर अपने विचार पेश किये। उन्होंने कहा कि इस सिलसिले में मुझे सिर्फ तीन सुझाव रखना हैं जो मैं अकसर इससे पहले भी बता चुका हूँ—(१) खेती में सालदारों और रोजीना मजदूर को मजदूरी अनाज की शकल में दी जाये, (२) सरकार को चाहिये कि लगान नक़्द न वसूल कर के अनाज के रूप में ले, (३) सरकार को खादी काम अपने हाथ में उठा लेना चाहिये क्योंकि हमारे देस की मिलें कुल मिलाकर भी आदमी ग्यारह गख से ज्यादा कपड़ा नहीं तैयार कर पाती हैं, लेकिन जरूरत कम से कम १६ गख की है।

अनाज के बाद शुद्ध व्योहार आन्दोलन का विशय लिया गया जिस की शुरुआत श्री श्रीकृष्ण दास जी जाज ने की। शुद्ध व्योहार आन्दोलन का खयाल श्री किशोर लाल मशरूवाला ने 'हरिजन' में पेश किया है और पिछले महीने के 'नया हिन्द' में उनका वह लेख छप चुका है। जाज जी ने बताया कि इस आन्दोलन के मुताबिक हम लोग छोटे छोटे इलाकों में काम शुरू कर दें। बर्धा में कुछ शुरुआत कर भां दी गई है। इस बर्धा में भाई फतह चन्द 'हरिजन' (पंजाब), भाई कमल नयन बजाज (बम्बई), भाई रिशभदास रांका (बर्धा) बहन सद्गुला सारा भाई (दिल्ली), भाई मनमोहन चौधरी (उड़ीसा), भाई भीमराव देशमुख (नागपुर), भाई हरिशचन्द्र वैद्य (देहरादून) ने हिस्सा लिया। यह बर्धा तीसरे दिन भी चली। इसके बाद मुझासी खुद पुराई (प्रादेशिक स्वयं पूनता) के लिये दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के सेक्रेट्री भाई मोटुंगी सत्यनारायण ने अपनी की।

अस बहस में भी भाई सहराज देवदा (राजस्थान), भाई मंगल लाल शाह (देवदा पुर), भाई सैत कल नयन बजाज (बिस्नू), भाई लक्ष्मी नारायण (बर्धा), भाई श्री मन नारायण अग्रवाल (गोरखपुर) ने शिरकत की। उनके बाद विनोबा जी ने इस सवाल पर अपने विचार पेश किये। उन्होंने कहा कि इस सिलसिले में मुझे सिर्फ तीन सुझाव रखना हैं जो मैं अकसर इससे पहले भी बता चुका हूँ—(१) खेती में सालदारों और रोजीना मजदूर को मजदूरी अनाज की शकल में दी जाये, (२) सरकार को चाहिये कि लगान नक़्द न वसूल कर के अनाज के रूप में ले, (३) सरकार को खादी काम अपने हाथ में उठा लेना चाहिये क्योंकि हमारे देस की मिलें कुल मिलाकर भी आदमी ग्यारह गख से ज्यादा कपड़ा नहीं तैयार कर पाती हैं, लेकिन जरूरत कम से कम १६ गख की है।

अज के बाद शुद्ध व्योहार आन्दोलन का विशय लिया गया जिस की शुरुआत श्री श्रीकृष्ण दास जी जाज ने की। शुद्ध व्योहार आन्दोलन का खयाल श्री किशोर लाल मशरूवाला ने 'हरिजन' में पेश किया है और पिछले महीने के 'नया हिन्द' में उनका वह लेख छप चुका है। जाज जी ने बताया कि इस आन्दोलन के मुताबिक हम लोग छोटे छोटे इलाकों में काम शुरू कर दें। बर्धा में कुछ शुरुआत कर भां दी गई है। इस बर्धा में भाई फतह चन्द 'हरिजन' (पंजाब), भाई कमल नयन बजाज (बम्बई), भाई रिशभदास रांका (बर्धा) बहन सद्गुला सारा भाई (दिल्ली), भाई मनमोहन चौधरी (उड़ीसा), भाई भीमराव देशमुख (नागपुर), भाई हरिशचन्द्र वैद्य (देहरादून) ने हिस्सा लिया। यह बर्धा तीसरे दिन भी चली। इसके बाद मुझासी खुद पुराई (प्रादेशिक स्वयं पूनता) के लिये दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के सेक्रेट्री भाई मोटुंगी सत्यनारायण ने अपनी की।



मेल मिलाप से खेती के काम करने का विचार कर रहा हूँ. जो इस में काम करने को तैयार हों वह मेरे साथ आएँ या जो अपने तजरबे के बल पर मुनासिब सलाह मशविरा दे सकते हैं वें.

ऊपर हमने लिखा है कि हर रोज़ शाम की प्रार्थना खतम होने पर विनोबा जी का भाशन होता था. पहले दिन उन्होंने कहा कि हम लोग अपने काम ज्यादातर प्रार्थना से शुरू और खतम करते हैं. इस में जीवन और मन पर क़ाबू पाने में मदद मिलती है. लेकिन प्रार्थना महज़ सदाचार नहीं है, भक्ति और उपासना या पूजा है. अहं भाव (खुदी) से मुक्ति पाना, यह शक्ति किसी भी सदाचार में न होकर प्रार्थना में है. प्रार्थना माने खुदों को चूर कर देना. इसी कारन भक्ति मार्ग को दूसरे मार्गों के मुक़ाबले में अच्छा समझा गया है. इसके लिये कोई साधन नहीं चाहिये, सिर्फ़ अपने अन्दर परमेश्वर का प्रेम चाहिये. हमारी प्रार्थनायें व्योहार के तौर पर हैं, भक्ति नहीं. इस तरफ़ हमें तबज़ेह देनी चाहिये. मैंने तो परमेश्वर से यह मांगा कि मुझे और कुछ बने या न बने पर तरे में मेरा भाव बना रहे.

दूसरे दिन बहस अनाज के सवाल पर हुई जिस की शुरुआत प्लानिंग कमिशन के मेम्बर भाई रामकृष्ण पाटिल ने की. उन्होंने कहा कि सरकारी आंकड़ों का एक दम सचवा नहीं कहा जा सकता. फिर भी उनसे हम यह तो अंदाज़ सकते हैं कि इस वक़्त अनाज की कमी हमारे देस में सबसुब है. इसलिये हमें गुबर औकाती खेती से माइन्सी खेती पर आबाना चाहिये (it was necessary to change from subsistence agriculture to scientific agriculture). उन्होंने यह भी बताया कि बुनियादी सवाल अनाज के तकसीम करने या कंट्रोल का नहीं है बल्कि अनाज की पैदावार बढ़ाने का है और सर्वोदय सेवकों से अपील की मदद से वह भी बढ़ाई पकड़ सकती है.

शिवराम पल्ली सरुरदे सम्मेलन जून सन् १९

नहा हलद  
महिल मलाप से कहेयि का काम करने का वजह कर रहा हूँ. जो इस में काम करने को तैयार हों वह मेरे साथ आँ या जो अपने तजरबे के बल पर मुनासिब सलाह मशविरा दे सकते हों हों.

और हम ने लकहा है कि हर रोज़ शाम की प्रार्थना खतम होने पर विनोबा जी का भाशन होता था. पहले दिन उन्होंने कहा कि हम लोग अपने काम ज्यादातर प्रार्थना से शुरू और खतम करते हैं. इस में जीवन और मन पर क़ाबू पाने में मदद मिलती है. लेकिन प्रार्थना महज़ सदाचार नहीं है, भक्ति और उपासना या पूजा है. अहं भाव (खुदी) से मुक्ति पाना, यह शक्ति किसी भी सदाचार में न होकर प्रार्थना में है. प्रार्थना माने खुदों को चूर कर देना. इसी कारन भक्ति मार्ग को दूसरे मार्गों के मुक़ाबले में अच्छा समझा गया है. इसके लिये कोई साधन नहीं चाहिये, सिर्फ़ अपने अन्दर परमेश्वर का प्रेम चाहिये. हमारी प्रार्थनायें व्योहार के तौर पर हैं, भक्ति नहीं. इस तरफ़ हमें तबज़ेह देनी चाहिये. मैंने तो परमेश्वर से यह मांगा कि मुझे और कुछ बने या न बने पर तरे में मेरा भाव बना रहे.

दूसरे दिन बहस अनाज के सवाल पर हुयी जिस की शुरुआत प्लानिंग कमिशन के मेम्बर भाई राम कृष्ण पाटिल ने की. उन्होंने कहा कि सरकारी आंकड़ों का एक दम सचवा लेंस कहा जा सकता. पोर भी न से हम ने तो अंदाज़ सकते हैंस कि इस वक़्त अनाज की कमी हमारे देस में सबसुब है. इसलिये हमें गु़र औकाती खेती से माइन्सी खेती पर आबाना चाहिये (it was necessary to change from subsistence agriculture to scientific agriculture). उन्होंने यह भी बताया कि बुनियादी सवाल अनाज के तकसीम करने या कंट्रोल का लेंस है बल्कि अनाज की पैदावार बूढाने का है और सरुरदे सेवकों से अपील की कि अंदाज़ से यह वजह पकड़ सकती है.



जीवन को बाजार से मुक्त किया जावे, यानी अनाज, कपड़ा, मकान और कुछ औजारों की जरूरतें वहीं की वहीं पूरी हो सकें. काजकर्त्ताओं में नए जोश की चरकत है. संस्थाएँ ऐसे से मुक्त होनी चाहियें. हम अपनी दुनियाएँ उपरिष्ठ पर खड़ी करें. ममभदारी (विवेक), अभ्यास और कोशिश की जरूरत है, तभी सर्वोदय विचार फैलेगा, अहिंसा फैलेगी. विरासत में मिली हुई चीज को बढ़ाने में जिस गिर जावे इससे बेहतर क्या हो सकता है? इसके आगे उन्होंने बताया कि देस भर में शान्ति सेना का काम होना चाहिये जिसको आजादी के साथ बढ़ाया जावे. विनोबा जी ने तीसरी बीज जो पेश की वह थी हर साल गाँवों जी की बरसी पर अपने हाथ के काते सूत की गुंडी देने का प्रोग्राम. इस ख्याल में बहुत शक्ति भरी है हमारी समाजों शक्ति का इससे पना चल जावेगा. इसके बाद उन्होंने कहा कि भंगी बनने की योजना अमल में आनी चाहिये. भंगी को मिटा दीजिये, उसके काम का खबसूरत बन्दोबस्त कीजिये. जो मैला हो उसकी खाद बनाकर खेती में इस्तेमाल कीजिये और कराइये. पाँचवीं बात उन्होंने कही अन्दर की शुद्धि की यानी श्री किशोरलाल मशरुवाला का सुझाया हुआ शुद्ध ब्योहार आन्दोलन चलाना. इससे हवा बदलने में मदद मिलेगी.

श्रीकुमारप्पा जी ने भी अपने भाषान में खेती पर जोर दिया. उन्होंने कहा कि लोकशाही यानी हिमाकसे ही दो तरह की होती है—एक खुद मस्ती की और दूसरी खुद पाबन्दी की, इन दोनों में कोई मेल नहीं है. खुद मस्ती वाली लोकशाही ऐसे के बल पर खड़ी है. इसीलिये उसमें शोशन बहुत शिद्धत से होता है और इसी का नतीजा है कि एकलाली चीज की कद्र बहुत घट गई है. हमें खुद पाबन्दी वाली लोकशाही को बनाना और फैलाना है. पुराने खयाल को आजकल के समाज में अमली रूप देना है. इसीलिये मैं एक

जहों को बाजार से मुक्त किया जावे, यानी अनाज, कपड़ा, मकान और कुछ औजारों की जरूरतें वहीं की वहीं पूरी हो सकें. काजकर्त्ताओं में नए जोश की चरकत है. संस्थाएँ ऐसे से मुक्त होनी चाहियें. हम अपनी दुनियाएँ उपरिष्ठ पर खड़ी करें. ममभदारी (विवेक), अभ्यास और कोशिश की जरूरत है, तभी सर्वोदय विचार फैलेगा, अहिंसा फैलेगी. विरासत में मिली हुई चीज को बढ़ाने में जिस गिर जावे इससे बेहतर क्या हो सकता है? इसके आगे उन्होंने बताया कि देस भर में शान्ति सेना का काम होना चाहिये जिसको आजादी के साथ बढ़ाया जावे. विनोबा जी ने तीसरी बीज जो पेश की वह थी हर साल गाँवों जी की बरसी पर अपने हाथ के काते सूत की गुंडी देने का प्रोग्राम. इस खयाल में बहुत शक्ति भरी है हमारी समाजों शक्ति का इससे पना चल जावेगा. इसके बाद उन्होंने कहा कि भंगी बनने की योजना अमल में आनी चाहिये. भंगी को मिटा दीजिये, उसके काम का खबसूरत बन्दोबस्त कीजिये. जो मैला हो उसकी खाद बनाकर खेती में इस्तेमाल कीजिये और कराइये. पाँचवीं बात उन्होंने कही अन्दर की शुद्धि की यानी श्री किशोरलाल मशरुवाला का सुझाया हुआ शुद्ध ब्योहार आन्दोलन चलाना. इससे हवा बदलने में मदद मिलेगी.

श्री कुमारप्पा जी ने भी अपने भाषन में खेती पर जोर दिया. उन्होंने कहा कि लोक शाही यानी हिमाकसे ही दो तरह की होती है—एक खुद मस्ती की और दूसरी खुद पाबन्दी की. इन दोनों में कोई मेल नहीं है. खुद मस्ती वाली लोक शाही ऐसे के बल पर खड़ी है. इसी लिये उसमें शोशन बहुत शिद्धत से होता है और इसी का नतीजा है कि एकलाली चीज की कद्र बहुत घट गई है. हमें खुद पाबन्दी वाली लोकशाही को बनाना और फैलाना है. पुराने खयाल को आजकल के समाज में अमली रूप देना है. इसीलिये मैं एक



इस तरह चार दिन ऐसे बीते मानो एक कैम्प में आये हों और किसी चीज की ट्रेनिंग ले रहे हों। कोई वक्त बरबाद नहीं जाता था और विमागी शरीरी सभी तरह की मेहनत हो जाती थी।

सम्मेलन की चर्चा शुरू हुई ८ तारीख को साढ़े नौ बजे। सबसे पहले 'समाल' के मंत्री श्री गोपबन्धु चौधरी ने पिछले सम्मेलन और अब के बीच रमनमहर्षि, श्री अरविन्द, सरदार पटेल और ठक्कर बापा जैसी हस्तियों के छठ जाने पर अफसोस जाहिर किया। इसके बाद उन्होंने यह बताया कि इन चार दिन चर्चा के क्या विषय रहेंगे और काका कालेलकर से प्रार्थना की कि वह इस बैठक के सदस्य रहें।

काका साहब ने सेवाओं को धन्यवाद देकर कारवाई शुरू कर दी। पहला दिन इस बात के लिये रखा गया कि सेवक लोग अपने अपने भव और विचार पेश करें। लेकिन बोलने के लिये तीन मिनट की आवसी दिये गये। क़रीब तीस बचीस सेवक बोले। इस चर्चा में तरह तरह के विषयों पर सेवाओं ने अपने विचार रखे—जैसे जमीन का बटवारा, आर्थिक समस्या, शान्ति सेना संगठन, मन्दिरों में पशु-बच, हरिजनों के लिये पानी की समस्या, देस की राजकाजी हालत और हमारी नाकामी, गायों के रोग, अनाज स्वावलम्बन, मानसिक तंगनखी, रचनात्मक संस्थाओं में काजकर्त्ताओं का वेतन (तनखाह) और उनकी पस्तादिली, अनाज पर कन्ट्रोल का सवाल, जनता और सरकार में मेल की कमी, रचनात्मक काम की नई शकल, शरनार्थियों का सवाल, कोका कोला से ख़तरा, कुम्हार काम, भंगी काम, सत्याग्रह की चरुतर, देशत को जगाकर संगठन करना, सूत भेंट करना बंदीरा, ज्वादा मारके के दो माशन ये जो भी विनोबा जी और श्री कुमारप्पा जी ने दिये।

विनोबा जी ने कहा कि अब रचनात्मक काम नई दिशा में चलाना चाहिये। जेरे पास इस के लिये क़सली योजना वह है कि गाँव के

इस तरह चार दिन ऐसे बीते मानो एक कैम्प में आये हों और किसी चीज की ट्रेनिंग ले रहे हों। कोई वक्त बरबाद नहीं जाता था और विमागी शरीरी सभी तरह की मेहनत हो जाती थी।

सम्मेलन की चर्चा शुरू हुनी, 'द्विच' को सारे नो बजे। सब 'समाज' के मन्त्री शरीरु गोप बन्धु जो दन्धुने पच्चेहने सम्मेलन और अब के बिच -- 'रमन मोशु' 'शरीर अरिन्द' 'सरदार पटिल' और 'ठक्कर बापा' जैसी हस्तियों के आठ जाने पर अफसोस प्लाएर न्हा। 'अम्के' बाद अन्होने ने ये बताया के इन चार दिन चर्चा ने किया रश् 'देविले' और 'का' 'कालेकर' से 'ब्र' तेहला की के 'वे' इस 'बेहक' के 'सद' रहें।

काका साहब ने सत्रोदय को धन्यवाद देकर कारवाई शुरू कर दी। पहला दिन इस बात के लिये रखा गया कि सेवक लोग अपने अपने भव और विचार पेश करें। लेकिन बोलने के लिये तीन मिनट की आवसी दिये गये। इस चर्चा में तरह तरह के विषयों पर सेवाओं ने अपने विचार रखे—जैसे जमीन का बटवारा, आर्थिक समस्या, शान्ति सेना संगठन, मन्दिरों में पशु-बच, हरिजनों के लिये पानी की समस्या, देस की राजकाजी हालत और हमारी नाकामी, गायों के रोग, अनाज स्वावलम्बन, मानसिक तंगनखी, रचनात्मक संस्थाओं में काजकर्त्ताओं का वेतन (तनखाह) और अनाज पर कन्ट्रोल का सवाल, जनता और सरकार में मेल की कमी, रचनात्मक काम की नई शकल, शरनार्थियों का सवाल, कोका कोला से ख़तरा, कुम्हार काम, भंगी काम, सत्याग्रह की चरुतर, देशत को जगाकर संगठन करना, सूत भेंट करना बंदीरा, ज्वादा मारके के दो माशन ये जो भी विनोबा जी और श्री कुमारप्पा जी ने दिये।

विनोबा जी ने कहा कि अब रचनात्मक काम नई दिशा में चलाना चाहिये। जेरे पास इस के लिये क़सली योजना वह है कि गाँव के



हो. लेकिन आदमी आदमी है और उस पर पड़ोस व हवा का असर पड़ता ही है. इसलिये जब अनुगुल वाले सम्मेलन में विनोबा जी नहीं गए तो वहाँ का माजरा ही बदल गया और उसमें शरीक होने वाले अकसर भाई बहनों की तबियत ख़बर वठी और खासतौर से, नौजवान लोग तो तोबा-सरी बोल गए. इस बार भी विनोबा जी नहीं जाने की सोच रहे थे. इस पर कुछ लोगों को आप से आप डर हुआ कि अगर विनोबा जी ने यहाँ रुक़ रखा तो फिर इस 'समाज' की जान को ही ख़तरा है, और ख़ोरदार लफ़्ज़ों में उनसे अपील की कि वह ज़रूर हिस्सा लें. विनोबा जी मान गये और हैदराबाद के लिये पैदल ही अपने परधाय आश्रम, पौनार ( वर्धा ) से निकल पड़े. ८ मार्च को चल कर ६ अप्रैल को हैदराबाद पहुँचे, दूसरे दिन मान तारीख़ की सुबह शिवरामपल्ली. विनोबा जी के इस क्रदम से क्या उन इलाकों के लोगों पर जिनमें हाँकर वह गए, क्या सर्वोदय सेवकों पर और क्या दूसरों पर—सब पर अच्छा ही असर पड़ा और शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन में जान आगई.

यह सम्मेलन दूसरी मभाओं, कान्फ़रन्सों में अलग तन्द का था. एक तो इसकी जात ही अपनी अनोखी है, दूसरे इयका प्रोग्राम चौबीसों घंटों का रहता था. सेवक लोग सुबह मबा चार बजे उठकर दही, फ़ुल्ले से निपट कर पाँच बजे प्रार्थना के लिये जमा होते थे. इसके बाद छै बजे नाश्ता किया और मान बजे से साढ़े आठ तक शरीर-अभ्रम के काम में लग जाते थे. फिर नहाए धोए और साढ़े नौ पर सम्मेलन मंडल में आकर चर्चा शुरू कर दी. डेढ़ घंटे बाद ग्यारह बजे खाने की घटी उसके बाद आराम. फिर दो बजे से सुन यज्ञ यानी बाध घटे तक मौन कताई और इसके बाद चर्चा, तीन घंटे तक यह काम चलता. फिर छै बजे प्रार्थना जिसके आख़ीर में विनोबा जी का भाशन. इसके बाद खाना होता और फिर अपने अपने ठिकानों में जगहाजगह सेवक लोग मिलते जुलते, सलाह करते और फिर सो जाते.

नया हलद लेकिन आदमी आदमी है और असर पड़ोस व हवा का अत्र पड़ता ही है. इसलिये जब अनुगुल वाले सम्मेलन में विनोबा जी नहीं गए तो वहाँ का माजरा ही बदल गया और उस में शरीक होने वाले अत्र-बैथी बहनों की तबियत ख़बर वठी और खासतौर से, नौजवान लोग तो तोबा-सरी बोल गए. इस बार भी विनोबा जी नहीं जाने की सोच रहे थे. इस पर कुछ लोगों को आप से आप डर हुआ कि अगर विनोबा जी ने यहाँ रुक़ रखा तो फिर इस 'समाज' की जान को ही ख़तरा है, और ख़ोरदार लफ़्ज़ों में उनसे अपील की कि वह ज़रूर हिस्सा लें. विनोबा जी मान गये और हैदराबाद के लिये पैदल ही अपने परधाय आश्रम, पौनार ( वर्धा ) से निकल पड़े. ८ मार्च को चल कर ६ अप्रैल को हैदराबाद पहुँचे, दूसरे दिन सात तारिख़ की सुबह शिवराम पल्ली. विनोबा जी के इस क्रदम से क्या उन इलाकों के लोगों पर जिनमें हाँकर वह गए, क्या सर्वोदय सेवकों पर और क्या दूसरों पर—सब पर अच्छा ही अत्र पड़ा और शिवराम पल्ली सर्वोदय सम्मेलन में जान आगई.

ये सम्मेलन दूसरी मभाओं, कान्फ़रन्सों से अलग तरह का था. एक तो इसकी जात ही अपनी अनोखी है, दूसरे इस का प्रोग्राम चौबीसों घंटों का रहता था. सेवक लोग सुबह मबा चार बजे उठकर दही, फ़ुल्ले से निपट कर पाँच बजे प्रार्थना के लिये जमा होते थे. इसके बाद छै बजे नाश्ता किया और मान बजे से साढ़े आठ तक शरीर-अभ्रम के काम में लग जाते थे. फिर नहाए धोए और साढ़े नौ पर सम्मेलन मंडल में आकर चर्चा शुरू कर दी. डेढ़ घंटे बाद ग्यारह बजे खाने की घटी उसके बाद आराम. फिर दो बजे से सुन यज्ञ यानी बाध घटे तक मौन कताई और इसके बाद चर्चा, तीन घंटे तक यह काम चलता. फिर छै बजे प्रार्थना जिसके आख़ीर में विनोबा जी का भाशन. इसके बाद खाना होता और फिर अपने अपने ठिकानों में जगहाजगह सेवक लोग मिलते जुलते, सलाह करते और फिर सो जाते.



जाने को तैयार हैं। लेकिन इसके अलावा भी कुछ माई के लाल बचते हैं जिनको यह तमन्ना नहीं है (अगर पेट के अन्दर छिपी हो तो राम जाने) और जो गांधी जी के बताये-बनाये रास्ते पर अपनी खिन्दगी बिताते हुए दुनिया की सेवा करना चाहते हैं। सर्वोदय समाज इन जैसों का ही एक समूह है।

वैसे तो हर आदमी—जो दूसरे की बेहतरी में अपनी बेहतरी मानता हो, जो सब की भलाई चाहता हो—सर्वोदय समाज का सदस्य या सेवक बन सकता है। लेकिन हर तरह के आदमी अब इस से बचते ही जा रहे हैं और वह उन गिने चुने की मंडली बनती जा रही है जिनकी तारीफ हमने अभी की है। इन भाई-बहनों, सर्वोदय सेवकों का मेला साल में एक बार लगा करता है। पहला मेला सन् १९५९ में राऊ (इन्दौर) में लगा, दूसरा अनुगुल (उड़ीसा) में और अब तीसरा शिवरामपल्ली में जो हैदराबाद नाम के नगर से पाँच मील के फासले पर है। यह मेला या सम्मेलन ८-६-१०-११ अप्रैल को हुआ।

( ५३ )

आगे कुछ भी चर्चा करने के पहले हम यह बता दें—जो वान अकसर लोग तो जानते भी हैं—कि यह 'सर्वोदय समाज' का खयाल गाँधी जी के गुजर जाने के बाद १९४८ के मार्च में एठ बड़ी सभा में श्री आचार्य विनोबा भावे ने पेश किया था और यह सुझाव रखा था कि हम काम करने वाले न कोई पार्टी बनायें न संगठन और न संस्था ही, बल्कि एक ठीला ढाला ममाज हो जिसकी तरफ में कोई पाबन्दी किसी पर नहीं हो। इसलिये सर्वोदय सम्मेलन दुनिया की एक अजीब गरीब बीब है जिसमें न तो कोई ठेका परास होते हैं और न कोई कानून या नियम बनाये जाते हैं और जिसका हर मंन्बर पूरी तरह खुदमुखतार है। जाहिर है कि ऐसा इमारत की बुनियादें

जाने को तैयार हैं। लेकिन इसके अलावा भी कुछ माई के लाल बचते हैं जिनको यह तमन्ना नहीं है (अगर पेट के अन्दर छिपी हो तो राम जाने) और जो गांधी जी के बताये-बनाये रास्ते पर अपनी खिन्दगी बिताते हुए दुनिया की सेवा करना चाहते हैं। सर्वोदय समाज इन जैसों का ही एक समूह है।

वैसे तो हर आदमी—जो दूसरे की बेहतरी में अपनी बेहतरी मानता हो, जो सब की भलाई चाहता हो—सर्वोदय समाज का सदस्य या सेवक बन सकता है। लेकिन हर तरह के आदमी अब इस से बचते ही जा रहे हैं और वह उन गिने चुने की मंडली बनती जा रही है जिनकी तारीफ हमने अभी की है। इन भाई-बहनों, सर्वोदय सेवकों का मेला साल में एक बार लगा करता है। पहला मेला सन् १९५९ में राऊ (इन्दौर) में लगा, दूसरा अनुगुल (उड़ीसा) में और अब तीसरा शिवरामपल्ली में जो हैदराबाद नाम के नगर से पाँच मील के फासले पर है। यह मेला या सम्मेलन ८-६-१०-११ अप्रैल को हुआ।

कुछ भी चर्चा करने के पहले हम यह बता दें—जो वान अकसर लोग तो जानते भी हैं—कि यह 'सर्वोदय समाज' का खयाल गाँधी जी के गुजर जाने के बाद १९४८ के मार्च में एठ बड़ी सभा में श्री आचार्य विनोबा भावे ने पेश किया था और यह सुझाव रखा था कि हम काम करने वाले न कोई पार्टी बनायें न संगठन और न संस्था ही, बल्कि एक ठीला ढाला ममाज हो जिसकी तरफ में कोई पाबन्दी किसी पर नहीं हो। इसलिये सर्वोदय सम्मेलन दुनिया की एक अजीब गरीब बीब है जिसमें न तो कोई ठेका परास होते हैं और न कोई कानून या नियम बनाये जाते हैं और जिसका हर मंन्बर पूरी तरह खुदमुखतार है। जाहिर है कि ऐसा इमारत की बुनियादें



## शिवरामपत्नी सर्वोदय सम्मेलन

( भाई सुरेश रामभाई )

सच है माँलिक की मरजी जानी नहीं जाती. साढ़े तीन वरम पहले जिस देस में गांधी जैसी हस्ती का मूरज चमक रहा हो आज उसका यह हाल है कि वहाँ के लोग दाने दाने को तरसते हैं, कपड़े के लिये मोहताज हैं और जो यही मनाते हैं कि इस जीने से तो मौत बेहतर है. दिल का दर्द यह देखकर और भी बड़ जाना है कि अपना ही राज है और अपने ही लोग जो ऊँची से ऊँची कुर्सियों पर बैठे हैं दिन रात अभील करते हैं कि हिन्दू के रहने वाला ! अनाज ज्यादा से ज्यादा पैसा करो, अपना खूब सारा बनाते रहो. मगर हालत संभलने के बजाय दिन दूनी रात चोगुनी रफतार से बिगड़ती ही जा रही है. इसका नतीजा है कि लोगों की हिम्मत पस्त-सी हो गई है और कल किसी तरह से भी ठीक नहीं बैठती.

मगर मजा यह है कि जिसे देखिये वही जनता का खिड़मतगार अपने को कहता है. सरकारी पार्टी कांग्रेस के अलावा दूसरी पार्टियाँ देस में हैं. लेकिन उनके काम करने के तरीके ऐसे निराले ब डरावने हैं कि यह नहीं कहा जासकता कि सचमुच वह देस की सेवा करना चाहती है या अपनी पार्टी के हाथ में सारी ताकत व इक़मत का सारा खोर बटोर लेना चाहती है. रह जाती है एक तादाद कुछ उन काम करने वालों की जो गांधी जी के सामने से ही उनके बताये रचनात्मक प्रोग्राम को अमल में लाने में लगे हैं. लेकिन उनमें से काफ़ी अच्छे अच्छे काजकर्ता असेम्बलियों और पार्लियामेंट में चुसकर इक़मत की मशीन के पर्जे पर खड़े हैं.

## शिवराम पत्नी सर्वोदय सम्मेलन

( भाई सुरेश राम भाई )

सच है मालक की मरजी जानी नहीं जाती. साढ़े तीन वरम पहले जिस देस में गांधी जैसी हस्ती का मूरज चमक रहा हो आज उस का यह हाल है कि लोग दाने दाने को तरसते हैं, कपड़े के लिये मोहताज हैं और जो यही मनाते हैं कि इस जीने से तो मौत बेहतर है. दिल का दर्द यह देखकर और भी बड़ जाना है कि अपना ही राज है और अपने ही लोग जो ऊँची से ऊँची कुर्सियों पर बैठे हैं दिन रात अभील करते हैं कि हिन्दू के रहने वाला ! अनाज ज्यादा से ज्यादा पैसा करो, अपना खूब सारा बनाते रहो. मगर हालत संभलने के बजाय दिन दूनी रात चोगुनी रफतार से बिगड़ती ही जा रही है. इसका नतीजा है कि लोगों की हिम्मत पस्त-सी हो गई है और कल किसी तरह से भी ठीक नहीं बैठती.

मगर मजा यह है कि जिसे देखिये वही जनता का खिड़मतगार अपने को कहता है. सरकारी पार्टी कांग्रेस के अलावा दूसरी पार्टियाँ देस में हैं. लेकिन उनके काम करने के तरीके ऐसे निराले ब डरावने हैं कि यह नहीं कहा जासकता कि सचमुच वह देस की सेवा करना चाहती है या अपनी पार्टी के हाथ में सारी ताकत व इक़मत का सारा खोर बटोर लेना चाहती है. रह जाती है एक तादाद कुछ उन काम करने वालों की जो गांधी जी के सामने से ही उनके बताये रचनात्मक प्रोग्राम को अमल में लाने में लगे हैं. लेकिन उनमें से काफ़ी अच्छे अच्छे काजकर्ता असेम्बलियों और पार्लियामेंट में चुसकर इक़मत की मशीन के पर्जे पर खड़े हैं.



नया हिन्द

भारत के मुसलमान

जून सन् '५१

शादी ब्याह, रहन सहन, खाना पीना, बनाव मिगार, रीत रिवाज, लेन देन, हिसाब किताब, बही खाते, दान पुन्य, राज करने के तौर तरीके, सोसाइटी के नियम कायदे, आचार विचार, विरासत और उत्तराधिकार के कानून, गाँव पंचायत के असून, मकान बनाना, शायरी, चित्रकारी, संगीत, बला घरेलू दस्तकारियाँ और जीवन का अनगिनत चीजों में जहाँ मुसलमानों ने बहुत कुछ हिन्दुओं से सीखा है वहाँ हिन्दुओं ने भी बहुत कुछ मुसलमानों से लिया है, क्या कुछ हिन्दुओं ने मुसलमानों से लिया है और क्या कुछ मुसलमानों ने हिन्दुओं से लिया है इसको बयान करने के लिये यो तो मांटी किताब चाहिये पर भारत की गलियों और गाँवों में घूमने वाला कोई भी आदमी उन्हें कदम कदम पर देख सकता है और अनुभव कर सकता है कि जड़मूल में यहाँ के रहने वाले हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई बंगाल सब एक ही क्रोम हैं।

( २२ )

‘नया हिन्द’ की छमाही बँधी हुई बढ़िया जिल्दे

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर जिल्द की सिर्फ़ छै रुपया .

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दे खरीदने पर ढाक सब माफ़ .

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४६, मुट्ठीगंज,

इलाहाबाद.

जून सन '५१

भारत के मुसलमान

नया हलद

शادی ब्याह, रहन सहन, किया पचना, बनाइ सत्कार, रीत (राज, लहज, दीन, حساب किताब भी कहलै, दान पिन, रज करने के طور तरीके, सोसाइटी के नियम क़ेदरे, आचार वंचार, रीत और त़रा, देहिकार के क़ानून, ग़ौर पंथपायित के 'सूल' मक़ान भंडार, शास्त्री, चक्रवर्ती, सल्लेकित, दला, क़ोरियु, दस्त क़ारियाँ और चीजों की आ क़स्त च़ेज़ों में ज़हाँ मुसलमानों ने बेत क़िच़े हलदुओं से सीक़िया है वहाँ हलदुओं ने बेत बेत क़िच़े मुसलमानों से लिया है, किया क़िच़े हलदुओं ने मुसलमानों से लिया है, किया क़िच़े मुसलमानों ने हलदुओं से लिया है इस क़ो बयान क़रने के लिये यो तो मोटी किताब चाहिये पर भारत की क़लियों और ग़ाँवों में घूमने वाला क़ौनो भी आदमी क़दम क़दम पर देख सकिा है और अनुभव क़र सकिा है क़े क़िजडमूल में यहाँ के रहने वाले हलदु, मुसलमान, सिक़ि, ईसाई बंगाल सब अिक़ ही क़ोम हल्ल .

( २२ )

‘नया हलद’ की च़ेज़ाही बन्दी हूँ ब़ेहिया ज़लाज़

जुलै सन १९४६ से दिसंबर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर ज़लद की सिर्फ़ च़े (रुपये) .

नोट—शुरु से अज़ क़ तक की क़ल ज़लदिय ख़रीदने पर ढाक़ ख़र्च माफ़ .

—महलज़र ‘नया हलद’

‘१४६’ मुत्थी क़लज़

इलाहाबाद



बल्कि ईरान की खाड़ी और पूरबी और दक्खिनी अरब के तमाम किनारे के शहरों में घूम आइये, आप देखेंगे कि उन तमाम देशों में वहाँ की अपनी भाषा के साथ बहुत से लोग एक दूसरे को समझने और समझाने के लिये एक मिली जुली भाषा बोलते हैं, यह वही भाषा है जो भारत में हिन्दू मुसलमानों, सिक्ख ईसाइयों और भारत के तमाम वासियों के सन्तियों के मेल जोल से बनी और सारे भारत और भारत के इर्द गिर्द हमारे मुलकों में भी फैल गई. इस भाषा का नाम हिन्दी उरदू भी और हिन्दुस्तानी भी, जिस का ज नाम अधिक सुन्दर लगे वह उसी नाम से पुकारे, इस में झगड़े की कोई शान नहीं.

फरक और झगड़े की बात केवल इमी में है कि सीधे सगड़े शब्द जो अर्थन समझे और बोले जाते हैं उनकी जगह कठिन शब्द भाषा में ठूसे जाएँ तो इस से जनता को कोई लाभ नहीं होगा और न भाषा हा सुन्दर होगी, चाहे अधिक अरबी फारसी के शब्द ठूसे जाएँ या प्रकृति और संस्कृत के.

इमी तरह अरबी या संस्कृत के जितने भी सुन्दर शब्द हिन्दी या उर्दू में आम तौर पर समझे और बोले जाते हैं उन शब्दों को उर्दू या हिन्दी भाषा से निकाल देने की कोशिश करना मखन भूल है. किन्ती भी देश के लोग ऐसा नहीं करते तेमा करता खुद अपनी प्यारी भाषा के साथ अन्याय करना और उसे जिगाड़ना होगा.

यहाँ केवल इतना बताना है कि भाषा के कारन भारत वासियों में कोई ऐसा बुनियादी फरक नहीं है जो भारत वासियों को एक क्रौम की जगह हा क्रौम की तरफ ले जाय. बल्कि भारत की तमाम भाषाओं में मेल जाल की वह तमाम बातें मौजूद हैं जो एक क्रौम होने के लिये जरूरी हैं.

इसी तरह भाषा या बोली ठोली की तरह जीवन की दूसरी शाखों में भी हिन्दू मुसलमानों ने एक दूसरे से बहुत सी चीजें ली हैं.

बल्कि अिरान की क्हाड़ी और यूरपी और दक्खिनी अरब के तमाम क्कारे के शहरों में वहाँ की अपनी भाषा के साथ बहुत से लोग एक दूसरे को समझने और समझाने के लिये एक मिली जुली भाषा बोलते हैं, यह वही भाषा है जो भारत में हिन्दू मुसलमानों, सिक्ख ईसाइयों और भारत के तमाम वासियों के सन्तियों के मेल जोल से बनी और सारे भारत और भारत के इर्द गिर्द हमारे मुलकों में भी फैल गई. इस भाषा का नाम हिन्दी उरदू भी और हिन्दुस्तानी भी, जिस का ज नाम अधिक सुन्दर लगे वह उसी नाम से पुकारे, इस में झगड़े की कोई शान नहीं.

फरक और झगड़े की बात केवल इमी में है कि सीधे सगड़े शब्द जो अर्थन समझे और बोले जाते हैं उनकी जगह कठिन शब्द भाषा में ठूसे जाएँ तो इस से जनता को कोई लाभ नहीं होगा और न भाषा हा सुन्दर होगी, चाहे अधिक अरबी फारसी के शब्द ठूसे जाएँ या प्रकृति और संस्कृत के.

इमी तरह अरबी या संस्कृत के जितने भी सुन्दर शब्द हिन्दी या उर्दू में आम तौर पर समझे और बोले जाते हैं उन शब्दों को उर्दू या हिन्दी भाषा से निकाल देने की कोशिश करना मखन भूल है. किन्ती भी देश के लोग ऐसा नहीं करते तेमा करता खुद अपनी प्यारी भाषा के साथ अन्याय करना और उसे जिगाड़ना होगा.

यहाँ केवल इतना बताना है कि भाषा के कारन भारत वासियों में कोई ऐसा बुनियादी फरक नहीं है जो भारत वासियों को एक क्रौम की जगह हा क्रौम की तरफ ले जाय. बल्कि भारत की तमाम भाषाओं में मेल जाल की वह तमाम बातें मौजूद हैं जो एक क्रौम होने के लिये जरूरी हैं.

इसी तरह भाषा या बोली ठोली की तरह जीवन की दूसरी शाखों में भी हिन्दू मुसलमानों ने एक दूसरे से बहुत सी चीजें ली हैं.



इसी तरह खबान का मसला है। भारत की बड़ी भाशाओं में हिन्दुस्तानी, बंगाल, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम पंजाबी को अधिक लोग जानते समझते, पढ़ते लिखते और बोलते हैं। जहाँ जहाँ भी यह बोलिया बोली जाती हैं हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई और पारसी सब बोलते हैं। इन बोलियों में कोई भी झगडा नहीं है। भारत के जिस हिस्से में गुजराती पढ़ी लिखी और बोली जाती है उस हिस्से के हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी सब ही वसी भाशा में पढ़ते लिखते और बोलते हैं और जिस जिस हिस्से में तमिल, तेलगू, कन्नड़ वगैरा लिखी पढ़ी और बोली जाती है उस उस हिस्से के हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब ही उसमें पढ़ते लिखते और बोलते हैं।

झगडा या फरक जो कुछ भी है वह हिन्दी, उर्दू और हिन्दी-स्तानी का है जो सारे भारत वासियों को एक मिनी जुनी भाशा के रिशते में जोड़ने और एक दूसरे को समझने और समझाने के लिये है।

इस सिलसिले में देखने की बात यह है कि जो भाशा भारत के अधिकतर हिस्सों में ज्यादा से ज्यादा समझी और बोली जाती है वह तो वही भाशा है जो हिन्दू मुसलमानों के मेल जोल की वजह है। आप इस भाशा को चाहे हिन्दा कहें, चाहे उर्दू चाहे हिन्दुस्तानी। समझने की केवल इतनी बात है कि जो भाशा हिन्दू मुसलमान, सिक्ख ईसाई, अमीर गरीब, राजा प्रजा, मजदूर किसान सब के सदियों के मेल जोल से बनी है वही भाशा भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ज्यादा से ज्यादा बोली और समझी जाती है। उस भाशा में न तो अरबी फारसी के मुशकिल लफ्ज हैं न प्राकृत और संस्कृत के कठिन बोल। आप उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पंजाब, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, सीलोन और बरमा तक हो आइये।

इस तरह زبان کا مسئلہ ہے۔ بھارت کی بڑی بھاشاؤں میں ہندوستانی، بلکے، گجراتی، مراٹھی، تامل، تلگو، کڈو، ملہالم، پنجابی کو ادھک لوگ جانتے سمجھتے۔ پڑھتے لکھتے اور بولتے ہیں۔ جہاں جہاں بھی یہ بولیاں بولی جاتی ہیں ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی اور پارسی سب بولتے ہیں۔ ان بولیوں میں کوئی بھی جھگڑا نہیں ہے۔ بھارت کے جس حصے میں گجراتی پڑھی لکھی اور بولی جاتی ہے اس حصے کے ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی سب ہی اسی بھاشا میں پڑھتے لکھتے اور بولتے ہیں۔ جس جس حصے میں تامل، تلگو، کڈو وغیرہ لکھی پڑھی اور بولی جاتی ہیں اُس اُس حصے کے ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی سب ہی اس میں پڑھتے لکھتے اور بولتے ہیں۔

جھگڑا یا فرق جو کچھ بھی ہے وہ ہندی، اردو، ہندوستانی کا ہے جو سارے بھارت واسیوں کو ایک مٹی جتنی بھاشا ہے رشتے میں جوڑنے اور ایک دوسرے کو سمجھانے اور سمجھانے لے لئے ہے۔

اس سلسلے میں دیکھنے کی بات یہ ہے کہ جو بھاشا بھارت کے ادھک تر حصوں میں زیادہ سے زیادہ سمجھی اور بولی جاتی ہے وہ تو وہی بھاشا ہے جو ہندو مسلمانوں کے مئل جول کی بیج ہے۔ آپ اس بھاشا کو چاہے ہندی کہیں، چاہے اردو، چاہے ہندوستانی، سمجھانے کی کھول اتلی بات ہے کہ جو بھاشا ہندو مسلمان، سکھ، عیسائی، امیر غریب، راجہ پرجا، مزدور کسان سب کے صدیوں کے مئل جول سے بلی ہے وہی بھاشا بھارت کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک زیادہ سے زیادہ بولی اور سمجھی جاتی ہے۔ اُس بھاشا میں نہ تو عربی فارسی کے مشکل لفظ ہیں نہ پراکرت اور سلسکرت کے کٹھن بول۔ آپ اُتر پردیش، مدھیہ پردیش، بھار،



अरब के समन्दर से भी अरब की आँधियाँ साल में कितनी बार अपने कंधों पर गंगा जल लाती हैं, इसको कौन रोक सकता है.

भारत के अछूत मुसलमान खूत छात की दलदल से तो निकल चुके पर अब भी ऊँची जात के मुसलमान और नीची जात के मुसलमानों के बीच चौड़ी खाई मौजूद है। ऊँची जात का मुसलमान अब भी न अपनी लड़की किसी नीची जात के मुसलमान को देता है और न किसी नीची जात के मुसलमान की लड़की लेता है। यही हाल श्रेष्ठ, सैयद, मुसल और पठानों का है और अछूत मुसलमानों का भी। यानी यह लोग भी अधिकतर शादी दयाह अपनी ही जात बिरादरी में करते हैं और न्योता बंगरा भी अपनी ही बिरादरी वालों को देते हैं। यह अलग बात है कि कुछ मुसलमान दूसरी जात बिरादरी से भी शादी दयाह का नाम जोड़ लेते हैं। ऐसे ही अब हिन्दुओं में भी बहुत लोग मिलेंगे जो जात बिरादरी के बन्धनों को तोड़ कर दूसरी जात बिरादरी में गिना नामा जोड़ने को बुरा नहीं समझते।

इत सब कारनों से भारत के मुसलमानों को हम एक अलग क़ौम नहीं कह सकते, न भारत के हिन्दुओं को ऐसा कह सकते हैं, न सिक्खों को, न ईसाइयों, पारसियों या बौद्धों को, बल्कि भारतीयों की वजह से हम सब को एक क़ौम यानी एक देशन कहते हैं और ठीक कहते हैं, इसी कारण कॉंग्रेस भारत के सब बासियों को दो नहीं एक क़ौम मानती है और उसका ऐसा मानना जानना बिल्कुल ठीक है, यह माना कि भारत में इस समय बहुत से हिन्दू और मुसलमान ऐसे हैं जो हिन्दुओं को केवल हिन्दू और मुसलमानों को केवल मुसलमान होने की वजह से एक क़ौम नहीं दो क़ौमों समझना चाहते हैं, और उनकी यही चाह फिरकावाराना फसाद की जड़ है, यह छूत छात की ही एक दूसरी शकल है।

عرب کے سلسلہ سے بھی عرب کی آندھاں سال میں کتنی بار اپنے گندھوں پر گنڈا چل لاتی تھی، اس کو کون روک سکتا ہے۔

بھارت کے اچھوت مسلمان چھات کی دلدل سے تو نکل چکے ہر اب بھی اُونچی جات کے مسلمان اور نیچی جات کے مسلمانوں کے پہنچ چڑھی کھائی موجود ہے۔ اُونچی جات کا مسلمان اب بھی نہ اعلیٰ لیکن کسی نیچی جات کے مسلمان کو دیتا ہے اور نہ کسی نیچی جات کے مسلمان کی لڑکی لیتا ہے۔ یہی حال شیخ 'سہا' مثل ارد پتھانوں کا ہے اور اچھوت مسلمانوں کا بھی۔ یعنی یہ لوگ بھی 'دھک تو شادی بہاہ اپنی اپنی' جات پر اُردی میں کرتے ہیں اور نیوٹا و قہرہ بھی اپنی ہی برادری والوں کو دیتے ہیں۔ یہ الگ بات ہے کہ کچھ مسلمان دوسری جات پر اُردی سے بھی شادی بہاہ کا رازا جوڑ لیتے ہیں۔ ایسے ہی اب ہلدواں میں بھی بہت لوگ منہنگے جو جات پر اُردی کے بدلہ نہیں کو تر تو کر دوسری جات پر اُردی سے، شتہ رازا جوڑنے کو برا نہیں سمجھتے۔

ایک دوسری شکل ہے ۔



बहु मुसलमान भी जो इन ही पुराने लोगों में से मुसलमान हुए असल भारती हैं और ऐसे मुसलमानों की गिनती बहुत है। इनके बाद ब्राह्मण, राजपूत, छत्रो और वैश्य मुसलमान हैं। उनका गिनती भी कम नहीं। उनके बाद शैख, सैयद, मुगल और पठान हैं। उनकी गिनती ऊपर के दोनों तरह के मुसलमानों से बहुत कम है, फिर इनमें भी असल शैख, सैयद, मुगल और पठानों की गिनती और भी कम।

इस तरह आप देखेंगे कि बाहर से आए मुसलमान में बहुत बोड़े हैं और बाहर से आए हिन्दू बहुत ज्यादा। यह अलग बात है कि बात पात वाला हिन्दू भारत में बहुत पहले आया और शैख, सैयद, मुगल और पठान बहुत बाद में। पर जान पात वाला मुसलमान बानी ब्राह्मण, राजपूत, छत्रो और वैश्य मुसलमान तो जा यात वाले हिन्दुओं की ही औलाद हैं और उनकी गिनती ज्यादा है। फिर नीची जातों के मुसलमान तो असल भारती हैं और उनकी गिनती दूसरे मुसलमानों से बहुत अधिक है। इस तरह के मुसलमान ज्यादातर ऊँचे जात के हिन्दुओं से तंग आकर अपनी अनगिनत कठिनाइयों और मुसीबतों से लाचार होकर मुसलमान हुए। उन घरीबों को जब वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों का अमृत रस नहीं मिला तो उन्होंने इसलाम के आने-इयान (अमृत रस) से अपनी प्यास बुझाई। आखिर जल थल सारे संसार का एक ही ईश्वर के सोत से तो निकला है। किसी ने गंगा से अपनी ध्यान बुझाई तो किसी ने जमजम के पानी से या दजला करात से। यहाँ जरा ध्यान में रखने की यह बात भी है कि जब गंगा के किनारे, उसके आगे पड़े और चारों तरफ छून छात की भयानक दवार खड़ी कर दो जाय तो एक बेकल हरिजन क्या करे। धर्म तो रुझनी जरूरी है (आत्मिक प्रजाऊन) के लिये सदा बरसने वाली बरखा है कोई प्यासा कैसे ईद फेर सकता है। भारत में बाढ़ल कहाँ से नहीं आते हैं ?

नया हलद  
वे मुसलमान भी जो इन ही पुराने लोगों में से मुसलमान हुये असल भारती हैं और ऐसे मुसलमानों की गिनती बहुत है। इनके बाद ब्राह्मण, राजपूत, छत्रो और वैश्य मुसलमान हैं। उनकी गिनती भी कम नहीं। उनके बाद शैख, सैयद, मुगल और पठान हैं। उनकी गिनती ऊपर के दोनों तरह के मुसलमानों से बहुत कम है, फिर इनमें भी असल शैख, सैयद, मुगल और पठानों की गिनती और भी कम।

इस तरह आप देखेंगे कि बाहर से आये मुसलमान तो बहुत नोबरे हों और बाहर से आये हिन्दू बहुत ज्यादा। यह अलग बात है कि बात पात वाला हिन्दू भारत में बहुत पहले आया और शैख, सैयद, मुगल और पठान बहुत बाद में। पर जान पात वाला मुसलमान बानी ब्राह्मण, राजपूत, छत्रो और वैश्य मुसलमान तो जा यात वाले हिन्दुओं की ही औलाद हैं और उनकी गिनती ज्यादा है। फिर नीची जातों के मुसलमान तो असल भारती हैं और उनकी गिनती दूसरे मुसलमानों से बहुत अधिक है। इस तरह के मुसलमान ज्यादातर ऊँचे जात के हिन्दुओं से तंग आकर अपनी अनगिनत कठिनाइयों और मुसीबतों से लाचार होकर मुसलमान हुए। उन घरीबों को जब वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों का अमृत रस नहीं मिला तो उन्होंने इसलाम के आने-इयान (अमृत रस) से अपनी प्यास बुझाई। आखिर जल थल सारे संसार का एक ही ईश्वर के सोत से तो निकला है। किसी ने गंगा से अपनी ध्यान बुझाई तो किसी ने जमजम के पानी से या दजला करात से। यहाँ जरा ध्यान में रखने की यह बात भी है कि जब गंगा के किनारे, उसके आगे पड़े और चारों तरफ छून छात की भयानक दवार खड़ी कर दो जाय तो एक बेकल हरिजन क्या करे। धर्म तो रुझनी जरूरी है (आत्मिक प्रजाऊन) के लिये सदा बरसने वाली बरखा है कोई प्यासा कैसे ईद फेर सकता है। भारत में बाढ़ल कहाँ से नहीं आते हैं ?



कारण अंगे रंग-रूप, चाल-ढाल, शकल-सूरत, बनाव-सिगार, बोल-चाल और किरदार यानी चरित्र में इतना बदला कि उसका असल से पहिचानना भी कठिन होगया, इतना कठिन होगया कि वह लोग जो बीच एशिया के पुराने इतिहास का कुछ भी ज्ञान रखते हैं और इसलाम के पुराने इतिहास को कुछ पढ़ चुके हैं वह अच्छी तरह समझ सकते हैं कि आजकल का इसलाम वह नहीं है जो किमी जमाने में अरब में था भारत के मुसलमानों का अधिद्वार लिट्टे चर भारत हां की पंदावार है, यह ठीक है कि इमलामी लिट्टे चर में जगह जगह बीच एशिया के पुराने लिट्टे चर को झटक पाई जाती है, पर जरा गहराई से देखा जाय तो उसका पूरा ढाँचा भगन ही का दिखाई देगा, भारत के एक कट्टर मौलवी की दृष्टि अरब के एक शैख से कहीं जगहा एक कट्टर पंडित में मिलती जुगती है, इन्ही तरह एक मुसलमान मजदूर और किसान की व्याप, स्वभाव और बेहिनियत एह बद्द अरब या एक ईरानी मजदूर किसान में कहीं जगहा एक हिन्दू, जाट हिन्दू, मजदूर और किसान से मिलती जुगती है, इस मेल जोल का एक नहीं हजारों मिमालें एक मौलवी एक पंडित, एक हिन्दू मजदूर किसान और एक मुसलमान मजदूर किसान की बाहरी और भीतर दृष्टान, आदतों, तौर नरीकत, रहन सहन और भावों और विचारों में पाई जाता है जा किमी भी जानने वाले से छिपी नहीं है।

इसी उजाले में भारत के पुराने इतिहास को जरा गहराई से देखिये, भारत का असल रहने वाला न तो पंडित है न मौलवी, खाम कर वह मौलवी जो अपने कां शैख, सैयद, मुगल या पठान बताना है, अगर वह सबसुख शैख, सैयद, मुगल या पठान है इसी तरह ब्राह्मण, राजपूत, क्षत्री और वैश्य वगैरा भी सब के सब बाहर से ही आने वालों में से हैं, इसलिये कि असल भारत बासी तो कुछ पुराने बाशिन्दे जैसे गोंड, भील, संथाल वगैरा और कुछ हरिजन हैं, हाँ,

इसी उजाले में भारत के पुराने इतिहास को धरा धरा देखिये, भारत का असल रहने वाला न तो पंडित है न मौलवी, खाम कर वह मौलवी जो अपने को शैख, सैयद, मुगल या पठान बताना है, अगर वह सबसुख शैख, सैयद, मुगल या पठान है इसी तरह ब्राह्मण, राजपूत, क्षत्री और वैश्य वगैरा भी सब के सब बाहर से ही आने वालों में से हैं, इसलिये कि असल भारत बासी तो कुछ पुराने बाशिन्दे जैसे गोंड, भील, संथाल वगैरा और कुछ हरिजन हैं, हाँ,



इस कारण कि भारत में हिन्दुओं की संस्कृति यह है, मुसलमानों की यह, ईसाइयों, मित्रों या पारमियों की यह, न हम गमों कोई ठीक ठीक तरीक कर सकते हैं और न हम उनकी विशेषताओं (स्वसंस्थितियों) में से किसी भी विशेषता को कोई खास रंग दे सकते हैं, क्योंकि कोई भी रंग हम देना चाहें तो वह बिचकुल अलग नहीं होगा बल्कि सब में थोड़ा बहुत मिला जुला दिखाई देगा।

इसी उचाल में अगर हम एक निगाह भारत के पुराने इतिहास पर डालें तो वह सब गुस्थियों आसानी से सुन्नक जानी है जो भारत के मुसलमानों को समझने में एक मुद्दा से पड़ी हुई है।

भारत के पुराने इतिहास के देखने से इस का सचुत मिलता है कि भारत के अमली रङ्ग न तो हिन्दू धर्म न मुसलमान, हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों शब्दों से आए और बाहर से आने वाले ही इन दोनों धर्मों को अपने साथ लाए, फलतः इतना ही है कि हिन्दू धर्म हजारों वरस पहले भारत में आया और इस्लाम हजारों वरस बाद।

इसमें शक नहीं कि हिन्दू धर्म भारत में आकर गंगा जमना की तरह सदियों जमाने की गर्दियों से टकराता, बल खाना, करवटें बदलता, कराड़ों इनसानों के जीवन को मौजता, दिलों में प्रेम व सुखबत का रस भरता हुआ अब तक जीता और जागता है, यही नहीं बल्कि उसका अनमोल लिट्टे चर भी भारत की धरती से उगा, फूला फला और पूरे संसार के ज्ञानियों को अपनी तरफ खींचता रहा।

ठीक इसी तरह इस्लाम भी भारत में पहुँचकर बहुत सी शकल और सूरतों से निकलता हुआ यहाँ के हवा पानी, मौसमी बदल बदल, रीत रिवाज, एहसास और जज्बात (भावों और भावनाओं) और रंग बिरंगी स्वसंस्थितियों से माला माल हो कर हज़ारों भारत

अस कारन हम भिन्नादि पदों पर ये حکم सहन नहि सकते क भारत में हन्दुओं की संस्कृति यह है, मुसलमानों की यह, ईसाइयों, मित्रों या पारमियों की यह, न हम किसी को भी विशेषता को कोई खास रंग दे सकते हैं, क्योंकि कोई भी रंग हम देना चाहें तो वह बिचकुल अलग नहीं होगा बल्कि सब में थोड़ा बहुत मिला जुला दिखाई देगा।

असि जाले में हम नहि सकत भारत के पुराने इतिहास पर डालें तो वह सब गुस्थियों आसानी से सुन्नक जानी है जो भारत के मुसलमानों को समझने में एक मुद्दा से पड़ी हुई है।

भारत के पुराने इतिहास के देखने से इस का सचुत मिलता है कि भारत के अमली रङ्ग न तो हिन्दू धर्म न मुसलमान, हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों शब्दों से आए और बाहर से आने वाले ही इन दोनों धर्मों को अपने साथ लाए, फलतः इतना ही है कि हिन्दू धर्म हजारों वरस पहले भारत में आया और इस्लाम हजारों वरस बाद।

इसमें शक नहीं कि हिन्दू धर्म भारत में आकर गंगा जमना की तरह सदियों जमाने की गर्दियों से टकराता, बल खाना, करवटें बदलता, कराड़ों इनसानों के जीवन को मौजता, दिलों में प्रेम व सुखबत का रस भरता हुआ अब तक जीता और जागता है, यही नहीं बल्कि उसका अनमोल लिट्टे चर भी भारत की धरती से उगा, फूला फला और पूरे संसार के ज्ञानियों को अपनी तरफ खींचता रहा।

ठीक इसी तरह इस्लाम भी भारत में पहुँचकर बहुत सी शकल और सूरतों से निकलता हुआ यहाँ के हवा पानी, मौसमी बदल बदल, रीत रिवाज, एहसास और जज्बात (भावों और भावनाओं) और रंग बिरंगी स्वसंस्थितियों से माला माल हो कर हज़ारों भारत



मसाल क तार पर हम किसा हम को ठंडा कहते हैं, किसी को बहुत ज्यादा ठंडा. किसी को गरम, किसी को बहुत ज्यादा गरम और किसी को मत दिल यानी न ज्यादा गरम न ज्यादा ठंडा, खुशगवार या निहायन खुशगवार. पर हम भारत के हवा पानी के बारे में यह नहीं कह सकते. यानी न तो हम भारत को विलकुल ठंडा ही कह सकते हैं न विलकुल गरम. न पूरे भारत को हम मत दिल ही कर सकते हैं क्योंकि ससार के एक एक कोने में हवा पानी और मौसमों के जितने भी नमूने हैं वह सब के सब भारत में जमा हैं यानी भारत का एक हिस्सा अगर गरम है तो दूसरा ठंडा. एक बहुत ज्यादा गरम तो दूसरा बहुत ज्यादा ठंडा, एक बहुत गोला और नम तो दूसरा बहुत ज्यादा सूखा और सख्त, एक विलकुल पानी पानी तो दूसरा पत्थर ही पत्थर और नीमरा रेगिस्तान ही रेगिस्तान, बाल और लकड़ा चट मैदान.

एक और मसाल लोडिंग. संसार के किसी दुब्ड़े के बनने वालों को हम काला कहते हैं किसी को गोरा चिट्ठा लन्दे, किसी को लाल. किसी को पीला किसी को मिला जुना. किसी को गन्दुमी किसी को मौवला. पर भारत के सब रसियों को न तो काला कह सकते हैं न गोरा न लाल पीला न गन्दुमी न मौवला. क्योंकि भारत के रसियों में हर रंग रूप के लोग मौजूद हैं. काले में काले भी, गोरे से गोरे भी, मिले जुले गन्दुमी और मौवले भी. यानी धरती पर जगह जगह जितने भी रंग रूप के लोग पाए जाते हैं वह सब के सब कम या ज्यादा भारत में मौजूद हैं.

यही हाल दूसरी चीजों का है जिन में क्रैम रखायते. मजहबी मुक़ाव. कलचरी और मानसिक हालते सब शामिल हैं और सब की सब भारत रसियों में मिला जुली पाई जानी है. हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई. पारसी सब में. पच्छिमी, पूर्वी, उत्तरी, दक्खिनी सब में.

मसाल के तार पर हम किसी दिस को तैयार करते हैं, किसी को बहुत ज्यादा ठंडा. किसी को गरम, किसी को बहुत ज्यादा गरम और किसी को मत दिल यानी न ज्यादा गरम न ज्यादा ठंडा, खुशगवार या निहायन खुशगवार. पर हम भारत के हवा पानी के बारे में यह नहीं कह सकते. यानी न तो हम भारत को विलकुल ठंडा ही कह सकते हैं न विलकुल गरम. न पूरे भारत को हम मत दिल ही कर सकते हैं क्योंकि ससार के एक एक कोने में हवा पानी और मौसमों के जितने भी नमूने हैं वह सब के सब भारत में जमा हैं यानी भारत का एक हिस्सा अगर गरम है तो दूसरा ठंडा. एक बहुत ज्यादा गरम तो दूसरा बहुत ज्यादा ठंडा, एक बहुत गोला और नम तो दूसरा बहुत ज्यादा सूखा और सख्त, एक विलकुल पानी पानी तो दूसरा पत्थर ही पत्थर और नीमरा रेगिस्तान ही रेगिस्तान, बाल और लकड़ा चट मैदान.

एक और मसाल निचुने. सलार के किसी लकड़े के बसने और को हम काला कहते हैं किसी को गोरा चिट्ठा सफ़ेद. किसी को लाल किसी को पीला. किसी को मिला. किसी को गन्दुमी किसी को सलार. पर भारत के सब सलारों को न तो हम काला कह सकते हैं न गोरा न लाल. क्योंकि भारत के गन्दुमी न सलार. कौनके भारत के सलारों में हर रंग रूप के लोग मौजूद हैं. काले में काले भी, गोरे से गोरे भी, मिले जुले गन्दुमी और सलारों में मिला जुली पाई जानी है. हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई. पारसी सब में. पच्छिमी, पूर्वी, उत्तरी, दक्खिनी सब में.

मसाल के तार पर हम किसी दिस को तैयार करते हैं, किसी को बहुत ज्यादा ठंडा. किसी को गरम, किसी को बहुत ज्यादा गरम और किसी को मत दिल यानी न ज्यादा गरम न ज्यादा ठंडा, खुशगवार या निहायन खुशगवार. पर हम भारत के हवा पानी के बारे में यह नहीं कह सकते. यानी न तो हम भारत को विलकुल ठंडा ही कह सकते हैं न विलकुल गरम. न पूरे भारत को हम मत दिल ही कर सकते हैं क्योंकि ससार के एक एक कोने में हवा पानी और मौसमों के जितने भी नमूने हैं वह सब के सब भारत में जमा हैं यानी भारत का एक हिस्सा अगर गरम है तो दूसरा ठंडा. एक बहुत ज्यादा गरम तो दूसरा बहुत ज्यादा ठंडा, एक बहुत गोला और नम तो दूसरा बहुत ज्यादा सूखा और सख्त, एक विलकुल पानी पानी तो दूसरा पत्थर ही पत्थर और नीमरा रेगिस्तान ही रेगिस्तान, बाल और लकड़ा चट मैदान.



## भारत के मुसलमान

( मौलाना अब्दुल्लाह मिर्खा )

[ यह लेख अरबी जवान में पच्छिमी एशिया के अखबारों में निकला है। भाई अब्दुल्लाह मिर्खा ने खुद इसे अरबी से हिन्दुस्तानी करके 'नया हिन्द' के लिये भेजा है। इसके लिये हम उनके मशकूर हैं। इस सिलसिले के और लेख भी आगे 'नया हिन्द' में छपने की आशा है। ]

भारत के मुसलमानों की राजकाजी, समाजी, आर्थिक, मजहबी, क़त्तरी और नैतिक या 'मानविक' दानत को समझने के लिये भारत की पुरानी रचना परम्परा ( पुरानी तहज़ीब, पुराने इतिहास, लिटरेचर और हिंदी लोगो से मेलजोल का भी एक हलका सा नज़र ज़ेहन में रखना जरूरी है।

भारत अपनी रंग विरगी सोनर, हृदय को मोह लेने वाले नज्ज़ारे, चंचल हवाएं, निमल जल थल, भांग भांग के आदमी, सुन्दर नर नारियाँ और उनके रंग विरगे रूप, तरह तरह की पैदावार, अनोखे त्योहार, मेल ठेले और व्योहार के एतवार से पूरे संसार का निचोड़, कुलात्ता और जोहर हैं। इसी लिये भारत की किसी भी खसूसियत ( विशेषता ) को 'चाहे वह पैदावार और मौसम से लगाव रखती हो, चाहे जल थल और हवाओं से, चाहे रंग रूप, कुल कुटुम्ब और क़ौमियत से, चाहे भाशाओं, विचारों, बर्तों और कलचरों से, चाहे सोच विचार के तरीक़ों से' एक असल, एक क़ायदे या एक बंधन से नहीं बाँधा जा सकता चाहे वह असल वह क़ायदा और बंधन किसी भी देस और क़ौम के

## भारत के मुसलमान

( मौलाना अब्दुल्लाह मयरी )

[ ये लेख अरबी زبان مهن پنجهی 'پشوا' کے اخباروں میں 125 ہے۔ بھائی عبداللہ مصری نے خود اسے عربی سے ہندستانی کر کے 'نیا ہند' کے لئے بھیجا ہے۔ اس کے لئے ہم اسے مشکور ہوں۔ اس سلسلے نے 'اور ایک بھی آگے 'نیا ہند' میں چھپنے کی آشا ہے۔ — ایڈیٹر ]

بھارت کے مسلمانوں کی راج کاجی، سماجی، آئیک، مذہبی، کلچری اور نسبیاتی یعنی ماسک حالت کو سمجھنے کے لئے بھارت کی پرانی روایتوں (پرمپراؤں) پرانی تہذیب، پرانے آئیڈیالز، لٹریچر اور ہندسی لوگوں سے مہل چول کا بھی ایک ہلکا سا نقشہ ذہن میں رکھنا ضروری ہے۔

بھارت اپنی رنگ پرنگی سہلری، ہردے 'دوسرا' لہنے والے نظارے، چنچل عورتیں، برمل جل تیل، ہیبت بھارت کے آدمی، سندر، نر ناریاں اور ان کے رنگ برنگے روپ، طرح طرح کی پیداوار، انوکھے تہذیب، مہلے تہذیب اور بھوار کے اعتدال سے پورے سلسلہ کا فچر، خلاصہ اور جوہر ہے۔ اسلئے بھارت کی کسی بھی خصوصیت (وشیشتا) کو 'چاہے وہ پیداوار اور موسم سے نڈا رکھتی ہو، چاہے جل تہل اور ہواؤں سے، چاہے رنگ روپ کل کثب اور قومیت سے، چاہے بھاشاؤں، وچاروں، دھرموں اور کلچروں سے، چاہے سوچ بچار کے طریقوں سے، ایک اصول، ایک قاعدے یا ایک ہلدھن سے نہیں ہاندھا جا سکتا چاہے وہ اصول، وہ قاعدہ اور ہلدھن کسی بھی







शीला की आँखें डबडबाई हुई थीं, बाप की सख्ती से वह चली और वह और कुछ कहे बिना फाटन की तरफ मस्मन को देखने चल दी।

अपने मित्र के साथ मैं भी जल्दी जल्दी वहाँ पहुँचा जहाँ मस्मन खून से लथपथ बेहाश पड़ा था और जहाँ लोगों का भीड़ अपने अपने तराँके और अपने अपने खयाल से मस्मन के लिये ट्रक वाले से लड़ मगड़ रही थी। मानिक भी तुरन्त इसमें आ मिला और हमारे पहुँचने पर बहुत जल्दी यह फ़ैसला होगा कि इसी ट्रक से मस्मन अस्पताल भेजा जाय और जल्दी मस्मन होरन हो हमारी आँखों से ओझल होगया। मानिक मेरे मित्र और मैं अत्र चुप थे। कोई किसी से कुछ कहने की हिम्मत न करता था। हाँ, शीला के आँसू जारी थे और वह अब भिसकियो के साथ भटके खाया कर गिर रहे थे।

( ३३ )

( ३ )

“हमारी बड़ी बहू तो पूरियाँ कमाल की बनती है।”  
“भई दुर्गा शंकर, सबमुच यह मुँह में जाकर इस तरह घुल जाती है जैस भाग।”

“पिता जी, असल में यह सब आटा गंधेन की बजह से होता है।”  
“बहू तो ठीक है। पर ऐसा और बहूएँ क्यों नहीं करती?”  
“बहू जानती न होंगी।”

“नहीं जानती तो सीख लें।”

“बाबा जी, अम्माँ ने चाची को सिखाया था और इनको आता भी है। पर वह कहती हैं इस में देर लगती है और थोड़ी दिक्कत भी होती है।”

“बहू यह जान है ?”

जून सन् '५१

खुनी दवासी

नया मल

शिला की आँखें डबडबाई हुई थीं, बाप की सख्ती से बहू चली और वह और कुछ कहे बिना फाटन की तरफ जहाँ को देखने चल दी।

अपने मित्र के साथ मैं भी जल्दी जल्दी वहाँ पहुँचा जहाँ मस्मन खून से लथपथ बेहाश पड़ा था और जहाँ लोगों की भीड़ अपने अपने तराँके और अपने अपने खयाल से मस्मन के लिये ट्रक वाले से लड़ मगड़ रही थी। मानिक भी तुरन्त इसमें आ मिला और हमारे पहुँचने पर बहुत जल्दी यह फ़ैसला होगा कि इसी ट्रक से मस्मन अस्पताल भेजा जाय और जल्दी मस्मन होरन हो हमारी आँखों से ओझल होगया। मानिक मेरे मित्र और मैं अत्र चुप थे। कोई किसी से कुछ कहने की हिम्मत न करता था। हाँ, शिला के आँसू जारी थे और वह अब मस्मन के साथ जेतके लहा कर रहे थे।

( २ )

“हमारी बड़ी बहू तो पूरियाँ कमाल की बनती है।”

“भई दुर्गा शंकर, सब मुँह में मने मने जाऊँ इस तरह घुल जाती हूँ जैसे जहाज।”  
“पिता जी, असल में सब ये सب आता कुदहने की वजह से होता है।”

“ये तो ठीक है। पर ऐसा और बहूएँ क्यों नहीं करती?”

“ये जानती न होंगी।”

“नहीं जानती तो सीख लें।”

“बाबा जी, अम्माँ ने चाची को सिखाया था और इनकी बहू भी है। पर वह कहती हैं इस में देर लगती है और थोड़ी दिक्कत भी होती है।”

“बहू यह जान है ?”

( ३३ )



“देखिये माई साहब, मुझते और कुछ उठते तो शायद इसे आपने भी देखा था ?”

मैं बोला कुछ नहीं पर मेरी इनकार भरी खामोशी सबको ‘हाँ’ कहती मालूम हुई और मेरी यह चुप डिप्टी कलक्टर के गरसे के ज्वालामुखों को भडकाने के लिये काफ़ी से ऊयादा साबित हुई.

मानिक ने अब किसी का लिहाज़ किये बग़ैर भस्मन का हाथ पकड़ा और घर्यादना हुआ बन्दर ले गया. मेरे मित्र और मैंने दोनों के पड़ने की आवाज़, भस्मन की तरह की प्राथनाएँ और मानिक की मार का फटकार और गालियाँ सुनीं.

“पिता जी, यह लीजिये दुश्मनी. साले ने अपने बक्स में छिपा कर रख छोदी थी. था पक्का चोर, ग्यारह बेत सह गया तब क्यूला और चट दुश्मनी निकाल रर लाई.”

इसको इनना वकन कैसे मिल गया. इसने तो बिजली को भी मान कर दिया औरन ही तो दुश्मनी की पूछ ताछ शुरू हो गई थी—मैं सोचने लगा

बई दुश्मनी धिमी, नई किस्म की चौकोर थी इस तरह किमी का ध्यान नहीं गया. मैं क्या कहना. मन मसोस कर रह गया.

(२)

“बाबू जी ! भस्मन तो टुक मे पिच गया” शीला ने आकर खबर दी.

“कहाँ ?”

“अपने फाटक के सामने.”

“मडक पर ?”

“हाँ.”

साले का भगवान ने भी मज़ा दी. नमक हराम, जिस हाँडी में खाए इसी में छेद करे. जिस पाख़ पर बैठे उसी को काटे. मरेगा नहीं तो क्या होगा ?”

“दिकहेँ बैहानी صاحب, जेकहेँ ओर कचेँ अँहते तो शायद इसे आप ने भी दिकहा त्हा ?”

मेहन बोला लचेँ नेहस पर मियरी अँदर बेहरी खामोशी सिकु ‘हाँ’, केहेँ मेलम होय ओर मियरी ये जेब डीप्ली लकड़ के قصे के जवाब मेकही को बेहोले ने लँर काफ़ी से डीप्ली ठाबत होय .

मानिक ने अब किसी का क्हाव किये बिना जेहन का एदत रिकु ओर केहेँ अँहते अँदले कड़ा मंदरे मँद ओर मेहन ने बिदत के पड़े की आवाज़ जेहन की तरह एलच की पद अँहते अँहते ओर मानिक की मार की रोहगाइय ओर गालियाँ सँध .

x

x

x

( ० ० )

“पँता ही, ये लीजिये. दुरासी साले ने अँले बक्स मेहन जेहो को रक जेहोय त्ही. त्हा बका जेहो किये येत सभे किये तब कदो ओर जेहो दुरासी निकाल कर लाय .”

अस को अँता वकत हिसे मल मल अस ने तो बखल को रे मार कर दिया. फुरा होय अँले की जेहो जेहो शुरु होय त्ही त्ही—मेहन सोचने ला. ये दुरासी नेहसी, लँर कसे की जेहो त्ही अस एलच किसी का देहान नेहस किये. मेहन कड़ा केहेँ. मन मसोस कर रह गया.

( २ )

“बाबू जी, जेहो तो टुक मे पिच किये .” शीला ने अँले खबर दी.

“कहाँ ?”

“अँले पँताक के सामने .”

“सूक पर ?”

“हाँ .”

“साले को बेहोले अँले ने भी मज़ा दी. नमक हराम, जिस हँडी में खाए इसी में छेद करे. जिस शाख पर बैठे उसी को काटे. मेहन कहेँ त्ही त्ही—मेहन जेहो करे. जेहन शाख पर बैठे उसी को काटे.

“हाँ .”



“हाथ से गिराथ सकत है. पर हजूर हम ने गिरन की आवाज नाहीं सुनी.”

“अच्छा, जब तुम लल्लू को अन्दर ले गए तब दुश्मनी उसके हाथ में थी ?”

“लेजात बखत हम ध्यान नाहीं दिये रहे हजूर.”

“अब शुरू हुई चालाकी.” बीच में मानिक बोल उठा.

“जब दुश्मनी तुम्हारे सामने ही गिरी थी तब तुमको लल्लू को अन्दर लेजाते वक़्त उसपर निगाह रखन थी.”

“एही तो हजूर हम से भूल होय गई. तब तो हम दौड़े दौड़े देखन आए रहे पर ऊ मिली नाहीं. एही भूल हमरी होय गई तब तो भइया डाँटत है.”

“डाँटत क्या. अभी तो हम तुम्हारी खाल उधड़ेगे और तभी दुश्मनी तुम्हारे हलक से निकलेगी. हम राज चारों के मुक़दमे करत है, हम भूट सब को खूब परखना जानत है.” मानिक फिर गुस्से में भर कर बोल उठा.

“मन्मन तुम हमारे पुराने नौकर हो, ठीक ठीक बताओ. तुमने माइ देते देते मुक़दमे कर कुछ उठाया था या नहीं ?”

“हाँ, हजूर हम मुके जरूर रहे पर उठाया कुछ नहीं. फरस पर कुछ चपचा रहा और माइ से हटत नहीं रहा, ओ को हाथ से छुटात रहे. ऊ आलू के धिलका रहा.”

“इस चालाकी का कुछ ठिकाना है. अब्वल दर्जे का चोर है.” दाँत पीस कर मानिक फिर चिल्ला उठा.

“तो तुमने दुश्मनी नहीं उठाई ?”

“नहीं हजूर बिलकुल नहीं.”

यह जवाब सुनकर मेरे मित्र ने इस तरह मुझे देखा मानो यह कह रहे हों कि नौकर कितना चालाक है. आपको और मुझे भी सोना देना चाहता है.

“हातों से क़ात्ले सकत है. पर हिन्दूर हम ने क़र्न की आज नाहिन

सुनी.”  
“अच्छा, जब तम लल्लू ले क़त्ले तब दुश्मनी तस के हातों

महल तहल ?”

“ले जात भकत हम देहान नाहिन दूने रहे हिन्दूर.”

“अब शुरू होनी चालाकी.” बेच मन मानक बोल तहा

“जब दुश्मनी तहारे सामने ही क़री तहल तब तमको लल्लू को

अन्दर ले जातें क़त्ले सहर नला रक़हा तहल.”

“अहल तम हम से हिन्दूर बोल भूवे क़त्ले. तहल तम हम दुवरे

दुवरे दिक़ेन आने रहे पर मन रक़हन. अहल बोल नसरी हल्ले

क़त्ले तहल तम बेहला दाँतत हल्ले.”

“क़त्तत क़िला अहल तम हम तहारी क़हाल देहल्ले के अर तहल

दुश्मनी तहारे हल्ले से नक़ले की. हम दर चरार के मक़दमे क़र्न

हल्ले. हम चक़ोत सल्ले को ख़ूब परक़हा जातें हल्ले.” मानक पहर ख़स्से

महल पहर को बोल तहल.

“जहल तम हल्ले पराने लोको हल्ले तहलक तहलक बदा. तम ले

चलार दल्ले दल्ले क़त्ले तहल तहा या तहल्ले.”

“हल्ले हिन्दूर हम चक़े चरार रहे पर तहल क़त्ले तहल्ले. पहर

पर क़त्ले चक़ा रहा दर चलार से हल्लत तहल्ले रहे.” लोको हातों से चक़ता

रहे. लोको के चक़ला रहा.”

“तस चालाकी का क़त्ले तहलक है. लल्ले दरारे का चरार है.” दाँत

पीस कर मानक पहर चला तहल

“तो तम ने दुश्मनी तहल्ले तहल्ले ?”

“तहल्ले हिन्दूर बाल्ल तहल्ले.”

ये ज़ाब सल्ले महर मत्र ने तस तरह सल्ले दिक़ेन मानो ये

कहे रहे हल्ले के लोको क़त्ला चलाक है. अल्ले लोको मल्ले ये लहल

दल्ले जल्ले है.



लल्लू के हाथ में दी, बस इसने आपका कमरा साफ किया है और फौरन ही यह लल्लू को लेकर अन्दर पहुँचा है और दुश्मनी गायब है। दुश्मनी की जान जब दम से छली गई तो यत्न देना देखा यहाँ आया और कहना है कमरे में नहीं मिली। अब जा दुश्मनी कमरे में नहीं मिली तो क्या कमरा नारायण या भूत ले गया। इतने नहीं ली तो किमने ली ?

दुश्मनी शरीर की तब तक मुस्कत होती है तब तक तो कभी सोले—  
“समझत, जब तुमने लल्लू को गोद में लिया तब लल्लू के हाथ में दुश्मनी थी ?”

“हाँ हज़र, मैं सामने बहू की ते कहें की नमस्ती ?”  
दुश्मनी लल्लू के हाथ में दी।

“ठक, तुम लल्लू को हमारे कमरे में लाए अब भी उसके हाथ में दुश्मनी थी ?”

“जल्द थी।”

“तुमने अपनी आँखों देखी ?”

“देख ही नहीं हज़र, जब वह लल्लू के हाथ में गिरा रही तब हम ने वनश्री ठीक मेथमाथ दई।”

“ठीक अबरा जब तुमने लल्लू को वनश्री पर लिटायो तब भी उसके हाथ में थी ?”

“जल्द थी।”

“लल्लू ने मुँह में तो नहीं रखी थी ?”

“हज़र, लल्लू खाने की चीज छोड़ कर, पीना रफाया मुँह में कबडू नहीं देन।”

“देखा मोच समझ कर जवाब दो।”

“हज़र लल्लू तो दुश्मनी से खेलत रहे, मुँह की तरफ हाथ लेजात नहीं देखा, कबडू मुँह में ऐसन चीज नहीं देत।”

“हाथ से भी नहीं गिराई ?”

लल्लू के हाथ में दी, बस इस ने आप का कबड़ा साफ किया है और फौरन ही यह लल्लू को लेकर अन्दर पहुँचा है और दुश्मनी गायब है। दुश्मनी की जान जब दम से छली गई तो यत्न देना देखा यहाँ आया और कहना है कमरे में नहीं मिली। अब जा दुश्मनी कमरे में नहीं मिली तो क्या कमरा नारायण या भूत ले गया। इतने नहीं ली तो किमने ली ?

दुश्मनी शरीर की तब तक मुस्कत होती है तब तक तो कभी सोले—  
“समझत, जब तुमने लल्लू को गोद में लिया तब लल्लू के हाथ में दुश्मनी थी ?”

“हाँ हज़र, मैं सामने बहू की ते कहें की नमस्ती ?”  
दुश्मनी लल्लू के हाथ में दी।

“ठक, तुम लल्लू को हमारे कमरे में लाए अब भी उसके हाथ में दुश्मनी थी ?”

“जल्द थी।”

“तुमने अपनी आँखों देखी ?”

“देखी ही नहीं हज़र, जब वह लल्लू के हाथ में गिरा रही तब हम ने वनश्री ठीक मेथमाथ दई।”

“ठीक अबरा जब तुमने लल्लू को वनश्री पर लिटायो तब भी उसके हाथ में थी ?”

“जल्द थी।”

“लल्लू ने मुँह में तो नहीं रखी थी ?”

“हज़र, लल्लू खाने की चीज छोड़ कर, पीना रफाया मुँह में कबडू नहीं देन।”

“देखा मोच समझ कर जवाब दो।”

“हज़र लल्लू तो दुश्मनी से खेलत रहे, मुँह की तरफ हाथ लेजात नहीं देखा, कबडू मुँह में ऐसन चीज नहीं देत।”

“हाथ से भी नहीं गिराई ?”



## खूनो दुअन्नी

“निकालो दुअन्नी, नहीं अभी तुम्हारी खाल उधेड़ दी जायगी।”  
मैं बात करते करते चौंक पड़ा, फौरन मेरी आँख ने अपने आप  
पड़ी वह बोल उठे—“मानिक, क्या बात है?”

“देखिये न पिता जी, इस नौकर का कुछ ठिकाना है, मुझ  
बिस्टी कलक्टर की आँख में घूल भौंकना चाहता है।”

“निकालो दुअन्नी, निकालो!”

“भइया जी, मैंने दुअन्नी नहीं ली, चाहे जैसी कसम लेलो।”

नौकर पुराना था, मालिक को गोद खिलाया था, ‘भइया जी’  
कहकर बोलता था।

“तो क्या कमरा ब्ला गया?”

दुर्गा शंकर, मेरे मित्र, मेरी आँख का इशारा पाकर बोले—  
“मैं कुछ समझूँ तो, मामला क्या है?”

“जाओ मरूमन, पिता जी के सामने अपनी चोरी कबूल करो  
और दुअन्नी निकालकर दो!”

मरूमन अब दुर्गा शंकर जी के पास आगया। अबतक वह  
मेरे कानों की पहुँच के अन्दर था, अब आँखों के सामने भी  
आगया। वह कुछ कहे कहे कि मेरे मित्र दुर्गा शंकर की पोती यानी  
बिस्टी कलक्टर मानिक की बड़की, शीला आ पहुँची।

“देखिये बाबा जी, बात यह है कि मरूमन वदमारा बसो  
बस्व को गोद में लेकर वही आपके कमरे में आया है। इसी के  
आपने बस्वों ने बस्व को मनाने के लिये बाँधी की नई दुअन्नी

## खुनी दोआनी

“नकालो दो आनी, नेहों अभी तम्हारी केहाल अदमदो दो जन्मिकी।”

मैं बात करते करते चोन्क पड़ा, फौरा मेहरी आँख ने अपे आप  
सवाल का रोप लैहा ओर जेहसे ही मेहरी न्जर अपे दुरस्त पर पड़ो, वो  
बोल अत्ते—“मालक केहा बात हे?”

“दिकहेने ने पत्ता जी, इस नुकर का कच्चे त्हेकाने हे, मच्चे दिकी  
कलक्टर की आँखे में दमोल जेहनका चाहता हे।”

“नकालो दोआनी, नकालो!”

“नेहया जी, मेंहने दोआनी नेहों ली, चाहे जेहसी कसम

ले लो।”

नुकर पुरा ना त्हा, मालक को कुद केहलिया त्हा, ‘नेहया जी’ केहर बोलता  
त्हा।

“तु केहा कमरे केहा केहा?”

दुर्गा शंकर, मेहरे मत्तर, मेहरी आँख का लशारे पाकर बोलें—“मेंहने

कच्चे मच्चेमेंहने तु, म्हासले म्हा हे।”

“चाओ जेहने पत्ता जी के सामने अिली जेहोी कबूल करु ओ दोआनी

नकालो दो आनी।”

जेहने अब दुर्गा शंकर जी के पास आलिया। अब तक वो मेहरे

कानों की पेहँच के अन्दर त्हा, अब आँखों के सामने भी आलिया। वो

कच्चे केहे केहे मेहरे मत्तर दुर्गा शंकर की पोती येली किती कलक्टर

मालक की लुकी शिला आलैहजी।

“दिकहेने बाबा जी, बात ये हे जेहने बस्वाम्हा अभी लो

को कुद मेंहने लैकर मेंहने आप के कमरे में आया हे। इसी के

सामने अमल ने लो-को मलाने के लिये जेहसी की न्जरी दोआनी



नया हिन्द आर्दिसासक इनाकलाव का रास्ता जुल सन् १९१

१. हिन्दुस्तानी तालीमी सं'ब, ५. हरिजन सेवक सं'ब, ५. गो सेवा सं'ब.

### घन

अपने मकसद को पूरा करने के लिये सं'ब गाँव वालों से और दूसरे शरीब लोगों से घन जमा करेगा जिसमें खास जोर इस पर रहेगा कि शरीब लोगों से पैसा जमा किया जाए.

नई दिल्ली-२६. १. '४८.

—मो० क० गांधी

नया हिन्द आर्दिसासक अकलाव का रास्ता जुल सन् १९१  
२. हिन्दुस्तानी तालीमी सं'ब, ५. हरिजन सेवक सं'ब, ५. गो सेवा सं'ब.

### नहन

अपने मकसद को पूरा करने के लिये सं'ब गाँव वालों से और दूसरे शरीब लोगों से घन जमा करेगा जिसमें खास जोर इस पर रहेगा कि शरीब लोगों से पैसा जमा किया जाए.

—म. क. लन्दन.

नई दिल्ली-२६. १. '४८.

## 'नया हिन्द' के फुटकर पुराने परचे

कम कीमत पर खरीदिय

हर परचे की कीमत

सन् १९५० के फुटकर परचे	...	सिर्फ आठ आना
सन् १९४६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९४८ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९४५ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
जुलाई सन् १९४६ से दिसम्बर सन् १९४६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे खरीदने पर डाक खर्च माफ.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

१४५, मुद्रोगंज, इलाहाबाद

## 'नया हिन्द' के पेंतकर पराने परचे

कम कीमत पर खरीदिय

हर परचे की कीमत

सन् १९५० के पेंतकर परचे	...	सिर्फ आठ आना
सन् १९४६ के पेंतकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९४८ के पेंतकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९४५ के पेंतकर परचे	...	सिर्फ छे आना
जुलाई सन् १९४६ से दिसम्बर सन् १९४६ के पेंतकर परचे	...	सिर्फ छे आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे खरीदने पर डाक खर्च माफ.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

१४५, मुद्रोगंज, इलाहाबाद



नया हिन्दू अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता जून सन् '५१

(३) वह गाँव वालों में से काम करने वाले भरनो करेगा, उन्हें काम करना सिखायगा और उन सबका रजिस्टर रक्खेगा।

(४) वह अपने रोज रोज के काम का रोजनामचा लिख कर रक्खेगा।

(५) वह गाँव का इस तरह से संगठन करेगा कि हर गाँव अपनी खेती और दस्तकारी के जरिये अपने पैरों पर खुद खड़ा हो सके और अपना काम अपने आप चला सके।

(६) वह गाँव के लोगों को सजाई रखे और तन्दुरुस्त रहने की तालीम देगा और गाँव वालों में तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने को रोकने के लिये मजबूत तदबारे करेगा।

(७) वह हिन्दुस्थानी तालीमी नन्द की नय की हुई नीत के अनुसार "नई तालीम" के ढंग पर जन्म से लहर मोन तक गाँव वालों की तालीम का हन्तजाम करेगा।

(८) वह इस बात को देखेगा कि जिन लोगों के नाम कानूनी बोटों के रजिस्टर में दर्ज होने में रह गए हैं वह उस रजिस्टर में ठीक ठीक दर्ज कर लिये जावें।

(९) जिन लोगों में अभी तक बंजर दानों की कानूनी योग्यता नहीं है उन्हें वह इस बात के लिये बड़ा सा देगा कि वह उस योग्यता को हासिल करें ताकि उन्हें बोट का अधिकार मिल जावे।

(१०) ऊपर के कामों के जिये और दूसरे ऐसे कामों के लिये जो समय समय पर उनमें बड़ा दिये जायें, संघ के बनने हुए कायदों के मुताबिक वह अपना रुज्ज ठीक ठीक अदा करने के लिये अपने को खुद साधगा और योग्य बनायेगा।

संघ नीचे लिखी शायीन संस्थाओं को अपने साथ मिलाएगा।  
१. बाल इंडिया बर्ली संघ, २. बाल इंडिया ग्रामोयोग संघ,

अहस्तिक आंदोलन का आस्ते जून सन् '५१

३. वे गाँव वालों में से काम करने वाले बेहतरीन कीटों, नुबिस काम करना सिखायेंगे और उन सब का रजिस्टर रक्खेंगे।

४. वे अपने रोज रोज के काम का रोजनामचा लिखेंगे रक्खेंगे।

५. वे गाँव का इस तरह से संगठन करेंगे कि हर गाँव अपनी कृषि और दस्तकारी के जरिये अपने पैरों पर खुद खड़ा हो सके और अपना काम अपने आप चला सके।

६. वे गाँव के लोगों को सजाई रखें और तन्दुरुस्त रहने की तालीम देगा और गाँव वालों में तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने को रोकने के लिये सब तदबारे करेगा।

७. वे हिन्दुस्थानी तालीमों की टोली की टोली नीत के अनुसार "नई तालीम" के ढंग पर जन्म से लहर मोन तक गाँव वालों की तालीम का हन्तजाम करेगा।

८. वे इस बात को देखेंगे कि जिन लोगों के नाम कानूनी बोटों के रजिस्टर में दर्ज होने में रह गए हैं वह उस रजिस्टर में ठीक ठीक दर्ज कर लिये जावें।

९. जिन लोगों में अभी तक बंजर दानों की कानूनी योग्यता नहीं है उन्हें वे इस बात के लिये बड़ा सा देगा कि वह उस योग्यता को हासिल करें ताकि उन्हें बोट का अधिकार मिल जावे।

१०. ऊपर के कामों के लिये और दूसरे ऐसे कामों के लिये जो समय समय पर उनमें बड़ा दिये जायें, संघ के बनने हुए कायदों के मुताबिक वह अपना रुज्ज ठीक ठीक अदा करने के लिये अपने को खुद साधगा और योग्य बनायेगा।

संघ नीचे लिखी शायीन संस्थाओं को अपने साथ मिलाएगा।  
१. बाल इंडिया बर्ली संघ, २. बाल इंडिया ग्रामोयोग संघ,



के सब नेता मिल कर सारे हिन्दुस्तान के लिये सेवा करेंगे और अलग अलग अपने इलाकों के लिये सेवा करेंगे. दूसरे दरजे के नेता जब कभी जरूरत समझेंगे अपने में से एक को सरदार चुन सकेंगे जो जब तक चाहेगा सब गिरोहों की क्वायदे बन्दी करेगा और उनकी अगुवाई करेगा.

(चूँकि सूबे या जिले अभी आखिरी तौर पर नहीं बने हैं और अभी अदल बदल रहे हैं, इसलिये सेवकों के इस गिरोह को सूबा या जिला कौन्सिलों में बांटने की कोशिश नहीं की गई, और मारे हिन्दुस्तान के ऊपर अधिकार इस गिरोह या उन गिरोहों को दिया गया है जो इस समय तक बन चुके हों, यह बात ध्यान में आ जानी चाहिये कि सेवकों के इस दल को जो कुछ अधिकार या ताकत मिलेगी वह उस सेवा से मिलेगी जो वह खुशी और समझदारी के साथ अपने मालिकों करेंगे, उनका मालिक सारा हिन्दुस्तान है।)

(१) हर काम करने वाले को अपने हाथ के कंठ सूत की या आल इडिया चर्चा संघ की तसदीक की हुई खादी पहनने की आग्रह होनी चाहिये. यह जरूरी है कि वह नदी का चोड़ा से निकुत पर-देख करता हो. अगर वह हिन्दू हो तो यह जरूरी हागा कि उनले अपनी निजी जिन्दगी में या अपने कुटुम्ब में हर सूत और हर शकल में छुआ छुन को छोड़ दिया हो. यह भी जरूरी हागा कि उसे साम्प्रदायिक एकता ( फ्रिकेवाराता इतहाद ) के आदर्श में बिश्वास हो, सब धर्मों के लिये उसमें बराबर का आदर और मान हो और नस्ल, धर्म या मंद औरत के फरक का ग्याल न करत हुए उनको बराबर के मौके मिलने और सबका बराबर का दुर्जा समझे जाने में भी उसे बिश्वास हो.

(२) वह अपने अधिकार के अन्दर के हर गाँव वाले से मिले जुलेगा।

کے سب نہتہا مل کر سارے ہندوستان کے لئے سہوا کر بیٹھے اور ایک ایک اپنے اپنے علاقوں کے لئے سہوا کر بیٹھے۔ دوسرے درجے کے نہتہا جب کبھی ضرورت سمجھتے تھے اپنے مہوں سے ایک کو سرفراز چن سکتے تھے جو جب تک چاہے گا سب گروہوں کی قاعدہ بلندی کرے گا اور انکی افواہی کرے گا۔

(چونکہ صوبہ یا ضلع ابھی آخری طور پر نہیں بنے تھے اور ابھی اداں بدل رہے تھے، اُس لئے سپروائز کے اُس کردار کو صوبہ یا ضلع کونسلوں میں بابتلے کی کوشش نہیں کی گئی۔ اور سارے ہندوستان کے اوپر ادھکار اُس کردار یا اُن گروہوں کو دیا گیا ہے جو اُس صوبہ تک بن چکے ہوں۔ یہ بات دھیان میں آجانی چاہئے کہ سپروائز کے اُس دال کو جو کچھ ادھکار یا طاقت ملے گی وہ اُس صوبہ سے ملے گی جو وہ خیریشی اور سمجھداری کے ساتھ اپنے مالک کی دینگے۔ اُن کا مالک سارا ہندوستان ہے۔)

۱۔ ہر کام کرنے والے کو اپنے ہاتھ کے کتے سمیت ہی نہ لے کر نکلیں۔  
چونکہ سنگھ کی تصدیق ہی ہوئی کساد نہ بننے کی وجہ سے  
چاہئے۔ یہ ضروری ہے کہ وہ شے کی چیزیں سے بالکل پرہیز کرتا  
ہو۔ اگر وہ ہلکے تو یہ ضروری ہوگا کہ اس نے اپنی نئی زندگی  
میں با اپنے کتے میں ہر صورت اور ہر شکل میں چھوڑا۔ چھوڑ  
کو چھوڑ دیا ہو، بے بھی ضروری ہوگا کہ اسے کتے کو سامنے ایک ایک  
(فوقہ رائے اتحاد) کے آدرش میں بشواس ہو، سب دعووں کے  
لئے اس میں برابر یا آدر اور مان ہو اور بس۔ دھرم یا مرد عورت  
کے فرق کا خیال نہ کرتے ہوئے کتے برابر کے موثر ملنے اور سب کا  
برابر کا درجہ سمجھے جانے میں بھی سے بشواس ہو۔

۲۔ وہ اپنے ادھیکار کے اندر کے ہر گاؤں والے سے ملے جلے گا۔



मशीन बन गई है, अब कोई काम नहीं रह गया है। हिन्दुस्तान को अब शहरों और कस्बों का खयाल हटा कर सात लाख गाँव के लिये समाजी (सोशल), सदाचारी (मार्शल) और मानी (इकोनामिक) आबादी हासिल करनी है। हिन्दुस्तान जैसे जैसे अपने इस जनराज के मकसद की तरफ बढ़ेगा वैसे वैसे सिविल यानी शहरी ताकत फौजी ताकत के ऊपर कायू पाने के लिये जरूर पूरी टक्कर लेंगी। राजकाजी पार्टियों और फिरकैबाराना संस्थाओं की लाग हाँट हिन्दुस्तान को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती। इनसे देस को बचा कर रखना ही होगा। इन कारनों से और इसी तरह के दूसरे कारनों से आज इंडिया कॉंग्रेस कमेटी मौजूदा कॉंग्रेस संगठन को तोड़ देने और नीचे लिखे क्रायदों के अनुसार 'लोक सेवक सघ' का सुन्दर रूप लेने का फ़ैसला करती है। मौके की जरूरत के मुताबिक इन नियमों में अदृश बदल किया जा सकेगा।

हर ऐसे पाँच बालिग मरदों या औरतों को एक पंचायत, जो या तो गाँव के होंगे या जिनके मन में गाँव की लगन होगी, एक इकाई मानी जायगी।

इस तरह की दो पास पास की पंचायतें मिल कर अपने में से ही चुने हुए एक नेता के अधीन एक काम करने वाला जत्था बनाएगी।

जब इस तरह की सौ पंचायतें हो जायँगी तो उनके पचास पहले दरजे के नेता अपने में से एक को दूसरे दरजे का नेता चुनेंगे। इसी तरह होता रहेगा, इस बीच पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के नेता के अधीन काम करेंगे, दो दो सौ पंचायतों के पास पास काम करने वाले गिरोह बनते रहेंगे, जबतक कि यह सारे हिन्दुस्तान में न फैल जाएँ, बाद की पंचायतों का हर गिरोह पहले गिरोह की संख्या अपने में से दूसरे दरजे का एक नेता चुन लेगा। दूसरे दरजे

मशहون بن کنگي هـ، اب کوئی کام نہیں رہ گیا ہے۔ ہلدستان کو اب شہروں اور قصبوں کا خیال ہٹا کر سات لاکھ گاؤں کے لئے سماجی (سوشل) سداچاری (مارشل) اور مانی (اقتصادی) آزادی حاصل کرنی ہے۔ ہلدستان جیسے جیسے اپنی اس جہد راج کے مقصد کی طرف بڑھے گا ویسے ویسے سول یعنی شہری طاقت فوجی طاقت کے اوپر قابو پانے کے لئے ضرور پیروی تکر لےگی، راج کا جی پارتیوں اور فرقہ وارانہ سندستھاؤں کی لاک ڈائٹ ہلدستان کو تندرست نہیں رکھنے دے سکتی۔

این سے دیس کو بچا کر رکھنا ہی ہوگا۔ این کارنوں سے اور ایسی طرح کے دوسرے کارنوں سے اُن اذیا کانگریس کھتی موجودہ کانگریس سنگتوں کو توڑ دیئے اور نیچے لکھ قاعدوں نے اسپسار 'لوک سبک سنگت' کا سندسار روپ لہلہ کا فیصلہ کرنی ہے۔ موقع کی ضرورت کے مطابق این نیس میں ایل بدل کیا جا سکھتا۔

ہر ایسے پانچ بالغ مردوں یا عورتوں کی ایک پمچاپیت، جو یا تو گاؤں کے ہونگے یا چلکے من میں گاؤں کی لکن ہوگی، ایک اگلی مانی جانہگی۔

ایس طرح کی دو پاس پاس کی پمچاپتوں مل کر اپے میں سے ہی چلے ہوئے ایک لہتا کے ادھوں ایک کام کرنے والا جتھا ہڈاٹھلگی۔

جب اس طرح کی سو پمچاپتوں ہر جانہنگی تو نئے پچاس پہلے درجے کے نہتا اپے میں سے ایک کو دوسرے درجے کا نہتا چلہنگی۔ اسپسارچ ہوتا رھتا: اس پہلے درجے کے نہتا دوسرے درجے کے نہتا کے ادھوں کام کرینگے۔ دو دو سو پمچاپتوں نے پاس پاس کام کرنے والے گروہ ہلتے رھلگے، جب تک کہ یہ سارے ہلدستان میں نہ پھل جائیں۔ ہمد کی پمچاپتوں کا ہر گروہ پہلے گروہ کی طرح اپے میں سے دوسرے درجے کا ایک نہتا چن لہتا۔ دوسرے درجے



के सामने रख दें, जहाँ युमकिन हो सके इसके आधार पर पंचावतें बनवाऊँ। खास कोशिश यह रहेगी कि हर खिले में कम से कम गांधी स्मारक के रूप में एक आश्रम ऐसा कायम हो जाये जो खिले के लिये इस आन्दोलन का मरकज बन जावे और जिसमें अपनी शक्ति और साधनों के अनुसार खिले के उन काजकर्ताओं को जो इस आन्दोलन में हिस्सा लेना चाहें समग्र सेवा की तालीम दी जा सके।

मेरा यह भी इरादा था कि सूबे के रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफरेन्स करके इस प्रोग्राम को उनके सामने रखूँ और उनसे इस आन्दोलन के फैलाने के लिये सलाह और मदद लूँ। पर मुझे मालूम हुआ है कि शायद रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफरेन्स देस के सवालों पर और करने और उनका हल निकालने के लिये हो रही है। मैंने यह मुनासिब समझा कि सूबे में कानफरेन्स करने के पहले उस कानफरेन्स के फैमलों को देख लूँ। शायद उनसे मुझे इस संघ के मकसदों के पूरा करने में मदद मिल सके।

मेरी अपनी मित्रों, सूबे के रचनात्मक काजकर्ताओं और बापू के प्रेमियों से, जो इस प्रोग्राम में दिलचस्पी रखते हों, यह प्रार्थना है कि अगर वह ठीक समझें तो मुझे इस आन्दोलन के फैलाने में मदद दें।

लोक सेवक संघ के विधान का मसौदा

( जो बापू के मरने के बाद 'हरिजन' में छपा था )

हिन्दुस्तान के दो टुकड़े तो हो गए, फिर भी इंडियन नेशनल काँग्रेस ने राजकाजी आजादी हासिल करने के जो साधन निकाले थे उन साधनों से हिन्दुस्तान ने राजकाजी आजादी हासिल कर ली है, इसलिये काँग्रेस की आजकल की शकल सूरत का यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक जरिया और पार्लीमेंटरी

के सामने रके हों। जहाँ ممکن हो सके इस के अन्धकार पर पलितानियों पलायन। खास कोशिश यह रहे कि हर खिले में कम से कम गांधी स्मारक के रूप में एक आश्रम ऐसा कायम हो जाये जो खिले के लिये इस आन्दोलन का मरकज बन जावे और जिसमें अपनी शक्ति और साधनों के अनुसार खिले के उन काजकर्ताओं को जो इस आन्दोलन में हिस्सा लेना चाहें समग्र सेवा की तालीम दी जा सके।

मेरा यह भी इरादा था कि सूबे के रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफरेन्स करके इस प्रोग्राम को उनके सामने रखूँ और उनसे इस आन्दोलन के फैलाने के लिये सलाह और मदद लूँ। पर मुझे मालूम हुआ है कि शायद रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफरेन्स देस के सवालों पर मुझे मालूम हुआ है कि शायद रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफरेन्स करने के पहले उस कानफरेन्स के फैमलों को देख लूँ। शायद उनसे मुझे इस संघ के मकसदों के पूरा करने में मदद मिल सके।

मेरी अपने मित्रों 'सूबे के रचनात्मक काजकर्ताओं' और बापू के प्रेमियों से, जो इस प्रोग्राम में दिलचस्पी रखते हों, यह प्रार्थना है कि अगर वह ठीक समझें तो मुझे इस आन्दोलन के फैलाने में मदद दें।

लोक सेवक संघ के विधान का मसौदा

( जो बापू के मरने के बाद 'हरिजन' में छपा था )

हिन्दुस्तान के दो टुकड़े तो हो गئے, पुर भी अन्धिन नेशनल काँग्रेस ने राजकाजी आजादी हासिल करने के जो साधन निकाले हैं उन साधनों से हिन्दुस्तान ने राजकाजी आजादी हासिल कर ली है, इसलिये काँग्रेस की आजकल की शकल सूरत का यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक जरिये और पार्लियमेटरी



२५ विधान म बापू न सार दस का कर या हलका म बाट दिया है और हर हलके के ऐसे लोगों को, जो इस विधान के सेवक की शर्तों को पूरा करते हों, यह अधिकार दे दिया है कि वह अपने हलके में अगर चाहें तो पंचायत का रूप ले लें और इस विधान के अनुसार काम करने लगे। इसके लिये उन्हें किसी बाहरी इजाजत या बढ़ावे की जरूरत नहीं है।

लेकिन आज की हालत में यह मुमकिन नहीं है कि देस के दह काजरतों जो इस विधान की शर्तों के अनुसार सेवक बन मनते बिना किसी मरकजी बढ़ावे या आन्दोलन क इस विधान के असली रूप और मकसद को समझ सकें और इससे पूरा साथदा उठा सकें। जैसा कि मैंने कहा है कि इस रास्ते की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि बापू इसके सम्बन्ध में वह लेख नहीं लिख सके जिनका इरादा उन्हींने जाहिर किया था। जब तक यह कठिनाई दूर नहीं होनी, इस विधान का जनता तक पहुँच सकता ना मुमकिन रहेगा। इसके दूर करने के लिये बहुत प्रचार की जरूरत है।

मेरे लोक सेवा संघ बनाने का असली मतलब इसी कठिनाई को दूर करना है। इसके लिये मैंने सेवा कुंज आश्रम, गंगाघाट, उन्नाव में इस संघ का दफ्तर खोल दिया है। मैं इस आश्रम में इस काम के लिये एक प्रकाशन विभाग खोल देने की कोशिश कर रहा हूँ। इस प्रकाशन विभाग से मैं एक "आहिंसात्मक इतकलाब पुस्तक माला" निकालना चाहता हूँ जिसमें बापू के मिशन और इस आन्दोलन के सम्बन्ध में बुलेटिन और पुस्तकें निकाली जायगी। अपनी दूसरी बुलेटिन में हम उन शंकाओं को दूर करने की कोशिश करेंगे जो इस संघ के बुनियादी असल और प्रोग्राम के सम्बन्ध में कुछ मित्रों ने बाहिर की हैं।

मेरा इरादा है कि जितने जिले में आकर इसके प्रोग्राम को लोगों

इस उद्देश्य में पैरो ने सारे दीस नो दुर्य्य हसिण सों बालक दिया है, ओ हर हालत के लिये लोको को, जो इस उद्देश्य के सेवक की शर्तों को पूरा करते हों, यह अधिकार दे दिया है कि वह अपने हलके में अगर चाहें तो पंचायत का रूप ले लें और इस उद्देश्य के अनुसार काम करने लगे। इसके लिये उन्हें किसी बाहरी इजाजत या बढ़ावे की जरूरत नहीं है।

लेकिन आंकी हालत में ये मुमकिन नहीं है कि दीस के दह काजरतों जो इस उद्देश्य की शर्तों के अनुसार सेवक बन मनते बिना किसी मरकजी बढ़ावे या आन्दोलन के इस विधान के असली रूप और मकसद को समझ सकें और इससे पूरा साथदा उठा सकें। जैसा कि मैंने कहा है कि इस रास्ते की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि बापू इसके सम्बन्ध में वह लेख नहीं लिख सके जिनका इरादा उन्हींने जाहिर किया था। जब तक यह कठिनाई दूर नहीं होनी, इस विधान का जनता तक पहुँच सकता ना मुमकिन रहेगा। इसके दूर करने के लिये बहुत प्रचार की जरूरत है।

मेरे लोक सेवा संघ बनाने का असली मतलब इसी कठिनाई को दूर करना है। इसके लिये मैंने सेवा कुंज आश्रम, गंगाघाट, उन्नाव में इस संघ का दफ्तर खोल दिया है। मैं इस आश्रम में इस काम के लिये एक प्रकाशन विभाग खोल देने की कोशिश कर रहा हूँ। इस प्रकाशन विभाग से मैं एक "आहिंसात्मक इतकलाब पुस्तक माला" निकालना चाहता हूँ जिसमें बापू के मिशन और इस आन्दोलन के सम्बन्ध में बुलेटिन और पुस्तकें निकाली जायगी। अपनी दूसरी बुलेटिन में हम उन शंकाओं को दूर करने की कोशिश करेंगे जो इस संघ के बुनियादी असल और प्रोग्राम के सम्बन्ध में कुछ मित्रों ने बाहिर की हैं।

मेरा इरादा है कि जितने जिले में आकर इसके प्रोग्राम को लोगों



बढ़ने का सबाल पैदा नहीं होता। इस रास्ते पर जो चलेगा वह यह पहले ही जान लेगा कि उसका काम रास्ता दिल्माना है। कामयाबी और नाकामयाबी का सबाल उसके अस्तिथार से बाहर है। अहिंसा के रास्तों पर चलने वालों का बसली सहारा ईश्वर होता है और यैबी (देवी) शक्तियाँ सदा उनका साथ देती रहती हैं। इन्हीं पर उनकी कामयाबी नाकामयाबी का सारा दारमदार होता है।

आप सबाल यह है कि इस प्रोग्राम को पूरा करने के लिये 'लोक सेवा स'घ' का क्या रूप हो। मेरे खयाल में इसके लिये कोई नया विधान बनाना और जरूरी है। 'लोक सेवा स'घ' का विधान ही इसके विधान का काम दे सकता है। मैं बापू के विधान का पूरा मसौदा जो 'हरिजन' में बापू के मरने के बाद 'बापू की आखरी वसीयत' के नाम से छपा था इस सबमून के आखीर में देता हूँ। यह मसौदा बहुत छोटा सा है। इसे कॉंग्रेस के सेक्रेटरी साहब को देते समय बापू ने कहा था कि वह पाँच छै लेख लिखकर इसके अलग अलग पहलुओं पर रोशनी डालेंगे। बापू यह नहीं कर सके, मैंने इसका असली रूप दर्शाने के लिये 'महात्मा गाँधी की वसीयत' के नाम से एक पुस्तक लिखी है जिसे हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने छाप दिया है। जो लोग इस बारे में मेरे विचारों को जानना चाहें वह उसे पढ़ सकते हैं।

इस मसौदे को अगर आल इंडिया कॉंग्रेस कमेटी ने मान लिया होता तो आल इंडिया कॉंग्रेस कमेटी के वह मेम्बर जो बापू के विधान की शर्तों पर चलते होते और जिन्हें बापू के नए आन्दोलन में हिस्सा लेना मंजूर होता, आप से आप इसकी काजकारी कमेटी का रूप ले लेते। इस तरह इसकी एक मरकजी काजकारी कमेटी बन जाती। पर यह नहीं हुआ। फिर भी यह विधान बापू ने कुछ इस तरह बनाया है कि बिना किसी मरकजी काजकारी कमेटी की मदद के इसका काम आप से आप चल सकता है।

जल्मे का سوال पैदा नहिन हुना . इस रास्ते पर जो चले گا وہ پہلے ہی جان لے گا کہ اُس کا کام راستہ دکھاتا ہے . کسمیابی اور ناکسمیابی کا سوال اُس کے اختصار سے باہر ہے . اھمسا کے راستوں پر چلنے والوں کا اصلی سہارا ایشور हुना ہے اور غمغمی (دهی) شکستیل سدا اُن کا ساتھ دیتی رہتی هیں . انھیں پر انکی کسمیابی نا کسمیابی کا سادا دارمदार हुना ہے .

اوب سوال یہ ہے کہ اِس پروگرام کو پورا کرنے کے لئے 'لوک سہوا سنگھ' کا کیا روپ ہو . مہارے خیال میں اِس کے لئے کوئی نیا ودھان بلانا ضروری ہے . 'لوک سہوبک سنگھ' کا ودھان ہی اِس کے ودھان کا کام دے سکتا ہے . میں باپو کے ودھان کا پورا مسودہ جو 'ہریجن' میں باپو کے مرنے کے بعد 'باپو کی آخری وصیت' کے نام سے چھپا تھا اس مضمون کے آخبر میں دیتا هیں . یہ مسودہ بہت چھوٹا سا ہے . اِسے کانگریس کے سکریتری صاحب کو دیتے سمے باپو نے کہا تھا کہ وہ پانچ چھ لوک لکھکر اسکے الگ الگ پہلوؤں پر روشنی ڈالیں گے . باپو یہ نہیں کر سکے . میں نے اِس کا اصلی روپ درھالے کے لئے 'مہاتما گاندھی کی وصیت' کے نام سے ایک پستک لکھی ہے جسے علدستگانی کلچر سوسائیتی نے چھاپ دیا ہے . جو لوگ اِس بارے میں مہارے وچاروں کو جاننا چاہیں وہ اسے پڑھ سکتے هیں .

اِس مسودے کو اگر آل انڈیا کانگریس کسمیتی نے مان لیا हुنا تو آل انڈیا کانگریس کسمیتی کے وہ مسہر جو باپو کے ودھان کی شرطوں پر چلتے هوتے اور جملہیں باپو کے نمے آندولن میں حصہ لھنا منظور हुنا . آپ سے آپ اِس کی کچ کاری کسمیتی کا روپ لے لھتے . اس طرح اس کی ایک مرئوی کچ کاری کسمیتی بن جاتی . پر یہ نہیں هوا . پھر بھی یہ ودھان باپو نے کچھ اِس طرح بلایا ہے کہ ہلکا کسمی مرئوی کچ کاری کسمیتی کی مدد کے اِس کا کلم آپ سے آپ چل سکتا ہے .



बन्धुत सं गठन पैदा नहीं किया जा सकता जो हुकुमत के खबरदस्तों का गठन का मुकाबला कामयाबी के साथ कर सके. बापू ने रचनात्मक बोवाणों के प्रोप्राय देस के सामने रखे हैं. वह ऐसा लगाव पैदा करने के लिये लासानी तरीके हैं. लेकिन अगर उनके साथ साथ राज-काजी चेतना पैदा नहीं होती, जनता में वह निडरता पैदा नहीं की जाती जो सत्याग्रह से ही पैदा की जा सकती है, तो इसमें हुकुमत के नाजायज दबाव और जुरी चालों का मुकाबला करने की ताकत पैदा नहीं होती और इसके लिये कुरबानी करने का होसला नहीं बढ़ता. इस तरह वह सारा लगाव जो रचनात्मक योजनावै पैदा करती है बेजान और बेमानी है. वह सेवायें राजकाजी टकर से अलग रह कर जनता को जगा नहीं सकती, उसे सुला देने का काम कर सकती है, उसमें आत्मबल पैदा नहीं कर सकती. उसे आज से ज्यादा परा-धीन बना सकती है. इसलिये हमें सब समझ लेना चाहिये कि राज-काजी चेतना और आत्मबल के बिना बापू की रचनात्मक योजनावै न राम-राज ला सकती हैं न किसी तरह का भी अहिंसात्मक इनकलाब पैदा कर सकती हैं. लेकिन अगर हम इन योजनावों को सत्याग्रह और आत्मबल के साधनों के साथ जोड़ दें तो यह रचनात्मक काजकर्ताओं के हर दल को फिर से खिन्ना कर देगी. इसीलिये मैंने अपने मुकाब में पार्लियेन्टरी और गैर-पार्लियेन्टरी काम को एक दूसरे का पूरक और मर्यादित कहा है. इसी के साथ साथ अहिंसात्मक होने के नाते वह प्रोप्राय ऐसा है जिससे इङ्ग्लैण्ड, ऑगरेस, राजकाजी पार्टियों, वा रचनात्मक काजकर्ता किसी को भी कोई कुलमन नहीं पहुँचता. अगर पहुँचेगा तो फावदा ही पहुँचेगा.

अब बवाल सिर्फ यह रह जाता है कि देस की मौजूदा हालत में ऑगरेस और इङ्ग्लैण्ड से जवान रह कर राजकाजी मेम्ल में काम करने के लिये कौन तैयार होगा. वह एक बड़ी खबरदस्त कठिनाई है. मैंने आग्रह करना है. वह रखा है। कि इस पर कौनसे दुर्जे

मजबूत संलग्न पैदा नहीं किया जा सकता जो حکومت के ज़बोस्त संलग्न का مقابل कामयाबी के साथ कर सके. बापू ने रचनात्मक सवाल के प्रोप्राय देस के सामने रखे हैं. वह ऐसा लगाव पैदा करने के लिये लासानी तरीके हैं. लेकिन अगर उनके साथ साथ राज-काजी चेतना पैदा नहीं होती, जनता में वह निडरता पैदा नहीं की जाती जो सत्याग्रह से ही पैदा की जा सकती है, तो इसमें हुकुमत के नाजायज दबाव और जुरी चालों का मुकाबला करने की ताकत पैदा नहीं कर सकती. उसे सुला देने का काम कर सकती है, उसमें आत्मबल पैदा नहीं कर सकती. उसे आज से ज्यादा परा-धीन बना सकती है. इसलिये हमें सब समझ लेना चाहिये कि राज-काजी चेतना और आत्मबल के बिना बापू की रचनात्मक योजनावै न राम-राज ला सकती हैं न किसी तरह का भी अहिंसात्मक अन्तलाब पैदा कर सकती हैं. लेकिन अगर हम इन योजनावों को सत्याग्रह और आत्मबल के साथ जोड़ दें तो यह रचनात्मक काजकर्ताओं के हर दल को फिर से खिन्ना कर देगी. इसीलिये मैंने अपने मुकाब में पार्लियेन्टरी और गैर-पार्लियेन्टरी काम को एक दूसरे का पूरक और मर्यादित कहा है. इसी के साथ साथ अहिंसात्मक होने के नाते वह प्रोप्राय ऐसा है जिसमें हुकुमत, राजकाजी पार्टियों, वा रचनात्मक काजकर्ता किसी को भी कोई कुलमन नहीं पहुँचता. अगर पहुँचेगा तो फावदा ही पहुँचेगा.

अब सवाल सिर्फ यह रह जाता है कि देस की मौजूदा हालत में ऑगरेस और इङ्ग्लैण्ड से जवान रह कर राजकाजी मेम्ल में काम करने के लिये कौन तैयार होगा. वह एक बड़ी खबरदस्त कठिनाई है. मैंने आग्रह करना है. वह रखा है। कि इस पर कौनसे दुर्जे



आ बापू के राम राज की कल्पना को आसानी रूप में पेश कर देंगी, यह बिल्कुल बेबुनियाद खयाल है। इकूमत की नीतियों बिना सत्याग्रह की मदद के बदली नहीं जा सकती। हमारे रचनात्मक प्रोग्रामों में जब तक सत्याग्रह का अंश शामिल नहीं होता, हम हरगिज इकूमत की नीतियों को बदल नहीं सकते न इकूमत को जनता का सचा सेवक बना सकते हैं। पहले दल की तरह दूसरा दल भी इस रास्ते से बहुत दूर है। वह इस खयाल में डूबा हुआ है कि इकूमत के अन्दर रहकर और उसकी दौलत और ताकत की मदद लेकर ही राम-राज लाया जा सकता है। यह लोग काँग्रेस को सोढ़ी बनाकर देस की घाटा सभाओं में पहुँच जाना अपने इस मकसद को हासिल कर लेने की आखिरी मंजिल समझते हैं। यह दोनों रास्ते अच्छे हैं या बुरे लेकिन बापू के देस सुधार के रास्ते नहीं हैं।

अगर हम मान लें कि यह दोनों रास्ते बापू के ही रास्ते हैं, क्योंकि ऐसी बातों में बड़े से बड़े मतभेद हो सकते हैं, फिर भी तीसरा रास्ता जो बापू ने अपने लोक सेवक संघ में दिखाया है उनके प्रेमियों के लिये खाली रह जाता है। मैं इसी रास्ते को अखिरतयार करना चाहता हूँ और जो लोग इसे पसन्द करते हों वह लोक सेवा संघ में शामिल होकर, मिल कर और संगठित रूप में इस पर चल सकते हैं। मुझे यकीन है कि इस रास्ते पर चलने से यह तीसरा दल पहले दोनों दलों में एक नई जान और शक्ति पैदा कर देगा। और देस की वह सारी शक्तियाँ जिन्हें अहिंसात्मक इनकलाब के लिये बापू ने पैदा कर दिया है, जमा होकर जोर शोर के साथ अपना काम करने लगेंगी।

राजकाजी दायरों में बापू के आदर्शों व योजनाओं के आधार पर काम करने के लिये जनता से लगाव पैदा करना पहला कदम है। क्योंकि बिना जनता से गहरा लगाव पैदा किये उसमें बह बड़ा और

जो बापू के राम राज की कल्पना को اصلی «प» में नहीं कोचिङ्की, ये بالکل بے بنیاد خیال ہے۔ حکومت کی نوتھال بنا معیارہ کی مدد کے بدلی نہیں جاسکتیں۔ ہمارے رجحانات پرگراموں میں جب تک معیارہ کا اہل شامل نہیں ہوتا، ہم ہرگز حکومت کی نوتھوں کو بدل نہیں سکتے نہ حکومت کو چلنے کا سچا سہوک بنا سکتے ہیں۔ پہلے دن کی طرح دوسرا دن بھی اِس راستے سے بہت دور ہے۔ وہ اِس خیال میں قویا ہوا ہے کہ حکومت کے اندر وہ کر اور اِس کی فیرلٹ اور طالت کی مدد لے کر ہی رام راج لایا جا سکتا ہے۔ یہ لوگ کانگریس کو سبھی بنا کر دیس کی دھارا سبھاؤں میں پہنچ جاتا اِے اِس مقصد کو حاصل کر لینے کی آخری مملول سمجھتے ہیں۔ یہ دونوں راستے اچھے ہوں یا برے لیکن باپو کے دیس سدھار کے راستے نہیں ہوں۔

اگر ہم مان لیں کہ یہ دونوں راستے باپو کے ہی راستے ہیں، کیونکہ ایسی باتوں میں بڑے سے بڑے مت بھید ہو سکتے ہیں، یہو بھی تیسرا راستہ جو باپو نے اِے لوک سہوک سنگھ میں دکھایا ہے اُنکے پریموں کے لئے خالی رہ جاتا ہے۔ میں اِسی راستے کو اختیار کرنا چاہتا ہوں۔ اور جو لوگ اِے پسند کرتے ہوں وہ لوک سہوا سنگھ میں شامل ہوکر، ملکر اور سنگتھت «پ» میں اِس پر چل سکتے ہیں۔ مجھے یقین ہے کہ اِس راستے پر چلنے سے یہ تیسرا حل پہلے دونوں دلوں میں ایک نئی جان اور شکتی پیدا کر دے گا۔ اور دیس کی وہ ساری شکتیاں چلھیں اعلساتک انتقاب کے لئے باپو نے پیدا کر دیا ہے، جمع ہوکر اور شور کے ساتھ اپنا کام کرنے لگیں گی۔

راج کالھی دائروں میں باپو کے آدرشوں و پوجلاؤں کے آدھار پر کام کرنے کے لئے چلنے سے لٹاو پیدا کرنا پہلا قدم ہے۔ کیونکہ بنا چلنے سے کھرا لٹاو پیدا کئے اِس میں وہ ہوا اور



नया हिन्दू अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता जून सन् '५१

देस की सभ्यता और संस्कृति को फिर से जिला नहीं सकते, और न जो कुछ भी उसका बाक़ी रह गया है उसे कायम रख सकते हैं। इसलिये अपनी कामयाबी के लिये यह लाज़मी है कि हम हकूमत की सारी समाज बनाने की शक्ति को अपने आदर्शों और योजनाओं के अधीन कर लें। यह तभी हो सकता है जब या तो हम इस शक्ति को हकूमत से छीन लें या हकूमत हमारे आदर्शों और असूलों को ठीक मानकर इन पर चलने लगे।

तज़रबा बताता है कि हकूमतें बिना हिंसात्मक या अहिंसात्मक दबाव के अपने आदर्शों और नीतियाँ नहीं बदलतीं। बापू ने मानव जाति को जो सब से बड़ा ज्ञान दिया है वह यह है कि उन्होंने उसे जीने मरने का वह रास्ता दिखा दिया है जिस पर चलकर वह बड़ी से बड़ी हकूमतों पर अहिंसात्मक दबाव डाल कर उन्हें अपनी मरबी पर चलने के लिये मजबूर कर सकती है। अगर हम बापू के इस सबक को दुहराते रहें और इसे अपने सारे प्रोग्राम का आधार बना लें तो हम बापू के जीवन से खास फ़ायदा उठा सकते हैं और उनके मिशन को उसके असली रूप में पूरा कर सकते हैं।

इन्हीं विचारों को सामने रखकर लोक सेवा संघ बनाया गया है। मुझे ऐसा महसूस होता था कि देस के रचनात्मक काम करने वालों का एक दल तो रचनात्मक काम को राजनीति से अलग रख रहा है और दूसरा राजनीति में ऐसा दबा हुआ है कि रचनात्मक काम से उसका कोई वास्तविक सम्बन्ध नहीं रहता। पहला तो यह समझता है कि शुद्ध रचनात्मक योजनाओं को पूरा करना जैसे कपड़ा स्वावलम्बन का आन्दोलन चलाना, स्वावलम्बी गाँव बनाना, नई शालीम के विधापीठ खोलना, हकूमत को वह चाद दिखाना कि मजदूर का टैक्स उठा देना, शराब बन्द करना गवर्नमेन्ट का

नया हल अहिंसात्मक अन्तलाब का रास्ता जून सन् '५१

देस की सभ्यता और संस्कृति को फिर से जिला नहीं सकते। और न जो कुछ भी उसका बाक़ी रह गया है उसे कायम रख सकते हैं। इसलिये अपनी कामयाबी के लिये यह लाज़मी है कि हम हकूमत की सारी समाज बनाने की शक्ति को अपने आदर्शों और योजनाओं के अधीन कर लें। यह तभी हो सकता है जब या तो हम इस शक्ति को हकूमत से छीन लें या हकूमत हमारे आदर्शों और असूलों को ठीक मान कर उन पर चलने लगे।

तज़रबा बताता है कि हकूमतें बिना अहिंसात्मक या अहिंसात्मक दबाव के अपने आदर्शों और नीतियाँ नहीं बदलतीं। बापू ने मानव जाति को जो सब से बड़ा ज्ञान दिया है वह यह है कि उन्होंने उसे जीने मरने का वह रास्ता दिखा दिया है जिस पर चलकर वह बड़ी से बड़ी हकूमतों पर अहिंसात्मक दबाव डाल कर उन्हें अपनी मरबी पर चलने के लिये मजबूर कर सकती है। अगर हम बापू के इस सबक को दुहराते रहें और इसे अपने सारे प्रोग्राम का आधार बना लें तो हम बापू के जीवन से खास फ़ायदा उठा सकते हैं और उनके मिशन को उसके असली रूप में पूरा कर सकते हैं।

इन्हीं विचारों को सामने रखकर लोक सेवा संघ बनाया गया है। मुझे ऐसा महसूस होता था कि देस के रचनात्मक काम करने वालों का एक दल तो रचनात्मक काम को राजनीति से अलग रख रहा है और दूसरा राजनीति में ऐसा दबा हुआ है कि रचनात्मक काम से उसका कोई वास्तविक सम्बन्ध नहीं रहता। पहला तो यह समझता है कि शुद्ध रचनात्मक योजनाओं को पूरा करना जैसे कपड़ा स्वावलम्बन का आन्दोलन चलाना, स्वावलम्बी गाँव बनाना, नई शालीम के विधापीठ खोलना, हकूमत को वह चाद दिखाना कि मजदूर का टैक्स उठा देना, शराब बन्द करना गवर्नमेन्ट का



लेकिन बापू यह नहीं समझते थे कि हमारा आजादी का प्रोग्राम पूरा होगा। उन्होंने लोक सेवक संघ के विधान में साफ शब्दों में कहा है कि गो कि हमें राजकाजी आजादी मिल गई लेकिन अभी हमें अपनी आर्थिक, सामाजिक और नैतिक आजादी हासिल करना बाकी है। यह आजादी कौन छीन रहा है? और किसके खिलाफ लड़ कर हम इसे हासिल कर सकते हैं? साफ ज़ाहिर है पच्छिमी सभ्यता और संस्कृति अभी तक हमें अपना गुलाम बनाये हुए हैं और इस गुलामी को हम उन संस्थाओं और शक्तियों का मुकाबला करके ही मिटा सकते हैं जो पच्छिमी सभ्यता का साम्राज हमारे देस पर क़ायम रखने और बढ़ाने में सहायक हो रही हैं। इन शक्तियों में सब से बड़ी शक्ति लुट्टु हमारी देसी हकूमत है। जब तक हम इसके पच्छिमी ढाँचे, आदर्शों, योजनाओं और नीतियों को शान्ति के साधनों से नहीं बदलते, देस पच्छिमी गुलामी से हरगिज़ आजाद नहीं हो सकता। इसलिये अगर हम बापू का स्वराज अपने देस में क़ायम करना चाहते हैं तो हमें अपनी देसी हकूमत का वैसे ही मुकाबला करना होगा जैसे हमने अंगरेज़ी हकूमत का किया।

बापू कहते थे कि मैं राजनेता नहीं हूँ। न राजनीत में मेरी ज़रा भी दिलचस्पी है। मैं केवल एक मामूली समाज सुधारक हूँ। लेकिन दुनिया की हालत ने राजकाजी मैदान को मेरे जीवन का मैदान बना दिया है। हकीकत में कोई भी, समाज सुधारक हो, जो मौजूदा हालत में बापू के आदर्शों, योजनाओं और असूलों को उनके शुद्ध रूप में अपने सामने रखेगा, यह हालतें बापू की तरह राजकाजी मैदान को उसके जीवन का मैदान बना देंगी। इसमें दो राय होना नायुमकिन है। समाज को बनाने की सारी शक्ति इस समय हकूमत के हाथ में है। जब तक यह शक्ति पच्छिमी आदर्शों और योजनाओं को पूरा करने में लगी रहेगी तब तक हम अपने

लेकिन बापू ये नहीं समझते थे कि हमारा आजादी का प्रोग्राम पूरा होगा। उन्होंने लोक सेवक संघ के विधान में साफ शब्दों में कहा है कि गो कि हमें राजकाजी आजादी मिल गई लेकिन अभी हमें अपनी आर्थिक, सामाजिक और नैतिक आजादी हासिल करना बाकी है। यह आजादी कौन छीन रहा है? और किस के खिलाफ लड़ कर हम इसे हासिल कर सकते हैं? साफ ज़ाहिर है पच्छिमी सभ्यता और संस्कृति अभी तक हमें अपना गुलाम बनाये हुए हैं और इस गुलामी को हम उन संस्थाओं और शक्तियों का मुकाबला करके ही मिटा सकते हैं जो पच्छिमी सभ्यता का साम्राज हमारे देस पर क़ायम रखने और बढ़ाने में सहायक हो रही हैं। इन शक्तियों में सब से बड़ी शक्ति लुट्टु हमारी देसी हकूमत है। जब तक हम इसके पच्छिमी ढाँचे, आदर्शों, योजनाओं और नीतियों को शान्ति के साधनों से नहीं बदलते, देस पच्छिमी गुलामी से हरगिज़ आजाद नहीं हो सकता। इसलिये अगर हम बापू का स्वराज अपने देस में क़ायम करना चाहते हैं तो हमें अपनी देसी हकूमत का वैसे ही मुकाबला करना होगा जैसे हमने अंगरेज़ी हकूमत का किया।



दूसरे समाज से भ्रष्टाचार, बेइमानी, रिश्वत और दूर कर देने की जनता दृष्टमत्त की जगह पर खुद अपना काम और जिम्मेदारी समझले। अगर यह दो शक्तियाँ जनता में पैदा हो जावें तो ससार की कोई दृष्टमत्त, चाहे वह देसी हो या बिदेसी, जनता को अपना गुलाम या प्रजा नहीं बना सकती। बापू ने जो सिद्धान्त और साधन हमें सिखाये हैं उनकी मदद से हम जनता में इस तरह की जागृति और संगठन पैदा कर सकते हैं।

यह साफ़ बाहिर है कि जो प्रोग्राम जनता में जागृति, शक्ति और संगठन पैदा करने का हमने ऊपर अपने लोक सेवा संघ के सामने रखला है वह शुद्ध राजकाजी प्रोग्राम है। कहा जा सकता है कि जहाँ तक बापू के लोक सेवा संघ का ताल्लुक है उसमें तो इस तरह के प्रोग्राम का साथ भी दिलाई नहीं देता। वह तो शुद्ध रचनात्मक कार्यों तक में मद्धुद मालूम होता है। हमारा यह खयाल नहीं है। हमारे खयाल में जो सबसे बड़ी कठिनाई इस समय रचनात्मक काम करने वालों के रास्ते में है वह यही है कि वह बापू के रचनात्मक प्रोग्राम को राजकाजी पहलुओं से बल्लग करके देखते हैं। बापू के सारे आदर्श, असल और उनके जीवन की एक एक कटना इस बातक भेद को प्रकट बताती है। बापू ने अपनी सारी खिन्दगी में कभी राज-नीय से बल्लग होकर और किसी एक गाँवमें बैठकर अपनी राजनीतिक योजनाएं नहीं चलाईं। वह कहते थे कि मेरा एक एक पल देस की आजादी की लड़ाई लड़ने या उसकी तैयारी में खर्च होता है। वह हम सब जानते हैं कि उनका आध घंटा या घंटा भर चला चलाने और बाकी सारा समय देस की आजादी का आन्दोलन बढ़ाने में खर्च होता था। कहा जा सकता है कि आंगरेजों के चले जाने के साथ साथ वह लड़ाई खत्म हो गई इसलिये अब हमारे सामने सिर्फ़ रचनात्मक काम रह गया है और यदि सत्यक इनका यह पैदा करने के लिये हमें राजकाजी सारी ताकत उसी काम में लगानी चाहिये।

नया हलद  
अहमसातक अन्तर्गत का रास्ते  
जून सन् १९१९  
दूसरे समाज से भ्रष्टाचार, बेइमानी, रिश्वत और दूर कर देने की जनता दृष्टमत्त की जगह पर खुद अपना काम और जिम्मेदारी समझले। अगर यह दो शक्तियाँ जनता में पैदा हो जावें तो ससार की कोई दृष्टमत्त, चाहे वह देसी हो या बिदेसी, जनता को अपना गुलाम या प्रजा नहीं बना सकती। बापू ने जो सिद्धान्त और साधन हमें सिखाये हैं उनकी मदद से हम जनता में इस तरह की जागृति और संगठन पैदा कर सकते हैं।

ये साफ़ ظاهر है कि जो प्रोग्राम जनता में जागृति, शक्ति और संगठन पैदा करने का हमने ऊपर अपने लोक सेवा संघ के सामने रखा है वह शुद्ध राजकाजी प्रोग्राम है। कहा जा सकता है कि जहाँ तक बापू के लोक सेवा संघ का ताल्लुक है उसमें तो इस तरह के प्रोग्राम का साथ भी दिलाई नहीं देता। वह तो शुद्ध रचनात्मक कार्यों तक में मद्धुद मालूम होता है। हमारा यह खयाल नहीं है। हमारे खयाल में जो सबसे बड़ी कठिनाई इस समय रचनात्मक काम करने वालों के रास्ते में है वह यही है कि वह बापू के रचनात्मक प्रोग्राम को राजकाजी पहलुओं से बल्लग करके देखते हैं। बापू के सारे आदर्श, असल और उनके जीवन की एक एक कटना इस बातक भेद को प्रकट बताती है। बापू ने अपनी सारी खिन्दगी में कभी राज-नीय से बल्लग होकर और किसी एक गाँवमें बैठकर अपनी राजनीतिक योजनाएं नहीं चलाईं। वह कहते थे कि मेरा एक एक पल देस की आजादी की लड़ाई लड़ने या उसकी तैयारी में खर्च होता है। वह हम सब जानते हैं कि उनका आध घंटा या घंटा भर चला चलाने और बाकी सारा समय देस की आजादी का आन्दोलन बढ़ाने में खर्च होता था। कहा जा सकता है कि आंगरेजों के चले जाने के साथ साथ वह लड़ाई खत्म हो गई इसलिये अब हमारे सामने सिर्फ़ रचनात्मक काम रह गया है और यदि सत्यक इनका यह पैदा करने के लिये हमें राजकाजी सारी ताकत उसी काम में लगानी चाहिये।







को माना, देस की शक्ति और दौलत को सब में फैला देने की बगल केन्द्रित करना बगैरा हो, चाहे यह हालतें किसी भी कारन से पैदा हो रही हों और चाहे इसके क़ायम रखने व बढ़ाने की कोशिश किसी और से भी हो रही हो।

यह संघ जनता को यह समझाने की कोशिश करेगा कि वह देस की असली राजा है। इसलिये देस में अमल क़ायम रखना, रिशवत, अरदाचार, अन्याय, अत्याचार और हट धर्मों को रोकने और मिटा देने की जिम्मेदारी एकमात्र जनता ही पर है। कोई दूसरा इसे पूरा नहीं कर सकता। इसकी यह जिम्मेदारी सिर्फ एक ही तरह क़ायमबी के साथ पूरी हो सकती है कि वह महात्मा गाँधी के बताए हुए रास्ते पर शान्ति सेना क़ायम करे, सच्चे सेवक का नक़्शाना महात्मा गाँधी ने अपनी खिन्दगी और मौत दोनों में देस और संसार के सामने रख दिया है।

नैतिक निगाह से यह संघ त्याग, सदाचार और निःशर्त सेवा का ध्येय अपने सामने रखेगा। इस रौतानी असूल को कि प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज़ है, यह संघ भूटा और वेदुनियाद बताने में कोई कोशिश उठा न रखेगा। यह उस खोखली न्यबहारिकता की आन्धी पूजा को, जिसे वास्तविकता (रियलिज्म) का सुनहरा नाम दिया जाता है, घोर अनैतिक, बर्ही और दुराचार मानता है, क्योंकि इसका अटल विश्वास है कि जब न्यबहारिकता (हिकमत अमली) को नैतिक असूलों की अगद दे दी जाती है तब यह युद्ध अबसरबाद (इन्तुलबस्ती यानी अपरचुनिज्म) का रूप ले लेती है।

ऊपर का प्रोग्राम देखने से यह बाहिर होगा कि लोक सेवा संघ, जिसका यह प्रोग्राम है, देस की मौजूदा हालत और उसकी राजकाशी समस्याओं को नैतिक और रचनात्मक निगाहों से देखता है और जिसका अन्ततः पैदा ख़याल यह है जिसमें कौरेली इन्कलाब और

को वन, देस की शक्ति और दौलत को सब में बिछा देने की जगह केन्द्रित करना बगैरा हो, चाहे ये हालातें किसी भी कारन से पैदा हो रही हों और चाहे इसके क़ायम रखने व बढ़ाने की कोशिश किसी और से भी हो रही हो।

ये सन्कल जल्द को ये संजिहाने की क़وشिश करे का के देस की असली राजा है। इस लिये देस में अमल क़ायम रखना, रेशवत, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार और हट धर्मों को रोकने और मिटा देने की दम् दारों की मात्र जल्द ही पर है। कौनो दूसरा इसे पूरा नहीं कर सकता। इसकी ये दम् दारों में अमल क़ायमबी के साथ पूरा हो सकती है कि वह महात्मा गाँधी के बताए हुए रास्ते पर शान्ति सेना क़ायम करे, सच्चे सेवक का नक़्शाना महात्मा गाँधी ने अपनी खिन्दगी और मौत दोनों में देस और संसार के सामने रख दिया है।

नैतिक नज़ा से ये सन्कल नैतिक, सदाचार और नसरात सहा का दम् दारों में अमल क़ायम करे का के देस की असली राजा है। इस लिये देस में अमल क़ायम रखना, रेशवत, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार और हट धर्मों को रोकने और मिटा देने की दम् दारों की मात्र जल्द ही पर है। कौनो दूसरा इसे पूरा नहीं कर सकता। इसकी ये दम् दारों में अमल क़ायमबी के साथ पूरा हो सकती है कि वह महात्मा गाँधी के बताए हुए रास्ते पर शान्ति सेना क़ायम करे, सच्चे सेवक का नक़्शाना महात्मा गाँधी ने अपनी खिन्दगी और मौत दोनों में देस और संसार के सामने रख दिया है।

ऊपर का प्रोग्राम देखने से यह बाहिर होगा कि लोक सेवा संघ, जिसका यह प्रोग्राम है, देस की मौजूदा हालत और उसकी राजकाशी समस्याओं को नैतिक और रचनात्मक निगाहों से देखता है और जिसका अन्ततः पैदा ख़याल यह है जिसमें कौरेली इन्कलाब और



नवाहिन्य बर्हिवात्मक इनकलाब का रास्ता जून सन् १९

राजनीत के मैदान में इसकी एक मात्र कोशिश यह होगी कि वह उस में इनसानियत पैदा कर दे और उसे नैतिक रास्तों पर चलने के लिये मजबूर कर दे. इस का ध्येय यह होगा कि यह हुकूमत की मौजूदा शकल को मौलिक रूप में बदल दे, उसे एक सच्ची सेवा समिति बना दे और उसके सारे अधिकारियों और मुलायमों को जनता का सच्चा सेवक बना दे.

हुकूमत की तरफ से, चाहे वह काँग्रेसी, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, रास्ट्री स्वयंसेवक संघी कोई भी हो, इस संघ की नीत बहरी रहेगी जो ऊपर दी गई है. इस संघ का पक्का विश्वास है कि यह देस में इनसानियत फैलावे. राजनीत को नैतिक बन्धनों से जकड़ देने की योजनाओं और उसकी कोशिशों का बसर दूसरी हुकूमतों से क्याथा काँग्रेसी हुकूमत पर पड़ सकेगा क्योंकि काँग्रेस के पीछे अनन्त त्याग और निस्वार्थ देस सेवा का एक लम्बा इतिहास है जिसमें दूसरी पार्टियों ने बहुत कम हिस्सा लिया है, इसलिये यह संघ अपनी शक्ति भर यह जतन करेगा कि यह काँग्रेसी हुकूमत को दूसरी पार्टियों के मुकाबले में ज़ायम रखे.

अगर गवर्मेन्ट बदल गई तो कोई भी गवर्मेन्ट हो, संघ का उसे इनमानी और नैतिक बना देने का प्रयत्न बराबर वैसा ही जारी रहेगा.

देस के आर्थिक मैदान में इस संघ की एक मात्र कोशिश यह रहेगी कि यह देस को उस शोशन और गुलामी से मुक्त कर दे जिसमें पच्छिम की राजनीत ने देस को जकड़ रक्खा है. इसी के साथ साथ यह हर ऐसी हालत को बापू के बताये हुए आदिवात्मक हथियारों और साबनों से मिटाने का जतन करेगा जिसका वद्वेश देस में कौड़ी ताकत बढ़ाना, घरेलू दस्तकारियों की जगह मशीन राज ज़ायम करना, गाँव की संस्कृति की जगह शहरी बिन्दगी के दोशों

कहा हलद अहमसाक अन्कलाब का रास्ते जून सन् १९

राज नीत के महेदान मेहन मेहन अस की एक मात्र कोशिश ये होगी के वे अस मेहन असानीत पैदा करे ओर असनेक रास्तेन पर चलने के लिये मजबूर करे. अस का ध्येय ये होगा के ये हुकूमत की मौजूदा हकल को मौलिक रूप में बदल दे, अस एक सच्ची सेवा समिति पैदा करे ओर अस के सारे अधिकारियन ओर मुलायमों को जनता का सच्चा सेवक बना दे.

हुकूमत की तरफ से, चाहे वे कांग्रेसी, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, रास्ट्री स्वयंसेवक संघी कोई भी हो, अस संघ की नीत बहरी रहेगी जो ऊपर दी गई है. अस संघ का पक्का विश्वास है के ये हुकूमत में असानीत पैदा करे. राज नीत को नैतिक बन्धनों से जकड़ देने की योजनाओं और असकी कोशिशों का अतर दूसरी हुकूमतों से क्याथा कांग्रेसी हुकूमत पर पड़ सकेगा कांग्रेस के पीछे अनन्त त्याग और निस्वार्थ देस सेवा का एक लम्बा इतिहास है, इसलिये यह संघ अपनी शक्ति भर यह जतन करेगा के यह कांग्रेसी हुकूमत को दूसरी पार्टियों के मुकाबले में ज़ायम रखे.

अगर हुकूमत बदल गयी तो कौन सी हुकूमत होगी, संघ का अस असानी ओर नैतिक पैदा करे का प्रयत्न बराबर वैसा ही जारी रहेगा.

देस के आर्थिक महेदान मेहन अस संघ की एक मात्र कोशिश ये रहेगी के ये देस को अस शोशन ओर गुलामी से मुक्त कर दे जिस मेहन पच्छिम की राज नीत ने देस को जकड़ रक्खा है. इसी के साथ साथ ये हर ऐसी हालत को बापू के बताये हुये आदिवात्मक हथियारों और साबनों से मिटाने का जतन करेगा जिसका वद्वेश देस में कौड़ी ताकत बढ़ाना, घरेलू दस्तकारियों की जगह मशीन राज मेहन फौजी ताकत पैदाना, कौनो दस्तकारियन की जगह मशीन राज फात्म करना, गाँव की संस्कृति की जगह शहरी बिन्दगी के दोशों



( ४ )

आचार्य कृपलानी ने मुझसे कहा था कि मैं उनकी काजकारी कमेटी के सामने वह प्रोग्राम भी रख दूँ जो मैं इस नये संघ के सामने रखना चाहता हूँ। इसलिये मैंने अपने सुभाव में 'लोक सेवा संघ' के बुनियादी अमूल व कार्यक्रम भी मुक्तसर रूप में दे दिये थे. वह यह हैं—

लोकसेवा संघ का संक्षिप्त (मुक्तसर) प्रोग्राम

यह संघ हर सवाल पर रचनात्मक दृष्टिकोन से नज़र डालेगा और शक्ति भर कोशिश करेगा कि इस का कोई मेम्बर किसी भी पार्टीबन्दी या पालटिक्स में न पड़े.

यह संघ पार्टियों के आपसी चुनाव से बिल्कुल अलग रहेगा और इसकी कोशिश यह होगी कि यह उन सब बातों से बचा रहे जो आपस में संघर्ष, ईर्ष्या, द्वेष और नफरत पैदा करती हैं.

यह संघ एक तरफ तो कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू महासभा के बिस्मद्वार लोगों से और दूसरी तरफ इस्लाम के लोडरों से यह सबिनय प्रार्थना करेगा कि वह गांधी चैम्सफोर्ड पैक्ट के आधार पर आपस में यह तब कर लें कि न तो यह पार्टियाँ गबरमेन्ट के खिलाफ अपने आन्दोलन चलाने में कोई हिसाबतक तरीक़े अपनाएँगी और न गबरमेन्ट ही, अगर इन पार्टियों की तरफ से शान्तिमय तरीक़ों से काम हो तो, कोई हिसाबतक तरीक़ा उनके खिलाफ़ बरतेगी.

इसके साथ ही साथ यह संघ उस अनन्त विनाशकारी संघर्ष को रोकने में अपनी सारी ताक़त लगायेगा जो देश की राजनैतिक पार्टियों इस्लाम की वीरता और ताक़त पर क़ब्ज़ा पाने के बिन्दे करती हैं, जिस के संघर्ष से जनता दुखी और वीरित रहती है और जो जनता की सम्पत्ति का नारा करता है और उसके ख़ून की नदियाँ बहती हैं.

( २ )

आचार्य कृपलानी ने मुझसे कहा कि मैं उनकी काजकारी कमेटी के सामने वह प्रोग्राम भी रख दूँ जो मैं इस नये संघ के सामने रखना चाहता हूँ। इसलिये मैंने अपने सुभाव में 'लोक सेवा संघ' के बुनियादी अमूल व कार्यक्रम भी मुक्तसर रूप में दे दिये थे. वह यह हैं—

लोक सेवा संघ का संक्षिप्त (मुक्तसर) प्रोग्राम

यह संघ हर सवाल पर रचनात्मक दृष्टिकोन से नज़र डाले गा और शक्ति भर कोशिश करेगा कि इस का कोई मेम्बर किसी भी पार्टीबन्दी या पालटिक्स में न पड़े.

यह संघ पार्टियों के आपसी चुनाव से बिल्कुल अलग रहेगा और इसकी कोशिश यह होगी कि यह उन सब बातों से बचा रहे जो आपस में संघर्ष, ईर्ष्या, द्वेष और नफरत पैदा करती हैं.

यह संघ एक तरफ तो कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू महासभा के बिस्मद्वार लोगों से और दूसरी तरफ इस्लाम के लोडरों से यह सबिनय प्रार्थना करेगा कि वह गांधी चैम्सफोर्ड पैक्ट के आधार पर आपस में यह तब कर लें कि न तो यह पार्टियाँ गबरमेन्ट के खिलाफ़ अपने आन्दोलन चलाने में कोई हिसाबतक तरीक़े अपनाएँगी और न गबरमेन्ट ही, अगर इन पार्टियों की तरफ से शान्तिमय तरीक़ों से काम हो तो, कोई हिसाबतक तरीक़ा उनके खिलाफ़ बरतेगी.

इसके साथ ही साथ यह संघ उस अनन्त विनाशकारी संघर्ष को रोकने में अपनी सारी ताक़त लगायेगा जो देश की राजनैतिक पार्टियों इस्लाम की वीरता और ताक़त पर क़ब्ज़ा पाने के बिन्दे करती हैं, जिस के संघर्ष से जनता दुखी और वीरित रहती है और जो जनता की सम्पत्ति का नारा करता है और उसके ख़ून की नदियाँ बहती हैं.



अंश दिव्य बार्हिसालक इन्द्रात्मनः का रास्ता जून सन् १९१

उस सुम्माव पर और करने के बाद काजकारी कमेटी ने नीचे लिखा ठहराव पास किया—

“इस कमेटी ने भी सोखता जी के नीचे दिये ठहराव पर और किया x x x

( ठहराव ऊपर दिया जा चुका है )

बह कमेटी इस ठहराव के असूल को नहीं मानती.

लेकिन अगर भी सोखता जी अपने इस ठहराव के आधार पर संच बनालें तो इस कमेटी को खुशी होगी और जब बह बन जायगा तब यह कमेटी निश्चय करेगी कि उस संच के साथ उसका क्या सम्बन्ध होगा.”

मुझे अफसोस है कि काजकारी कमेटी ने मेरे सुम्माव को मंजूर नहीं किया मगर मैं उसका दिल से आभारी हूँ कि उसने मुझे एक नया संच बना लेने की इजाजत दे दी. इससे भी ज्यादा संतोषजनक बात यह हुई कि उसके सेक्रेटरी साहब ने मुझे यह इतमीनान दिला दिया कि उनके संच का जो मेम्बर चाहे वह बिना उस संच से अलग हुए इस नये संच में शामिल हो सकता है और ऐसी हालत में बह खुशी से इस संच के नियमों का पालन कर सकता है. इसके अलावा उन्होंने यह भी मुझे इतमीनान दिला दिया कि उनके संच के सब मेम्बर नए संच की योजनाओं में मुझे पूरा सहयोग दे सकेंगे. इस सबके बाद किसी तरह की पार्टीबन्दी का कोई सबाल ही नहीं रह जाता.

मेरी खाहिश थी कि बापू की आखरी वसीयत को पूरा करने के लिये जो संच उनके संच के आधार पर बने उसका नाम ‘लोक सेवा संच’ हो. लेकिन एक श्रान्त में दो संच एक ही नाम के होना सुनासिब नहीं. इसलिये मैंने इस नये संच का नाम उसी से मिलता

उत्पन्न ‘लोक सेवा संच’ रक्खा है

तथा हलद लक्ष्मणक लल्लब का रास्ते जून सन् १९

अस सज्जाव पर और करने के बाद काजकारी कमेटी ने निचे लिखा त्हेराव पास किया—

“अस कमेटी ने शुरी सुख्ते जी के निचे दूँ त्हेराव :  
x x x

( त्हेराव ओवर दिया जा चुका है )

ये कमेटी अस त्हेराव के असूल को न्हन मन्ती .

लेकिन अगर शुरी सुख्ते जी ने अ्हे अस त्हेराव के अन्हार पर सल्के बना लें तो अस कमेटी को खुशी होगी और जब वे बन जाँगे तब ये कमेटी निश्चय करेगी के अस सल्के के साथ अस्का किया सम्बन्ध होगा .

मज्हे असूस है के काजकारी कमेटी ने मेरे सज्जाव को मन्शूर न्हन किया मगर म्हेन अस का दल से आभारी हूँ के असले मज्हे एक न्हा सल्के बना लेले की अजात दे दी. अस से भी ज्यादा सन्तुष जल्क बात ये होगी के अस्के सेक्रेटरी माहब ने मज्हे ये अल्मिदान दला दिया के अन्के सल्के का जो म्सेर चाहे वे बना अस सल्के से अल्क होगे अस न्के सल्के म्हेन शामिल हो सक्ता है और अ्हीसी हालत म्हेन वे खुशी से अस सल्के ने न्हनस का पालन कर सक्ता है. अन्के एग्रे अन्हन ने ये भी मज्हे अल्मिदान दला दिया के अन्के सल्के के सब म्सेर न्के सल्के की योजनाओं म्हेन मज्हे पूरा सहयोग दे सकेंगे. अस सब के बाद किसी तरह की पार्टी बन्दी का कौन्सी सवाल ही न्हन रहे जाता .

मेहरी खाहिश त्ही के बापू की अखरी वसेयत को पूरा करने के ल्हे जो सल्के अन्के सल्के के अन्हार पर बने अस का नाम ‘लोक सेवक सल्के’ हो . लेकिन एक प्रस्त म्हेन दो सल्के अल्क ही नाम के होना म्नासब न्हन . असले म्हेन ने अस न्के सल्के का नाम अ्ही से मल्ता

उत्पन्न ‘लोक सेवा संच’ रक्खा है



नया हिन्द अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता जून सन् '५१  
दोनों तरीकों में से अपनी रुचि और सिद्धान्त के अनुसार जो  
तरीका मुनासिब समझे बनाले।

सेवापुरी आश्रम और इस संघ के पास जितना सामान और  
सम्पत्ति है वह पार्लिमेन्टरी विभाग की सम्पत्ति रहेगी और पार्लिमेन्टरी  
विभाग के मेम्बर अपनी ज़रूरतों के लिये रुपये खुद जमा करेंगे।

गैर-पार्लिमेन्टरी विभाग वाले काँग्रेस की किसी पदवी या  
ओहदे के लिये खड़े न होंगे, न किसी तरह से भी किसी पार्टी या  
चुनाव में हिस्सा लेंगे।

इसी तरह पार्लिमेन्टरी विभाग के मेम्बर गैर-पार्लिमेन्टरी  
विभाग की काजकारी कमेटी के मेम्बर नहीं बनेंगे पर सहायक  
या सलाहकारों के रूप में इनके साथ सदा मिल जुल कर काम  
करेंगे।

बूँकि इन दोनों विभागों का उद्देश एक है, यानी महात्मा गांधी  
के सिद्धान्तों और योजनाओं को उनके पूरे सामाजिक, आर्थिक  
और राजनैतिक रूप में पूरा करना, इसलिये इन दोनों विभागों में  
से किसी में ऐसे लोग नहीं शामिल किये जायेंगे जो मशीनराज,  
फ़ौजो केन्द्रिकरण, प्रतिस्पर्धा या खुद अपने या दूसरे देशों का  
हैबानी शोषण करने को ठीक समझते हों।

साथ साथ इन दोनों विभागों के मेम्बर अपने सामाजिक,  
राजनैतिक या आर्थिक उद्देशों को पूरा करने के जतन में सदा  
महात्मा गांधी के बताए हुए रास्तों पर चलेंगे।

इस कमेटी को पूरी उम्मीद है कि उसने अपने इस ठहराव में  
जिस तरह अपने मेम्बरों में काम बांटा है उससे उनकी मिलजुल कर  
काम करने की ताकत बढ़ेगी, और हमारे समाज में इनसानियत

नया हल अहस्तात्मक अन्तर्लप का रास्ते जून सन् '५१  
दोनों तरीकों में से अपनी रुचि और सहायता के अनुसार जो  
तरीका मुनासिब समझे बनाले।

सेवापुरी आश्रम और इस संघ के पास जितना सामान और सम्पत्ति  
है वह पार्लिमेन्टरी विभाग की सम्पत्ति रहेगी और पार्लिमेन्टरी  
विभाग के मेम्बर अपनी ज़रूरतों के लिये रुपये खुद जमा करेंगे।

गैर-पार्लिमेन्टरी विभाग वाले काँग्रेस की किसी पदवी या  
ओहदे के लिये खड़े न होंगे, न किसी तरह से भी किसी पार्टी  
या चुनाव में हिस्सा लेंगे।

इसी तरह पार्लिमेन्टरी विभाग के मेम्बर गैर-पार्लिमेन्टरी  
विभाग की काजकारी कमेटी के मेम्बर नहीं बनेंगे पर सहायक  
या सलाहकारों के रूप में इनके साथ सदा मिल जुल कर काम  
करेंगे।

बूँकि इन दोनों विभागों का उद्देश एक है, यानी महात्मा गांधी  
के सिद्धान्तों और योजनाओं को उनके पूरे सामाजिक, आर्थिक  
और राजनैतिक रूप में पूरा करना, इसलिये इन दोनों विभागों में  
से किसी में ऐसे लोग नहीं शामिल किये जायेंगे जो मशीनराज,  
फ़ौजो केन्द्रिकरण, प्रतिस्पर्धा या खुद अपने या दूसरे देशों का  
हैबानी शोषण करने को ठीक समझते हों।

साथ साथ इन दोनों विभागों के मेम्बर अपने सामाजिक,  
राजनैतिक या आर्थिक उद्देशों को पूरा करने के जतन में सदा  
महात्मा गांधी के बताए हुए रास्तों पर चलेंगे।

इस कमेटी को पूरी उम्मीद है कि उसने अपने इस ठहराव में  
जिस तरह अपने मेम्बरों में काम बांटा है उससे उनकी मिलजुल कर  
काम करने की ताकत बढ़ेगी, और हमारे समाज में इनसानियत



नया हिन्द अहिंसात्मक इनकावाव का रास्ता जून संवत् '५१

इस काजकारी कमेटी की बैठक में भी मैंने यह बाहा कि बापू के विधान का बुनियादी बबाल सामने रखवा जाय और उस संघ की काजकारी कमेटी के मेम्बर केवल वह लोग बनाए जायें जो हकूमत और काँग्रेस से बाहर रहकर काम करना पसन्द करते हों. लेकिन इस कोशिश में भी मुझे कामयाबी न हुई.

अलग संगठन बना लेना कोई मुश्किल बात न थी. मगर इसमें पार्टीबन्दी के दोशों के पैदा हो जाने का डर था. बेहतर यह था कि कोई समझौते की सूरत निकल आए. आखिरकार बहुत कोशिशों के बाद एक सूरत नखर आई जिसे मैंने एक ठहराव के रूप में लोक सेवक संघ की काजकारी कमेटी के सामने रक्खा. वह नीचे देता हूँ.

#### मेरा ठहराव

महात्मा गांधी के रचनात्मक प्रोब्राम को उठावा अच्छी तरह चलाने के लिये यह मुनासिब मालूम होता है कि इस संघ के मेम्बरों में काम इस तरह बाँट दिया जाय कि वह इसे अपनी ठुचि व सिद्धान्तों के मुताबिक खूबी से चला सकें.

इसलिये यह कमेटी यह फ़ैसला करती है कि रचनात्मक योजनाओं का सारा क्षेत्र दो हिस्सों में बाँट दिया जाय. एक पार्लीमेन्टरी और दूसरा गैर-पार्लीमेन्टरी. पार्लीमेन्टरी काम उन मेम्बरों के सुपुर्द कर दिया जाय जो हकूमत और काँग्रेस के अन्दर रहकर काम करना चाहते हैं.

इन में से दोनों विभाग एक दूसरे के पूरक व सहायक रहेंगे और अपने अपने सिद्धान्तों के अन्दर रहते हुए जहाँ तक हो सकेगा मिल जुलकर काम करेंगे.

यह कमेटी अपने संघ को पूरी आजादी देती है कि वह इन

नया हलद अहिंसात्मक अन्तर्गत का रास्ते जून संवत् '५१

इस काजकारी कमेटी की बैठक में भी मैंने यह बाहा कि बापू के विधान का बुनियादी बबाल सामने रक्खा जाय और उस संघ की काजकारी कमेटी के मेम्बर केवल वह लोग बनाए जायें जो हकूमत और काँग्रेस से बाहर रहे कर काम करना पसन्द करते हों. लेकिन इस कوشिश में भी मुझे कामयाबी न हुई.

अलग संकल्प बना लेना कोई मुश्किल बात न थी. मगर इसमें पार्टीबन्दी के दोशों के पैदा हो जाने का डर था. बेहतर यह था कि कोई समझौते की सूरत निकल आए. आखिरकार बहुत कोशिशों के बाद एक सूरत नखर आई जिसे मैंने एक ठहराव के रूप में लोक सेवक संघ की काजकारी कमेटी के सामने रक्खा. वह नीचे देता हूँ.

#### मेरा ठहराव

महात्मा गांधी के रचनात्मक प्रोब्राम को उठावा अच्छी तरह चलाने के लिये यह मुनासिब मालूम होता है कि इस संघ के मेम्बरों में काम इस तरह बाँट दिया जाय कि वह इसे अपनी ठुचि व सिद्धान्तों के मुताबिक खूबी से चला सकें.

इसलिये यह कमेटी यह फ़ैसला करती है कि रचनात्मक योजनाओं का सारा क्षेत्र दो हिस्सों में बाँट दिया जाय. एक पार्लीमेन्टरी और दूसरा गैर-पार्लीमेन्टरी. पार्लीमेन्टरी काम उन मेम्बरों के सुपुर्द कर दिया जाय जो हकूमत और काँग्रेस के अन्दर रहे कर काम करना चाहते हों.

इन में से दोनों विभाग एक दूसरे के पूरक व सहायक रहेंगे और अपने अपने सिद्धान्तों के अन्दर रहते हुए जहाँ तक हो सकेगा मिल जुलकर काम करेंगे.

यह कमेटी अपने संघ को पूरी आजादी देती है कि वह इन



नया हिन्द अधिसूचना १९५१ जून सन् १९५१

बगर यह कमेटी उसके बुनियादी असूल को न भी मानती मगर उसकी गहराइयों पर नजर डालती तो वह इससे अपने संगठन और देस को बहुत फायदा पहुँचा सकती थी. मगर उसकी कठिनाई यह थी कि वह बापू के अधिनस्थालक रास्ते को और उनके स्वराज के सपने को एक अनहोनी और गई दुनिया की बात समझती थी. इसलिये उससे कोई ऐसी उम्मीद करना बेकार था.

बर्बा की रचनात्मक कानफरेन्स के सामने यह विकल्प न थी. इसलिये मेरा खयाल था कि वह इस योजना का स्वागत करेगी और इससे पूरा फायदा उठायेगी. इसीलिये मैं इस कानफरेन्स में गया और इस विषय का एक छोटा सा मजमून छपवा कर साथ ले गया था कि उसे वहाँ बटवा कर लोगों का ध्यान इन तरफ खींच लौट से दिला दूंगा. मगर यह सब बेकार हुआ. वहाँ जाकर देखा कि कानफरेन्स की बागों हकूमत और काँग्रेस के नेताओं के हाथ में हैं, और उन्होंने ऐसी हवा पैदा कर दी है कि जिससे 'लोक सेवक संघ' जैसी योजना की तरफ किसी का ध्यान भी न जा सकता था. मुझे अपना मजमून लेकर लौट जाना पड़ा क्योंकि इसके बहाँ बटवाने से सिवा बेतुकी पैदा होने के और कोई फायदा नहीं हो सकता था.

जब इस सूबे में 'लोक सेवक संघ' बनाने के लिये कानपुर में कानफरेन्स हुई तो उसमें भी हकूमत और काँग्रेस का पूरा हाथ था और वह यह चाहते थे कि बापू के विधान के बुनियादी असूल उनके नए संघ का आधार न बनें. मैंने बहुत कोशिश करके उस कानफरेन्स के प्रस्ताव में यह शामिल करा दिया कि जो विधान इस संघ के लिये बने वह जहाँ तक हो सके बापू के लोक सेवक संघ के आधार पर बने. इस कानफरेन्स ने कोई विधान तैयार नहीं किया बल्कि अपनी काजकारी कमेटी को यह अधिकार दे दिया कि वह इस संघ के विधान बनावे.

नया हलद अधिसूचना १९५१ जून सन् १९५१

अगर ये कहें तो अस् के बुनियादी असूल को न भी मानती मगर उसकी गहराइयों पर नजर डालती तो वह इससे अपने संगठन और देस को बहुत फायदा पहुँचा सकती थी. मगर उसकी कठिनाई यह थी कि वह बापू के अधिनस्थालक रास्ते को और उनके स्वराज के सपने को एक अनहोनी और गई दुनिया की बात समझती थी. इसलिये उससे कोई ऐसी उम्मीद करना बेकार था.

बर्बा की रचनात्मक कानफरेन्स के सामने यह विकल्प न थी. इसलिये मेरा खयाल था कि वह इस योजना का स्वागत करेगी और इससे पूरा फायदा उठायेगी. इसीलिये मैं इस कानफरेन्स में गया और इस विषय का एक छोटा सा मजमून छपवा कर साथ ले गया था कि उसे वहाँ बटवा कर लोगों का ध्यान इन तरफ खींच लौट से दिला दूंगा. मगर यह सब बेकार हुआ. वहाँ जाकर देखा कि कानफरेन्स की बागों हकूमत और काँग्रेस के नेताओं के हाथ में हैं, और उन्होंने ऐसी हवा पैदा कर दी है कि जिससे 'लोक सेवक संघ' जैसी योजना की तरफ किसी का ध्यान भी न जा सकता था. मुझे अपना मजमून लेकर लौट जाना पड़ा क्योंकि इसके बहाँ बटवाने से सिवा बेतुकी पैदा होने के और कोई फायदा नहीं हो सकता था.

जब इस सूबे में 'लोक सेवक संघ' बनाने के लिये कानपुर में कानफरेन्स हुई तो उसमें भी हकूमत और काँग्रेस का पूरा हाथ था और वह यह चाहते थे कि बापू के विधान के बुनियादी असूल उनके नए संघ का आधार न बनें. मैंने बहुत कोशिश करके उस कानफरेन्स के प्रस्ताव में यह शामिल करा दिया कि जो विधान इस संघ के लिये बने वह जहाँ तक हो सके बापू के लोक सेवक संघ के आधार पर बने. इस कानफरेन्स ने कोई विधान तैयार नहीं किया बल्कि अपनी काजकारी कमेटी को यह अधिकार दे दिया कि वह इस संघ के विधान बनावे.



ने ध्यान नहीं दिया और अगर दिया भी तो इतना अदल बदल कर दिया कि जिस से उनके असूल व योजना का बापू के असूल व योजना से कोई सम्बन्ध ही न रह गया।

इन्हीं सब बातों ने देस की ऐसी संकट की अवस्था में बापू के मिशन को, जो देस के दुखों व सुसीबों का लासानो इलाज है, देस की आँखों से ओझल कर दिया है। इस बास्ते इसे कामयाब बनाने के लिये खास जरूरत इस बात की है कि कोई आदमी या दल यह प्रन करले कि वह काँग्रेस की पार्टी बन्दियों से और हकूमत की दौलत व ताकत के मोह जाल से बाहर रहेगा। या कोई ऐसा तरीका निकले कि ये सब दल एक संगठन में आकर और एक उद्देश को सामने रखकर अपने अपने मैदान में उसे पूरा करने का प्रोग्राम बनालें और अपने अपने असूलों के अन्दर रहते हुए एक दूसरे को सहयोग दें और सहायता करें।

मेरे दिल में शुरू से ही यह खयाल है कि देस में कोई ऐसा संगठन बन जाय जो बापू के बताए हुए रास्ते पर चल कर जनता को जाग्रत व संगठित कर सके। राजकाजी पारटियों के लिये, जिनके दिलों में हकूमत क दौलत व ताकत का मोह होता है, मिलकर काम कर सकना बहुत मुशकिल हो जाता है। लेकिन बापू के उन अभियानों के लिये जिन्हें यह माह नहीं, आपस में मिल कर ऐसा प्रोग्राम बना लेना मुशकिल नहीं होना चाहिये कि वह अपने अपने असूलों के अन्दर रहते हुए भी एक दूसरे को दिल से सहयोग दे सकें। बापू का जीवन तो इस तरह के सहयोग की एक खिन्दा तस्वीर है। अगर उनकी मिमाल हम अपने सामने रखेंगे तो हम अपने इस प्रयत्न को आसानी से सफल बना सकते हैं।

आल इन्डिया काँग्रेस कमेटी ने जब बापू के इस प्रस्ताव का सोद मरोड़ कर खात्मा कर दिया तो मुझे बहुत दुख हुआ था।

ने देहान नहिन दिया ओर अगु दिया भी तो अन्दा अदल बदल कर दिया के जिस से अन्के असूल व योजना का बापू के असूल व योजना से कौनो सम्बन्ध ही न रहे किया।

अन्हेन सब बातन ने दीस की ऐसी संकत की अस्तामा मेहन बापू के मशन को, जो दीस के दुकेन व मसहिनन का कानती एलज है, हेस की आन्केन से अजल कर दिया है। अस واسطे ऐसे कामयाब बनाने के लिये खास जरूरत इस बात की है के कौनो आदमी या दल ये प्रन करले के वे क्लकुरिस की पारती बलदियन से ओर हकूमत की दौलत व طاकत के मोह जाल से बाहर रहेगा। या कौनो ऐसी तरीके नकले के ये सब दल एक संकहन मेहन ओर अगु अदिये कुसामले रकुमर अले अले मदान मेहन अले पुरा करने का प्रोग्राम बलान ओर अले असूलन के अन्दर रहते हुये एक दूसरे को सहयोग दीन ओर सहायता करीन।

मेहरे दल मेहन शुरु से ही ये खयाल है के दीस मेहन कौनो लिसा संकहन बन जाते जो बापू के बताये हुये रास्ते पर चल कर जलना को जाग्रत व संकतत कर सके। राज कलजी पारतीन के लिये, जलके दलन मेहन हकूमत की दौलत व طاकत का मोह हुना है, मलकर काम कर सकना बेहत मशकल हो जाना है। लेकन बापू के अंन प्रियेन के लिये जलन ये मोह नहिन, आस मेहन मलकर लिसा प्रोग्राम बला लुना मशकल नहिन हुना चाहते के वे अले अले असूलन के अन्दर रहते हुये भी एक दूसरे को दल से सहयोग दे सकेन। बापू का जलन तो अस तरह के सहयोग की एक खन्दा तस्वीर है। अगु अन्की मशाल हम अले सामले रलहेलके तो हम अले अस प्रियेन को आसानी से सफल बना सकते हेन।

अल अन्डिया कलकुरिस कसती ने जब बापू के अस प्रस्ताव का तुर मरोड़ कर खात्मा कर दिया तो मज्हे बेहत दुकेन हुवा था।



## अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता

( भाई मंजर खली सोखता )

( ३ )

इस सम्बन्ध में एक बड़ा सवाल यह उठता है कि अहिंसात्मक इनकलाब पैदा करने के लिये बाप ने जो अपने जीवन का सबसे बड़ा इन्तजाम उठाया उसकी तरफ़ देस के किसी भी दल या संस्था का ध्यान क्यों न गया. हमारे खयाल में उसकी वजह यह नहीं है कि देस की राजकाजी पारटियों बाप के विधान के महत्व को समझ नहीं सकीं. बल्कि वजह यह है कि बापू के स्वराज, उनके आदर्शों व असूखों में इन पारटियों का विरवास नहीं है और वह अपने देस में पच्छिमी आदर्शों व असूखों का साजज जमाना चाहती हैं. इसलिये यह गिरोह 'लोक सेवक संघ' को असली रूप में नहीं अपना सकता. इनके बाद वह लोग हैं जो बापू के आदर्शों व असूखों में विरवास तो रखते हैं लेकिन वह इस खयाल में डूबे हुए हैं कि कॉंग्रेस संगठन और इकूमत के अन्दर रहकर ही बापू के मिरान को उवादा कामयाबी के साथ पूरा किया जा सकता है. तीसरा गिरोह उन रचनात्मक काजकर्ताओं का है जिन्हें कॉंग्रेस व इकूमत की दौलत या ताकत का कोई खास मोह नहीं है और वह कॉंग्रेस व इकूमत के दावरे से बाहर रहकर काम करना ठीक समझते हैं, लेकिन यह उयादावर वह लोग हैं जिन्होंने राजनीत से बाहर रहकर काम किया है. इसलिये इनमें कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इन्हें अपने पीछे खला सके और न इन्हें राजकाजी मैदान में काम करने का पुराना अनुभव है जो इस गढ़े वक़्त में इनके आगे आसके. यही कारण है कि बापू के 'लोक सेवक संघ' पर अब तक किसी

## अहंसात्मक अंफ़ाल का रास्ता

( भीमानी मल्लर एली सोखते )

( ३ )

इस सभल्ले में एक बड़ा सवाल यह उठता है कि अहंसात्मक अंफ़ाल पैदा करने के लिये बापू ने जो 'ए जेहों का सब से अंफ़ाला अस्की एली' के किसी भी दल या संस्था का ध्यान क्यों न किया. हमारे खयाल में उसकी वजह यह नहीं है कि देस की राजकाजी पारटियों बापू के विधान के महत्व को समझ नहीं सकीं. बल्कि वजह यह है कि बापू के स्वराज, उनके आदर्शों व असूखों में इन पारटियों का विरवास नहीं है और वह अपने देस में पच्छिमी आदर्शों व असूखों का साजज जमाना चाहती हैं. इसलिये इनमें कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इन्हें अपने पीछे खला सके और न इन्हें राजकाजी मैदान में काम करने का पुराना अनुभव है जो इस गढ़े वक़्त में इनके आगे आसके. यही कारण है कि बापू के 'लोक सेवक संघ' पर अब तक किसी



क्या हिन्दू हकूमत की बिन्दगी जनता से बूत सन् '५१

बरदान साबित न हुई तो फिर जनता भी अमृत के बदले उसके लिये विरा साबित होगी या फिर मौत का सन्देश !

दुनिबा की कोई हकूमत या सियासत जनता का पेट काट कर वा बिन्दा इनसानों पर छाक डाल कर बिन्दा नहीं रह सकती— बाहे राजद्वार या राजनीतकार इस भेद को न समझें, इस सचाई को न जानें मगर इनक़लाब इसीलिये आते हैं और हकूमतों की काया पलट में कितरत (प्रकृति) का यही मंशा काम करता है.

सोसाइटी की नई किताब

## फिरकाबन्दी पर बापू

सम्पादक—भी श्रीकृष्ण दास

देश पिता महात्मा गांधी ने राजकाज के मैदान में क़दम रखते ही फिरकाबन्दी के ज़हरीले नतीजों और भीषण तुक़सानों का अन्दाज़ा कर लिया था. यही कारन था कि उन्होंने ने अपने जीवन की आख़िरी साँस तक फिरकाबन्दी के खिलाफ़ लड़ाई जारी रखी. इस पुस्तक में सन १९२१ से सन १९४८ तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब एक जगह जमा कर दिया गया है.

भारत के आजाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के तुक़सानों को समझे और इस ज़हर से अपने दिल और दिमाग़ को साफ़ करे.

यह किताब हर हिन्दुस्तानी को ज़रूर पढ़नी चाहिये.

सुन्दर बिन्दू. अक्का कागज़. दो सौ सफ़े. कीमत दो रुपया

मिलने का पता:—

—मैनेजर 'नया हिन्दू'

१४४१, मुंदीगंज, इलाहाबाद,

नया हिन्दू حکومت کی زندگی چلتا ہے جون سن '۵۱

وردان ثابت نہ ہوئی تو پھر چلتا بھی امرت کے بدلے اُسکے لئے رہی ثابت ہوگی یا پھر موت کا سلیبس !

دنیا کی کوئی حکومت یا سہاست چلتا کا پوت لاک کر یا زندہ انسانوں پر خاک ڈالکر زندہ نہیں رہ سکتی — چاہے واجدار یا واجلہت کا اِس بھید کو نہ سمجھیں 'اِس سچائی کو نہ جانیں مگر انقلاب اِسی لئے آتے ہیں اور حکومتوں کی کیا پلست مہن فطرت (پوکرتی) کا یہی مدشا کام کرتا ہے .

سوسائٹی کی نئی کتاب

## فرقہ بندی پر باپو

سہادک—شری شریکوشن داس

دیش پتا مہاتما گاندھی نے راج کاج کے مہدان مہن قدم رکھتے ہی فرقہ بندی کے زہریلے نتھجیوں اور بھیشن نقصانوں کا اندازہ کر لیا تھا . یہی کارن تھا کہ انھوں نے اپنے جیون کی آخری سانس تک فرقہ بندی کے خلاف لڑائی جاری رکھی .

اِس پستک مہن سن ۱۹۲۱ سے سن ۱۹۴۸ تک گاندھی جی نے سامہودایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب ایک جگہ جمع کر دیا گیا ہے .

بہارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بہارت واسی سامہودایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اِس زہر سے اپنے دل اور دماغ کو صاف کر لے .

یہ کتاب ہر ہندوستانی کو ضرور پڑھنی چاہئے .

سلسلہ جلد . اچھا کاغذ . دو سو صفحے . قیمت دو روپے .

میلنے کا پتہ :—

—مہینجر 'نیا ہند'

۱۴۵، متھی گنج، انہ آباد .



उसका घन दौलत लूट लसोट के और उसका तिवका बोटी नोच नोच के अगर उस के साथ खेला गया तो यह प्रजा-परवरी नहीं, यह प्रजा के ऊपर खुलम है. यह समाज दोस्ती नहीं, यह समाज के साथ दुशमनी है.

हङ्कमत, जनता ही के टैक्स और चुंगी से मालदार बनती है, और जनता ही के खन पसीने से जानदार बनती है. हङ्कमत का जीवन और भंडार, दोनों की आसुद्गी जनता के घन मन से है.

फिर वह जनता को सुल क्यों नहीं पहुंचाती और खुश क्यों नहीं रखती ?

जनता को खुशहाल और ताकतवर बनाना हङ्कमत का फ़र्ज है.

अगर किसी हङ्कमत की जनता खुशहाल और ताकतवर है यानी उसकी खुशहाली और ताकतवरी—अर्थ और जीवन के आनन्द के लिहाज से है तो उस हङ्कमत को यह हक़ है कि वह अपना सर बुजन्द करे यानी अपने ऊपर वसंठ करे.

अगर किसी हङ्कमत की जनता बेकार, बदहाल, भूकी, नंगी और परेशान है तो उस हङ्कमत के लिये यह शर्म बाली बात है.

जनता को नंगा भूका रखकर अगर दुनिया को दिखलाया गया तो ऐसी जनता भी दुनिया को निगाह में खलील होगी और उसके साथ हङ्कमत भी !

क्या इस तरह की लूट मार और अत्याचार से कोई हङ्कमत अपना नाम या अपने लिये ऊँचा मुक़ाम हासिल कर सकती है.

मुहब्बत, मोहरबान और प्रजा पालक हङ्कमत जनता के लिये परेशान साबित हो सकती है—जिसके जबाब में उसकी बकादार और बॉमिसार जनता हङ्कमत के जीवन के लिये अमृत साबित होती. लेकिन अगर हङ्कमत अपनी जनता के हक़ में परकट या

निया हलद حکومت کی زندگی چلتا ہے

جون سن ۱۰۱

اُس کا دھن دولت لوت کھسوت کے اور اُس کا تکا بوتی نوج اُس کے ساتھ کھیلا گیا تو یہ پرچا پرچی نہیں، یہ پرچا کے اوپر ظلم ہے۔ یہ ساج دوستی نہیں، یہ ساج کے ساتھ دشمنی ہے۔

حکومت چلتا ہی کے تھکس اور چلکی سے مالدار بنتی ہے، اور چلتا ہی کے خون پسٹے سے جانداز بنتی ہے۔ حکومت کا جھون اور بھنڈا، دونوں کی آسویکی چلتا کے دھن من سے ہے۔

پھر وہ چلتا کو سکھ کہوں نہیں بیونچائی اور خوش کہوں نہیں رکھتی ؟

چلتا کو خوشحال اور طاقتور بھانا حکومت کا فرض ہے۔

( ۵۴ )  
اگر کسی حکومت کی چلتا خوشحال اور طاقتور ہے یعنی اُسکی خوشحالی اور طاقتوری — آرتہ اور جھون کے آئند کے لحاظ سے ہے تو اُس حکومت کو یہ حق ہے کہ وہ ایلا سر بلند کرے یعنی اپنے اوپر کھسٹ کرے۔

اگر کسی حکومت کی چلتا بے کار، بدحال، بھوکی، نلکی اور پریشان ہے تو اُس حکومت کے لئے یہ شرم والی بات ہے۔

چلتا کو نلکا بھوکا رکھکر اگر دنیا کو دکھایا گیا تو ایسی چلتا ہی دنیا کی نگاہ میں ذلیل ہوگی اور اُسکے ساتھ حکومت بھی !

کیا اس طرح کی لوت مار اور اٹھا چار سے کوئی حکومت ایلا نام یا اپے لئے اُرتچا مقام حاصل کر سکتی ہے۔

مہلبا، مہربان اور پرچا پالک حکومت چلتا کے لئے وردان ثابت ہو سکتی ہے — جسکے جواب میں اُسکی وفادار اور جال نثار چلتا حکومت کے جھون کے لئے اسوت ثابت ہو سکے۔ لیکن، اگر حکومت اپنی چلتا کے حق میں برکت یا



जानना चाहिये कि जन्ता की जान का नुकसान, हकूमत का अपना नुकसान है. इसलिये यह कहना सही है कि कोई भी हकूमत जन्ता की जान या उसके माल का नुकसान करके असल में अपना ही नुकसान करती है. जो हकूमत जन्ता पर जुल्म ज्यादाती करती है वह अपने साथ दुरामनी करती और अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारती है.

इकमत के लिये नेक सलाह यह है कि वह जनता की अधिक से अधिक रक्षा और सेवा करके अच्छे से अच्छा उसका पालन करे और अच्छे से अच्छा उस को खिला पिला कर अधिक से अधिक उस को शक्ति पहुँचाए, सुशुद्ध बनाए और आदर्श उसका ऊँचा उठाए—अच्छी उसकी लंबाई रक्खे, अच्छा उस के साथ सदाचार करते और न्योहार बढ़ाए.

यही वह सुन्दर साधन है जो जन्ता को वफादार और शुभ-चिन्तक बनाने में मददगार साबित होते हैं। जनता की वफादारी और भक्ति से ही हकूमत को तरक्की, खुशहाली और जीत नसीब होती है। और इसी की हिम्मत और बहुमत पर हकूमत अपने तल्ल को पट्टबन्दी है।

लेकिन वह बहुमत की बरकत कम हासिल होती है ?

जब सबकी आवाज एक होती है.

भाषाएँ सबकी एक तब ही होती है जब सबको एकसा आराम और आनन्द मिलता है, सामन और राशन मिलता है,

शगर जनता को ताकत और शक्ति पट्टुचाने की जगह दिन  
ब दिन कमजोर किया जाय, उसको ऊँचा उठाने के बदले नीचा  
दिखाया जाय तो यह कमजोरी और यह गिरावट जनता की नहीं  
खुद हकूमत की है, क्योंकि हकूमत ही का दूसरा नाम “जनराज”<sup>१</sup>  
है, या “जनराज” को दूसरे शब्दों में हकूमत कहते हैं।

جیتنا چاہئے کہ جیتنا کی جان کا نقصان، حکومت کا ایذا نقصان ہے۔ اس لئے یہ کہنا صحیح ہے کہ کوئی بھی حکومت جیتنا کی جان یا اس کے مال کا نقصان کر کے اصل میں ایذا ہی نقصان کرتی ہے۔ جو حکومت جیتنا پر ظلم زیادتی کرتی ہے وہ اپنے ساتھ دشمنی کرتی اور اپنے پاؤں میں کلہاڑی مارتی ہے۔

حکومت کے لئے نیک صلاح یہ ہے کہ وہ جلدنا کی ادھک سے ادھک رکھا اور سیوا کر کے اچھے سے اچھا اُس کا پالن کرے اور اچھے سے اچھا اُس کو کھلا پلا کر ادھک سے ادھک لکھو شمع کی بیہوشی نہ جانے؛ خوش حال بدلتے اور آدھس اُس کا اونچا اُٹھائے۔ اچھی اس کی خبر داری رکھ، اچھا اُس کے ساتھ سداچار ہوتے اور دیرھار بڑھائے۔

بہارۃ سلسلہ سادھن ہیں جو چلتا کو وفادار اور شبہہ چلتا کہلاتے ہیں مدگار ثابت ہوتے ہیں۔ چلتا کی وفاداری اور بہکتی سے ہی حکومت کو ترقی، خوشحالی اور جیت نصیب ہوتی ہے۔ اور ایسی کی ہست اور ہیوست پر حکومت اپنے لکھ کو پہنچاتی ہے۔

لیکن وہ بھوست کی برکت کب حاصل ہوتی ہے ؟

آواز ایک ہی ہے۔

آواز سب کی ایک تپ ہی ہوتی ہے جب سبکو ایکسا آرام اور آلودہ ملتا ہے، سامان اور راشن ملتا ہے۔

اگر چلتا ہو، طاقت اور ہتکتی پہنچانے کی جگہ دن بدن کمزور کیا جائے۔ اُسکو اُونچا اُتھالے کے بدلے نیچا دکھایا جائے تو یہ کمزوری اور یہ گراؤت چلتا کی نہیں، خود حکومت کی ہے، کیونکہ حکومت ہی کا دوسرا نام ”جن راج“ ہے، یا ”جن راج“ کو دوسرے شہدائوں میں حکومت کہتے ہیں۔



नया हिन्द

हङ्कमत की विन्दग जनता से

जून सन् १५१

केवल भारान ही भरान से जनता न पलती है, न वह ऊँची हो छूट सकती है.

केवल बातों ही बातों से न उसका पेट भरता है. न वह ताकत ही पा सकती है और न खयाली घोड़ों से वह अपनी मखिल पार कर सकती है.

बलिक कार्य रूप में हङ्कमत को,

जनता के पालन पोशन का शुभ प्रबंध करना पड़ेगा और उसके रहन सहन का अच्छा इन्तजाम,

उसकी तन्दुस्त्य का अधिक खयाल रखना पड़ेगा और उसकी विन्दगी की खासी देख भाल,

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और बरकताना—यह सब हङ्कमत ही के काम हैं—लेकिन

यह न सिर्फ ऐसे काम हैं जिन पर हङ्कमत सरसरी तौर पर ताकत बरतने से या जिनको पूरा न करने से उसके ऊपर रौर-विन्देवारी का दौरा आता है और उससे पूछ ताक की जा सकती है. यह उसकी पोजीशन के बिहाज से हलकी सी बात है. इसलिये अच्छा यह है कि वह ऐसा मौका न जाने दे.

जनता जितनी तन्दुस्त, मजबूत, सुराहाल और ताकतवर होगी—जितनी ही तन्दुस्त, मजबूत, सुराहाल और ताकतवर होगी करना बुझी पतली, फाली पीली और सूकी जनता से हङ्कमत का नाम क्या रोशन हो सकता है? और क्या वह उसके काम जा सकती है?

उसकी मिवाक वो बिलकुल ऐसी है जैसे फालिज पटा हुआ बाबूरे शरीर का एक इनखानी डेर, वो किसी काम का नहीं, बाबूरे के सिवे भी एक बुझीका और बोझ.

जून सन् १५१

नया हलद  
हङ्कमत की जङ्गी जलता से

केवल बहाशन ही बहाशन से जलता न पलती है. न वह ऊँची हो छूट सकती है.

केवल बातों ही बातों से न उस का पेट भरता है. न वह ताकत ही पा सकती है और न खयाली कूडों से वह अपनी मखिल पार कर सकती है.

बलिक कार्य रूप में हङ्कमत को,

जनता के पालन पोशन का शुभ प्रबंध करना पड़ेगा और उसके रहन सहन का अच्छा इन्तजाम,

उसकी तन्दुस्त्य का अधिक खयाल रखना पड़ेगा और उसकी जङ्गी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह

उसकी जिस्मानी और दिमागी शक्तियों को उभारना और जलता—यह



## हकूमत की ज़िन्दगी जनता से

( भाई अब्दुल इलीस अन्सारी )

इस चीज को कभी न भूलना चाहिये कि जनता हकूमत की जान और शक्ति होती है। अगर जनता जिन्दा और बाक़ी है तो हकूमत जिन्दा और बाक़ी है—अगर जनता जिन्दा और बाक़ी नहीं तो हकूमत कब जिन्दा और बाक़ी रह सकती है ?

हकूमत को अपनी जिन्दगी बाक़ी रखने के लिये अपनी शान कायम और अपना निशान ऊँचा रखने के लिये जनता को जिन्दा और बाक़ी रखना पड़ेगा। क्योंकि उसी से हकूमत की शान है और वही हकूमत की अलमबरदार ( निशानची ) है—अगर कमजोरी के कारण उस में खड़े रहने की ताब और ताक़त न हो या उसके बाजुओं में जान और शक्ति न हो तो वह गिर पड़ेगी। जब वह गिर पड़ेगी वो हकूमत का मंडा कब खड़ा रह सकेगा—मंडा तो जनता के हाथ में है।

हकूमत की शान भी बाक़ी न रह सकेगी—अगर जनता को मजबूत, तन्दुरुस्त और खुशहाल न रक्खा गया—और, उसके कैरेक्टर को मजबूत न किया गया।

उसके सदाचार को खूबसूरत न बनाया गया।

उसके आदर्श को ऊँचा न ठाया गया।

यह तमाम काम हकूमत के जिम्मे हैं और जनता के गुनगान से ही हकूमत की शान है लेकिन वही अगर इनसानी और अखलाकी गुणों से कोरी है तो ऐसी दशा में हकूमत के लिये अपनी शान और महानता की कल्पना केवल एक सपना !

## हकूमत की ज़िन्दगी जित्ता से

( बहाली मبدالعليم انصارى )

اس چیز کو کہی نہ بھولنا چاہئے ' ہ جیتنا حکومت کی جان کوڑ شکتی ہوتی ہے ۔ اگر جیتنا زندہ اور باقی ہے تو حکومت زندہ اور باقی ہے ۔ اگر جیتنا زندہ اور باقی نہیں تو حکومت کب زندہ اور باقی رہ سکتی ہے ؟

حکومت کو اپنی زندگی باقی رکھنے کے لئے، اپنی شان قائم اور ایسا نشان اُتچا رکھنے کے لئے جیتنا کو زندہ اور باقی رکھنا پڑے گا۔ کیونکہ اسی سے حکومت کی شان ہے اور وہی حکومت کی علمبردار (نشانی) ہے۔ اگر کمزوری کے لڑن اس میں کھڑے رکھنے کی تاب اور طاقت نہ ہو یا اس کے بازوؤں میں جان اور شکتی نہ ہو تو وہ گڑ پڑوگی۔ جب وہ گڑ پڑوگی تو حکومت کا جیتنا کب کھو رہا سکے گا—جیتنا تو جیتنا کے ہاتھ میں ہے۔

حکومت کی شان بھی باقی نہ رہ سکے گی۔۔۔ اگر جیتنا کو مضبوط، تندرست اور خوشحال نہ رکھا گیا—اور

اس کے کھریکتر کو مضبوط نہ کیا گیا۔

اس کے سداچار کو خوبصورت نہ بنایا گیا۔

اس کے آدرش کو اُتچا نہ اُتھایا گیا۔

یہ تمام کام حکومت کے ذمے ہیں اور جیتنا کے گن گن سے ہی حکومت کی شان ہے لیکن وہی اثر انسانی اور اخلاقی کلوں سے کوڑی ہے تو ایسی دشا میں حکومت کے لئے اپنی شان اور مہانتا کی کلپنا کیوں ایک سہنا !



नया हिन्दू 'नया हिन्दू' की ज़रूरत—एक अपील  
जून सन् '५१

जंग में नहीं अमन में, हिंसा में नहीं अहिंसा में दिखाई देता है। चरबा, खदूर और गाँव के उद्योग धंदों के हम जबरदस्त हमों हैं। साइन्सी कल कारखानों और घरलू दस्तकारियों में हम एक टिकाऊ समतोल चाहते हैं। आजकल का मशीन राज हमारी निगाह में करोड़ों जनता के माली और इखलाकी जीवन के लिये एक आप है। हम दुनिया से फ़ीजों को भी ख़तम हुआ देखना चाहते हैं। राजनीत और अर्थशास्त्र दोनों को फिर से हम सदाचार की नीवों पर कायम करना चाहते हैं। यह है थोड़े से शब्दों में 'नया हिन्दू' की क़ौमी और अंतरक़ौमी नीत। इस तरह देस की बदलती हुई हालतों में 'नया-हिन्दू' धर्म, समाज और राजकाज तीनों में निहर् और बेलाग होकर अपना फ़ज्र बढ़ा करने का इरादा रखता है।

बहु, हिन्दी या हिन्दुस्तानी के जो लेखक या कवि 'नया हिन्द' के मिरान से इत्फाक रखते हों उनसे हमारी प्रार्थना है कि वह हमारा हाथ बढ़ावें, बिना माँगे अपने कलम से 'नया हिन्द' की मदद करें और उसे जनता की वार्त्ता का एक अद्विक उपयोगी साधन बनाएं।

‘नया हिन्दू’ के सब प्रेमियों से हमारी माँग है कि वह जहाँ भी हों ‘नया हिन्दू’ के प्रचार के बढ़ाने में हमें दिल खोलकर मदद दें। ‘नया हिन्दू’ इस समय हर महीने लगभग छेड़ हजार छप रहा है। सालाना पाठा बीस हजार रूपय के करीब है। हमें विश्वास है कि जगर ‘नया हिन्दू’ के गाहक और उसके प्रेमी नए गाहक बढ़ाने में अरखक मदद दें और हर गाहक या हर प्रेमी यह इशारा करले कि वह हर महीने कम से कम एक नया गाहक ‘नया हिन्दू’ को दे देगा जो हमारा यह पाठा एक साल के अन्दर आसानी से पूरा हो सकता है और ‘नया हिन्दू’ बनने पैरो पर खड़ा हो सकता है।

—सुख-सुख-

۱۵ جون سن ۱۹۵۱ء

جنگ میں نہیں امن میں، ہنسنا میں نہیں اہلسا میں  
دکھائی دیتا ہے۔ چرخہ کھد اور گاؤں کے آدیوگ دھندوں  
کے ہم زبردست حامی ہیں۔ سائنسی کل کارخاںوں اور  
گھریلو دستکاریوں میں ہم ایک تکاؤ سمجھل چاہتے ہیں۔  
آجکل کا مشین راج ہماری نگاہ میں کرورزں چلتا کے مالی  
اور اخلاقی جھوٹ کے لئے ایک شراب ہے۔ ہم دنیا سے فوجوں کو بھی  
ختم ہوا دیکھنا چاہتے ہیں۔ راج نہت اور ارنہ شاستر دونوں کو  
یہو سے ہم صدا چار کی نہیں پر قائم کرنا چاہتے ہیں۔ یہ ہے تھوڑے  
سے ہمدوں میں 'نہا ہلد' کی قومی اور اتر قومی نہت۔ اِس  
طرح نہیں کی بدلتی ہوئی حالتوں میں 'نہا ہلد' دھرم ساج  
اور راج کچی تیلوں میں نقد اور بے لگ ہوکر اپنا فرض ادا کرتے  
کا ارادہ رکھتا ہے۔

’کود‘ ہندی یا ہندستانی کے جو لہک یا کوں ’نہا ہند‘ کے مشن سے اتفاق رکھتے ہیں ان سے ہمارا پرارتہنا ہے کہ وہ ہمارا ہاتھ پتہ ایسے ملے کہ ہم ’نہا ہند‘ کی مدد کریں اور اسے چلتا کی تعلیم کا ایک ادھک ایسی ہی سادھی بنائیں۔

’نہا ہلد‘ کے سب پیریموں سے ہزاری مانگ ہے کہ وہ چہاں بھی ہیں ’نہا ہلد‘ کے پوجا کے پوجانے میں ہمیں دل کھولکر مدد دیں۔ ’نہا ہلد‘ اس سے ہر مہلتے لگ بہک تیرہ ہزار چھپ رہا ہے۔ سالانہ کھاتا بیس ہزار روپے کے قریب ہے۔ ہمیں بھولنا ہے کہ اگر ’نہا ہلد‘ کے لاکھ اور اُسکے پیریمی نیٹے لاکھ پوجانے میں بھوسک مدد دیں اور ہر لاکھ یا پیریمی یہ ارادہ کرے کہ وہ ہر مہلتے کم سے کم ایک نہا لاکھ ’نہا ہلد‘ کو دے دے گا تو ہمارا یہ کھاتا ایک سال کے اندر آسانی سے پورا ہو سکتا ہے اور ’نہا ہلد‘ اب ہر دوروں پر کھوا ہو سکتا ہے۔

1001

七



के जरिये हिन्दी लिखना और पढ़ना सीखा है और अब भी बहुत से सीख रहे हैं।

अब रही 'नया हिन्द' के लेखों और मज़मूनों की बात. हम स्वीकार करते हैं कि इस बारे में हम अपना कर्ज पूरा नहीं कर पाए. 'नया हिन्द' के एडीटोर्स को दूसरे छोटे बड़े कार्यों की भी भीड़ रही है. इधर कुछ महीनों से हम 'नया हिन्द' को इस निगाह से भी अधिक उपयोगी बनाने की कोशिश कर रहे हैं. 'नया हिन्द' के हर पन्ने पर लाइन की गिनती बढ़ा दी गई है जिस से हम पाठकों को अधिक सामग्री दे सकें.

कुछ भाइयों का एतराज है कि 'नया हिन्द' पत्रे की तरह आड़ा खुलता है दूसरी पत्रिकाओं की तरह सीधा नहीं खुलता. आगले जुलाई महीने से हम इस शिकायत को भी दूर कर देना चाहते हैं.

आजकल की राजकाजी हवा में जब कि कौनों की किसमतें तेजी के साथ पलटावा रही हैं हम अपनी सरकार की, कॉंग्रेस की, देस की और देस के किसी भी दल की इस तरह की गलतियों को भी कड़ी और खरी खरी आलोचना करना चाहते हैं जिन से हमारी राय में देस की एकता, उसकी उन्नति और उसकी खुशहाली को खतरा हो. देस की सरकार किसी भी दल की क्यों न हो उसके हाथों में कम से कम शक्ति होनी चाहिये. जनता का जीवन, रहन सहन, खाना पीना जितना भी सरकारी कंट्रोल से आजाद हो उतना ही देस अधिक खुशहाल होगा और फूले फलेगा. अमरीका और यू. एन. ओ. का जो रुख इस समय कमजोर एशियाई देसों के हर छोटे बड़े मगड़ों में देखल देने का दिखाई दे रहा है उसे भी हम दुनिया के बचन के लिये अच्छा लच्छन नहीं समझते. अपने पड़ोसी देसों के साथ और उसके बाद सारी दुनिया के साथ हम प्रेम और मिलन से रहना चाहते हैं. दुनिया के दुखों का असली इलाज हमें

के दुखे हल्की लकड़ा और पोटला सुकहा है और अब भी बहुत से सुकहा रहे हैं.

अब रही 'नया हल्द' के लेखों और मضمूनों की बात. हम सुकरा करते हैं कि इस बारे में हम अपना कर्ज पूरा नहीं कर पाए. 'नया हल्द' के एडिटोर्स को दूसरे छोटे बड़े कार्यों की भी भीड़ रही है. अदर कुछ महीनों से हम 'नया हल्द' को इस निगाह से भी अधिक उपयोगी बनाने की कोशिश कर रहे हैं. 'नया हल्द' के हर पन्ने पर लाइन की गिनती बढ़ा दी गई है जिस से हम पाठकों को अधिक सामग्री दे सकें.

कुछ बहानों का एतराज है कि 'नया हल्द' पत्रे की तरह आड़ा खुलता है दूसरी पत्रिकाओं की तरह सीधा नहीं खुलता. आगले जुलाई महीने से हम इस शिकायत को भी दूर कर देना चाहते हैं.

अजकल की राजकाजी हवा में जब कि कौनों की किसमतें तेजी के साथ पलटावा रही हैं हम अपनी सरकार की, कॉंग्रेस की, देस की और देस के किसी भी दल की इस तरह की गलतियों को भी कड़ी और खरी खरी आलोचना करना चाहते हैं जिन से हमारी राय में देस की एकता, उसकी उन्नति और उसकी खुशहाली को खतरा हो. देस की सरकार किसी भी दल की क्यों न हो उसके हाथों में कम से कम शक्ति होनी चाहिये. जनता का जीवन, रहन सहन, खाना पीना जितना भी सरकारी कंट्रोल से आजाद हो उतना ही देस अधिक खुशहाल होगा और फूले फलेगा. अमरीका और यू. एन. ओ. का जो रुख इस समय कमजोर एशियाई देसों के हर छोटे बड़े मगड़ों में देखल देने का दिखाई दे रहा है उसे भी हम दुनिया के बचन के लिये अच्छा लच्छन नहीं समझते. अपने पड़ोसी देसों के साथ और उसके बाद सारी दुनिया के साथ हम प्रेम और मिलन से रहना चाहते हैं. दुनिया के दुखों का असली इलाज हमें



नया हिन्दू 'नया हिन्दू' की ज़रूरत—एक अपील

जून सन् १९११

'नया हिन्दू' उन्हें लिखावट को अपने देस की लिखावटों में से एक मानता है। आज कल की उन्हें लिखावट में कई अक्षर हैं जो फ़ारसी या अरबी लिखावटों में नहीं हैं। हिन्दुस्तानी भाषा का बहुत सा अच्छे से अच्चा और बामहाबरा साहित्य उन्हें लिखावट में है, जिस से रास्ते भाषा को रूप देने, तरक्की देने और चमकाने में हमें बहुत बड़ी मदद मिल सकती है। 'नया हिन्दू' हिन्दो और उन्हें दोनों को हिन्दुस्तानी की दो शैलियों मानता है और उन्हें एक दूसरे की खोती नहीं, दो सगो बहनें मान कर दोनों का आदर करता है। हमारे रास्ते के जीवन के हर पहलू की बुनियाद प्रेम और मिलाप पर होनी चाहिये, नफरत और बलगाब पर नहीं।

नवम्बर १९४७ के लगभग 'नया हिन्दू' के कुछ प्रेमियों ने हमें यह सुझाया था कि 'नया हिन्दू' को दोनों लिखावटों में उन्नी तरह बलगा बलगा निकाला जावे जिस तरह नागरी 'हरिजन सेवक' और उन्हें 'हरिजन सेवक' निकलते थे। इस से गाढ़कों के बढ़ने और 'नया हिन्दू' के पाठों के कम होने की आशा की जा सकती थी। हमने यह सुझाव देखी में गाँधी जी के सामने रखा और उन से राय माँगी। उन्होंने इस नए सुझाव को नापसन्द किया और हमें सलाह दी कि "नया हिन्दू को जब तक निकालो इसी रूप में निकालो।" हमने अपने पाठों की बात कही। उन की राय न बदली और हमें जवाब मिला—“कहाँ से लाकर पाठा पूरा करो, न कर सको बन्द कर दो, पर जब तक निकालो इसी रूप में निकालो।” गाँधी जी की सलाह हमारे बिये बाका बनी और है। हमारे हाथों 'नया हिन्दू' जब तक निकलेगा इसी रूप में निकलेगा।

'नया हिन्दू' मिलाप की नींव है बलगाब की नहीं। हमें याद रखनी है कि 'नया हिन्दू' से जिस तरह का हिन्दू बनने को है, उसी तरह से 'नया हिन्दू' ही बनने को है।

मददक मदद दें और हर गाढ़क या हर अक्षर को दे देगा यह हर भारतीय के मन में एक नया गाढ़क 'नया हिन्दू' को दे देगा तो हमारा यह पाठा एक साल के बन्दर आसानी से पूरा हो सकना

नया हल्द 'नया हल्द' की ज़रूरत—एक अपील  
जून सन् १९११

'नया हल्द' अरब लिखावट को अपने देस की लिखावटों में से एक मानता है। आज कल की उन्हें लिखावट में कई अक्षर हैं जो फ़ारसी या अरबी लिखावटों में नहीं हैं। हिन्दुस्तानी भाषा का बहुत सा अच्छे से अच्चा और बामहाबरा साहित्य उन्हें लिखावट में है, जिस से रास्ते भाषा को रूप देने, तरक्की देने और चमकाने में हमें बहुत बड़ी मदद मिल सकती है। 'नया हल्द' हिन्दो और उन्हें दोनों को हिन्दुस्तानी की दो शैलियों मानता है और उन्हें एक दूसरे की खोती नहीं, दो सगो बहनें मान कर दोनों का आदर करता है। हमारे रास्ते के जीवन के हर पहलू की बुनियाद प्रेम और मिलाप पर होनी चाहिये, नफरत और बलगाब पर नहीं।

नवम्बर १९४७ के लगभग 'नया हल्द' के कुछ प्रेमियों ने हमें यह सुझाया था कि 'नया हल्द' को दोनों लिखावटों में उन्नी तरह बलगा बलगा निकाला जावे जिस तरह नागरी 'हरिजन सेवक' और उन्हें 'हरिजन सेवक' निकलते थे। इस से गाढ़कों के बढ़ने और 'नया हल्द' के पाठों के कम होने की आशा की जा सकती थी। हमने यह सुझाव देखी में गाँधी जी के सामने रखा और उन से राय माँगी। उन्होंने इस नए सुझाव को नापसन्द किया और हमें सलाह दी कि "नया हल्द को जब तक निकालो इसी रूप में निकालो।" हमने अपने पाठों की बात कही। उन की राय न बदली और हमें जवाब मिला—“कहाँ से लाकर पाठा पूरा करो, न कर सको बन्द कर दो, पर जब तक निकालो इसी रूप में निकालो।” गाँधी जी की सलाह हमारे बिये बाका बनी और है। हमारे हाथों 'नया हल्द' जब तक निकलेगा इसी रूप में निकलेगा।

'नया हल्द' मिलाप की नींव है अरब लिखावट की नहीं। हमें याद रखनी है कि 'नया हल्द' से जिस तरह का हिन्दू बनने को है, उसी तरह से 'नया हल्द' ही बनने को है।

मददक मदद दें और हर गाढ़क या हर अक्षर को दे देगा यह हर भारतीय के मन में एक नया गाढ़क 'नया हिन्दू' को दे देगा तो हमारा यह पाठा एक साल के बन्दर आसानी से पूरा हो सकना



नया हिन्दू 'नया हिन्दू' की जरूरत—एक वर्षील वृत्त सन् '५१  
कहते हैं कि विधान जैसी चीजों को समझना आम लोगों का काम नहीं,  
इसका अधिकार बिरले विद्वानों ही को है।

'नया हिन्दू' इस तरह की सब शक्तियों और रजधानों के खिलाफ एक चुनौती है। उसे विश्वास है कि जनता की बोल चाल की भाषा में राजब की साक्रक है। नई परिभाषाओं के गढ़ने में भी हमें उससे बेहद मदद मिल सकती है। राज भाषा हो या राष्ट्र भाषा उसे रूप देने और उस के शब्द मंदार को भरने में हमें देस की सब भाषाओं और जहाँ जरूरत हो बाहर की भाषाओं से भी उदारता और खुले दिल से काम लेना चाहिये। भाषा को बढ़ाने, सजाने और उससे जनता को ऊपर उठाने का यही एक जरिया है।

दूसरा सबाल लिखावट का है। जैसे भाषाएँ बनती और बदलती रहती हैं वैसे ही लिखावटें भी बनती और बदलती रहती हैं। 'नया हिन्दू' जिस तरह किसी भाषा की पवित्रता में विश्वास नहीं करता उसी तरह किसी लिपि को भी पवित्र या ईश्वरी नहीं मानता। यह भी जाहिर है कि आखिर में एक राष्ट्र भाषा की एक ही लिखावट रहने में आसानी रहती है। महात्मा गांधी उस समय दोनों लिखावटों दो कारणों से चाहते थे। एक यह कि हमारे कैसले में देश की गन्ध न आवे और दूसरे इसलिये कि जो हजारों भाई सरदू लिपि के आदी हो गए हैं उन्हें एक लिखावट से दूसरी लिखावट तक जाने के लिये समय मिल जावे और सुभीता हो। हमारी राय है कि अगर देस का काम दुनिया की किसी दूसरी लिपि से ज्यादा अच्छी तरह चल सके और मानव समाज के एक करने में हमें उससे मदद मिल सके तो हमें इसमें भी कोई एतराज नहीं होना चाहिये। भाषा की तरह लिखावट भी हमारे लिये केवल एक साधन है। साक्षरता नहीं।

नया हल्द 'नया हल्द' की ضرورت—एक अमल जून सन '०१  
कहे हैं कि वेहान जसो चड्डों को संजचना आम लूकों का काम  
नहें, अंका अदेकर बरले वदोनों ही को है।

'नया हल्द' अस तरह की सब शक्तियों और वजहतों के خلاف  
एक चड्ढी है। अये श्वास है के जन्ता की बोल चाल की बहाशा  
महो वसब की पातलत है। न्नी प्रीबेभाशाओं के कुंएले महो बेहि  
महो अंस से बरहद मदद मल सक्ती है। राज बहाशा हो या राश्ट्र  
बहाशा अये रूप् दियेले और अंके शब्द बेहदार को बेरने महो महो  
दियेस की सब बहाशाओं और जेहा जरूरत हो बाहर की बहाशाओं से  
बेहि आदरता और कहेले दल से काम लियेा जायै। बहाशा को प्रोहाले,  
संजाने और अंस से जन्ता को ओवर अंथाने ला बेहि एक दुरिये है।

दुसरा सवाल लैहावट का है। जेहसे बेभाशांन बन्ती अर बदल्ती  
रह्ती महो वैसे ही लैकावटें बेहि बन्ती और बदल्ती रह्ती ह्यो।  
'नया हल्द' जेस तरह किसी बेभाशा की प्रोत्रता मीन श्वास नहें कर्ना  
असी तरह किसी लेहि को बेहि प्रोत्रिया अिशुरी बेहि मांता। ये बेहि  
प्राहर है के आं, महो एक राश्ट्र बेभाशा की एक ही लैकावट रहैले  
महो आसानी रह्ती है। मेहाना लांद्धी अंस से फोनों लैकावटें  
दो कार्नों से जाह्ते ते। एक ये के हमारे फीवले मीन दोबेस  
की गल्दह ने ओरे और दोसरे अंस लैले के जो हजारों बेभांती रदो लेहि के  
एदुस हो क्ने महो अंभेदर एक लैकावट से दोसरी लैकावट तक  
जाने के लैले से मल जारै और सोनेहता हो। हमारी राने है के अर  
दियेस का काम दुनिया की किसी दोसरी लेहि से ज्यादा अच्ची तरह चल  
सके और मानो समाज के एक कर्ने मीन महो अंस से मदद मल सके  
तो महो अंस मीन बेहि कर्नी अंक्षां नहें होना चाहैले। बेभाशा  
की तरह लैकावट बेहि हमारे लैले केवल एक साधन है, मक्द



नया हिन्द 'नया हिन्द' की खरूरत—एक अपील जून सन् '५१

आज कल की नई हिन्दी में जो आसान चालू शब्दों को इस बिना पर निकाल कर कि उनका विकास नीचे संस्कृत से न होकर किसी दूसरी भाषा से है उन की जगह संस्कृत के मोटे मोटे नए शब्द ठूँसने के रुजहान को 'नया हिन्द' हिन्दी की उन्नति और उसके विकास से लिये घातक मानना है. यह रोग हमारे देस का एक नया रोग है. नागरी प्रचारिणी सभा काशी के हिन्दी शब्द सागर में हजारों ऐसे शब्द मौजूद हैं जिन के इस्तेमाल पर आजकल की हिन्दी परीक्षाओं में विद्यार्थियों के नम्बर काट लिये जाते हैं, यह कह कर कि वह शब्द उरदू हैं हिन्दी नहीं! उसी नागरी प्रचारिणी सभा के मशहूर विद्वान बाबू श्याम सुन्दर दाम ने अपने शब्द कोश में 'शरमा करवा के सैकड़ों चालू शब्द अपनाए हैं. अंग्रेजी शब्द appears के लिये अपने कोश में उन्हें दे को ही शब्द दिग के चार्की और बकाया. आर हमारे हिन्दी प्रेसियों के दिमाग उन्नती तरफ को चल रहे हैं. वच चालू शब्दों की जगह नए और मठिन शब्द गढ़ कर उलटी गंगा बहाने का कोशिश में है. क्रान्त को विधि, मोटर को वहिवाण, सेब को उरकोन. कुलों को भारवाहक. दफ्तर या चौकी को कार्यालय, वटिंग रूम का प्रनीक्षालय, रेलवे को अयोसग और ट्रेमवे को रथयायाम बोलने और लिखने की कोशिश को 'नया हिन्द' एक गंदी बामारी मानता है जिस की जड़ें नकरत और अन्धविश्वास में हैं. यह नई बीमारी छुआखून और जानपत के हमारे पुराने रोग के भाषा के मैदान में डमर आने का नतीजा है. इस तरह की भाषा का गढ़ना देस की जनता और बाँड़े से पढ़े लिखों के बीच एक गहरी खाई खोद देना है और करोड़ों जनता के साथ दुशमनी करना है. इस जन राज के जमाने में होना यह बाहिये कि हमारी जनता के अधिक से अधिक लोग यहाँ तक कि बेपड़े भी हमारे जानूँ, हमारे विधान और राज काज की नई नई चीजों को समझ सकें. पर इस नई हिन्दी के पन्थित अभिमान के साथ

सोया हल 'नया हल' की ضرूरत—एक अपील जून सन् '५१

अजल की नई हलदी में जो आसान चालू शब्दों को इस बिना पर निकाल कर कि उनका विकास नीचे संस्कृत से न होकर किसी दूसरी भाषा से है उन की जगह संस्कृत के मोटे मोटे नए शब्द ठूँसने के रुजहान को 'नया हिन्द' हिन्दी की उन्नति और उसके विकास से लिये घातक मानना है. यह रोग हमारे देस का एक नया रोग है. नागरी प्रचारिणी सभा काशी के हिन्दी शब्द सागर में हजारों ऐसे शब्द मौजूद हैं जिन के इस्तेमाल पर आजकल की हिन्दी परीक्षाओं में विद्यार्थियों के नम्बर काट लिये जाते हैं, यह कह कर कि वह शब्द उरदू हैं हिन्दी नहीं! उसी नागरी प्रचारिणी सभा के मशहूर विद्वान बाबू श्याम सुन्दर दाम ने अपने शब्द कोश में 'शरमा करवा के सैकड़ों चालू शब्द अपनाए हैं. अंग्रेजी शब्द appears के लिये अपने कोश में उन्हें दे को ही शब्द दिग के चार्की और बकाया. आर हमारे हिन्दी प्रेसियों के दिमाग उन्नती तरफ को चल रहे हैं. वच चालू शब्दों की जगह नए और मठिन शब्द गढ़ कर उलटी गंगा बहाने का कोशिश में है. क्रान्त को विधि, मोटर को वहिवाण, सेब को उरकोन. कुलों को भारवाहक. दफ्तर या चौकी को कार्यालय, वटिंग रूम का प्रनीक्षालय, रेलवे को अयोसग और ट्रेमवे को रथयायाम बोलने और लिखने की कोशिश को 'नया हिन्द' एक गंदी बामारी मानता है जिस की जड़ें नकरत और अन्धविश्वास में हैं. यह नई बीमारी छुआखून और जानपत के हमारे पुराने रोग के भाषा के मैदान में डमर आने का नतीजा है. इस तरह की भाषा का गढ़ना देस की जनता और बाँड़े से पढ़े लिखों के बीच एक गहरी खाई खोद देना है और करोड़ों जनता के साथ दुशमनी करना है. इस जन राज के जमाने में होना यह बाहिये कि हमारी जनता के अधिक से अधिक लोग यहाँ तक कि बेपड़े भी हमारे जानूँ, हमारे विधान और राज काज की नई नई चीजों को समझ सकें. पर इस नई हिन्दी के पन्थित अभिमान के साथ



**नया हिन्द 'नया हिन्द' की वस्तुतः—एक अपील जून सन '१९**  
 और न सत्य की दृष्टि से कोई भाषा दूसरी भाषा से ज्यादा पाक  
 है न संस्कृत अरबी से ज्यादा पाक है और न अरबी संस्कृत से,  
 और न इन दोनों में से कोई पंजाबी, मराठी, चीनी, जापानी या  
 दुनिया की किसी भी और भाषा से. भाषा हमारा लक्ष्य या इष्ट  
 (माबूद) नहीं है. भाषा केवल एक साधन है जिसमें आदमी  
 आदमी को समझ सके, आदमी आदमी से प्यार कर सके और  
 आदमी आदमी के काम आसके.

जहाँ तक भारत के विधान के अनुसार देस की मरहारी भाषा  
 का मवाल है, 'नया हिन्द' कई बार अपनी राय व्यक्त कर चुका  
 है. २२ जुलाई १९४७ को महात्मा गांधी ने अमनी पत्र  
 बहन फ्रेटन को एक पत्र में लिखा था—“भगवान् जॉन्स हमारे  
 भाष्य से क्या बड़ा है. पुराने तरीके बदलते हैं. नए उनको  
 जगह लेते हैं. कोई नान तय नहीं है. विश्वन भाषा चाहे कुछ  
 भी फैसला करे. तुम्हारे और मेरे लिये 'द्वन्द्व' लिपियों के साथ  
 हिन्दुस्तानी ही रहेगी. मेरे लिये राष्ट्र भाषा का मतलब है 'हिन्दी' +  
 उर्दू = हिन्दुस्तानी.” फिर भी हमें नाम की इटनी और न गांधी जी  
 को हाँ सकती थी हमें हिन्दी नाम प्यारा है, बदलते हिन्दी को हिन्दी  
 रहने दिया जाय. 'नया हिन्द' की भाषा बड़ी है जिस वधान में  
 भी हिन्दुस्तानी कह कर बताया गया है और जिन की वाचन विधान  
 ने सार शब्दों में तय किया है कि—“जो हय, जो शैलिय और जो  
 मुहावर हिन्दुस्तानी में.....काम में आते हैं उन्हें हिन्दी में  
 अपनाकर उस माला माल किया जाय.” अगर विधान की उन  
 दफ्तों पर जिन का हिन्दी के साथ सम्बन्ध है सचाई से अमल किया  
 जाय तो 'नया हिन्द' की भाषा ही विधान की हिन्दी का रूप देने में  
 सब से अधिक मददगार हो सकती है. उस सूरत में विधान की  
 हिन्दी और 'नया हिन्द' की हिन्दुस्तानी में अन्तर भी नहीं रह

जाय

**नया हल 'नया हल' की ضرورت—एक अपील जून सन '०**  
 और न सत्य की दृष्टि से कोई भाषा दूसरी भाषा से ज्यादा  
 पाक है न संस्कृत अरबी से ज्यादा पाक है और न अरबी संस्कृत से,  
 और न इन दोनों में से कोई पंजाबी, मराठी, चीनी, जापानी या  
 दुनिया की किसी भी और भाषा से. भाषा हमारा लक्ष्य या इष्ट  
 (माबूद) नहीं है. भाषा केवल एक साधन है जिसमें आदमी  
 आदमी को समझ सके, आदमी आदमी से प्यार कर सके और  
 आदमी आदमी के काम आसके.

जहाँ तक भारत के विधान के अनुसार देस की मरहारी भाषा  
 का मवाल है, 'नया हल' कई बार अपनी राय व्यक्त कर चुका  
 है. २२ जुलाई १९४७ को महात्मा गांधी ने अमनी पत्र  
 बहन फ्रेटन को एक पत्र में लिखा था—“भगवान् जॉन्स हमारे  
 भाष्य से क्या बड़ा है. पुराने तरीके बदलते हैं. नए उनको  
 जगह लेते हैं. कोई नान तय नहीं है. विश्वन भाषा चाहे कुछ  
 भी फैसला करे. तुम्हारे और मेरे लिये 'द्वन्द्व' लिपियों के साथ  
 हिन्दुस्तानी ही रहेगी. मेरे लिये राष्ट्र भाषा का मतलब है 'हिन्दी' +  
 उर्दू = हिन्दुस्तानी.” फिर भी हमें नाम की इटनी और न गांधी जी  
 को हाँ सकती थी हमें हिन्दी नाम प्यारा है, बदलते हिन्दी को हिन्दी  
 रहने दिया जाय. 'नया हिन्द' की भाषा बड़ी है जिस वधान में  
 भी हिन्दुस्तानी कह कर बताया गया है और जिन की वाचन विधान  
 ने सार शब्दों में तय किया है कि—“जो हय, जो शैलिय और जो  
 मुहावर हिन्दुस्तानी में.....काम में आते हैं उन्हें हिन्दी में  
 अपनाकर उस माला माल किया जाय.” अगर विधान की उन  
 दफ्तों पर जिन का हिन्दी के साथ सम्बन्ध है सचाई से अमल किया  
 जाय तो 'नया हिन्द' की भाषा ही विधान की हिन्दी का रूप देने में  
 सब से अधिक मददगार हो सकती है. उस सूरत में विधान की  
 हिन्दी और 'नया हिन्द' की हिन्दुस्तानी में अन्तर भी नहीं रह

जाय



नया हिन्द 'नया हिन्द' को जरूरत—एक अशील जून सन् '५१  
पर ज्यादा बहस की जरूरत नहीं है. 'नया हिन्द' खुले और साफ  
तौर पर दूसरे दल के साथ है. ऐसी हालत में जब तक इन दोनों  
शक्तियों के बीच टक्कर जारी है तब तक 'नया हिन्द' की जरूरत  
भी बाहिर है.

यह तो हुई जरूरत की बात. अब रहा 'नया हिन्द' की उपयोगिता  
को बढ़ाने का सवाल.

इस में पहली चीज़ 'नया हिन्द' का कलेवर यानी उसकी भाषा  
और लिखावट है.

'नया हिन्द' इस बात का क़ायल है कि किनी भी देस या प्रान्त  
के अन्दर धर्म या मज़हब की बिना पर वहाँ के रहने वालों की दो  
अलग अलग बोलियाँ नहीं हो सकतीं. संस्कृत भरी हिन्दी या फ़ारसी  
भरी उर्दू कुछ दिनों के लिये कुछ पैंडितों और मं लेखियों का खुश भले  
ही करल पर यह दो अलग अलग धार बहुत दिनों अलग अलग नहीं  
रह सकतीं. इन दोनों की बुनियाद जनता की बोल चाल की हिन्दु-  
स्तानी है और इस एक बुनियाद के ऊपर दो अलग अलग इमारतें  
खड़ी नहीं रह सकतीं. उनमें से कोई कभी जनता की भाषा या राष्ट्र  
भाषा भी नहीं बन सकती.

राष्ट्र भाषा के रूप को तय करने में 'शुद्धता' का सवाल लाना  
भी ग़लत और धोके की बाज़ है. दुनिया की सब भाषाएँ एक  
दूसरे से शब्द और मुहावरें लेकर अपने को माला माल करती  
रही हैं और करती रहेंगी. किसी भी देस में राष्ट्र भाषा बही होगी  
जिस का ढाँचा जनता की भाषा हो और जिसके दरवाजे दुनिया  
की सारी भाषाओं से लेने देने के लिये सदा खुले हों. ✓

एक बात और. जो तंगनखरिवां मानव समाज के एक होने में  
क़द से बड़ी रुकावटें हैं उन में एक खास तंगनखरी किसी एक  
भाषा की पबिका का क़ाबू बिग़ार है. मग़ाल की कोई भाषा नहीं

नया हन्द 'नया हन्द' की ضرورت—एक अशील जून सन् '५१

पर ज्यादा बहस की ضرورت नहीं है. 'नया हन्द' कहे अरु सान طور  
पर दूसरे दल के साथ है. ऐसी हालत में जब तक इन दोनों  
शक्तियों के बीच टक्कर जारी है तब तक 'नया हन्द' की ضرورت भी  
ظاهر है.

ये तो हुयी ضرورت की बात. अब रहा 'नया हन्द' की अियुक्ति  
को बुरहाले का سوال.

ايس میں پہلی چیز 'نیا ہند' کا کلیو یعنی اُس کی بھاشا  
اور لکھاوت ہے.

'نیا ہند' اِس بات کا قائل ہے کہ کسی بھی دیس یا پراست  
کے اندر دھرم یا مذہب کی بغا پر وہاں کے رلیے والوں کی دو الگ  
الگ بولیاں نہیں ہوسکتیں. سنسکرت بھی ہندی یا فارسی  
بھری اُردو کچھ دنوں کے لیئے کچھ پختوں و مولویوں کو خوش بھلے  
ہی کر لیوں پر یہ دو الگ الگ دھاریں بہت دیوں الگ اک نہیں  
رہ سکتیں. اِن دونوں کی بھاد چلتا کی بول چال کی ہندستانی  
ہے اور اِس ایک بھاد نے اُپر دو الگ الگ عسارتیں کہوی  
نہیں رہ سکتیں. اِن میں سے کوئی کبھی چلتا کی بھاشا یا راشٹر  
بھاشا بھی نہیں بن سکتی.

راشٹر بھاشا کے روپ کر طے کرنے میں 'شدهدتا' کا سوال لانا بھی غلط  
اور دھوکے کی چیز ہے. دنيا کی سب بھاشائیں ایک دوسرے سے  
شبد اور مصاورے لے کر آپہ کر مالا مال کرتی رہی ہیں اور کرتی  
رہیں گی. کسی بھی دیس میں راشٹر بھاشا وہی ہوگی جسکا تھانچا  
چلتا کی بھاشا ہو اور جسکے دروازے دنيا کی ساری بھاشاں سے  
لہلہ دینے کے لئے سدا کھلے ہوں.

ایک بات اور. جو تلگ نظریاں مانو سراج کے ایک ہونے میں  
سب سے بڑی رکاوتیں ہیں اُن میں ایک خاص تلگ نظری کسی  
لہیک بھاشا کی پوتہ کا جھوٹا دھار ہے. بھگوان کی کوئی بھاشا نہیں



‘नया हिन्दू’ की वलरत -एक अशील जून सन १९११

बटना है. पर इस राजकाजी आजादी के साथ साथ देस की बाली सुसीबतों का खाल्ता नहीं हुआ. हमारे इस समर्थ के बिदेसी शासक बलते बलते हमारे अन्दर की उन पुरानी कमजोरियों को, जिन के सहारे उन्होंने १७५७ से १८५७ तक अपने लिये जर्मोन तैयार की थी और जिन को भड़काए रखकर ही उन्होंने इतने दिनों राज किया, जितना बढ़ावा दे सके दे गए.

आजादी के साथ साथ साम्प्रदायिक नकरतों का पारा और ऊँचा बढ़ा. मुल्क के टुकड़े हुए. दो अलग अलग हकूमतें कायम हुई. आशा की जाती थी कि इतनी बड़ी क्रीमत दे कर भी किसी तरह देस में अमन कायम होगा और नकरतों और अविश्वास की जगह प्रेम और विश्वास बढ़ेगा. पर हुआ इस का उल्टा. हम यहाँ कारणों में जाना नहीं चाहते. बँटवारे के साथ साथ दोनों तरफ साम्प्रदायिक शक्तियों ने और अधिक खोर पकड़ा. बँटवारा नतीजा था एक दूजे तक हमारी सदियों की कमजोरी और तंगनखरी का, और इसी बँटवारे ने उन कमजोरियों और तंगनखरीयों को और अधिक मड़काया. एक समय हर था कि यह आग सार देस को अपने बंगुल में लपेट कर देस और उसकी नई आजादों को हमेशा के लिये खतम कर देगी. इस की पेशीनगोई भी की जा चुकी थी. मद्वात्मा गांधी ने अपने अनोखे हथियारों से उस आग का सामना किया और अन्त में उसे ठंडा करते करते उसी में अपने जीवन की आहुति दे डाली.

पर अभी तक देस में दो तरह के विचार एक दूसरे से टकरा रहे हैं. एक तरफ ‘हिन्दू हिन्दू एक’ और ‘हिन्दू राज’ के नारे हैं, और हर जायज और नाजायज तरीकों से अपने लक्ष्य तक पहुँचने के मनसूबे. दूसरी तरफ एक मिले जुले रास्ट और सब धर्मों और सम्प्रदायों को एक निगाह से देखने वाली एक गैर जानिबदार सेकुलर यानी ब्योहारी राज को मजबूत करने की कोशिशें. यहाँ इन दोनों दलों के अमलनों

‘नया हन्दू’ की शुरुरत—एक अशील जून सन १९११

जहल है. पर इस राज काजी आजादी के साथ साथ देस की बाली सुसीबतों का खाल्ता नहीं हुआ. हमारे इस समर्थ के बिदेसी शासक बलते बलते हमारे अन्दर की उन पुरानी कमजोरियों को, जिन के सहारे उन्होंने १७५७ से १८५७ तक अपने लिये जर्मोन तैयार की थी और जिन को भड़काए रखकर ही उन्होंने इतने दिनों राज किया, जितना बढ़ावा दे सके दे गए.

आजादी के साथ साथ साम्प्रदायिक नकरतों का पारा और ऊँचा बढ़ा. मुल्क के टुकड़े हुए. दो अलग अलग हकूमतें कायम होनी. आशा की जाती थी कि इतनी बड़ी क्रीमत दे कर भी किसी तरह देस में अमन कायम होगा और नकरतों और अविश्वास की जगह प्रेम और विश्वास बढ़ेगा. पर हुआ इस का उल्टा. हम यहाँ कारणों में जाना नहीं चाहते. बँटवारे के साथ साथ साम्प्रदायिक शक्तियों ने और अधिक खोर पकड़ा. बँटवारा नतीजा था एक दूजे तक हमारी सदियों की कमजोरी और तंगनखरी का, और इसी बँटवारे ने उन कमजोरियों और तंगनखरीयों को और अधिक मड़काया. एक समय हर था कि यह आग सार देस को अपने बंगुल में लपेट कर देस और उसकी नई आजादों को हमेशा के लिये खतम कर देगी. इस की पेशीनगोई भी की जा चुकी थी. मद्वात्मा गांधी ने अपने अनोखे हथियारों से उस आग का सामना किया और अन्त में उसे ठंडा करते करते उसी में अपने जीवन की आहुति दे डाली.

पर अभी तक देस में दो तरह के विचार एक दूसरे से टकरा रहे हैं. एक तरफ ‘हिन्दू हिन्दू एक’ के नारे हैं, और ‘हिन्दू राज’ के नारे हैं, और हर जायज और नाजायज तरीकों से अपने लक्ष्य तक पहुँचने के मनसूबे. दूसरी तरफ एक मिले जुले रास्ट और सब धर्मों और सम्प्रदायों को एक निगाह से देखने वाली एक गैर जानिबदार सेकुलर यानी ब्योहारी राज को मजबूत करने की कोशिशें. यहाँ इन दोनों दलों के अमलनों



## ‘नया हिन्द’ की ज़रूरत-एक अपील

‘नया हिन्द’ ने जुलाई १९४६ में जन्म लिया था। जुलाई सन् १९४१ में उस के जीवन का छटा साल शुरू होगा। इस अवसर पर हम अपने पाठकों और प्रेमियों के साथ मिलाकर इस बात पर विचार करना चाहते हैं कि ‘नया हिन्द’ को जारी रखने की क्या ज़रूरत है ? इसे कैसे अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है और हमें इसके लिये क्या करना चाहिये ?

‘नया हिन्द’ जिस मिशन को लेकर पैदा हुआ था वह थोड़े से शब्दों में यह है :—अलग अलग धर्मों, फ़िरकें, सम्प्रदायों, जात पान और छुआ छून की दीवारों को तोड़ कर इस देश में एक कौम, एक राष्ट्र और एक मानवधर्म की बुनियादों को मजबूत करना और नगरों और गलत फ़हमियों को मिटाकर देशवासियों के दिलों में एक दूसरे से प्रेम पैदा करना। ‘नया हिन्द’ हर तरह की किरकापरस्ती और तंगनखरी को देश के आगे के जीवन के लिये हानिकार मानता है और सारे देश को अलग अलग मजहबी या सूबाई कलचरों की जगह एक मिली जुली चिन्तनी और मिली जुली कलचर की तरफ ले जाना चाहता है। यही ‘नया हिन्द’ का मकसद है और यही उसके जीवन का लक्ष्य।

पिछले पाँच बरस के अन्दर देश के जीवन में गहरा इनकलाब हुआ है। सन् '४७ की कोशिश के असफल होने के बाद मलका विक्टोरिया के प्लान के तहत देहली की बादशाहत खतम होकर आंगरेजी राज इस देश में कायम हुआ था। ठाकुर अठासी बरस के बाद यह राज किसी तरह खतम हुआ। देश ने फिर से आजादी की। सन् '४७ की यह घटना देश के इतिहास में बहुत बड़ी

## ‘नया हिन्द’ की ضرورت - एक अपील

‘नया हिन्द’ ने जुलाई १९४१ में जन्म लिया था। जुलाई सन् १९४१ में उस के जीवन का छटा साल शुरू होगा। इस अवसर पर हम अपने पाठकों और प्रेमियों के साथ मिलाकर इस बात पर विचार करना चाहते हैं कि ‘नया हिन्द’ को जारी रखने की क्या ज़रूरत है ? इसे कैसे अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है और हमें इसके लिये क्या करना चाहिये ?

‘नया हिन्द’ जिस मिशन को लेकर पैदा हुआ था वह थोड़े से शब्दों में यह है :—अलग अलग धर्मों, फ़िरकें, सम्प्रदायों, जात पान और छुआ छून की दीवारों को तोड़ कर इस देश में एक कौम, एक राष्ट्र और एक मानवधर्म की बुनियादों को मजबूत करना और नगरों और गलत फ़हमियों को मिटाकर देशवासियों के दिलों में एक दूसरे से प्रेम पैदा करना। ‘नया हिन्द’ हर तरह की किरकापरस्ती और तंगनखरी को देश के आगे के जीवन के लिये हानिकार मानता है और सारे देश को अलग अलग मजहबी या सूबाई कलचरों की जगह एक मिली जुली चिन्तनी और मिली जुली कलचर की तरफ ले जाना चाहता है। यही ‘नया हिन्द’ का मकसद है और यही उसके जीवन का लक्ष्य।

पिछले पाँच बरसों के अन्दर देश के जीवन में गहरा इनकलाब हुआ है। सन् '४७ की कोशिश के असफल होने के बाद मलका विक्टोरिया के प्लान के तहत देहली की बादशाहत खतम होकर आंगरेजी राज इस देश में कायम हुआ था। ठाकुर अठासी बरस के बाद यह राज किसी तरह खतम हुआ। देश ने फिर से आजादी की। सन् '४७ की यह घटना देश के इतिहास में बहुत बड़ी



मुल्ला अपनी ओर पुकारे, मंडित रोंके मंजिल तेरी

अपने अपने दौब लगाकर, खोटी करही मंजिल तेरी

क्रोच कपट के दो-राहे में, तेरा मुसाफिर ! काम भी बिगड़ा

मसजिद मन्दिर के मगइों में, ईश्वर अल्ला नाम भी बिगड़ा

दुनिया सारी संग हो तेरे, चाहे लाख सहारे हों

मंजिल तेरी तभी मिलेगी, पाँव जो तेरे सारे हों

सामने जिनके मंजिल हो, और वह मूरख जी हारे हों

सम्मुख जग मग दीप जरे, और दिये तेरे आँधियारे हों

कहाँ यह सुन्दर सपने टूटे, कहाँ पे टूटी आस की डोर ?

कहाँ मुसाफिर डगमग हाला, कहाँ पे होगाए पाँव भी चोर ?

दीप की जगमग जोत सी है क्या ? दीप की अगनी जलकर देख

जीवन सागर थाढ़ कहाँ है ? मंफधारों में पल कर देख

मंजिल तक जो चलना हो, तो काँटों पर भी चल कर देख

पाँव से अपने चल भी मुसाफिर ! आँख से अपनी चलकर देख

फूटे भाग्य सुहाग मिले ना, फूटे नयन न दर्शन होय

‘दशमी’ मलकी मिले नहीं, जब मैला मन का दर्पन होय

भीशन आँधी रोक भी दे, मंफधारों के रुख मोड़ भी दे

जीवट ! अपनी मौत से पहले, मौत की गरदन तोड़ भी दे

मंजिल को मत छोड़ मुसाफिर ! मूल मुलैयाँ छोड़ भी दे

तेज नुकीले काँटों से, इस पाँव के छाले फोड़ भी दे

लौक से बाहर पाँव न हो, याँ घात में बैठी मौत भी दे

अपने हाथ के दौब जो चूका, मौत से पहले मौत भी दे

मा अिली ओर पकारे, पलटत रोंके मंजिल तेरी

अपने आपों लुकर कहुती, क्र दी मंजिल तेरी

क्रुद्ध केहते के रूद्र राहें मों, तेरा मुसाफिर ! कल भी बक्रा

मसजिद मन्दिर के जेहकों मों, अिश्शु अल्ले नाम भी बक्रा

दुनिया सारी सलक हो तेरे, चाहे लाख सहारे हों

मंजिल तेरी तभी मिले ली, पाँव जो तेरे सारे हों

सामने जिनके मंजिल हो, ओर वह मूरख जी हारे हों

सम्मुख जग मग दीप जरी, ओर कलिये तेरे अन्धकारे हों

कहाँ ये सलद सिले तोते, कहाँ पे तोती आस की डोर ?

कहाँ मुसाफिर डाक मक हाला, कहाँ पे हुकिये पाँव भी चोर ?

दीप की जगमग जोत सी है क्या ? दीप की अगनी जलकर देख

जीवन सागर तहा कहाँ है ? मसजिद हाडों मों पल कर देख

मंजिल तक जो चलना हो, तो काँटों पर भी चलकर देख

पाँव से अपने चल भी मुसाफिर ! आँख से अपनी चलकर देख

देहते बेहाले सहाक मले ना, देहते नयन न दर्शन होय

‘सुअमी’ जेहली मले नेहों, जब मला मन का दर्पन होय

भीशन आँधी रोक भी दे, मसजिद हाडों के रुख मोड़ भी दे

जीवट ! अपनी मौत से पहले, मौत की गरदन तोड़ भी दे

मंजिल को मत छोड़ मुसाफिर ! बेहल बेहला जेहकों मों दे

तेज नुकीले काँटों से, इस पाँव के छाले फोड़ भी दे

लौक से बाहर पाँव न हो, याँ घात में बैठी मौत भी दे

अपने हाथ के दाव जो चूका, मौत से पहले मौत भी दे





विल्द १०

जून. सन् '५१

नम्बर ६

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,  
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की कोली.

नम्बर १

जून. सन् '५१

जुल १०

मजात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,  
'नया हल्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की कोली.

## दिये तरे अधियारे

( भाई स्वामी मारहरवी )

चलने से मत हार मुसाफिर ! चलते रहना काम है तेरा  
अब भर में यह आलस कैसी ? दूर अभी तो गम है तेरा  
दरिया के मत खोज किनारे, तू तारों में राम है तेरा  
आप मुसाफिर, आप ही मंखिल, मंखिल हुआ नाम है तेरा

रस्तों के तू छोड़ दे सगादे, इन रस्तों आराम नहीं है  
तुम में सौंचे राम हैं तारे, तुम बिन कोई राम नहीं है  
राम भी तेरी, पाँव भी तेरे, पाँव तले है मंखिल तेरी  
जब के दुबिचे आज जो हाथ, फिर न मिलेगी मंखिल तेरी

संगरेषी राज इस देस में कायम हुआ था. ठाक अठासी बरस के  
आज यह राज किसी तरह खतम हुआ. देस ने फिर से आजादी की  
आजादी. १९४७ ई. यह सठना देस के इतिहास में बहुत बड़ी

## दिशे तरे अंधियारे

( भैरवी सामी मारहरवी )

चलते से मत हार मुसाफिर ! चलते रहना काम है तेरा  
अब भर में यह आलस कैसी ? दूर अभी तो गम है तेरा  
दरिया के मत खोज किनारे, तू तारों में राम है तेरा  
आप मुसाफिर, आप ही मंखिल, मंखिल हुआ नाम है तेरा  
रस्तों के तू छोड़ दे सगादे, इन रस्तों आराम नहीं है  
तुम में सौंचे राम हैं तारे, तुम बिन कोई राम नहीं है  
राम भी तेरी, पाँव भी तेरे, पाँव तले है मंखिल तेरी  
जब के दुबिचे आज जो हाथ, फिर न मिलेगी मंखिल तेरी

राम भी तेरी, पाँव भी तेरे, पाँव तले है मंखिल तेरी  
जब के दुबिचे आज जो हाथ, फिर न मिलेगी मंखिल तेरी

अस दिश में लिये हवा था. तेहक अठासी बरस के बाद राज  
किसी तरह खतम हुआ. दिश ने यह से आजादी की सानस ली.  
आजादी. १९४७ ई. यह सठना देस के इतिहास में बहुत बड़ी



“नया हिन्दू”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द्र, भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

जून १९५१

क्या किस से

सफा

- १—दिये तारे अधियार (कविता)—भाई ‘स्वामी’ मारहरबी ४६६
- २—‘नया हिन्दू’ की जरूरत—एक अपील—सुन्दरलाल ५०१
- ३—इकूमत की खिन्दगी... —भाई अब्दुल हलीम अन्सारी ५१०
- ४—अहिन्मात्मक इनकलाब का रास्ता—भाई मंजर अली ५१५
- ५—छूनी दुआली (कहानी)—भगवानदीन ... ५३७
- ६—भारत के सुलमान—मौलाना अब्दुल्ला मिलो ... ५४३
- ७—शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन—भाई सुरेश रामभाई ५५२
- ८—भारत और चीन का कलचरी मेल—भाई भान चन्द्र ५६३
- ९—देस के लिये शराब पियो!—भाई कि० च० मशरूफा ५७५
- १०—सर्वोदय समाज का सन्देश—आचार्य विनोबा ... ५७६
- ११—कुछ किताबें—मशाल; हमारी आदिम जातियाँ ... ५७७
- १२—बच्चों की दुनिया—एडिटर, प्रेम भाई ... ५८०
- १३—हमारी राय—अमरी का घोके में न रहे—भगवानदीन; कांगरसा बकीरो को सनद—भगवानदीन; डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—भगवानदीन; ईरान और तेल का क्रोमियाना—भगवानदीन; चीन की नाकाबदी—सुरेश रामभाई; मौलाना हसरत मोहानी—भगवानदीन; अंगरेजों के बिन्द में तनातनी—सुरेश रामभाई; आचार्य कृपलानी का स्तीका—सुरेश रामभाई ...

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया

मने

“नया हन्द”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

एडिटर—

फ़ाज़ हन्द, बेगवान दीन, मल्हर हसन, भस्मर नाथ, सुन्दर लाल

जून १९५१

सफा

- १—हिन्दुस्तानी कलचर (कविता)—‘स्वामी’ मारहरबी ५९९
- २—‘नया हन्द’ की जरूरत—एक अपील—सुन्दरलाल ... ६०१
- ३—इकूमत की खिन्दगी... —‘स्वामी’ मारहरबी ६१०
- ४—अहिन्मात्मक इनकलाब का रास्ता—मल्हर हसन ... ६१५
- ५—छूनी दुआली (कहानी)—बेगवानदीन ... ६३७
- ६—भारत के सुलमान—मौलाना अब्दुल्ला मल्लो ... ६४३
- ७—शिवराम पल्ली सर्वोदय सम्मेलन—मल्हर हसन ... ६५२
- ८—भारत और चीन का कलचरी मेल—‘स्वामी’ मारहरबी ... ६६३
- ९—देस के लिये शराब पियो!—‘स्वामी’ मारहरबी ... ६७५
- १०—सर्वोदय समाज का सन्देश—आचार्य विनोबा ... ६७६
- ११—कुछ किताबें—मशाल; हमारी आदिम जातियाँ ... ६७७
- १२—बच्चों की दुनिया—एडिटर, प्रेम भाई ... ६८०
- १३—हमारी राय—अमरीक देस के मेल न रहे—बेगवानदीन; कांगरसा बकीरो को सनद—बेगवानदीन; डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—बेगवानदीन; ईरान और तेल का क्रोमियाना—बेगवानदीन; चीन की नाकाबदी—सुरेश रामभाई; मौलाना हसरत मोहानी—बेगवानदीन; अंगरेजों के बिन्द में तनातनी—आचार्य कृपलानी का ... ६८०

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया  
मने

फ़ाज़ हन्द, बेगवान दीन, मल्हर हसन, भस्मर नाथ, सुन्दर लाल

एक प्रचा दस आले



# गंगा देव

## इस नख्खर के खास लेख

नया हिन्दू की अकस्मात्-एक अपील—सुन्दरलाल

अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता—मंथर अली साहता

भारत के सुसलमान—अट्टुल्ला मिर्ज़ी

भारत और चीन का कलवर्गी मेल—भानवन्त वर्मा

हमारी राय—

अमरीका घोके में न रहे!—भगवानदीन

कौंग्रेसी बज्जियों का सनद—भगवानदीन

डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—भगवानदीन

लाल चीन की नाकेबन्दी—सुरेश रामभाई

जन सच १९५१

श्रीमन्त इस आला

७।

हिन्दुस्तानी कलखर सोसाइटी, इलाहाबाद

हिन्दुस्तानी कलखर सोसाइटी, अलहाबाद

## सचित्र के खास लेख

सचित्र की कमरत-एक अपील—सुन्दरलाल

सचित्र के अन्तर्गत का रास्ता—मन्थर अली साहता

सचित्र के सुसलमान—अट्टुल्ला मिर्ज़ी

सचित्र और चीन का कलवर्गी मेल—भानवन्त वर्मा

हमारी राय—

अमरीका घोके में न रहे!—भगवानदीन

कौंग्रेसी बज्जियों का सनद—भगवानदीन

डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—भगवानदीन

लाल चीन की नाकेबन्दी—सुरेश रामभाई

७।

हिन्दुस्तानी कलखर सोसाइटी, इलाहाबाद

हिन्दुस्तानी कलखर सोसाइटी, अलहाबाद



# भारत का विधान

## पुरा हिन्दी अनुवाद

बो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

‘भारत में अंगरेजी राज’ के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा  
मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का कर्ष है कि जिस विधान के अधीन  
स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह  
समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का  
सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और  
आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी  
है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आखिर में हिन्दी से अंगरेजी  
और अंगरेजी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.  
भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा माइज.  
लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क्रामत केवल  
साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :—

मैनेजर् ‘नया हिन्द’  
१४५. सुट्टी गंज.

इलाहाबाद.

# भारत का वंदन

## पुरा मल्लि अनूवाद

बो २१ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ.

‘भारत में अंगरेजी राज’ के लेखक प्लेट सुन्दर लाल द्वारा  
मूल अंगरेजी से अनूवाद.

हर भारत वासी का कर्ष है कि जिस वंदन के अद्वेय सुवाद्वेय  
भारत का शासन इस सम चल रहा है ‘अच्छी तरह समझ ले.  
यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा  
भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत  
में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस  
पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आखिर में मल्लि से अंगरेजी और  
अंगरेजी से मल्लि साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.  
भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा माइज.  
लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क्रामत केवल  
साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :—

मैनेजर् ‘नया हिन्द’  
१४५. सुट्टी गंज.  
इलाहाबाद.







## हिन्द के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महत्वा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं। भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये। क्रीमट दो रुपये.

### मुस्लिम देश भक्त—लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद करने की कोशिश की, किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है। क्रीमट सिर्फ एक रुपया बाग्रह आने.

### आज के शहीद—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी शक्तिों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक खिन की भाँ देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान झरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो किरावागाना ढंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपया.

### किसान की पुकार—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दूर चरपी रखते हैं. और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क्रीमट पाँच आने.

## हन्द के रूढ़ान की अंगरेजी हन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हन्द का जो नया रूढ़ान पास हुआ है उसके एक बहक चूदा सु खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हन्दस्तानी शब्द महत्वा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के रूढ़ान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये. क्रीमट दो रुपये.

### मुस्लिम दिश्वस भक्त—लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान दिश्वस भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हन्दस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद करने की कोशिश की, किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क्रीमट सिर्फ एक रुपया बाग्रह आने.

### आज के शहीद—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी शक्तिों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक खिन की भाँ देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान झरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो किरावागाना ढंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपया.

### किसान की पुकार—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दूर चरपी रखते हैं. और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क्रीमट पाँच आने.

मिलने का नक्का—मल्लिक 'सा हल्ला' १३४, मद्रास, आलगाद.

मिलने का नक्का—मल्लिक 'सा हल्ला' १३४, मद्रास, आलगाद.



## १८ वत सुन्दरलाल की और किताबें :-

**हिन्दू मुसलिम एकता**— इस में वह चार लेखर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की कषत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफे की किताब. क्रीमत सिकंदर बारह आने.

**महात्मा गांधी के बलिदान से सबक्र**—साम्प्रदायिकता यानी फिरकापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मजहबी और बतिहासी पहलू से बिचार और उसका इलाज, जिसने आखिर में इस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया. क्रीमत बारह आने.

**पंजाब हमें क्या सिखाता है**— महात्मा गांधी की खलाह से अक्टूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के कौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरशादी और आपसी मार काट के कारण लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क्रीमत चार आने.

**बंगाल और उससे सबक्र**— इस छोटी सी किताब में सन १९४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरके-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हथेरा के लिये खत्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क्रीमत सिकंदर दो आने.

**सिक्खों का पला**—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५ प्रमिजन्—

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :-

**हिन्दू मुसलम आिकता**— अस में वह चार लेखर जम

कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की कषत पर ग्वालियर में दिये थे.

**महात्मा गांधी के बलिदान से सबक्र**—

साम्प्रदायिकता यानी फिरके परस्ती की बीमारी पर राज काजी मजहबी और अतहासी पहलू से विचार और अस्का एलाज जिस ने अखर मलू दिस पचा महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहल्ले दिया.

क्रीमत बारह आने.

**पंजाब हमें क्या सिखाना है**— महात्मा गांधी

की खलाह से अक्टूबर सन १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के कौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरशादी और आपसी मार काट के कारण लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क्रीमत चार आने.

**बंगाल और अस से सबक्र**— अस चोटी सी

किताब में सन १९४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरके-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हथेरा के लिये खत्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क्रीमत सिकंदर दो आने.



# गीता और कुरान

## लेखक-पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरु में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से ह्व लो दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सबाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देस की हालत, गीता के बइप्पन और एक एक अव्थाय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बइप्पन और एक एक बात पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ्जी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि कुरान में जेहाद, अक्बरत, आखरत, जन्नत, जहन्नम. काफिर बगैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफे की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ बाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४४, मुट्टी गंज, इलाहाबाद.

## किता और قرآن

### लेखक—पंडित सुन्दर लाल

अस किताब के शुरु मे दनिया के सब बुरे बुरे देसों की किता को देहिया किता हे ओर सब देसों की किताबों से हवाल दे दे के मल्लि जल्लि बल्लानि सज्जानि को बयान किता किता हे.

असके बाद किता के लखे जाने के रक्त की अस दिश की हालत किता के बुरी ओर किता एक ओहवा के लखे किता की तल्लिम को बल्लिया किता हे.

अख मेस कुरान से पहले की मरब की हालत कुरान के बुरी ओर किता किता पर कुरान की तल्लिम को बयान किता किता हे. अस मेस कुरान की पान्ज सौ से ओर आयेतों का लफ्जी तरजमे दिया किता हे ये भी बल्लिया किता हे के कुरान मेस जेहाद عاقبت آخرت जنت जेहल काफिर खेदरे कसे किता किता हे.

जो लोग सब देसों की किता को समझना चाहें या हल्लो देस ओर असल दोनो की अ दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासल करना चाहें अस किताब को जरूर पढना चाहें.

पौने तीन सौ सल्ले की सल्लर जल्ल बल्ले किता की फल्लत सर्फ तल्लि दोनो.

मल्ले का पते—मल्लिजर 'नया हल्ल' १४० मल्लि काज' अल्लबाद.



नीचे लिखी सब किताबें नागरी और बर्दे दोनों लिखावटों में  
अलग अलग मिल सकती हैं.

बाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के खिस्मे होगा.

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अली सोखता

२९ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने एक सुभाष के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की क'ंग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले इकूमत से बाहर निकल कर एक लोक सेवक संघ बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घण्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ से उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें. वह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोखता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बाँधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपये

निचे लही सब किताबों नागरी और अरु दोनो लिहातों में  
अक अक मल सकती हों.  
डाक या रेल खर्च हर हात में अक के डमे होगा.

## महात्मा गान्धेय की वसित

लिखक—श्री मन्जर अली सोखता

२९ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गान्धेय ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने अक सज्हाऊ के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया वधान तैयार किया था. इस वधान में अन्होंने सलाह दी थी के कांग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावै और कांग्रेस वाले अकूमत से बाहर नकल कर अक 'लोक सेवक संघ' बढा कर काम करीय.

३० जनवरी को अपे दिहात से कच्चे कहेते बहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बला कर वे वधान दिया के वे गान्धेय जी की طرف से असे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में बहले वसित. ये चहोता सा वधान दीस के नाम गान्धेय जी की अखरी वसित है. लुड अस्की विलाकिया गान्धेय जी के परम भक्त श्री मन्जर अली सोखते ने की है जो गान्धेय वद को सज्हाले और अिलाने वाले दीस के अने कले लीकें में से अक हों.

गान्धेय वद को सज्हाले के लीने अस्का पुरहा भेत शुरी है.  
२२५ सफे की सलदर जलद बलदही कताब की कहेत सर्फ दो रुपये.



(५) आरमोनिथा का (प्रेगोरियन) चर्च : बड़े धर्म-पिता और सब आरमोनिथनों के कैथोलीको इसके सदर हैं।

(६) ईवेंगेलीकल क्रिश्चियन वैपटिस्ट चर्च : इसमें ईवेंगेली-कल क्रिश्चियनों, वैपटिस्टों और पेंटेकोस्टल चर्च के मानने वालों की पहले की स्वतन्त्र संस्थाएं शामिल हैं।

(७) लूथर के मानने वालों का चर्च : खासकर लाटविया और एस्तोनिया की सोशलिस्ट रिपब्लिक में है।

(८) बौद्ध धर्म के मानने वाले।

(९) यहूदों धर्म : इसका कोई संगठित मरकज नहीं है।

सोवियत संघ के वजीर मंडल के नीचे रूसी आर्थोडॉक्स चर्च और दूसरे धार्मिक पंथों के मंडल कायम हैं। इन मंडलों को धार्मिक संस्थाओं और सरकारी अधिकारियों और संस्थाओं के बीच सम्बन्ध कायम करने के लिये बनाया गया है। इसके अलावा यह मंडल इस बात की भी देख भाज रखते हैं कि धार्मिक पूजा बन्दगी और रीति-रिवाज की आजादी के कानून पर ठीक तरह से अमल किया जा रहा है या नहीं। धार्मिक संस्थाओं के पेश किये हुए सबालों के बारे में कानूनों और कायदों का मसौदा तैयार करने का काम भी इन मंडलों के बिम्मे है।

धार्मिक आजादी की रक्षा करने के साथ साथ सोवियत संघ का विधान सब नागरिकों के धर्म के खिलाफ प्रचार करने के अधिकार को भी मानता है। धर्म के खिलाफ प्रचार का मतलब लोगों में दुनिया को साइन्सी निगाह से देखने की आदत का प्रचार करना है। धर्म के खिलाफ प्रचार के दौरान में धर्म को मानने वाले लोगों की भाव-नाओं, ज़रबों का चोट पहुंचाना सोवियत विधान में मना है।

मैनी सन '०१' हमारी राय नया हन्द

(५) आर्मेलिया का (ग्रीगोरियन) चर्च : बड़े धर्म पिता और सब आर्मेलियनों के किथो लिको इस के सदर हूँ।

(६) आयोर्बिजलिकल क्रिश्चियन बिप्टिस्ट चर्च : इस में आयोर्बिजलिकल क्रिश्चियन 'बिप्टिस्टों' और पिन्क्ले कोस्टल चर्च के मानने वालों की पहिले की सोंक्लेर सल्लेक्ताथर शामिल हूँ।

(७) लोथर के मानने वालों का चर्च : खास कर लॉथिया और लिस्त्वोनिया की सोशल्लिस्ट रिपब्लिक में हूँ।

(८) बुद्ध धर्म के मानने वाले।

(९) यहूदी धर्म : इस का कौन्ही सल्लेक्तेत मरकज नहूँ है।

सोवियत सल्लेक् के वज़ीर सल्लेक् के निह्के (रूसी आर्थोडॉक्स चर्च) और दूसरे धर्मिक पंथों के सल्लेक् कानम हूँ। इन सल्लेक् को धर्मिक सल्लेक्ताओं और सरकारी अधिकारियों और सल्लेक्ताओं के बिच सल्लेक् कानम करने के लिये बडिया किया है। इसके علاوه ये सल्लेक् इस बात की भी देखे बहाल रक्ते हूँ कि धर्मिक पूजा बल्लुकी और रीति रवाज की आजादी के कानून पर ठीक तरह से عمل किया जा रहा है या नहूँ। धर्मिक सल्लेक्ताओं के बिच किये हुये सबालों के बारे में कानूनों और कानूनों का मसौदा तैयार करने का काम भी इन सल्लेक् के बिम्मे है।

धर्मिक आजादी की रक्षा करने के साथ साथ सोवियत सल्लेक् के विधान सब नागरिकों के धर्म के खिलाफ प्रचार करने के अधिकार को भी मानता है। धर्म के खिलाफ प्रचार का मतलब लोगों में दुनिया को साइन्सी निगाह से देखने की आदत का प्रचार करना है। धर्म के खिलाफ प्रचार के दौरान में धर्म को मानने वाले लोगों की भावनाओं, ज़रबों को चोट पहुंचाना सोवियत विधान में मना है।



रीत रिवाजों को पालने के अधिकार की रक्षा करता है। सोवियत राज धार्मिक सभा सोसाइटियों के लिये प्रार्थना घरों (गिरजों, सिनेगोगों, मसजिदों वगैरा) के मुक्त इस्तेमाल और अपने धर्म के नाम का बोर्ड लगाने की सुविधा देना है। धार्मिक संस्थाएं खुद अपने पूजाघर बना सकती हैं। धार्मिक स्कूलों के लिये सरकार और मुकामी सरकारों अधिकारी जगहों का प्रबन्ध करते हैं और धार्मिक किताबों और अखबारों के निकालने के लिये काराज और छापाखानों की सुविधा देते हैं।

आजकल सोवियत रूस में नीचे लिखी धार्मिक जमातें मौजूद हैं—

(१) रूसी आर्थोडॉक्स चर्च : मास्को और सारे रूस के सत्तर बरस के बड़े धर्म-पिता अलेक्सी इसके सदर हैं। १९०२ में आपने दीजा लो थी. एक सलाहकार मंडल—पवित्र मिनिद—के साथ आप काम करते हैं। इस चर्च के मानने वालों की गिनती सबसे ज्यादा है।

(२) मुसलमानों का धर्म. इसलाम : मुसलमानों के अपने मखहबी मामले उनके चार सूबाई धार्मिक मरकजों से चलते हैं। सोवियत संघ के अधिकतर मुसलमान सुन्नी हैं। मुसलमानों की यही बड़ी जमात है। शिया मुसलमानों की तादाद काफी कम है। बइखासर काके शिया-पार के इलाक़े में रहते हैं।

(३) रोमन कैथोलिक चर्च : यह तीन पंथों में बटा है जो एक दूसरे से अलग रहते हैं। एक कहलाता है नेलोक्रीनित्स्की पंथ. दूसरा पंथ वह जो पादरियों को नहीं मानता, तीसरा वह जो रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के पहले के पादरियों को रखता और मानता है।

(४) ल्यारजियों का आर्थोडॉक्स चर्च : धर्म-पिता कैथोलि-कोल इसके सदर हैं।

रित (राजों को पालने के अधिकार की रक्षा करता है. 'सोवियत' राज देहार्मिक सभा सोसाइटीयों के लिये प्रार्थना केन्द्रों (गिरजों सलिकागों, 'मसजिदों' वगैरा) के मुक्त इस्तेमाल और अपने धर्म के नाम का बोर्ड लगाने की सुविधा देना है. देहार्मिक संस्थाएँ खुद अपने पूजा केन्द्र बना सकती हैं. धार्मिक स्कूलों के लिये सरकारी मुकामी सरकारों और मुकामी सरकारों अधिकारी जगहों का प्रबन्ध करते हैं और धार्मिक किताबों और अखबारों के निकालने के लिये काराज और छापाखानों की सुविधा देते हैं.

आजकल 'सोवियत' रूस में निचे लकी देहार्मिक जमातें मौजूद हैं—

(१) 'रूसी आर्थोडॉक्स' चर्च : मास्को और सारे रूस के सत्तर बरस के बड़े धर्म-पिता अलेक्सी इस के 'सदर' हैं. १९०२ में आप ने दिक्शा ली थी. एक 'सल्लाह-कार मंडल'—'पवित्र' मिनिद—के साथ आप काम करते हैं. इस चर्च के मानने वालों की 'गिनती' सब से 'ज़्यादा' है.

(२) 'मुसलमानों का देहर्म' 'इस्लाम' : 'मुसलमानों के अपने' 'मखहबी' 'मामले' 'अन' के 'चार' 'सुबान्नी' 'देहार्मिक' 'मरकजों' से 'चलते' हैं. 'सोवियत' 'संघ' के 'अधिकतर' 'मुसलमान' 'सुन्नी' हैं. 'मुसलमानों की' 'यही' 'बड़ी' 'जमात' है. 'शिया' 'मुसलमानों की' 'तादाद' 'क़ाफ़ी' 'क़म' है. 'बइ' 'खासर' 'काके' 'शिया-पार' के 'इलाक़े' में 'रहते' हैं.

(३) 'रोमन' 'कैथोलिक' 'चर्च' : 'यह' 'तीन' 'पंथों' में 'बटा' है 'जो' 'एक' 'दूसरे' से 'अलग' 'रहते' हैं. 'एक' 'कहलाता' है 'नेलोक्रिनित्स्की' 'पंथ'. 'दूसरा' 'पंथ' 'वह' 'जो' 'पादरियों' को 'नहीं' 'मानता', 'तीसरा' 'वह' 'जो' 'रूसी' 'आर्थोडॉक्स' 'चर्च' के 'पहले' के 'पादरियों' को 'रखता' और 'मानता' है.

(४) 'ल्यारजियों' का 'आर्थोडॉक्स' 'चर्च' : 'धर्म-पिता' 'कैथोलि-कोल' 'इसके' 'सदर' हैं.



किसी भी चर्च को राज की तरफ से माली सहायता नहीं दी जाती। राज की नजर में सब चर्च बराबर हैं—किसी भी चर्च या पंथ को सरकार से खास रिश्तायें हासिल नहीं हैं। धर्म के आधार पर राज किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं करता। सरकारी दस्तावेजों में (पासपोर्ट, विवाह के लाइसेंस, पैदायश के सर्टीफिकेट वगैरा में) नागरिक का धर्म दर्ज नहीं किया जाता।

आम तालीम को राज ने चर्च के हाथों से पूरी तरह ले लिया है और स्कूलों का चर्च से अलग कर दिया है। सोवियन सरकारी स्कूलों में किसी भी तरह की किसी धर्म को तालीम नहीं दी जाती।

चर्च को राज से अलग करने का यह मतलब नहीं है कि पादरियों और चर्च को मानने वालों को नागरिक अधिकारों से अलग कर दिया जाता है। सब चर्चों और धार्मिक मत मतान्तरों के पादरियों को दूसरे सब नागरिकों के बराबर चुनाव सम्बन्धी और दूसरे अधिकार हासिल हैं।

सोवियत विधान सब नागरिकों के, चाहे वह जिस धर्म को भी मानते हों। धार्मिक सभा सोसाइटियों और संस्थाओं के रूप में संगठित होने और इन संस्थाओं की मरकजी इन्तजामों संस्थाएं बनाने तक के अधिकार की गारंटी करता है। इस तरह की मरकजी संस्थाएं अपने धर्म धर्म वालों की कानफरेन्सों और पादरियों की कॉंग्रेसों का इन्तजाम करती हैं, अपने अखबार और कितानें निकालती हैं, धार्मिक स्कूलों को चलाती हैं। हर चर्च की संस्थाओं का खर्च उस धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी मरजी से दिए दान से चलता है।

सोवियत कानून हर धर्म के मानने वाले लोगों को आजादी के साथ मिलकर खुले उपासना या पूजा बन्दगी का इन्तजाम करने, बच्चों

किसी भी चर्च को राज की तरफ से माली सहायता नहीं दी जाती। राज की नजर में सब चर्च बराबर हैं—किसी भी चर्च या पंथ को सरकार से खास रिश्तायें हासिल नहीं हैं। धर्म के आधार पर राज किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं करता। सरकारी दस्तावेजों में (पासपोर्ट, विवाह के लाइसेंस, पैदायश के सर्टीफिकेट वगैरा में) नागरिक का धर्म दर्ज नहीं किया जाता।

आम तालीम को राज ने चर्च के हाथों से पूरी तरह ले लिया है और स्कूलों का चर्च से अलग कर दिया है। सोवियत सरकारी स्कूलों में किसी भी तरह की किसी धर्म को तालीम नहीं दी जाती।

चर्च को राज से अलग करने का यह मतलब नहीं है कि पादरियों और चर्च को मानने वालों को नागरिक अधिकारों से अलग कर दिया जाता है। सब चर्चों और धार्मिक मत मतान्तरों के पादरियों को दूसरे सब नागरिकों के बराबर चुनाव सम्बन्धी और दूसरे अधिकार हासिल हैं।

सोवियत विधान सब नागरिकों के, चाहे वह जिस धर्म को भी मानते हों। धार्मिक सभा सोसाइटियों और संस्थाओं के रूप में संगठित होने और इन संस्थाओं की मरकजी इन्तजामों संस्थाएं बनाने तक के अधिकार की गारंटी करता है। इस तरह की मरकजी संस्थाएं अपने धर्म धर्म वालों की कानफरेन्सों और पादरियों की कॉंग्रेसों का इन्तजाम करती हैं, अपने अखबार और कितानें निकालती हैं, धार्मिक स्कूलों को चलाती हैं। हर चर्च की संस्थाओं का खर्च उस धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी मरजी से दिए दान से चलता है।

सोवियत कानून हर धर्म के मानने वाले लोगों को आजादी के साथ मिलकर खुले उपासना या पूजा बन्दगी का इन्तजाम करने, बच्चों



खड़ी करके काँग्रेस को भी उसके मुँह में ठूस कर इतनी समझदारी का काम किस लिये किया !

अधिक समझदार दुनिया नहीं बदला करते, वह अपने को बदलते हैं. यह कम समझ ही होते हैं जो दुनिया को बदल जाते हैं. पर वह लादी हुई शिस्त को नहीं मानते. गाँधी जी अगर अंगरेजों राज की शिस्त को अधिक समझदार बन कर अपने कंधे पर लाद लेते तो न हिन्दुस्तान आजाद होता और न काँग्रेसी सरकार दिखाई देती. और न काँग्रेस की बरकत कमेट्री दूसरों पर शिस्त लादने के लिये इतनी उतावली पाई जाती.

१५. ४. ५१.

—भगवानदीन

## सोवियत रूस में धर्म की आज़ादी —

रूस की धर्म सम्बन्धी बातों को लेकर दुनिया भर में तरह तरह की गलतफ़हमियाँ प्रचलित हैं. हम यहाँ 'सोवियत यूनियन के विचार और समाचार' नाम के दिल्ली से निकलने वाले एक हफ्तेवार मसूमेदार से एक मज़मून दे रहे हैं जिससे इस विशय पर सख्ती रोशनी पड़ती है— एडिटर.

सोवियत रूस का विधान सब नागरिकों के लिये धार्मिक रीत-रिवाज की आज़ादी का ऐलान करता है.

सोवियत संघ के हर नागरिक को किसी भी धर्म के मानने या न मानने की आज़ादी है. यह मामला उसके अपने विश्वास और उसकी इच्छा से सम्बन्ध रखता है.

सोवियत संघ में चर्च ( संगठित धर्म ) को हकूमत से अलग कर दिया गया है. राज के राजकाजी कामों में हस्तक्षेप देने का चर्च को

मई सन् '५१

हमारी राय

नया हलद  
कहो करके काँग्रेस को भी उसके मुँह में ठूस कर इतनी समझदारी का काम किस लिये किया !

अधिक समझदार दुनिया नहीं बदला करते, वह अपने को बदल जाते हैं. यह कम समझ ही होते हैं जो दुनिया को बदल जाते हैं. पर वह लादी हुई शिस्त को नहीं मानते. गाँधी जी अगर अंगरेजों राज की शिस्त को अधिक समझदार बन कर अपने कंधे पर लाद लेते तो न हिन्दुस्तान आजाद होता और न काँग्रेसी सरकार दिखाई देती. और न काँग्रेस की बरकत कमेट्री दूसरों पर शिस्त लादने के लिये इतनी उतावली पाई जाती.

—भगवानदीन

१५-४-५१

( ३० )

## सोवियत रूस में धर्म की आज़ादी —

रूस की धर्म सम्बन्धी बातों को लेकर दुनिया भर में तरह तरह की गलतफ़हमियाँ प्रचलित हैं. हम यहाँ 'सोवियत यूनियन के विचार और समाचार' नाम के दिल्ली से निकलने वाले एक हफ्तेवार मसूमेदार से एक मज़मून दे रहे हैं जिससे इस विशय पर सख्ती रोशनी पड़ती है— एडिटर.

सोवियत रूस का विधान सब नागरिकों के लिये धार्मिक रीत-रिवाज की आज़ादी का ऐलान करता है.

सोवियत संघ के हर नागरिक को किसी भी धर्म के मानने या न मानने की आज़ादी है. यह मामला उसके अपने विश्वास और उसकी इच्छा से सम्बन्ध रखता है.

सोवियत संघ में चर्च ( संगठित धर्म ) को हकूमत से अलग कर दिया गया है. राज के राजकाजी कामों में हस्तक्षेप देने का चर्च को



भी थूकने या इसी तरह के और कोई काम करने की हिम्मत नहीं कर सकता. पर वही आदमी डिसिलिन का बोझा कंधे पर लादकर रेल के डिब्बे में थूकने से कभी नहीं हिचकता. अगर हम भूलते नहीं हैं तो काँग्रेस में शिस्त पर न चलने की सजा दिये जाने का रिवाज गाँधी जी ने शुरू किया. और शायद बस बाबू या और किसी ऐसे ही नेता के सजा देने पर किसी मनचले ने गाँधी जी से सबाल पूछा था कि फिर काँग्रेस में और नाज़ी और बोलशेविक पार्टी में क्या फ़रक़ रह गया. तब गाँधी जी ने जवाब में यह कहा: या कि नाज़ी और बोलशेविक पार्टी तो शिस्त न मानने पर सज़ा उड़ा देती हैं, काँग्रेस तो सिर्फ़ काँग्रेस से बाहर ही करती है. उस वक़्त हम अपने मन में यह कह कर ही रह गए थे कि अगर काँग्रेस में सर उड़ाने की ताक़त होती तो शायद वह भी सज़ा उड़ाने से बाज़ न आती. और क्या आज अहिंसक काँग्रेस की सरकार उठे नहीं चलाती और गोली नहीं चलाती?

हमारी राय में बरकिंग कमेटी शिस्त यानो डिसिलिन को इस नए सुझाव के जरिये यहाँ तक खींच ले गई है कि उसने अपने एक एक प्रस्ताव को रद्दी ही नहीं किया है बल्कि एक एक को कमर ही तोड़ती है.

शिस्त खिंच कर 'लोकशाही' नहीं रह जाती. 'शिस्त शाही' बन जाती है. राशन की दूकान पर घंटों ठंडी हवा, लू या बरसात में खड़े रहने में शिस्त भले ही हो लोकशाही नहीं. राशन की दूकान से सड़ा या कूड़ा मिला नाज लेने में शिस्त भले ही हो पर लोकशाही नहीं है. हम मिसालें बढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि हम लोकशाही पर लेख नहीं लिख रहे. पर हम कहना यह चाहते हैं कि इस तरह की सैकड़ों शिस्त पहले से ही लोकशाही को खाए जा रही थीं फिर बरकिंग कमेटी ने एक नई शिस्त की बाबिन

भी तोहफ़े या इसी طرح के और कुरी क़म करने की हस्त नेहें कर सकें. पर वही आदमी तसियान का बोझा कलदे पर लाद कर रेल के डिब्बे में थूकने से कभी नेहें हिचकें. अगर हम नेहोलें नेहें हैं तो कलंग्रेस में शिस्त पर ने चलने की सज़ा दाने का राज ललदे जी ने शुरू किया. और शलद बोस बाबु या और कसी ऐसे ही नेहिया के सज़ा दाने पर कसी मलजले ने ललदे जी से सवाल पूछा था के नेह कलंग्रेस में और नाज़ी और बोलशेविक पार्टी में शिस्त न मानने पर सज़ा उड़ाने की ताक़त होती तो शायद वह भी सज़ा उड़ाने से बाज़ न आती. और कया आज अलसक कलंग्रेस की सरकार उठे नहीं चलाती और गोली नेहें चलाती?

हमारी राय में बरकिंग कमेटी शिस्त यलनी डिसिलिन को इस नए सुझाव के डरिये नेहल तक कहेलज ले ली है के अस ने अले ललक एक प्रस्ताव को रदी ही नेहें किया है ललके एक एक को कमर ही तोड़ दी है.

शिस्त कहेलज कर 'लोक शाही' नेहें रह जाती. 'शिस्त शाही' बन जाती है. राशन की दूकान पर कहेलतों नेहलदी हो. लु या बरसात में खड़े रहने में शिस्त भले ही हो लोक शाही नेहें. राशन की दूकान से सड़ा या कूड़ा मला नाज लेलने में शिस्त भले ही हो पर लोक शाही नेहें है. हम मललललललल नेहें चालें के केनेके हम लोक शाही पर लेके नेहें लके रहे. पर हम कहेलने चालें हैं के असलर की सेकड़ों शिस्त नेहले से ही लोक शाही को खलें जा रही नेहें पर वललक कमेटी ने एक नई शिस्त की बललन



## शिस्त बनाम लोकशाही -

काँग्रेस की वरकिंग कमेटी ने हाल में काँग्रेसवालों के अन्दर शिस्त यानी डिसिप्लिन की कमी पर दुख प्रकट करते हुए एक ठहराव पास किया है जिसका निचोड़ यह है कि कोई काँग्रेस वाला काँग्रेस की या किसी काँग्रेस सरकार की किसी पालिसी को सिवा अपनी पार्टी की मीटिंग में या काँग्रेस कमेटी की मीटिंग में और कहीं न बुरा कहे और न उस पर नुकताचीनी करे. पार्लियामेंट के और सूबाई एसेम्बलियों के काँग्रेसी मेम्बरो को भी आगाह कर दिया गया है कि वह अगर इसके खिलाफ़ अमल करेंगे तो उन्हें सजा दी जा सकेगी, जिसका मतलब यह है कि पार्लियामेंट या एसेम्बलियों के अन्दर भी काँग्रेसी मेम्बरो को यह आज्ञा दी नहीं रही.

शिस्त यानी डिसिप्लिन के नाम पर अब तक दुनिया में क्या क्या जुलूम हुए हैं उनको तरफ़ शायद ही किसी का ध्यान गया हो. हमारी राय में सचची लोकशाही जैसी चीज़ किसी मुल्क में नहीं है और हिन्दुस्तान में तो अभी वह क़दम रखने क्या, भौकने की भी कोशिश नहीं कर सकती. काँग्रेस की वरकिंग कमेटी ने डिसिप्लिन के नाम पर जो अंधाधुन्द आज्ञा दी ली है वह इस बात का सबूत नहीं है कि काँग्रेस एक बड़ी ताकतवर संस्था है. ताकतवर संस्था तो बड़ी क़दलाती है और बड़ी होती है जिस पर शिस्त लादी नहीं जाती. शिस्त जब किसी संस्था के मेम्बरो पर सवार होती है तो वह कमर तोड़ देती है और मेम्बरो को नामद बना देती है. लेकिन शिस्त पर सवार संस्था उनको ही मजबूत होती है जितनी शेर पर सवार काली. शिस्त इसे कहते हैं कि कोई बुरे के बुरा. आदमी किसी जंगल में खड़े मन्दिर में अकेले खड़े हुए

## शिस्त बनाम लोक शाही -

लाग्रेस की वरकिंग कमेटी ने हाल में काँग्रेस वालों के अन्दर शिस्त यानी डिसिप्लिन की कमी पर दुख प्रकट करते हुए एक ठहराव पास किया है जिसका निचोड़ यह है कि कोई काँग्रेस वाला काँग्रेस की या किसी काँग्रेस सरकार की किसी पालिसी को सिवा अपनी पार्टी की मीटिंग में या काँग्रेस कमेटी की मीटिंग में और कहीं न बुरा कहे और न उस पर नुकताचीनी करे. पार्लियामेंट के और कमेटी के अन्दर भी काँग्रेसी मेम्बरो को भी आगाह कर दिया गया है कि पार्लियामेंट या एसेम्बलियों के अन्दर भी काँग्रेसी मेम्बरो को यह आज्ञा दी नहीं रही.

शिस्त यानी डिसिप्लिन के नाम पर अब तक दुनिया में क्या क्या जुलूम हुए हैं उनको तरफ़ शायद ही किसी का ध्यान गया हो. हमारी राय में सचची लोक शाही जैसी चीज़ किसी मुल्क में नहीं है और हिन्दुस्तान में तो अभी वह क़दम रखने क्या, भौकने की भी कोशिश नहीं कर सकती. काँग्रेस की वरकिंग कमेटी ने डिसिप्लिन के नाम पर जो अंधाधुन्द आज्ञा दी ली है वह इस बात का सबूत नहीं है कि काँग्रेस एक बड़ी ताकतवर संस्था है. ताकतवर संस्था तो बड़ी क़दलाती है और बड़ी होती है जिस पर शिस्त लादी नहीं जाती. शिस्त जब किसी संस्था के मेम्बरो पर सवार होती है तो वह कमर तोड़ देती है और मेम्बरो को नामद बना देती है. लेकिन शिस्त पर सवार संस्था उनको ही मजबूत होती है जितनी शेर पर सवार काली. शिस्त इसे कहते हैं कि कोई बुरे के बुरा. आदमी किसी जंगल में खड़े मन्दिर में अकेले खड़े हुए



सुरक्षा कौंसिल के हाथ से होना चाहिये था न कि ट्रमैन साहब के. पर हम एक से ज्यादा बार लिख चुके हैं कि आजकल ट्रमैन साहब मानी यू. एन. ओ. और यू. एन. ओ. मानी ट्रमैन साहब. फिर इस नहीं समझते कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी को क्यों इतना तूल दिया जा रहा है.

अगर हम अन्दाजा लगाने में भूल नहीं करते तो ईरान में छिड़ा तेल का मगड़ा जनरल मैकआर्थर की अलहदगी का कहीं बड़ा कारन है बनिश्चत इसके कि जनरल साहब यू. एन. ओ. की हिदायतों पर पूरा पूरा अमल नहीं करते थे. अगर हम झूठे भविष्य वक्ता ( पेशी-गो ) नहीं हैं तो बहुत जल्दी ही जनरल मैकआर्थर फिर कहीं इस से ज्यादा माके की कमान्ड सेभालते हुए दिखलाई पड़ेंगे.

कोरिया की लड़ाई के सिलसिले में यह एक नई चाल बत्ती गई है. यह दूसरी बात है कि उसे रुस किसी और निगाह से देखेगा. बरतानिया और हिन्दुस्तान किसी और निगाह से और अमरीका के रहनेवाले किसी और निगाह से.

क्या इस अलहदगी का यह मतलब समझा जाय कि अब चीन और रुस खड़े खड़े तमाशा देखेंगे क्योंकि शायद अब मंचूरिया या रुस की हद् में बस नहीं गिराए जायेंगे और कोरिया को नई नई फौजों भेज कर बिलकुल पीस डाला जायगा. क्या अमरीका की डिक्शनरी में आजादी के यही मानी बताए गए हैं? क्या यू. एन. ओ. और सुरक्षा समिति एक मुलक की बरबादी को ही आजादी का नाम देती हैं? अगर वनको डिक्शनरी सचमुच ऐसे मानों से भरी है तो बह दिन दूर नहीं जब मिट्टी के तेल की बजह से ईरान अपने आप को भड़के हुए ज्वाला मुखी के मँह पर पाएगा.

यह चाल नहीं तो और क्या है?

सुरक्षा कौंसिल के हाथ से होना चाहिये था न कि ट्रमैन साहब के. पर हम एक से ज्यादा बार लिख चुके हैं कि आजकल ट्रमैन साहब मानी यू. एन. ओ. और यू. एन. ओ. मानी ट्रमैन साहब. फिर इस नहीं समझते कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी को क्यों इतना तूल दिया जा रहा है.

अगर हम अन्दाजा लगाने में भूल नहीं करते तो ईरान में छिड़ा तेल का मगड़ा जनरल मैक आर्थर की अलहदगी का कहीं बड़ा कारन है बे नसिमत इसके कि जनरल साहब यू. एन. ओ. की हिदायतों पर पूरा पूरा अमल नहीं करते थे. अगर हम झूठे भविष्य वक्ता ( पेशी-गो ) नहीं हैं तो बहुत जल्दी ही जनरल मैक आर्थर फिर कहीं इस से ज्यादा माके की कमान्ड सेभालते हुये दिखलाई पड़ेंगे.

कोरिया की लड़ाई के सिलसिले में यह एक नई चाल बत्ती गई है. यह दूसरी बात है कि उसे रुस किसी और निगाह से देखेगा. बरतानिया और हिन्दुस्तान किसी और निगाह से और अमरीका के रहनेवाले किसी और निगाह से.

क्या इस अलहदगी का यह मतलब समझा जाय कि अब चीन और रुस खड़े खड़े तमाशा देखेंगे क्योंकि शायद अब मंचूरिया या रुस की हद् में बस नहीं गिराए जायेंगे और कोरिया को नई नई फौजों भेजकर बालक पीस डाला जायगा. क्या अमरीका की डिक्शनरी में आजादी के यही मानी बताए गए हैं? क्या यू. एन. ओ. और सुरक्षा समिति एक मुलक की बरबादी को ही आजादी का नाम देती हैं? अगर अमरीका की डिक्शनरी सचमुच ऐसे मानों से भरी है तो बह दिन दूर नहीं जब मिट्टी के तेल की बजह से ईरान अपने आप को भड़के हुए ज्वाला मुखी के मँह पर पाएगा.

यह चाल नहीं तो और क्या है?



یہ تو ہم نہیں مانتے کہ ترومن صاحب کو اس بات کا پتہ نہ ہو کہ جنرل مہک آرتھر کے علیحدہ کرنے کا امریکہ کے دہلے والوں پر کیا اثر پڑے گا اور یہ بھی ہم نہیں مانتے کہ وہ یہ پہلے سے نہیں جانتے تھے کہ دی پبلکن پارتی اس برخاستگی کو کھسا سجدہ کی۔ پھر یہ سمجھنا کہ ترومن صاحب نے کوئی ایسا معرکہ کا کام کیا ہے جسکے لئے انہیں بڑا بہادر یا بہلا مانس مانا جائے ہمیں تو برا بھولیں معلوم ہوتا ہے۔ سوال یہ نہیں ہے کہ کون کیا اور کون آیا۔ سوال تو یہ ہے کہ جنرل مہک آرتھر کی علیحدگی سے امریکہ کی دور یورپ کی قیمت میں کیا فرق آیا۔ امریکہ تو پہلے کی طرح سے ان ہی تین باتوں پر اڑا ہوا ہے اور ترومن صاحب ان ہی تین باتوں کو بار بار دہراتے ہیں اور نیٹے جنرل (چورے) ان ہی تین باتوں سے ملاتے ہیں وہ تین باتیں یہی تو ہیں — (۱) یہ کہ لوائی رکنا چاہئے (۲) یہ کہ جنگ پھر نہ ہونے پاوے۔ (۳) یہ کہ اگریشن ختم ہو جائے۔ پر سوال یہ ہے کہ لوائی کون روکے اور کیسے روکے اور جنگ پھر کیوں نہ ہو اور کون نہ کرے اور اگریشن کس کا مانا جائے؟

افریقہ کے ایک اخبار نے جنرل مہک آرتھر کو بہت خطرناک آدمی بتایا تھا۔ پر ترومن صاحب تو اسے علیحدہ کرنے وقت "بڑے سے بڑے سینا پتھوں میں سے ایک" ہونے کی سند دیتے ہیں۔

جنرل مہک آرتھر کی علیحدگی میں ایک اور بھول ہو گئی ہے۔ جنرل مہک آرتھر یو۔ این۔ او۔ نے جنرل تھو نہ کہ امریکہ کے امریکہ انہیں اپنی سہلا کے سہلائی کے پد سے ہٹانے تک کا اختیار نہیں دیکھا کیونکہ امریکہ کی تمام سہلائیوں جو کوریا میں لڑ رہی ہیں وہ قاعدے سے یو۔ این۔ او۔ کے ماتحت لڑ رہی ہیں نہ کہ امریکہ کے۔ اس لئے جنرل مہک آرتھر کی علیحدگی کا کام

یہ تو ہم نہیں مانتے کہ ترومن صاحب کو اس بات کا پتہ نہ ہو کہ جنرل مہک آرتھر کے علیحدہ کرنے کا امریکہ کے دہلے والوں پر کیا اثر پڑے گا اور یہ بھی ہم نہیں مانتے کہ وہ یہ پہلے سے نہیں جانتے تھے کہ دی پبلکن پارتی اس برخاستگی کو کھسا سجدہ کی۔ پھر یہ سمجھنا کہ ترومن صاحب نے کوئی ایسا معرکہ کا کام کیا ہے جسکے لئے انہیں بڑا بہادر یا بہلا مانس مانا جائے ہمیں تو برا بھولیں معلوم ہوتا ہے۔ سوال یہ نہیں ہے کہ کون کیا اور کون آیا۔ سوال تو یہ ہے کہ جنرل مہک آرتھر کی علیحدگی سے امریکہ کی دور یورپ کی قیمت میں کیا فرق آیا۔ امریکہ تو پہلے کی طرح سے ان ہی تین باتوں پر اڑا ہوا ہے اور ترومن صاحب ان ہی تین باتوں کو بار بار دہراتے ہیں اور نیٹے جنرل (چورے) ان ہی تین باتوں سے ملاتے ہیں وہ تین باتیں یہی تو ہیں — (۱) یہ کہ لوائی رکنا چاہئے (۲) یہ کہ جنگ پھر نہ ہونے پاوے۔ (۳) یہ کہ اگریشن ختم ہو جائے۔ پر سوال یہ ہے کہ لوائی کون روکے اور کیسے روکے اور جنگ پھر کیوں نہ ہو اور کون نہ کرے اور اگریشن کس کا مانا جائے؟

امریکی کے ایک اخبار نے جنرل مہک آرتھر کو بہت خطرناک آدمی بتایا تھا۔ پر ترومن صاحب تو اسے علیحدہ کرنے وقت "بڑے سے بڑے سینا پتھوں میں سے ایک" ہونے کی سند دیتے ہیں۔

جنرل مہک آرتھر کی علیحدگی میں ایک اور بھول ہو گئی ہے۔ جنرل مہک آرتھر یو۔ این۔ او۔ نے جنرل تھو نہ کہ امریکہ کے امریکہ انہیں اپنی سہلا کے سہلائی کے پد سے ہٹانے تک کا اختیار نہیں دیکھا کیونکہ امریکہ کی تمام سہلائیوں جو کوریا میں لڑ رہی ہیں وہ قاعدے سے یو۔ این۔ او۔ کے ماتحت لڑ رہی ہیں نہ کہ امریکہ کے۔ اس لئے جنرل مہک آرتھر کی علیحدگی کا کام



मजबूर करती हैं कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी में कोई नेक-नियती या भलाई है इस बात को मानने से हम इनकार कर दें.

रिपब्लिकन पार्टी तो यहाँ तक बढ़ गई है कि अगर वह यह नहीं चाहती कि ट्रूमैन साहब पर कोई इलजाम लगाया जाय तो खुले खुले यह तो कह ही रही है कि ट्रूमैन साहब को स्तीक्रा दे देना चाहिये और उन लोगों को भी स्तीक्रा दे देना चाहिये जो जनरल मैकआर्थर को अलग करने में ट्रूमैन साहब के साथ थे यानी एचेसन और मार्शल साहब. यह मार्शल साहब वही हैं जिन्होंने सन् १९४४ में चीन छोड़ देने की आवाज़ उठाई थी. अमरीकी सरकार की जो दूर पूरब की नीत थी उससे रिपब्लिकन पार्टी हमेशा एक राय रही है. तभी तो इस पार्टी के एक नेता जान फास्टर डल, विदेश मंत्री एचेसन के आज तक सलाहकार हैं. उन ही की मदद से जापानी सुलहनामा तैयार किया गया है और अभी खबर मिली थी कि वह बहुत जल्दी टोकियो पहुंच रहे हैं.

रिपब्लिकन पार्टी की भी यही नीत है कि दूर पूरब में लड़ाई खोरो के साथ चलाई जाय और यही काम जनरल मैकआर्थर कर रहे थे. रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से कहा तो यह जाता है कि जनरल मैकआर्थर ने कभी ऐसा नहीं किया कि यू. एन. ओ. की हिदायतें न माना हों लेकिन इनकी खुली बातों से यह पता चलता है कि कोरिया की लड़ाई हमारी यानी अमरीकियों की है. इसे यू. एन. ओ. से क्या मतलब ? और अगर यू. एन. ओ. कुछ करना चाहती है तो इस तरह कर जिससे अमरीका का हल्लू सीधा हो.

इनमें से कुछ लोग तो ट्रूमैन पर यह भी इलजाम लगाते हैं कि वह अब कोरिया के बारे में अपनी समझ से काम नहीं लेते, जो कुछ करते हैं अंगरेजों की सलाह से या और मुल्कों की सलाह से करते हैं. कुछ अमरीकी तो यहाँ तक बढ़ गए हैं कि क्या अब उन जनरलों को जल्दी मार्शल एचेसन को जेल में बंद कर दें.

मजबूर करती हैं कि जनरल मैक आर्थर की एल्लेक्शन् में कोई नेक नियती या भलाई है इस बात को मानने से हम इनकार कर दें.

रिपब्लिकन पार्टी तो यहाँ तक बढ़ गई है कि अगर वह यह नहीं चाहती कि ट्रूमैन साहब पर कोई इलजाम लगाया जाय तो खुले खुले यह तो कह ही रही है कि ट्रूमैन साहब को स्तीक्रा दे देना चाहिये और उन लोगों को भी स्तीक्रा दे देना चाहिये जो जनरल मैक आर्थर को अलग करने में ट्रूमैन साहब के साथ थे यानी एचेसन और मार्शल साहब. यह मार्शल साहब वही हैं जिन्होंने सन् १९४४ में चीन छोड़ देने की आवाज़ उठाई थी. अमरीकी सरकार की जो दूर पूरब की नीत थी उससे रिपब्लिकन पार्टी हमेशा एक राय रही है. तभी तो इस पार्टी के एक नेता जान फास्टर डल, विदेश मंत्री एचेसन के आज तक सलाहकार हैं. उन ही की मदद से जापानी सुलहनामा तैयार किया गया है और अभी खबर मिली थी कि वह बहुत जल्दी टोकियो पहुंच रहे हैं.

रिपब्लिकन पार्टी की भी यही नीत है कि दूर पूरब में लड़ाई खोरो के साथ चलाई जाय और यही काम जनरल मैकआर्थर कर रहे थे. रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से कहा तो यह जाता है कि जनरल मैकआर्थर ने कभी ऐसा नहीं किया कि यू. एन. ओ. की हिदायतें न माना हों लेकिन इनकी खुली बातों से यह पता चलता है कि कोरिया की लड़ाई हमारी यानी अमरीकियों की है. इसे यू. एन. ओ. से क्या मतलब ? और अगर यू. एन. ओ. कुछ करना चाहती है तो इस तरह कर जिससे अमरीका का हल्लू सीधा हो.

इनमें से कुछ लोग तो ट्रूमैन पर यह भी इलजाम लगाते हैं कि वह अब कोरिया के बारे में अपनी समझ से काम नहीं लेते, जो कुछ करते हैं अंगरेजों की सलाह से या और मुल्कों की सलाह से करते हैं. कुछ अमरीकी तो यहाँ तक बढ़ गए हैं कि क्या अब उन जनरलों को जल्दी मार्शल एचेसन को जेल में बंद कर दें.



अन्तरक्रामी एकता हासिल करने की बात सोचेंगे. अमरीका की नेशन को नाराज करके या उसमें फूट डाल कर वह यूनाइटेड नेशन्स की एकता की बात कभी नहीं सोच सकते.

कोरिया की लड़ाई जिस वक्रत शुरू हुई थी तब रुसी राज-नेताओं का यह कहना था कि यह लड़ाई अमरीका ने अपना मतलब पूरा करने के लिये उठाई है और जनरल मैकआर्थर की उस वक्रत की जल्दबाजी इस बात का सबूत भी है. यह किसी से छिपा हुआ नहीं है कि यू. एन. ओ. की इजाजत मिलने से पहले ही जनरल मैकआर्थर उत्तर कोरिया की फौजों का सामना करने के लिये चल पड़े थे. उस वक्रत किसी तरह से अमरीका ने यू. एन. ओ. की मदद से कोरिया को एक्सर साबित करके अपनी सब बेजा कारबायों को जा यानी ठीक साबित करा लिया था और कुछ को छिपा दिया था. पर भूत वह जो सर पर चढ़ कर बोले. आज वह रिपब्लिकन पार्टी जो जनरल मैकआर्थर को देवना मानती है खुलम खुला चिल्ला कर कह रही है कि "क्या जनरल मैकआर्थर को बरखास्त करके ट्रैन साइब कोई नया और बड़ा 'म्युनिच' खड़ा करना चाहते हैं? (म्युनिच उसी जगह का नाम है जहाँ अंगरेजों ने हिटलर से सुलह करके हिटलर की ताकत बढ़ा दी थी). क्या अब अमरीका को कारसूषा से अपना घेरा हटाना पड़ेगा? क्या अब लाल चीन को यूनाइटेड नेशन्स में जगह देनी पड़ेगी और क्या जापान के साथ सुलहनामे में लाल चीन भी हमारे साथ बैठेगा? और क्या अब जापान को लाल घेरें में शामिल होने के लिये छोड़ दिया जायगा?

रिपब्लिकन पार्टी के लोगों की यह बातें साफ साबित करती हैं कि अमरीका ने जान बूझ कर कोरिया की लड़ाई छेड़ी थी और इस बातें उसने कारसूषा का घेरा डाल दिया था और जापान में अपने छोटी छोटी बनाने की स्कीम तैयार करली थी. यह सब बातें हैं

अन्तरक्रामी एकता हासिल करने की बात सोचेंगे. अमरीके की नेशन को नाराज करके या उसमें फूट डाल कर वह यूनाइटेड नेशन्स की एकता की बात कभी नहीं सोच सकते.

कोरिया की लौठी जस्रुत शुरु होती थी तब रुसी राज-नेताओं का यह कहना था कि यह लड़ाई अमरीका ने अपना मतलब पूरा करने के लिये उठाई है और जनरल मैकआर्थर की उस वक्रत की जल्दबाजी इस बात का सबूत भी है. यह किसी से छिपा हुआ नहीं है कि यू. एन. ओ. की इजाजत मिलने से पहले ही जनरल मैकआर्थर उत्तर कोरिया की फौजों का सामना करने के लिये चल पड़े थे. उस वक्रत किसी तरह से अमरीका ने यू. एन. ओ. की मदद से कोरिया को एक्सर साबित करके अपनी सब बेजा कारबायों को जा यानी ठीक साबित करा लिया था. पर भूत वह जो सर पर चढ़ कर बोले. आज वह रिपब्लिकन पार्टी जो जनरल मैकआर्थर को देवना मानती है खुलम खुला चिल्ला कर कह रही है कि "क्या जनरल मैकआर्थर को बरखास्त करके ट्रैन साइब कोई नया और बड़ा 'म्युनिच' खड़ा करना चाहते हैं? (म्युनिच उसी जगह का नाम है जहाँ अंगरेजों ने हिटलर से सुलह करके हिटलर की ताकत बढ़ा दी थी). क्या अब अमरीका को कारसूषा से अपना घेरा हटाना पड़ेगा? क्या अब लाल चीन को यूनाइटेड नेशन्स में जगह देनी पड़ेगी और क्या जापान के साथ सुलहनामे में लाल चीन भी हमारे साथ बैठेगा? और क्या अब जापान को लाल घेरें में शामिल होने के लिये छोड़ दिया जायगा?

रिपब्लिकन पार्टी के लोगों की यह बातें साफ साबित करती हैं कि अमरीका ने जान बूझ कर कोरिया की लौठी छेड़ी थी और इस बातें उसने कारसूषा का घेरा डाल दिया था और जापान में अपने छोटी छोटी बनाने की स्कीम तैयार करली थी. यह सब बातें हैं



## कोरिया में नई चाल-

जब से हवा पर यह खजर बखेरी गई है कि जनरल मैकआर्थर यू. एन. ओ. के सेनापति की हैसियत से अलग कर दिये गए तब से तरह तरह के विचार, तरह तरह के लोगों में, तरह तरह से तरंगों मार रहे हैं. हमें यह खजर सुनकर चरा भी ऐसा न मालूम हुआ कि कोरिया की लड़ाई के मामले में कोई अनोखी या मार्के की बात हो रही है. जनरल मैकआर्थर सेनापति रहते या न रहते, अगर यू. एन. ओ. की कौजों को अड़तीस पड़ी रेखा के उत्तर से बापिम बुला लिया गया होता तो हम यह समझते कि खरूर अमरीका की नियत बदली और वह सबसुच कोरिया और एशिया का भला बाहता है.

जनरल मैकआर्थर की बरखास्तगी के बारे में कम से कम हम यह समझ लें कि मैकआर्थर साहब असल में हैं क्या. लड़ाई में जापान से घुटने टिकवा देने के बाद से जनरल मैकआर्थर अमरीका की रिपब्लिकन पार्टी के देवता बन गए हैं और उस देवता की इज्जत को किसी तरह का बट्टा लगे ऐसा काम इस वक्त अमरीका में कोई भी करने की हिम्मत नहीं कर सकता. ट्रूमैन साहब ने उन्हें अलङ्घ्य करते वक्त जो यह बात कही है कि जनरल मैकआर्थर उस नीत से एक राय नहीं थे जो अमरीका को है और उन हिदायतों पर असल नहीं करते थे जो उन्हें दी जाती थीं, इससे इस में कुछ सार दिखाई नहीं देता. अमरीका की नीत से एक राय न होने की जो बात ट्रूमैन साहब कह रहे हैं वह जनरल मैकआर्थर की बरखास्तगी के बाद की उन हालतों से मेल नहीं खाती जो अमरीका में हो रही हैं. अगर एक राय न होने में कोई सच्चाई होती तो अमरीका में आज साफ दो दल न देख पड़ते. ट्रूमैन जैसे समझदार आदमी से यह सम्पीर हरगिज़ नहीं की जा सकती कि वह कौमी एकता के बदले में

## कोरिया में नई चाल-

जब से हवा पर यह खजर बखेरी लगी है कि जनरल मैक आर्थर यू. एन. ओ. के सेनापति की حیثیت سے الگ کر دئے گئے تب سے طرح طرح کے وچار طرح طرح کے لوگوں میں طرح طرح سے ترنگیں مار رہے ہیں. ہمیں یہ خبر سنکر ذرا بھی ایسا نہ معلوم ہوا کہ کویریا کی لڑائی کے معاملے میں کوئی انوکھی یا معرکے کی بات ہو رہی ہے. جنرل میک آرتھر سیڈا پتی دھتے یا نہ دھتے اگر یو. این. او. کی فوجوں کو آرتھرس پڑی دیکھا کے اُتر سے واپس بلا لیا گیا ہوتا تو ہم یہ سمجھتے کہ ضرور امریکہ کی نہت بدلی اور وہ سچ کویریا اور ایشیا کا بہلا چامتا ہے.

جنرل میک آرتھر کی بروخاستگی کے بارے میں کم سے کم ہم یہ سمجھ لیں کہ میک آرتھر صاحب اصل میں ہیں نہا. لڑائی میں جاپان سے گھٹیلے گھوڑا دہلے کے بعد سے جنرل میک آرتھر امریکہ کی دی پبلکن پارٹی کے دیوتا بن گئے ہیں اور اُس دیوتا کی عزت کو کسی طرح کا بٹہ لگے ایسا کام اسوقت امریکہ میں کوئی بھی کرنے کی ہمت نہیں کر سکتا. ٹرومن صاحب نے انہیں علیحدہ کرتے وقت جو یہ بات کہی ہے کہ جنرل میک آرتھر اُس نہتی سے ایک رائے نہیں تھے جو امریکہ کی ہے اور اُن ہدایتوں پر عمل نہیں کرتے تھے جو انہیں دی جاتی تھیں، ہمیں اُس میں کچھ سار دکھائی نہیں دیتا. امریکہ کی نہتی سے ایک رائے نہ ہونے کی جو بات ٹرومن صاحب کہہ رہے ہیں وہ جنرل میک آرتھر کی بروخاستگی کے بعد کی اُن حالتوں سے مہل نہیں کہتی جو امریکہ میں ہو رہی ہیں. اگر ایک رائے نہ ہونے میں کوئی سچائی ہوتی تو امریکہ میں آج صاف دو دال نہ دیکھ پڑتے. ٹرومن جیسے سمجھدار آدمی سے یہ اُمد ہوگئے نہیں کی جا سکتی کہ وہ قومی ایکٹا کے بدلے میں



ही दे, उनका ऐसा करना न हकूमत के सेकुलरपने को मजबूत करता है और न उनकी सच्ची शान को बढ़ाता है. भारत की ब्योहारी सरकार के एक शहरी की हैसियत से हमें शर्म आती है कि हमारे राज के ज़िम्मेदार पदाधिकारी इस तरह के कामों में हिरसा लेने के लिये अपने को आज्ञाद समझते हैं. सोमनाथ के इस उद्धार के और भी इस तरह के पहलू हैं, जैसे विदेशों में हमारे सरकारी नौकरों का उसे एक क्रौमी आन्दोलन का रूप देना जिन्हें हम किसी तरह भी एक सेकुलर राज के लिये जायज़ नहीं ठहरा सकते.

(२) हमने इस सम्बन्ध के 'हरिजन सेवक' (११ जनवरी १९४८) के अपने लेखों में विद्वान महाराष्ट्र इतिहासकार चिन्तामणि विनायक वेद्य की इस राय को नक़ल किया है कि सोमनाथ के सम्बन्ध में या सोमनाथ और महमूद गज़नवी के हमजे के सम्बन्ध में जितने क्रिस्ते इतिहास में मिलते हैं उनमें से बहुत से फ़रजी और मनगढ़न्त हैं. यह तो रही लिखे हुए इतिहास की बात. अब हमने सुना है कि सोमनाथ में जो जां चीखें हो रही हैं और फैलाई जा रही हैं वह श्री के. एम. मुंशी के लिखे हुए एक निहायत दिलचस्प गुजराती नावेल "जय सोमनाथ" के आधार पर हो रही हैं.

यही सारी घटना भारत को दुनिया की नज़रों में गिरानेवाली घटना है, ऊँचा करनेवाली नहीं. धर्म बड़ी ऊँची चीज़ है पर राजकाजियों के हाथ में खेलनेवाला धर्म, धर्म नहीं. धर्म का उपहास है. इलाज केवल एक है और वह है जनता का अपने सड़ियों के बन्धबिरबासों, कुरीतियों, तंगनजरियों और मानसिक जंजालों से, बाहर निकल कर एक मानव धर्म को साबात करना अपने सच्चे नफा नुकसान को समझना और इस नए ज्ञान और नई मानसिक आजादी की रोशनी में राज और समाज दोनों की बागें अपने हाथ में लेना.

मैत्री सन '०१ का इसाकना ने حکومت के सेकुलरिज को مضبوط करता है और ने अंकी सच्ची शान को बूहाता है. भारत की ब्योहारी सरकार के एक शहरी की हैसियत से हमें शर्म आती है कि हमारे राज के नमेदार पदाधिकारी इस तरह के कामों में हिरसा लेने के लिये अपने को आज्ञाद समझते हैं. सोमनाथ के इस उद्धार के और भी इस तरह के पहलू हैं, जैसे विदेशों में हमारे सरकारी नौकरों का उसे एक क्रौमी आन्दोलन का रूप देना जिन्हें हम किसी तरह भी एक सेकुलर राज के लिये जायज़ नहीं ठहरा सकते.

(३) हम ने इस सम्बन्ध के 'हरिजन सेवक' (११ जनवरी १९४८) के अपने लेखों में विद्वान महाराष्ट्र इतिहासकार चिन्तामणि विनायक वेद्य की इस राय को नक़ल किया है कि सोमनाथ के सम्बन्ध में या सोमनाथ और महमूद गज़नवी के हमजे के सम्बन्ध में जितने क्रिस्ते इतिहास में मिलते हैं उनमें से बहुत से फ़रजी और मनगढ़न्त हैं. यह तो रही लिखे हुए इतिहास की बात. अब हमने सुना है कि सोमनाथ में जो जां चीखें हो रही हैं और फैलाई जा रही हैं वह श्री के. एम. मुंशी के लिखे हुए एक निहायत दिलचस्प गुजराती नावल "जय सोमनाथ" के आधार पर हो रही हैं.

यही सारी घटना भारत को दुनिया की नज़रों में गिरानेवाली घटना है, ऊँचा करनेवाली नहीं. धर्म बड़ी ऊँची चीज़ है पर राजकाजियों के हाथ में खेलनेवाला धर्म, धर्म नहीं. धर्म का उपहास है. इलाज केवल एक है और वह है जनता का अपने सड़ियों के बन्धबिरबासों, कुरीतियों, तंगनजरियों और मानसिक जंजालों से, बाहर निकल कर एक मानव धर्म को साबात करना अपने सच्चे नफा नुकसान को समझना और इस नए ज्ञान और नई मानसिक आजादी की रोशनी में राज और समाज दोनों की बागें अपने हाथ में लेना.



बात आस सदाचार के खिलार न हो। भारत हो या पाकिस्तान, इस हो या जापान, किसी भी देस में किसी भी मूर्ति पूजक को अपने देवी देवता को अपने ढंग से पूजने की पूरी आजादी होनी चाहिये। सोमनाथ के इस मामले के सम्बन्ध में हमें केवल तीन बातें कहनी हैं—

( १ ) यह कि जो लोग इस आन्दोलन के कर्तावर्ता बने हुए हैं उनमें से कई की वास्तव हम ढाँचे के साथ अपनी जातकारी की बिना पर यह कह सकते हैं कि वह खुद मूर्ति पूजा में विश्वासी नहीं है. हिन्दूओं और मुसलमानों, महाभा और लीग, दोनों में हम यह लज्जाजनक तमाशा देख चुके हैं और देख रहे हैं कि जो पढ़े लिखे लोग इन धर्मों के मामूली असूतों में भी विश्वास नहीं रखते वह अपना राजकाजी मकसद पूरा करने के लिये हिन्दू और मुसलिम जनता को उन ही बातों के नाम पर भड़काते और उनसे अपनी गारबी पूरी करते हैं. ईस्ट इंडिया कम्पनी के जमाने से लेकर आज तक हमारे देस की राजकाजी हालत का यह एक बड़ा शर्मनाक पहलू रहा है और है. भोली जनता को इस तरह भड़का कर उसकी गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपए इन तमाशों में खर्च करवाना और करना हमें देस और मानवता दोनों के साथ अन्याय दिखाई देता है. बड़े दर्द के साथ हमारे अन्दर से यह सवाल उठ रहा है कि आखिर यह तमाशी कबतक होते रहेंगे ?

(२) यह कि भारत की सरकार सेकुलर यानी गैर जानिबदार ब्याहारी सरकार मानी जाती है और हम मानते हैं कि एक बड़े दर्जे तक है. एक ऐसी ब्याहारी सरकार के बखीरों और उसके सदर का इस तरह की चीजों में खुले आस हिस्सा लेना थोड़ी देर के लिये भोली धार्मिक जनता से या साम्प्रदायिकता के जहर में डूबे हुए पड़े लिखे लोगों से इन्हें बाह-बादी लूटने का मौका भले

پچلتے عام صداچار کے خلاف نہ ہو۔ بھارت ہو یا پاکستان، دوسرے ہو یا جاپان، کسی بھی دیس میں کسی بھی مروتی یوجک کو اپنے دیسی دیوتا کو اپنے تھلک سے یوجلمے کی پوری آزادی ہونی چاہیئے۔ مسلمانانہ کے اس معاملے کے سہلہدہ میں ہمیں کیوں تین باتیں کہنی ہیں۔۔۔

(۱) یہ کہ جو لوگ اس آندلین کے کرتا دھرتا بنے ہوئے ہیں ان میں سے کئی کی بابت ہم دعوے کے ساتھ ایلی جان کاری کی بنا پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ وہ خود مورتی پوجا میں وشواسی نہیں ہیں۔ ہندوؤں اور مسلمانوں میں سمہا اور لیگ دونوں میں ہم یہ لجا جنگ تماشہ دیکھ چکے ہیں اور دیکھ رہے ہیں کہ جو پیڑھے لکھ لوگ ان دوسروں کے معمولی اصولوں میں بھی وشواس نہیں رکھتے، وہ ایلا راج گاجی مقصد پورا کرنے کے لئے ہند اور مسلم جنگوں کو ان ہی باتوں کے نام پر بھڑکاتے اور ان سے ایلی غرض پوری کرتے ہیں۔ ایست اندیا کمپنی کے زمانے سے لے کر آج تک ہمارے دیس کی راج گاجی حالت کا یہ ایک بڑا شرمناک پہلو رہا ہے۔ وہ ہے۔ بھولی جنگوں کو اسطرح بھڑکا کر اُسکی گاڑھی کساتی کے کروڑوں روپے ان تماشوں میں خرچ کروانا اور کرنا ہمیں دیس اور مانتوتا دونوں کے ساتھ انہیائے دکھائی دیتا ہے۔ بڑے درد کے ساتھ ہمارے اندر سے یہ سوال اُٹھ رہا ہے کہ آخر یہ تماشے کب تک ہوتے رہیں گے؟

(۲) یہ کہ بھارت کی سرکار سیکولر یعنی شہر جاسب دار بھوہاری سرکار مانتی جاتی ہے اور ہم مانتے ہیں کہ ایک بڑے درجے تک ہے۔ ایک ایسی بھوہاری سرکار کے رہنبروں اور اُسکے صدر کا اِس طرح کی چیزوں میں کوئی عام حصہ لینا توہی کے لیے بھولی دھامک چلانا ہے یا سامبورڈا لینا کے زہر میں قوت پھونکے پڑے لکے لوگوں سے اُنہوں، راہ، وہی، لوتنے کا موقعہ پہلے



पहली अफगान जंग के बाद गवरनर जनरल लार्ड एलनब्रू के हुकुम से वह राजनी से हिन्दुस्तान लाए गये, अब फिर से सोमनाथ के मन्दिर में ले जाकर लगए जाएंगे. गाँधी जी के हुकुम से इन किवाड़ों की बाबत हमने एक छोटा सा लेख लिखकर गाँधी जी को दिया, जिसमें यह बताया गया है कि यह किवाड़ों की सारी कहानी झूठी और जाली है और जो किवाड़ आगरे में रक्खे हुए हैं वह सोमनाथ के किवाड़ न होकर लार्ड एलनब्रू के हुकुम से जलालाबाद में बनवाए गए थे, और यह सारा क्रिस्ता उस झूटनीति का एक नमूना है जिसके जरिये हिन्दू और मुसलमानों को आंगरेज एक दूसरे के खिलाफ भड़काते रहते थे. हमारा वह लेख 'हरिजन सेवक' (२८ दिसम्बर १९४७) में छप चुका है और गाँधी जी ने अपने एक लाख नोट में बन्द सतरों के अन्दर 'हरिजन' (२८ दिसम्बर १९४७) के पाठकों का ध्यान उस लेख की तरफ दिलाया है चटनाओं और दलीलों में हम यहाँ जाना नहीं चाहते.

किसी तरह राम राम करके इन जाली किवाड़ों को फिर से ले जाकर लगाने का पागलपन तो ख़त्म हुआ लेकिन सोमनाथ के नए बन्दार का क्रिस्ता बराबर चलता रहा और अब कमाल को पहुँच रहा है.

यह भी कहा जाता है कि सोमनाथ का इस तरह का फिर से उद्धार पिछले एक हजार बरस में आठ बार हो चुका है.

हम मूर्ति पूजक नहीं हैं. हम एक निराकार ईश्वर अल्लाह के मानने वाले हैं. पर जो लोग मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं उनके इस विश्वास का हमारे दिल में आदर है. हम इस असूल के मानने वाले हैं कि हर सभ्य देस में और हर सभ्य राज में हर आदमी को अपने ढंग से अपने इश्ट देव की पूजा करने की पूरी आजादी होनी चाहिये जब तक कि उसकी यह आजादा किसी दूसरे

पहली अफगान जंग के बाद गवरनर जनरल लार्ड एलनब्रू के हुकुम से वह राजनी से हिन्दुस्तान लाए गये, अब फिर से सोमनाथ के मन्दिर में ले जाकर लगए जाएंगे. गाँधी जी के हुकुम से इन किवाड़ों की बाबत हमने एक छोटा सा लेख लिखकर गाँधी जी को दिया, जिसमें यह बताया गया है कि यह किवाड़ों की सारी कहानी झूठी और जाली है और जो किवाड़ आगरे में रक्खे हुए हैं वह सोमनाथ के किवाड़ न होकर लार्ड एलनब्रू के हुकुम से जलालाबाद में बनवाए गए थे, और यह सारा क्रिस्ता उस झूटनीति का एक नमूना है जिसके जरिये हिन्दू और मुसलमानों को आंगरेज एक दूसरे के खिलाफ भड़काते रहते थे. हमारा वह लेख 'हरिजन सेवक' (२८ दिसम्बर १९४७) में छप चुका है और गाँधी जी ने अपने एक लाख नोट में बन्द सतरों के अन्दर 'हरिजन' (२८ दिसम्बर १९४७) के पाठकों का ध्यान उस लेख की तरफ दिलाया है चटनाओं और दलीलों में हम यहाँ जाना नहीं चाहते.

किसी तरह राम राम करके उन जाली किवाड़ों को फिर से ले जाकर लगाने का पागलपन तो ख़त्म हुआ लेकिन सोमनाथ के नए बन्दार का क्रिस्ता बराबर चलता रहा और अब कमाल को पहुँच रहा है.

यह भी कहा जाता है कि सोमनाथ का इस तरह का फिर से उद्धार पिछले एक हजार बरस में आठ बार हो चुका है.

हम मूर्ति पूजक नहीं हैं. हम एक निराकार ईश्वर अल्लाह के मानने वाले हैं. पर जो लोग मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं उनके इस विश्वास का हमारे दिल में आदर है. हम इस असूल के मानने वाले हैं कि हर सभ्य देस में और हर सभ्य राज में हर आदमी को अपने ढंग से अपने इश्ट देव की पूजा करने की पूरी आजादी होनी चाहिये जब तक कि उसकी यह आजादा किसी दूसरे



## सोमनाथ का फिर से उद्धार-

सुबर है कि ११ मई सन् '५१ को सोमनाथ के मशहूर मन्दिर में शिव लिंग की फिर से स्थापना की जा रही है जिसके सिलसिले में वहाँ एक बहुत बड़ा जशन और मेला होगा।

बम्बई के बड़े बड़े उद्योगियों ने सुबह के नौ बजकर ठीक सैतालीस मिनट पर इस काम के लिये महरत तय किया है।

सारे मेले के लिये एक अस्तरदार कमेटी बनी है जिसके सदर हिन्द सरकार के मंत्री श्री के. एम. मँशा'।

पूजा पाठ नौ मई से शुरू होकर पाँच दिन तक जारी रहेगा। इनमें एक महाशुद्ध का पाठ भी होगा।

अखबारों से मालूम होता है कि बहुत से भारत भर के धर्मोच्चारण, राजप्रमुखों, मिनिस्ट्रों और पंडितों के अलावा हमारे जन-राज के सदर डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भी इन जशनों और पूजा पाठ में भारत के राष्ट्रपति की हैसियत से हिस्सा लेंगे।

कहा जाता है कि श्री के. एम. मँशा' ने नए मन्दिर की योजना तैयार की है जिसमें सयन्दर के किनारे तीन हजार एकड़ जमीन के अन्दर छप्पन खम्बों पर जिनमें जवाहिरात जड़े होंगे, तेरह मंचिल का यह नया मन्दिर जिसके ऊपर चौदह सोने के कलश वाले मीनार होंगे और जिसमें सोने की खंजीरों से बजनेवाले बड़े बड़े घंटे बड़ियाल लगेंगे एक करोड़ रुपये की लागत से तैयार होगा।

महात्मा गाँधी की खिन्दी में भारत के आजाद होते ही सोमनाथ के इस नए उद्धार की आवाज़ उठी थी। उस समय यह भी कहा गया था कि सोमनाथ के वह चन्दन के किवाड़, जो आगरा के किले में रले हुए हैं और जिनकी बाबत कहा जाता है कि महमूद

ने सोमनाथ से खसड़वाकर राजनी लोगया था और

## सोमनाथ का फिर से उद्धार-

खबर है कि ११ मई सन् '०१ को सोमनाथ के मशहूर मन्दिर में शिवलिंग की पुनः स्थापना की जा रही है जिसके सिलसिले में वहाँ एक बहुत बड़ा जशन और मेला होगा।

बम्बई के बड़े बड़े उद्योगियों ने सुबह के नौ बजकर ठीक सैतालीस मिनट पर इस काम के लिये महरत तय किया है।

सारे मेले के लिये एक अस्तरदार कमेटी बनी है जिसके सदर हिन्द सरकार के मंत्री श्री के. एम. मँशा'।

पूजा पाठ नौ मई से शुरू होकर पाँच दिन तक जारी रहेगा। इनमें एक महाशुद्ध का पाठ भी होगा।

अखबारों से मालूम होता है कि बहुत से भारत भर के धर्मोच्चारण, राजप्रमुखों, मिनिस्ट्रों और पंडितों के अलावा हमारे जन-राज के सदर डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भी इन जशनों और पूजा पाठ में भारत के राष्ट्रपति की हैसियत से हिस्सा लेंगे।

कहा जाता है कि श्री के. एम. मँशा' ने नए मन्दिर की योजना तैयार की है जिसमें सयन्दर के किनारे तीन हजार एकड़ जमीन के अन्दर छप्पन खम्बों पर जिनमें जवाहिरात जड़े होंगे, तेरह मंचिल का यह नया मन्दिर जिसके ऊपर चौदह सोने के कलश वाले मीनार होंगे और जिसमें सोने की खंजीरों से बजनेवाले बड़े बड़े घंटे बड़ियाल लगेंगे एक करोड़ रुपये की लागत से तैयार होगा।

महात्मा गाँधी की खिन्दी में भारत के आजाद होते ही सोमनाथ के इस नए उद्धार की आवाज़ उठी थी। उस समय यह भी कहा गया था कि सोमनाथ के वह चन्दन के किवाड़, जो आगरा के किले में रले हुए हैं और जिनकी बाबत कहा जाता है कि महमूद

ने सोमनाथ से खसड़वाकर राजनी लोगया था और



हमारे ऊपर के किकरों से यह शलत अन्दाजा न लिया जाए कि हम अपने देश की तरफ से निराश हैं। हम अपने अन्दर, देख भाल कर कह रहे हैं कि हमारा दिल आशा से लबरेज है। हमें इसमें खरा भी शक नहीं कि दो चार दस बरस के अन्दर ही—और दस बरस क्रौमों की जिन्दगी में कोई अधिक नहीं होते—यह मुल्क अपनी आजकल की सारी सुसीबों को हल कर लेगा। हमें इसमें भी शक नहीं कि वह हल आखीर में गाँधी जी के बताए हुए रास्ते से ही निकलेगा। तीसरी जंग के डरावने बादल हमारी नजरों में अगर कोई क्रीमत रखते हैं तो वह यही कि एक निहायत कड़वे तजरवे के बाद दुनिया के ऊपर हिन्सा की निरर्थकता अच्छी तरह साबित हो जावे। हमें यकीन है कि बैचैन और घबराई हुई दुनिया बहुत जल्दी इस सच्चाई को समझ लेगी कि जो बीख तलवार या हिन्सा से हासिल की जाती है वह हिन्सा से ही खिन जाती है। यह सच है कि गाँधी जी अब हमारे बीच में नहीं हैं। पर देस की वह मिट्टी जिसने गाँधी जी को पैदा किया था अपनी शक्ति खो नहीं बैठी। नए राह दिखाने वाले जनता की उस पाक और साफ मिट्टी में से निकलेंगे जो अभी तक अछूती पड़ी हुई है। वह दिन दूर नहीं है जब हमारी कमजोरियों, नासमझियों और सुसीबों के सारे बादल छट चुके होंगे, इस देस की जनता आपस के दूसरे देसों की जनता के साथ मिलकर और उनसे कंधे से कंधा मिलाए हुए अपने देस को और दुनिया को ऊँचा उठावेगी। उस दिन के आने के आसार बाहर हवा में और भीतर हमारे दिलों में बिल्लाई दे रहे हैं। तभी नई जमीन होगी, नया आसमान और नया हिन्दुस्तान!

१६.४.११.

—सुन्दरलाल

मत्ती सन ०१

हमारी राई

नया हलद

हमारे और के फत्तों से ये غلط अन्दाजा न लिया जाए कि हम अपने देस की तरफ से निराश हैं। हम अपने अन्दर, देख भाल कर कह रहे हैं कि हमारा दिल आशा से लबरेज है। हमें इसमें खरा भी शक नहीं कि दो चार दस बरस के अन्दर ही—और दस बरस क्रौमों की जिन्दगी में कोई अधिक नहीं होते—यह मुल्क अपनी आजकल की सारी सुसीबों को हल कर लेगा। हमें इसमें भी शक नहीं कि वह हल आखीर में गाँधी जी के बताए हुए रास्ते से ही निकलेगा। तीसरी जंग के डरावने बादल हमारी नजरों में अगर कोई क्रीमत रखते हैं तो वह यही कि एक निहायत कड़वे तजरवे के बाद दुनिया के ऊपर हिन्सा की निरर्थकता अच्छी तरह साबित हो जावे। हमें यकीन है कि बैचैन और घबराई हुई दुनिया बहुत जल्दी इस सच्चाई को समझ लेगी कि जो बीख तलवार या हिन्सा से हासिल की जाती है वह हिन्सा से ही खिन जाती है। यह सच है कि गाँधी जी अब हमारे बीच में नहीं हैं। पर देस की वह मिट्टी जिसने गाँधी जी को पैदा किया था अपनी शक्ति खो नहीं बैठी। नए राह दिखाने वाले जनता की उस पाक और साफ मिट्टी में से निकलेंगे जो अभी तक अछूती पड़ी हुई है। वह दिन दूर नहीं है जब हमारी कमजोरियों, नासमझियों और सुसीबों के सारे बादल छट चुके होंगे, इस देस की जनता आपस के दूसरे देसों की जनता के साथ मिलकर और उनसे कंधे से कंधा मिलाए हुए अपने देस को और दुनिया को ऊँचा उठावेगी। उस दिन के आने के आसार बाहर हवा में और भीतर हमारे दिलों में बिल्लाई दे रहे हैं। तभी नई जमीन होगी, नया आसमान और नया हिन्दुस्तान!

—सुन्दरलाल

११-४-०१



इस तरह की गलतफहमियों को दूर करने के लिये काफी हैं। अमली तौर पर भी कोई अपना माल बेचने वाला या खरीदने वाला इस योजना के जरिये कैसे हर मौके पर ऐसा आदमी पा सकेगा जिसके हाथ, शुद्ध रहते हुए, वह अपना माल बेच या खरीद सके। यह हमारी समझ से बाहर की चीज है। हमारी छोटी समझ से तो यह भी बाहर की चीज है कि इन मामलों में कौन सा व्योहार शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध। हम मानते हैं कि आमतौर पर इसका तय करना इतना कठिन नहीं होता लेकिन बाज बजत लगभग नासुमकिन भी हो जाता है। कभी कभी हमें यह भी शक होने लगता है कि जिस कंट्रोल की दुकान के तौर तरीकों से और वहाँ के सरकारी मुलाजिमों के कारनामों से जनता अच्छी तरह वाकिफ है वहाँ उस दुकान से खरीदा हुआ अनाज ज्यादा शुद्ध समझा जाय या पास की किसी ऐसी दुकान से खरीदा हुआ जिसे चौर बाजार की दुकान समझा जाता है। हल केवल एक रह जाता है और वह है भगवान की दी हुई रोशनी में अपने को सार और अपने दिल को शुद्ध रखते हुए अपनी आत्मा की आवाज पर चले चलना। देस को हल सुमाने में अक्सर हमारी अपनी कमजोरियाँ हमारे रास्ते में रुकावटें बन आने लगती हैं। हमें कोई अमली क्रदम नहीं सूझता या अमली क्रदम छठने की हिम्मत नहीं होती तो हम दूसरों को रुखे सदाचार के उपदेश देकर या अपने ऊपर निजी तौर पर कशट मेल कर, अपने हाथ सुबाकर, पेट काट कर या पैर धका कर अपनी आत्मा को तसल्ली दे लेते हैं। गवर्मेन्ट और गवर्मेन्ट के अन्दर अपने साथियों के मोह को भी हम नहीं जीत पा रहे हैं। चाहते हुए भी हम राज-काज की मूल सुलैयों से बाहर नहीं हो पा रहे हैं। हमारे यह फिकरे कड़वे हो सकते हैं और हैं। लेकिन हम खुद अपनी हालत को देख कर लिख रहे हैं। गाँधी जी के बाद किसी एक दो अपवादों को छोड़कर हम सब ज़गड़ी बतलें हैं। आगे का हल हमारे बूते से बाहर मालूम होता है।

इस तरह की फाट फूटने को दूर करने के लिये काफी हैं। अमली तौर पर भी कोई अपना माल बेचने वाला या खरीदने वाला इस योजना के जरिये कैसे हर मौके पर ऐसा आदमी पा सकेगा जिसके हाथ, शुद्ध रहते हुए, वह अपना माल बेच या खरीद सके। यह हमारी समझ से बाहर की चीज है। हमारी छोटी समझ से तो यह भी बाहर की चीज है कि इन मामलों में कौन सा व्योहार शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध। हम मानते हैं कि आमतौर पर इसका तय करना इतना कठिन नहीं होता लेकिन बाज बजत लगभग नासुमकिन भी हो जाता है। कभी कभी हमें यह भी शक होने लगता है कि जिस कंट्रोल की दुकान के तौर तरीकों से और वहाँ के सरकारी मुलाजिमों के कारनामों से जनता अच्छी तरह वाकिफ है वहाँ उस दुकान से खरीदा हुआ अनाज ज्यादा शुद्ध समझा जाय या पास की किसी ऐसी दुकान से खरीदा हुआ जिसे चौर बाजार की दुकान समझा जाता है। हल केवल एक रह जाता है और वह है भगवान की दी हुई रोशनी में अपने को सार और अपने दिल को शुद्ध रखते हुए अपनी आत्मा की आवाज पर चले चलना। देस को हल सुमाने में अक्सर हमारी अपनी कमजोरियाँ हमारे रास्ते में रुकावटें बन आने लगती हैं। हमें कोई अमली क्रदम नहीं सूझता या अमली क्रदम छठने की हिम्मत नहीं होती तो हम दूसरों को रुखे सदाचार के उपदेश देकर या अपने ऊपर निजी तौर पर कशट मेल कर, अपने हाथ सुबाकर, पेट काट कर या पैर धका कर अपनी आत्मा को तसल्ली दे लेते हैं। गवर्मेन्ट और गवर्मेन्ट के अन्दर अपने साथियों के मोह को भी हम नहीं जीत पा रहे हैं। चाहते हुए भी हम राज-काज की मूल सुलैयों से बाहर नहीं हो पा रहे हैं। हमारे यह फिकरे कड़वे हो सकते हैं और हैं। लेकिन हम खुद अपनी हालत को देख कर लिख रहे हैं। गाँधी जी के बाद किसी एक दो अपवादों को छोड़कर हम सब ज़गड़ी बतलें हैं। आगे का हल हमारे बूते से बाहर मालूम होता है।



योदे से शब्दों में हमें नीचे से अपने चरित्र और अपने व्योहार को ऊँचा और शुद्ध करना होगा. इस निगाह से हम बर्षों की इस योजना का स्वागत करते हैं.

पर दूसरी तरफ हमें इस योजना से कोई बड़ी उम्मीद भी दिखाई नहीं देती. हमें यह योजना एक बड़े दूरजे तक फीकी और बेजान योजना दिखाई देती है. हम यह फिकरे बड़े दर्द के साथ लिख रहे हैं. हमारी अपनी कमजोरी इस समय भूत बन कर हमारे सामने नाच रही है और हमें धिक्कार रही है. हम गाँधी जी का नाम लेते हैं, अपने को उनके चले या उनके चारिस मानते हैं. पर हमसे न वह सुरू है और न वह दिल्.

इस योजना में सत्याग्रह की भी बात कही गई है. खाहिर है कि सत्याग्रह के चरचे इस समय हवा में हैं. हमें इसमें भी शक नहीं कि हर जनता को यह पैदाशी हक है कि अगर उसकी कठिनाइयों और मुसीबतों कहने सुनने और अरज मारुज से दूर न हो सकें तो वह अपनी सरकार के खिलाफ चाहे वह देसी हो या विदेशी या जिस किसी को वह अपनी मुसीबतों के लिये ज़िम्मेदार समझती हो उसके खिलाफ अहिंसात्मक रह कर सत्याग्रह से काम ले. यह भी ठीक है कि कोई सत्याग्रही जिस बात के लिये सत्याग्रह करे उस बात के लिये उसका दिल् व दिमाग साफ और उसकी आत्मा शुद्ध होनी चाहिये. पर बर्षों के बयान में जो सत्याग्रह का बीज है वह हमें ऐसा बीज दिखाई नहीं देता जिसमें से कभी अकुम्भा फूट सके. यह ठीक है कि सत्याग्रह के लिये हर सत्याग्रही चरित्र की शुद्धता के एक माप तक पहुँचता हो. पर यह ठीक नहीं है कि हर मामले में सत्याग्रह करने के लिये सत्याग्रही को हर पहलू से आदर्श चरित्र ही होना चाहिये. और फिर आदर्श चरित्र है भी क्या चीज ? गाँधी जी ने अपनी विन्वणी भर जितने सत्याग्रह किये और कराए वह सब हमारी

तबोरे से शब्दों में हमें नीचे से अपने चरित्र और अपने व्योहार को ऊँचा और शुद्ध करना होगा. इस निगाह से हम दोहरा की इस योजना का स्वागत करते हैं.

पर दूसरी तरफ हमें इस योजना से कौन बड़ी उम्मीद भी दिखाई नहीं देती. हमें यह योजना एक बड़े दूरजे तक फीकी और बेजान योजना दिखाई देती है. हम यह फिकरे बड़े दर्द के साथ लिख रहे हैं. हमारी अपनी कमजोरी इस समय भूत बन कर हमारे सामने नाच रही है और हमें धिक्कार रही है. हम गाँधी जी का नाम लेते हैं, अपने को उनके चले या उनके चारिस मानते हैं. पर हमें न वह सुरू है और न वह दिल्.

इस योजना में सत्याग्रह की भी बात कही कती है. खाहिर है कि सत्याग्रह के चरचे इस से हवा में हैं. हमें इसमें भी शक नहीं कि हर जनता को यह पैदाशी हक है कि अगर उसकी कठिनाइयों और मुसीबतों कहने सुनने और अरज मारुज से दूर न हो सकें तो वह अपनी सरकार के खिलाफ चाहे वह देसी हो या विदेशी या जिस किसी को वह अपनी मुसीबतों के लिये ज़िम्मेदार समझती हो उसके खिलाफ अहिंसात्मक रह कर सत्याग्रह से काम ले. यह भी ठीक है कि कोई सत्याग्रही जिस बात के लिये सत्याग्रह करे उस बात के लिये उसका दिल् व दिमाग साफ और उसकी आत्मा शुद्ध होनी चाहिये. पर दोहरा के बयान में जो सत्याग्रह का बीज है वह हमें ऐसा बीज दिखाई नहीं देता जिसमें से कभी अकुम्भा फूट सके. यह ठीक है कि सत्याग्रह के लिये हर सत्याग्रही चरित्र की शुद्धता के एक माप तक पहुँचता हो. पर यह ठीक नहीं है कि हर मामले में सत्याग्रह करने के लिये सत्याग्रही को हर पहलू से आदर्श चरित्र ही होना चाहिये. और फिर आदर्श चरित्र है भी क्या चीज ? गाँधी जी ने अपनी विन्वणी भर जितने सत्याग्रह किये और कराए वह सब हमारी



जवाहरलाल जी ने इस तूफान के अन्दर देस की नैया को सँभाले रक्खा है उस जगन, उस होशियारी और उस योग्यता का दूसरा आदमी देस में दिखाई नहीं देता. यह दूसरी बात है कि हम उनके सब कामों और उनकी सब रायों को ठीक नहीं मानते. पर उनकी कमजोरी देस की कमजोरी है. काँग्रेस की भी गिरावट बल्ले बल्ले की आँखों के सामने है. पर काँग्रेस के मुक्ताबले की कोई दूसरी संस्था या पार्टी भी अभी मुल्क में नजर नहीं आती जिससे थोड़ी बहुत भी यह आशा की जा सके कि वह इससे ज्यादा अच्छी तरह और ज्यादा कामयाबी के साथ मुल्क की बाग को सँभाल सकेगी. काँग्रेस की कमजोरियाँ भी मुल्क की कमजोरियाँ हैं और काँग्रेस की गिरावट मुल्क की गिरावट है. एक बात यह भी हमें ध्यान में रखनी चाहिये कि मुल्क का जो तबक्का या जो गिरोह जितना ज्यादा अँगरेजों, अँगरेजी तालीम और अँगरेजी राज के असर में रहा इतना ही वह चरित्र, इनसानियत और नेकी से ज्यादा गिरा हुआ निकला. ऐसा भी होना हमारी राय में क़ुदरती बात थी.

ऐसी हालत में हमें घीरज नहीं खोना चाहिये. क़ौमों या मुल्क एक दिन में नहीं बनते. हमें इन आश्माइशों में से निकलना ही होगा. जरूरत है जनता को जगाने की, उसमें बल पैदा करने की, उसे संगठित करने की, उसके चरित्र को ऊँचा ले जाने की. बल्कि हमें कहना चाहिये या जरूरत है जनता के जागने की. उसे अपने अन्दर बल संचार करने की, उसे संगठित होने की और उसे अपने चरित्र को ऊँचा और मजबूत करने की. अँगरेज चले गए पर हमारी सदियों की बीमारियों, हमारी खदगर्जियाँ, हमारी फूट, हमारे अंधविश्वास और हमारी तंगनज़रियाँ जिन्हें वह जगा गए थे और जिनके सहारे ही वह नब्बे बरस तक राज करते रहे अभी पूरे जोरों के साथ चमक रही हैं. हमें इन सबको पहचानना और जीतना होगा.

जवाहर लाल जी ने इस तूफान के अन्दर देस की नैया को सँभाले रक्खा है. अँस लकिन, अँस होशियारी और अँस योग्यता का दूसरा आदमी देस में दिखाई नहीं देता. यह दूसरी बात है कि हम उनके सब कामों और उनकी सब रायों को ठीक नहीं मानते. पर उनकी कमजोरी देस की कमजोरी है. काँग्रेस की भी गिरावट बल्ले बल्ले की आँखों के सामने है. पर काँग्रेस के मुक्ताबले की कोई दूसरी संस्था या पार्टी भी अभी मुल्क में नजर नहीं आती जिस से तूफानी बेहत भी ये आशा की जा सके कि वह इस से ज्यादा अच्छी तरह और ज्यादा कामयाबी के साथ मुल्क की बाग को सँभाल सकेगी. काँग्रेस की कमजोरियाँ भी मुल्क की कमजोरियाँ हैं और काँग्रेस की गिरावट मुल्क की गिरावट है. एक बात यह भी हमें ध्यान में रखनी चाहिये कि मुल्क का जो तबक्का या जो गिरोह जितना ज्यादा अँगरेजों, अँगरेजी तालीम और अँगरेजी राज के असर में रहा इतना ही वह चरित्र, इनसानियत और नेकी से ज्यादा क़रा हुआ निकला. ऐसा भी होना हमारी राय में क़ुदरती बात थी.

ऐसी हालत में हमें घीरज नहीं खोना चाहिये. क़ौमों या मुल्क एक दिन में नहीं बनते. हमें उन आश्माइशों में से निकलना ही होगा. जरूरत है जनता को जगाने की, उसमें बल पैदा करने की, उसे सङ्कलित करने की, उसके चरित्र को ऊँचा ले जाने की. बल्कि हमें कहना चाहिये या जरूरत है जनता के जागने की. उसे अपने अन्दर बल संचार करने की, उसे सङ्कलित होने की और उसे अपने चरित्र को ऊँचा और मजबूत करने की. अँगरेज चले गئے पर हमारी सदियों की बीमारियाँ, हमारी खदगर्जियाँ, हमारी फूट, हमारे अंधविश्वास और हमारी तंगनज़रियाँ जिन्हें वह जगा गए थे और जिनके सहारे ही वह नब्बे बरस तक राज करते रहे अभी पूरे जोरों के साथ चमक रही हैं. हमें इन सबको पहचानना और जीतना होगा.



बहुत मुशकिल है। सब यह है कि ऐन संकट के समय हम तौलें गए और हलके उतरे-कमजोरी हमारी सबकी कमजोरी है। गाँधी जी जानते थे कि जो उन्होंने मरने से पहले सलाह दी थी कि हो सकेगा। इसीलिये उन्होंने मरने से पहले सलाह दी थी कि काँग्रेस संगठन तोड़ दिया जावे, काँग्रेस वाले सब हकूमत से बाहर निकल आवें और पुरानी काँग्रेस की जगह मुल्क के सच्चे ख़ादिमों का एक नया 'लोक सेवक संघ' बनाया जावे, जो गाँव गाँव जाकर जनता की निस्वार्थ सेवा करने और उसे ऊपर उठाने में लग जावे। गाँवों की इस तजवीज़ को बरबा 'नया हिन्दू' में हो चुकी है। यह भी होना न था और न हो सका।

हम कई बार कह चुके हैं कि देस में इस समय जनता का राज नहीं है, सब यह है कि जनता में अभी तक वह समझ, वह कैंक्टर, वह बल, वह संगठन और वह योग्यता भी नहीं है कि जिसके बिस्ते पर जनता हकूमत की बाग अपने हाथों में ले सके, राज है उन पढ़े लिखे लोगों का जो आजादी की कोशिशों में सबसे आगे रहे हैं और जो अब जहाँ तक उनकी समझ, उनकी योग्यता और उनके चरित्र की कमजोरियाँ इजाजत देती हैं वहाँ तक जनता का भला और उसकी सेवा करने की कोशिश करते हैं.

काँग्रेस अब जनता नहीं है. जनता में और उसमें अलग-अलग भी दिनों दिन बढ़ता जा रहा है. पर इसमें शक नहीं कि इस गिरी दुई हालत में भी जो अच्छे से अच्छे आदमी काँग्रेस में मौजूद हैं उससे अच्छे देस के किसी दूसरे दल, पार्टी या संस्था में आसानी से नहीं मिल सकते. हम नाम लेना नहीं चाहते थे पर इस समय यह कहे बिना नहीं रह सकते और यह बहुत दुरजे तक मुल्क के और लोगों की आबाज है कि जिन मुश्किलों और खतरों का सामना करने हए जिस लगन जिस मेहनत और जिस होशियारी के साथ

نہا ہند  
ہماری راہ  
سن ۱۵ء

بہت مشکل ہے . سچ یہ ہے کہ عین سلطنت کے سمرے ہم تولے گئے اور ہلکے اترے . کمزوری ہماری سب کی کمزوری ہے . لاندھی جی جانتے تھے کہ جو انہوں نے چاہا تھا ، نہ ہوا اور نہ ہو سکتا . اسی لئے انہوں نے مرنے سے پہلے صلح دی تھی کہ لائگریس سلطنتیں توڑ دیا جاوے ' لائگریس والے سب حکومت سے باہر نکل آویں اور پرانی لائگریس کی جگہ ملک کے سچے خاندانوں کا ایک نیا 'لوک سپوک سلطنت' بنایا جاوے ' جو گاؤں گاؤں جاگڑ چلتا کی نسوارتہ سہوا کرنے اور اسے اوپر اُتھانے میں لگ جاوے . لاندھی جی کی اس تجویز کی چرچا 'نیا ہلدا' میں ہو چکی ہے . یہ بھی ہونا نہ تھا اور نہ ہو سکا .

ہم کئی بار کہہ چکے ہیں کہ دیس مہں اِس سے چلتا  
 کا راج نہیہں ہے ۔ سچ یہ ہے کہ چلتا مہں اپنی تک وہ سچہ  
 وہ کھیرکتز وہ ہل وہ سنگتھن اُرد وہ پوگھتا بھی نہیہں ہے کہ جس  
 کے ہوتے پر چلتا حکومت کی باگ اپنے عاتھوں مہں لے سکے ۔ راج  
 ہ اُن پڑھے لکھے لوگوں کا جو ازلی کی کوششوں مہں سب سے آگے  
 دھے مہں اُرد جو اب جہاں تک اُن کی سچہ اُن کی پوگھتا اُرد تیکے  
 چترز کی کمزوریاں اجازت دیتی مہں وہاں تک چلتا کا بھلا اُرد اُس  
 کی سہوا کرنے کی کوشش کرتے مہں ۔

کانگریس آپ چلتا نہیں ہے۔ چلتا میں اور اُس میں الٹاؤ بھی دلوں دن بڑھتا جا رہا ہے۔ پر اِس میں شک نہیں کہ اِس گرو ہونی حالت میں بھی جو اچھ سے اچھ آدمی کانگریس میں موجود ہیں اُس سے اچھ دیس کے کسی دوسرے دل' پارتی یا سلسلتا میں آسانی سے نہیں مل سکتے۔ ہم نام لہندا نہیں چاہتے تھ پر اس سے یہ کہہ بلا نہیں رہ سکتے اور یہ بہت درجہ تک ملک کے عام لوگوں کی آواز ہے کہ جن مشکلوں اور خطروں کا سامنا کرتے ہوئے جس لگوں' جس معصمت اور جس ہوشیاریہ کے ساتھ



गाँधी जी ने खलीफा उमर की जीवनी पढ़ी थी। इसीलिये उन्होंने खलीफा उमर का आदर्श काँग्रेसी बज्रों के सामने रक्खा था।

साग्रदण्डिक मामले में भी खलीफा उमर का आदर्श इस मुल्क के नेताओं के लिये 'रोशनी घर' का काम दे सकता था। उसके जमाने में अरब फौजें जहाँ जाती थीं पहले सबके लिये पूरी मजहब की आजादी का ऐलान होता था और फिर दूसरी कोई बात। और यह उन मुल्कों में जहाँ उस जमाने के रोम और ईरान के शहराहों के मातहत मजहबी आजादी नाम को भी न रह गई थी। येरूजेलम के बड़े गिरजाघर की सीढ़ियों पर पैट्रियार्क के प्रार्थना करने पर भी खलीफा उमर ने इसलिये नमाज पढ़ने से इनकार कर दिया था कि कहीं उनके बाद इसे भिसल बना कर मुसलमान दूसरे के पूजाघर पर क़ब्जा न जमा बैठें। यह सब इतिहास की जानी बुझी चीजें हैं।

पर खलीफा उमर की मिसाल तो दूर रही हमारे काँग्रेसी बखीरों ने अगर गाँधी जी की इस छोटी सी बात पर भी अमल और सच्चाई के साथ अमल कर लिया होता कि कोई बखीर अपने और अपने घर वालों के गुजारे के लिये पाँच सौ रुपए से ज्यादा माहवारी तनखा न ले तो हमें यकीन है कि आज काँग्रेस और देस का रंग बिल्कुल दूसरा ही होता. ऊपर वालों का असर नीचे वालों पर और सरकारी लोगों का असर गैर-सरकारी लोगों पर पड़ना एक क़दरती बाँज थी.

पर यह न हुआ था न हो सका. जो कुछ हुआ उसके होते हुए हम छोटे छोटे सरकारी नौकरों को या रिआया के मामली लोगों को बुरा किस मौह से कह सकते हैं. वह किसकी तरफ देखें ? किसे देख कर ऊपर चढ़ें ? किस की मिसाल उनमें त्याग की हिम्मत पैदा करे ? इस लोभ मोह की दुनिया में गिरना आसान और उठना

१०५

مبارک باد

33

گلانڈی جی نے خلیفہ عمر کی جھوٹی بیوی تھی۔ اسی لئے انھوں نے خلیفہ عمر کا آدمی کلگریوسی وزیروں کے سامنے رکھا تھا۔

سامبر دایک معاملے میں بھی خلیفہ عمر کا آدھی اِس ملک کے نیتاؤں کے لئے ’روحانی گھر‘ کا کام دے سکے تھا۔ اُسکے زمانے میں عرب فوجوں جہاں جاتی تھیں پہلے سب کے لئے پوری مذہبی آزادی کا اعلان ہوتا تھا اور پھر دوسری کوئی بات۔ اور یہ اُن ملکوں میں جہاں اُس زمانے کے روم اور ایران کے شہنشاہوں کے ماتحت مذہبی آزادی نام کو بھی نہ رہ گئی تھی۔ یورپ کے پورے گرجا گھر کی سیڑھیوں پر پتھری آرک کے پڑا تھا کرتے پر بھی خلیفہ عمر نے اس لئے نماز پڑھنے سے انکار کر دیا تھا کہ کہیں اُنکے بعد اِسے مثال بننا کر مسلمان دوسرے کے پوجا گھر پر قبضہ نہ جما بیٹھیں۔ یہ سب اِتناس کی جاتی بوجھی چھڑیں تھیں۔

یہ پڑنا ایک قدیمتی چہرہ تھی۔

پر یہ نہ ہوا یا نہ ہو سکا۔ جو کچھ ہوا اُسکے ہوتے ہوئے ہم چھوٹے چھوٹے سرکاری نوکروں کو یا رعایا کے معمولی لبکوں کو برا کس ملے سے کہہ سکتے ہیں۔ وہ کس کی طرف دیکھیں؟ کسے دیکھکر اُپر اُٹھیں؟ کس کی مثال ان معوں نہاگ کی ہمت پھدا کی؟ اس لئے وہ کاشفا میں گنا آسکا۔ اب اُتعلما



इतिहास में कोई नई या अनहोनी बात नहीं है. तप से राज और राज से नरक जैसी कहावतें सब मुलकों और सब खानों के अन्दर मिल सकती हैं. काँग्रेस और काँग्रेस वालों की गिरावट का बाकी मुलक के ऊपर और सरकारी और गैर-सरकारी लोगों पर असर पड़ना भी उतना ही क्रूरती था. यथा राजा तथा प्रजा की कहावत भी एक पुरानी कहावत है.

हो सकता है कि अगर काँग्रेस महात्मा गांधी के असूलों को जगदा सरुचाई से मानती होती या उन पर जरा कड़ाई के साथ अमल करती तो हम देस को इस गिरावट और इन मुसीबतों से बचा ले जाते. गांधी जी ने एक समय काँग्रेसी बलीरों के सामने उस खलीफा उमर का आदर्श रक्खा था जो अपने समय में उस समय के सबसे बड़े राज का मालिक होते हुए भी अपने हाथ से अपना कुरता और अपनी तहमद चोता था. राज सुबह मशक कंधे पर डाल कर मदीना की अनेक बेबाओं के घरों में पानी भर आता था, लम्बे रेगिस्तानी सफ़रों में आधी दूर खुद ऊँट के ऊपर बैठ कर ऊँट वाले को ऊँट की नकेल पकड़ कर पैदल चलने देता था, और बाकी आधे रास्ते ऊँट वाले को ऊपर बैठाकर खुद नकेल पकड़ कर पैदल चलता था. रात को किसी नए आने वाले से बात करते वक्त यह जानकर कि बातचीत किसी निजो मामले की बाबत है सरकारी मामले की बाबत नहीं, अपने हाथ से दिया बुझा देता था—इसलिये क्योंकि सरकारी तेल जिसमें बेबाओं का पैसा लगा है निजी कामों में खर्च नहीं किया जा सकता और जो घरों के येरुजेलम फ़तेह करने के बाद वहाँ के ईसाई पैट्रियार्क के आग्रह करने पर भी अपना पुराना पेबन्द लगा हुआ कुरता फेंककर नया सिला कुरता पहनने के लिये राखी नहीं हुआ—यह कह कर कि ऐसा करना गरीब जनता के पैसे का ग़लत इस्तेमाल होगा. इम

इतनास में कौनी न्नी या अनहोनी बात नहीं है. तप से राज और राज से नरक जैसी कहावतें सब मुलकों और सब खानों के अन्दर मिल सकती हैं. काँग्रेस और काँग्रेस वालों की गिरावट का बाकी मुलक के ऊपर और सरकारी और गैर-सरकारी लोगों पर असर पड़ना भी उतना ही क्रूरती था. यथा राजा तथा प्रजा की कहावत भी एक पुरानी कहावत है.

हो सकता है कि अगर काँग्रेस महात्मा गांधी के असूलों को जगदा सरुचाई से मानती होती या उन पर जरा कड़ाई के साथ अमल करती तो हम देस को इस गिरावट और इन मुसीबतों से बचा ले जाते. गांधी जी ने एक समय काँग्रेसी बलीरों के सामने उस खलीफा उमर का आदर्श रक्खा था जो अपने हाथ से अपना कुरता और अपनी तहमद चोता था, लम्बे रेगिस्तानी सफ़रों में आधी दूर खुद ऊँट के ऊपर बैठ कर ऊँट वाले को ऊँट की नकेल पकड़ कर पैदल चलने देता था, और बाकी आधे रास्ते ऊँट वाले को ऊपर बैठाकर खुद नकेल पकड़ कर पैदल चलता था. रात को किसी नए आने वाले से बात करते वक्त यह जानकर कि बातचीत किसी निजो मामले की बाबत है सरकारी मामले की बाबत नहीं, अपने हाथ से दिया बुझा देता था—इसलिये क्योंकि सरकारी तेल जिसमें बेबाओं का पैसा लगा है निजी कामों में खर्च नहीं किया जा सकता और जो घरों के येरुजेलम फ़तेह करने के बाद वहाँ के ईसाई पैट्रियार्क के आग्रह करने पर भी अपना पुराना पेबन्द लगा हुआ कुरता फेंककर नया सिला कुरता पहनने के लिये राखी नहीं हुआ—यह कह कर कि ऐसा करना गरीब जनता के पैसे का ग़लत इस्तेमाल होगा. इम







में कुरन चन्दर ने एक छोटी सी लारी में अपने समाज की लगभग सारी 'शलाघत' को इकट्ठा कर दिया है और अपना संदेश बहुत कटीले शब्दों में लोगों तक पहुँचाया है. वह लिखते हैं—'लेकिन अब आदमी आदमी न था, एक मैस भी न था बल्कि एक बैरा. एक साहब बहादुर, एक कौदी, एक सारजेन्ट. नतीजा यह कि खिन्दगी की लारी भागी जारही है और हम सब लोग अपनी अपनी जगह पर बैचैन और गैर सुतमइन हैं.' सातवीं कहानी 'मुकद्दस' है. एक लूके इस कहानी में जिन्सी खादियों को रोक नहीं पाता और बीबी के प्यार की कसम हर कदम पर खाता हुआ दूसरी औरतों की गोद में बेक़ायदा चैन दूँदता है. आठवीं कहानी 'वड़ान' में एक गरीब लड़के को खिन्दगी की उड़ान भरते दिखाया गया है जो भिचा की रोटी खाकर और सेठों का ऐश देखकर अपनी उड़ान भूल जाता है. इसी कहानी में कशमीर की गरीबी और उस से दूरी हुई गरीब औरतों का शाहों के हाथ छोटी मोटी खाने पीने की चीजें हासिल करने के लिये अपनी इज्जत बेचने का भी चित्रन किया गया है. नवीं कहानी 'एक सुरइली तसबीर' है. इसमें गरीबी, नाजियों के धुल्लम, अमरों की बेपरवाही और मानवता का चित्र लेखक ने अपने खास ढंग से खींचा है. दसवीं कहानी 'आता है याद मुझको' में बचपन के करवूत दुहराए गए हैं. विशय मनोवैज्ञानिक है और इसी निगाह से पढ़ने में मजा आता है.

कुरन चन्दर अपनी कहानियों में उपदेशक नहीं बनते. वह बात इस ढंग से कहते हैं कि क्लि में जाकर बैठ जाय. चुटकियाँ लेना उनका खास हिस्सा है. कभी कभी ऐसी चुटकियाँ लेते हैं कि समाज तिलमिला उठता है. आज के कुरन चन्दर को समझने के लिये वह कहानियाँ अच्छा साधन हैं.

मैं कुरन चन्दर ने एक चोथी सी लारी में अपने समाज की लगभग सारी 'शलाघत' को इकट्ठा कर दिया है और अपना संदेश बहुत कटीले शब्दों में लोगों तक पहुँचाया है. वह लिखते हैं—'लेकिन अब आदमी आदमी न था, एक मैस भी न था बल्कि एक बैरा. एक साहब बहादुर, एक कौदी, एक सारजेन्ट. नतीजा यह कि खिन्दगी की लारी भागी जारही है और हम सब लोग अपनी अपनी जगह पर बैचैन और गैर सुतमइन हैं.' सातवीं कहानी 'मुकद्दस' है. एक लूके इस कहानी में जिन्सी खादियों को रोक नहीं पाता और बीबी के प्यार की कसम हर कदम पर खाता हुआ दूसरी औरतों की गोद में बेक़ायदा चैन दूँदता है. आठवीं कहानी 'वड़ान' में एक गरीब लड़के को खिन्दगी की उड़ान भरते दिखाया गया है जो भिचा की रोटी खाकर और सेठों का ऐश देखकर अपनी उड़ान भूल जाता है. इसी कहानी में कशमीर की गरीबी और उस से दूरी हुई गरीब औरतों का शाहों के हाथ छोटी मोटी खाने पीने की चीजें हासिल करने के लिये अपनी इज्जत बेचने का भी चित्रन किया गया है. नवीं कहानी 'एक सुरइली तसबीर' है. इसमें गरीबी, नाजियों के धुल्लम, अमरों की बेपरवाही और मानवता का चित्र लेखक ने अपने खास ढंग से खींचा है. दसवीं कहानी 'आता है याद मुझको' में बचपन के करवूत दुहराए गए हैं. विशय मनोवैज्ञानिक है और इसी निगाह से पढ़ने में मजा आता है.

कुरन चन्दर अपनी कहानियों में उपदेशक नहीं बनते. वह बात इस ढंग से कहते हैं कि क्लि में जाकर बैठ जाय. चुटकियाँ लेना उनका खास हिस्सा है. कभी कभी ऐसी चुटकियाँ लेते हैं कि समाज तिलमिला उठता है. आज के कुरन चन्दर को समझने के लिये वह कहानियाँ अच्छा साधन हैं.



उद्दान भरी थी और अब कहाँ तक वह पहुंचा है, इन सब बातों को जानने के लिये कृष्ण चन्दर की पिछली रचनाओं का सामने आते रहना जरूरी है. इसलिये कृष्ण चन्दर की शुरू की कहानियों के संग्रह का यह दूसरा एडिशन बहुत महत्व का है. इस संग्रह में दस कहानियाँ हैं. पहली कहानी "पुराने खुदा" है. इस में लेखक ने मथुरा की आर्थिक, समाजी, और नेचरो हालतों का चित्र खींचा है. कृष्ण चन्दर ने इस कहानी में यू. पी. में पंजाबियों के खिलाफ 'लड़कियाँ भगाने के आरोप को धोते हुए लोगों का ध्यान उस समस्या की तरफ दिलाया है जो कभी कभी पंजाबियों को उनके खयाल में यह हरकत करने पर मजबूर करती है. कृष्ण चन्दर पत्थर के भगवान या आममान के राजा को 'पुराना खुदा' नहीं कहते. इस कहानी में उन्होंने बताया है कि धर्म, समाज, राज सभी पर शुरू से पूंजी का असर रहा है और पूंजीपति ही 'पुराने खुदा' हैं. दूसरी कहानी "चिड़िया का गुलाम" अनोखी टेक्नीक में है. लेखक ने मजाक ही मजाक में यह बताया है कि दुनिया में सारे मगड़े मजदूर बेमतलब शुरू होते हैं और कभी कभी भयानक रूप अस्तित्वार कर लेते हैं. तीसरी कहानी "मुसबित मनक्री" है. इसमें कहानी की टेक्नीक और सुन्दर शब्द चित्रों के जरिए तरह तरह की मिसालें देकर लेखक ने बताया है कि किसी बीज का कहीं अधिक होना बताया है कि वह बीज कहीं नापैद है. चौथी कहानी "झील से पहले, झील के बाद" है. कृष्ण चन्दर मानते हैं कि जमीन का हर कोना उसके असली मालिक मेहनतकश समाज को मिल जाय. लेकिन न जाने क्यों इस कहानी में झिल्ला कर कह गए हैं कि अगर इस सुन्दर घाटी का कोई सुख मेहनत मजदूरी करने वालों के हिस्से में नहीं है तो वह फिर जल ही जल होजाय. पाँचवी कहानी "हादसे" में कृष्ण चन्दर जिन्सी मूक की बुराइयों पर उतर आए हैं और खबरदस्त सबक देते हैं. अपनी छठी कहानी "शालाजत"

नया हलद      कुछे कदाबिस      मुँगी सन '०१

आँखें बहरी नही ओर अब कहाँ तक वह पहुँचा है, इन सब बातों को जानने के लिये कृष्ण चन्दर की पिछली रचनाओं का सामने आते रहना जरूरी है. इसलिये कृष्ण चन्दर की शुरू की कहानियों के संग्रह का यह दूसरा एडिशन बहुत महत्व का है. इस संग्रह में दस कहानियाँ हैं. पहली कहानी "पुराने खुदा" है. इस में लेखक ने मथुरा की आर्थिक, समाजी, और नेचरो हालतों का चित्र खींचा है. कृष्ण चन्दर ने इस कहानी में यू. पी. में पंजाबियों के खिलाफ 'लड़कियाँ भगाने के आरोप को धोते हुए लोगों का ध्यान उस समस्या की तरफ दिलाया है जो कभी कभी पंजाबियों को उनके खयाल में यह हरकत करने पर मजबूर करती है. कृष्ण चन्दर पत्थर के भगवान या आममान के राजा को 'पुराना खुदा' नहीं कहते. इस कहानी में उन्होंने बताया है कि धर्म, समाज, राज सभी पर पूंजीपति ही 'पुराने खुदा' हैं. दूसरी कहानी "चिड़िया का गुलाम" अनोखी टेक्नीक में है. लेखक ने दुनिया में सारे मगड़े मजदूर बेमतलब शुरू होते हैं और कभी कभी भयानक रूप अस्तित्वार कर लेते हैं. तीसरी कहानी "मुसबित मनक्री" है. इसमें कहानी की टेक्नीक और सुन्दर शब्द चित्रों के जरिए तरह तरह की मिसालें देकर लेखक ने बताया है कि किसी बीज का कहीं अधिक होना बताया है कि वह बीज कहीं नापैद है. चौथी कहानी "झील से पहले, झील के बाद" है. कृष्ण चन्दर मानते हैं कि जमीन का हर कोना उसके असली मालिक मेहनतकश समाज को मिल जाय. लेकिन न जाने क्यों इस कहानी में झिल्ला कर कह गए हैं कि अगर इस सुन्दर घाटी का कोई सुख मेहनत मजदूरी करने वालों के हिस्से में नहीं है तो वह फिर जल ही जल होजाय. पाँचवी कहानी "हादसे" में कृष्ण चन्दर जिन्सी मूक की बुराइयों पर उतर आए हैं और खबरदस्त सबक देते हैं. अपनी छठी कहानी "शालाजत"



के लिये इस विषय पर क्लम उठाते हैं। अपने मतलब को पूरा करने में कहीं कहीं तंगा चित्रन करना भी पड़ जाय तो वह मुह नहीं मोड़ते, नौकरी के साथ हम लोग किस तरह व्याहार करते हैं और किस तरह नकरत और मुहब्बत के भाव एक ही वक्त में हमारे दिमाग में दबौड़े बलाया करते हैं, इसका चित्रन “वहशी” कहानी में लेखक ने बहुत सुन्दर किया है। ‘हिमालय की चोटी’ में महेन्द्र नाथ ने देस में पढ़े लिखे लोगों को नौकरी न मिलने की समस्या का कटीले ढंग से मञ्चाक उड़ाया है। “शादी के बाद” तो हिन्दुस्तान के दो बार साल पुराने न्याहे लगभग हर जोड़े की कहानी है। “दीवार” का भी विषय मनोवैज्ञानिक है। “मेरी आशज” में भी बीच के तबक़े की आर्थिक और मानसिक समस्या का चित्रन किया गया है। इस संग्रह की आखिरी कहानी “काश वह बेवकूफ़ होता” है। मेरे खयाल में सब से अच्छी कहानी यही है। इसमें समाज में फैले तरह तरह के विचारों और तरह तरह के लोगों से परिचय लेखक ने कराया है।

—मुजीब रिजवी

## पुराने खुदा

लिखने वाले—कुरानचन्दर

निकालने वाले—मक़तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली  
लिखावट उर्दू—सफ़ा दो सौ बारह—क़ीमत दार्द रुपया.

यह कुरान चन्दर की कहानियों का संग्रह है। आज के कुरान चन्दर के अनगिनत पाठक हैं और नए लेखक उसके निशान पर चलने की कोशिश करते हैं। इस संग्रह की सारी कहानियाँ उस

کے لئے اِس رشتے پر قلم اُٹھاتے ہیں۔ اپنے مطلب کو پورا کرتے ہیں کہیں کہیں نکتا چترن کرنا بھی پڑ جائے تو رے ملے نہیں مڑتے۔ نوکروں کے ساتھ ہم لوگ کس طرح بھوہار کرتے ہیں اور کس طرح نفرت اور محبت کے بھاؤ ایک ہی وقت میں ہمارے دماغ میں ہتھوڑے چلایا کرتے ہیں۔ اِس کا چترن ’وحشی‘ کہانی میں لیکھک نے بہت سندر کیا ہے۔ ’ہمالیہ کی چوٹی‘ میں مہندر ناتھ نے دیس میں پڑھے لکھے لوگوں کو نوکروں نہ ملنے کی مسکھا کا کٹیلے تھلک سے مزاق اُڑایا ہے۔ ’شادی کے بعد‘ تو ہندستان کے دو چار سال پرانے بھاہ لگ بیگ ہر چوڑے کی کہانی ہے۔ ’’دیوار‘‘ کا بھی رشتے منبھوہانک ہے۔ ’’مہری آواز‘‘ میں بھی بھج کے طبقے کی آرتھک اور مانسک مسکھا کا چترن کیا گیا ہے۔ اِس سنگرہ کی آخری کہانی ’’کاش وہ بیوقوف ہوتا‘‘ ہے۔ میرے خیال میں سب سے اچھی کہانی یہی ہے۔ اِس میں سماج میں پہلے طرح طرح کے چاروں اور طرح طرح کے لوگوں سے پرچے لیکھک نے کرایا ہے۔

—محبوب دہلوی

## پرانے خدا

لکھنے والے—کرشن چندر

نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لہیتھتہذہ جامعہ نگر دہلی

لکھاوت اُردو—صفحہ دو سو بارہ—قیمت دھائی (دو روپے)

یہ کرشن چندر کی کہانیوں کا سنگرہ ہے۔ آچکے کرشن چندر کے ان گنت ہاتھک میں اور نئے لیکھک اُسکے نشان پر چلنے کی کوشش کرتے دھیں۔ اِس سنگرہ کی ساری کہانیاں اُس سے سے کی ہیں



नया हिन्दू नया हिन्दू

कुछ किताबें

मई सन् '५१

से पढूँ चाते रहते हैं. केवल हिन्दी ही जानने वालों के लिये 'फ्राँस का परिचय' नया साहित्य की अमूल देन है. कुरन चन्द्र और वशपाल की रचनाएं भी इस पत्र में छपती रहती हैं. लगभग सभी अच्छे कलाकारों का सहयोग इस रिसाले को हासिल है क्योंकि यह उन्हीं की चीज है. पर न यह अश्लील और बेतुकी कहानियाँ छापता है और न क्लिम की नंगी तसवीरों से गेट अप बढ़ाता है. शायद यही कारन है इस की माली हालत अच्छी न होन का. साहित्यकों का फ़र्ज है कि नया साहित्य की भरसक सहायता करें और जनता से भी हमारी अपील है कि वह इस को जिन्दा रखने के लिये अपना पूरा सहयोग दे.

—मुजीब रिजवी

## नई बीमारी

लिखने वाले—महेन्द्र नाथ

निकालने वाले—मकतबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली

लिखावट उर्दू, सफ़ा १८८. क़ीमत दो रुपया आठ आना

'नई बीमारी' महेन्द्र नाथ की कहानियों के संग्रह का दूसरा एडीशन है. बाँमारियाँ तो इस किताब में सारी पुरानी ही हैं लेकिन कहीं कहीं उनकी तरफ़ संकेत अलबत्ता नए ढंग से किया गया है. महेन्द्र नाथ ने बीब के तबक्के की लगभग सभी समस्याओं पर क़लम उठाया है लेकिन जिन्स (सेक्स) के बारे में वह अबिबू बदनम हो गए हैं. इस संग्रह में भी 'नई बीमारी' 'बर्फ़' और 'देहलीब' कहानियों का विषय जिन्स ही है. पर महेन्द्र नाथ जिन्सी भाव तेज़ करने को जान बुरा कर कोशिश नहीं करते, वह जिन्सी समस्याओं को सुधारने

नया हल्द कुछे क़िताबें

मई सन् '५१

से पहचानते रहते हैं. क़िबल हल्दी ही जानने वालों के लिये 'फ्राँस का परिचय' नया साहित्य की अमूल देन है. कुरन चन्द्र और वशपाल की रचनाएं भी इस पत्र में छपती रहती हैं. लगभग सभी अच्छे कलाकारों का सहयोग इस रिसाले को हासिल है क्योंकि यह उन्हीं की चीज है. पर न यह अश्लील और बेतुकी कहानियाँ छापता है और न क्लिम की नंगी तसवीरों से गेट अप बढ़ाता है. शायद यही कारन है इस की माली हालत अच्छी न होन का. साहित्यकों का फ़र्ज है कि नया साहित्य की भरसक सहायता करें और जनता से भी हमारी अपील है कि वह इस को जिन्दा रखने के लिये अपना पूरा सहयोग दे.

—मजिब रज़वी

## नئی بیماری

لکھنے والے—مہندر ناتھ

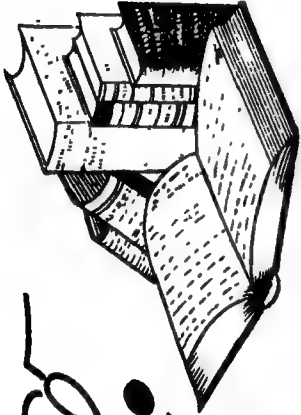
نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لیمیٹڈ، جامعہ زکریہ دہلی

لکھاوٹ اُردو، صفحہ ۱۸۸، قیمت ۲ روپہ آٹھ آنہ

'نئی بیماری' مہندر ناتھ کی کہانیوں کے سنگرہ کا دوسرا ایڈیشن ہے۔ ہمایاں تو اس کتاب میں ساری پڑائی ہی ہیں لیکن کہیں کہیں اُن کی طرف سنگرہت البتہ نئے قہلگ سے کیا گیا ہے۔ مہندر ناتھ نے بیچ کے طریقے کی لگ بھگ سبھی سسٹیاؤں پر قلم اُٹھایا ہے لیکن جلس (سکس) کے بارے میں وہ ادھک بدنام ہوئے ہیں۔ اس سنگرہ میں بھی 'نئی بیماری' 'برف' اور 'دھلیب' کہانیوں کا وہی جلس ہی ہے۔ پر مہندر ناتھ جلسی بھاؤ تیز کرنے کی جان بوجھ کر کوشش نہیں کرتے، وہ جلسی سسٹیاؤں کو سدھارنے



# कवि कासे



# कवि कासे

## नया साहित्य

महाबारी हिन्दी रिसाले

पता—प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद-२

सफा छियानवे, साइज डिमाई अठपेजी, सालाना चन्दा आठ रुपया, छमाही चार रुपया आठ आना, एक कापी का दाम बाहर आना.

हिन्दी में इने गिने रिसाले ही हैं जो 'प्रगतिशील लेखक संघ' के मन्त्रसद को पूरा करते हैं. 'नया साहित्य' उन में से एक है और संघ ही का परचा है. हिन्दी के महाशूर आलोचक डाक्टर रामबिलास शर्मा, प्रोफेसर प्रकाश चन्द्र गुप्त और हिन्दी के महाशूर कहानीकार 'पहाड़ी' जी इस के सम्पादक मंडल में हैं. इसमें कहानी भी हैं और कविता भी, आलोचना भी है और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सूझी बूझी रायें भी. लेखों में देसी लेखकों के विचार भी इस रिसाले में मिलते हैं और विदेशों के महाशूर प्रगतिशील लेखकों के लेख भी. चीन और रूस ऐसे बड़े देशों की रचनाओं और लेखकों से भी परिचय होता है. नरुदा ऐसे जग के महान कवि की कविताएँ भी नया साहित्य के पन्नों पर दिखाई पड़ती हैं. रामकुमार जी पैरिस में बक्कर काटते हैं

## नया साहित्यिक

महोदय हिन्दी रिसाले

पते—प्रकाश गृह, नया कटरा, ले आबाद—२

मन्त्रे चयनानवे, साइज क्वाथी अठ पञ्च, साले चन्दा दोपये, चयनानवे चार दोपये आठ आना. एक कापी का दाम आठ आना.

हिन्दी में इने रिसाले ही हैं जो 'प्रगतिशील लेखक संघ' के मन्त्रसद को पूरा करते हैं. 'नया साहित्य' उन में से एक है और संघ ही का परचा है. हिन्दी के महाशूर आलोचक डाक्टर रामबिलास शर्मा, प्रोफेसर प्रकाश चन्द्र गुप्त और हिन्दी के महाशूर कहानीकार 'पहाड़ी' जी इस के सम्पादक मंडल में हैं. इसमें कहानी भी हैं और कविता भी, आलोचना भी है और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सूझी बूझी रायें भी हैं. लेखों में देसी लेखकों के विचार भी इस रिसाले में मिलते हैं और विदेशों के महाशूर प्रगतिशील लेखकों के लेख भी. चीन और रूस ऐसे बड़े देशों की रचनाओं और लेखकों से भी परिचय होता है. नरुदा ऐसे जग के महान कवि की कविताएँ भी नया साहित्य के पन्नों पर दिखाई पड़ती हैं. रामकुमार जी पैरिस में बक्कर काटते हैं



मोल जाती थी.

दिन बीतते गए और साइकिल की ईजाद में तरक्की होती गई. कोई साठ साल की बात है कि पहली ऐसी साइकिल बनाई गई जिसमें हवा भरने के टायर लगे हुए थे. यह साइकिल दुनिया भर में मशहूर होगई. "जे. बी. डनलप" ने यह टायर ईजाद किये. उसके मन में यह विचार पैदा हुआ कि टायर में रबड़ का टुकड़ा देने की जगह हवा भर देनी चाहिये. उसने कई एक तजुरबे भी किये. एक दिन उसने हवा से भरी हुई रबड़ की ट्यूब एक लकड़ी के पहिये में लगादी फिर उसने इस पहिये को घुमाया और देखा की यह बार बार उछलता है. तब उसने अपने लड़के से कहा "बेटे ! फिर तो हम अपने काम में पास होगए और हमारा काम ठीक रहा."

कुछ दिनों बाद उसका लड़का अपने स्कूल में होने वाली साइकिल की दौड़ में हिस्सा लेने वाला था. डनलप ने दो ट्यूब बनाए और बच्चे की साइकिल पर लगा दिये. लोगों ने इस अजीब चीज को देखकर मजाक उड़ाया पर यह साइकिल बहुत तेज दौड़ने लगी जिसके कारन लड़का दौड़ में जीत गया. इसके बाद से वह टायर साइकिलों में लगाए जाने लगे और फिर धीरे धीरे उसमें नयापन आने लगा. आज यही साइकिल एक हलकी फुलकी, सुन्दर और सस्ती सवारी है जिस पर बैठ कर तुम स्कूल जाते हो और दुनिया भर में क्या बड़े, क्या बच्चे सभी इसको चलाते हैं.

( अनुवाद किया गया )

२० मील जाती थी.

यह भोतमे कूँ और सान्हेल की अज्जद मेहनत होती लुकी. कौनी साल की बात है के पहली ऐसी सान्हेल बनाई लुकी जस मेहनत हो भोतने के त्तर लुके हुंते थे. ये सान्हेल दुनिया भर मेहनत हो लुकी. "जे. बी. डनलप" ने ये त्तर अज्जद कूँ. अकूँ मेहनत ये वज्जद पैदा हा के त्तर मेहनत रबर का तुकड़ा दिने की ज्जे हो भोत दिनी चाहते. अस् ने कूनी अकूँ त्तर ये भी कूँ. अकूँ दान अस् ने हुंते से भोत हुंती रबर की त्तर एक लकड़ी के त्तर. मेहनत लुकी. भोत अस् ने इस पैदा को कूसिया और दिने के ये बार बार अज्जद हा. तब अस् ने अि लुके से कहा "भोत ! ये त्तर हम अि काम मेहनत हो लुके और हमार काम तुलक रहा."

कुछ दिनों बाद अस् का लुका अि स्कूल मेहनत होने वाली सान्हेल की दौड़ मेहनत लुके वाला था. डनलप ने दो त्तर बनाई और अि सान्हेल प लुकी. लुकों ने इस अज्जद को दिने मतलु आया. ये सान्हेल भोत तेज दौड़ने लुकी जस के कारन लुका दौड़ मेहनत कूँ. अकूँ बाद से ये त्तर सान्हेल मेहनत लुके जाने लगे और भोत दहेरे दहेरे अस् मेहनत नया पने आने लुका. अज्जद सान्हेल एक हलकी फुलकी, सुन्दर और सस्ती सवारी है जस पर भोतमे त्तर अि स्कूल जाते हो और दुनिया भर मेहनत कूँ भोत कूँ भोत अि काम मेहनत हो लुके और हमार काम तुलक रहा."

( अनुवाद किया गया )



नया हिन्द

बच्चों की दुनिया

मई सन् '५१

सवार बैठ जाता था. अगले पहिये के ऊपर एक तरह का हैंडिल लगा दिया. सवार पाँव को जमीन पर टेकता हुआ मशोन को घुमाता था. जब साइकिल चल पड़ती तो सवार अपने पाँव ऊपर उठा लेता. फिर साइकिल को कुछ देर तक जोर से दौड़ाता रहता. इस साइकिल का नाम "बौका घाड़ा" रखा गया.

सन १८४५ में "मैक मिन्नन" ने एक ऐसी साइकिल बनाई जिसमें पैडिल लगे हुए थे और छै साल के बाद एक देसवासी ने "लकड़ी का बोड़ा" नाम से एक नए प्रकार की साइकिल की नींव रखी. इसके दो पहिये थे जिनमें पैडिल लगे हुए थे, जो पाँव के बल आगे और पीछे चल पड़ते थे जिसके साथ चक्कर भी घूमने लगते थे.

पैडिल को अगले पहिये के साथ जोड़ने और उन्हें गोलाई में घुमाने का काम कुछ बरस बाद हुआ. इस नई किस्म की साइकिल के पहिये लकड़ी के थे जिस पर लोहा चढ़ाया गया था. इसमें इसप्रिंग बरौरा नहीं थी और इसका नाम "हड्डी तोड़" पड़ गया. पर इसे लोगों ने बहुत पसन्द किया और बड़े लोग भी इसे चलाने लगे.

अब क्या था जल्दी ही और साइकिलें निकल पड़ीं. जिनमें एक ऐसी साइकिल भी थी जिसका अगला पहिया बहुत बड़ा और पिछला पहिया बहुत छोटा था. इस की गद्दी जमीन से कोई पाँच फुट ऊँची थी और चलाने वाला छोटे पहिये के ऊपर से फुदक कर इस पर सवार होता था. इस तरह की साइकिल पर सवारी करने वालों की समाएँ बन गईं. यह लोग एक खास किस्म का लिबास और एक नए ढंग की टोपी पहन कर सवारी को

मैन्स सन '०१

बच्चों की दुनिया

नया हल्द

सवार बिट्टा जाता था. अगले पहिये के ऊपर एक तरह का हैंडिल लगा दिया. सवार पाँव को जमीन पर टेकता हुआ मशोन को घुमाता था. जब साइकिल चल पड़ती तो सवार अपने पाँव ऊपर उठा लेता. फिर साइकिल को कुछ देर तक जोर से दौड़ाता रहता. इस साइकिल का नाम "बौका घाड़ा" रखा गया.

सन १८४५ में "मैक मिन्नन" ने एक ऐसी साइकिल बनाई जिसमें पैडिल लगे हुए थे और छै साल के बाद एक देसवासी ने "लकड़ी का बोड़ा" नाम से एक नए प्रकार की साइकिल की नींव रखी. इसके दो पहिये थे जिनमें पैडिल लगे हुए थे, जो पाँव के बल आगे और पीछे चल पड़ते थे जिसके साथ चक्कर भी घूमने लगते थे.

पैडिल को अगले पहिये के साथ जोड़ने और उन्हें गोलाई में घुमाने का काम कुछ बरस बाद हुआ. इस नई किस्म की साइकिल के पहिये लकड़ी के थे जिस पर लोहा चढ़ाया गया था. इस में इसप्रिंग बरौरा नहीं थी और इसका नाम "हड्डी तोड़" पड़ गया. पर इसे लोगों ने बहुत पसन्द किया और बड़े लोग भी इसे चलाने लगे.

अब क्या था जल्दी ही और साइकिलें निकल पड़ीं. जिनमें एक ऐसी साइकिल भी थी जिसका अगला पहिया बहुत बड़ा और पिछला पहिया बहुत छोटा था. इस की गद्दी जमीन से कोई पाँच फुट ऊँची थी और चलाने वाला छोटे पहिये के ऊपर से फुदक कर इस पर सवार होता था. इस तरह की साइकिल पर सवारी करने वालों की समाएँ बन गईं. यह लोग एक खास किस्म का लिबास और एक नए ढंग की टोपी पहन कर सवारी को



रहा था कि अपने राज की गरीब जनता के दुख दूर करने के लिये अब उसे केवल महात्मा गाँधी के बताए रास्तों को अपनाना होगा। उसके मन में यह विश्वास और भी पक्का हो गया कि गाँधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का रास्ता ही जालिमों का मुकाबला करने के लिये सब से अच्छा रास्ता है। फिर उसे ऐसा मालूम हुआ मानों दूर 'आकाश' में गाँधी जी खड़े हुए उसे हाथ उठा कर आशीर्वाद दे रहे हैं। घर पहुँचते पहुँचते प्रेम लाल ने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया कि वह जल्दी से जल्दी अपने साथियों को लेकर राज के खिलाफ सत्याग्रह की लड़ाई छेड़ देगा।

## साइकिल की कहानी

( भाई विकार खलील )

साइकिल को बने करीब १२५ साल होते हैं। फ्रान्स और बर्तानिया में जब बहुत सी नई सड़कें बन रही थीं और वह लोग जो थोड़े समय में बहुत दूर तक पहुँचना चाहते थे लेकिन गरीबी के कारन मोटर, गाड़ी और घोड़ा भी नहीं खरीद सकते थे वह एक ऐसी सस्ती सबारी की तलाश करने लगे जिसमें न पेटरोल का खर्च हो और न कोबवान रखना पड़े। तभी आदमी के दिमाग में साइकिल बनाने का खयाल पैदा हुआ।

इस काम में सब से ज्यादा सफलता एक फ्रान्सीसी "जान डेस" को हुई। पहले पहल इसने लकड़ी के एक टुकड़े पर दो पहियों को आगे पीछे जोड़ा, और लकड़ी पर एक गद्दी लगादी जिस पर

रहा तथा कि अज रज की करीब चलता के दफे दूर करने के लिये अब उसे केवल महात्मा गंधी के बताए रास्तों को अपना होगा। उसके मन में यह विश्वास और भी पक्का हो गया कि गाँधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का रास्ता ही जालिमों का मुकाबला करने के लिये सब से अच्छा रास्ता है। फिर उसे ऐसा मालूम हुआ मानों दूर 'आकाश' में गाँधी जी खड़े हुए उसे हाथ उठा कर आशीर्वाद दे रहे हैं। घर पहुँचते पहुँचते प्रेम लाल ने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया कि वह जल्दी से जल्दी अपने साथियों को लेकर राज के खिलाफ सत्याग्रह की लड़ाई छेड़ देगा।

## साइकिल की कहानी

( भैरवी वृद्धा खलील )

साइकिल को बने करीब १२५ साल होते हैं। फ्रान्स और बर्तानिया में जब बहुत सी नई सड़कें बन रही थीं और वह लोग जो थोड़े समय में बहुत दूर तक पहुँचना चाहते थे लेकिन गरीबी के कारन मोटर, गाड़ी और घोड़ा भी नहीं खरीद सकते थे वह एक ऐसी सस्ती सबारी की तलाश करने लगे जिसमें न पेटरोल का खर्च हो न कोबवान रखना पड़े। तभी आदमी के दिमाग में साइकिल बनाने का खयाल पैदा हुआ।

इस काम में सब से ज्यादा सफलता एक फ्रान्सीसी "जान डेस" को हुई। पहले पहल इसने लकड़ी के एक टुकड़े पर दो पहियों को आगे पीछे जोड़ा, और लकड़ी पर एक गद्दी लगादी जिस पर



प्रेम लाल ने कहा—“अच्छा, मैं इस कुएँ में छलाँग लगाऊँगा और अँगूठी ले आऊँगा. मेरा विश्वास है कि हिम्मत करने से हर काम हो सकता है. दुनिया में कोई काम नायुमकिन नहीं.”

आकृति बोली—“ऐ सुन्दर बालक, अच्छा कूद तो सही. पर एक बात सुन ले, इस कुएँ में भौंति भौंति के बसने वाले जानवर हैं, तेरी जान खतरे में पड़ सकती है.”

लेकिन प्रेम लाल डरा नहीं और भगवान का नाम लेकर कुएँ में कूद पड़ा, न तो पानी ही था और न मगर मच्छ, बलिक वह एक सुन्दर महल में खड़ा इधर उधर देख रहा था कि ऐसे में हँसते हुए आकृति ने उससे कहा—

“शाबाश मेरे बच्चे, तू बड़ा बहादुर है, भगवान तेरी हर इच्छा पूरी करे. एक दिन तू देस का बड़ा आदमी बन कर देस की आन को और बापू के नाम को ऊँचा उठाएगा. सुन, तेरे देस को तुम सा ही एक वीर बालक मिला था. उसका नाम गाँधी था. वह अपने इरादों पर डटा रहा. उसके रास्ते में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ आईं पर वह पकका और निडर बालक बाने बढ़ता ही गया और वह दिन भी आया कि उसका काम पूरा हो गया. सच की जीत और झूट की हार हो गई. फिर उसने आजाद भारत वासियों को प्रेम सन्देश सुनाया और “हिन्दू सुसन्तानिम” एकता पर अपने को भेंट चढ़ा दिया. वह मर कर भी अमर है.”

प्रेम लाल आकृति की बातें सुनता रहा और फिर एक दम उसने चाहा कि उखल कर कुएँ के बाहर आजाय. पर इतने ही में उसकी भाल सुन्न गई. वह जंगल में एक पेड़ की टेक लगाकर बैठा था और वही उसे नींद आगई थी. होश आते ही प्रेम लाल को अपनी गायों की बाद आई. उसने सोचा कि गायों को चारा देना है. वह छट कड़ा हुआ और गाँव की तरफ चल पड़ा. पर जब उसने

‘बच्चों की दुनिया’ मई सन् '५१

प्रेम लाल ने कहा—“अच्छा, मैं इस कुएँ में छलाँग लगाऊँगा और अँगूठी ले आऊँगा. मेरा विश्वास है कि हिम्मत करने से हर काम हो सकता है. दुनिया में कोई काम नायुमकिन नहीं.”

आकृति बोली—“ऐ सुन्दर बालक, अच्छा कूद तो सही. पर एक बात सुन ले, इस कुएँ में भौंति भौंति के बसने वाले जानवर हैं, तेरी जान खतरे में पड़ सकती है.”

लेकिन प्रेम लाल डरा नहीं और भगवान का नाम लेकर कुएँ में कूद पड़ा, न तो पानी ही था और न मगर मच्छ, बलिक वह एक सुन्दर महल में खड़ा इधर उधर देख रहा था कि ऐसे में हँसते हुए आकृति ने उससे कहा—

“शाबाश मेरे बच्चे, तू बड़ा बहादुर है, भगवान तेरी हर इच्छा पूरी करे. एक दिन तू देस का बड़ा आदमी बन कर देस की आन को और बापू के नाम को ऊँचा उठाएगा. सुन, तेरे देस को तुम सा ही एक वीर बालक मिला था. उसका नाम गाँधी था. वह अपने इरादों पर डटा रहा. उसके रास्ते में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ आईं पर वह पकका और निडर बालक बाने बढ़ता ही गया और वह दिन भी आया कि उसका काम पूरा हो गया. फिर उसने आजाद भारत वासियों को प्रेम सन्देश सुनाया और “हिन्दू सुसन्तानिम” एकता पर अपने को भेंट चढ़ा दिया. वह मर कर भी अमर है.”

प्रेम लाल आकृति की बातें सुनता रहा और फिर एक दम उसने चाहा कि उखल कर कुएँ में छलाँग लगाऊँगा और अँगूठी ले आऊँगा. मेरा विश्वास है कि हिम्मत करने से हर काम हो सकता है. दुनिया में कोई काम नायुमकिन नहीं.”



वह बम से जमीन पर गिर पड़ा. फिर उसे मरा जान कर सेना आगे बढ़ी और इधर कुछ समय बाद वीर प्रेम लाल उठ बैठा. उसे बहुत भाव लगे थे और खून में सारे कपड़े लथपथ हो गए थे.

इस घटना ने उसके इरादों को और पक्का कर दिया. वह निडरता और वीरता के साथ खुल्लम खुला राज के खिलाफ हो गया.

प्रेम लाल एक दिन गाँव से दूर जंगल में बैठा विचार कर रहा था कि इतने में बड़े खोर का घड़ाका हुआ और एक भयानक आकृति ने जन्म लिया. प्रेम लाल उसे देख कर भी न घबराया. उस ने पूछा — “तुम कौन हो ?”

भयानक आकृति ने कहा — “मैं तेरी इच्छा पूरन करने आया हूँ, बोल क्या चाहता है ?”

प्रेम लाल बोला — “मेरे पास सब कुछ है. केवल मुझ से राज मंत्री के जनता पर अत्याचार सहे नहीं जाते.”

आकृति ने पूछा — “अच्छा, अगर तू यहाँ का मंत्री बन जाए तो क्या करेगा ?”

प्रेम लाल बोला — “मैं मंत्री बन जाऊँ तो ... हर एक को सुख और आनन्द मिलेगा. किसी को दुखी न रहने दूँगा. उनके लिये रोटी कपड़े का बन्दोबस्त करूँगा. उन की सेवा का पारितोषिक इतना दूँगा कि वह खुश हो जाएँ और आनन्द के साथ अपना काम कर सकें. मेरे राज में जिसकी मेहनत उसकी दौलत रहेगी, निकम्मों और निखटदुष्टों को काम करना सिखाऊँगा.”

आकृति — “अच्छा बच्चा. तेरे बड़े अच्छे विचार हैं, मैं तुम्हें मंत्री बनाऊँगा. इसके लिये तुम्हें एक बात माननी पड़ेगी, वह यह कि तुम्हें इस गहरे कुएँ में खलौंग लगा कर अन्दर से एक अगूठी लानी होगी जिसे मैं तेरे सामने फेंक दूँगा. फिर तू इस राज का मंत्री बन जायगा.”

वह दम से जमीन पर गिर पड़ा. फिर उसे मरा जान कर सेना आगे बढ़ी और इधर कुछ समय बाद वीर प्रेम लाल उठ बैठा. उसे बहुत भाव लगे थे और खून में सारे कपड़े लथपथ हो गए थे.

इस घटना ने उसके इरादों को और पक्का कर दिया. वह निडरता और वीरता के साथ खुल्लम खुला राज के खिलाफ हो गया.

प्रेम लाल एक दिन गाँव से दूर जंगल में बैठा विचार कर रहा था कि इतने में बड़े खोर का घड़ाका हुआ और एक भयानक आकृति ने जन्म लिया. प्रेम लाल उसे देख कर भी न घबराया. उस ने पूछा — “तुम कौन हो ?”

भयानक आकृति ने कहा — “मैं तेरी इच्छा पूरन करने आया हूँ, बोल क्या चाहता है ?”

प्रेम लाल बोला — “मेरे पास सब कुछ है. केवल मुझ से राज मंत्री के जनता पर अत्याचार सह नहीं जाते.”

आकृति ने पूछा — “अच्छा, अगर तू यहाँ का मंत्री बन जाए तो क्या करेगा ?”

प्रेम लाल बोला — “मैं मंत्री बन जाऊँ तो ... हर एक को सुख और आनन्द मिलेगा. किसी को दुखी न रहने दूँगा. उनके लिये रोटी कपड़े का बन्दोबस्त करूँगा. उनकी सेवा का पारितोषिक इतना दूँगा कि वह खुश हो जाएँ और आनन्द के साथ अपना काम कर सकें. मेरे राज में जिसकी मेहनत उसकी दौलत रहेगी, निकम्मों और निखटदुष्टों को काम करना सिखाऊँगा.”

आकृति — “अच्छा बच्चा. तेरे बड़े अच्छे विचार हैं, मैं तुम्हें मंत्री बनाऊँगा. इसके लिये तुम्हें एक बात माननी पड़ेगी, वह यह कि तुम्हें इस गहरे कुएँ में खलौंग लगा कर अन्दर से एक अगूठी लानी होगी जिसे मैं तेरे सामने फेंक दूँगा. फिर तू इस राज का मंत्री बन जायगा.”



## निडरता का रूप

(आई बी० के० पाठक, नागपूर)

किसी गाँव में एक बाला रहता था। उसका एक बेटा प्रेम लाल सुन्दरता का पुनला था। उसके जैसा तनदुरुस्त, सुन्दर और नेक आदमी गाँव भर में कोई न था। कुछ दिनों बाद प्रेम लाल के पिता का देहान्त हो गया और वह नदी किनारे एक कुटिया में अपनी चार पाँच गाँवों खमेर रहने लगा। गाँव भर में कोई उसकी बिरादरी के खेमे न थे। इसी कारन वह अपनी गाँवों से बहुत प्रेम करता था। सबेरा होते ही उन्हें बराने लगे जाता, और सूरज डूबते समय घर जाता। वह गाँवों के दूध, मक्खन और मलाई पर अपना जीवन बिताता था। गाँव के मनबलों ने इस बात की बहुत कोशिश की कि उसको बहकाया जाय और डरा धमका कर ठीक किया जाय। पर बहादुर प्रेम लाल उनके जाल में न फँसा।

जिस राज में प्रेम लाल रहता था उस राज का मंत्री बड़ा कालिम था। सारे राज पर उसका आतंक छाया हुआ था और दुखी जनता बिलक बिलक कर जान दे रही थी। न उसे कपड़ा मिलता, न खाने को रोटी। राजनगर के इस अंधेर के खिलाफ अगर कोई कुछ कहता तो तत्काल ही उसका सर कुचला जाता।

प्रेम लाल था तो बालक, पर यह अंधेर नगरी उससे देखी न गई। जनता की तक्ष और सरकार की चुप ने उसके मन में खलबली मचा दी और उसने एक ऐसी समा बनाई जिसमें सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पास किये गए। प्रेम लाल साबियों में बैठा एक प्रस्ताव पर विचार कर रहा था कि ऐसे में कुछ लठबंद घुड़सवार वहाँ आए और हठा बोल दिया। सभा में खलबली मच गई और दुखी जनता खराई हुई, जिस ओर क्रम बढ़े माग निकली। पर प्रेम लाल व्यो का

## नदरता का रूपा

(बैथानी, ई०, पाठक, नागपूर)

किसी गाँव में एक काला रहता था। असा एक बेटा प्रेम लाल सुन्दरता का पुनला था। असा जैसा तनदुरुस्त, सुन्दर और नेक आदमी गाँव भर में कोई न था। कुछ दिनों बाद प्रेम लाल के पिता का देहान्त हो गया और वह नदी किनारे एक कुटिया में अपनी चार पाँच गाँवों खमेर रहने लगा। गाँव भर में कोई उसकी बिरादरी के खेमे न थे। इसी कारन वह अपनी गाँवों से बहुत प्रेम करता था। सबेरा होते ही उन्हें बराने लगे जाता, और सूरज डूबते समय घर जाता। वह गाँवों के दूध, मक्खन और मलाई पर अपना जीवन बिताता था। गाँव के मनबलों ने इस बात की बहुत कोशिश की कि उसको बहकाया जाय और डरा धमका कर ठीक किया जाय। पर बहादुर प्रेम लाल उनके जाल में न फँसा।

जिस राज में प्रेम लाल रहता था उस राज का मंत्री बड़ा कालिम था। सारे राज पर उस का आतंक छाया हुआ था और दुखी जनता बिलक बिलक कर जान दे रही थी। न उसे कपड़ा मिलता, न खाने को रोटी। राजनगर के इस अंधेर के खिलाफ अगर कोई कुछ कहता तो तत्काल ही उसका सर कुचला जाता।

प्रेम लाल था तो बालक, पर यह अंधेर नगरी उस से देखी न गई। जनता की तृप और सरकार की चुप ने उसके मन में खलबली मचा दी और उसने एक ऐसी समा बनाई जिसमें सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पास किये गए। प्रेम लाल साबियों में बैठा एक प्रस्ताव पर विचार कर रहा था कि ऐसे में कुछ लठबंद घुड़सवार वहाँ आए और हठा बोल दिया। सभा में खलबली मच गई और दुखी जनता खराई हुई, जिस ओर क्रम बढ़े माग निकली। पर प्रेम लाल व्यो का



कौ की दुनिया



एडीटर—प्रेम भाई

कौ की दुनिया

## रामू, राजू, दीन मोहम्मद

( भाई अजीब "कैसी" )

तुम कोमल कोमल उलियाये, तुम हो देस की आँख के तारे  
कागड़ा, बैर, लड़ाई, टंटा, यह सब बातें धनवानों की  
मेल, मिलाप, और भाईचारा, यह पहचान है इनसानों की  
इनसाँ इनसाँ भाई भाई, खोट रहे दिल में न जरा भी  
प्रेम ही सबसे बड़ी है नेकी, इस नेकी को भूल न जाना  
केवल जो लड़ना सिललाएँ, उनके तुम दुरामन बनजाना  
उस दुरामन से कभी न डरना, साहस रखना हिम्मत रखना  
जो निर्बल को तड़पाता है, भूकों को जो तरसाता है  
मेहनत लेकर मजदूरों से, रुपया पैसा खा जाता है  
रामू, राजू, दीन मोहम्मद, आपस में मिल जुल कर खेलो

तुम नन्दे नन्दे सुरज हो  
मिलकर धरती पर का जागो

( "तारे" हैदराबाद से )

## रामू, राजू, दीन मक्कल

( भैया मोड़ "कैसी" )

तुम कोमल कोमल अँधारे, तुम हो देस की आँख के तारे  
जहंगी, भैया, लौली, तल्ला, ये सब बातें देहलानों की  
मेल, मलाप, और भैया चारा, ये पहचान है आसानों की  
आसान आसान भैया भैया, केश रहें दिल में न धरा भी  
प्रेम ही सब से बڑे नेकी, इस नेकी को भूल न जाना  
केवल जो लड़ना सकेलाँ, आँके तुम दश्मों में जाना  
उस दश्मों से कभी न डरना, साहस रकेला हस्त रकेला  
जो नरदश्मों को तड़पाता है, भूकों को जो तरसाता है  
मक्कल लिकर मजदूरों से, (दोहे) पैसा केहाजाना है  
रामू, राजू, दीन मक्कल, आपस में मिल जुल कर केहलो

तुम नल्ले नल्ले सुरज हो  
मल्लर देहली पर केहा जाओ

( "तारे" हैदराबाद से )



मकान या आसपास के हिस्सों या कपड़े, बरतन जैसी वीजों की सफाई खुद करूँगा और ऐसा करते हुए ऐसा सोचूँगा कि इस बाहरी सफाई से मुझे अपने दिल की सफाई में और नेकनियती में आगे बढ़ना है।”

नोट— सर्व सेवा समिति, वर्धो ने अपने क्षेत्र में इस काम को औरन शुरू करना तय किया, श्री श्रीकृष्णदास जाजू उसका रास्ता दिखायेंगे। दूसरी जगह के लोग भी ज्यादा जानकारी, इत्तला बगैरा हासिल करने के लिये इस बारे में फिलहाल सारा पत्र व्योहार नीचे के पते पर करें. कृपा करके पत्र पर “शुद्ध व्योहार सम्बन्धी” ऐसा साफ लिखें.

पता—

मंत्री, सर्व-सेवा-समिति

मारफत—श्री श्रीकृष्णदास जी जाजू

बजानबाड़ी, वर्धो ( म० प्र० )

मकान या आस पास के حصों या कपड़ों बरतन जैसी चीजों की सफाई खुद करूँगा और ऐसा करते हुए ऐसा सोचूँगा कि इस बाहरी सफाई से मुझे अपने दिल की सफाई में और नेक नैतिकी में आगे बढ़ना है।”

नोट—सर्व सेवा समिति, वर्धो ने अपने क्षेत्र में इस काम को औरन शुरू करना तय किया, श्री श्री कृष्ण दास जाजू उसका रास्ता दिखायेंगे. दूसरी जगह के लोग भी ज्यादा जानकारी. اطلاع रखें. हासिल करने के लिये इस बारे में फिलहाल सारा पत्र बहोहार निचे के पते पर करें. कृपा करके पत्र पर “शुद्ध बहोहार सम्बन्धी”. ऐसा साफ लिखें.

पते—

मन्त्री, सर्व सेवा समिति

मरफत—श्री श्री कृष्ण दास जी जाजू

बजाज वाड़ी, वर्धो ( अम-मै )

सबसे मजेदार कलेवा करके बढ़िया भोजन के इन्तजार में बैठे हुए हम-जैसे लोगों के लिये ईश्वर के बारे में बातचीत करना आसान है. लेकिन जिन्हें दोनों जून मूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वर की चरचा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटी के ही रूप में प्रकट हो सकते हैं.

—सहाय्या गाँधी

सुबरे मजिदार कालो करके बहोहार बहोचन के अन्तर्गत में बहोच होयें हम जैसा लोग के लिये अश्वर के बारे में बहो बहोचित करना आसान है, लेकिन जल्लेहों दुनो जेन बहोके रहला पड़ता है उन से में में अश्वर की चरचा कैसे करूँ? उन के सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटी के ही रूप में प्रकट होयें के में.

—महात्मा गान्धी







या बीबन की दूसरी बातों में मुनाफाखोरी, रिश्तखोरी, झटकाचार, काला बाजार, संग्रहखोरी (खिपा बोरी) जैसे काम नहीं करना चाहता। लेकिन कई दफा ऐसे पंच में पड़ जाता हूँ कि ऐसे काम नहीं टाल सकता। मैं समाज के सब वर्गों में से ऐसी इच्छा रखने वाले, आदमियों का साथ और सहयोग चाहता हूँ। अगर ऐसे बेचने वाले, गाहक, सरकारी और दूसरे कर्मचारी वगैरा मिलें तो उनका जिन जिन चीजों से सम्बन्ध आता है, उन्हें लेने देने में मैं उनसे ही सम्बन्ध रखूँगा।”

ऐसे दस शुद्ध व्यावहारिक मिलने पर अगर नई संस्था बनाने की जरूरत हो तो उनका एक मुकामी मंडल बनाना चाहिये। उस मंडल को अधिकार रहेगा कि वह अपने लिये क़ायदे बनावे और ऐसी नीत तय करे कि जिससे मंडल के मेम्बरों की आपस की मदद से उनकी अड़चने दूर हो सकें, समाज का नैतिक स्तर (इथलाकी तह) ऊँचा उठे, बेईमानी और बुराईयों का मुक़ाबला हो सके और एक दूसरे को मदद पहुँचा कर ब्याहार शुद्ध हो सके।

मंडल बनने पर, मंडल के हर एक मेम्बर को अपनी अपनी हालत के मुताबिक एक प्रतिज्ञा (अहद) लेनी चाहिये, और उसके अनुसार चलने में पक्का इरादा होना चाहिये। मंडल के मेम्बरों सोच विचार कर अपने मंडल के लिये मुनासिब प्रतिज्ञापत्र (अहदनामा) का मसौदा बनावेंगे।

मैं यहाँ ऐसे एक प्रतिज्ञापत्र का नमूना देता हूँ :

“मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि—(१) व्यापारी के नाते मैं (क) माल की संग्रहखोरी नहीं करूँगा, जिससे बाजार में उसकी बनावटी कम पैदा हो जाय. (ख) बाजार में बनावटी माँग बढ़ने के कारन बेजा मुनाफ़ा करने के लिये अपने माल के भाव नहीं बढ़ाऊँगा. (ग) किसी की अज्ञानकारी या जरूरत का लाभ उठाने के लिये ज़्यादा क़ीमत नहीं माँगूँगा या

या ज़बान की दूसरी बातों में मुनाफ़ा खोरी, रिश्त खोरी, झटकाचार, काला बाजार, संग्रह खोरी (खिपा चोरी) जैसे काम नहीं करना चाहता लेकिन क़ी दफ़े ऐसे पंच में पड़ जाता हूँ कि ऐसे काम नहीं टाल सकता. मैं समाज के सब वर्गों में से ऐसी इच्छा रखने वाले आदमियों का साथ और सहयोग चाहता हूँ. अगर ऐसे बेचने वाले ग़ल्फ़, सरकारी और दूसरे कर्मचारी वगैरा मिलें तो उन का जिन जिन चीज़ों से सम्बन्ध आता है, उनमें लिये दिये में मैं उनसे ही सम्बन्ध रखूँगा.”

ऐसे दस शुद्ध व्यवहारिक मिलने पर अगर नई संस्था बनाने की जरूरत हो तो उन का एक मुकामी मंडल बनाना चाहिये. उस मंडल को अहंकार रहें ग़ा कि वह अपने लिये क़ायदे बनावे और ऐसी नीत तय करे कि जिस से मंडल के सदस्यों की आपस की मदद से उनकी अड़चने दूर हो सकें, समाज का नैतिक स्तर (इथलाकी तह) ऊँचा उठे, बेईमानी और बुराईयों का मुक़ाबला हो सके और एक दूसरे को मदद पहुँचाकर व्यवहार शुद्ध हो सके.

मंडल बनने पर मंडल के हर एक सदस्य को अपनी अपनी हालत के मुताबिक एक प्रतिज्ञा (अहद) लेनी चाहिये और उसके अनुसार चलने में पक्का इरादा होना चाहिये. मंडल के सदस्य सोच विचार कर अपने मंडल के लिये मुनासब प्रतिज्ञा पत्र (अहद नामा) का मसौदा बना दियेंगे.

मैं यहाँ ऐसे एक प्रतिज्ञा पत्र का नमूना देता हूँ :

“मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि—(१) व्यावहारिक नाते में (अ) माल की संग्रह खोरी नहीं करूँगा. जिस से बाजार में उसकी अड़चन पैदा हो जाये. (ब) बाजार में बनावटी माँग बढ़ने के कारन बेजा मुनाफ़ा करने के लिये अपने माल के भाव नहीं बढ़ाऊँगा. (ग) किसी की अज्ञानकारी या जरूरत का लाभ उठाने के लिये ज़्यादा क़ीमत नहीं माँगूँगा या



कुछ समय से बम्बई में श्री केदारनाथ जी शुद्ध ब्याहार आन्दोलन चला रहे हैं। मेरा यह सुफाव वैसे ही काम को आगे बढ़ाने का है। यह काम ज्यादा जंश से किया जाना चाहिये, पर साथ ही बड़ी सावधानी से, ताकि कोई अपने स्वार्थ के लिये उसका बेजा इस्तेमाल न कर सके।

अब सवाल यह है कि यह काम शुरू कैसे किया जाय। यह तो साफ ही है कि वैसा आन्दोलन मुक्कामी प्रेरणा से और मुक्कामी लोगों के बल पर चलाया जाना चाहिये। कोई एक आदमी या संस्था, जिसका मुक्कामी लोगों से सम्बन्ध है और जिसे यह काम करने की बेहद इच्छा है, वह बाहर के किसी नेता की राह न देखते हुए अपने यहाँ जल्दी से जल्दी काम शुरू कर दे। उनको इस काम में ऐसे ही लोगों को दाखिल होने को कहना चाहिये और शामिल करना चाहिये। जिनपर उनका पूरा विश्वास हो कि वह अपने बचन का पालन करेंगे। अगर कोई बनी बनाई मुनासिब मुक्कामी संस्था न हो, तो इस योजना में शामिल होने वाले करीब १० आदमी मिलने पर नई संस्था बनानी पड़ेगी। यह संस्था बनाने के पहले कौन भाई बहन इस काम में शामिल होना चाहते हैं, इसकी जानकारी पाने के लिये शुरू में नीचे लिखी जैसी एक भरखी दे दें। जहाँ कोई मुक्कामी आदमी या संस्था यह काम उठाने को तैयार न हो, वहाँ भी जो ब्याहार शुद्धि में शामिल होना चाहते हैं, वह इसके आलीर में लिखे पते पर अपनी मंशा इसी तरह लिख भेजें। अगर यह पाया जाय कि किसी इलाक़े में इस काम में शामिल होने साबक कुछ आदमी मिल सकते हैं, तो उनको एक दूसरे की जान-कारी नीचे लिखे दफ्तर से दी जायगी।

शुरू की भरखी

“मैं शुद्ध ब्याहारी होना चाहता हूँ। मैं अपनी खरीद-बिक्री में

कुछ से से मैत्री में शरी कियार नाते जी शुद्ध ब्याहार आन्दोलन चला रहे हैं। मेरा यह सज्जा वैसे ही काम को आगे बढ़ाने का है। यह काम ज्यादा जंश से किया जाना चाहिये, पर साथ ही बड़ी सावधानी से, ताकि कोई अपने स्वार्थ के लिये उसका बेजा इस्तेमाल न कर सके।

अब सवाल यह है कि यह काम शुरू कैसे किया जाय। यह तो साफ ही है कि वैसा आन्दोलन मुक्कामी प्रेरणा से और मुक्कामी लोगों के बल पर चलाया जाना चाहिये। कोई एक आदमी या संस्था, जिसका मुक्कामी लोगों से सम्बन्ध है और जिसे यह काम करने की बेहद इच्छा है, वह बाहर के किसी नेता की राह न देखते हुए अपने यहाँ जल्दी से जल्दी काम शुरू कर दे। उनको इस काम में ऐसे ही लोगों को दाखिल होने को कहना चाहिये और शामिल करना चाहिये। जिनपर उनका पूरा विश्वास हो कि वह अपने बचन का पालन करेंगे। अगर कोई बनी बनाई मुनासिब मुक्कामी संस्था न हो, तो इस योजना में शामिल होने वाले करीब १० आदमी मिलने पर नई संस्था बनानी पड़ेगी। यह संस्था बनाने के पहले कौन भाई बहन इस काम में शामिल होना चाहते हैं, इसकी जानकारी पाने के लिये शुरू में नीचे लिखी जैसी एक भरखी दे दें। जहाँ कोई मुक्कामी आदमी या संस्था यह काम उठाने को तैयार न हो, वहाँ भी जो ब्याहार शुद्धि में शामिल होना चाहते हैं, वह इसके आलीर में लिखे पते पर अपनी मंशा इसी तरह लिख भेजें। अगर यह पाया जाय कि किसी इलाक़े में इस काम में शामिल होने लायक कुछ आदमी मिल सकते हैं, तो उनको एक दूसरे की जान-कारी नीचे लिखे दफ्तर से दी जायगी।

शुरू की भरखी

“मैं शुद्ध ब्याहारी होना चाहता हूँ। मैं अपनी खरीद-बिक्री में



भ्रष्टाचार का मुकाबला करने के साधन सोचने चाहिये। तबको यह जानना चाहिये कि सरकार और समाज के नियम और रीत सुधारने के लिये वन पर दबाव लाने के लिये सबसे पहले यह जरूरी है कि वह व्योहार शुद्धि में और ईमानदारी में अपने खुद की ऊँचे दरजे की मिसाल पेश करके अपनी इज्जत जमावें। किसी भी अधिकारी या समाज के लिये भले और ईमानदार लोगों की माँग को टालना मुमकिन नहीं होता, खासकर जब कि वह मिलकर काम करते हैं।

हवा में कुछ न कुछ सत्याग्रह करने की बान सुनाई देती है। सत्याग्रह अपने सच्चे मानी में सत्य और अहिंसा के व्योहार का लगातार अभ्यास ही है। जान माल को नुकसान न पहुँचाते हुए सिर्फ जेल जाने की तैयारी रखने से ही कानून तोड़ने का कोई आन्दोलन सत्याग्रह नहीं बनता। रोकथामों हथियार के रूप में बेईमानी और भ्रष्टाचार के खिलाफ सत्याग्रह वह ही कर सकते हैं जो खुद अपने साथियों सहित शुद्ध व्योहार में लगे हैं और पक्की प्रतिज्ञा किये हुए हैं। इसलिये सत्याग्रह की किसी तरह की कल्पना करने के पहले शुद्ध व्योहार का आन्दोलन होना चाहिये।

आज की गिरी हुई हालत और भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा कारन जीवन में पैसे की दी हुई नेहद ब्रह्मियत है। अगर हम ईमानदारी से जीने का पक्का इरादा कर लें, तो ऐसे उपाय सुरू जायेंगे जिनसे हमारी मामूली खरीद-बिक्री में पैसे का बहुत सा इस्तेमाल हम खालि कर सकेंगे या कम कर सकेंगे। जैसे कि खास खास मुनासिब चीजों के खरिये से या मेहनत के साधनों से चीजों का बदल बदल करना। इस तरह पैसे की नेहद ब्रह्मियत देने के कारन जो काला बाजार, मुनाफाबोरी, भ्रष्टाचार बतौरा कफाबटें खड़ी होती हैं उन्हें हम धार कर सकेंगे।

नया हलद  
शुद्ध बहोहार आन्दोलन  
मन्थि सन ०१

बोशता चार का मुकामले करने के साधन सोचने चाहिये। उन को यह जानना चाहिये कि सरकार और समाज के नियम और रीत सुधारने के लिये उन पर दबाव लाने के लिये सबसे पहले यह जरूरी है कि वह व्योहार शुद्धि में और ईमानदारी में अपने खुद की ऊँचे दरजे की मिसाल पेश करके अपनी इज्जत जमावें। किसी भी अधिकारी या समाज के लिये भले और ईमानदार लोगों की माँग को टालना मुमकिन नहीं होता, खासकर जब कि वह मिलकर काम करते हैं।

हवा में कुछ न कुछ सत्याग्रह करने की बान सुनाई देती है। सत्याग्रह अपने सच्चे मानी में सत्य और अहिंसा के व्योहार का लगातार अभ्यास ही है। जान माल को नुकसान न पहुँचाते हुए सिर्फ जेल जाने की तैयारी रखने से ही कानून तोड़ने का कोई आन्दोलन सत्याग्रह नहीं बनता। रोकथामों हथियार के रूप में बेईमानी और भ्रष्टाचार के खिलाफ सत्याग्रह वह ही कर सकते हैं जो खुद अपने साथियों सहित शुद्ध व्योहार में लगे हैं और पक्की प्रतिज्ञा किये हुए हैं। इसलिये सत्याग्रह की किसी तरह की कल्पना करने के पहले शुद्ध व्योहार का आन्दोलन होना चाहिये।

आज की गिरी हुई हालत और भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा कारन जीवन में पैसे की दी हुई नेहद ब्रह्मियत है। अगर हम ईमानदारी से जीने का पक्का इरादा कर लें, तो ऐसे उपाय सुरू जायेंगे जिनसे हमारी मामूली खरीद-बिक्री में पैसे का बहुत सा इस्तेमाल हम खालि कर सकेंगे या कम कर सकेंगे। जैसे कि खास खास मुनासिब चीजों के खरिये से या मेहनत के साधनों से चीजों का बदल बदल करना। इस तरह पैसे की नेहद ब्रह्मियत देने के कारन जो काला बाजार, मुनाफाबोरी, भ्रष्टाचार बतौरा कफाबटें खड़ी होती हैं उन्हें हम धार कर सकेंगे।



فیسے دیے جاتے ہیں۔ اگر وہ اپنی کھیتی کھی فصل اور مال وغیرہ نہ چھپائیں۔ بلکہ کچھ بخشش پائے کوئی کام نہ کرنے والے دیوے اور دوسرے سرکاری اہلکاروں کو (جسکا فرض ہے کہ اپنا کام برابر کریں) رشوت نہ دیں، کنٹرول در سے مال بچنے کے لئے اور خریدنے کے لئے اگر وہ قوتیں دیں اور بتواریہ کے لئے حصے سے زیادہ لہلہ کی کوشش نہ کریں اور اپنے نیچے یا اوپر کے کمر چاروں نے ذریعے کی ہوتی ہے ایمانی یا گہری میں ساتھ نہ دیں، تو وہ پاتے ہیں کہ ان کا نیہما نامسکن ہے۔ ایسے کئی لوگ ہیں جنہوں نے بچہلے کچھ برسوں میں ایک بچہلے ایک اپنے کئی دھندے اس لئے چھوڑ دیئے کہ کنٹرول نہتی کے کاروں انہیں ایمانداری اور مطلق سے چلا نامسکن ہو گیا مطلق سے مطلب یہاں اتنا ہی ہے کہ جو انکو کڑ کے لئے واجب بحت دیے گئے۔

( ۳۳ )

وہ ایمانداری چاہتے ہیں، لیکن اس کی ضرورت محسوس کرتے ہیں کہ ان کی کوشش میں ان کو کوئی مدد دے اور کسی کے سہیوگ کا بل ملے تاکہ ایک دوسرے کی مدد سے کام نہہ سکے۔

( ۳۳ )

اس لئے میں ایسا کرتی پائے کرنا چاہئے جس سے ایسے لوگ نزدیک آئیں اور ایک دوسرے کو چاہیں۔ اسکے بعد وہ آپس میں بھوہار کا سببندہ قائم کر سکیں گے۔ پہلی وہ آپس میں مال بچنے کے لئے اور خریدنے کے لئے اور اہلکاروں کے ذریعے ہونے والی برائی کو متانے میں ایک دوسرے کی مدد کرینگے تاکہ بھوہار چار اور قال متول کو استھان نہ ملے۔ کنٹرول والی چیزوں کے بارے میں انہوں پہلے تو سرکاری کنٹرول کے بھاروں کے انوسار ہی لین دین کرنے کی بھرمک کوشش کرنی چاہئے۔ لیکن جب وہ دیکھوں کہ ایسا کرنا نامسکن ہے، تو انکو اکتھے مل کر وچار کر کے اسکے کاروں کی جانچ کرنی چاہئے اور دوسروں کو سدھارنے کے اور

پہلے ہوئے پاتے ہیں۔ اگر وہ اپنی کھیتی کھی فصل اور مال وغیرہ نہ چھپائیں۔ بلکہ کچھ بخشش پائے کوئی کام نہ کرنے والے دیوے اور دوسرے سرکاری اہلکاروں کو (جسکا فرض ہے کہ اپنا کام برابر کریں) رشوت نہ دیں، کنٹرول در سے مال بچنے کے لئے اور خریدنے کے لئے اگر وہ قوتیں دیں اور بتواریہ کے لئے حصے سے زیادہ لہلہ کی کوشش نہ کریں اور اپنے نیچے یا اوپر کے کمر چاروں نے ذریعے کی ہوتی ہے ایمانی یا گہری میں ساتھ نہ دیں، تو وہ پاتے ہیں کہ ان کا نیہما نامسکن ہے۔ ایسے کئی لوگ ہیں جنہوں نے بچہلے کچھ برسوں میں ایک بچہلے ایک اپنے کئی دھندے اس لئے چھوڑ دیئے کہ کنٹرول نہتی کے کاروں انہیں ایمانداری اور مطلق سے چلا نامسکن ہو گیا مطلق سے مطلب یہاں اتنا ہی ہے کہ جو انکو کڑ کے لئے واجب بحت دیے گئے۔

اس لئے میں ایسا کرتی پائے کرنا چاہئے جس سے ایسے لوگ نزدیک آئیں اور ایک دوسرے کو چاہیں۔ اسکے بعد وہ آپس میں بھوہار کا سببندہ قائم کر سکیں گے۔ پہلی وہ آپس میں مال بچنے کے لئے اور خریدنے کے لئے اور اہلکاروں کے ذریعے ہونے والی برائی کو متانے میں ایک دوسرے کی مدد کرینگے تاکہ بھوہار چار اور قال متول کو استھان نہ ملے۔ کنٹرول والی چیزوں کے بارے میں انہوں پہلے تو سرکاری کنٹرول کے بھاروں کے انوسار ہی لین دین کرنے کی بھرمک کوشش کرنی چاہئے۔ لیکن جب وہ دیکھوں کہ ایسا کرنا نامسکن ہے، تو انکو اکتھے مل کر وچار کر کے اسکے کاروں کی جانچ کرنی چاہئے اور دوسروں کو سدھارنے کے اور

( ۳۳ )



## शुद्ध ब्योहार आन्दोलन ❀

( भाई किशोर लाल अशरूवाला )

जीवन के हर क्षेत्र में और सार्वजनिक संस्थाओं में भी बेईमानी घुस गई है। मुनाफाखोरी, कालाबाजार, मिलाबट, अरटाचार, सार्वजनिक और ट्रस्ट के पैसों की गड़बड़ी ( गबन ), जालसाजी बगैरा सब बढ़ गए हैं। मानना चाहिये कि गरीब लोगों को या आम जनता को बेहद तकलीफ न हो, इस दरादे से सरकारों ने हमेशा काम में आने वाली कुछ लाख चीजों के दाम कन्ट्रोल का और बँधी मिक्कादर में बँटवारे का तरीका बाखू किया है; लेकिन आम तौर से जनता का मत यह है कि कन्ट्रोल की विचारधारा और उसे लागू करने और अमल में लाने के ढंग का आर्थिक और बदनियती फैलाने का नतीजा इससे कम बुरा नहीं हुआ है, जितना कि कन्ट्रोल और बँधी मिक्कादर से बँटवारा न रहने से होता। हम इतने नीचे गिर गए हैं जितना इसके पहले कभी न गिरे थे।

फिर भी देस में जहाँ तहाँ ईमानदार लोग पाए जाते हैं और वह अपना जीवन ईमानदारी से बिताना चाहते हैं, पर आज की आर्थिक व्यवस्था में और हालत में ऐसा करना उनके लिये बहुत मुशकिल हो जाती है। ऐसे लोग समाज के हर वर्ग में—किसानों, माल पैदा करने वालों, बेचने वालों, माल का उपयोग करने वालों, सरकारी नौकरों बगैरा सब में हैं। वह अपने को एक जंजाल में

❀ आशा कहीं कहीं आसान कर दी गई है—एडीटर.

## शुद्ध ब्योहार आन्दोलन \*

( भीमानी केशू लाल मेश्रम वाला )

जहों के हर चहेतर में और सार्वजनिक संस्थानों में भी बेईमानी कस गئی है। मनाफे खोरी, बला बाजार, मिलावट, बेइशतजा, सार्वजनिक और ट्रस्ट के पैसों की कुरबु ( गबन ) जमल सारी वधुदे खोब बोध गئی हैं। मानना चाहते के खुरीब लोको को या आम जलता को बेइशत तकलीफ न हो, इस इरादे से सरकारों ने हमेशा काम में आने वाली कुछ खास चीजों के दाम कन्ट्रोल का और बदनियती फैलाने का तरीका बाखू किया है; लेकिन आम तौर से जनता का मत यह है कि कन्ट्रोल की विचारधारा और बँधी मिक्कादर से बँटवारे का नतीजा इससे कम बुरा नहीं हुआ है, जितना कि कन्ट्रोल और बदनियती फैलाने का नतीजा इससे कम बुरा नहीं होता। हम इतने नीचे गिर गए हैं जितना इसके पहले कभी न गिरे थे।

फिर भी देस में जहाँ तहाँ ईमानदार लोग पाए जाते हैं और वह अपना जीवन ईमानदारी से बिताना चाहते हैं, पर आज की आर्थिक व्यवस्था में और हालत में ऐसा करना उनके लिये बहुत मुशकिल हो जाता है। ऐसे लोग समाज के हर वर्ग में—किसानों, माल पैदा करने वालों, बेचने वालों, माल का उपयोग करने वालों, सरकारी नौकरों वधुदे सब में हैं। वह अपने को एक जंजाल में

\* मनाफा कस की दे गئی है—एडीटर.



है कि यह स्कूल पूरबी पंजाब में बुनियादी तालीम के तरीक़े को फैलाने का एक अच्छा केन्द्र बन जायगा।

मई १९४६ से अब तक जो खादी काम हुआ है वह बहुत उत्साह बढ़ाने वाला है। कुल ६० वहाँ बाक्रायदा रोज़ चर्खों चलाती हैं। कटाई की मजदूरी खादी और नक़द के रूप में दी जाती है। मिरान की तरफ़ से कसिनों को चरखे दिये गए हैं। अब तक के कामों का व्योरा नीचे दिया जाता है—

रुई दी गई—१० मन, ६ सेर

सूत खरीदा गया—१२ मन, १९ सेर  $५\frac{३}{४}$ -छटाँक

खादी बनवाई गई—१८३ गज

गांधी राश्ट्री स्कूल के लड़कों ने सूत काता—१० सेर  $७\frac{३}{१०}$ -छटाँक

हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी में

अच्छी, बस्ती, और साफ़ छपाई के लिये

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिये।

बाहर का काम पूरी खिस्मेबारी के साथ किया जाता है।

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४५, मुहम्मिन,  
इलाहाबाद।

पुस्तकालय में प्रवेश करने पर ध्यान दें

है कि ये स्कूल पुरबी पंजाब में बुनियादी तालीम के तरीक़े को फैलाने का एक अच्छा केन्द्र बन जायगा।

मई १९४६ से अब तक जो खादी काम हुआ है वह बहुत उत्साह बढ़ाने वाला है। कुल ६० वहाँ बाक्रायदा रोज़ चर्खों चलाती हैं। कटाई की मजदूरी खादी और नक़द के रूप में दी जाती है। मिरान की तरफ़ से कसिनों को चरखे दिये गए हैं। अब तक के कामों का व्योरा नीचे दिया जाता है—

रुई दी गई—१० मन, ६ सेर

सूत खरीदा गया—१२ मन, १९ सेर  $५\frac{३}{४}$ -छटाँक

खादी बनवाई गई—१८३ गज

गांधी राश्ट्री स्कूल के लड़कों ने सूत काता—१० सेर  $७\frac{३}{१०}$ -छटाँक

हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी में

अच्छी, बस्ती, और साफ़ छपाई के लिये

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिये।

बाहर का काम पूरी खिस्मेबारी के साथ किया जाता है।

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४५, मुहम्मिन,  
इलाहाबाद।



मुसलमानों की हालत अपनी आँखों देखी, कानों सुनी और नाथब लहसीलदार 'भारत रत्न' को मुकर्रर किया जिन्होंने बड़ी ईमानदारी और मेहनत से काम किया. अन्धबाला खिले के और जगाधरी के सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों ने बड़ी मेहनत के साथ उजड़े हुए और बेदखल मुसलमानों को उनके घर, जमीन और बाग बगीचों को दिलवाया. सद्भावना मिशन के काजकर्तों ने सरकारी कर्मचारियों की मदद से जगाधरी लहसील के गाँवों में मुसलमानों के लिये इतना अच्छा वातावरण पैदा कर दिया कि अब हिन्दू मुसलमान और सिक्ख पिछली कटुता को भुला कर प्रेम के साथ रहने लगे. इन गाँवों में खिला गुजरात और गुजरातवाला और खिला सरगोथा के रहने वाले हिन्दू और मुसलमान शरणार्थियों को जमीन और मकान दिये गए हैं. मुसलमानों की हर एक समस्या, बीदागह और कबरिस्तान और मजार वापस दे दिये गए हैं और वह बेखटके मसजिदों में अजान देते हैं और नमाज पढ़ते हैं. वह अपनी खेती बाड़ी कर रहे हैं. उन्हें पंजाब सरकार वेल, बीज और घर के लिये तकावी दे रही है. लगभग १२५ उजड़े मुसलमानों को फिर से बसाया गया है.

### तालीम और खादी-काम

गाँव में जो तीन बुनियादी स्कूल और खादी केन्द्र चाले किये गए थे वह अब बंद हो चुके हैं, पर बुढ़िया के गाँधी रास्ट्री स्कूल और खादी-केन्द्र अभी तक चालू हैं. इस स्कूल में २८ लड़कियाँ और ४८ लड़के हैं. बुनियादी तरीके के अनुसार वह तालीम पा रहे हैं. इन बच्चों को हिन्दी भाषा, प्रार्थना, सफाई और सूत कातने और दिवाब, भूगोल और समाज सेवा की तालीम मुफ्त दी जाती है. बच्चों को जलपान भी दिया जाता है. हर एक त्योहार को रास्ट्री ढँग पर मनाया जाता है. स्कूल के लिये जमीन तलाश की जा रही है. आशा

न्या हलद      पत्थारों के किल्लेदारों का पहर-बंदू      मत्ती सन ०१

मुसलमानों की हालत ऐसी अन्कहों दिकही. कानों सुनी और नाथब लहसीलदार 'भारत रत्न' को मुकर्रर किया जिनहों ने बड़ी ईमानदारी और मेहनत से काम किया. अम्बाले खले के और जगाधरी के सरकारी अदहकारों और कर्मचारियों ने बड़ी मेहनत के साथ अजड़े हुऐ और बेदखल मुसलमानों को उनके घर, जमीन और बाग बगिचों को दिलाया. सद्भावना मिशन के काज कर्तों ने सरकारी कर्मचारियों की मदद से जगाधरी लहसील के गाँवों में मुसलमानों के लिये इतना अच्छा वातावरण पैदा कर दिया कि अब हलद मुसलमानों की समस्या, बीदागह और कबरिस्तान और मजार वापस दे दिये गये हैं और वे बेखटके मसजिदों में अजान दिये और नमाज पढ़ते हैं. वे अपनी खेती बाड़ी कर रहे हैं. उन्हें पंजाब सरकार वेल, बीज और घर के लिये तकावी दे रही है. रक बेग १२५ अजड़े मुसलमानों को फिर से बसाया गया है.

### तعليم اور كهادي-كام

گاؤں میں جو تھیں ہلہادی اسکول اور کہادی کھنڈر چالو کئے گئے تھے وہ اب بند ہو چکے ہیں، پر بڑیا کے لاندھی راشتری اسکول اور کہادی کھنڈر ابھی تک چالو ہیں. اس اسکول میں ۲۸ لڑکیاں اور ۴۸ لڑکے ہیں. ہلہادی طریقے کے انوسار وہ تعلیم پا رہے ہیں. ان بچوں کو ہلہادی بھاشا، پراثرتہا، صفائی اور سوت کاٹنے اور حساب بھوکول اور سماج سہوا کی تعلیم مفت دی جاتی ہے. بچوں کو جال پان بھی دیا جاتا ہے. ہر ایک تھوہار کو راشتری قہلگ پر ملہایا جاتا ہے. اسکول کے لئے زمین تلاش کی جا رہی ہے. آشا



को उनके गाँवों में पहुँचाया गया और वह इधर उधर के खंडहरों में और मोपड़ियों में बड़ी मुसीबत के साथ अपने दिन काटने लगे।

### रचनात्मक काम

पं० सुन्दरलाल की प्रेरना से मैं भी बुड़िया के सदभावना मिशन में शामिल हुआ और समय समय पर मिशन के काजकर्ताओं के साथ गाँवों में दौरा करके नजदीक से और असली रूप में हालत को देखा। सन १९४६ के शुरू में गाँव-सेवा की योजना माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू के सामने रखी गई। उस योजना के मुताबिक गाँवों में खादीकाम, सफाई और बच्चों को बुनियादी तालीम देने का काम रक्खा गया था। नेहरू जी ने बड़े प्रेम के साथ इन कामों के लिये खास सहायता प्रधान-मंत्री-कोश से दिलवाई। आजमगढ़, खिला उत्तर प्रदेश के सात ट्रेनिंग पाप हुए नौजवान काजकर्ताओं को सदभावना मिशन में शामिल करके गाँवों में रचनात्मक काम शुरू किया गया। ये नौजवान खादी काजकर्ता की ट्रेनिंग ले चुके थे और सभी होनहार और साहसी थे। उन्होंने १९४९ की गर्मियों में चार रास्ट्री स्कूलों को बलग बलग केन्द्रों में चालू किया, जिससे शरनाथियों के साथ इनका गहरा नाता हो गया। कताई का काम भी चालू किया गया। कुल भारत भरखा संघ की पंजाब शाखा ने भी खादी काम में सहायता दी।

### फिर पुराने सुखी दिन

भीमानी मृदुला बदन की देख रेख में धीरे धीरे बुड़िया का सेवा-काम अपना असर जमाने लगा। १९५० के अप्रैल में नेहरू-लियाकत-अली समझौता हुआ, जिसका असर हिन्दू मुसलमानों और प्रादेशिक सरकारों पर पड़ा। पूरबी पंजाब में उस समय एक मजबूत संघी मंडल माननीय डा० गोपीचंद भार्गव ने बना लिया था। उनकी प्रेरना से कमिशनर मद्राश ने तहसील का दौरा किया और सबदे

को उनके गाँवों में पहुँचाया गया और वह इधर उधर के खंडहरों में और मोपड़ियों में बड़ी मुसीबत के साथ अपने दिन काटने लगे।

### दिल्लतक काम

दिल्लत सल्लर लाल की प्रेरना से मैं भी बुड़िया के सदभावना मिशन में शामिल हुआ और उसे प्रेम के साथ कानों के साथ गाँवों में दौरा करके नजदीक से और असली रूप में हालत को देखा। सन १९४६ के शुरू में गाँव-सेवा की योजना माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू के सामने रखी गई। उस योजना के मुताबिक गाँवों में खादीकाम, सफाई और बच्चों को बुनियादी तालीम देने का काम रक्खा गया था। नेहरू जी ने बड़े प्रेम के साथ इन कामों के लिये खास सहायता प्रधान-मंत्री-कोश से दिलवाई। आजमगढ़, खिला उत्तर प्रदेश के सात ट्रेनिंग पाप हुए नौजवान काजकर्ताओं को सदभावना मिशन में शामिल करके गाँवों में रचनात्मक काम शुरू किया गया। ये नौजवान खादी काजकर्ता की ट्रेनिंग ले चुके थे और सभी होनहार और साहसी थे। उन्होंने १९४९ की गर्मियों में चार रास्ट्री स्कूलों को बलग बलग केन्द्रों में चालू किया, जिससे शरनाथियों के साथ इनका गहरा नाता हो गया। कताई का काम भी चालू किया गया। कुल भारत भरखा संघ की पंजाब शाखा ने भी खादी काम में सहायता दी।

### पूर पुराने सुखी दिन

भीमानी मृदुला बदन की देख रेख में धीरे धीरे बुड़िया का सेवा-काम अपना असर जमाने लगा। १९५० के अप्रैल में नेहरू-लियाकत-अली समझौता हुआ, जिसका असर हिन्दू मुसलमानों और प्रादेशिक सरकारों पर पड़ा। पूरबी पंजाब में उस समय एक मजबूत संघी मंडल माननीय डा० गोपीचंद भार्गव ने बना लिया था। उनकी प्रेरना से कमिशनर मद्राश ने तहसील का दौरा किया और सबदे



नया हिन्दू बटवारे के खंडहरों के फिर-बनाव मई सन् '५१

मुसलमानों को राहत पहुँचाने और फिर से बसाने के लिये एक सद्भावना (गुड विल) मिशन क्रियम किया गया। इस मिशन में पंजाब प्रान्त के कुछ ऐसे हिन्दू और सिक्ख काँग्रेस काजकर्ता शामिल हुए, जिन पर फिरकापरस्ती और साम्रदायिकता का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा था। इन काँग्रेस सेवकों में श्री मुंशीराम मल्लिक, हरिवंश सिंह 'बागी' और सरदार दयाल सिंह खास थे। इस सद्भावना मिशन का सदर दफ्तर जगाधरी तहसील के पास बुढ़िया नाम के इतिहासी कस्बे में रक्खा गया। बुढ़िया के रहने वाले रईस सरदार रतन बनमोल सिंह के पूरे परिवार ने सद्भावना मिशन के कामों में दिल से सहायता पहुँचाई और काजकर्ताओं को हर तरह से सहयोग दिया। चोर लथल पुथल के दिनों में भी इस सिक्ख कुटुम्ब ने मुसलमानों की हिराजत के लिये बहादुरी के साथ काफ़ी कोशिश की थी। वबराए हुए मुसलमानों के डर को छुड़ाने के लिये भारतीय सेना की एक टुकड़ी भी रखी गई। गाँवों में दौरा कर के पच्छिमी पंजाब से आए हुए मुसलमान-हिन्दू शरणार्थियों को भारत सरकार की नीत बताई गई और आपस में मिलजुल कर रहने और डर छोड़ देने की बात आच्छी तरह समझा दी गई। बाद में मुसलमान शरणार्थियों को बास तरह से राहत देने के लिये बुढ़िया में पूरबी पंजाब की सरकार ने एक कैम्प खलाया, जिसमें लगभग तीन हजार मुसलमान औरत, मर्द और बच्चे दाखिल हुए। यह कैम्प जनवरी १९४६ से जनवरी '५० तक बाबू रहा। कैम्प में शरणार्थियों के रहने के लिये जगह दी गई थी और सभी को खाना और जलपान रोब मिलता था। मुसलमान शरणार्थी अपने घरों को वापस जाने के लिये काफ़ी परेशान और बेचैन थे। इसलिये सद्भावना मिशन के काजकर्ताओं को सरकारी कर्मचारियों की सहायता से गाँव में मुसलमानों को फिर से बसाने के लिये लगान देने का इन्तजाम किया गया। सीरे पुरे मुसलमानों

नया हलद बटवारे के कलंदरों का पहर-भंगा मई सन् '५१

मुसलमानों को राहत पहुँचाने और पहर से बसाने के लिये एक सद्भावना (गुड विल) मिशन क्रियम किया गया। इस मिशन में पंजाब प्रान्त के कुछ ऐसे हिन्दू और सिक्ख काँग्रेस काजकर्ता शामिल हुए, जिन पर फिरकापरस्ती और साम्रदायिकता का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा था। इन काँग्रेस सेवकों में श्री मुंशीराम मल्लिक, हरिवंश सिंह 'बागी' और सरदार दयाल सिंह खास थे। इस सद्भावना मिशन का सदर दफ्तर जगाधरी तहसील के पास बुढ़िया नाम के इतिहासी कस्बे में रक्खा गया। बुढ़िया के रहने वाले रईस सरदार रतन बनमोल सिंह के पूरे परिवार ने सद्भावना मिशन के कामों में दिल से सहायता पहुँचाई और काजकर्ताओं को हर तरह से सहयोग दिया। चोर लथल पुथल के दिनों में भी इस सिक्ख कुटुम्ब ने मुसलमानों की हिराजत के लिये बहादुरी के साथ काफ़ी कोशिश की थी। वबराए हुए मुसलमानों के डर को छुड़ाने के लिये भारतीय सेना की एक टुकड़ी भी रखी गई। गाँवों में दौरा कर के पच्छिमी पंजाब से आए हुए मुसलमान-हिन्दू शरणार्थियों को भारत सरकार की नीत बताई गई और आपस में मिलजुल कर रहने और डर छोड़ देने की बात आच्छी तरह समझा दी गई। बाद में मुसलमान शरणार्थियों को बास तरह से राहत देने के लिये बुढ़िया में पूरबी पंजाब की सरकार ने एक कैम्प खलाया, जिसमें लगभग तीन हजार मुसलमान औरत, मर्द और बच्चे दाखल हुए। यह कैम्प जनवरी १९४६ से जनवरी '५० तक चला रहा। कैम्प में शरणार्थियों के रहने के लिये जगह दी गई थी और सभी को खाना और जलपान रोब मिलता था। मुसलमान शरणार्थी अपने घरों को वापस जाने के लिये काफ़ी परेशान और बेचैन थे। इसलिये सद्भावना मिशन के काजकर्ताओं को सरकारी कर्मचारियों की सहायता से गाँव में मुसलमानों को फिर से बसाने के लिये लगान देने का इन्तजाम किया गया। सीरे पुरे मुसलमानों



बत्तीषार हुए जैसे राबलपिन्ही और सुलतान की सुसलाम-बहुमत-कमिशनरियों में हिन्दुओं पर हुए थे. सहारनपूर खिले (उत्तर प्रदेश) की सीमा पर जगाधरी तहसील है. बीच में केवल जमना नदी पड़ती है. इसलिये तुरी तरह भगदड़ के समय बहुत से सुसलामान अपने घरों को छोड़ कर उत्तर प्रदेश में आ गए थे. पच्छिमी पंजाब से आए हुए हिन्दुओं ने उनके घरों पर अधिकार कर लिया. बड़ी बड़ी जमीनान मसजिदें या तो सूनी पड़ गईं या उनमें हिन्दू शरनार्थी ठिक गए.

### फिर-बनब का काम

शरनार्थियों और उखड़े हुए लोगों को फिर से बसाने और सहायता देने के लिये भारत सरकार ने 'संयुक्त सहायता और कल्याणकारी कौन्सिल' क्रायम की, जिसकी तरफ से जगह जगह पर कैम्प क्रायम किये गए और शरनार्थियों को उनमें टहराया गया. बाद में भारत सरकार ने असाम्प्रदायिक प्रजातंत्र राज का ऐलान करके हर तरह से दुखी हिन्दू, सुसलामान और सिक्कों को एकसी हमदर्दी और इनसाफ करने का बिरबास दिलाया. जगाधरी तहसील के लगभग बीस हजार सुसलामान उत्तर प्रदेश के पच्छिमी जिलों में पनाह ले रहे थे. भारत सरकार के ऊपर बताए ऐलान को सुन कर उनकी जान में जान आ गई और वह अपने घरों को वापस जाने के लिये बेचैन होने लगे. लेकिन डर और आतंक से बातावरन इतना जहरीला हो चुका था कि सुसलामान का रेलों में सफर करना या किसी जगह में चले जाना उन दिनों खतरे से खाली नहीं था.

### इनसानियत सो नहीं गई थी

खबरदस्ती भगाई गई औरतों के उद्धार के लिये श्रीमती मृदुला बहिन साराभाई संयुक्त सहायता समिति की तरफ से काम कर रही थीं. बन्दी की प्रेरना से जगाधरी तहसील के रजड़े प

अन्हाजार हुन जेसे रारलपिन्ही और मलान की مسلم बेहस्त कश्मिरियों में हल्लूयों पर हुनै ते. सभान पुर वल (अत्र प्रदिश) की सभा पर जगाधरी तखसल है. बिज में कुरल जमल नदी पड़ती है. इस लैने प्री तरह बेकदर के से बेत से सुसलामान अने कुरों को चहोर कर अत्र प्रदिश में आँके ते. पच्छी पंजाब से आँके हुनै हल्लूयों ने आँके कुरों पर अन्हाकार कर लिया. प्री प्री हालिशान मसजिदों या तो सुनी पड़ कथें या आँ में हल्लूय शरनार्थी तक कैं.

### पेर-पला का काम

शरनार्थियों और अकुरे हुनै लुरों को पेर से बसाने और सहायता देने के लैने सभार सरकार ने 'सलिकत सहायता और कल्याणकारी कौन्सिल' क्वांम की, जसकी तरफ से जके प्र कसप क्वांम कैं कैं और शरनार्थियों को आँ में त्पेर लिया. बेद में सभार सरकार ने असाम्प्रदायिक प्रजा तन्त्र राज का अलान कर के हर तरह से दुखी हल्लूयों, सुसलामान और सिक्कों को एक सी हल्लूयों और अन्साफ करने का वशुवास दलिया. जगाधरी तखसल के लैक बेक बिस् हजार सुसलामान अत्र प्रदिश के पच्छी वल्लों में पनाह ले रहे ते. सभार सरकार के ओर भ्वाँ अलान को सुन कर आँ की जान में जान आँकी और ओ अने कुरों को वापस जाने के लैने बिजमें हुनै लैने. लिकन डर और अतंक से रानाउन अन्दा जहरीला हो चका तेा के सुसलामान का रेलों में सफर करना या किसी जके में चले जाना आँ दनों खतुरे से खाली न्हें तेा.

### अन्सानियत सो न्हें कैं तेी

जुरदस्ती भ्वाँ कैं औरतों के अदहार के लैने शुरियती मरुला में सारा भ्वाँ सलिकत सहायता समिति की तरफ से काम कर रही तेहें. अन्हें की प्रेरना से जगाधरी तखसल के अजुरे हुनै



उन्होंने अपना काम बहुत ही मिठास और ईमानदारी के साथ किया और जब उन्हें सिगरेट या चाय का एक प्याला पेश किया गया तो उन्होंने लेने से साफ़ इनकार कर दिया। जहाज़ के अफसरों ने मुझसे कहा कि इससे पहले किसी जहाज़ के चीनी बन्दरगाह में पहुँचते ही चीनी सरकारी अफसर टिड्डी दल की तरह जहाज़ पर चढ़ आते थे और खुले मुफ्त का खाना और मुफ्त की शराबें मांगते थे जब तक कि जहाज़ वहाँ से चल न दे। हमारे जहाज़ के सब अफसर और बादमी एक जगह बुलाए गए जहाँ पर किसी ने नए चीन के ऊपर उन्हें बड़े जोश के साथ लेकर दिया।”

यू० एन० ओ० में उन दिनों इस बात पर बहस चल रही थी कि चीन को हमलावर (एग्सेसर) ठहराया जाए या न ठहराया जाए। जो खबरे चीन पहुँचती थीं उनसे वहाँ के लोगों में भी आशा और निराशा की लहरें दौड़ती रहती थीं। जब चीन की सरकार ने अपनी तरफ से लड़ाई बन्द कर देने का इरादा जाहिर किया तो चीन में एक उम्माद की लहर दौड़ गई। यह बादा इस शर्त पर था कि सात बड़ी बड़ी हुकूमतों की कौन्फ़रेंस कर के उनके सामने सारा मामला रक्खा जायगा। पर जब आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, फ्रान्स, कैनडा और इंग्लैंड तक ने यह मान लिया कि कारिया में चीन हमलावर है तो फिर चीनियों में निराशा छा गई।

बह लिखते हैं—“नए चीन के नेताओं की ईमानदारी और सच्चाई पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। उन्होंने बरसों कभी छिप कर और कभी खुले मैदान में आकर अपने देस के शत्रुओं के साथ जांग की है और अन्त में ग़ज़ब की सफलता हासिल की है। वह इस बात को पूरी तरह समझते हैं कि देस की असली रचना का इतना बड़ा काम अभी उन्हें पूरा करना है। वह समझते हैं कि अभी उन्हें दूसरी पार्टियों को साथ लेकर सरकारें बनानी होंगी और अभी बहुत दिनों तक लोगों को अलग अलग निजी धंदों और निजी सम्पत्ति रखने

अन्यों ने अपना काम बेहतरीन म्तास और ईमानदारी के साथ किया और जब उन्होंने सग़रित या चाय का एक प्याले पेश किया तो उन्होंने लेने से साफ़ इनकार कर दिया। जहाज़ के अफसरों ने मुझसे कहा कि इससे पहले किसी जहाज़ के चीनी बन्दरगाह में पहुँचते ही चीनी सरकारी अफसर दल की तरह जहाज़ पर चढ़ आते थे और खुले मुफ्त का खाना और मुफ्त की शराबें मांगते थे जब तक कि जहाज़ वहाँ से चल न दे। हमारे जहाज़ के सब अफसर और बादमी एक जगह बुलाए गए जहाँ पर किसी ने नए चीन के ऊपर उन्हें बड़े जोश के साथ लेकर दिया।”

यू० एन० ओ० में उन दिनों इस बात पर बहस चल रही थी कि चीन को हमलावर (एग्सेसर) ठहराया जाए या न ठहराया जाए। जो खबरे चीन पहुँचती थीं उनसे वहाँ के लोगों में भी आशा और निराशा की लहरें दौड़ती रहती थीं। जब चीन की सरकार ने अपनी तरफ से लड़ाई बन्द कर देने का इरादा जाहिर किया तो चीन में एक उम्माद की लहर दौड़ गई। यह बादा इस शर्त पर था कि सात बड़ी बड़ी हुकूमतों की कौन्फ़रेंस कर के उनके सामने सारा मामला रक्खा जायगा। पर जब आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, फ्रान्स, कैनडा और इंग्लैंड तक ने यह मान लिया कि कारिया में चीन हमलावर है तो फिर चीनियों में निराशा छा गई।

वे लिखते हैं—“नए चीन के नेताओं की ईमानदारी और सच्चाई पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। उन्होंने बरसों कभी छिप कर और कभी खुले मैदान में आकर अपने देस के शत्रुओं के साथ जांग की है और अन्त में ग़ज़ब की सफलता हासिल की है। वह इस बात को पूरी तरह समझते हैं कि देस की असली रचना का इतना बड़ा काम अभी उन्हें पूरा करना है। वह समझते हैं कि अभी उन्हें दूसरी पार्टियों को साथ लेकर सरकारें बनानी होंगी और अभी बहुत दिनों तक लोगों को अलग अलग निजी धंदों और निजी सम्पत्ति रखने



उन्होंने लिखा है कि चीनियों का बरताव उनके साथ बहुत ही प्रेम और खातिरदारी का था. रेल से सफर करते हुए उन्होंने देखा कि उस रेल पर सब अफसर और पुलिस वाले औरतें थीं. रेलों में लघर से इधर तक सिर्फ एक ही दरजा था. भारत की तरह अलग अलग दरजे नहीं थे. रेलों में लाउड इस्पिकर लगे हुए थे जो बारी बारी कभी गाना सुनाने रहते थे और कभी राजकाजी और दूसरी तरह के लोकचर. इन लोकचरों में इस तरह की बातें बताई जाती थीं कि आदमी को अपने पड़ोसियों के साथ कैसा बरताव करना चाहिये, रेलों में कैसे बैठना चाहिये, अपनी और दूसरों की तन्दुरुस्ती का कैसे खयाल रखना चाहिये वगैरा.

वह लिखते हैं कि चीनी सब बाहर वालों के साथ और एक दूसरे के साथ बहुत ही मिठास और प्रेम का बरताव करते हैं.

वहाँ उन्हें बहुत सी फ्रॉमिसी, रूसी और दूसरी विदेशी औरतें और विदेशी मर्द मिले जो सब चीनियों के बरताव से बहुत खुश थे. लिखते हैं कि—“मुझे एक भी गैर चीनी ऐसा नहीं मिला जिसने जोरो के साथ यह न कहा हो कि इससे पहले की कोमिटिंग सरकार के मुकाबले में या किसी भी सरकार के मुकाबले में जो लोगों को बाद है आजकल का जनराज इतना बढ़कर है कि दोनों में कोई मुकाबला ही नहीं किया जा सकता.”

पिछले तीस या अधिक बरसों में पहली बार चीजों की कीमतें ढंग पर आकर टिकी हैं, मँहगाई रुकी है और काराजो सिककों की तादाद कम हुई है. इन बातों से सारी जनता बहुत खुश है. चीन में पहली बार फ्रीज के सिपाही यह बात जान गए हैं कि वह जनता के रक्षक और सेवक हैं मालिक नहीं.

सर आर्थर लिखते हैं—“जब मेरा जहाज टोनसिन पहुंचा तो केवल वह सरकारी अफसर जहाज पर आए जिन्हें कुछ काम था.

अनेक ने कहा है कि चीनियों का बर्ताव उनके साथ बहुत ही प्रेम और खातुदारी का था. रेल से सफर करते हुये अनेक ने देखा है अस् रेल पर सब अफसर और पुलिस वाले औरतें थे. रेलों में अदर तक सिर्फ एक ही दरजे था. भारत की तरह अलग अलग दरजे नहीं थे. रेलों में लाउड स्पिकर लगे हुये थे जो बारी बारी कभी गाना सुनाने रहते थे और कभी राजकाजी और दूसरी तरह के लोकचर. इन लोकचरों में इस तरह की बातें बताई जाती थीं कि आदमी को अपने पड़ोसियों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये, रेलों में कैसे बैठना चाहिये, अपनी और दूसरों की तन्दुरुस्ती का कैसे खयाल रखना चाहिये वगैरा.

वे लिखते हैं कि चीनी सब बाहर वालों के साथ और एक दूसरे के साथ बहुत ही मिठास और प्रेम का बर्ताव करते हैं.

वहाँ अनेक बहुत सी फ्रॉमिसी, रूसी और दूसरी विदेशी औरतें और विदेशी मर्द मिले जो सब चीनियों के बर्ताव से बहुत खुश थे. लिखते हैं कि—“मुझे एक भी गैर चीनी ऐसा नहीं मिला जिसने जोरो के साथ यह न कहा हो कि इससे पहले की कोमिटिंग सरकार के मुकाबले में या किसी भी सरकार के मुकाबले में जो लोगों को बाद है आजकल का जनराज इतना बढ़कर है कि दोनों में कोई मुकाबला ही नहीं किया जा सकता.”

पिछले तीस या अधिक बरसों में पहली बार चीजों की कीमतें ढंग पर आकर टिकी हैं, मँहगाई रुकी है और काराजो सिककों की तादाद कम हुयी है. इन बातों से सारी जनता बहुत खुश है. चीन में पहली बार फ्रीज के सिपाही यह बात जान क्ते हैं कि वह जनता के रक्षक और सेवक हैं मालिक नहीं.

सर आर्थर लिखते हैं—“जब मेरा जहाज टोनसिन पहुंचा तो केवल वे सरकारी अफसर जहाज पर आे जिनमें कुछ काम था.



## لال चीन

[ मशहूर आंगरेजी पत्रकार सर आर्थर मूर जो स्टेट्समैन, के एडीटर रह चुके हैं, हाल में चीन गए थे। वहाँ का जो आँखों देखा हाल उन्होंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में बयान किया है उसकी कुछ बातें हम नीचे देते हैं। —एडीटर ]

सर आर्थर जहाज़ में बैठे फारमूसा के पास चीन की तरफ बढ़ रहे थे कि समन्दर में ही बहुत सवें और फिर दोबारा शाम को कुछ अमरीकी हवाई जहाज़ इनके पानी के जहाज की तरफ उतरे। अमरीकी जहाजों ने इनके जहाज का चक्कर लगाया और इनके जहाज के बिलकुल बराबर में आकर जब यह तसल्ली करली कि यह जहाज इंगलिस्तान का जहाज है किसी गैर का नहीं तो फिर हवा में ऊपर उड़ गए।

सर आर्थर पूरा एक महीना चीन में रहे। वह कोरिया और जापान भी हो आए।

चीन के नए जनराज (रिपबलिक) के काम और मंसूबों को वह ठोस और अमली बताते हैं और लिखते हैं कि उनमें रुखा समाजवाद (सोशलिज्म) या साम्यावाद (कम्युनिज्म) नहीं है।

फारमूसा की बात वह लिखते हैं कि अमरीका इंगलैन्ड और दूसरी मित्र शक्तियाँ हाल में इस पर अपनी रजामंदी जाहिर कर चुकी हैं कि फारमूसा चीन को वापिस दे दिया जाए चाहे चीन में किसी भी दुर्कृत क्यों न हो। इसलिये सर आर्थर की राय है कि फारमूसा चीन ही को मिलना चाहिये।

## لال चीन

[ मशहूर अंगरेजी पत्रकार सर आर्थर मूर जो 'स्टेट्समैन' के एडिटर रहे जहाँ वे 'हाल में चीन गए थे' वहाँ का जो आँखों देखा हाल उन्होंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में बयान किया है उसकी कुछ बातें हम नीचे देते हैं। —एडिटर ]

सर आर्थर जहाज में बैठे फारमूसा के पास से चीन की तरफ बढ़ रहे थे कि समन्दर में ही बहुत सवें और फिर दोबारा शाम को कुछ अमरीकी हवाई जहाज उनके पानी के जहाज की तरफ उतरे अमरीकी जहाजों ने उनके जहाज का चक्कर लगाया और उनके जहाज के बिलकुल बराबर में आकर जब यह तसल्ली करली कि यह जहाज अंगलिस्तान का जहाज है किसी गैर का नहीं तो फिर हवा में ऊपर उड़ गئے।

सर आर्थर पूरा एक महीना चीन में रहे। वह कोरिया और जापान भी हो आئے।

चीन के नئے जनराज (रिपबलिक) के काम और मन्सूबों کو وہ ٹھوس اور عملی بتاتے ہیں اور لکھتے ہیں کہ اُن میں روکھا سماج (سوشلزم) یا سامیہ واد (کمونزم) نہیں ہے۔

فارموسا کی بابت وہ لکھتے ہیں کہ امریکہ 'انگلینڈ اور دوسری مترشکتیاں حال میں اِس پر اپنی رضامندی ظاہر کر چکی ہیں کہ فارموسا چین کو واپس دے دیا جائے چاہے چین میں کسی بھی حکومت کہوں نہ ہو۔ اِس لئے سر آرتھر کی رائے ہے کہ فارموسا چین ہی کو ملنا چاہیئے۔



सब चीजें एहतियात के साथ बाँध कर हटाई जा रही थीं। मुझे ख्याल हो आया कि ठीक इसी तरह काँग्रेस के संगठन को ही क्यों न बाँध लिया जाये। बहुत शान के साथ काँग्रेस ने अपना मकसद पूरा किया है। सारा आलम इसके कारनामों से रीशन है। लेकिन हर चीज जो आती है, जाती भी है। यह कदरत का कानून है। खूबी इसी में है कि जैसे सूरज लुप्त हो किरनें समेट लेता है, काँग्रेस भी अपने को समेट ले और दूसर राज ताजी शकल में—लोक सेवक संघ का फूल बन कर—फूले फले। मगर जो जमात या आदमी ऐसा नहीं करते उनका आत्मा खबरदस्ती हो जाता है और ऐसी घड़ी पर उनकी मृत भी मारी जाती है।

मुझे लगा कि काँग्रेस की वह घड़ी आ गई। आहमदाबाद की बैठक से काँग्रेस का पतन और अन्तन शुरू हो गया। अनाथों का यह मुँह अब अपने को शायद ही सँभाल सके। लेकिन अभी वक्त है। श्री जवाहरलाल नेहरू ऊपर के अपने एक जुमले पर गौर करें, काँग्रेस से उस पर गौर करायें। उसको अमल में लायें। तभी हम सब कह सकेंगे—

“कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।”

किसी भी अखबार का पहला काम है लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना; दूसरा काम है लोगों में जिन भावनाओं की जरूरत हो उन्हें जगाना; और तीसरा काम है लोगों में अगर कोई ऐब हो तो उन्हें किसी भी सुसीबत की परवाह न कर बेचबूदक सब के सामने रख देना।

—महात्मा गाँधी

सब चीजों अहसास के साथ बान्धकर हथकड़ी जामें तहों में छिपे खाल हो आया कि तहक इसी तरह काँग्रेस के सल्लूकों को ही क्यों न बान्ध लिया जायें। बहुत शान के साथ काँग्रेस ने अपना मकसद पूरा किया है। सारा आलम इसके कारनामों से रीशन है। लेकिन हर चीज जो आती है, जाती भी है। यह कदरत का कानून है। खूबी इसी में है कि जैसे सूरज लुप्त हो किरनें समेट लेता है, काँग्रेस भी अपने को समेट ले और दूसर राज ताजी शकल में—लोक सेवक संघ का फूल बन कर—फूले फले। मगर जो जमात या आदमी ऐसा नहीं करते उनका आत्मा खबरदस्ती हो जाता है और ऐसी घड़ी पर उनकी मृत भी मारी जाती है।

मुझे लगा कि काँग्रेस की वह कड़ी आँकी। अहमदाबाद की बैठक से काँग्रेस का पतन और अन्तन शुरू हो गया। अनाथों का यह मुँह अब अपने को शायद ही सँभाल सके। लेकिन अभी वक्त है। श्री जवाहरलाल नेहरू ऊपर के अपने एक जुमले पर गौर करें, काँग्रेस से उस पर गौर करायें। उसको अमल में लायें। तभी हम सब कह सकेंगे—

“कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।”

किसी भी अखबार का पहला काम है लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना; दूसरा काम है लोगों में जिन भावनाओं की जरूरत हो उन्हें जगाना; और तीसरा काम है लोगों में अगर कौन सी ऐब हो तो उन्हें किसी भी सुसीबत की परवाह न कर बेचबूदक सब के सामने रख देना।

—महात्मा गाँधी



बिक्री पर वह पाबन्दी लगादे क्योंकि इस से जनता का नैतिक पतन होता है और तन्दुरुस्ती को भी नुकसान पहुँचता है.

“बनसपत्ती की वजह से बसली खालिस घाँ अब बाजार में कूतई मिलता ही नहीं और इसका नतीजा यह है कि हमारे देस के पशुधन का नुकसान हो रहा है.”

यह ठीक ही हुआ कि करोड़ों इनसानों की जिन्दगी से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा बड़ा ठहराव. वापिस नहीं लिया गया. इस पर रायें ली गई, हाथ उठे, १११ पक्ष में और ५६ खिलाफ. इन छापन में ही थे हमारे केन्द्री प्रधान मंत्रा. कारबारी कमेटी के एक मेम्बर ने भी ठहराव के माफिक वोट नहीं दिया. खिलाफ तो कई एक रहे. इससे पता चलता है कि देस में हवा कैसी बह रही है. हुकुमान को चाहिये कि काँग्रेस के इस फैसले पर अमल करे. नहीं तो, फिर भगवान ही मा.लिक है.

यह बैठक अचानक ही खत्म हो पड़ी. कारन यह हुआ कि मौलाना साहब ने अपील की कि केन्द्री चुनाव बोर्ड के मेम्बरो का चुनाव आज न करके फिर किया जाए. इस पर एक मेम्बर ने कहा कि गौर सरकारी ठहराव भी फिर लिये जायें. इस पर सदर साहब ने हाउस की राय टोल कर कहा कि अब यह ठहराव न लिये जायें और क्योंकि एजेन्डा पर दूसरी कोई चीज है नहीं इसलिये कारवाई खत्म. इस तरह एक बजे यह बैठक उठ गई. उठन के पहले गुजरात काँग्रेस के सदर ने एक लाख रुपये का चेक काँग्रेस सदर टंडन जी को काँग्रेस के खर्च की खातिर दिया. इस रकम का सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कारबारी कमेटी से वादा भी किया था.

इकतीस की रात और पहली तारीख को मेम्बर लोग अपने घर वापिस चल दिये. २ अक्टूबर को सभी रवाना हो चुके थे और स्वागत कमेटी ने डेरे बौरा बहुत सफाई के साथ उखाड़ लिये थे.

भरों पर वे पाबन्दी लगा दे कहने से चला का नैतिक पतन होता है और तन्दुरुस्ती को भी नुकसान पहुँचता है.

“बनसपत्ती की वजह से बसली खालिस घाँ अब बाजार में कूतई मिलता ही नहीं और इसका नतीजा यह है कि हमारे देस के पशुधन का नुकसान हो रहा है.”

यह ठीक ही हुआ कि करोड़ों इनसानों की जिन्दगी से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा बड़ा ठहराव. वापिस नहीं लिया गया. इस पर रायें ली गई, हाथ उठे, १११ पक्ष में और ५६ खिलाफ. इन छापन में ही थे हमारे केन्द्री प्रधान मंत्रा. कारबारी कमेटी के एक मेम्बर ने भी ठहराव के माफिक वोट नहीं दिया. खिलाफ तो कई एक रहे. इससे पता चलता है कि देस में हवा कैसी बह रही है. हुकुमान को चाहिये कि काँग्रेस के इस फैसले पर अमल करे. नहीं तो, फिर भगवान ही मा.लिक है.

यह बैठक अचानक ही खत्म हो पड़ी. कारन यह हुआ कि मौलाना साहब ने अपील की कि केन्द्री चुनाव बोर्ड के मेम्बरो का चुनाव आज न करके फिर किया जाए. इस पर एक मेम्बर ने कहा कि गौर सरकारी ठहराव भी फिर लिये जायें. इस पर सदर साहब ने हाउस की राय टोल कर कहा कि अब यह ठहराव न लिये जायें और क्योंकि एजेन्डा पर दूसरी कोई चीज है नहीं इसलिये कारवाई खत्म. इस तरह एक बजे यह बैठक उठ गई. उठन के पहले गुजरात काँग्रेस के सदर ने एक लाख रुपये का चेक काँग्रेस सदर टंडन जी को काँग्रेस के खर्च की खातिर दिया. इस रकम का सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कारबारी कमेटी से वादा भी किया था.

इकतीस की रात और पहली तारीख को मेम्बर लोग अपने घर वापिस चल दिये. २ अक्टूबर को सभी रवाना हो चुके थे और स्वागत कमेटी ने डेरे बौरा बहुत सफाई के साथ उखाड़ लिये थे.

इकतीस की रात और पहली तारीख को मेम्बर लोग अपने घर वापिस चल दिये. २ अक्टूबर को सभी रवाना हो चुके थे और स्वागत कमेटी ने डेरे बौरा बहुत सफाई के साथ उखाड़ लिये थे.



‘हम से अपील की जाती है कि आपसी मतभेद और गुटबन्धियाँ दूर करो। मैं बड़े आदब से (मंच पर बैठे लोगों) आप से आर्ज करना चाहता हूँ कि आप अपने फरक दूर कर लीजिये, हमारे भेद भी एक दम काफ़ूर हो जाएँगे।’

‘आज जनता की सुनवाई कहाँ है ? अगर हुकूमत सिर्फ़ इतना भर कर दे कि हर शिकायत पर एक माह के अन्दर अमल हो जायेगा तो आपके और जनता के बीच की खाई सहज ही दूर होजायेगी।’

इसी दौरान में आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपलानी का भाशन हुआ। यह तो एक चुनौती थी जो रह रह कर पृच्छती थी कि इस तरह कब तक काम चलेगा ? आप ने कहा— ‘मैं सिपाही हूँ, जान देने के लिये हमेशा तैयार। अपने प्रधान मंत्री के लिये जान दे सकता हूँ। मगर वह क्या चीज़ है, कहाँ है, जिसकी खातिर मैं ऐसा करूँ ?..... आप एकना चाहते हैं लेकिन किस तरह की एकता ? क्या पाकिस्तान में है वैसी ? क्या हिटलर के जर्मनी की जैसी ? क्या क़ज़रिस्तान जैसी ?’

इन सवालों का जवाब कहाँ नहीं था। मगर मेम्बरों को लगा कि उनका जवाब खुद आचार्य जी के पाम भी क्या था—वह क्या चाहते थे कि जिस पर देस चले। सवाल सबका एक है—मगर जवाब नदारद।

अब हम ग़ैर सरकारी ठहरावों को लें। कोई वीस की पेशी थी। मगर बारह के करीब पेश हो सके। श्री जवाहरलाल जी या मौलाना साहब के कहने पर सिवा एक के सब ही वापस ले लिये गये। यह एक था दरभंगा (बिहार) के श्री हृदय नारायण चौधरी का ठहराव जो नीचे दिया जाता है—

“कुल हिन्दू काँग्रेस कमेटी का यह जलसा केन्द्री सरकार से बिनती करता है कि बनसपती व जमाए हुए तेल की पैदावार और

नया हलद अहमदाबाद की कांग्रेस बैठक मती सन ०१

‘मैं से अपील की जाती है कि आपसी मत भेद और गुट बन्धियाँ दूर करो। मैं बड़े आदब से (मेलजम में बैठे लोगों) आप से عرض करना चाहता हूँ कि आप अपने फ़रक दूर कर लीजिये हमारे भेद भी एक दम काफ़ूर होजायेंगे।’

‘आज जनता की सुनवाई कहाँ है ? अगर حکومت صرف़ इतना भर कर दे कि हर शिकायत पर एक माह के अन्दर عمل होजायें तो आर्येक ओर जलमा के बीज की क्हाती सेज ही दूर होजायेंगी।’

इसी दौरान में आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपलानी का भाशन हुआ। यह तो एक चुनौती थी जो रह रह कर पृच्छती थी कि इस तरह कब तक काम चलेगा ? आप ने कहा— ‘मैं सिपाही हूँ, जान देने के लिये हमेशा तैयार। अपने प्रधान मंत्री के लिये जान दे सकता हूँ। मगर वह क्या चीज़ है, कहाँ है, जिसकी खातिर मैं ऐसा करूँ ?..... आप आर्येक चाहते हैं लेकिन क्हाती की आर्येक ? क्या पाकिस्तान में है वैसी ? क्या हिटलर के जर्मनी की जैसी ? क्या क़ज़रिस्तान जैसी ?’

इन सवाल का जवाब क्हाती में ही था। मगर मेम्बरों को लगा कि उनका जवाब खुद आचार्य जी के पास भी क्या था—वह क्या चाहते थे कि जिस पर देस चले। सवाल सब का एक है—मगर जवाब नदारद।

अब हम ग़ैर सरकारी ठहरावों को लें। कोई बीस की पेशी थी। मगर बारह के करीब पेश हो सके। श्री जवाहरलाल जी या मौलाना साहब के कहने पर सिवा एक के सब ही वापस ले लिये गये। यह एक था दरभंगा (बिहार) के श्री हृदय नारायण चौधरी का ठहराव जो नीचे दिया जाता है—

“कुल हिन्दू कांग्रेस कमेटी का यह जलसा केन्द्री सरकार से बिनती करता है कि बनसपती व जमाए हुए तेल की पैदावार और



खतम कर दे—यह वह सलाह है जिसे अब तक तो हमने ठुकराया ही है।” मेरा अपना खयाल है कि इस जुमले के अन्दर काँग्रेस के पिछले तीन बरसों का इतिहास छिपा है।

मौलाना साहब नासिक काँग्रेस के मौके पर एक इस खामोश रहे थे। इसलिये अहमदाबाद में जब वह माइक पर आए तो लोगों ने एक ताबगी महसूस की। उनकी तक्रार की तारीफ करना सूरज की रोशनी दिखाना है। उन्होंने बताया कि यह ठहराव कारवारी कमेटी की तरफ से आखिरी कोशिश है काँग्रेस को एक ठोस आन्दार जमात बनाने की। लेकिन इसका सच्चाई तो आने वाले वक्त की गोद में छिपी है।

इस ठहराव पर जो तक्रारें मेम्बरों ने कीं वह मानो काँग्रेस का आईना हैं। उन्होंने अपना दिल ही चोर कर रख दिया। एक आई ने कहा—“अगर खुलकर बातें करनी हैं तो फिर बरा इतमीनान से हमें बैठना होगा। प्रेस को हटाकर एक बंद बैठक हम करें और तब अपनी दास्तान कहें।” कुछ मेम्बरों के कुछ जुमले हम नीचे देते हैं—

‘आप कहते हैं कि काँग्रेस बरकर कुछ नहीं करता। मैं पूछता हूँ, वह क्या करे ? क्या कोई प्रोग्राम, कोई मकसद आपने उसके आगे रखा है जिसकी उसे पाबन्दी करनी हो। और फिर आप उसका इतमीनान या यकीन कितना करते हैं ?’

‘यह कहा जाता है कि हम अपनी जरबानी की कीमत बसूल कर रहे हैं। मैं पूछता हूँ क्यों चाहिये राजेन्द्र बाबू के लिये वह बाइसरीगल लाज ? क्यों चाहिये पंडित जी को इतनी बड़ी तनखा ? अगर आप को पाँच हजार की जरूरत है तो सौ-पचास की जरूरत हमें भी है।’

खतम कर दे—यह वह सलाह है जिसे अब तक तो हम ने ठुकराया ही है।” मेरा अपना खयाल है कि इस जुमले के अन्दर काँग्रेस के पिछले तीन बरसों का इतिहास छिपा है।

मौलाना साहब नासिक काँग्रेस के मौके पर एक इस खामोश रहे थे। इसलिये अहमदाबाद में जब वह माइक पर आए तो लोगों ने एक ताबगी महसूस की। उनकी तक्रार की तारीफ करना सूरज की रोशनी दिखाना है। उन्होंने बताया कि यह ठहराव कारवारी कमेटी की तरफ से आखिरी कोशिश है काँग्रेस को एक ठोस आन्दार जमात बनाने की। लेकिन इसका सच्चाई तो आने वाले वक्त में छिपी है।

इस तहरीर पर जो तक्रारें मेम्बरों ने कीं वह मानो काँग्रेस का आईना हैं। उन्होंने अपना दिल ही चोर कर रख दिया। एक आई ने कहा—“अगर कहकर बातें करनी हैं तो फिर बरा इतमीनान से हमें बैठना होगा। प्रेस को हटाकर एक बंद बैठक हम करें और तब अपनी दास्तान कहें।” कुछ मेम्बरों के कुछ जुमले हम नीचे देते हैं—

‘आप कहते हैं कि काँग्रेस बरकर कुछ नहीं करता। मैं पूछता हूँ, वह क्या करे ? क्या कोई प्रोग्राम, कोई मकसद आपने उसके आगे रखा है जिसकी उसे पाबन्दी करनी हो। और फिर आप उसका इतमीनान या यकीन कितना करते हैं ?’

‘यह कहा जाता है कि हम अपनी जरबानी की कीमत बसूल कर रहे हैं। मैं पूछता हूँ क्यों चाहिये राजेन्द्र बाबू के लिये वह बाइसरीगल लाज ? क्यों चाहिये पंडित जी को इतनी बड़ी तनखा ? अगर आप को पाँच हजार की जरूरत है तो सौ-पचास की जरूरत हमें भी है।’



बाल की खाल निकालना. हमें दुख है कि नासिक काँग्रेस का सहर बनने के बाद टंडन जी ने जो वादा किया था कि वह काँग्रेस की परम्परा (ट्रेडिशन) की पाबन्दी करेंगे, उसे वह नजरअन्दाज कर गए.

धाराओं पर बहुतेरी तरमीमें मेम्बरों ने पेश कीं. एक आध को छोड़ कर सभी कारबारी कमेटी को मंजूर नहीं थीं और उन सब का बुरा हाल ही हुआ. उन में से कुछ तो गौर तलब और अच्छी थीं मगर अपनी शान में डूबो कारबारी कमेटी उन्हें कैसे मान लेती? हम यह भी जानते हैं कि काँग्रेस वाले सभी अपने-पन में इतने मस्त थे कि उनको इस में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि विधान कैसा बनता है. उन्हें तो आप उनको "सीट" दे दीजिये फिर जो कहिये उन्हें मंजूर.

कहने की जरूरत नहीं कि अहमदाबाद बैठक के एकता उद्धार की बड़ी धूम है. इसे पेश किया श्री जवाहरलाल नेहरू ने और इसका समर्थन किया मौलाना अबुल कलाम आजाद ने. हम सलसिलें में भी श्री जवाहरलाल नेहरू ने एक बहुत गरजती हुई तक्रार की और काँग्रेस के लोगों की अकल को ठिकाने पर लाने की कोशिश की. मगर बड़े अदब के साथ हम कहना चाहते हैं कि महज बातों से काम नहीं चल सकता. यह तो साफ था कि कोई बीख ऐसी गायब है जिस ने सारी काँग्रेस को बेहाल कर दिया है. लेकिन उसे कोई खोज नहीं पाता है. मैं श्री जवाहरलाल जी के एक जुमले की तरफ पढ़ने वालों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिसे आम तौर से अखबारों ने नहीं छापा है. वह यह है—“अगर काँग्रेस ही हालत आज की जैसी बनी रही तो मैं सोचता हूँ कि हमें गांधी जी की उस सलाह पर असल करना होगा जिस में उन्होंने कहा था कि काँग्रेस अपनी सिबासी और प्रोपेगन्डा को कारबाइयों को

नहा हलद अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक \* मئی سن '५१

बाल की केहाल नकाला. हमें दुख है कि नासिक काँग्रेस का सदर ब्ले के بعد तल्लन जी ने जो وعده किया था कि वह काँग्रेस की परम्परा (ट्रेडिशन) की पाबन्दी करेंगे, उसे वह नजरअन्दाज कर गئے.

دهاراؤں پر بہتیری ترہمیں مسیروں نے پیش کیں. ایک آدھ کو چہرہ کو سبھی کارباری کمیٹی کو منظور نہیں تھیں اور ان سب کا برا حال ہی ہوا. ان میں سے کچھ تو فور طلب اور اچھی تھیں مگر اپنی شان میں قوی کارباری کمیٹی انھیں کسے مان لیتی؟ ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ کانگریس والے سبھی اپنے پن میں اتنے مست تھے کہ ان کو اس میں کوئی دلچسپی نہیں تھی کہ وہاں کیسا بدلتا ہے. انھیں تو آپ ننکی سہت دے دیجئے، یہو جو کہئے انھیں منظور.

کہنے کی ضرورت نہیں کہ احمد آباد بیتھک کے ایکتا تھراؤ کی پڑی دھوم ہے. اسے پیش کیا شری جواهر لال نہرو نے اور اسکا سہرتیں کیا مولانا ابوالکلام آزاد نے. اس سلسلے میں بھی شری جواهر لال نہرو نے ایک بہت گرجتی ہوئی تقریر کی اور کانگریس کے لوگوں کی عقل کو تھکانے پر لائے کی کوشش کی. مگر بڑے ادب کے ساتھ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ محتض باتوں سے کام نہیں چل سکتا. یہ تو صاف تھا کہ کوئی چیز ایسی غائب ہے جس نے ساری کانگریس کو بے حال کر دیا ہے لیکن اسے کوئی کھوج نہیں پاتا ہے. میں شری جواهر لال جی کے ایک چمکے کی طرف پوچھے والوں کا دھماں دلانا چاہتا ہوں جسے عام طور سے اخباروں نے نہیں چھاپا ہے. وہ یہ ہے—“اگر کانگریس کی حالت آج کی جیسی بنی رہی تو میں سوچتا ہوں کہ میں لگدھڑ جی کی اس صلاح پر عمل کرنا ہوگا جس میں انھوں نے کہا تھا کہ کانگریس اپنی سیاسی اور پروپیگنڈا کی کارائیوں کو



नया हिन्द

अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक

मई सन् १९११

उन्होंने काँग्रेस को यह चेतावनी दी कि यह कोई सब्जी मंडी नहीं है जहाँ चवन्नी अठन्नी की चख चख रही है। इसी स्पीच का नतीजा हुआ कि रुपए का मंडा तुलन्द रहा क्योंकि अठन्नी या चवन्नी पर वोट दे कर मेम्बर श्री जवाहर लाल की नाराजी नहीं मोख लेना चाहते थे। लेकिन मेम्बरों को यह खबर ही नहीं थी कि उन लाखों करोड़ों के दिलों पर क्या बीत रही है जिनकी बंदौलत उन्हें यह खतबा मिला है।

वो रुपया दे वह मेम्बर। लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी। वह छुआछूत न मानता हो, नरस न लेता हो, लादी पहनता हो, बैरा। बड़े दुल की बात यह है कि पहले वहाँ यह लाजमी था कि "प्रमानित" (सरटीफाइड) लादी हो, अब मइय लादी शब्द रखा गया है। सुबारक हो गादो वालों को। उन्हें मनमानी चीज मिल गई। आजादी के पहले वहाँ काँग्रेसी बर्दो लादी थी, आजादी के बाद गादी उसकी बर्दो होनी !

थोटी मोंटी धाराओं के बाद हम उस धारा पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि काँग्रेस की अलग अलग कमेटियों दो साल तक काम करेंगी, मगर सालाना जलसा हर साल होगा। इसका मतलब यह हुआ कि काँग्रेस का एक ही सदर दो बरस लगातार गद्दी पर जमा रहेगा। जाहिर है कि यह मौजूदा दस्तर के खिलाफ है। नया साल नया खून वाले 'खयाल का खून करके काँग्रेस अपना दिवालियापन जाहिर कर रही है।

अहमदाबाद बैठक की एक बीज ऐसी अजीब है जिसे सुनकर हर कोई दौटो दौटो लगे लंगली दबा लेगा। वह यह कि सदर साहब का यह हुकम करना कि काँग्रेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में गैर

नया हलद अहमदाबाद की काँग्रेस भीतक मई सन् १९११

अहमदाबाद की काँग्रेस को यह चेतावनी दी कि यह कोई सब्जी मंडी नहीं है जहाँ चवन्नी अठन्नी की चख चख रही है। इसी स्पीच का नतीजा हुआ कि रुपए का मंडा तुलन्द रहा क्योंकि अठन्नी या चवन्नी पर वोट दे कर मेम्बर श्री जवाहर लाल की नाराजी नहीं मोख लेना चाहते थे। लेकिन मेम्बरों को यह खबर ही नहीं थी कि उन लाखों करोड़ों के दिलों पर क्या बीत रही है जिनकी बंदौलत उन्हें यह खतबा मिला है।

जो दोपह दू दे रा मेम्बर। लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी। वह छुआछूत न मानता हो, नरस न लेता हो, लादी पहनता हो, बैरा। बड़े दुल की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाजमी था कि "प्रमानित" (सरटीफाइड) लादी हो, अब मइय लादी शब्द रखा गया है। सुबारक हो गादो वालों को। उन्हें मनमानी चीज मिल गई। आजादी के पहले वहाँ काँग्रेसी बर्दो लादी थी, आजादी के बाद गादी उसकी बर्दो होनी !

जोटी मोटी धाराओं के बाद हम उस धारा पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि काँग्रेस की अलग अलग कमेटियों दो साल तक काम करेंगी, मगर सालाना जलसा हर साल होगा। इसका मतलब यह हुआ कि काँग्रेस का एक ही सदर दो बरस लगातार गद्दी पर जमा रहेगा। जाहिर है कि यह मौजूदा दस्तर के खिलाफ है। नया साल नया खून वाले 'खयाल का खून करके काँग्रेस अपना दिवालियापन जाहिर कर रही है।

अहमदाबाद भीतक की एक चीज ऐसी عجيب है जिसे सुनकर हर कोई दौटो दौटो लगे लंगली दबा लेगा। वह यह कि सदर साहब का यह हुकम करना कि काँग्रेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में गैर



अब इस बैठक की कारवाई पर आयें. काँग्रेस के विधान पर वफावादी के साथ कुछ कहना इस लेख की हद्द के बाहर की बात है. हम तो सिर्फ कुछ खास बातों पर रोशनी डालकर सब करेंगे.

पहले हम विधान को लेंगे. शुरू की चीज है काँग्रेस का चार्टर या मकसद जो अब यह रखा गया है—एक “सहकारी कामनवैल्य” को पाना (अटेनमेंट आफ ए कोऑपरेटिव कामनवैल्य) क्या चुन चुन कर लक्ष्यों को रखा है जिनके माने चुनने वालों को भले मायूस हों लेकिन और तो किसी को नहीं. जहाँ तक जनता का सवाल है वह तो इन लक्ष्यों से रत्ती भर भी कुछ नहीं समझ सकती. हमें डर है कि आगे का इतिहास लिखने वाला यही कहेगा कि सन् १९११ में जन काँग्रेस के पास पूर्ण ताकत थी तो उसे यही नहीं पता था कि अब उसके खिन्दा रहने का कोई मकसद भी है या नहीं.

काँग्रेस के नये विधान की सबसे जास चीज है इस वक्त बिना पैसे की मेम्बरी की जगह एक रुपये की मेम्बरी फीस रखना. एक जमाना था जब चार आने फीस थी. फिर उसे बिलकुल हटा दिया गया और अप्रैल १९५८ में बम्बई की बैठक में बड़े जोश खरोश के साथ काँग्रेस का दरवाजा सबके लिये खोल दिया गया. अगर अगर खट्टे निकले और मेम्बरी फीस के बिना काँग्रेस के खिन्दा रहने में भी अब शुबा हो गया. इसलिये यह एक रुपया ! हम बर्दाँ यह बता दें कि कारबारी कमेटी में इस मसले पर खबर-दस्त बहस हुई कि फीस अठन्नी हो या रुपया. वोट लिये गये और सिर्फ एक वोट से अठन्नी को हटाकर रुपया जीता. काँग्रेस बैठक में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं. बक्शी का मंडा उठाया गया. अठन्नी का भी, रुपये का भी. रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को खुद उठना पड़ा और बड़े तैश के साथ

नया हलद अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक मई सन् १९

अब हम बैठक की कारवाई पर आते हैं. काँग्रेस के विधान पर वफावादी के साथ कुछ कहना इस लेख की हद्द के बाहर की बात है. हम तो सिर्फ कुछ खास बातों पर रोशनी डाल कर सब करेंगे.

पहले हम विधान को लेंगे. शुरू की चीज है काँग्रेस का अडिक्स या मकसद जो अब यह रखा गया है—एक “सहकारी कामनवैल्य” को पाना. (अटेनमेंट ऑफ ए कोऑपरेटिव कामनवैल्य). क्या चुन चुन कर लक्ष्यों को रखा है जिनके माने चुनने वालों को भले मायूस हों लेकिन और तो किसी को नहीं. जहाँ तक जनता का सवाल है वह तो इन लक्ष्यों से रत्ती भर भी कुछ नहीं समझ सकती. हमें डर है कि आगे का इतिहास लिखने वाला यही कहेगा कि सन् १९११ में जन काँग्रेस के पास पूर्ण ताकत थी तो उसे यही नहीं पता था कि अब उसके खिन्दा रहने का कोई मकसद भी है या नहीं.

काँग्रेस के नये विधान की सबसे जास चीज है इस वक्त बिना पैसे की मेम्बरी की जगह एक रुपये की मेम्बरी फीस रखना. एक जमाना था जब चार आने फीस थी. फिर उसे बिलकुल हटा दिया गया और अप्रैल १९५८ में बम्बई की बैठक में बड़े जोश खरोश के साथ काँग्रेस का दरवाजा सबके लिये खोल दिया गया. अगर अगर खट्टे निकले और मेम्बरी फीस के बिना काँग्रेस के खिन्दा रहने में भी अब शुबा हो गया. इसलिये यह एक रुपया ! हम बर्दाँ यह बता दें कि कारबारी कमेटी में इस मसले पर खबर-दस्त बहस हुई कि फीस अठन्नी हो या रुपया. वोट लिये गये और सिर्फ एक वोट से अठन्नी को हटाकर रुपया जीता. काँग्रेस बैठक में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं. बक्शी का मंडा उठाया गया. अठन्नी का भी, रुपये का भी. रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को खुद उठना पड़ा और बड़े तैश के साथ



नया हिन्द अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक मई सन् १९११

उन्होंने काँग्रेस को यह चेतावनी दी कि यह कोई सबजी मंडी नहीं है जहाँ सब्जियाँ बठनी की बख बख बल रही हैं। इसी स्पीच का नतीजा हुआ कि रुपए का मंडा बुलन्द रहा क्योंकि अठन्नी या बबन्नी पर वोट दे कर मेम्बर श्री जवाहर लाल की नाराजी नहीं मोल लेना चाहते थे। लेकिन मेम्बरों को यह खबर ही नहीं थी कि उन लाखों करोड़ों के दिलों पर क्या बोल रही है जिनकी बदौलत उन्हें यह रुतबा मिला है।

जो रुपया दे वह मेम्बर. लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी. वह छुआछूत न मानता हो, नशा न लेता हो, खादी पहनता हो, बैरा. बड़े दुस् की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाजमी था कि "प्रमानित" (सरटीफाइड) खादी हो, अब महज खादी शब्द रखा गया है. सुबारक हो गादी वालों को. उन्हें मनमानी चीज मिल गई. आजादी के पहले जहाँ काँग्रेसी बर्दी खादी थी, आजादी के बाद गादी उसकी बर्दी होगी !

छोटी मोटी धाराओं के बाद हम उस धारा पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि काँग्रेस की अलग अलग कमेटियाँ दो साल तक काम करेंगी, मगर सालाना जलसा हर साल होगा. इसका मतलब यह हुआ कि काँग्रेस का एक ही सदर दो बरस लगातार गद्दी पर जमा रहेगा. जाहिर है कि यह मौजूदा दस्तूर के खिलाफ है. नया साल नया खून वाले खयाल का खून करके काँग्रेस अपना दिवालियापन जाहिर कर रही है.

अहमदाबाद बैठक की एक चीज ऐसी अजीब है जिसे सुनकर हर कोई दौतों तले लंगली दबा लेगा. वह यह कि सदर साहब का वह इकम करना कि काँग्रेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में घेर

नया हलद अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक मई सन् १९११

अहमदाबाद की काँग्रेस ने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर एक नई नीति अपनाई. इस नीति के अनुसार काँग्रेस को एक नई नीति अपनानी होगी. इस नीति के अनुसार काँग्रेस को एक नई नीति अपनानी होगी. इस नीति के अनुसार काँग्रेस को एक नई नीति अपनानी होगी.

जो दोबारा दे रहा मेम्बर. लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी. वह छुआछूत न मानता हो, नशा न लेता हो, खादी पहनता हो, बैरा. बड़े दुस् की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाजमी था कि "प्रमानित" (सरटीफाइड) खादी हो, अब महज खादी शब्द रखा गया है. सुबारक हो गादी वालों को. उन्हें मनमानी चीज मिल गई. आजादी के पहले जहाँ काँग्रेसी बर्दी खादी थी, आजादी के बाद गादी उसकी बर्दी होगी !

जो दोबारा दे रहा मेम्बर. लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी. वह छुआछूत न मानता हो, नशा न लेता हो, खादी पहनता हो, बैरा. बड़े दुस् की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाजमी था कि "प्रमानित" (सरटीफाइड) खादी हो, अब महज खादी शब्द रखा गया है. सुबारक हो गादी वालों को. उन्हें मनमानी चीज मिल गई. आजादी के पहले जहाँ काँग्रेसी बर्दी खादी थी, आजादी के बाद गादी उसकी बर्दी होगी !

अहमदाबाद बैठक की एक चीज ऐसी अजीब है जिसे सुनकर हर कोई दौतों तले लंगली दबा लेगा. वह यह कि सदर साहब का वह इकम करना कि काँग्रेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में घेर



आप इस बैठक की कारवाई पर आर्ये. काँग्रेस के विधान पर तफसील के साथ कुछ कहना इस लेख की हद् के बाहर की बात है. हम वो सिर्फ कुछ खास बातों पर रोशनी डालकर सन्न करेंगे.

पहले हम विधान को लेंगे। शुरू की चीज है काँग्रेस का चतुर्थ या मक़सद जो अब यह रखा गया है—एक “सहकारी कामनवैलथ” को पाना (अटेनमेन्ट आफ ए कोऑपरेटिव कामनवैलथ) क्या चुन चुन कर लफ्ज़ों को रखा है जिनके माने चुनने वालों को भले मात्स्र हों लेकिन और तो किसी को नहीं। जहाँ तक जनता का सवाल है वह तो इन लफ्ज़ों से रत्ती भर भी कुछ नहीं समझ सकती। हमें डर है कि अगो का इतिहास लिखने वाला यही कहेगा कि सन् १९५१ में जन काँग्रेस के पास पूरी ताक़त थी तो उसे यही नहीं पता था कि अब उसके जिन्या रहने का कोई मक़सद भी है या नहीं।

काँग्रेस के नये विधान की सबसे खास चीज है इस वक्त बिना पैसे की मेम्बरी की जगह एक रुपये की मेम्बरी फीस रखना। एक खमाना या जब चार आने फीस थी। फिर उसे बिलकुल हटा दिया गया और अप्रैल १९५८ में वम्बई की बैठक में बड़े जोश खरोश के साथ काँग्रेस का दरवाजा सबके लिये खोल दिया गया। अगर अंगूर खट्टे निकले और मेम्बरी फीस के बिना काँग्रेस के खिन्दा रहने में भी अब शुबा हो गया। इसलिये यह एक रुपया ! हम यहाँ यह बता दें कि कारवारी कमेटी में इस मसले पर खबर-दस्त बहस हुई कि फीस अठन्नी हो या रुपया। वोट लिये गये और सिर्फ एक वोट से अठन्नी को हटाकर रुपया जीता। काँग्रेस बैठक में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं। बबन्नी का फंडा उठाया गया, अटन्नी का भी, रुपये का भी, रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को खुद उठना पड़ा और बड़े तैरा के साथ

اب ہم ہتھک کی کاروائی پر آئیں۔ کلگریس کے دھماکے پر  
تفصیل کے ساتھ کچھ کہنا اِس لیے کہ حد کے باہر کی بات ہے۔  
ہم تو صرف کچھ خاص باتوں پر روشنی ڈال کر صبر کریں گے۔

یہاں ہم دھان کو لیتے۔ شروع کی چیز ہے کانگریس کا اُپھٹا یا مقصد جو اب یہ رکھا گیا ہے — ایک ”سہکاری کلسن ویلٹھ“ کو پانا۔ (اتھینڈت آف اے ڈیپریٹو کلسن ویلٹھ)۔ کہا جی چن کر لفظوں کو رکھا ہے جیکے معلے چلے والیں کو پہلے معلوم ہوں لیکن اور تو کسی کو نہیں۔ جہاں تک چلتا کا سوال ہے وہ تو ان لفظوں سے دتی بہر بھی کچھ نہیں سمجھ سکتی۔ ہمیں قَر ہے کہ آگے کا اتھاس لکھنے والا یہی کہتا کہ سن ۱۹۵۱ میں جب کانگریس کے پاس پوری طاقت تھی تو اُسے یہی نہیں پتہ تھا کہ اب اُسکے زندہ رھنے کا کوئی مقصد بھی ہے یا نہیں۔

کانگریس کے نئے وفد کی سب سے خاص چیز ہے اِس وقت  
 بلا پیسے کی مسبری کی جگہ ایک روپے کی مسبری نہیں رکھا۔  
 ایک زمانہ تھا جب چار آنے نہیں تھے۔ پھر اُسے بائبل ہٹا دیا  
 گیا اور اپریل ۱۹۳۸ میں بمبئی کی پیٹھک میں بڑے جوش خروش  
 کے ساتھ کانگریس کا دروازہ سب کے لئے کھول دیا گیا۔ مگر انگور  
 کٹھے نکلے اور مسبری نہیں کے بلا کانگریس کے زندہ رہنے میں بھی  
 اب شبہ ہو گیا۔ اِس لئے یہ ایک روپہ! ہم یہاں یہ بتا دیں کہ  
 کاربای کمیٹی میں اِس مسئلے پر زبردست بحث ہوئی کہ فیس  
 اتھلی ہو یا روپہ۔ ووٹ لئے گئے اور صرف ایک ووٹ سے  
 اتھلی کو ہٹا کر روپہ جیتا۔ کانگریس پیٹھک میں بھی  
 اِس سوال پر کربای بحثیں ہوئیں۔ چونی کا جیلتا اُتھایا  
 گیا، اتھلی کا بھی روپے کا بھی۔ روپے کی حمایت میں  
 بھی جواہر لال نہرو کو خود اُتھایا ہوا اور بڑے طبع کے ساتھ



कौंगरेस के एक ठहराव के मुताबिक एक सब-कमेटी ने बनाया था ताकि कौंगरेस का कारोबार जोर शोर के साथ चल सके. दूसरा मन्त्रसद था एक ठहराव को, जिसे एकता ठहराव कहा जाता है, पास कराकर कौंगरेस के ढहते हुए किले को बनाये रखने की कोशिश करना. इसके अलावा चार घंटों का वक्त गौर सरकारी ठहरावों के लिये था, यानी उन ठहरावों के लिये जो मेम्बर अपनी तरफ से पेश करना चाहते थे और जिन्हें कारबारी ( वर्किंग ) कमेटी अपनी तरफ से नहीं रखना चाहती थी.

आगे कुछ भी कहने के पहले हम एक चीज बहुत ही एहसान के साथ ऋणूल करना चाहते हैं. वह है मेहमानों की खातिर. गुजरात सूबा काँग्रेस कमेटी का मन पसन्द, घर जैसा और लाजवाब इन्तजाम. काँग्रेस कमेटी के मेम्बरों की क्या. प्रेस वालों की क्या. हर आने वाले की ऐसी खातिर की गई. उसकी सहूलियत और आराम का इतना खयाल रखा गया है कि वहाँ जाने वाले लोग हमेशा याद रखेंगे. वहीसा के नामवर नेता श्री बिश्वनाथ दास जी ने कहा कि पिछले बीस बरस से तो उन्होंने ऐसा बेहतरीन इन्तजाम कहीं नहीं पाया. मेरा निजी खयाल तो यह है कि गुजरात काँग्रेस के सदर श्री कन्हैया लाल देसाई हर चीज पर इतने गौर और ध्यान से निगाह डालते थे मानो उनकी बेटी का ब्याह हो. स्वयं सेवक सच्चे मानों में स्वयंसेवक थे. काम इस तरह करते थे जैसे आपके मुलाखिम हों.

कमेटी का इजलास 'नवजीवन' इमारत के हाते में हुआ. मेम्बर लोग गुजरात विद्यापीठ की हद के आन्दर आरजी सायों में ठहराए गए थे. कुछ खास लोग विद्यापीठ के कमरों में थे और कुछ बहुत बड़े बड़े लोग अपने दोस्तों के साथ अहमदाबाद की बस्ती में ठहरे थे. नवजीवन की यह इमारत दस लाख के खर्चे से अभी हाल में ही बनकर तैयार हुई है जिसको सरदार वल्लभभाई पटेल ने दो माह पहले ही खोला था. इसी नवजीवन में 'हरिखन' अखबार छपता है.

کے ایک تھہراؤ کے مطابق ایک سب کھیتی نے بنایا تھا تاکہ کلائگریس کا کاروبار زور شور کے ساتھ چل سکے۔ دوسرا مقصد تھا ایک تھہراؤ کو جسے ایکٹھا تھہراؤ کہا جاتا ہے، پاس کرا کو کلائگریس کے۔ دھتے ہوئے قلعے کو بدائے رکھنے کی کوشش کرنا۔ اسکے علاوہ چار گھنٹوں کا وقت شہر سرکاری تھہراؤں کے لئے تھا، یعنی اُن تھہراؤں کے لئے جو صدر اپنی طرف سے پھر کرنا چاہتے تھے اور جنہوں کاوبادی (ورکنگ) کھیتی اپنی طرف سے نہاوں رکھنا چاہتی تھی۔

کدھئی کا اجلاس 'نوجوان' عمارت کے احاطے میں ہوا۔ ممبر لوگ گنجرات و دیابپتھ کی حد کے اندر عارضی سائیوں میں تھہرائے گئے تھے۔ کچھ خاص لوگ و دیابپتھ کے کمروں میں تھے اور کچھ بہت بڑے بڑے لوگ اپنے دوستوں کے ساتھ احمدآباد کی بستی میں تھہرے تھے۔ نوجوان کی یہ عمارت دس لاکھ کے خرچے سے بنی حال میں ہی بن کر تیار ہوئی ہے جسکو سردار ولید بھائی یقول نے دو ماہ پہلے ہی کھولا تھا۔ اسی نوجوان میں 'نوجوان' انجنا، حمدا



## अहमदाबाद की काँग्रेस बैठक

( भाई सुरेश राम भाई )

सन १९२३ की बात है. महात्मा गांधी जेल में थे. सर्दी का मौसम था. सेठ जमनालाल जी के कालवा देवी रोड, बम्बई वाले बंगले पर कुछ लोग जमा थे. सिकुड़ सिकुड़ा कर, चादर ओढ़े बैठे हुए थे और बहुत ही संगीन चरचा चल रही थी. इत्तफाक से एक अजनबी आदमी आ पहुँचा. उसकी हैरत का कोई ठिकाना नहीं था. पूछना चाहता था कि कौन हैं यह सब और क्या कर रहे हैं मगर हिम्मत नहीं होती थी. उसकी तक्रदीर से हिन्दुस्तान की कोयल उसके पास से गुजरी. अजनबी ने उनसे धीरे से एक सवाल किया—“यह सब कौन हैं ?” मट से सरोजिनी देवी ने जवाब दिया—“महात्मा गांधी की रौंढें ?” और बड़े जोर से क़हक़हा लगाया. फिर क्या था, सभी खिलखिला कर हँस पड़े.

अहमदाबाद में हंसने की कोई बात नहीं थी. लेकिन २९-३०-३१ जनवरी को कुल-हिन्द काँग्रेस कमेटी की बैठक का इजलास जो वहाँ हुआ उसको देखकर यह अच्छी तरह महसूस होता था कि हम सब के सब यतीम या अनाथ हो गए हैं और हमें ऐसी मुसीबतों ने आ घेरा है जिनसे निकलना नाशुमकिन है. फिर भी इमान और हिम्मत के साथ कोई भी मौके का मुकाबला करने को तैयार नहीं था. सभी जैसे डाक्टर थे जिनके पास हिन्दुस्तान के रोग की दवा थी लेकिन खुद पीने से इनकार, दूसरों को ही पिलाना चाहते थे. धरती सब के पाँव तले से खसकी जा रही थी.

काँग्रेस की यह बैठक बुलाने के मक़सद दो थे—पहला था काँग्रेस का नया विधान मंज़ूर कराना. यह नया विधान नासिक

## अहदाबाद की कांगे्रिस बिथेक

( बेहानी सुरेश राम बेहानी )

सन १९२३ की बात है. महाना गान्धेरी जेहल मेहन तेहे. सरुदी का मूसम तेहा. सेहते जमनालाल जी के काला दिदी (दी) बमिनी वाले बंगले पर कचेर लोकर जमे तेहे. सको सको कर, चान्द ओढ़े बेथेहो तेहे ओर बेथत ही सलकिन चरचा चल रही तेही अन्तफाक से एक अजन्बी आदमी आबेहला. अँस की जेहल का कोणी तेहकने नेहेन तेहा. योजेमना जामेहता तेहा के कोन मेहन ये सब ओर केहा कर रहे मेहन मेकर हेमत नेहेन होती तेही. अँस की त्तेदीर से हेन्दुस्तान की कोन्ल अँसके पास से कोरबेन. अजन्बी ने अँन से देहेरे से एक सवाल केहा—“ये सब कोन मेहन ?” जेमत से सरुजनी दिदी ने जेवब देया—“मेहाना गान्धेरी की रान्दियेन !” ओर बोरे डोर से तेहेते लैला. येर केहा तेहा सेहरी केहल केहा को हेल्स पड़े.

अहदाबाद मेहन हेल्सले की कोणी बात नेहेन तेही. लेकिन २९-३०-३१ जनवरी को कल हेल्द कांगे्रिस कमेटी की बिथेक का जेजलस जो देहान हो अँसको दिकेकर ये अजेही तरह मेत्सुस होता तेहा के हम सब के सब यतीम या अनाथ हो गँठे मेहन ओर हेमियेन अँसी मेसियेतो ने आ केहेरा हे जेन से नकलना नामेकन हे. येर येही अँसान ओर हेमत के साने कोणी येही मोक्मे का म्तेदाले करने को तेहार नेहेन तेहा सेहरी जेसे डाक्तर तेहे जेन के पास हेन्दुस्तान के रोग की दवा तेही लेकिन खुद पियले से अँकार, दूसरो को ही पलाना चाहते तेहे. देहेरी सब के पाँय तले से केहसी जा रही तेही.

कांगे्रिस की ये बेथेक पलाने के मेत्सद दो तेहे—पेहा तेहा कांगे्रिस का नया देहान मल्लोर कराना. ये तेहा देहान नामक कांगे्रिस



जन-जागरन के इस युग में जनता सचेत हो गई है और वह शासक जमात के ऊपर अपने फ़ैसले लादने की शक्ति रखती है. इसीलिये हर शहरी का फ़र्ज है कि वह जंग और शान्ति के सवाल पर गहराई से सोचे और जन आन्दोलन के जरिए जंग को रोके.

लड़ाई के लिये दो की जरूरत होती है. ताली दो हाथ से बजती है, अगर दोस्ती एक तरफ़ से भी हो सकती है : दोस्ती सौदा नहीं है. यह दोस्ती जिसका दूसरा नाम अहिंसा या सुहृद्वत है, बुजुर्गों का काम नहीं, बल्कि बहादुरों और दूरन्देश लोगों का काम है.

—महात्मा गांधी

## ‘नया हिन्द’ की छमाही बँधी हुई बढ़िया जिल्दे

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर जिल्दे की सिर्फ़ छै रुपया .

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दे खरीदने पर डाक खर्च माफ़ .

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, मुट्ठीगंज,  
इलाहाबाद.

जन जाग़न के अस र्ग सन जिल्दे सचेत हो गइ है. असक जमात के ओर अपे लवले लदने की शकती रकती है. इसी लीे हर शहरी का फ़रज है क्क वह जिल्दे लुरशान्ती के सवाल पर क़ोली से सोचे ओर जन आंदोलन के फ़रिसे जिल्दे क्क रोक.

लौली के लीे दो की ضرूरत होती है, ताली दो हाथ से बजती है, म्कर दोस्ती अर्क तरफ़ से भी होसकती है. दोस्ती सौदा होसल है. ये दोस्ती जसका दूसरा नाम अहिंसा या सचेत है, बुजुर्गों का काम न्हल, बल्के बहादुरों ओर दूरान्दल्लल लुकरों का काम है.

—महात्मा लान्दल्ल

## ‘नया हिन्द’ की जेमाही बन्दी हो गइ बड़िया जिल्दल

जुलल सन १९४६ से दलसबर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर जिल्दे की सरफ़ छै (रुपया) .

नोट—शुरु से अज कल जल्ललल खरीदने पर डाक खुरज सवाल .

—मल्लल्लर ‘नया हल्लद’

१४५, मुट्ठी अल्लल्ल,  
अल्ल आबाद .







में ईरान की सरحد पर डाल देता है। इसी तरह अमरीका दुनिया भर में पाँच सौ फौजी अड्डे हासिल कर चुका है। पर यह ऐसा प्यास है कि बुझ नहीं सकती।

श्री नेहरू जब पिछली बार अमरीका गए थे, तब उन्होंने ने कुछ ऐसी बातें भी कही थीं। अमरीकियों को यह बातें अच्छी नहीं लगीं। अच्छी लगती भी क्यों? उन्होंने कहा था कि काले गोरों में फ़रक करना, साम्राजवाद और पिछड़े देशों को गिरी हुई माली हालत जंग को दाबत देती है। इस कहने में सच्चाई है। योरपों जातियाँ एशिया और अफ़रीका के देशों पर सैकड़ों बरस से राज कर रही हैं। पर उन देशों की समाजी, आर्थिक, राजकाजी और कलबरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ, चले बिगाड़ हुआ है। पर आज भी गोरों मालिकों का समक नहीं आई। उनके सामने एशिया के सुधार का सबाल नहीं। सबाल है क्रौमी आजादी की शक्तियों को कुचलने, उनको दबाने का। नहीं तो अमरीका, ब्रिटीश, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में नेहूँ और बालू बरबाद न किये जाते। वह सस्ते दामों पर या बिना मोल एशिया की भूखी जनता को दिये जासकते थे। पर दिया क्या जाता है? अपने एजेन्टों, च्यांग, नाझोदाई और सिंघमरी को अपने देसवासियों से लड़ने के लिये हथियार। जनता की भूख को गोली से शान्त किया जाता है। इन देशों के उद्योगों या कल कारखानों को कोई सहायता नहीं दी जाती। कोशिश यह है कि इन देशों के उद्योग धन्दे, कल कारखाने, बैंक व्यवसाय, खेतीबारी, खुद उनके हाथ लग जाए।

जंग से किसको लाभ होता है? कहा जाता है जंग से जनता भी फायदा उठाती है। और कुछ नहीं तो बेकारी दूर हो जाती है, नौकरी मिल जाती है। इस समाज की अजीब हालत है। काम भी मिलता है तो मरने के लिये। बिना लड़ाई के काम नहीं। लेकिन बहुत

५

में ईरान की सरحد पर डाल देता है। इसी तरह अमरीका दुनिया भर में पाँच सौ फौजी अड्डे हासिल कर चुका है। पर यह ऐसा प्यास है कि बुझ नहीं सकती।

श्री नेहरू जब पिछली बार अमरीका गئے تھے تب انھوں نے کچھ ایسی باتیں بھی کہی تھیں۔ امریکیوں کو یہ باتیں اچھی نہیں لگیں۔ اچھی لگتیں بھی کیوں؟ انھوں نے کہا تھا کہ کالے گوروں میں فرق کرنا، سامراجی راء اور پیچھے دیسوں کی گری ہوئی مالی حالت ھلک کو دعوت دیتی ہے۔ اِس کہلے میں سچائی ہے۔ یورپی جاتھاں ایشیا اور افریقہ کے دیسوں پر سیکڑوں برس سے راج کر رہی ھیں۔ پر ان دیسوں کی سماجی، آرتھک، راج کاجی اور کلچری حالت میں کوئی سدھار نہیں ھوا۔ ان کے سامنے ایشیا پر آج بھی گورو مالکوں کو سدھار نہیں ھوا۔ ان کے سامنے ایشیا کے سدھار کا سوال نہیں۔ سوال ہے قومی آزادی کی شکستوں کو کچلنے ان کو دبانے کا نہیں تو امریکہ پر انڈیل۔ آسٹریلیا جیسے دیسوں میں کپھوں اور آلو برہاد نہ کئے جاتے۔ وہ مسخے داسوں پر یا بلدا مول ایشیا کی بھوکى چلغا کو دینے جاسکتے تھے۔ پر دیا کیا جاتا ہے؟ اپنے اچھلچوں چھاگ، باؤدانى اور سلنگھن دی کو اپنے دیس باسوں سے لڑنے کے لئے ھتھہار۔ چلغا کی بھوک کو گولی سے شانت کیا جاتا ہے۔ ان دیسوں کے ادیکوں یا کل کارخانوں کو کوئی سہایغا نہیں می جاتی۔ کوشش یہ ہے کہ ان دیسوں کے ادیکوں دھلدے۔ کل کارخانے، ہلک ویوسائے، کھیتی باڑی خود انکے ھاتھ لگ جائے۔

جنگ سے کس کو لہب ھوتا ہے؟ کہا جاتا ہے جنگ سے چلغا بھی فائدہ اُٹھاتی ہے۔ اور کچھ نہیں تو بھکاری دور ھوجاتی ہے، نوکری مل جاتی ہے۔ اِس سماج کی معجب حالت ہے۔ کام بھی ملتا ہے تو مرنے کے لئے۔ بلدا لڑائی کے کام نہیں۔ لیکن بہت



جنگ کی تہاڑیوں کے ساتھ ہی جنگ کی بہانہ اور دشمن کے خلاف چیتلا جاگ جاتی ہے اور اس چیتلا کے بڑھنے کے ساتھ کسی بھی سے جنگ اچانک ہی چھ جاتی ہے۔ جنگ سے دیس کو لہو نہیں ہوتا، کسی کو لہو نہیں ہوتا۔ پر سو رکشا اور آزادی کے لئے جنگ چھ جاتی ہے۔ اُن کا کہنا ہے کہ اگر انٹر قومی پیمانے پر سر رکشا کا پرہلہ ہو جائے تو جنگ ناممکن ہو جائے گی۔ پر جنگ کو کھول ملو گھاتی کاروں سے جوڑنا اصلیت سے ملے موزنا ہے۔ ۱۹۳۱ میں چھن سے چایاں کو کھا دے ہو سکتا تھا؟ سن ۱۹۱۴ میں برتھن کو چوملی سے دے دیا۔ لہکن اس لئے کہ وہ ملتھن کی مانگ کر رہا تھا۔

آج بھی ملایا، ویت نام، مصر اور ایران میں آزادی یا لوک شامی کی رکشا یا کینونستوں کے دمن کا سوال نہیں ہے۔ سوال ہے ان دیسوں میں سامراج وادی ہنوں کی رکشا کا۔ انگریز راج بیتا کہتے ہیں کہ ملایا کی دہر تہن، لکوی وشہرے سے ڈال کئے جاتے ہیں۔ اس لئے اس علاقے کو چھوڑنے کا سوال نہیں اُٹھتا۔ اگر ایران کے تہل کے کارخانے وہاں کی سرکار کو مل جائیں تو وہاں ہر آدمی کو لگ بھگ دو تین مٹی کا تہل ہر سال مل سکتا ہے اور اُن کا کھانے کا کام چل سکتا ہے۔ لہکن ساتھ ہی برتھن سیٹھوں کا دیوالہ بھی نکل جائیگا۔ مصر کو چھوڑنے کے ساتھ ہی برتھن سامراج کا پرہاڑ بھج جائیگا جسکے پھل روپ اسکو ہلد مہاساگر اور دکن واسطہ ہلد ہو جائیگا جسکے پھل روپ اسکو ہلد مہاساگر اور دکن یورپی ایشیا سے بھی ہانہ دھونا پڑیگا۔ اپلی ملتھن اور اپلی یونجی کی رکشا کے لئے سامراج واد دوسرے دیسوں پر راج لگی دیاؤ رکھنا ضروری سمجھتا ہے اور راج لگی دیاؤ ہلد فوجی اقدوں کے ناممکن ہے۔ اس لئے برتھن مصر میں چھا رہا چھتا ہے اور اگر ایران سے مجبور ہو کر فوجیں ہٹاتا ہے تو اُن کو عراق چھتا ہے اور اگر ایران سے مجبور ہو کر فوجیں ہٹاتا ہے تو اُن کو عراق

ہے۔ جंग की तैयारियों के साथ ही जंग की भावनाएँ और दुश्मन के खिलाफ चेतना जाग जाती है और इस चेतना के बढ़ने के साथ किसी भी समय जंग अचानक ही छिड़ जाती है। जंग से देस को लाभ नहीं होता। किसी को लाभ नहीं होता। पर सुरक्षा और आजादी के लिये जंग छिड़ जाती है। उनका कहना है कि अगर अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर सुरक्षा का प्रबन्ध हो जाए तो जंग नामुमकिन हो जाएगी। पर जंग को केवल मनोविज्ञानी कारणों से जोड़ना असलियत से मूँह मोड़ना है। १९३१ में चीन से जापान को क्या डर हो सकता था? सन् १९१४ में ब्रिटेन को जर्मनी से डर था। लेकिन इसलिये कि वह मंडियों की मांग कर रहा था।

आज भी मलाया, वीयतनाम, मिस्र और ईरान में आजादी या लोकशाही की रक्षा या कम्युनिस्टों के दमन का सवाल नहीं है। सवाल है इन देसों में साम्राजवादी हितों की रक्षा का। अंगरेज राजनेता कहते हैं कि मलाया की रबर, टीन, लकड़ी बौरा से डालर कमाए जाते हैं। इसलिये इस इलाक़े को छोड़ने का सवाल नहीं उठता। अगर ईरान के तेल के कारखाने वहाँ की सरकार को मिल जाँदें तो वहाँ हर आदमी को लगभग दो टन मिट्टी का तेल हर साल मिल सकता है और उनका खाने का काम चल सकता है। लेकिन साथ ही ब्रिटिश सेठों का दिवाला भी निकल जाएगा। मिस्र को छोड़ने के साथ ही ब्रिटिश साम्राज का प्रभाव बीच-एशिया के शुक्लिम देसों से मिट जाएगा और उसका एशिया का रास्ता बन्द हो जाएगा जिसके फल रूप उसको हिन्द महासागर और दक्खिन पुरबी एशिया से भी हाथ बोना पड़ेगा। अपनी मंडियों और अपनी पूँजी की रक्षा के लिये साम्राजवाद दूसरे देसों पर राजकाजी दबाव रखना जरूरी समझता है और राजकाजी दबाव बिना फौजी बलों के नामुमकिन है। इसीलिये ब्रिटेन मिस्र में जमा रहना चाहता है और अगर ईरान से मजबूर होकर फौजें हटाता है तो उनको इराक



ब्रिटेन और अमरीका जैसे देशों ने इसको न माना ! अबकी बार भी अफ्रीकावासी भारतीय जनता की बराबरी की मांग के सबसे बड़े विरोधी अमरीका, ब्रिटेन आस्ट्रेलिया जैसे गोरी चमड़ी वाले देश हैं.

जंग छेड़ने के लिये साम्राजवादियों ने अकसर आर्थिक कठिनाइयों का बहाना लिया है. पहली जंग में हारने के बाद जर्मनी ने सन १९२७ से कच्चे माल के बटवारे और मंडियों का सवाल उठाया था. इंग्लैन्ड में कई राजनेता ऐसे थे जो जर्मनी की इस मांग से हमदर्दी रखते थे, और इसी आधार पर उन्होंने जर्मनी को आस्ट्रिया और चैकोस्लोवेकिया हड़पने या बलकान रियासतों में पड़ने से नहीं रोका. जापान का कहना था कि उसके लिये मन्चूरिया के सोयाबीन और लोहा, चीन की कपास और कोयला, न्यूगिनी बगैरा का मिट्टी का तेल जरूरी है. उनका यह भी कहना था कि हमारी बढ़ती हुई जन-गिनती के लिये रहने का जगह भी चाहिये. इस समय भी ऐसी दलीलें दी जाती हैं. कहा जाता है कि बीच-पश्चिम का मिट्टी का तेल और दक्खिन पूरबी एशिया की धातें इंग्लैन्ड और अमरीका के लिये जरूरी हैं और इसलिये इनके ऊपर असर रखना या इनको अपने साथ रखना जरूरी है. अमरीका जैसे देशों में यह भी भावना है कि बढ़ती हुई जन-गिनती के लिये इलाकों की जरूरत है. यह दलीलें भी लचर हैं. नारवे, स्वीडन स्विटजरलैन्ड वगैरा कई देश हैं जो बिना उपनिवेशों ( नई आबादियों ) के कच्चा माल हासिल कर लेते हैं और जिन्दा हैं. और अगर जन गिनती बढ़ी है तो चीन, भारत, जावा जैसे एशियाई देशों की बढ़ी है जहाँ योरोपी और अमरीकी साम्राजवादी अपने लोगों को बसाना चाहते हैं.

कहा जाता है कि मनोबिज्ञानी ( नफसियली ) कारनों से भी जंग हो जाती है. हर के कारन देश जंग की तैयारियाँ करने लगते

प्रतिभे और अमरीके जैसे देशों ने इस को न माना ! अब की बार भी अफ्रीके वासी भारतीय जनता की बराबरी की मांग के सब से बड़े वरोधी अमरीके, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया जैसे गोरी चमड़ी वाले देश हैं.

जङ्ग चढेडने के लैने सामराज वादीयों ने अन्तर आर्थिक कठेनानों का बेहाने लेहा है. बेहली जङ्ग में हारने के बाद जर्मनी ने सन १९२७ से कच्चे माल के बटवारे और मन्दिओं का सवाल अँथैया त्हा. अन्ग्लैन्ड में कन्नी राज नीत्ता अैसे त्हे जो जर्मनी की अस मान्ग से हम्दर्दी रक्ते त्हे और असि अँधार प्र अँहों ने जर्मनी को आस्ट्रिया और चैकोस्लावेकिये हडपने या पल्कान रियासतों में पड़ेने से नेहों रोका. जापान का अँहदा त्हा क्हे अँके लैने मन्चूरिया के सोया बेन और लेहा. जेन की क्बास और कौन्ले 'नेहोल्की र्गरे' का मन्ती का तेल जरूरी है. अँ का ये बेहो क्हेला त्हा क्हे ह्द'दी बेहोली होली जेन क्ल्ती के लैने र्हेले की जङ्गे बेहो च्हाहँ. अस से बेहो अैसे दलेलें दी जाती हैं. क्हा हाता है क्हे बेहो अँशिया का मन्ती का तेल और दहेन योरोपी अँशिया की अँकलेहों और अमरीके के लैने जरूरी हैं और अस लैने अँके और अँर क्हेला या अँको अँके साने र्कहेला जरूरी है. अमरीके जैसे दीसों में ये बेहो बेहोना है क्हे बेहोली होली जेन क्ल्ती के लैने सलाकों की जरूरत है. ये दलेलें बेहो लचर हैं. नारवे, स्वीडन, स्विट्जरलैन्ड र्गरे क्की दीस हैं जो प्हा अँप नीशों ( नई आदीयों ) के क्च्चा माल हासल कर लेते हैं और रन्दे हैं. और अगर जेन क्ल्ती योरोपी है तो जेन 'बेहो' च्हाा ज्हासे अँशियाली दीसों की बेहो है ज्हाल योरोप और अमरीकी सामराज वादी अँके लोको को बसाना च्हाहँ.

क्हा जाता है क्हे मन्कोल्की ( नफसियाली ) कारनों से बेहो जङ्ग हो जाती है. हर के कारन दीस जङ्ग की तैयारियाँ करने लक्ते



दलीलें देते हैं। हम हिन्दुस्तानी इस दलील के शिकार रह चुके हैं और आजादी का आन्दोलन खड़ा कर के इस का जबाब दे चुके हैं।

काले गोरे की दलील इसी से मिलती जुलती है। हमारे अफरीकी भाई इसी दलील के शिकार हैं। लगभग तीन लाख भारतीय जनता को दक्खिन अफरीका के गोरे मालिक क़ुली कहकर पुकारते हैं। उनके रास्ते में तरह की माली बाधाएँ खड़ी करते हैं। जमीन या दूसरी तरह की जायदाद रखने के अधिकार बहुत कम कर दिए गए हैं। भारतीय जनता को दक्खिन अफरीका में राजकाजी अधिकार जैसे असेम्बली वगैरा में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकार नहीं। अफरीकी जनता के साथ योरपी मालिकों का बरताव और भी बुरा है। अफरीका में लगभग सौ पीछे दस जनता हबशी है। इनको तरह तरह की माली, समाजी और राजकाजी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक संकट के समय इनको सबसे पहिले काम से अलग कर के बेकार बना दिया जाता है। इनको सबसे कठिन काम दिया जाता है। यह सफेद चमड़ी वाले विद्यार्थियों के साथ बैठकर तालीम नहीं पा सकते, पर इनकी अपनी तालीम का कोई खास प्रबन्ध नहीं। बोट का अधिकार कहने भर को है। अगर कोई हबशी बोट देने का जतन करे तो दक्खिन की अफरीकों रियासतों में मार भी दिया जाता है। बह दुकान से जूता खरीद सकता है पर पैर में डालकर नहीं देख सकता। भला उसके पैर से छुआ जूता गोरी चमड़ी वाला किस तरह छू सकता है! एक बार हबशियों के बोट से एक हबशी अमरीकी क्लारिस का मेम्बर हो गया। परन्तु वह दूसरे गोरे मेम्बरों के साथ रेल में कैसे जा सकता था? उसके लिये अलग से गाड़ी के डिब्बे का इन्तजाम किया गया।

पहली जंग के बाद जापानी मेम्बर ने सुमात्र रक्खा था कि रंग की थानी काले गोरे की बराबरी के असूल को मान लिया जाए, पर

दलीलें दींते हैं। हम हल्दस्तानी इस दलील के शिकार रहे चके हैं और आजादी का आन्दोलन खड़ा कर के इस का जवाब दे चुके हैं।

काले कुरे की दलील असी से मैती जलती है। हमारे अफरीकी भाँती असी दलील के शकार हैं। लक भेग त्रोन लां भेभारी जलता कु दकन अफरीके के कुरे मालक तली कभर पकारते हैं। उन के रास्के मेंम तरुच तरुच की माली बादहातों कुरी करते हैं। र्मन या दूसरी तरुच की जालाद रकहे के अहेकार भेत क्म क्म दुँ के हैं। भेभारी जलता कु दकन अफरीके मेंम राज कलजी अहेकार जलसे अमली र्भरे मेंम अपे प्रतललही भेभजले के अहेकार नलन। अफरीकी जलता के सांठे योरपी मालकों का भुरा; और भी भुरा है। अमरीके मेंम लक भेग सु भेभजे दस जलता हलसी है। इनकु तरुच तरुच की माली, समाजी और राज कलजी कठेलातों का सामला कुरा भुता है। अर्नक सलक के से अं कु सल से पहले क्म से अल कु के भेकार भला दल जलता है। इनकु सल से क्थन क्म दल। जलता है। ये सफेद जेभरी वाले वलारतमें के सांठे भेभेकर तेलम नलन पासकते। प्र अं की अलपी तेलम का कुरी खल प्रभलद नलन। वुत का अहेकार कहेते भुर कु है। न्ग कुरी हलसी वुत दलले का जेकन कुरे तु दकन की अमरीकी रलसतों मेंम मार भी दल। जलता है। रे दुराक से जुरा खरलद सकता है भ्र भेभर मेंम काल कुर नलन दलके सकता। भेला अस्के भुर से जेला जुरा कुरी जेभरी वाला कस तरुच जेला सकता है! अलक बार हलसीरों के वुत से अलक हलसी अमरीकी कांनरलस का मेभर हु कुरा प्र रे दूसरे कुरे मेभरों के सांठे वल मेंम कलसे जल सकता था? अस्के लुँ अलक से कुरी के दले का अलतलम कल।

पहली जलक के भेद जलानी मेभर ने सजेला रकहा था न्ग वुग की मैती काले कुरे की भुराभरी के असूल कु मान कल। जलते। भ्र



के छुदु ही शिकार हो गए. संसार साम्राजवादियों की गुलामी करने को तैयार न था.

इसी तरह के असुलों को लेकर योरपी जातियों ने पिछड़े हुए देशों—एशिया, अफ्रीका, बीच और दक्खिन अमरीका में कदम रक्खा था. उनका कहना था कि गोरी जातियाँ अधिक सम्य हैं. दूसरी जातियाँ असम्य हैं. इन देशों में सभ्यता फैलाना, ईसाई धर्म और उसके असुलों का प्रचार करना हमारा धर्म है. वह योरपी सभ्यता का बोक अपनी पीठ पर लादे हुए अफ्रीका, एशिया जैसे देशों में जाए. पर इसके पीछे असलियत क्या थी ? योरपी जातियों ने अफ्रीका के हथशी, अमरीका के रेड इन्डियन, आस्ट्रेलिया के आदिम वासियों को सिटाना और उनका देस बीनना शुरू किया. दुनिया के कई हिस्सों में उनको सफलता भी मिली. एशिया के अनेक देशों को गुलाम बना लिया गया और वहाँ जॉकपन (शोशन) शुरू हो गया. तीन सौ बरस तक अफ्रीका के हथशियों को गुलाम बनाकर अमरीका में बेचा गया, बरसों तक हिन्दुस्तानी, चीनी और दूसरी एशियाई जातियों को लगभग गुलाम बनाकर अफ्रीका और अमरीका के खेतों पर काम करने के लिये रक्खा गया. सभ्यता के प्रचारक गोरे साम्राजवादियों ने चीन में अफीम का प्रचार किया और जब चीनी सरकार ने चंबरा की तो ढंढे के खोर से उसको अफीम खरीदने पर मजबूर किया. पन्द्रहवीं सदी से आज तक बहुत सी लड़ाइयाँ सभ्यता के प्रचार के नाम पर लड़ी गई हैं. और आज भी पच्छिमी रहन सहन की रक्षा का सबाल उठाया जाता है. पुर्तगाल और फ्रांस भारत के कुछ इलाकों पर जमे हुए हैं. उनका कहना है कि इन इलाकों में उन्होंने अपनी सभ्यता का प्रचार किया है और इस से जहाँ पर उनके कुछ अधिकार हो गए हैं. पुराने साम्राज्यवादी कौमी आथाही के आन्दोलनों के खिलाफ ऐसी ही

के खुद ही शकार हो गئے. संसार साम्राज वालियों की फलसी करने को तैयार नै त्हा.

असी ढरुष के असुलों को लिकर योरपी जातियों ने ढिचढे हुये देशों — अशिया, अफ्रीके ढिच ओर दक्कन अमरीके में कदम अलन का कलना त्हा त्हे कुरी जातलल अहक सभिये हल. दुसरी जातलल असभिये हल. इन दिसों में सभिये ढिचलल 'मिसाली दहम' ओर 'अस' के असुलों का ढरचार कुरना हमार दहम है. 'व' योरपी सभिये का ढिचढे अली ढिचढे ढर लडे हुये अफ्रीके, अशिया ढिचढे दिसों में असे. ढर अस के ढिचढे असलत कल त्ही? योरपी जातियों ने अफ्रीके के ढिचढे 'अमरीके के रीट अन्तलन' अक्कुरलल के आदम आसुओं को मत्तलन ओर 'अस' दिस ढिचढल हुरुष कल. दलन के कली ढलम में अन्को सभिलल ढी मली. अशिया के अलक दिसों को ढलम ढलन ललन ओर वलन ढिचढे ढन शुरुषन शुरुष हु कल. तलन सु ढरस त्क अफ्रीके के ढिचढे ढर ढलम ढलन अमरीके में ढिचढे कल, ढरसों त्क हलदलसाली 'ढिचढे ओर दुसरी अशिलली जातलन को लक ढलक ढलम ढलन अफ्रीके ओर अमरीके के ढिचढे ढर काम करने के लीे रक्कल कल. सभिये के ढरचार कुरे सलम्राज वालियों ने ढिचढे में अफीम का ढरचार कल ओर ढिचढे ढरकार ने ढिचढे तुर तुरने के ओर से असुओं को खरीदने ढर ढिचढे कल. ढलदहलल सदी से अज त्क ढिचढे ढी जलक सभिये के ढरचार के नल ढर लीी हल ओर हल ढी ढिचढे ढलन की रक्कल अतललल जातल है. ढरकल ओर फुरलस ढलत के ढिचढे ढलन ढर ढिचढे हल. अल का कलन है क्द इन ढलन में अलन ने अली सभिये का ढरचार कल है ओर अस से वलन ढर अल के ढिचढे अहिकर हु गये हल. पुराने सलम्राज वाली कुरी आथाही के आन्दोलनों के खलल असी हल



## जंग की जड़ें

( भाई आशाराम )

पत्र पत्रिकाओं में आए दिन जंग की चरचा रहती है. छोट मोटी लड़ाइयाँ बहुत जगह बल भी रही हैं. मलाया, वियतनाम, बर्मा, कोरिया और चीन की लड़ाई शान्त नहीं हुई और निकट भविष्य में शान्त होते दिखाई भी नहीं देती. डर है कि लड़ाई फैल न जाए और अन्तर्राष्ट्रीय रूप न लेले. संसार के हर शहरी का कर्ज है कि वह अपनी शक्ति भर जंग को रोके. पर जंग को रोकने के पहले उसे जंग के रूप, उसके कारणों और रोकने के उपायों को समझ लेना चाहिये.

कुछ विचारक जंग को जरूरी समझते हैं. उन का कहना है कि आदमी जंगल या तो युद्ध प्रेमी प्राणी है. हथियार न होने पर भी वह इट पत्थर से सर फोड़ लेता है. एक सज्जन ने 'हथियार छोड़ो कानफ्रेन्स' में यही बात कही थी.

लेकिन अगर आदमी ऐसा ही खूँखार जानवर है तो मानव जाति आपस में लड़कर खतम क्यों नहीं हो गई? सच यह है कि जन-गिनती बढ़ती जाती है. आदमी समाजप्रेमी प्राणी है. वह समाज और सहयोग के बिना खन्दा नहीं रह सकता.

क्रोसिस्ट विचारक भी जंग को जरूरी समझते हैं. उनका कहना है कि राज भी व्यक्ति की तरह आगे बढ़ते और पीछे हटते हैं. इसलिये जरमनी और इटली ने जंग करके अपने साम्राज की नींव डालनी चाही. पर संसार की जनता ने इस बातक असूर को नहीं अपनाया और जरमनी, जापान, और इटली अपने असूलों

## जंग की जड़ें

( भाई आशाराम )

पत्र पत्रिकाओं में आज दिनों जंग की चरचा रहती है. चोटी मोटी लड़ाइयाँ बहुत जगह बल भी रही हैं. मलाया, वियतनाम, बर्मा, कोरिया और चीन की लड़ाई शान्त नहीं हुई और निकट भविष्य में शान्त होते दिखाई भी नहीं देती. डर है कि लड़ाई फैल न जाए और अन्तर्राष्ट्रीय रूप न लेले. संसार के हर शहरी का कर्ज है कि वह अपनी शक्ति भर जंग को रोके. पर जंग को रोकने के पहले उसे जंग के रूप, उसके कारणों और रोकने के उपायों को समझ लेना चाहिये.

कुछ विचारक जंग को जरूरी समझते हैं. उन का कहना है कि आदमी जंगल या तो युद्ध प्रेमी प्राणी है. हथियार न होने पर भी वह इट पत्थर से सर फोड़ लेता है. एक सज्जन ने 'हथियार छोड़ो कानफ्रेन्स' में यही बात कही थी.

लेकिन अगर आदमी ऐसा ही खूँखार जानवर है तो मानव जाति आपस में लड़कर खतम क्यों नहीं हो गई? सच यह है कि जन-गिनती बढ़ती जाती है. आदमी समाजप्रेमी प्राणी है. वह समाज और सहयोग के बिना खन्दा नहीं रह सकता.

क्रोसिस्ट विचारक भी जंग को जरूरी समझते हैं. उन का कहना है कि राज भी व्यक्ति की तरह आगे बढ़ते और पीछे हटते हैं. इसलिये जरमनी और इटली ने जंग करके अपने साम्राज की नींव डालनी चाही. पर संसार की जनता ने इस बातक असूल को नहीं अपनाया और जरमनी, जापान, और इटली अपने असूलों



नया हिन्द

जवानो !

मई सन् '५१

भी गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ गया. क्या भारत के जवान-हिल जवान बर्भ और जात के बंधनों से ऊँचे नहीं उठ सकते ? और इन भीतर की बेड़ियों को तोड़ कर क्या दुनिया को यह नहीं बता सकते कि वह दुनिया पर शान्ति का राज कायम करने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे ? और उनके रहते क्या यह न हो सकेगा कि एक मुल्क दूसरे पर न छाया रहे, न छा सके या एक महाद्वीप दूसरे महाद्वीप को धमकी न दे सके ?

जवानो ! हम चाहते हैं कि तुम आजादी के दीवाने हो जाओ. कोरे दीवाने नहीं, समझदार दीवाने. समझदारी से भरा तुम्हारा शीबानापन रंग लाए और न रहेगा. अन्दर की आजादी बड़ों चीज होती है. वह करोड़ों विजयों के बल्व से भी कहीं ज्यादा तेज रोशनी फैकती है. और उस रोशनी में यह हो ही नहीं सकता कि तुम्हारे आसपास के लोग और तुम्हारे पड़ोसी मुल्क सच्ची आजादी के दरान न कर लें और उस पर फरेफता हाकर वह सच्चे मानों में आजाद न हो जायँ और औरों को आजाद देखकर खुश न हों. आजादी की ऐसी लुरी ही सारी दुनिया की शान्ति को गारंटी हो सकती है.

—भगवानदीन

“जिस तरह हिन्सा की लड़ाई में कुछ कानून कायदे होते हैं वसी तरह अहिन्सा की लड़ाई में भी होते हैं. दुनिया आज केवल हिन्सा की लड़ाई के कायदों को जानती है. हिन्सा बुराई करने वाले को सजा देती है, अहिन्सा बुराई करने वाले को, शराबी और चोर को प्रेम से समझा कर सुधारती है.”

मैनी सन '०१

जवानो !

नया हन्द

भी गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ गया. क्या भारत के जवान-दाल जवान और फात के बल्व से ऊँचे नहीं उठ सकते ? और इन भीतर की बेड़ियों को तोड़ कर क्या दुनिया को यह नहीं बता सकते कि वह दुनिया पर शान्ति का राज कायम करने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे ? और उनके रहते क्या यह न हो सके कि एक मुल्क दूसरे पर न छाया रहे, न छा सके या एक महाद्वीप दूसरे महाद्वीप को धमकी न दे सके ?

जवानो ! हम चाहते हैं कि तुम आजादी के दीवाने हो जाओ. कोरे दीवाने नहीं, समझदार दीवाने. समझदारी से भरा तुम्हारा शीबानापन रंग लाए और न रहेगा. अन्दर की आजादी बड़ों चीज होती है. वह करोड़ों विजयों के बल्व से भी कहीं ज्यादा तेज रोशनी फैकती है. और उस रोशनी में यह हो ही नहीं सकता कि तुम्हारे आसपास के लोग और तुम्हारे पड़ोसी मुल्क सच्ची आजादी के दरान न कर लें और उस पर फरेफता हाकर वह सच्चे मानों में आजाद न हो जायँ और औरों को आजाद देखकर खुश न हों. आजादी की ऐसी लुरी ही सारी दुनिया की शान्ति को गारंटी हो सकती है.

—भगवानदीन

“जिस तरह हिन्सा की लड़ाई में कुछ कानून कायदे होते हैं वसी तरह अहिन्सा की लड़ाई में भी होते हैं. दुनिया आज केवल हिन्सा की लड़ाई के कायदों को जानती है. हिन्सा बुराई करने वाले को सजा देती है, अहिन्सा बुराई करने वाले को, शराबी और चोर को प्रेम से समझा कर सुधारती है.”



में हमें उठती हैं. हिन्दुस्तान में आजादी हजम मेरे वाले जवानों के रहते क्या कभी मुमकिन था कि रिराबतखोरी और चोर बाजारी यहाँ जड़ पकड़ पाती ? और क्या यह मुमकिन था कि उनके रहते बच्चों को दूध के लिये और माँओं को नमक के लिये और बीमारों को दवा के लिये और बूढ़े-दिल जवानों को आटे दाल के लिये तरसना पड़ता और बेचने वाले और खरीदारों के बीच आए दिन दर चीज के लिये लुका छिपी का खेल हुआ करता. आजाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि भारत के मुसलमान पाकिस्तान भागने की सोचते और पाकिस्तान के हिन्दू भारत आने के लिये दर दर रकाब में पाँव डाले हुए दिखाई देते. आजाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि अँगरेजी ही नहीं अँगरेजियत हम सबके सिरों पर सवार रहती. आजाद जवानों के रहते भारत का क्या वा क्या होगा होता इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता. जापान ने हम बड़े हैं तो चीन से हम छोटे हैं. छोटे जापान और बड़े चीन के जवान जब इतनी जल्दी अपने न-कुछ मुल्क को सब कुछ बना सकते हैं तो भारत के जवान ही ऐसे कठबघे क्यों ? सिर्फ इस वजह से कि वह धर्म और जात के रस्म रिवाजों से इतने जकड़े हुए हैं कि आजाद होते हुए भी गुलाम से बदतर हैं. बाहरी आजादी से कब क्या हुआ है ? जो कुछ हुआ है भीतरी आजादी से. जो जवान सोचने के लिये आजाद नहीं वह करने के लिये कैसे आजाद हो सकता है. और अगर कुछ किये तो भारत ऊँचा उठता नहीं. और जब तक भारत ऊँचा न बढे आम आदमी को आजादी का पता लगता नहीं. और आम आदमी को आजादी का मजा आए बिना भारत की आजादी सुरक्षित नहीं. और अरक्षित आजादी गुलामी से कहीं ज्यादा खतरनाक. क्योंकि वह फूट की जड़ है. और मुल्क के लिये फूट तो दूसरे मुल्क को अपने ऊपर हकूमत करने के लिये न्योता देना है तो क्या भारत के जवान यह सब बैठे बैठे देखते रहेंगे ? जवान-दिल गांधी बूढ़ा रहते

में अमुक अन्तही हैं. हलदस्तान में आजादी हजम मेरे वाले जवानों के रहते क्या कभी मुमकिन था कि रिराबतखोरी और चोर बाजारी यहाँ जड़ पकड़ पाती ? और क्या यह मुमकिन था कि उनके रहते बच्चों को दूध के लिये और माँओं को नमक के लिये और बीमारों को दवा के लिये तरसना पड़ता और बेचने वाले और खरीदारों के बीच आए दिन दर चीज के लिये लुका छिपी का खेल हुआ करता. आजाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि अँगरेजी ही नहीं अँगरेजियत हम सब के सिरों पर सवार रहती. आजाद जवानों के रहते भारत का क्या वा क्या होगा होता इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता. जापान ने हम बड़े हैं तो चीन से हम छोटे हैं. छोटे जापान और बड़े चीन के जवान जब इतनी जल्दी अपने न-कुछ मुल्क को सब कुछ बना सकते हैं तो भारत के जवान ही ऐसे कठबघे क्यों ? सिर्फ इस वजह से कि वह धर्म और जात के रस्म रिवाजों से इतने जकड़े हुए हैं कि आजाद होते हुए भी गुलाम से बदतर हैं. बाहरी आजादी से कब क्या हुआ है ? जो कुछ हुआ है भीतरी आजादी से. जो जवान सोचने के लिये आजाद नहीं वह करने के लिये कैसे आजाद हो सकता है. और अगर कुछ किये तो भारत ऊँचा उठता नहीं. और जब तक भारत ऊँचा न बढे आम आदमी को आजादी का पता लगता नहीं. और आम आदमी को आजादी का मजा आए बिना भारत की आजादी सुरक्षित नहीं. और अरक्षित आजादी गुलामी से कहीं ज्यादा खतरनाक. क्योंकि वह फूट की जड़ है. और मुल्क के लिये फूट तो दूसरे मुल्क को अपने ऊपर हकूमत करने के लिये न्योता देना है तो क्या भारत के जवान यह सब बैठे बैठे देखते रहेंगे ? जवान-दिल गांधी बूढ़ा रहते



मिद जाता है तो शेर को ही हार मानकर पीछे हटाना पड़ता है। पर सुभार कहां मन बहलाव के लिये या पेट की खातिर जानबरो को मारता फिरता है। जानवर जानवर होता है, इसलिये अपने बचाव की खातिर सुभार दूसरे की जान ले लेता है, पर जान ही लेता है। सुभार को सुभार ही समझता है। आजाद जबानी को और फिर आदमी की आजाद जबानी को हमें न बहिंसा का सबक पढ़ाना पड़ेगा, न इस्लाम का पाठ। हम तो समझते हैं कि हमें उसको ब्रह्म आदाव की तालीम भी नहीं देना होगी। फलदार दरख्तों को फुलना कौन सिखाता है? आजादी के फलों से लदे हुए जवान को क्या हम ब्रह्म आदाव का पाठ पढ़ायेंगे? उससे तो हम सबक सीखेंगे। आजाद जवान वेब्रह्म की सोच ही नहीं सकता। वेब्रह्म की खुद कमजोरी की निशानी है। वेब्रह्म की बूढ़ों को खुजलाती और बच्चों को गुदगुदाती रहती है। बूढ़े वेब्रह्म से चिढ़ते भी हैं जैसे कोई खुजली की खुजलाहट से। बूढ़े वेब्रह्म में आनन्द भी मानते हैं। और वह आनन्द ऐसा ही होता है जैसा खुजली की खुजलाहट। दूसरों के सनाम न करने पर खीज बैठना और दूसरों को सनाम न करके यह समझना कि कुछ बड़ा काम किया बूढ़ों का काम है, न कि जबानों का।

किसी जवान लड़के या लड़की के बारे में ही कमी कमी यह सुनने को मिल जाता है कि उसने अपने बाप को रिशवत देने से रोक दिया या अपने बड़े भाई और बचा को चोर बाजारी न करने दी। असल में आजादी ऐसी चीज नहीं जिसे बूढ़े हजम कर सकें। इसके हजम करने के लिये जवान मेदा ही चाहिये। और यह कि कोई आजादी को हजम कर गया कैसे पहचाना जाय? आजादी हजम कर जाने वाला आदमी दूसरों की आजादी में रुकावट नहीं डालता। दूसरों को आजाद करके खुरा होता है। दूसरों को आजाद होते हुए देखकर आनन्द मानता है। आजाद होने की बातें सुनकर उसके मन

मन्थी मन '५१

जबानो!

जबानो! तुम शेर को ही हार मान कर पीछे हटाना पड़ता है। पर सुभार कहां मन बहलाव के लिये या पेट की खातिर जानबरो को मारता फिरता है। जानवर जानवर होता है, इसलिये अपने बचाव की खातिर सुभार दूसरे की जान ले लेता है, पर जान ही लेता है। सुभार को सुभार ही समझता है। आजाद जबानी को और फिर आदमी की आजाद जबानी को हमें न बहिंसा का सबक पढ़ाना पड़ेगा, न इस्लाम का पाठ। हम तो समझते हैं कि हमें उसको ब्रह्म आदाव की तालीम भी नहीं देना होगी। फलदार दरख्तों को फुलना कौन सिखाता है? आजादी के फलों से लदे हुए जवान को क्या हम ब्रह्म आदाव का पाठ पढ़ायेंगे? उससे तो हम सबक सीखेंगे। आजाद जवान वेब्रह्म की सोच ही नहीं सकता। वेब्रह्म की खुद कमजोरी की निशानी है। वेब्रह्म की बूढ़ों को खुजलाती और बच्चों को गुदगुदाती रहती है। बूढ़े वेब्रह्म से चिढ़ते भी हैं जैसे कोई खुजली की खुजलाहट से। बूढ़े वेब्रह्म में आनन्द भी मानते हैं। और वह आनन्द ऐसा ही होता है जैसा खुजली की खुजलाहट। दूसरों के सनाम न करने पर खीज बैठना और दूसरों को सनाम न करके यह समझना कि कुछ बड़ा काम किया बूढ़ों का काम है, न कि जबानों का।

किसी जवान लड़के या लड़की के बारे में ही कमी कमी यह सुनने को मिल जाता है कि उसने अपने बाप को रिशवत देने से रोक दिया या अपने बड़े भाई और बचा को चोर बाजारी न करने दी। असल में आजादी ऐसी चीज नहीं जिसे बूढ़े हजम कर सकें। इसके हजम करने के लिये जवान मेदा ही चाहिये। और यह कि कोई आजादी को हजम कर गया कैसे पहचाना जाय? आजादी हजम कर जाने वाला आदमी दूसरों की आजादी में रुकावट नहीं डालता। दूसरों को आजाद करके खुरा होता है। दूसरों को आजाद होते हुए देखकर आनन्द मानता है। आजाद होने की बातें सुनकर उसके मन



आजादी की धुन में उन्हें यह पता ही न था कि उनका सरदार उनसे क्या काम ले रहा है। किसी की जान बचाने के लिये भागने वाला जवान यह जान ही नहीं पाता कि उसके पाँव से कितने कीड़े मर गए हैं और उसकी भाग दौड़ की झपेट में आकर कौन बचवा नदी में जा पड़ा। और उन अरबिंद के साथों हिंसक जवानों की सबाई और त्याग का इससे ज्यादा क्या सबूत हो सकता है कि जैसे ही गाँधी मैदान में आया वह करीब करीब सब के सब उसके साथ ही लिये और उनमें से कुछ तो ऐसे अहिंसावादी बने कि जैनों और वैद्यों को भी बहुत पीछे छोड़ दिया। जवान कभी भटकता ही नहीं। जिन जवानों ने अरबिंद के साथ बस फेंके थे वे भटके हुए जवान नहीं थे, बिदेसी हकूमत के पत्थर के नीचे दबे हुए जवान थे। वे आजाद कहाँ थे? हकूमत के पत्थर को चूर चूर किये बिना वह कठ भी कैसे सकंथे। और हकूमत का पत्थर उनके लिये था बिदेसी सरकार का अंगरेजी अमला। इसलिये उसी पर टूट पड़े। गुलामी के बोझ से दबा जवान कमर झुके बूढ़े से भी कमजोर हो जाता है। 'कमजोर गुरसा ज्यादा' यह कहावत कौन नहीं जानता। गुरसा और हिंसा माँ जाए हैं। यों दोनों कमजोर के साथ रहते हैं। कमजोरी और जवान का क्या साथ?

जवानों! शेर नकल करने को चीज नहीं। जंगल में पत्तों की खदखदाहट उसको चौकन्ना करने के लिये काफी है। बन्दूक की आवाज़ तो भागने के लिये उसमें पंख लगा देती है। वह तो बहुत शूक में था राह न मिलने पर ढीठ बन बर मुकाबला कर जाता है। इस ढीठता को न जाने क्यों आदमी ने बहादुरी का नाम दे दिया है। हमारा अपनी उमर में तीन बार जंगलों में शेर से सामना हो चुका है। हमारा तजरबा हमें यह बताता है कि शेर आदमी से ज्यादा बहादुर नहीं होते। वह आदमी को बहादुरी का सबक नहीं दे सकते। हाँ, सुखर सचमुच 'शेर' होता है और जब वह शेर से

आदमी की दहन में नहीं आते यह पता है कि शेर का सरदार उन से क्या काम ले रहा है। किसी की जान बचाने के लिये भागने वाला जवान यह जान ही नहीं पाता कि उसके पाँव से कितने कीड़े मर गए हैं और उसकी भाग दौड़ की झपेट में आकर कौन बचवा नदी में जा पड़ा। और उन अरबिंद के साथों हिंसक जवानों की सबाई और त्याग का इससे ज्यादा क्या सबूत हो सकता है कि जैसे ही गाँधी मैदान में आया वह करीब करीब सब के सब उसके साथ ही लिये और उनमें से कुछ तो ऐसे अहिंसावादी बने कि जैनों और वैद्यों को भी बहुत पीछे छोड़ दिया। जवान कभी भटकता ही नहीं। जिन जवानों ने अरबिंद के साथ बस फेंके थे वे भटके हुए जवान नहीं थे, बिदेसी हकूमत के पत्थर के नीचे दबे हुए जवान थे। वे आजाद कहाँ थे? हकूमत के पत्थर को चूर चूर किये बिना वह कठ भी कैसे सकंथे। और हकूमत का पत्थर उनके लिये था बिदेसी सरकार का अंगरेजी अमला। इसलिये उसी पर टूट पड़े। गुलामी के बोझ से दबा जवान कमर झुके बूढ़े से भी कमजोर हो जाता है। 'कमजोर हल ज्यादा' यह कहावत कौन नहीं जानता। हल और हलसा जवान का क्या साथ?

जवानों! शेर नकल करने की चीज नहीं। जंगल में पत्तों की खदखदाहट उसको चौकन्ना करने के लिये काफी है। बन्दूक की आवाज़ तो भागने के लिये उसमें पंख लगा देती है। वह तो बहुत शूक में था राह न मिलने पर ढीठ बन बर मुकाबला कर जाता है। इस ढीठता को न जाने क्यों आदमी ने बहादुरी का नाम दे दिया है। हमारा अपनी उमर में तीन बार जंगलों में शेर से सामना हो चुका है। हमारा तजरबा हमें यह बताता है कि शेर आदमी से ज्यादा बहादुर नहीं होते। वह आदमी को बहादुरी का सबक नहीं दे सकते। हाँ, सुखर सचमुच 'शेर' होता है और जब वह शेर से



बेटे के रस्म रिवाज, गबरमेन्ट के कड़े कानून और माँ बाप की सामूली से ज्यादा अपने ठीक ना ठीक सभी दृष्टियों की पाबंदी की कादिरा.

जवानो ! तुम जवान हो. सौ हाथी की ताकत रखने वाली काम बासना को तुम्हरी रोकते आए हो, तुम्हरी रोक सकते हो और तुम्हरी उसको अगर चाहो तो बचचे पैदा करने की जगह अपने जिसम को चमकाने के काम में लगा सकते हो और उससे सोचने की ताकत बढ़ाकर दुनिया की तकलीफों का हल निकालने के काम में उसे जोत सकते हो. यह काम न बाधेड़ हाथ में ले सकते हैं न बूढ़े. और तुम उनके हाथ में यह काम सौंपना अपनी शान के खिलाफ समझोगे. जवानो ! तुमसे जैसे ताकतवर भाव को तुम्हारे सिवा कौन काबू में रख सकता है. क्या बूढ़ा बुद्ध राजपाट को लात मार सकता था ? क्या बूढ़ा बुद्ध जवान औरत और पहले बच्चे को छोड़ने की हिम्मत कर सकता था ? बुद्ध का बाप सचमुच बूढ़ा था और राम का बाप तो इतना बूढ़ा था कि बेटे की अलहदगी भी न सह सका. क्या बूढ़ा राम तिलक के वक्त राज छोड़ने की बात सोच सकता था ? क्या बूढ़े राम को जंगल में सीता को रखने की बात सूझ सकती थी ? त्याग बूढ़ों का कामन ही, जवान ही कर सकता है. गाँधी ने जिनके बल पर हिन्दुस्तान को आजाद किया उस में ३० बरस से ऊपर के बहुत ही कम थे. और अगर कुछ बूढ़े थे तो उनमें से बहुत से ऐसे थे जो अपने बेटे बेटियों के मोह के कारन गाँधी के साथ लग लिये थे. अगर उनके बेटे बेटी गाँधी के असर में न आते तो क्या वह कभी हिन्दुस्तान की आजादी की बात सोचते ? जवान अरविंद ही, बूढ़ा अरविंद नहीं, जवानों को हथेली पर सिर रखना सिखा सका. उसके साथी जवान हिसा के काबल होते हुए भी हिसक नहीं थे, न हिसा उनका पेशा था, न मन अहंकार, न कुछ और. उनकी लगन थी हिन्दुस्तान की आजादी. उस

जवानो ! तम जवान हो. सो हाथी की ताकत दिकले वाली काम आसला को तमहों दिकले आते हो, तमहों दिक सकते हो और तमहों आस को अक्र चामो तो बच्चे पैदा करने की जगह अपने जसम को चमकाने के काम में लगा सकते हो और आस से सोचले की ताकत बूढ़ा कर दिया की तकलीफों का हल निकालने के काम में आस के हाथों में काम न आये. जवानो ! तुमसे जैसे ताकतवर भाव को तुम्हारे सिवा कौन काबू में रख सकता है. क्या बूढ़ा बुद्ध राजपाट को लात मार सकता था ? क्या बूढ़ा बुद्ध जवान औरत और पहले बच्चे को छोड़ने की हिम्मत कर सकता था ? बुद्ध का बाप सचमुच बूढ़ा था और राम का बाप तो इतना बूढ़ा था कि बेटे की अलहदगी भी न सह सका. क्या बूढ़ा राम तिलक के वक्त राज छोड़ने की बात सोच सकता था ? क्या बूढ़े राम को जंगल में सीता को रखने की बात सूझ सकती थी ? त्याग बूढ़ों का कामन ही, जवान ही कर सकता है. गाँधी ने जिनके बल पर हिन्दुस्तान को आजाद किया उस में ३० बरस से ऊपर के बहुत ही कम थे. और अगर कुछ बूढ़े थे तो उनमें से बहुत से ऐसे थे जो अपने बेटे बेटियों के मोह के कारन गाँधी के साथ लग लिये थे. अगर उनके बेटे बेटी गाँधी के असर में न आते तो क्या वह कभी हिन्दुस्तान की आजादी की बात सोचते ? जवान अरविंद ही, बूढ़ा अरविंद नहीं, जवानों को हथेली पर सिर रखना सिखा सका. उसके साथी जवान हिसा के काबल होते हुए भी हिसक नहीं थे, न हिसा उनका पेशा था, न मन अहंकार, न कुछ और. उनकी लगन थी हिन्दुस्तान की आजादी. उस







## जवानो!

वह जवान बूढ़ा होगया जो सिर्फ 'हाँ' करना जानता है और जिसने 'ना' करने को ऐसा मुला दिया है मानो उसके पास अकल ही नहीं. फौज में छोट्ट छोट्ट कर जवान लिये जाते हैं मगर तुम्हें यह मालूम है कि वह किस लिये? सिर्फ बूढ़ा बनाने के लिये. गाँव का किसान जवान है. रैगल्टट हुआ और जबानी का दम घुटा. सिपाही बना और जबानी ने आखिरी सौस लो. सिपाही मशीन बन जाता है. 'ना' करने से उसे सरोकार ही नहीं और मशीन कितनी ही नई क्यों न हो उसे जवान नहीं कहा जा सकता. जवान लम्बज तो वज्रत, जगह, काम और भाव की तबदीली का दूसरा नाम है. वह जवान जवान नहीं है जिसके लिये हर एक बात उसका धर्म ग्रन्थ. उसका गुरु, उमका आफसर या उसका मालिक उसके लिये सोच दे. वह जवान जवान नहीं है जिसके बीमार होने का फैसला डाक्टरों की किताबें, डाक्टर या और कोई करे. वह जवान जवान नहीं है जिसका फैसला समाज करे कि उसको किस ब्योपार में लगना चाहिये. वह जवान जवान नहीं है जो अपनी संगिनी छोट्टने के मामजे में अपने को उन बूढ़े माँ बाप के सपुर्द कर देता है जो किसी समाज के जाल में फँस कर रस्म रिवाज से इतने दबे हुए होते हैं कि वह बहुत समझदार होते हुए भी ठीक ठीक फैसला कर सकने के काबिल होने पर भी किसी मजबूरी की वजह से न ठीक फैसला दे सकते हैं, न मन चाही बात कह सकते हैं. किस जवान लड़के या लड़की को यह तजरबा नहीं है कि जब वह अपनी बात, प्रान्त, धर्म या मुल्क के बाहर से किसी से शादी कर बैठता

## जवानो!

वह जवान भोज्या हो कि्या जो 'हाँ' करना जानता है. और जिसने 'ना' करने को ऐसा भेदा दिया है मानो उसके पास عقل ही नहीं. लुज मेहन जेहान्त जेहान्त कर जवान लिये जाते हैं मगर तेमहेन ये معلूम है कि वह किस लिये? सिर्फ भोज्या बनाने के लिये. गाँव का किसान जवान है. रङ्करोट्ट होला और जवानो का दम गहता. सिपाही बना और जवानो ने आखी सान्स ली. सिपाही मशीन बन जाता है. 'ना' करने से उसे सरोकार ही नहीं. और मशीन कितनी ही नई क्यों न हो उसे जवान नहीं कहा जा सकता. जवान लफ्ज तो रफ्त. जेम्हा' काम और बिाडुकी तबदीली का दूसरा नाम है. वह जवान जवान नहीं है जिसके लिये हर एक बात उसका धर्म ग्रन्थ. उसका गुरु, उमका आफसर या उसका मालिक उसके लिये सोच दे. वह जवान जवान नहीं है जिसके बीमार होने का फैसला डाक्टरों की किताबें, डाक्टर या और कोई करे. वह जवान जवान नहीं है जिसका फैसला समाज करे कि उसको किस ब्योपार में लगना चाहिये. वह जवान जवान नहीं है जो अपनी संगिनी छोट्टने के मामले में अपने आँकुरे आँकुरे माल बाप के सपुर्द कर देता है जो किसी समाज के जाल में फँस कर रस्म रिवाज से इतने दबे हुए होते हैं कि वह बहुत समझदार होते हुए भी ठीक ठीक फैसला कर सकने के काबिल होने पर भी किसी मजबूरी की वजह से न ठीक ठीक फैसला दे सकते हैं, न मन चाही बात कह सकते हैं. किस जवान लुके या लुकी को यह तजरबा नहीं है कि जब वह अपनी बात, प्रान्त, धर्म या मुल्क के बाहर से किसी से शादी कर बैठता



को पसन्द नहीं था। इसीलिये नियमावली में जो संशोधन (सुधार) हुआ उसका रूप ऐसा नहीं हुआ कि काँग्रेस 'लोक सेवक संघ' बन जाय। पर उनकी सृष्टि के कारण इस विशय पर और ज्यादा जोर देने वाला भी अब कोई नहीं रह गया।”

( बाली अगले नम्बर में )

“सुधारकों को विरोधियों के शस्त्रों की आग में घानों की बाहुली देनी पड़ेगी।”

—गांधी जी

## ‘नया हिन्द’ के फुटकर पुराने परचे

कम कीमत पर खरीदिये

हर परचे की कीमत

सन् १९१० के फुटकर परचे	...	सिर्फ आठ आना
सन् १९१६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९१८ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९१७ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
जुलाई सन् १९१६ से दिसम्बर सन् १९१६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे खरीदने पर ढाक खर्च माफ़.

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

को पसन्द नहीं था। इसी लिये नियमावली में जो संशोधन (सुधार) हुआ उसका रूप ऐसा नहीं हुआ कि काँग्रेस ‘लोक सेवक संघ’ बन जाय। पर उनकी सृष्टि के कारण इस विशय पर और ज्यादा जोर देने वाला भी अब कोई नहीं रह गया।”

( बाकी अगले नम्बर में )

“सुधारकों को विरोधियों के शस्त्रों की आग में घानों की बाहुली देनी पड़ेगी।”

—गांधी जी

## ‘नया हिन्द’ के फुटकर पुराने परचे

कम कीमत पर खरीदिये

हर परचे की कीमत

सन् १९१० के फुटकर परचे	...	सिर्फ आठ आना
सन् १९१६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९१८ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
सन् १९१७ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना
जुलाई सन् १९१६ से दिसम्बर सन् १९१६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ छे आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे खरीदने पर ढाक खर्च माफ़.

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद



से बाहर रहते हुए उसे नैतिक बन्धनों में जकड़ सके, जो जनता को राजनीति के आतंक और शोशन से बचा कर रख सके और जो देस की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक हालत को पच्छिम की गलामी से आजाद रख सके. बापू का अटल विश्वास यह था कि कॉंग्रेस और हुकुमत के दायरों के अन्दर रह कर यह मन्त्रसद हासिल नहीं किया जा सकता. इसीलिये बरसों के गंभीर विचार के बाद बापू ने अपने नये संघ की बुनियाद डाली. हमारे सूबे का संघ, बाहिर है, उनको इस संघा का पूरा नहीं करता बापू का यह नया तजरबा पूरा करने के लिये यह जरूरी है कि उसे शुद्ध रूप में और उनके आदर्शों और असूलों को सामने रखकर काम किया जाय. तभी देस को इससे पूरे फायदे की उम्मीद हो सकती है

कुछ लोगों का खयाल है कि बापू कॉंग्रेस का मौजूद संगठन तोड़ देना और हुकुमत से बाहर आजाना नहीं चाहते थे. यह खयाल ठीक नहीं है. ऐसे लोगों को यक़ीन दिलाने के लिये हम बताते हैं कि श्री अवाहरलाल नेहरू ने वर्षों कानक्रेन्स में रचनात्मक काजकर्ताओं के सामने कहा था कि—“बापू यह चाहते थे कि हम हुकुमत छोड़ दें और कॉंग्रेस के मौजूदा संगठन को तोड़ दें. पर हमारी समझ में यह नहीं आता था कि हम अपनी जिम्मेदारी किस पर छोड़ दें.” डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी नई पुस्तक “बापू के कदमों में” में नीचे दी हुई सतरों लिखी हैं—

“उन्होंने (बापू ने) अपनी इत्या के कुछ ही घंटे पहले अपने विचारों को लेख-बद्ध कर दिया था. उनका खयाल था कि कॉंग्रेस राजनीत के काम से, जिसमें वह प्रत्यक्ष (सीधे) भाग लेती रही थी और अपने मंत्रिमंडल द्वारा काम करा रही थी, अलग होकर ‘लोक सेवक संघ’ का काम करे. ‘लोक सेवक संघ’ द्वारा ही वह गवर्मेन्ट पर जो कुछ असर डाल सकती है डाले. पर वह कॉंग्रेस के प्रमुख लोगों

से बाहर रहते हुऐ अऐ नैतिक बलदहनन महेन जकड़ सके, जो जल्ला को राज नैत के आतंक और शोशन से बचा कर रख सके और जो देस की सामाजक नैतिक, और आर्थक हालत को पच्छम की गलामी से आज़ाद रख सके. बापु का आतल रशवास ये तहा के कान्ग्रेस और हकूमत के दान्तरों के अन्दर रे कर ये मत्सद हावल नहेन किया जासकता. इसी लैने बरसों के गम्भीर वचार के बाद बापु ने अऐ नूँ सल्ले की बलियाद काली. हमारै सुरु के 'सल्ले' ظاهر है, 'अन की इस मल्ला को पूरा नहेन हुता. बापु का ये नै तजरबे पूरा करने किल्ले ये ضرुरी है के अऐ शदह रूपा महेन और अन के आदर्शों और अवराओं को सामले रकमर काम किया जाँले. तैही देस को अस से पूररे फाँदरे की उम्हद हो सकती है.

कच्चे लोडों का खयाल है के बापु कान्ग्रेस का मोजुदे सल्लेहन तुर देला और हकूमत से बाहर आजाना नहेन चाँल्ले ते. ये खयाल तैहक नहेन है. अैसे लोडों को यक़ीन दलाने किल्ले हम बताते महेन के शुरी ज़ावर लाल नेहरु ने उरुँहा कान्ग्रेस महेन रजल्लतक काज कर्ताओं के सामले किया तहा के—'बापु ये चाँल्ले ते के हम हकूमत ज़हुर देन और कान्ग्रेस के मोजुदे सल्लेहन को तुर देन. पर हमारै सल्ले महेन ये नहेन आता तहा के हम अिली ये डेमदारी कस पर ज़हुर देन.' डॉक्टर राजल्लर प्रसाद ने अिली नूँ सल्लेक 'बापु के कदमों महेन' महेन नैचि सरी हुँरी सल्लेहन लैही महेन—

“अँहनों ने ( बापु ने ) अिली हतिया के कच्चे मी किल्ले येले अऐ वचारों को लैक बदे कर दिया तहा. अन का खयाल तहा के कान्ग्रेस राज नैत के काम से, जसमन ये र्तिक्क (सिध्द) बहाक लैती रही तैही लो अऐ मल्ली मल्ल दवारा काम करा रही तैही, अलक होकर 'लोक सेवक सल्ले' का काम करे. 'लोक सेवक सल्ले' दवारा ही ये कर्नल्लत होर जो कच्चे अँरु काल सकती है काले. पर ये कान्ग्रेस के पर मके लोडों



नया हिन्दू अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता मई सन् '५१

जा सकता था। इस कानफरेन्स में 'लोक सेवक संघ' का नाम खरूर आया। हमने ऊपर कहा है कि बापू रचनात्मक संस्थाओं के अलग अलग संगठनों को तोड़ कर उन सबको एक कर देना चाहते थे, इस कानफरेन्स की सबजेक्ट कमेटी में इस सवाल पर गौर हुआ लेकिन कोई संस्था अपना संगठन तोड़ने पर राजी न हुई। आखिर में कानफरेन्स ने इस सवाल पर गौर करने के लिये एक कमेटी बना दी जिसने कुछ महीने बाद इन संस्थाओं के संगठनों को अलग अलग रखते हुए एक मिली जुली काजकारी कमेटी बना दी और उसका नाम 'लोक सेवक संघ' रख दिया।

'लोक सेवक संघ' बनाने की दूसरी कोशिश यू. पी. प्रान्त में हुई। यहाँ सूबे की रचनात्मक कमेटी ने अपनी एक बैठक में, जिसमें श्री पंत जी, श्री टंडन जी और प्रान्त के दूसरे कई मिनिस्टर मौजूद थे, प्रान्तीय 'लोक सेवक संघ' बनाने के लिये एक कानफरेन्स बुलाना तय किया। यह कानफरेन्स कानपुर में हुई। इस कानफरेन्स ने 'लोक सेवक संघ' का विधान बनाने का काम एक काजकारी कमेटी बना कर उसके सुपुर्द कर दिया। इस कमेटी ने 'लोक सेवक संघ' का एक विधान बना लिया और यह कमेटी उसके मुताबिक प्रान्त में काम कर रही है।

इस 'लोक सेवक संघ' में और बापू के संघ में ऐसा बुनियादी फरक है जिससे वह मकसद पूरा नहीं हो सकता जिसे सामने रखकर बापू ने अपना नया संघ बनाने की तजवीज की थी। बापू अपने संघ को काँग्रेस और हुक्मत दोनों के दायरों से बाहर रखना चाहते थे। हमारे सूबे के संघ की काजकारी कमेटी में, जिसके आचार्य कृपलानी सदर हैं, तीन चौथाई से ज्यादा मेम्बर पसेम्बली के मेम्बर हैं। यहाँ हम इस बात के अच्छे या बुरे, बचित या अनुचित होने की बहस में जाना नहीं चाहते। हम सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि बापू काँग्रेस और हुक्मत के बाहर एक ऐसा संगठन बनाना चाहते थे जो राजनीत

नया हलद अहस्तान्क अन्कलाब का रास्ते मई सन् '५१

जासکتا تھا۔ اِس کانفرنس میں 'لوک سہوک سنگھ' کا نام ضرور آیا۔ ہم نے اوپر کہا ہے کہ بابو رجحاناتک سلسلہاؤں کے، الگ الگ سنگتہوں کو توڑ کر ان سب کو ایک کر دیلا چاہتے تھے۔ اِس کانفرنس کی سبجیکٹ کمیٹی میں اس سوال پر غور ہوا لیکن کوئی سلسلتہ اپنا سنگتہوں توڑنے پر راضی نہ ہوئی۔ آخر میں کانفرنس نے اس سوال پر غور کرتے کھلئے ایک کمیٹی بنا دی جس نے کچھ مہینے بعد ان سلسلتہاؤں کے سنگتہوں کو الگ الگ رکھتے ہوئے ایک ملی جلی کالج کاری کمیٹی بنا دی اور اُسکا نام 'لوک سہوک سنگھ' رکھ دیا۔

'لوک سہوک سنگھ' بنانے کی دوسری کوشش ۶۰ء میں ہوئی۔ یہاں صوبے کی رجحاناتک کمیٹی نے اپنی ایک بیٹھک میں جس میں شری پنت جی، شری تندن جی اور پراست کے دوسرے کئی ملسٹر موجود تھے، پرائقیہ 'لوک سہوک سنگھ' بنانے کھلئے ایک کانفرنس بلانا طے کیا۔ یہ کانفرنس کانپور میں ہوئی۔ اِس کانفرنس نے 'لوک سہوک سنگھ' کا وعدہان بنانے کا کام ایک کالج کاری کمیٹی بنا کر اُسکے سپرد کر دیا۔ اِس کمیٹی نے 'لوک سہوک سنگھ' کا ایک وعدہان بنا لیا اور یہ کمیٹی 'کے مطابق پرائنت میں کام کر رہی ہے۔

اِس 'لوک سہوک سنگھ' میں اور بابو کے سنگھ میں ایسا بنادلی فرق ہے جس سے وہ مقصد پورا نہیں ہو سکتا جسے سامنے رکھ کر بابو نے اپنا نیا سنگھ بنانے کی تجویز کی تھی۔ بابو اپنے سنگھ کو کانگریس اور حکومت دونوں کے دائروں سے باہر رکھنا چاہتے تھے۔ ہمارے صوبے کے سنگھ کی کالج کاری کمیٹی میں جسکے آچاریہ کریانی صدر ہیں، تین چوتھائی سے زیادہ ممبر اسمبلی کے ممبر ہیں۔ یہاں ہم اسبات کے اچھے یا بُرے، اچٹ یا اُبوجٹ ہونے کی بحث میں جانا نہیں چاہتے۔ ہم صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ بابو کا کانگریس اور حکومت کے باہر ایک ایسا سنگتہوں بنانا چاہتے تھے جو راج نیت



काँग्रेस कमेटी ने भी इस पर गौर किया। पर इसकी तरफ देस में किसी का खास ध्यान न गया। बात यह है कि रचनात्मक काज-कर्ताओं ने इसे बापू के जीवन का एक ऐसा राजकाजी कदम समझा जिसका उनसे कोई खास सम्बन्ध दिखाई नहीं देता था। श्वर आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के लिये इस प्रस्ताव को मान कर अपने हाथों आत्म हत्या कर लेना विलकुल नासुमकिन था। इसलिये उसने बापू की खिन्दगी के सब से बड़े और सब से इनकलाबी कदम की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया।

बापू खूब जानते थे कि आल इंडिया काँग्रेस कमेटी हरगिज उनके प्रस्ताव को मंजूर न करेगी। यह प्रस्ताव उसके सामने रखकर बापू ने उसकी तरफ अपना फर्ज अदा किया और साथ ही साथ उसे यह चेतावनी दे दी कि अब वह अपने मिशन को पूरा करने के लिये देस में एक नया दल कायम करेंगे। अगर बापू खिन्दा रहते तो इस प्रस्ताव का आल इंडिया काँग्रेस कमेटी पर काफी दबाव पड़ता और देस के सामने एक बड़ी गंभीर हालत पैदा हो जाती। बापू की मौत ने आल इंडिया काँग्रेस कमेटी का रास्ता साफ कर दिया और उसे उस प्रस्ताव की तरफ कोई खास ध्यान देने की जरूरत ही न रही।

‘लोक सेवक संघ’ की योजना बापू ने उस कानफरेन्स के सामने पेश करने के लिये बनाई थी जिसे वह वर्षों में बुलाना चाहते थे। उनके मरने के बाद वह कानफरेन्स तो हुई लेकिन उस पर काँग्रेस और इस्लमत के लीडरों का इतना असर रहा कि उसका ध्यान भी इस योजना की तरफ न गया। देस के सारे रचनात्मक काजकर्ता ३० बरस तक राजनीत में हमेशा काँग्रेस के पीछे चलते रहे। जो जब-दस्त इनकलाबी कदम बापू ने अपने ‘लोक सेवक संघ’ के रूप में छड़ा था उसकी इन काजकर्ताओं को न बापू से आशा ही थी और न उसकी राजकाजी अहमियत की तरफ इन काजकर्ताओं का ध्यान ही

काँग्रेस कमेटी ने भी असुर गुर किया। पर उसकी तरफ देस में किसी का खास ध्यान न किया। बात यह है कि रचनात्मक काज-कर्ताओं ने इसे बापू के जीवन का एक ऐसा राजकाजी कदम समझा जिसका उनसे कोई खास सम्बन्ध दिखाई नहीं देता था। श्वर आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के लिये इस प्रस्ताव को मान कर अपने हाथों आत्म हत्या कर लेना विलकुल नासुमकिन था। इसलिये उसने बापू की खिन्दगी के सब से बड़े और सब से

बापू खूब जानते थे कि आल इंडिया काँग्रेस कमेटी हरगिज उनके प्रस्ताव को मंजूर न करेगी। यह प्रस्ताव उसके सामने रखकर बापू ने उसकी तरफ अपना फर्ज अदा किया और साथ ही साथ उसे यह चेतावनी दे दी कि अब वह अपने मिशन को पूरा करने के लिये देस में एक नया दल कायम करेंगे। अगर बापू खिन्दा रहते तो इस प्रस्ताव का आल इंडिया काँग्रेस कमेटी पर काफी दबाव पड़ता और देस के सामने एक बड़ी गंभीर हालत पैदा हो जाती। बापू की मौत ने आल इंडिया काँग्रेस कमेटी का रास्ता साफ कर दिया और उसे उस प्रस्ताव की तरफ कोई खास ध्यान देने की

‘लोक सेवक संघ’ की योजना बापू ने उस कानफरेन्स के सामने पेश करने के लिये बनाई थी जिसे वह वर्षों में बुलाना चाहते थे। उनके मरने के बाद वह कानफरेन्स तो हुई लेकिन उस पर काँग्रेस और इस्लमत के लीडरों का इतना असर रहा कि उसका ध्यान भी इस योजना की तरफ न गया। देस के सारे रचनात्मक काजकर्ता ३० बरस तक राज नीत में हमेशा काँग्रेस के पीछे चलते रहे। जो जब-दस्त इनकलाबी कदम बापू ने अपने ‘लोक सेवक संघ’ के रूप में छड़ा था उसकी इन काजकर्ताओं को न बापू से आशा ही थी और न उसकी राजकाजी अहमियत की तरफ इन काजकर्ताओं का ध्यान ही



बया हिन्दु बहिर्सात्मक इनकलाब का राजा मई स० १९

घोरे घोर आपने नये प्रोग्राम की रूप रेखा तैयार कर लेने के बाद उन्होंने बर्धा में रचनात्मक काजकर्तोंओं की एक कानफरेन्स बुलबुले की चरचा करनी शुरू की। पर यह कानफरेन्स उनकी खिन्दगी में नहीं हो सकी। उनके मरने के बाद यह कानफरेन्स उस समय हुई जब देस की हालत बिलकुल बदल चुकी थी।

जिस तरह आपने रचनात्मक काजकर्तोंओं और साधियों के सामने बापू आपने विचार रख रहे थे उसी तरह कांग्रेस और हुकुमत के खास लोगों से वह अपनी विचारधारा पर बहस कर रहे थे। हुकुमत को छोड़ देने और कांग्रेस संगठन को तोड़ देने का खयाल उनके सामने था और अपनी खिन्दगी में पहिली बार कांग्रेस के अधिकारियों और अपने पुराने राजकाजी चेलों को बापू यह बता रहे थे कि अगर कांग्रेस अब भी उनकी बातों को न मानेगी और बहिर्सात्मक इनकलाब यानी अहिंसात्मक क्रान्ति के रास्ते को नहीं अपनायगी तो बापू देस में अपना आन्दोलन चलाने के लिये एक नया दल तैयार करेंगे। कांग्रेस और उसकी हुकुमत के लिये इससे ज्यादा खतरनाक बात दूसरी नहीं हो सकती थी। इसलिये बड़े से बड़े राजकाजी लीडरों ने बापू को समझाने और उनके इस इरादे को बदलवाने के लिये बेहद कोशिश की मगर कामयाब न हुए। आखिरकार बापू ने अपने सारे विचारों को 'लोक सेवक संघ' का रूप देकर इंडियन नेशनल कांग्रेस के मंत्री को इसके विधान का मसबिदा इस हिदायत के साथ दे दिया कि यह इसे बापू की तरफ से प्रस्ताव के रूप में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने पेश करे। इस के तीन बार घंटे के बाद ही बापू के संसारी जीवन का अंत हो गया।

(२)

लोक सेवक संघ का मसौदा बापू के मरने के बाद, बापू की

नया हन्द अहमसात्मक अक्लब का रास्ते मई स० १९

१९०० के बाद अनेकों ने उद्घाटन में अहमसात्मक काजकर्तों की एक कानफरेन्स बुलवाने की चरचा करनी शुरू की। पर यह कानफरेन्स उन की खिन्दगी में नहीं हो सकी। उनके मरने के बाद यह कानफरेन्स उस समय हुई जब देस की हालत बिलकुल बदल चुकी थी।

जسطर आप अहमसात्मक काजकर्तों और साधियों के सामने बापू आपने विचार रख रहे थे उसी तरह कांग्रेस और हुकुमत के खास लोगों से वह अपनी विचारधारा पर बहस कर रहे थे। हुकुमत के खास लोगों से वह अपनी विचारधारा पर बहस कर रहे थे। हुकुमत को छोड़ देने और कांग्रेस संगठन को तोड़ देने का खयाल उनके सामने था और अपनी खिन्दगी में पहिली बार कांग्रेस के अधिकारियों और अपने पुराने राजकाजी चेलों को बापू यह बता रहे थे कि अगर कांग्रेस अब भी उनकी बातों को न मानेगी और बहिर्सात्मक इनकलाब यानी अहिंसात्मक क्रान्ति के रास्ते को नहीं अपनायगी तो बापू देस में अपना आन्दोलन चलाने के लिये एक नया दल तैयार करेंगे। कांग्रेस और उसकी हुकुमत के लिये इससे ज्यादा खतरनाक बात दूसरी नहीं हो सकती थी। इसलिये बड़े से बड़े राजकाजी लीडरों ने बापू को समझाने और उनके इस इरादे को बदलवाने के लिये बेहद कोशिश की मगर कामयाब न हुए। आखिरकार बापू ने अपने सारे विचारों को 'लोक सेवक संघ' का रूप देकर इंडियन नेशनल कांग्रेस के मंत्री को इसके विधान का मसबिदा इस हिदायत के साथ दे दिया कि यह इसे बापू की तरफ से प्रस्ताव के रूप में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने पेश करे। इस के तीन बार घंटे के बाद ही बापू के संसारी जीवन का अंत हो गया।

(२)

'लोक सेवक संघ' का मसौदा बापू के मरने के बाद, बापू की



अपनी सभ्यता और संस्कृति को मिटा कर हमेशा के लिये सामाजिक, आर्थिक और नैतिक जीवन में आज कल के पच्छिम का गुलाम बन जाय. बापू के लिये इस से ज्यादा दुखकी घटना और क्या हो सकती थी कि उनका सत्य और अहिंसा के हथियारों से संसार में अहिंसात्मक इनकलाब पैदा करने का सपना पूरा होने के नजदीक पहुँच कर इस तरह एकबारगी भंग होजाय. उस सपने का भंग होजाना जो उनके जीवन का मिरान था और जिस के पूरा करने की कोशिश में उन्होंने अपने जीवन के ५० साल खपाये थे और अपना तन मन धन सब कुछ निष्ठावर किया था. एक तरह से गांधी युग के पहिले दौर का खतम हो जाना है. खुद बापू पर इसका यही असर पड़ा. इसका सब से बड़ा सबूत बापू का 'लोक सेवक संघ' बनाना है जो असल में उनके जीवन के दूसरे दौर का बुनियादी पत्थर था.

( 230 )

बापू के खास खास साथी यह देख रहे थे कि अपनी मौत के साल डेढ़ साल पहिले बापू अहिंसात्मक इनकलाब के इतिहास में एक नया युग शुरू करने के खयाल में डूबे रहते हैं, और अपनी पुरानी योजनाओं में बुनियादी तबदीलियाँ कर रहे हैं. बापू के आस पास के लोगों को उनकी बातों से यह साफ़ पता चलता था कि वह कोई इनकलाबी क्रदम उठाने की तैयारी कर रहे हैं. बापू ने अपनी खादी की योजना को बिल्कुल बदल दिया, उस में से केवल खादी पैदा करने के बदले 'वस्त्र स्वावलंबन' यानी अपने कपड़ों के लिये खुद सूत कात कर उसी के कपड़े पहनना, खादी योजना का खास मकसद बना दिया. बापू ने अपनी रचनात्मक संस्थाओं के सामने यह योजना पेश की कि सब संस्थाएँ अपने अलग अलग संगठनों को तोड़ डालें और एक सब का रूप ले लें. इसी के साथ साथ उन्होंने अपनी सारी पुरानी रचनात्मक योजनाओं को मिला कर उसे 'समय सेवा' (सब तरह की सेवा) का नाम दिया. इस तरह

पुरानी सभ्यता और संस्कृति को मत्ता कर हमेशा के लिये सामाजिक, आर्थिक और नैतिक जीवन में आज कल के पच्छिम का गुलाम बन जाय. बापू के लिये इस से ज्यादा दुखकी घटना और क्या हो सकती थी कि उनका सत्य और अहिंसा के हथियारों से संसार में अहिंसात्मक इनकलाब पैदा करने का सपना पूरा होने के नजदीक पहुँच कर इस तरह एकबारगी भंग होजाय. उस सपने का भंग होजाना जो उनके जीवन का मिरान था और जिस के पूरा करने की कोशिश में उन्होंने अपने जीवन के ५० साल खपाये थे और अपना तन मन धन सब कुछ निष्ठावर किया था. एक तरह से गांधी युग के पहिले दौर का खतम हो जाना है. खुद बापू पर इसका यही असर पड़ा. इसका सब से बड़ा सबूत बापू का 'लोक सेवक संघ' बनाना है जो असल में उनके जीवन के दूसरे दौर का बुनियादी पत्थर था.

( 230 )

बापू के खास खास साथी ये देख रहे थे कि अपनी मौत के साल डेढ़ साल पहिले बापू अहिंसात्मक अकलाब के इतिहास में एक नया युग शुरू करने के खयाल में डूबे रहते हैं. और अपनी पुरानी योजनाओं में बुनियादी तबदीलियाँ कर रहे हैं. बापू के आस पास के लोगों को उनकी बातों से ये साफ़ पते चलता था कि वे कौनो अकलाबी कदम उठाने की तैयारी कर रहे हैं. बापू ने अपनी कलादी की योजना को बाकल बदल दिया. आस में से कबुल कलादी पैदा करने के बदले 'वस्त्र स्वावलंबन' यानी अपने कपड़ों के लिये खुद सूत कात कर उसी के कपड़े पहना, कलादी योजना का खास मकसद बना दिया. बापू ने अपनी रचनात्मक संस्थाओं के सामने यह योजना पेश की कि सब संस्थाएँ अपने अलग अलग संगठनों को तोड़ डालें और एक सब का रूप ले लें. इसी के साथ साथ साथ उन्होंने अपनी सारी पुरानी रचनात्मक योजनाओं को मिला कर उसे 'समय सेवा' (सब तरह की सेवा) का नाम दिया. इस तरह



नया हिन्दू अधिसात्त्विक इनकलाब का रास्ता मई सन् '११

कोई बात हो ही नहीं सकती. मगर हालत बिलकुल इसके उल्टी थी. हालत यहाँ तक पहुँच गई थी कि आखिर दिनों में अपने चेलों की बातों और बहसों की सख्ती और छुटता को बापू बरदाश्त न कर सकते थे और स्वामोश होकर आँसू बहाने लगते थे. बापू काँग्रेस में दो दल किये बशौर न तो नया संगठन बना सकते थे, न जनता की मदद से काँग्रेस के नेताओं को अपनी पालिसी बदलने पर मजबूर कर सकते थे. क्यों उधों आजादी का समय करीब आता गया बापू की बेबसी बराबर बढ़ती गई. आखिर नौबत यहाँ तक पहुँची कि बापू की मर्जी के खिलाफ और बिना उनकी सलाह के देस के दो टुकड़े कर दिये गये. इस हालत कदम से जो नतीजे पैदा हुए उनसे देस को बचाने की कोशिश में बापू को अपनी जान देनी पड़ी. देस के टुकड़े हो जाना बापू के जीवन के लिये बहुत दुःख की बात थी. जीवन में इतना बड़ा घसा बापू को कभी न पहुँचा था. फिर भी इतनी छदारता के साथ उन्होंने अपने चेलों की इस गलती को निबाहा और इतनी हिम्मत और ताकत के साथ इस गलती से पैदा होने वाले तूफान का मुकाबला किया कि यह बापू की जिन्दगी की सबसे बड़ी यादगार है.

काँग्रेस के तरकों और पालिसियों पर इस बलिदान का खरा भी असर न पड़ा. काँग्रेस ने हुकूमत पाते ही जो तरक़े अखितयार किये उनसे यह साफ़ जाहिर हो गया कि काँग्रेस को अब बापू के आदर्शों और साधनों की कोई बख़्तर बाक़ी नहीं रही. जिस गरज के लिये काँग्रेस बापू का इस्तेमाल करती थी वह पूरी होगई. अब वह पीछमी सभ्यता को देस में फैलायी और पच्छिमी राजनीत के रास्तों पर चलेगी. काँग्रेस के जाबन में इतनी बड़ी तबदीली का होजाना बापू और देस दोनों के लिये एक बड़ी घटना थी. देस का इस से बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता था कि इसे राजकाजी आजादी इसलिये मिले कि वह

नया हन्द अलस्तिक انقلاب का रास्ते मई सन् '१०

कुली बात हो ही नहीं सकती. मगर हालत बालक़ अस्के अन्तिम. हालत यहाँ तक पहुँच गئی थी कि अख़र दनों में अगे चहलों की बातों और बहसों की सख्ती और क़त्ता को बापू बरदाश्त न कर सकते थे. बापू काँग्रेस में दो दल किये बशौर न तो नया संक़ठन बना सकते थे, न जनता की मदद से काँग्रेस के नेताओं को अपनी पालिसी बदलने पर मजबूर कर सकते थे. क्यों उधों आजादी का समय करीब आता गया बापू की बेबसी बराबर बढ़ती गئی. आख़र नौबत यहाँ तक पहुँच गئی कि बापू की मर्जी के ख़लाफ़ और बदा अन की सलह के दिस के दो टुक़रे कर दूँ गئے. इस ख़लफ़ क़दम से जो नक़िजे पैदा हुँगे अन से दिसको बचाने की क़श्श में बापू को अली दान दिली पड़ी. दिस के टुक़रे होजाना बापू के ज़िंदों किल्ले भेत दले की बात थी. ज़िंदों में अँला हवा देहका बापू को कभी न पहुँचा था. पहर भी अँली आदारा के साने अँहों ने अगे चहलों की इस ख़लफ़ को नियाहा और अली हमत और طاक़त के साने इस ख़लफ़ से पैदा हुँगे वाले तूफ़ान का मुक़ाबले किया कि ये बापू की ज़िंदगी की सब से बड़ी यादगार है.

काँग्रेस के तरीक़ों और पालिसियों पर इस बलिदान का ख़रा भी अत्र न पड़ा. काँग्रेस ने हक़ूमत पाते ही जो तरीक़े अख़्तयार कئے अन से ये साने हावर होक़ा कि काँग्रेस को अब बापू के आदर्शों और सादहलों की कूठी ضرूरत बाक़ी नहीं रही. ज़स ख़रूज किल्ले काँग्रेस बापू का अस्तेमाल करती थी ऱा पुरी होक़ी. अब ऱा पछिमी सभ्यता को दिस में पैलाने की और पछिमी राज नीत के रास्कों पर चली गी. काँग्रेस के ज़िंदों में अली हवा देहका बापू को कभी न पहुँचा था. पहर भी अँली आदारा के साने अँहों ने अगे चहलों की इस ख़लफ़ को नियाहा और अली हमत और टाक़त के साने इस ख़लफ़ से पैदा हुँगे वाले तूफ़ान का मुक़ाबले किया कि ये बापू की ज़िंदगी की सब से बड़ी यादगार है.



को नहीं माना और काँग्रेस के मकसद को वैसा ही रहने दिया। आखिर इसी बिना बापू को काँग्रेस की चार आने वाली मेम्बरी तक से इस्तीफा देना पड़ा। काँग्रेस के मेम्बर न होते हुए भी बापू बराबर काँग्रेस की रहनुमाई करते रहे। उन्होंने कोई दूसरा दल नहीं बनाया और न अपने रचनात्मक काजकर्ताओं को काँग्रेस संगठन से अलग किया। कारन यह था कि अगर रचनात्मक काजकर्ता काँग्रेस से अलग हो जाते तो काँग्रेस फिर से हिंसात्मक रास्तों को अख्तियार करने पर लाचार हो जाती। दूसरे बापू का एक नया दल बना लेना देस की मिलीजुली शक्ति के टुकड़े कर देता। इससे काँग्रेस कमजोर पड़ जाती और बिदेसी हकूमत की देस को नुकसान पहुंचाने की और देस पर अपना कब्जा कायम रखने की ताकत बहुत बढ़ जाती। इस सबसे बापू के अधिसात्मक इनकलाब पैदा करने के मिशन को बहुत बड़ा नुकसान पहुँच सकता था। इसलिये उन्होंने आखिर दम तक कोई दल अपना अलग नहीं बनाया और गहरे से गहरे मतभेद होते हुए भी बिदेसी हुकूमत के खिलाफ काँग्रेस का साथ देते रहे।

काँग्रेस ने इससे पूरा फायदा उठाया। काँग्रेस के वह नेता जो बापू के आदर्शों, साधनों और योजनाओं को कोरा आदर्शवाद और अनव्योहारिक समझते थे, यानी यह मानते थे कि यह केवल कहने की बातें हैं करने घरेने की नहीं, जनता के सामने बापू की और उनके साधनों, व योजनाओं की इतनी तारीफ़ें करते थे कि जनता को यह शुबह ही नहीं हो सकती था कि इनमें और बापू में कितना गहरा मतभेद है और यह अपनी सारी ताकत देस को उन रास्तों की तरफ़ ले जाने में लगा रहे हैं जो बापू को नापसन्द हैं और जिनमें बापू देस के खिये बातक समझते हैं। जनता बापू की शक्ति को अपना मानती थी और समझती थी कि उनकी मर्जी के खिलाफ

को नहय माा अा काङ्ग्रेस के मक्सद को विसा ही रहने दिया . अखर इसी बला पर बायो को काङ्ग्रेस की चार आने वाली मेम्बरी तक से अस्तेमा दिया पया . काङ्ग्रेस के मेम्बर ने होते होते बायो बायर काङ्ग्रेस की रनसाली करने रहे . अन्होंने कोनी दूसरा दल नहय बनाया और ने अपे रचना तक काज कृताओं को काङ्ग्रेस सलकृहण से अलक ना . कारन ये तहा के अर रचनात्मक काज कृता काङ्ग्रेस से अलक होजाते तो काङ्ग्रेस पहर से हलसनात्मक रास्तेम को अख्तयार करने पर लाचार होजाती . दूसरे बायो का अलक नलहाल बना ललहा दीस की मली जली शकती के ठुकरे कर दीता . अस से काङ्ग्रेस कमजोर होजाती और बदीसी हकूमत की दीस को नक्सान पहुँचाते की और दीस पर अलहा कबसे कालम रहले की طاकत बेत बूढ जाती . अस सब से बायो के अहलसा तक अन्तलाब पैदा करने के मशन को बेत बूढा नक्सान पहुँच सकता तहा . इसलै अन्होंने अखर दम तक कोनी दल अलहा अलक नहय बनाया और कुरे से कुरे मत बेतद होते होले बेी बदीसी हकूमत के खलफ काङ्ग्रेस का साने दीते रहे .

काङ्ग्रेस ने इस से पूरा फालदे अतहाया . काङ्ग्रेस के वे नलहा जो बायो के आदर्शों , सादहलों और योजनाओं को कुरा आदर्शवाद और अलहालक समझते ते , यलनी ये मानते ते के ये कलल कलले की बान्ण हलल करने देहने की नहय , जलला के सलमे बायो की और अलके सादहलों व योजनाओं की अलली तमरलनल करने ते के जलला को ये शबे ही नहय होसकता तहा के अल मलल और बायो मलल कलला कुरा मत बेतद हे और ये अलली सारी टाकत दीस को अल रास्तेम की टुरफ ले जाने मलल ला रहे हलल जो बायो को नापसन्द हलल और जलललल बायो दीस कललै कललक समझते हलल . जलला बायो की शकती को अलार मानती तली , और समझती तली के अल की मरनी के खलफ



तैयार करने पड़े. इन काजकर्त्ताओं से बह इमेया कॉंग्रेस की पार्टीबन्दीयों और राजकाजी दायरों की गंदी खींचतानी से बाहर रख कर काम लेना चाहते थे. कॉंग्रेस की हालत को देखकर उन्हें यह यकीन हो गया था कि आखिर में कॉंग्रेस के षरिये अहिंसात्मक इनकलाब पैदा नहीं किया जा सकेगा और अपने इस मिशन को पूरा करने के लिये उन्हें अपनी इसी रिखर्व सेना से काम लेना होगा. बापू का यह खयाल बराबर मजबूत होता गया इस तरह बापू के और कॉंग्रेस के बीच की खाई बराबर गहरी और चौड़ी होती गई. बापू का असर कॉंग्रेस पर बराबर घटता गया यहाँ तक कि एक दिन वह आया कि बापू का कॉंग्रेस के अन्दर रहना भी मुमकिन न रह गया.

बापू कॉंग्रेस में इस शर्त पर शामिल हुए थे कि कॉंग्रेस "जायज और शान्तिमय साधनों" का इस्तेमाल करना अपना मकसद बना लेगी. उनके कहने से इस मकसद को कॉंग्रेस ने अपने विधान में शामिल कर लिया था. सन ३० और ३२ के आन्दोलनों में कॉंग्रेस ने बहुत सी बातें ऐसी कीं जिन्हें बापू नाजायज और हिंसा समझते थे. इस पर बापू में और कॉंग्रेस के लीडरों में गहरा मतभेद हो गया. इन लीडरों का यह कहना था कि लुटमार, क्रल और खून को छोड़ कर और जितनी बातें और कोशिशें देस हित के लिये की जाँय वह सब 'जायज' शब्द में आती हैं चाहे बापू इनके मानी कुछ भी समझें. बापू कहते थे कि कॉंग्रेस विधान में जायज ( लेजिटिमेट ) और शान्तिमय ( पॉसफुल ) यह दोनों शब्द मैंने ही सत्य और अहिंसा के मानी में जुड़वाए हैं कि जिसमें आम लोग इसे समझ सकें. अब साफ़ बाहिर हो गया है कि इन शब्दों से भ्रम पैदा हो सकता है. इसीलिये इन शब्दों का यह मतलब साफ़ कर देना चाहिये. आखिर को यह बात बम्बई में जाल इंडिया कॉंग्रेस कमेटी के सामने आई. कमेटी ने बापू की बात

तैयार करने पड़े. इन काज कर्ताओं से वह हमेशा क्लगुविस की पार्षी बल्लियों ओर राज काजी दारों की कलसी कल्लिजा नानि से बाहर दककर काम लेना चाहते थे. क्लगुविस की हालत को देखकर अंतहस ये यत्नन हल्लिया तहा के अखर मल क्लगुविस के डुरिमे अहस्तानक अन्तलाब पैदा नहल कल जासकल्ला ओर अल मल मलन को डुरा करले कल्ले अंतहस अल्लि असी डुरुर सल्ला से काम लेला हल्ला. बापू का ये खलल बुराबुर मल्लुपुत हल्ला कल्ला. असल्लर बापू के ओर क्लगुविस के बल्लि की कल्लानि बुराबुर कल्लुरी ओर चुरुरी हल्लि कल्लि. बापू का अल्लर क्लगुविस पर बुराबुर कल्लिजा कल्ला बल्ला नक के अल्लर दलन वह आल कल बापू का क्लगुविस के अल्लर वल्ला बल्लि मल्लन न वह कल्ला.

बापू क्लगुविस मल्लन अल्ल शुरुप पर शलल हल्ले तह के क्लगुविस जाँज ओर शल्लि मे सलदल्लल " का असल्लल करला अल्लल मल्लल कल. अल्ले कल्ले से अल्ल मल्लद को क्लगुविस ने अल्ल वल्लल मल्लन शलल करलल तहा. सन ३० ओर ३१ के अल्ललल्लल मल्लन क्लगुविस ने बल्ल सल बल्लल अल्लि कल्ल जल्लल बापू नलजाँज ओर हल्लल सल्लल्ले तह. अल्ल पर बापू मल्ल ओर क्लगुविस के ललदुरल मल्ल कल्लुरा मल्ल बल्लद हल्लल्ला. अल्ल ललदुरल का ये कल्ला तहा के लल्ल मल्ल कल्ल ओर खुरल को चल्लुर कर ओर जल्लल बल्लल ओर कल्लशल्ल डल्लस हल्ल कल्ले की जल्लल्ल वल्ल सब 'जाँज' शल्लद मल्ल अल्ल हल्लल बापू अल्ले मल्लल कल्ले बल्लि सल्लल्लल. बापू कल्ले तह के क्लगुविस वल्ललल मल्ल जल्ल ( ले जल्लल्लल्लल ) ओर हल्लल्लि मे ( मल्ल लल ) ये डुरुरल शल्लद मल्ल ने हल्ल सल्ले ओर अल्लल्ले मल्लल मल्ल जल्ल हल्ल के जल्ल के जल्ल मल्ल लल्ल लल्ले सल्लल्ल सल्लल. अब सलल लललल हल्लल्ला हल्ल के अल्ल मल्ल लल्ल लल्ल पैदा हल्लसकल्ला हल्ल. अल्लल्ल अल्ल शल्लल्ल का ये मल्लल्ल सलल्लल्ल से बल्लम पैदा हल्लसकल्ला हल्ल. अल्लल्ल अल्ल शल्लल्ल मल्ल अल्ल अल्लल्ल सलल्ल कल्लल्लि के सलल्ले अल्ल. कल्लल्लि ने बापू की बल्ल



नया हिन्द अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता मई सन् '६१

आधार पर हुई है. यह देख लेने के बाद बापू की शख्सियत को छोड़ कर वह उनके सिद्धान्तों की सच्चे दिल से पैरवी करने लगोगी. वह काँग्रेस की अगुवाई इसी उम्मीद पर कर रहे थे और यही उम्मीद उनके मरने के कुछ पड़ले तक बनी रही. पर उनकी यह उम्मीद पूरी न हुई. काँग्रेस हमेशा बेदिली और मजबूरी से ही उनके सिद्धान्तों और प्रोग्रामों का पूरा करती रही. आखिर बापू को मजबूर होकर काँग्रेस को तोड़ देने या उसका मुकाबला करने के लिये 'लोक सेवक संघ' का विधान बनाना पड़ा.

बापू काँग्रेस को समय समय पर राह दिखाते रहे फिर भी उनके मरते दम तक उनके और काँग्रेस के बीच बराबर एक चरखस्त खाई बनी रही. सबसे दुख की घटना यह है कि जैसे जैसे बापू को कामयाबी होती गई वैसे वैसे यह खाई और चौड़ी और गहरी होती चली गई. यह कामयाबियाँ जैसे जैसे काँग्रेस को हुकुमत की ताकत और दौलत पर अधिकार पाने के करीब पहुँचाती जाती थीं वैसे वैसे ही काँग्रेस बापू के परमार्थों आदर्शों और सेवा, त्याग और तप के मार्ग से दूर होती जाती थी. यहाँ तक कि तखतनशीनी के बाद काँग्रेस के जीवन में इन सब बातों का निशान तक बाक़ी न रहा.

बापू ने जितने प्रोग्राम देस के सामने रखे उनका मक़सद था तो किसी खास मामले में गबरमेन्ट पर अहिंसात्मक दबाव डालकर उसे मजबूर करना या देस की किन्हीं बुराइयों और कमियों को दूर करके देस में जाग्रति, आत्मबल और संगठन पैदा करना होता था. काँग्रेस इनमें से पहली तरह के प्रोग्रामों को तो कुछ तोड़ फोड़कर चलाती थी, लेकिन दूसरी तरह के प्रोग्रामों की तरफ वह कोई ध्यान ही न देती थी. इसीलिये अपने रचनात्मक प्रोग्रामों को चलाते के लिये बापू को अलग संगठन बनाने और नये काजकर्त्ता

नया हन्द अहस्तात्मक अन्तलाब का रास्ते मئی सन् '६१

अन्तार पर होती है. ये दिक्कत लिले के बाद बापू की शख्सियत को छोड़ कर वह उनके सद्धान्तों की सच्चे दिल से पैरवी करने लगेगी. वह काँग्रेस की अगुवाई इसी उम्मीद पर कर रहे थे और यही उम्मीद उनके मरने के कुछ पहले तक बनी रही. पर उनकी यह उम्मीद पूरी न हुई. काँग्रेस हमेशा बेदिली और मजबूरी से ही उनके सद्धान्तों और प्रोग्रामों को पूरा करती रही. आखिर बापू को मजबूर होकर काँग्रेस को तोड़ देने या उसका मुकाबला करने के लिये 'लोक सेवक संघ' का विधान बनाना पड़ा.

बापू काँग्रेस को ससे प्र राह दिहाते रहे पर भी उनके मरते दम तक उनके और काँग्रेस के बिच्चा प्र राव अक डिरदस्त केहाती बनी रही. सब से दिक्क की केहला ये है के जिसे जिसे बापू को कामयाबी होती लगी बिसे बिसे ये केहाती और चोरो और केहो होती चली लगी. ये कामयाबी जिसे जिसे काँग्रेस को हकूमत की طاकत और दौलत पर अदेहकार पाने के करीब पेहुनचती जाती तेहेन बिसे बिसे ही काँग्रेस बापू के प्रमार्थों आदर्शों और सेवा, त्याग और तप के मार्ग से दूर होती जाती थी. येहा तक के तख्त नशुली के बिच्चा काँग्रेस के जिवन में सब बातों का नशान तक बाकी न रहा.

बापू ने जितने प्रोग्राम देस के सामने रखे उन का मक़सद था तो किसी खास मामले में गवरनेन्ट पर अहस्तात्मक दबाव डालकर उसे मजबूर करना या देस की कलहेन प्रान्तों और कसेन को दूर करके देस में जाग्रती, आत्मबल और सलकतों बिच्चा करना होता था. काँग्रेस इन में से पहली तरह के प्रोग्रामों को तो कुछ तोड़ फोड़ कर चलाती थी, लेकिन दूसरी तरह के प्रोग्रामों की टर्फ वह केही ध्यान ही न देती थी. इसी लिये अवे रचनात्मक प्रोग्रामों को चलाते केहलिये बापू को अलग सलकतों बनाते और ननू काज कर



सुक्राबले का एलान उन्होंने अपनी मशहूर हड़ताल, मत और प्रार्थना के रूप में किया था। इस एलान का जो देस पर असर हुआ था उससे बापू को यह यकीन हो गया था कि देस की जमीन उनके मिशन को पूरा करने के लिये तैयार है। इस असर को काँग्रेस ने भी देखा और उस दिन से वह बापू की क्रायल होगई और उनके कहने पर चलने लगी।

हकीकत में यह ताबेदारी बापू के आदर्शों, योजनाओं और तरीकों की नहीं थी बल्कि उनके व्यक्तित्व और उनकी शक्तियत की थी जिसने देस की जनता पर एकबारगी इतना खबरदस्त असर डाल दिया था। चूँकि काँग्रेस जनता पर खुद अपना असर जमाना चाहती थी इसलिये बापू की शक्तियत से ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाने की कोशिश करना काँग्रेस ने अपना मकसद बना लिया। इस मकसद के हासिल करने के लिये बापू के सिद्धान्तों और योजनाओं को, उनमें विश्वास न होते हुए भी वह बराबर सराहती और ऊपरी दिल से मानती रही। राजनीति के मैदान में उसका यह तरीका कोई अनोखी बात न थी क्योंकि आजकल की पच्छिमी राजनीति में अपना मतलब निकालने के लिये दो-रुखी बाल बलाना जायज माना जाता है।

बापू काँग्रेस के दो-रुखे पन को खूब देखते थे। वह जानते थे कि काँग्रेस उनके व्यक्तित्व से फायदा उठाना चाहती है। पर चूँकि उनका अपने सिद्धान्तों की उपयोगिता में अटल विश्वास था इसलिये वह समझते थे कि अगर कुछ और नहीं तो उनकी अहिंसा की योजनाओं की कामयाबिथी काँग्रेस के दिल में सत्य और अहिंसा का और उनके हथियारों व साधनों के अचूक होने का विश्वास दिला देंगी। वह यह देख लेगी कि इन अहिंसा के आदर्शों, सिद्धान्तों और साधनों का इतना गहरा असर देस पर इसीलिये पड़ता है कि इतिहास के शुरू से यहाँ की सभ्यता और संस्कृति की रचना इन्हीं असूलों के

महाले का अعلان अहोम अिन्धु मशहूर होतल, भूत और प्रान्तेला के रुप म्म क्हा त्हा। अस् अलान का जो देस पर अ्तर होा त्हा, स् से बापू को ये यक्मन होक्मा त्हा के देस की र्ममन अ्न्के म्मन को पूरा करने किल्ने त्हा है। अस् अ्तर को काङ्ग्रेस ने बेम दीक्मा और अ्न्दन से वे बापू की फानल होक्ती और के किल्ने पर चल्ने ल्की।

हक्कत म्म ये ताबेदा-बापू के आदर्शों, योजनाओं और तरीकों की न्मन त्ही ब्ले अ्न्के वेक्कतु और अ्न् की शक्कत की त्ही जल्ने की जल्ता पर अ्क बापू अ्न्ला र्ममदस् अ्तर काल्दिया त्हा। ज्मन्के काङ्ग्रेस जल्ता पर खूद अ्न्ला अ्तर जमाना चाहती त्ही अ्न्ले बापू की शक्कत से र्ममदे से र्ममदे फान्दे अ्न्लाने की क्मश क्न्ना काङ्ग्रेस ने अ्न्ला मक्द बला ल्हा। अ्न् मक्द के हासल करने किल्ने बापू के सहातों और योजनाओं को, अ्न् म्मन श्वास न्ने होत्ने बेम बेम र्ममर स्राहती और ऊपरी दल से मन्ती र्ही। र्ज नीत के म्मदान म्मन अ्न्का ये तरीक्मा क्न्नी अ्न्क्मी बात न्ने त्ही क्मन्के, अ्जल की प्क्कम र्ज नीत म्मन अ्न्ला म्मल न्कल्ने किल्ने दो र्खी जाल जल्ता जल्ता मन्ना जत्ता है।

बापू काङ्ग्रेस के दो र्खे म्म को खूब दीक्ते त्हे। वे जानते त्हे के काङ्ग्रेस अ्न्के वेक्कतु से फान्दे अ्न्लाना चाहती है। पर ज्मन्के अ्न् का अ्म सहातों की अ्मन्तु म्मन अ्न्ल श्वास त्हा अ्न्ले से म्मज्हे त्हे न्ने अ्न् क्क्के और न्मन त्म अ्न् की अ्मसा की योजनाओं की कामयाबान काङ्ग्रेस के दल म्मन स्तम्हे और अ्मसा काल्द अ्न्के ह्ममहारों व सहातों के अ्जक होत्ने का श्वास दला दीक्ती। वे ये दीक्के ले की के अ्न् अ्मसा के आदर्शों, सहातों और सहातों का अ्न्ला क्मर अ्न् देस पर अ्न् ले प्न्ता है के अ्न्हास के श्मर से येा की सभ्मदा और सन्सर्ती की र्जला अ्मम अ्मलों के



हिन्दुस्तान था गए. लेकिन हमें यह सब समझ लेना चाहिये कि देव हित का जो आदर्श, देस पूजा का जो मकसद इस युग के लोगों के सामने था, बापू उसे अपने सामने रख कर हिन्दुस्तान को आजाद कराना नहीं चाहते थे. वह उस अन्याय और अत्याचार को संसार से मिटाना चाहते थे जो पच्छिमी हुकूमतें हिन्दुस्तान में और दुनिया के दूसरे देशों में कर रही थीं.

हिन्दुस्तान में इंडियन नेशनल काँग्रेस अंगरेजी राज का मुकाबला बना बापू के आने के लगभग ३० साल पहले से कर रही थी. उसके सामने आजकल के पच्छिमी आदर्श थे, पच्छिमी देस हित का रूप था, पच्छिमी तरीके की पार्लिमेन्टरी हुकूमत क्रायम करने को उसने अपना मकसद बनाया था और इस मकसद को हासिल करने में वह बिल्कुल पच्छिमी तरीके का इस्तेमाल कर रही थी जिनका अहिंसा या सत्याचार से किसी तरह का कोई बास्ता नहीं था.

तीन साल राजनीत से अलग रह कर बापू ने देस की हालत को समझने की कोशिश की और आखीर में इस नतीजे पर पहुँचे कि उन्हें विदेवी सरकार से लड़ने में काँग्रेस का साथ देना चाहिये. वह देखते थे कि काँग्रेस गहरे से गहर पच्छिमी रंगों में डूबी हुई है और जो असल या तरीके उन्होंने दक्खिनी अफ्रीका में इस्तेमाल किये थे उनसे इसका बरा भी सम्बन्ध नहीं है और न शायद वह कभी उन्हें आपनाने को तैयार हो.

रोहट एकट के आन्दोलन के खमाने में जब बापू ने राजनीत में हिस्सा लेने का फैसला किया तो उन्होंने यह कोशिश की थी कि वह खई तीन हजार ऐसे लोगों की फ़ेहरिस्त तैयार करवायें कि जो बाहे काँग्रेस का साथ दे वा न दे, हर हालत में उनके आन्दोलन में हिस्सा लेने को तैयार हों. उनका लयाल था कि इनने सभी मित्र बावें जो बह फ़िरीह हुकूमत का कायनामी के साथ मुकाबला कर सकेंगे.

मल्लस्तान अक़्ते. लेकिन हमें यह सब समझ लेना चाहिये कि देस हित का जो आदर्श, देस पूजा का जो मकसद इस युग के लोगों के सामने था, बापू उसे अपने सामने रख कर हिन्दुस्तान को आजाद कराना नहीं चाहते थे. वह उस अन्याय और अत्याचार को संसार से मिटाना चाहते थे जो पच्छिमी हुकूमतें हिन्दुस्तान में और दुनिया के दूसरे देशों में कर रही थीं.

मल्लस्तान में अन्धिन नेशनल काँग्रेस अंगरेजी राज का मुकाबला बापू के आने के लगभग ३० साल पहले से कर रही थी. उसके सामने आजकल के पच्छिमी आदर्श थे, पच्छिमी देस हित का रूप था, पच्छिमी तरीके की पार्लिमेन्टरी हुकूमत क्रायम करने को उसने अपना मकसद बनाया था और इस मकसद को हासिल करने में वह बिल्कुल पच्छिमी तरीके का इस्तेमाल कर रही थी जिनका अहिंसा या सत्याचार से किसी तरह का कोई बास्ता नहीं था.

तीन साल राज नीत से अलग रहे बापू ने देस की हालत को समझने की कोशिश की और आखिर में इस नतीजे पर पहुँचे कि उन्हें विदेवी सरकार से लड़ने में काँग्रेस का साथ देना चाहिये. वह देखते थे कि काँग्रेस गहरे से गहरे पच्छिमी रंगों में डूबी हुई है और जो असल या तरीके उन्होंने दक्खिनी अफ्रीका में इस्तेमाल किये थे उनसे इसका बरा भी सम्बन्ध नहीं है और न शायद कभी उन्हें आपनाने को तैयार हो.

रौल्ट लैकट के अन्दोलन के खमाने में जब बापू ने राज नीत में हिस्सा लेने का फैसला किया तो उन्होंने यह कोशिश की थी कि वह खई तीन हजार ऐसे लोगों की फ़ेहरिस्त तैयार करवायें कि जो बाहे काँग्रेस का साथ दे वा न दे, हर हालत में उनके आन्दोलन में हिस्सा लेने को तैयार हों. उनका लयाल था कि इनने सभी मित्र बावें जो बह फ़िरीह हुकूमत का कायनामी के साथ मुकाबला कर सकेंगे.



चुका था। हमारी नैतिक (इथलाकाकी) और आर्थिक खिन्दगी को उसने बिलकुल अपने क्लब में कर लिया था। ईश्वर, मजहब, नेकी, बदी, ईमान, धर्म सबकी जगह अपने अपने देस हित के आदर्शों और योज-नाओं ने ले ली थी। इस खयाल का कि सारी दुनिया के इनसान एक कुटुम्ब हैं और एक दूसरे के सगे भाई हैं, बिलकुल खात्मा हो चुका था। जिन धर्मों और मजहबों का जन्म इन ऊँचे आदर्शों और मकसदों के पूरा करने के लिये हुआ था वह अपना पुराना रूप रंग और तेज खो चुके थे और बजाय सब इनसानों को एक कुटुम्ब बनाने के उन्हें एक दूसरे से अलग रखने में लोहे की दीवारों का काम कर रहे थे। इसलिय बापू को अपना मिशन पूरा करने में इनमें से किसी से भी कोई खास मदद नहीं मिल सकती थी। इसीलिये उन्होंने इनकी जाहरी और बाहरी बातों की तरफ जरा भी ध्यान न देकर इनके असली मकसद और सिद्धान्तों को अपने सामने रखवा और उन्हीं पर अपने सारे मिशन की बुनियाद डाली।

दक्खिन अफ्रीका की अंगरेजी सरकार हिन्दुस्तानियों के साथ क़रीब क़रीब वैसा ही बुरा बरताव कर रही थी जैसा हम अपने से नीची और अकूत जातियों के साथ करते हैं। बापू से यह सहा न गया। उन्होंने वहाँ की सरकार पर अपने अहिंसा के तरीकों और योजनाओं से गहरा असर डालकर कुछ सुधार भी हासिल किये। लेकिन इससे उन्हें सन्तोश नहीं हुआ। उन्होंने यह देख लिया कि धिना गजकाजी दबाव के वह अपने देस भाइयों की रक्षा वहाँ की सरकार के अन्यायों और जुल्मों से नहीं कर सकते। एक बार यह यक़ीन हो जाने के बाद उनके लिये दक्खिनी अफ्रीका में आन्दोलन चलाना बेकार हो गया। जब तक हिन्दुस्तानी अपने देस में खुद गुनाम रहेंगे दूसरे देसों का उनके साथ आजाद आदिमियों का सा बरताव करना नासुम-किन रहेगा। इसलिये हिन्दुस्तान को आजाद करने का सवाल बापू के सामने आया और इसी मकसद को अपना मिशन बना कर वह

चका नहा। हमारी नैतिक (अखलाकी) और आर्थिक زندगी को अُس ने بالکل اپنے قبضے میں کر لیا تھا۔ ایشور، مذہب، نیکی، بدی، ایمان، دھرم سب کی جگہ اپنے اپنے دیس ہٹ کے آदर्شوں اور یوجناؤں نے لے لی تھی۔ اِس خیال کا کہ ساری دنیا کے انسان ایک کتھب میں اور ایک دوسرے کے سگے بھائی ہیں بالکل خاتمہ ہوچکا تھا۔ جن دھرموں اور مذہبوں کا حکم اِن نیچے آदर्شوں اور مقصدوں کے پورا کرنے کے لئے ہوا تھا وہ اپنا پُرانا روپ رنگ اور تیج کھو چکے تھے اور بجائے سب انسانوں کو ایک کتھب بنانے کے انہیں ایک دوسرے سے الگ رکھنے میں لوہے کی دیواروں کا کام کر رہے تھے۔ اسلئے بابو کو اپنا مشن پورا کرنے میں اِن میں سے کسی سے بھی کوئی خاص مدد نہیں مل سکتی تھی۔ اِسی لئے انہوں نے اِن کی ظالمی اور باغری باتوں کی طرف ذرا بھی دھیان نہ دے کر اُنکے اصلي مقصد اور سدھانتوں کو اپنے سامنے رکھا اور انہیں پر اپنے سارے مشن کی بلہاد نکالی۔

دکھن افریقہ کی انگریزی سیکر ہلڈستانियों کے ساتھ قریب قریب ویسا ہی برا برتاؤ کر رہی تھی جیسا ہم اپنے سے نیچے اور اچھوت جاتیوں کے ساتھ کرتے ہیں۔ بابو سے یہ سہا نہ کیا۔ انہوں نے وہاں کی سیکر پر اپنے اعلیٰ کے طریقوں اور یوجناؤں سے کھڑے اتر ڈاکٹر کچھ سدھار بھی حاصل کئے لیکن اُس سے انہیں ملتوش نہیں ہوا۔ انہوں نے یہ دیکھ لیا کہ بلڈ راج کچی دباؤ کے وہ اپنے دیس بھائیوں کی رکشا وہاں کی سیکر کے آدیالوں اور ظلموں سے نہیں کر سکتے۔ ایک بار یہ یقین ہوجانے کے بعد انکے لئے دکھلی افریقہ میں آندلین چلانا دیدار ہوگیا۔ جب تک ہلڈستانی اپنے دیس میں خود غلام دھیلکے دوسرے دیسوں کا اُنکے ساتھ آزاد آدمیوں کا سا برتاؤ کرنا ناممکن رہے گا۔ اِس لئے ہلڈستان کو آزاد کرنے کا سوال بابو کے سامنے آیا اور اِسی مقصد کو اپنا مشن بنا کر وہ



## अहिंसात्मक इनक्रलाब का रास्ता

(एक)

(भाई मंजर अली सोखता)

[महात्मा गांधी की 'लोक सेवक संघ' की तजवीज को सामने रखकर श्री मंजर अली सोखता ने 'लोक सेवा संघ' की एक योजना देस के सामने रखी है. इस पर उन्होंने एक लेख 'नया हिन्द' में छपने के लिये भेजा है. उस लेख का यह पहला हिस्सा है. दूसरा हिस्सा अगले नम्बर में निकलेगा. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों से हमारी प्रार्थना है कि वह इन लेखों को ध्यान से पढ़ें, इन पर विचार करें और अधिक जानकारी के लिये श्री मंजर अली सोखता, सेवा कूँज आश्रम, पोस्ट गंगाघाट, उन्नाव, यू. पी. (Unnao, U. P.) से लिखा पढ़ी करें—सुन्दरलाल]

(१)

बापू के जीवन का मिशन मानव समाज में अहिंसा के साधनों और तरीकों की मदद से एक अहिंसात्मक इनक्रलाब पैदा कर देना था. वह यह जानते थे कि टिकाऊ शान्ति और उन्नति हमारे समाज में सिर्फ एक ही तरह से हो सकती है कि हम अपने आपस के राज-काजी और आर्थिक न्योहार को सदाचार के इन असूलों पर कायम कर लें जिन्हें हर इन्सान ठीक, अच्छा और ऊँचा मानता है. हजारों साल के तजरबे ने इन असूलों के इस पहलू को ठीक साबित कर दिया है.

बापू के रास्ते को सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि जिस युग में वह पैदा हुए उसमें राजकाजी जीवन समाज में खास जगह ले

## अहस्तात्मक अन्कलाब का रास्ते

(एक)

(बेहाती मल्पर, एली सोखते)

[महात्मा गान्धे की 'लोक सेवक संघ' की तजवीज को सामने रखकर श्री मल्पर एली सोखते ने 'लोक सेवक संघ' की एक योजना देस के सामने रखी है. इस पर उन्होंने एक लेख 'नया हिन्द' में छपने के लिये भेजा है. उस लेख का यह पहला हिस्सा है. दूसरा हिस्सा अगले नम्बर में निकलेगा. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों से हमारी प्रार्थना है कि वे इन लेखों को ध्यान से पढ़ें, इन पर विचार करें और अधिक जानकारी के लिये श्री मल्पर एली सोखते, सेवा कूँज आश्रम, पोस्ट गंगाघाट, उन्नाव, यू. पी. (Unnao U. P.) से लिखा पढ़ी करें—सुन्दरलाल]

(१)

बापू के जीवन का मिशन मानव समाज में अहंसा के साधनों और तरीकों की मदद से एक अहंसात्मक अन्कलाब पैदा कर देना था. वह यह जानते थे कि टिकाऊ शान्ति और अन्कली हमारें समाज में सिर्फ एक ही तरह से हो सकती है कि हम अपने आपस के राज-काजी और अन्कलाब को सदाचार के इन असूलों पर कायम कर लें जिन्हें हर इन्सान ठीक, अच्छा और ऊँचा मानता है. हजारों साल के तजरबे ने इन असूलों के इस पहलू को ठीक साबित कर दिया है.

बापू के रास्ते की सब से बड़ी कठिनाई यह थी कि जिस युग में वह पैदा हुए उसमें राजकाजी जीवन समाज में खास जगह ले



ईरान के लोग जो दिल से यह चाहते हैं कि शान्ति की बुनियादों को मजबूती से कायम हुई देखें और जो अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की खुशहाली और भलाई चाहते हैं, इनसानी क्रौम के इस तरह के शुभ चिन्तकों का मान और उनकी इज्जत करते हैं. वह चाहते हैं कि जो लोग सर तेज के आदर्शों को मानते हैं और हिन्दुस्तान के बड़े नेताओं की बताई राह पर चल कर आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सर तेज बहादुर के उन समूहों पर चलें और उन पर सच्चाई से अमल करें ताकि उनका मुल्क खुशहाल हो और तरक्की करे.

आज सर तेज का जिस्म हमारे साथ नहीं है लेकिन सबसुच आजाद हिन्दुस्तान में उनके आदर्शों की इस सराहना को देखने के लिये इस दोस्ताना जलसे में उनकी नरानी आत्मा जरूर मौजूद होगी. मुझे इजाजत दीजिये कि अपनी बात खतम करते हुए सात सौ बरस पहले के अपने यहाँ के एक महाकवि का एक शेर आप को याद दिलाऊँ. उन्होंने इसमें यह तालीम दी थी कि सारी इनसानी क्रौम मिल कर एक जिस्म है जिसमें सब अलग अलग इनसान उस जिस्म के हाथ पैर और उंगलियों की तरह हैं.

हमारे एक और शायर ने कहा है कि जो आदमी नेक नाम जीता है वह हमेशा खिन्दा रहता है क्योंकि उसके बाद भी उसकी शुभ बरचा उसके नाम को खिन्दा रखती है.

ईरान ने लोग जो दिल से यह चाहते हैं कि शान्ति की बुनियादों को मजबूती से कायम हूँ और जो अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की खुशहाली और भलाई चाहते हैं, इनसानी क्रौम के इस तरह के शुभ चिन्तकों का मान और उनकी इज्जत करते हैं. वह चाहते हैं कि जो लोग सर तेज के आदर्शों को मानते हैं और हिन्दुस्तान के बड़े नेताओं की बताई राह पर चल कर आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सर तेज बहादुर के उन समूहों पर चलें और उन पर सच्चाई से अमल करें ताकि उनका मुल्क खुशहाल हो और तरक्की करे.

आज सर तेज का जिस्म हमारे साथ नहीं है लेकिन सबसुच आजाद हिन्दुस्तान में उनके आदर्शों की इस सराहना को देखने के लिये इस दोस्ताना जलसे में उनकी नरानी आत्मा जरूर मौजूद होगी. मुझे इजाजत दीजिये कि अपनी बात खतम करते हुए सात सौ बरस पहले के अपने यहाँ के एक महाकवि का एक शेर आप को याद दिलाऊँ. उन्होंने इसमें यह तालीम दी थी कि सारी इनसानी क्रौम मिल कर एक जिस्म है जिसमें सब अलग अलग इनसान उस जिस्म के हाथ पैर और उंगलियों की तरह हैं.

हमारे एक और शायर ने कहा है कि जो आदमी नेक नाम जीता है वह हमेशा खिन्दा रहता है क्योंकि उसके बाद भी उसकी शुभ बरचा उसके नाम को खिन्दा रखती है.



कोशिश कर सकते. वह इस बात को जानते थे कि उनके मुलक की आगे की खुशहाली केवल इस बात पर निर्भर है कि लोग महात्मा गांधी के महान उपदेशों पर अमल करें और आपस के भगड़ों और ना-इत्तफाकियों से बचे. मेरे दोस्त मिस्टर अली असगर हिकमत की रहनुमाई में ईरान का कलचरी मिशन जब हिन्दुस्तान आया था तो इस मुलक के मुखर्तलक कलचरी मरकजों का दौरा करते हुए उसे इस बात का मौक़ा मिला था कि इलाहाबाद में मरहूम सर तेज बहादुर सपरू की विद्वाना और विशेषज्ञाओं का कुछ परिचय प्राप्त करें. उनकी यह विशेषताएँ सिर्फ़ इल्मों मैदान में ही नहीं बल्कि जीवन के सब मैदानों में थीं. कोई ताजुब नहीं कि उस मिशन को जब सर तेज बहादुर के वड़प्पन और उनकी इस्खलाक़ी ऊँचाई की आग्ने से समने जानकारी हुई तो उसने तेहरान लौट कर वहाँ की कलचरी और इल्मी संस्थाओं से इसकी चर्चा की.

ایران کی سلسلہٴ قزہنگستان، ایران اور ہندستان کے بیچ  
پہلے رشتوں کو زیادہ مضبوط کرنے اور دونوں ملکوں میں کلچری  
سہولتیں بڑھانے اور اُس دوست قوم کے بڑے بڑے وڈو آئوں کا مان  
کرنے کے لئے ہمیشہ اُتسک ہتی ہے۔ قزہنگستان نے سرِ تہج بہادر  
کو اپنے ایسوسی ایت ممبروں میں شامل کر کے یہ دکھلایا کہ پریم  
اور بھائی چارے کے سلسلہٴ کو پہلانے کی جو کوششیں سرِ تہج بہادر  
نے کی تھیں اُن کی قزہنگستان کتنی قدر کرنی ہے۔

مرحوم سرتاج بہادر سپرو ہندستان کے اُن نگارہ و دانوں میں سے ایک تھے جو اُس سنسکرتا کے ایسوسی ایت - ممبر بنائے گئے۔ اُس مشہور ہستی کے اُتے جانے پر ایران کے تمام کلچری دائروں نے بہت شوک منایا۔ عمارے کلچری کاؤنسل، مسٹر موحّد اُس شوک کے وقت وہاں موجود تھے۔ وہ آپ سے اُس کی چرچا کیوں گئے۔

ईरान की संस्था फरहंगिस्तान, ईरान और हिन्दुस्तान के बीच पुराने रिशतों को ज्यादा मजबूत करने और दोनों मुल्कों में कलचरी सम्बन्ध बढ़ाने और इस दोस्त क्रोम के बड़े बड़े विद्वानों का मान करने के लिये हमेशा उद्युक्त रहती है. फरहंगिस्तान ने सर तेज बहादुर को अपने एसोशियेट मेम्बरों में शामिल करके यह दिखलाया कि प्रेम और भाईचारे के सन्देश को फैलाने की जो कोशिशें सर तेज बहादुर ने की थीं उनकी फरहंगिस्तान कितनी कदर करती है.

मरहूम सर तेज बहादुर सपरू हिन्दुस्तान के उन ग्यारह विद्वानों में से एक थे जो उस संस्था के एसोसिएट मेम्बर बनाए गए। उस मशहूर हस्ती के उठ जाने पर ईरान के तमाम कलचरी दायरों ने बहुत शोक मनाया। हमारे कलचरी कौंसिलर मिस्टर मोहिद इस शोक के वक़्त वहाँ मौजूद थे। वह आप से इसकी चरचा करेंगे।



## सर तेज बहादुर सपरू

( भाई नूरी असफन्यारी )

[ नई दिल्ली में ईरान के राजदूत जनाब नूरी असफन्यारी ने २० जनवरी सन '५१ को सर तेज बहादुर सपरू के जीवन पर एक तक्रार की थी. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों के लिये उनका वह भाशन हम यहाँ छाप रहे हैं. —एडीटर ]

सर तेज बहादुर सपरू ईरान की संस्था फरहंगिस्तान के एक एसोशियेट मेम्बर थे. उनकी याद में यह जलसा किया गया है. वह हिन्दुस्तान के सब से बुद्धिमान और सब से ऊँचे आदर्शियों में से एक थे. उनकी कीर्ति और उनकी शोहरत केवल इस उप-महाद्वीप की सीमाओं के अन्दर ही महदूद नहीं थी बल्कि इस मुल्क की जग्राफियाई सीमाओं से बाहर के कलचरी दायरों में भी उन्होंने बहुत बड़ी इज्जत और बहुत बड़ा मान पाया था. उनकी यह इज्जत और उनका यह मान उनके विशेष गुणों के कारन, उनके बहुत बड़े तजर्बे के कारन और खास कर उनके उस असर के कारन था जिस से दिलों को मिलाने में बड़ी मदद मिलती थी.

भेद भावों के मिटाने में, अलग अलग तरह के लोगों में मेल-मिलाप पैदा करने में और क्लोमी एकता की मिली जुली टिकाऊ बुनियादें डालने में उन्होंने बड़ी कीमती सेवाएँ कीं जिन में अपने मुल्क के लोगों में भी उनकी बड़ी इज्जत और कदर हुई.

अफसोस आज वह जिन्दा नहीं हैं कि अपने मुल्क को आजाद देख सकते और महज नेक नियती और इनसानी प्रेम के बल पर

## सर तबिज बहादुर सपरू

( बھائی نوری اسفندیاری )

[ نئی دہلی میں ایران کے راج دورت جناب نوری اسفندیاری نے ۲۰ جنوری سن ۵۱ کو سر تबیج بھادر سپرور کے جھون پر ایک تقریر کی تھی. 'نہا ہلد' کے پڑھنے والوں کے لئے اُن کا وہ بھاشن ہم یہاں چھاپ رہے ہیں۔ —ایڈیٹر ]

سر تबیج بھادر سپرور ایران کی مستعہا فرہنگستان کے ایک ایسوسی ایت ممبر تھے. اُن کی یاد میں یہ جلسہ کیا گیا ہے. ہلدستان کے سب سے بڑھے مان اور سب سے اونچے آدمیوں میں سے ایک تھے. اُن کی کھوتی اور اُن کی شہرت کیول اس آپ مہادیب کی سہماؤں کے اندر ہی محدود نہیں تھی بلکہ اس ملک کی جغرافیائی سہماؤں سے باہر کے کلچری دائروں میں بھی انہوں نے بہت بڑی عزت اور بہت بڑا مان پایا تھا. اُن کی یہ عزت اور اُن کا یہ مان اُنکے وشیش گلوں کے کارن، اُنکے بہت بڑے تجربہ کے کارن اور خاصہ اُنکے اس اثر کے کارن تھا جس سے دلوں کو ملانے میں بڑی مدد ملتی تھی.

بھید بھائیوں کے مٹانے میں. انگ انگ طرح کے لوگوں میں مدل ملاپ پیدا کرنے میں اور قومی یکتہا کی ملر حبی تکرار ہلیڈائیوں ڈالنے میں انہوں نے بڑی قدرتی سہولتیں دیں جس سے آپ ملک کے لوگوں میں بھی اُن کی بڑی عزت اور قدر ہوئی.

افسوس آج وہ زندہ نہیں ہیں کہ آپ ملک کو آزاد دیکھ سکتے اور مستعص نیک نہتی اور انسانی پریم کے بل پر آپ ساتھی دیں بھکتوں کو ایک دوسرے کے زیادہ نزدیک لانے کے



मरुथल पर भी सावन होगा,  
सुखमय सबका जीवन होगा,  
मरुथल भी अब मधुवन होगा.

बादल की बजती है नौबत, प्लावन लेता है अंगड़ाई  
सोई हंगों जाग उठी हैं, आँखें मलती हैं तरुनाई  
राई छठ कर परबत होगी, परबत बन जाएगा राई

घेरों के डगमग में साथी,  
दुखती हुई रग रग में साथी,  
मानव के हर ढग में साथी,

यौवन जादू फूँक रहा है,  
जीवन चाबी कूक रहा है,  
नाड़ी में बल दूक रहा है.

बरती का चलतेगा आँचल, स्वर्ग का परदा हट जाएगा  
जीवन जोत से दमकेगा कन, जुग का अधेरा छट जाएगा  
जुग जुग का संताप ये साथी, घीरे घीरे कट जाएगा

बरती के आँचल की समता,  
मानव को देती है समता,  
क्या राजा, क्या जोगी रमता,

एक कोल से सब जन्मे हैं,  
हम सब इस बरती ही के हैं,  
कौन है वैरी ? सभी सगे हैं.

मरुथल पर भी सावन होगा,  
सुखमय सबका जीवन होगा,  
मरुथल भी अब मधुवन होगा.

बादल की बजती है नौबत, प्लावन लेता है अंगड़ाई  
सोई हंगों जाग उठी हैं, आँखें मलती हैं तरुनाई  
राई छठ कर परबत होगी, परबत बन जाएगा राई

घेरों के डगमग में साथी,  
दुखती हुई रग रग में साथी,  
मानव के हर ढग में साथी,

यौवन जादू फूँक रहा है,  
जीवन चाबी कूक रहा है,  
नाड़ी में बल दूक रहा है.

बरती का चलतेगा आँचल, स्वर्ग का परदा हट जाएगा  
जीवन जोत से दमकेगा कन, जुग का अधेरा छट जाएगा  
जुग जुग का संताप ये साथी, घीरे घीरे कट जाएगा

बरती के आँचल की समता,  
मानव को देती है समता,  
क्या राजा, क्या जोगी रमता,

एक कोल से सब जन्मे हैं,  
हम सब इस बरती ही के हैं,  
कौन है वैरी ? सभी सगे हैं.



नया हिन्द

जब आएगा नया जमाना

मई सन् '५१

तो दे उठेंगे ऐ साथी, दामन पर छाँसू घन्बे  
कर्म की ऐसी जोत जोगी, जाग उठेंगे युग के सपने  
घरती ऐसी समतल होगी, मिट जाएँगे ऊँचे नीचे

छतें महल की नीची होंगी,  
झोपड़ियाँ कुछ ऊँची होंगी,  
ऊँची नीची एक सी होंगी,

छोटे बड़े बराबर होंगे,  
छत्री शूद्र बराबर होंगे,  
सभी समान उजागर होंगे.

देवों की भाशा के ऊपर, मानो बानी छा जाएगी  
गिट पिट सिट पिट सुनकर जनता, कबतक आखिर भरमाएगी  
'येन' 'नैन' 'फे' 'क्काक' के डर से, कबतक जनता भय खाएगी

खोबी की भाशा में साथी,  
खेतों की गाथा में साथी,  
दलितों की चरचा में साथी,

फिर से वेद रचे जाएँगे,  
फिर जिवरील सँदेसे देंगे,  
हल, कुदाल के मन्त्र कहेंगे.

सक्कीरें अँगड़ाई लेंगी, मेरी कबिता के सरगम से  
नव युग का निर्माण करूँगा, अपने छाँसू के ऐटम से  
सुख का हक संसार रचूँगा, दुख की लय से अपने गम से

नया हिन्द का प्रस्ताव जीना,

नया हल

जब आँखा नया जमाना

मई सन् '५१

लुटे अँधेस के अँ सान्ही, दामन पर आँसू के देह  
कर्म की ऐसी जोत जोगी, जाग उठेंगे युग के सपने  
घरती ऐसी सम तल होगी, मिट जाएँगे ऊँचे नीचे

जहल्लेस मचल की निचि होंगी,  
जहल्लेस कच्चे आँचि होंगी,  
आँचि निचि एक सी होंगी,

जहल्लेस बूँदे बराबर होंगे,  
जहल्लेस शूद्र बराबर होंगे,  
सभी समान अँजागर होंगे.

देवों की बहाशा के ओर, मानो बानी जहा जाँगे की  
कबतक सक्कीरें सक्कीरें, कब तक अँधे बहमाँगे की  
'ए' 'ए' 'फ' 'फ' के डर से, कब तक जलता रहे कलहकी

कहली की बहाशा में सान्ही,  
कहल्लेस की लल्ला में सान्ही,  
दलितों की चरचा में सान्ही,

हल से वेद रचे जाएँगे,  
हल जिवरील सल्लेसे देंगे,  
हल कदाल के मल्ले कहेंगे.

तक्कीरें अँगाई लेंगी, मेरी कबिता के सरगम से  
नव युग का निर्माण करूँगा, अपने आँसू के ऐटम से  
सुख का हक संसार रचूँगा, दुख की लय से अपने गम से

नया हिन्द का प्रस्ताव जीना,





जिल्द १०

मई, सन् '५१

नम्बर ५

नمبر ०

मئی سن ०१

جلد ۱۰

• • • • •  
 'जात आदमी. प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली,  
 'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की मोली.

• • • • •  
 'जात آدمی' پریم دھرم ہے 'ہندستانی بولی.'  
 'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

## जब आएगा नया ज़माना

( भाई बरन सरन 'नाब' )

हिमगिरि की दहलेगी छाती, गंगा का फलटेगी धारा  
 सोनी में सबोदय होगा, महलों का दूबेगा तारा  
 नबबीबन का सोत बहेगा, दुख का होगा बारा न्यारा

काही काली रात से साबी,  
 इस रजनी के गात से साबी,  
 जीत से साबी मात से साबी,

मोर की किरतें फूट रही हैं,  
 शहरजी बाँटें टूट रही हैं,  
 बुल्ल की कच्चे बूट रही हैं.

## جب آئیگا نیا زمانہ

( بھائی برون سرن 'ناؤ' )

ہم گری دھلے گی چھاتی. گنگا کی پلٹے کی دھارا  
 کھولی میں سرورڈے ہوگا. محلوں کا تریہ کا تارا  
 نوجھوں کا سرورٹ بہے گا. دُھ کا ہوگا وارا نہارا.

کالی کالی رات سے ساتھی,  
 اِس رچلی کے گات سے ساتھی,  
 جھپ سے ساتھی مات سے ساتھی,

مور کی کزنوں پھوٹ رہی ہیں,  
 شہرینچی چالوں توٹ رہی ہیں,  
 ظلم کی نینھوں چھوٹ رہی ہیں.



“नया हिन्दू”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द्र. भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

मई १९५१

क्या किस से

१—जब आरगा नया जमाना ( कविता )—भाई चरन

सरन 'नाऊ'

२—सर तेज बहादुर सपरू—भाई नूरी असफन्द्यारी ... ४०३

३—अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता—भाई मंजर ... ४०६

अली सोखना

४—जवानो!—भगवानदीन ... ४०९

५—जग की जड़—भाई आशा राम ... ४२३

६—ब्रह्मदावाद की कॉंग्रेस बैठक—भाई युरेश राम भाई ... ४३०

७—लाल बान्ति ... ४३८

८—बटवार के खंडहरों का फिर बनाव—भाई सरयानन्द ... ४४७

सरस्वती

९—शुद्ध व्याहार आन्दोलन—भाई किशोरलाल मशहूवाला ... ४५१

१०—बच्चों की दुनिया—एडिटर प्रेम भाई ... ४५७

११—कुछ कितने—नया साहित्य; नई बीमारी; पुराने खुदा ... ४६४

१२—इसारी राय—बच्चों का नया आन्दोलन—सुन्दरलाल; ... ४७१

सोमनाथ का फिर से उद्धार—सुन्दरलाल; कारिया ...

में नई चाल—भगवानदीन; शिस्त बनाम लोकशाही ...

—भगवानदीन; सांख्यिक रूस में धर्म को आज्ञाही ...

४७६

कमिन्त—हिन्दुस्तान में छेँ रुपया साल, बाहर दस रुपया साल; ...

एक परचा दस आने. ...

१४५, मुद्रांगज, इलाहाबाद

“नया हिन्दू”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

एडिटर—

ताराचन्द्र. भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

मई १९५१

क्या किस से

क्या किस से

१—जब अंधा नया जमाना ( कविता )—भाई चरन ... ४०३

सरन 'नाऊ' ... ४०६

२—सर तेज बहादुर सपरू—भाई नूरी असफन्द्यारी ... ४०९

३—अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता—भाई मंजर ... ४२३

अली सोखना ... ४३०

४—जवानो!—भगवानदीन ... ४३८

५—जग की जड़—भाई आशा राम ... ४४७

६—ब्रह्मदावाद की कॉंग्रेस बैठक—भाई युरेश राम भाई ... ४५१

७—लाल बान्ति ... ४५७

८—बटवार के खंडहरों का फिर बनाव—भाई सरयानन्द ... ४६४

सरस्वती ... ४७१

९—शुद्ध व्याहार आन्दोलन—भाई किशोरलाल मशहूवाला ... ४७६

१०—बच्चों की दुनिया—एडिटर प्रेम भाई ... ४७६

११—कुछ कितने—नया साहित्य; नई बीमारी; पुराने खुदा ... ४७६

१२—इसारी राय—बच्चों का नया आन्दोलन—सुन्दरलाल; ... ४७६

सोमनाथ का फिर से उद्धार—सुन्दरलाल; कारिया ... ४७६

में नई चाल—भगवानदीन; शिस्त बनाम लोकशाही ... ४७६

—भगवानदीन; सांख्यिक रूस में धर्म को आज्ञाही ... ४७६

४७६

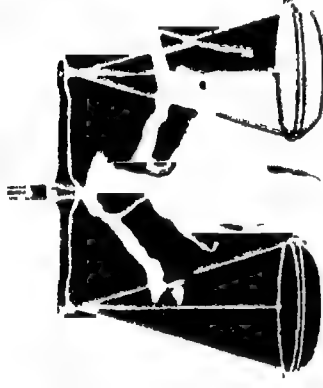
कमिन्त—हिन्दुस्तान में छेँ रुपया साल, बाहर दस रुपया साल; ... ४७६

एक परचा दस आने. ... ४७६

१४५, मुद्रांगज, इलाहाबाद



# हिन्दु



# हिन्दु

## इस नम्बर के खास लेख

सहस्र बहादुर सपरु—दूरी असफलकारी  
अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता—मंजु आला मोहन

अबानो !—भगवानदीन

जंग की जड़ें—आशाराम

हमारी राय :—

बर्षा का नया आन्दोलन—सुन्दरलाल

सोमनाथ का फिर से उद्धार—सुन्दरलाल

कोरिया में नई चाल—भगवानदीन

शक्ति बनाम लोकशाही—भगवानदीन

मई सन् १९५१

अभिनव दस कला

## अस नम्बर के खास लेख

मोहजि बहादुर सपरु—दूरी असफलकारी  
अहिंसात्मक इनकलाब का रास्ता—मंजु आला मोहन

अबानो !—भगवानदीन

जंग की जड़ें—आशाराम

हमारी राय :—

बर्षा का नया आन्दोलन—सुन्दरलाल

सोमनाथ का फिर से उद्धार—सुन्दरलाल

कोरिया में नई चाल—भगवानदीन

शक्ति बनाम लोकशाही—भगवानदीन

मई सन् १९५१

अभिनव दस कला

हिन्दुस्तानी कलचर मोसाइटी. इलाहाबाद

हिन्दुस्तानी कलचर मोसाइटी. इलाहाबाद



# भारत का विधान

## पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी मन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेजों राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा  
मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का कर्ज है कि जिस विधान के अधीन  
स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह  
समझ ले.

यदि आप आने वाले आस चुनाव में, जिस पर भारत का  
सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और  
आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी  
है कि आप इस पुस्तक को ध्यान में पढ़ लें.

आमानी के लिये किताने के आखीर में हिन्दी में अंगरेजी  
और अंगरेजी से हिन्दी भाषा पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है.  
भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आमान बामहावरा भाशा. रायल अठपेंजी बडा माइज.  
लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की मुन्दर जिल्द. कीमत केवल  
माढ़े मान रुपय.

मिलने का गता :-

मैनेजर नया हिन्द  
१५५, मुद्रा गज.  
इलाहाबाद.

# भारत का उद्धान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २१ जनवरी सन १९५० - सारे भारत में लागू हुआ.  
'भारत में अंगरेजों राज' के लेखक प्लेडट सल्लर लाल द्वारा  
मूल अंगरेजी से अनुवाद.

हर भारत वासी का कर्ज है कि जिस उद्धान के अधीन  
भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले  
यदि आप आने वाले आस चुनाव में, जिस पर भारत का सारा  
भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और  
आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी  
है कि आप इस पुस्तक को ध्यान में पढ़ लें.

आमानी के लिये किताने के आखीर में हिन्दी में अंगरेजी  
और अंगरेजी से हिन्दी भाषा पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है.  
भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आमान बामहावरा भाशा. रायल अठपेंजी बडा माइज.  
लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की मुन्दर जिल्द. कीमत केवल  
माढ़े मान रुपय.

मैनेजर नया हिन्द  
१५५, मुद्रा गज.  
इलाहाबाद.

मिलने का गता :-



आपना

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफेरन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, विरादरियों और फिर्कों में आपस का मेल बढ़ाना।

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजिद खवाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक; गवर्निंग बॉडी प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल।

मि० सैयद महमूद, डा० नारायण, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० खंवर अली साख्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, मि० विरामेश्वर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूतम चन्द रांका, काजी मोहम्मद अब्दुल गफ्फार और श्री आस प्रकाश पालिवाल, मेम्बरी के कान्वो के लिये लिखिये।

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,  
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद।

नोट—सोसाइटी के नये क्रायदे के अनुसार मेम्बरी की फीस सिर्फ एक रुपया कर दी गई है। “नया हिन्दू” के जो गाइड मेम्बर बनना चाहें उनकी सिर्फ छह रुपया बन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा। सबका से मेम्बरी की फीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकते हैं। आपका दाम की किताब लेने पर एक बार एक रुपया कम कर सकते हैं।

मद  
(१) एक ایسی هلدستاتی کلچر کی پیمائش  
اچس میں سب هلدستاتی شامل ہیں۔  
(۲) ایکتا پیمائش کے لئے کتابوں، اخباروں، رسائلوں وغیرہ کا  
بہانہ۔  
(۳) پوهائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں  
میں سب شعروں، چاروں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا مेल  
بہانہ۔

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالجید خراجہ؛ وائس  
پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی  
کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سدرلال۔  
گورننگ باڈی کے اور ممبر—  
ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سید جمال ندوی،  
ڈاکٹر سید علی سیف، شری بی۔ جی۔ کھنجر، مسٹر ایس۔  
مسٹر منظر علی سیف، مہاتما بھگوان دین سیف، پرنس چند  
کے۔ دودرا، پنڈت بشمبھار ناتھ، مہاتما بھگوان دین سیف، پرنس چند  
وایکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالہوال۔  
ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

سدرلال

سکریٹری، هلدستاتی کلچر سوسائٹی،  
۱۴۵، مٹھی کلچ، الہ آباد۔

نہت—سوسائٹی نے نئے قاعدے کے انیسار ممبروں کی فیس  
صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ ”نہا هلد“ کے جو مالک ممبر  
ہلنا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چلندہ دینے پر ہی ممبر بنا  
لیا جائیگا۔ الگ سے ممبروں کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی  
ہوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکتے ہیں۔  
ایک کتاب کے علاوہ ایک یا ایک دو روپیہ کم کر سکتے ہیں۔

کتابت دس کتابوں

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद



## हिन्दू के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

( अंगरेजी नागरी लिखावट में )

हिन्दू का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ लाख अंगरेजों शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं। भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये। क्रीमत दो रुपये.

**मुस्लिम देश भक्त - लेखक - श्री रतन लाल बंसल.**

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान दहेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माना को गुलामों की ज़ज्बों से आजाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क्रोमव सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद — सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.**

इस किताब में उन चीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों को फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भा देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान करवान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो किरकवाराना दंगों में लोगों को डवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और विकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

**किसान की प्रकार—** लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिज्ञचरणी रखते हैं और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विप्रवास रखते हैं. कीमत पाँच आने.

## ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبد اولی

(اندھیزو ناٹو لکھارت مہیں)

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شہدوں کے لئے آسان ہندستانی شہد مہانسا بہکوان دین اور دوسرے ودھانوں نے سمجھائے ہیں۔ بہارت کے ودھان کو سمجھائیے کے لئے اس شہداری کو اپنی پاس ضرور رکھئے۔ قیمت دو روپے۔

مسلم دایش پھکت۔۔ پھکت دین لال بلسل۔

آن مسلمان دیہی بہکمتوں کے جھون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر ہندوستان اور ویدیشوں میں رہتے ہوئے بہارت مانا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب پورے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

سہارک — شری رتن لال بھنسل۔

اِس لعاب میں اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے ویدیشی حاکموں کی پھلائی پھرت کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہونے دیکھ ایک چھٹی کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی۔

ان بہادروں کی کہاساں جو فرقہ وارانہ جنگوں میں لوگوں کو

۱۰ ایسا پڑھنے کے پتھلے کی کتاب .

سلسلہ جلد اور چمکے کاغذ پر چھپی آہ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دامن صوف ڈھائی (دو) پیسہ .

کسان کی بکار۔ لہیک۔ شہی آر. ویلکٹ رائڈ.

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں۔ اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں اور بھارت کے آئین سلطنت کو درود کرنے میں دشواریاں رکھتے ہیں۔ قیمت پانچ آنے۔



## पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :-

**हिन्दू मुसलिम एकता**— इस में वह चार लेखक जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दाबत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफे की किताब. क्रीमत सिकंदर बारह आने.

**महात्मा गांधी के बलिदान से सबक्र**—साम्प्रदायिकता यानी फिरकापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मजदहवी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आखिर में देस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क्रीमत बारह आने.

**पंजाब हमें क्या सिखाता है**— महात्मा गांधी की सलाह से अक्टूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दोरे के बाद बहों की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इ प छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के जिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क्रीमत चार आने.

**बंगाल और उससे सबक्र**— इस छोटी सी किताब में सन् १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरके-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये छत्स करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क्रीमत सिकंदर दो आने.

## पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :-

**हन्दु मुसलम आिकता**— اس میں وہ چار لکچر جمع

کر دیئے گئے ہیں جو پندت جی نے کنسلہیوٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دیئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

## مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامبردايکٲا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج گاجی ' مذہبی اور انتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج ' جس نے آخر میں دیس بچا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بچے میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

## پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے— مہاتما گاندھی

کی صلح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھیشکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک وزنن . اس پچھتی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سچھاڑ بھی دیہی گئے ہیں . قیمت چار آنے .

## بنگل اور اس سے سبق— اس چھتی سی

کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقوارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سچھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .



## गीता और कुरान

### लेखक-पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती दुनियादारी सबाइयों को बयान किया गया है।

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देख को हालत, गीता के बड़प्पन और एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है।

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हानत, कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है। इस में कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ्फो तरजुमा दिया गया है। यह भी बताया गया है कि कुरान में जेहाद, आक्रबत, आखरत, जन्नत, जहन्नम, काफिर वगैरा किसे कहा गया है।

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सरुचो जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये।

पौने तीन सौ सफे की सुन्दर जिल्द बँधी किताब को क्रीमन सिर्फ ढाई रुपये।

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्टी गंज, इलाहाबाद।

## किता और कुरान

### लेखक—पंडित सुन्दर लाल

अस किताब के शुरुआत में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की किताबों को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती दुनियादारी सबाइयों को बयान किया गया है।

उसके बाद कुरान के लिखे जाने के वक्त की इस देख की हालत, कुरान के बड़प्पन और एक अध्याय को लेकर कुरान की तालीम को बतलाया गया है।

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बड़प्पन और किताब की बात पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है। इस में कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ्फो तरजुमा दिया गया है। यह भी बताया गया है कि कुरान में जेहाद, आक्रबत, आखरत, जन्नत, जहन्नम, काफिर वगैरा किसे कहा गया है।

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सरुचो जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये।

पौने तीन सौ सफे की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क्रीमन सिर्फ ढाई रुपये।

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्टी गंज, इलाहाबाद।



नीचे लिखी सब किताबें नागरी और बंदू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं।

डाक या रेल सर्व हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा।

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अलौ सोखता

२६ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने एक सुभाष के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था। इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक लोक सेवक संघ बना कर काम करें।

१० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घण्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफसे उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें। यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अलौ सोखता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इन्ने गिने लोगों में से एक हैं।

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है। २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपये।

बच्चे लकड़ी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं।

डाक या रेल खर्ज हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा।

## महान्ता गान्धेय कय वसयत

लुहक—शुुरी मलुषरु अलु सुखतु

२९ जलुुरी सन १९ॢॢ कु महान्ता गान्धेय ने आल अन्धिया कन्ग्रेस के सामने अक सलुुह आ के उरुप मलु 'लुक सुलुक सलुक' का अक नुहा उदहन तनार कुया तनह। अस उदहन मलु अनुहने ने सलुह दुी तेी कु काङ्ग्रेस का सारा सलुकुतुन तुुरु दुया जारु 'अुर काङ्ग्रेस वाले हकुरमत से बाहर नल कु अक 'लुक सुलुक सलुक' बल कु काम कुयन।

ॢॢ जलुुरी कु अलु दुलहनत से ककुह कुधतुे बने महान्ता जलु ने काङ्ग्रेस के जलुल सुकुरलुतुी कु बल कु रुह उदहन दुया कु रुह गान्धेय जलु कुी लुरल से असे आल अन्धिया काङ्ग्रेस कलुतुी मलु बलु कु दुयन। ये जलुुतु सारुदहन दुयन के नलम गान्धेय जलु कुी अखुरी वसयत है अुर असुी वयाकनहा गान्धेय जलु के डुरम बलुत शुुरी मलुषरु अलु सुखतु ने कुी है जलु गान्धेय उद कु सुलुलुलु 'अुर अलाने वाले दुयन के अने लुके लुकन मलु से अक मलु।

गान्धेय उद कु सुलुलुलु के लुके असु अलुलु बलुत सुलुुरी है। ॢॢॢ सलुु कु सलुुलु जलु बलुधे कलुल कुी कुलुत सुरुल लु उरुलुके।



उस धर्म पर अमल करने वाले की तरफ न खिंच सकें और अपना पूरा पूरा प्यार उसे न दे सकें. फिर यह तो हो ही नहीं सकता कि उस धर्मात्मा के सखा या सहेली रुठ बैठें या वह मिलकर भजन पूजन न कर सकें या धर्म चरचा न कर सकें. शीरीं बहन जब जी से ईसाई धर्म को अपना लेगी तब वह मिसेज जोन्स की सौत सी न रहकर सहेली बन जायेगी. कृष्ण की गोपियों में सौतिया डाह न था, फिर ईसा की गोपियों में क्यों रहने लगा ?

सचचे ईसाई बनने से हमारा क्या मतलब है, इसे हम जरा साफ कर दें. हज़रत ईसा के बाप ईसाई नहीं थे. और हज़रत ईसा न ईसाई पैदा हुए और न ईसाई मरे. वे उस धर्म के धर्मात्मा थे जिस धर्म का धर्म के सिवा और कोई नाम नहीं हो सकता. सचचे धर्मात्मा होने के नाते वह सभी को धारें थे. और क्रूस पर बढ़ाये जाने का हुकम देने वाले जब को और क्रूस पर चढ़ाने वाले को भी वह बेहद धारें थे. तभी तो वह क्रूस पर चढ़ कर भी मरे नहीं. हज़रत ईसा सचचे धर्मात्मा थे इसलिये लोगों ने उन्हें के नाम पर धर्म का नाम ईसाई धर्म रख दिया जिसका सीधा सादा मतलब यह है कि धर्म पर अमल इस तरह करो जैसे ईसा ने किया. बस. अब हम शीरीं बहन को यही सलाह देते हैं कि वह ईसाई धर्म को इस तरह अपनाएँ कि ईसाई न रह कर सिर्फ शीरीं रह जायँ और हमें विश्वास है कि फिर उन्हें मिसेज जोन्स से कोई शिकायत न रह जायेगी.

२८. ३. १९

—भगवानदीन

—बेगवानदीन

०१-३-१९

हमारी राय

अप्रैल सन् ०१

नया हृन्द

किस देहम पर عمل करने वाले की طرف न कहेच सकें और अपना पूरा प्यार ऐसे न दे सकें. यह ये तो हो ही नहीं सकता कि उस देहमताना के सकहा या सहेली (रुठ बैठें) या वह (मिलकर भजन पूजन न कर सकें) या देहम चरचा न कर सकें. शरीरों में जब जी से ईसाई धर्म को अपना लेगी तब वह मिसेज जोन्स की सौत सी न रहकर सहेली बन जायेगी. कृष्ण की गोपियों में सौतिया डाह न था, फिर ईसा की गोपियों में क्यों रहने लगा ?

सचचे ईसाई बनने से हमारा क्या मतलब है. इसे हम जरा साफ कर दें. हज़रत ईसा के बाप ईसाई नहीं थे. और हज़रत ईसा न ईसाई पैदा हुये और न ईसाई मरे. वे उस धर्म के धर्मात्मा थे जिस धर्म का धर्म के सिवा और कोई नाम नहीं हो सकता. सचचे देहमताना होने के नाते वह सभी को धारें थे. और क्रूस पर चढ़ाये जाने का हुकम देने वाले जब को और क्रूस पर चढ़ाने वाले को भी वह बेहद धारें थे. तभी तो वह क्रूस पर चढ़ कर भी मरे नहीं. हज़रत ईसा सचचे धर्मात्मा थे इसलिये लोगों ने उन्हें के नाम पर धर्म का नाम ईसाई धर्म रख दिया जिसका सीधा सादा मतलब यह है कि धर्म पर अमल इस तरह करो जैसे ईसा ने किया. बस. अब हम शरीरीं बहन को यही सलाह देते हैं कि वह ईसाई धर्म को इस तरह अपनाएँ कि ईसाई न रह कर सिर्फ शरीरीं रह जायँ और हमें विश्वास है कि फिर उन्हें मिसेज जोन्स से कोई शिकायत न रह जायेगी.

कोई शिकायत न रहे जायेगी.



अपने गुजारे के लिये कुछ काम करने लगती हैं। अकेलेपन से बचने के लिये अपनी एक सहेली मिसेज जोन्स के साथ रहने लगती हैं। मिसेज जोन्स ईसाई हैं। मिसेज जोन्स भी विधवा हैं। दोनों में खूब प्रेम है। यह प्रेम १९ बरस चलता है। अब शरीर बहन बाक्रायदा ईसाई धर्म का बपतिस्मा तो नहीं लेतीं पर बाल ढाल, रंग रूप, रस्मरिवाज, पूजा पाठ सभी में ईसाई बन जाती हैं। दोनों कई बार साथ साथ गिरजा जा चुकी हैं। पर एक दिन अचानक मिसेज जोन्स शरीरों को डपट कर अपनी मोटर गाड़ी से यह कह कर उतार देती हैं कि वह पारसी हैं इसलिये गिरजा नहीं जा सकतीं। शरीरों बहन उतर जाती हैं। पर बेहद दुख मानती हैं यहाँ तक कि न खाना खाती हैं, न सो पाती हैं, न आँसू रोक पाती हैं और न किसी और तरह चैन पाती हैं। उसके बाद से दोनों की जो एक ही धर्म पर मिल बैठ कर चरचा होती थी बन्द हो जाती है। अब दोन साल होने आते हैं, न भजन होता है न सतसंग, न धर्म सम्बन्धी और कुछ बात। दोनों में प्यार खूब बना हुआ है, अलग होना कोई नहीं चाहता। पर धर्म के मामले में दोनों ऐसे रहती हैं मानो एक दूसरे की सौत हैं।

देहाना बहन शरीरों बहन की तरफ से यह सबाल पूछती हैं कि शरीरों बहन अब क्या करें।

हमारा जवाब—

हम धर्म में यह ताकत है कि अगर उस पर सच्चे जी से धर्म में यह ताकत है कि अगर उस पर सच्चे जी से

अपे गजारे कहे कहे काम करने लگती हैं। अकेले पन से बचने केलीं अपली एक सहेली मिसेज जोन्स के साथ रहने लगी हैं। मिसेज जोन्स ईसाई हैं। मिसेज जोन्स भी विधवा हैं। दोनों में खूब प्रेम है। यह प्रेम ११ बरस चलता है। अब शरीरों बहन बाक्रायदा ईसाई धर्म का बपतिस्मा तो नहीं लेतीं पर बाल ढाल, रंग रूप, रस्म रवाज, पूजा पाठ सभी में ईसाई बन जाती हैं। दोनों कभी बार साथ साथ गिरजा जा चुकी हैं। पर एक दिन अचानक मिसेज जोन्स शरीरों को डपट कर अपनी मोटर गाड़ी से यह कह कर उतार देती हैं कि वह पारसी हैं इसलिये गिरजा नहीं जा सकतीं। शरीरों बहन उतर जाती हैं। पर बेहद दुख मानती हैं यहाँ तक कि न खाना खाती हैं, न सो पाती हैं, न आँसू रोक पाती हैं और न किसी और तरह चैन पाती हैं। उसके बाद से दोनों की जो एक ही धर्म पर मिल बैठ कर चरचा होती थी बन्द हो जाती है। अब दोन साल होने आते हैं, न भजन होता है न सतसंग, न धर्म सम्बन्धी और कुछ बात। दोनों में प्यार खूब बना हुआ है, अलग होना कोई नहीं चाहता। पर धर्म के मामले में दोनों ऐसे रहती हैं मानो एक दूसरे की सौत हैं।

देहाने बहने शरीरों बहने की तरफ से ये سوال पूछती हैं कि शरीरों बहने अब क्या करें।

हमारा जवाब—

हम धर्म में ये ताकत है कि अगर अस पर सच्चे जी से धर्म में ये ताकत है कि अगर अस पर सच्चे जी से



बिजोबा जी की पैदल यात्रा बहाँ के रहने वालों के लिये नसीहत भरी साबित होगी. साथ ही साथ इससे, कुछ सबक हमारे रचनात्मक कार्यक्रमों भी सीखेंगे जो रेल के डिब्बे को ही अपना तजुरबा घर बनाय हुए हैं, जो कॉंग्रेस वालों की तरह अपने अपने घरों में गद्दी बना बनाकर जम गये हैं. जिनकी लत स्मारक निधियों के सहार या सरकारी भान्दों के बल पर संस्थायें चलाने की पड़ गई है, जो खुद कोई जिस्मानी मेहनत नहीं करते जिसकी वजह से एक तरफ से तो जनता से सम्पर्क खो बैठे हैं और दूसरी तरफ एक दरबार अपने और अपने नीचे काम करने वालों के बीच खड़ी कर ली है. हमें उम्मीद है कि शिवरामपल्ली में जमा होकर वह जरा गहराई के साथ गौर करेंगे और बिजोबा जी की सरपरस्ती में जनता के ज्याना निकट लाने वाले रास्ते पर चलना शुरू कर देंगे.

( ७७७ )

28-3-95X.

—सुरेश राम भाई

# एक समस्या

माँ बं महीने के 'मंगल प्रभात' में सन्ना ५१ पर 'रहाना तैयबजी की तरफ से एक समस्या छपी है, 'रहाना वहन से हम बड़ोना में उनके पिता जी के जीते जी मिले हैं, यों उनके स्वभाव से थोड़ी जानकारी है. बस इसी नाते हम समस्या को माँ के समझते हैं और अपने तजरबे के बल पर उसका जवाब नाँचे दूँज करते हैं.

समस्या का ख़लासा यह है—

**एक शरीर बहन जा पारमी सह निभना हा**

۱۵، ۱۶-۱۷

معارف دہلی

33

وَنوَباجی کی پھدل پاترا وہاں کے دھنمے والوں کھلئے نصیحت بھری ثابت ہوئی۔ ساتھ ہی ساتھ اُس سے کچھ سبق ہمارے رجحاناتک کاربہ کرنا بھی سیکھنے کے جو ویل کے دے کو ہی ایسا تجربہ کُہو پٹائے ہوئے ہوں، جو کانگریس والوں کی طرح اپنے اپنے گھروندوں میں گلی بند بنا کر جم گئے ہوں، جنکی لت اسماک زندہ یوں کے سہارے یا سڑکوں گزانتوں کے بل پر سنبستہ تھیں چلانے کی پڑ گئی ہے، جو خود کوئی جسمانی محنت نہیں کرتے جسکی وجہ سے ایک طرف سے تو جلتا سے سپرک کھو بیٹھے ہیں اور دوسری طرف ایک دیوار اپنے اُرد اپنے نیچے کلم کرنے والوں کے بھیج کھڑی کر لی ہے۔ ہمیں اُمید ہے کہ شورام پٹی میں جمع ہوکر وہ ذرا گھرائی کے ساتھ شور کوبھگے اور نوَبا جی کی سرپرستی میں جلتا کے زیادہ نکمت لائف والے راستے نہ چلتا شروع کر دیں گے۔

一、

五、

可也

مارچ مہینے کے 'سنگل پرہات' مہم صفحہ ۵۱ پر ریکٹانہ طیب جی کی طرف سے ایک سمسیا چھپی ہے۔ ریکٹانہ یوں سے ہم بڑودہ میں 'نکے پتا جی کے جیتے جی ملے ہیں' یوں 'نکے سہاو سے تھوڑی جان گاری ہے۔ بس اسی ناتے ہم سمسیا کو مارنے کی سمجھتے ہیں اور اپنے تجربے کے بل پر اُس کا جواب نہیچے درج کرتے ہیں۔

مسئله کا خلاصہ یہ ہے —



नहीं, अपनी शरज के लिये ही हर कोई दीवाना दिखलाई पड़ता है. सारा जमाना छलट गया है. कोई सूरत नजर नहीं आती, कोई उम्मीद बर नहीं आती.

ऐसा लगता है मानों सब डूब गया हो यानी सर्वास्त हो गया हो. इस अंधेर-तारीकी में कब तक जिन्दा रहा जा सकेगा. खरूरत है सर्वोदय के सूरज के निकलने को. बापू ने इसका मंत्र दिया. उनके जाने के बाद उनके बहुत से पैरोकारों ने सेवाधाम में जमा होकर, विनोबा जी के बताने पर, सर्वोदय समाज कायम किया. इस समाज का सालाना सम्मेलन राष्ट्रीय अठवार में—६ और १३ अप्रैल के बीच—हुआ करता है. सेवाधाम के बाद यह जलसा राज ( इन्दौर ) में हुआ, फिर अनुगुल ( वड़ीसा ) में. इस साल यह हैदराबाद ( दکن ) से चार-पाँच मील दूर शिवरामपल्ली में हो रहा है. ता० ८ मार्च को अपने परमधाम आश्रम से विनोबा जी शिवरामपल्ली के लिये पैदल निकले हैं. शिवरामपल्ली परमधाम से ३०० मील पर है. पैदल जाने का फैसला उन्होंने इस वजह से किया ताकि अपना सर्वोदय संदेश जगह जगह पर आम जनता तक खुद पहुँचा सकें और उससे अपील कर सकें कि गांधी जी की बरशी के मौक़े पर हर आदमी अपने काते सूत की एक गुन्डी लेकर मेले की जगह पर जमा किया करे. यह गुन्डी एक निशानी है श्रम ( मेहनत ) यह की यानी मेहनत की कदरदानी को, बापू में अपनी श्रद्धा जाहिर करने की, सर्वोदय की लातिर एक अदना कोशिश करने की.

नहीं. अपनी फुरसत किये ही हर कौन दीवाने दैह-नै-पड़ता है. सारा जमाने अल्ट किया है. कौन सी नज़र नहीं आती. कौन सी उम्मीद बर नहीं आती.

ऐसा लगता है मानों सब दूर किया हो ऐसी सुख-सुख हो रहा हो. इस अन्धेरी-तारीकी में सब तक ज़िन्दा रहा जा सकेगा. खरूरत है सर्वोदय के सूरज के निकलने की. बापू ने इसका मंत्र दिया. उनके जाने के बाद उनके बहुत से पैरोकारों ने सेवाधाम में जमा होकर, विनोबा जी के बताने पर, सर्वोदय समाज कायम किया. इस समाज का सालाना सम्मेलन राष्ट्रीय अठवार में—६ और १३ अप्रैल के बीच—हुआ करता है. सेवाधाम के बाद यह जलसा राज ( इन्दौर ) में हुआ, फिर अनुगुल ( वड़ीसा ) में. इस साल यह हैदराबाद ( दکن ) से चार-पाँच मील दूर शिवरामपल्ली में हो रहा है. ता० ८ मार्च को अपने परमधाम आश्रम से विनोबा जी शिवरामपल्ली के लिये पैदल निकले हैं. शिवरामपल्ली परमधाम से ३०० मील पर है. पैदल जाने का फैसला उन्होंने इस वजह से किया ताकि अपना सर्वोदय संदेश जगह जगह पर आम जनता तक खुद पहुँचा सकें और उससे अपील कर सकें कि गांधी जी की बरशी के मौक़े पर हर आदमी अपने काते सूत की एक गुन्डी लेकर मेले की जगह पर जमा किया करे. यह गुन्डी एक निशानी है श्रम ( मेहनत ) यह की यानी मेहनत की कदरदानी को, बापू में अपनी श्रद्धा जाहिर करने की, सर्वोदय की लातिर एक अदना कोशिश करने की.



साफ साफ लिखा था कि इस देस के यह पूंजीपति बिदेसी पूंजीपतियों के साथ मिल कर और हिस्सा बटा कर इस देस को बेचने और यहाँ की करोड़ों जनता को और अधिक चूसने और बरबाद करने की क्रिया में हैं। यह जाना जाना और चक्कर बराबर जारी है। हमें अधिक दुख इस बात का है कि हमारी राष्ट्रीय सरकारों के कुछ लोग भी जाने या अनजाने इसी चक्कर में लिपटे हुए हैं।

२०-३-५१.

—सुन्दरलाल

## विनोबा जी की सर्वोदय—यात्रा

बापू के जाने के बाद से हिन्दुस्तान में मानों अधरा छा गया है। प्रजा की बे हाली और तकलीफों का कोई ठिकाना नहीं है, हुकुमत से हुकुमत करते नहीं बन रहा है और कम हुकाम ऐसे बचे हैं जिनका दामन चिट्ठा और साफ हो. बापू की राह पर चलने वाले भी—रचनात्मक काम करना जिनकी ज़िन्दगी का मक़द था—मटके से मालूम हो रहे हैं. क्या चर्खा, क्या ग्रामोद्योग, क्या नई तालीम, क्या नशाबन्दी, क्या हिन्दुस्तानी, क्या कोई दूसरा प्रोग्राम—सभी पिछड़े और उलड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं. हर किसी पर पैसे का रोब शालिग है और ऐसे राजब का उसका असर है, ऐसे क़माल का उसका निज़ाम है कि उसके चंगुल से निकलना नामुम-

साफ साफ़ लोहा तथा कि इस देस के ये पूंजीपति पत्नी बदायिनी पूंजीपतियों के साथ मलकर और حص्वे बँटा कर इस देस को बिचलें और यहाँ की करोड़ों जनता को और अंधक चूसने और बर्बाद करने की क्रिया में हैं. ये आया जाना और चक्कर बाबर जारी है. हमें अंधक दाँव अस बात का है कि हमारी राष्ट्रीय सरकारों के कुछ लोग भी जाने या अनजाने इसी चक्कर में लिपटे हुए हैं.

—सुन्दरलाल

५१-३-५१

## नुबो जी की सरुदये यात्रा

बापू के जाने के बाद से हिन्दुस्तान में मानों अंधेरा चमा गया है. प्रजा की बे हाली और तकलीफों का कोई ठिकाना नहीं है, हुकुमत से हुकुमत करते नहीं बन रहा है और कम हुकाम ऐसे बचे हैं जिनका दामन चिट्ठा और साफ़ हो. बापू की राह पर चलने वाले भी—रचनात्मक काम करना जिनकी ज़िन्दगी का मक़द था—मटके से मालूम हो रहे हैं. क्या चर्खा, क्या ग्रामोद्योग, क्या नई तालीम, क्या नशाबन्दी, क्या हिन्दुस्तानी, क्या कोई दूसरा प्रोग्राम—सभी पिछड़े और उलड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं. हर किसी पर पैसे का रोब शालिग है और ऐसे क़माल का उसका निज़ाम है कि उसके चंगुल से निकलना नामुम-



इंगलिस्तान की बनी मशीनों और कैमीकल के सहारे चलते हैं. कोल्लू और खासकर लकड़ी के कोल्लू अधिकतर गाँव में ही तैयार हो जाते हैं. फिर भी श्री श्री के० एम० मुनशी को इस होड़ में एक "राष्ट्रीय खतरा" दिखाई देता है—क्योंकि उनका "राष्ट्र" अमीरों और शहर वालों का ही राष्ट्र है. गाँव और गाँव वाले केवल शहरों और शहर वालों को खिन्दा रखने और उनके ऐश आराम को बनाए रखने के साधन हैं !

पिछले दिनों कोल्लूओं पर कुछ रोक थाम लगाई गई थी. कुछ समझदार लोगों के शोर मचाने पर वह रोक थाम हटी या कुछ कम हुई. अब फिर नई नई तजवीजों की जा रही हैं. श्री के० एम० मुनशी के बयान से जाहिर है कि अगर सरकार खास तौर पर एक फ़रीक़ को मदद न दे और गाँव और शहरों के बीच की इस "होड़" को छुदरती तौर पर अपना निपटारा कर लेने दे तो बड़े से बड़े कारख़ानों की आप और बिजली और बड़े से बड़े पूँजीपतियों की धैलियाँ हमारे कोल्लूओं और गुड़ के धन्दे को मिटा नहीं सकती. पर बात साफ़ दिखाई दे रही है. देस के पूँजीपति और कुछ सरकारी लोग मिल कर—और जाहिर है. विदेशों के उन पूँजीपतियों का भी इसमें हाथ है जिन की बनाई मशीनों और जिन के कैमीकल से यह चीनी के कारख़ाने चलते हैं—गुड़, कोल्लू और हमारे देहातों की रही सही खिन्दगी को ख़तम करने के बक्कर में हैं.

१९४७ में एक बार जब भारत के कुछ पूँजीपति अमरीका और इंगलिस्तान केप्टेरान ले कर गए थे तो गांधी जी ने 'हरिजन' में बहुत

अंग्लेस की बनी मशीनों और कैमिकल के सहाये चلتै हें. कोल्लू और खासकर लकड़ी के कोल्लू अधिकतर गाँव में ही तैयार हो जातै हें. फिर भी श्री श्री के० एम० मुनशी को अस होड़ में एक "राष्ट्रीय ख़तरा" दिख़ाई दिता है—कियुनके अँ का "राष्ट्र" अमीरों और शहर वालों का ही राष्ट्र है. गाँवों और गाँव वालों केवल शहरों और शहर वालों को ज़نده रहितै और अइके ऐश आराम को भटाई रहितै के सदाहन हें !

( ७७ )  
पिछले दिनों कोल्लू पर कुछ रोक तहाम ल्ताई क्ती नै. कुछ समझदार लोगों के शोर मचाने पर रोक तहाम ह्ती या कुछ कम अब भी न्की न्की तजवीज़ों की जारी हें. श्री के० एम० मुनशी के बयान से ظاهر है कि अगर सरकार खास तौर पर अइक फ़रीक़ को मदद नै दे और गाँवों और शहरों के बीच की अँ "होड़" को क़दरती त़ौर पर अइला नैतदारा क़ रहितै दे त़ो ब़ुरे से ब़ुरे कारख़ानों की बेलाप और बिजली और ब़ुरे से ब़ुरे पूँजीपतियों की तहिलाप हमारै कोल्लूओं और क़ो के दहलदे को म्ता बेहें सक्ती. पर बात स़ाब दिख़ाई दे रही है. दीस के पूँजीपती और कुछ सरकारी लोक़ म्कर—और ए़ापर है 'बिदिसों के अँ पूँजीपतियों का भी इसमें हाथ है ज़िन की बनाई मशीनों और ज़िन के कैमिकल से ये च़िली के कारख़ाने च़लतै हें—क़ो कोल्लू और हमारै दिहातों की रही सही ज़न्दाई को ख़तम क़रने के च़कर हें हें.

१९४७ में अइकार ज़ब भारत के कुछ पूँजीपती अमरीका और अंग्लेस क़ो त़ेश्वन ल़कर क़ै त़ह त़ो ग़ादही ज़ी ने 'हरिजन' में बेहत







॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## हमारी राय

अप्रैल सन् '५१

दिल्ली सरकार से मिलने पहुँचे हैं इसलिये हमें उम्मीद है कि बुनकरों की शिकायत दूर होने में बहुत देर न लगेगी।

20. 3. 42

—भगवानन्दजीन

## एक नया राष्ट्रीय स्वतंत्रा ?

२७ फरवरी को दिल्ली में इन्डियन सेन्ट्रल शुगरकेन कमेटी के सामने खूराक और खेती विभाग के वजीर श्री के. एम. मुनशी ने बताया कि—“उत्तर प्रदेश और बिहार के चीनी के कारखाने इस समय खतरनाक हालत में हैं.....चीनी और गुड़ के बाँच होड़ (rivally) लगभग इतनी अधिक बढ़ गई है कि यह एक राष्ट्रीय खसरा होगया है. शहरों और गावों के हित एक दूसरे से टकरा रहे हैं.....अगर हमने इसका जल्दी कुछ इलाज न किया तो वह बस्त आजायगा जब क़ुदरती तौर पर इन इलाकों के चीनी के कारखानों को दक्खिन की तरफ उठा लेजाना पड़ेगा जिससे यह इलाक़े बरबाद हो जाएँगे.....”

चीनी के कारखानों को इस खतरे से बचाने के लिये कमेडियाँ और सब-कमेडियाँ बन रही हैं और जोरदार तजवीज़ें हो रही हैं.

इस देस के चरखों, करघों और कपड़े की कारीगरी की बरबादी की बाबत आम तौर पर यह कहा जाता है और समझा जाता है कि हाथ के धन्दे मिलों के सामने नहीं ठहर सकते और उन की

॥ १५ ॥

معارف دارے

三三

دلی سڑک سے ملنے پہنچے تھیں اس لئے ہمیں اُمید ہے کہ بنگوروں کی شکایت دور ہونے میں بہت دیر نہ لگے گی۔

پہلو

0-7-4-10

子子子子子

( ۴۵ )

ہو گیا ہے ۔ شہروں اور گلوں کے ہمت ایک دوسرے سے تکر رہے ہیں  
اگر ہم نے اسکا چلادی کچھ علاج نہ کیا تو وہ وقت آجاریگا.....

ناک حالت میں ہیں ..... چمنی اور گو کے بیچ ہوو ( rivalry )  
بتایا کہ — ”اُتر پردیش اور بہار کے چمنی کے کارخانے اس سے خطر  
سامنے خدواک اُرد کھیتی وہابگ کے وزیر شری کے ایم . منشی نے  
۲۷ فروری کو دلی میں اذین سمنبرل شوگر کھن کمیٹی کے

چیلن کے کارخانوں کو اس خطبہ سے بچانے کے لئے کمپنیاں اور سب کمپنیاں بن رہی ہیں اور زوردار تجویزیں ہو رہی ہیں۔ اس دیس کے چرخوں، کڑھوں اور کپڑے کی کاریگری کی بریادی کی بابت عام طور پر یہ کہا جاتا ہے اور سمجھا جاتا ہے کہ ہاتھ نے عدلے ملوں کے سامنے نہیں ٹھہر سکتے اور ان کی







एक धारा सभा के मेम्बर के साथ पहुँचे और ऐसा करके एक तरीके से उन्होंने मिनिस्ट्रों की वस बेजा शान को धक्का पहुँचाने से रोक दिया जो उनको आँगरेजों से विरासत में मिली है। हम यह समझ ही नहीं पाते कि किसी विद्येदार मिनिस्टर का दफ्तर से बाहर निकल कर श्री कुम्भारे जी से मिलकर क्या बिगड़ता और क्यों क्यों शान को बढ़ा लगता। आखिर तो वह अपने साथ काम करने वाले से मिल रहे थे। अगर यू० पी० के प्रधान मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ जी हर मौके पर आम आदमियों से मिल लेते हैं तो मध्यप्रान्त के मिनिस्ट्रों को इतनी भिन्नक क्यों ? हमारा खयाल है कि अगर जरा भी होशियारी और हमदर्दी से काम लिया गया होता तो यह सत्याग्रह को तरफ़ ठोथा हुआ कदम वहाँ का वहीं ठक जाता। किसी भी कानूनी धारा के नाम पर किसी का जेल भेजने का तमाशा सन् १९३३ के नागपुर के मंडा सत्याग्रह में हम सब देख चुके हैं और हमें यह भी मालूम है कि नागपुर के उस समय के डिप्टी कमिशनर के धारा के इस तरह इस्तेमाल करने पर राजाजी ने, जो आजकल दिल्ली में होम मिनिस्टर हैं, खूब मजाक बढ़ाया था।

इस वक्त सरकार और सरकारों के खिलाफ़ इतनी बुरी हवा फैली हुई है कि श्री कुम्भारे जी ने नागपुर में सत्याग्रह उठाकर, श्री बलुलचन्द्र घोष ने मानभूम खिले में सत्याग्रह उठा कर सरकार के हक़ में बहुत बड़ी भलाई की है। इन सत्याग्रहों में लोगों का जोश निकल कर उस बड़ी क्रांति को रोक लेगा जो बहुत दिनों दबे रहकर उसको जन्म दे बैठा। हमारी राय में वह लोग सरकार का भला नहीं कर रहे हैं जो इस वक्त न तो सत्याग्रह में भाग लेते हैं और न इतना भी कहते हैं कि यह सत्याग्रह सच्चाई पर हैं और ठीक वक्त से शुरू हुए हैं।

सत्याग्रहियों के प्यासे रखने और प्यासे देने की बात

एक देहारा सभा के मेम्बर के साथ पहुँचें और अइसा करके एक तरीके से उन्होंने मिनिस्ट्रों की वस बेजा शान को धक्का पहुँचाने से रोक दिया जो उनको आँगरेजों से विरासत में मिली है। हम यह समझ ही नहीं पाते कि किसी विद्येदार मिनिस्टर का दफ्तर से बाहर निकल कर श्री कुम्भारे जी से मिलकर क्या बिगड़ता और क्यों क्यों शान को बढ़ा लगता। आखिर तो वह अपने साथ काम करने वाले से मिल रहे थे। अगर यू० पी० के प्रधान मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ जी हर मौके पर आम आदमियों से मिल लेते हैं तो मध्यप्रान्त के मिनिस्ट्रों को इतनी भिन्नक क्यों ? हमारा खयाल है कि अगर जरा भी होशियारी और हमदर्दी से काम लिया गया होता तो यह सत्याग्रह को तरफ़ ठोथा हुआ कदम वहाँ का वहीं ठक जाता। किसी भी कानूनी धारा के नाम पर किसी का जेल भेजने का तमाशा सन् १९३३ के नागपुर के मंडा सत्याग्रह में हम सब देख चुके हैं और हमें यह भी मालूम है कि नागपुर के उस समय के डिप्टी कमिशनर के धारा के इस तरह इस्तेमाल करने पर राजाजी ने, जो आजकल दिल्ली में होम मिनिस्टर हैं, खूब मजाक बढ़ाया था।

सबूत सरकारी और सरकारी के खिलाफ़ अन्ती बरी हो' पहुँची हुनी है के श्री कुम्भारे जी ने नागपुर में सत्याग्रह उठा कर, श्री बलुलचन्द्र घोष ने मानभूम खिले में सत्याग्रह उठा कर सरकार के हक़ में बहुत बड़ी भलाई की है। इन सत्याग्रहों में लोगों का जोश निकल कर उस बड़ी क्रांति को रोक ले का जो बहुत दिनों दबे रहकर उसको जन्म दे बैठा। हमारी राय में वह लोग सरकार का भला नहीं कर रहे हैं जो इस वक्त न तो सत्याग्रह में भाग लेते हैं और न इतना भी कहते हैं कि यह सत्याग्रह सच्चाई पर हैं और ठीक वक्त से शुरू हुए हैं।

सत्याग्रहियों के प्यासे रखने और प्यासे देने की बात



लेकर जो सत्याग्रह के मैदान में कूद पड़े हैं, वहाँ हमें न जल्द-बाजी माहूम होती है, न जोश दिखाई देता है और न नासमझी मिलती है। भोजन सत्याग्रह बहुत दुखी होकर ही उठाया गया है और वह सत्याग्रह की कसौटी पर ठीक भी खतरता माहूम होता है। हमारी राय में जो गाँव अनाज पैदा करता है वह सचाई पर है अगर वह अपनी उस पैदावार को बाहर जाने से रोकता है जिसके बाहर बले जाने से उस गाँव वालों को भूका मरने की नौबत आ जाना मुमकिन है। आज तक के मान-भूम सत्याग्रह में सरकार की ओर से कोई रुकावट डालने की बात नहीं सुनी गई। इसलिये हम इस पर इससे ज्यादा और क्या कह सकते हैं कि जो आदमी इस सत्याग्रह के काम में लगे हुए हैं वह सबसुख जी से यही चाहते हैं कि न उनके गाँव वाले भूके मरें और न उनके प्रांत वाले। उन पर प्रान्तपने का भी कोई इलजाम नहीं लगाया जा सकता जब तक वह सिर्फ यह चाहते हैं कि सरकार अपनी कन्दोल नीत में ऐसा सुधार करे जिससे उनके प्रान्त का कोई आदमी भूका न मर पाये।

#### नागपुर सत्याग्रह

नागपुर सत्याग्रह अपने क्लिम का अलग है। वह अभी सत्याग्रह ही नहीं है, वह तो सिर्फ सत्याग्रह के लिये उठाया हुआ एक क़दम है। वहाँ के बुनकर इस वजह से बेकार हो गए हैं कि उन्हें सूत कातने वाली मिलें सूत नहीं दे रहीं हैं और वह सिर्फ यही शिकायत लेकर उन आदिमियों के पास पहुँचे थे जिन्हें उन्होंने कानून बनाने और सरकार चलाने के काम के लिये चुना था। यह दूसरी बात है कि वह खुद पहुँचे थे या पहुँचाये गये थे। ठीक तो यही होता कि वह खुद पहुँचते पर इस लिहाज से कि आजकल की सरकारें ठीक ठीक न समझती हैं और न समझना चाहती हैं कि उनके और जनता के बीच में क्या रिश्ता है, यही ज्यादा ठीक हुआ कि वह

लेकर जो सत्याग्रह के मैदान में कूद पड़े हैं, वहाँ हमें न जल्द-बाजी माहूम होती है, न जोश दिखाई देता है और न नासमझी मिलती है। भोजन सत्याग्रह बहुत दुखी होकर ही उठाया गया है और वह सत्याग्रह की कसौटी पर ठीक भी खतरता माहूम होता है। हमारी राय में जो गाँव अनाज पैदा करता है वह सचाई पर है अगर वह अपनी उस पैदावार को बाहर जाने से रोकता है जिसके बाहर जाने से उस गाँव वालों को भूका मरने की नौबत आ जाना मुमकिन है। आज तक के मान-भूम सत्याग्रह में सरकार की ओर से कोई रुकावट डालने की बात नहीं सुनी गई। इसलिये हम इस पर इससे ज्यादा और क्या कह सकते हैं कि जो आदमी इस सत्याग्रह के काम में लगे हुए हैं वह सबसुख जी से यही चाहते हैं कि न उनके गाँव वाले भूके मरें और न उनके प्रांत वाले। उन पर प्रान्तपने का भी कोई इलजाम नहीं लगाया जा सकता जब तक वह सिर्फ यह चाहते हैं कि सरकार अपनी कन्दोल नीत में ऐसा सुधार करे जिससे उनके प्रान्त का कोई आदमी भूका न मर पाये।

#### नागपुर सत्याग्रह

नागपुर सत्याग्रह अपने क़स्म का अलग है। वह अभी सत्याग्रह ही नहीं है, वह तो सिर्फ सत्याग्रह के लिये उठाया हुआ एक क़दम है। वहाँ के बुनकर इस वजह से बेकार हो गये हैं कि उन्हें सूत कातने वाली मिलें सूत नहीं दे रहीं हैं और वह सिर्फ यही शिकायत लेकर उन आदिमियों के पास पहुँचे थे जिन्हें उन्होंने कानून बनाने और सरकार चलाने के काम के लिये चुना था। यह दूसरी बात है कि वह खुद पहुँचे थे या पहुँचाये गये थे। ठीक तो यही होता कि वह खुद पहुँचते पर इस लिहाज से कि आजकल की सरकारें ठीक ठीक न समझती हैं और न समझना चाहती हैं कि उनके और जनता के बीच में क्या रिश्ता है, यही ज्यादा ठीक हुआ कि वह



या २५० मन बतलाकर सरकार से छुटकारा हासिल करेगा और बाकी माल को बाजार में ३ सेर के भाव बेचकर फायदा उठायेगा और उस फायदे से जो रिशवत दी है उसको पूरा करेगा और बाकी को अपने लिये बचा लेगा. इस तरह पैदावार का आँकड़ा ५०० मन के बजाय ३०० या २५० मन रह जायेगा और अब जहाँ ५०० मन की जरूरत थी वहाँ २५० मन का आँकड़ा देखकर हंतजाम करने वालों में खलबली मचेगी, वह इस कमी का शोर मचायेंगे, बाहर से अनाज मंगाने की कोशिश करेंगे और इस सब का नतीजा बाजार भाव पर पड़ेगा. भाव चढ़ जायेगा. भाव चढ़ने से दूकानदार छिपाना शुरू कर देंगे और चोर बाजारी शुरू हो जायगी.

इस तरह के चक्कर से बचने का एक ही तरीका था. कन्ट्रोल का खर्च कर देना और राशन की दुकानों का या तो बिल्कुल न होना या कम से कम उनसे खरीदना जरूरी न होना. एक बार नागपुर में इस यह अपनी आँखों देख चुक है. वहाँ राशन की दुकानें भी थीं और बाजार में राशन की चीजों की निजी दुकानें भी थीं. राशन की दुकान से बंधे दर पर माल मिलता था और निजी दुकानों से अपने अपने सुभीते के मुताबिक कम ज्यादा दर पर चीजें मिल जाती थीं. अब इस तरह का रिवाज है या नहीं हमें नहीं मालूम. हाँ, कहीं कहीं अपने ढंग का एक नया बेतुकापन जरूर देखने में आया, जैसे कहीं कहीं गेहूँ पर कन्ट्रोल है मगर डबल रोटी चाहे जितनी खरीदिये. बिस्कुट जो गेहूँ के ही बनते हैं उन पर तो कहीं हमने न कन्ट्रोल देखा न रूपन जारी होते सुना.

इस तरह के और कितने ही बेतुकेपन गिनाये जा सकते हैं. पर इस वक़्त तो हम सीधे सत्याग्रह पर बात करेंगे.

सानभूम सत्याग्रह

या २०० मन पैदा कर सरकार से छुटकारा हासिल करे या बाकी माल को बाजार में ३ सेर के भाव बेच कर फायदा उठाये का और उस फायदे से जो रिशवत दी है उसको पूरा करेगा और बाकी को अपने लिये बचा लेगा. इस तरह पैदावार का आँकड़ा ५०० मन के बजाय ३०० या २०० मन रह जायेगा और अब जहाँ ५०० मन की जरूरत थी वहाँ २०० मन का आँकड़ा देखकर हंतजाम करने वालों में खलबली मचेगी, वह इस कमी का शोर मचायेंगे, बाहर से अनाज मंगाने की कोशिश करेंगे और इस सब का नतीजा बाजार भाव पर पड़ेगा. भाव चढ़ जायेगा. भाव चढ़ने से दूकानदार छिपाना शुरू कर देंगे और चोर बाजारी शुरू हो जायगी.

इस तरह के चक्कर से बचने का एक ही तरीका था. कन्ट्रोल का खर्च कर देना और राशन की दुकानों का या तो बिल्कुल न होना या कम से कम उनसे खरीदना जरूरी न होना. एक बार नागपुर में इस यह अपनी आँखों देख चुक है. वहाँ राशन की दुकानें भी थीं और बाजार में राशन की चीजों की निजी दुकानें भी थीं. राशन की दुकान से बंधे दर पर माल मिलता था और निजी दुकानों से अपने अपने सुभीते के मुताबिक कम ज्यादा दर पर चीजें मिल जाती थीं. अब इस तरह का रिवाज है या नहीं हमें नहीं मालूम. हाँ, कहीं कहीं अपने ढंग का एक नया बेतुकापन जरूर देखने में आया, जैसे कहीं कहीं गेहूँ पर कन्ट्रोल है मगर डबल रोटी चाहे जितनी खरीदिये. बिस्कुट जो गेहूँ के ही बनते हैं उन पर तो कहीं हमने न कन्ट्रोल देखा न रूपन जारी होते सुना.

इस तरह के और कितने ही बेतुकेपन गिनाये जा सकते हैं. पर इस वक़्त तो हम सीधे सत्याग्रह पर बात करेंगे.

सानभूम सत्याग्रह



ह अमराका आर उसके साथया का दुनिया भर क कचब माल की व्यास से और दूसरे देशों के सर अपने यहाँ के बने माल खबरदस्ती मढ़ने की लालसा से. वह व्यास और यह लालसा ही सारे साम्राजबाद, युद्धों और दुनिया की मुसीबतों की जड़ है.

२०-३-५१

—सुन्दरलाल

## सरयाग्रह की गुंज—

खाना और कपड़ा आदमी की दो सबसे बड़ी जरूरतें हैं और इसमें शक नहीं कि इन दोनों की हिन्दुस्तानी जनता को बेहद तक-लीफ है. खाने के लिये बिहार के खिले मानभूम में और सूत के लिये नागपूर में अगर सरकार के खिलाफ सत्याग्रह चठ खड़ा हुआ तो अचरज नहीं. अचरज हमें यह है कि इन दो तकलीफों को जनता अब तक किस तरह बरदाश्त करती रही.

हमारी पूछ ताछ और हमारी खोज बीन हमें इस नतीजे पर पहुँचाती है कि खाने के सामान की हिन्दुस्तान में इनती कमी नहीं है जितना उस कमी के बारे में सरकार की तरफ से शोर मचाया जाता है. काले बाजार और रिशवत ने एक ऐसी हवा पैदा कर दी है कि सरकार को अपने अहलकारों से जो बाँकड़े मिलते हैं वह ठीक नहीं होते. इतना ही नहीं वह बहुत हद तक बनावटी और फरजी होते हैं. और सरकार खाने पीने की चीजों के मामले में उन्हें बाँकड़ों पर काम करती और ईतजाम की बात सोचती है. इसी बात को हम यों साफ कर देना चाहते हैं कि जिस वक्त बाजार में गेहूँ का भाव तीन सेर है और सरकार साढ़े तीन सेर का कंट्रोल भाव निकाल कर किसान से ३।। सेर के भाव खरीदना चाहेगी तब किसान क्यों न अहलकारों को रिशवत देकर अपने यहाँ अनाज के पैदा होने की कमी दिखाएगा. यानी ५०० मन पैदावार को ३००

हे अरिक्के और उसके सान्नेहों की दुनिया भर के कच्चे माल की पहवास से और दूसरे देशों के सर अपने पैसों के बने माल खबरदस्ती मोहले की लालसा से. ये पहवास और ये लालसा ही सारे साम्राजबाद, यद्धों और दुनिया की मुसीबतों की जड़ है.

—सुन्दरलाल

०१-३-२०

## सुत्तिले कोरा की गुंज—

कहाना और किंवा आदमी की दो सब से बड़ी जरूरतें हैं और इसमें शक नहीं कि इन दोनों की हिन्दुस्तानी जनता को बेहद तक-लीफ है. खाने के लिये बिहार के खिले मानभूम में और सूत के लिये नागपूर में अगर सरकार के खिलाफ सत्याग्रह चठ खड़ा हुआ तो अचरज नहीं. अचरज हमें यह है कि इन दो तकलीफों को जनता अब तक किस तरह बरदाश्त करती रही.

हमारी पूछ ताछ और हमारी खोज बीन हमें इस नतीजे पर पहुँचाती है कि खाने के सामान की हिन्दुस्तान में इनती कमी नहीं है जितना उस कमी के बारे में सरकार की तरफ से शोर मचाया जाता है. काले बाजार और रिशवत ने एक ऐसी हवा पैदा कर दी है कि सरकार को अपने अहलकारों से जो आँकड़े मिलते हैं वह ठीक नहीं होते. इतना ही नहीं वह बहुत हद तक बनावटी और फरजी होते हैं. और सरकार खाने पीने की चीजों के मामले में उन्हें आँकड़ों पर काम करती और ईतजाम की बात सोचती है. इसी बात को हम यों साफ कर देना चाहते हैं कि जिस वक्त बाजार में गेहूँ का भाव तीन सेर है और सरकार साढ़े तीन सेर का कंट्रोल भाव निकाल कर किसान से ३।। सेर के भाव खरीदना चाहेगी तब किसान क्यों न अहलकारों को रिशवत देकर अपने यहाँ अनाज के पैदा होने की कमी दिखाएँ. यानी ५०० मन पैदावार को ३००



“इसी लिये यह लोग अमन की तहरीक से भी डरते हैं.

“इसी लिये यह लोग सोवियट सरकार की इस तरह की सब वजवीजों को, जैसे यह कि अमन कायम रखने का अहदनामा कर लिया जावे, हथियार कम कर दिये जावें, और एटम बम ऐसी चीजों पर रोक लगा दी जावे, ठुकराते रहे हैं.

“अमन पसन्द शक्तियों और इन हमला करने वाली शक्तियों के बीच की इस खींचा तानी का क्या नतीजा होगा कौन जाने.”

#### नतीजा

हम पूरी शक्ति भर अपने देस को इन अलग अलग दलों की खींचातानी से अलग रखना चाहते हैं. हम अमरीका और इंगलिस्तान, रूस और चीन सबका भला चाहते हैं और सबके साथ मित्रता से रहना चाहते हैं. हमें यह भी विश्वास है कि भारत की जनता और भारत सरकार दोनों के इस विशय में एक से और लगभग यही विचार हैं. हमने यह सब केवल यह दिखाने के लिये लिखा है कि हमारी राय में भारत सरकार का दिल्ली पीस कानफरन्स पर इस तरह की रोक थाम लगाना राजकाजी पालिसी या हिकमते अमली की निगाह से चाहे कुछ भी क्रीमत रखता हो पर इक्कीकत की निगाह से और देस की जनता के भावों के निगाह से शलत है.

#### असली खतरा

भारत की और दुनिया की सरकारों को यह बात भी अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि दुनिया की जनता की निगाहों में ‘कम्युनिस्ट खतरा’ या ‘लाल खतरा’ नाम का इस समय कोई खतरा नहीं है. खतरा है उन लोगों से जो ‘कम्युनिस्ट खतरा’ जैसी आवाजें उठा कर दुनिया में व्यर्थ का ढ़ेश बढ़ाते हैं और खतरा

“इसी लिये ये लोग अमन की तहरीक से भी डरते हैं.

“इसी लिये ये लोग सोवियट सरकार की इस तरह की सब वजवीजों को, जैसे यह कि अमन कायम रखने का अहदनामा कर लिया जावे, हथियार कम कर दिये जावें, और एटम बम ऐसी चीजों पर रोक लगा दी जावे, ठुकराते रहे हैं.

“अमन पसन्द शक्तियों और इन हमला करने वाली शक्तियों के बीच की इस खींचा तानी का क्या नतीजा होगा कौन जाने.”

#### नतीजा

हम पूरी शक्ति भर अपने देस को इन अलग अलग दलों की खींचातानी से अलग रखना चाहते हैं. हम अमरीका और इंगलिस्तान, रूस और चीन सबका भला चाहते हैं और सबके साथ मित्रता से रहना चाहते हैं. हमें यह भी विश्वास है कि भारत की जनता और भारत सरकार दोनों के इस विशय में एक से और लगभग यही विचार हैं. हमने यह सब केवल यह दिखाने के लिये लिखा है कि हमारी राय में भारत सरकार का दिल्ली पीस कानफरन्स पर इस तरह की रोक थाम लगाना राजकाजी पालिसी या हिकमते अमली की निगाह से चाहे कुछ भी क्रीमत रखता हो पर इक्कीकत की निगाह से और देस की जनता के भावों के निगाह से शलत है.

#### असली खतरा

भारत की और दुनिया की सरकारों को यह बात भी अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि दुनिया की जनता की निगाहों में ‘कम्युनिस्ट खतरा’ या ‘लाल खतरा’ नाम का इस समय कोई खतरा नहीं है. खतरा है उन लोगों से जो ‘कम्युनिस्ट खतरा’ जैसी आवाजें उठा कर दुनिया में व्यर्थ का ढ़ेश बढ़ाते हैं और खतरा



“यू. एन. ओ. में जोर इन दस देशों का है जो उत्तर एटलांटिक समझौते में हिस्सेदार हैं, यानी अमरीका, बरतानिया, फ्रांस, कनैडा, बेल्जियम, हालैंड, लक्सेम्बर्ग, डेनमार्क, नारवे और आइसलैंड. लैटिन अमरीका के अन्दर के बीस छोटे छोटे देश इनके साथ हैं. यह सब देश मिल कर दुनिया के अमन या जंग का फैसला करते हैं. इन्हीं ने मिल कर चीन की लोकशाही हुकूमत को धरसर करार दे दिया.

“आजकल के यू. एन. ओ. में यह एक अजीब बात है कि अमरीका का एक छोटा सा देश डोमिनीकन रिपब्लिक जिस की आबादी बीस लाख भी नहीं है यू. एन. ओ. में इतना ही वजन रखता है जितना भारत. और चीन की लोकशाही सरकार की तो वहाँ कोई जगह है ही नहीं.

“इन सब देशों के बड़े बड़े व्यापारी पूँजीपति योरप में या एशिया में कहीं भी नई जंग बाह रहे हैं ताकि जंग के दिनों में वह लड़ने वाले देशों को तरह तरह का माल बेच सकें और इस खून खराबे से करोड़ों और अरबों रुपए कमा सकें.

“यू. एन. ओ. की भी, जाहिर है, वही दुर्गत होने वाली है जो लीग आफ नेशन्स की हो चुकी है.

“मैं अब भी यह नहीं मानता कि जंग रोकी नहीं जा सकती लेकिन अमरीका, बरतानिया और फ्रांस के अन्दर इस तरह की ताकतें काम कर रही हैं जो लड़ाई की प्यासी हैं. यही ताकतें वहाँ की सरकारों को कठपुतली की तरह नचा रही हैं. पर वह सरकारें अपने अपने यहाँ की जनता से डरती हैं. जनता कहीं भी नया युद्ध नहीं चाहती. वह सब जगह अमन चाहती है.

“इसी लिये यह लोग झूठो बातें उड़ाकर अपने अपने यहाँ की जनता को फँसाना चाहते हैं, अमन पसन्द देशों की अमन पसन्दी को उधारी देते हैं और अपने को दुनिया का रक्षक.

“यू. एन. ओ. में जोर इन दस देशों का है जो उत्तर एटलांटिक समझौते में हिस्सेदार हैं, यानी अमरीका, बरतानिया, फ्रांस, कनैडा, बेल्जियम, हालैंड, लक्सेम्बर्ग, डेनमार्क, नारवे और आइसलैंड. लैटिन अमरीका के अन्दर के बीस छोटे छोटे देश इनके साथ हैं. यह सब देश मिल कर दुनिया के अमन या जंग का फैसला करते हैं. इन्हीं ने मिल कर चीन की लोकशाही हुकूमत को धरसर करार दे दिया.

“आजकल के यू. एन. ओ. में यह एक अजीब बात है कि अमरीका का एक छोटा सा देश डोमिनीकन रिपब्लिक जिस की आबादी बीस लाख भी नहीं है यू. एन. ओ. में इतना ही वजन रखता है जितना भारत. और चीन की लोकशाही सरकार की तो वहाँ कोई जगह है ही नहीं.

“इन सब देशों के बड़े बड़े व्यापारी पूँजीपति योरप में या एशिया में कहीं भी नई जंग बाह रहे हैं ताकि जंग के दिनों में वह लड़ने वाले देशों को तरह तरह का माल बेच सकें और इस खून खराबे से करोड़ों और अरबों रुपए कमा सकें.

“यू. एन. ओ. की भी, जाहिर है, वही दुर्गत होने वाली है जो लीग आफ नेशन्स की हो चुकी है.

“मैं अब भी यह नहीं मानता कि जंग रोकी नहीं जा सकती लेकिन अमरीका, बरतानिया और फ्रांस के अन्दर इस तरह की ताकतें काम कर रही हैं जो लड़ाई की प्यासी हैं. यही ताकतें वहाँ की सरकारों को कठपुतली की तरह नचा रही हैं. पर वह सरकारें अपने अपने यहाँ की जनता से डरती हैं. जनता कहीं भी नया युद्ध नहीं चाहती. वह सब जगह अमन चाहती है.

“इसी लिये यह लोग झूठो बातें उड़ाकर अपने अपने यहाँ की जनता को फँसाना चाहते हैं, अमन पसन्द देशों की अमन पसन्दी को उधारी देते हैं और अपने को दुनिया का रक्षक.



एक यह आह्वानमा होजावे कि वह अमन कायम रखेंगे तो मिस्टर एटली ने उस तजवीज को क्यों ठुकरा दिया था ?

“अगर वह सबसुच अमन की तरफ हैं तो उन्होंने सोवियट यूनियन की इन तजवीजों को क्यों नामंजूर किया था कि सब देस तुरन्त एक साथ अपने अपने हथियार कम करना शुरू करदे और एटम बम और दूसरे एटमो हथियारों के इस्तेमाल की तुरन्त मनाही कर दी जावे ?

“मिस्टर एटली अपने यहाँ अमन तहरीक चलाने वालों को क्यों सता रहे हैं ? उन्होंने इंगलिस्तान में हाँने वाली अमन कांग्रेस को क्यों रोक दिया ?

“आहिर है कि प्रधान बखीर एटली अमन कायम करने के पक्ष में नहीं हैं. वह खबरदस्ती एक नये संसार व्यापी युद्ध को छेड़ने की फिक में हैं.

“जहाँ तक सोवियट यूनियन का सम्बन्ध है वह हमेशा अमन कायम रखने और युद्ध को रोकने की अपनी नीति पर कायम रहेगी.

“अमरीका और इंगलिस्तान के सिपाहियों को भी उन कोरिया वालों से युद्ध करने का बिचार, जो अपने देस की रक्षा कर रहे हैं, बहुत नापसन्द है. सिपाहियों को यह विरवास दिलाता सबसुच कठिन है कि चीन ने ज्यादती की है, चीन एक्सर है और अमरीका और बरतानिया जो फारमूसा को छुड़ये हुए हैं और कोरिया में पुसे हुए हैं अमन के रक्षक हैं.

“उन के लिये यह समझना बहुत कठिन है कि कोरिया और चीन को अपने देस की रक्षा करने का हक नहीं है. बही कारन है कि जब सिपाही केवल अमनने दिल से हुकुम की पाबन्दी करने के लिये साद रहे हों तो अच्छे से अच्छे जनैल और अफसर भी आसानी से हार जाते हैं.

असल में यह...

एक ये एहदानमा हो जावे के वे अमन قائم रहेलके तो मिस्टर एटली ने अस तजवीज को क्यों ठुकरा दिया था ?

“अगर वे सच अमन की طرف हों तो उनहों ने सोवियट यूनियन की इन तजवीजों को क्यों नामंजूर किया था के सब देस त्रन्त एक साथ अपने अपने हथियार कम करना शुरू करदे और एटम बम और अलियम बम और दूसरे अलियम हथियारों के استعمال की त्रन्त मंजुरी कर दी जावे .

“मिस्टर एटली अपने यहाँ अमन तहरीक चलाने वालों को क्यों सता रहे हों ? उनहों ने अंग्लिस्तान में होने वाली अमन कांग्रेस को क्यों रोक दिया ?

“आहरे है के प्रधान वखीर एटली अमन قائम करने के एकल में हैं. आहरे खबरदस्ती एक नये संसार व्यापी युद्ध को छेड़ने की फिक में हैं.

“जहाँ तक सोवियट यूनियन का सम्बन्ध है वे हमेशा अमन قائम रहेलके और युद्ध को रोकने की अली नैति पर कायम रहेगी .

“अमरीके और अंग्लिस्तान के सहायों को भी उन कोरिया वालों से युद्ध करने का वजार जो अपने देस की रक्षा कर रहे हों, बहुत नापसन्द है. सहायों को ये रशवास दलाना सच अमन है के जेन ने रशियन की है जेन अलियम है और अमरीके और ब्रिटानिया जो फारमूसा को छुड़ये हुए हैं अमन के रक्षक हैं.

“उनके लिये ये समझना बहुत कठिन है के कोरिया और जेन को अपने देस की रक्षा करने का हक नहीं है. बही कारन है कि जब सिपाही केवल अमनने दिल से हुकुम की पाबन्दी करने के लिये साद रहे हों तो अच्छे से अच्छे जनैल और अफसर भी आसानी से हार जाते हैं.

असल में यह...



साथी हालैंड है जिसके न्यू गाइना पर जबरदस्ती कब्जे और इंडोनीशिया के खिलाफ साखियों की चरचा बराबर आती रहती है.

यह हैं अमरीका और उसके साथियों के वह कारनामे जिन्हें दुनिया हैरानी के साथ देख रही है.

### स्टालिन की बयान

आजकल की अन्तर्राष्ट्रीय हालत के जो चित्र समय समय पर अलग अलग देशों के नेताओं की तरफ से दुनिया के सामने रखे जा रहे हैं उनमें दुनिया के अधिकतर अमन यसन्द, गौर जानिबदार लोगों को स्टालिन के उस बयान में बहुत कुछ सचचाई दिखाई देती है जो पिछली १६ फरवरी को मारको रेडियो से ब्राडकास्ट हुआ था. इंगलिस्तान के प्रधान वजीर एटली ने रुस के खिलाफ कई तरह की गलत बयानियों की थीं. उनका तफसील के साथ जवाब देने के बाद स्टालिन ने कहा कि:—

“यू.एन. ओ. जो शुरू में अमन बनाए रखने के एक साधन के तौर पर कायम हुई थी अब एक नई बड़ी जंग के शुरू कर देने का साधन बनती जा रही है.

“यू. एन. ओ. अमरीकी दल के असर में है. अब वह दुनिया की बीच नहीं रह गई है बल्कि एक अमरीकी संस्था है जो अमरीका के लिये काम करती है.

“प्रधान वजीर एटली अपने को अमन का तरफदार कहते हैं. अगर वह सचमुच अमन चाहते हैं तो जिस वक़्त सोवियट यूनियन ने यू. एन. ओ. के सामने यह तजवीज रखी थी कि सोवियट यूनियन, बरतानिया, अमरीका, चीन, और फ्रान्स के बीच तुरन्त

साम्यी हालैंड है जिस के नेपोल्ला प्रेज़िडन्सी قبضه اور अन्तर्निवेशा के خلاف سازشوں کی چرچا برابر آتی رہتی ہے .

یہ ہمیں امریکہ اور اُسکے ساتھیوں کے وہ کارنامے جنہوں دنیا حکومتی کے ساتھ دیکھ رہی ہے .

### استالن کا بیان

آج کل کی انتر قومی حالات کے جو چتر سے سے پر الگ الگ دیسوں کے नेताؤں کی طرف سے دنیا کے سامنے رکھے جا رہے ہیں ان میں دنیا کے ادھک تر امن پسند، غور جانبدار لوگوں کو استالن کے اُس بیان میں بہت کچھ سچائی دکھائی دیتی ہے جو پچھلی ۱۶ فروری کو ماسکو ریڈیو سے برآد کاست ہوا تھا . ’نگلستان کے پردیمان وزیر ایتلی نے روس کے خلاف کئی طرح کی غلط بیاتیاں کی تھیں . اُن کا تفصیل کے ساتھ جواب دینے کے بعد استالن نے کہا کہ :—

یو . این . او . جو شروع میں امن بٹانے دیکھنے کے ایک سادہان کے طور پر قائم ہوئی تھی اب ایک نئی بڑی جنگ کے شروع کردینے کا سادہان بھگتی جا رہی ہے .

یو . این . او . امریکی دل کے اثر میں ہے . اب وہ دنیا کی چند نہوں وہ گئی بلکہ ایک امریکی سلسلہا ہے جو امریکہ کے لئے کام کرتی ہے .

”پردیمان وزیر ایتلی اپنے کو امن کا طرفدار کہتے ہیں . اگر وہ سچے سچ امن چاہتے ہیں تو جس وقت سوویت یونین نے یو . این . او . کے سامنے یہ تجویز رکھی تھی کہ سوویت یونین، برطانیہ، امریکہ، چین اور فرانس کے بیچ ترنت



कल किया जा चुका है और इस समय चार्लिस ह्जार देशभक्त जेलों में पड़े सड़ रहे हैं। उत्तर अफ्रीका की आजादी के इस सवाल के ऊपर मिस्र और सारी अरब दुनिया में गहरा असंतोश है। इस्तक़्बाल पार्टी के नेता बार बार एलान कर रहे हैं कि इस आन्दोलन का मजहब से कोई सम्बन्ध नहीं।

यही जुल्म ज्यादतियाँ आजकल की प्रान्त की सरकार इन्डो-चाइना में कर रही है।

### इंगलिस्तान

इंगलिस्तान की क्राज सारी मित्रो क्रौम की इच्छा के विरुद्ध मिस्र में अड्डा बनाए बैठी है और अभी हाल में आंगरेज क्रील्ड सारशल वाइकाउन्ट मान्डगुमरी जो पिछले युद्ध में उत्तर अफ्रीका के अन्दर बड़े बड़े कारनामे दिखा चुके हैं और जो एटम धम फेंकने के लिये तैयार बैठे हुए जनरल ईसेनहांबर के दाहिने हाथ गिने जाते हैं, जबरदस्ती मिस्र पहुँच कर उस देस को आंगरेजी फौजों अड्डा बनाकर जम गए हैं। दूसरी तरफ नैपाल के गोरखों को इंगलिस्तान की क्राज में बनाए रखने, उनकी तादाद बढ़ाने और मलाया जैसे देसों में पशियाई क्रौमों की आजादी को कुचलने में उनका उपयोग करने की तजवीखें लन्दन से खुले तौर पर एलान की जा रही हैं।

ईरान और इराक में वहाँ के तेल के कुओं पर कब्जा जमाए रखने की अमरीका और इंगलिस्तान की साजिशें, वहाँ के लोगों की मर्जी के खिलाफ, जों से जारी हैं और इस सिलसिले में भी इन क्रौमती कुओं के रुस के हाथ में पड़ जाने का डर बराबर दुनिया को दिखाया जा रहा है।

### हालैंड

अमरीका, फ्रान्स और इंगलिस्तान का एक और छुटमइया

कल किया जा चुका है और इस सन्ने चार्लिस ह्जार दिवस बेहमत जेलों में पड़े सड़ रहे हैं। उत्तर अफ्रीका की आजादी के इस सवाल के ऊपर मिस्र और सारी अरब दुनिया में गहरा असंतोश है। 'इस्तक़्बाल पार्टी के नेता बार बार एलान कर रहे हैं कि इस आन्दोलन का मजहब से कोई सम्बन्ध नहीं।

यही जुल्म ज्यादतियाँ आज कल की फ्रान्स की सरकार इन्दो-चाइना में कर रही है।

### इंगलिस्तान

इंगलिस्तान की फुज सारी मिस्र की फुज की इच्छा के विरुद्ध मिस्र में अड्डा बनाए बैठी है और अभी हाल में आंगरेज फ्रीन्ड मार्शल वॉली काउन्ट मान्डगुमरी जो पिछले युद्ध में उत्तर अफ्रीका के अन्दर बड़े बड़े कारनामे दिखा चुके हैं और जो एटम धम फेंकने के लिये तैयार बैठे हुए जनरल ईसेनहांबर के दाहिने हाथ गिने जाते हैं, जबरदस्ती मिस्र पहुँच कर उस देस को आंगरेजी फौजों अड्डा बनाकर जम गए हैं। दूसरी तरफ नैपाल के गोरखों को इंगलिस्तान की फुज में बनाए रखने, उनकी तादाद बढ़ाने और मलाया जैसे देसों में पशियाई क्रौमों की आजादी को कुचलने में उनका उपयोग करने की तजवीखें लन्दन से खुले तौर पर एलान की जा रही हैं।

ईरान और अफ्रीका में वहाँ के तेल के कुओं पर कब्जा जमाए रखने की अमरीका और इंगलिस्तान की साजिशें, वहाँ के लोगों की मर्जी के खिलाफ जारी हैं और इस सिलसिले में भी इन क्रौमती कुओं के रुस के हाथ में पड़ जाने का डर बराबर दुनिया को दिखाया जा रहा है।

### हालैंड

अमरीका, फ्रान्स और इंगलिस्तान का एक और छुटमइया



## अमरीका के साथी-फ्रान्स

**अब अगर हम हमरीकी दल के दूसरे देसों की तरफ निगाह डालें तो हालत और भी भयंकर दिखाई देने लगती है.**

उत्तर अफ्रीका का एक बड़ा हिस्सा फ्रान्स के कब्जे में है। सन १९१२ में उस समय के मोरक्को ( मराकश ) के मुलतान और फ्रान्सीसी सरकार के बीच एक संधि हुई जिस के अनुसार उत्तर अफ्रीका के बहुत बड़े हिस्से की रबा का भार फ्रान्स ने अपने ऊपर ले लिया, थोड़ा सा हिस्सा स्पेन के कब्जे में है और कुछ अंतरकौमी इलाक़ समझा जाता है। आज से एक पौढ़ी पहले मोरक्को में एक दल खड़ा होगया जो इस्तक़ाल पार्टी कहलाता है।

यह दल सन १९१२ की संधि को रद्द कराकर मावको और सारे उत्तर अफ्रीका को बिदेसी ताकतों के पंजे से आजाद करना चाहता है। पिछली बड़ी जंग में मित्र राष्ट्रों ने मावको के लोगों को आजाद कर देने का बार बार वादा किया। अमरीका के प्रेसीडेंट

امریکہ کے ساتھ — فرانس

اب اگر ہم امریکی دل کے دوسرے دیسوں کی طرف نگاہ ڈالیں تو حالت اور بھی بہینگر دکھائی دینے لگتی ہے۔

اُتر افریقہ کا ایک بڑا حصہ فرانس کے قبضے میں ہے۔ سن ۱۹۱۲ میں اُس سے کے مورکو (مراکش) کے سلطان اور فرانسوسی سرکار کے بیچ ایک سلمی ہوئی جس کے انبساط اُتر افریقہ کے بہت بڑے حصے کی رکشا کا بہار فرانس نے اپنے اوپر لے لیا، تھوڑا سا حصہ اسپین کے قبضے میں ہے۔ اور کچھ اتر قسری علاقہ سمجھا جاتا ہے آج سے ایک پورھی پہلے مورکو میں ایک دل کھوا ہوکھا جو استقلال پاتمی کہلاتا ہے۔ یہ دل سن ۱۹۱۲ کی سلمی کو رو کر مورکو اور سارے اُتر افریقہ کو سلمی طاقتوں کے ہڈی سے آزاد کرانا چاہتا ہے۔ بیچلی بڑی جنگ میں متبر راجستروں نے مورکو کے لوگوں کو آزاد کر دینے کا ہار پار وعدہ کیا۔ امریکہ کے پریسڈنٹ روزولٹ خود مورکو پہنچے اور انہوں نے اپنی نجی ذمہ داری پر سلطان سے وعدہ کیا کہ جنگ کے بعد مورکو کو آزاد کر دیا جاویگا۔ پر وعدہ آج تک پورا نہیں ہوا۔ موجودہ سلطان جو نام ماتر کا سلطان ہے فرانسسی ریپزیڈنٹ جنرل کے ہاتھ میں کواں ایک کتھمتی ہے فرانس اور امریکہ کی دستلی مورکو میں پوری طرح جنگ رہی ہے۔ اگلی جنگ کی تھاری کھیلے پانچ بڑے بڑے ہوائی جنگی اڈے امریکہ کو دے دیئے گئے ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ یہیں سے سارے یورپ کو کمونسٹوں سے بچانے کی سب سے اچھی کوششیں کی جانیوالی ہیں۔ معلوم ہوتا ہے امریکہ اور اس کے ساتھیوں کا اب دنیا میں ایک ہی کام رہ گیا ہے اور وہ ہے دنیا کو کمونسٹوں سے بچانا! مورکو نواسیوں میں آزادی کی کوششیں جاری ہیں۔ کہا جاتا ہے پچھلی



इसी कारन चीन की सारी जनता और वहाँ की सरकार दोनों की मर्जी के खिलाफ अमरीकी फौज ताइवान (फारमूसा) में हटे रहने और देसघातक चाँगकाई शेक को बढ़ावा देने का वह राजनैतिक बलात्कार कर रही है जिसे कोई एशियावासी बलिक कोई न्याय प्रेमी इनसान नजरअन्दाज नहीं कर सकता.

इसी कारन अमरीका कोरिया के अन्दर किसी भी तरह फतेह हासिल करने के लिये बेचैन है. जिस कमेटी में मि० टामस ड्यूई ने अमरीका के उद्योग धन्दों की बाबत अपना वह वयान दिया था जिसका खिकर हम ऊपर कर आए हैं उसी में एटलान्टिक पैक्ट आर्मी के सबसे बड़े कमान्डर जनरल ईसेनहोवर ने खुले शब्दों में कहा कि लड़ाई में हमें अगर जरूरत पड़ गई और अगर हमें यह यकीन हुआ कि उससे दुशमन के कासी लोग मर जायेंगे तो हम "कौरन" एटम बम इस्तेमाल करेंगे. जनरल ईसेनहोवर ने यह भी कहा कि सदाचार की निगाह से हमारा ऐसा करना बिल्कुल ठीक होगा. इस पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में बिल्कुल ठीक कहा कि इससे किसी का कोई भला नहीं हो सकता. श्री जवाहरलाल नेहरू अनेक बार एटम बम के इस्तेमाल के खिलाफ अपने विचार प्रकट कर चुके हैं. उन्होंने यह भी बताया कि अगर जंग हुई और उसमें एटम बम खुले इस्तेमाल किये गए तो कम से कम दुनिया की आधी आबादी यानी लगभग एक अरब आदमी मरेंगे या जल्मी होंगे. और किसी का भी कोई भला नहीं हो सकता, कोई मकसद पूरा नहीं हो सकता, दुनिया के सदाचार का तो खात्मा हो ही जायगा. हम ही नहीं सारा एशिया जवाहरलाल जी के इन विचारों से सहमत हैं. हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि दुनिया इस आकत से बची रहे. पर हमें डर है कि अमरीकी नेता इस मामले में अपने गलत आर्थिक संगठन और अपने देस की हानि से लाचार और और भये हो रहे हैं.

इसी कारन चीन की सारी जेलों और वहाँ की सरकार दोनों की मर्जी के خلاف अमरीकी फौज ताइवान (फारमूसा) में हटे रहने और देस घातक चाँगकाई शेक को बढ़ावा को दिने का वह राजनैतिक बलात्कार कर रही है जिसे कोई एशियावासी बलिक कोई न्याय प्रेमी इनसान नजरअन्दाज नहीं कर सकता.

इसी कारन अमरीका कोरिया के अन्दर किसी भी तरह फतेह हासिल करने के लिये बेचैन है. जिस कमेटी में मि० टामस ड्यूई ने अमरीका के उद्योग धन्दों की बाबत अपना वह वयान दिया था जिसका खिकर हम ऊपर कर आए हैं उसी में एटलान्टिक पैक्ट आर्मी के सबसे बड़े कमान्डर जनरल ईसेनहोवर ने खुले शब्दों में कहा कि लड़ाई में हमें अगर जरूरत पड़ गई और अगर हमें यह यकीन हुआ कि उससे दुशमन के कासी लोग मर जायेंगे तो हम "कौरन" एटम बम इस्तेमाल करेंगे. जनरल ईसेनहोवर ने यह भी कहा कि सदाचार की निगाह से हमारा ऐसा करना बिल्कुल ठीक होगा. इस पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में बिल्कुल ठीक कहा कि इससे किसी का कोई भला नहीं हो सकता. श्री जवाहरलाल नेहरू अनेक बार एटम बम के इस्तेमाल के खिलाफ अपने विचार प्रकट कर चुके हैं. उन्होंने यह भी बताया कि अगर जंग हुई और उसमें एटम बम खुले इस्तेमाल किये गए तो कम से कम दुनिया की आधी आबादी यानी लगभग एक अरब आदमी मरेंगे या जल्मी होंगे. और किसी का भी कोई भला नहीं हो सकता, कोई मकसद पूरा नहीं हो सकता, दुनिया के सदाचार का तो खात्मा हो ही जायगा. हम ही नहीं सारा एशिया जवाहरलाल जी के इन विचारों से सहमत हैं. हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि दुनिया इस आकत से बची रहे. पर हमें डर है कि अमरीकी नेता इस मामले में अपने गलत आर्थिक संगठन और अपने देस की हानि से लाचार और और भये हो रहे हैं.



## अमरीकी नीत की जड़ें

जब कि रूस में दस्तकारियाँ और उद्योग घन्टे दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं और अपने कारखानों की जरूरत के लिये लगभग सारा कच्चा माल रूस खुद पैदा कर लेता है, दूसरी तरफ अमरीका की न्यूयार्क रियासत के गबरनर टामस ड्यूई ने हाल में वहाँ की कांग्रेस की एक कमेटी में कहा था कि अमरीका को अगर हिन्दुस्तान और दुनिया के दूसरे देशों से जरूरी कच्चा माल न मिला तो अमरीका के उद्योग घड़े और कल कारखाने ठप होजायेंगे. उन्होंने बताया कि जंग के लिये अमरीका को जिस जिस कच्चे माल की जरूरत है उनमें इकहतर चीजें, जिनमें वह यूरेनियम भी शामिल है जिससे परम बम बनता है, अमरीका को दूसरे देशों से ही लेनी होंगी.

कोरिया, चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और दूसरे देशों में, जो कौजी निगाह से कमजोर दिखाई देते हैं, अमरीका की बिदेसी नीत की जड़ें ऊपर साफ़ दिखाई दे रही हैं. यही कारन है कि अमरीका की सेनेट के सुलाबिक पिछले आठ महीने में कोरिया की लड़ाई में अमरीका के चौदह अरब डालर यानी लगभग पचहत्तर अरब रुपए खर्च हो चुके हैं.

अमरीका में बोलने को आजादी का यह हालन है कि हाल ही में जब ग्राम उद्योग संघ. वर्धा के सदर श्री जे० सी० कुमारप्पा के भाई डा० भारतन कुमारप्पा ने, जो कट्टर गांधीवादी हैं, अमरीका पहुँचने पर अपने देसवासियों के विचार साफ़ साफ़ प्रकट करने शुरू किये तो डेन्टन शहर के अधिकारियों ने उनके लेक्चर के लिये, उनके विचारों की बिना पर, टाउनहाल देने तक से इनकार कर दिया और यहाँ तक कहा गया है कि डा० भारतन कुमारप्पा के इन आजाद विचारों के कारन ही बस गेहूँ के भारत आने में भी रुकावट पड़ रही है जो अमरीका से भारत आने वाला है.

## अमरीकी नेत की जड़ें

जब कि रूस में दस्तकारियाँ और उद्योग घन्टे दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं और अपने कारखानों की जरूरत के लिये लगभग सारा कच्चा माल रूस खुद पैदा कर लेता है, दूसरी तरफ अमरीका की न्यूयार्क रियासत के गबरनर टामस ड्यूई ने हाल में वहाँ की कांग्रेस की एक कमेटी में कहा था कि अमरीका को अगर हिन्दुस्तान और दुनिया के दूसरे देशों से जरूरी कच्चा माल न मिला तो अमरीका के उद्योग घड़े और कल कारखाने ठप होजायेंगे. उन्होंने बताया कि जंग के लिये अमरीका को जिस जिस कच्चे माल की जरूरत है उनमें इकहतर चीजें, जिनमें वह यूरेनियम भी शामिल है, जिस से अंतिम बम बनता है, अमरीका को दूसरे देशों से ही लेनी होंगी.

कोरिया, चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और दूसरे देशों में, जो कौजी निगाह से कमजोर दिखती हैं, अमरीका की बिदेसी नीत की जड़ें ऊपर साफ़ दिखती हैं. यही कारन है कि अमरीका की सेनेट के सुलाबिक पिछले आठ महीने में कोरिया की लड़ाई में अमरीका के चौदह अरब डालर यानी लगभग पचहत्तर अरब रुपए खर्च हो चुके हैं.

अमरीके में बोलने की आरु की ये हालत है कि हाल ही में जब ग्राम उद्योग संघ. वर्धा के सदर श्री जे० सी० कुमारप्पा के भाई डा० भारतन कुमारप्पा ने, जो कट्टर गांधीवादी हैं, अमरीका पहुँचने पर अपने देसवासियों के विचार साफ़ साफ़ प्रकट करने शुरू किये तो डेन्टन शहर के अधिकारियों ने उनके लेक्चर के लिये, उनके विचारों की बिना पर, टाउन हाल देने तक से इनकार कर दिया और यहाँ तक कहा गया है कि डा० भारतन कुमारप्पा के इन आजाद विचारों के कारन ही बस गेहूँ के भारत आने में भी रुकावट पड़ रही है जो अमरीका से भारत आने वाला है.



काम ऐसा न करें जिससे तिब्बतियों के किसी धार्मिक नियम पर चोट लगती हो. फिर भी यह शलत ख़बर दुनिया भर में बड़ाई जाती है कि कम्यूनिस्ट देशों में लोगों को मज़हबी आजादी नहीं है.

### अमरीकी जापान

हम चाहते हैं कि अमरीका और अमरीकी फलें फूलें. पर हमें इस सच्चाई को भी आँख से ओझल नहीं करना चाहिये कि उस जापान के अन्दर जो आजकल अमरीकी फ़ौजों के क़ब्ज़े में है. इसी मार्च की लन्दन की एक ख़बर के अनुसार लगभग ग्यारह हजार रुपए में एक मन चावल बिक रहा है, जापानों में चाप अपना पेट भरने के लिये अपने बच्चों को बेच रहे हैं और कहा जाता है कि टोकियो की इम्पेरियल यूनीवर्सिटी में लगभग पाँच सौ विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें अपना ख़र्च बलाने के लिये हर महीने अपना खून बेचना पड़ता है जापान के छोटे छोटे उद्योग धन्दे बन्द होते जा रहे हैं, बेकारी बढ़ रही है और अमरीका का बना हुआ माल और अमरीकी मशीनें बाज़ारों में भरी पड़ी हैं. यह भी बताया जाता है कि लाखों जापानी औरतें पेट पालने के लिये बुरा पेशा करने पर मजबूर हो गई हैं. अकेले टोकियो में इस समय इस तरह की तीन लाख औरतें हैं.

### रूस में खाने की चीज़ें

इस के मुकाबले में इसी महीने की ख़बर है कि रूस में खाने पीने की सब चीज़ें दिन दिन सस्ती होती जा रही हैं. आटा. रोटी, पनीर, चर्बी, गोشت और साबुन के भाव हाल में पच्चीस फ़ी सदी कम हो गए हैं. यही हाल दूसरो बरतने की चीज़ों का है. रूस के किसान अपने बहों के साइन्स बालों की मदद से उन सब देशों की जनता को भूक से बचाने के लिये, जिन तक रूस की पहुँच है, साल में पाँच

काम ऐसा न करें जिस से तबियों के किसी देशामक नेम पर चोट लگती हो. यह भी ये फ़लत ख़बर दुनिया भर में बड़ाई जाती है कि कम्यूनिस्ट देशों में लोगों को मज़हबी आजादी नहीं है.

### अमरीकी जापान

हम चाहते हैं कि अमरीके और अमरीकी फलें फूलें. पर हमें इस सच्चाई को भी आँख से ओझल नहीं करना चाहिये कि उस जापान के अन्दर जो आज कल अमरीकी फ़ौजों के क़ब्ज़े में है. इसी मार्च की लन्दन की एक ख़बर के अनुसार एक बिक रहा है. जापानों में चाप अपना पेट भरने के लिये अपने बच्चों को बेच रहे हैं और कहा जाता है कि टोकियो की इम्पेरियल यूनिवर्सिटी में लगभग पाँच सौ विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें अपना ख़र्च बलाने के लिये हर महीने अपना खून बेचना पड़ता है. जापान के छोटे छोटे उद्योग धन्दे बन्द होते जा रहे हैं, बेकारी बढ़ रही है और अमरीके का बना हुआ माल और अमरीकी मशीनें बाज़ारों में भरी पड़ी हैं. यह भी बताया जाता है कि लाखों जापानी औरतें पेट पालने के लिये बुरा पेशा करने पर मजबूर हो गई हैं. अकेले टोकियो में इस समय इस तरह की तीन लाख औरतें हैं.

### रूस में खाने की चीज़ें

इस के मुकाबले में इसी महीने की ख़बर है कि रूस में खाने पीने की सब चीज़ें दिन दिन सस्ती होती जा रही हैं. आटा. रोटी, पनीर, चर्बी, गोشت और साबुन के भाव हाल में पच्चीस फ़ी सदी कम हो गए हैं. यही हाल दूसरो बरतने की चीज़ों का है. रूस के किसान अपने बहों के साइन्स बालों की मदद से उन सब देशों की जनता को भूक से बचाने के लिये, जिन तक रूस की पहुँच है, साल में पाँच



अङ्कुर दिखाई देते है तो उन्हें भी हम प्रेम. शान्ति और समझौते से ही हल कर लेना चाहते हैं. रूस और चीन के साथ भी हमारा गहरा नाता है और खासकर चीन के साथ हमारा सम्बन्ध हजारों बरस का पुराना है. हमें दुख है कि रूस, चीन और कम्यूनिज्म के खिलाफ कई तरह की आवाजें इस देस में कई कोनों से उठती रहती हैं. हमारा कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों से कई बातों में असहमत होना एक बलगत बात है. धर्म और इनसाफ यह है कि जिसके साथ हम सहमत न हों उसके भी सच्चे गुणों की कद्र करें. कम्यूनिज्म के खिलाफ एक बहुत बड़ा इलजाम यह लगाया जाता है कि वह धर्म या मजहब के खिलाफ है. कहा जाता है कम्यूनिस्ट देसों में मजहब की आजादी नहीं. हाल में सोवियत रूस के एक मुसलमान नेता मि० नमशीना ने लाहौर में कहा था कि रूस में मुसलमानों के ऊपर उपादितियों की जितनी खबरें उड़ाई जा रही हैं वह “बे बुनियाद हैं और जान बूझ कर शरारतन फैलाई जाती हैं.” उनसे कहा गया कि रूस में मुसलिम औरतों को बुरा नही पहनने दिया जाता. उन्होंने जवाब में कहा कि “रूस के वनसब हिस्सों में जहाँ मुसलमान रहते हैं, आपको जगह जगह बुरा आड़े मुसलमान औरतें दिखाई देंगी.” पिछली फरवरी में अंगरज पादरी रेवेरेन्ड टामस स्कॉट ने जो उनर चीन में ईसाई धर्म प्रचार का काम करते रहे हैं लन्दन में कहा था कि चीन में जब से जनता की नई सरकार कायम हुई है तब से ईसाई धर्म के प्रचार का काम पहले से बहुत आसान हो गया है. चीनी ईसाई धर्म प्रचारकों को अपने धर्म के प्रचार की पूरी पूरी और खुली आजादी है. कम्यूनिज्म ने उनके इस काम को किसी तरह भी नहीं रोका जिसका नतीजा यह है कि तमाम चीनी ईसाई नई सरकार के जोशिले समर्थक हैं. लाल चीन को सेना जब तिब्बत आई थी तो विपाधियों को खान तोर पर यह हकूम दिये गए थे कि किसी मठ या मन्दिर में बिना बाँ के पुरोहित की इजाजत के न जावें और कोई

अङ्कुर दिखाने दिये हों तो अनेक नयी नयी शक्तें और सहजोते से ही हल कर لینा जायेंगे हों. रूस और चीन के साथ भी हमारा गहरा नाता है और खासकर चीन के साथ हमारा सम्बन्ध हजारों बरस का पुराना है. हमें दुख है कि रूस, चीन और कम्यूनिज्म के खिलाफ कई कोनों से उठती रहती हैं. हमारा कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों से कई बातों में असहमत होना एक बलगत बात है. धर्म और इनसाफ यह है कि जिसके साथ हम सहमत न हों उसके भी सच्चे गुणों की कद्र करें. कम्यूनिज्म के खिलाफ एक बहुत बड़ा इलजाम यह है कि वह धर्म या मजहब के खिलाफ है. कहा जाता है कम्यूनिस्ट देसों में मुसलमानों के ऊपर उपादितियों की जितनी खबरें उड़ाई जा रही हैं वह “बे बुनियाद हैं और जान बूझ कर शरारतन फैलाई जाती हैं.” उनसे कहा गया कि रूस में मुसलिम औरतों को बुरा नही पहनने दिया जाता. उन्होंने जवाब में कहा कि “रूस के वनसब हिस्सों में जहाँ मुसलमान रहते हैं, आपको जगह जगह बुरा आड़े मुसलमान औरतें दिखाई देंगी.” पिछली फरवरी में अंगरज पादरी रेवेरेन्ड टामस स्कॉट ने जो उनर चीन में ईसाई धर्म प्रचार का काम करते रहे हैं लन्दन में कहा था कि चीन में जब से जनता की नई सरकार कायम हुई है तब से ईसाई धर्म के प्रचार का काम पहले से बहुत आसान हो गया है. चीनी ईसाई धर्म प्रचारकों को अपने धर्म के प्रचार की पूरी पूरी और खुली आजादी है. कम्यूनिज्म ने उनके इस काम को किसी तरह भी नहीं रोका जिसका नतीजा यह है कि तमाम चीनी ईसाई नई सरकार के जोशिले समर्थक हैं. लाल चीन को सेना जब तिब्बत आई थी तो विपाधियों को खान तोर पर यह हकूम दिये गये थे कि किसी मठ या मन्दिर में बिना बाँ के पुरोहित की इजाजत के न जावें और कोई







है. दिल्ली सरकार ने जो कुछ फैसला किया उसका उसे कानूनी अधिकार है. पर हमें विश्वास नहीं होता कि जो शब्द जिम्मेदार सरकारी लोगों के कहे हुए इस ख़बर में बताए गए हैं वह सचमुच उनके मुँह से निकले हैं. यह भी जाहिर है कि इस समय आने वाली जंग और एंटस बम के इस्तेमाल के खिलाफ जितनी ज्यादा आवाज़ रूस, चीन और एशिया के कम्युनिस्ट और गैर-कम्युनिस्ट मुलकों से उठ रही है उतनी अमरीका इंगलिस्तान और उनके साथियों से नहीं. यह है भी एक कुदरती बात. पर इससे हमन को आवाज़ उठाने, जंग का विरोध करने या एंटस बम के उपयोग को बुरा कहने की कीमत कम नहीं हो जाती. भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के कई कामों से हम सहमत नहीं हैं पर हजारों चोर बाजार वालों और रिश्वत खोरों के ख़दर पहनने से ख़दर बुरा नहीं हो जाता न ऐसे लोगों को ख़दर पहनने, बेचने या ख़रोदने से रोका जाता है. हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि किसी भी तहरीक के मक़सद को ठीक ठीक समझने की शक्ति जैसी सरकार के अन्दर के लोगों को हो सकती है वैसी ही सरकार के बाहर के लोगों को भी हो सकती है और कभी कभी सरकार के बाहर के लोगों में यह शक्ति अधिक होती है, कम से कम वह अधिक सबाई और सफ़ाई के साथ अपने दिल की बात कह सकते हैं. किसी सरकार को यह कहना भी शोभा नहीं देना कि उसे अपने काम में और खास कर जंग के खिलाफ़ लोगों की राय बनाने जैसे काम में किसी की मदद की ज़रूरत नहीं.

जहाँ तक बाहर के देशों के साथ उलझने पड़ा होने का सवाल है वहाँ तक भी हम अपनी सरकार के इस फ़ैसले की क़दर कर सकते के नाक्राबिल हैं. इसी मार्च के आख़ीर में एक 'इन्डियन कॉंग्रेस आरु कलचरल फ़्रीडम' दिल्ली में हो रही है जिसमें अमरीका, योरप और दक्खिन पूरब एशिया के अनेक प्रतिनिधि आकर हिस्सा लेंगे. इस कॉंग्रेस के बुलाने वालों की जो फ़ेहरिस्त अख़बारों में निकली

है. दली सरकार ने जो कुछ फ़ैसले किया उसका उसे कानूनी अधिकार है. पर हमें विश्वास नहीं होता कि जो शब्द जिम्मेदार सरकारी लोगों के कहे हुए इस ख़बर में बताए गए हैं वह सचमुच उनके मुँह से निकले हैं. यह भी जाहिर है कि इस समय आने वाली जंग और एंटस बम के इस्तेमाल के खिलाफ जितनी ज्यादा आवाज़ रूस, चीन और एशिया के कम्युनिस्ट और गैर-कम्युनिस्ट मुलकों से उठ रही है उतनी अमरीका इंगलिस्तान और अमन की आवाज़ अतहाने. ज़ल्क का उरुदु करने या अय़म बम के विरुध को बुरा कहने की क़िमत कम नहीं हो जाती. भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के कई कामों से हम सहमत नहीं हूँ पर हजारों चोर बाजार वालों के ख़दर पहनने से ख़दर बुरा नहीं हो जाता न ऐसे लोगों को ख़दर पहनने, बेचने या ख़रोदने से रोका जाता है. हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि किसी भी तहरीक के मक़सद को ठीक ठीक समझने की शक्ति जैसी सरकार के अन्दर के लोगों को हो सकती है वैसी ही सरकार के बाहर के लोगों में यह शक्ति अधिक होती है, कम से कम वह अधिक सबाई और सफ़ाई के साथ अपने दिल की बात कह सकते हैं. किसी सरकार को यह कहना भी शोभा नहीं देना कि उसे अपने काम में और खास कर जंग के खिलाफ़ लोगों की राय बनाने जैसे काम में किसी की मदद की ज़रूरत नहीं.

जहाँ तक बाहर के देशों के साथ उलझने पड़ा होने का सवाल है वहाँ तक भी हम अपनी सरकार के इस फ़ैसले की क़दर कर सकते के नाक्राबिल हैं. इसी मार्च के आख़ीर में एक 'इन्डियन कॉंग्रेस आरु कलचरल फ़्रीडम' दली में हो रही है जिसमें अमरीका, योरप और दक्खिन पूरब अय़श्या के अय़क प्रतयनयध आकर हय़सा लेंगे. इस कॉंग्रेस के बुलाने वालों की जो फ़ेहरय़स्त अख़बारों में नय़कली



थी. वहाँ हमारी सरकार ने कानफरेन्स को नहीं रोका था पर दूसरे देशों के प्रतिनिधियों को वहाँ भी नहीं आने दिया गया था.

हम मानते हैं कि लगभग सब ही अमन चाहते हैं. जंग को भी बुरा लगभग सब ही कहते हैं. भारत सरकार और खासकर भारत के प्रधान बजीर जिस सच्चाई और लगन के साथ दुनिया को जंग से बचाने और अमन कायम रखने की कोशिश करते रहे हैं और कर रहे हैं, उससे दुनिया अच्छी तरह परिचित है. भारत सरकार के इस काम को जितना सराहा जाय था है. इस पर भी हमें दुख है कि कानफरेन्स पर भारत सरकार की इस रोक थाम को हम नहीं समझ सके.

जहाँ तक हमने पढ़ा है या हम समझ सके कानफरेन्स पर बलिक इस सारी अमन तहरीक पर सबसे बड़ा एतराज यह किया जाता है कि इसके पीछे भारत के कम्युनिस्ट हैं. इस पर दिल्ली कानफरेन्स की स्वागत कमेटी के कुछ लोग प्रधान बजीर श्री नेहरू और घर बजीर श्री राजागोपालाचारी से मिले. उन्होंने इन दोनों बजीरों को बताया कि अमन कानफरेन्स में हिरसा लेने वाले बहुत लोग ऐसे हैं जो कम्युनिस्ट नहीं हैं. और कानफरेन्स का मतलब सरकार की अमन की कोशिशों में केवल उसके हाथ मजबूत करना ही है. कहा जाता है इसके जवाब में सरकार की तरफ से कहा गया कि जो गैर-कम्युनिस्ट नेता उस अमन कानफरेन्स में शामिल हो रहे हैं उन्होंने कानफरेन्स के पीछे काम करने वाले अखली [मकसद को ठीक नहीं समझा. यह भी कहा गया कि भारत सरकार को अपनी अमन की कोशिशों में इतनी काफी मदद चारों तरफ से मिल रही है कि उन्हें ऐसी किसी कानफरेन्स की मदद की जरूरत नहीं न देस से बाहर के अमन पखन्दों की जरूरत है. इसलिये सरकार अपने इस फ़ैसले पर कायम है कि वह कानफरेन्स दिल्ली में न हो.

ऊपर की खबर हमने १७ मार्च के 'अद्यत वाजार पत्रिका' से ली

तमी. वहाँ हमारी सरकार ने कानफरेन्स को नहीं रोका था पर दूसरे देशों के प्रतिनिधियों को वहाँ भी नहीं आने दिया गया था.

हम मानते हैं कि लगभग सब ही अमन चाहते हैं. जंग को भी बुरा लगभग सब ही कहते हैं. भारत सरकार और खासकर भारत के प्रधान बजीर जिस सच्चाई और लगन के साथ दुनिया को जंग से बचाने और अमन कायम रखने की कोशिश करते रहे हैं और कर रहे हैं, उससे दुनिया अच्छी तरह परिचित है. भारत सरकार के इस काम को जितना सराहा जाय था है. इस पर भी हमें दुख है कि कानफरेन्स पर भारत सरकार की इस रोक थाम को हम नहीं समझ सके.

जहाँ तक हम ने पढ़ा है या हम समझ सके कानफरेन्स पर बलिक इस सारी अमन तहरीक पर सब से बड़ा एतराज यह किया जाता है कि इसके पीछे भारत के कम्युनिस्ट हैं. इस पर दिल्ली कानफरेन्स की स्वागत कमेटी के कुछ लोग प्रधान बजीर श्री नेहरू और घर बजीर श्री राजागोपालाचारी से मिले. उन्होंने इन दोनों बजीरों को बताया कि अमन कानफरेन्स में हिरसा लेने वाले बहुत लोग ऐसे हैं जो कम्युनिस्ट नहीं हैं. और कानफरेन्स का मतलब सरकार की अमन की कोशिशों में केवल उसके हाथ मजबूत करना ही है. कहा जाता है इसके जवाब में सरकार की तरफ से कहा गया कि जो गैर-कम्युनिस्ट नेता उस अमन कानफरेन्स में शामिल हो रहे हैं उन्होंने कानफरेन्स के पीछे काम करने वाले अखली [मकसद को ठीक नहीं समझा. यह भी कहा गया कि भारत सरकार को अपनी अमन की कोशिशों में इतनी काफी मदद चारों तरफ से मिल रही है कि उन्हें ऐसी किसी कानफरेन्स की मदद की जरूरत नहीं न देस से बाहर के अमन पखन्दों की जरूरत है. इसलिये सरकार अपने इस फ़ैसले पर कायम है कि वह कानफरेन्स दिल्ली में न हो.

ऊपर की खबर हम ने १७ मार्च के 'अद्यत वाजार पत्रिका' से ली



हम मानते हैं कि जो सरकार किसी भी दूसरे देश के खिलाफ एटम हथियार का पहले इस्तेमाल करेगी वह मानव जाति के खिलाफ जुर्म करेगी और उसे युद्ध अपराधी माना जायगा."

दुनिया के बहुत से देशों में करोड़ों आदमी जिनके दिल आने वाली जंग और उसमें एटम बम के उपयोग की कल्पना करके काँप उठते हैं इस अपील पर दसखत कर चुके हैं। हमने भी इस पर दसखत किये हैं हैं। इस देश के लाखों दसखत करने वालों में दो खास नाम यह साबित करने के लिये काफी हैं कि इस तहरीक के साथ किस तरह के लोगों की हमदर्दी है, एक बनारस के मशहूर सूफी विद्वान डा० भगवानदास और दूसरे हरिजन, हरिजन सेवक और हरिजनबन्धु के सम्पादक भाई किशोरलाल मशरूवाला।

इसी तरह की एक पीस कानफरेन्स पिछले जनवरी महीने में इलाहाबाद यूनीवरसिटी में बड़ी घूस घाम के साथ हुई थी जिसे यूनीवरसिटी के वाइस चान्सेलर ने खोला था। इसी तहरीक की एक और बड़ी कानफरेन्स अप्रैल के महीने में दिल्ली में होने वाली थी। इस कानफरेन्स में भारत के अलग अलग सूबों के अलाबा बिदेसों से भी कुछ जंग विरोधी प्रतिनिधि आने वाले थे। अचानक खबर मिली कि भारत सरकार ने कानफरेन्स को दिल्ली में होने से रोक दिया और यह बात भी एलान कर दी कि वह भारत से बाहर के किसी प्रतिनिधि को इस काम के लिये भारत आने की इजाजत न दी जायगी यह भी कहा गया कि यह अमन कानफरेन्स अगर दिल्ली प्रान्त से बाहर की जाय तो सरकार को कोई एतराज न होगा क्योंकि दिल्ली में सब देशों के राजदूत रहते हैं और वहाँ ऐसी कानफरेन्स से अंतर देशी उलझनें पैदा होने का डर है। पर कानफरेन्स कहीं भी की जाय दूसरे देशों के प्रतिनिधि उसमें नहीं आने दिये जायेंगे।

दो साल पहले इसी तरह की एक कानफरेन्स कलकत्ते में हुई

हम मानते हैं कि जो सरकार किसी भी दूसरे देश के खिलाफ एटम हथियार का पहले इस्तेमाल करेगी वह मानव जाति के खिलाफ जुर्म करेगी और उसे युद्ध अपराधी माना जायगा."

दुनिया के बहुत से देशों में करोड़ों आदमी जिन के दिल आने वाली जंग और उस में एटम बम के उपयोग की कल्पना करके काँप उठते हैं इस अपील पर दसखत कर चुके हैं। हम ने भी इस पर दसखत किये हैं। इस देश के लाखों दसखत करने वालों में दो खास नाम ये साबित करने के लिये काफी हैं कि इस तहरीक के साथ किस तरह के लोगों की हमदर्दी है। एक बनारस के मशहूर सूफी विद्वान डाक्टर भगवान दास और दूसरे हरिजन, हरिजन सेवक और हरिजन बन्धु के सम्पादक भाई किशोरलाल मशरूवाला।

इसी तरह की एक पीस कानफरेन्स पिछले जनवरी महीने में इलाहाबाद यूनीवरसिटी में बड़ी घूस घाम के साथ हुई थी जिसे यूनीवरसिटी के वाइस चान्सेलर ने खोला था। इसी तहरीक की एक और बड़ी कानफरेन्स अप्रैल के महीने में दिल्ली में होने वाली थी। इस कानफरेन्स में भारत के अलग अलग सूबों के अलाबा बिदेसों से भी कुछ जंग विरोधी प्रतिनिधि आने वाले थे। अचानक खबर मिली कि भारत सरकार ने कानफरेन्स को दिल्ली में होने से रोक दिया। और ये बात भी एलान कर दी कि वह भारत से बाहर के किसी प्रतिनिधि को इस काम के लिये भारत आने की इजाजत न दी जायगी। ये भी कहा कि यह अमन कानफरेन्स अगर दिल्ली प्रान्त से बाहर की जाय तो सरकार को कोई एतराज न होगा क्योंकि दिल्ली में सब देशों के राजदूत रहते हैं और वहाँ ऐसी कानफरेन्स से अंतर देशी उलझनें पैदा होने का डर है। पर कानफरेन्स कहीं भी की जाय दूसरे देशों के प्रतिनिधि उसमें नहीं आने दिये जायेंगे।

दो साल पहले इसी तरह की एक कानफरेन्स कलकत्ते में हुई



# समारा

# समारा



## दिल्ली पीस कानफ्रेन्स पर रोक —

दुनिया के बहुत से देशों में कुछ दिनों से एक तहरीक चल रही है जिसे पीस मूवमेंट या अमन तहरीक कहा जाता है. इस में दो बातों पर जोर दिया जाता है. एक जंग के खिलाफ जनता में राय पैदा करना और दूसरे किसी भी लड़ाई में एटम बम के इस्तेमाल को नाजायज ठहराना. हम यह अपने निजी तजुर्बे की बिना पर कह रहे हैं. हमने इस तहरीक के कई जलसों में हिस्सा लिया है और इस का कुछ साहित्य भी पढ़ा है. इस सम्बन्ध में एटम बम के इस्तेमाल के खिलाफ एक अपील निकल चुकी है जो स्ट्राकहाम अपील के नाम से मशहूर है. इस तहरीक का एक खास काम उस अपील पर लोगों के दसखत कराना भी है. अपील 'नया हिन्द' में छप चुकी है. हम उसे फिर नीचे दोहराते हैं—

“हमारी माँग है कि एटम हथियार पर, जो जनता को डराने और मिटाने का हथियार है, बिना शर्त रोक लगाई जाय.

हमारी माँग है कि इस फ़ैसले को लागू करने के लिये एक कड़ा अन्तरजामी कंट्रोल क़ायम किया जावे.

## दली पीस कांफ़्रेंस पर रोक—

दुनिया के बहुत से देशों में कुछ दिनों से एक तहरीक चल रही है जिसे पीस मूवमेंट या अमन तहरीक कहा जाता है. इस में दो बातों पर जोर दिया जाता है. एक जंग के खिलाफ जनता में राय पैदा करना और दूसरे किसी भी लड़ाई में एटम बम के इस्तेमाल को नाजायज ठहराना. हम यह अपने निजी तजुर्बे की बिना पर कह रहे हैं. हमने इस तहरीक के कई जलसों में हिस्सा लिया है और इस का कुछ साहित्य भी पढ़ा है. इस सम्बन्ध में एटम बम के इस्तेमाल के खिलाफ एक अपील निकल चुकी है जो स्ट्राकहाम अपील के नाम से मशहूर है. इस तहरीक का एक खास काम उस अपील पर लोगों के दसखत कराना भी है. अपील 'नया हिन्द' में छप चुकी है. हम उसे फिर नीचे दोहराते हैं—

“हमारी माँग है कि एटम हथियार पर, जो जनता को डराने और मिटाने का हथियार है, बिना शर्त रोक लगाई जाय.

हमारी माँग है कि इस फ़ैसले को लागू करने के लिये एक कड़ा अन्तरजामी कंट्रोल क़ायम किया जावे.



तीसरा. रेखा चित्र, भी इन किताब में दिए गये हैं, उनके आधार है:—

अजन्ता गुफा, बाग गुफा. और सिगोरिया (लंका) के भीत चित्र, कोर्नाक मन्दिर और बंगाल की मूर्तियाँ, और काशीरी और राजपूत के कलम के चित्र.

इस कला पुस्तक की यह खूबी है कि इसमें जितने रेखा चित्र हैं उनमें शिल्पछद् दर्शाने की कोशिश की गई है. आदिमियों के ज्यों के त्यों चित्र खींचना मुश्किल भी हो सकते हैं और आसान भी पर उस तरह की मुश्किल और आसानी से चित्रकार के अन्दर का चित्रकार जाग नहीं पाता और वह शिल्प में छंद को नहीं दर्शा सकता. शिल्प छंद के जरिये रूप और देदी मेढ़ी लकीरें मिलकर एक ऐसी मनोहर दुनिया खड़ी कर देते हैं कि जिसकी तरफ मन को खिंचते ही बनता है और वह रोके नहीं रुकता. इस किताब के जरिये जो लोग चित्रकारी सीखना चाहेंगे उनमें उनके भीतग के चित्रकार को जागने के लिये मजबूर होना पड़ेगा और उसमें छंद दर्शाने की क्राविलियत आपा आप जोर मारेंगी. नई सूक और नया सिरजन जिसको आज कल की फोटोग्राफी खा गई है और खानी जारही है उनमें इन किताबों की कद्र करने से और काम में लाने से जान पड़ जायगी. और जल्द ही फिर हरे भरे हो जाने की सम्भावना है.

छपाई, सफाई, खूब सुथरी है.

—भगवानदास

नया मन्द किछे किताबें

प्रैल सन् '०१

तेसरा. रिकहा चित्र भी इन किताबों में दूँ गئے हैं, उनके आकार में:—

अजन्ता किछा. बाग किछा और सेकुरिया (लंका) के बेहत चित्र. कौनार्क मन्दिर और भट्टाल की मूर्तियाँ, और काश्मिरी और राजपूत कलम के चित्र.

अस कलम बेस्तक की ये खूबी है कि अस में चित्र रेकहा चित्र हों अन में शल्प छन्द दर्शाने की कोशिश की क्यू है. आदिमियों के त्यों के त्यों चित्र खींचना मुश्किल भी होसकते हों और आसान भी प्र अस कलम की मुश्किल और आसानी से चित्रकार के अन्दर का चित्रकार जाग न्हें पाना और वह शल्प में छन्द को न्हें दर्शा सकता. शल्प छन्द के डुरिये रूप और त्थोही मीधुमी लकीरें मलकर अक अिसी मन्धुर् दुनिया क्थोही कर डित्ते हों कि चस्की कलम में को क्थेचिक्ते ही बल्लता है और वो के न्हें रकता. अस कताब के डुरिये जो लोग चित्र कारी सेकहमा चाहियेक्ते अन में अके बेह्तर के चित्रकार को चाल्के क्थेक्ते मजबूर होना पोरगा ओ अस में छन्द दर्शाने की क्राविलियत ओ ओ मारियेगी. न्थी सोच ओ न्हा स्रजन चस्को अकल की फुत्तो क्राफी क्थो क्यू है ओ क्थानी जारुई है अन में अन कताबों की कद्र डुरने से ओ कलम में लूँ से जान प्रजायिक्की ओर जल्दी ही डुर हरे डुरे होजाने की सम्भावना है

चपथानी, सफानी खूब सेठोही है.

—बेकानदीन



ही अहम बटना की तरफ से आँखें बन्द कर लेना है. हम मानते हैं कि आजादी मिलने के बाद देस की हालत सुधरी नहीं, गरीबों को और बीच के तबक़े को आजादी का कोई सुख नहीं मिला मगर इसके लिये अंगरेजों को कोसने की जगह उन कठिनाइयों पर भी नज़र रखनी होगी जो अंगरेज हमारे देस के लिये पैदा कर गए. हमें उन कठिनाइयों का मुकाबला करना होगा, उन्हें दूर करने का जतन करना होगा—लेकिन इस नज़्म में ऐसा कोई हल नहीं बताया गया. यह नज़्म एक ऐसे बेबस और निराश आदमी की करियाह् मालूम होती है जो कुछ कुछ करने की हिम्मत नहीं रखता. हालाँकि इसके बाद ही की नज़्म “इन्डोनेशिया” जिन्दगी से भरपूर है और दूसरों के दिलों में भी एक उमंग पैदा करती है. हमें इस संग्रह की “जेल में किसी का खत पाकर” और “दिवाली” नज़्में बहुत पसन्द आई. बाकी नज़्मों में रोमानी नज़्मों का पल्ला राजकाजी नज़्मों से भारी नज़र आता है. लिखाई छपाई और गेटअप बहुत सुन्दर है.

—‘माइ’

## रूपावली—

लेखक—श्रीनन्दलाल वसु

मिलने का पता—विरवभारती ग्रन्थालय, २ बंकिम चटर्जी

स्ट्रीट, कलकत्ता.

चित्रकारी की इस किताब के तीन भाग हैं—बहला, दूसरा,

अप्रैल सन् '५१

कुछ किताबें

नया हल

ही अहम कहता की तरफ से अन्कहें बन्द कर लेना है. हम मानते हैं कि आजादी मिलने के बाद देस की हालत सुधरी नहीं, गरीबों को और बीच के तबक़े को आजादी का कोई सुख नहीं मिला मगर इसके लिये अंगरेजों को कोसने की जगह उन कठिनाइयों पर भी नज़र रखनी होगी जो अंगरेज हमारे देस के लिये पैदा कर लें. हमें उन कठिनाइयों का मुकाबला करना होगा, उन्हें दूर करने का जतन करना होगा—लेकिन इस नज़्म में ऐसा कोई हल नहीं बताया गया. यह नज़्म एक ऐसे बेबस और निराश आदमी की करियाह् मालूम होती है जो कुछ कुछ करने की हिम्मत नहीं रखता. हालाँकि इसके बाद ही की नज़्म “इन्डोनेशिया” जिन्दगी से भरपूर है और दूसरों के दिलों में भी एक उमंग पैदा करती है. हमें इस संग्रह की “जेल में किसी का खत पाकर” और “दिवाली” नज़्मों में रोमानी नज़्मों का पल्ला राजकाजी नज़्मों से भारी नज़र आता है. लिखाई छपाई और गेटअप बहुत सुन्दर है.

—‘माइ’

## रूपावली—

लेखक—श्रीनन्दलाल वसु

मिलने का पता—रश्मिभारती ग्रन्थालय, २ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट,

कलकत्ता.

चित्रकारी की इस किताब के तीन भाग हैं—बहला, दूसरा,







‘साखे लरजाँ’ को देखने से मालूम होता है कि उन्होंने जान बूक कर और सोच समझकर अपना संग्रह छपवाने में धीरज से काम लिया है। इस संग्रह में उनकी जो नज़में हैं उनको देख कर भी यही मालूम होता है कि छपवाने के लिये नज़मों का बड़ी सरलता से चुनाव किया गया है और कितान के सफे बढाने के लाजब में किसी भरती की नज़म को इस संग्रह में जगह नहीं दी गई।

‘साखे लरजाँ’ में ‘ताबों’ की रूमानी नज़में भी हैं समाजी भी और सियासी भी। हर तरह की नज़मों में ‘ताबों’ का एक खास रंग है जिसे हम सही तरह से पसन्द रंग कह सकते हैं। रोमानी नज़मों में ‘ताबों’ का प्रेम इसी दुनिया का प्रेम मालूम होता है और वह खयाली दुनिया की बातें नहीं करते। इसी तरह जब वह राजकाज की बातें करते हैं और इनकलाब का नारा लगाते हैं तो भी यह नहीं मालूम होता कि वह हवाई किले बना रहे हैं।

‘ताबों’ पुराने रस रिवाज, पुराने समाज, पुराने साम्राजवादी और पूँजीवाद निजाम और पुरानी शायरी सभी के खिलाफ हैं उन्हें नए समाज से प्रेम है, नए निजाम से प्रेम है, नई दुनिया से प्रेम है और नई शायरी से प्रेम है। वह हर पुरानी चीज़ की जगह नई चीज़ खाना चाहते हैं। पुरानेपन से बगावत ‘ताबों’ की सारी शायरी में भरी है। वह पुराने उर्दू शायरों की तरह, जिनके पीछे आज भी उर्दू के ज्यादातर शायर चलते हैं, माशूक को मई के रूप में नहीं देखते बल्कि औरत के रूप में देखते हैं और सारु कहते हैं—

जब कभी भूले से दिल में याद आएगी मेरी  
गर्म पेरानी में तुम कुछ कुछ नमी सी पाओगी

उन्हें उर्दू के ऐसे शुशायरी भी पसन्द नहीं जहाँ एक ही तरह में सब शायर सबलें बिलकर सुनाने के लिये इकट्ठा होते हैं क्योंकि

‘साज़ लरज़ाँ’ को देखने से मालूम होता है कि उन्होंने जान बूझकर ओर सोच समझकर अपना संग्रह छपवाने में धीरज से काम लिया है। इस संग्रह में उनकी जो नज़मों हैं उनको देख कर भी यही मालूम होता है कि छपवाने के लिये नज़मों का बड़ी सरलता से चुनाव किया गया है और कितान के सफे बढाने के लाजब में किसी भरती की नज़म को इस संग्रह में जगह नहीं दी गई।

‘साज़ लरज़ाँ’ में ‘ताबों’ की रोमानी नज़में भी हैं समाजी भी और सियासी भी। हर तरह की नज़मों में ‘ताबों’ का एक खास रंग है जिसे हम सफे रंग कह सकते हैं। रोमानी नज़मों में ‘ताबों’ का प्रेम इसी दुनिया का प्रेम मालूम होता है और वह खयाली दुनिया की बातें नहीं करते। इसी तरह जब वह राजकाज की बातें करते हैं और इनकलाब का नारा लगाते हैं तो भी यह नहीं मालूम होता कि वह हवाई किले बना रहे हैं।

‘ताबों’ पुराने रस रिवाज, पुराने समाज, पुराने साम्राजवादी और पूँजीवाद निजाम और पुरानी शायरी सभी के खिलाफ हैं उन्हें नए समाज से प्रेम है, नए निजाम से प्रेम है, नई दुनिया से प्रेम है और नई शायरी से प्रेम है। वह हर पुरानी चीज़ की जगह नई चीज़ खाना चाहते हैं। पुरानेपन से बगावत ‘ताबों’ की सारी शायरी में भरी है। वह पुराने उर्दू शायरों की तरह, जिनके पीछे आज भी उर्दू के ज्यादातर शायर चलते हैं, माशूक को मई के रूप में नहीं देखते बल्कि औरत के रूप में देखते हैं और सारु कहते हैं—

जब कभी भूले से दिल में याद आएगी मेरी  
गर्म पेशाबी में तू कुछ कुछ नमी सी पाओगी

उन्हें उर्दू के ऐसे शायरों भी पसन्द नहीं जहाँ एक ही तरह में सब शायर सबलें बिलकर सुनाने के लिये इकट्ठा होते हैं क्योंकि



ने बड़ी मेहनत के साथ ऐसी ऐसी चीजें दी हैं जो ज्यादातर रामायणों में मुराकिल से मिलती हैं। जैसे एक पूरा खंड 'चित्रावली' के नाम से है जिसमें सैकड़ों तस्वीरें रामायण की उन कहानियों की हैं जिनसे रामायण बनती है। यह बच्चों में रामायण के लिये प्रेम पैदा करने में बहुत काम की चीज होगी। इसके अलावा भी जगह जगह और भी बहुत से चित्र दिये गए हैं। रामायण पढ़ने वालों के लिये रामश्लका, तुलसीदास जी का जीवन चरित्र, पारायन विधि, अमरुठान प्रयाग जैसी चीजें सभी इस पुस्तक में हैं। आखीर में रामायण की महानता पर कुछ खास लोगों की रायें भी दी गई हैं जैसे, महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सर सी० वाई० चिन्तामणि वर्गोरा। हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक पढ़ने वाले खूब पसन्द करेंगे। दाम वाजिबी जान पड़ते हैं।

२३-२-५१

—सुन्दरलाल

## साप्ते खरप्पां

लेखक—गुलाम रब्बानी 'ताबाँ', निकालने वाली—इन्डियन, लिट्रेचर सुसाइटी, जामिया नगर, देहली। सका १४८-रायल साइज कीमत दो रुपए आठ आने।

यह किताब उरदू के मशहूर शायर गुलाम रब्बानी 'ताबाँ' की ५६ नजमों गजलों का मजमूआ यानी संग्रह है। 'ताबाँ' का कलाम बहुत पहले से उरदू के अच्छे रिसालों में छपता रहा है। इस आरसे

अप्रैल सन् ५१

कच्चे कदाबन

नया हन्द

ने बड़ी मेहनत के साथ ऐसी ऐसी चीजें दी हैं जो ज्यादातर रामायणों में मुराकिल से मिलती हैं। जैसे एक पूरा खंड 'चित्रावली' के नाम से है जिसमें सैकड़ों तस्वीरें रामायण की उन कहानियों की हैं जिनसे रामायण बनती है। यह बच्चों में रामायण के लिये प्रेम पैदा करने में बहुत काम की चीज होगी। इसके अलावा भी जगह जगह और भी बहुत से चित्र दिये गए हैं। रामायण पढ़ने वालों के लिये रामश्लका, तुलसीदास जी का जीवन चरित्र, पारायन विधि, अमरुठान प्रयाग जैसी चीजें सभी इस पुस्तक में हैं। आखीर में रामायण की महानता पर कुछ खास लोगों की रायें भी दी गई हैं जैसे, महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सर सी० वाई० चिन्तामणि वर्गोरा। हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक पढ़ने वाले खूब पसन्द करेंगे। दाम वाजिबी जान पड़ते हैं।

—सुन्दरलाल

५१-२-५१

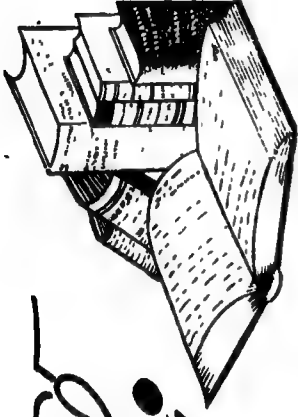
## साप्ते खरप्पां

लेखक—गुलाम रब्बानी 'ताबाँ', निकालने वाली—इन्डियन, लिट्रेचर सुसाइटी, जामिया नगर, देहली। सका १४८-रायल साइज कीमत दो रुपए आठ आने।

यह किताब उरदू के मशहूर शायर गुलाम रब्बानी 'ताबाँ' की ५६ नजमों गजलों का मजमूआ यानी संग्रह है। 'ताबाँ' का कलाम बहुत पहले से उरदू के अच्छे रिसालों में छपता रहा है। इस आरसे



# किं कासे



# कृष्ण

## श्री रामचरित मानस

सम्पादक—मुन्शी कन्हैयालाल एम० ए०, एल० एल० बी० ऐडवो-  
केट, छपवाने वाले—पंचक्रोशी सिन्डिकेट. “कुरान कुञ्ज” पंचक्रोशी  
समिति रोड, इलाहाबाद. सफे ५७६, कीमत तीन रुपए बारह आने.

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायन हिन्दी साहित्य में एक बहुत ऊँचा स्थान रखती है. सच यह है कि यह पुस्तक संसार भर के साहित्य में ऊँची से ऊँची पुस्तकों में गिने जाने के योग्य है. इसमें हर तरह के पढ़ने वाले, धर्म प्रेमी हों या साहित्य प्रेमी. बूढ़े हों या बच्चे, पुरुष हों या स्त्री, सब के लिये अपनी अपनी रुचि की उपयोगी सामग्री मिलती है. हिन्दी की यह पुस्तक लाखों घरों में खरूर है. ऐसी हरदिल अर्चाय किताब का एक नया एडीशन यों तो कोई खास बात नहीं पैदा करता मगर यह संस्करण जो हमारे सामने है अपनी विशेषताओं के कारन तुलसीदास जी की रामायणों में एक विशेष स्थान प्राप्त करेगा. इसमें मुन्शी कन्हैयालाल

## श्री राम चरित मानस

संपादक—मन्शी कलैया लाल एम० ए०—पिल अिल—पि—अिद्वकिट  
छपवाने वाले—पन्च कुरशी सन्डिकेट. “कुरश कलज” पन्च कुरशी  
सन्धि र्दक’ अल आद. सन्धे ०७१ फिस्ट त्हन र्दक बार अने.

कुसुमस तलसी दास जी की रामायन मन्दी साहित्य म्हन  
अिक भेत अन्जि अस्त्यान र्कहती है. सज ये है के ये पस्तक सलसर  
भर के साहित्य म्हन अन्जि = अन्जि मस्तक म्हन कले जने के  
योग्य है. अस म्हन हर तरह के पढ़ने वाले, धर्म प्रेमी हों या साहित्य  
प्रेमी, हों या बच्चे, पुरुष हों या अस्त्री, सब के लिये अपनी  
अिली र्जि की अिद्वकी सामग्री मलती है. मन्दी की ये पस्तक  
लाखों घरों म्हन खरूर है. अिसी हरदिल अर्चाय किताब का अिक न्हा अिद्विशन्.  
यों नो र्द्वी खलस बात न्हेन पिदा कुरा ये सलसर जो हमार  
सलने है अिली र्शिएतारों के कारन तलसी दास जी की रामायलस  
म्हन अिक र्शिए अस्त्यान प्ररित करिगा. लस म्हन मन्शी कलैया लाल



लयाल छोड़ कर एक्कदम हँस पड़ते हैं। और हम सोचने लगते हैं कि हो न हो उस ने भी कभी आँख-मिचोली खेली है। जभी तो नाक की यह दुरगत बनी है। और हम अपनी नाक पर हाथ फेर कर तोबा करते हैं कि अब कभी भी आँख-मिचोली न खेलेंगे, क्योंकि अब आँख मिचोली हमारे लिये नाक मिचोली बन गई है।

मैं तो “बच्चों की दुनिया” पढ़ने वालों से भी कहूँगी कि आप भी लगे हाथों अपनी नाकों को देख लीजिये। अगर वह लम्बी है और मुड़ी है तो फिर आपने भी नाक मिचोली खेली है। है ना यह बात ठीक..... !!

नया हलद बच्चों की दुनिया अप्रैल सन् '५१

खयाल चोर कर एक दम हलस पڑते हैं। और सोचने लगे हैं कि हो न हो उस ने भी कभी आँख मिचोली खेली है। जभी तो नाक की यह दुरगत बनी है। और हम अपनी नाक पर हाथ फेर कर तोबा करते हैं कि अब कभी भी आँख मिचोली न खेलेंगे, क्योंकि अब आँख मिचोली हमारे लिये नाक मिचोली बन गई है।

मैं तो “बच्चों की दुनिया” पढ़ने वालों से भी कहूँगी कि आप भी लगे हाथों अपनी नाकों को देख लीजिये। अगर वह लम्बी है और मुड़ी है तो फिर आपने भी नाक मिचोली खेली है। है ना यह बात ठीक..... !!

## चिंत्कले

राजेश—भैरवी साहब! आप बेहत प्रेशान दिखाने पड़ते हैं। सुरेश—हाँ, मेरी ऐनक खो गई है। और मुश्किल यह है कि बिना ऐनक लगाए मैं उसे ढूँढ़ भी नहीं सकता।

हमें इस पते पर अपने लिख “बच्चों की दुनिया” में छपने को भेजो—प्रेस भाई, एडीटर “बच्चों की दुनिया” १३५, मुगल पुरा, हैदराबाद दक्खिन (भारत)

## चुटकुला

राजेश—भाई साहब, आप बहुत परेशान दिखाने पड़ते हैं। सुरेश—हाँ, मेरी ऐनक खो गई है। और मुश्किल यह है कि बिना ऐनक लगाए मैं उसे ढूँढ़ भी नहीं सकता।

हमें इस पते पर अपने लेख “बच्चों की दुनिया” में छपने को भेजो—प्रेस भाई, एडीटर “बच्चों की दुनिया” १३५, मुगल पुरा, हैदराबाद दक्खिन (भारत)



















## छुडी का दिन

(आई शीतल सिंह, बौल पेठ)

बापा में आम के, जासुन के, नारंगी के, संतरे के पेड़ थे. जासुन के पेड़ चारों ओर बापा के कोनों पर लगे हुए थे. आम के कुँज आलम, नारंगी के झाड़ू आलम, संतरे के झाड़ू आलम और एक तरफ सुन्दर फूलों की बगियाँ थीं. गुलाब के फूल की क्यारी, गुलाबी पत्तों का गुलाब, हरे पत्तों का गुलाब, चमेली की बेलें दरखतों पर लपटती हुई थीं. फूल तारों की तरह जगमग कर रहे थे. नन्हे नन्हे और सुन्दरता के सुन्दर रूप ! बापा में ऐसी बहार थी कि मन बाधा या घुसते फिरते ही रहें, इसी तरह सुबह से शाम हो जाए. मैं और फरीद दोनों फिर रहे थे. फरीद ने कहा—“देखो तो, यह बापा कितना सुन्दर है.”

मैंने कहा—“हाँ मई फरीद, यह बापा तो बड़ा ही सुन्दर है. मन बाधा है कि घर न आयें, वहीं घुसते रहें और अब रात हो तब किनी पेड़ के सहारे सो रहें.....”

“हाँ, हाँ, ठंडी और खुराबूमरी हवा से तो ऐसी नींद आएगी कि इसारा दिमाग मस्त हो जाएगा.” फरीद ने सर के बालों को ठीक करत हुए कहा.

इतने में बादल आ गए. ठंडी हवा साँच साँच ढरती चलने लगी. खुराबू की लपटें आने लगीं और पंखी बहचहाने लगे. कोयल बोली, मोर बोला, पपीहा गाया, बगुले उड़ने लगे. बादलों के काले

आँखें न देखते बहचहाने लगे अने आवाजें उठने लگی.

## चिह्नी का डान

(बेहती शिबल सल्लू, देहली बिहरी)

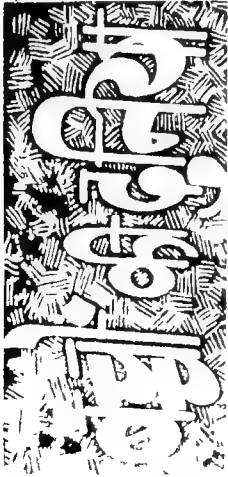
बाग में आम के, जामुन के, नारंगी के, संतरे के पेड़ थे. जामुन के पेड़ चारों ओर बाग के कोनों पर लगे हुए थे. आम के कुँज अलक, नारंगी के जामुन अलक, संतरे के जामुन अलक और एक तरफ सुन्दर फूलों की बगियाँ थीं. गुलाब के फूल की क्यारी, गुलाबी पत्तों का गुलाब, हरे पत्तों का गुलाब, चमेली की बेलें दरखतों पर लपटती हुई थीं. फूल तारों की तरह जगमग कर रहे थे. नन्हे नन्हे और सुन्दरता के सुन्दर रूप ! बाग में ऐसी बहार थी कि मन बाधा या घुसते फिरते ही रहें, इसी तरह सुबह से शाम हो जाए. मैं और फरीद दोनों फिर रहे थे. फरीद ने कहा—“देखो तो ये बाग कितना सुन्दर है.”

मैंने कहा—“हाँ बेहती फरीद, ये बाग तो बड़ा ही सुन्दर है. मन बाधा है कि घर न आयें, वहीं घुसते रहें और अब रात हो तब किनी पेड़ के सहारे सो रहें.....”

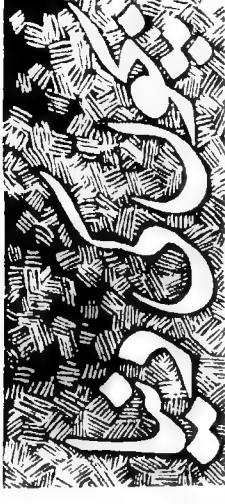
“हाँ, हाँ, ठंडी और खुराबूमरी हवा से तो ऐसी नींद आएगी कि इसारा दिमाग मस्त हो जाएगा.” फरीद ने सर के बालों को ठीक करत हुए कहा.

इतने में बादल आ गये. ठंडी हवा साँच साँच ढरती चलने लगी. खुराबू की लपटें आने लगीं और पंखी बहचहाने लगे. कोयल बोली, मोर बोला, पपीहा गाया, बगुले उड़ने लगे. बादलों के काले आँखें न देखते बहचहाने लगे अने आवाजें उठने लगी.





एडीटर—प्रेम भाई



## शान्ति के गीत

( भाई इफतिखार अहमद 'इकबाल' )

आओ आओ जग में आज खुशी के दीप जलाएँ  
दुनिया में सुख नाच उठे हम ऐसे गीत सुनाएँ  
सब हैं भाई भाई आओ सब को गले लगाएँ

गाएं खुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

जग है चार दिनों का मेला, जीवन सुखी बिताएँ  
मन में खोट न रख कर, सबकी सेवा में लग जाएँ  
पढ़ें, लिखें, आकाश पे जाएँ, आगे कदम बढ़ाएँ

गाएं खुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

देस हमारा सब से प्यारा करेंगे इसकी सेवा  
गंगा, जमना, कुरुना\* बहती, ऊँचा खड़ा हिमाला  
देस को अपने ऊँचा करना अब है काम हमारा

गाएं खुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

\* कुरुना नदी

## शान्ति के गीत

( बھائی افتخار احمد 'اقبال' )

آؤ آؤ جگ مھوں آج خوشي کے ديپ جلانھوں  
دنھا مھوں سکھ ناچ اُتھ ہم ایسے کیت سناٹھوں  
سب مھوں بھائی بھائی آؤ سب کو گلے لٹانھوں

گلنھوں خوشي کے کیت آؤ آؤ ہم سب مھوت

جگ ھے چار دنوں کا مھلہ جھون سکھی بھٹانھوں  
من مھیں کھوتنہ لکھ کر سب کی سیوا میں لگ جانھوں  
پوچھوں لکھن آکھن پھ چانھوں آگے قدم بڑھانھوں

گلنھوں خوشي کے کیت آؤ آؤ ہم سب مھوت

دیس ہمارا سب سے پیارا کریں گے اس کی سیوا  
کٹا کٹا کرہلا\* بھٹوں ارنچا کھوا ہلا  
دیس کو اپنے ارنچا کرنا اب ھے کام ہمارا

گلنھوں خوشي کے کیت آؤ آؤ ہم سب مھوت

\* کرہلا ندی



‘ईश्वर अल्लाह तेरे नाम’ तो नोआखाली में सहज ही सूझा था. उस में सब बर्गों ने और सब पंथों ने मान्य किये हुए भगवान के सब नाम छिपे माने हैं, लेकिन अगर दूसरे नाम भी इस में जोड़ दें तो कोई दोष नहीं होगा. ईश्वर अल्लाह, गाड गोविन्द, मज्द महादेव, जनार्दन जहूबा, यह सब मिलकर एक नाम बना सकते हो या किसी भी एक नाम में यह सारे समरु सकते हो.

अब ‘ईसू अल्लाह तेरे नाम’ की बात अगरचे यह एक क्रिश्चन भाई का सुझाव है. मुझे डर है कि परमेश्वर की जगह ईसू का नाम शायद क्रिश्चन लोग पसन्द नहीं करेंगे. यह मैं ठीक ठीक नहीं जानता. लेकिन ईश्वर की जगह अगर ईश्वर मोहम्मद हम बोलते तो सुलमान उसे पसन्द न करते यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ. भक्ति भाव के नशे में गुरु को ईश्वर की पदवी देना वैदिक, वेदान्ती और हिन्दू कल्पना है जो शायद ईमाद्यों को पसन्द न आए. लेकिन अगर उन्हें वह पसन्द आए तो मुझे इस में कोई उज्र नहीं. मैं एक भावार्थी मनुष्य हूँ और ईश्वरतत्त्व के विचार में दलील को कोई मूल्य नहीं देता. मैं ईसू और मोहम्मद को तो क्या, अपने पिता और माता को भी सम्पूर्ण परमेश्वर मान सकता हूँ, जबकि वह शरीर से मुक्त हो चुके हैं. देह मुक्त महारुपुश को जब हम परमेश्वर का रूप देते हैं तब हम उसके व्यक्तित्व को मिटा देते हैं. इतना ध्यान में रखना चाहिये. अगर यह खतरा मंजूर है तो खुशी से ईसू अल्लाह कह सकते हैं.

२०-१-५१.

—परधाम, पवनार

‘ऐश्वर्य अल्ले तूरे नाम’ तो नोआखाली में सहज ही सूझा

था. उस में सब धर्मों ने और सब पंथों ने मान्य किये हुए भगवान के सब नाम छिपे माने हैं, लेकिन अगर दूसरे नाम भी इस में जोड़ दें तो कोई दोष नहीं होगा. ईश्वर अल्लाह, गाड गोविन्द, मज्द महादेव, जनार्दन जहूबा, यह सब मिलकर एक नाम बना सकते हो या किसी भी एक नाम में यह सारे समरु सकते हो.

अब ‘ईसू अल्ले तूरे नाम’ की बात. अगरचे यह एक क्रिश्चन भाई का सुझाव है. मुझे डर है कि परमेश्वर की जगह ईसू का नाम शायद क्रिश्चन लोग पसन्द नहीं करेंगे. यह मैं ठीक ठीक नहीं जानता. लेकिन ऐश्वर्य की जगह ईश्वर मोहम्मद हम बोलते तो सुलमान उसे पसन्द न करते यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ. भक्ति भाव के नशे में गुरु को ईश्वर की पदवी देना वैदिक, वेदान्ती और हिन्दू कल्पना है जो शायद ईमाद्यों को पसन्द न आए. लेकिन ऐश्वर्य की जगह ईश्वर मोहम्मद हम बोलते तो सुलमान उसे पसन्द न करते यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ. भक्ति भाव के नशे में गुरु को ईश्वर की पदवी देना वैदिक, वेदान्ती और हिन्दू कल्पना है जो शायद ईमाद्यों को पसन्द न आए.

अब ‘ईसू अल्ले तूरे नाम’ की बात. अगरचे यह एक क्रिश्चन भाई का सुझाव है. मुझे डर है कि परमेश्वर की जगह ईसू का नाम शायद क्रिश्चन लोग पसन्द नहीं करेंगे. यह मैं ठीक ठीक नहीं जानता. लेकिन ऐश्वर्य की जगह ईश्वर मोहम्मद हम बोलते तो सुलमान उसे पसन्द न करते यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ. भक्ति भाव के नशे में गुरु को ईश्वर की पदवी देना वैदिक, वेदान्ती और हिन्दू कल्पना है जो शायद ईमाद्यों को पसन्द न आए.

—परधाम, पवनार

२०-१-५१.



तथा हिन्दू चरखा बनाम सेती..... 'ब्रिगेल सन्' ५१

काल सर्वोदय समाज कायम करना है जो हिन्दुस्तान में तो चरखा ही कर सकता है.

जवाब २—आश्रम प्रार्थना में अलग अलग धर्मों की प्रार्थनायें किस तरह दाखिल हुईं, इसका जिक्र गांधीजी ने बहुत बार किया है इसलिये उसे मैं दुहराना नहीं चाहूँगा. इतना ही कहूँगा कि उनका एक भक्त हृदय था और जो चीज सहज भाव में जैसी मिल गई वैसी बन्होंने ले ली. मैंने देखा कि पारसियों का जो मंत्र आश्रम प्रार्थना में बोला जाता है, वह उस धर्म की निगाह से सबसे अच्छा चुनाव भी नहीं है. वह अच्छा तो है, लेकिन पारसियों का ख़ास मंत्र, जिसे हम पारसियों की गायत्री कह सकते हैं, वह है 'अहुनवैर्य' मैंने यह मंत्र परंथाम की प्रार्थना में मराठी पद्य में तरजुमा करके दाखिल कर लिया है. लेकिन बापू ने तो एक दिन डाक्टर गिल्डर सहज ही जो मंत्र बोल गये उसी को चलाया.

क्रिचन भाइयों के साथ एक रूप होने के खयाल से 'लीड काइन्डली लाइट' का गुजराती तरजुमा आश्रम की प्रार्थना में इतवार के दिन बोलने का बापू का रिवाज था. तालीमो संघ की प्रार्थना में ईसाई प्रार्थना रोज़ बोली जाती है और जहाँ ईसाई समाज विशेष है वहाँ ऐसा ही करना चाहिये इतना ही नहीं, बल्कि हम नये सिर से जहाँ सब मिलकर प्रार्थना का आयोजन करेंगे, वहाँ सब धर्मों के कुछ हिस्से उस प्रार्थना में रहने चाहियें, ऐसा मैं मानता हूँ और परंथाम में मैंने वैसा किया भी है.

नया हल्द चरखे बिलम कहती..... लीबल सी १०१

कम सरोज सज قائम करना है, जो हल्दस्तान में तो चरखे ही कर सकता है.

जवाब २—आश्रम प्रार्थना में एक एक धर्मों की प्रार्थनायें किस तरह दाखिल होंगी, اسکا ذکر گندھی جی نے بہت بار کیا ہے. اسلم آئے میں دھران نہیں چاہوں گا. اندا ہی کہوں گا کہ اُن کا ایک بہکت ہر دے تھا اور جو چوڑ سہج بھاؤ میں جیسی مل گئی ویسی اُنہوں نے لے لی. میں نے دیکھا کہ پارسوں کا جو منتر آشرم پارتھنا میں بولا جاتا ہے، وہ اُس دھرم کی نگر سے سب سے اچھا چننا ہی نہیں ہے. وہ اچھا تو ہے. لیکن پارسوں کا خاص منتر 'جسم ہم پارسیوں کی گیتی کہہ سکتے ہیں' وہ ہے 'اھون ویہ' میں نے یہ منتر پرندھام کی پارتھنا میں مراٹھی ہدیہ میں ترجمہ کر کے داخل کر لیا ہے. لیکن بابو نے تو ایک دن ڈاکٹر گلدز سہج ہی جو منتر بول گئے اُسی کو چالیا.

کوشچین بھائیوں کے ساتھ ایک روپ ہونے کے خیال سے 'لیڈ کائناتی لائٹ' کا گجراتی ترجمہ آشرم کی پارتھنا میں اتوار کے دن بولنے کا بابو کا رواج تھا. تعلیمی سنگھ کی پارتھنا میں عیسائی پارتھنا روز بولی جاتی ہے اور جہاں عیسائی ساج وشہس ہے وہاں ایسا ہی کرنا چاہئے. اتنا ہی نہیں بلکہ ہم نئے سرے سے جہاں سب ملکر پارتھنا کا آئوچن کریں گے. وہاں سب دھرموں کے کچھ حصے اُس پارتھنا میں رھنے چاہئیں، ایسا میں ماننا ہوں اور پرندھام میں میں نے ویسا کیا بھی ہے.



हिदायत भी सब सेवकों को सर्व सेवा संघ दे चुका है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि चरखे को छोड़ कर हम खेती में लग जायें। जहाँ हम भूक को मिटाना चाहते हैं वहाँ हम नंगे रहने को भी पसंद नहीं करेंगे। खेती किसी न किसी मात्रा में लोग करते ही आए हैं, और उसके खिलाफ कोई भगड़ा खड़ा नहीं है। चरखे का उद्योग टूट चुका था। उसकी खड़ा करने की कोशिश अगर हम नहीं करते हैं तो और कोई करने वाला नहीं है। इतना ही नहीं, उस के विरोध में मिलों का पुरस्कार करने वाला यन्त्रवाद खड़ा है। उस यन्त्रवाद के खिलाफ हमारी जो बग़ावत है, उसकी निशानी चरखा बन जाता है।

परंपरामें हम लोग दिन का लास हिस्सा खेती करने में और कुर्बानियाँ देते में लगाते हैं। उसकी तारीफ़ करते हुए एक आख़बार ने लिखा था कि बिनोबा ने आज कल चरखा यग्य की जगह खेती यग्य शुरू कर दिया है। हमें उसका प्रतिवाद करना पड़ा। हम अपना दिन का काम चरखे से ही शुरू करते और खतम करते हैं। चरखे को हमने कम नहीं किया बल्कि उसे बढ़ाया है क्योंकि कपाम से लेकर कपड़ा बुनने तक का सारा काम हर एक घर में घरेलू काम के तौर पर होना चाहिये। ऐसा हमने माना है। और रोज़ क़रीब दो घंटे हम उस में लगाते हैं। चरखे को हमने प्रार्थना में जगह दी है और हमारी उपासना वही है। हाँ, यह जरूर है कि हम व्योपारी खादी को अब महत्व नहीं देते। इसका मतलब यह भी नहीं कि बेकारी दूर करने का जो काम चरखे से होता है, उसकी हम क़दर नहीं करते। लेकिन चरखे का वह लास काम नहीं है। उसका लास

हिदायत भी सब सेवकों को सर्व सेवा संघ दे चुका है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि चरखे को छोड़ कर हम खेती में लग जायें। जहाँ हम भूक को मिटाना चाहते हैं वहाँ हम नंगे रहने को भी पसंद नहीं करेंगे। खेती किसी न किसी मात्रा में लोग करते ही आए हैं, और उसके खिलाफ कोई भगड़ा खड़ा नहीं है। चरखे का उद्योग टूट चुका था। उसकी खड़ा करने की कोशिश अगर हम नहीं करते हैं तो और कोई करने वाला नहीं है। इतना ही नहीं, उस के विरोध में मिलों का पुरस्कार करने वाला यन्त्रवाद खड़ा है। उस यन्त्रवाद के खिलाफ हमारी जो बग़ावत है, उसकी निशानी चरखे बन जाता है।

परंपरामें हम लोग दिन का लास हिस्सा खेती करने में और कुर्बानियाँ देते में लगाते हैं। उसकी तारीफ़ करते हुए एक आख़बार ने लिखा था कि बिनोबा ने आज कल चरखे यग्य की जगह खेती यग्य शुरू कर दिया है। हमें उसका प्रतिवाद करना पड़ा। हम अपना दिन का काम चरखे से ही शुरू करते और खतम करते हैं। चरखे को हमने कम नहीं किया बल्कि उसे बढ़ाया है क्योंकि कपाम से लेकर कपड़ा बुनने तक का सारा काम हर एक घर में घरेलू काम के तौर पर होना चाहिये। ऐसा हमने माना है। और रोज़ क़रीब दो घंटे हम उस में लगाते हैं। चरखे को हमने प्रार्थना में जगह दी है और हमारी उपासना वही है। हाँ, यह जरूर है कि हम व्योपारी खादी को अब महत्व नहीं देते। इसका मतलब यह भी नहीं कि बेकारी दूर करने का जो काम चरखे से होता है, उसकी हम क़दर नहीं करते। लेकिन चरखे का वह लास काम नहीं है। उसका लास



## चरखा बनाम खेती व सर्व धर्मी प्रार्थना

( आचार्य विनोबा भावे )

कताई मंडल प्रसारकों ने दो सवाल पूछे हैं. मंगलूर के क्रिश्चन लोगों की तरफ से यह सवाल आए हुए हैं.

सवाल १—आज सब लोग कहते हैं कि हमारे देम के लिये प्रधान धंदा खेती का है. तो फिर आप लोग वही क्यों नहीं हाथ में लेते ? चरखा क्यों ?

सवाल २—आश्रम प्रार्थना में मुमलमानों को अपनी तरफ खींचने के लिये कुरान शरीफ की आयतें ली गई हैं. कुछ बौद्ध और पारसी मन्त्र भी लिये हैं. क्रिश्चन क्यों नहीं ? ईश्वर अल्लाह तेरे नाम’ की जगह ‘यमू अल्लाह तेरे नाम’ गंगा कहना भी आप लोगों को उचित नहीं मालूम होता ?

जवाब १—हिन्दुस्तान की आज की हालत में सर्वोदय मेवकों को खेती की तरफ जरूर ध्यान देना चाहिये. इसमें कोई शक नहीं है. मैं तो इन दिनों पूरा किसान बन गया हूँ. यह मेरे मित्र जानते हैं. ‘सर्वोदय’ में मेरे इन प्रयोगों की कुछ तफसील भी दी जाती है. ग्राम सेवा के काम की बुनियाद खेती पर खड़ी की जाय इस तरह की एक

## चरखे बनाम कृषि व सरोधर्म पर अंतर्धान

( आचार्य विनोबा भावे )

कताई मंडल पर साकों ने दो सवाल पूछे हैं. मंगलूर के क्रिश्चन लोगों की तरफ से ये सवाल आये हुये हैं.

सवाल १—आज सब लोग कहते हैं कि हमारे देम के लिये प्रधान धंदा कृषि का है. तो फिर आप लोग वही क्यों नहीं हाथ में लेते ? चरखे क्यों ?

सवाल २—आश्रम पर अंतर्धान में मुसलमानों को अपनी तरफ खींचने के लिये कुरान शरीफ की आयतें ली गयी हैं. कुछ बौद्ध और पारसी मन्त्र भी लिये हैं. क्रिश्चन क्यों नहीं ? ईश्वर अल्लाह तेरे नाम’ की जगह ‘यमू अल्लाह तेरे नाम’ गंगा कहना भी आप लोगों को उचित नहीं मालूम होता ?

जवाब १—हिन्दुस्तान की आज की हालत में सर्वोदय मेवकों को खेती की तरफ जरूर ध्यान देना चाहिये. इसमें कोई शक नहीं है. मैं तो इन दिनों पूरा किसान बन गया हूँ. यह मेरे मित्र जानते हैं. ‘सर्वोदय’ में मेरे इन प्रयोगों की कुछ तफसील भी दी जाती है. ग्राम सेवा के काम की बुनियाद खेती पर खड़ी की जाय इस तरह की एक



नया हिन्द. राश्ट्र भाशा हिन्द्या का स्वरूप अप्रैल सन् '५१

हमारी भाशा का सही स्वरूप हिन्दुस्तानी है. मुझे संस्कृत से कोई परहेज नहीं. मुझे इस में कोई रुकावट नहीं कि नप शब्द संस्कृत से आएँ. लेकिन वह शब्द नक़ली रूप से न आने चाहियें. आजकल हिन्दी ही के प्रेमो हिन्दी को हानि पहुँचा रहे हैं. वह ऐसी हिन्दी बनाना चाहते हैं जिसे चन्द लोग समझ सकें.

हिन्दुस्तानी प्रचार का काम सब तरह से बहुत जरूरी है. क्योंकि वह राश्ट्र की माँग है. राश्ट्र भाशा हमारे राश्ट्र को बाँधती है. उसे मजबूत करती है. हमें राश्ट्र भाशा को तमाम लोगों को भाशा बनाना है, इस लिये उस में नये शब्द लेने वाले भाशा की सेवा करते हैं. आप लोग यहाँ जो काम कर रहे हैं उस से मुझे खुशी है. राश्ट्र भाशा के प्रचार का काम एक जरूरी काम है. मैं चाहता हूँ कि आप को इसमें सफलता हासिल हो.

## ‘नया हिन्द’ के फुटकर पुराने परचे

कम कीमत पर खरीदिय

हर परचे की कीमत

सन १९५० के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ आठ आना
सन १९४९ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छे आना
सन १९४८ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छे आना
सन १९४७ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छे आना
जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९४६ के फुटकर परचे	...	सिर्फ़ छे आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे खरीदने पर ढाक खर्च मात्र

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४५ मट्टीगंज इलाहाबाद

साहद राश्ट्र बेहाशा हल्दी का सरोप अप्रैल सन '५१

हमारी बेहाशा का صحیح सरोप हल्दीगंज है. मज्जे संस्कृत से कौन् प्रहेज नहें. मज्जे अस में कौन् राक़त नहें के नूँ शब्द संस्कृत से आँ. लेकिन वह शब्द नक़ली रूप से न आने चाहियें. आज कल हल्दी ही के प्रेमो हल्दी को हानि पहुँचा रहे हैं. वह ऐसी हल्दी बनाना चाहते हैं जिसे चन्द लोग समझ सकें.

हल्दीगंज प्रचार का काम सब तरह से बहुत जरूरी है. क्योंकि वह राश्ट्र की माँग है. राश्ट्र बेहाशा हमारे राश्ट्र को बाँधती है. उसे मजबूत करती है. हमें राश्ट्र बेहाशा को तमाम लोगों को भाशा बनाना है, इस लिये उस में नये शब्द लेने वाले बेहाशा की सेवा करते हैं. आप लोग यहाँ जो काम कर रहे हैं उस से मुझे खुशी है. राश्ट्र बेहाशा के प्रचार का काम एक जरूरी काम है. मैं चाहता हूँ कि आप को इसमें सफलता हासिल हो.

## ‘नया हन्द’ के बेहतर पुराने परचे

कम قیمت پر خریدئے

ھر پرچے کی قیمت

سن ۱۹۵۰ کے بہتر پرچے	..	صرف آٹھ آنا
سن ۱۹۴۹ کے بہتر پرچے	..	صرف چھ آنا
سن ۱۹۴۸ کے بہتر پرچے	..	صرف چھ آنا
سن ۱۹۴۷ کے بہتر پرچے	..	صرف چھ آنا
جولائی سن ۱۹۴۶ سے دسمبر سن ۱۹۴۶ کے بہتر پرچے	..	صرف چھ آنا

نوٹ— شروع سے آج تک کے کل پرچے خریدنے پر ڈاک خرچ معاف.

—مینیجر ‘نیا ہند’

۱۴۵. مٹھی کلج، الہ آباد.



नया हिन्द राश्ट्र भाशा हिन्दी का स्वरूप अग्रल सन् '११

होने लगी है, जो आसानी से मेरी समझ में भी नहीं आती. वहाँ अब शुद्ध हिन्दी भाशा बोलने का प्रयत्न हो रहा है. कई लोग यह समझते हैं कि हिन्दी ऐसी होनी चाहिये जिस में बाहर के शब्द न आएँ. यह गलत तरीका है. अंगरेजी भाशा दुनिया की बड़ी भाशाओं में एक है. वह ताकतवर भाशा है. आपको जान कर अचरज होगा कि हर साल उस में थोड़े नहीं, कई हजार नए शब्द बढ़ जाते हैं. मैं अहमदनगर के किले में था. उस वक़्त मेरे पास कान्ही समय था. एक दफ़ा मैं अंगरेजी डिक्शनरी लेकर बैठ गया और अपने देस के लफ़्ज़ों की क़हरिस्त बनाने लगा. पचास साठ सके ही देखे थे कि सैकड़ों की क़हरिस्त हो गई. हज़ार बहुत से शब्दों को लेकर उन्होंने अपने कपड़े पहना दिये हैं. वह भाशा कमज़ोर हो जाती है, जो नये शब्द नहीं लेती. जो भाशा नये शब्द लेकर उन्हें अपने कपड़े पहनाती है. वह भाशा ख़िन्दा रहती है लेकिन नये शब्द भी ख़िन्दा और जीवित रहने चाहियें. भाशा के दरवाज़े हमेशा खुले रहने चाहियें. हाल ही में दिल्ली के पेशावर लोगों के पेशों के शब्दों की जाँच कराई गई, तो सालूस हुआ कि उन्होंने अपने काम के ख़याल से जो शब्द बनाए हैं, वह बहुत उचित और अर्थपूर्ण हैं.

हम अंगरेजी भाशा के शब्द क्यों न लें. रेलवे या स्टेशन के लिये महाराष्ट्र में लम्बे लम्बे शब्द निकाले गए हैं. यह बात भाशा को मारने की है. क्या भाशा कोई तमाशा है ? रुसी, चीनी. अरबी फ़ारसी कोई भी भाशा हो, जिस से हम नये शब्द ले सकें, लेने चाहियें. नये शब्द लेने से भाशा की दौलत बढ़ती है.

नया हल्द राश्ट्र बेहासा हल्दी का सूरूप अप्रिल सन् '०१

होने लगी है. 'जो आसानी से मुझे समझ में भी नहीं आती. हाल अब शुद्ध हल्दी बेहासा बोलने का प्रयत्न हो रहा है. कئی लोग यह समझते हैं कि हल्दी ऐसी होनी चाहिये जिस में बाहर के शब्द न आँ. यह फलसू तरीक़ा है. अंगरेजी बेहासा दुनिया की बड़ी भाशाओं में एक है. वह ताक़तवर भाशा है. आप को जान कर अचरज होगा कि हर साल उस में थोड़े नहीं, कئی हज़ार नए शब्द बढ़ जाते हैं. मैं अहमदनगर के किले में था. उस वक़्त मेरे पास कान्ही समय था. एक दफ़ा मैं अंगरेजी डिक्शनरी ले कर बैठ गया और अपने देस के लफ़्ज़ों की फ़ह्रिस्त बनाने लगा. पचास साठ सके ही देखे थे कि सैकड़ों की फ़ह्रिस्त हो गई. हज़ार बहुत से शब्दों को लेकर उन्होंने अपने कपड़े पहना दिये हैं. वह भाशा कमज़ोर हो जाती है, जो नए शब्द नहीं लेती. जो भाशा नये शब्द लेकर उन्हें अपने कपड़े पहनाती है. वह भाशा ख़िन्दा रहती है लेकिन नए शब्द भी ख़िन्दा और जीवित रहने चाहियें. भाशा के दरवाज़े हमेशा क़ोले रहने चाहियें. हाल ही में दिल्ली के पेशावर लोगों के पेशों के शब्दों की जाँच कराई गई, तो सालूस हुआ कि उन्होंने अपने ख़याल से जो शब्द बनाए हैं, वह बहुत उचित और अर्थपूर्ण हैं.

हम अंगरेजी बेहासा के शब्द क्यों न लें. रेलवे या स्टेशन के लिये महाराष्ट्र में लम्बे लम्बे शब्द निकाले गये हैं. यह बात बेहासा को मारने की है. क्या भाशा कोई तमाशा है ? 'रूसी' 'चीनी' 'फ़ारसी' कौन भी बेहासा हो, जिस से हम नए शब्द ले सकें, लेने चाहियें. नए शब्द लेने से बेहासा की दौलत बढ़ती है.



नया हिन्दू राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप अप्रैल सन् १९५१ में ही लिखी गयी थी। अर्थात् एक देहाती भाषा समझी जाती है। मगर अब हिन्दी में समझने से काम नहीं चलेगा। देस के सब लोग आंगरेजी नहीं सीख सकते, संस्कृत, फारसी और आंगरेजी के होने हुए भी हिन्दी हिन्दुस्तानी वा गरीबी और तमाम लोगों का काम इसी भाषा से चलता रहा है।

हमारे देस में आज नौ देस बढ़ती हुई भाषाएँ हैं जैसे गुजराती, मराठी, बंगाली, तमिल वगैराह। गुजराती भी एक अच्छी भाषा है, उस में बढ़िया साहित्य भी है। आपकी शिक्षा गुजराती के जाग्रय ही होगी। लेकिन फिर भी यह जरूरी है कि सारे देस की एक भाषा हो। वह सिर्फ हिन्दी हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। चाहे हम उसे हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी कहें।

महात्मा जी ने देस के कितने ही सवाल हाथ में लिये, जिस सवाल को वह जरूरी समझते थे उसके पीछे जुट जाते थे। बापू ने बहुत से कामों में ध्यान दिया और काम करने वालों का आगे बढ़ाया। एक बार मैंने इन कामों को फहरिस्त बनाईं, बहुत लम्बी फहरिस्त बनी।

बापू ने हिन्दी हिन्दुस्तानी का सवाल भी उठाया, देस की शक्ति बढ़ाने के लिये, जनता में जागृति लाने के लिये, वह कहते थे कि हमें ऐसी भाषा बनानी है जो पढ़े लिखे लोगों की न हो मगर आम लोगों की हो।

मैं उत्तरप्रदेश में जाता हूँ और वहाँ जो कुछ कहता हूँ, उसे लोग आसानी से समझ लेते हैं। यही सच्ची भाषा है। लेकिन अब मैं कासकर लैब्रिस्लेचर में और पढ़े लिखे लोगों की ऐसी बोली

नया हल्दी राश्ट्र बेभाशा हल्दी का सुरुष अप्रैल सन् ५१' में ही लिखी। हल्दी अभी तक एक देहाती भाषा समझी जाती है। मगर अब ऐसा समझने से काम नहीं चलेगा। देस के सब लोग आंगरेजी नहीं सीख सकते, संस्कृत, फारसी और आंगरेजी के होने हुए भी हिन्दी हिन्दुस्तानी वा गरीबी और तमाम लोगों का काम इसी भाषा से चलता रहा है।

हमारे देस में आज नौ देस बढ़ती हुई भाषाएँ हैं जैसे गुजराती, मराठी, बंगाली, तमिल वगैराह। गुजराती भी एक अच्छी भाषा है, उस में बढ़िया साहित्य भी है। आपकी शिक्षा गुजराती के जाग्रय ही होगी। लेकिन फिर भी यह जरूरी है कि सारे देस की एक भाषा हो। वह सिर्फ हिन्दी हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। चाहे हम उसे हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी कहें।

महात्मा जी ने देस के कितने ही सवाल हाथ में लिये, जिस सवाल को वह जरूरी समझते थे उसके पीछे जुट जाते थे। बापू ने बहुत से कामों में ध्यान दिया और काम करने वालों का आगे बढ़ाया। एक बार मैंने इन कामों की फहरिस्त बनाई, बहुत लम्बी फहरिस्त बनी।

बापू ने हिन्दी हिन्दुस्तानी का सवाल भी उठाया, देस की शक्ति बढ़ाने के लिये, जनता में जागृति लाने के लिये, वह कहते थे कि हमें ऐसी भाषा बनानी है जो पढ़े लिखे लोगों की न हो मगर आम लोगों की हो।

मैं उत्तरप्रदेश में जाता हूँ और वहाँ जो कुछ कहता हूँ, उसे लोग आसानी से समझ लेते हैं। यही सच्ची भाषा है। लेकिन अब मैं कासकर लैब्रिस्लेचर में और पढ़े लिखे लोगों की ऐसी बोली



नया हिन्द राश्ट्र भाशा हिन्दी का स्वरूप अप्रैल सन् १९११

उत्तर प्रदेश हिन्दी का बलन है. इसलिये वहाँ ऐसी भाशा बनाई जाय जो आम लोगों की भाशा हो यह बान ठीक है कि उत्तर प्रदेश में हिन्दी और उर्दू दोनों भाशायें हैं. दोनों भाशाओं के आमान लपञ्जोमे हिन्दुस्तानी भाशा बनी है.

आज लोग कहते हैं कि उर्दू पाकिस्तान की भाशा है. वह मुसलमानों की ख़्बान है. मगर यह उनकी गलनफ़हमी है. उर्दू तो हमारे ही देस की भाशा है. उत्तर प्रदेश में वह बड़ी और ख़ामक़र यू. पी., बिहार, पंजाब और गजस्थान में पली. उत्तर प्रदेश के लोग मही उर्दू बोलते हैं. पाकिस्तान वाले सहीं उर्दू बोल भी नहीं सकने. हां. वहाँ जो लोग उत्तर प्रदेश से अब गये हैं वह उरुग मही उर्दू बोलते हैं. हमें अपने दिल से यह ख़याल निकाल देना चाहिये कि उर्दू परदेसी भाशा है दिल्ली और लखनऊ उर्दू ख़बान के मरकज़ हैं. हां. यह बात सही है कि मुगलगज के ज़माने में उर्दू में फ़ारसी के शब्द अधिक आ गए.

भाशा कैसे बनती है ? वह ऊपर से. अबदुदम्नो नहीं लादी जा सकती, न वह क़ानून के ज़रिये बनाई जा सकती है. पढ़ाई से हम उस पर कुछ असर डाल सकते हैं लेकिन आख़िर में तो ज़नना जो भाशा बोलती है और लिखती है. उर्मा से भाशा बनती है. पढ़े लिखे आदमी भाशा पर कुछ असर डालते हैं. तुलसीदास के पहले का काल में लिखते थे. मुग़ल राज के ज़माने में संस्कृत छूटने लगी और फ़ारसी शुरुआत हुई. हमारे ज़माने में लोग अब अंगरेज़ी में लिखते हैं. मीने ने यह जो ख़ास ख़ास लिखे हैं. यह ख़ास लिखे हैं.

नया हिन्द राश्ट्र भाशा हिन्दी का स्वरूप अप्रैल सन् १९११  
उत्तर प्रदेश हिन्दी का बलन है. इसलिये वहाँ ऐसी भाशा बनाई जाय जो आम लोगों की भाशा हो यह बान ठीक है कि उत्तर प्रदेश में हिन्दी और उर्दू दोनों भाशायें हैं. दोनों भाशाओं के आमान लपञ्जोमे हिन्दुस्तानी भाशा बनी है.

आज लोग कहते हैं कि उर्दू पाकिस्तान की भाशा है. वह मुसलमानों की ख़्बान है. मगर यह उनकी गलनफ़हमी है. उर्दू तो हमारे ही देस की भाशा है. उत्तर प्रदेश में वह बड़ी और ख़ामक़र यू. पी., बिहार पंजाब और गजस्थान में पली. उत्तर प्रदेश के लोग मही उर्दू बोलते हैं. पाकिस्तान वाले सहीं उर्दू बोल भी नहीं सकने. हां. वहाँ जो लोग उत्तर प्रदेश से अब गये हैं वह उरुग मही उर्दू बोलते हैं. हमें अपने दिल से यह ख़याल निकाल देना चाहिये कि उर्दू परदेसी भाशा है दिल्ली और लखनऊ उर्दू ख़बान के मरकज़ हैं. हां. यह बात सही है कि मुगलगज के ज़माने में उर्दू में फ़ारसी के शब्द अधिक आये.

भाशा कैसे बनती है ? वह ऊपर से. अबदुदम्नो नहीं लादी जा सकती, न वह क़ानून के ज़रिये बनाई जा सकती है. पढ़ाई से हम उस पर कुछ असर डाल सकते हैं लेकिन आख़िर में तो ज़नना जो भाशा बोलती है और लिखती है. उर्मा से भाशा बनती है. पढ़े लिखे आदमी भाशा पर कुछ असर डालते हैं. तुलसीदास के पहले का काल में लिखते थे. मुग़ल राज के ज़माने में संस्कृत छूटने लगी और फ़ारसी शुरुआत हुई. हमारे ज़माने में लोग अब अंगरेज़ी में लिखते हैं. मीने ने यह जो ख़ास ख़ास लिखे हैं. यह ख़ास लिखे हैं.



नया हिन्दू राश्ट्र भाशा हिन्दी का स्वरूप अप्रैल सन् १९११

एक शैली है, काफ़ी मद्ध लेनी है। इस बात को हमें भूलना चाहिये। हम चाहते हैं कि 'उर्दू' में जो विशाल उपयोगी साहित्य पड़ा है, उसको नागरी लिपि में लाया जाय। विशापीठ यह काम शुरू करना चाहती है।

एक बात और है, जो हम महसूस करते हैं, वह यह है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश बंगोरा हिन्दी और उर्दू के वतन हैं, वहाँ के लोग अगर एक मिली जुली शैली पढ़ा करें, जो आमान हो और जिसे जनता समझ सके तो यह देश पर वड़ा ही महमान होगा। प्रजातंत्र तब ही चल सकता है, जब देश की समस्याये ऐसी भाशा में समझाई जाएँ, जिसे लोग समझ सकें। अब हिन्दी प्रचार का काम सब सूत्रों में होगा और वह भी हिन्दी के विकास में हाथ बटाएँगे। अगर उत्तर में एक सगल शैली पढ़ा की गई तो राग हन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार करने में बड़ी सहायता होगी।

माननीय पंडित जी, इन चंद शब्दों में हमने अपने काम की रूपरेखा आपको बताई। इसके लिये आपका समय लिया, इसकी आपसे माफ़ी चाहता हूँ। आप कृपा करके इस बड़े अहम काम में हमें रास्ता बनाएं और फरमाएं कि किस ढंग से इस काम को आगे बढ़ाया जाय।

श्री जगहरलाल जी का भाशन

हिन्दुस्थानी प्रचार के सिलसिले में कई बातें उठनी हैं। हिन्दुस्थानी क्या है? उसका स्वरूप क्या है? और उसका प्रचार कैसे हो? इन बातों में आज काफ़ी बहस उठती है। आपने कहा है कि चूँकि

नया हलद, राश्ट्र बेभाशा हलदी का सुवरूप, अप्रैल सन् '०१  
 एक शैली है काफ़ी मदद लोनी है। इस बात को हमें भूलना चाहिये। हम चाहते हैं कि 'उर्दू' में जो विशाल उपयोगी साहित्य पड़ा है, उसको नागरी लिपि में लाया जाय। विशापीठ यह काम शुरू करना चाहती है।

एक बात और है, जो हम महसूस करते हैं, वह यह है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश बंगोरा हिन्दी और उर्दू के वतन हैं, वहाँ के लोग अगर एक मिली जुली शैली पढ़ा करें, जो आमान हो और जिसे जनता समझ सके तो यह देश पर वड़ा ही महमान होगा। प्रजातंत्र तब ही चल सकता है, जब देश की समस्याये ऐसी भाशा में समझाई जाएँ, जिसे लोग समझ सकें। अब हिन्दी प्रचार का काम सब सूत्रों में होगा और वह भी हिन्दी के विकास में हाथ बटाएँगे। अगर उत्तर में एक सगल शैली पढ़ा की गई तो राग हन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार करने में बड़ी सहायता होगी।

माननीय पंडित जी, इन चंद शब्दों में हमने अपने काम की रूपरेखा आपको बताई। इसके लिये आपका समय लिया, इसकी आपसे माफ़ी चाहता हूँ। आप कृपा करके इस बड़े अहम काम में हमें रास्ता बनाएं और फरमाएं कि किस ढंग से इस काम को आगे बढ़ाया जाय।

श्री जगहरलाल जी का भाशन

हिन्दुस्थानी प्रचार के सिलसिले में कई बातें उठनी हैं। हिन्दुस्थानी क्या है? उसका सुवरूप क्या है? और उसका प्रचार कैसे हो? इन बातों में आज काफ़ी बहस उठती है। आपने कहा है कि चूँकि



नया हिन्दू राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप अप्रैल सन् '५१ दिया. मगर जब 'हिन्दी' का अर्थ संकुचित हो गया. तो उन्होंने राष्ट्र भाषा का नाम हिन्दी से बदल कर हिन्दुस्तानी कर दिया. पर इस काम की बुनियाद. भूमिका और सिद्धांत में किसी तरह का फेर न हुआ.

गुजरात में यह काम उन्होंने गुजरात विधापीठ कायम करके शुरू किया. तब से आज तक हम यह काम अपनी शक्ति के अनुसार करते आए हैं. इसकी तर्कमल में जाकर यहाँ सभा का समय नाना ठीक नहीं.

हमारी विधान सभा ने राजभाषा के बारे में उद्गम राम करके इस सवाल को हल करने में अच्छी मदद पहुँचाई.

हमें इस बात की खुशी है कि बापू ने राष्ट्र भाषा के जो बुनियादी उसूल बनाए थे. उनको ही विधान सभा ने मंजूर किया और सेक्शन ३५ में 'हिन्दुस्तानी' राष्ट्र का जिक्र करके उसको राज भाषा के लिये अपनाया लेकिन नाम 'हिन्दी' रखने में काशी गानन-कहमी और बुद्धि भेद पैदा किया जा रहा है. और तमसी मंजुचिन हिन्दी का प्रचार किया जा रहा है. जो सेक्शन ३५ में बताई हुई 'हिन्दी' के अनुसार नहीं है यह एक बड़ा खतरा है. बापू ने और आपने हमें ठीक ही कहा है कि अंत में राष्ट्रभाषा राष्ट्र के लोग ही बनाएंगे. लेकिन फिर भी पट्टे लिखों के भावों का और प्रचार का असर लोगों पर पड़ता ही है.

राजभाषा के ( हिन्दी ) के विकास में दूसरी प्रान्ती भाषाओं की सहायता के अलावा बर्दू से, जो वास्तव में विशाल हिन्दी की

नया हल्द राष्ट्र बोलाशा हल्दी का सूरूप अभिल सन '५१ दिया. मगर जब 'हल्दी' का अर्थ संकुचित हो गया. तो उन्होंने राष्ट्र बोलाशा का नाम हल्दी से बदल कर हल्दस्तानी कर दिया. पर इस की बुनियाद. भूमिका और सद्धान्त में किसी तरह का फेर न हुआ.

गुजरात में यह काम उन्होंने गुजरात विधापीठ कायम करके शुरू किया. तब से आज तक हम यह काम अपनी शक्ति के अनुसार करते आए हैं. इसकी तर्कमल में जाकर यहाँ सभा का समय नाना ठीक नहीं.

हमारी उद्धान सभा ने राज बोलाशा के बारे में उद्गम राम करके इस सवाल को हल करने में अचि मदद पहुँचाई.

हमें इस बात की खुशी है कि बापू ने राष्ट्र भाषा के जो बुनियादी उसूल बनाए थे. उनको ही उद्धान सभा ने मंजूर किया और सेक्शन ३५ में 'हल्दस्तानी' उद्धान का जिक्र करके उसको राज भाषा के लिये अपनाया लेकिन नाम 'हल्दी' रखने में काशी गानन-कहमी और बुद्धि भेद पैदा किया जा रहा है. और तमसी मंजुचिन हल्दी का प्रचार किया जा रहा है. जो सेक्शन ३५ में बताई हुई 'हल्दी' के अनुसार नहीं है यह एक बड़ा खतरा है. बापू ने और आपने हमें ठीक ही कहा है कि अंत में राष्ट्रभाषा राष्ट्र के लोग ही बनाएंगे. लेकिन फिर भी पट्टे लिखों के भावों का और प्रचार का असर लोगों पर पड़ता ही है.

राज बोलाशा के ( हल्दी के ) वस में दूसरी प्रान्ती भाषाओं की सहायता के अलावा बर्दू से, जो वास्तव में विशाल हल्दी की



پرو و مودت و محبت

شہری مگن بھائی دیسائی نے شہزاد ودیا دتہ احمد آباد کے طرف سے شہری جواہر لال جی سے دارتینا کی بھی رقم جس پر اس ہلدی لکھنؤس کمیٹی کی پتھک مہوں احمد آباد آئیں۔ سب رشتہ بھاشا ہلدی کے کام کرنے والوں اور نیکنے دچرا مہوں دانشدیس لکھنؤ والوں کو ملنے کا موقع دیں اور ان کو رقم دے دی۔

14-00000-101-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-1046-1047-1048-1049-1050-1051-1052-1053-1054-1055-1056-1057-1058-1059-1060-1061-1062-1063-1064-1065-1066-1067-1068-1069-1070-1071-1072-1073-1074-1075-1076-1077-1078-1079-1080-1081-1082-1083-1084-1085-1086-1087-1088-1089-1090-1091-1092-1093-1094-1095-1096-1097-1098-1099-1100-1101-1102-1103-1104-1105-1106-1107-1108-1109-1110-1111-1112-1113-1114-1115-1116-1117-1118-1119-1120-1121-1122-1123-1124-1125-1126-1127-1128-1129-1130-1131-1132-1133-1134-1135-1136-1137-1138-1139-1140-1141-1142-1143-1144-1145-1146-1147-1148-1149-1150-1151-1152-1153-1154-1155-1156-1157-1158-1159-1160-1161-1162-1163-1164-1165-1166-1167-1168-1169-1170-1171-1172-1173-1174-1175-1176-1177-1178-1179-1180-1181-1182-1183-1184-1185-1186-1187-1188-1189-1190-1191-1192-1193-1194-1195-1196-1197-1198-1199-1200-1201-1202-1203-1204-1205-1206-1207-1208-1209-1210-1211-1

[illegible]

三才圖會

آپ کا ہم پر بہت ہی انوکھا ہے کہ آپ کے سر پر پتے ڈھونڈنا  
 اُٹنا بوجھ ہوتے ہوئے بھی آپ نے ہماری باز آئیٹھا سوچنا کرنا اور  
 سے نکالنا یہاں پدھارے۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ آپکو اس کام سے  
 کتنا پرہیز ہے اور اسکو آپ کتنا اہم اور ضروری سمجھتے ہیں۔ بابو  
 نے راشٹر بھاشا کے بارے میں اپنے وچار 'ہند سراج' میں یوکت  
 کئے اور دیکھیں اُپریتا سے واپس آتے ہی انہوں نے راشٹر بھاشا  
 کے وچار کا کام ہمارے یہاں شروع کر دیا اور اپنے آخر سے  
 تک کرتے رہے۔ بابو نے شروع میں راشٹر بھاشا کو ہندی نام

# राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप

श्री मगन भाई देसाई ने गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद को तरफ से श्री जवाहरलाल जी से प्रार्थना की थी कि जब वह कुल हिन्दू काँग्रेस कमेटी का बैठक में अहमदाबाद आएँ, तब राश्ट्र भाषा हिन्दी के काम करने वालों और उसके प्रचार में दिलचस्पी लेने वालों को मिलने का संकेत दे और उनको राह दिखायें।

३१ जनवरी मनु ५:३० प्रा. कं. सा. व. के. ग्रह. सभा

श्री जवाहरलाल जी का स्वागत करने हुए श्री मगन भाई ने कहा—

माननीय जवाहर लाल जी.

आपका हम पर बहुत ही अनुग्रह है कि आपकें सिर पर बड़े कर्माँ का इतना बोझ हानें हुए भी आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली और समय निकाल कर यहाँ पधारे. इस से पता चलता है कि आपको इस काम से कितना प्रेम है और इसका आप कितना अहम और जरूरी समझते हैं. बापू ने राश्ट्र भाशा के बारे में अपने विचार 'हिन्द स्वराज्य' में प्रकट किये और देखिये उनकी भाशा से आपसे आपने राश्ट्र भाशा प्रचार का काम हमारे यहाँ शुरू कर दिया और आपने हमारे काम तक करते रहे.



नया हिन्द तुरकी के गाँव की एक भलक अप्रैल सन् '५१  
हम लोग अन्दर नहीं थे. लेकिन अब हम क्या करें ? मरम्मत करना  
असम्भव है. विलाडिंग को कोई नीब ही बाकी नहीं है. और एक  
दूसरा स्कूल खड़ा करना बड़ा काम है !!

—अनुवादक, मुजीब रिजवी

नया हन्द तुरकी के गाँव की एक जहलक अप्रैल सन् '५१  
हम लोग अन्दर नहीं थे. लेकिन अब हम क्या करें ? मरम्मत करना  
असम्भव है. विलाडिंग की कौन-सी बाकी नहीं है. और एक  
दूसरा स्कूल खड़ा करना बड़ा काम है !!

'नया हन्द' के लेखक

'नया हिन्द' की छमाही वैधी हुई वडिया जिल्दे

जुलाई सन् १९५६ में डिसेम्बर सन् १९५५ तक की .

कमिशन हर जिल्दे की 'मिर्क' में रपया .

नोट—शुरू में आज तक का कुल जिल्दे खरीदने पर एक खर्च  
माफ .

—मैनेजर 'नया हिन्द'

१५० मुद्रा

इलाहाबाद.

नया हन्द की चोखली बन्दगी बन्दगी बन्दगी बन्दगी

जुलाई सन् १९५५ से डिसेम्बर सन् १९५५ तक की .

कमिशन हर जिल्दे की 'मिर्क' में रपया .

नोट—शुरू में आज तक का कुल जिल्दे खरीदने पर एक खर्च  
माफ .

—मैनेजर 'नया हन्द'

१५० मुद्रा

इलाहाबाद.



छै दलिया खाकर आए थे. और मोलह को तेल चुपड़ी गंटी मिली थी. दो लड़कों की माँ बाहर थीं इसलिये वह भुके ही स्कूल आ गए और बाक़ी ने नमक व्याज से पेट भरा था.

अप्रैल आते आते गोदाम खाली होने लगता है. आटा तक खतम हो जाता है. लोग बाग दोनों बरत मिटाई और दलिया खाते हैं. अप्रैल की पहली तारीख को बारह लड़कों ने कुछ भी नहीं खाया था, ग्यारह सूखी रोटी खा कर आप थें और सात को दलिया मिला था. रात को घुघनी के अलावा किसी का कुछ न मिल सका. जब मैं "दलिया" कहता हूँ तो यह न समझिये कि यह कोई अच्छी और शक्ति देने वाली चीज़ है. जो चीज़ यहाँ दलिया कहा जाता है वह सूखी घास को पीस कर बनाया जाता है.

स्कूल का भी अन्त हो गया

पाँच साल पहले स्कूल बना था। लड़कों के घरोंदे और इस स्कूल की बिलडिंग में जरा सा ही अन्तर था. बारिश मिट्टी की दीवारों का बहा ले गई और दरवाजे और खिड़कियाँ जर्मान पर आ रहीं. बड़ी कठिनाई से हम इस घरोंदे में पढ़ाई कर रहे थे.

एक सनीबर को मेरी माँ बीमार हो गई और मैं दो रोज़ के लिये अपने गाँव चला गया। लौट कर देखा कि स्कूल खंडहर हो गया है, किसानों ने मुझे बताया कि पानी ने इसको गिरा दिया। मैंने एक टूटी ईंट उठाई पर हाथ में वह इस तरह धुल गई जैसे कि आटे का खमीर। खुशी इस बात की थी कि स्कूल गिरते समय

چیتا دلایا کہا کہ آئے تھے۔ اور سولہ کو پہل چمپڑی مٹی تھی۔ دو سگور کی مائیں بڑھ تھیں اس لئے وہ بیوے ہی اسکو آگے اور باقی نے نمک پیاز سے پیرت بھرتا تھا۔

اپرین آئے آتے گودام خالی عورتے لکھا ہے آتا تک ختم تو حدانا  
 لوگ دیاگ دینوں وقت مہوئی اور دلیا کتاے تھیں اپرین  
 کی پیسوں تابیع کو بارہ لوگوں نے لپیچ پیس رہیں دھایا پتا سہارا  
 سوکھی دوتی پتا کئے تھے اور سات کو دلیا ملا رہا . رات کو  
 کھلکھلی کے علاوہ کسی کو کچھ رہ مل سدا . جب مہوں دلیا ،  
 کہتا عوں تو یہ نہ سمجھئے ، یہ کوئی اچھی اور شکستی دینے والی  
 چوڑ ہے . چوڑ چوڑ یہاں دلیا کہتا ہے وہ سوکھی ڈپاس کو پھس  
 کو بلایا چتا ہے .

اسکول کا نام ہے البتہ وہ یہاں

پانچ سال پہلے اسکوں بنا تھا۔ بکوں کے گھرنڈے اور اس اسکوں کی بلنگ مہوں ذرا سا ہی اتر تھا بارش مٹی کی دیوار کو ہالے کٹی اور دروازے اور کھڑکیاں زمین پر آ رہیں ہوں گھنڈی سے ہم اس گھرنڈے میں پڑھائی کر رہے تھے۔

ایک سلیپر کو مہربی، منا بھار ہو گئی اور میں دو روز کے لئے  
کسانوں نے مجھے بتایا کہ پانی نے اسکو گرا دیا۔ میں نے ایک  
توتی 'ایقت' تھائی پر ہاتھ میں وہ اسطرح گھل گئی جیسے کہ  
آتے آتے خمیدہ۔ خوشی اس بات کی تھی کہ اسکول گرتے سے



मैंने हिसाब लगाया है कि गरमी में जो ६० की मन्दी लड़के मरते हैं उसकी बजह पेचिश होती है। जैसे ही किसी बच्चे को यह रोग लिपटा फिर बचने को उम्मेद नहीं होती। कुछ भी हो इस सब का बुनियादी कारन भुक्तमरी और शरीबी है।

### बच्चों का खाना

बच्चों की आँखों से जीवन गायब होता है और मुखड़ा पीला। वह दुबले पतले और दृग्गृह्ण होते हैं। बच्चों को मोटा नाजा। मुर्ल और तन्दुहरत होना चाहिये। ऐसे बच्चे कहाँ भिन सकते हैं ? यह बच्चे तो अभी दस साल के भी नहीं हैं और दुखी हैं।

अपने चेलों को घर पर मिलने वाले खाने के बार में मैंने पूछा ताख की। मेरी जाँच के यह नतीजे हैं—दूधर दग्जे में मेरे तीम विद्यार्थी हैं और मैंने उनके खाने के बार में तीन बार जाँच की—अक्नूबर, जनवरी और अप्रैल। हम तग्द मुँफ पना चला कि वह सितम्बर, अक्नूबर, जाड़े और मार्च अप्रैल में क्या खाते हैं। अक्नूबर की ६ तागील को सनीचर के दिन पढ़ाना खनम करके मैंने एक के बाद दूसरे बच्चे से मवाल किया। उम दिन तीम भूँके थे। किसी तग्द का भी खाना खाए बिना स्कृब आए थे। हम ने केवल सूखी रोटी खाई थी। हाँ ११ अक्नूबर को मारे लड़के गोटो खाकर आए थे और ऊपर से उन्होंने तग्दृज भी खाया था

मैंने दूसरी जाँच २० जनवरी को जुमेगत के दिन रान के खाने के बाद की। चार लड़के बिना माँस का शोरबा पी कर आए थे।

निया हल्द तुरकी के गाँव की एक जेहलक अप्रैल सन् '५१

मैंने ने हसनब लकारा है कि तुरमी में जो १० फीसदी लोके मरते हैं उसकी वजह पेचिश होती है। जैसे ही किसी बच्चे को यह रोग लिपटा फिर बचने की उम्मेद नहीं होती। कुछ भी हो इस सब का बुनियादी कारन भुक्तमरी और शरीबी है।

### बच्चों का खाना

बच्चों की आँखों से जीवन गायब होता है और मुखड़ा पीला। वह दुबले पतले और दृग्गृह्ण होते हैं। बच्चों को मोटा नाजा। मुर्ल और तन्दुहरत होना चाहिये। ऐसे बच्चे कहाँ भिन सकते हैं ? यह बच्चे कहाँ भिन सकते हैं ? यह बच्चे तो अभी दस साल के भी नहीं हैं और दुखी हैं।

अपने जेहलकों को गेह, पुर मल्ले वाले खाने के बार में मैंने पूछा ताख की। मेरी जाँच के ये नतीजे हैं—दूसरे दग्जे में मेरे तीम विद्यार्थी हैं और मैंने उनके खाने के बार में तीन बार जाँच की—अक्नूबर, जनवरी और मार्च अप्रैल। हम तग्द मुँफ पना चला कि वह सितम्बर, अक्नूबर, जाड़े और मार्च अप्रैल में क्या खाते हैं। अक्नूबर की १ बारिख को सफुज्ज ने दान देना। हत्ते क के मैंने एक के बाद दूसरे बच्चे से मवाल किया। उम दिन तीम भूँके थे। हम ने केवल सूखी रोटी खाई थी। हाँ ११ अक्नूबर को मारे लड़के गोटो खाकर आए थे और ऊपर से उन्होंने तग्दृज भी खाया था

मैंने दूसरी जाँच २० जनवरी को जुमेगत के दिन रान के खाने के बाद की। चार लोके बला माँस का शोरबा पी कर आए थे।



नया हिन्द तुरकी के गाँव की एक भलक अग्रेल सन् '५१

### जन्म और मरण

अपने तजरचे और उन खबरां से जो गाँव के बड़े वृद्धों से मैं इकट्ठा कर सका, मैंने जन्म और मरण का एक द्योग नैयार किया. (न) गाँव का भी जहाँ मैं पढ़ाता हूँ और (द) गाँव का भी जहाँ मैं पैदा हुआ. मेरी लिस्ट में हर घर के बड़े वृद्ध का नाम भी लिखा है. पर नाम जाहिर करने में कोई त्रुटि नहीं है.

(द) गाँव में ३८० घर हैं. २२६ वरूचे चार साल में पैदा हुए और चर्मी बीच में १३४ मर गए. इस तरह गाँव की आबादी चार साल में ८० की सदी बढ़ गई. ज्ञानशास्त्र वरूचे एक साल को उमर पूरी करते करते मर गए, बहुत से साँहर में ही चल बसे. वाकी जन्म के पहले महीने में ही खतम हो गए सारी मौतों का कारन था वरूचों की ठीक से देख भाल न होना.

(न) गाँव में १३५ घर और ७०८ बासी हैं. चार साल में ६० घरों में १६३ वरूचे पैदा हुए और उनमें से ६७ मर गये. इस के बलावा इसी बीच ४० नौजवान भी मर गए. दूसरे शब्दों में इस गाँव में १६७ पैदा हुए और १०७ मर गए. इस तरह ४६ की नदी आबादी इस गाँव की बढ़ गई. तुरकी के गाँव में पैदा होने की गिनती बहुत तेज है. अगर महामारी न फैले तो बुरी से बुरी हालत में भी कुछ न कुछ आबादी बढ़ती ही है.

गाँव के लोग वरूचों की देख भाल के बारे में खग भी नहीं जानते. इस बारे में अगर वह कुछ जानकारी रखते भी हैं तो हठिन जीवन उन्हें समय नहीं देता कि उस जानकारी का अच्छा उपयोग कर सकें.

नया हफ्द रकी के गाँव की एक जेहाक अग्रेल सन् '०१

### जन्म और मरण

अपने तजरचे और उन खबरां से जो गाँव के बड़े वरूचों से मैं इकट्ठा कर सका, मैंने जन्म और मरण का एक द्योग नैयार किया. (न) गाँव का भी जहाँ मैं पढ़ाता हूँ और (द) गाँव का भी जहाँ मैं पैदा हुआ. मेरी लिस्ट में हर घर के बड़े वृद्ध का नाम भी लिखा है. पर नाम जाहिर करने में कोई त्रुटि नहीं है.

(द) गाँव में ३८० घर हैं. २२६ वरूचे चार साल में पैदा हुए और चर्मी बीच में १३४ मर गए. इस तरह गाँव की आबादी चार साल में ८० की सदी बढ़ गई. ज्ञानशास्त्र वरूचे एक साल को उमर पूरी करते करते मर गए, बहुत से साँहर में ही चल बसे. वाकी जन्म के पहले महीने में ही खतम हो गए सारी मौतों का कारन था वरूचों की ठीक से देख भाल न होना.

(न) गाँव में १३५ घर और ७०८ बासी हैं. चार साल में ६० घरों में १६३ वरूचे पैदा हुए और उनमें से ६७ मर गये. इस के बलावा इसी बीच ४० नौजवान भी मर गए. दूसरे शब्दों में इस गाँव की पैदा होने की गिनती बहुत तेज है. अगर महामारी न फैले तो बुरी से बुरी हालत में भी कुछ न कुछ आबादी बढ़ती ही है.

गाँव के लोग वरूचों की देख भाल के बारे में खग भी नहीं जानते. इस बारे में अगर वह कुछ जानकारी रखते भी हैं तो हठिन जीवन उन्हें समय नहीं देता कि उस जानकारी का अच्छा उपयोग कर सकें.



नया हिन्दू तुरकी के गाँव की एक भलक ५१ सन् 'अप्रैल सन्

गाँव में ऐसा रिवाज है कि औरतें सात साल से ऊपर के मर्द के लिये हमेशा रास्ता छोड़ देती हैं। अगर मर्द सड़क पर जा रहा है तो औरतें पटरों पर रुक जाती हैं और उसको गुजर जाने देती हैं। हर मर्द यह देखता रहता है कि कोई औरत उससे आगे निकलने की कोशिश न करे, कभी कभी अगर भूल चूक से कोई औरत आगे निकल जाती है तो उसकी कनपटों पर एक मुक्का पड़ना है यही वजह है कि औरतें मर्दों के पीछे पीछे दासियों की तरह चलती हैं, यहाँ तक कि अगर कोई औरत भारी बोझ लिये जा रही हो और उससे कह दिया जाय कि इन्नजाग न करो, आगे बढ़ जाओ तो भी वह ऐसा करने को हिस्मत नहीं करेगी।

एक बार मेरा बचा हुसैन और उसकी पत्नी आयशा करीब के नगर में डाक्टर के पास गए, डाक्टर ने बची से पूछा— 'नफ्स' कहौ है, कहाँ डूँ हो रहा है?' पर मिवाय मर दिलाने के चर्ची डाक्टर को कोई जवाब न दे सकी तब बचा ने डाक्टर को ग्रीमारी बतलाई, वहाँ से निकलने के बाद मेरे बचा ने माँचा—चानीस साल में पहली बार शहर आए हैं, कुछ न कुछ हलुबा जहर पत्नी के लिये खरीदना चाहिये, और वह दोनों एक दूकान पर गए, बचा आगे थें और उनके पीछे चर्ची, थोड़ी देर बाद बचा पीछे मुड़े और वहाँ के बचा के पीछे आगे में खड़ी है, उसका मँह टुंका है और वह डग में काँप रही है, बचा ने पूछा कि पीछे क्यों रह गई उस ने जवाब दिया—'मैं मर्दों के आगे कैसे जा सकती हूँ'

नया हिन्दू तुरकी के गाँव की एक भलक ५१ सन् 'अप्रैल सन्  
गाँव में ऐसा रिवाज है कि औरतें सात साल से ऊपर के मर्द के लिये हमेशा रास्ता छोड़ देती हैं। अगर मर्द सड़क पर जा रहा है तो औरतें पटरों पर रुक जाती हैं और उसको गुजर जाने देती हैं। हर मर्द यह देखता रहता है कि कोई औरत उससे आगे निकलने की कोशिश न करे, कभी कभी अगर भूल चूक से कोई औरत आगे निकल जाती है तो उसकी कनपटों पर एक मुक्का पड़ना है यही वजह है कि औरतें मर्दों के पीछे पीछे दासियों की तरह चलती हैं, यहाँ तक कि अगर कोई औरत भारी बोझ लिये जा रही हो और उससे कह दिया जाय कि इन्नजाग न करो, आगे बढ़ जाओ तो भी वह ऐसा करने को हिस्मत नहीं करेगी।

एक बार मेरा बचा हुसैन, 'नफ्स' यन्त्र 'नफ्स' के नगर में डाक्टर के पास गये, डाक्टर ने बची से पूछा— 'नफ्स' कहाँ है, कहाँ डूँ हो रहा है?' पर मिवाय मर दिलाने के चर्ची डाक्टर को कोई जवाब न दे सकी तब बचा ने डाक्टर को ग्रीमारी बतलाई, वहाँ से निकलने के बाद मेरे बचा ने माँचा—चानीस साल में पहली बार शहर आए हैं, कुछ न कुछ हलुबा जहर पत्नी के लिये खरीदना चाहिये, और वह दोनों एक दूकान पर गए, बचा आगे थें और उनके पीछे चर्ची, थोड़ी देर बाद बचा पीछे मुड़े और वहाँ के बचा के पीछे आगे में खड़ी है, उसका मँह टुंका है और वह डग में काँप रही है, बचा ने पूछा कि पीछे क्यों रह गई उस ने जवाब दिया—'मैं मर्दों के आगे कैसे जा सकती हूँ'



### औरतों की दुर्दशा

बच्चे अपने मां बाप का आदर करते हैं पर औरतें उनसे कहीं अधिक अपने पति का आदर करती हैं और उससे डरती हैं। ऐसा भी होता है कि शादी के थोड़े दिनों तक पति पत्नी से प्रेम जताता है, पर उनके बाद औरत पति की शमी बन जाती है, उसे वह सब कुछ करना पड़ता है जो पति कहता है। मर्द पेट के बल लोटा रहता है और हुकम चलाना है—'यह ला, वह कर, औरत को जबाब में एक शब्द भी कहने का अधिकार नहीं है। हर औरत उतनी ही पाक और गुनबनी मानी जाती है जितना कि वह अपने पति से दूरती और उसका आदर करना है। पति पत्नी को शालीन संभल सकता है, तिरस्कार कर सकता है, भाग पट सकता है, उसको आस में नहला सकता है, पर पत्नी बदने में मर्द भी नहीं खोल सकती उसे जैसे दिन बीतते जाते हैं औरत घृणी होती जाती है और वह उसको इनसान कहलाने का भी अधिकार नहीं रह जाता। औरतों को बिना मर्द के इधर उधर जाने की मनाशा है, वह अपने घृण्ट का एक कोना दंत से दबाए रहती है और केवल माने मनस मुह खोल सकती हैं। खाना और न मर्दों के मंग नहीं खानी और न वान ही करती है। एक नौजवान लड़की और खानसर नई नवेली दुल्हन को अधिकार नहीं है कि वह कियो मर्द ने इशारे में भी वान कर सके चाहे वह मर्द लड़की के बड़े बड़े या नांदार ही क्यों न हो। अगर यह कहावत सच है कि इस लोक में कहे शब्दों का हिसाब हमें परलोक में देना पड़ेगा तो तुरकी की किसान स्त्री बहुत भाग्यवान है!

बच्चे अपने मां बाप का आदर करने में घर भर खुश हैं से कहें। अहक अपे पत्नी का आदर करने में 'स' से दूर हैं। ऐसा पति होता है कि शादी के सप्ताह दोन तक पत्नी पत्नी से प्रेम करता है। पर 'स' के बाद औरत पत्नी की दुस्मन बन जाती है। 'स' के बाद कच्चे कोरा होता है जो पत्नी को 'स' के बाद बचल से लो 'स' कहता है—'यह ला, वह कर, औरत को जबाब में एक शब्द भी कहने का अधिकार नहीं है। हर औरत उतनी ही पाक और गुनबनी मानी जाती है जितना कि वह अपने पति से दूरती और उसका आदर करना है। पति पत्नी को शालीन संभल सकता है, तिरस्कार कर सकता है, भाग पट सकता है, उसको आस में नहला सकता है, पर पत्नी बदने में मर्द भी नहीं खोल सकती उसे जैसे दिन बीतते जाते हैं औरत घृणी होती जाती है और वह उसको इनसान कहलाने का भी अधिकार नहीं रह जाता। औरतों को बिना मर्द के इधर उधर जाने की मनाशा है, वह अपने घृण्ट का एक कोना दंत से दबाए रहती है और केवल माने मनस मुह खोल सकती हैं। खाना और न मर्दों के मंग नहीं खानी और न वान ही करती है। एक नौजवान लड़की और खानसर नई नवेली दुल्हन को अधिकार नहीं है कि वह कियो मर्द ने इशारे में भी वान कर सके चाहे वह मर्द लड़की के बड़े बड़े या नांदार ही क्यों न हो। अगर यह कहावत सच है कि इस लोक में कहे शब्दों का हिसाब हमें परलोक में देना पड़ेगा तो तुरकी की किसान स्त्री बहुत भाग्यवान है!



नया हिन्द तुरकी के गाँव की एक मालक अग्रेल सन् '५१  
काम करती रहती है, मैंने एक किसान से पूछा—“तुम एक दिन में  
कितना जोत सकते हो?”

“कभी कभी हम पंद्रह कदम” हमने जवाब दिया जन्मान कट्टर  
की है, यहाँ की ज़मीन पथगली है, हमारे जोतना बहुत ही  
कठिन है.

मेरी माँ

रोड़े के दिन जा गर, मेरी माँ रोड़े भी गये हैं हैं  
सब के साथ काम भी करती है, बहुत दिनों तक जितना म्याना पाना  
गुज़र करने करने वह बहुत दुखती है, रोड़े, मुझे पता था हम रोड़े  
कर दुगना दुख होता था.

हालाँ कि ज्यादातर किसानों ने अब की रोड़े रक्खे थे फिर भी  
इस साल थोड़ा सा ही तुकमान हुआ केवल एक सौ जवान उपवान  
से भर गया, बच्चों की जान डूमे है, जब कि माँना गिरा गेट कट  
रहे थे तो मौत इधर बच्चों को काट रही थी, हर गेट रोड़े न कोड़े  
एक साल से कम उमर का बच्चा गाँव में मरना था, पहले तो हमने  
में बाईस भर गए, जब मैंने अपनी माँ से कुछ भी पूछा तो उसने  
जवाब दिया—

“मुझ में एक शब्द कहने की भी शक्ति नहीं है, वह दिन भर  
भगवान के नाम का जाप करती है, मैं जब उससे पूछता हूँ—“यह  
सब तो ठीक है माँ, पर तुम दिन भर जाप करने करने थकती नहीं  
हो?” वह जवाब देती है—“अगर मैं प्रार्थना न करूँगी तो इस दुख  
को भेल न सकूँगी.”

नया हिन्द तुरकी के गाँव की एक जेहल अग्रेल सन् '०१  
काम करती रहती है, मैंने एक किसान से पूछा—“तुम एक दिन  
में कितना जोत सकते हो?”

“कभी कभी हम पंद्रह कदम” हमने जवाब दिया है, हाल  
की है, यहाँ की ज़मीन पथगली है, हमारे जोतना बहुत ही  
कठिन है.

मेरी माँ

रोड़े के दिन जा गर, मेरी माँ रोड़े भी गये हैं हैं  
सब के साथ काम भी करती है, बहुत दिनों तक जितना म्याना पाना  
गुज़र करने करने वह बहुत दुखती है, रोड़े, मुझे पता था हम रोड़े  
कर दुगना दुख होता था.

हालाँ कि ज्यादातर किसानों ने अब की रोड़े रक्खे थे फिर भी  
इस साल थोड़ा सा ही तुकमान हुआ केवल एक सौ जवान उपवान  
से भर गया, बच्चों की जान डूमे है, जब कि माँना गिरा गेट कट  
रहे थे तो मौत इधर बच्चों को काट रही थी, हर गेट रोड़े न कोड़े  
एक साल से कम उमर का बच्चा गाँव में मरना था, पहले तो हमने  
में बाईस भर गए, जब मैंने अपनी माँ से कुछ भी पूछा तो उसने  
जवाब दिया—

“मुझ में एक शब्द कहने की भी शक्ति नहीं है, वह दिन भर  
भगवान के नाम का जाप करती है, मैं जब उससे पूछता हूँ—“यह  
सब तो ठीक है माँ, पर तुम दिन भर जाप करने करने थकती नहीं  
हो?” वह जवाब देती है—“अगर मैं प्रार्थना न करूँगी तो इस दुख  
को भेल न सकूँगी.”







या हिन्द तुरकी के गाँव की एक झलक अप्रैल सन् '५१

पाता था और हलक उठाता था. बाद में मुझे मालूम हुआ कि यह गाँव इस बात पर हलक उठाने के लिये मजबूर किये गए थे कि वह पड़ोस के गाँव के किसानों में लड़ेंगे इसलिये कि वह उनकी जमीन उन से छीन लें. यह है हमारी जहालत जो हमें आपस में दुश्मन बनाती है. हम तरह अनानोलिया में जर्मन की समस्या हल की जाती है.

### गोटी

गाँव में जितना अपनी गोटी कमाना कठिन है उनका ही उसका सँकना और बनना ही उसका खाना भी कठिन है. यहाँ काँटे तंग के बूँट नहीं होते. किसान जमीन के अन्दर एक तरफ़ की भट्टी बनाने के गाँवों में खाई जाने वाली गोटी और शहर में ग्राइज जाने वाली गोटी में काँडे मेल मन मौलिये 'गाँव वाली गोटी खाने है और वह भी अकसर इतनी कच्ची होती है कि हजम करना भी मुश्किल होता है. यह गोटी शहर के समान चमक और तपनों के समान सख्त होती है और बिना पानी में भिगो नही खाई जा सकती. काश लोग जान सकें कि गाँव में गोटी पकाना कितना कठिन है कि अकसर सोचना है कि गोटी पकाने पकाने हमारे गाँवों बहाने के उमर आधी हो जाती है. घर में किसान मित्रसः अकसर के हस्तों गोटी पकाने में विनाने हैं. हम तरह एकट्ठी पकी हुई गोटी को पहले पानी में भिगाते है और फिर खाने है पाल पौन के गाँवों में कुछ किसान ताँजे गोटी भाँ खाने है. वह लोग हम से अधिक बार गोठियाँ पकाने है. अगर आँगने खराब गोठिया बनती है तो

--- नहि मन्दी मलौन करने है और उनको पाँटने है.

बहा हलद तुरकी ने गाँव की एक जेहलक अप्रैल सन् '५१  
आता था और हलक उठाता था. बाद में मुझे मालूम हुआ कि यह गाँव इस बात पर हलक उठाने के लिये मजबूर किये गये थे कि वे पड़ोस के किसानों से लड़ेंगे इसलिये कि वे उनकी जमीन उन से छीन लें. यह है हमारी जहालत जो हमें आपस में दुश्मन बनाती है. हम तरह अनानोलिया में जर्मन की समस्या हल की जाती है.

### गोटी

गाँव में जितना अपनी गोटी कमाना कठिन है उनका ही उसका सँकना और बनना ही उसका खाना भी कठिन है. यहाँ काँटे तंग के बूँट नहीं होते. किसान जमीन के अन्दर एक तरफ़ की भट्टी बनाने के गाँवों में खाई जाने वाली गोटी और शहर में ग्राइज जाने वाली गोटी में काँडे मेल मन मौलिये 'गाँव वाली गोटी खाने है और वह भी अकसर इतनी कच्ची होती है कि हजम करना भी मुश्किल होता है. यह गोटी शहर के समान चमक और तपनों के समान सख्त होती है और बिना पानी में भिगो नही खाई जा सकती. काश लोग जान सकें कि गाँव में गोटी पकाना कितना कठिन है कि अकसर सोचना है कि गोटी पकाने पकाने हमारे गाँवों बहाने के उमर आधी हो जाती है. घर में किसान मित्रसः अकसर के हस्तों गोटी पकाने में विनाने हैं. हम तरह एकट्ठी पकी हुई गोटी को पहले पानी में भिगाते है और फिर खाने है पाल पौन के गाँवों में कुछ किसान ताँजे गोटी भाँ खाने है. वह लोग हम से अधिक बार गोठियाँ पकाने है. अगर आँगने खराब गोठिया बनती है तो

पूँतते हैं.



नया हिन्द      तुरकी के गाँव की एक झलक      अप्रैल सन् '५१

था. और दूसरों का अनुमान तक न था कि शहद क्या होता है. उस लड़के ने भी किसी पास के गाँव में देखा था.

तरकारियाँ हमार गाँव में उगाई जाती है. मई में बोई जाती है और अगस्त में इकट्ठा की जाती है. आम तौर से किसान लोको और चुकन्दर उगाते हैं. कई कई महीने वह लोका और चुकन्दर खाते हैं क्योंकि और कोई दूसरी चीज खाने की नहीं होती. जाड़े में घेंबनी खाते हैं. बहुत से घरों में कुछ भी नहीं होता और तीन चार महीने नई फसल खड़ी होने तक वह लगभग बिना खाने ही गुजारा करते हैं. औरतें और लड़कियाँ घास इकट्ठा करके उबाल बना कर खाती हैं. लगभग हर घर में एक पतली डबला करती है. लेकिन खाने की जगह उसमें कुछ नई होता है. यही वह रस है जो लोगों को दुबला और पोला करता रहता है. यह सच है कि कुछ लोग आलू और फलियाँ भी खाते हैं. पर ऐसे इने गिने हैं. पूरे गाँव में शायद पाँच या ज्यादा से ज्यादा नस. मेरे पड़ोसी के दो लड़के हैं. मार्च अप्रैल में वह घास खाते हैं और जाड़े में मूखी रोटी. इस पड़ोसी को पूरी गृहस्थी एक पुराना बारा, एक पुरानी चटाई और कुछ भेड़ की खालें हैं. जाड़ा हो या गरमी, माँ और बच्चे एक चटाई पर लेट जाते हैं फिर ऊपर से अपने को भेड़ की खालों से ढक लेते हैं. खुदा इन की मदद करे और सत्र दे.

### जमीन की समस्या

कुछ दिन पहले मैं एक गाँव के नम्बरदार के घर गया. वहाँ एक अनोखा नाटक खेला जा रहा था. एक के बाद दूसरा किसान

नया हलद      तुरकी के गाँव की एक जगह      अप्रैल सन् '५१

नया और दूसरों को अनुमान तक न था कि शहद क्या होता है. उस लड़के ने भी किसी पास के गाँव में देखा था.

तुरकारियाँ हमार गाँव में उगाई जाती हैं. मई में बोई जाती है और अगस्त में इकट्ठा की जाती हैं. आम तौर से किसान लोका और चुकन्दर उगाते हैं. कई कई महीने वह लोका और चुकन्दर खाते हैं क्योंकि और कोई दूसरी चीज खाने की नहीं होती. जाड़े में घेंबनी खाते हैं. बहुत से घरों में कुछ भी नहीं होता और तीन चार महीने नई फसल खड़ी होने तक वह लगभग बिना खाने ही गुजारा करते हैं. औरतें और लड़कियाँ घास इकट्ठा करके उबाल बना कर खाती हैं. लेकिन खाने की जगह उसमें कुछ नई होता है. यही वह रस है जो लोगों को दुबला और पोला करता रहता है. यह सच है कि कुछ लोग आलू और फलियाँ भी खाते हैं. पर ऐसे इने गिने हैं. पूरे गाँव में शायद पाँच या ज्यादा से ज्यादा नस. मेरे पड़ोसी के दो लड़के हैं. मार्च अप्रैल में वह घास खाते हैं और जाड़े में मूखी रोटी. इस पड़ोसी को पूरी गृहस्थी एक पुराना बारा, एक पुरानी चटाई और कुछ भेड़ की खालें हैं. जाड़ा हो या गरमी, माँ और बच्चे एक चटाई पर लेट जाते हैं फिर ऊपर से अपने को भेड़ की खालों से ढक लेते हैं. खुदा इन की मदद करे और सत्र दे.

### जमीन की समस्या

कुछ दिन पहले मैं एक गाँव के नम्बरदार के घर गया. वहाँ एक अनोखा नाटक खेला जा रहा था. एक के बाद दूसरा किसान



१५. हिन्द  
 तुरकी के गाँव की एक मलक  
 अग्रैल सन् '५१

हमने किताब और कापियाँ फाड़ कर जलाईं ताकि किसी सूत से अप्रैल तक ठेल सकें. नौजवानों के लिये मरदों के तना मुशकिल होता है और बच्चे तो मर ही जाते हैं. एक साल मे कम उमर का कोई बच्चा गाँव में बाँझों नहीं बचा. सब के सब मर गए. मरती और महासारी इन छोटे चूहों को हड़प कर गई.

**खाना**

खाना हमारे घरों में बिट्टा मिठा की खोज न कीजिये. दूकानों में न हम खरीदते हैं और न नाका गेटों परकाते हैं. जो कुछ भी हम भितम्बर अकतूवर में इकट्ठा करते हैं वही जाड़े भर खाते हैं. जिस तरह हमारा जीवन निकम्मा है उसी तरह हमारी उड़ान बहुत कम और साधन भी बहुत थोड़े हैं. यहाँ न क कि चाय और चावल हमारे लिये भोग विलास की चीजें हैं. एक ऐसी घटना है जिसे मैं कभी न भूल सकूँगा--

सकूँ।—  
 दूर जे की किताबों में हम यह वाक्य पढ़ने हैं—“पिता जी, मुझे कुछ शहद खा दीं जाजिये,” मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि शहद क्या होता है ? छप्पन लड़कों में से केवल एक ने कभी शहद देखा

( PPO )

5

ہمارے گھروں میں چٹھا مٹھا کی کمیوج نہ کھوتے شو"۔ وہ۔  
 نے نہ ہم خریدتے ہیں اور نہ کوئی بکاتے ہیں کہ لہجہ نہی  
 ہم ستمبر اکڑوں میں اکٹھا کرتے تھے وہی حارے نہ کہتے تھے۔  
 حسن طوح ہمارا حیدر کما ہے 'سی طوح ہمارے زن بہت کم ہے،  
 سالاروں بھی بہت تہڑے ہیں۔ یہاں تک کہ چائے اور چائے ہمارے  
 لگتے بھوک داس کی چھوڑیں ہیں۔ ایک ایسی گھنڈا ہے جسے

درجے کی کتابوں میں ہم بک و ایڈیٹنگ نہیں دیکھا جس  
مکتبہ کتبہ شہد خرید دیدیئے . میں نے انکے ڈیڑھ سو سے پوچھا  
کہ شہد کیا ہوتا ہے؟ چہن لاکھ سو سے کہیں ایک فی کسہ شہد دیکھا

ہم نے کتاب اور کاپیاں بہارِ یار کو چٹانیں ناکہ کسی صورت سے اُپر تک پہنچ سکیں۔ پودھانہ کے لئے ساری جھونپا مشعل ہوتا ہے اور بچے تو مر ہی جاتے ہیں ایک سال سے کم عمر کا کوئی بچہ گاؤں میں باقی نہیں بچا۔ سب کے سب مر گئے۔ سردی اور مہما ماری ان چھوٹے چوہوں کو چپ کی گئی۔

ہمارے گھروں میں چٹیا مٹھائی کھوج نہ آسکتی تھی۔  
 نے نہ ہم خریدتے ہیں اور نہ کوئی بکاتے ہیں جو لچبہ بھی  
 ہم ستمبر، اکتوبر میں اگتا کرتے تھے وہی حارے نہ کرتے تھے۔  
 حسی طرح ہمارا حیوان کما ہے 'سی طرح ہمارے بڑے بہت کم اور،  
 سالانہ بھی بہت تہیز ہے۔ یہاں تک کہ جانے 'ور چار' ہمارے  
 لئے بھوک والے کی چھوڑ دیں۔ ایک ایسی گھنٹا ہے جسے

درجے کی کتابوں میں ہم بک و ایڈیٹنگ نہیں دیکھا جس  
معتدبہ کچھ شہد خرید دیدیئے . میں نے انکے ڈیڑھ سو روپے سے پوچھا  
کہ شہد کیا ہوتا ہے؟ چہن لاکوں روپے سے کہیں ایک نے کبھی شہد دیکھا!



नया हिन्द तुर्की के गाँव की एक भालक अप्रैल सन् '५१

कुछ खरीदती भी है तो पाँच दस साज में एक चार और वह भी बहुत घटिया किस्म का कपड़ा. यहाँ के लोग पूरी आर्मीन के कपड़े नहीं पहनते केवल गंजी और पाजामे में काम चलाने हैं. खड़ाऊ में पैर की रक्षा करने हैं. कम ऐसे होंगे जिनके पास चमड़े के जूते हैं. अधिकतर लोग जाड़े में खड़ाऊ और गरमी में भेंड़ की खाल की खनगरी पहनते हैं. मौजा तो एक नेमन है 'लोग मुशकिल में ही जाड़े में बाहर निकलते हैं बाहर जाने के लिये जगह ही कौनसी है. इसलिये वह खड़ाऊ पहनकर चलते फिरते हैं.

औरतों के पास और भी कपड़े की कमी है वह मर्दों से अधिक सरदी खाती हैं. उनको जाड़े में और अधिक काम करना पड़ना है. वह खड़ी खेती की देख भाल करती हैं, पानी भरती है और करीब करीब सारे ही कामों की जिम्मेदारी उनके कंधों पर होती है. आदमी घर में कपड़े में लिपटे कांपा करते हैं. कहा जाना है कि गोबर जलाना बेवकूफी है क्योंकि गोबर की ज़रूरत खेतों में ग्याड़ के लिये होती है. बहुत से अखबार भी इस बारे में लिखते रहते हैं. पर ऐसे उपदेशकों को यह नहीं मालूम कि गोबर भी हमारे पास बहुत कम है. किसान अगर गोबर न जलाए तो वह अपने को गरम कैसे रखे ! क्या अपने पापों का कूड़ा सुलगा कर ? कितने किसान ऐसे हैं जिन्होंने लकड़ी का चैला या कोयला देखा भी है ! ईंधन की कमी किसान के वास्ते एक मुसीबत है !

मेरे स्कूल में पचास साठ विद्यार्थी हैं. किसी तरह फरबरी के

सिया हल्द तुरी के लॉस की एक जंचक अप्रैल सन् '१०

कच्चे खरीदती होती है वो पाँच दस साज में एक बार और वो भी बहुत कूँटिया قسم का कड़ा. पिपल के लोब नुकी अस्तिन के कटोरे नहीं पहनते कुलों नफिजी और नुदमे से नुह चले गये. कहराव से पैदल की रक्षा करते हैं. कम ऐसे होंगे जिनके पास चमड़े के जूते हैं. अधिकतर लोग जाड़े में खड़ाऊ और गरमी में भेंड़ की खाल की खनगरी पहनते हैं. मौजा तो एक नेमन है 'लोग मुशकिल में ही जाड़े में बाहर निकलते हैं बाहर जाने के लिये जगह ही कौनसी है. इसलिये वह खड़ाऊ पहनकर चलते फिरते हैं.

औरतों के पास और भी कपड़े की कमी है वो मर्दों से अधिक सरदी खाती हैं. उनको जाड़े में और अधिक काम करना पड़ना है. वह खड़ी खेती की देख भाल करती हैं, पानी भरती है और करीब करीब सारे ही कामों की जिम्मेदारी उनके कंधों पर होती है. आदमी घर में कपड़े में लिपटे कांपा करते हैं. कहा जाना है कि गोबर जलाना बेवकूफी है क्योंकि गोबर की ज़रूरत खेतों में ग्याड़ के लिये होती है. बहुत से अखबार भी इस बारे में लिखते रहते हैं. पर ऐसे उपदेशकों को यह नहीं मालूम कि गोबर भी हमारे पास बहुत कम है. किसान अगर गोबर न जलाए तो वह अपने को गरम कैसे रखे ! क्या अपने पापों का कूड़ा सुलगा कर ? कितने किसान ऐसे हैं जिन्होंने लकड़ी का चैला या कोयला देखा भी है ! ईंधन की कमी किसान के वास्ते एक मुसीबत है !

मेरे स्कूल में पचास साठ विद्यार्थी हैं. किसी तरह फरबरी के



## तुरकी के गाँव की एक झलक

( भाई महमूद सकल )

[ महमूद सकल बीच अनानोलिया के एक गाँव में मास्टर है। बीस बरस की उमर में हो आस पास की रागीची ने उसके दिल पर असर किया। कलम ने उसके भावों को किताब का रूप दे दिया। किताब का नाम है "मेरा गाँव"। किताब के छपने ही महमूद दुनिया में मशहूर होगया। सरकार को डर पैदा हुआ और वेचारा अदालत के कटहरे में ला खड़ा किया गया। लेकिन अदालत ने महमूद को निर्दोश ठहरा कर छोड़ दिया। सरकार ने उसको शहर में मास्टर बनाने का लालच दिया उसने स्वीकार नहीं किया और यथोक्त गाँव में मास्टर है, दूसरी किताब जो महमूद लिखने में लगा हुआ है उसका नाम 'तुम्हारे नगर' ... है ]

—अनुवादक—

लोग कहते हैं कि पूर्वी अनानोलिया को हालत बहन खात्र है। पर हम तो बीच अनानोलिया में रहते हैं। अपना आँगो से मैं यहाँ की मुसीबतों को देखता हूँ और सोच कर काँप उठता हूँ क्या पूर्वी अनानोलिया वालों का जीवन मजबूत हम में भी बदनर है ? जाड़े से बचने के लिये हमारे पास न धर है और न कपड़ा, भूक को आग बुझाने का खाना नहीं, ईंधन की भी कमी है। पानी में सरदी का कौन मुकाबला कर सकता है ? यहाँ की जनता पहनने को

## तुर्की के गाँव की एक झलक

( भाई महमूद सकल )

[ महमूद सकल बीच अनातोलिया के एक गाँव में मास्टर है। बीस बरस की उमर में हो आस पास की रागीची ने उसके दिल पर असर किया। कलम ने उसके भावों को किताब का रूप दे दिया। किताब का नाम है "मेरा गाँव"। किताब के छपने ही महमूद दुनिया में मशहूर होगया। सरकार को डर पैदा हुआ और वेचारा अदालत के कटहरे में ला खड़ा किया गया। लेकिन अदालत ने महमूद को निर्दोश ठहरा कर छोड़ दिया। सरकार ने उसको शहर में मास्टर बनाने का लालच दिया उसने स्वीकार नहीं किया और यथोक्त गाँव में मास्टर है, दूसरी किताब जो महमूद लिखने में लगा हुआ है उसका नाम 'तुम्हारे नगर' ... है ]

—अनुवादक—

लोग कहते हैं कि पूर्वी अनातोलिया की हालत बहन खात्र है। पर हम तो बीच अनातोलिया में रहते हैं। अपना आँगो से मैं यहाँ की मुसीबतों को देखता हूँ और सोच कर काँप उठता हूँ क्या पूर्वी अनातोलिया वालों का जीवन मजबूत हम में भी बदनर है ? जाड़े से बचने के लिये हमारे पास न धर है और न कपड़ा, भूक को आग बुझाने का खाना नहीं, ईंधन की भी कमी है। पानी में सरदी का कौन मुकाबला कर सकता है ? यहाँ की जनता पहनने को



वह अल्ला एक सभी का है, पर नाम हैं उसके जुदा जुदा भगवान कहीं यबदान कहीं. वह एक ही पावनहारा है.

जो हिन्द का रहने वाला है. वह मुस्लिम हो या ईसाई वह हिन्दू है और हिन्दी है, यह जग ने सदा पुकारा है.

इनसान हो तुम इनसान बनो, और एका से भारत में रहो इस दुई का परदा बाक करो, फिर जावन में उजियारा है.

वे अल्ले एक सभी का है, पर नाम हैं उस के जुदा जुदा भगवान कहीं यबदान कहीं. वे एक ही पालन हारा है.

जो हिन्द का रहने वाला है वे मुस्लिम हो या ईसाई वे हिन्दू है और हिन्दी है वे सदा पुकारा है.

इनसान हो तुम इनसान बनो, और एका से भारत में रहो इस दुई का परदा चाक करो, फिर जवोन में उजियारा है.

हिन्दी, उर्दू. अंगरेजी में

अच्छी, खरती, और साफ़ छपाई के लिये

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिये.

बाहर का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ किया जाता है.

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४५, सुट्टीगंज,

इलाहाबाद.

हिन्दी. उर्दू. अंगरेजी में

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिये.

‘नया हिन्द प्रेस’

बाहर का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ किया जाता है.

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४५, सुट्टीगंज,

इलाहाबाद.



## “एकता का नारा”

( भाई हाकिम अताउल्ला ‘एकता’ )

हम हिन्दू के रहने वाले हैं, जयहिन्दू हमारा नारा है,  
हम नाब के आपने खेबिया हैं, यह देश हमारा साग है.

गर हिन्दू मुस्लिम जाति को, तुम एक न समझे क्या समझे  
समझो ! न अगर तुम समझोगे, तो पस्त तुम्हारा तारा है.

भारत के सदा रामखवार रहो, भारत में जियो भारत पे मरोगे  
करना क्या है जग से तुम को, यह भारत देस तुम्हारा है.

बापू ने गंगोली खाई क्यों, निज जान की भेंट चढ़ाई क्यों  
अब तक भी न समझा प हिन्दी. क्या सच्चा धर्म हमारा है.  
इस्लाम. अहिंसा की शिक्षा, है एक ही मतलब दोनों का  
पर शब्द के गोरखधन्दे ने, फैलाया यह अधियारा है.

ऊँच नीच के छाँड़ा चर्चे, दूत अछूत के बोल हैं कच्चे  
सब ही धर्म हैं मूल में सच्चे शंश आडम्बर साग है.  
मन्दिर हो कलीसा या मस्जिद, या सिकखो का गुरुद्वारा हो  
इन सब को समझो हर का घर. हर धर्म का यह ही नारा है.

यह हिन्दू है वह मुस्लिम है, यह सिख है और वह ईसाई  
यह नाम की डेरा फेंगी है. इक सिरजनहार हमारा है.

## “अिकता या फेर”

( बेथानी حافظ عطا الله ‘अिकता’ )

हम हल्ले के देखने वाले ऐसے، چه هلك همارا نعره، هه  
هم ناره، كه ايكه كهوييا ههوه به ديس همارا سارا هه.  
گر هلكو مسلم چاتى كو تم ايك نه سمجته كيا سمجته  
سمجتهو ! به اكر تم سمجتهو كے، تو يست تمهرا تارا هه

بھارت كے صدا فستخوار رهو بھارت ميں چھو بھارت په مروه  
كوتا كيا هه چگ سے تم كو، په بھارت ديس تمهرا هه  
باپو نے كولى كهائى كهوه، نيچ چان كى بههست چوهائى كهوه  
اب لك بهى نه سمجته اے هلكى كيا سچ، دعوو همارا هه.

اسلام، اهلنسا كى شكشا، هه ايك هى مطلب دونوں كا  
پر شهد كے كوربه دهكده نے، بههلايا په اندهيارا به.  
’نيچ نيچ‘ كے چھوڑ چھوڑ، ’بھارت اچھوت كے بول ههوه كچھ  
سب هى دهرم ههوه مول ميں سچے، شمش آتمبر سارا هه.

ملاز هو كنهسا يا مستعد، يا سكهوه كا كيدوارا هو  
اين سب كو سمجتهو هر كا ’بھو‘ هر دهرم كا به هى نعره به.

په هلكو هه وه مسلم هه، په سكه هه اور وه عهسائى  
په نام كى ههوا بههوى هه ايك سرجن هار همارا هه



नया हिन्दू . जवानों  
अप्रैल सन १९११

करने में तुमने जग भी आनाकारी का तो गौरन तुम्हारी जवानी  
बुढ़ापे में तबदील हो जायगी.

धर्म को ले लो. जब तुम पैदा हुए थे. तुम अपने साथ कोई धर्म  
नहीं लाए थे. किसी धर्म के निशान के साथ तुम पैदा भी नहीं हुए.  
धर्म तुम्हारा वह है जो तुम में उस वक्त्र फूटा गया है जब कि तुम  
यह समझते हो न थे कि धर्म है क्या चीज. रहा इनसाना धर्म जिसे  
तुम साथ लेकर जनमें हो और जिसमें तुममें नकली धर्म फूट कर  
बचपन से ही दूर रखना गया है वह तुममें कहीं गया नहीं है.  
वह सोया हुआ है. वह तुममें कभी कभी जागता है. और जब वह  
जागता है तब तुम्हारा मन और मस्तिष्क उमंगें भरता है यहाँ  
उमंगें तो जवानी की निशानी है. यह जिस दिन पूरा जागता तब  
तुम पर थोपा हुआ धर्म तुममें सुई की तरह से चुभने लगेगा. उस  
धर्म के जामों का फेंक देना कसिबाय तुम्हारे पान काँडे चाग नहीं  
रह जायगा. फिर तुम क्या यह समझते हो कि अधर्मी हो  
जाओगे ? हरगिज नहीं. अधर्मी तो तुम अत्र हो जब उम धर्म की  
हड्डी बाँधे बैठे हो जो हड्डी को नहीं मानता और जो हड्डी में फँस कर  
अपना दम घोट बैठता है.

( बाकी फिर )

—भगवानदीन

जवानों  
अप्रैल सन १९११

कोने में तुमने दरा भी लिया किसी की न तो पुरा तुम्हारी जवानी  
बुढ़ापे में तबदील हो जायगी.

धर्म को ले लो. जब तुम पैदा हुए थे. तुम अपने साथ कोई धर्म  
नहीं लाए थे. किसी धर्म के निशान के साथ तुम पैदा भी नहीं हुए.  
धर्म तुम्हारा वह है जो तुम में उस वक्त्र फूटा गया है जब कि तुम  
यह समझते हो न थे कि धर्म है क्या चीज. रहा इनसाना धर्म जिसे  
तुम साथ लेकर जनमें हो और जिसमें तुममें नकली धर्म फूट कर  
बचपन से ही दूर रखना गया है वह तुममें कभी कभी जागता है. और जब वह  
जागता है तब तुम्हारा मन और मस्तिष्क उमंगें भरता है यहाँ  
उमंगें तो जवानी की निशानी है. यह जिस दिन पूरा जागता तब  
तुम पर थोपा हुआ धर्म तुममें सुई की तरह से चुभने लगेगा. उस  
धर्म के जामों का फेंक देना कसिबाय तुम्हारे पान काँडे चाग नहीं  
रह जायगा. फिर तुम क्या यह समझते हो कि अधर्मी हो  
जाओगे ? हरगिज नहीं. अधर्मी तो तुम अत्र हो जब उम धर्म की  
हड्डी बाँधे बैठे हो जो हड्डी को नहीं मानता और जो हड्डी में फँस कर  
अपना दम घोट बैठता है.

( बाकी फिर )

—भगवानदीन



नया हिन्द

जवानों

अप्रैल सन् '५१

वह भी बहुत कम सरदो, गर्मी, बरसात हमसे हमारी जगह बदलवा कर ही रहती है, हाँ, काम पर हममें से हर एक का पूरा पूरा अधिकार नहीं है, काम बदलने में हम वक़्त और जगह के लिहाज़ में भले ही ज्यादा खुदमुखार हों पर पूरे पूरे खुदमुखार नहीं हैं, पर जितनी खुदमुखारी हमें मिली हुई है वह कम नहीं है, उसके बल वृत्ते पर हम बहुत जल्दी काम बदलने में पूरे पूरे खुदमुखार हो सकते हैं, काम बदलने की खुदमुखारी का नाम ही जवानी है और यही आजादी है जवानों, अगर तुम पैसे काम में लगे हुए हो जो तुम्हारे ऊपर थापा गया है और जिसका तुम अपनी नवियत मार कर कर रहे हो और जिसके बदलने में तुम्हें सेकड़ों तगह की ऊँच नीच सोचना पड़ना है तो तुम समझ लो कि तुम बड़े हो गए, बदन और जगह के बदलने में कोई थूढ़ा नहीं होना, काम के बदलने की क़ाबलियत कम हो जाना मुद्दा है और विलकुल न रहना मौत, आगे बढ़ने के लिये हर जवान को काम बदलना होगा और गर्मी, रिवाज काम है, इनको बदलना ही होगा महन सहन, खान पान, ओढ़ना विछाना दुरुमन करना और दुरुमन में रहना सब काम हैं, सब तबदीली चाहते हैं, तबदीली ही इतकी जान है, और इन कामों में तबदीली को जान फूँकने के तुम ईश्वर हो, अगर यह नहीं कर सकते तो न तुम जवान हो, न बच्चे हो और न इनसानों में गिने जाने लायक हो।

अब रह गया भाव का बदलाव यानी बिचारों की तबदीली, ----- से अगर इसमें तबदीली

नया ५५

जुनो

अप्रैल सन् '५१

वो बूढ़ी बेहत कम सरदी, गर्मी, बरसात हम से हमारी जगह बदलाकर ही रहती है, हाँ, काम पर हममें से हर एक का पूरा पूरा अधिकार नहीं है, काम बदलने में हम वक़्त और जगह के लिहाज़ में भले ही ज्यादा खुदमुखार हों पर पूरे पूरे खुदमुखार नहीं हैं, पर जितनी खुदमुखारी हमें मिली हुई है वह कम नहीं है, उसके बल वृत्ते पर हम बहुत जल्दी काम बदलने में पूरे पूरे खुदमुखार हो सकते हैं, काम बदलने की खुदमुखारी का नाम ही जवानी है और यही आजादी है जवानों, अगर तुम पैसे काम में लगे हुए हो जो तुम्हारे ऊपर थापा गया है और जिसका तुम अपनी नवियत मार कर कर रहे हो और जिसके बदलने में तुम्हें सेकड़ों तगह की ऊँच नीच सोचना पड़ना है तो तुम समझ लो कि तुम बड़े हो गए, बदन और जगह के बदलने में कोई थूढ़ा नहीं होना, काम के बदलने की क़ाबलियत कम हो जाना मुद्दा है और विलकुल न रहना मौत, आगे बढ़ने के लिये हर जवान को काम बदलना होगा और गर्मी, रिवाज काम है, इनको बदलना ही होगा तबदीली चाहते हैं, तबदीली ही इतकी जान फूँकने के तुम ईश्वर हो, अगर यह नहीं कर सकते तो न तुम जवान हो, न बच्चे हो, न इनसानों में गिने जाने लायक हो।

अब रह गया भाव का बदलाव यानी बिचारों की तबदीली, ----- से अगर इसमें तबदीली



जाता है. आगे बढ़ना जवानों का काम ज़रूर है जवानों की शान नहीं है. जवानों की शान तो पीछे न हटना है फिर चाहे कितने ही जोर के धक्के क्यों न आएँ. जो पीछे नहीं हटता उसका क्रद्धम आगे बढ़ता ही है. आगे जो एक कदम बढ़ गया वह बढ़ गया. यही एक कदम बढ़ना तो शान है. जवान लम्बी डगें भी रखता है और मौका पाकर सरपट भी दौड़ता है पर इस डग भगने और सरपट दौड़ने में उसका पीछे का तजरबा अपने आप उसे टकलता हुआ भावस होता है. तभी तो वह पीछे मुड़कर नहीं देखता. वह 'था' का यात्री जो पीछे बीत चुका उसका तो बना हुआ पुतला ही है. उधर नजर डालने की उसे ज़रूरत भी क्यों? उसका है तो इतना बारीक होता है कि वह उस पर नजर डाले डाले जब तक उसका कदम 'गा' में जा टिकता है. यही वजह है कि जो आदमी सचंच मानों में जवान है वह हमेशा आगे बढ़ता रहता है.

आगे बढ़ना बढ़लने के सिवाय और कुछ नहीं. बढ़ने में वक्त बढ़लता है, जगह बढ़लती है. काम बढ़लता है. भाव बढ़लते हैं. वक्त पर तो किसी का अख्तियार नहीं. इसके बढ़लने में किसी का हाथ नहीं. वक्त तो हम सबको बढ़लने वाला ईश्वर है. और वह ऐसा ईश्वर है कि जरा देर के लिये भी ठाड़ी नहीं बैठता. आप काम करें या न करें. वह आप को बच्चे से जवान बना देगा, जवान से बूढ़ा बना देगा. आप किसी चीज को कितनी ही होशियारी से कितने ही तालों के अन्दर कितने ही मजबूत सेफ में क्यों न रख दें वक्त का ईश्वर वहाँ पहुँच कर भी उसको पुराना और कमजोर किये नहीं मानेगा. जगह के बढ़लने में हमारा थोड़ा हाथ रहता है पर

जाना है. आगे बढ़ना जवानों का काम ज़रूर है जवानों की शान नहीं है. जवानों की शान तो पीछे न हटना है फिर चाहे कितने ही जोर के धक्के क्यों न आएँ. जो पीछे नहीं हटता उसका क्रद्धम आगे बढ़ता ही है. आगे जो एक कदम बढ़ गया वह बढ़ गया. यही एक कदम बढ़ना तो शान है. जवान लम्बी डगें भी रखता है और मौका पाकर सरपट भी दौड़ता है पर इस डग भगने और सरपट दौड़ने में उसका पीछे का तजरबा अपने आप उसे टकलता हुआ भावस होता है. तभी तो वह पीछे मुड़कर नहीं देखता. वह 'था' का यात्री जो पीछे बीत चुका उसका तो बना हुआ पुतला ही है. उधर नजर डालने की उसे ज़रूरत भी क्यों? उसका है तो इतना बारीक होता है कि वह उस पर नजर डाले डाले जब तक उसका कदम 'गा' में जा टिकता है. यही वजह है कि जो आदमी सचंच मानों में जवान है वह हमेशा आगे बढ़ता रहता है.

आगे बढ़ना बढ़लने के सिवाय और कुछ नहीं. बढ़ने में वक्त बढ़लता है, जगह बढ़लती है. काम बढ़लता है. भाव बढ़लते हैं. वक्त पर तो किसी का अख्तियार नहीं. इसके बढ़लने में किसी का हाथ नहीं. वक्त तो हम सबको बढ़लने वाला ईश्वर है. और ऐसा ईश्वर है कि जरा देर के लिये भी ठाड़ी नहीं बैठता. आप काम करें या न करें. वह आप को बच्चे से जवान बना देगा, जवान से बूढ़ा बना देगा. आप किसी चीज को कितनी ही होशियारी से कितने ही तालों के अन्दर कितने ही मजबूत सेफ में क्यों न रख दें वक्त का ईश्वर वहाँ पहुँच कर भी उसको पुराना और कमजोर किये नहीं मानेगा. जगह के बढ़लने में हमारा थोड़ा हाथ रहता है पर



पर चढ़ा था और जिसका यह तमाशा देख कर जत्र एक ही जनरल नियोगी पर हँस दिया था और उस हँसी से विगड़ जनरल नियोगी ने जब उससे हँसने की वजह पूछी थी और उस सिपाही ने जवाब में यह लफ्ज कहे थे कि जिम आदमी थोड़े पर चढ़ाने के लिये दो आदमों चाहियें उसका फौज में ने का क्या काम और इस खरे जवाब का मुनकर जिम जनरल ने भी जवाब दिया था कि हाँ, मुझे थोड़े पर चढ़ाने के लिये दो आदमी चाहियें पर हजारों ही चाहियें जो मुझे घाँड़े से पर सकें, जनरल नियोगी कभी बूढ़ा हुआ ही नहीं, यह अस्सी सौ माल की लम्बाई नहीं है जो किमी को बूढ़ा करती है, यह ल की कमजोरी है जो बदलने और बदलने रहने से इनकार रती है, पंछे नजर डालना युग नहीं, गाँतो जवान को उसकी ने ज़रूरत नहीं, पर पंछे मुझे की सोचना जवानी की वेक़दगी रना है, और जिस जवानी की जब कदुर ही न रही वह जवान के साथ रह कर क्या करेगी, पंछे है क्या, बचपन है, फिर चाहे वह समाज का हो, मतों का हो, महंनों का हो, धर्मों का हो, राजाओं का हो, राजनेताओं का हो, राजकाजियों का हो, कलाकारों का हो, साहित्यकारों का हो या किसी का भी हो, अपने बचपन का या अपने बचपन के भले कामों का कोई जवान अभिमान तो कर सकता है पर उन पर उसी तरह अमल करने की नहीं सोच सकता, जो ऐसा सोचगा, जवानी उसका साथ छोड़ कर चल देगी, जवान पंछे बहुत कम देखता है, इसका यह मतनब कोई हरगिज

कहोरे दो चह निया तथा और जिस का ये दल्ले दिवह, जब एक सियाही जल नियो की ये हास दिया तथा और उस हास से बग़ को जकल नहो की ने जब उस से हासने की वजह पूछी थी और जब उस हास ने हाब मोन ये लफ्ज कहे थे कि जिस आदमी का कहोरे ये चोहाने के लिये दो आदमी चाहियें उस का फौज मोन आने जवाब दिया तथा कि हाँ, मुझे कहोरे ये चोहाने के लिये दो आदमी चाहियें ये हजारों ही चाहियें जो मुझे कहोरे से नार सकें, जकल नियो की ये चोहाने हाँ ही नहो, ये असी या सो साल की लसाली नहो है जो किसी को चोहाने करती है ये दा की कमजोरी है जो बदलने और बदलने रहने से इनकार रती है, पंछे नजर डालना युग नहीं, गाँतो जवान को उसकी ने ज़रूरत नहीं, पर पंछे मुझे की सोचना जवानी की वेक़दगी रना है, और जिस जवानी की जब कदुर ही न रही वह जवान के साथ रह कर क्या करेगी, पंछे है क्या, बचपन है, फिर चाहे वह समाज का हो, मतों का हो, महंनों का हो, धर्मों का हो, राजाओं का हो, राजनेताओं का हो, राजकाजियों का हो, कलाकारों का हो, साहित्यकारों का हो या किसी का भी हो, अपने बचपन का या अपने बचपन के भले कामों का कोई जवान अभिमान तो कर सकता है पर उन पर उसी तरह अमल करने की नहीं सोच सकता, जो ऐसा सोचगा, जवानी उसका साथ छोड़ कर चल देगी, जवान पंछे बहुत कम देखता है, इसका यह मतनब कोई हरगिज



[illegible]

अज्ञानो

जवानी न जानें के लिये आती हैं और न कभी जानती हैं वह तो खो ही जाती है या खंडे-खंडी जाती हैं, बालों का सफेद हो जाना या दाँतों का गिर जाना बुढ़ापा नहीं है, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाना भी बुढ़ापा नहीं है, अगर यह तीनों तबड़ालियों बुढ़ापे की निशानें होती तो गोधी जी हिन्दुस्तानियों को दुःख न हों और एक बूढ़े दिल जवान को उनकी जान लेने का ध्यान न मूमती, आदमी को जान लेने की बात डरपोक और कायर ही सोच सकते हैं, डर और कायरता यानी बुजुर्गिली जवान के पास नहीं फटकती अगर किसी जवान को उनसे बेजा लगाव है तो फिर वह या तो बच्चा है या बूढ़े का नाटक कर रहा है या बुढ़ापे की और डोढ़ लगा रहा है, जिसमें डर नहीं और जिसका कायरता से कुछ मेल जाल नहीं उसे अगर कोई बूढ़ा कहें और सिर्फ इस वजह से बुढ़ा कहें कि उसके बाल सफेद हैं, उसके दाँत गायब हैं और उसके चेहरे पर न तनाव है न चिक्कनाहट तो यही समझना चाहिये कि अगर वह खुद बूढ़ा नहीं है तो उसका दिल जहर बुढ़ा हो गया है, भले तो फिर उसके बाल काजल काले हों और बत्तीसी इतनी मजबूत कि उनके बीच में आई सुपारी पलक मारते चूर हो जाती हो, पान के उस भरसी बरस के जलरल नियोगी को, कहो तो जवानो, मैं कैसे बूढ़ा कह दूँगे जिसको जब दो सिपाहियों ने हाथ लगाकर



अप्रैल सन् '५१

## हस्ताकार वान गोक

॥

एक दिन दुनिया को उसने अपने सामने साकार देखा. वह

उससे बातें कर रही थी। उसने अपना हाथ  
विन्सेंट ने आहने में मलकती शकल की तरह दुनिया को देखा।  
समझा और परखा। जैसे दुनिया के कभी न मिटने वाले दर्द को  
वन्सेंट अपने सामने देख लिया। दुनिया भर के दुख दर्द से जैसे  
वन्सेंट को गोली मारली।

उसका महा मिलन हुआ। विन्सेन्ट बोला—“मैंने शिकाग किया है। डाक्टर दीइते हुए आप, विन्सेन्ट बोला—“मैंने शिकाग किया है। उसकी नज़रों में आगई थी। उतने सचमुच दुनिया की सारी बुराई उसकी नज़रों में आगई थी। उतने उसी को मारना चाहता था। पर खुद को गोली मार बैठा और अन्न में

३७ बरस का उमर म अथवा ३

हुए उसने एक लम्बी आर आर में उसने अपनी

उसे उसी खेत में दफनाया गया जहाँ एक मौसी की बेटों को पहली और आखिरी बार प्यार किया था। जिम खेत को 'ड्यू कर्न' (नीला दाना) नाम की जाती जगती तन्वीर में उसको मबसे अर्जोज़।

श्रीमद्भगवानुवाच ।

इस तरह धरती का यह ब्रैवेन बेटा लहलहाती धरती को गाद-गाद के लिये बैन से सो गया !

۱۵، ۱۶، ۱۷

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

کڑھی تھی۔ اُسے ایسا حال کلاڑ کو بتایا۔ ونسنت نے اُنہیے مہن  
چمکتی شکل کی طرح دنیا کو دیکھا، سنبھا اور پرکھا۔ جیسے  
دنیا کے کبھی نہ مٹنے والے درد کو اُس نے اپنے سامنے دیکھ لیا۔  
دنیا بھر کے دیکھ دار سے جیسے سُکا مہا منن ہوا۔ ونسنت نے  
اپنی چھائی مہن کوئی مازی۔ ڈاکٹر داڑتے ہوئے آئے۔ ونسنت  
والا۔" مہن نے شکار کدا ہے۔" سچ مچ دنیا کی ساری بڑائی اُس  
مہن بطور مہن اُنکی ہی۔ اُس نے اُسی کو مارنا چاہتا تھا پر  
دود کو کڑی ماز پھٹا اور انت میں ۳۷ برس کی عس مہن مانے  
تپ سے آخری کشر کپھلچھے ہوئے اُس نے ایک نمدی او۔ آخری  
س لیا۔

7

موسمی کی بھٹی کو بھٹی اور آخری داد بھڑا کیا تھا۔ جس کھمت کو ’بلوکان‘ (نہلا دان) نام کی جیتی جائیگی تصویر مدس نے حیدر کا تہیں اُتارا تھا، جو کھمت اُسکو سب سے عزیز اور سب سے بھڑا تھا۔

اس طرح دھرتی کا یہ پہاڑوں بدلتا اہلہائی دھرتی کی ٹوں میں  
مدا کے لئے چپوں سے سو گیا۔



बेरोजगारों, बेरयाष्टों और शोशितों, अनपढ़ों और कुचले हुए लोगों की तस्वीरें बनाईं. लेकिन हमारी बद्धकिस्मती से वह तस्वीरें भी अमीरों और सरकारों ने खरीद खरीद कर (विन्सेन्ट से नहीं खरीदी) अपनी इमारतों और कमरों में लगा लीं. लेकिन आज जब कभी भी वह बाहर की हवा और रोशनी देखतो हैं तो अपने लोगों को पहचान कर फिर से हँसने लग जाती हैं और उस महान पुरुष का संदेसा दुहराती हैं जिन्हें सुनकर गिर हुए इनसानों के मुँहके हुए सग गर्व से ऊँचे हो जाते हैं. वह नई जिन्दगी की गंशनी को अपने करीब महसूस करते हैं, और मुस्कुराते हैं.

कान काट कर भेंट कर देने के बाद विन्सेन्ट का जीवन और दूसर हो गया. मुहल्ले के आवाया लड़के रात दिन उसे चिढ़ाते. उसके चित्र फाड़ ढालते और समझदार कहलाने वाले लोग भी वसमें हिस्सा लेते. इसी तरह कई दिन निकल गए. दिन पर दिन उसके लिये भारी होता जाता था. फिर थियो आया और उसका इलाज कराया पर कुछ न हुआ.

कला का यह पुजारी उन्हीं दिनों आवर्स के पागल खाने में भेज दिया गया. लेकिन वहाँ के डाक्टर उसकी कम दवा करते. उस को दवा अपने ही पास थी. वह तो खुद दुनिया का मर्सीदा बन कर आया था. उसकी संगत पाकर डाक्टर उसे समझ कर हैरान रह गए. यहाँ पागलों को देखकर विन्सेन्ट को जीवन को और समझने का मौका मिला. वह पागलों की सेवा में लग गया. वह आस पास के चित्र भी खींचता. डाक्टरों ने यह देख कर उसे अस्पताल ही में आजाद कर दिया.

बेरोजगारों, बेरयाष्टों और शोशितों, अनपढ़ों और कुचले हुए लोगों की तस्वीरें बनाईं. लेकिन हमारी बद्धकिस्मती से वे तस्वीरें भी अमीरों और सरकारों ने खरीद खरीद कर (विन्सेन्ट से नहीं खरीदी) अपनी इमारतों और कमरों में लगा लीं. लेकिन आज जब कभी भी वे बाहर की हवा और रोशनी देखते हैं तो अपने लोगों को पहचान कर भी हैरान रह जाते हैं. वह नई जिन्दगी की गंशनी को अपने करीब महसूस करते हैं, और मुस्कुराते हैं.

( १७ )

कान काट कर बेमेलत कर दिखने के बाद विन्सेन्ट का जीवन और दूसरा हो गया. मुहल्ले के आवाये लड़के रात दिन से चोटते. उस के चित्र फाड़ डालते और समझदार कहलाने वाले लोग भी वसमें हिस्सा लेते. इसी तरह कई दिन निकल गए. दिन पर दिन उसके लिये भारी होता जाता था. फिर थियो आया और उसका इलाज कराया पर कुछ न हुआ.

कला का यह पुजारी उन्हीं दिनों आर्स के पागल खाने में भेज दिया गया. लेकिन वहाँ के डाक्टर उसकी कम दवा करते. उसकी दवा ही पास थी. वह तो खुद दुनिया का मर्सीदा बन कर आया था. उसकी संगत पाकर डाक्टर उसे समझ कर हैरान रह गए. यहाँ पागलों को देखकर विन्सेन्ट को जीवन को और समझने का मौका मिला. वह पागलों की सेवा में लग गया. वह आस पास के चित्र भी खींचता. डाक्टरों ने यह देख कर उसे अस्पताल ही में आजाद कर दिया.



चित्र बनाना मुझे ज्यदा पसंद है. लम्बे कपड़े पहने बच्चों को मैं अपना देवता मानता हूँ." वह बूढ़ियों और कुंआरियों के चित्र खींचने में बहुत होशियार था, जिनके लिये उसने कहा था—“बूढ़ियों के चेहरे धूल भरी घास की तरह नुकीले हैं और जवान लड़कियाँ, जो खेलों की तरह ताजा हैं और जिनकी हर एक रेखा अछूनी और कुंआरी है.”

बान गोक के यह चित्र साधारण नहीं हैं. बल्कि बहुत ही ऊँचे दर्जे के चित्र हैं, जिन में जान है. इन तस्वीरों की ‘धरती’ अपनी कहानी कहती है. इनका ‘फूल’ डाली पर लहराता, मालूम होता है. ‘बन का धान’ जीवन की अमरता का संदंश देता है. आँधी पानी के चित्रों में, ‘बिजलियाँ’ कुछ कहती हैं. उनसे अजीब जादू और विचित्र मोहिनी है. उसने इनसानी शकल मूर्त की ऊपरी रेखाएं खींच कर रंग रोगन नहीं भर दिया. बल्कि उसके दिल, दिमाग और कलेजे भी कागज पर उतार दिये. उसने यह भी बता दिया कि उसके चित्र का माडल क्या सोच रहा है. क्या कर रहा है, क्या कहना चाहता है और क्या माँग रहा है.

दाल्टाय और डिकेन्स की तरह विन्सेन्ट का विश्वास था कि कला का कुछ मकसद होना चाहिये. उसका कोई निश्चित संदेश होना चाहिये. कला सिर्फ नैतिक उपदेशों का ढाँचा या उनसे भग्न बोझ नहीं है. उसने उस सल्लेधर्म और पाक मजहब पर विश्वास किया जो दुनिया में सम्पूर्ण मानवता में रोशन है. उसने साम्यवादी संसार का सपना ही नहीं देखा. अपने जीवन में उसके बुनियादी जसूलों पर अमल करके भी दिखा दिया. उसने बेकारों और

चित्र बनाना मुझे ज्यदा पसंद है. लम्बे कपड़े पहने बच्चों को मैं अपना देवता मानता हूँ." वह बूढ़ियों और कुंआरियों के चित्र खींचने में बहुत होशियार था, जिनके लिये उसने कहा था—“बूढ़ियों के चेहरे धूल भरी घास की तरह नुकीले हैं और जवान लड़कियाँ, जो खेलों की तरह ताजा हैं और जिनकी हर एक रेखा अछूनी और कुंआरी है.”

बान गोक के यह चित्र साधारण नहीं हैं. बल्कि बहुत ही ऊँचे दर्जे के चित्र हैं. इन में जान है. इन तस्वीरों की ‘धरती’ अपनी कहानी कहती है. इन का ‘फूल’ डाली पर लहराता, मालूम होता है. ‘बन का धान’ जीवन की अमरता का संदंश देता है. आँधी पानी के चित्रों में, ‘बिजलियाँ’ कुछ कहती हैं. उनसे अजीब जादू और विचित्र मोहिनी है. उसने इनसानी शकल मूर्त की ऊपरी रेखाएं खींच कर रंग रोगन नहीं भर दिया. बल्कि उसके दिल, दिमाग और कलेजे भी कागज पर उतार दिये. उसने यह भी बता दिया कि उसके चित्र का माडल क्या सोच रहा है. क्या कर रहा है, क्या कहना चाहता है

दाल्टाय और डिकेन्स की तरह विन्सेन्ट का विश्वास था कि कला का कुछ मकसद होना चाहिये. उसका कोई निश्चित संदेश होना चाहिये. कला सिर्फ नैतिक उपदेशों का ढाँचा या उनसे भग्न बोझ नहीं है. उसने उस सल्लेधर्म और पाक मजहब पर विश्वास किया जो दुनिया में सम्पूर्ण मानवता में रोशन है. उसने साम्यवादी संसार का सपना ही नहीं देखा. अपने जीवन में उसके बुनियादी जसूलों पर अमल करके भी दिखा दिया. उसने बेकारों और



मूरत बसाली. बेरयाओं के घर जाने वाला विन्सेन्ट गगिन की तरह खुरा रहने नहीं जा रहा था. वह बड़ा गंभीर था. जिन्दगी की तहें उसके सामने खुलती जा रही थीं और उसके सामने खड़ी होकर अपना सही रूप दिखाते हुए अपना बयान देती जा रही थीं.

ऐसे समय, बड़े दिन का त्योहार आ गया. लड़की हमेशा विन्सेन्ट के दाहिने कान की तारीफ़ किया करती थी. बोली कि बड़े दिन के उपहार में यह कान मुझे दे देना.

विन्सेन्ट सब्बा प्रेमी था. उसके जीवन में कहीं छल कपट को जगह ही नहीं थी. बड़े दिन की सुबह को ही वह अपने हाथों में कटा कान लिये हुए प्रेमिका के घर जा पहुंचा. वह देखकर एक दम पीछे हट गई, चीख उठी. उसने एक मामूली आदमी से नहीं एक महात्मा से मजाक किया था

आर्लेस में बान गोक ने जो कई चित्र बनाए उनमें से एक दाढ़ी वाले डाकिये रूलिन का चित्र मशहूर है. रूलिन. विन्सेन्ट का बड़ा मददगार था. वह हर माह उसके मनीआर्डर लाता, उसकी सेवा करता और उसे बचाता. लाइट हाउम की बूढ़ी मालकिन को भी उसने चित्रों में संजीवनी बूटी खिलाई है. आर्लेस में ही चाँदनी रातों में घुम घुम कर उसने "बाँदनी में साइप्रस" के ऊँचे पेड़ों वाले चित्र खींचे. इन चित्रों में 'सूरजमुखी,' 'जूतों का जोड़ा' 'लहराते खेत जिनपर कौए उड़ रहे हैं,' 'क. सी. फ्रिक्शन' वगैरा बहुत मशहूर हुए हैं. वह कहता था— "मैं, अपने घर में पालना मुलाती माओ और लहरों में नाव

मूरत बसाली. विशिष्टों के कहर जानने والا नसलत गलन की तरह खुरा रहने नहीं जा रहा था. वह 'बू' कदेहर था. ज़िन्दगी की तहें उसके सामने खुलती जा रही थीं और उसके सामने खड़ी होकर अपना सही रूप दिखाते हुए अपना बयान देती जा रही थीं.

ऐसे सत्रों में बड़े दिन का त्योहार आया. लड़की हमेशा दाहिने कान की तारीफ़ किया करती थी. बोली कि बड़े दिन के उपहार में यह कान मुझे दे देना.

विन्सेन्ट सब्बा प्रेमी था. उसके जीवन में कहीं छल कपट को जगह ही नहीं थी. बड़े दिन की सुबह को ही वह अपने हाथों में कटा कान लिये हुए प्रेमिका के घर जा पहुंचा. वह देखकर एक दम पीछे हट गई, चीख उठी. उसने एक मामूली आदमी से नहीं एक महात्मा से मजाक किया था.

आर्लेस में बान गोक ने जो कई चित्र बनाए उनमें से एक दाढ़ी वाले डाकिये रूलिन का चित्र मशहूर है. रूलिन. विन्सेन्ट का बड़ा मददगार था. वह हर माह उसके मनीआर्डर लाता, उसकी सेवा करता और उसे बचाता. लाइट हाउस की बूढ़ी मालकिन को भी उसने चित्रों में संजीवनी बूटी खिलाई है. आर्लेस में ही चाँदनी रातों में घुम घुम कर उसने "बाँदनी में साइप्रस" के ऊँचे पेड़ों वाले चित्र खींचे. इन चित्रों में 'सूरजमुखी,' 'जूतों का जोड़ा' 'लहराते खेत जिन पर कौए उड़ रहे हैं,' 'क. सी. फ्रिक्शन' वगैरा बहुत मशहूर हुए हैं. वह कहता था— "मैं, अपने घर में पालना मुलाती माओ और लहरों में नाव उड़ रहे हैं," मैं, अपने घर में पालना मुलाती माओ और लहरों में नाव उड़ रहे हैं."



کئی اور ونسنٹ نے پھر سے اپنے توتے من ملندڑ مہوں ایک



नया हिन्द कलाकार वान गोक अग्रल सन् '५१

थियो बाजार गया. अच्छे कपड़े और खाना लाया. उसे नहला कर कपड़े पहनाए. गरम खाना खिलाया और सोने जाने का हुक्म दिया. विन्सेन्ट को कुछ राहत मिली.

थियो उसे पेरिस ले आया और उसे अपने ही पास रखा ताकि उसकी अच्छी तरह देख भाल कर सके. पेरिस में थियो विन्सेन्ट को लोगों से मिजाता. जिनमें बड़े बड़े कलाकर—पिसारो, साब्रॉक, स्युरेत और कहानी कार एमली जोला और उसके चले मोपासों थे. यह वही आजाद और मस्त नौजवान थे जिन्होंने अपनी कहानियों में उन पात्रों को जगह दी थी जिन्हें दुनिया में कहीं ठिकाना न था. अपने समय के पेरिस ने उन्हें ठुकराया और उनका मजकूर उड़ाया. लेकिन कुछ ही बरस के बाद सारी दुनिया उन्हें खोजती हुई आई और उनका नाम लेकर अपने को धन्य समझने लगी. सबाई पसन्दी का यह सारा गिरोह भूकों भरता था. पागल और सनकी समझा जाता था. लेकिन यह सब कुछ समझने वालों को क्या मालूम था कि आने वाले समय के महान कलाकर यही लोग माने जाएंगे.

इन दिनों विन्सेन्ट के उरसाह का ठिकाना नहीं था, उसे हिस्मत बंदी. मन की फिक्र दूर हो गई. बरसों की तपस्या अब बरदान पाने वाली थी. उसे अपनी कला का मोल देने वालों की नहीं. मोल आँकने वालों की जरूरत थी. नए आत्म विश्वास ने विन्सेन्ट में नई जान फूँक दी. थियो की मदद से उसने पेरिस के शोर गुल से दूर. आर्लेस में नया मकान लिखा. 'लाइट हाउस' (रोशनी का घर) उसका नाम रखा. उसको सजा संभार कर उसे अपना स्टुडियो कहा, "थुम्के अब फिर से सब काम शुरू करना चाहिये." और

नया हिन्द कलाकार वान गोक अग्रल सन् '५१

नेहरो बाजार किया. अच्छे कपड़े और कहाना लिया. उसे नहला कर कपड़े पहनाए. गरम खाना खिलाया और सोने जाने का हुक्म दिया. विन्सेन्ट को कुछ राहत मिली.

नेहरो उसे पेरिस ले आया और उसे अपने पास रखा ताकि उसकी अच्छी तरह देख भाल कर सके. पेरिस में नेहरो विन्सेन्ट को लोगों से मिजाता. जिनमें बड़े बड़े कलाकर—पिसारो, साब्रॉक, स्युरेत और कहानी कार एमली जोला और उसके चले मोपासों थे. यह वही आजाद और मस्त नौजवान थे जिन्होंने अपनी कहानियों में उन पात्रों को जगह दी थी जिन्हें दुनिया में कहीं ठिकाना न था. अपने समय के पेरिस ने उन्हें ठुकराया और उनका मजकूर उड़ाया. लेकिन कुछ ही बरस के बाद सारी दुनिया उन्हें खोजती हुई आई और उनका नाम लेकर अपने को धन्य समझने लगी. सबाई पसन्दी का यह सारा गिरोह भूकों भरता था. पागल और सनकी समझा जाता था. लेकिन यह सब कुछ समझने वालों को क्या मालूम था कि आने वाले समय के महान कलाकर यही लोग माने जाएंगे.

इन दिनों विन्सेन्ट के उरसाह का ठिकाना नहीं था, उसे हिस्मत बंदी. मन की फिक्र दूर हो गई. बरसों की तपस्या अब बरदान पाने वाली थी. उसे अपनी कला का मोल देने वालों की नहीं. मोल आँकने वालों की जरूरत थी. नए आत्म विश्वास ने विन्सेन्ट में नई जान फूँक दी. थियो की मदद से उसने पेरिस के शोर गुल से दूर. आर्लेस में नया मकान लिखा. 'लाइट हाउस' (रोशनी का घर) उसका नाम रखा. उसको सजा संभार कर उसे अपना स्टुडियो कहा, "थुम्के अब फिर से सब काम शुरू करना चाहिये." और



तथा हिन्द कलाकार बान गोक अप्रैल सन् '५१

कर अपने को भूल गया. दोनों एक हो गए. उसे भी जैसे ईश्वर ने इसी के लिये भेजा था. बाद में विन्सेन्ट ने उसे अपने अपने स्टुडियो में रख लिया. अस्पताल में उसके बचा पैदा हुआ.

इस औरत ने हालाँकि बान गोक की बड़ी सेवा की और हालाँकि बान गोक ने उसकी बहुत पूजा की, पर इस औरत का स्वभाव बहुत सख्त था, और अब भी वह अपने आवागमन से बाज़ न आती थी. अब भी गाली गलौज और बेरया पन को उसने नलाक़ नहीं दिया था. विन्सेन्ट कई तरह की परेशानियों में पड़ गया. वह बीमार हो गया और उसका भाई आकर उसे ले गया.

इस औरत को अपनी तरफ़ "वेडना" में उसने अमर कर दिया है और तरबीर के नीचे लिखा है—“क्या कारण है कि एक औरत इस तरह अकेली और ठुकराई हुई है?”

और विन्सेन्ट ने बताया—“मेरा जीवन बेकार है. लेकिन मैं सबमें इनसानियत को महसूस कर रहा हूँ.”

और थियो जब एन्टवर्प आया और विन्सेन्ट के स्टुडियो में दाखिल हुआ तो उसके अचरज की सीमा न रही कि पेरिस में रहने वाले इस मशहूर डायरेक्टर और गुपिल्स के हिस्सेदार का भाई किस बुरे हाल में जा रहा है. विन्सेन्ट का चेहरा सूख गया है. आँखें गढ़ों में घँस चुकी हैं घर में खाने को कुछ नहीं है. बदन पर कपड़े बिथड़े हो कर लटक रहे हैं. और वह फिर भी नई दुनिया और उसके नए इनसान का सपना देख रहा है. उसकी तरबीर ख़ाब

कलारान गोक लिवेल सन् '०१

कराये को बेचल किया. दोनों एक हो गये. उसे भी जैसे ईश्वर ने इसी के लिये भेजा था. बाद में विन्सेन्ट ने उसे अपने स्टुडियो में रख लिया. अस्पताल में उसके बच्चा पैदा हुआ. .

इस औरत ने हालाँकि बान गोक की बड़ी सेवा की और हालाँकि बान गोक ने उसकी बहुत पूजा की, पर इस औरत का स्वभाव बहुत सख्त था, और अब भी वह अपने आवागमन से बाज़ न आती थी. अब भी गाली गलौज और बिशयान को उसने नलाक़ नहीं दिया था. विन्सेन्ट कभी टुलुच की, बिशयानों में पड़ गया. वह बीमार हो गया और उसका भाई आकर उसे ले गया.

इस औरत को अपनी तरफ़ "वेडना" में उसने अमर कर दिया है और विन्सेन्ट ने बताया—“मेरा जीवन बेकार है. लेकिन मैं सबमें इनसानियत को महसूस कर रहा हूँ.”

और थियो जब एन्टवर्प आया तो उसके अचरज की सीमा न रही कि पेरिस में रहने वाले इस मशहूर डायरेक्टर और गुपिल्स के हिस्सेदार का भाई किस बुरे हाल में जा रहा है. विन्सेन्ट का चेहरा सूख गया है. आँखें गढ़ों में घँस चुकी हैं घर में खाने को कुछ नहीं है. बदन पर कपड़े बिथड़े हो कर लटक रहे हैं. और वह फिर भी नई दुनिया और उसके नए इनसान का सपना देख रहा है. उसकी तरबीर ख़ाब



नया हिन्दू कलाकार वान गोक '५१ अग्रेल सन्

भर उसके खिलाफ थी. उसके चित्रों का लोग मजाक उड़ाते. उसे पागल और सनकी कहकर मारते पोंटते. बच्चे पत्थर और ढेलो फेंकते. लोग उसे ठगते. फिर भी भूक का यह कारीगर अपनी तपस्या में लगा रहा. वह इनसान की जिन्दगी को समझने की कोशिश कर रहा था. वह वर्ग भेद और भूक के खिलाफ लड़ रहा था. अपनी तस्वीरों को गिरे हुआँ को आवाज बना रहा था. पर उस आवाज को कौन सुनता ? पत्थर को पिघला देने वाले उसके चित्र अभी संगदिल इनसान को पिघला देने वाले नहीं बने थे. और जिनके दिल पिघले थे वह चन्द ही थे.

विन्सेन्ट एन्टवर्प चला आया. आधी रोटो खाकर, भाई के भेजे हुए पैसों में से कुछ बचाकर अपनी तस्वीरों के माडल के लिये लोगों को कुछ दे कर सामने बिठाता. उनके चित्र खींचता. इस तरह वह चित्रकला की साधना करता रहा.

एन्टवर्प में ५ बच्चों वाली. चैक भर भरे मुँह की एक वेश्या से विन्सेन्ट की दोस्ती हो गई. इस समय उसके पेट में बच्चा था. वह आकारा, शराबी और बदचलन होते हुए भी नेक और सीधी थी. उसके जीवन में कहीं छल कपट और धोका नहीं था. वह वेश्या इसलिये थी कि उसके ५ बच्चे थे. कुटुम्ब था, माँ और भाई थे. विन्सेन्ट का हृदय सागर इस औरत की दशा देखकर महीनों तक ज्वार उठाता रहा. वह पागल हो गया, परेशान हो गया. उसी में उसे दुनिया की सत्ताई हुई, ठुकराई हुई और सदियों से कुचलो हुई औरत के दर्शन हुए. विन्सेन्ट ने उसे अनपूरनी माना और उसकी सेवा में लग

अपिल सन '०१ कलार वान गोक

नया हलद बेर अस के खाल नही. असके चमरोन का लुक मडान् अराने. असे याकल ओर सलकी कभर मारते पेटते. बच्चे पत्थर ओर ढेलो फेंकते. लुक अस तेकते. बेर बेर बेर बेर का ये कारिगर अपनी तपस्या में लगा रहा. वह आवाज बना रहा था. पर अस आवाज को कौन सुनता ? पत्थर को पिघला देने वाले संगदिल इनसान को पिघला देने वाले नहीं बने थे. और जिनके दिल पिघले थे वह चन्द ही थे.

वन्सल्ट अल्लिट वरप चला आया. अन्ही दोस्ती कहाँ, बहाली के बच्चे हुये बसोसो मीन से कच्चे बच्चा की अली तस्वीरोन के माल के लिये लुकोन को कच्चे दे के सामने बत्था. अँ के चित्र कियेजता. अस मरुच वे चित्र कला की साधना करता रहा.

अल्लिट वरप मीन ० बच्चों वाली 'चमक बेर' मने की एक वेश्या से वन्सल्ट की दोस्ती हुक्की. अस से 'असके' वन्सल्ट मीन बच्चे त्हा. वे 'आरे' शराबी ओर बदचलन हुये हुये बेर नेक ओर सधे त्ही. असके जियोन मीन कभे चमल किये ओर देहा नभे त्हा. वे वेश्या अस लिये त्ही के 'असके' बच्चे त्हे 'कन्स' त्हा' माँ ओर बहानी त्हे. वन्सल्ट का हृदय सागर अस औरत की दशा दिकभर मभेनो नक जवार अत्थता रहा. वे याकल हुक्की' प्रेशान हुक्की. अस मीन अस दुनिया की सत्ताई हुक्की 'तुकराई हुक्की ओर सदियों से कचली हुक्की औरत के दर्शन हुये. वन्सल्ट ने अस अँ पोर' माना ओर 'असके' सधे मीन लक



न आई कि उससे क्या गलती हुई है ? उसे तो अब भी विश्वास था कि लड़की उससे मुहब्बत करती है.

लड़की अपने पिता के घर लौट गई. विन्सेन्ट भी पहुँच गया. वहाँ उसके मौसा ने अपनी लड़की से न मिलने देने की निगानी रखी. जब विन्सेन्ट को यह मालूम हुआ तो वह आग बबूला हो गया. विन्सेन्ट ने लड़की के बाप में मिल कर शादी की जान की. मगर उसे जवाब मिला कि तू भिकमंगा हो कर इतने बड़े पादरी की बेटी से क्या कहेंगे कर सकता है ? वह बहुत बड़े जर्मनार के घर जा रही है. पागल हो कर विन्सेन्ट लौट आया लेकिन उसने कुछ सोच कर फिर मौसा का दरवाजा खटखटाया. वहाँ नौकरानी ने घर में घुसने से मना किया. विन्सेन्ट उसे धकेल कर अन्दर चला गया और देखा कि काली पोशाक वाली एक छाया एक तरफ छिप गई है. लड़की के बाप ने विन्सेन्ट को बहुत घुग भला कहा लेकिन विन्सेन्ट अपनी जिद पर अड़ा रहा और बोला कि मुझे एक बार उस से मिल लेने दो. बाप ने पिम्पौल निकाल लिया और विन्सेन्ट ने कमीज के बटन खोल कर सीना तान दिया मगर उसी समय उसकी मौसी बीच में आ गई. विन्सेन्ट बोला--“कहा कि नहीं मिलने दोगे.” और उसने अपना हाथ जलने हुए बड़े लैम्प पर धर दिया. चमड़ा जला, मोस जला. हड़ि जलने लगी मगर न तो मौसा पिघला और न विन्सेन्ट ही पंछि हटा. आखिर मौसी ने लैम्प को धकेल दिया और नौकरों ने विन्सेन्ट को सड़क पर फेंक दिया.

विन्सेन्ट का दिल दो बार टूट चुका था. शरीर को सड़ी, बरसात

ने आँखें क्लेश से कहा नाटकी हो रही है ? उसे तो अब भी विश्वास था कि लड़की उससे मुहब्बत करती है.

लड़की अपने पिता के घर लौट गئی. . . . . विन्सेन्ट भी पहुँच गया. वहाँ उसके मौसा ने अपनी लड़की से न मिलने देने की निगानी रखी. जब विन्सेन्ट को यह मालूम हुआ तो वह आग बबूला हो गया. विन्सेन्ट ने लड़की के बाप में मिल कर शादी की जान की. मगर उसे जवाब मिला कि तू भिकमंगा हो कर इतने बड़े पादरी की बेटी से क्या कहेंगे कर सकता है ? वह बहुत बड़े जर्मनार के घर जा रही है. पागल हो कर विन्सेन्ट लौट आया लेकिन उसने कुछ सोच कर अन्दर चला गया और देखा कि काली पोशाक वाली एक छाया एक तरफ छिप गई है. लड़की के बाप ने विन्सेन्ट को बहुत घुग भला कहा लेकिन विन्सेन्ट अपनी जिद पर अड़ा रहा और बोला कि मुझे एक बार उस से मिल लेने दो. बाप ने पिम्पौल निकाल लिया और विन्सेन्ट ने कमीज के बटन खोल कर सीना तान दिया मगर उसी समय उसकी मौसी बीच में आ गई. विन्सेन्ट बोला--“कहा कि नहीं मिलने दोगे.” और उसने अपना हाथ जलने हुए बड़े लैम्प पर धर दिया. चमड़ा जला, मोस जला. हड़ि जलने लगी मगर न तो मौसा पिघला और न विन्सेन्ट ही पंछि हटा. आखिर मौसी ने लैम्प को धकेल दिया और नौकरों ने विन्सेन्ट को सड़क पर फेंक दिया.

विन्सेन्ट का दिल दो बार टूट चुका था. शरीर को सड़ी, बरसात और



डर, भूक और अन्याय न हो। उसने भाई को लिखा—“मैं इनसानों के बीच रह रहा हूँ, उन्हीं के लिये जी रहा हूँ। महान कलाकार मसीह ने भी तो यही किया था।” इस तरह उसे भगोसा था कि उसके चित्र चाहे बहुत सुहावने और लुभावने न हों। चाहे वह मामूली दर्जे के हों पर उनमें एक ऐसी आवाज़ जरूर होगी जिसे सुनने के लिये दुनिया एक दिन सजबूर हो जायगी।

विन्सेन्ट बेलजियम में बहुत बीमार हो गया। घर वाले अपने साथ उसे ले गए। पर वहाँ आकेले उसका जी बेचैन रहने लगा। वह दिन भर बाहर भटकता, खेतों की मेड़ों पर बैठ कर धान के चित्र बनाता। किसानों को देखता, उनके जीवन को और उनकी कठिनाइयों को देखता, उनकी मदद करता और उन्हीं का सा जीवन बिताता। उसने जैसा देखा, वृहत् तस्वीर में उतार दिया।

उन्हीं दिनों उसकी मौसी की एक लड़की विधवा होकर अपने बच्चे को लिये उसके यहाँ आ गई थी। दोनों दुखियों का मन मिल गया। दोनों साथ साथ घूमते। वह दिन भर उसे जंगलों में चित्र बनाते देखती। लड़की कलाकार के मन में बस गई। कलाकार ने एक दिन उसे बाबुओं में कस कर गले से लगा लिया। वह लड़की अपने बच्चे को छाती से चिमटाए। भरे खेतों में से पागलों की तरह दौड़ती अपने घर आई और बंद कमरे में घंटों रोती रही। मां बाप ने अपनी लड़की के अपमान पर विन्सेन्ट को बहुत बुरा भला कहा। विन्सेन्ट को भी दुख हुआ, पछतावा हुआ, मगर उसकी समझ में यह बात

दुनिया साफ़ रही है। ‘‘सुने ऐसा सुन्दर चामे जस  
 लुक लुकेसुत‘‘ दार‘ बहक ओर अनाये नह गो. सु ने बेहानी को  
 लका—‘‘मेहन انسانوں کے بیچ رہا ہوں‘‘ انھوں کے لئے  
 جی رہا ہوں. مہان کلاکار مسطح نے بھی تو یہی کیا تھا. ‘‘  
 اِس طرح اُسے بہرورمہ نہا کہ اُس کے چتر چاہے بہت سہارنے  
 اور لہہارنے نہ ہوں‘ چاہے وہ معمولی درجے کے ہوں پر اُن میں  
 ایک ایسی آواز ضرور ہوگی جس سنے کے لئے دہا ایک دن  
 محبوب ہو جائیگی.

‘‘سلسلے بلجیڈم میں بہت بیمار ہو گیا. کمر والے اپنے ساتھ سے  
 لے گئے. پر وہاں اکیلے اُس کا جی بے چہن رہنے لگا. وہ دن بہر بار  
 بہت کمنا‘ کہیتوں کی مہنڑوں پر بہت کم دھان کے چتر بناتا. کسانوں  
 کو دیکھتا‘ اُن کے جھون کو اور اُن کی کٹھنڈائیوں کو دیکھتا.‘‘  
 کی مدد کرتا اور انھیں کا سا چہون بچاتا. اُس نے جیسا دیکھا‘ ہو بہو  
 وہی تصویر میں اُتار دیا.

انھوں دنوں اُسکی موسیٰ کی ایک لڑکی ودعوا ہو کر اپنے بچے  
 کو لئے اس کے یہاں آگئی تھی. دونوں دیکھوں کا من مل گیا.  
 دونوں ساتھ ساتھ کھومتے. وہ دن بہر اُسے جنگلوں میں چتر  
 بناتے دیکھتی. لڑکی کلاکار کے من میں بس گئی. کلاکار نے ایک  
 دن اُسے بازوں میں کس کر گले سے لگا لیا. وہ لڑکی اپنے بچے  
 کو چھاتی سے چٹائے بہرے کھیتوں میں سے پاگلوں کی طرح  
 دوڑتی اپنے کمر آتی اور بند کمرے میں کھیتوں دیتی رہی. ماں  
 باپ نے لڑکی کے ایمان پر وسنت کو بہت برا بھلا کہا. وسنت  
 کو بھی دکھ ہوا‘ پچھتاوا ہوا مگر اُسکی سمجھ میں یہ بات



रोगियों की दवा करता, बूढ़ों को तसल्ली देता और नंगों को अपने कपड़े उतार कर पहना देता। उसने उन्हें भूक से तड़पते देखा, ठंड में ठिठुरते देखा और बरखा में बे सहारे भीगते देखा। उसे उन्हीं में शरथराता ईमू नजर आया। वह उन्हीं की तस्वीरें बनाने लगा। अब उसने अपने पास पड़ोस की सच्ची तस्वीरें बनाईं। और जब उसके भाई थियो ने उन्हें देखा तो वह धक से रह गया। थियो कला का बड़ा जानकार और परखिया था। सारे पेगिस में उसकी बड़ी इज्जत थी। थियो को विश्वास हो गया कि उसका यह पागल भाई एक न एक दिन दुनिया का महान चित्रकार बनेगा। इसलिये वह निराशा में डूबे विन्सेन्ट को हिम्मत दिलाता रहता। उसके लिये नई नई किताबें, रंग और कपड़े भेजता, रुपया पैसा भेजता और उसे सलाह देता। उसके काम की आलोचना भी करता। पागल कलाकार की ऐसी सहायता करने से घर और बाहर चले। जान पहचान वाले सब थियो से नाराज हो गए। पर थियो तो भविष्य की एक बड़ी से बड़ी हस्ती की सेवा कर रहा था, उसने लोगों की बातों पर जरा भी ध्यान न दिया। अगर भाई हो तो लक्ष्मन के बाद थियो जैसा हो!

भोर के चक्कर में विन्सेन्ट वान गोक अपनी गंटी मचड़ों में बाँट आता, पैसा दे आता और खुद भूका ही काम में लग जाता। उसकी इस भलाई ने, भूक और सर्दी ने उसका बदन तोड़ दिया। वह अकसर बीमार और बेहोश रहने लगा। लेकिन उसके मन में अटल विश्वास था कि वह मसीह के सच्चे रास्ते पर चल रहा है। उसका क्लेम, ब्रुश, रंग और लकीरें नया इन्सान और नई

दरकों की दवा करना, बोरों को तसली देना और नलकों को लगे कपड़े उतार कर पहना देना। उस ने उन्हेन भूक से तड़पते देखा, ठंड में ठिठुरते देखा और बरखा में बे सहारे भीगते देखा। उसे उन्हेन में शरथराता ईसू नजर आया। वह उन्हेन की तस्वीरें बनाने लगा। अब उसने अपने पास पड़ोस की सच्ची तस्वीरें बनाईं। और जब उसके भाई थियो ने उन्हें देखा तो वह धक से रह गया। थियो कला का बड़ा जानकार और परखिया था। सारे पेगिस में उसकी बड़ी इज्जत थी। थियो को विश्वास हो गया कि उसका यह पागल भाई एक न एक दिन दुनिया का महान चित्रकार बनेगा। इसलिये वह निराशा में डूबे विन्सेन्ट को हिम्मत दिलाता रहता। उसके लिये नई नई किताबें, रंग और कपड़े भेजता, रुपया पैसा भेजता और उसे सलाह देता। उसके काम की आलोचना भी करता। पागल कलाकार की ऐसी सहायता करने से घर और बाहर चले। जान पहचान वाले सब थियो से नाराज हो गए। पर थियो तो भविष्य की एक बड़ी से बड़ी हस्ती की सेवा कर रहा था, उसने लोगों की बातों पर जरा भी ध्यान न दिया। अगर भाई हो तो लक्ष्मन के बाद थियो जैसा हो!

भोर के चक्कर में विन्सेन्ट वान गोक अपनी गंटी मचड़ों में बाँट आता, पैसा दे आता और खुद भूका ही काम में लग जाता। उस की इस बेहोशी ने, भूक और सर्दी ने उस का बदन तोड़ दिया। वह अकसर बीमार और बेहोश रहने लगा। लेकिन उसके मन में अटल विश्वास था कि वह मसीह के सच्चे रास्ते पर चल रहा है। उस का क्लेम, ब्रुश, रंग और लकीरें नया इन्सान और नई



वह दूर लन्दन चल देता, अपनी प्रेमिका की एक झलक पा जाने के लिये। एक बार जो पटुंचा तो उर्मला नई पोशाक में एक नौजवान की बाँट थामे गाड़ी में बैठ रही थी। बाजे बज रहे थे। आज उर्मला का व्याह हो गया था। आज वह पराई होगयी थ।

अपनी प्रेमिका की आखिरी झलक देखकर निराश, हताश और भूका व्यासा विन्सेन्ट अपने डेर की तरफ लौट पड़ा। रास्ते में बरफ के तूफान ने उसे सड़क पर सुला दिया। लन्दन ने उसका दिल तोड़ दिया था। वह लन्दन से बेलिजियम आ गया वहाँ के गिरजे में बदली करा ली और दिल में मुहव्यन का दर्द लिये हुए विन्सेन्ट ने ब्रश सँभाला और मुमडिबर बनने का इगदा किया। अब वह उर्मला के बजाय कला का पुजारी बन गया। मगर उस वक्त उसकी तस्वीरें टेढ़ी मेढ़ी भरी लकीरों के सिवा और कुछन होती थीं। कई वरम तक वह निराशा और नाउम्मीदों का हालत में जता रहा। भूक और बेवैनी का मंजिलों से गुजरता रहा।

बेलिजियम में जिस जगह वह रहता था वह कोयले की ग्यानों के झरब थी। खान के कामगारों में वह थम प्रचार करने जाया करता था। उनकी हालत देखकर वह काँप गया। उनकी नम नम तप उठी। दर्द से दिल भर गया। वह उन्हीं के चित्र बनाने में लग गया। फिर महीनों सोचता रहा और एक दिन उसने बाइबिल फेंक दी। कपड़े बाँट दिये। गिरजा की इमारत को आखिरी सलाम किया और पाब रोधी बनाने वाले एक गरीब मजदूर के घर रहने लगा वहाँ रहकर वह मजदूरों की सेवा करता। उनके बच्चों को पढ़ाता,

वह दूर लन्दन चल दिया। अल्मो प्रिंसिप का की एक जेहलक पाजाने के लिये। एक बार जो पहिंचा तो उर्मला रूमी पोशाक में एक सोजवान की बाले तहामे लगी महेन पहिंचे रसी रसी। पहिंचे पहिंचे रहे। अज उर्मला का बियाह हो किया रहा। अज वह पुरानी नुनून्नी तहेन।

अल्मो प्रिंसिपिका की अन्ही जेहलक देखिके नरुनस। एडानस और पहिंचा बियाहा। रसुसुत अपि कबि किये। एडानस एडानस महेन बरुफ के। एडानस ने नुसे सड़क पर सुला दिया। लन्दन ने नुसद नुसद नुसद पहिंचा रहा। वह लन्दन से बेलिजियम आया वहाँ के गिरजे में बदली करा ली और दिल में मुहव्यन का दर्द लिये हुए विन्सेन्ट ने ब्रश सँभाला और मुमडिबर बनने का इगदा किया। अब वह उर्मला के बजाय कला का पुजारी बन गया। मगर उस वक्त उसकी तस्वीरें टेढ़ी मेढ़ी भरी लकीरों के सिवा और कुछन होती थीं। कई वरम तक उसका हालत में जता रहा। भूक और बेवैनी का मंजिलों से गुजरता रहा।

बेलिजियम में जिस जगह वह रहता था वह कोयले की ग्यानों के झरब थी। खान के कामगारों में वह थम प्रचार करने जाया करता था। उनकी हालत देखकर वह काँप गया। उनकी नम नम तप उठी। दर्द से दिल भर गया। वह उन्हीं के चित्र बनाने में लग गया। फिर महीनों सोचता रहा और एक दिन उसने बाइबिल फेंक दी। कपड़े बाँट दिये। गिरजा की इमारत को आखिरी सलाम किया और पाब रोधी बनाने वाले एक गरीब मजदूर के घर रहने लगा वहाँ रहकर वह मजदूरों की सेवा करता। उनके बच्चों को पढ़ाता,







और अपने काम में उसे इन तस्वीरों पर पाँच पचीस रूपए से अधिक न मिले। और जब पहली बार बड़ी क्रीमत में उसकी तस्वीर बिकी तो उसे बड़ा अचरज हुआ। खरीदार मजाक तो नहीं कर रहा है ? लेकिन भूके वान गोक को क्या पता था कि ५० साल बाद उसका कोई न कमा सकने वाला चित्र इस इस लाख डालर में बिकेगा। और जब अमरीका या इंग्लैंड में इनकी नुमाइश होगी तो इस तरह भीड़ होगी कि पुलिस को डंडे चलाने पड़ेंगे ! लेकिन कितने कलाकारों का खून पी कर, कितनों के घर बजाइ कर संसार में कलाएँ फूली फलीं, यह शायद कभी किसी ने नहीं सोचा है !

पादरी के बेटे विन्सेन्ट वान गोक का जन्म हालैंड में सन १८५३ में हुआ था। अगर वह चाहता तो पादरी का पेशा अपना कर काफ़ी शान से रह सकता था। या अपने एक चाचा का, जो फौज में आला अफसर था, उसका वारिस बन सकता था। लेकिन वान गोक वारिस बनने के लिये पैदा नहीं हुआ था वह तो खयालों की दुनिया में रहने वालों, उन्हीं में जीने वालों को नया रास्ता दिखाने और नया संदेसा देने आया था !

१६ बरस की उम्र में वान गोक के बाप ने उसे 'गुगिलस' की पेरिस वाली दुकान पर भेज दिया। गुगिलस लन्दन और पेरिस की मशहूर तस्वीरें बेचनेवाली संस्था है। वान गोक का भाई धियो पेरिस वाली गुगिलस शाख का डायरेक्टर था।

पेरिस में उसने इतनी मेहनत और ईमानदारी से काम किया कि लन्दन भेज दिया गया। लन्दन में विन्सेन्ट का जीवन बहुत

और अल्प काम में से इन तस्वीरों पर पाँच पच्चेस रुपए से अहक न मले। और जब पहली बार बड़ी क्रीमत में उसकी तस्वीर बिकी तो उसे बड़ा अचरज हुआ। खरीदार मजाक तो नहीं कर रहा है ? लेकिन बेहोके वान गोक को क्या पता था कि ५० साल बाद उसका कोई न कमा सकने वाला चित्र इस इस लाख डालर में बिकेगा। और जब अमरीका या इंग्लैंड में इनकी नुमाइश होगी तो इस तरह भीड़ होगी कि पुलिस को डंडे चलाने पड़ेंगे ! लेकिन कितने कलाकारों का खून पी कर, कितनों के घर बजाइ कर संसार में कलाएँ फूली फलीं, यह शायद कभी किसी ने नहीं सोचा है !

पादरी के बेटे विन्सेन्ट वान गोक का जन्म हालैंड में सन १८५३ में हुआ था। अगर वह चाहता तो पादरी का पेशा अपना कर काफ़ी शान से रह सकता था। या अल्प एक चाचा का, जो फौज में आला अफसर था, उसका वारि बन सकता था। लेकिन वान गोक वारि बनने के लिये पैदा नहीं हुआ था। वह तो खयालों की दुनिया में रहने वालों, उन्हीं में जीने वालों को नया रास्ता दिखाने और नया संदेसा देने आया था !

१६ बरस की उम्र में वान गोक के बाप ने उसे 'गुगिलस' की पेरिस वाली दुकान पर भेज दिया। गुगिलस लन्दन और पेरिस की मशहूर तस्वीरें बेचनेवाली संस्था है। वान गोक का भाई धियो पेरिस वाली गुगिलस शाख का डायरेक्टर था।

पेरिस में उसने इतनी मेहनत और ईमानदारी से काम किया कि लन्दन भेज दिया गया। लन्दन में विन्सेन्ट का जीवन बहुत



खयाली तस्वीरों की जगह सबाई जाहिर करने वाले चित्रों का सिक्का जमाया.

और यह चित्र बनाने समय वह अच्छी इमारतों या रेशमों गद्देदार कुर्सियों और मेजों पर नहीं था. न उसके पास उनके शामिल होने का कोई जरिया ही था. हाँ, अगर वह चाहता तो बड़ी शान से रह सकता था. पर अपने आसपास की, लन्दन, पेरिस और हेग की जनता और अबाम की दुर्दशा देखकर उसे अभीर्गी के बिलासी जीवन से नफरत होगई थी और वह लुट खसोट का कट्टर विरोधी हो गया था

उसने अपने चित्र मोपड़ियों में, खेतों में बैठ कर बनाए. वरमती बरखात में वह बाहर घूमता. चिलचिलाती धूप उसे नहीं रोक पाती थी. गिरते बरफ में वह मैदानों में कहीं पड़ा मिलता. वान गोक केवल काफ़ी पी कर रह जाता. कभी काली रोटी खा कर रह जाता. कभी चाय और काफ़ी के वैसे न होने पर मिर्क गरम पानी ही पी कर रह जाता. एक दो दिन नहीं महीनों तक वह केवल पानी पी पी कर गुजर कर लेता था. या तो भोजन मिलता ही नहीं था या उसे खाने की सुब न रहती. वह अपना कलम और ब्रुश बगबर चलाग जाता ' उसके इस तप की तुलना महात्मा गांधी के उपवास से ही हो सकती है. अपने फाँकों के दिनों में भी अगर कोई आ जाता तो हमेशा वह सब कुछ उसे दे देता. और यह बात इतनी बढ़ गई कि उसके पास कभी कुछ न रहा बल्कि अगर यह कहें कि वह जन्म भर भूकों मरु तो भी कुछ गलत न होगा.

खयाली तस्वीरों की जगह सजातीय छापर करने वाले चित्रों का सिक्का जमाया.

और यह चित्र बनाने से ' अच्छी सजातों या रेशमों गद्देदार कुर्सियों और मेजों पर नहीं था. न उसके पास उनके शामिल होने का कोई जरिये ही था. हाँ, अगर वह चाहता तो बड़ी शान से रह सकता था. पर अपने आस पास की, लन्दन, पेरिस और हेग की जनता और अबाम की दुर्दशा देखकर उसे अभीर्गी के बिलासी जीवन से नफरत होगई थी और वह लुट खसोट का कट्टर विरोधी हो गया था.

उसने अपने चित्र जेम्सबोरों में, कपड़ों में बैठकर बनाए. बोस्टन बस्तात में वह बाहर गेहूँ चलाता देहों से नहीं रुक पाती थी. कटते बर्फ में वह मीदानों में कहीं पड़ा मिलता. वान गोक केवल काफ़ी पी कर रह जाता. कभी काली रोटी खा कर रह जाता. कभी चाय और काफ़ी के वैसे न होने पर मिर्क गरम पानी ही पी कर रह जाता. एक दो दिन नहीं महीनों तक वह केवल पानी पी पी कर गुजर कर लेता था. या तो भोजन मिलता ही नहीं था या उसे खाने की सुब न रहती. वह अपना कलम और ब्रुश बगबर चलाग जाता ' उसके इस तप की तुलना महात्मा गांधी के उपवास से ही हो सकती है. अपने फाँकों के दिनों में भी अगर कोई आ जाता तो हमेशा वह सब कुछ उसे दे देता. और यह बात इतनी बढ़ गई कि उसके पास कभी कुछ न रहा बल्कि अगर यह कहें कि वह जन्म भर भूकों मरु तो भी कुछ गलत न होगा.



लोगों, रईमों और शाहजादों का चित्रन नहीं किया बल्कि टूटी फूटी ओपडियाँ में भूके पेट रहने वाले मजदूरों, दुखियारों और पीड़ितों का ऐसा चित्रन किया जिसे देखने पर आज भी हमारा आँखों से आँसू निकल पड़ेगे। उसके ब्रुश ने ऊँचे खानदान की औरतों की परछाइयों नहीं देखीं। बल्कि भयानक सरदारी में कूड़ेखानों पर कोयला चुनती गरीब स्त्रियों की तस्वीरें उसने बनाईं। इन तस्वीरों के जरिये उसने कठोर से कठोर और संगदिल इनमान के दिल पर भी ऐसे हथौड़े चलाए कि उसकी धमक आज भी गूँज उठती है। जब उसने चित्रकारी शुरू की तो वह यह न समझ सका कि इन बड़े बड़े चित्रकारों के चित्रों की श्रियाँ और बच्चे दुनिया में चलते फिरते लोगों से मेल क्यों नहीं खाते ? इनमें कहीं भी जर्मन की तह में गहरी खानों में डूब कर काम करने वालों का चित्र क्यों नहीं है ? इनमें से किसी के मुँह पर उस भारी भूक की छार नहीं है जो गत दिन सड़क पर आरे मारे फिरने वाले गहगरी के चेहरों पर देखा जा सकती है ? बस, बिना उस्ताद की सहायता के ही, यहाँ सब तस्वीरें खींच देने को वह तैयार होगया। बरसों तपस्या करता रहा और एक दिन उसका सपना सच्चा होगया। जब उसके ऐसे चित्रों को लोगों ने देखा तो वह चकित रह गब और औरतें यह भयानक दृश्य देखकर बेहोश हो गईं ! बान गोक ने रंगीन और बनावटों तम्बोरों के बजाय खेतों और फसलों की सबी तस्वीरें खींचीं। आलू की खेती करने वाले एक परिवार के खाने की मेज वाला जो मशहूर चित्र “आलू खाने वाले” उसने बनाया वह हजारों बरस तक अमर रहेगा। इस तरह चित्रकला की तारीख में विन्सेन्ट बान गोक ने पहली बार

लुईस रीब्सों और शाहजादों का चित्रन सोचें कि ! बल्कि तुरन्त येवन्ती जेवन्तीयों में भूके पेट रहने वाले मजदूरों, दुखियारों और पीड़ितों का ऐसा चित्रन किया जिसे देखने पर आज भी हमारा आँखों से आँसू निकल पड़ेगे। उसके ब्रुश ने ऊँचे खानदान की औरतों की परछाइयों नहीं देखीं। बल्कि भयानक सरदारी में कूड़ेखानों पर कोयला चुनती गरीब स्त्रियों की तस्वीरें उसने बनाईं। इन तस्वीरों के जरिये उसने कठोर से कठोर और संगदिल इनमान के दिल पर भी ऐसे हथौड़े चलाए कि उसकी धमक आज भी गूँज उठती है। जब उसने चित्रकारी शुरू की तो वह यह न समझ सका कि इन बड़े बड़े चित्रकारों के चित्रों की श्रियाँ और बच्चे दुनिया में चलते फिरते लोगों से मेल क्यों नहीं खाते ? इनमें कहीं भी जर्मन की तह में गहरी खानों में डूब कर काम करने वालों का चित्र क्यों नहीं है ? इनमें से किसी के मुँह पर उस भारी भूक की छार नहीं है जो गत दिन सड़क पर आरे मारे फिरने वाले गहगरी के चेहरों पर देखा जा सकती है ? बस, बिना उस्ताद की सहायता के ही, यहाँ सब तस्वीरें खींच देने को वह तैयार होगया। बरसों तपस्या करता रहा और एक दिन उसका सपना सच्चा होगया। जब उसके ऐसे चित्रों को लोगों ने देखा तो वह चकित रह गब और औरतें यह भयानक दृश्य देखकर बेहोश हो गईं ! बान गोक ने रंगीन और बनावटों तम्बोरों के बजाय खेतों और फसलों की सबी तस्वीरें खींचीं। आलू की खेती करने वाले एक परिवार के खाने की मेज वाला जो मशहूर चित्र “आलू खाने वाले” उसने बनाया वह हजारों बरस तक अमर रहेगा। इस तरह चित्रकला की तारीख में विन्सेन्ट बान गोक ने पहली बार



## कलाकार वान गोक

( भाई 'परदेशी' )

१९ वीं सदी के पिछले बरसों में, सब से मशहूर चित्रकारों में वान गोक का नाम बड़ी इज्जत के साथ लिया जाता है। दर बसल वान गोक चित्रकार के रूप में संसार की महान आत्माओं का नमूना था। उसके जीवन की तुलना बड़े से बड़े सन्तों और महा-त्माओं से ही की जा सकती है।

बाइबिल के इस सत्य का वह आदर्श नमूना था कि 'अपने जीवन की कमी विरवास से पूरी कर ले !'

और योरप के इस विरवास का भी वह उदाहरन था कि 'मन भर बकलमंदी से रती भर श्रद्धा अधिक भागी है'।

चित्रकार के रूप में उसकी पहुँच और सफलता अचरज में डालने वाली थी। पर सफल चित्रकार बनने के लिये उसे जो जो कठिनाइयाँ और मुसीबतें फँलनी पड़ीं वह बड़े बड़े मूर्माओं ने देखी भी न होंगी। उसका जीवन तपस्या और साधना का जीवन था। उसकी हरेक सौस संघर्शों और तज़रबों में पल कर आगे बढ़ी थी। उसने क्रुद्धम पर भेद भाव, ना बगबगी और लूट खसोट के खिलाफ अपनी कभी न ख़तम होने वाली लड़ाई जारी रखी।

अपनी अचरज भरी तसवीरों में हमने गज महलों, भव्य इमारतों और आलीशान बागीचों में सैर करने वाले ऊँचे तबक़े के

## कलाकार वान गोक

( भाई 'परदेशी' )

१९ वीं सदी के पिछले बरसों में, सब से मशहूर चित्रकारों में वान गोक का नाम बड़ी इज्जत के साथ लिया जाता है। दर बसल वान गोक चित्रकार के रूप में संसार की महान आत्माओं का नमूना था। उसके जीवन की तुलना बड़े से बड़े सन्तों और महा-त्माओं से ही की जा सकती है।

बाइबिल के इस सत्य का वह आदर्श नमूना था कि 'अपने जीवन की कमी विरवास से पूरी कर ले !'

और योरप के इस विरवास का भी वह उदाहरन था कि 'मन भर बकलमंदी से रती भर श्रद्धा अधिक भागी है'।

चित्रकार के रूप में उसकी पहुँच और सफलता अचरज में डालने वाली थी। पर सफल चित्रकार बनने के लिये उसे जो जो कठिनाइयाँ और मुसीबतें फँलनी पड़ीं वह बड़े बड़े मूर्माओं ने देखी भी न होंगी। उसका जीवन तपस्या और साधना का जीवन था। उसने क्रुद्धम पर भेद भाव, ना बगबगी और लूट खसोट के खिलाफ अपनी कभी न ख़तम होने वाली लड़ाई जारी रखी।

अपनी अचरज भरी तसवीरों में हमने गज महलों, भव्य इमारतों और आलीशान बाग़िचों में सैर करने वाले ऊँचे तबक़े के



नया हिन्दू हिन्दू मुसलिम सवाल... अग्रेल सन् ५१

प्रेम के साथ पढ़ना और उनसे सबकु हसिल करना होगा. इन धर्मों और किताबों के फरक सब देस और काल के फरक हैं हमें इनमें ऊपर उठकर सब धर्मों के सार यानों उस मानव धर्म. उस प्रेम धर्म. उस मजहबे इरक. उस मजहबे इनसानियत को मानान करना होगा, जो आजकल के सब मत मताननों की जगह भावी मानव समाज का एकमात्र धर्म होगा. जिसकी बुनियादें सच्चाई, सदाचार और प्रेम पर होंगी और जो सब के अन्दर एक ईश्वर के दर्शन करते हुए आध्यात्मिक जीवन की उन गहराइयों तक पहुँचने और उन समस्याओं के हल करने की कोशिश करेंगे, जिन तक पहुँचना और जिनका हल करना इस पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का अन्तिम और असली लक्ष्य है. यही वह कीमती सबकु है, जो क़ुदरत हमें इस छोटी सी हिन्दू मुसलिम समस्या के ज़रिये सिखाना चाहती है हमारा देस इस समय इसी सच्चे मानवधर्म को पैदा करने की प्रसवेदना में से होकर निकल रहा है. सारा संसार शुभ दिन की बात जोह रहा है. ❀

—सुन्दरलाल

हमदो मुसलम سوال . ایوبیل سن ۵۱

پریم کے ساتھ پڑھنا اور ان سے سبق حاصل کرنا ہوگا . ان دھرموں اور کتابوں کے فرق سب دیس اور کال کے فرق ہیں . ہمیں ان سے اور ٹھیک سب دھرموں کے سار یعنی اس مانو دھرم . اس پریم دھرم . اس مذہب عشق . اس مذہب انسانیت کو سائنات کرنا ہوگا . جو آجکل کے سب مت معتقدوں کی جگہ بھاری مانو سماج کا ایک ماتر دھرم ہوگا . جسکی بنیادیں سچائی . سداچار اور برہہ پرہونگی اور جو سب کے اندر ایک ایشور کے درشن کرنے ہوئے آدینیاتمک حیون کی ان گہرائیوں تک پہنچنے اور ان سمسیاؤں کے حل کرنے کی کوشش کریگا جن تک پہنچنا اور جن کا حل کرنا اس پرنتوی نہ منشاء کے جھون کا استم اور اصلی لکش ہے . یہی وہ قیمتی سبق ہے جو قدرت ہمیں اس چھوٹی سی نخلدو مسلم سمسیا کے درپے سکھانا چاہتی ہے . ہمارا دیس اس سے سچے مانو دھرم کو پیدا کرنے کی پرسو ویدیا میں سے ہوکر نکل رہا ہے . سارا سلسلہ شبہ و ان کی بات جوہ رہا ہے . \*

—سندر لال

❀ 'پ্রেमी अभिनन्दन प्र'ब' से.

\* 'प्रेमी अभिनन्दन करने' से .











और विश्वासों में, अपनी पूजा और इबादत के तरीकों में पूरी आजादी हासिल न हो. हमारे देस के अन्दर भी तरह तरह के विचारों का हज़ारों बरस से एक दूसरे के साथ रहना और आखीर में घुल मिल जाना इस बात को साबित कर रहा है कि हम खिन्दगी के इस सुनहरे उसूल को काफ़ी जानते और समझते रहे हैं. बहुत सी बातों में हिन्दुओं और जैनियों, वैश्वों और शाक्तों, सनातन-धर्मियों और आर्यसमाजियों, वर्नाश्रमियों और ब्राह्मणों में जितना उसूलो क्रक है, आर्य समाजियों और सुसलमानों या मामूलों हिन्दुओं और सुसलमानों में उससे कहीं कम है. बात मिक इनती है, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, कि हमारे इतिहास का यह आखिरी मेल जाल अभी पूरा नहीं हो पाया था कि बाहरी ताकतों ने छेड़कर हमारी हालत को थोड़ा सा जटिल कर दिया और कुछ देर के लिये देस में एक संकट पैदा हो गया.

हमें अब सिक दो बातें समझनी हैं. एक यह कि मजहबी रीत रिवाजों या पूजा पाठ के तरीकों के अलग अलग होत हुए भी हमें देस में एक मिली जुली समाजी खिन्दगी. मिला जुला रहन सहन. मिली जुली खबान पैदा करनी है. बढ़ानी है और उसे कायम रखना है. रीत रिवाज सब ऊपरी चीजें हैं. हर देस में वह बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे. जिस तरह शरीर का बदलना जब नव ज़रूरी हो जाता है, उसी तरह इन ऊपरी रीत रिवाजों का बदलते रहना भी समाजी खिन्दगी के लिये जरूरी होता है हिन्दुओं की जन्मना जालि, जात पात और छुआछूत, किसी भी दूसरे के छूने से किसी के भोजन और पानी का नापाक हो जाना, एक ऐसी सड़ी गली

नया हिन्द  
हलदः मुसलम सुवाल....  
अप्रैल सन् '५१

ऊर श्वासों में. अली पूजा और عبادत के طریقों में युरी आली  
हाल न हो. हमारे देस के अन्दर भी तरह तरह के रिवाजों का  
हजारों बरस से एक दूसरे के साथ रहना और अखिर में कल  
जाना अस बात को नाबित कर रहा है कि हम खिन्दगी के इस सुनहरे उसूल  
को काफ़ी जानते और समझते रहे हैं. बहुत सी बातों में  
हलदुओं और खिन्दुओं, विश्वासों और शाक्तों, सनातन-धर्मियों और  
आर्य समाजियों, वर्नाश्रमियों और ब्राह्मणों में जितना उसूलो फ़रक  
है, आर्य समाजियों और मुसलमानों या मामूलों में उससे कहीं कम है. बात मिक इनती है, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, कि हमारे इतिहास का यह आखिरी मेल जाल अभी पूरा नहीं हो पाया था कि बाहरी ताकतों ने छेड़कर हमारी हालत को थोड़ा सा जटिल कर दिया और कुछ देर के लिये देस में एक संकट पैदा हो गया.

हमें अब सिर्फ दो बातें समझनी हैं. एक ये कि मजहबी रीत रिवाजों या पूजा पाठ के तरीकों के अलग अलग होते हुए भी हमें देस में एक मिली जुली समाजी खिन्दगी. मिला जुला रहन सहन. मिली जुली खबान पैदा करनी है. बढ़ानी है और उसे कायम रखना है. रीत रिवाज सब ऊपरी चीजें हैं. हर देस में वह बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे. जिस तरह शरीर का बदलना जब नव ज़रूरी हो जाता है, उसी तरह इन ऊपरी रीत रिवाजों का बदलते रहना भी समाजी खिन्दगी के लिये जरूरी होता है. हलदुओं की खिन्दगी जालि, जात पात और छुआछूत, किसी भी दूसरे के छूने से किसी के भोजन और पानी का नापाक हो जाना, एक ऐसी सड़ी गली



और मुसलिम कलचर खतरों में है', 'हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये हिन्दू संगठन जरूरी है', 'इस्लाम की हिफाजत के लिये मुसलमानों की अलग तन्वीम लाजिमी है', शुद्धि और तबलीगा, बोलने चालने और लिखने पढ़ने की ज़बान को एक तरफ संस्कृत के और दूसरी तरफ फ़ारसी और अरबी के ज़्यादा नज़दीक लाने की कोशिशें, राश्ट्री कान्फ़रेंसों और राश्ट्री संस्थाओं तक में हिन्दू रंग डंग और हिन्दू तौर तरीकों को बरतने और बमकाने का लालसा—यह सब चीज़ें इस बात को साबित कर रही हैं कि हमने अभी तक अपनी रीत रिवाजों के फ़ाक़ों से उठकर एक मिला जुली क्रौमां ज़िन्दगी बसर करने के उस सबक को पूरी तरह नहीं सीखा. जो कुदरत हमें इन दोनों धर्मों को एक जगह लाकर सिखाना चाहती थी.

रोग का इलाज भी साफ़ है. इस सारी भूल मुनइयों में से हम चाहें तो अपना रास्ता साफ़ देख सकते हैं. रास्ता वही है. जो इससे पहले की टक्करों में से निकलने का रास्ता था. जबतक आदमी आदमी है, उसमें तरह तरह के विचारों का पैदा होना. उसके तरह तरह के विश्वास और तरह तरह की मानताएँ होना कुदरती है. यह चीज़ वैसी ही कुदरती है, जैसी एक विशाल बन या सुन्दर उपवन के अन्दर तरह तरह की बनस्पतियाँ और रंग बिरंगे फूलों का उगना. हरेक का अपना सौन्दर्य है. हरेक की अपनी उपयोगिता है. जिनके आँखें हैं, उन्हें इस विचित्रता में ही. इस रंग बिरंगे पन में ही. कुदरत के बाग़ का असली सौन्दर्य दिखाई देगा. इस विचित्रता में से ही मानव विकास का रास्ता मिलता है. कोई देस उस समय तक सभ्य नहीं कहा जा सकता, जबतक कि उसके रहने वालों को अपने विचारों

और मुसलिम कलचर खतरों में है. 'हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये हिन्दू संगठन जरूरी है'. 'इस्लाम की हिफाजत के लिये मुसलमानों की अलग तन्वीम लाजिमी है', 'शुद्धि और तबलीगा', 'बोलने चालने की ज़बान को एक तरफ संस्कृत के और दूसरी तरफ फ़ारसी और अरबी के ज़्यादा नज़दीक लाने की कोशिशें', 'शुद्धि कालिग्राफी और राश्ट्रीय संस्थाओं तक में हिन्दू रंग डंग और हिन्दू तौर तरीकों को बरतने और बमकाने का लालसा—यह सब चीज़ें इस बात को साबित कर रही हैं कि हमने अभी तक अपनी रीत रिवाजों के फ़ाक़ों से उठकर एक मिला जुली क्रौमां ज़िन्दगी बसर करने के उस सबक को पूरी तरह नहीं सीखा. जो कुदरत हमें इन दोनों धर्मों को एक जगह लाकर सिखाना चाहती थी.

रोग का इलाज भी साफ़ है. इस सारी भूल मुनइयों में से हम चाहें तो अपना रास्ता साफ़ देख सकते हैं. रास्ता वही है. जो इससे पहले की टक्करों में से निकलने का रास्ता था. जबतक आदमी आदमी है, उसमें तरह तरह के विचारों का पैदा होना. उसके तरह तरह के विश्वास और तरह तरह की मानताएँ होना कुदरती है. यह चीज़ वैसी ही कुदरती है, जैसी एक विशाल बन या सुन्दर उपवन के अन्दर तरह तरह की बनस्पतियाँ और रंग बिरंगे फूलों का उगना. हरेक का अपना सौन्दर्य है. हरेक की अपनी उपयोगिता है. जिनके आँखें हैं, उन्हें इस विचित्रता में ही. इस रंग बिरंगे पन में ही. कुदरत के बाग़ का असली सौन्दर्य दिखाई देगा. इस विचित्रता में से ही मानव विकास का रास्ता मिलता है. कोई देस उस समय तक सभ्य नहीं कहा जा सकता, जबतक कि उसके रहने वालों को अपने विचारों







तरह के फल, नए फूल, नए नए जानवर, नई तरह के कपड़े इस मुल्क में आए और न जाने कितने नए नए खाने और नई नई मिठाइयाँ जारी हुईं. आजकल के दिल्ली या आगरे या मथुरा के किसी भी हलवाई की दुकान की मिठाइयाँ और ढाका और मुर्शिदाबाद के रेशमी और सूती कपड़ों के नाम हमें अपनी ईजाद के समय की याद दिला रहे हैं.

यह मेल मिलाप की लहर हमारे रुहानी यानी आध्यात्मिक जीवन में भी गहरी चली गई थी. कबीर, दादू, नानक, पलटू, चैतन्य, तुकाराम, बाबा फरीद, तुलसीदास, मुईनुद्दीन चिश्ती और यारी साहब जैसे सैकड़ों हिन्दू और मुसलमान फकीर हिन्दू धर्म और इसलाम, दोनों के ऊपरी कर्मकाण्डों से ऊपर उठकर हमें प्रेम धर्म का सन्देश सुना रहे थे और देस भर में चारों ओर प्रेम के सोते बहा रहे थे हिन्दू धर्म ने इसलाम के सम्पर्क से अपने अन्दर अनेक सुधार का लहरें पैदा कीं. अनेक हिन्दू आचार्यों ने जात पात और जुआखून को तोड़ने और आदमी आदमी के बीच बराबरी कायम करने का उपदेश दिया. हिन्दू धर्म के सम्पर्क से इसलाम का खरून से ज्यादा उकीलापन वा कटीलापन भी टूटा. मुसलमान फकीरों और महात्माओं के मजारों पर बसन्त के दिन बसन्ती चादरें चढ़ाई जाने लगीं. मुसलमान बादशाहों के दरबारों में होली, दिवाली, रक्षाबन्धन और दशाहरा जगह जगह उसी प्रेम, उसी जोश और उसी उमंग से मनाया जाता था, जिस तरह हिन्दू दरबारों में. कोई सन्देश नहीं कि अगर बोझा सा और समय मिल गया होता तो यह देस उस जमाने के हिन्दू धर्म और इसलाम के मेल से अपने अन्दर उसी तरह एक

نہا ہلند ہلدو مسام سوال.....

اپریل سن ۵۱

طرح کے پہلے، نیئے پہول نیئے نیئے جانور، نیئی طرح کے کپڑے ایس ملک مہول آئی اور نہ حائے کتے نیئے نیئے کھانے اور نیئی نیئی مٹھائیاں جڑی ہونہوں . آجکل کے دلی یا آگرے یا مہترا کے کسی یہی حلوائی کی دوکان کی مٹھائیاں اور تھاکہ اور مرشدآباد کے دیشمی اور سوتی کپڑوں کے نام مہول ایکی ایجان کے سے کی یاد دلا دے مہول .

پچھلے مہل ملاپ کی لہر ہمارے روحانی یعنی آدمیاسک جہنوں میں بھی لہری چلی گئی تھی۔ کہہ: داد، تاک، یلتو، چیتندیہ، تارہ، بابا فرید، بے شاہ، معین الدین چشتی اور یاری صاحب جیسے سکھوں ہندو اور مسلمان فقہر ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے واپس کر کے کافور سے واپس آتے ہیں۔ دھرم کا سلسلہ سدا رہے تھے اور دیس بہر میں چاروں اور پریم کے سونے بہا رہے تھے۔ ہندو دھرم نے اسلام کے سہرک سے اپنے اندر انہک سدھار کی لہروں پیدا کیں۔ انہک ہندو آچاریوں نے جات پات اور چھو چھوت کو توڑنے اور آدمی آدمی کے بھیج برابر قائم کرنے کا اُپدیش دیا۔ ہندو دھرم کے سہرک سے اسلام کا ضرورت سے زیادہ نکھلنے یا کٹھیلنے بھی توڑا۔ مسلمان فقہروں اور مہاتماؤں کے مزاروں پر بسنت کے دن بسنتی چادریں چڑھائی جاتے لکھیں۔ مسلمان بادشاہوں کے درباروں میں عورتی، دیوالی، رکشا بندھن اور دسہرہ جگہ جگہ اُسی پریم، اُسی جوش اور اُسی اُمنگ سے ملایا جاتا تھا جس طرح ہندو درباروں میں۔ کوئی صدیہ نہیں کہ اگر تھوڑا سا اور سے مل گیا ہوتا تو یہ دیس اُسی زمانے کے ہندو دھرم اور اسلام کے مہل سے اپنے اندر اُسی طرح ایک



रही थी. आशा होती थी कि देस में समन्वय की पुरानी परम्परा को कायम रखते हुए एक दिन यह प्रेम की लहर सारे मैदान को ढक लेगी और देस के अन्दर उस नई संस्कृति, नए समाज और नई धार्मिक करुणा को जन्म देगी, जो अलग अलग तंग खयालों से बड़ कर और उनसे ऊँची होगी.

इन तीनों अलग अलग लहरों की हम एक छोटी सी मिसाल ईद पत्थरों की ठोस शकल में देना चाहते हैं. फर्जे नामीर यानी गृह निर्माण कला में अगर हमें एक तरफ इसलाम से पहले के पुराने हिन्दू आदर्शों को देखना हो तो इक्विन के मनिंग हैं. कुर्सी के ऊपर कुर्सी, कंगूरे के ऊपर कंगूरा, ठोस पत्थर. आसमान से बात करते हुए कलश और मन्दिर के चारों तरफ की दीवारों की एक एक ईँच जगह मूर्तियों से ढकी, ठीक वसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान के घने जंगल. इन इमारतों का अपना एक गौरव है. दूसरी तरफ बाहर से आने वाले इसलामी आदर्शों का नमूना—अजमेर और दिल्ली की मसजिदें, साफ सफाचट दीवारें, जिनमें सिवाय अल्लाह के कोई चीज दिखाई न दे, गोल सफेद गुम्बद और ऊँचे मीनार, अगरब के बयाबान रेगिस्तान की याद दिलाने वाले. इनकी भी अपनी एक अलग शान है. तीसरे इन दोनों आदर्शों का मेल, इनकी एक दूसरे पर क़लम, इनका प्रेमालिंगन अगर देखना हो तो आगरा का ताज, जो दुनिया की सबसे सुन्दर इमारतों में गिना जाता है और जो आज भी इस देश के सड़े गले जिस्म पर भुंमर की तरह लटक रहा है.

... ..

रही नहीं. आशा होती थी कि देस में समन्वय की पुरानी परम्परा को कायम रखते हुए एक दिन यह प्रेम की लहर सारे मैदान को ढक लेगी और देस के अन्दर उस नई संस्कृति, नए समाज और नई धार्मिक करुणा को जन्म देगी, जो अलग अलग तंग खयालों से बड़ कर और उनसे ऊँची होगी.

इन तीनों अलग अलग लहरों की हम एक छोटी सी मिसाल ईद पत्थरों की ठोस शकल में देना चाहते हैं. फर्जे नामीर यानी गृह निर्माण कला में अगर हमें एक तरफ इसलाम से पहले के पुराने हिन्दू आदर्शों को देखना हो तो इक्विन के मनिंग हैं. कुर्सी के ऊपर कुर्सी, कंगूरे के ऊपर कंगूरा, ठोस पत्थर. आसमान से बात करते हुए कलश और मन्दिर के चारों तरफ की दीवारों की एक एक ईँच जगह मूर्तियों से ढकी, ठीक वसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान के घने जंगल. इन इमारतों का अपना एक गौरव है. दूसरी तरफ बाहर से आने वाले इसलामी आदर्शों का नमूना—अजमेर और दिल्ली की मसजिदें, साफ सफाचट दीवारें, जिनमें सिवाय अल्लाह के कोई चीज दिखाई न दे, गोल सफेद गुम्बद और ऊँचे मीनार, अगरब के बयाबान रेगिस्तान की याद दिलाने वाले. इनकी भी अपनी एक अलग शान है. तीसरे इन दोनों आदर्शों का मेल, इनकी एक दूसरे पर क़लम, इनका प्रेमालिंगन अगर देखना हो तो आगरा का ताज, जो दुनिया की सबसे सुन्दर इमारतों में गिना जाता है और जो आज भी इस देश के सड़े गले जिस्म पर भुंमर की तरह लटक रहा है.

... ..



बात में एक राय है कि, उस जमाने में दुनिया का कोई देस धन दौलत, सुख चैन, खुशहाली, तिजारत और उद्योग धन्धों में हिन्दु-रतान का मुकाबला नहीं कर सकता था. राजाओं राजाओं में लड़ा-इयाँ होती थीं. पर जिस तरह कहीं कहीं हिन्दू और मुसलमान लड़े हैं उसी तरह हिन्दू हिन्दू और मुसलमान मुसलमान भी आपस में लड़े हैं. बाहर से हमला करने वाले मुसलमानों के खिलाफ देस के मुसलमान हुकमरानों का डट कर लड़ना और यहाँ के हिन्दू राजाओं का उनके साथ देना एक मामूलो घटना थी. मुसलमान बादशाहों की फौज में हिन्दू सिपाही और हिन्दू सेनापति, और हिन्दू राजाओं की सेना में मुसलमान सिपाही और मुसलमान सेनापति. ऐसे ही हिन्दू राजाओं के मुसलमान प्रधान मन्त्री और मुसलमान बादशाहों के हिन्दू वजीर आजम सात सौ बरस के भारतीय इतिहास में क्रम क्रम पर देखने को मिलते हैं.

उस सारे जमाने में हमें मुल्क के जीवन में तीन साफ अलग अलग लहरें बहती हुई दिखाई देती हैं. एक इसलाम के आने से पहले की ब्राह्मणों के प्रभुत्व, जात पात और छूआ छूत की तंग हिन्दू लहर. दूसरी फिरोज (कर्मकांड) का कट्टरता से पालन करने वाली तंग इसलामो लहर और तीसरी दोनों के मेल जोल की वह प्रेम की लहर, जो दोनों की तंगब्यालियों से ऊपर उठ कर दोनों के गुणों को अपने अन्दर लिये हुए थी. रहन सहन, खान पान, चित्रकारी, मकानों का बनाना, धर्म और संस्कृति, सब में यह तीनों लहरें साफ दिखाई दे रही थीं. इनमें धीरे धीरे तंग ख्याली की दोनों लहरें सुलती जाती थीं और मेल मिलाप की लहर बढ़ती और फैलती जा

नया हलद  
अस बात में एक बातें हैं कि अस जमाने में दुनिया का कौनो देस देहन दौलत सुख चैन. खुश हाली. तिजारात और फिरोज देहलद में हिन्दुस्तान का मुकामले नहें कर सकत नहें. राजाओं राजाओं में लड़ाइयाँ होती नहें. पर जिस तरह कहीं कहीं हिन्दू और मुसलमान लड़े हैं उसी तरह हिन्दू हिन्दू और मुसलमान मुसलमान भी आपस में लड़े हैं. बाहर से हमले करने वाले मुसलमान के खिलाफ देस के मुसलमान हुकमरानों का डट कर लड़ना और यहाँ के हिन्दू राजाओं की फौज में हिन्दू सिपाही और हिन्दू सेनापति. और हिन्दू राजाओं की सेना में मुसलमान सिपाही और मुसलमान सेनापति. ऐसे ही हिन्दू राजाओं के मुसलमान प्रधान मन्त्री और मुसलमान बादशाहों के हिन्दू वजीर आजम सात सौ बरस के भारतीय इतिहास में क्रम क्रम पर देखने को मिलते हैं.

अस सारे जमाने में हमें मुल्क के जीवन में तीन साफ अलग अलग लहरें बहती हुई दिखाई देती हैं. एक 'इसलाम' के आने से पहले की ब्राह्मणों के प्रभुत्व, जात पात और छूआ छूत की तंग हिन्दू लहर. दूसरी फिरोज (कर्मकांड) का कट्टरता से पालन करने वाली 'इसलाम' लहर और तीसरी दोनों के मेल जोल की 'प्रेम' की लहर, जो दोनों की तंगब्यालियों से ऊपर उठ कर दोनों के गुणों को अपने अन्दर लिये हुए थी. रहन सहन, खान पान, चित्रकारी, मकानों का बनाना, धर्म और संस्कृति, सब में यह तीनों लहरें साफ दिखाई दे रही थीं. इनमें धीरे धीरे तंग ख्याली की दोनों लहरें सुलती जाती हैं और मेल मिलाप की लहर बढ़ती और फैलती जा



नया हिन्दू

हिन्दू मुसलिम सवाल....

अप्रैल सन् १९११

इसलाम के आने के साथ देस में नई टक्करों का होना क्रुद्धती था. टक्करें शुरू हुई. देस के अलग अलग हिस्से में और जिन्द्गी के अलग अलग पहलुओं में उन्होंने अलग अलग रूप लिये. फिर भी सात सौ आठ सौ बरस तक देस के इस सिरे से उम सिरे तक सैकड़ों शहरों और हजारों गाँवों में हिन्दू और मुसलमान प्रेम के साथ मिलजुल कर रहते रहे. इस सारे समय में बाहर में आकर देस में बस जाने वाले मुसलमानों की तादाद कुछ हजार से ज्यादा नहीं थी. बाकी सब लाखों और करोड़ों आदमी. जिन्होंने इसलाम धर्म को अपनाया, यहीं के रहने वाले और यहीं के हिन्दू माना पिता की औलाद थे. हर गाँव और हर शहर में हिन्दू और मुसलमान एक ही बबान बोलते थे. एक दूसरे के त्यागों और तक्रारों, व्याह. शादियों और रीति रिवाजों में शरीक होते थे. एक दूसरे को 'चाचा' 'ताया' 'मामा' 'भाई' वगैरा कह कर पुकारते थे. ज्यादातर मुसलमान बरानों में आज तक सैकड़ों हिन्दू रस्में पालन की जाती हैं. जैसे दसूतन, साजगिरह, कनछेदन, नकछेदन, शादी में दगबाजे का चार. तेल चढ़ाना, हल्दी चढ़ाना, कलेवा बाँधना, कंगना बाँधना, मँडवा. ऐसे ही हिन्दुओं ने कासी रस्में मुसलमानों से ली. जैसे. छोड़ी चढ़ना, जामा, सेहरा. शहबाला. दोनों ने मिल कर इस देस की कारीगरी, चित्रकारी, उद्योग धन्दे, कला कौशल. तिजारत, संगीत वगैरा को अपूर्व वकति दी. मुगलों की सलतनत का जमाना इन सब बातों में इस देस का सब से ज्यादा तरक्की का जमाना माना जाता है. मस्तरहवी मन्त्री इमवा के आगार और अठारहवी मन्त्री के शुरू

नया हल्द

हल्दो मसाम सवाल....

अप्रैल सन् १९११

इसलाम के आने के साथ देस में नई टक्करों का होना क्रुद्धती था. टक्करें शुरू हुई. देस के अलग अलग हिस्से में और जिन्द्गी के अलग अलग पहलुओं में उन्होंने अलग अलग रूप लिये. फिर भी सात सौ आठ सौ बरस तक देस के इस सिरे से उम सिरे तक सैकड़ों शहरों और हजारों गाँवों में हिन्दू और मुसलमान प्रेम के साथ मिलजुल कर रहते रहे. इस सारे समय में बाहर में आकर देस में बस जाने वाले मुसलमानों की तादाद कुछ हजार से ज्यादा नहीं थी. बाकी सब लाखों और करोड़ों आदमी. जिन्होंने इसलाम धर्म को अपनाया, यहीं के रहने वाले और यहीं के हिन्दू माना पिता की औलाद थे. हर गाँव और हर शहर में हिन्दू और मुसलमान एक ही बबान बोलते थे. एक दूसरे के त्यागों और तक्रारों, व्याह. शादियों और रीति रिवाजों में शरीक होते थे. एक दूसरे को 'चाचा' 'ताया' 'मामा' 'भाई' वगैरा कह कर पुकारते थे. ज्यादातर मुसलमान बरानों में आज तक सैकड़ों हिन्दू रस्में पालन की जाती हैं. जैसे दसूतन, साजगिरह, कनछेदन, नकछेदन, शादी में दगबाजे का चार. तेल चढ़ाना, हल्दी चढ़ाना, कलेवा बाँधना, कंगना बाँधना, मँडवा. ऐसे ही हिन्दुओं ने कासी रस्में मुसलमानों से ली. जैसे. छोड़ी चढ़ना, जामा, सेहरा. शहबाला. दोनों ने मिल कर इस देस की कारीगरी, चित्रकारी, उद्योग धन्दे, कला कौशल. तिजारत, संगीत वगैरा को अपूर्व वकति दी. मुगलों की सलतनत का जमाना इन सब बातों में इस देस का सब से ज्यादा तरक्की का जमाना माना जाता है. मस्तरहवी मन्त्री इमवा के आगार और अठारहवी मन्त्री के शुरू



और चतुर्भुज बिरजु की पूजा को ही जारी रखना चाहते थे. बहसें हुई. गिरोह के गिरोह मिटा डाले गए. आखीर में कई हजार बरस की टक्करों के बाद जब दोनों धाराएँ गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिल गईं तो आज यह पता लगाना भी मुश्किल है कि इस मिली जुली जीवन धारा का कौन सा कन आर्य है और कौन सा द्राविड़. मित्र, वरुन और इन्द्र के मन्दिर हिन्दुस्तान भर में आज दूँदू से भी मिलने मुश्किल हैं, पर द्राविड़ जाति के शिव आज करोड़ों के देव देव महादेव बन कर लगभग हर मन्दिर के अंदर मौजूद हैं. चतुर्भुज बिरजु इतने अपना लिये गए कि हिन्दुओं के सब अवतार बिरजु के अवतार गिने जाते हैं. यह उस महान संगम की सिर्फ एक छोटी सी मिसाल है.

जिस तरह की टक्कर आर्यों और द्राविड़ों में रही, वसी तरह की बोड़ी बहुत उसके बाद के जमाने में हिन्दुओं और जैनियों में और आठवीं सदी ईसवी तक शैवों और शाक्तों में, यहाँ तक कि राम के भक्तों और कुरन के वपासकों में बराबर होती रही. इन टक्करों में एक दूसरे का बहिरकार भी हुआ और लाठियाँ और तलबारें भी चलीं. आज तक—'हस्तिना पौड्यमानोऽपि न गच्छेत जैनमन्दिरम्' (हाथी से भी पोछा किये जाने पर न जाय जैन मंदिर में) जैसे फिकरे देस के साहित्य से मिटे नहीं हैं. यह सब टक्करें एक क्रूरती ढंग से पैदा हुई और इतने ही क्रूरती ढंग से मिट गईं. पुराने जमाने के यह सब सवाल आज इतिहास की एक कहानी रह गए हैं.

अप्रैल सन् १९११

हन्दु मुसलम सवाल....

नया हन्द

और चतुर्भुज बिरजु की पूजा को ही जारी रखना चाहते थे. बहसें हुई. गिरोह के गिरोह मिटा डाले किये. आखीर में कई हजार बरस की टक्करों के बाद जब दोनों धाराएँ गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिल गईं तो आज यह पता लगाना भी मुश्किल है कि इस मिली जुली जीवन धारा का कौन सा कन आर्य है और कौन सा द्राविड़. मित्र, वरुन और इन्द्र के मन्दिर हिन्दुस्तान भर में आज दूँदू से भी मिलने मुश्किल हैं, पर द्राविड़ जाति के शिव आज करोड़ों के देव देव महादेव बन कर लगभग हर मन्दिर के अंदर मौजूद हैं. चतुर्भुज बिरजु इतने अपना लिये गए कि हिन्दुओं के सब अवतार बिरजु के अवतार गिने जाते हैं. यह उस महान संगम की सिर्फ एक छोटी सी मिसाल है.

( १०१ )

जिस तरह की टक्कर आर्यों और द्राविड़ों में रही, वसी तरह की टक्करें आठवीं सदी ईसवी तक शैवों और शाक्तों में, यहाँ तक कि राम के भक्तों और कुरन के वपासकों में बराबर होती रही. इन टक्करों में एक दूसरे का बहिरकार भी हुआ और लाठियाँ और तलबारें भी चलीं. आज तक—'हस्तिना पौड्यमानोऽपि न गच्छेत जैनमन्दिरम्' (हाथी से भी पोछा किये जाने पर न जाय जैन मंदिर में) जैसे फिकरे देस के साहित्य से मिटे नहीं हैं. यह सब टक्करें एक क्रूरती ढंग से पैदा हुई और इतने ही क्रूरती ढंग से मिट गईं. पुराने जमाने के यह सब सवाल आज इतिहास की एक कहानी रह गए हैं.



से इनकार करने वाले. कोई मांस खाने को अपने धर्म का ज़रूरी हिस्सा मानने वाले और कोई उसे पाप समझने वाले. कोई देवी के सामने हवन में मंदिरा चढ़ाने वाले और कोई मंदिरा छूने तक को गुनाह समझने वाले बग़ैरा बग़ैरा. लेकिन यह सब लोग किसी तरह एक गिरोह में गिन लिये जाते थे, जिसे हिन्दू कहा जाता था. थोड़े से ईसाई और बहूदी भी देस के किसी किसी कोने में थे, पर देस की आम जिन्दगी पर उनका असर नहीं के बराबर था. ऐसी हालत में एक नया मजहब इस देस में आया—इसलाम. इस नए धर्म के मानने वाले एक ईश्वर को मानते थे. जात पात और छुआ छूत, जो हिन्दू धर्म का एक खास हिस्सा बन चुकी थी, इनमें बिलकुल न थी. मूर्ति पूजा को वह गुनाह समझते थे. वह एक निराकार के उपासक थे. उनमें मामूली आदिमियों और ईश्वर के बीच किसी पुरोहित की ज़रूरत न थी. आदमी आदमी सब बराबर. लेकिन उनके धर्म को जन्म देने वाले महापुरुष हज़रत मुहम्मद अरब में जन्मे थे. हिन्दुस्तान में नहीं. उनकी खास मजहबी किताब कुगन आग़वी में लिखी हुई थी. मंस्कृत या किसी हिन्दुस्तानी ज़बान में नहीं.

हिन्दू धर्म के साथ इसलाम की थोड़ी बहुत टक्कर होना कुदरती था. यह टक्कर कोई नई चीज़ नहीं थी. इस देस के इतिहास में इस से पहले पुराने द्राविड़ धर्म और नए आर्य धर्म में कई हज़ार बरस तक टक्कर रह चुकी थी. हज़ारों बरस तक वेदों के मानने वाले आर्य अपने वैदिक देवताओं जैसे मित्र, बरुन और इन्द्र की पूजा को मुख्य समझते थे यहाँ के असली बाशिन्दे अपने पुराने देवताओं, शिव

से अंज़ार करने वाले. कौनो मांस खाने को अपने देहम का ضرूरी हिस्सा मानने वाले और कौनो उसे पाप समझने वाले. कौनो देवी के सामने हवन में मंदिरा चढ़ाने वाले और कौनो मंदिरा चढ़ाने तक को गुनाह समझने वाले وغیره وغیره. लेकिन यह सब लोग किसी तरह एक गिरोह में गिन लिये जाते थे, जिसे हिन्दू कहा जाता था. थोड़े से ईसाई और बहूदी भी देस के किसी किसी कोने में थे, पर देस की आम जिन्दगी पर उनका اثر नहीं के बराबर था. ऐसी हालत में एक नया मजहब इस देस में आया—इसलाम. इस नए धर्म के मानने वाले एक ईश्वर को मानते थे. जात पात और छुआ छूत, जो हिन्दू धर्म का एक खास हिस्सा बन चुकी थी, उन में से बिलकुल न थी. मूर्ति पूजा को वह गुनाह समझते थे. वह एक निराकार के उपासक थे. उनमें मामूली आदिमियों और ईश्वर के बीच किसी पुरोहित की ज़रूरत न थी. आदमी आदमी सब बराबर. लेकिन उनके धर्म को जन्म देने वाले महापुरुष हज़रत मुहम्मद अरब में जन्मे थे. हिन्दुस्तान में नहीं. उनकी खास मजहबी किताब कुगन आग़वी में लिखी हुई थी. मंस्कृत या किसी हिन्दुस्तानी ज़बान में नहीं.

हिन्दू धर्म के साथ इसलाम की थोड़ी बहुत टक्कर होना कुदरती था. यह टक्कर कोई नई चीज़ नहीं थी. इस देस के इतिहास में इस से पहले पुराने द्राविड़ धर्म और नए आर्य धर्म में कई हज़ार बरस तक टक्कर रह चुकी थी. हज़ारों बरस तक वेदों के मानने वाले आर्य अपने वैदिक देवताओं जैसे मित्र, बरुन और इन्द्र की पूजा को मुख्य समझते थे. यहाँ के असली बाशिन्दे अपने पुराने देवताओं, शिव



## हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी रूहानी पहलू

आदमी की खिन्दगी के हर सवाल को कई तरह से और कई पहलुओं से देखा जा सकता है. जितने अलग अलग पहलू इस खिन्दगी के हैं, या हो सकते हैं, उतने ही तरह के सब सवालों के हों सकते हैं. मोटे तौर पर इनसान की खिन्दगी के तीन पहलू हमें दिखाई देते हैं. एक तारीखी या इतिहासी पहलू. दूसरा समाजी. कलचरल यानी आद दिन की खिन्दगी और रहन सहन का पहलू और तीसरा आध्यात्मिक या रूहानी पहलू. जिस सवाल को हम इस लेख में चरचा करेंगे उस का एक और चौथा सियासी यानी राजकाजी पहलू भी एक लास पहलू है. इन सब पहलुओं, लास कर आध्यात्मिक पहलू को, सामने रख कर ही हम आजकल के हिन्दू मुसलिम सवाल पर एक सरसरी निगाह डालना चाहते हैं.

इस सवाल का इतिहासी पहलू एक लम्बी बीज है. थोड़े से में उसका निचोड़ यह है. देश में कई अलग अलग मजहबी खयालों के लोग रहते थे. उनकी मानताओं, मजहबी उसूलों और रहन सहन के तरीकों में काफी फरक था. कोई निराकार के पूजने वाले, कोई सा-कार के, कोई मूर्ति पूजक, कोई मूर्ति पूजा को पाप समझने वाले. कोई

## हिन्दू मुसलम सवाल का आध्यात्मिक यानी रूहानी पहलू

आदमी के زندگی के हर सवाल को कئی طرح سے اور کئی پہلوؤں سے دیکھا جا سکتا ہے . جتنے الگ الگ پہلو اس زندگی کے ہیں ، یا ہوسکتے ہیں ، اُنہ ہی طرح کے سب سوالوں کے ہوسکتے ہیں . موتے طور پر انسان کی زندگی کے تین پہلو ہیں دکھائی دیتے ہیں . ایک تاریخی یا انتہاسی پہلو . دوسرا سماجی . کلتورل یعنی آئے دن کی زندگی اور رہن سہن کا پہلو اور تیسرا آدھیاتمک یا روحانی پہلو . جس سوال کی ہم اس لیکہ میں چرچا کریں گے اس کا ایک اور چوتھا سیاسی یعنی راج کاچی پہلو بھی ایک خاص پہلو ہے . ان سب پہلوؤں خاص کر آدھیاتمک پہلو کو ، سامنے رکھ کر ہی ہم آجکل کے ہندو مسلم سوال پر ایک سرسری نگاہ ڈالنا چاہتے ہیں .

اس سوال کا انتہاسی پہلو ایک لمبی چیز ہے . توڑے سے میں اسکا نیچوڑ یہ ہے — دیس میں کئی 'لگ' الگ مذہبی خیلارن کے لوگ رہتے تھے . ان کی مانڈوں ، مذہبی اصولوں اور رہن سہن کے طریقوں میں کافی فرق تھا . کوئی نراکار کے پوجنے والے ، کوئی ساکار کے ، کوئی مورتی پوجک ، کوئی مورتی پوجا کو پاپ سمجھنے والے . کوئی ایسور کو چکمت کا کرتا ماننے والے اور کوئی کسی بھی کرتا کے ہونے









खिल्द १०

अप्रैल सन् '५१

नम्बर ४

नम्बर २

अप्रैल सन् '५१

जिल्द १०

जात आदमी, प्रेम भर्म है. हिन्दुस्तानी बोली,  
'नयाहिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की मोली.

"जात آدمी, प्रेम देहम है, हल्लस्तानी बोली,  
'नया हल्ल' पहल्ले का कहर कहर लैये प्रेम की जहोली."

## बंजारा

( भाई तनवीर नक़्कबी )

नगर नगर है तेरी नगरी डगर डगर है गाँव  
देख देख थक जायँ आँलें थकें न तेरे पाँव  
अपने को समझा रे, जा रे  
बन बन जा, बंजारे !

हर एक भान है तेरे आगे नई नवेली दुनिया  
तू दुनिया का साथी फिर भी तेरी अकेली दुनिया  
दुनिया नई बसा रे, जा रे

बन बन जा बंजारे !  
आ जगजग का कला मानने वाले और कोई किसी भी कला के होने

## बंजारा

( बहानी तन्वीर नक़्कबी )

बन बन जा बंजारे !  
नगर नगर है तेरी नगरी डगर डगर है गाँव  
देख देख थक जायँ आँलें थकें न तेरे पाँव  
अपने को समझा रे, जा रे

बन बन जा बंजारे !  
हर एक आन है तेरे आँके नली नवेली दुनिया  
तू दुनिया का साथी फिर भी तेरी अकेली दुनिया  
दुनिया नली बसा रे, जा रे

बन बन जा बंजारे !  
साकार, कोणी मोरती, जो चक, कोणी मोरती, जो पाप, समझते रहे.  
कोणी अशुद्ध को चक का करता माले, वाले, लो कोणी किसी भी करता के होने



## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द. भगवानदीन, मुजफ्फर हमन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

अप्रैल १९५१

क्या किस से

- १—बंजारा ( कविता )—भाई तनवीर नकवी
- २—हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी रुहानी पहलू—सुन्दरलाल
- ३—कलाकार वान गोक—भाई परदेशी
- ४—जवानों—भगवानदीन
- ५—एकला का नारा ( कविता )—भाई हाकिम अनाइल्ला
- ६—तुरकी के गाँव की एक मलक—भाई महमूद सकल
- ७—राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप—भाई जवाहर लाल नेहरू
- ८—बरखा बनाम खेतों व सर्व धर्मों प्रार्थना—आचार्य विनोबा भावे
- ९—बबों की दुनिया—एडीटर, प्रेम भाई
- १०—कुछ कितने—
- ११—हमारी राय—दिल्ली पास कानकरन्म पर रोक—सुन्दरलाल, सत्याग्रह की गूँज—भगवानदीन: एक नया राष्ट्रीय सतरा—सुन्दरलाल; विनोबा जी की सर्वोदय यात्रा—सुरेश रामभाई; एक समस्या—भगवानदीन.

क्रीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल. बाहर दस रुपया साल,

एक परचा दस आने.

१९५१, मुद्रित इलाहाबाद

मनेजर

नया हिन्दू

“ नया हिन्दू ”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

‘नियंत्र’—

‘नियंत्र’—मन्तर حسن, بشير ناتھ، سندر لال

اپریل ۱۹۵۱

کھا کس سے

- ۱—بنجارا ( کویتا )—بھائی تلویر نقوی
- ۲—ہندو مسلم سوال کا آدھاتک پہلی و دھانی پہلو
- ۳—کلاکار وان گوک—بھائی پردیشی
- ۴—جوانوں—بھگوان دیں
- ۵—ایکٹا کا نمبر ( کویتا )—بھائی حافظ عطاء اللہ ’ایکٹا‘
- ۶—ترکی کے گاؤں کی ایک جھلک—بھائی معصود مکمل
- ۷—راشٹر بھاشا ہندی کا سروپ—بھائی خواہر ’پہو‘
- ۸—چرخا بلام کہیتی و سرو دھرمی پڑاتھن—آچارہ ونوبا بھادے
- ۹—بچوں کی دنیا—ایڈیٹر: پریم بھائی
- ۱۰—کچھ کتھیں
- ۱۱—ہماری رائے—دلی پیس کانفرنس پر روک—سندر لال
- ستیا گرو کی کونج—بھگوان دیں: ایک نیا راشٹریہ
- خطرو—سندر لال: ونوبا جی کی سو روئے پاتال
- سوریش رام بھائی: ایک مسیحا—بھگوان دیں.

قیمت—ہندستان میں چھ روپہ سال باہر دس روپہ سال

ایک پرچہ دس آنے.

میںڈیٹر

نیا ہند



# आदि



# संस्कृत

संस्कृत के ग्राम...

हिन्दू मुसलमन मजाल का आध्यात्मिक

या तो रहने पर रह - मुद्रा...

बलाकार वान गोक—परदेशी

जबानी—भगवानर्दन

तुम्हारे के गोक की एक भलेक—मुर्जाव दिजना

हमारी राय :-

दिल्ली पॉस कानफ्रेन्स पर गोक - मुद्रा...

सत्याग्रह की गूज—भगवानर्दन

एक नया राष्ट्रीय खतरा—मुद्रा...

अप्रैल सन् १९५१

संस्कृत इस आला

हिन्दुस्तानी कलचर सांसाइटी. इलाहाबाद  
 हस्तकला क्लब, सूर्यवाती, अलाहाबाद

अप्रैल सन् १९५१  
 संस्कृत इस आला

संस्कृत के ग्राम...  
 हिन्दू मुसलमन मजाल का आध्यात्मिक

या तो रहने पर रह - मुद्रा...

बलाकार वान गोक—परदेशी

जबानी—भगवानर्दन

तुम्हारे के गोक की एक भलेक—मुद्रा...

हमारी राय :-

दिल्ली पॉस कानफ्रेन्स पर गोक - मुद्रा...

सत्याग्रह की गूज—भगवानर्दन

एक नया राष्ट्रीय खतरा—मुद्रा...

संस्कृत के ग्राम...  
 हिन्दू मुसलमन मजाल का आध्यात्मिक

या तो रहने पर रह - मुद्रा...

बलाकार वान गोक—परदेशी

जबानी—भगवानर्दन

तुम्हारे के गोक की एक भलेक—मुद्रा...

हमारी राय :-

दिल्ली पॉस कानफ्रेन्स पर गोक - मुद्रा...

सत्याग्रह की गूज—भगवानर्दन

एक नया राष्ट्रीय खतरा—मुद्रा...



## भारत का विधान पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९४० में सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में आंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा  
मूल आंगरेजी में अनुवादित.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस विधान के आशयन  
स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह  
समझ ले.

यदि आप अपने वाले काम चुनाव में, जिस पर भारत का  
सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिम्मा लेना चाहते हैं और  
आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी  
है कि आप इस पुस्तक का ध्यान में पढ़ लें.

आसानी के लिये किताय के आखीर में हिन्दी में आंगरेजी  
और आंगरेजी में हिन्दी माठ पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है.  
भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आमान बामहावरा भाषा रायल आठगंजी बङ्ग माइज.  
लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े का मन्दर जिल्द. कीमत केवल  
साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :—

मनेजर 'नया हिन्द'

१४५, सुट्टी गंज.

इलाहाबाद.

## भारत का उद्धान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २१ जून १९०० से सारे भारत में लागू हुआ.  
'भारत में आंगरेजी राज' के लेखक पण्डित सुन्दर लाल द्वारा  
मूल आंगरेजी में अनुवाद.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस उद्धान के अन्तर्गत  
भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह  
समझ ले.

यदि आप अपने वाले काम चुनाव में, जिस पर भारत का  
सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिम्मा लेना चाहते हैं तो जरूरी  
है कि आप इस पुस्तक का ध्यान में पढ़ लें.  
आसानी के लिये किताय के आखीर में हिन्दी में आंगरेजी  
और आंगरेजी में हिन्दी माठ पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है.  
भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आमान बामहावरा भाषा रायल आठगंजी बङ्ग माइज.  
लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े का मन्दर जिल्द. कीमत केवल  
साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :—

मनेजर 'नया हिन्द'

१४५, सुट्टी गंज.

इलाहाबाद.



(१) एक एसो हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिससे सब हिन्दुस्तानी शामिल हों।

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरा का छापना।

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, समाजों, कानकरन्मों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, विरादरियों और शिक्षा में आपस का मेल बढ़ाना।

—०—

सोसाइटी के प्रेसिडेंट—म० अठ्ठुल मजीद खवाजा, वाइस प्रेसिडेंट—डा० भगवानदास और डा० अठ्ठुल हक. गवर्निंग बाडी के प्रेसिडेंट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—प० मुन्दरलाल. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद डा० नाराचन्द, मौलवी मैयद मुलेमान नदवी, मि० मंजर अली साख्खा, श्री बा० जी० खर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विश्वम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, काशी माहम्मद अठ्ठुल रायकार और श्री आस प्रकाश पालवाल. मेम्बरी के क्लायटों के लिये लिखिये।

मुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,  
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क्लायटों के अनुसार मेम्बरी की फीस सिर्फ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्दू" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ छे रुपया वन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकेंगे वा अन्यरा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

— १० —

मقصद

(१) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا پھیلانا، پھیلانا اور بچاؤ کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکٹا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سمیٹاؤں، کانسر سور، لکچر دور سے سب دعوہوں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—سید عبدالجہید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ بڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری—بلذت سندرا لال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—  
ڈاکٹر سید متھون، ڈاکٹر نارا چند، مولوی سید سیدیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی، کپڑہ، مسٹر ایس۔

کے۔ وودرا، بلذت، بشمیر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رائے، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالوال۔

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

سندرا لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،  
۱۴۵، منٹھی کلچ، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی نے نئے قاعدے کے अनुसार ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چلندہ دہنے پر ہی ممبر بننا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے۔ ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد



## हिन्दू के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखाबट में)

हिन्दू का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खाय खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं, भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये, कीमत दो रुपये.

**मुस्लिम देश भक्त**—लेखक—श्री रतन लाल बंसल  
उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ज्बाओं से आजाद करने की काशिश की, किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है और रतन लाल बंसल.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल  
इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होने देना एक छन का भी डर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान फुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो किरकावाराना ढंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहाद हो गये.  
हर एकता प्रेमा के पढ़ने का किताब.  
सुन्दर जिल्द और बिकने कागज पर छपा आठ तरंगों के साथ इस किताब का दाम मिर्फ़ ढाई रुपये.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.  
यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहान ज़रूरी है जो ग़ैती वाड़ी में दिल चरपी रखते हैं, और भारत.

## हन्द के देहान की अंगरेजी हन्दी शब्दावली

हन्द का जेहन देहान पास हुआ है अकेलकभक चोदे सोखस खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हन्दस्तानी शब्द महत्मा भगवान दीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं, भारत के देहान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये, कीमत दो रुपये.

**मुस्लिम देश भक्त**—लेखक—श्री रतन लाल बंसल  
उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ज्बाओं से आजाद करने की काशिश की, किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गئی है और रतन लाल बंसल.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल  
इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होने देना एक छन का भी डर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान फुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो किरकावाराना ढंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहाद हो गये.  
हर एकता प्रेमा के पढ़ने का किताब.  
सुन्दर जिल्द और बिकने कागज पर छपा आठ तरंगों के साथ इस किताब का दाम मिर्फ़ ढाई रुपये.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.  
यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहान ज़रूरी है जो ग़ैती वाड़ी में दिल चरपी रखते हैं, और भारत.



پندت سندر لال کی 'اور کیا ہیں'۔

ہندو مسلم ایکٹا۔ اس میں وہ چار لکچر جمع

کر دیئے گئے ہیں جو پلڈت جی نے کنسلٹیٹری بورڈ کوالیڈر کی

صورت پر کوالیڈر میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق۔

سامبرود پیتا یعنی فرقہ پرستی کی بھداری پر راج کاجی، مذہبی

اور اتھاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج جس نے آخر میں دیہی

پیتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے پہچ میں نہ رھنے دیا

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے۔ مہاتما گاندھی

کی صلاح سے اکتوبر ۱۹۴۷ میں پچھمی اور یورپی پنجاب کے دورے

کے بعد وہاں کی بھٹکر بڑبادی اور آپسی مار کات کے کارن لوگوں

پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک وزن۔ اس چھوٹی سی

کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سچھا

بھی پیش کئے گئے ہیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اُس سے سبق۔ اس چھوٹی سی

کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں یورپی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ

جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے

لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سچھائی گئی ہے۔ قیمت صرف

دو آنے۔

ملنے کا پتہ۔ مہینہ 'نہا ہلد' ۱۴۵، مہی کلچ، الہ آباد۔

ہندو مسلمم एकता \_ इस में वह चार लेक्चर जमा

कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सल्टियंटरी बोर्ड खालियर की

दावत पर खालियर में दिये थे।

सौ सफ़े की किताब. क्रीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के वलिदान से सबक \_ साम्प्रदा-

यिकता यानी फिरकापरस्तों की बीमारी पर राजकाजो, मजहबी और

इतिहासी पहलू से बिचार और उसका इलाज, जिम्ने आखिर में

देश पिता महात्मा गांधी तक को हमार वीच में न रहने दिया .

क्रीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है \_ महात्मा गांधी की

सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के

दोरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के

कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आई उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी

सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ

सुझाव भी पेश किये गये हैं. क्रीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक \_ इस छोटी सी किताब

में सन् १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरक-

बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को

हमेशा के लिये खत्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क्रीमत

सिर्फ़ दो आने.

भित्ति का पता \_ मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुठ्ठी गंज, इलाहाबाद.



# गीता और कुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों में हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिले जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बड़प्पन और एक एक वान पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लरची तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि कुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम काफ़िर वगैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दों अमर पुस्तकों की सचची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्दू" १४५, मुठ्ठा गंज, इलाहाबाद.

# किता और قرآن लिक्क—पन्दात सन्दर लाल

अस क़ताब के शुरुअ महुँ दुनिया के सब बूरे बूरे धरमों की अक्का को दक़ाया क़हा है 'अर सब धरमों की क़ताबों से ज़ुवाले दे दे के मलुती जलुती बुनियादी सज्जानहों को बेहान क़िया क़िया है.

अक्के बेद क़िया के लक्के ज़ाने के वक़्त की इस दिहस की हालत' क़िया के बूयों 'अर अक़ अक़ 'अवहा' को लहक़ क़िया की तल्लम को बतलाया क़िया है.

अख़र महुँ قرآن से पहिले की अरब की हालत' قرآن के बूयों 'अर अक़ अक़ 'अवहा' की तल्लम को बेहान क़िया क़िया है. असल में قرآن की पान्च सौ से अउर आیتों का लफ़्ठी तरजुमा दिया क़िया है. ये बेही बुनिया क़िया है के قرآن महुँ ज़हाद' एाक़त' अख़र' हन्त' ज़हल' काफ़र वग़ैरा क़से क़िया क़िया है.

जो लूक़ सब धरमों की 'किता' को समझना चाहें या हल्लु धरम 'अर अल्लाम दुनो की अर दर अमर पुस्तकों की सज्जी जाक़ारी हासल क़रना चाहें अहें अस क़ताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

पूरने तहों सौ सन्ज्जे की सल्लार ज़ल्लुद बेदुह क़ताब की क़िमत सर्फ़ त़हान्ती दरबेह.

मल्ले का पत्ता—मन्दिबज़ 'नया हल्लु' १४० 'मत्ही क़ल्लि' अल-आबाद.



नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं।

पाँच से ज्यादा किताबें खरीदने वाले और बुकसेलरों को २३ फ्रीमदी कमीशन दिया जायगा।

डाक या रेल रजर्व हर हलत में ग्राहक के बिम्बे होगा।

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अली मोरहना

२६ जनवरी सन् १९४८ को महात्म' गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के मामले एक मुकदमे के रूप में 'लोक मेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था। इस विधान में उन्होंने मलह' दी थी कि कांग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले इकूमत से बाहर निकल कर एक लोक मेवक संघ' बनाकर काम करें।

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घण्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी का तरफ से उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख्ता ने की है जो गांधी' बाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक है।

गांधी बाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है। २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपये।

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, सुटी गंज, इलाहाबाद

सहजे लकरी सब किताबों नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिले  
एक एक मिल सकती हैं।

पाँच से ज्यादा किताबों खरीदने वालों और बुकसेलरों को २३ फीसदी कमीशन दिया जायेगा  
डाक या रेल रजर्व हर हालत में ग्राहक के फर्म होगा।

## महात्मा गान्धेय की वसियत

लेखक—श्री मंजर अली मोरहना

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गान्धेय ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के मामले एक मुकदमे के रूप में 'लोक मेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था। इस विधान में उन्होंने मलह' दी थी कि कांग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले इकूमत से बाहर निकल कर एक लोक मेवक संघ' बना कर काम करें।

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घण्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी का तरफ से उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गान्धेय जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख्ता ने की है जो गान्धेय राद को समझने और अपनाने वाले देश के इने लकरी लकरी में से एक है।

गान्धेय राद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है। २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपये।

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हल्द' १४५, सुटी गंज, इलाहाबाद



होती है जो उनके लिये जीने जिलाने को काफी है। एक दिन वह आएगा जब दुनिया भर का इनसानो समाज यह महसूस करेगा कि अगर समाज सेवक हो तो बापा जैसा जिसे अपने तन मन की सुख है न खाने पीने का होश है, जिसे शायद अपनी कुछ भी खबर नहीं है, लेकिन धुन का पकका है—अपनी राह पर अटल।

मगर कमाल की बात यह है कि बापा खालो समाज सेवक ही नहीं थे। उनके दिल में जहाँ गरीब के लिये दया थी वहाँ आजादी के लिये तड़प भी थी। यही नहीं, हर तरह की रचनात्मक सेवा में उन्हें रस आता था। खादी के सिलसिले में उन्होंने जो काम किया वह भी अपनी मिसाल नहीं रखता इसमें अलाबा नारी समाज की वेहनगी और बाँटवारी में भी उनको जजरहमन दिलचस्पी थी। गरज कि दुखिया समाज का शायद ही कोई ऐसा हिस्सा होगा जिसमें नाता जोड़ कर उसके हित में उन्होंने कुछ न कुछ न किया हो।

बापा में ताकत भी गजब की थी। इनमें लम्बे लम्बे दौर करन, इतने अजीब अजीब आदमियों बलिक वनमनुओं, की मोहत्रन में रहते, ऐसी वीरान और अनमनी वस्त्रियों में घूमने—कि भी अपना सब काम करते रहते, वदन मानो विरुपक्ष जरिया भर रह गया था जिसे बापा नाम की मंस्था ठकले लिये जानी थी। स्वीच लिये जाना थी। तिसपर भी, हंगन की बात यह है, कि वह अपने दिन भर के काम की डायरी, गंजाना लिख लिया करते थे। क्राइ दिन नगा नगा जाता था। मानो मालिक के मामले अपने किये काम की पेशी देने हों, अपने दिन भर का हिमाच किताब आगे रख देने हो। उस रख को दिल चीर कर अपना दूद दिखाने हो और कल के लिये आशा लाते हो।

बापू गए, बापा गए, हिन्दुस्तान के दुखियों और गरीबों का तो मानो खजाना ही लुट गया। मिर्जनहार 'नगा ही' म्हागा है।

—मुरेश रामभाई

होती है जो उन के लिये जीने जिलाने को काफी है। एक दिन वह आये का जब दुनिया भर का इनसानो समाज यह महसूस करेगा कि अगर समाज सेवक हो तो बापा जैसा जिसे अपने तन मन की सुख है न खाने पीने का होश है, जिसे शायद अपनी कुछ भी खबर नहीं है, लेकिन धुन का पकका है—अपनी राह पर अटल।

मगर कमाल की बात यह है कि बापा खालो समाज सेवक ही नहीं थे। उनके दिल में जहाँ गरीब के लिये दया थी वहाँ आजादी के लिये तड़प भी थी। यही नहीं, हर तरह की रचनात्मक सेवा में उन्हें रस आता था। खादी के सिलसिले में उन्होंने जो काम किया वह भी अपनी मिसाल नहीं रखता इसमें अलाबा नारी समाज की वेहनगी और बाँटवारी में भी उनको जजरहमन दिलचस्पी थी। गरज कि दुखिया समाज का शायद ही कोई ऐसा हिस्सा होगा जिसमें नाता जोड़ कर उसके हित में उन्होंने कुछ न कुछ न किया हो।

बापा में ताकत भी गजब की थी। इनमें लम्बे लम्बे दौर करन, इतने अजीब अजीब आदमियों बलिक वनमनुओं, की मोहत्रन में रहते, ऐसी वीरान और अनमनी वस्त्रियों में घूमने—कि भी अपना सब काम करते रहते, वदन मानो विरुपक्ष जरिया भर रह गया था जिसे बापा नाम की मंस्था ठकले लिये जानी थी। स्वीच लिये जाना थी। तिसपर भी, हंगन की बात यह है, कि वह अपने दिन भर के काम की डायरी, गंजाना लिख लिया करते थे। क्राइ दिन नगा नगा जाता था। मानो मालिक के मामले अपने किये काम की पेशी देने हों, अपने दिन भर का हिमाच किताब आगे रख देने हो। उस रख को दिल चीर कर अपना दूद दिखाने हो और कल के लिये आशा लाते हो।

बापू गए, बापा गए, हिन्दुस्तान के दुखियों और गरीबों का तो मानो खजाना ही लुट गया। मिर्जनहार 'नगा ही' म्हागा है।

—मुरेश रामभाई



उस घड़ी की बलिहारी है जब १८१५ में एक दिन बापा—अमृत लाल विठ्ठलदास ठक्कर—प्रेम की गंगा के किनारे पहुँचे. श्री गोपाल कृशन गोखले से मिले और उनके भारत सेवक समाज में भर्ती होना चाहा. दिल को दिल पहचानता है. श्री गोखले जी का कुछ भी ढेर नहीं लगी और भविष्यवानी को कि यह आदमी उनके भारत सेवक समाज का नाम रौशन करेगा. बापा ने भारत सेवक समाज का ही नहीं, हिन्दुस्तान का नाम भी ऊँचा उठाया है. प्रेम को आगे बढ़ाया है

इंग्लिस्तान की श्रीमती फ्लोरेन्स नाइटिंगेल, प्रेन्स की श्रीमती जॉन्-वे-आर्क की गाथा बहुत गाई जाती है, उनकी याद कर उनके देम वाले फूले नहीं समाते हैं. दुनिया की उन अमर हार्मियाँ में बापा की गिनती की जा सकेगी बापा जैसा गरीब नवाज दुनिया के परदे पर शायद ही मिलता है. जिधर से दुनिया को आइ मुनते उसी तरफ उनके पाँव बढ़ते चले जाते थे. उड़ीसा का अकाल हो या बंगाल का. बीजापुर का या पंचमहाल का. बाढ़ का कोप हो उत्तरप्रदेश में. आसाम में या बिहार में—बापा तुरंत वहाँ मौजूद होते और जबतक वहाँ की हालत संभल न जाय चैन नहीं लेते थे. नीची नाम की जातियों के तो—गुजरात काठियावाड़ के भंगी महार हों. पंचमहाल के भील हों, आसाम में खासी की पहाड़ियों या मध्यप्रदेश में मंडला के जंगलों या उत्तर प्रदेश में देहरादून जौनसर भाभर के माड़ों में रहने वाले आदिवासी हों—सारे दलिन और आदिवासी समाज के वह एक दम अपने प्यारे सगे थे और इन्होंने ही उनको 'बापा' का प्रेम भरा नाम दिया था. इसी तरह खेड़ा के किसानों और जमशेदपुर के मजदूरों के भी वह अपने बन गए थे, और हरिजनों के तो—चाहे वह तामिलनाड के त्रिचना पल्ली में हों या गुजरात के पंचमहाल में या उड़ीसा के पुरी में या सरहद के नौशहरा में—वह मानो सब ही कुछ थे. और ऐसा लगता था कि यह सबकुच विट्ठल (भगवान) का पूत है जो उनकी ही विरादरी का है, इसके मुँह से अमृत की बरखा

सुस केशु की बलिहारी है जब १९१४ में एक दिन बापा—अमृत लाल विठ्ठलदास ठक्कर—प्रेम की गंगा के किनारे पहुँचे. श्री गोपाल कृशन गोखले से मिले और उनके भारत सेवक समाज में भर्ती होना चाहा. दिल को दिल पहचानता है. श्री गोखले जी को कुछ भी ढेर नहीं लगी और भविष्यवानी को कि यह आदमी उनके भारत सेवक समाज का नाम रौशन करेगा. बापा ने भारत सेवक समाज का ही नहीं, हिन्दुस्तान का नाम भी ऊँचा उठाया है. प्रेम को आगे बढ़ाया है

इंग्लिस्तान की श्रीमती फ्लोरेन्स नाइटिंगेल, प्रेन्स की श्रीमती जॉन्-वे-आर्क की गाथा बहुत गाई जाती है, उनकी याद कर उनके देम वाले फूले नहीं समाते हैं. दुनिया की उन अमर हार्मियाँ में बापा की गिनती की जा सकेगी बापा जैसा गरीब नवाज दुनिया के परदे पर शायद ही मिलता है. जिधर से दुनिया को आइ मुनते उसी तरफ उनके पाँव बढ़ते चले जाते थे. उड़ीसा का अकाल हो या बंगाल का. बीजापुर का या पंचमहाल का. बाढ़ का कोप हो उत्तरप्रदेश में. आसाम में या बिहार में—बापा तुरंत वहाँ मौजूद होते और जबतक वहाँ की हालत संभल न जाय चैन नहीं लेते थे. नीची नाम की जातियों के तो—गुजरात काठियावाड़ के भंगी महार हों. पंचमहाल के भील हों, आसाम में खासी की पहाड़ियों या मध्यप्रदेश में मंडला के जंगलों या उत्तर प्रदेश में देहरादून जौनसर भाभर के माड़ों में रहने वाले आदिवासी हों—सारे दलिन और आदिवासी समाज के वह एक दम अपने प्यारे सगे थे और इन्होंने ही उनको 'बापा' का प्रेम भरा नाम दिया था. इसी तरह खेड़ा के किसानों और जमशेदपुर के मजदूरों के भी वह अपने बन गए थे, और हरिजनों के तो—चाहे वह तामिलनाड के त्रिचना पल्ली में हों या गुजरात के पंचमहाल में या उड़ीसा के पुरी में या सरहद के नौशहरा में—वह मानो सब ही कुछ थे. और ऐसा लगता था कि यह सबकुच विट्ठल (भगवान) का पूत है जो उनकी ही विरादरी का है, इसके मुँह से अमृत की बरखा



अमीर की सब जगह सुनवाई है। गरीब का हित करने वाला कोई कोई कभी कभी ही मिलता है। बापा गरीब की, दुखियों की माँ ही थे। बापू बाप थे, जो भेद बाप और माँ के काम के दायरे में होता है वही भेद बापू और बापा के कामों में था। लेकिन इसी कुछ तंग दायरे की वजह से ही माँ को अपनाहट और धार कही ज्यादा होता है, और औलाद को माँ का जाना कहीं ज्यादा चुभना है। इसलिये बापा के गुजरने पर देस के नंगे, भूके, पिछड़े लोग जिनका कोई पुरसान-हाल नहीं है अपने को अनाथ पा रहे हैं।

बापा को हमने माँ कहा है, सचमुच उनका दिल और काम माँ के से ही थे। यही वजह है कि बापू जैसे महान्मा को भी बापा के कामों से अकसर डह होतो थीं। बापा के जैसा दिल किमों को मुशकिल से ही नसीब होता है, बल्कि कहना यह चाहिये कि वह सिर से पैर तक दिल ही दिल थे। शायद इसी का नतीजा है कि जो उनके पास आता वह उनसे चिपट कर रह जाता और हमेशा के लिये उनका हो जाता। नहीं तो नामुसकिन था कि बापा नौजवानों में जान फूँक कर ऐसे ग़रे और चंगे खिदमतनगर पैदा कर देने जैसे कर्नाटक के भंडारीजी, महाराष्ट्र के बर्वे जी और बानीकर जी, उत्तर प्रदेश के वियोगी हरिजी और श्याम लाल जी, गुजरात के पतिव्रत लाल जी और डाहा भाई जी वगैरा। दक्खिन भारत के श्री भाश्मायगर, श्री राघवम्मा, श्री लक्ष्मी नारायन राव, श्रीमती यशोधरा देवी वगैरा। और दूसरे कितने ही भाई बहन देस भर में हैं जिनका परिचय न मैं दे सकता हूँ न मैं उन्हें जानता हूँ क्योंकि वह बड़ी खामोशी और बड़ी खूबी के साथ अपना काम कर रहे हैं।

अमीर की सब जगह सुनाई है। गरीब का हित करने वाला कौन कौन कभी कभी ही मिलता है। बापा गरीब की, दुखियों की माँ ही थे। बापू बाप थे, जो भेद बाप और माँ के काम के दायरे में होता है वही भेद बापू और बापा के कामों में था। लेकिन इसी कुछ तंग दायरे की वजह से ही माँ को अपनाहट और धार कही ज्यादा होता है, और औलाद को माँ का जाना कहीं ज्यादा चुभना है। इसलिये बापा के गुजरने पर देस के नंगे, भूके, पिछड़े लोग जिनका कोई पुरसान-हाल नहीं है अपने को अनाथ पा रहे हैं।

बापा को हमने माँ कहा है, सचमुच उन, माँ और बालों से ही थे। यही वजह है कि बापा जैसे महान्मा को भी बापा के कामों से अकसर डह होतो थीं। बापा के जैसा दिल किसी को मुशकिल से ही नसीब होता है, बल्कि कहना यह चाहिये कि वह सिर से पैर तक दिल ही दिल थे। शायद इसी का नतीजा है कि जो उनके पास आता वह उनसे चिपट कर रह जाता और हमेशा के लिये उनका हो जाता। नहीं तो नामुसकिन था कि बापा नौजवानों में जान फूँक कर ऐसे ग़रे और चंगे खिदमतनगर पैदा कर देने जैसे कर्नाटक के भंडारीजी, महाराष्ट्र के बर्वे जी और बानीकर जी, उत्तर प्रदेश के वियोगी हरिजी और श्याम लाल जी, गुजरात के पतिव्रत लाल जी और डाहा भाई जी वगैरा। दक्खिन भारत के श्री भाश्मायगर, श्री राघवम्मा, श्री लक्ष्मी नारायन राव, श्रीमती यशोधरा देवी वगैरा। और दूसरे कितने ही भाई बहन देस भर में हैं जिनका परिचय न मैं दे सकता हूँ न मैं उन्हें जानता हूँ क्योंकि वह बड़ी खामोशी और बड़ी खूबी के साथ अपना काम कर रहे हैं।



लिये हर तरह से अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये ही तो वह इस नतीजे पर पहुँच सकता है और उसी तरह की दलीलें और उसी तरह की तरकीबें उसे मूर्ख सकती हैं। आजकल की सरकार के सामने तो कांग्रेस की बहुत बड़ी मिसाल मौजूद है कि उसने चरखा हाथ में लेकर मानचिस्टर की मिलों को हिला दिया था। पर हमारे कपड़े और अनाज का अकाल उस वक्त तक कर्मा दूर नहीं होगा जब तक हमारी औद्योगिक अमरीका के लिलाहनों पर गहंगा और मानचिस्टर, जापान और हिन्द की मिलों पर गहंगा।

हम विरवास के साथ कह सकते हैं कि जैसे ही सरकार इस तरफ से निगाह हटाएगी इस कपड़े और अनाज के अकाल में बचने की तमाम तरकीबें अपने आप विभाग में आकर घुमने लगेंगी

१९-२-५१.

— भगवानदास

## दुखियों की माँ-बापा—

हिन्दुस्तान पर तो मानो तबाही आ गई है। रांटी-पानी की तकलीफ, कपड़े-लत्ते की तकलीफ, रहने-सहने की तकलीफ, हर चीज की ही आकत है। लेकिन अगर अपने दुख में दुखी होने वाला, सुख में सुखी होने वाला कोई पास मौजूद रहे तो तवियत को इतमिनान रहता है। मगर ऐसे लोग भी जिनके मुँह में दो मीठी बातें सुनकर मन को तसल्ली मिल जाती थी, अब उठते जा रहे हैं। और अपने मन का दुखड़ा कहते नहीं बनता। बापा के जाने से जो धक्का दुखियों को लगा है वह वैसा ही है जैसे माँ के जाने से मासूम बच्चों को होता है।

लम्बे घर, तरह से लिये प्यारों में लगे, सोना-चाँदने से 'गुदा' लस, तबियत पर पहँच सकनी है और उसी तरह की दलीलें और उसी तरह की तरकीबें उसे मूर्ख सकती हैं। आजकल की सरकार के सामने तो कांग्रेस की बहुत बड़ी मिसाल मौजूद है कि उसने चरखा हाथ में लेकर मानचिस्टर की मिलों को हिला दिया था। पर हमारे कपड़े और अनाज का अकाल उस वक्त तक कर्मा दूर नहीं होगा जब तक हमारी औद्योगिक अमरीका के लिलाहनों पर गहंगा और मानचिस्टर, जापान और हिन्द की मिलों पर गहंगा।

हम विरवास के साथ कह सकते हैं कि जैसे ही सरकार इस तरफ से निगाह हटाएगी इस कपड़े और अनाज के अकाल में बचने की तमाम तरकीबें अपने आप विभाग में आकर घुमने लगेंगी

— भगवानदास

## दुखियों की माँ-बापा—

हिन्दुस्तान पर तो मानो तबाही आ गई है। रांटी-पानी की तकलीफ, कपड़े-लत्ते की तकलीफ, रहने-सहने की तकलीफ, हर चीज की ही आकत है। लेकिन अगर कोई पास मौजूद रहे तो तवियत को इतमिनान रहता है। मगर ऐसे लोग भी जिनके मुँह में दो मीठी बातें सुनकर मन को तसल्ली मिल जाती थी, अब उठते जा रहे हैं। और अपने मन का दुखड़ा कहते नहीं बनता। बापा के जाने से जो धक्का दुखियों को लगा है वह वैसा ही है जैसे माँ के जाने से मासूम बच्चों को होता है।



जाय कि कपड़ा पहनने वाले कपड़े के मिल मालिकों से मुगत ले  
अब तो जर्मिंदारी की तरह से इस तरफ भी सरकार को नज़र  
डालने की जरूरत है. मिलों को ग्रेट मालिकों में ले लेने का काम न  
आसान है न जल्दी से किया जासकता है. पर एक काम तो बहुत  
आसानी से किया जा सकता है कि जेल करघा अपना लें और  
प्राइमरी स्कूल चरखा संभाल लें. जो मुल्क लड़ाई के दिनों में खुद  
कपड़ा पहन लेता था और दूसरे मुल्कों को कपड़ा पहनाता था उसमें  
आगर आज कपड़े का अकाल हो तब यही समझना चाहिये कि  
उसकी कपड़े बनाने की ताकत से या तो ग़लत काम लिया जा रहा है  
या उसे बेकार छोड़ दिया गया है

अनाज की कमी की बात सुनकर हम इतने अचरज में नहीं पड़ते जितना यह सुनकर हमें अचरज होना है कि सरकार ने बहुत से अनाज के गेनों को कपास के गेनों में तब्दील कर दिया है सिर्फ इस वजह से कि कभी यह भगड़ा उठा था कि पाकिस्तान अब हिन्दुस्तान को कपास नहीं देगा और इसलिये हिन्दुस्तान को रुई के मामले में अपने पाँव पर आप लड़ा होना चाहिये और अनाज के मामले में अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार लेनी चाहिये सरकार की यह कुछ गंभीर अजीब बातें हैं जिनको जब उसके मंत्री पालियामेंट के सामने रखते हैं तो यह मायित कर देते हैं कि जो कुछ सरकार ने किया वह बहुत जरूरी था. उनकी यह बात किमी हद तक ठीक हो सकती है पर आम तौर से इनसान उसी नतीजे पर पहुँचा करता है जिस नतीजे पर पहुँचना उसने तय कर रखवा होना है. अगर सरकार अपने सामने इस नतीजे पर पहुँचना तय करले कि उसे अनाज के

حائے کہ کیا پہلے والے کپڑے کے مل مالکوں سے بھگت نہیں۔  
اب تو زمیںداروں کی طرح سے اس طبف بھی سب کو نظر  
قائل کی غوروت ہے۔ ملوں کو اس وقت ملکی مہوں لے لیتے  
ہم نہ آسان ہے نہ حلدی سے کہا جا سکتا ہے۔ پر ایک ہم تو بہت  
آسانی سے کہا جا سکتا ہے کہ جہل دیہا ابتدا پس اور پرتو  
اسکول چورخہ سندھوں لیں۔ جو ملک لپٹائی کے دانوں مہوں خد  
کیا ہیں لیتا تھا اور دوسرے ملکوں کی کیا دھلتا تھا؟ اس مہوں  
اگر آج کپڑے لالہ نہ سب یہی سمجھتا چلتے کہ اس ہی داری  
مڈانے کی طاقت سے یہ تو غصہ ہو لہ۔ اس کے پاس یہاں چھ  
دیا گیا ہے

[illegible]



## कपड़े और अनाज की कमी और सरकार—

सरकार की पालिसी कपड़े और अनाज की पैदावार के बारे में क्या है यह समझना बेहद मुश्किल है. और इसकी सीधी और साफ बजह यह है कि सरकार इन दोनों मामलों में कोई पक्की पालिसी बना ही नहीं पाई. जब इन मामलों में सरकार की पालिसी ही उलझी हुई है तो उसमें समझने वालों की समझ उलझकर रह जाय तो इसमें अचरज ही क्या.

कपड़े की ही लीजियं. सन् '४८ में बत्तीस करोड़ गज कपड़ा की महीने के औसत से तैयार हुआ और सन् '५० में वह तीस करोड़ गज ही रह गया. मोटा कपड़ा सन् '५० में ३७ करोड़ गज तैयार हुआ और बीच का कपड़ा १६३ करोड़ गज. बारीक कपड़ा ५६ करोड़ गज और बहुत बारीक कपड़ा २० करोड़ गज. बाहर से कुल कपड़ा मंगाया गया ११४ करोड़ गज. १९५१ के शुरू होते होते हमारे पास सवा दो लाख गाँठें थीं. लेकिन सन् '५५ के शुरू में साढ़े पाँच लाख गाँठें थीं और सन् '५० के शुरू में तीन लाख. इस हिमाब से ऐसा मालूम होता है कि ८२ हजार गाँठ की महीने से हमारी पैदावार अब ६२ हजार गाँठों पर आगई है और इसमें से भी १५ हजार गाँठ हर महीने बाहर भेज देते हैं. इस सब का असर उन करघों पर भी पड़ा है जो हाथ से चलाए जाते हैं उनकी पैदावार भी ५० फ्रीसदी कम होगई है. इतना ही नहीं बहुत जल्दी बम्बई की कई मिलें टूट जायँगी और हजारों मजदूर बेकार हो जाँयगे. यह मामला अब इस तरह का नहीं रह गया कि यह कहकर छोड़ दिया

## कपड़े और अनाज की कमी और सरकार—

सरकारी पालिसी कपड़े और अनाज की पैदावार के बारे में क्या है यह समझना बेहद मुश्किल है. और इसकी सच्ची और सफ बजह यह है कि सरकार इन दोनों मामलों में कोई पक्की पालिसी बना ही नहीं पाई. जब इन मामलों में सरकार की पालिसी ही उलझी हुई है तो उसमें समझने वालों की समझ उलझकर रह जाय तो इसमें अचरज ही क्या.

कपड़े की ही लीजियं. सन् '४९ में बत्तीस करोड़ गज कपड़ा की महीने के औसत से तैयार हुआ और सन् '५० में वह तीस करोड़ गज रह गया. मोटा कपड़ा सन् '५० में ३७ करोड़ गज तैयार हुआ और बीच का कपड़ा ५६ करोड़ गज. बारीक कपड़ा ११४ करोड़ गज. बाहर से कुल कपड़ा मंगाया गया ११४ करोड़ गज. १९५१ के शुरू होते होते हमारे पास सवा दो लाख करोड़ गज. बाहर से कुल कपड़ा मंगाया गया ११४ करोड़ गज. १९५१ के शुरू में साढ़े पाँच लाख गाँठें थीं और सन् '५० के शुरू में तीन लाख. इस हिमाब से ऐसा मालूम होता है कि ८२ हजार गाँठ की महीने से हमारी पैदावार अब ६२ हजार गाँठों पर आगई है और इसमें से भी १५ हजार गाँठ हर महीने बाहर भेज देते हैं. इस सब का असर उन करघों पर भी पड़ा है जो हाथ से चलाए जाते हैं उनकी पैदावार भी ५० फ्रीसदी कम होगई है. इतना ही नहीं बहुत जल्दी बम्बई की कई मिलें टूट जायँगी और हजारों मजदूर बेकार हो जाँयगे. यह मामला अब इस तरह का नहीं रह गया कि यह कहकर छोड़ दिया



और लोगों के दिल में तांगे वाले के लिये जो इज्जत थी वह इनाम देने के बाद एक दम जाती रही. यहाँ हम यह याद दिलाता मुनामिव समझते हैं कि एक बार 'कुल हिन्द चरखा मंच' की किमी टुकान पर एक गाहक इस हज़ार रुपए के नोट भूल गया था. वह नोट हमारे या तीसरे दिन उसे वापस दे दिये गए या पहुँचा दिये गए. इस बात की खबर गांधी जी को दे दी गई और उनसे चाहा गया कि वह अपने परचे में उस आदमी के नाम का हवाला देकर कुछ लिख दें. उन्होंने अपने परचे में नोट लौटा देने की बात तो लिखी पर किमी नाम का जिक्र नहीं किया. और अगर हम भूलते नहीं हैं तो शायद उन लोगों को एक मीठा फटकार भी दी थी. कोई जग अन्दर नज़र डाले तो उसकी समझ में यह बात आ सकती है कि ईमानदारी का इनाम ईमानदारी ही हो सकती है और कोई चीज नहीं.

तांगे वाले ने वह पारमल क्यों लौटा दिया उसकी गहराई में हम नहीं जाना चाहते क्योंकि इसकी गहराई में जाकर हम उस भूल से भी बड़ी भूल कर बैठेंगे जो दिल्ली म्युनिमपलटी ने इनाम देकर की है.

गहराई में न जाने की बात हमने यों कह दी है जिससे श्रीर पत्र वही काम न कर बैठें जिसे हम करने में बचना चाहते हैं.

ईमानदारी को अपने रास्ते बढ़ने दीजिये वह आपकी मदद में घटेगी ही, बढ़ेगी नहीं.

२०.१.५९.

—भगवानदीन

और लोगों के दिल में तांगे वाले के लिये जो इज्जत थी वह इनाम देने के बाद एक दम जाती रही. यहाँ हम यह याद दिलाता मुनामिव समझते हैं कि एक बार 'कुल हिन्द चरखा मंच' की किमी टुकान पर एक गाहक इस हज़ार रुपए के नोट भूल गया था. वह नोट हमारे या तीसरे दिन उसे वापस दे दिये गए या पहुँचा दिये गए. इस बात की खबर गांधी जी को दे दी गई और उनसे चाहा गया कि वह अपने परचे में उस आदमी के नाम का हवाला दे दें कि ईमानदारी का इनाम ईमानदारी ही हो सकती है और कोई चीज नहीं.

तांगे वाले ने यह पारमल क्यों लौटा दिया उसकी गहराई में हम नहीं जाना चाहते क्योंकि इसकी गहराई में जाकर हम उस भूल से भी बड़ी भूल कर बैठेंगे जो दिल्ली म्युनिमपलटी ने इनाम देकर की है.

गहराई में न जाने की बात हमने यों कह दी है जिससे श्रीर पत्र वही काम न कर बैठें जिसे हम करने में बचना चाहते हैं.

ईमानदारी को अपने रास्ते बढ़ने दीजिये वह आपकी मदद में घटेगी ही, बढ़ेगी नहीं.

२०.१.५९.

—भगवानदीन







देते हैं जो तनदुरुस्ती के लिये घी खाना जरूरी समझते हैं. पर इस घी के रोक्ने की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता.

कुछ लोगों ने तो यह साबित कर दिया है कि यह करोड़ों रुपया जो बनस्पति तेल के व्योपार में लगा हुआ है और जितनी जमीन इस काम के लिये मंगफली की खेती के काम में आती है, अगर वही रुपया अनाज की खेती पर और वही जमीन अनाज की खेती के लिये काम में लाई जाएं तो हमको बाहर से अनाज मँगाने की जरूरत न रहेगी. पर इस तरफ भी ध्यान कौन देता है ?

इलाहाबाद से लगा हुआ रीवा प्रान्त है. वह दिल्ली के मानहन है. उस प्रान्त में अब तक जमा हुआ बनस्पति तेल और कोकोजम नहीं जा सकता था. वह प्रान्त अपने लिये काफी से ज्यादा घी पैदा कर लेता है. उस प्रान्त में दिल्ली सरकार ने कुछ शरनार्थी भी बसा दिये हैं. उनके बसने के बाद भी वहाँ घी की कमी नहीं हुई. और जगहों से काफी सरता भी मिलता है. यह भी मालूम हुआ है कि वहाँ के शरनार्थियों को घी की कमी को कोई शिकायत नहीं है. पर अब यह सुनने में आता है कि कोकोजम और वेजेटेबल घी के व्योपारों बड़ी कोशिश में लगे हुए हैं कि किसी तरह से उनका माल रीवा में खप सके और जो राक धाम अब तक लगी हुई है वह उठा दी जाय. कम से कम अगर दिल्ली सरकार इस एक रीवा प्रान्त को तजरवे के तौर पर ही इस बरस के लिये छोड़ दे तो यह ठीक ठीक पना तो लग सके कि बनस्पति तेल और घी में क्या फरक है. अगर दिल्ली की सरकार ने इतना भी किया तो इस समझौते कि काँग्रेस का उद्घराव बेकार नहीं गया.

देते हैं जो तनदुरुस्ती के लिये घी खाना जरूरी समझते हैं. पर इस घी के रोक्ने की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता.

कुछ लोगों ने तो यह साबित कर दिया है कि यह करोड़ों रुपया जो बनस्पति तेल के व्योपार में लगा हुआ है और जितनी जमीन इस काम के लिये मंगफली की खेती के काम में आती है, अगर वही रुपया अनाज की खेती पर और वही जमीन अनाज की खेती के लिये काम में लाई जाएं तो हम को बाहर से अनाज मँगाने की जरूरत न रहेगी. पर इस तरफ भी ध्यान कौन देता है ?

इलाहाबाद से लगा हुआ रीवा प्रान्त है. वह दिल्ली के मानहन है. उस प्रान्त में अब तक जमा हुआ बनस्पति तेल और कोकोजम नहीं जा सकता था. वह प्रान्त अपने लिये काफी से ज्यादा घी पैदा कर लेता है. उस प्रान्त में दिल्ली सरकार ने कुछ शरनार्थी भी बसा दिये हैं. उनके बसने के बाद भी वहाँ घी की कमी नहीं हुई. और जगहों से काफी सरता भी मिलता है. यह भी मालूम हुआ है कि वहाँ के शरनार्थियों को घी की कमी को कोई शिकायत नहीं है. पर अब यह सुनने में आता है कि कोकोजम और वेजेटेबल घी के व्योपारों बड़ी कोशिश में लगे हुए हैं कि किसी तरह से उनका माल रीवा में खप सके और जो राक धाम अब तक लगी हुई है वह उठा दी जाय. कम से कम अगर दिल्ली सरकार इस एक रीवा प्रान्त को तजरवे के तौर पर ही इस बरस के लिये छोड़ दे तो यह ठीक ठीक पना तो लग सके कि बनस्पति तेल और घी में क्या फरक है. अगर दिल्ली की सरकार ने इतना भी किया तो इस समझौते कि काँग्रेस का उद्घराव बेकार नहीं गया.



हो गया कि जमे हुए बनस्पति तेल पर रोक लगाई जाय. वेशक काँग्रेस कमेटी ने यह मार्के का ठहराव पास किया है. पर जो कमीयत इसके खिलाफ है वह भारी बहुत है, इसलिये हम इस ठहराव को इस बात की कसौटी मानते हैं कि काँग्रेस में और सरकार में किसी पालिसी के मामले में कहां तक एकसा पन है. अगर सरकार ने काँग्रेस के इस ठहराव पर कुछ भी ध्यान दिया तब तो हम यह समझें कि काँग्रेस कोई जानदार संस्था है और अगर यह ठहराव यों ही पड़ा रहा तब तो फिर हमारी नजरों में काँग्रेस और उसकी यह कुल हिन्द कमेटी सरकार के खेल खेलने और जा बे जा कुछ राग अलापने की संस्था हो बनी रहेगी.

बनस्पती तेल के जीते रहते घी अब तक खिन्दा किस तरह है यही समझने की बीख है. हिन्दुस्तान की पांच फ्रीसदी पट्टी लिखी जनता को छोड़ कर ६५ फ्रीसदी जनता घी की क्रायल है और वह बनस्पति तेल से घी को हजार गुना अच्छा समझती है. इसलिये वह उस चीख को शौक से खा लेती है जो घी बता कर या घी के नाम पर उसे दे दी जाती है. यह जमा हुआ बनस्पति तेल घी का जामा पहन कर जनता को छूट रहा है और कोई उसे इस छूट से बचाने वाला नहीं. हम इसी बसंत पंचमी को इलाहाबाद का माघ मेला देखने गए. वहां खुल्लमखुल्ला खोन्चे वाले आवाज लगा रहे थे— 'ढालढा घी की बनी हुई पकौड़ियां खाइये.' घी के एसेन्स की मदद से बनस्पति तेल और कोकोजम मिल कर घी के नाम से बाजार में धड़ाधड़ बिकते हैं और इस तरह उन आदिमियों को धोका

नया हलद  
हो किया कि जैसे होئے बनस्पति तेल पर रोक लगाई जाये. बेशक काँग्रेस कमेटी ने ये मार्के का तैयार पास किया है. पर जो कमेटी इसके خلاف है वह भारी बेमत है. इस लिये हम इस तैयार को इस बात की कसौटी मानते हैं कि काँग्रेस में और सरकार में किसी पालिसी के मामले में कहां तक साबिन है. अगर सरकार ने काँग्रेस के इस तैयार पर कुछ भी ध्यान दिया तब तो हम यह समझें कि काँग्रेस कोई जानदार संस्था है और अगर ये तैयार यों ही पड़ा रहा तब तो फिर हमारी नजरों में काँग्रेस और उसकी यह कुल हिन्द कमेटी सरकार के खेल खेलने और जा बे जा कुछ राग अलापने की संस्था हो बनी रहेगी.

बनस्पति तेल के जीते रहते घी अब तक खिन्दा किस तरह है यही समझने की बीख है. हिन्दुस्तान की पांच फ्रीसदी पट्टी लिखी जनता को छोड़ कर ६५ फ्रीसदी जनता घी की क्रायल है और वह बनस्पति तेल से घी को हजार गुना अच्छा समझती है. इस लिये वह उस चीख को शौक से खा लेती है जो घी बता कर या घी के नाम पर उसे दे दी जाती है. यह जमा हुआ बनस्पति तेल घी का जामा पहन कर जनता को छूट रहा है और कोई उसे इस छूट से बचाने वाला नहीं. हम इसी बसंत पंचमी को इलाहाबाद का माघ मेला देखने गए. वहां कलम केला खोन्चे वाले आवाज लगा रहे थे— 'ढालढा घी की बनी हुई पकौड़ियां खाइये.' घी के एसेन्स की मदद से बनस्पति तेल और कोकोजम मिल कर घी के नाम से बाजार में धड़ाधड़ बिकते हैं और इस तरह उन आदिमियों को धोका



हिन्दुस्तानी जनता उस त्रापी या उन बागियों को खुद ही ख़तम कर डालती और अंगरेजों को उंगली चठाने की ज़रूरत ही न होती।

१५ अगस्त सन् '४७ के बाद सन् '४७ में कभी भी या सन् '४८ के शुरू में भी अगर कोई हिन्दुस्तानी सरकार के खिलाफ़ मामूली सी बुराई की बात भी सोचता तो उसके रिश्तेदार खुद ही उसकी गरदन दबोच देते. और उसे किसी तरह भी अपनी सोची हुई बात को अमल में न लाने देते. हम यह कह कर सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि उन दिनों हिन्दुस्तानी सरकार यानी काँग्रेसी सरकार जनता को बेहद घायरी थी और इसी लिये किसी रोकथामी पाबन्दी की ज़रूरत नहीं थी

हम इस वक्त सिर्फ़ इतना ही कहना चाहते हैं कि जनता के खिलाफ़ सख्ती से भरे क़ानूनों के लिये पार्लियामेंट के सामने बिल पेश कर के काँग्रेसी सरकार समझदारों को यह कहती हुई मालूम हो रही है कि अब वह जनता में काफी बदनाम हो गई है और डंडे के सिवा उसके पास जीते रहने का और कोई चारा नहीं रह गया.

क्या सरकार कभी इस तरह सोचती है जिस तरह हम सोचते हैं ? और क्या इस नोट के बाद वह इस तरह सोचने की तकलीफ़ गवारा करेगी ?

१७. २. ५१.

—भगवानदीन

## वनस्पति पर रोक और सरकार—

हाल ही में अहमदाबाद में कुल हिन्दू काँग्रेस कमेटी का जलसा हुआ और उसमें यह ठहराव ५६ के खिलाफ़ १११ राय से पास

हन्दुस्तानी जेलों में या उन बागियों को खुद ही ख़तम कर डालती और अंगरेजों को उंगली चठाने की ज़रूरत ही न होती.

१० अगस्त सन् '४७ के बाद सन् '४७ में कभी भी या सन् '४८ के शुरू में भी अगर कोई हिन्दुस्तानी सरकार के खिलाफ़ मामूली सी बुराई की बात भी सोचता तो उसके रिश्तेदार खुद ही उसकी गरदन दबोच देते. और उसे किसी तरह भी अपनी सोची हुई बात को अमल में न लाने देते. हम यह कह कर सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि उन दिनों हिन्दुस्तानी सरकार यानी काँग्रेसी सरकार जनता को बेहद घायरी थी और इसी लिये किसी रोकथामी पाबन्दी की ज़रूरत नहीं थी.

हम इस वक्त सिर्फ़ इतना ही कहना चाहते हैं कि जनता के खिलाफ़ सख्ती से भरे क़ानूनों के लिये पार्लियामेंट के सामने बिल पेश कर के काँग्रेसी सरकार समझदारों को यह कहती हुई मालूम हो रही है कि अब वह जनता में काफी बदनाम हो गई है और डंडे के सिवा उसके पास जीते रहने का और कोई चारा नहीं रह गया.

क्या सरकार कभी इस तरह सोचती है जिस तरह हम सोचते हैं ? और क्या इस नोट के बाद वह इस तरह सोचने की तकलीफ़ गवारा करेगी ?

१०-१-५१

—भगवानदीन

## बनस्पति पर रोक और सरकार—

हाल ही में अहमदाबाद में कुल हिन्दू काँग्रेस कमेटी का जलसा हुआ और उसमें यह ठहराव ५६ के खिलाफ़ १११ राय से पास



हिन्दुस्तानी सरकार की बातें जब अंगरेज हिन्दुस्तान पर आए हुए थे.

इस अमरीका जापानी मुलह के बारे में एशियाई मुल्कों का चुप रहना. योरपी मुल्कों की बेपरवाही और यू. एन. ओ. का इसमें हाथ न डालना ऐसा बुरा रंग लायगा जिसकी वजह से सारा दुनिया एक दिन छलट पुलट होकर रहेगी.

१७. २. ५१

—भगवानदीन

## रोकथामी पावन्दी बिल—

रोकथामी पावन्दी बिल यानी प्रिवेन्टिव डिटेन्शन बिल पार्लिया-  
मेन्ट के पहरन पर मौजूद है. और जब उसका राजा जी जैसे नज़रबान-  
कार समर्थन कर रहे हैं और पार्लियामेन्ट का कॉंग्रेसी दल क़रीब  
क़रीब पूरे का पूरा उसे पास हुआ देखना चाहता है तो उसके पास  
होने में अब शक ही क्या ? हम यह मुनासिब नहीं समझते कि उसकी  
धाराओं को लेकर एक एक की बुराई भलाई पर बहस करें. हम तो  
यही कहना चाहते हैं कि अंगरेजी राज ने जिस वक़्त रौलट बिल  
एसेम्बली के सामने रक्खा था तब उस अंगरेजी राज ने यही सबूत  
दिया था कि अब वह डंडे के जोर से हिन्दुस्तान पर हकूमत करना  
चाहता है क्योंकि हिन्दुस्तान की जनता अब उस अंगरेजी राज के  
खिलाफ़ बगावत करने के लिये आमादा है. ग़लत या सही १९०५  
से पहले हिन्दुस्तानी जनता का बहुत बड़ा भाग अंगरेजी राज को  
ऐसा ही मानता था मानो वह ईश्वर का दिया हुआ हो और अगर  
उन दिनों कोई अंगरेजों के खिलाफ़ बगावत करने की सोचता तो

नया हल्द हमारी राई मार्च सन् ५१

हल्दस्तानी सरकार की बातें जब अंगरेज हल्दस्तान पर चढ़ाई  
होने लगे.

इस अमेरिके जापानी मुलह के बारे में एशियाई मुल्कों का  
चुप रहना. योरपी मुल्कों की बेपरवाही और यू. एन. ओ. का इस  
में हाथ न डालना ऐसा बुरा रंग लाएगा जिसकी वजह से सारा  
दुनिया एक दिन अलट होकर रहेगी.

—भगवानदीन

५१-५२-५३

## दुक तहामी पावन्दी बिल—

दुक तहामी पावन्दी बिल یعنی प्रिवेन्टिव डिटेन्शन बिल पार्लियामेन्ट  
के अहदान पर मौजूद है. और जब उस राजा जी जैसे नज़रबान-  
कार समर्थन कर रहे हैं और पार्लियामेन्ट का कॉंग्रेसी दल क़रीब  
क़रीब पूरा उसे पास हुआ देखना चाहता है तो उसके पास  
होने में अब शक ही क्या ? हम यह मुनासिब नहीं समझते कि उसकी  
धाराओं को लेकर एक एक की बुराई भलाई पर बहस करें. हम तो  
यही कहना चाहते हैं कि अंगरेजी राज ने जिस वक़्त रौलट बिल  
एसेम्बली के सामने रक्खा तब उस अंगरेजी राज ने यही सबूत  
दिया था कि अब वह डंडे के जोर से हल्दस्तान पर हकूमत करना  
चाहता है क्योंकि हिन्दुस्तान की जनता अब उस अंगरेजी राज के  
खिलाफ़ बगावत करने के लिये आमादा है. ग़लत या सही १९०५  
से पहले हिन्दुस्तानी जनता का बहुत बड़ा भाग अंगरेजी राज को  
ऐसा ही मानता था मानो वह ईश्वर का दिया हुआ हो और अगर  
उन दिनों कोई अंगरेजों के खिलाफ़ बगावत करने की सोचता तो



... ११

इस वक्त जरूरी सवाल यह है कि क्या वह जापान के साथ कोई ऐसी सुलह कर सकता है जिसमें यह शर्त भी हो कि अमरीका की भौजें जापान में जापान की हिफाजत के लिये अब्दा जमाए रहेंगी. हो सकता है जापान खुद भी अमरीका के साथ सुलहनामों में ऐसी शर्त जरूरी समझता हो. पर इस वक्त जापान की ऐसी गिरी हुई शर्तों की मंजूरी की कोई क़ीमत नहीं होती चादिये क्योंकि इस वक्त जो भी शर्तों की जायगी उनके पीछे अमरीका का दबाव रहना जरूरी है. अगर हम यू. एन. ओ. के मेम्बर हों या उसकी सुरक्षा कौन्सिल में हों तो हम इस तरह की शर्तों को जापान पर अमरीका का 'एम्पेशन' मानते. अगर यू. एन. ओ. के रहने अमरीका, हम बरतानिया, चीन या कोई भी मुल्क किसी भी हमारे मुल्क पर हम तरह क़ौबी, हवाई या जहाज़ी अब्दा बनाना चाहता है तो वह उस मुल्क पर ही 'एम्पेशन' नहीं करता जिस पर वह हमें अब्दे बनाना चाहता है बल्कि यू. एन. ओ. की शान के खिलाफ़ एम्पेशन करता है

अमरीका जापान में अपनी फ़ौजे रखने की बात के साथ मुल्क करके तीसरी लड़ाई के वोए हुए बीज को पानी डे रहा है और अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौन्सिल और हमके मेम्बर मुल्कों ने हम दुनिया के नाश करने वाले बीज को शुरू में ही न जला दिया तो यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा कौन्सिल इसके जहराले फल में खुद अपनी जान से हाथ धो बैठेंगी.

जापान की नरफ़ से अखबारों में जो शर्तों का मंजूरी की बात आ रही है वह उतनी ही बेजड़ की बात है जितनी उन दिनों की

मार्च १९५०

न्या हल्ल

अस وقت ضروری سوال یہ ہے کہ کیا وہ جاپان کے ساتھ کوئی ایسی صلح کر سکتا ہے جس میں یہ شرط بھی ہو کہ امریکہ کی فوجوں جاپان میں جاپان کی حفاظت کے لئے اڈا چمائیے دھینگے. ہو سکتا ہے حادثات دونوں بھی امریکہ کے ساتھ صلحنامے میں ایسی شرط ضروری سمجھتا ہو. یہ اس وقت جاپان کی ایسی کوئی ہوئی شرطوں کی منظوری کی کوئی قیمت نہیں ہونی چاہئے کہوئے اس وقت دو ہی شرطوں کی حالتیں ہوں گی کہ پیچھے امریکہ کا دباؤ دھندل جھروڑی ہے. اگر ہم یہ لیں. او. او. کے مسبر ہونے یا اُسکی سوکھنا کوساں میں ہونے تو ہم اس طرح کی شرط کو جاپان پر امریکہ کا 'ایمپیشن' مانتے. ال یو. این. او. کے دھتے امریکہ روس 'برطانیہ' چین یا کوئی بھی ملک کسی بھی دوسرے ملک پر اس طرح فوجی ہوئی یا جاپانی اڈا بنانا چاہتا ہے تو وہ اُس ملک پر ہی 'ایمپیشن' نہیں کرتا جس پر وہ اسے اڈے بنانا چاہتا ہے بلکہ یو. این. او. کی نشان کے خلاف 'ایمپیشن' کرتا ہے.

امریکہ جاپان میں 'نئی فوجوں رکھنے کی رات کے ساتھ صلح' کر کے تیسری لڑائی کے ہوئے ہونے پہنچ کر دانی دے دے گا. یو. این. او. کی سوکھنا کوساں اور اس نے مسبر مسکوں نے اس دنیا نے رات کے پہنچنے کو شروع میں ہی یہ حلا دیا. یو. این. او. اور اسکی سوکھنا کوساں اس نے دھینگے دھل سے خود اپنی جان سے ہاتھ دھو بیٹھیں گی.

جاپان کی طرف سے 'خباثتوں میں جو شرطوں کی منظوری کی بات آ رہی ہے وہ نئی ہی ہے جو کی رات ہے چٹنی اُن دنوں کی



کو دبایا گیا اور توڑا پیوڑا لکھا تھا کسی طرح پچھم میں جرمی کے حصے بخیرے کئے گئے تھے اور اِنٹی کا بھی بڑا حال تھا۔ آج ۱۹۵۱ میں دنیا کے سب ملک کافی سمجھدار ہو گئے ہیں اور ان میں سے ساتویں ملکوں کی ایک ایسی پلچلیت ہے جو یہ نہیں چاہتی کہ سن ۲۰۷۰ میں کی ہوئی دھیلنا دھیلکی اور چھپڑا چھپڑی اُسی طرح سے قائم رہے۔ اُس پلچلیت کا نام یو۔ این۔ او۔ ہے۔ انصاف کی دوسری یو۔ این۔ او۔ کی منشا یہ ہے اور ہونی بھی چاہئے کہ اب سب ملک پورے آزاد ہو رہے اور کسی ایک ملک کا قبضہ کسی بھی شکل میں کسی دوسرے ملک پر نہ رہ پائے۔ کیونکہ ایسا کئے بغیر نہ تو دنیا بہ کی شانتی کی لارنگی کی جا سکتی ہے اور نہ ہائیڈروجن بم میں روک تھام کی جا سکتی ہے اور نہ ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم چھسے سرولاشی ہتھیاروں پر کوئی پابندی لگائی جا سکتی ہے۔ اگر یہ کام نہ ہو پائے تو یو۔ این۔ او۔ کا زندہ رہنا مریدہ رہنے سے بھی بڑا ثابت ہوگا۔

یو۔ این۔ او۔ کے رہتے اور اس وجہ کے ہونے کے چاروں پر دوسری لڑائی کے بعد قبضہ کسی ایک ملک کا نہیں ہوا تھا بلکہ مکتوں ہوا تھا امریکہ کو کوئی حق حاصل نہیں ہے کہ وہ چاروں سے الگ الگ کوئی صلحنامہ کر بیٹھے۔ اگر وہ ایسا کرتا ہے تو وہ یو۔ این۔ او۔ کی شان کو بے لگاتا ہے اور دوسری لڑائی میں ساتویں دینے والے اٹھے مکتوں دوسرے امریکہ اور چھوٹے کو نیچا دکھانے کا کام کرتا ہے اس سب کو تو چھوڑو کہ کیونکہ امریکہ نے ایٹم بم کے زعم میں یہ سب کچھ کر سکتا ہے۔

( ۲۸۵ )

کو دبا دیا گیا اور توڑا پیوڑا لکھا گیا تھا کسی طرح پچھم میں جرمی کے حصے بخیرے کئے گئے تھے اور اِنٹی کا بھی بڑا حال تھا۔ آج ۱۹۵۱ میں دنیا کے سب ملک کافی سمجھدار ہو گئے ہیں اور ان میں سے ساتویں ملکوں کی ایک ایسی پلچلیت ہے جو یہ نہیں چاہتی کہ سن ۲۰۷۰ میں کی ہوئی دھیلنا دھیلکی اور چھپڑا چھپڑی اُسی طرح سے قائم رہے۔ اُس پلچلیت کا نام یو۔ این۔ او۔ ہے۔ انصاف کی دوسری یو۔ این۔ او۔ کی منشا یہ ہے اور ہونی بھی چاہئے کہ اب سب ملک پورے آزاد ہو رہے اور کسی ایک ملک کا قبضہ کسی بھی شکل میں کسی دوسرے ملک پر نہ رہ پائے۔ کیونکہ ایسا کئے بغیر نہ تو دنیا بہ کی شانتی کی لارنگی کی جا سکتی ہے اور نہ ہائیڈروجن بم میں روک تھام کی جا سکتی ہے اور نہ ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم چھسے سرولاشی ہتھیاروں پر کوئی پابندی لگائی جا سکتی ہے۔ اگر یہ کام نہ ہو پائے تو یو۔ این۔ او۔ کا زندہ رہنا مریدہ رہنے سے بھی بڑا ثابت ہوگا۔

یو۔ این۔ او۔ کے رہتے اور اس وجہ کے ہونے کے چاروں پر دوسری لڑائی کے بعد قبضہ کسی ایک ملک کا نہیں ہوا تھا بلکہ مکتوں ہوا تھا امریکہ کو کوئی حق حاصل نہیں ہے کہ وہ چاروں سے الگ الگ کوئی صلحنامہ کر بیٹھے۔ اگر وہ ایسا کرتا ہے تو وہ یو۔ این۔ او۔ کی شان کو بے لگاتا ہے اور دوسری لڑائی میں ساتویں دینے والے اٹھے مکتوں دوسرے امریکہ اور چھوٹے کو نیچا دکھانے کا کام کرتا ہے اس سب کو تو چھوڑو کہ کیونکہ امریکہ نے ایٹم بم کے زعم میں یہ سب کچھ کر سکتا ہے۔

( ۲۸۵ )



इस मजमून पर बहुत लिखा जा चुका है. यहाँ दोहराने की जरूरत नहीं. यहाँ तो हम सिर्फ इसी बात पर जोर देना चाहते हैं कि मध्य प्रदेशी सरकार की शराब वंदी कमेटी ने अपनी मवाल माला में इस तरह का वेमेल मवाल निकाल कर विधान की धारा ४७ की खिलाफवर्जी की है. और अब हम देवना चाहते हैं कि मध्य प्रदेश की सरकार और दिल्ली सरकार इस बारे में क्या करती हैं.

१३. २. '१९.

—भगवानदीन

## ( अमरीका जापानी सुलहनामा— )

दूसरी बड़ी लड़ाई में भले ही अमरीका के एटम बम की मार से जापान ने घुटने टेके हों पर असल में जापान को हराया था मित्रों ने यानी अमरीका, रूस, बरतानिया और चीन ने. यह ठीक है कि जापान पर कौजी घेरा अमरीका का ही रक्खा गया पर साथ ही साथ जापान में रूसी कमांडर भी रहता था और दोनों मिल कर ही जापानी हकूमत का काम संभालते थे. इस तरह की कारवाई उन दिनों की हालत में ठीक थी. उन्हीं दिनों जापान के यडोमी कोरिया के भी ३८ पड़ी रेखा पर दो टुकड़े किये गए थे. ऊपर के उत्तरी टुकड़े पर रूसी फौजों का घेरा था और नीचे के दक्खिनी टुकड़े पर अमरीकी फौजों का.

हमारे पढ़ने वालों को यह याद रहे कि उन दिनों यानी १९४५ में दुनिया की हालत डांबाडोल थी और इस वजह से कोई ढंग की ~~जापानियों को सक्ती थी. जिस तरह पूरब में जापान और कोरिया~~

मार्च सन १९१९

हमारी राय

नया हल्द

अस. खुदों पर बम तूफान चढ़ा चका है. यहाँ देहाने की जरूरत नहीं. यहाँ तो हम صرف इसी बात पर जोर दिना चाहते हैं कि मध्य प्रदेशी सरकार की शराब वंदी कमेटी ने अपनी मवाल माला में इस तरह का मील मवाल निकाल कर देहान की देहान ३७ की खिलाफवर्जी की है. और अब हम दिक्कत चाहते हैं कि मध्य प्रदेश की सरकार और दिल्ली सरकार इस बारे में क्या करती हैं.

—भगवानदीन

१३-२-१९

( २५ )

## अमरीका जापानी सलहनामा —

दूसरी बड़ी लड़ाई में भले ही अमरीका के एटम बम की मार से जापान ने घुटने टेके हों पर असल में जापान को हराया था मित्रों ने यानी अमरीका, रूस, बरतानिया और चीन ने. यह ठीक है कि जापान पर कौजी घेरा अमरीका का ही रक्खा गया पर साथ ही साथ जापानी हकूमत का काम संभालते थे. इस तरह की कारवाई उन दिनों जापान के यडोमी कोरिया के भी ३८ पड़ी रेखा पर दो टुकड़े किये गए थे. ऊपर के उत्तरी टुकड़े पर रूसी फौजों का घेरा था और नीचे के दक्खिनी टुकड़े पर अमरीकी फौजों का.

हमारे पढ़ने वालों को यह याद रहे कि उन दिनों यानी १९४५ में दुनिया की हालत डांबाडोल थी और इस वजह से कोई ढंग की ~~जापानियों को सक्ती थी. जिस तरह पूरब में जापान और कोरिया~~



क्या इस सवाल के ज़रिये मध्य प्रदेशी सरकार विधान की दफा ४७ के बारे में जनता से यह राय लेना चाहती है कि वह दफा ठीक बनी है या नहीं ? और क्या उसका यह हक़ हासिल है ? और क्या किसी को भी यह हक़ हासिल है ? ऐसा करना तो एक तरह से विधान के खिलाफ़ बगावत का भंडा उठाना है, असमोस तो यह है कि यह बगावत का भंडा उठता है उस प्रान्त से जो गांधीजी की जन्म भूमि तो नहीं पर कमभूमि तो मानी ही जाती है, और हिन्दुस्तानियों का काब्र मेवाघाट ता उसी प्रान्त में है, यह कांवेस ही कुफ़, का भंडा !

( ५५ )

हम नहीं जानते मध्य प्रदेश सरकार की बनाई हुई यह कमेटी किस तरह इतनी हिम्मत कर गई? उसमें तो नागपुर हाईकोर्ट के एक रिटायर्ड जज भी शामिल हैं।

अब तक अगर सचंच जी से ग्रान्त की सरकारों और दिल्ली सरकार ने शराब बंदी के लिये कोशिश की होती तो बहुत बड़ी सफलता हो गई होती. पर शायद आमदनी का भूटा लालच हा उनके रास्ते में दीवार बन कर खड़ा हो गया है. उन्हें यह पता नहीं है कि शराब बंद हो जाने से नेशन की आमदनी एकसाइज की आमदनी से कई गुना बढ़ जायगी. किस तरह बढ़ जायगी

卷二

سبھی کے لئے ہم ۴۷ ویں فنڈ کا خصوصی حصہ بھیجے بغیر دیتے ہیں۔" ہر ایک راج (خاندان) سبھی نے سو ادا ہوئے۔

ہم نہیں جانتے مدد دینے پر تیار نہ تھے۔  
کبھی کس طرح انڈیہمت کر لیں؟  
نہیں جانتے مدد دینے پر تیار نہ تھے۔

اب تک اگر سچے جی سے پراست کی سبزون و: دانی سورا  
نے شراب ہندی کے لئے کوشش کی غوثی تو بہت بڑی سہل  
ہونگى ہوتی۔ یہ شاید آمدنی کا چھوٹا "بیج" ہی نہ کے راستے  
میں دیوار بن کر کھڑا ہو گیا ہے۔ انہیں یہ پلگ سہل  
ہے کہ شراب ہندی ہوجانے سے نیشن کی آمدنی ایکسائز کی  
آمدنی سے کٹی لگا بڑھ جائے گی۔ کس طرح بڑھ جائے گی



वर्तमान अब नहीं रहा. इस वक्त तो इस बात की सख्त जरूरत है कि हिन्दू राजशाही. ठाकुरशाही और पुरोहितशाही के बने हुए सब कानूनों पर एक बार हिन्दू लोकशाही की छाप लग जाय. तभी हिन्दुस्तानी नेशन बन सकेगी.

१३. २. ११

—भगवानदीन

## अमानत में खयानत—

भारत का विधान. उस जनता ने जो आज हिन्दुस्तान की मालिक है, अपने हाथ से उस सरकार के हाथ में. जिसे उसने अपनी सरकार से दूसरे आम चुनाव तक के लिये अपनी सरकार मान लिया है, सौंपा है. यह पास तो उस बोली में होना चाहिये था जो सारे हिन्दुस्तान में समझी जाती है पर किसी वजह से यह समझदार पार की बोली में पास हुआ. यह हुआ तो कुछ हर्ज नहीं. पर यह तो हर रियासत और हर सरकारी अफसर और हकूमत में हर हिस्सा लेने वाले को समझना ही चाहिये कि यह जनता की देन है. इसके खिलाफ कोई काम उस वक्त तक नहीं होना चाहिये जब तक यह विधान विधान की चौकी पर मौजूद है.

मालूम हुआ है मध्य प्रदेश की सरकार ने शराबबंदी के बारे में एक जाँच कमेटी बिठाई है और उसी मिलमिले में एक मन्त्रालय निकाली है. उसका पहला मन्त्रालय है—“..... क्या आप ऐसा मानते हैं कि शराबबंदी की पालिसी आजकल के जनमानस के सामकित है? अगर ‘हाँ’ तो क्या आप की निगाह आपनी इस राय के लिए किसी जमानत पर है?”

मार्च सन् १९११

नया हल

नब नभिये रहा. इस वक्त तो इस बात की सख्त जरूरत है कि हिन्दू राजशाही. ठाकुरशाही और पुरोहितशाही के बने हुए सब कानूनों पर एक बार हिन्दू लोकशाही की छाप लग जाय. तभी हिन्दुस्तानी नेशन बन सकेगी.

१३. २. ११

—भगवानदीन

## अमानत में खयानत—

भारत का विधान. उस जनता ने जो आज हिन्दुस्तान की मालिक है, अपने हाथ से उस सरकार के हाथ में. जिसे उसने अपनी सरकार से दूसरे आम चुनाव तक के लिये अपनी सरकार मान लिया है, सौंपा है. यह पास तो उस बोली में होना चाहिये था जो सारे हिन्दुस्तान में समझी जाती है पर किसी वजह से यह समझदार पार की बोली में पास हुआ. यह हुआ तो कुछ हर्ज नहीं. पर यह तो हर रियासत और हर सरकारी अफसर और सरकार में हर हिस्से लेने वाले को समझना ही चाहिये कि यह जनता की देन है. इसके खिलाफ कोई काम उस वक्त तक नहीं होना चाहिये जब तक यह विधान विधान की चौकी पर मौजूद है.

मालूम हुआ है मध्य प्रदेश की सरकार ने शराबबंदी के बारे में एक जाँच कमेटी बिठाई है और उसी मिलमिले में एक मन्त्रालय निकाली है. उसका पहला मन्त्रालय है—“..... क्या आप ऐसा मानते हैं कि शराबबंदी की पालिसी आजकल के जनमानस के सामकित है? अगर ‘हाँ’ तो क्या आप की निगाह आपनी इस राय के लिए किसी जमानत पर है?”



आर्य समाज आज भी मर्मर्थन करता हो. उस समाज में तलाक़ का क़ानून बनने पर इतना शोर क्यों? और फिर तलाक़ का यह मतलब तो है ही नहीं कि तलाक़ का क़ानून बनने ही हर हिन्दू और आर्यन पति को तलाक़ दे बैठेगी. और इस तो हम कह कर कर ही क्या कि हर हिन्दू अपनी औरत को तलाक़ दे बैठेगा क्योंकि आज के हिन्दू क़ानून के मुताबिक हिन्दू पति तो हर तरह से आजाद हो नहीं अपनी औरत का हर तरह से मालिक है. वह जो चाहे कर सकता है. हाँ, तो अगर थोड़ा देर के लिये यह मान ही लिया जाय कि हिन्दू औरतों की बहुत बड़ी तादाद क़ानून बनते ही तलाक़ की आरज़ा दे बैठेगी तब तो यहाँ समझना चाहिये कि हिन्दू स्त्रियों वैसा चाहती थी. और जब चाहती थीं तो कानून ठीक ही बना. बेटी के बाप का जायदाद में हिस्सा पाने के बारे में भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है. यहाँ तो हम सिर्फ़ इतना कहना ही कार्की समझते हैं कि मुक़दम बाज़ी का जो डर दिखाया जाता है वह भाई भाइयों में पहले से ही मौजूद है. अब बहन भाइयों में भी हो जाय तो कुछ ज़यादा नहीं होगा. और जहाँ हिन्दू क़ायदे से बेटी अपने बाप की जायदाद की मालिक होती है वहाँ भी कब वह उस जायदाद को अदालत में जाए बग़ैर पा लेती है. उस हालत में भी उसके खिलाफ़ कोई न कोई दावेदार खड़ा ही हो जाता है. मुक़दमेबाज़ी जब हवा में फैली हुई है तब उस रोक ही कौन सकता है? हर रिवाज में कुछ न कुछ बुराई रहती ही है पर उस बुराई की वजह से उसकी भलाइयों से फ़ायदा न उठाया जाय यह कहाँ की दलील है?

हिन्दू कोड बिल की अच्छाई बुराई पर दलील दिये जाने का

'रिये समाज' आज भी समग्रों को तब 'स समाज' में तलाक़ का क़ानून बनने पर इतना शोर क्यों? और फिर तलाक़ का यह मतलब तो है ही नहीं कि तलाक़ का क़ानून बनने ही हर हिन्दू और आर्यन पति को तलाक़ दे बैठेगी. और इस तो हम कह कर कर ही क्या कि हर हिन्दू अपनी औरत को तलाक़ दे बैठेगा क्योंकि आज के हिन्दू क़ानून के मुताबिक हिन्दू पति तो हर तरह से आजाद हो नहीं अपनी औरत का हर तरह से मालिक है. वह जो चाहे कर सकता है. हाँ, तो अगर थोड़ा देर के लिये यह मान ही लिया जाय कि हिन्दू स्त्रियों वैसा चाहती थी. और जब चाहती थीं तो कानून ठीक ही बना. बेटी के बाप की जायदाद में हिस्सा पाने के बारे में भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है. यहाँ तो हम सिर्फ़ इतना कहना ही कार्की समझते हैं कि मुक़दम बाज़ी का जो डर दिखाया जाता है वह भाई भाइयों में पहले से ही मौजूद है. अब बहन भाइयों में भी हो जाय तो कुछ ज़यादा नहीं होगा. और जहाँ हिन्दू क़ायदे से बेटी अपने बाप की जायदाद की मालिक होती है वहाँ भी कब वह उस जायदाद को अदालत में जाए बग़ैर पा लेती है. उस हालत में भी उसके खिलाफ़ कोई न कोई दावेदार खड़ा ही हो जाता है. मुक़दमेबाज़ी जब हवा में फैली हुई है तब उस रोक ही कौन सकता है? हर रिवाज में कुछ न कुछ बुराई रहती ही है पर उस बुराई की वजह से उसकी भलाइयों से फ़ायदा न उठाया जाय

कहाँ की दलील है?

हन्दू कोड बिल की अच्छाई बुराई पर दलील दिये जाने का



हिन्दू समाज अभी तक जातों के ऐसे बुरे अलग अलग खानों में बैठा है कि नेशन के लिये जो गुन जरूरी हैं वह उसमें पनप ही नहीं पाते. इसलिये और सिर्फ इसलिये ही हिन्दुस्तान की व्याहारी (सेकुलर) सरकार को हिन्दू कोड बिल का काम अपने हाथ में लेना ही चाहिये था. क्योंकि आज तक के हिन्दू रस्म और रिवाजों के बनेने में हिन्दुस्तानी नेशन का कभी हाथ नहीं रहा. एक वर्ग या एक गिराह का रहा है. इस नाते जब तक हिन्दू कोड बिल पास नहीं होता, हम यह मानने के लिये तैयार ही नहीं कि हमारे देस में व्याहारी सरकार नाम की कोई सरकार है. यह साबित करने के लिये भी कि हिन्दुस्तान में लोकशाही है. लोकशाही की प्रनिधि आज की सरकार की छाप हिन्दुओं के सारे कानूनों पर लगनी ही चाहिये. असल में होना तो यही चाहिये था कि आज की सरकार से जो कानून बनते वह हिन्दु-स्तान के सब आदिमियों पर लागू होते. पर अगर किसी वजह से हिन्दुस्तान में वैसी हालत नहीं है या आज की सरकार अपने आप को इतना मजबूत नहीं पाती तो कम से कम इतना तो उसे करना ही चाहिये कि वह गैरहिन्दुओं के तमाम मामलों कानूनों पर अपनी छाप लगा कर यह साबित करदे कि सारा हिन्दुस्तान एक कानून में नहीं तो एक सरकार के कानून में जरूर शामिल होना है.

अब रहीं आज के हिन्दू कोड बिल की दो ग्राम जानें. पहली बेटी को बाप की जायदाद से हिस्सा मिलना. दूसरे नलाक देना. यह दोनों रिवाज हिन्दुओं में कहीं न कहीं और किमा न किमा रूप में पहले से ही मौजूद हैं. जिस समाज में नियोग जैसा रिवाज रहा हो और नियोग जैसे रिवाज का हिन्दू समाज का एक बड़ा हिस्सा

हन्दो सभा अही तक जातों के ایسے برے الگ الگ خانوں میں بتا ہے کہ نیشن کے لئے جو گن ضروری ہوں وہ اس میں پلپ ہی نہیں پاتے. اس لئے اور صرف اس لئے ہی ہندستان کی بیوہاوی (سیکولر) سڑکار کو دلد کو قبل کا کالہ اپنے ہاتھ میں لیڈا ہی چاہئے تھا. کیونکہ آج تک کے ہندو رسم اور رواجوں کے بننے میں ہندستانی نیشن کا لمبی ہاتھ نہیں رہا. ایک ورگ یا ایک گروہ کا رہا ہے. اس راتے حتک تندہ کو قائل دلس نہیں ہوتا. ہم یہ ماننے کے لئے تیار ہی نہیں کہ ہمارے دیس میں بیوہاوی سڑکار نام کی کوئی سڑکار ہے. یہ ثابت کرنے کے لئے بھی کہ ہندستان میں لوک شاہی ہے لوک شاہی کی پرپی بدنی آج کی سڑکار کی چھاپ ہندوؤں نے سارے قابوں پر لگنی ہی چاہئے. اصل میں ہونا تو یہی چاہئے تھا کہ آج کی سڑکار سے جو قابوں بدتے وہ ہندستان کے سب آدمیوں پر لاگو ہوتے. نہ اگر کسی وجہ سے ہندستان میں ویسی حالت نہیں ہے یا آج کی سڑکار اپنے آپکو ایذا مضبوط نہیں پاتی تو کم سے کم ایذا تو اسے کرنا ہی چاہئے کہ وہ ہندوؤں کے تمام سماجی قابوں پر اپنی چھاپ لیا کر یہ ثابت کر دے کہ سدا ہندستان ایک قابوں سے نہیں تو ایک سدا. نے قابوں سے غور.

شاست ہوتا ہے.

اب رھیں آجکے ہندو کوڈ بل کی دو خاص رانیں دیکھی کو باپ کی جائداد سے حصہ ملنا. دوسرے طلاق دیدا. نہ دوسرے رواج ہندوؤں میں کہیں نہ کہیں اور کسی نہ کسی رتبہ میں بننے سے ہی موجود ہیں. جس سماج میں بیوگ جھسا رواج رہا ہو اور بیوگ جیسے رواج نہ ہندو سماج کا ایک بڑا حصہ



और अजब नहीं एटम बम के जोर पर वह बल उन मुल्कों के लिये 'एग्नेसर' होने की तजवीज यू. एन. ओ. के सामने रखे जिन मुल्कों ने आज यह कहा है कि चीन 'एग्नेसर' नहीं है। अब श्री जवाहरलाल जी हिन्दुस्तान को 'एग्नेसरों' में गिनवाने के लिये तैयार रहे।

चीन, तुम 'एग्नेसर' तो नहीं हो पर 'एग्नेसरों' में कमाल रखने वाले पच्छिम के ४४ मुल्कों के गुट्ट का सरदार अमरीका तम्हें 'एग्नेसरों' की सनद देता है। उस सनद को आधी से ज्यादा दुनिया नहीं मानती।

१०. २. ५१.

—भगवानदीन

## हिन्दू कोड बिल -

हमारे खयाल से, जनता जितनी ज्यादा ताकत सरकार के हाथ में देती है उतनी ज्यादा कमजोर तो होती ही है पर साथ ही साथ वह उतनी ही अपनी आजादी भी खो बैठती है। और यही सिद्धान्त राज बिद्या यानी पोलिटिकल साइन्स का भी है। आज के जवानों को रूसी हकूमत के तरीक़े के बारे में उड़ी हुई ख़बरों के बल पर जब हम यह शोर मचाते देखते हैं कि सारे रोज़गारों को 'नेशनलाइज' कर दिया जाय यानी सरकार के हाथ में दे दिया जाय तो हम दंग रह जाते हैं। पर इस समय तो यह हवा चल पड़ी है। और जब यह हवा चल पड़ी है तो हिन्दू कोड बिल भी सरकार क्यों न तैयार करे। हिन्दू कोड बिल हाथ में लेने से पहले सरकार कई तरह से हिन्दू रस्म रिवाजों पर काफ़ी अधिकार पाए हुए हैं। फिर अब यह शोर तो बेकार है कि हिन्दुओं के समाजी मामलों में सरकार को दखल नहीं देना

और अजब लैब्स लिमिटेड के दोर दोर 'न' मुल्कों के लिये 'एग्नेसर' होने की तजवीज यू. एन. ओ. के सामने रखे जिन मुल्कों ने आज यह कहा है कि चीन 'एग्नेसर' नहीं है। अब श्री जवाहरलाल जी हिन्दुस्तान को 'एग्नेसरों' में गिनवाने के लिये तैयार रहें।

चीन, तुम 'एग्नेसर' तो नहीं हो पर 'एग्नेसरों' में कमाल रखने वाले बज्जम के ४४ मुल्कों के गुट्ट का सरदार अमरीका तम्हें 'एग्नेसरों' की सनद देता है। उस सनद को आधी से ज्यादा दुनिया नहीं मानती।

०१-२-५१

—बिष्णुनाथ दीन

## हिन्दू कोड बिल -

हमारे खयाल से, जनता जितनी ज्यादा ताकत सरकार के हाथ में देती है उतनी ज्यादा कमजोर तो होती ही है पर साथ ही साथ वह उतनी ही अपनी आजादी भी खो बैठती है। और यही सिद्धान्त राज बिद्या यानी पोलिटिकल साइन्स का भी है। आज के जवानों को रूसी हकूमत के तरीक़े के बारे में उड़ी हुई ख़बरों के बल पर जब हम यह शोर मचाते देखते हैं कि सारे रोज़गारों को 'नेशनलाइज' कर दिया जाय यानी सरकार के हाथ में दे दिया जाय तो हम दंग रह जाते हैं। पर इस समय तो यह हवा चल पड़ी है। और जब यह हवा चल पड़ी है तो हिन्दू कोड बिल भी सरकार क्यों न तैयार करे। हिन्दू कोड बिल हाथ में लेने से पहले सरकार कई तरह से हिन्दू रस्म रिवाजों पर काफ़ी अधिकार पाए हुए हैं। फिर अब यह शोर तो बेकार है कि हिन्दुओं के समाजी मामलों में सरकार को दखल नहीं देना



उनसे न बच कर करता. उस रिशी के मुलाविक जान बचाने के लिये उठाई हुई तलवार से जो हिंसा होती है वह हिंसा ही नहीं है और वह तलवार भी हिंसा का औजार नहीं मानी जायगी बल्कि बचाव के औजार की तरह पूजी जायगी. उसका यह कहना है कि अपने बचाव में आदमी किमी को मारने की नहीं सोचता. वह तो मरिक् अपने बचाव की सोचता है. उसका बचाव अपने आप दूसरे की हिंसा का कारन बन जाता है. इसे वह क्या करे ? ईश्वर के यहाँ या कुदरत में सजा नियत की है न कि काम की. बस रिशी की इस कमौटी पर आप किसी हमले को कम लीजिये. आपको यह पता लग जायगा कि यह हमला 'एग्जेशन' है या नहीं और यह आदमी. मुल्क या कौम 'एग्जेशन' समझी जाय या नहीं. इसी कसौटी पर कम कर हम यह कहते हैं कि अमरीका जापान में रहकर. जापानियों को सना रहा है और 'एग्जेशन' है और यही हाल दूसरे एशियाई मुल्कों में जो योरपी या अमरीकी मुल्क कर रहे हैं वह भी इस नाते 'एग्जेशन' ही माने जायेंगे. पर यू. एन. ओ. में 'एग्जेशन' का एक गुट बन गया है. ऐसे चोर कम ही होते हैं जो अपने को चोर कहें इसी तरह ऐसे 'एग्जेशन' बहुत कम ही होते हैं जो अपने को 'एग्जेशन' कहें. एग्जेशन का यह मुभाव ही होता है कि वह 'एग्जेशन' करने वकत दूसरे पर 'एग्जेशन' का इलजाम लगाते ही हैं. और हमारे पढ़ने वालों में से सबने अपने अपने घरों में अपने बच्चों को रोज ही ऐसा करने देखा होगा.

बस अमरीका अपने 'एग्जेशन' की तरफ से दुनिया की नजर दूर रखने के लिये कभी कोरिया को 'एग्जेशन' कहता है. कभी चीन को

अन से न बचकर बना. उस रशी के مطابق जान बचाने के लिये अतैली हुयी तलवार से जो हिंसा होती है वह हिंसा ही नहीं है और वह तलवार भी हिंसा का औजार नहीं मानी जायगी बल्कि बचाव के औजार की तरह पूजी जायगी. उसका यह कहना है कि अपने बचाव में आदमी किसी को मारने की नहीं सोचता. वह तो मरिक् अपने बचाव की सोचता है. उसे क्या करे ? ईश्वर के यहाँ या कुदरत में सजा नियत की है न कि काम की. बस रशी की इस कमौटी पर आप किसी हमले को कम लीजिये. आपको यह पता लग जायगा कि यह हमला 'एग्जेशन' है या नहीं और यह आदमी. मुल्क या कौम 'एग्जेशन' समझी जाय या नहीं. इसी कसौटी पर कम कर हम यह कहते हैं कि अमरीका जापान में रहकर. जापानियों को सना रहा है और 'एग्जेशन' है और यही हाल दूसरे एशियाई मुल्कों में जो योरपी या अमरीकी मुल्क कर रहे हैं वह भी इस नाते 'एग्जेशन' ही माने जायेंगे. पर यू. एन. ओ. में 'एग्जेशन' का एक गुट बन गया है. ऐसे चोर कम ही होते हैं जो अपने को चोर कहें इसी तरह ऐसे 'एग्जेशन' बहुत कम ही होते हैं जो अपने को 'एग्जेशन' कहें. एग्जेशन का यह मुभाव ही होता है कि वह 'एग्जेशन' करने वकत दूसरे पर 'एग्जेशन' का इलजाम लगाते ही हैं. और हमारे पढ़ने वालों में से सबने अपने अपने घरों में अपने बच्चों को रोज ही ऐसा करने देखा होगा.

बस अमरीका अपने 'एग्जेशन' की तरफ से दुनिया की नजर दूर रखने के लिये कभी कोरिया को 'एग्जेशन' कहता है. कभी चीन को



समझने में बड़े मदद्गार साबित होंगे। उस रिशी का कहना है कि सब जानवरों से ऊँचे दर्जे का प्राणी आदमी सब शक्तों में हिसा न्हा खोड़ सकता। अगर वह ऐसा करेगा तो अपनी जान म्रों बैठेगा और वही रिशी यह भी कहता है कि अपनी गलती से अपनी जान खोना भी हिसा करना है। इसलिये खुदकुशी कन्स है। तभी ना आज का कानून भी खुदकुशी की सजा खुदकुशी करने वाले को देना है। उसी रिशी ने उस हिसा को फिर दो तरह को बनाया है। यानी पहली एक इन्द्रिय प्राणियों की हिसा और दूसरा दो या इससे ऊपर इन्द्रियों वाले प्राणियों की हिसा। यानी एक हवा, पानी, सन्ज कोंरा की हिसा और दूसरी कीड़ मक्काड़ों से लेकर आदमा तक की हिसा। उस रिशी ने हवा, पानी, सन्जों की हिसा से तो आदमा को एकदम बरी कर दिया। अब रह गए चलने फिरने जानदार, इन चलने फिरने जानदार की हिसा को भी उसने चार तरह की माना पहली वह जो जानवूक कर या वेपरवाही से की जाय, दूसरी वह जो खाने, पने, उठने, बैठने में हो, तीसरी वह जो रोजी कमाने के सिलसिले में हो, चौथी वह जो बचाव की खातिर हो, उस रिशी का यह भी कहना है कि दुनियादार इनमान सिर्फ पहली हिसा से बच सकता है, यानी यह कि वह इतना ही कर सकता है कि जानवूक कर या वेपरवाही से बलते फिरते जानदारों की जान न ले और उनको न सताए, उसी रिशी का यह भी कहना है कि इससे आगे की तीन तरह की हिसाओं को छोड़ने का कोई आदमी सिर्फ ढोंग रच सकता है, उनको अमल में नहीं ला सकता, और अगर अमल में लाता है तो वह उनसे बचकर उससे भी ज्यादा हिसा कर बैठेगा जो वह

समझने में बड़े मदद्गार साबित होंगे, उस रिशी का कहना है कि सब जानवरों से ऊँचे दर्जे का प्राणी आदमी सब शक्तों में हिसा न्हा खोड़ सकता, और वही रिशी यह भी कहता है कि अपनी गलती से अपनी जान खोना भी हिसा करना है, इसलिये खुदकुशी कन्स है, तभी ना आज का कानून भी खुदकुशी की सजा खुदकुशी करने वाले को देना है, उसी रिशी ने उस हिसा को फिर दो तरह को बनाया है, यानी पहली एक इन्द्रिय प्राणियों की हिसा और दूसरी दो या इससे ऊपर इन्द्रियों वाले प्राणियों की हिसा, यानी एक हवा, पानी, सन्ज कोंरा की हिसा और दूसरी कीड़ मक्काड़ों से लेकर आदमा तक की हिसा, उस रिशी ने हवा, पानी, सन्जों की हिसा से तो आदमा को एकदम बरी कर दिया, अब रह गए चलने फिरने जानदार, इन चलने फिरने जानदार की हिसा को भी उसने चार तरह की माना पहली वह जो जानवूक कर या वेपरवाही से की जाय, दूसरी वह जो खाने, पने, उठने, बैठने में हो, तीसरी वह जो रोजी कमाने के सिलसिले में हो, चौथी वह जो बचाव की खातिर हो, उस रिशी का यह भी कहना है कि दुनियादार इनमान सिर्फ पहली हिसा से बच सकता है, यानी यह कि वह इतना ही कर सकता है कि जानवूक कर या वेपरवाही से बलते फिरते जानदारों की जान न ले और उनको न सताए, उसी रिशी का यह भी कहना है कि इससे आगे की तीन तरह की हिसाओं को छोड़ने का कोई आदमी सिर्फ ढोंग रच सकता है, उनको अमल में नहीं ला सकता, और अगर अमल में लाता है तो वह उनसे बचकर उससे भी ज्यादा हिसा कर बैठेगा जो वह



नहीं है तो अपनी क्या दलीलें रखते हैं। उनकी यही तो दलील है कि जब चीन ने यह देखा कि अमरीका सारे कोरिया पर छाया जाता है तो उसे अपना शान्त मंचूरिया मारु खतरे में दिखाई दिया। और यह दिखाई दिया कि अब अमरीका की नलवार उसके मर पर आ पहुँची और बस अपने वचाव की खातिर उसने उत्तरी कोरिया की मदद की और इससे ज्यादा कुछ नहीं किया। अपना वचाव करना फर्ज है और फर्ज अदा करने के नाते जो हमला किया जाय वह 'एग्जेशन' नहीं। इसलिये हमला करने वाला 'एग्जेशन' नहीं। हम श्री जवाहर लाल जी की इस बात में विलकुल सहमत हैं। हमें इनका और बड़ा देना चाहते हैं कि जब उत्तरी कोरिया ने यह देखा कि दक्खिनी कोरिया के सिंचमन री से सांठ गांठ करके अमरीका मांग दक्खिनी कोरिया पर छा जाने की कोशिश में है और किसी दिन भी यह हो सकता है कि उत्तरी कोरिया पर भी जोर का हमला कर दिया जाय तो उसने यह समझा कि अमरीका की नलवार उसके मर पर है वम उस तलवार से बचने के लिये उसने दक्खिनी कोरिया पर नहीं दक्खिनी कोरिया पर छाए हुए अमरीकियों और उसके हाथ में खेलने वाले सिंचमन री और उसके फौजों पर हमला बोल दिया। यह हमला 'एग्जेशन' नहीं था, और हमला करने वाला 'एग्जेशन' नहीं था। श्री जवाहरलाल जी जो बात आज चीन के लिये कह रहे हैं अगर उस वक्त उत्तरी कोरिया के लिये कह दें तो आज दुनिया की हालत ही दूसरी होती। पर 'क्या बरसे जब खंन सुनाने'।

हिंसा अहिंसा के मामले में भी हम एक रिशी के विचार में देना चाहते हैं। यह यहाँ वेतुके नहीं होंगे। 'एग्जेशन' का मतलब

नहीं है तो अपनी क्या दलीलें रखते हैं। उनकी यही तो दलील है कि जब चीन ने यह देखा कि अमरीका सारे कोरिया पर छाया जाता है तो उसे अपना शान्त मंचूरिया मारु खतरे में दिखाई दिया। और यह दिखाई दिया कि अब अमरीका की नलवार उसके मर पर आ पहुँची और बस अपने वचाव की खातिर उसने उत्तरी कोरिया की मदद की और इससे ज्यादा कुछ नहीं किया। अपना वचाव करना फर्ज है और फर्ज अदा करने के नाते जो हमला किया जाय वह 'एग्जेशन' नहीं। हम श्री जवाहर लाल जी की इस बात में विलकुल सहमत हैं। हमें इनका और बड़ा देना चाहते हैं कि जब उत्तरी कोरिया ने यह देखा कि दक्खिनी कोरिया मांग दक्खिनी कोरिया पर छा जाने की कोशिश में है और किसी दिन भी यह हो सकता है कि उत्तरी कोरिया पर भी जोर का हमला कर दिया जाय तो उसने यह समझा कि अमरीका की नलवार उसके मर पर है वम उस तलवार से बचने के लिये उसने दक्खिनी कोरिया पर नहीं दक्खिनी कोरिया पर छाए हुए अमरीकियों और उसके हाथ में खेलने वाले सिंचमन री और उस की फौजों पर हमला बोल दिया। यह हमला 'एग्जेशन' नहीं था, और हमला करने वाला 'एग्जेशन' नहीं था। श्री जवाहरलाल जी जो बात आज चीन के लिये कह रहे हैं अगर उस वक्त उत्तरी कोरिया के लिये कह दें तो आज दुनिया की हालत ही दूसरी होती। पर 'क्या बरसे जब खंन सुनाने'।

हमला अहिंसा के मामले में भी हम एक रिशी के विचार में देना चाहते हैं। यह यहाँ वेतुके नहीं होंगे। 'एग्जेशन' का मतलब



लेकर बड़ाई न की हो। अमरीका दक्खिनी कोरिया में जब में पड़ा हुआ है तब से 'एग्नेसर' न भी माना जाय तो उस वक्त से तो 'एग्नेसर' जरूर है जब से रूस उत्तरी कोरिया को छोड़ कर चल दिया। ठीक इसी तरह से फ्रान्स हिन्द चीन में 'एग्नेसर' है। वहाँ फ्रान्स हिन्दुस्तान के पांडिचरी में 'एग्नेसर' है। और इसी तरह से पुर्तगाल वगैरा भी। चीन के बन्दरगाह हाँगकाँग पर छाया हुआ वनोनिया 'एग्नेसर' क्यों नहीं? और वहाँ बर्तोनिया मलाया में तो आज जिसके आँख न हों उसको भी 'एग्नेसर' दिखाई देगा। और यही बर्तोनिया सूडान और मिस्र में 'एग्नेसर' नहीं तो क्या है? पर इस तरफ चीन को 'एग्नेसर' कहने वाले ४४ मुल्कों की निगाह क्यों नाने लगी। वह उस अमरीका की गुट में भी तो है जो चीन के टापू फारमूसा को अपने जहाजी बड़े से घेर कर अमरीका का ही टापू समझ बैठा है। इस तरह 'एग्नेसरी' दूर किये बिना यू. एन. ओ. अपने आप को दुनिया की पंचायत भले ही मानती रहे दुनिया के लोग तो उसे दुनिया की पंचायत को परछाई भी नहीं मानेंगे। साथ सादे 'एग्नेसर' शब्द के साथ यू. एन. ओ. में जो खिलवाड़ हो रहा है उसकी खबरें सुन सुन कर तो हमें हाल में किसी पत्रिका में "यह कमीने है" कहानी के उन सभेद पोश पति पत्नी की याद आ जाती है जो खुद शराब पीकर आपस में जूनम-पैजार करते थे और अपने को सभ्य समझते थे और वैसे ही ठरों पिए चमार पति पत्नी को जूनम-पैजार करते देख कर यह फिकरा कस दिया करते थे कि "यह कमीने है।"

आइये अब जरा हिन्दुस्तान के बड़े बजौर श्री जवाहरलाल जी की बात पर नजर नौ कर लें कि वह जब यह कहते हैं कि चीन 'एग्नेसर'

लेकर जेथैली नई की नो. अमरीके दक्खिनी कोरिया में जब से पड़ा हुआ है तब से 'एग्नेसर' नई भी माना जाय तो उस वक्त से तो 'एग्नेसर' जरूर है जब से रूस उत्तरी कोरिया को छोड़ कर चल दिया। ठीक इसी तरह से फ्रान्स हिन्द चीन में 'एग्नेसर' है। वहाँ फ्रान्स हिन्दुस्तान के पांडिचरी में 'एग्नेसर' है। और इसी तरह से पुर्तगाल वगैरा भी। चीन के बन्दरगाह हाँगकाँग पर छाया हुआ वनोनिया 'एग्नेसर' क्यों नहीं? और वहाँ बर्तोनिया मलाया में तो आज जिसके आँख न हों उसको भी 'एग्नेसर' दिखाई देगा। और यही बर्तोनिया सूडान और मिस्र में 'एग्नेसर' नहीं तो क्या है? पर इस तरफ चीन को 'एग्नेसर' कहने वाले ४४ मुल्कों की निगाह क्यों नाने लगी। वह उस अमरीका की गुट में भी तो है जो चीन के टापू फारमूसा को अपने जहाजी बड़े से घेर कर अमरीका का ही टापू समझ बैठा है। इस तरह 'एग्नेसरी' दूर किये बिना यू. एन. ओ. अपने आप को दुनिया की पंचायत भले ही मानती रहे दुनिया के लोग तो उसे दुनिया की पंचायत को परछाई भी नहीं मानेंगे। साथ सादे 'एग्नेसर' शब्द के साथ यू. एन. ओ. में जो खिलवाड़ हो रहा है उसकी खबरें सुन सुन कर तो हमें हाल में किसी पत्रिका में "यह कमीने है" कहानी के उन सभेद पोश पति पत्नी की याद आ जाती है जो खुद शराब पीकर आपस में जूनम-पैजार करते थे और अपने को सभ्य समझते थे और वैसे ही ठरों पिए चमार पति पत्नी को जूनम-पैजार करते देख कर यह फिकरा कस दिया करते थे कि "यह कमीने है।"

अब जरा हिन्दुस्तान के बड़े बजौर श्री जवाहरलाल जी की बात पर नजर नौ कर लें कि वह जब यह कहते हैं कि चीन 'एग्नेसर'



के सपुर्द कर दिया जाय या उसकी जगह सुरक्षा कौन्सिल को दे दी जाय तो वह 'एग्नेसर' शब्द का ऐसा मतलब बिठा देगी जिससे उत्तरी कोरिया और चीन 'एग्नेसर' साबित हो सकें और अगर यही काम किसी दूसरे प्रप के हाथ पड़ जाय तो वह 'एग्नेसर' शब्द की ऐसी व्याख्या करेगा जिससे उत्तरी कोरिया या चीन कभी 'एग्नेसर' साबित न हो सके चाहिये यह था कि किसी मुल्क का मामला आने से पहले ही 'एग्नेसर' शब्द का मतलब साफ साफ खोल कर यू. एन. ओ. की कायदे की किताब में मौजूद रहना. वह नहीं है. इसे भी खोजिये.

'एग्नेसर' शब्द को अगर भारी मान लिया जाय और यहाँ मान लिया जाय कि बड़े बड़े पंडित ही इसकी व्याख्या कर सकने हैं तब तो व्याख्या शायद हाँ ही न पाए. पर 'एग्नेसर' शब्द वेहद हलका है और पाँच बरस का बच्चा भी इसके ठीक ठीक मान समझता है. हमें अपना बचपन याद है. और हम उन दिनों जब समझते थे कि 'एग्नेसर' किसे कहते हैं हमने कई बार अपने माँ बाप के सामने अपने को 'एग्नेसर' ऋतूल किया है और कई बार ऋतूल करने से इनकार कर दिया. एग्नेसर' वहीं नहीं माना जायगा जो अपने पाँचों भाइयों को लाकर मुझे पाँटने लगे बल्कि 'एग्नेसर' वह भी माना जायगा जो अकेला मुझे गाली देने लगे या मेरा खिलौना छीन कर भाग जाय. और फिर मैं अगर गाली के बदले में उसको चपत जमा दूँ या खिलौना छीन ले जाने पर एक ईट फेंक कर उसके सर से खून निकाल दूँ तो मैं और चाहे कुछ भी होऊँ 'एग्नेसर' नहीं हो सकता. अब 'एग्नेसर' को कौन नहीं समझता ? अब जापान में जनरल मैक-आर्थर के रहते हुए अमरीका 'एग्नेसर' है, भले ही अमरीका ने कौज

के सहोदर को दिया जाये या अस्की जगह सुरक्षा कौन्सिल को दे दी जाये तो वह 'एग्नेसर' शब्द का अिसा मतलब बिठा दे कि जिस से उत्तरी कोरिया और चीन 'एग्नेसर' नास्त हो सकें और अगर यही काम किसी दूसरे कोरब के हाथ पड़ जाये तो वह 'एग्नेसर' शब्द की ऐसी व्याख्या करेगा जिस से उत्तरी कोरिया या चीन कभी 'एग्नेसर' नास्त न हो सके. चाहे यह तब नही कि किसी मालक का मामला आने से पहले ही 'एग्नेसर' शब्द का मतलब साफ साफ खोल कर यू. एन. ओ. की क़ादे की किताब में मौजूद रहना. वह नहीं है. इसे भी खोजिये.

'एग्नेसर' शब्द को अगर भारी मान लिया जाय और यहाँ मान लिया जाय कि बड़े बड़े पंडित ही इसकी व्याख्या कर सकने हैं तब तो व्याख्या शायद हाँ ही न पाए. पर 'एग्नेसर' शब्द वेहद हलका है और पाँच बरस का बच्चा भी इसके ठीक ठीक मान समझता है. हमें अपना बचपन याद है. और हम उन दिनों जब समझते थे कि 'एग्नेसर' किसे कहते हैं हमने कई बार अपने माँ बाप के सामने अपने को 'एग्नेसर' ऋतूल किया है और कई बार ऋतूल करने से इनकार कर दिया. एग्नेसर' वहीं नहीं माना जायगा जो अपने पाँचों भाइयों को लाकर मुझे पाँटने लगे बल्कि 'एग्नेसर' वह भी माना जायगा जो अकेला मुझे गाली देने लगे या मेरा खिलौना छीन कर भाग जाय. और फिर मैं अगर गाली के बदले में उसको चपत जमा दूँ या खिलौना छीन ले जाने पर एक ईट फेंक कर उसके सर से खून निकाल दूँ तो मैं और चाहे कुछ भी होऊँ 'एग्नेसर' नहीं हो सकता. अब 'एग्नेसर' को कौन नहीं समझता ? अब जापान में जनरल मैक-आर्थर के रहते हुए अमरीका 'एग्नेसर' है, भले ही अमरीका ने कौज



इन १८० करोड़ में से ५५ करोड़ आदमी तो चीन को 'एग्नेसर' कहते हैं, और ५७ करोड़ आदमी यह कहते हैं कि चीन 'एग्नेसर' नहीं है, २१ करोड़ ऐसे आदमी हैं जो इस बारे में अपनी कुछ राय ही नहीं रखते, अब आबादी के लिहाज से तो चीन 'एग्नेसर' रह नहीं जाता पर यू. एन. ओ. की चालवाजी में वह 'एग्नेसर' जरूर है, चालवाजी लफ्ज जरा कड़ा है, यू. एन. ओ. की शान में ऐसा लफ्ज हमें कहना नहीं चाहिये, पर जिस यू. एन. ओ. में गुटबन्धियाँ हों उस यू. एन. ओ. को चालवाजी का लफ्ज मुनने के लिये मजबूर होना पड़ेगा, यू. एन. ओ. जो दुनिया भर को पचायन है उसे यह शोभा नहीं देता कि वह सिक क्लानन के अक्षरों पर अमल करें, उसे तो क्लानन की आत्मा का खयाल करना चाहिये, ५५ करोड़ के एक मुल्क को क्लानन के अक्षरों के बल पर ५५ करोड़ की आबादी वाले ५४ मुल्क अपने ४४ बांटों के बल पर उम वक्त 'एग्नेसर' कह डालें जब कि ५७ करोड़ की आबादी वाले सात मुल्क यह कह रहे हैं कि कि चीन 'एग्नेसर' नहीं है, दूसरी तरह से देखा जाय तो ५५ करोड़ लोगों ने १०३ करोड़ लोगों को हरा दिया, यह काम चालवाजी में नहीं तो और किस तरह हो सकता है, चीन की 'एग्नेसर' न कइने वाले ७ मुल्क अगर अपने आपको ४६ मुल्कों में बाँट लें तो ४४ मुल्क अपने आप हार जायें बस यही समझना चाहिये कि यू. एन. ओ. में आए दिन अंकों की बाजीगरी का खेल होता रहता है आइये इस अंकों के जाल में से निकल कर दूसरी तरफ चले।

'एग्नेसर' किसे कहते हैं इसे खोल कर किसी ने समझने की तकलीफ नहीं की, अगर यह काम यू. एन. ओ. की जनरल एसेम्बली

अन १८० करोड़ में से ५५ करोड़ आदमी तो चीन को 'एग्नेसर' कहते हैं, और ५७ करोड़ आदमी ये कहते हैं कि चीन 'एग्नेसर' नहीं है, २१ करोड़ ऐसे आदमी हैं जो इस बारे में अपनी कुछ राय ही नहीं रखते, अब आबादी के लिहाज से तो चीन 'एग्नेसर' रह नहीं जाता पर यू. एन. ओ. की चालवाजी में वह 'एग्नेसर' जरूर है, चालवाजी लफ्ज जरा कड़ा है, यू. एन. ओ. की शान में ऐसा लफ्ज हमें कहना नहीं चाहिये, पर जिस यू. एन. ओ. में गुटबन्धियाँ हों उस यू. एन. ओ. को चालवाजी का लफ्ज मुनने के लिये मजबूर होना पड़ेगा, यू. एन. ओ. जो दुनिया भर को पचायन है उसे यह शोभा नहीं देता कि वह सिक क्लानन के अक्षरों पर अमल करें, उसे तो क्लानन की आत्मा का खयाल करना चाहिये, ५५ करोड़ के एक मुल्क को क्लानन के अक्षरों के बल पर ५५ करोड़ की आबादी वाले ५४ मुल्क अपने ४४ बांटों के बल पर उम वक्त 'एग्नेसर' कह डालें जब कि ५७ करोड़ की आबादी वाले सात मुल्क यह कह रहे हैं कि कि चीन 'एग्नेसर' नहीं है, दूसरी तरह से देखा जाय तो ५५ करोड़ लोगों ने १०३ करोड़ लोगों को हरा दिया, यह काम चालवाजी में नहीं तो और किस तरह हो सकता है, चीन की 'एग्नेसर' न कइने वाले ७ मुल्क अगर अपने आपको ४६ मुल्कों में बाँट लें तो ४४ मुल्क अपने आप हार जायें बस यही समझना चाहिये कि यू. एन. ओ. में आए दिन अंकों की बाजीगरी का खेल होता रहता है आइये इस अंकों के जाल में से निकल कर दूसरी तरफ चले।

'एग्नेसर' किसे कहते हैं इसे खोल कर किसी ने समझने की तकलीफ नहीं की, अगर यह काम यू. एन. ओ. की जनरल एसेम्बली



# साम्राज्य

# अबुल

## चीन और 'एंग्रेसरी' की सनद —

यू. एन. ओ. साठ मुल्कों की पचायन हैं उसमें गेमे मुल्क भी हैं जिनकी आबादी ४५ करोड़ हैं और गेमे मुल्क भी शामिल है जिनकी आबादी ४५ लाख भी नहीं है, जिस तरह पहली लड़ाई के बाद जान बुल यानी आंगरेजों ने लीग आफ नेशन का जाल नयाग किया था वैसे ही दूसरी लड़ाई के बाद काका शाम यानी अमरीका के हाथ की एक चीज यह यू. एन. ओ. है, इसमें कुछ छोटे छोटे मुल्क गेमे शामिल हैं कि जिन सबकी मिलकर उनकी भी आवक नहीं होती जिनकी चीन या हिन्दुस्तान एक ग्रेव की, इनमें गेमे छोटे छोटे मुल्क ज्यादातर या तो अमरीका के हैं या गोरप के हैं, इस तरह यह यू. एन. ओ. गेमी चालवाजी की चाँज बन गई हैं कि पृथ्व की अद्वितीय बड़ी आबादी पच्छिम की थोड़ी आबादी के दबाव में आ जाती हैं, हाल का जो यह कैमला हुआ है कि चीन 'एंग्रेसरी' हैं हम कैमले में आबादी के लिहाज से अगर देखा जाय तो उन साठ मुल्कों की आबादी जो यू. एन. ओ. में शामिल है कुल १८० करोड़ होती है,

## चीन और 'एंग्रेसरी' की सनद —

यू. एन. ओ. साठ मुल्कों की पचायन है, उस में अमेरिकी मुल्क भी हैं जिनकी आबादी ४५ करोड़ है और अमेरिकी मुल्क भी शामिल हैं जिनकी आबादी ४५ लाख भी नहीं है, जिस तरह पहली लड़ाई के बाद जान बुल यानी आंगरेजों ने लीग आफ नेशन का जाल नयाग किया था वैसे ही दूसरी लड़ाई के बाद काका शाम यानी अमरीका के हाथ की एक चीज यह यू. एन. ओ. है, इसमें कुछ छोटे छोटे मुल्क गेमे शामिल हैं कि जिन सबकी मिलकर उनकी भी आवक नहीं होती जिनकी चीन या हिन्दुस्तान एक ग्रेव की, इनमें गेमे छोटे छोटे मुल्क ज्यादातर या तो अमरीका के हैं या गोरप के हैं, इस तरह यह यू. एन. ओ. गेमी चालवाजी की चाँज बन गई हैं कि पृथ्व की अद्वितीय बड़ी आबादी पच्छिम की थोड़ी आबादी के दबाव में आ जाती हैं, हाल का जो यह कैमला हुआ है कि चीन 'एंग्रेसरी' हैं हम कैमले में आबादी के लिहाज से अगर देखा जाय तो उन साठ मुल्कों की आबादी जो यू. एन. ओ. में शामिल हैं कुल १८० करोड़ होती है,



की झलक है। "क्लर्क" अपनी किसमत को कोसना रहता है। "मुन्दर नारी" में एक भिक्कारिन पेट के लिये आबरु बेचती दिखाई पड़ती है। "तसवीर" में मुनील ऐसे कलाकार को 'कला जीवन के लिये' का तमूल समझ में आ जाता है। "जंजीर" एक आदमी और कुत्ते की किसमत का मुकाबला और समाज के अत्याचार की कहानी है। "जिन्दगी" में गरीबी और जुलम के पाटों में पिसती तीन जिन्दगियाँ दिखाई गई हैं।

सिद्दीक्का बेगम को कला की एक खूबी यह भी है कि वह कहानियाँ में खुद कुछ नहीं कहती बल्कि कोशिश यह करती है कि घटना ही पढ़ने वाले का ध्यान उस तरफ ले जाय जिधर वह खुद ध्यान दिलाना चाहती है। वह इशारों से ज्यादा काम लेती है। हालाँकि किसी किर्मा कहानी में सिर्फ इशारों से काम लेने के कारन उनकी बान में कुछ कमचोरी आगई है लेकिन ज्यादातर उनका यह ढंग बहुत कामयाब दिखाई देता है।

सिद्दीक्का बेगम ज़बान का ज़बरदस्ती कठिन शब्दों से बोझिल बनाने की क़ायल नहीं है और इसीलिये उनको ज़बान में रबानी, लोब और मिठास की कमी नहीं है। हाँ, "गुलाबी की नज़र" में ज़बान कुछ मुशकिल है। हमें आशा है कि जनता की भलाई के लिये लिखने वाले सभी लेखक जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिये जनता की ज़बान के भी क़रीब आने की कोशिश करेंगे।

आखिर में हम श्री बी० एल० भटनागर को "हिचकियाँ" जैसी अच्छी किताब इतने अच्छे ढंग से निकालने पर बधाई देने के साथ साथ अपने पढ़ने वालों से भी सिफारिश करेंगे कि वह "हिचकियाँ" जरूर पढ़ें। "हिचकियाँ" खरीद कर वह असने पैसों का सही इस्तेमाल करेंगे। किताब जिल्द बंधी है और कागज छपाई सब बहुत अच्छी है।

—मुजीब रिजवी

की ज़ेहक है। "क्लर्क" अपनी किसमत को कोसना रहता है। "मुन्दर नारी" में एक भिक्कारिन पेट के लिये आबरु बेचती दिखाई पड़ती है। "तसवीर" में मुनील ऐसे कलाकार को 'कला जीवन के लिये' का तमूल समझ में आ जाता है। "जंजीर" एक आदमी और कुत्ते की किसमत का मुकाबला और समाज के अत्याचार की कहानी है। "जिन्दगी" में गरीबी और जुलम के पाटों में पिसती तीन जिन्दगियाँ दिखाई गई हैं।

सिद्दीक्का बेगम की कला की एक खूबी यह भी है कि वह कहानियाँ में खुद कुछ नहीं कहती बल्कि कोशिश यह करती है कि घटना ही पढ़ने वाले का ध्यान उस तरफ ले जाय जिधर वह खुद ध्यान दिलाना चाहती है। वह इशारों से ज्यादा काम लेती है। हालाँकि किसी किर्मा कहानी में सिर्फ इशारों से काम लेने के कारन उनकी बान में कुछ कमचोरी आगई है लेकिन ज्यादातर उनका यह ढंग बहुत कामयाब दिखाई देता है।

सिद्दीक्का बेगम ज़बान को ज़बरदस्ती कठिन शब्दों से बोझिल बनाने की क़ायल नहीं है और इसीलिये उनकी ज़बान में रबानी, लोब और मिठास की कमी नहीं है। हाँ, "गुलाबी की नज़र" में ज़बान कुछ मुशकिल है। हमें आशा है कि जनता की भलाई के लिये लिखने वाले सभी लेखक जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिये जनता की ज़बान के भी क़रीब आने की कोशिश करेंगे।

आखिर में हम श्री बी० एल० भटनागर को "हिचकियाँ" जैसी अच्छी किताब इतने अच्छे ढंग से निकालने पर बधाई देने के साथ साथ अपने पढ़ने वालों से भी सिफारिश करेंगे कि वह "हिचकियाँ" जरूर पढ़ें। "हिचकियाँ" खरीद कर वह असने पैसों का सही इस्तेमाल करेंगे। किताब जिल्द बंधी है और कागज छपाई सब बहुत अच्छी है।

—मुजीब रिजवी



इस दुनिया में जुलम का नाम निशान भी न रहेगा. मजदूर और सरमायादार का स्वाल न रहेगा. जो मेहनत करेगा वह जिन्दा रहेगा, तुम्हारी बनाई दीवारें टूट जायँगी. सब एक दूसरे के भाई होंगे."

"हिचकियाँ" में इस कहानियाँ हैं और "गुलाबी की नजर" को छोड़ कर हर एक का विषय 'पेट' है. पेट की समस्या हम समाज की सब से कठिन समस्या है, पर सन ४३ के अकाल में बंगाल में इस समस्या ने भयानक रूप धारण कर लिया था. गोदाओं में चावल भरा रहा और जनता सड़कों पर कुत्ते बिस्ली की तरह भ्रमती रही लाशों से इधर सड़क पटनी रही और उधर मुनाफाबोर्ग काने बाजार में तिजोरियाँ भरते रहे. मौत के इस भयानक नाच को देखकर हिन्दुस्तान के सारे तरक्की पसन्द लेखक और शायर चिल्ला उठे. सिद्दीक्का बेगम ने भी अपने तरीके से हम हालत की कल्पना की और "चावल के दाने" और "आँधी" कहानियाँ लिख डालीं. इन कहानियों को लिखते समय उनके सामने सिर्फ यह मंजिल थी कि हम अकाल में पाव डेढ़ पाव चावल के लिये जवान लड़कियों की आबरू बेची गई. यह दोश हम समय लिखी गई ज्यादातर कहानियों में है. सिद्दीक्का बेगम की कहानियाँ भी इतिहास की एक घटना तो बन गई हैं लेकिन अगर उन्होंने बंगाल के अकाल को नजदीक से देखा होता और कहानियों में भिरक कल्पना से काम न लिया गया होता तो उनकी कहानियों में कहीं ज्यादा अमन होता.

इस संग्रह की दूसरी कहानियों में "वापसी" बीच के तबके के एक लड़के की समस्या की कहानी है "गुलाबी की नजर" में शराब से लिनाफ आनाल नराह गई है. लाल करता" में मजदूर कान्ति

इस दुनिया में ظलम का नाम निशान भी न रहे का' मजदूर और सरमायेदार का स्वाल न रहेगा' जो मेहनत करेगा वह जिन्दा रहे का' नभारी भलानी दीवारी तूत जालहकी' सब एक दुसरे के भलानी हों के .

"हचकियाँ" में दस कहानियाँ हैं और "कलसी की लडर" को

चहोर को हर एक का रसे "दुत" है. भूत की समस्या इस समाज की सब से कठिन समस्या है. द. सन ५३ के अकाल में बंगाल में इस समस्या ने भयानक रूप धारण कर लिया था. गोदाओं में चावल भरा रहा और जनता सड़कों पर कुत्ते बिस्ली की तरह भ्रमती रही लाशों से इधर सड़क पटनी रही और उधर मुनाफाबोर्ग काने बाजार में तिजोरियाँ भरते रहे. मौत के इस भयानक नाच को देखकर हिन्दुस्तान के सारे तरक्की पसन्द लेखक और शायर चिल्ला उठे. सिद्दीक्का बेगम ने भी अपने तरीके से हम हालत की कल्पना की और "चावल के दाने" और "आँधी" कहानियाँ लिख डालीं. इन कहानियों को लिखते समय हम अकाल में पाव डेढ़ पाव चावल के लिये जवान लड़कियों की आबरू बेची गई. यह दोश हम समय लिखी गई ज्यादातर कहानियों में है. सिद्दीक्का बेगम की कहानियाँ भी इतिहास की एक घटना तो बन गई हैं लेकिन अगर उन्होंने बंगाल के अकाल को नजदीक से देखा होता और कहानियों में भिरक कल्पना से काम न लिया होता तो उनकी कहानियों में कहीं ज्यादा अमन होता.

इस संग्रह की दूसरी कहानियों में "वापसी" बीच के तबके के एक लड़के की समस्या की कहानी है. "कलसी की लडर" में शराब से लिनाफ आनाल नराह गई है. "लाल करता" में मजदूर कान्ति



## हिचकियां

लिखने वाली—सिद्धिका बेगम

निकालने वाले—बी. एल. भटनागर प्रभान पब्लिशर, दन्डा घर, इलाहाबाद. सका—२०५. लिखावट—उरदू. दाम दो रुपये बारह आने.

सिद्धिका बेगम उरदू की मशहूर कहानीकार है. "हिचकियां" उनकी कहानियों के संग्रह का नाम है. इसका पहला पड़ाशन हैदराबाद से निकला था जो बरसा से खनम हो चुका था. प्रभान पब्लिशर ने दूसरी बार छापकर कहानियों के पाठकों पर बड़ा एहसान किया है. किताब के शुरू में डाक्टर एजाज हुसैन साहब ने दीबाचा लिखा है.

सिद्धिका बेगम उन महिलाओं में से एक है जिन्होंने उरदू कहानी के मैदान में अपनी एक जगह बना ली है. दिन रात होने वाली इट्टी मोटी समाजी और घरेलू घटनाओं को कहानी के तकनीकी चौखटे में जड़ कर रख देना इनको खूब आता है. उन की हर कहानी इस सड़े समाज की पोल खोलती रहती है, इसलिये आम आदमी इन कहानियों में अपनापन पाता है. समाज के अमली रंग को सिद्धिका बेगम ने ठीक ठीक जान लिया है, पर यह दूसरी बात है कि अधिकतर कहानियों में इस रोग का इलाज वह नहीं बनती. कभी कभी "लाल कुरता" ऐसी कहानी में दूब खान रोग के इलाज की तरफ किसी मजदूर के भूत के मुँह से इशारा करवाती गुजर जाती है :—“हाँ तू ज़ालिम है. हम यह मिलें छोन लेंगे और फिर

## हिचकियां

लेखने वाली—सिद्धिका बेगम.

नकालने वाले—बी. एल. बेहनागर प्रभान पब्लिशर, कूबेह नुब.

अलाआद. सन्का—२०५. किताब—उरदू. दाम दो रुपये बारह आने.

सिद्धिका बेगम उरदू की मशहूर कहानीकार हैं. "हिचकियां" उनकी कहानियों के संग्रह का नाम है. इस का पहला अइशर सदर आद से नकल तया जो बरसा से खनम हो चुका था. प्रभान पब्लिशर ने दूसरी बार छपा को कहानियों के पनिकम न बड़ा अहसान दिया है. किताब के शुरु मस डाक्टर अजजर सहन दिया चे अकल है.

सिद्धिका बेगम अन मिलाउन मिस से एक हयन जनहन ने उरदू कहानी के मदान मिस अइनी अक हक मदान है. دن रात हयने वाली जनहनी मयनी सजाजी और कुरियु कुरियुन को कहानी ने तकहकी जनहनी मयन जो कुरीक दिया अन को हयन आ है. अन की हर कहानी इस सड़े सजाजी की नुल कुरियुन रहती है. इसी लिये आम आदमी अन कहानियों मिस अपना पन पा है. सजाजी के सननी उरदू को सिद्धिका बेगम ने तीक तीक जान लिया है. बर ये दूसरी बात है के अहक तर कहानियों मयन इस उरदू का सजाजी रह मयन बनहयन. कभी कभी "ल कुरता" इसी कहानी मिस दीये زبان उरदू के सजाजी की तरफ किसी मयदूर के भयुत के अशारे कुरीक कुरीक जानी जाती हयन :— "हाँ तू ज़ालिम है. हम ये मयन जनहन लयन के और फिर



## पंच तंत्र की कहानियाँ

इसमें संस्कृत के मशहूर ग्रन्थ 'पंच तंत्र' के दो भागों 'मंत्र लाभ' और 'मंत्र भेद' की कुछ कहानियाँ जैसे 'बुद्धिमान कबूतर', 'शेर और बिल' वगैरा मुन्दर हिन्दी भाषा में मंमद कर दी गई हैं। बयान करने का ढंग बहुत अनोखा और दिलचस्प है। आदामी सके की किताब की कीमत केवल एक रुपया।

## भारत की आवाज

यह श्री रघुपति सहाय 'फिराक की मशहूर कविता 'धरती की कबूट' सैयद अलताफ हुसैन 'हाली' की मशहूर मुसहम 'आर माटा' (महा जखर) और श्री मोथली शरत गुप्त की मशहूर रचना 'भारत भारती' तीनों का मंमद है। हमारी भाषा के विचार्यों के लिये यह तीनों ऊँचे विचारों और बोलती भाषा के तीन बड़े अन्क नमूने हैं। नवे सके की किताब की कीमत एक रुपया।

## भारत की सरकारी भाषा हिन्दी

इसमें पक्षतर सके के अन्दर लेखक ने भारत के विधान का वह भाग जिसका भाषा से सम्बन्ध है देकर इसकी बहुत अच्छी व्याख्या की है जो लोग भारत की सरकारी भाषा हिन्दी का काननी रंग रूप समझना चाहें उनके लिये यह किताब बहुत कामनी है।

इन सब किताबों के मिलने का पना है—

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुकरम जाही रोड, हैदराबाद दक्खिन.

हिन्दी सीखने सिखाने वालों के लिये यह सब किताबें बहुत काम की हैं.

—मुन्दरलाल

## पंच तंत्र की कहानियाँ

इसमें संस्कृत के मशहूर ग्रन्थ 'पंच तंत्र' के दो भागों 'मंत्र लाभ' और 'मंत्र भेद' की कुछ कहानियाँ जैसे 'बुद्धिमान कबूतर', 'शेर और बिल' वगैरा मुन्दर हिन्दी भाषा में मंमद कर दी गई हैं। बयान करने का ढंग बहुत अनोखा और दिलचस्प है। आदामी सके की किताब की कीमत केवल एक रुपया।

## भारत की आवाज

यह श्री रघुपति सहाय 'फिराक की मशहूर कविता 'धरती की कबूट' सैयद अलताफ हुसैन 'हाली' की मशहूर मुसहम 'आर माटा' (महा जखर) और श्री मोथली शरत गुप्त की मशहूर रचना 'भारत भारती' तीनों का मंमद है। हमारी भाषा के विचार्यों के लिये यह तीनों ऊँचे विचारों और बोलती भाषा के तीन बड़े अन्क नमूने हैं। नवे सके की किताब की कीमत एक रुपया।

## भारत की सरकारी भाषा हिन्दी

इसमें पक्षतर सके के अन्दर लेखक ने भारत के विधान का वह भाग जिसका भाषा से सम्बन्ध है देकर इसकी बहुत अच्छी व्याख्या की है जो लोग भारत की सरकारी भाषा हिन्दी का काननी रंग रूप समझना चाहें उनके लिये यह किताब बहुत कामनी है।

इन सब किताबों के मिलने का पना है—  
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुकरम जाही रोड, हैदराबाद दक्खिन.  
हिन्दी सीखने सिखाने वालों के लिये यह सब किताबें बहुत काम की हैं.

—मुन्दरलाल



मिसाल के तौर पर 'पालनहार' कविता में यह लाइनें आती हैं--

अपने अपने रंग में तुमको देख रही है दुनिया सारी  
मसजिद में भी तेरे नमाजी मन्दिर में भी तेरे पुजारी  
इस से कौन करे इनकार तू ही सब का पालन हार !  
कुछ और नमूने की लाइनें हम नीचे देते हैं--  
डग मग डग मग नैया होती मांझी मारग पर रख ध्यान

जग धार सिखाने आया हैं संसार सजाने आया है  
हैं मौत के सौ गुर, जीने का एक भद्र बताने आया है

अपने मन में प्रीत  
बसाले अपने मन में प्रीत  
मन मन्दिर में प्रीत बसा ले  
प्रीत बसा ले प्रीत बसा ले  
दिल की दुनिया रौशन कर ले  
अपने घर में जोत जगा ले  
प्रीत है तेरी रीत पुरानी  
मूल गया ओ भारत वाले !  
प्रीत है तेरी रीत  
बसाले अपने मन में प्रीत

छेहत्तर सफ़े की किताब की कीमत सिर्फ़ बारह आने.

सर्ज स  
सच्चे साधन  
सा हल  
साल के طور पर पालनहार कविता में ये लाइनें आती हैं--  
अपने अपने रंग में तुमको देख रही है दुनिया सारी  
मसजिद में भी तेरे नमाजी मन्दिर में भी तेरे पुजारी  
इस से कौन करे इनकार तू ही सब का पालन हार !  
कुछ और नमूने की लाइनें हम नीचे देते हैं--  
डग मग डग मग नैया होती मांझी मारग पर रख ध्यान

जग धार सिखाने आया हैं संसार सजाने आया है  
हैं मौत के सौ गुर, जीने का एक भद्र बताने आया है

अपने मन में प्रीत  
बसा ले अपने मन में प्रीत  
मन मन्दिर में प्रीत बसा ले  
प्रीत बसा ले प्रीत बसा ले  
दिल की दुनिया रौशन कर ले  
अपने अपने रंग में तुमको देख रही है दुनिया सारी  
मसजिद में भी तेरे नमाजी मन्दिर में भी तेरे पुजारी  
इस से कौन करे इनकार तू ही सब का पालन हार !  
कुछ और नमूने की लाइनें हम नीचे देते हैं--  
डग मग डग मग नैया होती मांझी मारग पर रख ध्यान

चौहत्तर सफ़े की किताब की कीमत सिर्फ़ बारह आने.



नया हिन्द

कुछ किताबें

मार्च सन् १९११

भाशा सरल और वामहावरा है. यह संप्रद बच्चों के लिये खासकर मनोहर और शिक्षा प्रद है कीमत केवल छै आने.

## हमारा देस

इसमें कुछ कविताएँ हैं. जैसे "हमको प्यारा अपना देस" और "सचदूरी कर सचदूरी कर" और कुछ गद्य पाठ हैं जैसे हमारा देस, हमारी भाशा, हमारे कपड़े. हमारे किसान और हमारे गाँव वगैरा. भाशा बहुत अच्छी. आमान और पिली जुली बोलचाल की है. नक़्शे और तस्वीरें भी हैं. छपाई सुन्दर. कीमत केवल छै आने.

## किसान की पुकार

इसमें किसान की ख़रत की बातें बताई गई हैं. तरह तरह की खाद की चरचा है. ख़ाम कर मरे हुए जानवरों की खाल और हड्डियों को अलग काम में लाकर उनके बाक़ी शरीर से खाद का काम लेने का विचार और ढंग नया और बहुत ही अच्छा है. कीमत केवल छै आने.

## मीठे बोल

यह बड़ी अच्छी कविताओं का संग्रह है. जैसे पालन हार, 'कोई नहीं है ग़ैर', 'आओ सब मिल गाएँ गीत', 'पंखी की कसियाद', 'ढग मग ढग मग नया होती', 'कृष्ण जन्म', 'सावन भादो', 'प्रम पुजारी', 'प्रीत का राज', और 'प्रीत बसाले' वगैरा. लगभग सब कविताएँ बहुत ही अच्छे विचारों की और टकसाली भाशा में हैं.

मार्च सन् १९११

कुछ किताबें

नया हलद

भाशा सरल और बامसहारे है. ये सलक बच्चों के लिये खासकर मनोहर और शक़्सा प्रद है. कीमत केवल छै आने.

## हमारा दीस

इस में कुछ कविताएँ हैं. जैसे "हम को प्यारा अपना दीस", और "मनदूरी कर मनदूरी कर" और कुछ कदिये पाठ हैं जैसे हमारा दीस, हमारी भाशा, हमारे कपड़े. हमारे किसान और हमारे गाँव वगैरा. भाशा बहुत अच्छी. आमान और मनी हनी बोल की है. नक़्शे और तस्वीरें भी हैं. छपाई सुन्दर. कीमत केवल छै आने.

## कसान की पकार

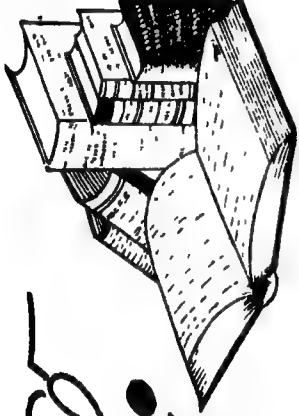
इस में किसान की ख़रत की बातें बताई गई हैं. तरह तरह की खाद की चरचा है. ख़ाम कर मरे हुए जानवरों की खाल और हड्डियों को अलग काम में लाकर उनके बाक़ी शरीर से खाद का काम लेने का विचार और ढंग नया और बहुत ही अच्छा है. कीमत केवल छै आने.

## मीठे बोल

ये बड़ी अच्छी कविताओं का संग्रह है. जैसे पालन हार, 'कोई नहीं है ग़ैर', 'आओ सब मिल गाएँ गीत', 'पंखी की कसियाद', 'ढग मग ढग मग नया होती', 'कृष्ण जन्म', 'सावन भादो', 'प्रम पुजारी', 'प्रीत का राज', और 'प्रीत बसाले' वगैरा. लगभग सब कविताएँ बहुत ही अच्छे विचारों की और टकसाली भाशा में हैं.



# किताबें



# कवि

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हैदराबाद दक्खिन ने अपनी आठ छोटी छोटी किताबें "नया हिन्द" में रिव्यू के लिये भजी हैं। यह किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में छपी हैं और दोनों में अलग अलग मिल सकती हैं। भारत की सरकारी जवान का फेंसला होने के बाद से हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हैदराबाद ने हिन्दी में तीन इस्तहान लेना शुरू कर दिया है। इन तीनों के नाम हैं—विद्याभ्यास (शायमरी), विद्याघर (मिडिल) और विद्यावर (मैट्रिक)। यह किताबें इन इस्तहानों में बैठने वालों के लिये तैयार की गई हैं। किताबें यह हैं :—

## अच्छी कहानियां

यह छोटे बच्चों के लिये छोटी छोटी सुन्दर कहानियों का संग्रह है। जैसे चीता और लोमड़ी, कोयले वाला और धोबी, मच्छर और बैल, दो बरतन, बिच्छू और लड़का, बैल गाड़ी और डंगी सुसाफिर वगैरा।

दाइप मोटा और सुन्दर है। हर कहानी के साथ तस्वीरें हैं।

हल्दस्तानी प्रचार सभा हैदराबाद दक्खिन ने अपनी आठ छोटी छोटी किताबें "नया हिन्द" में रिव्यू के लिये भेजी हैं। ये किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में छपी हैं और दोनों में अलग अलग मिल सकती हैं। भारत की सरकारी जवान का फेंसला होने के बाद से हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हैदराबाद ने हिन्दी में तीन इस्तहान लेना शुरू कर दिया है। इन तीनों के नाम हैं—विद्याभ्यास (शायमरी), विद्याघर (मिडिल) और विद्यावर (मैट्रिक)। यह किताबें इन इस्तहानों में बैठने वालों के लिये तैयार की गई हैं। किताबें यह हैं :—

## अच्छी कहानियां

ये छोटी बच्चों के लिये छोटी छोटी सुन्दर कहानियों का संग्रह है। जैसे चीता और लोमड़ी, कोयले वाला और धोबी, मच्छर और बैल, दो बरतन, बिच्छू और लड़का, बैल गाड़ी और डंगी सुसाफिर वगैरा।

दाइप मोटा और सुन्दर है। हर कहानी के साथ तस्वीरें हैं।



खिड़कियां और दरवाजे खुले रखो. ताकि साफ और ताजा हवा कमरे में आ सके.

सोते बहुत मन में अच्छी बातों को जगह दो. किसी तरह की छबराहट या क्रिक को पास न आने दो. और न ऐसी बातों पर सोचते रहो जिससे नींद उचाट हो जाय और मन घबराते लगे. अकसर बच्चे सोते समय जित्त. भूतों का खयाल करते या फिर ऐसी भयानक बातें सोचते रहते हैं जिसके कारन वह सोते में भयानक सपने देखते हैं और डर कर चौक उठते हैं. जब सोने के लिये लेटो तो मन को पाक साफ़ रखो और इन विचारों को क़रीब न आने दो ताकि तुम्हारे शरीर और दिमाग दोनों को आनन्द मिल सके. सोने के कमरे में गड़बड़ भी न होनी चाहिये. नहीं तो तुम्हें ठीक में नींद भी न आयगी और जब तुम उठोगे तो तबियत सुस्त होगी और किसी काम के करने को मन न चाहेगा.

याद रखो, मन सुखी है तो धरती की हर बीज सुन्दर है. बड़े लोग कह गए हैं—

‘तन्दुरुस्ती ह्यार नेमत है.’

हमें इस पते पर अपने लेख "बच्चों की दुनिया" में छपने को भेजो—प्रेस भाई, एडिटर "बच्चों की दुनिया"

بچوں کی دنیا سارے سن ۱۵: کھوکھلاں اور دروازے کیلے رکھو، تاکہ صاف اور تازہ ہوا کمرے میں نہا ہند آسکے۔

سوئے وقت میں میں اچھی باتوں کو جگہ دو۔ کسی طرح کی گہمراہت یا فکر کو دلس نہ آنے دو۔ اور نہ ایسی باتوں کو سوچتے رہو جس سے نہیلا اُچاٹ ہو جائے اور میں گہمراہی لگے۔ اکثر رچے سوتے سے جن بھرتوں کا خھٹا کرنے کا یہ ایسی بھینٹک باتیں سوچتے رہتے تھیں جس کے کارن وہ سوتے مہوں بھینٹک سننے دیکھتے ہیں اور در کر چوٹک اُٹھتے ہیں۔ جب سونے کے لئے لہتو تو میں کو پاک صاف رکھو اور ان وحاروں کو قریب نہ آنے دو تاکہ تھمارے شورید اور دھاغ دونوں کو آند مل سکے۔ سونے کے کدے میں کو بہ بھری نہ ہونی چاہئے۔ نہیں تو تمہیں تھوک سے نہیلا ہنی نہ اُٹھکے اور جب تم اُٹھو گے تو طبیعت سمست ہو گئی اور کسی کام کے کرنے کو میں نہ چاہے گا۔

یاد رکھو، میں نے صرف اس کی سزا سنائی ہے۔ نہ تو

۱۹۱۱



काहिल और निछट्ट कहते हैं। अच्छे बच्चे कभी ऐसे नहीं होते। वह अपना काम समय पर ठीक से करते हैं।

हमारे कहने का यह मतलब है कि थकने के बाद आराम करना ऐसा ही जरूरी है जैसे पढ़ने लिखने और घर के काम काज या मेहनत मजदूरी के बाद खेल कूद और घूमने फिरने के लिये चल पड़ना। तुम लोग रोज स्कूल जाते हो। पढ़ते लिखते और अच्छी अच्छी बातें सीख आते हो। जब घर आओ तो ज़रूर खेल कूद के लिये माउन्ड या खुली जगह चल पड़ो। जहाँ तुम्हें साफ हवा मिल सके खूब उछलो कूदो।

एक बात और सुनो, जब तुम कोई काम करने करते ज्यादा थक जाओ तो काम करना छोड़ दो और चुपचाप शरीर को ठीला छोड़ कर सीधे लेट जाओ। इस तरह थकन दूर हो कर फुरती आजायगी और तुम फिर फुरती से काम करने लगोगे। इसलिये जब तुम्हें एक काम ख़तम करने के बाद दूसरा काम करना हो तो कुछ समय के लिये चुपचाप बैठ या लेट जाओ। इस तरह करने से काम में तुम्हारा जी भी लगेगा और काम ठीक से होगा।

आदमी के बदन को सबसे ज्यादा आराम नींद से मिलता है। बच्चों को बहुत आराम की जरूरत है पर सुबह देर से उठना बहुत बुरा है। अगर अपने शरीर को अच्छा रखना चाहो तो रात में जल्दी सो जाओ और सुबह को जल्दी उठा करो। क्योंकि सुबह को बिमारा खूब काम करता है। सबेर ही छठ कर लिखने पढ़ने और अपने दूसरे कामों में लग जाओ। और हाँ, जब तुम सो रहो तो कमरे की

बच्चों की दिन-रात न्याय  
काहल और निछट्ट कहते हैं। अच्छे बच्चे कभी ऐसे नहीं होते। वह अपना काम समय पर ठीक से करते हैं।

हमारे कहने का यह मतलब है कि थकने के बाद आराम करना ऐसा ही जरूरी है जैसे पढ़ने लिखने और घर के काम काज या मेहनत मजदूरी के बाद खेल कूद और घूमने फिरने के लिये चल पड़ना। तुम लोग रोज स्कूल जाते हो। पढ़ते लिखते और अच्छी अच्छी बातें सीख आते हो। जब घर आओ तो ज़रूर खेल कूद के लिये माउन्ड या खुली जगह चल पड़ो। जहाँ तुम्हें साफ हवा मिल सके खूब उछलो कूदो।

( २ )  
एक बात और सुनो, जब तुम कोई काम करने करते ज्यादा थक जाओ तो काम करना छोड़ दो और चुपचाप शरीर को ठीला छोड़ कर सीधे लेट जाओ। इस तरह थकन दूर हो कर फुरती आजायगी और तुम फिर फुरती से काम करने लगोगे। इसलिये जब तुम्हें एक काम ख़तम करने के बाद दूसरा काम करना हो तो कुछ समय के लिये चुपचाप बैठ या लेट जाओ। इस तरह करने से काम में तुम्हारा जी भी लगेगा और काम ठीक से होगा।

आदमी के बदन को सब से ज्यादा आराम नींद से मिलता है। बच्चों को बहुत आराम की जरूरत है पर सुबह देर से उठना बहुत बुरा है। अगर अपने शरीर को अच्छा रखना चाहो तो रात में जल्दी सो जाओ और सुबह को जल्दी उठा करो। क्योंकि सुबह को बिमारा खूब काम करता है। सबेर ही छठ कर लिखने पढ़ने और अपने दूसरे कामों में लग जाओ। और हाँ, जब तुम सो रहो तो कमरे की



वहाँ कोमल कली बढ़ते बढ़ते सुन्दर फूल बनकर बागीचे को सदा बहार बना देगी. आज हम तुमको कोमल कलियाँ कहते हैं, मगर कल सब तुम को सुन्दर फूल कहेंगे.

काम करने से जब मशीन गरम हो जाती है तब उसे रोक दिया जाता है, ताकि ठंडी हो जाय और मजदूर भी आराम ले लें. यहाँ हालत हमारे शरीर की भी है. ज्यादा काम करते करने हम थक जाते हैं और इसलिये कुछ देर के लिये मुस्ताना ठीक रहना है. फिर हमारे काम में चुस्ती और तेजी आ जायगी और काम अच्छी तरह हो सकेगा.

( तुमने देखा होगा कि तुम्हारे पिताजी या भैयाजी मनुष्य के दफ्तर गए हुए जब शाम को घर आते हैं तो उनकी मूर्त कुम्हला जाती है. जैसे सुन्दर फूल तेज धूप में कुम्हलाने हैं और फिर शाम की ठंडी हवा खाकर यही कुम्हलाए फूल खिलने और हँस पड़ने हैं. वही तरह दफ्तर में काम करने वाले भी जब घर आते हैं तब मनुष्य मुँह हाथ और पैर धो लेते हैं. इसमें सायदा यह होता है कि बाहर की गर्म गुबार और धूल जो चेहरे पर जमी रहती है, दूर हो जाती है और ऐसा करने से मन में फुगती भी आती है. फिर वह कुछ देर लेट जाते हैं या एक जगह आराम कुर्मी पर बैठ जाते हैं. क्योंकि उनके शरीर को आराम की जरूरत होती है. अगर वह आराम न लें तो मन बेचैन हो जाता है. और कभी कभी तो लोग आराम न लेने और दिन रात काम करने के कारण रोगों भी बन जाते हैं. मगर यह भी सुन लो कि इसका मतलब यह नहीं है कि काम थोड़ा सब छोड़ दो और आराम ही करने रहो. ऐसा करने वाले को सुन

बच्चों की दुनिया

नया हल

रही कोमल कली बڑھتے بڑھتے सुंदर फूल बनकर बाग़िचे को सदा बहार बना देगी. आज हम तुमको कोमल कलियाँ कहते हैं, मगर कल सब तुमको सुंदर फूल कहेंगे.

काम करने से जब मशीन गरम होजाती है तब उसे रोक दिया जाता है ताकि ठंडी हो जाय और मजदूर भी आराम ले लें. यही हालत हमारे शरीर की भी है. ज्यादा काम करते करने हम थक जाते हैं और इसलिये कुछ देर के लिये मुस्ताना ठीक रहना है. फिर हमारे काम में चुस्ती और तेजी आजाती है और काम अच्छी तरह होसकेगा.

( तुमने देखा होगा कि तुम्हारे पिताजी या भैयाजी मनुष्य के दफ्तर गए हुए जब शाम को घर आते हैं तो उनकी मूर्त कुम्हला जाती है. जैसे सुंदर फूल तेज धूप में कुम्हलाने हैं और फिर शाम की ठंडी हवा खाकर यही कुम्हलाते फूल खिलने और हँस पड़ने हैं. वही तरह दफ्तर में काम करने वाले भी जब घर आते हैं तब मनुष्य मुँह हाथ और पैर धो लेते हैं. इसमें सायदा यह होता है कि बाहर की गर्म गुबार और धूल जो चेहरे पर जमी रहती है, दूर हो जाती है और ऐसा करने से मन में फुगती भी आती है. फिर वह कुछ देर लेट जाते हैं या एक जगह आराम कुर्मी पर बैठ जाते हैं. क्योंकि उनके शरीर को आराम की जरूरत होती है. अगर वह आराम न लें तो मन बेचैन हो जाता है. और कभी कभी तो लोग आराम न लेने और दिन रात काम करने के कारण रोगों भी बन जाते हैं. मगर यह भी सुन लो कि इसका मतलब यह नहीं है कि काम थोड़ा सब छोड़ दो और आराम ही करने रहो. ऐसा करने वाले को सुन



## आराम की जरूरत

(भाई मुसलिम जियाई)

कल छापाखाने वाले साहब कहने लगे— साहब आज आपका परचा नहीं छप सकता।”

मैंने कहा—“क्यों भाई, आखिर क्या बात है?”

छापे वाले ने कहा—“साहब! मशीन काम करने करते घिम कर टूट गई है, कल तक ठीक कर दी जायगी, तब छापने का काम होगा।”

(  
२००  
)  
देखा भाइयो तुमने, लोहे की मशीन भी रोज रोज काम करने से बीमार होजाती है और उसे भी आराम और दवा दारू की जरूरत होती है।

जिस तरह लोहे की मशीन को आराम की जरूरत होती है उसी तरह हम सब को भी आराम मिलना चाहिये, सब से ज्यादा आराम तुम बच्चों को मिलना चाहिये, इसलिये कि तुम लोग ही भारत और दुनिया के बड़े बनने वाले हो, तुम आज कोमल कलियाँ हो, मगर कल जब तुम बड़े हो जाओगे तब सुन्दर फूल बनकर अपनी सुन्दरता और खुशबू से भारत और धरती को मस्त बना दोगे।

अगर हम बर्गों से किसी कोमल कली को, जो अभी खिली न हो, नोच लें तो उसका जीवन नाश हो जायगा, और अगर उसकी रक्षा करते रहें, समय पर पानी और खाद पहुँचाते रहें तो

## आराम की ضرورت

(बिनाई मुसलिम जियाई)

कल जहाजे खाने वाले صاحب कहने लगे—“साहब! आज आपका परचा नहीं छप सकता।”

मैंने कहा—“क्यों बिनाई, आखिर क्या बात है?”

जहाजे वाले ने कहा—“साहब! मशीन काम करने लगे हैं, तब तक छपेगी है, कल तक तैयार कर दी जायगी, तब छपाने का काम होगा।”

(  
२००  
)  
देखा बिनाई तुमने, लोहे की मशीन भी रोज रोज काम करने से बीमार होजाती है और उसे भी आराम और दवा दारू की जरूरत होती है।

जسطरह लोहे की मशीन को आराम की जरूरत होती है उसी तरह हम सबको भी आराम मिलना चाहिये, सब से ज्यादा आराम बच्चों को मिलना चाहिये, इसलिये कि वे लोग ही भारत और दुनिया के बड़े बनने वाले हों, तब आराम कलियाँ हों, मगर कल जब तुम बड़े हो जाओगे तब सुन्दर फूल बनकर अपनी सुन्दरता और खुशबू से भारत और धरती को मस्त बना दोगे।

अगर हम बर्गों से किसी कोमल कली को, जो अभी खिली न हो, नोच लें तो उसका जीवन नाश हो जायगा, और अगर उसकी रक्षा करते रहें, समय पर पानी और खाद पहुँचाते रहें तो



पर जो आदत पड़ जाय वह जन्दी नहीं छूटती. दूसरे दिन तारा वह मुन्दर और चमकीली अँगूठी पहन कर स्कूल गई. उसके साथ पढ़ने वाली लड़कियों ने जब अँगूठी देख कर पूछा कि यह अँगूठी कहाँ से मिली तो तारा साधू को दिया हुआ अपना बचन भूल गई और बड़े घमंड से कहने लगी—“यह अँगूठी मेरे पिता जी ने मेरे जन्म दिन पर मुझे दी है. उन्होंने दो सौ रुपए में यह अँगूठी खरीदी है.”

पर तारा ने भूट बोला था इसलिये एक दम अँगूठी की चमक मांद पड़ गई और तारा की उंगली में कसने लगी. अँगूठी के दबने में तारा को तकलीफ होने लगी. उसके साथे पर बल देग्व कर लड़कियों ने पूछा—“क्या बात है ? तुम्हारा चेहरा उतर क्यों गया ?”

तारा ने फिर बात बनाई. बोली—“कुछ नहीं, सर में दर्द हो रहा है.”

तारा फिर भूट बोली थी. अँगूठी ने उसकी उंगली को और खोर से दबाना शुरू किया अब तो तारा दर्द से वेचैन होगई. उसने खोर खोर से रोना शुरू किया. मास्टर माह्व ने उसे उसके घर भेज दिया. तारा पिता को देखते ही लगी खोर खोर से रोने और कहने कि पिता जी, अब मैं कभी भूट न बोलूँगी.

तारा के पिता ने साधू को बुलवाया और उन्होंने अँगूठी तारा की उंगली से उतार ली. उस दिन के बाद से तारा ने फिर कभी भूट न बोला और भूट बोलने की आदत छूटने ही उसकी और सब बुरी आदतें भी छूट गई.

पर जो आदत पड़ जाये वह जल्दी नहीं छूटती. दूसरे दिन तारा वह सल्लर और चमकीली अँगूठी पहन कर स्कूल गई. उस के साथे पढ़ने वाली लड़कियों ने जब अँगूठी देख कर पूछा कि यह अँगूठी कहाँ से मिली तो तारा साधू को दिया हुआ अपना बचन भूल गई और बड़े घमंड से कहने लगी—“यह अँगूठी मेरे पिता जी ने मेरे जन्म दिन पर मुझे दी है. उन्होंने दो सौ रुपए में यह अँगूठी खरीदी है.”

पर तारा ने ज़ेहोत भूट बनाई. उस लम्बे एक दम अँगूठी की चमक मांद पड़ गई और तारा की अँगूठी में कसने लगी. अँगूठी के दबने में तारा को तकलीफ होने लगी. उस के साथे पर बल देग्व कर लड़कियों ने पूछा—“क्या बात है ? तुम्हारा चेहरा उतर क्यों गया ?”

तारा ने ज़ेहोत बनाई. बोली—“कुछ नहीं, सर में दर्द हो रहा है.”

तारा ज़ेहोत भूट भूट थी. अँगूठी ने उसकी अँगूठी को और खोर से दबाना शुरू किया. अब तो तारा दर्द से वेचैन होगई. उसने खोर खोर से रोना शुरू किया. मास्टर माह्व ने उसे उसके घर भेज दिया. तारा पिता को देखते ही लगी खोर खोर से रोने और कहने कि पिता जी, अब मैं कभी भूट न बोलूँगी.

तारा के पिता ने साधू को बुलवाया और उन्होंने अँगूठी तारा की अँगूठी से उतार ली. उस दिन के बाद से तारा ने फिर कभी ज़ेहोत न बोला. और ज़ेहोत बोलने की आदत छूटने ही उसकी और सब बुरी आदतें भी छूट गई.



संजोग से उन्होंने दिनों गोंय में एक साधू आया हुआ था जिसके बारे में यह बात मशहूर थी कि वह वरूचो कि तुरी आदितें सुधार सकता है. तारा के पिता ने जब यह सुना तो भूट साधू को बुला कर उससे कहा कि महाराज. मेरी बेटी तारा मां के लाड प्यार से बिगड़ गई है. मैं चाहता हूँ कि आप उसका भूट बोलने की आदत छोड़ा दें, क्योंकि मेरी समझ में भूट बोलना सब से तुरी बात है.

साधू ने कुछ सोच कर कहा—“अच्छा बाबा आप अपनी लड़की को बुलाइये.”

तारा बुलाई गई. जब वह आगई तब साधू ने आपन कमडल से एक बहुत सुन्दर अंगूठी निकाल कर तारा से कहा—“बेटो, यह अंगूठी लोगी?”

तारा ने देखा. अंगूठी बड़ी सुन्दर थी. खूब चमकीली और भड़कीली. उसमें जो नग लगा था वह ऐसा चमक रहा था जैसे हीरा हो. तारा ने कहा—“हाँ, लूगी.”

साधू ने कहा—“पर इसका लेने के लिये तुम्हें एक बात माननी पड़ेगी. बोलो, मानोगी?”

तारा ने कहा—“मानूँगी.”

साधू ने कहा—“तुमको भूट बोलना छोड़ देना पड़ेगा. अगर इसे पहन कर तुम भूट बोलोगी तो इस अंगूठी को सारी चमक माँद पड़ जायगी और यह तुम्हारी उंगली को दबाने लगेगी.”

तारा ने अंगूठी पहन ली और साधू से कह दिया कि अब भूट न बोलूँगी.

संजोग से अंधेरी दूर लौं मेहनत एक साधू आया हुआ था. जिसके बारे में बात मशहूर थी कि वह वरूचो कि तुरी आदितें सुधार सकता है. तारा के पिता ने जब यह सुना तो भूट साधू को बुला कर उससे कहा कि महाराज. मेरी बेटी तारा मां के लाड प्यार से बिगड़ गई है. मैं चाहता हूँ कि आप उसका भूट बोलने की आदत छोड़ा दें, क्योंकि मेरी समझ में भूट बोलना सब से तुरी बात है.

साधू ने कुछ सोच कर कहा—“अच्छा बाबा आप अपनी लड़की को बुलाइये.”

तारा बुलाई गई. जब वह आगई तब साधू ने आपन कमडल से एक बहुत सुन्दर अंगूठी निकाल कर तारा से कहा—“बेटो, यह अंगूठी लोगी?”

तारा ने देखा. अंगूठी बड़ी सुन्दर थी. खूब चमकीली और भड़कीली. उसमें जो नग लगा था वह ऐसा चमक रहा था जैसे हीरा हो. तारा ने कहा—“हाँ, लूगी.”

साधू ने कहा—“पर इसका लेने के लिये तुम्हें एक बात माननी पड़ेगी. बोलो, मानोगी?”

तारा ने कहा—“मानूँगी.”

साधू ने कहा—“तुमको भूट बोलना छोड़ देना पड़ेगा. अगर इसे पहन कर तुम भूट बोलोगी तो इस अंगूठी को सारी चमक माँद पड़ जायगी और यह तुम्हारी उंगली को दबाने लगेगी.”

तारा ने अंगूठी पहन ली और साधू से कह दिया कि अब भूट न बोलूँगी.



## अंगूठी की सजा

( भाई मर्मा मित्रों, हैदराबाद )

पुराने समय की बात है। एक गाँव के लम्बेदार थे। उनकी एक लड़की थी। उसका नाम था तारा। तारा अपने मातापिता की परामर्शी लड़की थी। दूसरी बेटे लखन ने तारा पिता के लगे लगे बहुत मानते थे। उसका बड़ा भाई तारा के घर में रहने में घर चाकर थे धन बोलने की भी कमी नहीं थी तारा जो माता की नजर मिलती। जो माने पढ़ने का लखन तारा के लखन पर होने पर इस लाडु तारा के कारण तारा का स्वभाव करने की उत्तम विधाने लगा। घर के नौकरों पर अपने माता पिता को निगमने देव था था भी उन पर रात्र जमाया करने दली तारा के लखन के लखन की और तारा भला भी कहती। घर की यह आदत तारा में भी रहती। वह अपने माता की लखनियों से लखन करती और तारा लखन दूसरों को भेदी शिकायते किया करता। तारा ने तारा लखन यह थी कि वह बहुत बड़े बोलती थी और बहुत बोलने को तारा नहीं समझती थी।

तारा की यह हालत देख कर तारा के मास्टर साहब ने तारा के पिता से यह बात कही कि तारा का स्वभाव बिगड़ रहा है। उसे सुधारने की कोशिश न की गई तो डर है कि वह होने पर तारा का स्वभाव और भी बिगड़ जायगा।

तारा के पिता पहले ही से बेटों के इन लखनियों को अच्छा न समझते थे। मास्टर साहब ने यह सुन वह और भी धिन्ता में पड़ गए।

## अंगूठी की सजा

( भाई मर्मा मित्रों, हैदराबाद )

पुराने समय की बात है। एक गाँव के लम्बेदार थे। उनकी एक लड़की थी। उसका नाम था तारा। तारा अपने मातापिता की परामर्शी लड़की थी। दूसरी बेटे लखन ने तारा पिता के लगे लगे बहुत मानते थे। उसका बड़ा भाई तारा के घर में रहने में घर चाकर थे धन बोलने की भी कमी नहीं थी तारा जो माता की नजर मिलती। जो माने पढ़ने का लखन तारा के लखन पर होने पर इस लाडु तारा के कारण तारा का स्वभाव करने की उत्तम विधाने लगा। घर के नौकरों पर अपने माता पिता को निगमने देव था था भी उन पर रात्र जमाया करने दली तारा के लखन की और तारा भला भी कहती। घर की यह आदत तारा में भी रहती। वह अपने माता की लखनियों से लखन करती और तारा लखन दूसरों को भेदी शिकायते किया करता। तारा ने तारा लखन यह थी कि वह बहुत बड़े बोलती थी और बहुत बोलने को तारा नहीं समझती थी।

तारा की यह हालत देख कर तारा के मास्टर साहब ने तारा के पिता से यह बात कही कि तारा का स्वभाव बिगड़ रहा है। उसे सुधारने की कोशिश न की गई तो डर है कि वह होने पर तारा का स्वभाव और भी बिगड़ जायगा।

तारा के पिता पहले ही से बेटों के इन लखनियों को अच्छा न समझते थे। मास्टर साहब ने यह सुन वह और भी धिन्ता में पड़ गए।



# बच्चों की दुनिया



# बच्चों की दुनिया

अपनी बड़ी बहन से..... !

( बच्चों का शायर )

जब भी "नया हिन्द" आना है तेरा मन मग्न रहना है  
 मैं पढ़ने को मांगू जब तो कल को हुकूमत  
 मैं हूँ तेरा लम्हा भाई फिर मग्न तेरी तर बसाई  
 भाई बहन में कब मजती है आपस की नक़्शार  
 बाजी, दे मेरा अखबार  
 पढ़ने दे मुझको यह कविता एक भा राजा मन्त में रहना  
 बाँके बाँके और मलने चर श्रे राजकुमार  
 बाजी, दे मेरा अखबार  
 लाऊंगा सुन्दर सी गुड़िया हों लहंगा रंग की पुड़िया  
 बादा करता है मैं तुझमें जाऊंगा वादर  
 बाजी, दे मेरा अखबार  
 मान भी जा अब बाजों धारी कब आएगी मेरी बारी  
 जल्दी जल्दी इसे पढ़ंगा करता है  
 बाजी, दे मेरा अखबार

अपनी बड़ी बहन से..... !

( बच्चों का शायर )

जब भी "नया हिन्द" आना है तेरा मन मग्न रहना है  
 मैं पढ़ने को मांगू जब तो कल को हुकूमत  
 मैं हूँ तेरा लम्हा भाई फिर मग्न तेरी तर बसाई  
 भाई बहन में कब मजती है आपस की नक़्शार  
 बाजी, दे मेरा अखबार  
 पढ़ने दे मुझको यह कविता एक भा राजा मन्त में रहना  
 बाँके बाँके और मलने चर श्रे राजकुमार  
 बाजी, दे मेरा अखबार  
 लाऊंगा सुन्दर सी गुड़िया हों लहंगा रंग की पुड़िया  
 बादा करता है मैं तुझमें जाऊंगा वादर  
 बाजी, दे मेरा अखबार  
 मान भी जा अब बाजों धारी कब आएगी मेरी बारी  
 जल्दी जल्दी इसे पढ़ंगा करता है  
 बाजी, दे मेरा अखबार











जाता: बल्कि कभी कभी तो पढ़े बगैर उसको रट्टों की टोकरी में डाल दिया जाता है। इसलिये सरकार को तरफ से लोगों को विश्वास मिलना चाहिये कि देसी भाषा में लिखी अरजी पर ध्यान से पढ़ी जायगी, सरकारगी अधिकारियों को भी यह हुकुम देना चाहिये कि देसी भाषा में लिखी अरजी की वह इतनी हो इतनी कर जितनी कि अंगरेजी में लिखी अरजी को करते है।

देसी भाषा में अरजी लिखने वालों को भी कुछ क्वालिफिकेशन जान लेनी जरूरी है। कभी कभी वह बहुत बार्गेस अजरे में लिखा होती है। एक तरफ भी मारजिन (हाजिया) नहीं रखी जाना, लाइन बहुत ही पास लिखी होती है, आये फुलस्टेप कागज में कभी कभी ५० से ५० तक लाइनें लिखी होती है, पंमे अरजी पढ़ने में उड़ा निकलत होती है, सरकारों और मावेजनिक कचहरी में जिस कारकून को अरजी पढ़नी पड़ती है वह उसे पढ़ नहीं सकना, क्योंकि उसको तो पंमी मैकडो अरजियों का गंज निबटाया काम पड़ता है, इस लिये अरजी देने वालों को चाहिये कि वह अपने निजी आये के लिये हो सकें तो टाइप करके या मियाह में माफ, मुन्दर और गड़े अचरों में छपे हकों में मिलने अचरों में आ जा लिये, उन्हें इस बारे में बड़े बड़े अधिकारियों की नकल न करना चाहिये यानी उनकी तरह पढ़ने में मुश्किल बन जाने वाले अजर न लिखने चाहिये, या यह न कहना चाहिये कि अधिकारी ग्लुड अचर्डो निखावट का नमूना पेश करें और फिर जनता में इसको आशा करें, जिस तरह एक अर्जदार अगर माफ और मुखड़े कपड़े पहनकर जाता है

हजार: बल्कि कभी कभी तो पढ़े बगैर उस को रट्टी की टोकरी में डाल दिया जाता है। इस लिये सरकार की तरफ से लोगों को विश्वास मिलना चाहिये कि देसी भाषा में लिखी अरजी पर ध्यान से पढ़ी जायगी, सरकारगी अधिकारियों को भी यह हुकुम देना चाहिये कि देसी भाषा में लिखी अरजी की वह इतनी हो इतनी कर जितनी कि अंगरेजी में लिखी अरजी को करते है।

देसी भाषा में अरजी लिखने वालों को भी कुछ क्वालिफिकेशन जान लेनी जरूरी है। कभी कभी वह बहुत बार्गेस अजरे में लिखा होती है। एक तरफ भी मारजिन (हाजिया) नहीं रखी जाना, लाइन बहुत ही पास लिखी होती है, आये फुलस्टेप कागज में कभी कभी ५० से ५० तक लाइनें लिखी होती है, पंमे अरजी पढ़ने में उड़ा निकलत होती है, सरकारों और मावेजनिक कचहरी में जिस कारकून को अरजी पढ़नी पड़ती है वह उसे पढ़ नहीं सकना, क्योंकि उस को तो पंमी मैकडो अरजियों का गंज निबटाया काम पड़ता है, इस लिये अरजी देने वालों को चाहिये कि वह अपने निजी आये के लिये हो सकें तो टाइप करके या मियाह में माफ, मुन्दर और गड़े अचरों में छपे हकों में मिलने अचरों में आ जा लिये, उन्हें इस बारे में बड़े बड़े अधिकारियों की नकल न करना चाहिये यानी उनकी तरह पढ़ने में मुश्किल बन जाने वाले अजर न लिखने चाहिये, या यह न कहना चाहिये कि अधिकारी ग्लुड अचर्डो निखावट का नमूना पेश करें और फिर जनता में इसको आशा करें, जिस तरह एक अर्जदार अगर माफ और मुखड़े कपड़े पहनकर जाता है



## भाशा की कठिनाई

( भाई किशोरलाल मशरुवाला )

एक सज्जन ने आपनी सरकार का अंगरेजी में दी हुई अरजी की एक नक़ल मुझे भेजी है। वह अरजी पढ़ी। उसमें उनकी भाशा, वाक्य, व्याकरण, शैली वगैरा की बहुत भूलें देखीं। लोगों को क्यों अंगरेजी भाशा में ऐसी अरजियाँ लिखनी चाहिये, यह एक विचार करने की बात है। लोग जो बात कहने का इच्छा रखते हैं, वह अंगरेजी में न ठीक ठीक लिख सकते हैं न समझा सकते हैं। मुझे अपना तजरबा है कि सही व्याकरण के साथ अंगरेजी में लिखना कितना मुश्किल है। अंगरेजी व्याकरण जानने वाले एक भाई ‘हरिजन’ में जो भूलें होती हैं, उन की एक सूची बार बार भेजते रहते हैं। एक बार तो एक ही नम्बर में उन्होंने करीब ४० भूलों की फ़हरिस्त भेजी थी। इससे मैं ऐसी भूलों के लिये अरजी देने वालों को दोश नहीं देता।

हो सकता है सरकार ऐसा जवाब दे कि करीब करीब सभी सरकारों ने प्रान्तीय भाशा में अरजी देने की छूट दे दी है। पर लोग उसका फायदा न उठावें तो इसमें उनका ही क्रमूर है। यह बात कुछ हद तक सच भी है लेकिन लोग अंगरेजी में अरजी देते हैं इसका एक कारन यह भी है कि उनका ऐसा तजरबा होता है कि देसी भाशा में बहुत महत्व के विशय पर अरजी दी जाय तब भी उस पर ध्यान नहीं दिया

## बेहाशा की कठिनाई

( बेहानी केशुराल मशरुवाला )

एक सहचर ने अिली सरकार को अंगरेजी में दी गेली عرضी की एक नक़ल मज्हे बेहज्ती है। वो عرضी पढ़ती। अस मील लुकी बेहाशा वाक्ये। वियाकृन, शुधली, शुधली की बेहत बेगुल्लेस दिक्केस। लुकर को किल्ले ‘अंगरेजी बेहाशा में अिलसी एरुविया लकली जाल्लेस। ये एक वजार करने की बात है। लुकर जो बात कहले की अिजा रकले हेल। ये अंगरेजी में ले तबिक तबिक लुके सक्ते न्हन न ससज्बिया सक्ते हेल। मज्हे अिलडा अज्बरे है के सरी वियाकृन के मतन अंगरेजी में लेहमा कल्ला मशकल है। अंगरेजी वियाकृन जतले वाले एक बेहानी ‘हरिजन’ में जो बेगुल्लेस हेल। अन की एक सुज्जी नार बार बेहज्ती रहते हेल। अिल बार तो एक ही मज्द में अिल्ले ने करीब ४० भूलों की फ़हरिस्त बेहज्ती ली। अस से में अिलसी अिल्ले लले عرضी दिने वाले को दोश न्हन देमा।

हो सकदा है सरकार अिलसा जबाब दे के करीब करीब सभे सरकारों ने प्रान्तीय बेहाशा में عرضी दिने की ज्हेत दिदी है। पर लुकर अस का फावदे न अतहाविल तो अस में न का ली कसूर है। ये बात कच्चे हद तक सच भी है। लेकिन लुकर अंगरेजी में عرضी दिने में अस का अिलक कारन ये बेहानी के न अिलसा अज्बरे होता है के दिसी बेहाशा में बेहत मतम के रुशे पर عرضी दी जाले तब भी अस पर देवान न्हन देमा



नया हिन्द चीन और अमरीका मार्च सन् '५९

महासागर के टापुओं पर कब्जा करना चाहता था तो क्या बेजा था ?

अमरीकी नीत लड़ाई की नीत है, अमरीकी नेता साफ कह चुके हैं कि वह लड़ाई चाहते हैं, कोई लड़ाई रोकने के लिये लड़ाई करना चाहता है, कोई सीमित लड़ाई के बहाने लड़ाई जारी रखना चाहता है, और जो शान्ति की बातें करते हैं वह भी लड़ाई की तैयारियाँ करते हैं, अमरीकी राइ लड़ाई की राह है, इसकी एक वजह है, जनरल मैकआरथर ने पिछले दिनों अपने बयान में कहा था कि एशियाई जातियाँ शक्ति की पूजा करती हैं, कहने का मतलब यह कि एशिया को डेडे के जोर से क़ाबू में रक्खा जा सकता है, चीन अमरीकी भाशा को समझने से इनकार करता है, वह साम्राजवाद के खिलाफ़ विद्रोह करता है, उसकी आवाज़ एशिया की दबाई हुई जानियों, लेकिन उबलते हुए आत्मसम्मान की आवाज़ है, साफ़ बात है कि यह खरी खरी बातें साम्राजवादों अमरीका को पसन्द नहीं, इर्मलिये चीन अमरीका का सबसे बड़ा दुश्मन है,

भारत का सौभाग्य है कि नेहरू के अगुवाई में देम ने शान्ति की तरफ़ क़दम उठाया है, हमारी जनता आजादी पसन्द और साम्राजवाद की दुश्मन रही है हमको गुलामी का तज़रबा है, इसलिये हम गुलाम जनता के तरफ़दार हैं, चीन के जागरन में हमारी पूरी हमदर्दी है, उसके साम्राज विरोध के हम पूरे साथी हैं, लेकिन यह काफी नहीं, इस को संगठित होकर एक आवाज़ से साम्राजवादियों में मांग करनी है, एशिया छोड़ दो, अमरीका से निकल जाओ."

नया हलद चीन और अमरीका मार्च सन् '५९

महासागर के टापुओं पर क़ब्ज़े कर चुकता था तो क्या बوج़ा था ? अमरीकी नीत, लुआँ की नीत है, अमरीकी न्हेंता मनाफ़ कह चुके हैं कि वह लुआँ चाहते हैं, कौनी लुआँ की नीत के लिये लुआँ करना चाहता है, कौनी सीमित लुआँ के बहाने लुआँ जारी रखना चाहता है, और जो लुआँ की बातें करते हैं वे भी लुआँ की तैयारियाँ करते हैं, अमरीकी राइ लुआँ की राह है, इसकी एक वजह है, जनरल मैकआरथर ने पिछले दिनों अपने बयान में कहा था कि एशियाई जातियाँ शक्ति की पूजा करती हैं, कहने का मतलब यह कि एशिया को डेडे के जोर से क़ाबू में रक्खा जा सकता है, चीन अमरीकी भाशा को समझने से इनकार करता है, वह साम्राजवाद के खिलाफ़ विद्रोह करता है, उसकी आवाज़ एशिया की दबाई हुई जानियों, लेकिन उबलते हुए आत्मसम्मान की आवाज़ है, साफ़ बात है कि यह खरी खरी बातें साम्राजवादों अमरीका को पसन्द नहीं, इर्मलिये चीन अमरीका का सबसे बड़ा दुश्मन है,

भारत का सौभाग्य है कि नेहरू की अगुआई में देम ने शान्ति की तरफ़ क़दम उठाया है, हमारी जनता आजादी पसन्द और साम्राजवाद की दुश्मन रही है, हम को एलामि का तज़रबा है, इस लिये हम गुलाम जनता के तरफ़दार हैं, चीन के जागरन में हमारी पूरी हमदर्दी है, उसके साम्राजवाद के हम पूरे साथी हैं, लेकिन यह काफी नहीं, इस को संगठित होकर एक आवाज़ से साम्राजवादियों में मांग करनी है, एशिया छोड़ दो, अमरीका से निकल जाओ."



नहीं जानता कि चीन पूरी तरह आजाद है और इनका नाकनवर है जितना कि वह पिछले मौ माल में था हां. इस फौज को अमरीका काम में लाना चाहता है. चीन को फिर से गुलाम बनाने के लिये, एशिया पर अपना काबू करने के लिये.

अमरीकी राजनेता और फौजी अफसर दो बान माफ नौर से कह रहे है. एक तो यह कि वह एशिया को आजाद नहीं छोड़ना चाहते. इसके लिये दम वहां बनाने है. लेकिन साराश यह है कि वह कोरिया, जापान, फारमूसा, फिलिपाइन, हिन्दुचीन, म्याम बरोग में अपने फौजी, जहाजी और हवाई अड्डे रखना चाहते है यह बान वह बार बार दुहराते है. उनका पहला बहाना यह है कि वह कम्युनिज्म से लड़ना चाहते हैं. उनके फैलाव को रोकना चाहते है. लेकिन अगर कम्युनिज्म के फैलाव को हो रोकना है तो उनमें लिये हथियार बलाने या लड़ाई छेड़ने और हवाई और समन्दरी अड्डे लेने की क्या जरूरत है? जिस तरह कम्युनिस्ट अपना प्रचार करते है, उमो तरह पूँजी वादी और साम्राज वादी भी अपना प्रचार कर सकते है.

दूसरी वजह वह यह देते है कि अमरीका की हिकाजत के लिये प्रशान्त महासागर और उसके पच्छिमी किनारे पर काबू रखना जरूरी है. मतलब यह कि जापान, कोरिया, फारमूसा, फिलिपाइन बरोगा पर काबू रखले बिना अमरीका अपनी हिकाजत नहीं कर सकता. यह अनोखी दलील है. अपनी हिकाजत के लिये अमरीका को मान हजार मील दूर के देशों को काबू में रखने की जरूरत पड़ती है. फिर चीन को भी अपनी हिकाजत के लिये अमरीका के हवाई टापुओं पर कब्जा करना चाहिये. और अगर जापान, एशिया और प्रशान्त

नहीं जानता कि चीन पूरी तरह आजाद है और इनका नाकनवर है जितना कि वह पिछले मौ माल में था हां. इस फौज को अमरीका काम में लाना चाहता है. चीन को फिर से गुलाम बनाने के लिये, एशिया पर अपना काबू करने के लिये.

अमरीकी राजनेता और फौजी अफसर दो बान माफ नौर से कह रहे है. एक तो यह कि वह एशिया को आजाद नहीं छोड़ना चाहते. इसके लिये दम वहां बनाने है. लेकिन साराश यह है कि वह कोरिया, जापान, फारमूसा, फिलिपाइन, हिन्दुचीन, म्याम बरोग में अपने फौजी, जहाजी और हवाई अड्डे रखना चाहते है यह बान वह बार बार दुहराते है. उनका पहला बहाना यह है कि वह कम्युनिज्म से लड़ना चाहते हैं. उनके फैलाव को रोकना चाहते है. लेकिन अगर कम्युनिज्म के फैलाव को हो रोकना है तो उनमें लिये हथियार बलाने या लड़ाई छेड़ने और हवाई और समन्दरी अड्डे लेने की क्या जरूरत है? जिस तरह कम्युनिस्ट अपना प्रचार करते है, उमो तरह पूँजी वादी और साम्राज वादी भी अपना प्रचार कर सकते है.

दूसरी वजह वह यह देते है कि अमरीका की हिकाजत के लिये प्रशान्त महासागर और उसके पच्छिमी किनारे पर काबू रखना जरूरी है. मतलब यह कि जापान, कोरिया, फारमूसा, फिलिपाइन बरोगा पर काबू रखले बिना अमरीका अपनी हिकाजत नहीं कर सकता. यह अनोखी दलील है. अपनी हिकाजत के लिये अमरीका को मान हजार मील दूर के देशों को काबू में रखने की जरूरत पड़ती है. फिर चीन को भी अपनी हिकाजत के लिये अमरीका के हवाई टापुओं पर कब्जा करना चाहिये. और अगर जापान, एशिया और प्रशान्त



नैयारियों में अमरीका ने लगभग ३,००० करोड़ रुपया खर्च किया। यह रकम हिन्दुस्तानी सरकार के इस साल के बजट के बराबर है। बहुत सा लड़ाई का सामान यों ही चीने में दे दिया गया। बहुत सा सामान जापान से दिलवा दिया गया। चांग को मरकार जनता से कितनी उखड़ी हुई थी और यह लड़ाई का सामान किस तरह कम्युनिस्टों के हाथ लगा, यह सब जानने हैं।

लोकमन इसी बीच सन १९५७ में अमरीका ने चीन के साथ एक व्यापारी समझौता किया जिसके अनुसार चीन और अमरीका ने आपसी व्यापारी रोकों को हटा दिया। इसका क्या नतीजा हुआ ? अगर हिन्दुस्तान पंजी रोकों को हटा दे तो देस का पद भी "बृंग धन्दा" वाकी नहीं रह जायगा। बाजार विदेशी माल में पट जायेगा। यही चीन में हुआ। देस के उद्योग धन्दे उप हो गए और वाक्तांग और आर्थिक जीवन पर अमरीका का काबू होगा। अमरीका ने देस के हवाई, फौजी और समन्दरी बल पर भी कब्ज़ कर लिया। चीन का देस अमरीकी उपनिवेश बन गया।

चांग की चीनी गुलाम और फौज का नियंत्रण अमरीकी हाथों में रहा है। राजकाजी बन्दियों को वैश्य अमरीका को बतों दूई थीं। अमरीका के पन्द्रह हजार मिपाही चांग की फौजों को नालीम देने रहे हैं। जब चीन की जनता और बन् के राष्ट्री अन्दोलन ने चांग की सेनाओं को देस से निकाल बाहर किया तो इस समय वह अमरीकी मदद से तैवान (फारमूसा) में राज कर रहा है। अमरीका ने चांग को पांच लाख मिपाहियों की फौज नैयार की है। यह फौज किस लिये है ? क्या चीन को आजाद करने के लिये है ? यह कौन

नया हल

जून और अमरीका

मार्च सन '५१

तैयारियों में अमरीका ने लगभग ३,००० करोड़ रुपया खर्च किया। यह रकम हिन्दुस्तानी सरकार के इस साल के बजट के बराबर है। बहुत सा लड़ाई का सामान यों ही चीने में दे दिया गया। बहुत सा सामान जापान से दिलवा दिया गया। चांग को मरकार जनता से कितनी उखड़ी हुई थी और यह लड़ाई का सामान किस तरह कम्युनिस्टों के हाथ लगा, यह सब जानने हैं।

लोकमन इसी बीच सन १९५७ में अमरीका ने चीन के साथ एक व्यापारी समझौता किया जिसके अनुसार चीन और अमरीका ने आपसी व्यापारी रोकों को हटा दिया। इसका क्या नतीजा हुआ ? अगर हिन्दुस्तान पंजी रोकों को हटा दे तो देस का पद भी "बृंग धन्दा" वाकी नहीं रह जायगा। यही चीन में हुआ। देस के उद्योग धन्दे उप हो गए और वाक्तांग और आर्थिक जीवन पर अमरीका का काबू होगा। अमरीका ने देस के हवाई, फौजी और समन्दरी बल पर भी कब्ज़ कर लिया। चीन का देस अमरीकी उपनिवेश बन गया।

चांग की चीनी गुलाम और फौज का नियंत्रण अमरीकी हाथों में रहा है। राजकाजी बन्दियों को वैश्य अमरीका को बतों दूई थीं। अमरीका के पन्द्रह हजार मिपाही चांग की फौजों को नालीम देने रहे हैं। जब चीन की जनता और बन् के राष्ट्री अन्दोलन ने चांग की सेनाओं को देस से निकाल बाहर किया तो इस समय वह अमरीकी मदद से तैवान (फारमूसा) में राज कर रहा है। अमरीका ने चांग को पांच लाख मिपाहियों की फौज नैयार की है। यह फौज किस लिये है ? क्या चीन को आजाद करने के लिये है ? यह कौन



चार पत्तक भाँव उबार सामान दिया. इधर चान का कमजोर समझकर कोई मदद नहीं दी गई. अमरीकी जनता ज़बर कुछ चंदा इकट्ठा करती रही.

दुनिया की दूसरी लड़ाई के बाँच अमरीका ने ब्रिटेन से मोल भाव करना शुरू किया. बिना साम्राज्य और वाजार समझौते के उसने ब्रिटेन को मदद देने से इनकार किया. जब फ्रान्स की हार के बाद सन १९४० में ब्रिटेन बुरी तरह से दब गया तब उसने पूर्वी एशिया को अमरीका के सुपुर्द कर दिया. जनरल स्टिलवेल चीन में पहुँच गया. जनरल मैकाथर ने प्रशान्त महासागर पर क्राव् पाने के लिये आस्ट्रेलिया में डेरा डाल दिया. इस तरह दुनिया को दूसरी लड़ाई में अमरीका ने प्रशान्त महासागर पर क्राव् पा लिया और जापान और चीन पर हावी होगया.

लड़ाई के बीच और उसके बाद अमरीका चीन की अन्दरूनी नीत में दखल देता रहा. वह चांगकाई शंक की तानाशाही को मजबूत करता रहा और आजादी के सच्चे लड़ाकुओं और प्रजातन्त्र की ताकतों को कुचलता रहा. और लड़ाई के खतम होने पर तो उसने खुले आम चांग के दल को सहायता देकर घेरलू लड़ाई की आग को भड़काया. अमरीकी जहाजों और बंदों के भिपाहियों ने चांग की सेनाओं को गुरीला स्थानों में भेजा. जापानी फौजों को हुक्म दिया गया कि वह छापेमारी के सामने हथियार न डालें.

इसके बाद चांग और कम्युनिस्टों के बीच समझौते का ढोंग रचा गया. सरपंच था अमरीका. एक तरफ बात चल रही थी और दूसरी तरफ चांग की सेनाओं को तैयार किया जा रहा था. इन

और उसके बाद अहार सामान दिया. अंदरू चीन को कमजोर समझकर कौन्सी मदद नहीं दी गئی. अमरीकी चलता चला चला अकड़ा करती रही.

दुनिया की दूसरी लड़ाई के बीच अमरीके ने दत्तों से मोल दिया. शुरू किया. बड़ा साम्राज्य और बाजार समझौते के स ने दत्तों को मदद दिलाने से अकार किया. जब फ्रान्स की हार के बाद सन १९४० में ब्रिटेन बुरी तरह से दब गया तब उसने पूर्वी एशिया को अमरीका के सुपुर्द कर दिया. जनरल स्टिलवेल चीन में पहुँच गया. जनरल मैकाथर ने प्रशान्त महासागर पर क्राव् पाने के लिये आस्ट्रेलिया में डेरा डाल दिया. इस तरह दुनिया को दूसरी लड़ाई में अमरीका ने प्रशान्त महासागर पर क्राव् पा लिया और जापान और चीन पर हावी होगया.

लड़ाई के बीच और उस के बाद अमरीके चीन की अन्दरूनी नीत में दखल दिता रहा. वह चांगकाई शंक की तानाशाही को मजबूत करता रहा और आजादी के सच्चे लड़ाकुओं और प्रजातन्त्र की ताकतों को कुचलता रहा. और लड़ाई के खतम होने पर तो उसने खुले आम चांग के दल को सहायता देकर घेरलू लड़ाई की आग को भड़काया. अमरीकी जहाजों और बंदों के भिपाहियों ने चांग की सेनाओं को गुरीला स्थानों में भेजा. जापानी फौजों को हुक्म दिया कि वह छापेमारी के सामने हथियार न डालें.

इस के बाद चांग और कम्युनिस्टों के बीच समझौते का ढोंग रचा गया. सरपंच था अमरीके. एक तरफ बात चल रही थी और दूसरी तरफ चांग की सेनाओं को तैयार किया जा रहा था. इन

और उसके बाद अहार सामान दिया. अंदरू चीन को कमजोर समझकर कौन्सी मदद नहीं दी गئی. अमरीकी चलता चला चला अकड़ा करती रही.



सन १८२२ में वाशिंगटन कानफरेन्स हुई, कानफरेन्स का वाशिंगटन में होना ही इस बात का सबूत था कि पैसिफिक में अमरीका हावी होगया है, अमरीका के पास एक मौका था कि वह चीन की मदद करता, चीन के प्रतिनिधि इसी तरह को उम्मीद लेकर अमरीका गए थे लेकिन चीन को उम्मीदों पर पानी फिर गया, उसको बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया, राश्ट्री अन्डोलन को भी वहाँ से कोई मदद नहीं मिली, चीनो राश्ट्रा अन्डोलन के नेता डाक्टर सनयान सेन समझ गए कि पच्छिमी प्रज्ञानन्त्र कोग देंग है, वह पिछड़े देशों को आजादी नहीं चाहता, हमलिये उन्होंने मोबियन मस से मदद की मांग की और वह मिली.

पच्छिमी देशों और जापान ने चीनी राश्ट्री अन्डोलन का विरोध किया, सन १८१७ के बाद राश्ट्री अन्डोलन में फूट डालना और घरेलू लड़ाई में चांग काई शेक का साथ देना—यह पच्छिमी देशों की नीति थी, अगर वह घरेलू लड़ाई में कोमिन्गों की मदद न करने तो शायद घरेलू लड़ाई न होनी, या इनको भयानक शकल न लेनी.

सन १८३१ के बाद जापान ने चीन पर हमला बोल दिया, यह लड़ाई बीच में कुछ वक्त के लिये रुकी, लेकिन बाद में सन १८४६ तक चलती रही कहने को अमरीका ने जापानी नीति का विरोध किया लेकिन सिर्र बातों से, अगर अमरीका जापान में अपना व्यापार भी बन्द कर देता तो जापान की हिम्मत न थी कि वह चीन के खिलाफ लड़ाई चला सकता, जापान भिन्न देशों का तेल, लोहा, गोला बारूद, कपास वगैरा अमरीका से मगता था, जब जापान के पास देने को सोना नहीं रह गया तो अमरीका ने चांदी लेना शुरू किया

सन १९२२ में वाशिंगटन कानफरेन्स हुयी, कानफरेन्स का वाशिंगटन में होना ही इस बात का सबूत था कि पैसिफिक में अमरीका हावी होगया है, अमरीका के पास एक मौका था कि वह चीन की मदद करता, चीन के प्रतिनिधि इसी तरह को उम्मीद लेकर अमरीका गए थे लेकिन चीन को उम्मीदों पर पानी फिर गया, उसको बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया, राश्ट्री अन्डोलन को भी वहाँ से कोई मदद नहीं मिली, चीनो राश्ट्रा अन्डोलन के नेता डाक्टर सनयान सेन समझ गए कि पच्छिमी प्रज्ञानन्त्र कोग देंग है, वह पिछड़े देशों को आजादी नहीं चाहता, हमलिये उन्होंने मोबियन मस से मदद की मांग की और वह मिली.

पच्छिमी देशों और जापान ने चीनी राश्ट्री अन्डोलन का विरोध किया, सन १९१७ के बाद राश्ट्री अन्डोलन में फूट डालना और घरेलू लड़ाई में चांग काई शेक का साथ देना—यह पच्छिमी देशों की नीति थी, अगर वह घरेलू लड़ाई में कोमिन्गों की मदद न करने तो शायद घरेलू लड़ाई न होनी, या इनको भयानक शकल न लेनी.

सन १९३१ के बाद जापान ने चीन पर हमला बोल दिया, यह लड़ाई बीच में कुछ वक्त के लिये रुकी, लेकिन बाद में सन १९४६ तक चलती रही कहने को अमरीका ने जापानी नीति का विरोध किया लेकिन सिर्र बातों से, अगर अमरीका जापान में अपना व्यापार भी बन्द कर देता तो जापान की हिम्मत न थी कि वह चीन के खिलाफ लड़ाई चला सकता, जापान भिन्न देशों का तेल, लोहा, गोला बारूद, कपास वगैरा अमरीका से मगता था, जब जापान के पास देने को सोना नहीं रह गया तो अमरीका ने चांदी लेना शुरू किया



इसी नीति के अनुसार अमरीका ने चीनी रेलों को एक नदरस्थ यानी गैर तरफदार कम्पनी के सुपट्र करने की योजना रक्खी। उसका मतलब भी सिर्फ यही था कि चीन में रेल बनाने में अमरीका का भी हाथ हो और उसकी पूर्जी भी काम में लाई जाए। इसके बाद जब चीन सरकार को कर्ज देने के लिये विदेशी सरकारों ने एक गुट बनाया तो अमरीका ने ब्रिटेन, फ्रान्स और जर्मनी को मजबूर किया कि उस गुट में अमरीका को शामिल किया जाए इस गुट को नीन था चीन को मजबूर करना कि वह किसी दूसरे देस में कर्ज न ले। बल्कि इस गुट में और इसकी अपनी शर्तों पर कर्ज ले।

सन १९१७ में दूसरे साम्राज्यादियों को तरह अमरीका ने भी जापान की चीन सम्बन्धी मांगों को मान लिया था। दुन मांगों में मानने के बाद चीन जापान का गुलाम बन जाता था इन मांगों को जापान की २१ मांगों के नाम से पुकारा जाता है। हमको ध्यान रखना चाहिये कि उस समय अमरीका के प्रेसिडेंट श्री विल्सन थे। उस उद्धार नेता ने भी जापानी साम्राज्यवाद का विरोध नहीं किया।

लड़ाई के बाद पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ। लेकिन इस सम्मेलन से भी चीन को कुछ न मिला। चीन आजादी चाहता था। उसकी मांग थी कि तटकर ( कस्टम ड्यूटी ) लगाने की आजादी दी जाय। चीनी देस से विदेशी सरकारों का प्रभाव उठा लिया जाय, उनकी कचहरियां, क्लानून वगैरा न चालू रखे जाएं। शान्ति सम्मेलन के सभापति भी प्रेसिडेंट विल्सन थे। एशियाई नागरिकों की बराबरी तक को स्वीकार नहीं किया गया। हबशियाँ पर अत्याचार करने वालों के देस का प्रतिनिधि यह कैसे कर सकता था।

इसी दस्त के अनुसार अमरीका ने चीनी रेलों को 'लक' सम्पत्ति یعنی एडिटर प्लोवदार कम्पनी के सुपट्र करने की योजना रक्खी। उस का मतलब भी सिर्फ यही था कि चीन में रेल बनाने में अमरीका का भी हाथ हो और उसकी पूर्जी भी काम में लाई जाए। इसके बाद जब चीन सरकार को कर्ज देने के लिये विदेशी सरकारों ने एक गुट बनाया तो अमरीका ने ब्रिटेन, फ्रान्स और जर्मनी को मजबूर किया कि उस गुट में अमरीका को शामिल किया जाए इस गुट को नीन था चीन को मजबूर करना कि वह किसी दूसरे देस में कर्ज न ले। बल्कि इस गुट में और इसकी अपनी शर्तों पर कर्ज ले।

सन १९१७ में दूसरे साम्राज वालों की तरह अमरीका ने भी जापान की चीन सम्बन्धी मांगों को मान लिया था। दुन मांगों में मानने के बाद चीन जापान का गुलाम बन जाता था इन मांगों को जापान की २१ मांगों के नाम से पुकारा जाता है। हमको ध्यान रखना चाहिये कि उस समय अमरीका के प्रेसिडेंट श्री विल्सन थे। उस उद्धार नेता ने भी जापानी साम्राज्यवाद का विरोध नहीं किया।

लौकी के बाद पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ। लेकिन इस सम्मेलन से भी चीन को कुछ न मिला। चीन आजादी चाहता था। उसकी मांग थी कि तट कर ( कस्टम ड्यूटी ) लगाने की आजादी दी जाय। चीनी देस से विदेशी सरकारों का प्रभाव उठा लिया जाय, उनकी कचहरियां, क्लानून वगैरा न चालू रखे जायें। शान्ति सम्मेलन के सभापति भी प्रेसिडेंट विल्सन थे। एशियाई नागरिकों की बराबरी तक को स्वीकार नहीं किया गया। हबशियाँ पर अत्याचार करने वालों के देस का प्रतिनिधि यह कैसे कर सकता था।



चीन के शोशन में कहीं पिछड़ा न जाए इस डर से और जापान का शोशन करने के लिये, अमरीकी सरकार ने जापानी सरकार को मजबूर किया कि वह विदेशी व्यापारियों के लिये देस के बन्दरगाहों को खोल दे. इसके बाद अमरीका के लिये न सिर्फ जापान का शोशन आसान हो गया. बल्कि चीन पहुँचने के लिये रमद, कोयला-पानी लेने के लिये बन्दरगाह मिल गए. अमरीका और दूसरे पच्छिमी देसों की चीन सम्बन्धी पालिमी में कोई खास फरक न था. अमरीका दूसरे देसों की तरह चीन से व्यापार करना था और शोशन में हाथ बटाता था.

( ५० ) लेकिन अमरीका का कहना है कि उसने चीन में खुले दरवाजे की नीत बरती और चीन को स्वतन्त्र रखने की कांशिश की. यह खुले दरवाजे की नीत क्या है ?

१८६४ की चीन जापानी लडाई के बाद पच्छिमी देसों ने चीन को अपने स्वार्थ क्षेत्रों (Spheres of Interest) में बांट डाला था. इन देसों में खास थे ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स, जर्मनी और जापान. अमरीका इस बीच क्यूबा और फिलिपाइन में उलभ गया था. फिर उसका बीच और दक्खिनी अमरीका में बहुत से वाजार मिल गए थे. इसलिये उसका चीन में दखल देने की फुरमन नहीं थी. लेकिन अमरीका यह न चाहता था कि यह पच्छिमी देस चीन के व्यापार और उद्योग धन्दों को क्यू में कर लें और उसको निकलना पड़े. इसलिये अमरीका का कहना था कि चीन में व्यापारी शोशन का सबका बराबर मौका मिलना चाहिये. कोई देस वहाँ पर अकेला अधिकार न कायम कर पाए.

चीन के शोशन में चीन की चीजें बहुत कम जानें इस डर से और जापान का शोशन करने के लिये, अमरीकी सरकारी अधिकार ने हादसी सरकारी को मजबूर किया कि वह विदेशी व्यापारियों के लिये देस के बन्दरगाहों को खोल दे. इसके बाद अमरीका के लिये न सिर्फ जापान का शोशन आसान हो गया. बल्कि चीन पहुँचने के लिये रमद, कोयला-पानी लेने के लिये बन्दरगाह मिल गये. अमरीका और दूसरे पच्छिमी देसों की चीन सम्बन्धी पालिमी में कोई खास फरक न था. अमरीका दूसरे देसों की तरह चीन से व्यापार करना था और शोशन में हाथ बटाता था.

( ५१ ) लेकिन अमरीका का कहना है कि उसने चीन में खुले दरवाजे की नीत बरती और चीन को स्वतन्त्र रखने की कांशिश की. यह खुले दरवाजे की नीत क्या है ?

१८९४ की चीन जापानी लडाई के बाद पच्छिमी देसों ने चीन को अपने स्वार्थ क्षेत्रों (Spheres of Interest) में बांट डाला था. इन देसों में खास थे ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स, जर्मनी और जापान. अमरीका इस बीच क्यूबा और फिलिपाइन में उलभ गया था. फिर उसका बीच और दक्खिनी अमरीका में बहुत से वाजार मिल गए थे. इसलिये उसका चीन में दखल देने की फुरमन नहीं थी. लेकिन अमरीका यह न चाहता था कि यह पच्छिमी देस चीन के व्यापार और उद्योग धन्दों को क्यू में कर लें और उसको निकलना पड़े. इसलिये अमरीका का कहना था कि चीन में व्यापारी शोशन का सबका बराबर मौका मिलना चाहिये. कोई देस वहाँ पर अकेला अधिकार न कायम कर पाए.



इसी नीति के अनुसार अमेरिका ने चीनी रेलों को एक तटस्थ यानी गैर तरफदार कम्पनी के सुपद करने की योजना रक्खी. उसका मतलब भी सिर्फ यही था कि चीन में रेल बनाने में अमेरिका का भी हाथ हो और उसकी पूंजी भी काम में लाई जाए. इसके बाद जब चीन सरकार को कर्ज देने के लिये विदेशी सरकारों ने एक गुट बनाया तो अमेरिका ने ब्रिटेन फ्रान्स और जर्मनों को मजबूर किया कि उस गुट में अमेरिका को शामिल किया जाए. इस गुट को चीन थी चीन को मजबूर करना कि वह किसी दूसरे देश में कर्ज न ले बल्कि इस गुट से और इसकी अपनी शर्तों पर कर्ज ले.

सन् १९१७ में दूसरे सांख्यिकवादियों की तरह अमेरिका ने भी जापान की चीन सम्बन्धी मांगों को मान लिय था इन मांगों को मानने के बाद चीन जापान का गुलाम बन जाता था इन मांगों को जापान की २१ मांगों के नाम से पुकारा जाता है. हमको ध्यान रखना चाहिये कि उस समय अमेरिका के प्रेसिडेंट श्री विल्सन थे. उस उदार नेता ने भी जापानी सांख्यिकवाद का विरोध नहीं किया.

लड़ाई के बाद पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ. लेकिन इस सम्मेलन से भी चीन को कुछ न मिला. चीन आजादी चाहता था. उसकी मांग थी कि तटकर ( कस्टम ड्यूटी ) लगाने की आजादी दी जाय. चीनी देस से विदेशी सरकारों का प्रभाव उठा लिया जाय, उनकी कचहरियां, कानून वगैरा न चालू रखे जाएं. शान्ति सम्मेलन के सभापति भी प्रेसिडेंट विल्सन थे. एशियाई नागरिकों की बराबरी तक को स्वीकार नहीं किया गया. हबशियों पर अत्याचार करने वालों के देस का प्रतिनिधि यह कैसे कर सकता था.

इसी नीति के अनुसार अमेरिका ने चीनी रेलों को एक तटस्थ यानी गैर तरफदार कम्पनी के सुपद करने की योजना रक्खी. उसका मतलब भी सिर्फ यही था कि चीन में रेल बनाने में अमेरिका का भी हाथ हो और उसकी पूंजी भी काम में लाई जाए. इसके बाद जब चीन सरकार को कर्ज देने के लिये विदेशी सरकारों ने एक गुट बनाया तो अमेरिका ने ब्रिटेन फ्रान्स और जर्मनों को मजबूर किया कि उस गुट में अमेरिका को शामिल किया जाए. इस गुट को चीन थी चीन को मजबूर करना कि वह किसी दूसरे देश में कर्ज न ले बल्कि इस गुट से और इसकी अपनी शर्तों पर कर्ज ले.

सन् १९१७ में दूसरे सांख्यिकवादियों की तरह अमेरिका ने भी जापान की चीन सम्बन्धी मांगों को मान लिय था इन मांगों को मानने के बाद चीन जापान का गुलाम बन जाता था इन मांगों को जापान की २१ मांगों के नाम से पुकारा जाता है. हमको ध्यान रखना चाहिये कि उस समय अमेरिका के प्रेसिडेंट श्री विल्सन थे. उस उदार नेता ने भी जापानी सांख्यिकवाद का विरोध नहीं किया.

लड़ाई के बाद पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ. लेकिन इस सम्मेलन से भी चीन को कुछ न मिला. चीन आजादी चाहता था. उसकी मांग थी कि तटकर ( कस्टम ड्यूटी ) लगाने की आजादी दी जाय. चीनी देस से विदेशी सरकारों का प्रभाव उठा लिया जाय, उनकी कचहरियां, कानून वगैरा न चालू रखे जाएं. शान्ति सम्मेलन के सभापति भी प्रेसिडेंट विल्सन थे. एशियाई नागरिकों की बराबरी तक को स्वीकार नहीं किया गया. हबशियों पर अत्याचार करने वालों के देस का प्रतिनिधि यह कैसे कर सकता था.



चीन के शोशन में कहीं पिछड़ न जाए हम डर से। और जापान का शोशन करने के लिये, अमरीका सरकारों नाविकों ने जापानी सरकार को मजबूर किया कि वह विदेशी व्यापारियों के लिये देम के बन्दरगाहों को खोल दे। इसके बाद अमरीका के लिये न मिरफ जापान का शोशन आमान हो गया। वल्कि चीन पहुँचने के लिये रमद, कोयला-पानी लेने के लिये बन्दरगाह मिल गए, अमरीका और दूसरे पच्छिमी देशों की चीन सम्बन्धी पालिसी में क्राई खाम करक न था। अमरीका दूसरे देशों की तरह चीन में व्यापार करना था और शोशन में हाथ बटाता था।

( ५६ ) लेकिन अमरीका का कहना है कि हमने चीन में खुले दरवाजे की नीत बरती और चीन को स्वतन्त्र रखने की कोशिश की। यह खुले दरवाजे की नीत क्या है ?

१८६४ की चीन जापानी लडाई के बाद पच्छिमी देशों ने चीन को अपने स्वार्थ जेबों (Special Privileges) में बाँट डाला था। इन देशों में खास थे ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स, जर्मनी और जापान। अमरीका हम बीच क्यूवा और फिलिपाइन में उलझ गया था। फिर उसको बीच और दक्खिनी अमरीका में बहुत से बाजार मिल गए थे। इसलिये उसको चीन में दखल देने की जरूरत नहीं थी। लेकिन अमरीका यह न चाहता था कि यह पच्छिमी देश चीन के व्यापार और बयोग धन्दों को काटू में करलें और उसको निकलना पड़े। इसलिये अमरीका का कहना था कि चीन में व्यापारी शोशन का सबको बराबर मौका मिलना चाहिये। कोई देश वहाँ पर अकेला अधिकार न कायम कर पाए।

चीन के शोशन में कहीं बिजनेस न हलै इस तर से। और जापान का शोशन करने के लिये, अमरीकी सरकारों ने जापानी सरकार को मजबूर किया कि वह विदेशी व्यापारियों के लिये देम के बन्दरगाहों को खोल दे। इसके बाद अमरीका के लिये न मिरफ जापान का शोशन आमान हो गया। वल्कि चीन पहुँचने के लिये रमद, कोयला-पानी लेने के लिये बन्दरगाह मिल गये, अमरीका और दूसरे पच्छिमी देशों की चीन सम्बन्धी पालिसी में क्राई खाम करक न था। अमरीका दूसरे देशों की तरह चीन में व्यापार करना था और शोशन में हाथ बटाता था।

( ५७ ) लेकिन अमरीका का कहना है कि हमने चीन में खुले दरवाजे की नीत बरती और चीन को स्वतन्त्र रखने की कोशिश की। यह खुले दरवाजे की नीत क्या है ?

१८९४ की चीन जापानी लडाई के बाद पच्छिमी देशों ने चीन को अपने स्वार्थ जेबों (Special Privileges) में बाँट डाला था। इन देशों में खास थे ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स, जर्मनी और जापान। अमरीका हम बीच क्यूवा और फिलिपाइन में उलझ गया था। फिर उसको बीच और दक्खिनी अमरीका में बहुत से बाजार मिल गए थे। इसलिये उसको चीन में दखल देने की जरूरत नहीं थी। लेकिन अमरीका यह न चाहता था कि यह पच्छिमी देश चीन के व्यापार और बयोग धन्दों को काटू में करलें और उसको निकलना पड़े। इसलिये अमरीका का कहना था कि चीन में व्यापारी शोशन का सबको बराबर मौका मिलना चाहिये। कोई देश वहाँ पर अकेला अधिकार न कायम कर पाए।



## چین اور امریکہ

( پہلی اشارام )

امریکی سرکار اور اُس نے پرتی بدھوں د دعویٰ نے نہ امریکی نہت چہن کے ہمت میں دعی ہے۔ اُن کا کہنا ہے کہ امریکہ چہن سواندھلنا کا حامی رہا ہے۔ کیا یہ تیک ہے؟ امریکی رخ کو سمجھنے کے لئے چہن اور امریکہ کے آپسی سمجھنے کے آپس پر ایک نظر ڈالنا ضروری ہوگا۔

جس سے امریکہ اپنی آزادی کی پرتی اور رہا تھا، چہن دین کے سمجھ اور بڑے دیسوں میں گنا حانا ہے۔ دچہمی بدیسوں کی لوت مار کی ہوت ہے تلک آکر اُس نے اپنا سمجھ ایک شہر کھلتن تک سمیت کر دیا تھا۔

دچہمی دیس دیوگ دھندوں میں یورپ سے آئے بڑے ڈیئے تھے۔ اُن کے پاس زیادہ اچھے ہتھیار، جہاز اور شاسن میں ملنے ہوئے سپاہی تھے۔ اُس طاقت کے بل پر ہندوستان کو آڑا دنا کر بریتین نے چہن پر حملے کیے اور اسکو اپنی منڈیاں بولنے اور اقیہ خریدنے پر مجبور کیا۔ چہن کی اِس ہار سے والدہ تہا نے اور اُس کا شوشن کوٹے والوں میں دچہمی دیس تھے۔ اُن میں امریکہ کا نمبر بریتین نے بعد دوسرا تہا امریکہ دوسرے بدیسوں ملکوں کے ساتھ ملکر چہن کے کڈاؤں کا پیرہ دیا کرتا تھا اور اچے سامراجی شوشن کے ہتھوں کی رکشا کرتا تھا۔

## چین اور امریکہ

( آٹھ اشارام )

امریکی سرکار اور اس کے प्रतिانیہوں کا دوا ہے کہ امریکی نیت چین کے ہیت میں رہی ہے۔ انکا کہنا ہے کہ امریکا چینی سواہیتا کا حامی رہا ہے۔ کیا یہ ڈیک ہے؟ امریکی رتھ کو سمجھنے کے لیے چین اور امریکا کے آپسی سمبندھ کے इतिहास पर एक नज़र डालना जरूरी होगा۔

جس समय امرिका अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहा था चीन दुनिया के सभ्य और बड़े देसों में गिना जाता था। पच्छिमी बिदेसियों की लूट मार की नीत से तंग आकर उसने अपना सम्पर्क एक शहर कैंटन तक सीमित कर दिया था۔

पच्छिमी देस उद्योग धन्दों में पूरब से आगे बढ़ गए थे۔ उनके पास ज्यादा अच्छे हथियार, जहाज और शासन में बंधे हुए सिपाही थे। इस ताकत के बल पर हिन्दुस्तान को आड्डा बना कर ब्रिटन ने चीन पर हमले किये और उसका अपनी मंडियां खोलने और अक्सी लखीदने पर मजबूर किया चीन की इस हार से फायदा उठाने और उसका शोशन करने वालों में सभी पच्छिमी देस थे। उनमें अमरीका का नम्बर ब्रिटन के बाद दूसरा था। अमरीका दूसरे बिदेसी मुल्कों के साथ मिलकर चीन के किनारों का पहरा दिया करता था और साम्राज्यी शोशन के हितों की रक्षा करता था۔



समझे थे जिसे दुशमन वह दौरा खरा निकला

है जान ही दे बैठा हम पर वह मुहब्बत से

खुद राम ही आया था दुनिया के जगाने को  
हर सांस में जपता था जो राम को बलफत से

कालिल में भी गांधी का वह राम नज़र आया  
रमता है जो हर घर में खुद राम की क़ुदरत से

हर धर्म को समझा था हर धर्म को माना था  
जो कुछ है वह रहमत है जो कुछ है वह रहमत मे

अपना जिसे समझे हो कुछ भी नहीं था अपना  
जो कुछ है वह रहमत है जो कुछ है वह रहमत से

दौलत है बड़ी सबसे एक होश में आ जाना  
बेहोश खुदाई है चक्कर में मुसीबत से

गांधी ने जहाँ भर की ग्यतिर यही मांगा था  
वह भेदे खुदा सचमुच भरपूर था हिकमत से

दुनिया में अमन होगा उस राह पे चलने मे  
जिस राह पे चलना था वह मंद मंद मदाक़त मे

जीना किसे कहने है बतला गया वह जीकर  
एक नाम का जीना है एक जीना है हिकमत से

सच्चे तबू जैसे دشمن وہ دوست کہا نکلا

ہے جان ہی دے بھٹھا ہم پر وہ محبت سے

خود رام ہی آیا آتھا دنیا کے جگانے کو  
ہر سانس میں جپتا تھا جو رام کو اُلت سے

قاتل میں بھی گندھی کو وہ اہ نظر آیا  
رمتا ہے جو ہر گھر میں خود رام کی قدرت سے

ہر دھرم کو سمجھا تھا ہر دھرم کو مانا تھا  
جو کچھ ہے وہ رحمت ہے جو کچھ ہے وہ رحمت سے

اپنا جسے سمجھ ہو کچھ بھی نہیں یا اپنا  
جو کچھ ہے وہ رحمت ہے جو کچھ ہے وہ رحمت سے

دولت ہے بڑی سب سے ایک ہوشر میں آجائے  
بہوش خدائی ہے چکر میں مصہبت سے

گندھی نے جہاں ہر کی خاطر یہی مانا تھا  
وہ مرد خدا سچ سچ ہر پر تو حکمت سے

دنیا میں امن ہوگا اس راہ پہ چلنے سے  
جس راہ پہ چلتا تھا وہ مرد خدا سے

جہاں کسے کہتے ہوں بتلا گیا وہ جی کو  
ایک نام کا جہاں ہے ایک جہاں ہے حکمت سے



शब्दों के बबडर में खाँ देते हैं उअ अपनी  
बेकार ही रहते हैं हम दूर हकीकत से

इस खाक के ज़रों से आवाज़ है वह आनी

मुनेने क तमन्ना था जिसकी मुँह मुट्ठन से

मैं आप ही दुशमन था दुशमन न ज़माना था

खुद घर को जला बैठा मैं अपनी ही नफरत से

आवाद रहे यारब गाँधी का वा मैखाना

लबरेज किया जिसने हर दिल को मुहब्बत से

लाखों ही नबी आप हजरत ने बताया था

तुम सबको कहा अपना दिल जान-ओ-मुहब्बत से

दिल रा तू बदल आवर है हज यही अकबर

गर वस्ले खुदा गयाही मिल सबसे मुहब्बत से

जो बात न समझे थे वह जान हुई जाहिर

भगवान की किरपा से अल्लाह को रहमत से

नापाक है वह दलत हम पाक जिस समझे

यह बात हुई जाहिर गाँधी की शहादत से

हजरत = मतलब मुहम्मद साहब से है. लबरेज = भगा हुआ.

दिल रा तू बदल आवर है हज यही अकबर = हमारे के दिल को  
अपने हाथ में ले यही सबसे बड़ा हज है. गर वस्ले खुदा गयाही  
मिल सबसे मुहब्बत से = अगर खुदा से मिलना चाहता हूँ तो सबसे  
मुहब्बत से मिल. रहमत = दया. शहादत = बलिदान.

शब्दों के भोतार में कहो दित्ते हैं हमें  
बेकार ही रहते हैं हमें हमें दूर हकीकत से

इस खाक के फ़रों से आर है वा नबी

सन्ने की सनायी जिसकी मक्के मदत से

मैं नबी हमें दुश्मन तैयार दुश्मन नै रमाते तैयार

खुद कहो ज़ेला बेइतिया में अपनी ही सूरत से

आवाद रहे यारब ग़ददी का वा मोहब्बत

लबरेज किया जिस ने हर दिल को मक्के मदत से

लाक़ों सी नबी आने हज़रत ने बताया तैयार

नै सब को कहो अपना दिल जान मक्के मदत से

दिल रा तू बदल आर है हज यही अकबर

जरवल खुदा ख़ास में सब से मक्के मदत से

जो बात न समझे हैं वा नबी नबी नबी

बेइतिया की क़िया से नै की रहमत से

नापाक है वा दलत हमें पाक जिस समझे

ये पाक नबी नबी नबी नबी नबी नबी

हज़रत = मक्के मदत से है. लबरेज = भगा हुआ.

दिल रा तू बदल आर है हज यही अकबर = हमारे के दिल को अपने हाथ  
में ले यही सब से बड़ा हज है. जरवल खुदा ख़ास में सब  
से मक्के मदत से = अगर खुदा से मिला चाहता हूँ तो सब से मक्के  
मदत से मिला. शहादत = बलिदान.



## आवाज़ ये आती है एक मर्द की तुरबत से

(डाक्टर हरचरन लाल वर्मन)

है बात बहुत सीधी ममको इसे हिकमत से  
आवाज़ ये आती है एक मर्द की तुरबत से

दो काम की श्रमरी को आंगरेज ने मन्वथा  
हम आप दुःख बनवा खुद अपनी हिमाकन से

तारीम जो बहदन का मजहब ने मिये ई थी  
वह हमने सुना तो है बदकारी की मोहवन से

था प्रेम न मजहब में उलफन न मदाकन में  
बस नाम से मनलव था और काम था जोहरन में

अब आंख खुली मेरी जलवे नजर आते हैं  
कुल हस्ती दुई गंशन जलवो का हकीकन में

देखर कहाँ या आल्ला कहने का है दो बाने  
निम्बत है उसे हमिल वम एक ही बहदन में

तुरबत = कत्र. हिकमत = समझदारी. बहदन = कता.  
सदाकन = सचाई. उलफन = प्रेम. जोहरन = कीर्ति.  
जलवे = प्रकाश. हस्ती = मूर्ख. निम्बत = नात.

## आवाज़ ये आती है एक मर्द की तुरबत से

( डाक्टर हरचरन लाल वर्मन )

है बात बहुत सन्देही सन्देह, ये निश्चित से  
आवाज़ ये आती है एक मर्द की तुरबत से

दो काम की श्रमरी को आंगरेज ने मन्वथा  
हम तब हुये सबो खुद अपनी हिमाकन से

तुलम जो وحدत की मذهب ने सकहाई थी  
वो हम ने बेला दी है मदरों की सख्त से

तुलम प्रेम के मذهب से 'अल' के मदकन से  
सब नाम से मणलव 'बो' का 'तु' नेमत से

अब आंख खुली मेरी जलवे नजर आते हैं  
कुल हस्ती हुयी दोशन जलवो की हकीकत से

देखर कियो ना अल लखने की तम दो नजर  
समत है 'से' जलवो सबो एक ही وحدत से

तुरबत = कब. حکمت = سمعہ، ایکڑا .  
سداکنت = سچائی . اہمت = پرہیز . شہادت = کبری .  
جلوے = درخش . ہستی = سستی . سمات = رازا .



नया हिन्दू हिन्दू की एक राजकाजी भांकी मार्च सन् '५९

युग का अमन चैन और खुशहाली देने या फिर, डाक्टर राधाकृष्णन के शब्दों में "बहुत से लोग उब कर, मजबूर होकर यह मानने लगेंगे कि कम्यूनिज्म के अलावा तरक्की का और कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं."

अगर हिन्दुस्तान अपने फर्जे को भूलता है तो एशिया भर जायगा. यह ठीक ही कहा है कि हिन्दुस्तान मिली जुली मध्यनाम्नो और तहजीबों का घर है, जहाँ वह साथ पनपना है इस सब में काम करें कि हिन्दुस्तान एशिया या दुनिया के किर्मी भाँ हिम्मे की कुचली और शांति जानियों को आशा बना रहें..... इससे जब हमारी रवादारी से भरी और मिनी जुला नहज्जीव अरने आप जाहिर नहीं होतीं तो हिन्दुस्तान और इसके कगरे लोगो के धार करने वाले के नाते मेरे स्वाभिमान को चोट पहुँचती है.

X X X X X X

लोगों ने 'महात्मा गांधी की जय' कहकर मेरा स्वागत किया है मगर वह नहीं जानते कि अगर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख एक दूसरे के साथ शांति से नहीं रह सकें, तो मेरे लिये कोई जय की बात नहीं है और न मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ. जिस तरह एक पंड़ जिससे फल नहीं नगते, मूख जाना है उसी तरह मेरी सेवा का मनचाहा नतीजा न मिलेला हो मेरा शरीर ही बेकार हो जायगा. जिस शरीर को उपयोगिता खत्म होगई वह बरबाद हो जायगा. पर आत्मा का कभी नाश नहीं होता. वह सेवा के कामों के लिये, अपनी मुक्ति हासिल करने के लिये, नए शरीर बदलती रहती है.

—महात्मा गांधी.

नया हल्ल हल्ल की एक राजकाजी चिन्की मार्च सन् '५९

यक का अमन चैन और खुश हाँ दिङ्के या बेर, डाक्टर राधाकृष्णन के शब्दों में "बहुत से लोग उब कर, मजबूर होकर यह मानने लगेंगे कि कम्यूनिज्म के अलावा तरक्की का और कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं."

अगर हिन्दुस्तान अपने फर्जे को भूलता है तो एशिया भर जायगा. यह ठीक ही कहा है कि हिन्दुस्तान मिली जुली मध्यनाम्नो और तहजीबों का घर है, जहाँ वह साथ पनपना है इस सब में काम करें कि हिन्दुस्तान एशिया या दुनिया के किर्मी भाँ हिम्मे की कुचली और शांति जानियों को आशा बना रहें..... इससे जब हमारी रवादारी से भरी और मिनी जुला नहज्जीव अरने आप जाहिर नहीं होतीं तो हिन्दुस्तान और इसके कगरे लोगो के धार करने वाले के नाते मेरे स्वाभिमान को चोट पहुँचती है.

X X X X X X

लोगों ने 'महात्मा गांधी की जय' कहकर मेरा स्वागत किया है मगर वह नहीं जानते कि अगर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख एक दूसरे के साथ शांति से नहीं रह सकें, तो मेरे लिये कोई जय की बात नहीं है और न मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ. जिस तरह एक पंड़ जिससे फल नहीं नगते, मूख जाना है उसी तरह मेरी सेवा का मनचाहा नतीजा न मिलेला हो मेरा शरीर ही बेकार हो जायगा. जिस शरीर को उपयोगिता खत्म होगई वह बरबाद हो जायगा. पर आत्मा का कभी नाश नहीं होता. वह सेवा के कामों के लिये, अपनी मुक्ति हासिल करने के लिये, नए शरीर बदलती रहती है.

—महात्मा गांधी.







का कांग्रेसी सरकार की जगह ले लेना नामुमकिन नहीं है फिर भी इस बारे में पक्के तौर से अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

हिन्दू महासभा राजकाजी मैदान में अपनी वेबकूची के लिये अन्तही रही है। मुल्क की जटिल समस्याओं को हल करने के लिये इसने कुछ भी नहीं किया है, उल्टे हमेशा रोड़े ही अटकती रही हैं। खास कर साम्प्रदायिक भावनाओं को उकसा उकसा कर इस जमाने के सालाना जलसे सिर्फ राजकाजी दंगल और उछल कूद ही रहे हैं जिसमें कि सोती हुई और दुखी जनता की विगड़ी हुई मालो हालत मुखारिफ़ अगर दुखों और बेजार जनता की विगड़ी हुई मालो हालत मुखारिफ़ के लिये कुछ नहीं किया गया तो बहुत मुमकिन है महासभा अपने बोलें चुनाव में काफ़ी बोट पा जाय।

कम्युनिस्ट पार्टी के मुखवत्ते में महासभा में हिन्दू की एकता और आस्था की कहीं कम खतरा है। हालाँकि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर गिनती में कम हैं फिर भी पार्टी का यह दावा है कि हजारों ऐसे नौजवान हैं जो पार्टी के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये अपना सब कुछ निछावर कर सकते हैं। लेकिन पार्टी का गश्त बिराधी नीति ने इसे जनता से अलग कर दिया है। मित्राय कुछ पेशी जगहों के जहाँ खेती या कारखानों में कारबारी अमनोश बहुत ज्यादा है। कम्युनिस्ट पार्टी आम लोगों की तक़ोंफ़ों पर अच्छी तरह पनपती है। कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में दुख की बात यह नहीं है कि वह कम्युनिज्म को मानती है बल्कि यह है कि वह एक दूसरे राज के पाँचवें दस्ते का काम कर सकती है।

सहा हलद हलद की एक राख काछी चोन्की माच सन् ०१ का कान्ग्रेसी सरकार की जगह ले लेना नामुमकिन नहीं है फिर भी इस बारे में पक्के तौर से अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

हलदो मिया सभिया राख काछी मियान मयल अन्दी ले रतुणी के लिये अन्तही रही है। मुल्क की रतल सम्स्याओं को हल करने के लिये इस के लिये भी नहीं किया है। लिये हमेशा रोड़े ही अटकती रही हैं। खास कर साम्प्रदायिक भावनाओं को उकसा उकसा कर इस जमाने के सालाना जलसे सिर्फ राज काछी दंगल और उछल कूद ही रहे हैं जिसमें कि सोती हुई और दुखी जनता की विगड़ी हुई मालो हालत मुखारिफ़ अगर दुखों और बेजार जनता की विगड़ी हुई मालो हालत मुखारिफ़ के लिये कुछ नहीं किया गया तो बहुत मुमकिन है महासभा अपने बोलें चुनाव में काफ़ी बोट पा जाय।

कम्युनिस्ट पार्टी के मुखवत्ते में महासभा में हिन्दू की एकता और आस्था की कहीं कम खतरा है। हालाँकि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर गिनती में कम हैं फिर भी पार्टी का यह दावा है कि हजारों ऐसे नौजवान हैं जो पार्टी के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये अपना सब कुछ निछावर कर सकते हैं। लेकिन पार्टी का गश्त बिराधी नीति ने इसे जनता से अलग कर दिया है। मित्राय कुछ पेशी जगहों के जहाँ खेती या कारखानों में कारबारी अमनोश बहुत ज्यादा है। कम्युनिस्ट पार्टी आम लोगों की तक़ोंफ़ों पर अच्छी तरह पनपती है। कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में दुख की बात यह नहीं है कि वह कम्युनिज्म को मानती है बल्कि यह है कि वह एक दूसरे राज के पाँचवें दस्ते का काम कर सकती है।







## नया हिन्दू हिन्दू की एक राजक़ारी भांकी

आजादी मिलने के बाद इन्डियन नेशनल कांग्रेस, जिम्मेन  
‘आजादी को लड़ाई के जमाने में भाग्यजयादेक खिताफ एक मिला जुला  
मोर्चा कायम किया था। पवन की ओर बढ़ने लगी है। ओहदा मिलने  
पर अकसर ऐसा हुआ करता है। मुल्क की इस बड़ी और अमर  
रखने वाली अकली जमात के संगठन में दगर पड़ गई हैं। इसकी  
बजह बहुत साफ है। आजादी मिल जाने पर कांग्रेस का जग कम  
हो गया। तामीरी प्रामास की जगह गुदबन्दी के आपसी भगड़ो ने  
ले ली। और अश्टाचार ने उसके शरीर को छलनी कर डाला एक  
कहावत है कि ताकत में ज्यादा और कोई चीज अश्ट नहीं करनी  
और पूरी ताकत पूरी तौर पर अश्ट कर देनी है। मुकदले में किर्मी  
दूसरी जमात के न होने की बजह से आइने पर बैठे हुई कांग्रेस  
अश्टाचार और घूसखोरी का घर बन गई। जनता में कांग्रेस की जो  
भी बची खुबी इज्जत है वह इसकी पिछली कुरबानियों के कारण है।

महात्मा गांधी ने आजादी मिल जानें के व दू के जमाने में कांग्रेस की जो दुरगति होने वाली थी उसे पहले ही भांप लिया था और आहूदों की कमजोरियों से बचे रहने के लिये आगाह कर दिया था. गांधी जी ने अपने आखिरी लेख में लिखा था कि आजादी मिल जाने पर कांग्रेस को लोकसेवक सघ में बदल जाना चाहिये जो उसे निस्वार्थ लोगों की जमात हो जा आहूद से दूर रह कर मुक्त का चौरफा तरफ़की के लिये काम कर सकें. लेकिन कांग्रेसी नेतागिरी आहूदों के मोह को न छोड़ सकी और राश्ट्र पिता की आखिरी राय का न मानने के लिये तरह तरह की दलीलें बना ली गईं. कुछ भी हो, इतना तय है कि यह कैसला मुनासिब नहीं रहा.



नया हिन्दू हिन्दू की एक राजकाजी भांकी मार्च सन् '५१

लिये ही काम करके यह दिखा सकते हैं कि लोकशाही के कारनामे तानाशाही के बाथदों से अच्छे होते हैं।

कितनी समझदारी और दूरदर्शी की सलाह है ! और वह भी उसके मुंह से निकली हुई है जिसने राजदूत का काम मंभालने के बाद ही से अपने को ऊँचे दर्जे का राजदूत मानित कर किया है। क्या मुल्क और नेता लोग इस मलाह को समय रहते मान कर ओस आधार पर घर को ठीक कर लेंगे जिसमें कि देव अन्नरक्षीमा मैदान में उठने वाले नेत्र नूतान के धक्के का मह मंके और मजबूती से खड़ा रह सके ? वैसे ही दुनिया का एक अन्ध्रा खामा हिस्सा इसके जाल में फंस चुका है और लाडाई के बादल हिन्द की सीमा पर मंडरा रहे हैं। हिन्दू ऐसा बसा हुआ है कि पड़ोसी देशों में हॉने वाली गड़बड़ी के असर से वह अछूता रह ही नहीं सकता जब तक कि वह अपने को अपने माली, उम्ली और रुहानों तौर पर विलकुल अलग न रखे।

दुनिया की कौमिलों में किर्मी मुल्क की धावाज का महत्व चरम होता है पर उसे मुल्क की भीनरी तकन समझ बैठना गलती है। हमें इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये कि अंतरकीमी दुनिया में हमारे मुल्क की रोज बगोच बढ़ती हुई इज्जत और दुनिया की कौमिलों में उमकी ऊँची जगह होने की वजह से घर की विगड़ती हुई माली और राजकाजी हालतों की चुनौती को भूला जा सकता है। नेहरू सरकार की दुनिया की गुट बन्दी से अलग रहने की स्की नीत की वजह से हमारी मैदान में हिन्दू ने जो ऊँची जगह पाई है, ठीक उसी के

समर्थन के बिना ही हमारे सामने खड़ा करार है।

नया हल हल की एक राजकाजी चिन्तायें मार्च सन् '५१

लम्बे ही काम करके यह दिखा सकते हैं कि लोकशाही के कारनामे तानाशाही के बाथदों से अच्छे होते हैं।

कितनी समझदारी और दूरदर्शी की सलाह है ! और वह भी उसके मुंह से निकली होती है जिसने राजदूत का काम मंभालने के बाद ही से अपने को ऊँचे दर्जे का राजदूत मानित कर दिया है। क्या मुल्क और नेता लोग इस सलाह को समय रहते मान कर ओस आधार पर घर को ठीक कर लेंगे जिसमें कि देव अन्नरक्षीमा मैदान में उठने वाले नेत्र नूतान के धक्के का मह मंके और मजबूती से खड़ा रह सके ? वैसे ही दुनिया का एक अन्ध्रा खामा हिस्सा इसके जाल में फंस चुका है और लाडाई के बादल हिन्द की सीमा पर मंडरा रहे हैं। हिन्दू ऐसा बसा हुआ है कि पड़ोसी देशों में हॉने वाली गड़बड़ी के असर से वह अछूता रह ही नहीं सकता जब तक कि वह अपने को अपने माली, उम्ली और रुहानों तौर पर विलकुल अलग न रखे।

दुनिया की कुन्सलों में किसी मुल्क की आवां महबू नमदूर हमारे प्रभु के मुल्क की भौतिकी सातत समुदाय अन्ध्र एन्ध्र है हमारे इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये कि अन्ध्र कुन्सल दुनिया में हमारे मुल्क की रोज बगोच बढ़ती हुई इज्जत और दुनिया की कौमिलों में उमकी ऊँची जगह होने की वजह से घर की विगड़ती हुई माली और राजकाजी हालतों की चुनौती को भूला जा सकता है। नेहरू सरकार की दुनिया की गुट बन्दी से अलग रहने की स्की नीत की वजह से हमारी मैदान में हिन्दू ने जो ऊँची जगह पाई है, ठीक उसी के

समर्थन के बिना ही हमारे सामने खड़ा करार है।



مجلس ۱۰۰

(5-5)

ہند کے ماسکو (جورج) قاکہ سرو پلانی (ادہ) کی شمار نے ح

میں گھاتی یونیورسٹی نے پہلے کنوولوشن کے موقع پر کہا: —

اس وجہاً اُن راجہ بھٹا نے اپنے ایکٹو ممبر آئے چند چہیتہ دوسرے  
 قریب۔۔۔ "تمہیں اپنے کو دشمن کے میں دینا" چہیتہ کی کمیٹی کا بیٹہ سے  
 اس طرح سنگتیں کرنا چاہیے کہ وہ معاشری شام طرح کی اسکھوں  
 کے پورا ہونے میں تیزی سے مدد کر سکے۔ مگر نے دلیلاً اور حقائق  
 کے حقائق کے قانون میں سدھار کرنے میں دیر کی تو بہت سے لوگ  
 اوب کر مسجد پر تو کر یہ مسجد چھینے لگیں تے کہ کمپوز ہونے کے علاوہ ترقی  
 کا اور کوئی دوسرا راستہ ہے ہی نہیں۔۔۔

میں نے انہیں لو لیا جاسکتا۔ ہم صرف صدیقی لوگ شاعری کے  
 دیوانوں نے ان کے ساتھ کہا کہ "بچہ پھیلتی باتوں کے سہارے آنے والے"

[illegible]



मँग

एक मत पक्के के दाम एक रुपया छै आने

चड़द

" " एक रुपया मवा मान आने

मूठ

" " एक रुपया माढ़े नीन आने

मजदूरी

अच्छे से अच्छे पन्थर के कारीगर, राज या बड़ई को साढ़े चार आने रोज मजदूरी मिलती थी. आस मजदूरों को मवा आना गज यानी पाँच पैसे राज मिलता था.

एक मामूली मजदूर, जो केवल पाँच पैसे रोज कमाता था, बारह दिन मजदूरी करके चार आदमियों को आठ दिन तक लिला पिला सकता था. इसी तरह एक मामूली मजदूर पाँच पैसे रोज कमाकर दो महिने को मजदूरी से चार आदमियों को आठ जोंड़े रखे नैयार करा कर दे सकता था.

शरीव से शरीव मजदूर के घर में भी चौड़ी के गहने होने में

क्या आजाद भारत में वह दिन फिर आ सकते हैं?

“सुक्र पर यह डलजास लगाया गया है कि मैं सुनलम नो को खुश करने का कोशिश करता हूँ मगर मैं ऐसा करूँ, तो हज़ क्या है? मुमकिन है कुछ सुमलमान मुझे नुक़सान पहुँचावा चाहें. लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं होता कि बढ़ते में मैं भी उनका नुक़सान करूँ.”

फूट एक भयानक चीज़ है. सुगलों ने और बाद में अंगरेजों ने हिन्दुस्तान को जीता तो हमारे राजाओं की फूट के कारन ही. आब को जल्दा में भी फूट है. कितनी ऊँची नीची जानियाँ है. यह हम पर होना ही चाहिये.”

—महात्मा गाँधी

लगा हलद हलद आन में दाम बाली मार सन ७१

मोन्क

आक मन बिके के दाम आक दोपहे जे आने

आद

.. .. आक दोपहे सवा सत आने

मोन्क

.. .. आक दोपहे सवा सत तेष आने

मजदूरी

अच्चे से अच्चे पन्त के कारीगर, आज या बड़ई को साढ़े चार आने मजदूरी मिलती थी. आम मजदूरों को सवा आने दो सव सव दोपहे से मिलता था.

एक معمولी मजदूर जो कियों बाँख दसिने दो कमाता था, बारह दिन मजदूरी के जे चार मेषों को से दान तक आला पला सकता था. इसी तरह एक معمولी मजदूर जो पाँच पैसे रोज कमाता था, दोपहे से दोपहे तक चार मेषों को दान तक आला पला सकता था.

शरीव से शरीव मजदूर के घर मेषों में भी चौड़ी के गहने होने में क्या आज भवत मेषों में दान तक आला पला सकता है?

“मजदूर आर पिके लाम लाला कला जे के मेषों में दान आने को खुश करने की कोशिश किया हूँ. मगर मेषों में दान आने में कल क्या है? मुमकिन है कि कुछ मजदूर मुझे नुक़सान पहुँचावा चाहें. लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि बढ़ते में मैं भी उनका नुक़सान करूँ.”

दलत आक दलत आक जे मेषों में दान आने में अंगरेजों ने हिन्दुस्तान को जीता तो हमारे राजाओं की फूट के कारन ही. आज तो जल्द मेषों में भी दलत है. कितनी ऊँची नीची जानियाँ है. यह जल्द मेषों में भी दलत होना ही चाहिये.”

—महात्मा गाँधी



धान	एक मन पक्के के दाम	सबा बारह आने
चावल लुशवृद्धार किरम अव्वल	"	दो रुपए
ज्वार	"	छे आने
बाजरा	"	पाँच आने
मैदा	"	बारह आने
चना	"	पाँच आने
मूँग	"	ग्यारा आने
बड़द	"	दस आने
मूठ	"	सबा छे आने
सफेद चीनी चम्दा	"	तीन रुपया बारह आने
लाल शकर	"	एक रुपया चौदह आने
बी	"	तीन रुपया आठ आने
तेल	"	दो रुपया ग्यारह आने
नमक	"	छे आने
दूध	"	पन्द्रह आने
गुड़	"	एक रुपया सान आने

सन १६१२ ई० में सम्राट जहाँगीर के जमाने में एक अंगरेज यात्री मिस्टर राइट हिन्दुस्तान आया था. वह जहाँ जाता था एक आना रोज में बड़े आराम से अपना गुजर कर सकता था.

सन १८५७ के भाव

गेहूँ	एक मन पक्के के दाम	छे रुपया
धान	"	एक रुपया सबा दो आने
जौ	"	एक रुपया

सोयादा आने	एक मन पके के दाम	देहान
दो रुपये	"	चारु खुशबुदार قسم اول
छे आने	"	ज्वार
पाँच आने	"	बाजरा
बारह आने	"	मैदा
पाँच आने	"	चना
ग्यारा आने	"	मूँग
दस आने	"	अड़
सबा छे आने	"	मोठ
तीन रुपये बारह आने	"	सफेद चीनी चम्दा
एक रुपये चौदह आने	"	लाल शकर
तीन रुपये आठ आने	"	बी
दो रुपये ग्यारह आने	"	तेल
छे आने	"	नमक
पन्द्रह आने	"	दूध
एक रुपये सान आने	"	गुड़

सन १८५७ के भाव

एक मन पके के दाम	देहान	जौ
दो रुपये	"	"
छे आने	"	"
पाँच आने	"	"
बारह आने	"	"
पाँच आने	"	"
ग्यारा आने	"	"
दस आने	"	"
सबा छे आने	"	"
तीन रुपये बारह आने	"	"
एक रुपये चौदह आने	"	"
तीन रुपये आठ आने	"	"
दो रुपये ग्यारह आने	"	"
छे आने	"	"
पन्द्रह आने	"	"
एक रुपये सान आने	"	"

सन १९१२ में महान् सभ्यता के जमाने में एक अंगरेज यात्री मिस्टर राइट हिन्दुस्तान आया था. वह जहाँ जाता था एक आना रोज में बड़े आराम से अपना गुजर कर सकता था.



का मामला सम्भवता है इसलिये बिला माफ़ किया नाज देता है और मिल (गिरती) वाले उजरत माफ़ूल लेने के बावजूद चाबल को पूरे तौर से साफ़ नहीं करते. धान और कंकर मिट्टी बाकी रखते हैं. और रातिब बन्दों के दूकानदार भी भूसा और धान, कंकर या परम यानी वारीक फ़िनकी मिला देते हैं. अगर दूकानदार में शिकायत की जाय तो साफ़ जवाब मिलता है कि सरकार में ही आया हुआ नाज है, हम क्या करें.

रातिब बन्दों के दूकानदार भी लोगों पर रहम नहीं करते और न चोरी से छनाज बेचने वाले, जिसका नतीजा यह है कि रातिब बन्दों से आम लोगों को कोई आराम नहीं है. अखबारों से भी आगे दिन में विचारों की तसदीक होती रहनी है.

रातिब बन्दी से आम लोगों के अलावा सरकारगी मुहकमों के लोगों को भी कोई ख़ाम आराम नहीं है. अखबारों में देखा गया है कि हकूमत सस्ता अनाज मुहैया करने के लिये हर साल दो डाई कंगर रुपया खर्च करती है. इस पर भी दस माल पहले जैसा न अच्छा साफ़ नाज मिलता है. न जिनदगी की ज़रूरत की वंई और चीज़ दम साल पहले के भावों से अब के भावों का मुक़ाबला करने तो चारम्ही के सैकड़ा से हजार की मँकड़ा तक हर चीज़ महंगी है और दिनों, महीनों सालों को छोड़िये. मिनटों में महंगाई बढ़ती ही जाती है. यहाँ हम सोलहवीं से उन्नीसवीं सदी तक के नाज वगैरा के भाव देते हैं:—

सम्राट अकबर (१५५६ ई० में १६०५ ई०) के समय के भाव

गेहूँ	एक मन पक्के के दाम	आठ आने
जौ	" "	पाँच आने

का معاملہ سمجھेगा है اما تم بلا صاف کیا راج دیتا ہے اور مل (گرنی) والے اجرت معقول لینے کے باوجود چاروں کو پورے طور سے صاف نہیں کرتے. دھان اور کلمک مٹی پرانی رکھتے ہیں. اور راتیب باندی کے درکار دار بھی بیسہ اور دھل کلمک پر دھ یعنی تاریک کلمکی مٹ دیتے ہیں. اگر درکار دار سے شکایت کی جائے تو صاف جواب ملتا ہے کہ سکار سے تمی آیا نہ راج نے نہ کدا کریں.

راتیب باندی کے درکار دار بھی لوگوں پر رحم نہیں کرنے پر نہ چوری سے راج بیچنے والے حسد سے بھرے ہوتے ہیں کہ راتیب باندی سے عام لوگوں کو کوئی آرام نہیں ہے. اخیاروں میں دیکھا گیا ہے کہ وچاروں کی تصدیق نہ کی دیتی ہے.

راتیب باندی سے عام لوگوں کے علاوہ سرکاری محکموں کے لوگوں کو بھی کوئی خاص آرام نہیں ہے. اخیاروں میں دیکھا گیا ہے کہ حکومت سمیتا راج مہیا کرنے کے لئے ہر سال دو ڈھائی کدا (دو بیسہ خرچ کرنی ہے) اس پر بھی دس سال پہلے جیسا رہ چکا. اب راج ملتا ہے نہ راتیب کی غیبت کی کوئی اور چیز. دس سال پہلے کے بہانوں سے اب کے بہانوں! صدائے کدس و چا سو فی سیکڑا سے ہزار فی سیکڑا تک ہو چا. مہنگی ہے نہ دس مہنگی. سالوں کو چار سو فی صدتوں میں مہنگائی ہوتی ہی جاتی ہے. یہاں ہم سو باویس سے اکیسویں صدی تک کے راج و بھارے کے باندی دیتے ہیں:—

سمرات اکد. (۱۵۵۱ء سے ۱۶۰۵ء) کے سیر کے بندا

گندھوں	ایک من پکے کے دام	تین آئے
جو	" "	دس آئے



( ৯৫৮ )

( ۲۳۱ ) -

سروریمہ دار، زمہندار اور گاؤں کے ستوندار اراج چنبا کر دیکھتے  
 تھے۔ کسان سرکار کی طرف سے ناچ لگئے جانے کو ایک زبردستی  
 جس سے ہزاروں روپے کا خیرباد ہوا ناچ چوروں کی بہیلت ہو جاتا  
 جو اکثر چوری جاتا ہے اور چوری سے بھیج بھی لیا جاتا ہے  
 اور کارپوریشن کے گوداموں میں ہزاروں یورے ناچ جمع کیا  
 لئے کسانوں سے سیدھے ناچ لینے کے لئے سرکار نے کارپوریشن بنائی  
 تھی جس میں کسانوں کے لئے ایک دکان بنائی تھی جس سے  
 کسانوں کو اپنی ضرورتیں پوری کرنے کے لئے جانا پڑتا تھا  
 اور وہاں سے کھانے کی چیزیں خرید کر گھر لے جاتے تھے۔



बीच के सब ही आदमी शामिल थे. रातिब बन्दी की दूकानों को हर सर्नाचर के दिन छुट्टी दी जाने लगी और उनके काम के बख्त सुबह आठ बजे से बारह बजे तक और शाम को तीन बजे से सात बजे तक मुकदर करिये गए. जुमा (शुक्र) से जुमारान (त्रिहम्पत) तक सात दिन का सप्ताह ठहरा दिया गया. जो आदमी जुमारान तक नाज न ले सका उसका एक हप्ते का नाज हूच गया जो दूकानदारों का माल हो गया और जो आदमी वारीक चावल खरीद लाने की हैसियत नहीं रखता उसने चावल खरीदना छोड़ दिया और जो पीली ज्वार या रागी नहीं खाना वह भी भूखा मरने लगा. एक दो साल नौ कहीं से बाहर के मोटे उबले हुए चावल मंगाए गए और वहीं हर आदमी को दिये जाने लगे और मुहकमा राशनग के रुये के खिलाफ खर्च किये जाने लगे और जो वारीक चावल खाना था उसने मोटे और उबले हुए चावल लेना छोड़ दिया. इन सब इनजामों से चार दाजारी खूब बढ़ी और आम लोगों को तरह तरह की तकलीफें पहुँचने लगी और नाज खुद गोदामों में कूड़ा मिला हुआ बटने लगा. अन्नवांगों में मैंने देखा कि मरकाग की तरफ में हुकुम दिये गए कि चावल की पालिश न की जाय क्योंकि चावल का विटामिन नष्ट हो जाता है जो आदमी की नन्डुरुली के लिये जरूरी है. रियासत हैदराबाद में ज़ागी कभी कम नहीं हुई. रातिब बन्दी के शुरू के दिनों में छेँ लाख वारे ज़ागी बन्वाई भेज दी गईं. अब साल भर से रियासत में ज़ागी नहीं है उसको जगह चावल की किनकी दी जा रही है. गोदाम से अगर अच्छी किनकी भी भिजे तो उसमें रातिब बन्दी के दूकानदार परम (बार्गक किनकी) मिलाकर

बिच के सब ही आदमी शामिल थे. रातिब बन्दी की दुकानों को हर दिन छुट्टी दी जाने लगी और उनके काम के बख्त सुबह आठ बजे से बारह बजे तक मुकदर करिये गये. जुमा (शुक्र) से जुमारान (त्रिहम्पत) तक सात दिन का सप्ताह ठहरा दिया गया. जो आदमी जुमारान तक नाज न ले सका उसका एक हप्ते का नाज हूच गया जो दूकानदारों का माल हो गया और जो आदमी वारीक चावल खरीद लाने की हसियत नहीं रखता उसने चावल खरीदना छोड़ दिया और जो पीली ज्वार या रागी नहीं खाना वह भी भूखा मरने लगा. एक दो साल नौ कहीं से बाहर के मोटे उबले हुए चावल मंगाए गए और वहीं हर आदमी को दिये जाने लगे और मुहकमा राशनग के रुये के खिलाफ खर्च किये जाने लगे और जो वारीक चावल खाना था उसने मोटे और उबले हुए चावल लेना छोड़ दिया. इन सब अन्तर्दामों से चार दाजारी खूब बढ़ी और आम लोगों को तरह तरह की तकलीफें पहुँचने लगीं और नाज खुद गोदामों में कूड़ा मिला हुआ बटने लगा. अन्नवांगों में मैंने देखा कि मरकाग की तरफ से हुकुम दिये गये कि चावल की पालिश न की जाय क्योंकि चावल का विटामिन नष्ट हो जाता है जो आदमी की नन्डुरुली के लिये जरूरी है. रियासत हैदराबाद में ज़ागी कभी कम नहीं हुई. रातिब बन्दी के शुरू के दिनों में छेँ लाख वारे ज़ागी बन्वाई भेज दी गईं. अब साल भर से रियासत में ज़ागी नहीं है उसको जगह चावल की किनकी दी जा रही है. गोदाम से अगर अच्छी किनकी भी भिजे तो उसमें रातिब बन्दी के दूकानदार परम (बार्गक किनकी) मिला कर



## हैदराबाद में रातिब बन्दी (राशनिंग)

(भाई सैयद ख्वाजा, हैदराबाद दक्खिन)

हकूमत ने राशन इस लिये बांधा कि लोगों को वक़्त पर मसनी चीजें मिलें। उसके साथ ही नाज चाँगरा के खरीदने बेचने के लिये इत्तहादी (कोऑपरेटिव) कारपोरेशन को कुल अधिकार दे दिये और हजारों रुपए माहवार तनज़ाह का रातिब बन्दी का अमला मुक़रर किया गया। चोर बाज़ारी की रोक थाम के लिये बाज़ावता नौकर रखे गए और रातिब बन्दी की दुकानों की देख रेख के लिये कई इन्स्पेक्टर मुक़रर किये गए। नाज जमा करने और रखने के लिये लाखों रुपए के ख़रचे से बीसों गोदाम बनाए गए जहाँ से नाज रातिब बन्दी की दुकानों को पहुँचाने के लिये कई लारियों और जानवरों, मुंशियों और इन्स्पेक्टरों का नियोजन हुआ और हर साल हजारों रुपयों का नया बारदाना खरीद कर रातिब बन्दी के दुकानदारों को मुफ्त दिया जाने लगा। हैदराबाद की छैं सात लाख आबादी के लिये सिर्फ़ चार पांच सौ रातिब बन्दी की दुकानें कायम की गई और हर दुकान पीछे दो हजार रातिब काट देना तय पाया। इन दो हजार आदमियों के लिये गेहूँ, च.वल मोटे हों या बारीक, ज़ार पीली हो या सफ़ेद, यहाँ तक कि बाज़रा और रागी बग़ैरा नाज पहले तो रोज़ाना हर बालिग़ आदमी के लिये सात छटांक मिला, अब छैं छटांक मिलता है और बच्चों को बारह साल की उमर तक इसका आधा रातिब दिया जाने लगा। इसी में बड़े लोग छोटे लोग

## हैदराबाद में रातिब बन्दी (राशनिंग)

(बھائی سید خواجہ، حیدرآباد دکن)

حکومت نے راشن اس لئے باندھا کہ لوگوں کو وقت پر سستی چیزیں ملیں۔ اُس کے ساتھ ہی ناچ وغیرہ کے خریدنے بیچنے کے لئے اتحادی (کوآپریٹو) کارپوریشن کو کل ادھیکار دے دئے اور ہزاروں روپے ماہوار تنخواہ کا راتب باندی کا عملہ مقبر کیا گیا۔ چور بازار کی روک نیام کے لئے پانصابطہ ہوکر رکھے گئے اور راتب باندی کی دوکانوں کی دیکھ دیکھ کے لئے کئی اسپیکٹر مقرر کئے گئے۔ ناچ جمع کرنے اور رکھنے کے لئے لاکھوں روپے کے خرچے سے بیسوں گودام بنائے گئے جہاں سے ناچ راتب باندی کی دوکانوں کو پہنچانے کے لئے کئی لاریوں اور چانوروں، مٹھوں اور انسپیکٹروں کا نیوجن ہوا اور ہر سال ہزاروں روپوں کا نیا بار دانہ خرید کر راتب باندی کے دوکانداروں کو مفت دیا جانے لگا۔ حیدرآباد کی چھ سات لاکھ آبادی کے لئے صرف چار بالیج سو راتب باندی کی دوکانوں قائم کی گئیں اور ہر دوکان بیچھے دو ہزار راتب کاڑے فیضا طے پایا۔ ان دو ہزار آدمیوں کے لئے گھیسوں، چاول موٹے ہوں یا باریک، چوار پھلی ہو یا سفید، یہاں تک کہ ہاجرہ اور رائی وغیرہ ناچ پہلے تو روزانہ ہر بالغ آدمی کے لئے سات چھٹانک ملا، اب چھ چھٹانک ملتا ہے اور بچوں کو بارہ سال کی عمر تک اس کا آدھا



वह बात कितनी साफ दिखाई पड़ती है कि साग भारत एक डोरी में और एक कलचर में बंधने के लिये कितनी कोशिश में है. यह भी साफ मलकता है कि यह कलचर किसी बंद तालाब की तरह सड़ने वाली कलचर नहीं है बल्कि यह कलचर बढ़ती हुई और निखरती हुई कलचर है. इसकी अनेक राग रागिनियों में अलग अलग राज और अलग अलग धर्म, करनाटक और बंगाल. पंजाब और उत्तरप्रदेश, हिन्दू और ईसाई, मुसलमान और पारसी जो सुरीला संगीत पैदा करते हैं वही हिन्दुस्तानी कलचर है.

“आज हवा बिगड़ी हुई है. एक दूसरे पर इलजाम लगाए जाते हैं. ऐसी हालत में यह सोचना कि हम गलती कर ही नहीं सकते. मूर्खता होगी. हम ऐसा दावा कर सकें, वह खुशकिस्मती आज कहाँ ? अगर मेहनत करके हम भगड़े को फैलने से रोक सकें, और फिर उसे जड़ बुनियाद से उखाड़ फेंकें तो बहुत है. अगर अपने देश देखने और सुनने के लिये, अपनी आँखें और कान खोलें रहें तभी हम ऐसा कर सकेंगे. कुदुरत ने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ अपने से नहीं देख सकते. उसे तो हमारे ही देख सकते हैं. इसलिये अकलमन्दी यही है कि जो दूसरे देख सकते हैं उससे हम कायदा उठावें”

—महात्मा गांधी

ये बात क्लिया साफ दिखती पड़ती है कि सारा भारत एक दूरी में और एक क्लिया में बँधने के लिये क्लिया क्लिया में है. ये भी साफ दिखता है कि ये क्लिया क्लिया बँधने की तरह सड़ने वाली क्लिया नहीं है बल्कि ये क्लिया क्लिया बँधने वाली क्लिया है. इस की अनेक राग रागिनियों में अलग अलग राज और अलग अलग धर्म, कर्नाटक और बंगाल, पंजाब और उत्तर प्रदेश, हिन्दू और ईसाई, मुसलमान और पारसी जो सुरीला संगीत पैदा करते हैं वही हिन्दुस्तानी कलचर है.

“आज हवा बिगड़ी हुई है. एक दूसरे पर इलजाम लगाए जाते हैं. ऐसी हालत में यह सोचना कि हम गलती कर ही नहीं सकते. मूर्खता होगी. हम ऐसा दावा कर सकें, वह खुशकिस्मती आज कहाँ ? अगर मेहनत करके हम भगड़े को फैलने से रोक सकें, और फिर उसे जड़ बुनियाद से उखाड़ फेंकें तो बहुत है. अगर अपने देश देखने और सुनने के लिये, अपनी आँखें और कान खोलें रहें तभी हम ऐसा कर सकेंगे. कुदुरत ने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ अपने से नहीं देख सकते. उसे तो हमारे ही देख सकते हैं. इसलिये अकलमन्दी यही है कि जो दूसरे देख सकते हैं उससे हम कायदा उठावें”

—महात्मा गांधी



“इस तरह की उदारता अब हमें सिर्फ देस भर के लिये ही नहीं, सारी दुनिया तक ले जानी होगी। सारे मानव समाज को एक मूत्र में पिरोना होगा तभी आज की बुराइयों से हम छुटकारा पा सकेंगे। इसके लिये तंग भावनाएं भस्म करनी होंगी।”

दक्खिन भारत में हिन्दी प्रचार एक बहुत बड़ी देस सेवा का काम है। उनके लिये हिन्दुस्तानी ही हिन्दी है और हिन्दी ही हिन्दुस्तानी। दक्खिन भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा मद्रास ने इस मामले में तारीफ के क्राबिल काम किया है। यह सभा मलयालम, तामिल, तेलगू और कन्नड़, चार भाशाओं के सूत्रों में हिन्दी सिखाने का काम करती है। इसके प्रधान मंत्रा श्री सत्यनारायन जी पालियामेंट के मेम्बर भी हैं।

केरल हिन्दी विद्यार्थी रेली में बम्बई के बड़े बज्जोर श्री बी. जी. खेर ने बोलते हुए कहा:—

“हमारे विधान में जिस हिन्दी को बात कही गई है वह उत्तरप्रदेश के नये पंडितों की हिन्दी नहीं होगी। वह तो हम तैयार करेंगे। जैसे गंगा का प्रवाह छोटे छोटे कई प्रवाहों का संगम है उसी तरह हमारी हिन्दी देस की सारी भाशाओं की गंगा बनेगी। चौदह भाशाएं अपने अपने भंडार से हिन्दी को मालामाल करेंगी। तब हिन्दी का जो सरूप और शैली निखरेगी उसी में सारे देस के रहने वालों के इरादे, उनकी सम्मोहे, हर्ष और प्रगति झलकेंगी।”

दक्खिन भारत में हिन्दी प्रचारकों और हिन्दी विद्यार्थियों की जो गिनती बढ़ती जा रही है और उनमें जो जोश पाया जाता है उससे

“इस طرح کی اُڑانا اب ہمیں صرف دیس بھر کے لئے ہی نہیں، ساری دنیا تک لے جانی چوٹی۔ سارے مائرِ سماج کو ایک سوٹر میں پرونا چوگا تہی آج کی برائیوں سے ہم چھٹکارا پاسکوں گے۔ اسکے لئے تذک پوڑائیں ہمیں کرنی چوئگی۔”

دکھن بھارت میں ہندی پرچار ایک بہت بڑی دیس سیوا کا کام ہے۔ اُن کے لئے ہندوستانی تنی ہندی ہے اور ہندی ہی ہندوستانی۔ دکھن بھارت ہندوستانی پرچار سبھا مدراس نے اس معاملے میں تعریف کے قابل کام کیا ہے۔ یہ سبھا ’ملیا‘ نامی تیلگو اور کڈو‘ چار بھاشاؤں کے صورتوں میں ہندی سکھائے کا کام کرتی ہے اسکے پردھان منتری شری ستیہ رائز جی نارائملست کے مسبر بھی ہیں۔

کھول ہندی و دیارینی دینی میں ہمیں کے بڑے وزیر شری بی. جی. کیدر نے بولتے ہوئے کہا:—

”ہمارے دھان میں جس ہندی کی بات کہی گئی ہے وہ اُتر پردیش کے نئے پندتوں کی ہندی نہیں ہوئی۔ وہ تو ہم تیار کرینگے۔ جہسے کڈا کا پروا، چوتے کڈی دیوتوں کا سنگم ہے اُسی طرح ہمارا ہندی دیس کی ساری بھاشاؤں کی گڈا بنے گی۔ چودہ بھاشاؤں اپنے اپنے ہندتار سے ہندی کو مالا مال کرینگے تب ہندی کا جو سرورپ ’زر شیلی سکھوے گئی اُسی میں سارے دیس کے رنگے والوں کے ارادے اُن کی میدیں، برہس اور بگتی

چھلکیں گی۔“

دکھن بھارت میں ہندی پرچار اُن اور ہندی و دیارینیوں کی جو گڈی بڑھتی جا رہی ہے اور اُن میں جو جوش پایا جاتا ہے اس سے



मया हिन्द इज्ञाहाद् से कन्याकुमारी मार्च सन् १९१

जड़ प्रकृति की सुन्दरता तो देखी हो, साथ ही समाज और संस्कृति के सबालों पर इस सफर में जो रोशनी पड़ी वह कहीं ज्यादा अहम है.

केरल प्रान्त के हिन्दी प्रचारकों के बीच जब पंडित मुन्दरलाल जी भाषान दे रहे थे तो ऐसा लग रहा था मानों हिन्दुस्तान की कलचरी एकना मूरतमान होकर रंग बिरंगे सुन्दर और सुगंधित अलग अलग समाज फूलों को एक डोर में पिरोना चाहती है. उन्होंने हिन्दी प्रचारकों से कहा कि वह हिन्दी के ज़रिये हिन्दुस्तान की सबसे अच्छी सेवा तभी कर सकेंगे जब वह हिन्दी चन्दन की तरह बिसकर लगाई जायगी वरना अगर इसे दियासलाई दिवाकर दूसरे के माथे पर लगाने की कोशिश की गई तो आग बन कर जला देगी. उन्होंने बताया कि हिन्दी हिन्दुस्तान की मिली जुली कलचर की निशानी है और इसलिये भी यह ज़रूरी है कि इस हिन्दी के अन्दर सब प्रान्तों की भाषाओं के अच्छे अच्छे मुहावरें और शब्द अपना लिये जायें.

रहन सहन और रीत रिवाज पर बोलते हुए पंडित जी ने कहा :—

“इन मामलों में हमें बहुत उदार होना चाहिये. न हम में से कोई आज रामचंद्र जी की पोशाक पहनता है और न हमारी बहनें वह पोशाक पहनती हैं जो सीता माई पहनती थीं. हवा पानी और सुविधा के मुताबिक पोशाक और खानपान होता है. दक्खिन में हमें खुशी से आपके डोसे, इडली और रसम खाने चाहियें और आपको उत्तर के गुलाब जामुन और कलाकन्द खाकर खुशी होनी चाहिये.

नया हल्द आबाद से कनिया कसारी मार्च सन ०१

जड़ प्रकृति की सुन्दरता तो देखी ही, साथ ही सजाव और संस्कृति के सबालों पर इस सफर में जो रोशनी पड़ी, वह कहीं ज्यादा अहम है.

केरल प्रान्त के हिन्दी प्रचारकों ने बिज जब पंडित सुन्दरलाल जी भाषान दे रहे थे तो ऐसा लग रहा था मानों हिन्दुस्तान की कलचरी एकना मूरतमान हो कर रंग बिरंगे सुन्दर और सुगंधित अलग अलग समाज फूलों को एक डोर में पिरोना चाहती है. उन्होंने हिन्दी प्रचारकों से कहा कि वह हिन्दी के ज़रिये हिन्दुस्तान की सबसे अच्छी सेवा तभी कर सकेंगे जब वह हिन्दी चन्दन की तरह बिसकर लगाई जायगी वरना अगर इसे दियासलाई दिवा कर दूसरे के माथे पर लगाने की कोशिश की गई तो आग बन कर जला देगी. उन्होंने बताया कि हिन्दी हिन्दुस्तान की मिली जुली कलचर की निशानी है और इसलिये भी यह ज़रूरी है कि इस हिन्दी के अन्दर सब प्रान्तों की भाषाओं के अच्छे अच्छे मुहावरें और शब्द अपना लिये जायें.

रहन सहन और रीत रिवाज पर बोलते हुए पंडित जी ने कहा :—

“इन मामलों में हमें बहुत उदार होना चाहिये. न हम में से कोई आज रामचंद्र जी की पोशाक पहनता है और न हमारी बहनें वह पोशाक पहनती हैं जो सीता माई पहनती थीं. हवा पानी और सुविधा के मुताबिक पोशाक और खानपान होता है. दक्खिन में हमें खुशी से आपके डोसे, इडली और रसम खाने चाहियें और आपको उत्तर के गुलाब जामुन और कलाकन्द खाकर खुशी होनी चाहिये.



इजाजत नहीं है। यह बात खटकने वाली और अन्याय ही नहीं फूट की आग भी भड़काने वाली है। जो हिन्दू अन्दर जाते हैं उन्हें भी सब कपड़े उतार कर भिक्कू धोना या लुंगा, जो ब्राह्मण सिली हो, पहन कर जाना पड़ता है जिस समय हम मन्दिर से बाहर निकले तो दो आंगरेज महिलाओं को खड़े देखा, उन्होंने अन्दर देखने की इच्छा जाहिर की और हम से पूछा कि क्या वह अन्दर जा सकती हैं, हमने उनसे कहा कि शायद उन्हें साड़ी पहन कर अन्दर जाना होगा, लेकिन इतने में ही वहीं के रहने वाले किर्मी आदमी ने कहा कि इस मन्दिर में सिर्फ हिन्दू ही जा सकते हैं जिन पर उन महिलाओं ने मुकाबला करते हुए कहा कि हम अपने गिरजा में किर्मी को जानने में नहीं रोकते, उनके चेहरों से लगा कि उन्हें यह बात अच्छा न लगी।

कन्या कुमारी पर सूरज का निकलना और हूबना दोनों राजवंश के सुहावने होते हैं। समन्दर के अन्दर मूर्ज ज्यों का त्यों दिखाई देता है और साथ ही जो किरनें गंगाना छिटकती हैं उनका पैसा अच्छा अक्स पानी में दिखाई देता है मानो एक दूसरी दुनिया में भी हम सूरज को निकलते देख रहे हैं, कलाकार का बुरा या कवि की बातों ही उस सुन्दरता को पकड़ सकती हैं मामूली आदमी मंत्रमुग्ध होकर रह जाता है और प्रकृति को बरबस सराहना कर बैठता है, पानी की बड़ी बड़ी लहरें जब पत्थर से टकराकर फेंक निकालती हैं तो दिल का भीतर से भीतर का भाव हिल उठता है और मालूम होता है वहाँ भी कोई हिलोरें ले रहा है।

मन्दिर के अलावा वहाँ एक मंडप और नहाने की जगह भी बनी हुई है, सामने एक तैरने का हाँच भी है।

अज्ञात नहीं है, ये बात अचकित करने वाली और अचानक ही नभ को लगी एक भी बूढ़ा लाली है, जो हठ और अदर जाते हैं, उनमें से भी सब कपड़े उतार कर सिर्फ देवो या लडकी, जो बगैर सलीबो के पहनकर जाना पड़ता है, जिस से हम मन्दिर से बाहर निकले तो दो आंगरेज महिलाओं को खड़े देखा, उन्होंने अन्दर देखने की इच्छा जाहिर की और हम से पूछा कि क्या वह अन्दर जा सकती हैं, हमने उनसे कहा कि शायद उन्हें साड़ी पहनकर अन्दर जाना पड़ता है, लेकिन मैंने मन्त्रों के रसिने वाले किसी आदमी ने कहा कि इस मन्दिर में सिर्फ मन्दिर जा सकते हैं जिन पर उन महिलाओं ने मुकाबला करते हुए कहा कि हम अपने गिरजा में किर्मी को जानने में नहीं रोकते, उनके चेहरों से लगा कि उन्हें यह बात अच्छी न लगी।

कन्या कुमारी पर सूरज का निकलना और हूबना दोनों राजवंश के सुहावने होते हैं। समन्दर के अन्दर मूर्ज ज्यों का त्यों दिखाई देता है और साथ ही जो किरनें गंगाना छिटकती हैं उनका पैसा अच्छा अक्स पानी में दिखाई देता है मानो एक दूसरी दुनिया में भी हम सूरज को निकलते देख रहे हैं, कलाकार का बुरा या कवि की बातों ही उस सुन्दरता को पकड़ सकती हैं मामूली आदमी मंत्रमुग्ध होकर रह जाता है और प्रकृति को बरबस सराहना कर बैठता है, पानी की बड़ी बड़ी लहरें जब पत्थर से टकराकर फेंक निकालती हैं तो दिल का भीतर से भीतर का भाव हिल उठता है और मालूम होता है वहाँ भी कौन सी हलचलें ले रहा है।

मन्दिर के अलावा वहाँ एक मन्दप और नहाने की जगह भी बनी हुई है, सामने एक तैरने का हाँच भी है।



मछलीघर और समन्दर का किनारा है. ममाज विद्या, जन्तु विद्या और प्राण विद्या पर खोज करने वालों के लिये इन जगहों पर अच्छा मसाला है. श्री रवि वर्मा की चित्रशाला में चित्रकला के बहुत अच्छे नमूनों का संग्रह किया गया है. इस संग्रह में अपने देम की आजकल की चित्रकारी के अलावा पुरानों चित्रकला के नमूनों में राजपूत और मुगल चित्रकारी के बड़े अच्छे नमूने हैं. हमारे देमों के संग्रह में जावा, चीन, जापान और निम्नवर्ती चित्रकारी के अच्छे नमूने हैं. यहीं पर औरंगजेब के हाथ का लिख 'रुगन और फंजी के हाथ का लिखा मुन्दर तमशीरी वाला मशारन का 'फारस' तरजुमा देखने को मिला.

त्रिवेन्द्रम से करीब साठ मील की दूरी पर कुमारी आंतरीग है जहां हिन्दुस्तान के छह दक्खिन की जमीन को तीन ओर से तीन सागर छूते हैं. पूरब से बंगाल की खाड़ी, पच्छिम में अरब सागर और बीच में हिन्दू महासागर भारत के चरन हमेशा धोते रहते हैं. त्रिवेन्द्रम में कन्या कुमारी तक का गमना बहुत मुश्किल और रमणीक है. इसी रान्त में एक क्रमशः नागर कोटल पड़ता है. यहां पर हमें इस मौसम में भी बड़े मीठे. ताजा और रसिले आम खाने को मिले जब कि उत्तर भारत में अभी आम के पेड़ों पर और तक नहीं आया इस रास्ते की शोभा देखकर बंग वान बढ़ाए यह कहा जा सकता है कि क्रूरत की सुन्दर से सुन्दर छटा अपने देम में पाई जाती है.

कन्या कुमारी का एक मन्दिर है. कहा जाता है कि यह कुमारी शिवजी से विवाह करने के लिये प्रलय का इंतजार कर रही हैं. इस मन्दिर में और उमके पास रामकुमारी पर और हिन्दुओं को जाने की

मछली कुंठ और समन्दर का किनारा है. सजावट, जलवायु, और प्राण विद्या पर खोज करने वाले के लिये इन जगहों पर अच्छा मसाला है. श्री रवि वर्मा की चित्रशाला में चित्रकला के बहुत अच्छे नमूनों का संग्रह किया गया है. इस संग्रह में अपने देम की आजकल की चित्रकारी के अलावा पुरानों चित्रकला के नमूनों में राजपूत और मुगल चित्रकारी के बड़े अच्छे नमूने हैं. हमारे देमों के संग्रह में जावा, चीन, जापान और निम्नवर्ती चित्रकारी के अच्छे नमूने हैं. यहीं पर औरंगजेब के हाथ का लिख 'रुगन और फंजी के हाथ का लिखा मुन्दर तमशीरी वाला मशारन का 'फारस' तरजुमा देखने को मिला.

( १२३ )

त्रिवेन्द्रम से करीब साठ मील की दूरी पर कुमारी आंतरीग है जहां हिन्दुस्तान के छह दक्खिन की जमीन को तीन ओर से तीन सागर छूते हैं. पूरब से बंगाल की खाड़ी, पच्छिम में अरब सागर और बीच में हिन्दू महासागर भारत के चरन हमेशा धोते रहते हैं. त्रिवेन्द्रम में कन्या कुमारी तक का गमना बहुत मुश्किल और रमणीक है. इसी रास्ते में एक क्रमशः नागर कोटल पड़ता है. यहां पर हमें इस मौसम में भी बड़े मीठे. ताजा और रसिले आम खाने को मिले जब कि उत्तर भारत में अभी आम के पेड़ों पर और तक नहीं आया इस रास्ते की शोभा देखकर बंग वान बढ़ाए यह कहा जा सकता है कि क्रूरत की सुन्दर से सुन्दर छटा अपने देम में पाई जाती है.

कन्या कुमारी का एक मन्दिर है. कहा जाता है कि यह कुमारी शिवजी से विवाह करने के लिये प्रलय का इंतजार कर रही हैं. इस मन्दिर में और उमके पास रामकुमारी पर और हिन्दुओं को जाने की



हवा पानी के इलाक़े नक़्शे में देखे थे. इस सफ़र में इलाहाबाद से गरम कपड़े पहन कर चले और दूसरे रोज़ शाम को नागपुर पार करने के बाद बिजली का पंखा खोलना पड़ा.

नागपुर से मद्रास और मद्रास से धुर ब्रिक्खन ट्रावनकोर राज की ओर जब हम जा रहे थे तो एक अनोखा आनंद महसूस हो रहा था. मालूम हो रहा था मानो हम भारतमाता के मन्दिर की परिक्रमा को निकल पड़े हैं जिसके बरदान से इस देस का कलचरी एकता से अपने दिल और दिमाग को सुगन्धित कर सकेंगे.

पच्छिमी घाट के किनारे किनारे जब हमारी रेल त्रिवेन्द्रम की ओर बढ़ रही थी तो क़दुरत के जितने सुन्दर सीन सामने आए वह शब्दों में बयान नहीं किये जा सकते. नारियल, केला, सुपारी और रबड़ के पेड़ों से लदी हुई हरी भरी पहाड़ियाँ और उसी में कहीं कहीं पानी के भरने एक अनोखी छटा पैदा करते थे.

भारत जनवरी को हम त्रिवेन्द्रम पहुँचे. त्रिवेन्द्रम 'ट्रावनकोर-कोचीन' रियासत की राजधानी है. यहां का बोली मलयालम है. और यहां का राजघराना आजतक मां के बंस पर चलता आ रहा है. बेटे की जगह गद्दी हमेशा भानवे का मिलनी है. पढ़े लिखे की तादाद इस रियासत में हिन्दुस्तान के और सब हिस्सों से ज्यादा है. यहाँ की अरसी फ़ीसदी जनता शिचित बताई जाती है. इनकी भाशा में निकलने वाले दैनिक पत्रों की तादाद २८ और माहवार व हफ्तेवारों की ४० है. आबादी में चोलीस फ़ीसदी ईसाई है.

त्रिवेन्द्रम में खास खास देखने लायक जगहों में अजायबघर, चिड़ियाघर, रवि वर्मा की चित्रशाला, पच्छिमी दंग का जंतर मंतर,

हवापानी के علاق़े नक्शे में दिखे थे. इस सफ़र में अल्ले आबाद से गरम कपड़े पहन कर चले और दूसरे रोज़ शाम को नागपुर पार करने के बाद बिजली का पंखा खोलना पड़ा.

नागपुर से मद्रास और मद्रास से मद्रास दक्कन त्रावनकोर राज की ओर जब हम जा रहे थे तो एक अनोखा आनंद महसूस हो रहा था. मालूम हो रहा था मानो हम भारतमाता के मन्दिर की परिक्रमा को निकल पड़े हैं जिसके बरदान से इस देस की कलचरी एकता से अपने दिल और दिमाग को सुगन्धित कर सकेंगे.

पच्छिमी घाट के किनारे किनारे जब हमारी रेल त्रिवेन्द्रम की ओर बढ़ रही थी तो क़दुरत के जितने सुन्दर सीन सामने आये वे शब्दों में बयान नहीं किये जा सकते. नारियल, केला, सुपारी और रबड़ के पेड़ों से लदी हुई हरी भरी पहाड़ियाँ और उसी में कहीं कहीं पानी के ज़ेरने एक अनोखी छिटा पैदा करते थे.

द्वारा जल्दरी को हम त्रिवेन्द्रम पहुँचे. त्रिवेन्द्रम त्रावनकोर-कोचीन' रियासत की राजधानी है. यहां की बोली मलयालम है और यहां का राज कुंआना आज तक मां के बंस पर चलता आ रहा है. बेटे की जगह क़दी हमेशा बिनाजे को मिलनी है. पढ़े लिखे की तदाद इस रियासत में हिन्दुस्तान के और सब हिस्सों से ज्यादा है. यहां की असी फ़ीसदी जनता शक़्त बतली जाती है. इन की बिनामा में निकलने वाले दिल्क पत्रों की तदाद २८ और माहवार व हफ्ते वारों की ४० है. आबादी में ४० फ़ीसदी ईसाई हैं.

त्रिवेन्द्रम में खास खास दिखने लायक जगहों में अजायब-घर, चिड़ियाघर, रवी वर्मा की चित्रशाला, पच्छिमी दंग का जंतर मंतर,



## इलाहाबाद से कन्याकुमारी

(भाई श्रोम प्रकाश पालीवाल)

एक बार किसी गांव में श्री जवाहरलाल नेहरू भाशन देने गए. वहां के किमानों ने भारतमाता की जय के नारे लगाए. नेहरू जी ने उनसे पूछा कि आप लोग भारतमाता से क्या समझते हैं? सभा में सभाटा छा गया. सीधे सादे देहाती कोई जबाब न दे सके. जवाहर लाल जी ने समझाया कि भारतमाता का असली रूप समझने के लिये हमें इस देस के फैलाव को ध्यान में लाना होगा. पर हिमालय से कन्याकुमारी तक फैले हुए इस देस की जमीन, पहाड़, नदी, नाले सब मिल कर भी 'भारतमाता' नहीं बनते. अलग अलग पैदावार, हवा पानी, रहन सहन और बोलियों की अनेकता लिये हुए इस देस के रहने वालों को भी ध्यान में रखना होगा. तब हम भारतमाता का असली रूप समझ सकेंगे. इस तरह आप लोग खुद भी भारतमाता के अंग हैं. और भारतमाता की जय बोलते हुए अपनी भी जय बोलते हैं.

भारतमाता के इस रूप को जो तरीक़ा मैंने अपनी आंख से इस अनवरी महीने में देखी वह मेरे दिमाग में उ्यों की त्यों खिंच गई है. कागख के नक्शे पर बीसियों बार हिन्दुस्तान देखा था. पर इलाहाबाद से त्रिवेन्द्रम और कन्याकुमारी तक का सफ़र करके जो समझ में आया. पहले कभी नहीं आया था. हिन्दुस्तान में एक ही समय अलग अलग

## अल्लाह आबाद से कन्याकुमारी

(पैमाती रम प्रोडक्स पालीवाल)

एक बार किसी गाँव में शरी जवाहर लाल नेहरु पैमाशन दिखे क्ते. वहाँ के कस्तानों ने पैमात माता की जे के नुकरे लक़्ते. नेहरुजी ने अँ से प्रोजेहा के आप लुक पैमात माता से क्हा सजेहेते हूँ? सैमा माँ सलारा जेहा क्हा. सैदे सारे दिमाती कुरी ज़ाब न्ने दे सके. ज़ावर लाल जी ने सजेहया के पैमात माता का अलली रूँ सजेहेते के लैते हूँ अँ देस के पैमात को देहान में लाता हूँ. प्र हसाले से लक़्हासारी नक पैहेले हूँ अँ देस की ज़मीन 'पैमा' नदी, नाले सँ सँ मलर पै पैमात माता' नैहँ बड़ाते. अँक अँक पैदावार, हवा पानी, रहन सहन और प्रोडक्स की अँकैमा लैते हूँ अँ नैस के रहते वालों को पैमा देहान में रक़्ना हूँ. तब हम पैमात माता का अलली रूँ सजेहे सकेंगे. अँस तरह आप लुक खूँ पैमात माता के अँक हूँ और पैमात माता की जे बोलते हूँ अँली पैमा जे बोलते हूँ.

पैमात माता के अँस रूँ की ज़ाब नैसों में अँली अँक से अँस जलूरी पैहेले में दिखी वे पैमा देमाँ में ज़ाब की तैहों कहेलै क्ती है. कल्ल के नक्शे प्र पैमासों बार हँदसलान दिखेहा तै. प्र अँ आबाद से त्रिवेन्द्रम और कन्याकुमारी तक का सफ़र के ज़ाब सजेहे में आँ पैहेले क्ही न्ने आँ तै. हँदसलान में अँक लै ही सँ अँक अँक



नया हिन्दू रुस पर एक सरसरी नजर भाव सन् १९१

कर्त्तव्य है। रुसी सरकार ने लडाई के बाद इस मुहिम को तेज कर दिया। चार साल में चार हजार चार सौ तेहत्तर वर्ग मील रकबे में घर बनाए गए। देहातों में भी २३ लाख नए मकान खड़े किये गए।

खाना, कपड़ा और रहने का मकान यह तीन ही जनता की सब से बड़ी जरूरतें हैं और इन तीनों के पूरा करने में रुस इस समय संसार के देशों में सब से बड़ा चढ़ा है।

रुस पर बिब मुसोरी नजर मार्च सन् १९१

क़रीब है। रुसी सरदार ने अपनी के बाद इस मुहिम को तेज कर दिया। चार साल में चार हजार चार सौ तेहत्तर वर्ग मील रकबे में घर बनाए गए। देहातों में भी २३ लाख नए मकान खड़े किये गए।

कहाना, क़रीब और रहने का मकान यह तीन ही जनता की सब से बड़ी जरूरतें हैं और इन तीनों के पूरा करने में रुस इस समय संसार के देशों में सब से बड़ा चढ़ा है।

## ‘नया हिन्दू’ की छमाही वैधी हुई वीढ़िया जिल्दे

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की।

क़ीमत हर जिल्दे की सिकर इस रुपया।

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दे खरीदने पर डाक खर्च साफ़।

—मैनेजर ‘नया हिन्दू’

१४५, मुट्ठीगंज,  
इलाहाबाद।

## ‘नया हिन्दू’ की चव्वाहती बन्दहती हतोत्ती बरेहिया जिलास

जुलाई सन १९५१ से दिसम्बर सन १९५० तक की।

क़ीमत हर जिल्दे की सिकर इस रुपया।

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दे खरीदने पर डाक खर्च साफ़।

—मैनेजर ‘नया हिन्दू’

१४५, मुट्ठीगंज,  
इलाहाबाद।



इस तरह का काम जनता के सहयोग ही से किया जा सकता है। “कलचरी सेना” में न सिर्फ़ टीचर आए बल्कि क्लर्क और दूसरे पढ़े लिखे भी कमर बांधकर देस सेवा के इस मैदान में कूद पड़े। विद्यार्थियों ने अपनी तालीम से दूसरे भाइयों को फायदा पहुँचाया। नौजवान कम्यूनिस्ट लीग ने हजारों मंत्रियों को इस मोरचे पर लगा दिया। नतीजा यह हुआ कि रूस में अब सात साल की ग्राइमरी तालीम तो जरूरी है ही लेकिन सरकार जल्द ही सिकेंडरी स्कूल की तालीम को भी सब के लिये जरूरी और मुफ्त करने वाली है।

कला में भी रूस ने अपनी अलग जगह बना ली है। अन्तराष्ट्रीय सिनेमा सम्मेलनों में रूस को, अब तक उँचा स्थान मिलना रहा है। रूसी साहित्य का महत्त्व दुनिया मान चुकी है। इमारत कला में भी रूस आगे बढ़ा है। इस मैदान में उनका सिद्धान्त है— जनता के हित की चीजें इस तरह बनाता जिस से जनता कला की सराहना कर के मुन्दरता की तरफ बढ़ सके। रूस के मामले सिर्फ़ देस को सजाने ही का प्रोग्राम नहीं है बल्कि लोगों को आराम देने वाले मकान भी मुहैया करना है। लेकिन साथ ही साथ मुन्दरता भी बढ़ानी है। रूस को खमीन के नाँचे नीचे संगमरमर के मंशनों से सजाया गया है। किमो मंशन पर देस के बहादुर मैनिकों की मूर्तियाँ और उनके चित्र हैं और कोई मंशन पुराने रूसी कवियों का दर्शन कराता है। गरब हर मैदान के देस सेवकों को इस तरह अमर कर दिया गया है। वहाँ पौराणिक कथाओं से इमारतों का सजाने का जगह अब खिन्दा देवताओं का जीवन संगमरमर पर अंकित किया गया है। लोगों को रहने के लिये घर मुहैया करना भी सरकार का

अस तरह का काम जनता के सहयोग ही से किया जा सकता है। “कलचरी सेना” में न सिर्फ़ टीचर आए बल्कि क्लर्क और दूसरे पढ़े लिखे भी कमर बांधकर देस सेवा के इस मैदान में कूद पड़े। विद्यार्थियों ने अपनी तालीम से दूसरे भाइयों को फायदा पहुँचाया। नौजवान कम्यूनिस्ट लीग ने हजारों मंत्रियों को इस मोरचे पर लगा दिया। नतीजा यह हुआ कि रूस में अब सात साल की ग्राइमरी तालीम तो जरूरी है ही लेकिन सरकारी स्कूल की तालीम को भी सब के लिये जरूरी और मुफ्त करने वाली है।

कला में भी रूस ने अपनी अलग जगह बना ली है। अन्तराष्ट्रीय सिनेमा सम्मेलनों में रूस को, अब तक उँचा स्थान मिल रहा है। इमारत कला में भी रूस आगे बढ़ा है। इस मैदान में उनका सिद्धान्त है— जनता के हित की चीजें इस तरह बनाता जिस से जनता कला की सराहना कर के मुन्दरता की तरफ बढ़ सके। रूस के मामले सिर्फ़ देस को सजाने ही का प्रोग्राम नहीं है बल्कि लोगों को आराम देने वाले मकान भी मुहैया करना है। लेकिन साथ ही साथ मुन्दरता भी बढ़ानी है। रूस को खमीन के नाँचे नीचे संगमरमर के मंशनों से सजाया गया है। किमो मंशन पर देस के बहादुर मैनिकों की मूर्तियाँ और उनके चित्र हैं और कोई मंशन पुराने रूसी कवियों का दर्शन कराता है। गरब हर मैदान के देस सेवकों को इस तरह अमर कर दिया गया है। वहाँ पौराणिक कथाओं से इमारतों का सजाने का जगह अब खिन्दा देवताओं का जीवन संगमरमर पर अंकित किया गया है। लोगों को रहने के लिये घर मुहैया करना भी सरकार का



हर आदमी पढ़ा लिखा है. हिन्दु बालों के लिये यह जानना जरूरी है कि रुस अपने देस से जाहिलियत को खतम कैसे कर सका ? अक्टूबर १८१७ का इनकलाब खतम होते ही जाहिलियत को खतम करने के लिये एक खास कमीशन मुक़रर कर दिया गया और उसकी देख रेख में यह जंग लड़ी गई. "कलचरी सेना" के सिपाही तालीम का हथियार लेकर जाहिलियत से लड़ने चल दिये. इस "कलचरी सेना" की नेता लेनिन की धर्मपत्नी थीं. पढ़ाने लिखाने का मतलब सिर्फ़ इसखत करना सिखाना वह काफी नहीं समझते थे. उन्हें अपने अपना लक्ष्य तय किया—बालिग तालीम के सम्बन्ध के स्कूल पूरी प्राइमरी स्कूल की तालीम दें, पढ़ाई अपनी अपनी मां बोली में हो, विद्यार्थियों को हिसाब की तालीम दी जाय, उन्हें अस्त्रधार का उपयोग बताया जाय, इतिहास और भूगोल की शिक्षा दी जाय और रेडियो और दूसरे साधनों का इस्तेमाल सिखाया जाय. पढ़ने बालों को यह बताया जा रहा कि उन्होंने देस को अपने देस और दुनिया की समस्याओं का थोड़ा बहुत ज्ञान हो जाय. इसी लक्ष्य को सामने रख कर एक कैरिकुलम बनाया गया, इम्तहान लिये गए और विद्यार्थियों को सर्टीफ़िकेट दिये गए.

अनपढ़े और अधपढ़े सभी को एक साल की तालीम दी जाना तय हुआ. इस एक साल में उन्हें प्राइमरी स्कूल का चार साल का कोर्स खतम करना था. शहरों में स्कूली साल दस महीने का रखा गया और हर महीने में ११ दिन तीन घण्टे रोज़ तालीम दी जाती थी. देहातों में स्कूली साल ७ महीने का रखा गया और हर महीने में ११ दिन ४ घण्टे रोज़ तालीम देना तय हुआ.

हर आदमी पढ़ा लिखा है. हन्दु बालों के लिये यह जानना जरूरी है कि रुस अपने देस से जाहिलियत को खतम कैसे कर सका ? अक्टूबर १९१७ का इनकलाब खतम होते ही जाहिलियत को खतम करने के लिये एक खास कमीशन मुक़रर कर दिया गया और उसकी देख रेख में यह जंग लड़ी गई. "कलचरी सेना" के सिपाही तालीम का हथियार लेकर जाहिलियत से लड़ने चल दिये. इस "कलचरी सेना" की नेता लेनिन की धर्मपत्नी थीं. पढ़ाने लिखाने का मतलब सिर्फ़ इसखत करना सिखाना वह काफी नहीं समझते थे. उन्हें अपने अपना लक्ष्य तय किया—बालिग तालीम के सम्बन्ध के स्कूल पूरी प्राइमरी स्कूल की तालीम दें, पढ़ाई अपनी अपनी मां बोली में हो, विद्यार्थियों को हिसाब की तालीम दी जाय, उन्हें अस्त्रधार का उपयोग बताया जाय, इतिहास और भूगोल की शिक्षा दी जाय और रेडियो और दूसरे साधनों का इस्तेमाल सिखाया जाय. पढ़ने बालों को यह बताया जा रहा कि उन्होंने देस को अपने देस और दुनिया की समस्याओं का थोड़ा बहुत ज्ञान हो जाय. इसी लक्ष्य को सामने रख कर एक कैरिकुलम बनाया गया, इम्तहान लिये गए और विद्यार्थियों को सर्टीफ़िकेट दिये गए.

अनपढ़े और अधपढ़े सभी को एक साल की तालीम दी जाना तय हुआ. इस एक साल में उन्हें प्राइमरी स्कूल का चार साल का कोर्स खतम करना था. शहरों में स्कूली साल दस महीने का रखा गया और हर महीने में ११ दिन तीन घण्टे रोज़ तालीम दी जाती थी. देहातों में स्कूली साल ७ महीने का रखा गया और हर महीने में ११ दिन ४ घण्टे रोज़ तालीम देना तय हुआ.



دوس پر ایک سروسری نظر  
 ماراج سن ۱۵  
 میں ۱۰ کھرب ۱۰۰ ارب روپل کی بجٹ کر کے دوس سے "نوٹ  
 بڑھوتی" کا جملہ نکال دیا گیا۔  
 آمدنی کے ساتھ ساتھ کلچر کی باتوں کے سبب مل میں بھی  
 دوس کا بجٹ بڑھ گیا ہے۔ ۴۷ ارب روپل سے بڑھ کر یہ بجٹ سن  
 ۴۹ میں ایک کرب ۱۰۰ ارب روپل ہو گیا۔ یہ بجٹ نیچے لکھ  
 سبب مل میں خرچ ہوتا ہے۔

آمدنی اور دفتری کام کی باتوں پر ہمیں کی رقم کے طور پر خرچ  
 ہو رہے اور پبلک آدمیوں کو پبلک سروسز میں تعلیم اور اونچے تہذیبی  
 کاموں کے لئے مذمت ٹریڈنگ کا انتظام، کام کی باتوں کو تندرست رکھنے  
 کے لئے دل بہانے کا سامان مہیا کرنا اور ان کو تندرست سمجھنا چاہتی  
 ہیں، بچوں کی تندرستی کی دیکھ بھال اور پاک سسٹیمز  
 کا خرچ، جو عورتوں زیادہ بچے پیدا کرتی ہیں یا دوسروں کے  
 بچوں کو پالتی ہیں انہیں سالانہ کرائسٹ اور وڈیا ڈیویوں کو وظیفے  
 وغیرہ۔

سب سے بڑی بات جو مالی میدان میں دوس حاصل کر سکا ہے  
 یہ ہے کہ چلتا کے جیون نے مالی سہولت بالکل مت کیا۔ سویت  
 دوس میں اب کسی کو کل کی چلتا نہیں ہے۔ کسی کو یہ بھکاری  
 کا کہنا ہے اور نہ کوئی بھوکا مر سکتا ہے۔ اس لئے یہ خوش حال  
 ہو کر سارے دیس کے عام لوگوں کو اوپر اٹھاتے ہوئے کلچر اور کلا کے  
 میدان میں بھی خوب ترقی کر رہا ہے۔

تعلیم کے میدان میں بھی دوس نے تیز دور لگائی ہے۔ جس  
 جگہ تعلیم کی دشا ہندوستان سے کہیں زیادہ بڑی تھی وہاں اب

نیا ہینڈ  
 روس پر ایک سروسری نظر  
 مارچ سن ۲۱  
 ۱۰ ستمبر ۱۰ ارب روپل کی بجٹ کر کے روس سے "نوٹ  
 بڑھوتی" کا جملہ نکال دیا گیا۔

آمدنی کے ساتھ ساتھ کلچر کی باتوں کے سبب مل میں بھی  
 دوس کا بجٹ بڑھ گیا ہے۔ ۴۷ ارب روپل سے بڑھ کر یہ بجٹ سن  
 ۴۹ میں ایک کرب ۱۰۰ ارب روپل ہو گیا۔ یہ بجٹ نیچے لکھ  
 سبب مل میں خرچ ہوتا ہے۔

آمدنی اور دفتری کام کی باتوں پر ہمیں کی رقم کے طور پر خرچ  
 ہو رہے اور پبلک آدمیوں کو پبلک سروسز میں تعلیم اور اونچے تہذیبی  
 کاموں کے لئے مذمت ٹریڈنگ کا انتظام، کام کی باتوں کو تندرست رکھنے  
 کے لئے دل بہانے کا سامان مہیا کرنا اور ان کو تندرست سمجھنا چاہتی  
 ہیں، بچوں کی تندرستی کی دیکھ بھال اور پاک سسٹیمز  
 کا خرچ، جو عورتوں زیادہ بچے پیدا کرتی ہیں یا دوسروں کے  
 بچوں کو پالتی ہیں انہیں سالانہ کرائسٹ اور وڈیا ڈیویوں کو وظیفے  
 وغیرہ۔

سب سے بڑی بات جو مالی میدان میں دوس حاصل کر سکا ہے  
 یہ ہے کہ چلتا کے جیون نے مالی سہولت بالکل مت کیا۔ سویت  
 دوس میں اب کسی کو کل کی چلتا نہیں ہے۔ کسی کو یہ بھکاری  
 کا کہنا ہے اور نہ کوئی بھوکا مر سکتا ہے۔ اس لئے یہ خوش حال  
 ہو کر سارے دیس کے عام لوگوں کو اوپر اٹھاتے ہوئے کلچر اور کلا کے  
 میدان میں بھی خوب ترقی کر رہا ہے۔

تعلیم کے میدان میں بھی دوس نے تیز دور لگائی ہے۔ جس  
 جگہ تعلیم کی دشا ہندوستان سے کہیں زیادہ بڑی تھی وہاں اب



नया हिन्दू      रूस पर एक सरसरी नज़र      मार्च सन् '४१

भाशन में लन्दनवासियों को बताया कि रूस में रहन सहन का स्तर दिन पर दिन ऊँचा होता जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि आमरीकी दूतघर के एक आकसर ने भी उनसे कहा कि रूस में रहन सहन का स्तर सन् '४७ से सन् '४० तक दुना उठ गया है। इसी तरह श्री मिलस के कथन के मुताबिक़ फ़रान्सोसी दूतघर के एक आकसर ने कहा है कि रूसी मज़दूरों का जीवन स्तर फ़रान्सोसी मज़दूरों से क़रीब क़रीब दुगना ऊँचा है। श्री मिलस के ययान को ऊपर लिखे फ़ारमूला पर कसियं तो नतीजा निकलता है कि रूस ने लड़ाई खतम होते ही न सिर्फ़ लड़ाई से पहले का अपना सीमा को छू लिया बल्कि वह दूसरों को पोंछे छोड़ कर आगे भी बढ़ गया।

रूस दुनिया में पहला मुल्क है जहाँ सन् '४७ में ही खाने की चीजों और सनअती सामान की राशनिंग ख़त्म हो गई। वहाँ जंग के बाद मुल्क न केवल सन् '४० के सनअती पैदावार के माप को ही पहुँच गया बल्कि हर विभाग में क्रम आगे भी बढ़ गए। ४१ फ़्रीसदी बढ़ती उद्योग धंदों में हुई और सन् '४० से १८८८ लाख टन ज़यादा ग़ल्ला सन् '४९ में पैदा किया गया। ३५ फ़्रीसदी ऊनी कपड़े और ४६ फ़्रीसदी रेशमी कपड़े का पैदावार बढ़ी।

कायाची "नोट बढ़ती" आज सभी मुल्कों की जनता को चूम रही है। लेकिन रूस ने तीन साल में इस जोंक से पाँछा छुड़ा लिया। खाने और दूसरे जरूरी सामान के भाव जल्दी ही घटा दिये गए। सन् '४८ में इस तरह २६ अरब रोबेज़ की "नोट बढ़ती" खतम हुई। सन् '४९ में ७१ अरब रोबेज़ की कमी और हुई और सन् '४० में

नया हल्द      दस : एक सरसरी नज़र      मार्च सन् '५१

बेभाशन मोल लन्दनवासियों को बताया कि दस में रहन सहन का स्तर दिन पर दिन अर्न्धता होता जा रहा है। अतः ने ये भी बताया कि अमरीकी दूतघर के एक आकसर ने भी उनसे कहा कि रूस में रहन सहन का स्तर सन् ४७ से सन् ५० तक दुना उठ गया है। इसी तरह श्री मिलस के कथन के मुताबिक़ फ़रान्सोसी दूतघर के एक आकसर ने कहा है कि रूसी मज़दूरों का जीवन स्तर फ़रान्सोसी मज़दूरों से क़रीब क़रीब दुगना ऊँचा है। श्री मिलस के ययान को ऊपर लिखे फ़ारमूला पर कसियं तो नतीजा निकलता है कि रूस ने लड़ाई खतम होते ही न सिर्फ़ लड़ाई से पहले का अपना सीमा को छू लिया बल्कि वह दूसरों को पोंछे छोड़ कर आगे भी बढ़ गया।

दस दिया में देला मुल्क है जहाँ सन् ४७ में ही खाने की चीजों 'उर सलमती सामान की राशनिक खतम हो गयी। वहाँ जंग के बाद मुल्क ने कीवल सन् ४० के सलमती पैदावार के माप को ही पहुँच किया बल्कि हर विभाग में क्रम आगे भी बढ़ गये। ४१ फ़िस्दी बेहोती अर्न्धिक देहलदर में होनी अर सन् ४० से १०८८ लाख टन ज़ियादा ग़ल्ला सन् ४९ में पैदा किया गया। ३५ फ़िस्दी उनी कपड़े और ४६ फ़िस्दी रेशमी कपड़े का पैदावार बढ़ी।

कलङ्गी "नोट बेहोती" आज सभी मुल्कों की जलता को चूम रही है। लेकिन दस ने तीन साल में इस जोंक से बेहोती पैदा किया। खाने और दुसरे जरूरी सामान के भाव जल्दी ही घटा दिये गए। सन् ४८ में इस तरह २६ अरब रोबेज़ की "नोट बेहोती" खतम हुई। सन् ४९ में ७१ अरब रोबेज़ की कमी और हुई और सन् ५० में



## रूस पर एक सरसरी नज़र

(भाई मुजीब रिजवी)

बहु आखें भी जिनसे आशा छलकती है और वह आखें भी जिनसे डर टपकता है, आज रूस पर जमी हैं, एक को हल एक ना सुखी समाज का अगुआ दिखाई पड़ता है, दूसरे को रूस के भेस में अपनी मौत नज़र आती है, एक के लिये जो अमृत है दूसरे को बही खहर दिखाई देता है, ऐसी मूरत में यह जानना ज़रूरी है कि आगिर इस आशा और डर का कारन क्या है ? इसके लिये हमें एक सरसरी नज़र रूस की तरफ डालना चाहिये और यह मान्य करना चाहिये कि वहाँ धन दौलत, तालीम और कला के मैदान में क्या कुछ अब तक हुआ है और आगे कियर का कदम बढ़ रहे हैं.

पूँजीवादी देशों में राश्ट्र को आमदनी चाहें कितनी ही बढ़ जाय लेकिन जनता को उसका पूरा फायदा नहीं होता. क्योंकि वहाँ धन कमाया जाता है ज़यादातर व्यक्तिगत फायदे के लिये और वह भी कमते हैं इने गिने खानदान. रूस में इसके विलकुल उलटा है. सोवियत राश्ट्र की आमदनी को बढ़ाती का नाप है वहाँ की जनता के रहन सहन के स्तर में बढ़ौती. इस तरह अगर वहाँ के रहन सहन को आंक लिया जाय तो पता चल जायगा कि देस को खुशहाल बनाने में वह कहां तक सफल रहा या असफल' इस बारे में श्री जान ब्लेट्स मिल्स को, जो ब्रिटिश लेबर पार्टी के माने हुए नेता हैं, प्रमान माना जा सकता है रूस में लौट कर उन्होंने अपने एक

## रूस पर एक सरसरी नज़र

(बैथानी मजिद रजवी)

वहाँ आखें भी जन से तिया जिनकति है 'और' आखें भी जन से दो आखें है 'अज' रूस पर हसी हैं. एक को रूस 'एक नई सहाय' का 'दो' दहाय' बो' है. 'दुसरे को रूस के बिहस में अपनी मौत नज़र आती है. 'एक के लिये जो अमृत है दूसरे को बही खहर दिखाई देता है. ऐसी मूरत में यह जानना ज़रूरी है कि आगिर इस आशा और डर का कारन क्या है ? इसके लिये हमें एक सरसरी नज़र रूस की तरफ डालना चाहिये और यह मान्य करना चाहिये कि वहाँ धन दौलत, तालीम और कला के मैदान में क्या कुछ अब तक हुआ है और आगे कदम बढ़ रहे हैं.

पुनजी वाली देसों में 'रुश्ट्र' की 'अमनी' जल्ने कतली ही बड़ जाये लेकिन जल्ने को 'रुस' का पूरा फाँदे नहिँ होता. कियेकह वहाँ दहन कमाया जाना है रियादे' तर' रिकती 'कत' फाँदे 'ने' लिये 'और' 'बि' कनते हैं 'ने' 'खानदान'. 'रुस' में 'रुस' के 'बालक' 'अल्हा' है. 'सुवियत' 'राश्ट्र' की 'अमनी' की 'बुहरी' का 'नाप' है 'वहाँ' की 'जल्ने' के 'रहन' 'सहन' के 'स्तर' में 'बढ़ौती'. 'अस' 'तर' 'अगर' 'वहाँ' के 'रहन' 'सहन' को 'आंक' लिया जाय तो 'पता' चल जायगा कि 'देस' को 'खुशहाल' बनाने में 'वह' कहां तक 'सफल' रहा या 'असफल' 'इस' 'बारे' में 'श्री' 'जान' 'ब्लेट्स' 'मिल्स' को, जो 'ब्रिटिश' 'लेबर' 'पार्टी' के 'माने' 'हुए' 'नेता' हैं, 'प्रमान' माना जा सकता है. 'रुस' से 'लौट' कर 'उन्होंने' अपने 'एक'



है और गाने में उन का तरह तरह की आवाजें निकालना, बार बार मुँह बनाना और दिल को बेचैन करने वाली गिटकिरी की जगह तान की देर तक खेंचना मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कुछ "जंगली जानवर" बेतुकी आवाजों से अपनी संगीत की व्यास चुम्का रहे हों।

पच्छिम का यह कहना बिल्कुल ठीक है कि हिन्दुस्तानी संगीत का स्तर चढ़ाव उनकी समझ से बाहर है, क्यों न बाहर हो जब कि "भैस के आगे बीन बजाना" उन पर सही उतरता है, वह क्या जानें कि हिन्दी संगीत चिड़ियों को उड़ने से रोक देता है, चौपाए अपनी कुल्लें भूल जाते हैं, यह बगैर मौसम के मूसलाधार पानी बरसा देता है, बिना "एटम बम" के साइन्सी जुओं के आग लगा देता है, यह ग्राम को भुला देता है, यह खुशी बढ़ाता है, रोते हुए वधों को वहला देता है, यह पत्थर के दिल वाले को मोम बना देता है, यह थोड़ी देर के लिये दुनिया की मुसीबतें दूर कर देता है, जभी तो इस को आत्मा की छुराक समझा जाता है, न कि पच्छिमी नाच, जिसमें मफेद टांगों की कसरत से जमीन हिलने लगती है और जिनके गाने से बच्चों की नींद उचाट हो जाती है, यूँों के दिल दहल जाते हैं और जवान इसकी सखती में यकावत महसूस करने लगते हैं, खूबसूरत चेहरे बहसूरत हो जाते हैं और आवाज के उतार चढ़ाव से यह मालूम होता है कि हिमालय पहाड़ से पच्छिमी संगीत के साज लुङ्क रहे हैं और संगीत के देवता का गला घोट रहे हैं, मैं तो पच्छिमी संगीत को ऐसी वासना का नतीजा समझता हूँ जिसमें असर तो न हो लेकिन थोड़ी देर के लिये उमर भर के उठाके खर्च हो जायें

है और गाने में उन का तरह तरह की आवाजें निकालना, बार बार मुँह बनाना और दिल को बेचैन करने वाली गिटकिरी की जगह तान की देर तक खेंचना मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कुछ "जंगली जानवर" बेतुकी आवाजों से अपनी संगीत की व्यास चुम्का रहे हों।

पच्छिम का यह कहना बिल्कुल त्हेक है कि हिन्दुस्तानी संगीत का स्तर चढ़ाव उनकी समझ से बाहर है, क्यों न बाहर हो जब कि "भैस के आगे बीन बजाना" उन पर सही उतरता है, वह क्या जानें कि हिन्दी संगीत चिड़ियों को उड़ने से रोक देता है, चौपाए अपनी कुल्लें भूल जाते हैं, यह बगैर मौसम के मूसलाधार पानी बरसा देता है, बिना "एटम बम" के साइन्सी जुओं के आग लगा देता है, यह ग्राम को भुला देता है, यह खुशी बढ़ाता है, रोते हुए वधों को वहला देता है, यह पत्थर के दिल वाले को मोम बना देता है, यह थोड़ी देर के लिये दुनिया की मुसीबतें दूर कर देता है, जभी तो इस को आत्मा की छुराक समझा जाता है, न कि पच्छिमी नाच, जिसमें मफेद टांगों की कसरत से जमीन हिलने लगती है और जिनके गाने से बच्चों की नींद उचाट हो जाती है, यूँों के दिल दहल जाते हैं और जवान इसकी सखती में यकावत महसूस करने लगते हैं, खूबसूरत चेहरे बहसूरत हो जाते हैं और आवाज के उतार चढ़ाव से यह मालूम होता है कि हिमालय पहाड़ से पच्छिमी संगीत के साज लुङ्क रहे हैं और संगीत के देवता का गला घोट रहे हैं, मैं तो पच्छिमी संगीत को ऐसी वासना का नतीजा समझता हूँ जिसमें असर तो न हो लेकिन थोड़ी देर के लिये उमर भर के उठाके खर्च हो जायें



हिन्दुस्तान में संगीत "ईश्वर भक्ति" का ज़रिया रहा है और इसके राग रागिनियों के बोल जब सुनने वालों में गूँजते हैं तो इनसानों को दुख सुख की लज्जतों से नज़दीक कर देते हैं. योरप वाले अपने संगीत को चाहे कितना सराहें, यह मानना पड़ेगा कि संगीत हो या हिसाब, दर्शन हो या कविता, यह पूरब के ऐसे इल्म व कला हैं जिनसे दुनिया की हर महफिल के बिराग राशन हुए हैं और यह कलाएं जहाँ कहीं भी पहुँचीं पूरब ही के रास्ते पहुँचीं इस पर सोचकर मुझे ताज़ुब होता है कि योरप वाले पूरबी संगीत को सुनकर मुँड बनाते हैं और वह Intonation और "हारमनी" को संगीत का सब से बढ़िया भाग समझते हैं. लेकिन जब तक यह न मालूम हो कि इनसानी मनोबिज्ञान किस मौके पर और किस क्रिम के राग को स्वीकार करेगा, हारमनी की कल्पना ही ग़लत है, क्योंकि साज़ के दबाव और गले के उतार चढ़ाव का जब तक ठीक ज्ञान न हो संगीन की चमंगों पर कैसे तड़पा जा सकता है.

पच्छिम वालों ने हर चीज़ को हवा, मिट्टी के तल से देखा है. उनकी माटीवादी नज़र बढ़िया कलाओं के आत्मिक लुत्फ से परिचिन नहीं है. हाँ, उन्होंने इसकी "बाहरी शकल" को तो बना संवार लिया है लेकिन इन में आत्मा का वह अंश न पैदा कर सके जो इसकी जान है और जिसके बग़र लुशी और गम के तरानों में असर पैदा हो ही नहीं सकता. यही वजह है कि पूरब में पच्छिमी संगीत का शौक कभी सफल न हो सका.

पच्छिमी नाच मैंने भी कभी कभी देखा है और गाना भी परेशान हो हो कर मना है. नाच में नयों की कलाबालियों का मत्ता चमगा

हलदस्तान में स्लेक़ीत "लेशुर बेमक़ी" का ड़रिमे रहा है और इस के राग राग़ीतों के बोल हब स्लेफ़े वालों में सुनज़ते हैं. तु अन्सानों को ड़के स्के की लज़तों से नज़दीक कर ड़ीते हैं. योरप वाले अपने स्लेक़ीत को ज़ाहे क़त्ला सराहें, ये मान्दा ड़रे का के स्लेक़ीत हो या हसब ड़रशन हो या क़ीयत, ये योरप के लैसे एलम व़ला हैं. हन से दुनिया की हर मस्तल के ज़रां ड़रशन हुँते हैं और ये क़ललें ज़ेबल क़ेबल भी ड़ेयुनज़ेयु ड़ी के रास्ते ड़ेयुनज़ेयु. इस ड़े सुज कर मज़े तेमज़े हुँता है के योरप वाले योरपी स्लेक़ीत को सन कर मले बनाते हैं और "Infonation" और "हारमनी" को स्लेक़ीत का सब से ड़ेहया बेहाक़ समज़ते हैं. लेकिन जब तक ये ने मेलम हो के अन्सानी मेलुवक़ान कस मूक़ ड़े और कस तसम के राग़ को सुविकार क़ीया, हारमनी की क़ल्पा ही घ़लप है, क़ीय के सार के ड़बाव और क़ले के अतार ज़ेबाव का जब तक त़ेहक़ क़ान ने हो स्लेक़ीत की अस्लेक़ीत ड़े क़ीसे त़ीया जा स्केता है.

ड़ेयुम वालों ने हर ज़ेयु को हवा, म़्टी के तल से ड़ीक़ा है. उन की म़ती वादी नज़र ड़ेयुवला क़लल के अतक़ लطف से ड़ेयुजत नेबल है. हल अ़्नीयों ने इस की "बाहरी शक़ल" को त़े ड़ेड़ा सलार लीया है. लेकिन इन में अत्मा का वह अंश ने ड़ीदा कर स्के ज़ो इसकी जान है और ज़स के ड़ेड़र ख़ुशी और ग़म के त़ानों में असर पैदा हो ही नेबल स्केता. ड़ेही वज़ह है के योरप में ड़ेयुम स्लेक़ीत का शूक़ क़भी सुवल ने हो स्के.

ड़ेयुम नाच में ने भी क़ीय क़ीय ड़ीक़ा है और क़ा भी

१५



कोरिया की लड़ाई की तरह बेतहाशा आगे निकल गया और वेहंगे तरीक़े पर पीछे हटा तो वहीं हिज़ हाइनेस ने टोका और उसी वक़्त गले से या हाथों के इशारों से उसको भूला हुआ पाठ याद दिला दिया।

इसी वजह से तो यह साजिन्दे और गवैये सब हिज़ हाइनेस के चले हैं और इस पर गर्व करते हैं कि उनको हिज़ हाइनेस का ऐसा वस्ताद मिला, अजोथ्या प्रसाद पखावजी हिज़ हाइनेस के कमाल को देखकर जब मस्त हो जाता था और उसकी बाछे खिल जाती थी तो इस क़दर मगन होकर वाह वाह करता था कि मुझको उमकी बाछों में पखावज बजती सुनाई देती थी. खुदा तुरी नजर से वचाए अगर हिज़ हाइनेस से किसी ने दिल लगा कर और मेहनत से इस कला को न सीखा तो हिन्दुस्तान की यह "महादेवी कला" आधी सदी के बाद भिट जायगी और सिनेमा के चलते हुए बाज़ारों गाने महादेव जी की संगीत पूजा पर छा जायेंगे और वह उमर भर अफ़सोस करेंगे जिन्होंने जन्मत मकां के गले से शाम कल्यान सुनी है, भातखंडे के ऐसे चले को देखा है, छम्मन साहब के कमाल से मखे बठाए हैं, ठाकुर नवाब अली के गजे से खुरवा सुना है, वजोर खां को हर रागनी की तस्वीर बनने देखा है और इस ज़माने में तो हिज़ हाइनेस ने इस कला की बीरीकियाँ और गहरे भेदों को जैसा समझा है, उसके बेमिसाल होने में महादेव जी को गुनगुनाती आत्मा को भी कोई शक़ नहीं हो सकता. अगर मैं यह कहूँ तो ग़लत नहीं हो सकता कि हिज़ हाइनेस की हस्ती संगीत कला में "अन्तिम" छड़ी जा सकती है.

कोरिया की लड़ाई की तरह बेतहाशा आगे निकल गया और वेहंगे तरीक़े पर पीछे हटा तो वहीं हिज़ हाइनेस ने टोका और उसी वक़्त गले से या हाथों के इशारों से उसको भूला हुआ पाठ याद दिला दिया।

इसी वजह से तो यह साजिन्दे और नोबिसे सब हिज़ हाइनेस के चले हैं और इस पर गर्व करने हैं कि उनको हिज़ हाइनेस का ऐसा वस्ताद मिला, अजोथ्या प्रसाद पखावजी हिज़ हाइनेस के कमाल को देखकर जब मस्त हो जाता था और उसी बाछे को देखकर मगन होकर वाह वाह करता था कि मुझको उमकी बाछों में पखावज बजती सुनाई देती थी. खुदा तुरी नजर से वचाए अगर हिज़ हाइनेस से किसी ने दिल लगा कर और मेहनत से इस कला को न सीखा तो हिन्दुस्तान की यह "महादेवी कला" अद्वैत सदी के बाद मस्त जायेगी और सिनेमा के चलते हुए बाज़ारों गाने महादेव जी की संगीत पूजा पर छा जायेंगे और वह उमर भर अफ़सोस करेंगे जिन्होंने जन्मत मकां के गले से शाम कल्यान सुनी है, भातखंडे के ऐसे चले को देखा है, छम्मन साहब के कमाल से मखे बठाए हैं, ठाकुर नवाब अली के गजे से खुरवा सुना है, वजोर खां को हर रागनी की तस्वीर बनने देखा है और इस ज़माने में तो हिज़ हाइनेस ने इस कला को जैसा समझा है, उसके बेमिसाल होने में महादेव जी को गुनगुनाती आत्मा को भी कोई शक़ नहीं हो सकता. अगर मैं यह कहूँ तो ग़लत नहीं हो सकता कि हिज़ हाइनेस की हस्ती संगीत कला में "अन्तिम" छड़ी जा सकती है.



क्रतवों पर भरोसा करने वालों से कहता रहता है कि इतिहास के सशों पर ऐसे कारनामों न छोड़ो जिन पर अकल की दुनिया मुस्कराए और धर्म की असली तालीम हाथ मलती रह जाय.

x x x x x

दस दिन हिज हाइनेस (रामपूर) के साथ जिस मजे और चहल पहल में गुजरे, दिन खाने पीने में और रातें संगीत के राग रंग में जिस तरह गुजरीं उसका होश किसको था. सादिक खली खौ की बीन, मुशताक हुसैन का गाना. थिरकुआ का तबला, अजोध्या प्रसाद की पखावज, तानसेन की तेरहवीं पीढ़ी का सितार. इन्ने अली की हारमोनियम सब कुछ सुनी, मगर जब हिज हाइनेस की उंगलियों से खड़ताल के बोल खड़कते हुए सुने तो हैरान ही नहीं हुआ बल्कि उसके बोलों में खो गया और अगर हर हाइनेस (रामपूर) बेगम साहिबा तशरीफ न रखती होनी तो मैं खवाजा हसन निजामी की तरह अगर थिरक न सकता तो भूमने जरूर लगता और उस कमरे को अपने वंदे नाच से वंचित न रखता. हिज हाइनेस ने नौबत ऐसी बजाई कि मुझको अमीर खुसरो की "नान कि मुरदी खाना बरू" की नौबत याद आगई. यह दो साज बजा हिज हाइनेस तो तमाम साज उस्तादी ढंग से बजा सकते हैं बड़े बड़े गवैय और माहिर साजिन्दे कान पकड़ते हैं, पैर चूमते हैं. जहाँ किसी ने कला के खिलाफ मुर लगाया था राग अलापा या साजों ने आपस में कुड़ाई शुरू करदां और इस संगीत युद्ध में किसी का भर पूर हमला

फत्तोरों पर बेहोश करने वालों से कहता रहता है कि अंतर्वास के صفحاتों पर ऐसे कारनामों न छोड़ो जिन पर अकल की दुनिया मुस्कराए और धर्म की असली तालीम हाथ मलती रहे जाय.

x x x x x

दस दिन हज्रत नस (रामपुर) के साथे हस मजे और जेहल जेहल मेहन कडारे, दिन केहाने बिजेने मेहन और रातें संस्कृत के राग रंग मेहन हस तरह कुरिये सका हوش कस को तया. सादिक खली खली की बीन, मुशताक हसैन का गाना. तेरकुआ का तबले. अजोध्या प्रसाद की तेरहवाज. तान सेन की तेरहवीं पीढ़ी का सितार. इन्ने अली की हारमोनियम सब कचे सुनी, मगर जब हज्रत नस की उंगलियों से केहता के बोल केहकते हौने सले तो हजरान ही नही हुआ हवा बल्कि असे मेहन केह कया 'उर अतु हज्रत नस (रामपुर) मेहम साबिबे तशरीफ नह रकिये हौतिये तो मेहन खोजे हसन नखामि की तरह अतु तेरक नह सकता तो हज्रत नस खुरद अक्या 'उर अतु कमेरे को अले के तमले नाच से रनचित नह रकिये. हज्रत नस ने नौबत ऐसी बजानी के मेहको अमर हसरे की "नान के खुरदी खाने" की नौबत याद अक्य. ये दो साज कया हज्रत नस ने तमाम साज अस्तादी तहलक से बजा सके हिये. बड़े बड़े कुरिये और माह, साजन्दे कान कुरते हौने बिह जोमते हय. जेहल कस ने कला के खलफ सूर लाया या राग अला या साजों ने अतु मेहन लौली शुरु कुरी 'उर अतु संस्कृत यिद मेहन कस का बेहोर हसले



मैंने से ताड़ कर सकता है और बटे हुए हिन्दी मुसलमान प्रतिधिया है.

पूजा घर कहने को सब ईंट पत्थर के होते हैं मगर कहीं खुदा की मूर्ति ने, कहीं अवतारों की पूजा ने और कहीं सूनों के प्रायश्चित्त ने पूजा की ऐसा यादगार है और इनसानी विमर्श की मजहबी के साथ में शान्ति है कि कोई बुनों के सामने गिड़गिड़ाता है, कोई से डरता है, कोई मूर्ज की गरमी से पसीना बहाता है, कोई की मुन्दरता में खो जाता है, कोई दोनों हाथों को दोना बनाकर का समस्कार देखता है, कोई मांगता है, कोई आग के शोलों में भजन की धुन में अपने गुरु की खोज करता है, कोई नाच ना को नचाता है और कोई मातमी शकल बना कर जन्नत शामिल करना है. यह ऐसी मजहबी ईजादे हैं जिन्होंने ही रास्ते से भटक दिया, नहीं तो वह भगवान — दिव्य के आइने में है तस्वीरे यार

जब जुरा गरदन सुकाई देख ली  
सिन्दरी की नस से भी नजदीक है और वह इनसानी

२

कोई शक नहीं हो सकता. अगर न हो

ही हो सकता, बिज हाइनेम की हस्ती संगीत कला में "अन्तिम"

बैठों का मलक मान लो और पसन  
मलक तैयार दिया. लस पर नज़र कर के अर दीस वाले लो पचले  
मधुमयी نقصान को कैंधों बुरा कर रहे महेन तो ऊँ के लस  
हत्त से कउन भोजे ताजे कर सक्ता है और बैसे हुँते हन्दी मुसलान  
कस मले से शकित कर सक्ते महेन जबके ये पचले बुरा की

पुती करिया है .

पुजा कहर कैंधे को सब अल्लत पतोर के हुते महेन मकर कैंधों के  
खदा की عبادत ने, कैंधों लुतारों की पुजा ने और कैंधों सुली के  
प्राशङ्चित ने अँहेन عزت के लाँती बना दिया. और ये انسان की मधुमयी  
सोजे भोजे की लीसी यादगारों महेन और असानी दमाँ की लीसी  
पुशानी की हरकतों महेन के कौनी बदों के सामने कुर कुराते ने.  
कौनी भोर ने साने महेन शान्ति पाता है. कौनी हत्तर (कैंधे का लीक)  
पतोर के रसब से दुरता है. कौनी सोज की कुरमी से पसुले बेहारा है.  
कौनी चल्दरमाँ की सदुरता मीलों कैंधे जाना है. कौनी दुनों हन्तोर  
को दुवने बना कर और सुवत बगार को दमाँतों मान्कता है. कौनी अँ के  
शुमलों महेन पिडाल का चक्कर दीकैता है. कौनी कुरस के सामने  
कैंधे तैयार है, कौनी बेहजन की दहेन महेन लो कुर की कुरो  
है. कौनी नाँज महेन मानोता को नजाना है और कौनी मरामी शकल बना कर  
जलत की कुतूरी हावल कुरता है. ये लीसी मधुमयी अिजादों महेन  
जन्मों ने सब को सवबिच रास्ते से बेहका दिया. नैहों तो रहे बेहकून—

दल के आँल्ले महेन है तस्वीर पार  
जिब दुरा कुरान जेहकनी दीकै ली

वे तो زندگی की नस से भी नजदीक है और वे انسان

—सब न महेन. "अन्तिम" कैंधे. जा



## प्रेम और संगीत

( भाई होश बलरामी )

[ "शुण्व" हैदराबाद में नवाब होशयारजंग बहादुर के लेखों से ]

..... उड़ते हुए पाँच घंटों में "मआसिर आलमगोरी" (इतिहास

की एक किताब) पढ़ता रहा, जब उसके सफा ५८ और ६३ में यह नज़र पड़ा कि मथुरा और बनारस के मन्दिर औरंगजेब के समय में तबाह किये गए तो मुझे कुरान की यह आयत याद आ गई—

"यह लोग अल्लाह के सिवा जिनको खुदा समझ कर पूजते हैं उन्हें तुम बुरा न कहो नहीं तो यह लोग भी खुदा को बेसमझे बुरा भला कह बैठेंगे।"

जिस धर्म की यह तालीम हो कि मूर्तियों को बुरा कहने के लिये भी मना करे तो क्या वह मन्दिरों को ढाने की इजाजत दे सकता है और क्या उसके अनुयाइयों को दूसरे धर्म के पूजाघरों को तोड़ना चाहिये था और इतिहास में इसलामी तालीम की अवहेलना का गुनाह छोड़ जाना चाहिये था ? जब मुसलमान वादशाहों की उदारता की यह हालत थी तो अगर किसी मसजिद को देम वाले अपना बूझाघर बना लें और जिस मन्दिर को किसी ने मसजिद बनाया था उसे फिर मन्दिर बना दें तो इस पर मुसलमानों को आवाज़ उठाने का क्या हक है ? बारबार से फरियाद करने के लिये क्या कर ज़मान को इसकी ईश्वर के नाम तुलनाओं में इस मुलक को

## पेरिम और سنگित

( बेहान्नी हوش बलरामी )

[ "शुमूब" हैदराबाद में नवाब होशयार जलक बेहान्नी के लिखों से ]

..... अर्त्ते हुये पान्च कहेतों में "मातु मालिकु" ( अन्हास की एक किताब ) पढ़ता रहा जब अस्के मन्ते ५८ और १३ में यह नज़र पड़ा के म्तेह्रा और बन्दास के मल्दर लुर्गक र्ज़िब के से म्में त्हा के क्ते को म्तेह्रे कुरान की ये आیت याद अक्की—

"ये लुगक अल्ले के सूा ज़न को ख़दा म्तेह्रेकुर पुर्जेते म्में अन्हेन त्म हुरा न्ने क्हे न्हेन त्म ये लुगक येन ख़दा को ये म्तेह्रे हुरा बेहान्नी के म्तेह्रेन के।"

जस द्हेरम की ये त्ऐल्लिम हुो के म्मुरतुनो को हुरा क्हेने के ल्ते येन म्तेन करे त्म क्हेन ये म्ल्दरों को क्हेने की अज़ारत दे सक्ता है और क्हेन अन्हीनोतुनो को दुुसरे द्हेरम के पुर्जे क्हेरों को तुर्ज़ा ज़ाग़े त्हा और अन्हास म्में अस्लामी त्ऐल्लिम की अुहलमा का क्त्ता ज़ेहज़ ज़ाना ज़ाहल्ले त्हा ? ज़ब म्स्लमान बादशाहों की अुअरता की ये क़ालत येन त्म अक् क्सी म्स्जिद को दीसने अुअना पुर्जेकुर बन्दा ल्हेन और ज़स म्ल्दर को क्सी म्स्जिद बन्दा त्हा अुस्को पुर्जे म्ल्दर बन्दा दीन त्म त्म पुर् म्स्लमतुनो को अुअर अुत्हाने का क्हेन ह् ? सरकर से फ़रिाद करने के ल्ते क्हेन को र्ज़ान क्हेल सक्ती है ज़ब के बन्दा के ब्द म्स्लमतुनो त्म त्म म्ल्कको



आँख तो खुल गई और मैं यह भी समझ गया कि यह सब कुछ सपना था मगर पत्रकार दोस्तो! दिल अब तक जल रहा है और मैं अब तक अपने को ट्रमैन समझे हुए हूँ. अब अगर किसी पत्रकार के पास कोई नुसखा हो तो लिख भेजने की कृपा करे.

—भगवानदीन

अंक तो कल कल और मैं ये भी समझ गया कि ये सब कुछ सपना था मगर पत्रकार दोस्तो! दिल अब तक जल रहा है और मैं अब तक अपने को ट्रमैन समझ रहा हूँ. अब अगर किसी पत्रकार के पास कोई नुसखा हो तो लिख भेजने की कृपा करे.

—बेगुन दीन

हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी में

अच्छी, सस्ती, और साफ़ छपाई के लिये

‘नया हिन्द प्रेस’ का लिखिय.

बाहर का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ किया जाता है.

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४४, सुटींगज,

इलाहाबाद.

हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी में

‘नया हिन्द प्रेस’

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिय.

बाहर का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ किया जाता है.

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४४, सुटींगज,

इलाहाबाद.







बनाता है जवाहरलाल को जिसकी बहन हिन्दुस्तान में भूके मरने वालों के लिये अमरीकी अनाज के दानों के लिये हमारे सामने हाथ पसारने खड़ी रहती है, और कितना मूल्य है यह माओ ! जो दोस्ती करता है रूस से, कहां रूस और कहां अमरीका ! रूस के पास धरा क्या है ? बरफ से ढके साइबेरिया के मैदान हैं, जब कि अमरीका के पास अनाज के लहराते हुए खेत हैं, और रूस के पास क्या है ? मीलों तक लम्बे लम्बे सूखे पहाड़ हैं, जब कि अमरीका में जगह-जगह सोने के ढेर हैं, और फिर माओ दोस्ती करने बैठा है स्तालिन से ! उसके पास क्या धरा है ? वह डिक्टेटर भले ही हो पर मजदूरों का डिक्टेटर भी क्या ? मजदूरों का डिक्टेटर यानी मेट, मुक प्रेसीडेन्ट को छोड़ कर मेट से दोस्ती ! और इन सबसे दोस्ती करने से फायदा क्या ? क्या वह आज तक यू. एन. ओ. में आ पाया ? उसकी समझ में यह क्यों नहीं आता कि यह सिर्फ मेरा ही काम है कि मैंने चीन के न कुछ चांगकाई शेक के आदमी को यू. एन. ओ. में जगह दे रखी है, यह माओ क्यों नहीं इन सब को छोड़ कर मेरे पास आता, यह मुझे छोटा समझता है, कहीं मैं सबमुच तो छोटा नहीं हूँ ? नहीं, नहीं, मैं छोटा नहीं हो सकता, फिर यह स्तालिन मेरी परबाह क्यों नहीं करता ? यू. एन. ओ. में रूस का आदमी मलिक आए दिन मेरी परबाह किये बगैर अड़ंगे लगाए रहता है, क्या यह भी मुझको छोटा समझता है ? और उसको मुझे छोटा समझने का क्या हक हासिल है, क्या यह वह दिन भूल गया जब मेरी एटम बम की मार से जापान ने घुटने टेक दिये थे, और सिर्फ उसी के ढर से इस स्तालिन को मजबूर होकर अपने दोस्त जापान

बलता है जवाहर लाल को जैसी-यैसी हलदस्तान में भूके मरने वालों के लिये अमरीकी अनाज के दानों के लिये हमारे सामने हाथ पसारने खड़ी रहती है, और कितना मूल्य है यह माओ ! जो दोस्ती करता है दूसरे से, कहां दूसरे और कहां अमरीके ! दूसरे के पास देवा क्या है ? बर्फ से ढके साइबेरिया के मैदान हैं, जबकि अमरीके के पास अनाज के लहराते हुए खेत हैं, जबकि अमरीके के पास अनाज के लहराते हुए खेत हैं, और दूसरे के पास क्या धरा है ? वह डिक्टेटर भले ही हो पर मजदूरों का डिक्टेटर भी क्या ? मजदूरों का डिक्टेटर यानी मेट, मुक प्रेसीडेन्ट को छोड़ कर मेट से दोस्ती ! और इन सब से दोस्ती करने से फायदा क्या ? क्या वह आज तक यू. एन. ओ. में आ पाया ? उसकी समझ में यह क्यों नहीं आता कि यह सिर्फ मेरा ही काम है कि मैंने चीन के न कुछ चांगकाई शेक के आदमी को यू. एन. ओ. में जगह दे रखी है, यह माओ क्यों नहीं इन सब को छोड़ कर मेरे पास आता, यह मुझे छोटा समझता है, कहीं मैं सबमुच तो छोटा नहीं हूँ ? नहीं, नहीं, मैं छोटा नहीं हो सकता, फिर यह स्तालिन मेरी परबाह क्यों नहीं करता ? यू. एन. ओ. में रूस का आदमी मलिक आए दिन मेरी परबाह किये बगैर अड़ंगे लगाए रहता है, क्या यह वह दिन भूल गया जब मेरी एटम बम की मार से जापान ने घुटने टेक दिये थे, और सिर्फ उसी के ढर से इस स्तालिन को मजबूर होकर अपने दोस्त जापान



पर दूसरे मुल्कों में भी क्या नहीं कर सकता. और मुझे ऐटम बम की धमकी की भी कहाँ ज़रूरत है. मैं डालर की मार से जिस मुल्क को चाहूँ, जिस राज को चाहूँ, जिस डिक्टेटर को चाहूँ चारों खाने बिना गिरा सकता हूँ. मैं सचमुच बहुत बड़ा हूँ. कोई यह न समझे कि मैं यह धमक से कह रहा हूँ. मैं तो सिर्फ एक सचाई का नम्रता के साथ एलान कर रहा हूँ.

डूटने में हवा में से एक आवज़ आई—“क्या ?”

मैं किसी की 'क्या' की परवाह नहीं करता. मैं 'क्या' करने वालों को पलक मारते स्त्राक में मिला सकता हूँ. यू. एन. ओ. जिसमें ६० मुल्क शामिल हैं, मुझे बड़ा मानती है, मेरे इशारों पर चलती है. मैं जो चाहता हूँ, उस यू. एन. ओ. से करा लेता हूँ. और यह माओ मुझे छोटा समझता है. वह माओ जिसके देस का प्रेसिडेंट चांग-काई शेक मेरा घरवाँ का कुर्जदार है—जिसकी औरत आए दिन कल तक मेरे मुल्क और मेरे सामने कुर्ज की भीक के लिये हाथ पसारते खड़ी रहती थी यह माओ! यह माओ जिसका मुल्क कल तक

لہذا ملکہ اہلکار مارچ سن ۱۹۰۷ء

یہ دوسرے ملکوں میں بھی کیا نہیں کر سکتا۔ اور مجھے ایسا ہم  
 کی دھمکی کی بھی کہاں ضرورت ہے۔ میں ڈاکٹر کی مار سے جس  
 ملک کو چاہوں، جس راج کو چاہوں، جس ڈکٹیٹر کو چاہوں،  
 چاہوں خانے چت کر سکتا ہوں۔ میں سچ سچ بہت بڑا ہوں۔  
 کوئی یہ نہ سمجھے کہ میں یہ کھمبہ سے کہہ رہا ہوں۔ میں تو  
 صرف ایک سچائی کا نمونہ کے ساتھ اعلان کر رہا ہوں۔

وہی ہے، ”اے زبیر! ایک اور محرم کو مٹا دینا۔“

میں کسی کی 'کیا' کی پورا نہیں کرتا۔ میں 'کیا' کرنے والوں کو پلک مارتے خاک میں ملا سکتا ہوں۔ یو۔ ایون۔ او۔ جس میں ۶۰ ملک شامل ہیں؛ مجھے بڑا مانتی ہے 'میرے اشاروں پر چلتی ہے۔ میں جو چاہتا ہوں اُس یو۔ این۔ او۔ سے کرا لیتا ہوں۔ اور یہ ماؤ مجھے چھوٹا سمجھتا ہے۔ وہ ماؤ جسکے دھیس کا پریسہڈنٹ چانگ لائی شیک میرا اربوں کا قرضدار ہے— جسکی عورت آٹے دن کل تک میرے ملک اور میرے سامنے قرض کی بھوک کے لئے ہاتھ پसारے کھڑی رہتی تھی۔ یہ ماؤ! یہ ماؤ جس کا ملک کل تک حس چابان کی دھاک سے تیر تیرا لگتا تھا اُس ملک پر آج میرا ایک بڑھاپا حنرا! اُس طبع راج کر رہا ہے جیسے کبھی کراڑن نے بھی ہندوستان پر نہیں کیا تھا۔ اُہ! جیسے کبھی اِڈاڈر نے بھی بلخاب پر نہیں کیا تھا۔ یہ ماؤ یہ ماؤ! آپ کو سمجھتا کیا ہے؟ یہ نہیں سمجھتا کہ مجھے چھوٹا سمجھ کر یہ خود بہت چھوٹا ہو جائیگا۔ اِس ماؤ کی اِنٹی ہمت کہ یہ مہڑاؤں کی آواز نکالے اور مجھے چوہا سمجھنے کی کوشش کرے۔ کتنا سوز کہ ہے یہ ماؤ! دوستی کرنے بیٹھا ہے ہندوستان سے اور دوست



और मैं द्रुमैन बन गया। अब या तो भगवान मेरे सामने से भाग गए या मुझे भगवान की ज़रूरत न रह गई। भगवान अब मेरे सामने न थे। अब तो मेरे सामने थीं अमरीका की ४७ रियासतें, अरबों खरबों डालर पर मेरा अधिकार, हजारों नागरी नौकर मेरे इशारे पर नाचने को तैयार, दसियों जनरल और लाखों थिपही मेरे हुकुम पर बीसियों मुल्कों को आंख के इशारे पर एंटम बस से ज़मी-दोज़ करने के लिये लैस। बस मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि मैं दुनिया में सबसे बड़ा बादमी हूँ। हिन्दुस्तानियों ने चक्रवर्ती राजा का खयाल खड़ा किया, कभी चक्रवर्ती राजा नहीं खड़ा कर सके। मैं चक्रवर्ती हूँ। नाम से प्रसीडेन्ट हूँ तो क्या? मुझे अमरीका की फ़ौजों पर पूरा अख्तियार हासिल है। मुझे वजीर मित्र हुए हैं पर वह मेरे सलाहकार हैं। मेरे काम में कोई रोक नहीं खड़ी कर सकता। जनता की कांग्रेस भी है। पर वह भी मुझे किसी काम से नहीं रोक सकती। इस तरह मैं आज अमरीका का एक छत्र राजा हूँ। मैं बरतानिया के राजा की तरह नाम का राजा नहीं हूँ, काम का राजा हूँ। मैं डिक्टेटर या तानाशाह नाम को पसंद नहीं करता क्यूंकि इस नाम को कुछ लोगों ने अपना रक्खा है और अमरीका के लोग तानाशाह और तानाशाही को बिलकुल नहीं पसंद करते। और मैं तो तानाशाह और तानाशाही का किसी आंख भी नहीं देख सकता। और फिर प्रेसी-डेन्टी में और वह भी अमरीका की प्रेसीडेन्टों में किस तानाशाह और किस तरह की तानाशाही की कमी है। मैं प्रेसीडेन्ट होते हुए जैसे चक्रवर्ती और राजा हूँ वैसे ही डिक्टेटर यानी तानाशाह भी हूँ। मैं अपने मुल्क में क्या नहीं कर सकता। और एंटम बस के बल

और मैं तरोमरोचि बन गया। अब या तो भगवान मेरे सामने से बहाक गये या मुझे भगवान की ज़रूरत न रह गयी। भगवान अब मेरे सामने न थे। अब तो मेरे सामने थे अमरीका की ४७ रियासतें, अरबों खरबों डॉलर पर मेरा अधिकार, हजारों नागरी नौकर मेरे इशारे पर नाचने को तैयार, दसियों जनरल और लाखों थिपही मेरे हुकुम पर अमरीका की फ़ौजों के आंख के इशारे पर एंटम बस से ज़मी-दोज़ करने के लिये लैस। बस मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि मैं दुनिया में सबसे बड़ा बादमी हूँ। हिन्दुस्तानियों ने चक्रवर्ती राजा का खयाल खड़ा किया, कभी चक्रवर्ती राजा नहीं खड़ा कर सके। मैं चक्रवर्ती हूँ। नाम से प्रसीडेन्ट हूँ तो क्या? मुझे अमरीका की फ़ौजों पर पूरा अख्तियार हासिल है। मुझे वजीर मित्र हुए हैं पर वह मेरे सलाहकार हैं। मेरे काम में कोई रोक नहीं खड़ी कर सकता। जनता की कांग्रेस भी है। पर वह भी मुझे किसी काम से नहीं रोक सकती। इस तरह मैं आज अमरीका का एक छत्र राजा हूँ। मैं डिक्टेटर या तानाशाह नाम को पसंद नहीं करता क्यूंकि इस नाम को कुछ लोगों ने अपना रक्खा है और अमरीका के लोग तानाशाह और तानाशाही को बिलकुल नहीं पसंद करते। और मैं तो तानाशाह और तानाशाही का किसी आंख भी नहीं देख सकता। और फिर प्रेसी-डेन्टी में और वह भी अमरीका की प्रेसीडेन्टों में किस तानाशाह और किस तरह की तानाशाही की कमी है। मैं प्रेसीडेन्ट होते हुए जैसे चक्रवर्ती और राजा हूँ वैसे ही डिक्टेटर यानी तानाशाह भी हूँ। मैं अपने मुल्क में क्या नहीं कर सकता। और एंटम बस के बल



## अहंकार

अचानक मन बोल उठा—“मैं भगवान बनना चाहता हूँ. आप की इजाजत है ?”

‘इजाजत’ की बात सुनकर मुझे भी घमंड हो आया. मैं बोला—  
“इजाजत तो मैं तुम्हें देता हूँ. पर एक शर्त पर.....”

“बहू क्या ?”

“बहू यह कि भगवान बनकर तुमको मुझे वरदान देना पड़ेगा.”

“जहर.”

‘जहर’ पूरा पूरा मैंने सुना भी न था कि मेरे सामने चारहाथ वाले मुकुटधारी भगवान खड़े थे और कह रहे थे—

“मांग, क्या मांगना है ?”

मैं एकदम सितपिटा गया, मुझे क्या पता था कि मन इतनी जल्दी भगवान बन सकता है और फिर अपना वचन निभा सकता है. मैंने अभी सोचा भी न था कि अगर भगवान सामने आ जायें तो क्या मांगना चाहिये. फिर भी मैंने जल्दी जल्दी इधर उधर नजर डाली पर कुछ मूर्क न पड़ा. अंदर नजर डाली तो मन शायद सामने पड़ी मेज़ पर नजर डाली तो बहां दुनिया का नक्शा पड़ा मिला और पहली नजर अमरीका पर पड़ी और यह कैसला होगया.

मैं बोला—“हे भगवान मुझे टूट में बना दो.”

“ऐसा ही होगा.”

## अहंकार

अचानक मन बोल उठा—“मैं भगवान बनना चाहता हूँ.”  
‘अहंकार’ की बात सुन कर मुझे भी घमंड हो आया. मैंने बोला—

“अहंकार तो मैं तुम्हें देता हूँ.” पर एक शर्त पर.....”

“क्या है ?”

“क्या है कि भगवान बन कर तुम को मुझे वरदान देना पड़ेगा.”

“जहर.”

‘जहर’ पूरा पूरा मैंने सुना भी न था कि मेरे सामने चारहाथ वाले मुकुटधारी भगवान खड़े थे और कह रहे थे—

“मांग, क्या मांगना है ?”

मैंने एकदम सितपिटा गया, मुझे क्या पता था कि मन इतनी जल्दी भगवान बन सकता है और फिर अपना वचन निभा सकता है. मैंने अभी सोचा भी न था कि अगर भगवान सामने आ जायें तो क्या मांगना चाहिये. फिर भी मैंने जल्दी जल्दी इधर उधर नजर डाली पर कुछ मूर्क न पड़ा. अंदर नजर डाली तो मन शायद सामने पड़ी मेज़ पर नजर डाली तो बहां दुनिया का नक्शा पड़ा मिला और पहली नजर अमरीका पर पड़ी और यह कैसला होगया.

मैंने बोला—“हे भगवान मुझे टूट में बना दो.”

“ऐसा ही होगा.”





जिल्द १०

मार्च सन् '५१

नम्बर ३

नम्बर २

मार्च सन् '५१

जिल्द १०

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,  
'नयाहिन्द' पढ़ेंगे घर घर लिये प्रेम की मोली.

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हल्लस्तानी बोली,  
'नया हल्ल' पेल्ले का कहर कहर लिये प्रेम की जवली.

## इनसान

(भाई शादीराम जोशी)

बब खून की नदियां बहती हों, कबिता सरिता का बहना क्या !  
जब इनसां इनसां ही न रहा, तो सुनना क्या और कहना क्या !!  
सी ऊब गया है दुनिया से, यह दुनिया कैसी दुनिया है !  
मानव के हाथों मानव का, ऐसे ऐसे दुख सहना क्या !!  
पशु अच्छे हैं इनसानों से, अन्दर बाहर से एक तो हैं !  
बब अन्दर से हैवान रहा, इनसान का चोला पहना क्या !!  
बठ, कबि, लेकर बीना अपनी, चल बास करें जंगल बन में !  
जिस नगरी में यह पाप हुए, उस नगरी में अब रहना क्या !!

## अन्सान

(बेहानी शादी राम जोशी)

जब खून की नदियां बहती हों, कबिता सरिता का बहना क्या !  
जब अन्सान अन्सान ही न रहा, तो सुनना क्या और कहना क्या !!  
जी लुप किया है दुनिया से, ये दुनिया किस दुनिया है !  
मानव के हाथों मानव का, ऐसे ऐसे दुख सहना क्या !!  
पशु अच्छे हों अन्सानों से, अन्दर बाहर से एक तो हों !  
जब अन्दर से जवोन रहा, अन्सान का चोला पहना क्या !!  
अन्सा, कबि, लेकर बीना अपनी, चल बास करें जंगल बन में !  
जिस नगरी में यह पाप हुए, उस नगरी में अब रहना क्या !!



## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द्र, भगवानदीन, मुखर्जी हसन, विरम्भत्साथ, सुन्दरलाल

मार्च १९५१

क्या किस से

क्या किस से	सका
१—इतसान (कविता)—भाई शादराम जोशी	२०३
२—अहंकार—भगवानदीन	२०४
३—प्रेम और संगीत—भाई होश विलप्रामो	२१०
४—रूस पर एक सरसरी नजर—भाई सुजीव रिजवी	२१६
५—उलाहाबाद से कन्याकुमारी—भाई आम प्रकाश पालीवाल	२२२
६—हैदराबाद में गलिब बन्दी—भाई मैथिल रंजना	२२६
७—हिन्दू की एक राजकाजी भाँकी—त्रेलाग	२३५
८—आबाज यह आती है.... (कविता)—डॉक्टर हरचरन लाल	२४०
९—चीन और अमरीका—भाई अशागराम	२४५
१०—भाशा की कठिनाई—भाई किशोर लाल मशरूवाला	२५३
११—नागरी लिखावट और उरदू—आचार्य विनोबा	२५६
१२—बच्चों की दुनिया—एडीटर. प्रेम भाई	२५७
१३—कुछ किताबें—	२६५
१४—दुमारी राय—चीन और 'एम्प्रे मरी' की मन्तव्य—भगवानदीन ; हिन्दू कांड बिल—भगवानदीन : अमानत में खयानत—भगवानदीन ; अमरगंगा जापानी मुलहनामा—भगवानदीन ; गोकथामी पाबन्दी बिल—भगवानदीन ; बनस्पति पर रोक और सरकार—भगवानदीन ; इमान-दारी का इनाम—भगवानदीन ; कपड़े और अनाज की कमी और सरकार—भगवानदीन : दुखियों की मां-बापा—संरंज राम भाई	२६७

कीमत—हिन्दुस्तान में छैं रुपया साल, बाहर दस रुपया साल  
एक वर्षा दस आने.

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

अडिटर—

तारा चन्द्र, भगवान दीन, मुखर्जी हसन, भस्मेश्वर नाथ, सुन्दर लाल

मार्च १९५१

क्या किस से

मन्तव्य

१—अन्सान (कविता)—भैरवी शादी राम चोरी	२०३
२—अहंकार—भगवानदीन	२०४
३—प्रेम और संस्कृत—भैरवी हरी भगवामी	२१०
४—रूस पर एक सरसरी नजर—भैरवी मजिद रसुमी	२१६
५—उलाहाबाद से कन्याकुमारी—भैरवी अम प्रकाश पालीवाल	२२२
६—हैदराबाद में गलिब बन्दी—भैरवी मैथिल सुखला	२२६
७—हिन्दू की एक राजकाजी भाँकी—लाल	२३५
८—आबाज यह आती है.... (कविता)—डॉक्टर हरचरन लाल	२४०
९—चीन और अमरीका—भैरवी अशागराम	२४५
१०—भाशा की कठिनाई—भैरवी किशोर लाल मशरूवाला	२५३
११—नागरी लिखावट और उरदू—आचार्य विनोबा	२५६
१२—बच्चों की दुनिया—एडीटर. प्रेम भाई	२५७
१३—कुछ किताबें—	२६५
१४—दुमारी राय—चीन और 'एम्प्रे मरी' की मन्तव्य—भगवानदीन ; हिन्दू कांड बिल—भगवानदीन : अमानत में खयानत—भगवानदीन ; अमरगंगा जापानी मुलहनामा—भगवानदीन ; गोकथामी पाबन्दी बिल—भगवानदीन ; बनस्पति पर रोक और सरकार—भगवानदीन ; इमान-दारी का इनाम—भगवानदीन ; कपड़े और अनाज की कमी और सरकार—भगवानदीन : दुखियों की मां-बापा—संरंज राम भाई	२६७

कीमत—हिन्दुस्तान में छैं रुपया साल, बाहर दस रुपया साल  
एक वर्षा दस आने.



美しき妻！

五、五

بسم الله الرحمن الرحيم

”الہ آباد سے گلیاں کا رو—“

مجلس شورای اسلامی

三子

مجلس شورای ملی

عبدالله بن محمد بن عبدالمطلب

محکمات میں غیبت۔۔۔ بہ گوآن دین

پسینتی پر ایک اور سرکار — بھکوان

۱۵۶۱

五

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

[illegible]



# भारत का विधान

## पूरा हिन्दी अनुवाद

बी २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित।

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस विधान के अधीन स्वर्धन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले।

यदि आप जाने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, ममक कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें।

आसानी के लिये किताब के आखिर में हिन्दी से अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी माठ पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है। भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है।

आसन बामदावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज. लगभग चार सौ पत्र. कपड़े की मुन्दर जिल्द. कीमत केवल साढ़े सात रुपए.

नागरी और बर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :—

मैनेजर 'नया हिन्द'  
१४५. सुट्टी गंज.

इलाहाबाद.

# भारत का वंदन

पूरा मल्लि अनुवाद

जो २१ जून १९०० से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारत वासी का फर्ज है कि जिस वंदन के अधीन स्वर्धन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप जाने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, ममक कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आखिर में अंगरेजी से अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी माठ पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है। भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है।

आसन बामदावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज. लगभग चार सौ पत्र. कपड़े की मुन्दर जिल्द. कीमत केवल साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :—

मैनेजर 'नया हिन्द'  
१४५. सुट्टी गंज.  
इलाहाबाद.



(۱) "कल्याण" १९०५-१९०६ का प्रकाशन हुआ।  
प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हो।

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरा का आपना।

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कान्फरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मा, जातों, विरादारियों और किर्कों में आपस का मेल बढ़ाना।

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेंट—मि० अब्दुल मजीद खवाजा: वाइस प्रेसीडेंट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक: गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेंट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल।

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंजर अली सांखटा, श्री बी० जी० खर. मि० एस० के० रुद्रा, पं० विश्वम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क्राष्ठी मोहम्मद अब्दुल गफ्फार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल।  
मेम्बरी के क्लायदों के लिये लिखिये।

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,  
१४५, सुट्टी गंज, इलाहाबाद।

नोट—सोसाइटी के नये क्लायदों के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है, "नया हिन्दू" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा। अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकेंगे वा अगला दाम की किताब लेने पर एक बार ९६ रुपया कम कर सकेंगे।

कना जिस में सब हल्लस्तानी शामिल हों।  
(२) अिकता बेहलाने के लिये क्लासों, अखबारों, रसालों वगैरा का जहाय।

(३) पुठानी क्. वन. क्ताब क्. वन. सभाओं, कान्फरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, विरादारियों और किर्कों में आपस का मेल बढ़ाना।

सोसाल्ती के प्रेसिडेंट—सै. अब्दुल मजीद खवाजा: विस प्रेसिडेंट—डा० अक़्तर बेग़वान दास और डा० अब्दुल हक़: क्. वन. गवर्निंग बाडी के प्रेसिडेंट—डा० अक़्तर बेग़वान दास: सै. क्. वन. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० अक़्तर सैद महमूद, डा० तारा चन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, सै. मंजर अली सांखटा, श्री बी० जी० खर. मि० एस० के० रुद्रा, पं० विश्वम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क्राष्ठी मोहम्मद अब्दुल गफ्फार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल।  
मेम्बरी के क्. वन. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

सुन्दरलाल

सै. क्. वन. गवर्निंग बाडी के प्रेसिडेंट, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,  
१४५, सुट्टी गंज, इलाहाबाद।

नोट—सोसाल्ती के नये क्. वन. गवर्निंग बाडी के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है, "नया हिन्दू" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा। अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकेंगे वा अगला दाम की किताब लेने पर एक बार ९६ रुपया कम कर सकेंगे।

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, १४५, सुट्टी गंज, इलाहाबाद।



(बंगरोबी नगरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ लाख आस बंगरोबी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवान्दीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं। भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास रखर रखिये। क्रीमत दो रुपये.

**मुस्लिम देश भक्त**—लेखक—श्री रतन लाल बंसल  
उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान द्योली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को मुलामी की खंजीरों से आखाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क्रीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी शक्तिओं की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक इन की भी धेर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान कुर्बान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो किरकावाराना दंगों में लोगों को दैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपया.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती वाड़ी से दिल चस्पी रखते हैं, और भारत के आत्म सन्कट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क्रीमत पाँच आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, सुट्टी गंज, इलाहबाद.

(अंगरेबी नागरी लिखावट में)

हल्द ला जून्हा देवान पास हवा है. अकेरक-भेक-चूदे-सुखाम्. खस अंगरेबी शब्दों के लिये आसान हल्दस्तानी शब्द महत्ता भगवान् दीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं. भारत के देवान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखें. क्रीमत दो रुपये.

**मुस्लिम दिवस**—लेखक—श्री रतन लाल बंसल  
उन मुस्लिम दिवस भक्तों के जीवन का हाल जिनमें ने अपनी जान हतथेली पर रक्कर हल्दस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को मुलामी की खंजीरों से आखाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क्रीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिनमें ने विदेशी शक्तिओं की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक इन की भी धेर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान कुर्बान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो किरकावाराना दंगों में लोगों को दैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपये.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के आत्म सन्कट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क्रीमत पाँच आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हल्द' १४५, सुट्टी गंज, इलाहबाद.



## महात्मा गांधी के बलिदान से सबक्र-साम्राज्ञा-

शिक्षता यानी फिरक, परस्तों की बीमारी पर राजकाजों, मजहबों और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिम्मे आखिर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया।  
क्रीमत बारह आने.

**पंजाब हमें क्या सिखाता है -** महात्मा गांधी की सलाह से अक्टूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दूरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उनका दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गये हैं. क्रीमत चार आने.

**बंगाल और उससे सबक्र-** इस छोटी सी किताब में सन् १९४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरक-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हल करने के लिये बात करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क्रीमत सिर्फ दो आने.

बिबने का पता—मैनेजर 'नया हिन्दू' १४५, सुट्रो गंज, इलाहाबाद.

इस किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकेंगे या अन्यथा सब की किताबें लेने पर एक बार ५६ रुपया कम कर सकेंगे.

## महता गान्देय के बलिदान से सबक्र-

साम्राज्ञा किताबें फ्री प्रेस की बीमारी पर राज काजी 'मधुसूदन' और अन्धारी पहलू से विचार और 'सका' एलज. जिस ने अखिर में देश पिता महात्मा गान्देय तक को हमारे बीच में न रहने दिया.  
क्रीमत चार आने.

**पंजाब हमें क्या सिखाता है -** महता गान्देय की सलाह से अक्टूबर १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दूरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उनका दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गये हैं. क्रीमत चार आने.

**बंगाल और अस से सबक्र-** अस चोटी सी किताब में १९४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फिरक-बाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गयी है और ऐसे झगड़ों को हल करने के लिये बात करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क्रीमत सिर्फ दो आने.

मल्ल का पता—मैनेजर 'नया हिन्दू' १४५, सुट्रो गंज, इलाहाबाद.

मुफ्त की किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ्त ले सकेंगे या अन्यथा सब की किताबें लेने पर एक बार ५६ रुपया कम कर सकेंगे.



# गीता आर कुरान

## लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बढ़पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत. कुरान के बढ़पन और एक एक बात पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में कुरान की पांच मौ से ऊपर आयतों का लफ्फी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि कुरान में जेहाद, आक्राबत, आखरत, जन्नत, जहन्नम. कानिर वगैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ ढाई रुपये.

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

हिन्दू मुस्लिम एकता — इस में यह चार लेखक जमा

३३

## लिकेक—पंडित सुन्दरलाल

अस क्ताब के शुरुअ मेह दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को बतलाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मल्लि जल्लि बल्लिदल्लि सज्जल्लि को बयान किया गया है.

असके बाद क्ताब के लेखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, क्ताब के बढ़पन और एक एक अध्याय को लेकर क्ताब की तल्लिम को बतलाया गया है.

अखर मेह कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बढ़पन और एक एक बात पर कुरान की तल्लिम को बयान किया गया है. असमें कुरान की पाल्लि सु से और आँकल्लों का लफ्फी तरजमे दिया गया है. ये भी बतलाया गया है के कुरान मेह जेहाद, अखरत, जन्नत, जहन्नम, कल्लर वगैरे कसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ ढाई रुपये.

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

हिन्दू मुस्लिम एकता — इस में यह चार लेखक जमा



पांच स ज्यादह किताबें खरीदने वालों और बुकसेलरों को ३३ फ्रीसदी कमीशन दिया जायगा.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के खिम्मे होगा .

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक--श्री मंजर अली सोखता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी कि कांग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले इकमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछघन्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ से उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोखता ने की है जो गांधी वाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी वाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क्रियत सिर्फ दो रुपये.

मिलने का पता--मैनेजर, 'नवा हिन्द' १४५, सुटी गंज, इलाहाबाद.

अब अब स ससी सस .  
पान्च से زیاده کتابوں خریدنے والوں اور بکسہلاروں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائے گا .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا .

## مہاتما گاندھی کی وصیت

لکھک--شہری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سچھاؤ کے 'رپ' میں 'لوک سہوک سلکھ' کا ایک نیا ودمان تیار کیا تھا . اس ودمان میں انہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سلکھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سہوک سلکھ' بنا کر کام کریں .

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریتری کو بلا کر وہاں دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں . یہ چھوٹا سا ودمان دیہش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ویگمیا گاندھی جی کے پریم بہکت شہری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واڈ کو سچھلے اور اپنالے والے دیہش کے لئے گئے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واڈ کو سچھلے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . ۲۲۵ صلکے کی سلندر جلد بلدیہ کتاب کی قیمت صرف دو (دو) روپے .

میلے کا پتہ--منیجر 'نہا ہلد' ۱۴۵ 'مٹھی گنج' الہ آباد .







७७८८१०, १२२२१, राजवाजा भागला २१ वा०००९ ९६११ गुगाह ह०.  
नैपाली कांग्रेस को चाहिये कि वह सतर्क रहे. जनता के क्या हक हैं  
इसका ज्ञान कराती रहे.

२०. १. '५१

—भगवानदीन

## ठक्कर बापा —

ठक्कर बापा की हिन्दुस्तान के बड़े आदमियों में गिनती थी.  
पर और बड़े आदमियों से वह कुछ और ही ढंग के बड़े आदमी थे.  
आम तौर से बड़े आदमी नाम के पीछे नहीं पड़ा करते. नाम ही जन  
के पीछे दौड़ता फिरता है. हाँ, यह ठीक है कि आम तौर से बड़े आ-  
दमी अपने पीछे फिरने वाले नाम को दुतकारते नहीं. यह ठीक है कि  
वह उसे पुषकारते भी नहीं पर उससे बचकर नहीं भागते. ठक्कर  
बापा ने यह ज्ञान लिया कि नाम उनके पीछे लग गया है. पर जब  
उन्होंने यह देखा कि नाम लग कर भी काम उतना ज्यादा नहीं हो  
पाता जितना भारी नाम है तो उन्होंने उस नाम को दुतकार दिया.  
पार्लियेन्ट की मेम्बरी की, पर जब उन्होंने देखा कि वहाँ वह ज्यादा  
काम के नहीं हैं तो वहाँ से उठ दिये—बेमतलब जगह घेरना उन्हें  
पसन्द न आया. एक मरतबा और लोग उन्हें राजधानी में  
पकड़ लाए और उन्हें एक प्रेमपोथी भेंट दी. उसे ले ली और भूल  
गए. और बुढ़ापे के आखिरी दिनों में उन्होंने सुध भी ली तो इसो  
की जिन्हें हिन्दू मुला बैठे थे, जैनों ने याद न किया, बौद्धों ने भी  
खुशाल न किया, दुनिया भर के भाई चारे के कायल मुसलमानों की  
नज़र भी उस तरफ न गई, ईसाई राज में ईसाइयों का ध्यान भी

अन्तर्निहित. यह भी राज काजी मामलों में बड़े रुकावट है.  
निपाली कांग्रेस को चाहिये कि वह सतर्क रहे. जल्ला के किया हक में  
इस का किया कराती रहे.

—बेकुरान दीन

'५१-१-२०

## ठक्कर बापा —

ठक्कर बापा की हिन्दुस्तान के बड़े आदमियों में गिनती थी.  
पर और बड़े आदमियों से वह कुछ और ही ढंग के बड़े आदमी थे.  
आम तौर से बड़े आदमी नाम के पीछे नहीं पड़ा करते. नाम ही जन  
के पीछे दौड़ता फिरता है. हाँ, यह ठीक है कि आम तौर से बड़े आ-  
दमी अपने पीछे फिरने वाले नाम को दुतकारते नहीं. यह ठीक है कि  
वह उसे पुषकारते भी नहीं पर उससे बचकर नहीं भागते. ठक्कर  
बापा ने यह ज्ञान लिया कि नाम उनके पीछे लग गया है. पर जब  
उन्होंने यह देखा कि नाम लग कर भी काम उतना ज्यादा नहीं हो  
पाता जितना भारी नाम है तो उन्होंने उस नाम को दुतकार दिया.  
पार्लियेन्ट की मेम्बरी की, पर जब उन्होंने देखा कि वहाँ वह ज्यादा  
काम के नहीं हैं तो वहाँ से उठ दिये—बेमतलब जगह घेरना उन्हें  
पसन्द न आया. एक मरतबा और लोग उन्हें राजधानी में  
पकड़ लाए और उन्हें एक प्रेमपोथी भेंट दी. उसे ले ली और भूल  
गए. और बुढ़ापे के आखिरी दिनों में उन्होंने सुध भी ली तो इसो  
की जिन्हें हिन्दू मुला बैठे थे, जैनों ने याद न किया, बौद्धों ने भी  
खुशाल न किया, दुनिया भर के भाई चारे के कायल मुसलमानों की  
नज़र भी उस तरफ न गई, ईसाई राज में ईसाइयों का ध्यान भी



बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि यह सुधार राना ने जी से माने नहीं हैं. उसको मनवाप गए हैं और उसके सिर पर बोपे गए हैं. हो सकता है कभी भी वह फिर इनको उठा फेंकने की कोशिश करे. पर इसके लिये नेपाली कांग्रेस को हमेशा तैयार रहना चाहिये. इसमें भी कोई शक नहीं कि इस मुलह में अन्याय की पचास फी सदी जीत हुई है पर उसकी पचास फी सदी हार उसकी जड़ काटने के लिये काफी है और न्याय की पचास फी सदी जीत न्याय की जड़ों को जनता के दिलों में गहरी पहुँचाने के लिये बहुत काफी है. राना की हकूमत का जादू टूटा यह क्या कम है? उसको यह पता तो लगा कि कोरी ताकत बड़ी खतरनाक होती है. बगैर सफाई और ईमानदारी के वह ताकत कभी भी चारों खाने चित्त गिर सकती है. राना ने यह कह कर तो कमाल ही कर दिया कि उसने अब तक नेपाल की आजादी लायम रखी है और उसकी स्वाधीनता को बनाए रख कर उसकी जनता को सुखी बनाया है और नेपाल की काफी तरक्की कर दी है. पता नहीं राना साहब किसे आजादी, किसे स्वाधीनता और किसे तरक्की कहते हैं. इस तरह की बातों को सुनकर नेपाली कांग्रेस को भड़कने की जरूरत नहीं. और इससे भी बबराने की कोई जरूरत नहीं कि हकूमत की बागडोर थामने में राना खानदान का बराबरी का हाथ रहेगा. यानी चौदह आदमियों में से सात उसी के खानदान के होंगे और सात जनता के नुमाइन्दे. तिस पर भी मुखिया राना साहब ही रहेंगे. नेपाली कांग्रेस को यह तो समझ ही लेना चाहिये कि राना का जादू टूट चुका है और अब वह अपनी ताकत को समझ गए हैं और उस से कोई गलत फायदा नहीं

बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि यह सुधार राना ने जी से माने नहीं हैं. उसको मनवाप गए हैं और उसके सिर पर बोपे गए हैं. हो सकता है कभी भी वह फिर इनको उठा फेंकने की कोशिश करे. पर इसके लिये नेपाली कांग्रेस को हमेशा तैयार रहना चाहिये. इसमें भी कोई शक नहीं कि इस मुलह में अन्याय की पचास फी सदी जीत हुई है पर उसकी पचास फी सदी हार उसकी जड़ काटने के लिये काफी है और न्याय की पचास फी सदी जीत न्याय की जड़ों को जनता के दिलों में गहरी पहुँचाने के लिये बहुत काफी है. राना की हकूमत का जादू टूटा यह क्या कम है? उसको यह पता तो लगा कि कोरी ताकत बड़ी खतरनाक होती है. बगैर सफाई और ईमानदारी के वह ताकत कभी भी चारों खाने चित्त कर सकती है. राना ने यह कह कर तो कमाल ही कर दिया कि उसने अब तक नेपाल की आजादी लायम रखी है और उसकी स्वाधीनता को बनाए रख कर उसकी जनता को सुखी बनाया है और नेपाल की काफी तरक्की कर दी है. पता नहीं राना साहब किसे आजादी, किसे स्वाधीनता और किसे तरक्की कहते हैं. इस तरह की बातों को सुनकर नेपाली कांग्रेस को भड़कने की जरूरत नहीं. और इससे भी बबराने की कोई जरूरत नहीं कि हकूमत की बागडोर थामने में राना खानदान का बराबरी का हाथ रहेगा. यानी चौदह आदमियों में से सात उसी के खानदान के होंगे और सात जनता के नुमाइन्दे. तिस पर भी मुखिया राना साहब ही रहेंगे. नेपाली कांग्रेस को यह तो समझ ही लेना चाहिये कि राना का जादू टूट चुका है और अब वह अपनी ताकत को समझ गए हैं और उस से कोई गलत फायदा नहीं



रख कर लिखले गए हैं. इसलिये वह ठीक नहीं है. पर यही बात तो उन्होंने खुद अपने भाशन में की है. उन्होंने भी जिसे बुरा समझा उसे बुरा रँग दिया है और जिसे भला समझा है उसे भला.

जो यह समझें कि पंचानवे तोले दूध में पाँच तोले संख्या है वह इस भाशन को न पढ़ें और जो यह समझें कि पंचानवे तोले सोने में पाँच तोले खोट मिली हुई है वह खोट छोड़कर उससे फायदा उठाएं. हम तो खोट निकाल कर फायदा उठाएंगे ही और बत पड़ा तो उसकी अच्छी अच्छी बातें बगले अंक में अपने परचे में देने की कोशिश करेंगे.

२८. १. '५१.

—भगवानदीन

## नैपाल के सुधार—

हिन्द की सरकार ने नैपाल के मामले में पढ़ कर जिन शर्तों पर राजा और राजा में सुलह करा ही वह वक्त के देखते हुए तो ठीक ही है और जब नैपाली कांग्रेस ने राजा को अपना मुखिया मान लिया तब इनको भी उन शर्तों के मान लेने से इनकार नहीं करना चाहिये. और पहले इलजे में इतने सुधार कुछ मंहगे भी नहीं हैं. नैपाली कांग्रेस को यह समझ लेना चाहिये कि इन सुधारों से नैपाली कांग्रेस की तरह ही न हिन्दुस्तानियों की तसल्ली है, न हिन्दुस्तानी सरकार की. आज अगर हिन्दुस्तानी सरकार के सर पर काशमीर की मंफ्ट सवार न होती और तिब्बत और दूर पूरब की फिकर उसको घेरे हुए न होती तो सुलह की शर्तें यह न होकर कुछ और ही होतीं. यह

कहे हों. अस लै र्हे त्हेक नैपल हों. पर भी बात तो अन्हों ले खुद 'अपे भाशन में की है. अन्हों ने भी जैसे बुरा समझा लै बुरा रङ्ग दिया है और जैसे बुरा समझा है लै बेह.

जो ये समझें के पल्लानवे त्रुले दुरुद में पान्ज त्रुले सल्लेहा हे र्हे अस बेभाशन को न पढ़ें और जो ये समझें के पल्लानवे त्रुले सल्लेहा में पान्ज त्रुले क्हुत मल्ल हूँ हे र्हे क्हुत च्हुत को अस से फल्ले अन्हों. हम तो क्हुत न्कल्ल फल्ले अन्हों. हे और इन पुरा तो अस की अच्ची बातें लल्ले अंक में अपे परचे में दिने की कर्कस करिल्ले.

—बेकान दीन

'२०-१-०१'

## नैपाल के सद्धार ---

हल्ल की सरकार ने नैपाल के मामले में पुरा कर्कस पुरा राजा और राजा में सल्ल कर दी र्हे क्हुत के दिक्कत हूँ तो त्हेक ही हे और जब नैपाली कांग्रेस ने राजा को अप्ना म्किया मान अप्ना त्ब अन को भी उन शर्तों के मान लेने से अन्कार न्हें करा च्हाँ. और पल्ले हल्ल में अल्ल सद्धार क्कु म्हल्ले भी नैपल. कांग्रेस को ये समझ लैदा च्हाँ के अन सद्धारों से नैपाली कांग्रेस की तरह ही न हल्लतान्णों की त्सली है. न हल्लतान्णों सरकार की. अज अक् हल्लतान्णों सरकार के सर पर काश्मीर की च्हेल्ल म्फ सवार न हूँ और त्बत और दूर पुरा की फर्कस अ्कुकु हूँ. ये हूँ न हूँ तो सल्ल की शर्तें ये न हूँ क्कु और हूँ. ये



## कोटा सम्मेलन के सभापति—

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का जलसा विसम्बर में कोटा में हुआ। सभापति थे श्री जयचन्द बिद्यालंकार. आप इतिहास के तो पंडित हैं ही पर आपका नाम भी इतिहासी है. उनके भाशन की 'अमृत पत्रिका' में समालोचना देख कर जी बाहा कि उनका भाशन ध्यान से पढ़ा जाय. हम पढ़ने ही को थे कि 'नया हिन्द' के लिये उसी भाशन के बारे में एक साहब की आलोचना हमारे पास आ पडुँची. और वह 'पत्रिका' की आलोचना से भी बेहद कड़ी थी. अब हमारा शौक और बढ़ा और हमने तीन दिन तीन तीन घंटे देकर उस भाशन को बहुत अच्छी तरह पढ़ा. हमें वह पंक्ताने फीसदी पसंद आया और वह हमें इतना अच्छा मालूम हुआ कि हम अपने पढ़ने वालों को यह सलाह देंगे कि उसे जरूर सहेज कर रखें. वह सहेजने लायक चीज है. कहीं कहीं इतिहास का पक्का जानकार सभापति अगर इतिहास की सीमा लाँच कर प्रचार के मैदान में उतर आया है तो इसमें तुराई ही क्या है ? वह कोई इतिहास तो लिख नहीं रहा था. वह तो सभापति की गद्दी से सम्मेलन के मंच पर से बोल रहा था. तब उस भाशन में से प्रचार की लोट निकाल कर बाक़ी बचे कंचन से क्यों न फ़ायदा उठाया जाय. लहसन के बारे में यह कहावत है कि असल में वह अमृत है, ब्रह्माजी के हाथ से मैले में गिर गया था और इसलिये बहुत बदबूदार हो गया है. पर उससे क्या लोग फ़ायदा नहीं उठाते ? संस्कृत में तो लहसन का नाम रसेन है जिसका मतलब है कि उसमें सब रस हैं. सिर्फ़ एक रस की कमी है. बस यही हाल सभापति के भाशन का है, उसमें अकेले मिठास की कमी है. बिद्यालंकार जी को

## कोटा सेमिन के सभापति —

मल्लि साहब सेमिन का चल्से दूसरे में कोटा में हुआ. सभापति ते शरी जे चल्दर रदिया ललार. आप इतहास के तो पंडित हैं ही पर आँका नाम भी इतहासी है. आँ के बहाशन की 'अमृत पत्रिका' में समालोचना देख कर जी चल्दर के आँ का बहाशन देखान से पढ़ा जाई. हम पढ़ले ही को ते के 'नया हलद' के लिये उसी बहाशन के बारे में एक साहब की आँचल्दर हलदर पास आँचल्दर. और वह 'पत्रिका' की 'आँचल्दर से भी ते हलद की थी. अब हमारा शौक और बढ़ा और हम ते तिन तिन तिन के लिये उसी बहाशन को बहुत अच्छी तरह पढ़ा. हमें वह पंक्ताने फीसदी पसंद आया और वह हमें इतना अच्छा मालूम हुआ कि हम अपने पढ़ले वालों को यह सलाह देंगे कि उसे जरूर सहेज कर रखें. वह सहेजने लायक चीज है. कहीं कहीं इतिहास का पक्का जानकार सभापति अगर इतिहास की सीमा लाँच कर प्रचार के मैदान में उतर आया है तो इसमें तुराई ही क्या है ? वह कोई इतिहास तो लिख नहीं रहा था. वह तो सभापति की गद्दी से सम्मेलन के मंच पर से बोल रहा था. तब उस भाशन में से प्रचार की लोट निकाल कर बाक़ी बचे कंचन से क्यों न फ़ायदा उठाया जाय. लहसन के बारे में यह कहावत है कि असल में वह अमृत है, ब्रह्माजी के हाथ से मैले में गिर गया था और इसलिये बहुत बदबूदार हो गया है. पर उससे क्या लोग फ़ायदा नहीं उठाते ? संस्कृत में तो लहसन का नाम रसेन है जिसका मतलब है कि उसमें सब रस हैं. सिर्फ़ एक रस की कमी है. बस यही हाल सभापति के बहाशन का है, उसमें अकेले मिठास की कमी है. रदियालंकार जी को



७७ ६. लड़ाई राकन क बाए सुलह का काम आमतौर से बरसों चलता रहता है और विदेशी फौजें सुल्ह पर छाई रहती हैं और सुल्ह को तुलसान पहुँचाती रहती हैं. अमरीका फिर लड़ने के लिये सौख लेना चाहता है. यह बात एक या दो फ्रीसदी सही न भी हो तो भी इसमें शक नहीं कि, अमरीका दूर पूरब पर व्याप्त रहना चाहता है. फारमूसा के चारों तरफ जहाजी घेरा डाले रखने का मतलब ही क्या है ? उसे कम से कम बह बेड़ा तो फौरन हटा लेना चाहिये. क्या वह बेड़ा अभी यू. एन. ओ. की इजाजत से वहाँ रुका हुआ है ? क्या उसका कोरिया की लड़ाई से कुछ सम्बन्ध है ? अगर नहीं है तो क्यों नहीं हटता और अगर है तो चीन को कैसे एतबार हो कि अमरीका कोरिया में लड़ाई बन्द करके कोई चाल नहीं खेलना चाहता.

सन '५२ में तीसरी लड़ाई छिड़ कर रहेगी और उस लड़ाई का बड़ा कोरिया और चीन ही होगा. हाँ, अगर फारमूसा से अमरीकी बेड़ा हट गया, कोरिया से बिदेशी फौजें चले दीं और जापान से कोई सुलहनामा होगया तब और तब ही यह आशा की जा सकती है कि तीसरी लड़ाई का मैदान दूर पूरब नहीं होगा.

हिन्दुस्तान जी जान से शान्ति का खादिरामंद है. देखे उसे अपने काम में कहीं तक सफलता होती है.

२७. १. ५१

—मगवानदीन

१३

तहक हैं. लौन्सी रोकने के بعد صلح का काम عام طور سے پرسوں چلتا رہتا ہے. اور بدیسی فوجوں ملک پر چھائی رہتی ہیں اور ملک کو نقصان پہونچاتی رہتی ہیں. امریکہ یہہ لڑنے کے لئے سانس لینا چاہتا ہے. یہ بات ایک یا دو فیصدی سہی نہ بھی ہو تو بھی اس میں شک نہیں کہ امریکہ دور یورپ پر چھائے رہنا چاہتا ہے. فارموسا کے چاروںطرف جہازی کھمرا ڈالے رکھنے کا مطلب ہی کیا ہے ؟ اسے کم سے کم وہ بیڑہ تو فوراً ہٹا لینا چاہئے. کیا وہ بیڑا ابھی یو. این. او. کی اجازت سے وہاں رکا ہوا ہے ؟ کیا اس کا کوریا کی لوائی سے کچھ سمبندہ ہے ؟ اگر نہیں ہے تو کہوں نہیں ہٹتا اور اگر ہے تو چھوں کو کیسے اعتبار ہو کہ امریکہ کوریا میں لوائی بند کر کے کوئی چال نہیں کھیلا چاہتا .

سن ۵۲ میں تیسری لوائی چھ کر رہے کی اور اس لوائی کا لڑا کوریا اور چین ہی ہوا. ہاں اگر فارموسا سے امریکی بیڑہ ہٹ گیا. کوریا سے بدیسی فوجوں چل دیں اور چادان سے کوئی صلحنامہ ہو گیا تب اور تب ہی یہ آشا کی جا سکتی ہے کہ تیسری لوائی کا میدان دور یورپ نہیں ہوگا.

ہندستان جی جان سے شانتی کا خواہشمند ہے. دیکھیں اسے اپنے کام میں کہاں تک سہیلتا ہوتی ہے.

—بھوان دین

۵۱-۱-۲۰



यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति की परवाह किये बगैर और चीन के खिलाफ लड़ाई का अल्टीमेटम दिये बिना एक कोरिया पर और एक चीन के किसी हिरसे पर एटम बम गिरा दें और यह कोई अनोखी बात न समझी जायगी क्योंकि पिछली बड़ी लड़ाई में जापान ने भी तो 'अंगरेजी दो जहाजों को डबोने' के बाद ही अंगरेजों के खिलाफ लड़ाई खिड़ जाने की बात कही थी। हमारे पढ़ने वाले यह तो याद ही रखें कि एटम बम जब भी गिरेगा अचानक ही गिरागा। वह इथियार ही इस क्रिसम का नहीं है जो कह कर गिराया जाय और उस इथियार का नशा ही इतना जबरदस्त है कि वह अपने मालिक पर इतना जोर का नशा लाता है कि उसकी सूख वृक्ष गुम हो जाती है।

कनाडा और आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ में शामिल तो हैं मगर अमरीका के पास होने के नाते यह आधे अमरीकी हैं इसलिये यह भी जहाँ तक बने अमरीका के सुर में सुर मिलते हैं और इसलिये इनकी दूर पूरब की नीति डावाँडोल सी रहती है। हाँ, बर्तानिया की नीत दूर पूरब के मामले में फिर भी काफी साफ है उसका हांगकांग बचा रहे तो वह सब बही चाहता है जो चीन चाहता है। दूर पूरब में शान्ति की सब से ज्यादा इच्छा है हिन्दुस्तान को, इन्दोनिशिया को और लंका को।

हाल ही में कामनवेल्थ के सारे मुल्कों ने मुलह की एक तजवीब यू. एन. ओ. के पास भेजी थी। वह चीन को पूरी पूरी पसंद नहीं आई। उसने 17 जनवरी को अपना जवाब भेजा है और उसने उस जवाब में यू. एन. ओ. के बारे में जो शक दिखाए हैं उन शकों के बारे में

१०. लिन. ओ. की सरकार समिति की त्रुटि क्ले भूखण्डों के خلاف लुआनी का अल्टीमेटम दिये बाद एक कोरिया पर और एक चीन के किसी हिससे पर अल्टीमेटम गिरा दें और यह कोई अनोखी बात न समझी जायगी क्योंकि पिछली बड़ी लड़ाई में जापान ने भी तो 'अंगरेजी दो जहाजों को डबोने' के बाद ही अंगरेजों के खिलाफ लड़ाई खिड़ जाने की बात कही थी। हमारे पढ़ने वाले यह तो याद ही रखें कि एटम बम जब भी गिरा अचानक ही गिरागा। वह इथियार ही इस क्रिसम का नहीं है जो कह कर गिराया जाय और उस इथियार का नशा ही इतना जबरदस्त है कि वह अपने मालिक पर इतना जोर का नशा लाता है कि उसकी सूख वृक्ष गुम हो जाती है।

कनाडा और आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ में शामिल तो हैं मगर अमरीका के पास होने के नाते यह अमरीकी हैं इसलिये यह भी जहाँ तक बने अमरीका के सुर में सुर मिलते हैं और इसलिये इनकी दूर पूरब की नीति डावाँडोल सी रहती है। हाँ, बर्तानिया की नीत दूर पूरब के मामले में फिर भी काफी साफ है उसका हांगकांग बचा रहे तो वह सब बही चाहता है जो चीन चाहता है। दूर पूरब में शान्ति की सब से ज्यादा इच्छा है हिन्दुस्तान को, इन्दोनिशिया को और लंका को।

हाल ही में कामनवेल्थ के सारे मुल्कों ने मुलह की एक तजवीब यू. एन. ओ. के पास भेजी थी। वह चीन को पूरी पूरी पसंद नहीं आई। उसने 17 जनवरी को अपना जवाब भेजा है और उसने उस जवाब में यू. एन. ओ. के बारे में जो शक दिखाए हैं उन शकों के बारे में



नियम यू. एन. ओ. में शामिल कर लिया जाय. पर अमरीका  
नियम को यू. एन. ओ. में नहीं आने देना चाहता. यही अमरीका की  
गिमा धींगी है और यही यू. एन. ओ. की कमजोरी है और यही वह  
झी है जिससे कोरिया का गोरखन्दा सुलभेगा.

अभी तीन मुल्कों को यह काम सौंपा गया था कि वह कोरिया को  
लड़ाई को छुड़म देकर रोक देने की कोशिश करें इन तीन मुल्कों में  
इन्दुस्तान भी शामिल था और वही अगुवा भी था. वह चीन से  
मेलो. चीन ने उन तीन आदिमियों की कमेटी को ही गैर कानूनी बता  
देया दलील यह दी कि यू. एन. ओ. में जो चीन शामिल है, वह  
चीन नहीं और जो चीन है वह शामिल नहीं. इसलिये मामला आगे  
न बढ़ पाया और लड़ाई अपनी चाल से दौड़ती चली जा रही है.

कोरिया के मामले को ख़तम करने की मंशा न अमरीका की है  
और न कई और पच्छिमी मुल्कों की है. पूरब के सब मुल्क लड़ाई  
बन्द करना चाहते हैं. अमरीका का नफा लड़ाई को लम्बा करने में  
है क्योंकि वह लड़ाई के रहते रहते 'कम्यूनिज्म आया' का शोर मचा  
कर लड़ाई की तैयारी को उस हद तक पहुँचा देना चाहता है जब वह  
एक से ज्यादा मोरचे खोल सके और जी चाहें जहाँ खोल सके और  
साथ ही साथ घर का बचाव कर सके अमरीका को तीसरी लड़ाई  
में बर्तानिया से कम ख़तरा है. इसलिये वह बंकिर है. और उमका कुछ  
बेफिकरी उन एटम बमों पर है जिसका उसने जुट्टियां जमा कर रखी  
हैं. अगर जनरल मैकआर्थर ट्रूमैन को यह विरवास दिला दें कि सिर्फ  
अमरीका की फौजें दूर पूरब के लिये काफी हैं तो कल ट्रूमैन साहब

हैं कि चीन यू. एन. ओ. में शामिल कर लिया जाये. पर  
अमरीका चीन को यू. एन. ओ. में शामिल नहीं आने देना चाहता.  
यही अमरीका की दहशत दहलाना चाहती है और यही यू. एन. ओ. की कमजोरी  
है और यही वह कड़ी है जिस से कोरिया का गोरखन्दा सुलभेगा.

अभी तीन मुल्कों को यह काम सौंपा गया था कि वह कोरिया की  
लड़ाई को छुड़म देकर रोक देने की कोशिश करें. इन तीन मुल्कों में  
इन्दुस्तान भी शामिल था और वही अगुवा भी था. वह चीन से  
मेलो. चीन ने उन तीन आदिमियों की कमेटी को ही गैर कानूनी बता दिया. दलील  
यह दी कि यू. एन. ओ. में जो चीन शामिल है, वह चीन नहीं और  
जो चीन है वह शामिल नहीं. इसलिये मामला आगे  
न बढ़ पाया और लड़ाई अपनी चाल से दौड़ती चली जा रही है.

कोरिया के मामले को ख़तम करने की मंशा न अमरीका की है और  
न कई और पच्छिमी मुल्कों की है. पूरब के सब मुल्क लड़ाई  
बन्द करना चाहते हैं. अमरीका का नफा लड़ाई को लम्बा करने में  
है क्योंकि वह लड़ाई के रहते रहते 'कम्यूनिज्म आया' का शोर मचा  
कर लड़ाई की तैयारी को उस हद तक पहुँचा देना चाहता है जब वह  
एक से ज्यादा मोरचे खोल सके और जी चाहें जहाँ खोल सके और  
साथ ही साथ घर का बचाव कर सके अमरीका को तीसरी लड़ाई  
में बर्तानिया से कम ख़तरा है. इसलिये वह बंकिर है. और उमका कुछ  
बेफिकरी उन एटम बमों पर है जिसका उसने जुट्टियां जमा कर रखी  
हैं. अगर जनरल मैकआर्थर ट्रूमैन को यह विरवास दिला दें कि सिर्फ  
अमरीका की फौजें दूर पूरब के लिये काफी हैं तो कल ट्रूमैन साहब



हाँगांग पर वह अपना अट्टा जमाए हुए है। यह राजनीति के दुटपेपन की खोज पहेलियाँ हैं। बर्तानिया कोरिया के मामले में सुलह पसन्द है, समझौता पसन्द है और यह चाहता है कि जल्दी से जल्दी कोई निबटारा हो जाय। इसके खिलाफ अमरीका जोर पसन्द है, जबरदस्ती पसन्द है, उलमन पसन्द है और ज्यादा से ज्यादा देर लगाना चाहता है।

कोरिया में चीनियों का जोर इतना बढ़ गया है कि उमने अमरीका का पांसा पलट दिया है और अमरीका इतना चिढ़ गया है कि वह इस कोशिश में लगा हुआ है कि जल्दी से जल्दी यू. एन. ओ. चान और चीनी सरकार का 'एग््रेसर' कह दे। और चीन अब तक एग््रेसर मान लिया गया होता अगर बर्तानिया अमरीका की राय का होता। बर्तानिया यह खूब समझता है कि चीन को एग््रेसर कहना तीसरी लड़ाई शुरू करना है और तीसरी लड़ाई शुरू करना दूर पूरब में फैस जाना है और दूर पूरब में फंसना अपने घर का खतरे के लिये खुला छोड़ना है और योरप में नए मारचे के लिये सामान खड़ा करना है जो आज कोरिया में हो रहा है वह कल जरमनी में होने लगा तो क्या होगा ? बर्तानिया इसी दूरदर्शी से चीन को अग््रेसर नहीं कहना चाहता। और इस ढील ढल में चीनी फौज कोरिया में न माखूस कब तक आगे बढ़ती रहेगी।

कोरिया ने गोरखधन्दे का रूप ले लिया है। इस गोरखधन्दे की एक कड़ी है चीन का यू. एन. ओ. में शामिल न रहना। चीन यू. एन. ओ. में शामिल नहीं इसलिये यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा

हानक लागे, वे अपना अडा जमाए होंगे है। ये राज नेमत के दोबरे मन की खोज पहेलियाँ हों। ब्रिटानिया कोरिया के मामले में सलह पसन्द है, समझौता पसन्द है, और ये चाहता है कि जल्दी से जल्दी कोई निबटारा हो जाय। इसके खिलाफ अमरीका जोर पसन्द है, जबरदस्ती पसन्द है, उलमन पसन्द है और ज्यादा से ज्यादा देर लगाना चाहता है।

कोरिया में खोज पहेलियों का जोर अतना बढ़ गया है कि उस ने अमरीके का पांसा पलट दिया है और अमरीके अतना चिढ़ गया है कि उस कोशिश में लगा हुआ है कि जल्दी से जल्दी यू. एन. ओ. जल्दी से जल्दी से 'अग्रेसर' कह दे और जल्दी से जल्दी से अग्रेसर मान लिया गया होना अग्रेसर ब्रिटानिया अमरीके की राय का खतरे के लिये खुला छोड़ना है और तीसरी लड़ाई शुरू करना दूर पूरब में फैस जाना है और दूर पूरब में फंसना अपने घर का खतरे के लिये खुला छोड़ना है और योरप में नए मारचे के लिये सामान खड़ा करना है जो आज कोरिया में हो रहा है वह कल जरमनी में होने लगा तो क्या होगा ? बर्तानिया इसी दूरदर्शी से चीन को अग्रेसर नहीं कहना चाहता। और इस ढील ढल में चीनी फौज कोरिया में न माखूस कब तक आगे बढ़ती रहेगी।

कोरिया ने गोरखधन्दे का रूप ले लिया है। इस गोरखधन्दे की एक कड़ी है चीन का यू. एन. ओ. में शामिल न रहना। चीन यू. एन. ओ. में शामिल नहीं इसलिये यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा



اور پچھم دونوں می جمب سی سوی . جن س .  
 طرح سمجھتا ہے . پر وہ کیا کرے ؟ چلی سرکار اس سے  
 اٹلی چکر مہم پر گئی ہے کہ اُس مہم سے اُسے نکلنے نہیں  
 بن رہا ہے . جن کی جلتا کوریا نے معاملے سے اُرب اُٹھی ہے اور  
 وہ کہہ رہی اندھی بن کر چھٹی سرکار کی پرواہ کئے بغیر کوریا کو  
 بچانے کے لئے در پر سکتی ہے . صرف اس ناتے نہیں کہ وہ اپنے  
 پڑوسی کوریا کو ہی طرح برباد ہوتے ہوئے دیکھ رہی ہے بلکہ اس ناتے  
 بھی کہ تیسری لڑائی کی بڑی آگ تہوں کے ساتھ اُسکے ملک چین  
 کی طرف بھی بڑھتی چلی آ رہی ہے .

کوریا مہم ہو . این . او . کی طرف سے یوں تو کئی ملک لو رہ  
 مہم پر گلا لا رہی ہو ملک مہم — برطانیہ اور امریکہ . یہ دونوں  
 بڑے ملک مہم . انکی فوجی طاقت کا کوریا کوئی مقابلہ  
 نہیں . اور اگر ہم یہ کہیں کہ کوریا والے اور چین کے کچھ  
 والے تھوڑے دنوں کے لئے یہ دو ملک کافی سے زیادہ مہم تو کوئی پتہ  
 نہیں کہ کوریا پر کب کیا آفت آجائے . ہاں . دنیا کی تیسری  
 لڑائی تب تک نہیں چھوڑتی جب تک یہ . این . او . کی فوجوں سیدھے  
 سیدھے چین پر دھاوا نہیں بولتیں ' پر یہ دھاوا اُس وقت تک  
 نہیں ہو سکتا جب تک برطانیہ اور امریکہ کوریا کے ہر معاملے مہم  
 ہوا در پرورب کے ہر معاملے مہم ایک رائے نہ ہو .

یہ اچھا ہی سمجھئے کہ برطانیہ اور امریکہ ایک رائے نہیں  
 مہم پر بھی کلدے سے کلدھا ملا کر کوریا کے میدان مہم پر رہ  
 مہم . اور برطانیہ اُن چھٹوں سے لو رہا ہے جن کے دیس مہم

تارہ سمجھتا ہے . پر بھ کھا کرے ؟ چلی سرکار اس سے  
 اٹلی چکر مہم پر گئی ہے کہ اُس مہم سے اُسے نکلنے نہیں  
 بن رہا ہے . جن کی جلتا کوریا نے معاملے سے اُرب اُٹھی ہے اور  
 وہ کہہ رہی اندھی بن کر چھٹی سرکار کی پرواہ کئے بغیر کوریا کو  
 بچانے کے لئے در پر سکتی ہے . صرف اس ناتے نہیں کہ وہ اپنے  
 پڑوسی کوریا کو ہی طرح برباد ہوتے ہوئے دیکھ رہی ہے بلکہ اس ناتے  
 بھی کہ تیسری لڑائی کی بڑی آگ تہوں کے ساتھ اُسکے ملک چین  
 کی طرف بھی بڑھتی چلی آ رہی ہے .

کوریا مہم ہو . این . او . کی طرف سے یوں تو کئی ملک لو رہ  
 مہم پر گلا لا رہی ہو ملک مہم — برطانیہ اور امریکہ . یہ دونوں  
 بڑے ملک مہم . انکی فوجی طاقت کا کوریا کوئی مقابلہ  
 نہیں . اور اگر ہم یہ کہیں کہ کوریا والے اور چین کے کچھ  
 والے تھوڑے دنوں کے لئے یہ دو ملک کافی سے زیادہ مہم تو کوئی پتہ  
 نہیں کہ کوریا پر کب کیا آفت آجائے . ہاں . دنیا کی تیسری  
 لڑائی تب تک نہیں چھوڑتی جب تک یہ . این . او . کی فوجوں سیدھے  
 سیدھے چین پر دھاوا نہیں بولتیں ' پر یہ دھاوا اُس وقت تک  
 نہیں ہو سکتا جب تک برطانیہ اور امریکہ کوریا کے ہر معاملے مہم  
 ہوا در پرورب کے ہر معاملے مہم ایک رائے نہ ہو .

یہ اچھا ہی سمجھئے کہ برطانیہ اور امریکہ ایک رائے نہیں  
 مہم پر بھی کلدے سے کلدھا ملا کر کوریا کے میدان مہم پر رہ  
 مہم . اور برطانیہ اُن چھٹوں سے لو رہا ہے جن کے دیس مہم

تارہ سمجھتا ہے . پر بھ کھا کرے ؟ چلی سرکار اس سے  
 اٹلی چکر مہم پر گئی ہے کہ اُس مہم سے اُسے نکلنے نہیں  
 بن رہا ہے . جن کی جلتا کوریا نے معاملے سے اُرب اُٹھی ہے اور  
 وہ کہہ رہی اندھی بن کر چھٹی سرکار کی پرواہ کئے بغیر کوریا کو  
 بچانے کے لئے در پر سکتی ہے . صرف اس ناتے نہیں کہ وہ اپنے  
 پڑوسی کوریا کو ہی طرح برباد ہوتے ہوئے دیکھ رہی ہے بلکہ اس ناتے  
 بھی کہ تیسری لڑائی کی بڑی آگ تہوں کے ساتھ اُسکے ملک چین  
 کی طرف بھی بڑھتی چلی آ رہی ہے .

کوریا مہم ہو . این . او . کی طرف سے یوں تو کئی ملک لو رہ  
 مہم پر گلا لا رہی ہو ملک مہم — برطانیہ اور امریکہ . یہ دونوں  
 بڑے ملک مہم . انکی فوجی طاقت کا کوریا کوئی مقابلہ  
 نہیں . اور اگر ہم یہ کہیں کہ کوریا والے اور چین کے کچھ  
 والے تھوڑے دنوں کے لئے یہ دو ملک کافی سے زیادہ مہم تو کوئی پتہ  
 نہیں کہ کوریا پر کب کیا آفت آجائے . ہاں . دنیا کی تیسری  
 لڑائی تب تک نہیں چھوڑتی جب تک یہ . این . او . کی فوجوں سیدھے  
 سیدھے چین پر دھاوا نہیں بولتیں ' پر یہ دھاوا اُس وقت تک  
 نہیں ہو سکتا جب تک برطانیہ اور امریکہ کوریا کے ہر معاملے مہم  
 ہوا در پرورب کے ہر معاملے مہم ایک رائے نہ ہو .

یہ اچھا ہی سمجھئے کہ برطانیہ اور امریکہ ایک رائے نہیں  
 مہم پر بھی کلدے سے کلدھا ملا کر کوریا کے میدان مہم پر رہ  
 مہم . اور برطانیہ اُن چھٹوں سے لو رہا ہے جن کے دیس مہم



# मया हिन्दु

**हमारी राय**

फरवरी सन् '५१

कोरिया में लड़ाई लड़ कर जंग की संस्था बन गई है—यान्ति का इदारा नहीं रह गई.

अमरीका वाले आमतौर से और ट्रैन साइब खासतौर से यह नोट कर लें कि भड़क से भड़क पैदा होती है. भड़क से न कभी शान्ति हुई और न हो सकती है.

शान्ति के नाम पर लड़ाई की तैयारी से दुनिया यह नहीं समझ सकती कि हमारी का शान्ति चाहता है.

सड़ई में जब भी जो जाता है वह हारा है, कमजोर बना है और दुःशस्त्र के लिये निष्क्रिय हो गया है। हारे का क्या, वह तो मर ही जाता है।

22. 23. 24.

—भगवान्

# कोरिया का भूमला--

कोरिया का मामला लम्बा ही नहीं होता जा रहा बुरी तरह छलमत्ता जा रहा है। अगर आज यू. एन. ओ. सच्चे मानों में दुनिया भर की पंचायत होती तो कोरिया की हालत पर कुछ तरस खानी पर वह तो आज कल बहुत हद तक अमरीका के हाथ में खेल रही है। कोरिया हर तरह से पिस रहा है, बरबाद हो रहा है। कमजोर होता जा रहा है और अगर कुछ दिनों इसी तरह दो पाटों के बीच में पिसता रहा तो इतना कमजोर हो जायगा कि उसका उठना बरसों के लिये मुमकिन न रह जायगा। जो कोरिया आज आपान के लिये अमरीकियों को तना हुआ तमंचा दिखाई देता है फिर वह टूटा हुआ

تہا ولد  
ہساری دے  
فروری سن ۱۹۰۱ء

فروری سن ۱۹۵۰ء      ہمدانی ریلے      لہا ہمدانی

امریکہ والے عام طور سے اور ترموہن صاحب خاص طور سے یہ نکتہ کو لیں کہ بھوک سے بھوک پیدا ہوتی ہے۔ بھوک سے نہ کبھی شانتی ہوئی اور نہ ہو سکتی ہے۔

شاعری کے نام پر لہوائی کی تیار سے دنیا یہ نہیں سمجھ سکتی کہ امریکہ شاعری چاہتا ہے۔

ہمیشہ کے لئے نکما ہو گا ہے۔ ہمارے کا کیا؟ تو مری جاتا ہے۔  
میں جب بھی جو جیتتا ہے وہ ہمارا ہے، کمزور بننا ہے اور

一、五、三

11-10

—پیشہ کا

کوریہ کا معاملہ لمبا ہی نہیں ہوتا جا رہا بڑی طرح الجھتا جا رہا ہے۔ اگر آج یو۔ این۔ او۔ سچے معلوموں میں دنیا بھر کی پمفلٹسیت ہوتی تو کوریہ کی حالت پر کچھ ترس کھاتی۔ پر وہ ہر طرح سے پس رہا ہے، برباد ہو رہا ہے، کمزور ہوتا جا رہا ہے اگر کچھ دنوں اسی طرح دو باتوں کے پیچھے میں پستا رہا تو آئندہ کمزور ہو جائے گا کہ اُسکا اٹھنا برسوں کے لئے ممکن نہ رہ جائے گا۔



जायगी और जब तक फिर यू. एन. ओ. किसी एक मुल्क के हाथ की कल्पवली न बने तब तक दुनिया भर में शान्ति छाई रहेगी.

जिन बातों, जिन कामों या जिन स्त्रीओं से दूसरे का, दूसरे मुल्क का, दूसरी नेशन का नुकसान होता है उन बातों, उन कामों और उन स्त्रीओं का विश्वास जितना खतरे में हो और जितनी जल्दी टूटे उतना ही अच्छा। ऐसी बातों में विश्वास अटल हुआ ही नहीं करता। विश्वास तो नेक और भले कामों में ही ऐसा हुआ करता है जिसे न कभी कोई खतरा होता है और न कभी वह विश्वास टल सकता है।

ट्रमैन साहब के हवा पर बखेरे एलान पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है पर यहाँ इतना लिखना काफ़ी होगा कि यह सब शोर इसलिये मचाया जा रहा है कि दुनिया धोके में आकर अमरीका को उस बड़ी तैयारी से न रोके जो वह तीसरी लड़ाई लड़ने के लिये करना चाहता है. और एलान में लड़ाई की तैयारी का ही ज्यादा ज़िक्र किया गया है. आखिर यह तैयारी और की हो किस तरह जा सकती थी. अमरीका के पूँजीपति खतरे का डर दिखाए बिना पैसा भी कैसे देते. पर कैसे हैं हम लोग जो इस सब तैयारी को यह समझ बैठे हैं कि यह शान्ति क़ायम रखने के लिये की जा रही है?

अगर यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा समिति उस तरह की लड़ाई की तैयारियों को न जोर से रोक सकती है और न इस्लामाब्दी हंग से रोक सकती है तो वह तीसरी लड़ाई को होने से नहीं रोक सकती. पर सुराकिल यही है कि आजकल यू. एन. ओ.

میں نے کہا: "یہ تو ایک عجیب سا آدمی ہے۔ اس نے کہا: "یہ تو ایک عجیب سا آدمی ہے۔ اس نے کہا: "یہ تو ایک عجیب سا آدمی ہے۔"

جین باتوں، جن کاموں یا جن اسکیموں سے دوسرے کا، دوسری نہیں کا نقصان ہوتا ہے اُن باتوں، اُن کاموں اور ملک کا، دوسری نہیں کا نقصان ہوتا ہے اُن باتوں، اُن کاموں اور ملکہ کا، دوسری نہیں کا نقصان ہوتا ہے اُن باتوں، اُن کاموں اور

تقریباً صاحب کے ہوا پر بکھڑے اعلان پر بہت کچھ لکھا جاسکتا ہے پر یہاں اتنا لکھنا کافی ہوگا کہ یہ سب شور اسٹو متجایا جا رہا ہے کہ دنیا دھوکے میں آکر امریکہ کو اُس بڑی تیاری سے نہ روکے جو وہ تیسری لڑائی لڑنے کیلئے کرنا چاہتا ہے۔ اور اعلان میں لڑائی کی تیاری کا ہی زیادہ ذکر کیا گیا ہے۔ آخر یہ تیاری اور کی ہی کسطرح جاسکتی تھی۔ امریکہ کے پونجی بستی خطرے کا قارِ دکھائے بلا پیسہ بھی کیسے دیتے۔ پر کیسے ہم لوگ جو اِس سب تیاری کو یہ سمجھ رہے ہیں کہ یہ شائع قائم رکھنے کے لیڈ کی جا رہی ہے۔

انگریزوں۔ امین۔ او۔ اور اُسکی سرکشا سمیٹی اُس طرح کی  
لوٹائی کی ٹھادوں کو نہ زور سے دِک سکتی ہے اور نہ اخلاقی  
تھلک سے دِک سکتی۔ ہ تو وہ تیسری لوٹائی کو ہونے سے  
نہیں دِک سکتی یہ مشکل یہی ہے کہ آجکل یو۔ این۔ او۔



सारे मुल्कों को क्या? आपन के पड़ोसियों को तो यह सुनकर खुरी होगी कि अमरीका की जापान पर छाप रहने की रकीम खतरे है।

(४) चौथे उसको इस बात पर विश्वास हो सकता है कि वह गेरिया पर छाकर धीरे धीरे चीन को अपने असर में ले आया और फिर रूस को इतना कमजोर बना देगा कि वह अपना बचाव भी कर सके. अगर उसका यह विश्वास खतरे में है तो इससे भी किसी मुल्क को क्या? और दूसरे मुल्क अमरीका की इस बात में क्यों रह रह करें?

(५) पाँचवें अमरीका को इस बात में विश्वास हो सकता है कि आरमुसा के चारों तरफ अमरीकी जहाजी वेड़े के रहते रहते वह कभी भी चांगकाई शेक को चीन पर हमले के लिये तैयार कर सकता है और इस तरह नया मोरचा खड़ा करके कोरिया के मोरचे को कमजोर बना सकता है. अगर उसका यह विश्वास खतरे में है तो इसकी दुनिया क्यों परवाह करे? और क्यों अमरीका की साम्राजवादी रीति की मदद करे?

(६) छठे अमरीका को यह विश्वास हो सकता है कि यू. एन. और उसकी सुरक्षा कौन्सिल हमेशा उसके हाथ का खिलौना बनी रहेगी और वह कभी भी चीन के असली गुमाइन्दे को यू. एन. ओ. में नहीं आने देगा. अगर उसका यह विश्वास खतरे में है तो इससे तो बहुत से मुल्कों को खुरी ही होगी. क्योंकि कुछ मुल्क सच्चे जी से यह समझे हुए हैं कि जैसे ही चीन यू. एन. ओ. में शामिल

दूसरे मुल्कों को क्या? जापान के पड़ोसियों को तो यह सुनकर खुरी ही होगी कि अमरीका की जापान पर छाप रहने की रकीम खतरे में है.

(७) चोथे अस्को इस बात पर विश्वास होसकता है के वे कोरिया पर चहा कर देहरे देहरे चीन को लगे लगे में ले आने का और पेर दोस को अन्ना कमजोर बना देगा के वे अन्ना बचावे भी न कर सके. अस्को ये विश्वास खतरे में है तो अस् से भी किसी मुल्क को क्या? और दूसरे मुल्क अमरीके की इस बात में क्यों मदद करें?

(८) पाँचवें अमरीके को इस बात में विश्वास होसकता है के आरमुसा के चारों तरफ अमरीकी जहाजी बेड़े के रहते रहते वे कभी भी चांग काई शेक को चीन पर हमले के लिये तैयार कर सकता है और अस्तर नया मोरचा के कोरिया के मोरचे को कमजोर बना सकता है. अस्को ये विश्वास खतरे में है तो अस्की दुनिया को क्यों पुरावे करें? और कोस अमरीके की साम्राजवादी रीति की मदद करें?

(९) छठे अमरीके को ये विश्वास होसकता है के यू. एन. ओ. और अस्की सुरक्षा कौन्सिल हमेशे अस्के हाथ का खिलौना बनी रहेगी और वे कभी भी चीन के असली गुमाइन्दे को यू. एन. ओ. में नहीं आने देंगा. अस्को ये विश्वास खतरे में है तो अस् से भी दूसरे मुल्कों को खुरी ही होगी. क्योंकि कुछ मुल्क सच्चे जी से ये समझे हुए हैं कि जैसे ही चीन यू. एन. ओ. में शामिल



मवलब है यह साफ़ साफ़ नहीं खोला. हम अपने पढ़ने वालों के लिये खुद ही कुछ अंदाज़ा लगा कर लिखे देते हैं :—

(१) एक तो अमरीका को इस बात में विरवास हो सकता है कि एटम बम का भेद सिर्फ़ वहीं जानता है दूसरा और कोई मुल्क नहीं. अगर यह भेद ख़तरे में तो दुनिया उसकी इस अघील को क्यों सुनेगी. क्या अमरीका यह चाहता है कि सारे मुल्क अमरीका के एटम बम के भेद को बचाए रखने के लिये अपने अपने यहां के विज्ञानियों को जेल में डाल दें या फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा दें.

(२) दूसरा इस बात में विरवास हो सकता है कि डालर की मार्शल मदद से वह सारे मुल्कों पर छा सकता है. जहां मुनासिब समझे वहाँ अपने हवाई और समन्दरी अड्डे बना सकता है. अगर उसकी यह रक़ीम ख़तरे में है तो इसकी दुनिया क्यों परबाह करे. कोई मुल्क अगर अमरीका से डालर का क़र्ज़ नहीं चाहता तो दूसरे मुल्क उसको क्यों मजबूर करें. या अगर कोई मुल्क उन शर्तों पर अमरीका से डालर का क़र्ज़ लेना नहीं चाहता जिन शर्तों पर अमरीका देने के लिये तैयार है तो और मुल्कों को क्या गरज़ जो उस मुल्क को अमरीका की शर्तें समझने की कोशिश करें. कोई मुल्क अमरीका का इस मार्शल मदद के काम में क्यों एजेंट या कनवेंसर बने.

(३) तीसरे अमरीका को इस बात में विरवास हो सकता है कि वह जापान पर बरसों छाया रहेगा और उसे अमरीका की चीज़ों का बाजार बनाए रखेगा. अगर यह बात ख़तरे में है तो इससे

से अन का किया مطلب है ये साफ़ साफ़ बेहोस कहोला. हम अपने बड़े बालों के लिये खुद ही कुछ अंदाज़ा लगा कर लिखे देते हैं :—

(१) एक तो अमरीका को इस बात में विरवास हो सकता है कि एटम बम का भेद सिर्फ़ वहीं जानता है दूसरा और कोई मुल्क नहीं. अगर यह भेद ख़तरे में है तो दुनिया उसकी इस अघील को क्यों सुनेगी. क्या अमरीका यह चाहता है कि सारे मुल्क अमरीका के एटम बम के भेद को बचाए रखने के लिये अपने अपने यहां के विज्ञानियों को जेल में डाल दें या फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा दें.

(२) दूसरा इस बात में विरवास हो सकता है कि डालर की मार्शल मदद से वह सारे मुल्कों पर छा सकता है. जहां मुनासिब समझे वहाँ अपने हवाई और समन्दरी अड्डे बना सकता है. अगर उसकी यह रक़ीम ख़तरे में है तो इसकी दुनिया क्यों परबाह करे. कोई मुल्क अगर अमरीका से डालर का क़र्ज़ नहीं चाहता तो दूसरे मुल्क उसको क्यों मजबूर करें. या अगर कोई मुल्क उन शर्तों पर अमरीका से डालर का क़र्ज़ लेना नहीं चाहता जिन शर्तों पर अमरीका देने के लिये तैयार है तो और मुल्कों को क्या गरज़ जो उस मुल्क को अमरीका की शर्तें समझने की कोशिश करें. कोई मुल्क अमरीका का इस मार्शल मदद के काम में क्यों एजेंट या कनवेंसर बने.

(३) तीसरे अमरीका को इस बात में विरवास हो सकता है कि वह जापान पर बरसों छाया रहेगा और उसे अमरीका की चीज़ों का बाजार बनाए रखेगा. अगर यह बात ख़तरे में है तो इससे



‘घर खतरे में है’ की आवाज उस वक़्त उठा रहा है जब कोरिया को यह आवाज उठानी चाहिये थी कि ‘हमारा घर मिट गया, मिटरहा है, और एडुनिया के लोगो! तुम्हारे देखते कब तक और मिटता रहेगा’ हमें तो ऐसा मालूम होता है कि कोरिया के कराहने की आवाज को दबाने के लिये ही अमरीका ने पंचम सूर में यह आवाज उठाना शुरू कर दिया कि ‘हमारा घर खतरे में है’.

द्रमैन साहब की दूसरी आवाज है, ‘हमारी जनमनी यानी हमारी नेशन खतरे में है’. इनसान हमारी राय में उस दिन मर जाता है जिस दिन उसमें इनसानियत नहीं रह जाती. इनसानियत समेत यानी इनसानियत के रहते रहते इनसान के मरने से इनसान नहीं मरता. वह तो मरने की जगह अमर हो जाता है जैसे गाँबी जी. यही हाल नेशन का होता है. जनमनीयत रहते कोई जनमनी नहीं मरती. जनमनीयत खोकर जनमनी का क्या जीना और क्या मरना. अगर अमरीका की नेशन की नेशनियत कायम है तो उसे कोई खतरा नहीं होना चाहिये. कोई नेशन बाहरी खतरे से नहीं मरा करती.

नेशन नाश होती है अन्दर के खतरे से. तो क्या द्रमैन साहब अमरीकी नेशन में कोई गड़बड़ी देख रहे हैं? अगर नहीं तो ‘हमारी नेशन खतरे में है’ की आवाज कैसी? जापान जिसके सिर पर अमरीका का पांव है वह ‘नेशन खतरे में है’ की आवाज उठाए तो कुछ ठीक भी हो सकता है. पर वह तो आज भी अपनी जापानी नेशन को अटल समझे हुए है. कोरिया जिसकी नेशन पर आए दिन बम गिरते रहते

‘हमारी राय’ फरवरी सन् १९११

नवा हिन्द

‘कहर खतरे में है’ की आवाज उस वक़्त उठा रहा है जब कोरिया को यह आवाज उठानी चाहिये थी कि ‘हमारा कहर मर गया, मर रहा है’ और अरे दुनिया के लोगो! तुम्हारे देखते कब तक और मरता रहेगा. हमें तो ऐसा मालूम होता है कि कोरिया के कराहने की आवाज उठाना शुरू कर दिया कि ‘हमारा कहर खतरे में है’.

त्रुमैन साहब की दूसरी आवाज है ‘हमारी जलमनी यानी हमारी नेशन खतरे में है’. आसान हमारी राय में उस दिन मर जाता है जिसमें आसानियत नहीं रह जाती. आसानियत समेत यानी आसानियत के रहते रहते आसान के मरने से आसान नहीं मरता. वह तो मरने की जगह अमर हो जाता है जैसे ग़ल्लेवा जी. यही हाल नेशन का होता है. जनमनीयत रहते कोई जलमनी नहीं मरती. जनमनीयत खोकर जलमनी का क्या जीना और क्या मरना. अगर अमरीकी नेशन की नेशनियत कायम है तो उसे कोई खतरा नहीं होता.

नेशन नाश होती है अन्दर के खतरे से. तो क्या त्रुमैन साहब अमरीकी नेशन में कोई गड़बड़ी देख रहे हैं? अगर नहीं तो ‘हमारी नेशन खतरे में है’ की आवाज कैसी? जापान जिसके सिर पर अमरीका का पांव है वह ‘नेशन खतरे में है’ की आवाज उठाए तो कुछ ठीक भी हो सकता है. पर वह तो आज भी अपनी जापानी नेशन को अटल समझे हुए है. कोरिया जिसकी नेशन पर आते बम गिरते रहते हैं. कोरिया जिसकी नेशन पर आते बम गिरते रहते हैं.



तब यह खिलवाड़ करने का नतीजा यह हुआ था कि उस पर लोगों ने एतबार करना छोड़ दिया था और अपने इस खिलवाड़ के नतीजे की शकल में वह बच्चा बहुत टोटे में रहा था. आज हम इसी तरह से 'कम्यूनिज्म' आया, कम्यूनिज्म आया 'दौड़ना, दौड़ना' की आवाज दुनिया के एक सबसे बड़े मुल्क के सबसे ज्यादा जिम्मेदार आदमी के मुँह से सुन रहे हैं. हिन्दुस्तान जो चीन और रूस के पड़ोस में रहता है वह अगर 'कम्यूनिज्म' आया की आवाज उठाता तो कानों को कुछ इतना न खटकता पर जब अमरीका इस तरह की आवाज उठाता है तो कानों को बेहद खटकता है और अब यह 'कम्यूनिज्म' आया की आवाज इतनी बुरी लगने लगी है जितना उस बच्चे का रोना जो रात को घर वालों की नींद हरास कर देता है.

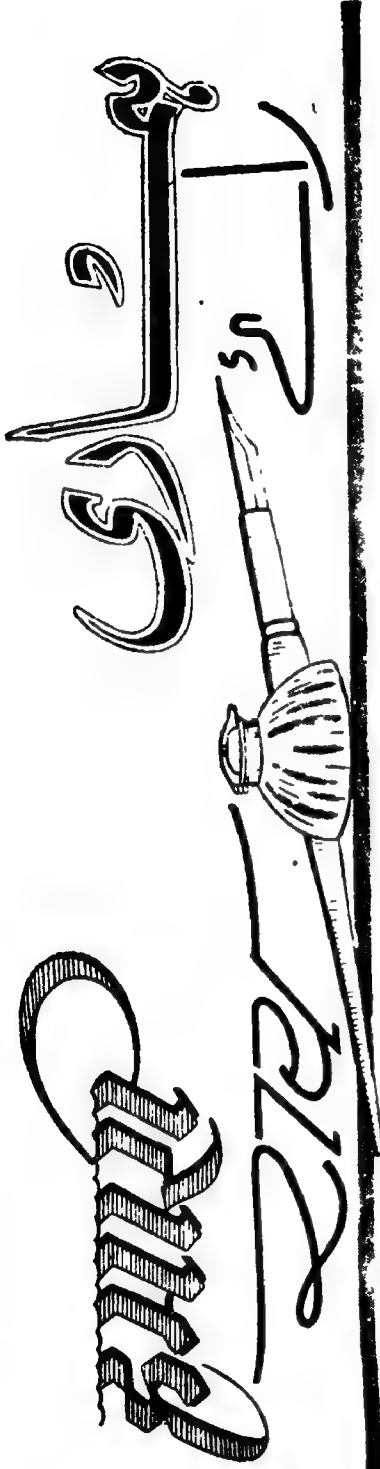
( १३ )

ट्रूमैन साहब जैसे सम्प्रदाय आदमी के मुँह से इस वक्त्रन यह आवाज निकलना जब कि वह ऐटम बम के डर पर बैठे हुए है कि 'हमारा घर, हमारी क्रीम, और हमारी वह सब बातें जिन पर हम विश्वास करते हैं ख़तरे में है' शोभा नहीं देता. दुनिया के बड़े बड़े मुल्कों की क्रीजों के साथ अमरीका की क्रीजें कोरिया में लड़ रही हैं और जनरल मैकआर्थर के शब्दों में लाखों चीनी क्रीजों से घिरे अमरीकी सिपाहों हिम्मत के साथ खड़े हुए हैं और ख़रूरत पड़ने पर शान के साथ वापस आ रहे हैं तब अमरीका किस तरह ख़तरे में है? फिर 'हमारा घर ख़तरे में है' यह आवाज क्या माने रखती है. कोरिया जो अमरीकी बमों से मिसमार हो गया वह यह आवाज उठाता कि हमारा घर ख़तरे में है तो कुछ बात थी. अमरीका बेमतलब

असुरह किलवाड़ करने का नतीजा यह हुआ कि उस पर लोगों ने एतबार करना छोड़ दिया और अपने इस किलवाड़ के नतीजे की शकल में वह बच्चा बहुत टोटे में रहा था. आज हम इसी तरह से 'कम्यूनिज्म' आया, कम्यूनिज्म आया 'दौड़ना, दौड़ना' की आवाज दुनिया के एक सबसे बड़े मुल्क के सब से ज्यादा ज़म्मेदार आदमी के मुँह से सुन रहे हैं. हिन्दुस्तान जो चीन और रूस के पड़ोस में रहता है वह अकर्मियोज्म आया की आवाज उठाता तो कानों को कुछ इतना न खटकता पर जब अमरीका इस तरह की आवाज उठाता है तो कानों को बेहद खटकता है और अब यह 'कम्यूनिज्म' आया की आवाज इतनी बुरी लगने लगी है जितना उस बच्चे का रोना जो रात को घर वालों की नींद हरास कर देता है.

त्रूमैन साहब जैसे सम्प्रदाय आदमी के मुँह से उस वक्त्रन यह आवाज निकलना जब कि वह ऐटम बम के डर पर बैठे हुए हैं कि 'हमारा घर, हमारी क्रीम, और हमारी वह सब बातें जिन पर हम विश्वास करते हैं ख़तरे में हैं' शोभा नहीं देता. दुनिया के बड़े बड़े मुल्कों की फौजों के साथ अमरीका की फौजें कोरिया में लड़ रही हैं और जनरल मैक आर्थर के शब्दों में लाखों चीनी फौजों से घिरे अमरीकी सिपाहों हिम्मत के साथ खड़े हुए हैं और ख़रूरत पड़ने पर शान के साथ वापस आ रहे हैं तब अमरीका किस तरह ख़तरे में है? फिर 'हमारा घर ख़तरे में है' यह आवाज क्या माने रखती है. कोरिया जो अमरीकी बमों से मिसमार हो गया वह यह आवाज उठाता कि हमारा घर ख़तरे में है तो कुछ बात थी. अमरीका बेमतलब





## ट्रमैन साहब घबरा उठे --

हर लड़ाई की ललकार के पीछे घबराहट रहना जरूरी है और घबराहट की सह में ठंडने पर बुजुर्गदिली यानी कायरता के सिवाय और क्या मिल सकता है. कायरता के नीचे जाने की अगर कोशिश की जाय तो वहां मिलेगा घन का लोभ. और अमरीका इस वजन इतना धनी हो गया है कि उसको आस पास चारों तरफ चोर. डाकू और उचक्के दिखाई देते हैं. इतना ही होता तो बुरा न था. अब तो अमरीका के प्रेसीडेंट ट्रमैन को सात समुद्र के मुल्क भी उचक्के और चोर दिखाई देने लगे. जान-बेजा रूस को कोसना. कम्युनिज्म को गाली देना, कम्युनिस्ट मुल्कों के दोस्तों को रिश्तत देकर दुश्मनी पर उतारू करना या उन्हें डराना धमकाना उनका आए दिन का काम हो गया है.

ट्रमैन साहब के वाशिंगटन से १६ दिसम्बर को हवा से बखेरे आगन में यह सब बातें साफ चमक रही हैं. छूटपन में 'शेर आया

## त्रुमैन صاحب कबोरा अत्ते --

हर लड़ाई की ललकार के पीछे कबराहट रहना जरूरी है और कबराहट की सह में ठंडने पर बुजुर्गदिली यानी कायरता के सिवाय और क्या मिल सकता है. कायरता के नीचे जाने की अगर कोशिश की जाय तो वहां मिलेगा घन का लोभ. और अमरीका इस वजन इतना धनी हो गया है कि उसको आस पास चारों तरफ चोर. डाकू और उचक्के दिखाई देते हैं. इतना ही होता तो बुरा न था. अब तो अमरीका के प्रेसीडेंट ट्रमैन को सात समुद्र के मुल्क भी उचक्के और चोर दिखाई देने लगे. जान-बेजा रूस को कोसना. कम्युनिज्म को गाली देना, कम्युनिस्ट मुल्कों के दोस्तों को रिश्तत देकर दुश्मनी पर उतारू करना या उन्हें डराना धमकाना उनका आए दिन का काम हो गया है.

त्रुमैन صاحب के वाशिंगटन से १६ दिसम्बर को हवा से बखेरे आगन में यह सब बातें साफ चमक रही हैं. छूटपन में 'शेर आया



ऊयादा सखत शब्द इस्तेमाल किये गए हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये यह किताब काफ़ी मुक़द्दी साबित हो सकती है. ख़रूरत इस बात की है कि अब साहित्यकार अपने साहित्य और साथ ही साथ अपने अमल के जरिये गांधीवाद का जनता तक पहुँचावें क्योंकि अब गांधी जी नहीं रहे. जैनेन्द्र जी ने जो यह बीड़ा उठाया है उसका हम स्वागत करते हैं.

—भा. च. वर्मा

## हमारा गांधी वापस करो

लिखने वाले — श्री ओंकार शरद.

निकालने वाले — साहित्य निकेतन. शान्ति कुटीर. लुकर गंज. इलाहाबाद.

बिस्मिल्लहट—नागरी, सक्रा-72. दाम—एक रूपया.

ओंकार शरद एक नौजवान समाजवादी लेखक हैं. उनकी यह किताब "हमारा गांधी वापस करो" गांधीजी के साथ उनकी बकादारी और मुहल्लत का निशान है. इसमें पांच छोटे छोटे स्केच हैं—हमारा गांधी वापस करो, अपना अपना रास्ता, स्मृति शिला, पूरब का मूरज पूरब में ही डूब गया, गांधी जी : पहली कल्पना में.

किताब का नाम बड़ा आकरशक है. सीधी सादी और आम लोगों की बोली में लिखी गई है. लिखने की शैली दिलचस्प है. जो अपने को समाजवादी कहते हैं या समझते हैं उनको यह किताब ख़रूर पढ़नी चाहिये. उनकी तंगनख़री दूर करने में यह काफ़ी मददगार साबित हो सकती है.

—भा. च. वर्मा

सख्त शब्द इस्तेमाल किये गये हैं.

लखने वाले को समझने के लिये यह किताब काफ़ी मज़िद नाबत हो सकती है. ख़रूरत इस बात की है कि अब साहित्यकार अपने साहित्य और साथ ही साथ अपने अमल के जरिये गांधीवाद को जनता तक पहुँचावें क्योंकि अब गांधी जी नहीं रहे. जैनेन्द्र जी ने जो यह बीड़ा उठाया है उसका हम स्वागत करते हैं.

—भा. च. वर्मा

## हमारा गांधी वापस करो

लखने वाले — श्री ओंकार शरद.

निकालने वाले — साहित्य निकेतन. शान्ति कुटीर. लुकर गंज. इलाहाबाद.

बिस्मिल्लहट—नागरी, सक्रा-72. दाम—एक रूपया.

ओंकार शरद एक नौजवान समाजवादी लेखक हैं. उनकी यह किताब "हमारा गांधी वापस करो" गांधीजी के साथ उनकी बकादारी और मुहल्लत का निशान है. इसमें पांच छोटे छोटे स्केच हैं—हमारा गांधी वापस करो, अपना अपना रास्ता, स्मृति शिला, पूरब का मूरज पूरब में ही डूब गया, गांधी जी : पहली कल्पना में.

किताब का नाम बड़ा आकरशक है. सीधी सादी और आम लोगों की बोली में लिखी गयी है. लिखने की शैली दिलचस्प है. जो अपने को समाजवादी कहते हैं या समझते हैं उनको यह किताब ख़रूर पढ़नी चाहिये. उनकी तंगनख़री दूर करने में यह काफ़ी मददगार साबित हो सकती है.

—भा. च. वर्मा



जातिशाही व्यवस्थाओं में है। जब तक वह, जो आज की व्यवस्था में धन या जाति बगैरा के रूप में विशेष अधिकारों की स्थिति का सुलभ भोग रहे हैं, उसका त्याग नहीं कर देते, अपनी सम्पत्ति के ईमानदार ट्रस्टी नहीं बन जाते, ऊँच नीच का भेदभाव छोड़कर जनता में घुलमिल नहीं जाते, देश की गरीबी के अनुसार अपनी शान शौकत कम नहीं कर लेते, तब तक साम्यवाद और उसके साथ चलने वाली हिंसा आएगी ही।" (हरिजन, 13-5-50)

जैनेन्द्र के गांधीवाद और मशरूवाला के गांधीवाद में यही फरक है कि जैनेन्द्र का गांधीवाद आदमी की सिर्फं रूहानी तरक्की ही चाहता है जबकि मशरूवाला का गांधीवाद आदमी की रूहानी तरक्की के बरिये उसकी मटियाई तरक्की भी चाहता है यानी उसका बौत्तरफा विकास चाहता है।

अब रही किताब की भाषा की बात। वह आम लोगों की बोली में है पर कहीं कहीं मुशकिल खरूर हो गई है। खास बात यह है कि जैनेन्द्र जी अंगरेजी के शब्द अपनाने हिचकते नहीं।

दूसरी बात यह कि लिखने की शैली ऐसी है मानो वह खुद आपके साथ बैठे बहस कर रहे हों। गांधीवाद को आसान शब्दों में समझा देना भी एक तारीफ की बात है जो जैनेन्द्र जी हों कर सकते हैं।

इस किताब में दो एक कमियाँ भी हैं। पहली यह कि हर एक लेख किसी खास मौके पर लिखा गया है जो पहला ही पैरा

जाती शाही व्यवस्थाओं में है। जब तक वह, जो आज की व्यवस्था में धन या जाति बगैरा के रूप में विशेष अधिकारों की स्थिति का सुलभ भोग रहे हैं, उसका त्याग नहीं कर देते, अपनी सम्पत्ति के ईमानदार ट्रस्टी नहीं बन जाते, ऊँच नीच का भेदभाव छोड़कर जनता में घुलमिल नहीं जाते, देश की गरीबी के अनुसार अपनी शान शौकत कम नहीं कर लेते, तब तक साम्यवाद और उसके साथ चलने वाली हिंसा आएगी ही।" (हरिजन, 13-5-50)

जैनेन्द्र के गांधीवाद और मशरूवाला के गांधीवाद में यही फरक है कि जैनेन्द्र का गांधीवाद आदमी की सिर्फं रूहानी तरक्की ही चाहता है जबकि मशरूवाला का गांधीवाद आदमी की रूहानी तरक्की के बरिये उसकी मटियाई तरक्की भी चाहता है यानी उसका बौत्तरफा विकास चाहता है।

अब रही किताब की भाषा की बात। वह आम लोगों की बोली में है पर कम कम में مشکل ضرور ہو گئی ہے۔ خاص بات یہ ہے کہ جے نیندر جی انگریزی کے شدید اُلاتے ہچکتے نہیں۔

دوسری بات یہ کہ لکھنے کی شہلی ایسی ہے مانو وہ خود آپ کے ساتھ بیٹھے بحث کر رہے ہوں۔ گاندھی واد کو آسان شہلوں میں سمجھا دینا بھی ایک تعریف کی بات ہے جو جے نیندر جی ہی کر سکتے ہیں۔

اس کتاب میں دو ایک کھیاں بھی ہوں۔ پہلی یہ کہ ہر ایک لکھ کسی خاص موقع پر لکھا گیا ہے جو پہلا ہی پیرا



संगठन की एक धार्मिक साइंसी योजना रखें."

माटी और रह का मेल, धर्म और साइंस की एकता, पूरब और पच्छिम का मिलाप होने पर ही सच्चा सर्वोदय मुमकिन है.

तीसरी बात यह कि लेखक का “पूर्वोदय” आदमी के रूहानी विकास की बात तो करता है पर भूके किसान और मजदूरों पर तरस नहीं खाता। जहाँ यह बात सच है कि रूस का साम्यवाद इतना मटियाई है कि वह रूहानी बातों को नजरअन्दाज कर जाता है, वहाँ लेखक जैसे लोगों का गांधीवाद इतना रूहानी है कि वंचार गरीब किसानों और मजदूरों के मटियाई विकास की बात उन्हें सूझती ही नहीं। लेखक कहता है—

“परिचय से जो एक आक्रामक जीवन पद्धति की बाढ़ ठेलकर हमारी ओर भेजी जा रही है, जो स्वत्व और स्वात्मित्व की तुलना से जमीर गरीब को. इस मत को और उस बाढ़ को सबको भरमा और उकसा रही है भविष्य उस बाढ़ के हाथ में नहीं है.”

इस बारे में श्री मशरूबाला यह कहते हैं—

“साम्यवाद एटम बम, हाइड्रोजन बम या स्वार्थवश ही हुई आर्थिक सहायताओं से नहीं दबाया जा सकता, और न गांधीवाद के नारे लगाकर, जेल भेज कर और गोलियां चलाकर ही..... गांधीजी के मार्ग और मार्क्सवाद में बड़ा फ़रक़ है. लेकिन उससे भी ज्यादा फ़रक़ गांधीवाद तथा अनियंत्रित पूँजीवादी सामन्तशाही और

سنگھتوں کی ایک دعاؤں کا مجموعہ ہے۔

پچھم کا ملاپ ہونے پر ہی سچا سرور ہے ۔  
مائی اور زوج کا مہل ۔ دھو اور سائنس کی ایکٹا، یورپ اور

تیسری بات یہ کہ لیکچر کا "نورورڈ" آدمی کے روحانی وکس کی بات تو کرتا ہے پر بھوکے کسان اور مزدوروں پر جس نہیں کیا۔ جہاں یہ بات سچ ہے کہ دوس کا سامیہ واد اتنا مٹیائی ہے کہ وہ روحانی باتوں کو نظر انداز کر جاتا ہے۔ وہاں لیکچر جیسے لوگوں کا گاندھی واد اتنا روحانی ہے کہ بھجڑے غریب کسانوں اور مزدوروں کے مٹیائی وکس کی بات انہیں سوچتی ہی نہیں۔ لیکچر کہتا ہے—

”پشچم سے جو ایک اکڑ امک چہاڑن دھتھی کی بارہ نہیں  
 کر ہمارے اور بیہوشی جا رہی ہے۔ جو سوتو اور سوتو کی  
 سے امیر غریب کو اس مت کو اور اس واد کو سبکو بہرما اور اُکسا  
 رہی ہے، بیہوشیہ اس بارہ کے ہاتھ میں نہیں تے۔“

اس بڑے صوفی شہسوارِ الایہ کہتے ہیں۔

”سامیہ واد ایتم بم‘ دائلہ درجن بم یا سوارتنہ وش دی ہوئی  
آرتھک سہایتاؤں سے نہیں دیا جا سکتا۔ اور یہ گلادھی واد کے  
نعرے لگائے، جہل بھجکر اور گواہیاں چلا کر ہی..... گلادھی جی  
کے مارگ اور مارکس واد میں بڑا فرق ہے۔ لیکن اُس سے بھی  
بڑا فرق فرق گلادھی واد تھا انہلنرت یونجی وادی سے لمدت شامی اور



क्राबू पाकर पच्छिम पागल हो गया है. मई सन् 1944 में चूँगकिंग में एक भाशन देते हुए सर राधाकृष्णन ने कहा था—

“इंसान इस दुनिया में ज़िन्दा रहने, प्रेम करने और खुश रहने के लिये पैदा हुआ. लेकिन हम यह देखते हैं कि वह शरीर में अलकोहल भर कर, हाथ में बन्दूक लेकर और दिल में गुस्सा लिये मँह फुलाए आगे बढ़ रहा है.”

यह है साइंस का बुरा इस्तेमाल और उसका भयानक नतीजा. लेकिन इसके यह मानी हरगिज नहीं होते, जैसा लेखक समझना है. कि साइंसी तरक्की और रूहानी तरक्की बेमेल हैं. साइंसी तरक्की को रूहानी तरक्की के लिये इस्तेमाल करना ही उसका सही इस्तेमाल है. ‘हिन्दुस्तान की कहानी’ में पंडित नेहरू ने लिखा है—

“पच्छिमी दुनिया पर साइंस छा गई है और वहां के लोग उस की सराहना करते हैं. फिर भी हम कहते हैं कि वह साइंस का असली मकसद अब भी नहीं समझते. साइंस को अभी शरीर और आत्मा दोनों को मिलाकर एक रचनात्मक शकल देना है. दोनों में सरगम पैदा करना है.”

साइंस या मशीन को गांधी जी भी इतना बुरा नहीं समझते थे जितना जैनेन्द्र जी. साइंस और धर्म को एक दूसरे के खिलाफ़ दिखा कर उन्होंने गांधीवाद का मजाक उड़ाया है. पूरब और पच्छिम की एकता के लिये धर्म को साइंसी और साइंस को धार्मिक बनाना है. अपनी किताब “सब बड़े धर्मों की बुनियादी एकता” में डॉक्टर

फ़ाबो पाकर पच्छिम पागल हो गया है. मई सन् 1944 में चूँगकिंग में एक भाशन देते हुए सर राधाकृष्णन ने कहा था—

“इंसान इस दुनिया में ज़िन्दा रहने, प्रेम करने और खुश रहने के लिये पैदा हुआ. लेकिन हम यह देखते हैं कि वह शरीर में अलकोहल भर कर, हाथ में बन्दूक लेकर और दिल में गुस्सा लिये मँह फुलाए आगे बढ़ रहा है.”

यह है साइंस का बुरा इस्तेमाल और उस का बेहानक नतीजा. लेकिन इस के ये मेली हरकतें नहीं होती, जैसा लिखक समझता है. कि साइंसी तरुती और ‘रुहानी तरुती’ े मेल हैं. साइंसी तरुती को ‘रुहानी तरुती’ के लिये इस्तेमाल करना ही अूस का सचुह इस्तेमाल है. ‘हलदुस्तान की कहानी’ में पंडित नेहरू ने लिखा है—

“पच्छिमी दुनिया पर साइंस ज़ेपा डूनी है और वहाँ के लोग अूसकी सराहना करते हैं. फिर भी हम कहते हैं कि वह साइंस का अूसली मकसद अब भी नहीं समझते. साइंस को अभी शरीर और आत्मा दोनों को मिला कर एक रचनात्मक शकल दीदा है. दोनों में सरगम पैदा करना है.”

साइंस या मशीन को गान्दही जी भी अूतना बुरा नहीं समझते थे जेह जेहला जे नेहरू जी. साइंस और देरुम को अूक दुसरे के खलफ़ दकहा कर अून्हों ने गान्दही राद का मज़ाक अूड़ा है. पूरब और पच्छिम की अूकता के लिये देरुम को साइंसी और साइंस को देहारात्मक बनना है. अूपनी कूताब “सब बुरे देरुमों की बुनियादी अूकता” में डॉक्टर



रहे थे कि उन्हें एक खिड़की पर बैठा, शराब के नशे में, डूबा, एक नौजवान दिखाई पड़ा. वह उसके पास गए और बोले—

“तुम शराब पी कर अपनी जिन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो ?”

नौजवान ने जवाब दिया— “ए खुदाबन्द करीम ! मैं कोढ़ी था. आपने मुझपर तरस खाया और मुझे ठोक कर दिया. अब बताइये मैं और क्या करूँ ?”

हज़रत ईसामसीह आगे बढ़े. उन्होंने देखा एक नौजवान आदमी एक बड़बलन औरत के साथ चला जा रहा था. उन्होंने उस नौजवान को रोक कर कहा—

“तुम नेक हो और नौजवान हो. तुम अपनी आत्मा को क्यों काला कर रहे हो ?”

नौजवान ने जवाब दिया “ए पाक परवरदगार ! मैं अंधा था. आपने मुझे आँखें दीं. अब बताइये मैं और क्या करूँ ?”

हज़रत ईसामसीह और आगे बढ़े. देखा एक बूढ़ा सड़क पर पड़ा चीख रहा था. उसके पास पहुँचे और पूछा—“क्यों भाई, तुम क्यों चीख रहे हो ?”

बूढ़े ने जवाब दिया—“भगवन ! मैं मर चुका था. आपने मुझमें फिर से जान फूँक दी. अब बताइये मैं और क्या करूँ ?”

आज पच्छिमी समाजी व्यवस्था का यही हाल है. क़ुदरत पर

११

का दबदबा करने ज़मीन पर आ गये. वे एक सड़क पर चले जा रहे थे कि अُنहें एक केहूँकी पर बैठता, शराब के नशे में डूबा, एक नौजवान دکھائی पड़ा. वे اُس के पास गئے اور بولے—

“تم شراب پی کر اپنی زندگی کیوں برباد کر رہے ہو ؟”

نوجوان نے جواب دیا —“اے خداوند کریم ! میں کوڑھی تھا. آپ مجھ پر ترس کھایا اور مجھے ٹھیک کر دیا. اب بتائیے میں اور کیا کروں ؟”

حضرت عیسیٰ مسیح آگے بڑھے. انہوں نے دیکھا ایک نوجوان آدمی ایک بدچلن عورت کے ساتھ چلا جا رہا تھا. انہوں نے اُس نوجوان کو روک کر کہا —

“تم نہک ہو اور نوجوان ہو. تم اپنی آتما کو کیوں کالا کر رہے ہو ؟”

نوجوان نے جواب دیا —“اے پاک پروردگار ! میں اندھا تھا. آپ مجھے آنکھیں دیں. اب بتائیے میں اور کیا کروں ؟”

حضرت عیسیٰ مسیح اور آگے بڑھے. دیکھا ایک بوڑھا سڑک پر پڑا چیخ رہا تھا. اُسکے پاس پہنچے اور پوچھا —“کیوں بہائی, تم کیوں چیخ رہے ہو ؟”

بوڑھے نے جواب دیا —“بھگون ! میں مر چکا تھا. آپ مجھے میں سے جان بھونک دی. اب بتائیے میں اور کیا کروں ؟”

آج پچھمی سماجی ولایتها کا بھی حال ہے. قدرت پر



जैनेन्द्र जी के ख्याल में इस दुनिया में दो तरह की समाजी व्यवस्था हो सकती है. एक पच्छिमी, दूसरी पूरबी.

पच्छिमी समाजी व्यवस्था का निशान है रूस—जिसकी इमारत मटियाई बुनियाद पर खड़ी की गई है. जहाँ साइंस है, मशीन है, कल और कारखाने हैं, जहाँ नैतिकता नहीं, सुहृद्वत नहीं, त्याग नहीं. इस व्यवस्था का दीवाला पिटता जा रहा है और वह बहुत जल्द टूटने वाली है.

इसके मुकाबले में लेखक ने एक ऐसी पूरबी समाजी व्यवस्था का खाका खींचा है जिसमें समाज की बुनियाद रुह होगी मादी (मैटर) नहीं. साइंस, मशीन और कारखानों से उसका कोई वास्ता नहीं. वहाँ अखलाक होगा, सुहृद्वत होगी और स्वार्थ रहित सेवा होगी, अमीर गरीब की लड़ाई नहीं होगी, सब का भला होगा—सर्वोदय होगा.

इस बारे में तीन बातें कही जा सकती हैं.

पहली यह कि इस "पूर्वोदय" में सर्वोदय की आत्मा तो है पर सर्वोदय की भावना नहीं. पूरब और पच्छिम की दीवारें खड़ी करके लेखक ने "मेरी तेरी" वाली बात पैदा कर दी है. पच्छिमी समाजी व्यवस्था का जिस तरह निरस्कार किया गया है उसमें गाँधीवादी इसदरदी नहीं, साम्यवादी कडुवाहट है.

दूसरी बात यह कि लेखक साइंसी तरक्की और रुहानी तरक्की को बेमेल समझता है और मशीन बल को छोड़कर सिर्फ जन बल और मन बल पर निर्भर रहने की सलाह देता है. हम मानते हैं कि पच्छिम

जैनेन्द्र जी के ख्याल में इस दुनिया में दो तरह की समाजी व्यवस्था हो सकती है. एक पच्छिमी, दूसरी पूरबी.

पच्छिमी समाजी व्यवस्था का निशान है रूस—जिसकी इमारत मटियाई बुनियाद पर खड़ी की गई है. जहाँ साइंस है, मशीन है, कल और कारखाने हैं, जहाँ नैतिकता नहीं, सुहृद्वत नहीं, त्याग नहीं. इस व्यवस्था का दीवाला पिटता जा रहा है और वह बहुत जल्द टूटने वाली है.

इसके मुकाबले में लेखक ने एक ऐसी पूरबी समाजी व्यवस्था का खाका खींचा है जिसमें समाज की बुनियाद रुह होगी, माती (मैटर) नहीं. साइंस, मशीन और कारखानों से उसका कोई वास्ता नहीं. वहाँ अखलाक होगा, सुहृद्वत होगी और स्वार्थ रहित सेवा होगी, अमीर गरीब की लड़ाई नहीं होगी, सब का भला होगा—सर्वोदय होगा.

इस बारे में तीन बातें कही जा सकती हैं.

पहली यह कि इस "पूर्वोदय" में सर्वोदय की आत्मा तो है पर सर्वोदय की भावना नहीं. पूरब और पच्छिम की दीवारें खड़ी कर के लेखक ने "मेरी तेरी" वाली बात पैदा कर दी है. पच्छिमी समाजी व्यवस्था का जिस तरह निरस्कार किया गया है उसमें गाँधीवादी इसदरदी नहीं, साम्यवादी कडुवाहट है.

दूसरी बात यह कि लेखक साइंसी तरक्की और रुहानी तरक्की को बेमेल समझता है. और मशीन बल को छोड़कर सिर्फ जन बल और मन बल पर निर्भर रहने की सलाह देता है. हम मानते हैं कि पच्छिम



एलबर्क—जननद्र कुमार, निकालने वाले—श्री पूर्वोदय प्रकाशन.  
दरियागंज, दिल्ली, सफा—२८०, लिखावट—नगरी. दाम चार  
रुपए

जैनेन्द्र जी मशहूर कहानी लेखक हैं और साथ साथ फिलासफर भी. और जब कहानी लेखक फिलासफर भी हो तो उसकी कहानी में फिलासफी होती है और फिलासफी में कहानी. जैनेन्द्र जी के गाँधीवादी खयालात का यह संग्रह "पूर्वोदय" कुछ इसी तरह का है. इसमें कुल तैंतीस लेख हैं. लगता है, यह सब के सब पिछले चार पाँच साल में अलग अलग मौकों पर लिखे गए. इस-लिये खयालात की कोई एक कड़ी नहीं है. फिर भी इन लेखों में गाँधीवाद के हर पहलू पर कुछ न कुछ रोशनी डाली गई है. कुछ लेख यह हैं—पूर्वोदय, सर्वोदय, अगर गाँधी जी होते. अहिंसा और मुक्ति, रोटी का मारचा और संस्कृत, अपरिग्रह और ट्रस्टीशिप, उपवास और लोकतंत्र

इस संग्रह के हर एक लेख में कुछ न कुछ अनोखापन ज़रूर है. और इन सब में "पूर्वोदय" एक दम निराला है. इसमें गाँधीवादी फिलासफी मार्क्सवादी ढंग से पेश की गई है. और गाँधीवाद को उस हद तक पहुँचा दिया गया है जहाँ वह गाँधीवाद न रह कर जैनेन्द्रवाद बन गया है.

"पूर्वोदय" मानी एशिया का उदय नहीं बल्कि पूरबी समाजी व्यवस्था का उदय, पूरबी जीवन नीति का उदय यानी गाँधीवाद का उदय.

पुर्वोदय

लोकभूक — जे नैन्दर कुमार नकाले वाले — शरी पुर्वोदये प्रकाशन,  
दरिया कलज, दली, صفحه २१०. लکيات—नागरी. दाम चार रुए.  
जे नैन्दर जी مشهور किरानी लोकभूक हूँ. ओर साथे साथे  
फلاسफ़र भी. ओर जब किरानी लोकभूक फلاسफ़र भी हो तो उसकी  
कहानी में फ्लासफी हती है ओर फ्लासफी में कहानी. जे नैन्दर जी के  
लन्दही वाली खियालात का ये सङ्ग्रह "पुर्वोदये" कच्चे असी طالع का है.  
अस में कुल तैंतीस लोकभूक हूँ. लक़्ता है. ये सब के

( २९ )

सब पच्चे जे चार पानेच साल में 'अक' अक موقعें पर लिखे कैं.  
अस लिये खियालात की कुन्नी लोकभूक कती नहों है. दो-ती  
अन लोकभूक में लन्दही वाद के हर पहलू पर कच्चे नह कच्चे असी  
दाली कूनी है. कच्चे लोकभूक ये हूँ — पुर्वोदये, सर्वोदये, अङ्ग लन्दही  
जी हुते, अहंसा ओर मुक्ती, दूती का मोजे ओर सलसुब ओरि कूनी  
ओर तुरस्ती शप, भुस ओर लोक तन्त्र.

अस सङ्ग्रह के तर एक लोकभूक में कच्चे नह कच्चे लोकभूक पुन ضرु  
है. ओर अन सब में "पुर्वोदये" लोकभूक नह. अस में  
लन्दही वाली फ्लासफी मार्क्स वाली दल्लक से बेश की कूनी है ओर  
लन्दही वाद को अस हद तक पुर्वोदये दिलाकिया है जहाँ वो लन्दही वाद  
नह रहे जे नैन्दर वाद भन किया है.

"पुर्वोदये" मेली अशिया का अदये नैहों बल्के पूरबी समाजी  
व्यवस्था का अदये, पूरबी जीवन नीति का अदये मेली लन्दही वाद  
का अदये.



# महाजन

लिखा—श्री कृष्ण लाल वर्मा ने, नागरी लिखावट में.

मिलेगा—प्रथमंवार, बिरला हाउस, लेडी हार्डिंग रोड, माहिम.  
बजट ई १६, स.रा १५०. नाम एक रुपया वारा आने.

यह इतिहास की कोल पर घूमने वाला एक उपन्यास है। खेमा हाइलिया राज के आधार पर लिखा गया है। कृशन ताल जी पुराने लिखने वाले हैं, ग्यासा लिखा है। कहीं कहीं राजपूताने के शब्द आ गए हैं। यह इस किताब को खूबी है थुराई नहीं। आज की हिन्दी में सब प्रान्तों के शब्द मिलने ही चाहिये। भाशा उपन्यास की है यानी किसी को पढ़ने समझने में दिक्कत नहीं होना।

इस किताब में एक बड़ी खूबी है जिसको वजह से यह किताब हर घर में रहने लायक है और वह यह कि इसमें भारतीय संस्कृति का अच्छा पहलू मिलता है। पुराने संत पैमा, अनाज, माल जमः नों करते थे पर देस और देस वासियों के मुसोबत के वक्ता उनको आराम पहुँचाने के लिये न कि धन इकट्ठा करने के लिये। पुराने संत जनता की जेब से पैसा जरूर निकालते थे पर उस जेब को हल्का नहीं होने देते थे। जहाँ किसी वजह से हल्की होने लगता था तो बन्ध लोग उसको भरने के लिये तैयार रहते थे। अकाल के वक्ता किम तरह शाह गैमा हाइलिया राज अपना अनाज सस्ता बेचकर फकीर बन जाता है और मस्त रहता है। यही इस उपन्यास में पढ़ने को मिलेगा।

इसे गाढ़क खरीदें और पुराने भारत की भलक देखें.

五

لکھا۔۔۔ شی.ی. کرشن لال ورما نے : ناگری لکھاوت میں .

ملیکا۔ گزشتہ ہفتہ، رِیلا ہاؤس، لیدز ہارڈک روڈ، ماہم۔  
بمبئی ۱۶ مئی ۱۹۵۰ء۔ دُعا رک، دیئے را، آنے۔

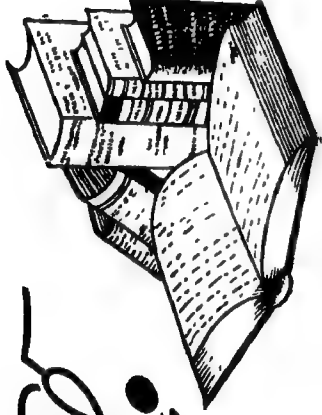
یہ اتھاس کی مکمل پڑہو مئے والا ایک ایڈاس ہے۔ کہو ماہا چا  
 راج کے آدشار پر لکھا گیا ہے۔ کہش لال حی براے لکھنے والے شھوں،  
 خاصہ لکھا ہے۔ کہیں کہیں راجدوانے کے شہد آئے مے یہ اس  
 کتاب کی خوبی ہے۔ اسی نہیں آئی کی ہندی مے سب راجتور  
 کے شہد مئے ہی چ نہائیں۔ بہادا اڈاس کی ہے یعنی کسی کو  
 پوہئے سمجھئے مے دقت نہیں توی۔

اس کتاب میں ایک بڑی خوبی ہے جسکی وجہ سے یہ کتاب ہر گھر میں پھیل رہی لائق ہے اور یہ کہ اس میں بہتری سنسکرتی کا اچھا پہلو ملتا ہے۔ پڑنے سے پہلے ہم سے 'اناج' میں جمع تو کرنے تھے پڑھیں اور پڑھیں اساتذہ نے مصیبت کے وقت 'انکو' آرام پہونچانے کے لیے یہ کہ دعویٰ 'دیکھا کرنے کے لیے'۔ رائے سے پہلے چلتا کی جب سے ہم سے بکالتے تھے پڑھیں چھپ کے ہلکا نہیں ہونے دیتے تھے۔ جہاں کسی وجہ سے ہلکی ہونے لگتی تھی تو چند لوگ 'اسکو پھرنے کے لیے تیار رہتے تھے'۔ ان کے وقت کس طرح شاہ کھیم ہارلیا راج ابدا اناج مسیتا پیدا ہوئے، گرفتار بن جاتا ہے اور مسیتا رہتا ہے۔ یہی اس 'پلیڈاس' میں دیکھنے کو ملے گا۔

دیکھیں۔ ایک اور جگہ



# किताबें



किताबें

## ( ३ ) लेनिन (जीवनी)

हिन्दी रूप देने वाले श्री कृशन लाल वर्मा. मिलने का पता—  
नव भारत प्रकाशन संस्था, ६ केलेवाड़ी, बम्बई ४. सफे ६६. दाम  
सवा रुपए.

किताब खासी है. बच्चों के लिये लिखी गई मालूम होती है. पर  
हिन्दी रूप देते वक़्त इस ओर ध्यान नहीं दिया गया कि रूसी नाम  
हिन्दुस्तानी बच्चों की ख़्वाबत पर जल्दी नहीं चढ़ सकते. नामों को  
बजाय रिशतों से काम लिया गया होता तो फिर बच्चों को पढ़ने  
और समझने में बड़ी आसानी होती. किताब के पाँच पन्नों में  
याद रखने की बातें देकर किताब काम की बन गई है. पर रूसी नाम  
वहाँ भी ज्यों के त्यों मौजूद हैं. फिर भी किताब पढ़ने लायक है.  
छपाई, सफ़ाई ठीक है.

—म—

## ( ४ ) लेनिन [ जीवनी ]

हल्दी रुप दिले वाले शरी कृशन लाल वर्मा.  
मिले का पते—नव भारत प्रकाशन संस्था, ६ केलेवाड़ी, बम्बई ४.

सन् १९९९. दाम सवा रुपए.

किताब खासी है. बच्चों के लिये लिखी गयी है.  
पर हल्दी रुप दिले वाले शरी कृशन लाल वर्मा.  
मिले का पते—नव भारत प्रकाशन संस्था, ६ केलेवाड़ी, बम्बई ४.  
सन् १९९९. दाम सवा रुपए.

—म—



## अच्छा हो

(भाई चन्द्रनाथ मालवीय 'बारीश')

अपने बतन की खातिर मर जाँय तो अच्छा हो,  
दुनिया में नाम रौशन कर जाँय तो अच्छा हो.  
इसके लिये जियें हम, इसके लिये मरें हम.  
यह भाव हरेक मन में भर जाँय तो अच्छा हो.

आपस में प्रेम पैदा करके गले मिलें हम,  
सुरक्षाएँ फूल फिर से खिल जाँय तो अच्छा हो.  
मंदिर में अब अजाँ हो मस्जिद में मौफ़ मसके.  
हिन्दू मुसलमाँ फिर से मिल जाँय तो अच्छा हो.

आपस में लड़ मगाइ कर, घर बार लो चुके हम,  
आबाद फिर घरों में हो जाँय तो अच्छा हो.  
इन्सानियत की चादर ? जुल्मो सितम के धन्वे ?  
हैवानियत के धब्बे, धो जाँय तो अच्छा हो.

कोई न फूल तोड़े यह बाग बाराबाँ का.  
यह खयाल फिर से सब में आ जाँय तो अच्छा हो.  
आपस की बदगुमानी की दूर हों घटाएँ.  
अब प्रेम की घटाएँ छा जाँय तो अच्छा हो.

हम भाई भाई सब हैं, सारा खलक खुदा का,  
खुद की खुदी मिटाकर मिल जाँय तो अच्छा हो.

## अच्छा हो

(बहाई चन्द्र नाथ मालवीय 'बारीश')

अपे وطن की خاطر मरजातों तो अच्छा हो,  
दुनिया में नाम रौशन कर जातों तो अच्छा हो.  
अस के लूँ जतों हम 'अस के लूँ मरिष हम'  
ये बहाउ हर एक मन में भर जातों तो अच्छा हो.

'अस में प्रेम पैदा कर के लूँ मरिष हम'  
मरजातें बेहल पहर से कल जातों तो अच्छा हो.  
मलदमों अब आज़ा हो मस्जिद में जहाज-जहमे के  
हलदो मुसल पहर से मल जातों तो अच्छा हो.

'अस में लो जहमे कर' कुर बार कुर चके हम'  
आद पहर कुरों में हो जातों तो अच्छा हो.  
अन्साबित की चादर ? ظلم و सتم के देहरे ?  
हब-अनित के देहरे देह जातों तो अच्छा हो.

कुरी नह बेहल तोड़े ये बाए बाएबल का,  
ये खयाल पहर से सब में आ जातों तो अच्छा हो.  
'अस की बदगुमानी की दूर हो कुरातों',  
अब प्रेम की कुरातों जहा जातों तो अच्छा हो.

हम बहाई, बहाई सब हैं, सारा खलक खुदा का,  
खुद की खुदो मिटाकर मिल जाँय तो अच्छा हो.



साचता रहा और फिर बाल्टी निकालना मान लिया. आठ आने उजरत ठहरी.

किसान कुएं में उतरने लगा. वह खुश भी हो रहा था कि उसे आठ आने मिलेंगे. इन आठ आनों से वह अपने शामू के लिये नई चप्पल खरीद लायगा. शामू चप्पल पाकर खुश होगा. और वह खुशी खुशी स्कूल जायगा, साथियों का नई चप्पल दिखायगा..... फिर किसान आप ही आप कहने लगा—“उफ ! पानी तो बहुत होगा. अगर साँप वगैरा काट ले तो ? ... ..” उसके क्रदम रुक गए और वह सोचने लगा.

इतने में एक मसखरा आया और कुएं में झाँकने हुए कहा—“वाह यार ! तुम तो बड़े डरपोक हो. कहीं इतने पानी से भी डरते है, तुम कुएं में उतरों. मैं जिम्मेदार हूँ, फिर दोनों आंध आंध पैसे बाँट लेंगे.”

किसान ने हिम्मत बांधी और कुएं में उतर पड़ा. बड़ी मुश्किल से आखिर बाल्टी निकाल ही लाया. और बाल्टी वाले ने किसान का आठ आने दिये. मसखर ने झपट कर किसान के हाथ से चार आने उचक लिये. किसान खड़ा देखने लगा और कहा—“वाह, यह भी खूब रही ! कुएं में मैं उतरा. बाल्टी मैंने निकाली और तुम..... यह चार आने किस बात के ले रहे हो ?”

मसखरा बोला—“अरे भई, तुम्हारी हिम्मत तो मैंने बंधवाई थी. तुम तो कुएं में उतरते घबरा रहे थे. मैंने हिम्मत बंधवाई और तुमने यह चार आने कमाए. जाओ खुदा का शुक्र अदा करो.”

किसान उसकी बात समझने की कोशिश कर रहा था और मसखरा जा चुका था.

जो अभी कूँबों में डर रही है : सन सप्त सप्त :  
सोचता रहा और डर बाल्टी निकालना मान लिया. आठ आने उजरत ठहरी.

कसान कूँबों में उतरने लगा. वह खुश भी हो रहा था कि उसे आठ आने मिलेंगे. इन आठ आनों से वह अपने शामू के लिये नई चप्पल खरीद लायगा. शामू चप्पल पाकर खुश होगा. और वह खुशी खुशी स्कूल जायगा..... फिर किसान आप ही आप कहने लगा—“उफ ! पानी तो बहुत होगा. अगर साँप वगैरा काट ले तो ? ... ..” उसके क्रदम रुक गए और वह सोचने लगा.

अतः मैंने एक मसखरा आया और कूँबों में झाँकने हुए कहा—“वाह यार ! तुम तो बड़े डरपोक हो कूँबों में उतरने लगे. मैं जिम्मेदार हूँ, फिर दोनों आंध आंध पैसे बाँट लेंगे.”

कसान ने हिम्मत बांधी और कूँबों में उतर पड़ा. बड़ी मुश्किल से आखिर बाल्टी निकाल ही लाया. और बाल्टी वाले ने किसान का आठ आने दिये. मसखरे ने झपट कर किसान के हाथ से चार आने उचक लिये. कसान कूँबा देखकर लगा और कहा—“वाह, यह भी कूँबों में उतरा. बाल्टी मैंने निकाली और तुम..... यह चार आने किस बात के ले रहे हो ?”

मसखरा बोला—“अरे भैया, तुम्हारी हिम्मत तो मैंने बंधवाई थी. तुम तो कूँबों में उतरते घबरा रहे थे. मैंने हिम्मत बंधवाई और तुमने यह चार आने कमाए. जाओ खुदा का शुक्र अदा करो.”

कसान उस की बात समझने की कोशिश कर रहा था और मसखरा जा चुका था.



मियाँ इसे तुम अपनी अम्मी को दे दो. हम अमीन साहब से यह सब बातें कह देंगे."

मैं घर वापिस आया और अम्मी को सारा किस्सा सुनाया. उन्होंने कहा—“अच्छा, हम इसे महफूज रख देंगे. अगर इसका कोई मालिक आ जाए तो वापिस कर देंगे."

दूसरे दिन यह बाक्या आग की तरह गाँव में फैल गया. गाँव के एक डाक्टर साहब मेरे घर आए और कहा कि यह नोट मेरा है. मगर मैं अब यह नोट इस बच्चे को देता हूँ अम्मी ने बहुत कहा कि इस को ले जाइये. लेकिन वह न माने और मजबूर होकर नोट ले लेना पड़ा. डाक्टर ने खुश होकर मेरी पीठ थपकते हुए कहा—“शाबाश बेटे! तुम बड़े ही सच्चे और अच्छे बच्चे हो. भगवान तुम्हें मदा सुखी रखे और देस को तो ऐसे ही बच्चों की जरूरत है. तुम भारत के होनहार वीर बालक हो."

दूसरे दिन से डाक्टर ने मेरी पढ़ाई का भी इन्तजाम कर दिया और सारे गाँव बालों ने मुझे शाबाशी दी.

## बालाकी

(बहन अहमदी मकबूल रिजवी)

महाल इसे तो अपनी अम्मी को दे दियो. हम अमीन साहब से ये सब बातें कह दिये."

मैं घर वापिस आया और अम्मी को सारा किस्सा सुनाया. उन्होंने कहा—“अच्छा, हम इसे महफूज रख देंगे. अगर इस का कौन मालक आ जाए तो वापिस कर दिये."

दूसरे दिन ये واقعه अक की तरह गाँव में फैल गया. गाँव के एक डाक्टर साहब मेरे घर आए और कहा कि यह नोट मेरा है. मगर मैं अब ये नोट इस बच्चे को देता हूँ. अम्मी ने बेमती कहा कि इसको ले जाइये, लेकिन वह न माने और मजबूर होकर नोट ले लेना पड़ा. डाक्टर ने खुश होकर मेरी पीठ थपकते हुए कहा—“शाबाश बेटे! तुम बड़े ही सच्चे और अच्छे बच्चे हो. भगवान तुम्हें मदा सुखी रखे और देस को तो ऐसे ही बच्चों की जरूरत है. तुम भारत के होनहार वीर बालक हो."

दूसरे दिन से डाक्टर ने मेरी पढ़ाई का भी इन्तजाम कर दिया और सारे गाँव बालों ने मुझे शाबाशी दी.

## चालाकी

(बहन अहमदी मकबूल रिजवी)



आने लगे। इस में मेरे एक मास्टर साहब भी थे। कहने लगे—“बाबा, हम ने सुना है कि तुम्हें पाँच रुपए का नोट मिला है और तुम उसे देने के लिये अभीन साहब के पास जा रहे हो। खुदा ने तुम्हें यह नोट मुसीबत दूर करने के लिये दिया है। अच्छा तो मुझे बह कापी तो लाओ, देखें किसका नाम है ? ”

मैंने कापी मास्टर साहब को दे दी। उन्होंने कापी के हर पन्ने को देखा। केवल नाम कहीं भी न था। नोट को हाथ में लेते हुए कहने लगे—“मिथो, यह पाँच रुपए का नोट नहीं”। मैं मास्टर साहब की सूरत देखने लगा और यह सुनने के लिये बेताब होगया कि वह आगे क्या कहेंगे।

उन्होंने कहा—“यह तो सौ रुपए का नोट है बाबा” यह सुन कर मेरा दिल धड़कने लगा, आँखों से आंसू निकल आए जिन्हें देख कर लोगों ने कहा—“क्यों मिथो ? यह तो खुश होने की बात है, तुम रो क्यों रहे हो ? ”

मैंने कहा—“मुझे डर लग रहा है। कहीं ऐसा न हो अभीन साहब मुझे वोर समझ कर जेल में बन्द कर दें” यह सुनकर सब लोग हँस हँस कर कहने लगे—“खूब ! खूब ! वह तुम्हें क्यों पकड़ने लगे, कापी पर तो नाम है न निशान, यह तुम्हारे सब का फल है, जाओ

१०

अधर ये खबर हमारे मछले भर में फैल गئی। और लोग मछरے پاس آنے لکے۔ اس میں مہرے ایک ماسٹر صاحب بھی تھے۔ کہنے لکے—”بابا! ہم نے سنا ہے کہ تمہیں پانچ روپے کا نوٹ ملا ہے اور تم اسے دینے کے لئے امین صاحب کے پاس جا رہے ہو۔ خدا نے تمہیں یہ نوٹ مصیبت دور کرنے کے لئے دیا ہے۔ اچھا تو مجھے وہ کاپی تو لاؤ، دیکھیں کس کا نام ہے ؟ ”

میں نے کاپی ماسٹر صاحب کو دے دی۔ انہوں نے کاپی کے ہر پلے کو دیکھا۔ کہول نام کہیں بھی نہ تھا۔ نوٹ کو ہاتھ میں لیتے ہوئے کہنے لکے—”میاں! یہ پانچ روپے کا نوٹ نہیں“۔ میں ماسٹر صاحب کی صورت دیکھنے لگا اور یہ سننے کے لئے بے تاب ہو گیا کہ وہ آگے کیا کہیں گے۔

انہوں نے کہا—”یہ تو سو روپے کا نوٹ ہے بابا“۔ یہ سن کر میرا دل دھڑکنے لگا، آنکھوں سے آنسو نکل آئے جنہیں دیکھ کر لوگوں نے کہا—”کہیں میاں؟ یہ تو خوش ہونے کی بات ہے۔ تم دو کہوں دے ہو ؟ ”

میں نے کہا—”مجھے ڈر لگ رہا ہے۔ کہیں ایسا نہ ہو امین صاحب مجھے چور سمجھ کر جیل میں بند کر دیں“۔ یہ سن کر سب لوگ ہلکے ہلکے کہنے لکے—”خوب! خوب! وہ تمہیں کہیں پکڑنے لکے، کاپی پر تو نام ہے نہ نشان۔ یہ تمہارے مہرے کا پھل ہے، جاؤ



कि सुबह की नमाज़ पढ़ कर तफरीह को चलना चाहिये, मैंने नमाज़ पढ़ ली, और बाहर चल पड़ा। सोचा कि अब किस तरह चलना होगा ? फिर मैं संतोश और शकूर के घर गया। हम तीनों गांव से दूर निकल गए इधर उधर की बातें करते, इतने में मेरी नज़र एक छोटी सी कापी पर पड़ी जो रास्ते के किनारे पड़ी हुई थी। मैंने बढ़ कर उसे उठा लिया और पन्ने उलटने लगा कि नाम देख कर मालिक को बापिस कर दूं, लेकिन नाम कहीं न निकला। पन्नों के बीच एक मुद्रा हुआ कागज़ रखा था जिसका रंग हलका आसमानी था। मैंने ठीक से देखा तो वह पांच रुपए का नोट मालूम हुआ। मेरा दिल धक से रह गया कि अब क्या होगा ? नई नई बातें मन में आने लगीं। कभी डर होता कि उसे उठाने से कहीं पुलिस पकड़ न ले और फिर घर का खयाल आ जाता कि चलो इस से कुछ आटा और दाल सोल लेंगे और फिर कल के खाने का बन्दोबस्त आसानी से हो जायगा। साथ ही साथ यह बात भी मन में आई कि जिसके यह रुपए हैं वह परेशान हो रहा होगा।

मेरे मित्र खुश थे और एक ने कहा—“चलो हम सब मिल कर मिठाई खाएंगे।”

मैंने कहा—“नहीं, नहीं, ऐसा तो कभी नहीं होगा।”

सन्तोश ने कहा—“फिर इसका क्या करोगे ?”

मैं—“यह कैसे अमीन साहब पुलिस वाले को दे दूंगा।”

शकूर ने हँसते हुए कहा—“अमा यार, तुम भी बड़े नेक बन चले

के صبح کی نماز پڑھ کر تدبیر کو چلنا چاہئے۔ میں نے نماز پڑھ لی اور باہر چل پڑا۔ سوچا کہ اب کس طرف چلنا ہوگا ؟ پھر میں سنتوش اور شکور کے گھر گیا۔ ہم تینوں گلوں سے دوڑ نکال گئے ادھر ادھر کی باتیں کرتے۔ اتلے میں مہوی نظر ایک چھوٹی سی کاپی پر پڑی جو راستے کے کنارے پڑی ہوئی تھی۔ میں نے بوجھ کر اسے اٹھا لیا اور پلٹے اُٹلتے لگا کہ نام دیکھ کر مالک کو واپس کر دوں۔ لیکن نام کہیں نہ نکلا۔ پلٹوں کے پہنچ ایک مڑا ہوا کاغذ رکھا تھا جس کا رنگ ہلکا آسمانی تھا۔ میں نے تھپک سے دیکھا تو وہ پانچ روپے کا نوٹ معلوم ہوا۔ مہر دال دھک سے رہ گیا کہ اب کیا ہوگا ؟ نئی نئی باتیں من میں آنے لگیں۔ کبھی قہر ہوتا کہ اُسے اُتھانے سے کہیں پولیس پکڑ نہ لے اور پھر گھر کا خيال آجاتا کہ چلو اس سے کچھ آتا اور دال مول لیں گے اور پھر کل کے کھانے کا بلدوبست آسانی سے ہو جائیگا۔ ساتھ ہی ساتھ یہ بات بھی من میں آئی کہ جس کے یہ روپے ہمیں وہ پریشان ہو رہا ہوگا۔

مہرے متر خوش تھے اور ایک نے کہا—“چلو ہم سب ملکر

مٹھائی کھائیں گے۔”

میں نے کہا—“نہیں، نہیں، ایسا تو کبھی نہیں ہوگا۔”

سنتوش نے کہا—“پھر اس کا کیا کر گئے ؟”

میں—“یہ پوسے اُمین صاحب پولیس والے کو دے دوںگا۔”

شک، نے ہنستے ہوئے کہا—“اما، تا، تم ہم دے دے نیک ہو۔



## मेरा काम

(भाई जाहिर उलअमीन)

प्यारे भाई बहनो ! जाहिर मियाँ ने हमें अपना अच्छा काम लिख भेजा है. अगर तुमने भी कोई अच्छा काम किया है, या किसी की सेवा की हो तो 'बच्चों की दुनिया' के एडीटर के पते पर लिख भेजो. मैं उन्हें जरूर छापूँगा. और यह सिलसिला जारी रहेगा. फिर ऐसे लेख एक किताब बन कर तुम्हारे पास आयेंगे—एडीटर

अच्छा जान के मरते समय मैं बहुत छोटा था. वह क्या मरे हम पर कठिनाइयों के पहाड़ टूट पड़े. वह नौकरी करते थे और बहुत सा रुक्या पैसा लाते थे. इधर कुछ दिनों का बात है घर में खाने को कुछ नहीं था तो मैं और अम्मी भूके ही सो गए थं. अम्मी मुझ से कहतीं—“बेटा, कठिनाइयों में रहकर ही सब और शान्ति से काम करो और पढ़ते जाओ.” और दिन गुजरते गए. अम्मी मेहनत मजदूरी करने लगीं और मेरी पढ़ाई बराबर जारी थी. मास्टर साहब ने मेरी फीस माफ़ कर दी थी और सरकार की तरफ से मेरी कितानों का भी वन्दो-बस्त हो चुका था.

रमबान का महीना आ गया. मुझे बड़ी खुशी हुई. इसलिये कि महीना भर छुट्टियां रहनी हैं. मैं सेदरी (मुल्ह अंधेरे खाना) कर चुकने के बाद नन्हा सा दिया रौशन किये बैठा कुरान शरीफ़ पढ़ रहा था तब जाकर कल उजाला सा नखर आने लगा था. मैंने सोचा

## मेरा काम

(बैतानی طاهر الاسمان)

پیارے بھائی بہنوں ! طاهر مہاں نے ہمیں ایذا اچھا کام لکھ بھیجا ہے . اگر تم نے بھی کوئی 'چھا کام' کیا ہے' یا کسی کی سہا کی ہو تو بچوں کی دنیا کے اڈیٹر کے ہتی پر لکھ بھیجو . میں انہیں ضرور چھاپوں گا . اور یہ سلسلہ جاری رہے گا . پھر ایسے لکھ ایک کتاب بلکہ تمہارے پاس آئیں گے—ایڈیٹر

ایسا جان کے مرنے سے میں بہت چھوٹا تھا . وہ کیا مرے ہم پر کٹھنڈیوں کے پہاڑ ٹوٹ پڑے . وہ نوکری کرتے تھے اور بہت سا روپیہ پیسہ لاتے تھے . ادھر کچھ دنوں کی بات ہے کہو میں کھانے کو کچھ نہیں تھا تو میں اور امی بھوکے ہی سو گئے تھے . امی مجھ سے کہتی تھیں—“بھتی کتھنا نہیں میں وہ کر ہی صبر اور شائستگی سے کام کرو اور پڑھتے جاؤ .” اور دن گذرتے گئے . امی مستحلت مژدوری کرنے لگیں اور میری پڑھائی برابر جاری تھی . ماسٹر صاحب نے میری فیس معاف کر دی تھی اور سرکار کی طرف سے مہوری کتبوں کا بھی بلڈوسٹ ہو چکا تھا .

رمضان کا پہلہ آگیا . مجھ بڑی خوشی ہوئی . اس لئے کہ پہلے پور چھتیاں رہتی ہیں . میں سترہی (صبح اندھوڑے کھانا) کر چکنے کے بعد لٹھا سا دنیا روشن کئے بھتی قرآن شریف پڑھ رہا تھا اور باہر کچھ کچھ اُجالا سا نظر آنے لگا تھا . میں نے سوچا



# बच्चों की दुनिया



एडीटर—प्रेम भाई



## सूरज

( भाई महमूद )

वह दूर भाड़ियों के पीछे जरा तो देखो  
बंगारा सा वह गोला सूरज है वधर देखो

अपनी बमक दिखाता  
सूरज निकल रहा है !

दुनिया को जगमगाता बागों को वह हँसाता  
सुस्ती को दूर करता लोगों को है जगाता

अपनी बमक दिखाता  
सूरज निकल रहा है !

जल्दी बढो ऐ बच्चों कुछ काम करो तुम भी  
हिम्मत कभी न हारो और नाम करो तुम भी

बस यह सबक सुनाता  
सूरज निकल रहा है !

हमें इस पते पर पत्र लिखो कि "बच्चों की दुनिया" कैसी है  
और इसमें और क्या क्या होना चाहिये ?

## सूरज

( भीमानी मन्मथ )

वो दूर जहाँ-जहाँ के पीछे धरा तो देखो  
अन्धारा सा वो गोला सूरज है देर देखो

अपनी चमक दिखाता  
सूरज निकल रहा है !

दुनिया को जगमगाता बागों को वह हँसाता  
सुस्ती को दूर करता लोगों को है जगाता

अपनी चमक दिखाता  
सूरज निकल रहा है !

जल्दी अँधेरा अँधेरा बचो कुछ काम करो तुम भी  
हिम्मत कभी न हारो और नाम करो तुम भी

बस ये सबक सुनाता  
सूरज निकल रहा है !

हमें इस पते पर पत्र लिखो कि "बच्चों की दुनिया" कैसी है  
और इसमें और क्या क्या होना चाहिये ?



ہندوستان کو الگ ہٹا کر دوسرے دیسوں سے کوئی مدد لے سکتے ہیں۔ انہوں نے اپنے اعلان میں کہا ہے کہ کسی راجہ نے شہزادہ کھیا بھنگ کو راجہ نہیں مانا۔ اصل میں اسکا کارن ہندوستان کا کوا رخ تھا نہیں تو لندن کی کچھ خبروں سے معلوم ہوتا تھا کہ برطانی سرکار اس تین سال کے لڑکے کو راجہ مان لے لے کی سوچ رہی ہے۔ ان سب باتوں کو ایک ساتھ دیکھ کر دیکھا جائے تو اس سے ایک نتیجہ یہ نکلا کہ بنگال میں اب شاید یہ لڑائی نہ ہو اور دوسرا نتیجہ یہ نکلا ہے کہ ہندوستان کی ساکھ اور اس کی آواز کا اثر پہلے سے زیادہ ہو گیا ہے۔ کمرون ویلے، کانڈونسن اور کوریا کے بارے میں نئی تجویزیں ملنے میں ہندوستان کے آگے آگے دھلنے سے یہ ساکھ اور بھی بڑھ گئی ہے۔

## روشن سائید

(حضرت 'چکر' مراد آبادی)

کئی یہ کہدے لاشن گلشن  
بلائیوں ایک نشیمن

پہل کہے ہیں گلشن گلشن  
لیکن ایسا دامن  
کاتوں کا بھی حق ہے کچھ آخر  
کون چہرائے ایسا دامن

نام ادھورا اور آرادی  
نام بڑے اور تھوڑے دروہن

شمع ہے لیکن دہلندہ ملی دھلندہ ملی  
سایہ ہے لیکن روشن روشن

ہندوستان کو الگ ہٹا کر دوسرے دیسوں سے کوئی مدد لے سکتے ہیں۔ انہوں نے اپنے اعلان میں کہا ہے کہ کسی راجہ نے شہزادہ کھیا بھنگ کو راجہ نہیں مانا۔ اصل میں اسکا کارن ہندوستان کا کوا رخ تھا نہیں تو لندن کی کچھ خبروں سے معلوم ہوتا تھا کہ برطانی سرکار اس تین سال کے لڑکے کو راجہ مان لے لے کی سوچ رہی ہے۔ ان سب باتوں کو ایک ساتھ دیکھ کر دیکھا جائے تو اس سے ایک نتیجہ یہ نکلا کہ بنگال میں اب شاید یہ لڑائی نہ ہو اور دوسرا نتیجہ یہ نکلا ہے کہ ہندوستان کی ساکھ اور اس کی آواز کا اثر پہلے سے زیادہ ہو گیا ہے۔ کمرون ویلے، کانڈونسن اور کوریا کے بارے میں نئی تجویزیں ملنے میں ہندوستان کے آگے آگے دھلنے سے یہ ساکھ اور بھی بڑھ گئی ہے۔

## رؤشن ساہا

(ہجرت 'بیر' مراد آبادی)

کوئی یہ کہدے گلشن گلشن  
بلائیوں ایک نشیمن

پہل کہے ہیں گلشن گلشن  
لیکن اپنا اپنا دامن  
کاتوں کا بھی حق ہے کچھ آخر  
کون چہرائے ایسا دامن

نام ادھورا اور آرادی  
نام بڑے اور تھوڑے دروہن

شمع ہے لیکن دہلندہ ملی دھلندہ ملی  
سایہ ہے لیکن روشن روشن



### नैपाल में समझौता

हिन्दुस्तान के पड़ोसी मुल्क नैपाल में, जहाँ के राजा अपने प्रधान मंत्री के चंगुल से निकल कर देहली चले आए थे और जहाँ की जनता सरकार के खिलाफ इधियाबन्द बगावत पर उतर आई थी, अब हिन्दुस्तान की कोशिश से शान्ति की एक सूत निकल आई है।

हिन्दुस्तान ने, जैसा कि पिछले लेख में लिखा जा चुका है, शाह त्रिभुवन की जगह उनके पोते को नैपाल नरेश मानने से इनकार कर दिया था और बहाँ के रानाओं पर, जो सरकार और मुल्क पर कब्जा किये हुए हैं, इस बात के लिये खोर डाल रहा था कि वह जनता के चुने हुए नुमाइन्दों की एक विधान सभा बनाएँ और बीच के जमाने के लिये राजकाज के कामों में जनता के प्रतिनिधियों को शरीक करें। इन तजवीजों पर बात चीत करने के लिये नैपाल के प्रतिनिधि दो बार नई देहली आए। पहली बार उन्होंने हिन्दुस्तान को जो जवाब दिया उसमें टालमटोल करने की तरकीब मलकती थी और इसीलिये हिन्दुस्तान ने उनके जवाब को रद्दीकार न किया। दूसरी बार बातचीत के बाद नैपाल के प्रतिनिधि ने एलान कर दिया है कि शाह त्रिभुवन जब बाँहें चले आएँ और राजकाज का काम संभाल लें, विधान सभा अगले साल तक खरूर बन जायगी और तब तक के लिये १४ आदमियों के मंत्रिमण्डल में से सात जनता के प्रतिनिधि होंगे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन तजवीजों को पसन्द कर लिया है और नैपाल कांग्रेस ने हिन्दू सरकार के कइने से लड़ाई की कारबाइयाँ रोक दी हैं। नैपाल के प्रधान मंत्री ने भी यह देख लिया

### नैपाल में सज्जदहोत्र

हलदस्तान के पुरूसी मुल्क नैपाल में, जहाँ के राजा अले प्रोद्धान मन्त्री के चंगुल से निकल कर देहली चले आये थे और जहाँ की जलमा सरकार के खलफ हतहतार बलद बगावत पर अत्र आती त्थी, अब हलदस्तान की कुशुष से शान्ति की एक सूरत निकल आती है।

हलदस्तान ने, जैसा कि पछले लेख में लिखा जा चुका है, शाह त्रिभुवन की जगह उनके पोते को नैपाल नरेश मानने से इनकार कर दिया था और वहाँ के रानाओं पर, जो सरकार और मुल्क पर कब्जा किये हुए हैं, इस बात के लिये खोर डाल रहा था कि वह जनता के चुने हुए नुमाइन्दों की एक विधान सभा बनाएँ और बीच के जमाने के लिये राजकाज के कामों में जनता के प्रतिनिधियों को शरीक करें। इन तजवीजों पर बात चीत करने के लिये नैपाल के प्रतिनिधि दो बार नई देहली आए। पहली बार उन्होंने हिन्दुस्तान को जो जवाब दिया उसमें टालमटोल करने की तरकीब मलकती त्थी और असी ल्हे हलदस्तान ने अल्के ज़ाब कु सुबिकार न्हे क्हा। दूसरी बार बात चीत के बलद नैपाल के प्रुती नल्ही ने अलान कर द्िया है कि शाह त्रिभुवन जब बाँहें चले आँ और राज का काम संभल लें, व्दहान सभल अल्के साल तक खरूर बन जायगी और तब तक के लिये १४ आदमों के मन्त्री मण्डल में से सात जलमा के प्रुती नल्ही हों गे।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अन् तजवीजों कु पसलद कर ल्िया है और नैपाल काँग्रेस ने हलद सरकार के कइने से लड़ाँ क्ही कारबाइयाँ रोक दी हैं। नैपाल के प्रधान मन्त्री ने भी यह देख ल्िया है



رکھ گئے اور رکتے رکتے چلے گئے، وہ رکے رکے یہ کہہ رہے تھے کہ جب تک کشمیر کا جھگڑا کانفرنس کے ایجنڈا پر نہیں رکھا جائیگا اسوقت تک پاکستان دنیا اور خاص کر ایشیا میں شائستگی کی کسی بات چیت میں شریک نہیں ہوگا۔ اور گئے یہ کہہ رہے تھے کہ ان کو اس بات کا یقین دلا دیا گیا ہے کہ کشمیر کے مسئلے پر کامن ویلتھ کے پردھان ملٹری مل بھیج کر بات چیت کرینگے۔ جہاں تک ان کی مبالغہ کا سوال ہے وہ پردھان نہیں ہوتی۔ اور کشمیر کے سوال پر جو بات چیت کی گئی وہ نجی تھی۔ اس میں سب پردھان ملٹری نہیں شریک تھے اور اسکا کوئی نتیجہ نہیں نکل سکا۔

نیکال سکا۔

شاید ریاضت علی خاں یہ بات پہلے ہی سے جانتے تھے اس لئے کہ کامن ویلتھ کانفرنس میں آپس کے جھگڑے نہ تو لائے جاتے تھے اور نہ چکائے جاتے تھے۔ انہوں نے کشمیر کا سوال یہ سوچ کر نہیں اٹھایا تھا کہ اس کا دنیا پر کیا اثر پڑے گا بلکہ یہ سمجھ کر دیتے تھے کہ اس طرح پاکستانی جنگ پر ایذا اثر جمائیں گے۔ مگر وہاں کے اخباروں سے پتہ چلتا ہے کہ پردھان ملٹری کا یہ نشانہ خطا کر گیا۔ اب انہیں جنگ کو اپنے ساتھ رکھنے کے لئے کوئی نئی بات کرنی ہوگی اور ایسی ایک بات یہ ہے کہ وہ بھیجے اور ب کے اسلامی دیسوں کا سلگھنا شروع کر دیں۔ اس طرح وہ اپنی جنگ کو بھلانے کے علاوہ ان دیسوں میں ایذا نام کر لیں گے اور پچھمی راشٹروں کو بھی خوش کر سکیں گے۔ پردھان اور ایشیا کی طرح بھیجے اور ب میں بھی دوس کے خلاف ایک مروجہ قائم کرنا چاہتے تھے۔

نیکال سکا۔

شاید ریاضت علی خاں یہ بات پہلے ہی سے جانتے تھے اس لئے کہ کامن ویلتھ کانفرنس میں آپس کے جھگڑے نہ تو لائے جاتے تھے اور نہ چکائے جاتے تھے۔ انہوں نے کشمیر کا سوال یہ سوچ کر نہیں اٹھایا تھا کہ اس کا دنیا پر کیا اثر پڑے گا بلکہ یہ سمجھ کر دیتے تھے کہ اس طرح پاکستانی جنگ پر ایذا اثر جمائیں گے۔ مگر وہاں کے اخباروں سے پتہ چلتا ہے کہ پردھان ملٹری کا یہ نشانہ خطا کر گیا۔ اب انہیں جنگ کو اپنے ساتھ رکھنے کے لئے کوئی نئی بات کرنی ہوگی اور ایسی ایک بات یہ ہے کہ وہ بھیجے اور ب کے اسلامی دیسوں کا سلگھنا شروع کر دیں۔ اس طرح وہ اپنی جنگ کو بھلانے کے علاوہ ان دیسوں میں ایذا نام کر لیں گے اور پچھمی راشٹروں کو بھی خوش کر سکیں گے۔ پردھان اور ایشیا کی طرح بھیجے اور ب میں بھی دوس کے خلاف ایک مروجہ قائم کرنا چاہتے تھے۔



के बारे में पत्र न्यूयार्क के सभी तक जारी रहने का कारन था तो यह है कि अमरीका और रूस दोनों यह चाहते हैं कि इनकार की बात दूसरा कहे ताकि दुनिया में बदनामी बसी की हो. या फिर यह बात है कि अमरीका के साथी खुद भी जरमनी की हथियारबन्दी को ज्यादा पसन्द नहीं करते और रूस से समझौते के लिये बात चीत की सम्भावना हमेशा के लिये खतम नहीं करना चाहते. एक तो इसलिये कि अभी उन सब की ताकत अमरीका की मदद के बाद भी रूस और उस के पूरबी योरप के साथियों की ताकत से कम होगी. और दूसरे इसलिये कि रूसी राश्ट्र पहली बड़ी लड़ाई के बाद यह देख चुके हैं कि जरमनी को हथियारबन्द करना उनके अपने लिये फितना खतरनाक साबित हुआ.

पच्छिमी राश्ट्रों का यह डर अमरीका के पैर में एक तरह की बेड़ी बना हुआ है. और अगर रूस ने मौक़ा गनीमत जान कर इन राश्ट्रों की तैयारी से पहले उन पर वार न कर दिया, जिसकी अभी कोई सम्भावना नहीं है, तो एशिया की तरह योरप की लड़ाई भी थोड़े दिनों के लिये टल जायगी, चार बड़ों की कानफरेन्स हो जाहे न हो. हाँ, अगर वह कानफरेन्स कामयाबी के साथ हो जाय तो शान्ति की खुद थोड़ी और बढ़ जायगी.

करसीर और कामनवेल्थ

ऊपर कामनवेल्थ कानफरेन्स के हाल में एक बात की चरचा

के बारे में यंत्र बेवहार के अभी तक जारी रहने का कारन या तो यह है कि अमरीका और रूस दोनों ये चाहते हैं कि इनकार की बात दूसरा कहे ताकि दुनिया में बदनामी बसी की हो. या फिर यह है कि अमरीका के साथी खुद भी जरमनी की हथियार बन्दी को ज्यादा पसन्द नहीं करते और रूस से समझौते के लिये बात चीत की सम्भावना हमेशा के लिये खतम नहीं करना चाहते. एक तो इस लिये कि अभी उन सब की ताकत अमरीका की मदद के बाद भी रूस और उस के पूरबी योरप के साथियों की ताकत से कम होगी. और दूसरे इसलिये कि रूसी राश्ट्र पहली बड़ी लड़ाई के बाद यह देख चुके हैं कि जरमनी को हथियार बन्द करना उनके अपने लिये फितना खतरनाक साबित हुआ.

पच्छिमी राश्ट्रों का यह डर अमरीका के पैर में एक तरह की बेड़ी बना हुआ है. और अगर रूस ने मौक़ा गनीमत जान कर इन राश्ट्रों की तैयारी से पहले उन पर वार न कर दिया, जिसकी अभी कोई सम्भावना नहीं है, तो एशिया की तरह योरप की लड़ाई भी थोड़े दिनों के लिये टल जायेगी, चार बड़ों की कानफरेन्स हो जाहे न हो. हाँ, अगर यह कानफरेन्स कामयाबी के साथ हो जाये तो शान्ति की मदत तेज़ी से हो जायेगी.

कम्युन और कामनवेल्थ

ऊपर विलेज कानफरेन्स के हाल में एक बात की चरचा



एक दूसरे के लिये काट कपट, शक और डर भरा हुआ है, फिर भी रूस ने जर्मनी के बारे में चार बड़े राष्ट्रों यानी अमरीका, बरतानिया, फ्रान्स और रूस के विदेस मंत्रियों की जिख कानफरेन्स का प्रस्ताव किया है उससे दिल्ली का एक कोना साफ हो सकता है, अभी इस तजवीब पर पत्र ब्योहार हो रहा है, पच्छिम के 'ताँन बड़े' इस कानफरेन्स में रूस के साथ अपने तमाम भगड़े पेश करना चाहते हैं जब कि रूस सब से पहले जर्मनी के सवाल पर बहस करना चाहता है ख़ास कर पच्छिमी राष्ट्रों की उस कारबाई पर जिसके जरिये उन्होंने पच्छिमी जर्मनी को हथियार बन्द करने का फ़ैसला किया है, यह फ़ैसला रूस के साथ उनके समझौतों और पिछले एलानों के खिलाफ़ है, अगर इन राष्ट्रों का कहना है कि रूस ने भी पूरबी जर्मनी में पुलिस के नाम से दो लाख आदमियों की एक फौज बना ली है जिससे पच्छिमी जर्मनी और पच्छिमी योरप को ख़तरा है,

अमरीका के शक भरे दिल में एक खयाल यह पैदा हो रहा है कि रूस ने चार बड़ों की कानफरेन्स का प्रस्ताव जर्मनी को हथियार-बन्द बनाने के फ़ैसले से दब कर या उसको रोकने के लिये पेश किया है, और इसीलिये अमरीका इसे और ज्यादा दबाना चाहता है और जर्मनी पर बात चीत के बदले में दूसरे सवाल उठाना चाहता है, इस बीच में वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता और इसीलिये न तो ट्रूमैन और उनके विदेस मंत्री के लहजे में कोई तबदीली हुई है न अमरीका की पालिसी अपनी

लोक दूसरे के लिये काट कपट, शक और डर भरा हुआ है, फिर भी जर्मनी के बारे में चार बड़े राष्ट्रों यानी अमरीका, बरतानिया, फ्रान्स और रूस के विदेस मंत्रियों की जिख कानफरेन्स का प्रस्ताव किया है उससे दलौ का एक कोना साफ हो सकता है, अभी इस तजवीब पर पत्र ब्योहार हो रहा है, पच्छिम के 'लौन बड़े' इस कानफरेन्स में रूस के साथ अपने तमाम भगड़े पेश करना चाहते हैं जब कि रूस पहले जर्मनी के सवाल पर बहस करना चाहता है ख़ास कर पच्छिमी राष्ट्रों की उस कारबाई पर जिसके जरिये उन्होंने पच्छिमी जर्मनी को हथियार बन्द करने का फ़ैसला किया है, यह फ़ैसला रूस के साथ उनके समझौतों और पिछले एलानों के खिलाफ़ है, अगर इन राष्ट्रों का कहना है कि रूस ने भी पूरबी जर्मनी में पुलिस के नाम से दो लाख आदमियों की एक फौज बना ली है जिससे पच्छिमी जर्मनी और पच्छिमी योरप को ख़तरा है,

अमरीका के शक भरे दिल में एक खयाल यह पैदा हो रहा है कि रूस ने चार बड़ों की कानफरेन्स का प्रस्ताव जर्मनी को हथियार-बन्द बनाने के फ़ैसले से दब कर या उसको रोकने के लिये पेश किया है, और इसीलिये अमरीका इसे और ज्यादा दबाना चाहता है और जर्मनी पर बात चीत के बदले में दूसरे सवाल उठाना चाहता है, इस बीच में दूसरे सवाल उठाना चाहता है, इस बीच में वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता और इसीलिये न तो ट्रूमैन और उनके विदेस मंत्री के लहजे में कोई तबदीली हुई है न अमरीका की पालिसी अपनी



तक का सब से बड़ा बजट है, पालियामेन्ट की मंजूरी चाहते हुए प्रधान ट्रमैन ने कहा है कि कोरिया पर कम्युनिस्ट हमले से हमको यह आगाही मिल गई है कि रूस के राजकर्ता अपने मन की मुराद पाने के लिये दुनिया की शान्ति के भंग हो जाने की परवाह नहीं करेंगे. और उनको इस कारवाई से रोकने के लिये अमरीका अपना फौजी खर्च बढ़ा रहा है और अपने साथियों को हमेशा से ज्यादा मदद दे रहा है. लेकिन लड़ाई की इन तैयारियों से. चाहे वह वचाव के लिये क्यों न हों, शान्ति की रक्षा नहीं हो सकेगी. एक तरफ की तैयारियों से दूसरी तरफ तैयारियाँ शुरू या तेज हो जायँगी. अर दोनो तरफ ख़ास कर पूँजर्पित देसों में लड़ाई की तैयारियाँ देस के आर्थिक जीवन का एक दुनियावी हिस्सा बन जाती हैं. उनको रोकना सरकार के बस से बाहर और उसके अपने लिये ख़तरनाक बन जाता है. इन तैयारियों को जारी रखने के लिये नित नए बहाने ढूँढे जाते हैं और एक मंजिल ऐसी आ जाती है जब लड़ाई छेड़ने के अलावा कोई दूसरा बहाना नहीं रह जाता. कभी ऐसा भी होता है कि तैयारियों से दोनों तरफ तनाव बढ़ता जाता है और एक मामूली सी घटना बड़े पैमाने पर मार धाड़ का कारन बन जाती है.

#### चार बड़े

अमरीका ने जो राह अपनाई है वह उसके अपने ख़याल में और उसके अपने फायदे के लिये चाहे जितनी अच्छी हो मगर दुनिया की शान्ति को इस से फायदे की जगह नुकसान होगा. शान्ति की रक्षा लड़ाई की तैयारियों से नहीं बल्कि दिल की सफाई और आपस के

एक का सब से बड़ा बजट है, पार्लियामेन्ट की मंजूरी चाहते हुये प्रधान ट्रमैन ने कहा है कि कोरिया पर कम्युनिस्ट हमले से हम को यह आगाही मिल गई है कि रूस के राजकर्ता अपने मन की मुराद पाने के लिये दुनिया की शान्ति के भंग हो जाने की परवाह नहीं करेंगे. और उनको इस कारवाई से रोकने के लिये अमरीका अपना फौजी खर्च बढ़ा रहा है और अपने साथियों को हमेशा से ज्यादा मदद दे रहा है. लेकिन लड़ाई की इन तैयारियों से. चाहे वह वचाव के लिये क्यों न हों, शान्ति की रक्षा नहीं हो सकेगी. एक तरफ की तैयारियों से दूसरी तरफ तैयारियाँ शुरू या तेज हो जायँगी. अर दोनो तरफ ख़ास कर पूँजर्पित देसों में लड़ाई की तैयारियाँ देस के आर्थिक जीवन का एक दुनियावी हिस्सा बन जाती हैं. उनको रोकना सरकार के बस से बाहर और उसके अपने लिये ख़तरनाक बन जाता है. इन तैयारियों को जारी रखने के लिये नित नए बहाने ढूँढे जाते हैं और एक मंजिल ऐसी आ जाती है जब लड़ाई छेड़ने के अलावा कोई दूसरा बहाना नहीं रह जाता. कभी ऐसा भी होता है कि तैयारियों से दोनों तरफ तनाव बढ़ता जाता है और एक मामूली सी घटना बड़े पैमाने पर मार धाड़ का कारन बन जाती है.

#### चार बड़े

अमरीका ने जो राह अपनाई है वह उसके अपने ख़याल में और उसके अपने फायदे के लिये चाहे जितनी अच्छी हो मगर दुनिया की शान्ति को इस से फायदे की जगह नुकसान होगा. शान्ति की रक्षा लड़ाई की तैयारियों से नहीं बल्कि दिल की सफाई और आपस के



### लडाई की तैयारी

लंदन कानफरेन्स में जैसे ठोस फ़ैसले दूर पूर्व के बारे में हुए तब लंदन कानफरेन्स में जैसे ठोस फ़ैसले दूर पूर्व के बारे में हुए तो हैं वैसे बीच पूर्व और योरप के बारे में नहीं हुए या अगर हुए तो उनका एलान नहीं किया गया है। मगर स्टालिन से बात चीत की जो बात कही गई है अगर वह पूरी होगई तो शायद योरप की गुथी सुलझाने की भी कोई तरकीब निकल आए, अभी तो वहाँ एटलान्टिक फ़ौज की तैयारी हो रही है और इस फ़ौज के अमरीकी कमांडर जनरल आइजन होवर पच्छिमी योरप के देशों का दौरा कर रहे हैं। इस दौर में उन्हें बताया गया है कि एटलान्टिक समझौते वाले सब मुलक अपनी अपनी फ़ौज बढ़ा रहे हैं। उनके अपने मुलक यानी अमरीका में फ़ौज का खर्च नए साल के बजट में चौगुना कर दिया गया है जिनका एक नतीजा यह होगा कि अमरीका की फ़ौज, जिस में छे महीने पहले पन्द्रह लाख से कम औरत मर्द थे और जिसकी गिनती अब पचीस लाख हो जायगी। पंद्रह चुकी है, एक साल में करीब करीब पैंतीस लाख हो जायगी। नेशनल गार्ड और रिजर्व के बीस लाख औरत मर्द, जिनको जरूरत के बख़्त काम पर बुलाया जा सकता है। इसके अलावा है। प्रधान ट्रूमैन ने अपनी पॉलियामेन्ट में नए साल का बजट पेश करते हुए कहा है कि साढ़े इकत्तीस अरब डालर की उस रकम के साथ साथ जो अमरीका अपने वचाव पर खर्च कर रहा है सात करोड़ डालर से कुछ ज्यादा की रकम उसके साथियों को दी जायगी जिस में से

लंदन कानफरेन्स में जैसे तैयारी फ़ैसले दूर पूर्व के बारे में हुए तो हैं वैसे बीच पूर्व और योरप के बारे में नहीं हुए या अगर हुए तो उन फ़ौज की तैयारी हो रही है और इस फ़ौज के अमरीकी कमांडर जनरल आइजन होवर पच्छिमी योरप के देशों का दौरा कर रहे हैं। इस दौर में उन्हें बताया गया है कि एटलान्टिक समझौते वाले सब मुलक अपनी अपनी फ़ौज बढ़ा रहे हैं। उनके अपने मुलक यानी अमरीका में फ़ौज का खर्च नए साल के बजट में चौगुना कर दिया गया है जिनका एक नतीजा यह होगा कि अमरीका की फ़ौज, जिस में छे महीने पहले पन्द्रह लाख से कम औरत मर्द थे और जिसकी गिनती अब पचीस लाख हो जायगी। पंद्रह चुकी है, एक साल में करीब करीब पैंतीस लाख हो जायगी। नेशनल गार्ड और रिजर्व के बीस लाख औरत मर्द, जिनको जरूरत के बख़्त काम पर बुलाया जा सकता है। इसके अलावा है। प्रधान ट्रूमैन ने अपनी पॉलियामेन्ट में नए साल का बजट पेश करते हुए कहा है कि साढ़े इकत्तीस अरब डालर की उस रकम के साथ साथ जो अमरीका अपने वचाव पर खर्च कर रहा है सात करोड़ डालर से कुछ ज्यादा की रकम उसके साथियों को दी जायगी जिस में से

लुआनी की नियादी



का चीन ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है. अमरीका में कुछ लोग उनका विरोध कर रहे हैं. उनका कहना है कि ऐसी शरतों पर समझौता करने से यह अच्छा है कि अमरीका अपनी बीजों को खुद ही कोरिया से वापस बुला ले. यू. एन. ओ. को राजकाजी कमेटी में फिलिपाइन के प्रतिनिधि ने कहा है कि यह तजवीजें वैसी ही हैं जैसी कि बरतानिया ने म्यूनिच वाले समझौतों में हिटलर को पेश की थीं. मतलब यह है कि जिस तरह म्यूनिच के समझौतों से हिटलर का मुँह बन्द होने की जगह उसकी भूकू बढ़ गई थी वसी तरह अगर इन तजवीजों की बुनियाद पर चीन से कोई समझौता होगा तो चीन चुप बैठने की जगह किसी नए मोर्चे पर ठंडी या गरम लड़ाई शुरू कर देगा. कुछ ऐसा ही खयाल उन अरब देशों का भी है जिन्होंने लड़ाई बन्दी कमेटी की पहली तजवीजों का समर्थन किया था. इन सब बातों को देखकर एक तरह की निराशा होती है मगर दूसरी तरफ कुछ ऐसी बातें भी हैं जिन से अमन की सम्भावना बढ़ती है और वह बातें यह हैं कि यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी ने लड़ाई बन्दी फारमूला मंजूर कर लिया है. कामनवेल्थ के नौ देशों ने इस फारमूला का समर्थन किया है. और दूर पूर्व में अगर यह देस किसी बात पर एक राय हो जायँ तो अमरीका उस राय के खिलाफ जाने की हिम्मत नहीं कर सकता. इसीलिये इस वक्त आशा का पल्ला निराशा के फलने से भारी मातूम होता है और चीन के प्रधान मंत्री की यह आशा पूरी होती दिखाई देती है कि जवाहरलाल नेहरू के लन्दन जाने से पहले एशिया को और फिर सारी दुनिया को फायदा होगा.

का चीन ने अभी तक کوئی جواب نہیں دیا ہے. امریکہ میں کچھ لوگ ان کا دودھ کر رہے ہیں. ان کا کہنا ہے کہ 'یسی شرطوں پر سمجھوتہ کرنے سے یہ اچھا ہے کہ امریکہ اپنی فوجوں کو خود ہی کواریا سے واپس بلا لے. یو. این. او. کی راج کچی کمیٹی میں فلپائن کے پرتی ندھی نے کہا ہے کہ یہ تجویزیں ویسی ہی ہیں جیسی کہ برطانیہ نے میونخ والے سمجھوتے میں ہٹلر کو پھس کی تھیں. مطلب یہ ہے کہ جس طرح میونخ کے سمجھوتے سے ہٹلر کا منہ بند ہونے کی حکم اُس کی بہوت بڑھ گئی تھی اسی طرح اگر اُن تجویزوں کی بنیاد پر چین سے کوئی سمجھوتہ ہوگیا تو چین چھ بہتھلے کی جگہ کسی نئے مورچے پر تھلے یا گرم لڑائی شروع کر دے گا. کچھ ایسا ہی خیال ان عرب دیسوں کا بھی ہے جنہوں نے لڑائی بندی کمیٹی کی پہلی تجویزوں کا سرتین کیا تھا. ان سب باتوں کو دیکھ کر ایک طرح کی نراشا ہوتی ہے مگر دوسری طرف کچھ ایسی باتیں بھی ہیں جن سے امن کی سمبواڑنا بڑھتی ہے. اور وہ باتیں یہ ہیں کہ یو. این. او. کی راج کچی کمیٹی نے لڑائی بندی فارمولا منظور کر لیا ہے. کامن ویلتھ کے نو دیسوں نے اس فارمولا کا سرتین کیا ہے. اور دوسرے یورپ میں اگر یہ دیس کسی بات پر ایک رائے ہوجائیں تو امریکہ اس رائے کے خلاف جانے کی ہمت نہیں کرسکتا. اسی لئے اس وقت آٹھا کا پاء نراشا کے بلے سے بہاری معلوم ہوتا ہے اور چین نے پردھان ملتری کی یہ آشا پوری ہوتی دکھائی دیتی ہے کہ جواہرلال نہرو کے لندن جانے سے پہلے ایشیا کو اور پھر ساری دنیا کو فائدہ ہوگا.



रख दी गई है। इस बात को रूस चाहें एक चैलेंज समझ ले लेकिन अमरीका इस से लुश नहीं होगा। असल में लन्दन का एलान उस के लिये भी एक तरह का चैलेंज है। अगर चैलेंज देने वाला कोई एक मुलक जैसे अकेला बरतानिया होता तो अमरीका उसे चुप करा लेता मगर अब आठ नौ देशों का मुँह बन्द करना उसके लिये मुशकिल है।

वही देखकर यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी में उसके प्रतिनिधि ने लड़ाई बन्दी कमेटी का दूसरा फारमूला मजूर कर लिया है। हालाँकि उस फारमूला में सार तौर से कड़ दिया गया है कि लड़ाई बन्द होने ही—चाहे वह समझौते से बन्द की जाय और चाहे आप बन्द हो जाय—यू. एन. ओ. की जनरल असेम्बली एक कमेटी बना देगी जिम में बरतानिया, अमरीका, रूस और नई चीनी सरकार के नुमाइन्दे शामिल होंगे और जो अननराश्ट्रो समझौतों और यू. एन. ओ. के बाटर् की रोशनी में फारमूसा और चीन की नुमाइन्दगी और दूर पूरब के दूसरे मसलों को तय कराने की कोशिश करेंगी। इस तरह के दो समझौते, जैसा कि हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि जंगल नरसिंह राव ने लड़ाई बन्दी फारमूला के बारे में राय देते हुए कहा है, लड़ाई के जमाने में क्राहरा और पोट्सडम में हुए थे उनको रूस फारमूसा को, जिसपर पहले जापान ने क़ब्ज़ा कर रखा था, नर चीन के राज में शामिल कर देना चाहिये। और यू. एन. ओ. के बाटर् को रु से चीन की नई सरकार को इस विरादरी में एक बराबर वाले मेम्बर की हैसियत से ले लेना चाहिये।

देखी गयी है। उस बात को रूस चाहें एक चैलेंज समझ ले लेकिन अमरीका इस से खोश नहीं होगा। असल में लन्दन का एलान उस के लिये भी एक तरह का चैलेंज है। अगर चैलेंज देने वाला कोई एक मुलक जैसे अकेला बरतानिया होता तो अमरीका उसे चुप करा देता मगर अब आठ नौ देशों का मुँह बन्द करना उस के लिये मुशकिल है।

यही देख कर यू. एन. ओ. की राज कमी समझौतों में उसके प्रतिनिधि ने लड़ाई बन्दी कमेटी का दूसरा फारमूला मजूर कर लिया है। हालाँकि उस फारमूला में सार तौर से कड़ दिया गया है कि लड़ाई बन्द होने ही—चाहे वह समझौते से बन्द की जाय और चाहे आप बन्द हो जाय—यू. एन. ओ. की जनरल असेम्बली एक कमेटी बना देगी जिम में बरतानिया, अमरीका, रूस और नई चीनी सरकार के नुमाइन्दे शामिल होंगे और जो अननराश्ट्री समझौतों और यू. एन. ओ. के बाटर् की रोशनी में फारमूसा और चीन की नुमाइन्दगी और दूर पूरब के दूसरे मसलों को तय कराने की कोशिश करेंगी। इस तरह के दो समझौते, जैसा कि हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि जंगल नरसिंह राव ने लड़ाई बन्दी फारमूला के बारे में राय देते हुए कहा है, लड़ाई के जमाने में फारमूसा को, जिसपर पहले जापान ने क़ब्ज़ा कर रखा था, नर चीन के राज में शामिल कर देना चाहिये। और यू. एन. ओ. के बाटर् की नई सरकार को इस विरादरी में एक बराबर वाले मेम्बर की हैसियत से ले लेना चाहिये।



एलान से पहले कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इस बात पर जोर दे रहे थे कि कामनवेल्थ कानफरेन्स में ऐसी कोई बात न की जाए जिससे अमरीका की पालिसी से टक्कर हो जाए. अब न मालूम उन्होंने अपनी राय बदल दी है या अमरीका अपना रुख बदलने को तैयार हो गया है. वैसे उसे खुश करने के लिये कामनवेल्थ कानफरेन्स के एलान में अमरीका के साथ काम करने की बात कही गई है और उसने यू. एन. ओ. को जो मदद दी है उसकी तारीफ की गई है और पालिसी में उसके साथ जहाँ तक हो सके ताल मेल रखने का वायदा किया गया है. जरमनी और जापान के साथ सुलहनामा करने पर जोर दिया गया है जिसके लिये आजकल अमरीका भी जल्दी कर रहा है और कहा गया है कि जब तक हमले का खतरा बाक़ी है तब तक हम अपने बचाव का बन्दोबस्त करने के लिये पूरी तैयारी और लगन के साथ काम करते रहेंगे. इस खतरा का चरचा सब से ज्यादा अमरीका में सुनाई देता है और लन्दन में उसको रोक थाम के लिये जो कुछ कहा गया है उसे वाशिंगटन में बहुत पसन्द किया जायगा.

### अमरीका को चैलेंज

वाशिंगटन में खतरे की चीज कम्युनिज्म को समझा जाता है और बरतानिया, आस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैंड भी डमी डंग से सोचते हैं जब कि हिन्दुस्तान कम्युनिज्म का गुलामी और गरीबी की एक पैदावार समझता है. वह अपने बचाव की तरफ से ग्राफ़िल नहीं है मगर अपने फ़ौजी बजट में जो २१ फ़ीसदी की कमी की जा रही है उस से खयाल होता है कि कामनवेल्थ के जिस एलान पर नेहरू ने दस्तखत किये हैं उसमें बचाव की बात सिर्फ़ रस्मी तौर पर

एलान से पहले कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इस बात पर जोर दे रहे थे कि कामनवेल्थ कानफरेन्स में ऐसी कोई बात न की जाए जिससे अमरीका की पालिसी से टक्कर हो जाए. अब न मालूम उन्होंने अपनी राय बदल दी है या अमरीका अपना रुख बदलने को तैयार हो गया है. वैसे उसे खुश करने के लिये कामनवेल्थ कानफरेन्स के एलान में अमरीका के साथ काम करने की बात कही गई है और उसने यू. एन. ओ. को जो मदद दी है उसकी तारीफ की गई है और पालिसी में उसके साथ जहाँ तक हो सके ताल मेल रखने का वायदा किया गया है. जरमनी और जापान के साथ सुलहनामा करने पर जोर दिया गया है जिसके लिये आजकल अमरीका भी जल्दी कर रहा है और कहा गया है कि जब तक हमले का खतरा बाक़ी है तब तक हम अपने बचाव का बन्दोबस्त करने के लिये पूरी तैयारी और लगन के लिये पूरी तैयारी और लगन के साथ काम करते रहेंगे. इस खतरा का चरचा सब से ज्यादा अमरीका में सुनाई देता है और लन्दन में उसको रोक थाम के लिये जो कुछ कहा गया है उसे वाशिंगटन में बहुत पसन्द किया जायगा.

### अमरीका को चैलेंज

वाशिंगटन में खतरे की चीज कम्युनिज्म को समझा जाता है और बरतानिया, आस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैंड भी डमी डंग से सोचते हैं जब कि हिन्दुस्तान कम्युनिज्म का गुलामी और गरीबी की एक पैदावार समझता है. वह अपने बचाव की तरफ से ग्राफ़िल नहीं है मगर अपने फ़ौजी बजट में जो २१ फ़ीसदी की कमी की जा रही है उस से खयाल होता है कि कामनवेल्थ के जिस एलान पर नेहरू ने दस्तखत किये हैं उसमें बचाव की बात सिर्फ़ रस्मी तौर पर



प्रधान मंत्रियों की कानफरेन्स में वह बात मनवाली जिसको मानने से वह पहले इनकार कर चुके थे।

#### कामनवेल्थ में भेदभाव

असल में यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी में लड़ाई बन्दी कमेटी ने जो फारमूला पेश किया है उसकी दागवेल लन्दन की कामनवेल्थ कानफरेन्स ही में पड़ी थी। और अमेरिका ने इस फारमूला को जो नामंजूर नहीं किया तो इसका एक बड़ा कारन यह है कि कामनवेल्थ के सब देशों ने इस फारमूला की खास खास बातें मंजूर कर ली थीं। कहा जाता है कि मंजूरी से पहले कानफरेन्स में एक तरफ हिन्दुस्तान और बर्तानिया और दूसरी तरफ दूसरे देशों के बीच बहुत सख्त भेदभाव पैदा हो गया था। इसके लच्छन पहले ही से जाहिर थे इसलिये कि हिन्दुस्तान चीन की नई सरकार को मानने पर जोर दे रहा था और बर्तानिया भी इस सरकार को मान लेने के बाव इसको बराबर वाले की हैसियत देने और उसके साथ बातचीत करने से इनकार नहीं कर सकता था। लेकिन आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड और दक्खिनी अफ्रीका ने इस सरकार को नहीं माना है। वह उसकी कम्यूनिस्ट रंगत और अपनी सरकारों के कन्जरवेटिव रूप की वजह से इसको नापसन्द करते हैं। उसके खिलाफ एक पैसफिक पैक्ट करना चाहते हैं और उस को बराबर वाले की हैसियत देने के लिये तैयार नहीं हुए थे। अब भी वह इस सरकार को मानने के लिये तैयार हुए हैं लेकिन नेहरू और एटली के असर से कामनवेल्थ के देशों ने यह एलान कर दिया है कि वह रुस के जोअफ स्टालिन और

प्रेसान मन्त्रियों की कानफरेन्स में वे बात म्वाली जस को म्वाले से वे येले अन्कार करके थे।

#### कामनवेल्थ में भेदभाव

असल में यू. एन. ओ. की रज क्मिती में ल्वाली बन्दी क्मिती ने जो फारमूला पेश क्मा है अस्की दाग वेल लन्दन की कामनवेल्थ कानफरेन्स ही में पड़ी थी। और अमेरिका ने इस फारमूला को जो नामंजूर नहीं किया तो इसका एक बड़ा कारन यह है कि कामनवेल्थ के सब देशों ने इस फारमूला की खास खास बातें मंजूर कर ली थीं। कहा जाता है कि मंजूरी से पहले कानफरेन्स में एक तरफ हिन्दुस्तान और बर्तानिया और दूसरी तरफ दूसरे देशों के बीच बहुत सख्त भेदभाव पैदा हो गया था। इसके लच्छन पहले ही से जाहिर थे इसलिये कि हिन्दुस्तान चीन की नई सरकार को मानने पर जोर दे रहा था। और बर्तानिया भी इस सरकार को मान लेने के बाव इसको बराबर वाले की हैसियत देने और उसके साथ बातचीत करने से इनकार नहीं कर सकता था। लेकिन आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड और दक्खिनी अफ्रीका ने इस सरकार को नहीं माना है। वह उसकी कम्यूनिस्ट रंगत और अपनी सरकारों के कन्जरवेटिव रूप की वजह से इसको नापसन्द करते हैं। उसके खिलाफ एक पैसफिक पैक्ट करना चाहते हैं और उस को बराबर वाले की हैसियत देने के लिये तैयार नहीं हुए थे। अब भी वह इस सरकार को मानने के लिये तैयार हुए हैं लेकिन नेहरू और एटली के असर से कामनवेल्थ के देशों ने यह एलान कर दिया है कि वह रुस के जोअफ स्टालिन और



की मुँह भरई समझता था और ऐसा ही सख्त रवैया उसका फार-  
मूसा के बारे में भी था जहाँ चाँगाई शेक ने चीनी सरकार का  
दोंग रचा रक्खा है और अमरीका के जहाज पहरा दे रहे हैं. लड़ाई  
बन्दी कमेटी ने अपने पहले फारमूला में इन दोनों बातों की कोई  
बर्चा नहीं की थी और चीन ने इस फारमूला को एक जाल कहा  
था. वह समझता था कि इस फारमूला के जरिये अमरीका कोरिया में  
उसकी जीती हुई बाजी को बराबर पर उठवा देना चाहता है जिसमें  
वह अपने पिटे हुए मुहरों की मरम्मत करके या नए मुहरे लाकर  
एक नई बाजी शुरू कर सके. ऐसी हालत में चीन की जगह जो देस  
भी होता वह लड़ाई बन्दी की बात न मानता.

#### हिन्दुस्तान की छाप

दूसरे फारमूला में जो सुझाव रक्खे गए हैं उन पर हिन्दुस्तान की  
बिदेसी पालिसी की छाप मौजूद है. इसलिये कि पंडित जवाहर लाल  
नेहरू शुरू ही से यह कह रहे थे कि चीन की नई सरकार को चाहे  
कोई अच्छा न समझे लेकिन उसके हाने से कोई भी इन्कार नहीं कर  
सकता और न उसके बगैर दूर पूरब के मसले तय हो सकते हैं.  
अगर इस बात को शुरू में मान लिया जाता तो शायद कोरिया का  
मसला पहले ही तय हो गया होता. मगर यू. एन. ओ. की फौजों को  
जीता देखकर न सिर्फ अमरीका ने बल्कि बरतानिया ने भी पंडित  
नेहरू की यह बात नहीं मानी. और जब उनकी फौजें पीछे हटने लगीं  
तो अमरीका एटम बम की धमकी पर उतर आया जिसने चीन से  
ज्यादा बरतानिया को डरा दिया. यही डर प्रधान मंत्री एटली को  
नवम्बर में बार्शिंगटन ले गया था और इसी ने उनसे कामनवेल्थ के

की मले बहराई समझता था और इसा ही सख्त रवै अस् का फारमूसा  
के बारे में भी था जहाँ जहाँ जहाँ लाली शेक ने चीनी सरा  
का फारमूसा रचा रक्खा है और अमरीका के जहाज पहरा दे रहे हैं. लड़ाई  
बन्दी कमेटी ने अपने पहले फारमूला में इन दोनों बातों की कोई  
बर्चा नहीं की थी और चीन ने इस फारमूला को एक जाल कहा था. वह  
समझता था कि इस फारमूला के जरिये अमरीका कोरिया में  
उसकी जीती हुई बाजी को बराबर पर उठवा देना चाहता है जिसमें  
वह अपने पिटे हुए मुहरों की मरम्मत करके या नए मुहरे लाकर  
एक नई बाजी शुरू कर सके. ऐसी हालत में चीन की जगह जो देस  
भी होता वह लड़ाई बन्दी की बात न मानता.

#### हलदस्तान की जहाप

दूसरे फारमूला में जो सुझाव रक्खे गئے हैं उन पर हलदस्तान  
की बहिसी पालिसी की जहाप मौजूद है. अस् लम्बे के बन्दत  
जवाहरलाल नेहरु शुरु हू से ये कह रहे थे के जहाँ की नम्बु सरा को जहा  
कोनी अजाने समझे लिकन अस् के हूने से कोनी भी अन्कर नम्बु  
कर सकता और न अस् के बन्दत दूर पूरब के मसले हू हू सकते हैं.  
अगर अस् बात को शुरु में मान अजा तो शायद कोरिया का जहाप पहले  
हू हू हो रक्खा होता. मगर यू. एन. ओ. की फौजों को जितना दिक  
कर न बरत अमरीका ने बल्कि बरतानिया ने भी बन्दत नेहरु की ये बात  
नम्बु मानी. और जब अन् की फौजों पीछे हटने लिकन तो  
अमरीका अितम बम की दमकी पर अत्र आया जस ने चीन से जहा  
युरपानिया को दरा दिया. येी दूर पूर हान मन्दत अितली को नुम्बर  
में राशुलतन ले र्खा था और असी ने अन् से कामन विलते के



لہائی ہندی فارمولا

अभी तक पच्छिमी राश्ट्रों ने यह बात नहीं मानी थी. अमरीका

ابھی تک پچھلی راشٹروں نے یہ بات نہیں مانی تھی۔ امریکہ انکا انکوا تھا اور وہ جید۔ کہ نڈر سکا۔ کہ حانہ ، اے ۔



की. धर्म निभाने में हृद कर दी. यह है पक्का वैश्नव. इसी के माथे पर टीका सफल है. और, राज पूजा भी तो करता है.

एक जैन—है तो वैश्नव, पर काम तो उसने जैनों जैसा किया.

दूसरा—जो भला काम करे वहीं जैन, वही वैश्नव.

बयोपारी अपने मन में क्या कर रहा था यह कोई न सुन पाया.

वह कह रहा था—

“तुम सब मूर्ख हो. क्या देश भक्ति, क्या धर्म भावना और क्या सभ्यता सब स्वार्थ की पैदा की हुई हैं और उसी की अंतर्वी देने हैं.”

“क्या लोग समझते हैं कि यह यह करने से ब्रौह न्त्रिये जायेंगे कि ‘हम ईमान लाए हैं और न के दायों की जंच पड़ताल नहीं की जायगी?..... क्या जो लोग बुरे काम करते हैं वह समझते हैं वह जुदा से बच जायेंगे? यह गलत सोचते हैं!..... जो लोग बात मानेंगे और नेरु कम करेंगे. नयमुच हम उन्हीं को नेक लोगों में शामिल करेंगे.” (कुरान. २६-२, ४, ६)

“सचमुच जो लोग अल्लाह और उनके रसूलों को नहीं मानते, और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फरक करना चाहते हैं, और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और इनके बीच से अपना एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच यह लोग सच्चे ‘काफिर’ (नाशुकर, काफरने हकक) हैं और अल्लाह ने इन काफिरों के लिये जिल्लत की सजा तय कर रखी है.” (कुरान, ४-१५०, १४१)

की. दहम नभाने में हृद कर दी. यह है पक्का वैश्नव. इसी के माथे पर टीका सफल है. और, राज पूजा भी तो करता है.

एक जैन—है तो वैश्नव, पर काम तो उसने जैनों जैसा किया.

दूसरा—जो भला काम करे वहीं जैन, वही वैश्नव.

बयोपारी अपने मन में क्या कर रहा था यह कोई न सुन पाया.

वह कह रहा था—

“तुम सब मूर्ख हो. क्या देश भक्ति, क्या धर्म भावना और क्या सभ्यता सब स्वार्थ की पैदा की हुई हैं और उसी की अंतर्वी देने हैं.”

( १०१ )

“क्या लोग समझते हैं कि यह यह करने से ब्रौह न्त्रिये जायेंगे कि ‘हम ईमान लाए हैं और न के दायों की जंच पड़ताल नहीं की जायगी?..... क्या जो लोग बुरे काम करते हैं वह समझते हैं वह जुदा से बच जायेंगे? यह गलत सोचते हैं!..... जो लोग बात मानेंगे और नेरु कम करेंगे. नयमुच हम उन्हीं को नेक लोगों में शामिल करेंगे.” (कुरान. २६-२, ४, ६)

“सचमुच जो लोग अल्लाह और उनके रसूलों को नहीं मानते, और जो अल्लाह और उनके रसूलों में फरक करना चाहते हैं, और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और इनके बीच से अपना एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच यह लोग सच्चे ‘काफिर’ (नाशुकर, काफरने हकक) हैं और अल्लाह ने इन काफिरों के लिये जिल्लत की सजा तय कर रखी है.” (कुरान, ४-१५०, १४१)



बचचे, औरत और तुम कहाँ जाओगे ?”

अब ज्योपारी चुप था. उसके दिमाग में हल चल पैदा हो गई थी और अब उसके सामने घूमने लगा कल का डरावना नज्जारा जब न गाहक होंगे और न बिकरी होगी. अब वह नीची गरदन किये कुछ अपने से और कुछ देश प्रेमी से यूं गुनगुनाने लगा—

“गाहकों पर असर हो गया तो नीरा बदनाम हो जायगी..... और लोग पीना धन्द कर देंगे..... और फिर बच्चे. औरत किसके वहाँ जायगे.....”

परेशानी अन्दर ही अन्दर उसके मस्तक में घुमड़ने लगी. और थोड़ी ही देर में उसके मुँह से एक चीख निकली और हवा में मिल गई.

x x x x x

सबेरा हो चुका था. दुकान पर गाहकों की भीड़ आती थी और लौट जाती थी. दुकानदार बैठा था. सामने फूटा मटका था. नीरा बिकरी हुई थी और उसी नीरा में मरी छिपकली तैर रही थी.

लोगों में बातें चल पड़ीं.

एक—कितना देश भक्त है, छिपकली मर गई तो लोगों की खातिर अपना चालीस पचास रुपये का नुकसान कर लिया.

दूसरा—नागर हो तो ऐसा हो. लोगों की खातिर नुकसान उठाते बरा नहीं हिचका.

एक पंडित—माखन होता है रोज गीता का पाठ करता है. तभी तो इतना दिल बाला है कि लोगों की खातिर अपनी बरा परबाह न

कैसे चायकी और पेय बिस्मै, मकान, किरा, केना केना से आँका ? बच्चे,

“उरत उरत केना जाऊँगे ?”

अब बेवबारी चप तहा. अस के दिमाग में हलचल पैदा हो गयी तभी अब अस के सामने केमले के ल कल का दारुना नजारा चप न गलक होने के उर न बकरी होगी. अब उ नैज्जि कउन केमले के ल से उर

कच्चे दिवस प्रेमी से यों कलकाने ला —  
“कलकाने पर अर हो केना तो नीरा बदनाम हो जायगी..... उर

लोक पैदा पैदा करदिलेगे..... उर पेय बच्चे, उरत कस के पैरा

जायलेगे.....

प्रेमिली अन्दर ही अन्दर अस के मस्तक में घुमड़ने लगी. और तेज्जि ही दिवस में अस के मने से एक चोख नली उर हो मों

मल कली.

x x x x x

सबेरा हो चका तहा. दुकान पर कलकाने की बेह उर आती नैली उर लौट जाती नैली. दुकानदार बेहता तहा. सामने फूटा मटका तहा. नीरा बकरी होगी तभी उर अस नीरा में मरी छिपकली तैर रही नैली.

लोक में बातें चल पड़ीं.

एक—कलकाने दिवस बेहता है, छिपकली मर कली तो लोक में

खतर पैदा चालीस पचास रुपये का نقصान कर लिया.  
दूसरा—नागर हो तो ऐसा हो. लोक की खातर नुकसान उठाते

नैली मज्जा.

एक पंडित—मेल्लम होता है उर कलकाने का पत्ते करता है.  
तभी तो अलकाने लल, उर के लोक की खातर पैदा प्रोवाह न



यह रोजगार ही बन्द कर देना पड़ता क्योंकि नीरा के मटेके में तो कीड़े रोच ही मरते हैं।

व्योपारी अब भुँकुला उठा था। फिर भी देश प्रेमी घबराया नहीं। और बड़े ध्यान से बोला—“वैसे तो तुम धर्म की बड़ी दुहाई दिया करते हो। बात बात में धर्म का नाम लेते रहते हो। तिलक लगाते हो, कथा सुनते हो, कथा करवाते हो, क्या अब उन में से किसी की याद नहीं आती? सत्य नारायण की कथा क्या सिर्फ पूज्य को ही याद आती है? बस अपनी स्वार्थ ही सब कुछ है? औरों का उपकार कुछ भी नहीं? क्या तुम्हारे व्योपार का यही सिद्धान्त है?”

“हाँ यही है, यही है। सारे व्योपार इसी तरह चलते हैं। लोगों की भलाई का जिसे ज्यादा शौक हो वह फिर व्योपार न करे। सतजुग में भी उपकार का व्योपार कभी न होता होगा। मैं और व्योपारियों से कोई अलग व्योपारी हूँ? सभी तो ऐसा करते हैं।”

यह बात कहकर व्योपारी ने यह समझा कि अब इसका जवाब देश प्रेमी के पास कुछ भी न रहा होगा। और अब पौ फट चुकी थी। सुबह की लाली सजेदी का रूप लेती जा रही थी। व्योपारी एक के बाद दूसरा मटका छानता जा रहा था और धीरे धीरे मरी छिपकली से सम्बन्ध दूर होता जा रहा था। पर देश प्रेमी के मन को चैन नहीं। और वह बोल उठा—

“अगर जो गाहकों पर इस नीरा का कोई बुरा असर हुआ और फिर नीरा बदनाम हुई तो तुम ही सोचो बिकरी का क्या हाल

नहा हलद

सोराते की अनोखी देन

फरवरी सन् १९११

ये रोजगार ही बन्द कर देना पड़ता क्योंकि नीरा के मटेके में तो कीड़े रोच ही मरते हैं।

व्योपारी अब जेहलजहेल आँहा था। पर भी दिस प्रेमी केहरिया नहें। ओर ओरें बेर से बोला—“वैसे तो तम देरम की बेरी देली देला करे हो। बात बात में देरम का नाम लेते रहते हो। तलक लगाते हो, कथा सलते हो, कथा कराते हो। कहा अब उन में से किसी की याद नहें आती? सतिये नरान की कथा क्या सर्फ पुनम को ही याद आती है? बस अिला सोराते ही सब कच्चे है? ओरों का अिकार कच्चे बेरी नहें? क्या तेहारे बेवोपार का बेरी सदेअलत है?”

“हाँ बेरी है, बेरी है। सारे बेवोपार असेपर चलते हैं। लोड़ों की भेलाँकी का जसे ज्यादा शरु हो वो पुओ बेवोपार ने करे सत जक में बेरी अिकार का बेवोपार केरी ने होला होला। में ओर बेवोपारियों से कुँकी अलक बेवोपारी हों? सदेरी तो अिसा करे में।”

ये बात केकर बेवोपारी ने ये समज्या के अब अस का जराब दिख प्रेमी के पास कच्चे बेरी ने रहा होला। ओर अब ओरिअत चकी तेरी। सदेम की लाली सदेदी का रूअ लेती चारही तेरी। बेवोपारी अिक के बेद दुसरा मटका चेहलता जा रहा तेरा ओर देहियरे देहियरे मरी चेपिकली से समेदले देर होला चारहा तेरा पर दिखी प्रेमी के मन को चोण केहल। ओर वो बोल आँहा—

“अगर जो लहकों पर अस नेरा का कुँकी पूरा अर होला ओर नेरा नेदनाम होली तो तम ही सोचो बकरी का क्या हाल होला?







एक अठन्नी रोज रिकशा पर खर्च हो जाती है. यह सब दाम कहां से आयेंगे, और फिर सारे कुटुम्ब के खाने कपड़े का काम इसी के सहारे तो चलता है? कौन देश भर मुझे दे जायगा? मैं भूकों मर जाऊं तो कोई पूछने वाला भी नहीं. मैं किसी के लिये क्यों शिक करूं?"

"पर यह तो सोचो. पीने वालों की तन्दुरुस्ती पर कितना नश्व असर पड़ सकता है. ऐसा भी रुपया कमाना किस काम का!"

"किस काम का? वच्चों के पेट भरने के काम का. इसी काम के लिये तो मैंने नीरा का काम हाथ में लिया है. इसी से अपने घर का काम चलता है. पहले घर की शिक होने की चिन्ता, देन, यम और लोगों की शिक पीछे की चीजें हैं."

ब्योपारी ने उसकी एक न मुनी और उम्मी में वह और नीरा खानता रहा. इतने में देश प्रेमी को एक नई दलील सूझी और बोला—

"पर नीरा के प्राण रूप दापू की आत्मा को हम जान में कितना दुख होगा इसका भी तो कुछ सवाल करो. उत ही के प्रताप ये तो यह नीरा का रोजगार निकला. इसका भी तो कुछ विचार करो."

"हटो हटो तंग न करो. मैं बापू की आत्मा को गुना खनने के लिये थोड़े ही इस काम में पड़ा हूँ. मुझे चाहियें पैसे. पैसे. क्या आन के पैसे बापू की आत्मा मुझे दे जायगी? कहां दे जायगी, नालाओं में अभी फेंक दूँ. और यही क्या जिय दिन अच्छी नीरा होती है. उस दिन मेरे मायदे के लिये कौन पीने आता है? फिर मैं क्यों उनके

एक अठन्नी रोज रिकशा पर खर्च हो जाती है. ये सब दाम कहां से आँलके, और दो सार के अम्ब के काले किरने का काम इसी के सहारे तो चलता है? कौन देश भर मुझे दे जायगा? मैं भूकों मर जाऊं तो कोई पूछने वाला भी नहीं. मैं किसी के लिये कदों फेर करूं?"

"पर ये तो सोचो. पीने वालों की तन्दुरुस्ती पर कितना खराब اثر हो सकता है. ऐसा भी रुपया कमाना किस काम का!"

"किस काम का? बच्चों के पेट भरने के काम का. इसी काम के लिये तो मैंने नीरा का काम हाथ में लिया है. इसी से अपने घर का काम चलता है. पहले घर की शिक होने की चिन्ता, देन, यम और लोगों की शिक पीछे की चीजें हैं."

ब्योपारी ने उसकी एक न सली और उसी में "अरु नीरा खानता रहा. अतः मेरी दश प्रेमी को एक नई दलील सूझी और बोला—

"पर नीरा के प्राण रूप दापू की आत्मा को हम जान में कितना दुख होगा इसका भी तो कुछ सवाल करो. उत ही के प्रताप ये तो यह नीरा का रोजगार निकला. इसका भी तो कुछ विचार करो."

"हटो हटो तंग न करो. मैं बापू की आत्मा को गुना खनने के लिये थोड़े ही इस काम में पड़ा हूँ. मुझे चाहियें पैसे. पैसे. क्या आन के पैसे बापू की आत्मा मुझे दे जायगी? कहां दे जायगी, नालाओं में अभी फेंक दूँ. और यही क्या जिय दिन अच्छी नीरा होती है. उस दिन मेरे मायदे के लिये कौन पीने आता है? फिर मैं क्यों उनके



## स्वार्थ की अनोखी देन

(भाई श्री नाथ)

“खरे, यह क्या ! यह मरी छिपकली कैसी ! ओह ! मटके में ही सर गई मालूम होती है。” सुबह के आन्धरे में नीरा छानते हुए आपो आप व्योपारी के मुँह से यह शब्द निकल पड़े।

“फँको फँको इस नीरा को。”

“क्यों ?”

“इसमें छिपकली का जहर जो मिल गया。”

“तो ?”

“इसको जो पियेगा वह बीमार पड़ेगा या मरेगा。”

“मरा करो, मुझे क्या !”

“देने वाले तुमको पाप जो होगा。”

“पाप होगा ? अच्छे आए चलकर तुम देश प्रेमी, तो क्या मैंने लोगों के लिये नीरा बेचना शुरू किया है ? मैंने तो अपने और बच्चों के फायदे के लिये यह व्योपार शुरू किया है ? मरा मटका फँक दूँ तो औरत व बच्चों को किसके घर रख आऊँ ?”

“खरे, अब और नीरा तो इसमें न छानों. कम से कम अब तक खिलनी नीरा छन चुकी है उसे तो फँक दो。”

“बुप भी रहो, ऐसे उपदेश सुना करूँ तो बल चुकी दुकान. सस्तर रूप ‘बनकर’ के नाम पर देवा दूँ. पचनीस नक़द नौकरों को देता दूँ,

## सोअरत की अडोकी डीन

(बेहानी शरी नाथ)

“अरे ! ये क्या ! ये मरी अडोकी कीसी ! अरे ! मटके में ही मर गयी मलूम होती है。” صبح کے اڈھوڑے میں نیرا چھاننے ہوئے آپو آپ بیوپاری کے منہ سے یہ شدید نکل پڑے۔

“پھلکو پھلکو اس نیرا کو。”

“کیوں ؟”

“اس میں اڈوکی کا زہر جو مل گیا。”

“تو ؟”

“اسکو جو پھلکا وہ بیمار پڑیگا یا مریگا。”

“مرا کرو مجھے کیا !”

“دینے والے تم کو باپ جو ہوگا。”

“باپ ہوگا ! اچھے آئے چکر ! تم دیس پڑیسی ! تو کیا میں نے لیکوں کے لئے نیرا بیچنا شروع کیا ہے ؟ میں نے تو اپنے اور بچوں کے فائدے کے لئے یہ بیوپار شروع کیا ہے۔ بہرا متکا پھینک دوں تو صورت بچوں کو کس کے کھر رکھ آؤں ؟”

“اے ! اب اور نیرا تو اس میں نہ چھانو۔ کم سے کم اب تک جتنی نیرا چھن چکی ہے اُسے تو پھینک دو。”

“چپ بھی رہو ! ایسے اڈیش سنا کروں تو جل چکی دوکان۔ سکو روپ ! پکڑ کے نام پر دیتا ہوں ! پچیس نقد نوکروں کو دیتا ہوں،



है, कुछ किरकापरस्तों की इच्छाएं पूरी हो जाती हैं, और बहुत 'से' आदमियों के लिये छुट्टी, त्योहार और तमाशों का आनन्द मिलता है. पर यह हमें कब तक रोसा देगा ?

सारांश यह कि एक घर्म निर्पेक्ष राज के नागरिक की हैसियत से, एक गरीब देस के गरीब आदमियों के प्रतिनिधि की हैसियत से, नागरिक अधिकारों के प्रेमी की हैसियत से और हानिकर रुढ़ियों का अन्त देखने के अभिलाशी की हैसियत से मेरा यह विनम्र पर जोरदार निवेदन है कि हमारा लोकराज इस तरह के जलूसों का काम अपने हाथ में लेने से पहले एक बार नहीं, इस बार सोचे ऐसा न हो कि इसी रास्ते छोटे चलने लगे जिस पर बड़े चलते हैं. और यह कूत की बीमारी की तरह दिल्ली से सबे सबे में बढ़ती चली आय. भगवान हमारे लोकराही जनराज की रक्षा करे.

हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी में

अच्छी, सास्ती, और साफ़ छपाई के लिये

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिये.

बाहर का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ किया जाता है.

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४५, मुहम्मदगंज,

इलाहाबाद.

है, कुछ फुर्त हस्तों की अजबानि पुरी हो जाती है, और बहुत 'से' आदमियों के लिये चहल, तबहार और तमाशों का आनन्द मिलता है, पर ये हस्त कब तक होबिया देगा ?

सारंश यह कि एक दूरम नुर्दिक्क राज के नागरिक की चिन्तित से, एक शरीफ दीस के शरीफ आदमों के पुत्री नदमी की चिन्तित से, नागरिक अधिकारों के प्रेमी की चिन्तित से और हानि कर रुढ़ियों का अन्त दिक्कले के अभिलाशी की चिन्तित से मेरा यह विनम्र पर जोरदार निवेदन है कि हमारा लोक राज अस तरह के जलूसों का काम अपने हाथ में लेने से पहले एक बार नहीं, इस बार सोचे. इसाने हो कि इसी रास्ते छोटे चलने लगे जिस पर बड़े चलते हैं. और ये चहल की बिसारी की तरह दिल्ली से सबे सबे में बढ़ती चली जाये. भगवान हमारे लोक शाही जन राज की रक्षा करे.

मदनी, उर्दू, अंगरेजी में

अच्छी, सास्ती, और साफ़ छपाई के लिये

‘नया हिन्द प्रेस’ को लिखिये.

बाहर का काम पूरी जिम्मेवारी के साथ किया जाता है.

—मैनेजर, ‘नया हिन्द प्रेस’

१४५, मुहम्मदगंज,

इलाहाबाद.



और खुशिया पुलिस की मौजदगी हमारी खुददारी को कुनलने वाली होती है। कुछ साल पहले जब बायसराय और गवरनरों की सवारी निकला करती थी तो हमें पुलिस राज और साम्राजवादी हकूमत का तजरबा हुआ करता था। उस समय हमें नफरत होती थी उन शासकों से जो अपनी हिंसाजत के लिये हम पर विश्वास नहीं करते थे, और अपनी हिंसाजत पुलिस से कराते थे। पर वह गुलामी की लानत थी। अब आजादी आ गई। पर मालूम होता है पुरानी परम्परा की आत्मा ज्यों की त्यों बनी है। अगर आज के राष्ट्रपति, गवरनरों और बज्जियों को जनता पर विश्वास करने की हिम्मत नहीं है, तो एक स्वाभिमानी नागरिक की हैसियत से मैं सोचने लगता हूँ कि वह अपने ओढ़ों के काबिल नहीं। वह अपने देस में, अपने भाइयों के बीच में इतने बंधनों में क्यों रहते हैं, या अपनी खातिर हजारों नागरिकों पर तरह तरह की रोकथाम क्यों लगवाते हैं? पर हाँ, शायद मुझे यह बात न कहकर यह कहना चाहिये कि इन जल्मों को जो यह रूप दिया जाता है, वह इस लिये नहीं कि हमारे आज के शासक जनता पर शक करते हैं, बल्कि इसलिये कि वह जिन पुराने विदेशी शासकों के वारिस हैं, उन की परम्पराएँ वह अभी तक नहीं छोड़ पाए। वह बिना सोचे ऐसी बातें कर रहे हैं जो नई हवा में गैरजरूरी ही नहीं। हानिकर भी हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि यह कब तक चलेगा? जरूर ही इस ढंग से इन्क लोगों को निजी आमदनी बढ़ाने का मौका मिलता है, कुछ पचा-पैंकारियों को सरकार का भत्ता बगैरा के रूप में काफ़ी आमदनी हो जाती

سب سے ادھک چنتا اور دیکھ کی بات یہ ہے کہ ان کے سب سے  
جب راجدھانی یا گورنر اور وزیر وغیرہ آتے ہیں تو پولیس اور خدیوہ  
پولیس کی موجودگی ہماری خرد دارپ کو کچھانی والی ہوتی ہے ۔  
کچھ سال پہلے جب وائسرائے اور گورنر کی سواری نکلا تو تھی  
تو ہمیں پولیس راج اور سامراج راجی حکومت کا تجربہ ہوا ، رتا  
تھا ۔ اُس سے ہمیں بہت توتی ۔ تھی ان شاہکوں سے جو اپنی  
حفاظت کے لئے ہم پر رشوتیں نہیں کرتے تھے ، ورنہ انہی حفاظت  
پولیس سے کرتے تھے اور وہ غلامی کی لعنت تھی ۔ اب راجی آگتی ۔  
ہر معلوم ہونا ہے پرانی رزم دہائی آگیا چیوں کی تھیوں بنی ہے ۔  
اگر آج کے راجدھانی گورنروں اور وزیروں کو ، ہند ، پر رشوتیں کرنے کی  
ہمت نہیں ہے تو ایک سراسر پھانسی سارک کی حمایت سے میر  
سوچنے لگتا ہوں کہ وہ اپنے عہد کے قبیل نہیں ۔ وہ اپنے دایس  
میں اپنے برائیوں کے بیچ میں اپنے ہندوؤں میں ایک - دو  
ہیں یا اپنی خاطر - دوزخ - سب کے طرح کی ایک - دو  
کہوں لگواتے ہیں ؟ پر ہاں شاید یہ بات نہ کہہ کر یہ کہنا  
چاہئے کہ ان چلو - وں کو جو یہ رپ دیا جائے ، اس لئے نہیں  
کہ ہمارے آج کے شاہک حضرات ، شک ، یہ نہ ہوں ، بلکہ اس لئے کہ  
وہ جن ہونے بدبسی شاہکوں کے رات میں ان کی ہم پر نہیں  
وہ ابھی تک نہیں چہرہ پائے ۔ وہ ہند سرجے ایسی باتوں کو رکھ  
ہیں جو نئی ہوا میں غیر ضروری ہی نہیں تھی کہ بھی ہیں ۔  
میں جانتا چاہتا ہوں کہ یہ کب تک چلیگا ؟ ضرور ہی اس قہنگ سے  
کچھ لوگوں کو نئی آمدنی بڑھانے کا موقع ملتا ہے ، کچھ ہندو ہندوؤں  
کو ستر کا ، بہتہ وغیرہ کے روپا میں کافی آمدنی ہوجاتی



इस पहलू को छोड़कर आर्थिक निगाह से विचार करें. सरकार के हर काम का बजट बनता है. खर्च का अन्दाज किया जाता है, और उसके अनुसार ही काम किया जाता है. किसी भी पदाधिकारी की मौत तो अचानक हो जाती है. उसके अन्तिम संस्कार के लिये खर्च अचानकी मर्द से ही हो सकता है. पर इसका कुछ अन्दाज तो होना चाहिये. पता नहीं इस बारे के आंकड़े कभी साक और अलग अलग शायी होंगे या नहीं. पर मोटे तौर पर यह तो कहा ही जा सकता है कि एक आदमी पीछे लाखों रूपए खर्च हो जाते हैं. क्या 'लोक हितकारी सरकार' के पास लोक हित के कामों की कमी है, और क्या देस की आम जनता ऐसी माली हालत में है कि इतने खर्च की कुछ परवा न की जाय ? क्या हम रकम से—जो गरीब से गरीब आदमी के दिये हुए टैक्सों से वसूल होती है—मरने वाले के नाम पर कोई ऐसी यादगार नहीं बनाई जा सकती जिससे कुछ रचनात्मक काम हो और कुछ लोगों को रोटी कपड़ा मिले ?

एक और पहलू से भी बात सोचनी है. भारत के नए विधान में नागरिक अधिकारों को महत्व दिया गया है. सरकार जब किसी आदमी का अन्तिम संस्कार करती है तो कितने आदमियों का चलना फिरना रुक जाता है. अनेक आदमियों को अपनी रोजी के कामों में बाधा पड़चती है. थोड़ी बहुत देर नहीं, कई कई घन्टे, और एक दो दिन नहीं दो दो. तीन तीन, दिन, क्योंकि सरकार का काम बड़े पैमाने पर होता है, और उससे पहले उसको नक़ल (रिहर्सल) करके देखा जाता है. कितने आदमियों का कितना समय और शक्ति

नहा हलद सरकार के सोचने की बात फरवरी सन् ५९

अस पहलू को चहोर को आरंभ नका से चकार करीन. सरकार के हर काम बजट बनता है. खर्च का अन्दाज किया जाता है, और अस के अनुसार ही काम किया जाता है. किसी भी पदाधिकारी की मौत तो अचानक हो जाती है. उसके अन्तिम संस्कार के लिये खर्च अचानकी मर्द से ही हो सकता है. पर इसका कुछ अन्दाज तो होना चाहिये. पता नहीं अस बारे के आंकड़े कभी साक और अलग अलग शायी होंगे या नहीं. पर मोटे तौर पर यह तो कहा ही जा सकता है कि एक आदमी पीछे लाखों रूपए खर्च हो जाते हैं. क्या 'लोक हितकारी सरकार' के पास लोक हित के कामों की कमी है, और क्या देस की आम जनता ऐसी माली हालत में है कि इतने खर्च की कुछ परवा न की जाय ? क्या हम रकम से—जो गरीब से गरीब आदमी के दिये हुए टैक्सों से वसूल होती है—मरने वाले के नाम पर कौन सी यादगार नहीं बनायी जा सकती जिस से कुछ रचनात्मक काम हो और कुछ लोगों को रोटी कपड़ा मिले ?

एक और पहलू से भी बात सोचनी है. भारत के नये वधान में नागरिक अधिकारों को महत्व दिया किया है. सरकार जब किसी आदमी का अन्तिम संस्कार करती है तो कितने आदमियों का चलना फिरना रुक जाता है. अनेक आदमियों को अपनी रोजी के कामों में बाधा पड़चती है. थोड़ी बहुत देर नहीं, कभी कभी कितने घन्टे, और एक दो दिन नहीं, दो दो. तीन तीन दिन. क्योंकि सरकार का काम बड़े पैमाने पर होता है. और अस से पहले उसकी नक़ल (रिहर्सल) कर के देखा जाता है. कितने आदमियों का कितना समय और शक्ति

होजाती है !



२११० आन्ध्र सरकार का महकमा खाले तो इन सभी धर्मों का लिहाज रखना होगा।

अब कि भारत में सरकार धर्म निर्पेक्ष होने का दावा करती है तो उसके सामने दो ही रास्ते हैं। पहला यह कि वह इस काम को अपने हाथ में न ले। इसकी जिम्मेदारी मरने वाले के घर वालों, मित्रों और रिश्तेदारों पर रहे। सरकार केवल उनके काम में जरूरी सुविधाएं करदे। वह लोग अपनी अपनी हालत या हैसियत के अनुसार मोटर या स्पेशल ट्रेन से आवें, या हवाई जहाज बोरा से। हाँ, अगर कोई आदमी ऐसी जगह मर जाता है जहाँ उसके घर वाले या रिश्तेदार जल्दी नहीं पहुँच सकते, या जिसके घर वाले या रिश्तेदार हों ही नहीं तो उसके अन्तिम संस्कार के लिये सरकार एक बंधी हुई रकम से मदद देकर, वहाँ के मुकामी आदमियों से यह काम करा दे।

दूसरी हालत यह है कि सरकार इस काम को खुद अपने हाथ में ले। इस सूत में काम का रूप कितना बढ़ जायगा यह विचार कर लिया जाय। धर्म निर्पेक्ष सरकार को अगर हिन्दू की भरम गंगा जी पहुँचानी है, तो शिया मुसलमान की लाश शायद करबला पहुँचाने का इन्जाम करना पड़े और ईसाई के लिये समशान घर में कोई स्तूप बौरा बनवाने का प्रबन्ध करना पड़े। वह सब काम जुदा जुदा धर्मों के आचार्यों, पंडितों, मौलवियों और पादरियों बौरा के आदेश अनुसार करना होगा। इससे साफ है कि आखिर में ऐसा मालूम होगा कि किसी धर्म निर्पेक्ष सरकार का ऐसे काम में न पड़ना ही ठीक है।

ही दहम वाले नै हण्डर भोज्यै बेहत सभ्य ... र ...  
अगर सरकार अं के अंम सलसकार का महकमे कहेले तो अं सभ्य दहमों का लहाज रकेना होगा।

जब कि बेहतर मीय सरकार दहम नरिपेक्ष होने का दमोय कर्ती है तो अस्के सामने दो ही रास्ते हैं। पहला ये कि वे अं काम को लीए हाथे मीय नै ले। अं की दुंसे दारी मरने वाले के कुर वालों, मरुन और रश्तेदारों पर रहे। सरकार केवल अं के काम मीय हण्डरी सुवदनाय करदे। वे लोग अपनी अपनी हालत या हैसियत के अनुसार मोटर या स्पेशल ट्रेन से आवें, या हवाई जहाज रकेना से। हाँ, अगर कोई आदमी ऐसी जगह मर जाता है जहाँ उसके कुर वाले या रश्तेदार जल्दी नहीं पहुँच सकते, या जिसके कुर वाले या रश्तेदार हों ही नहीं तो उसके अंम सलसकार के लीए सरकार एक बंधी हुई रकम से मदद देकर, वहाँ के मकामी आदमियों से ये काम करा दे।

दूसरी हालत ये है कि सरकार अं काम को खुद अपने हाथे मीय ले। इस सूत में काम का रूप कितना बढ़ जायगा यह विचार कर लिया जाय। धर्म निर्पेक्ष सरकार को अगर हिन्दू की भरम गंगा जी पहुँचानी है, तो शिया मुसलमान की लाश शायद करबला पहुँचाने का इन्जाम करना पड़े और ईसाई के लिये समशान घर में कोई स्तूप बौरा बनवाने का प्रबन्ध करना पड़े। वह सब काम जुदा जुदा धर्मों के आचार्यों, पंडितों, मौलवियों और पादरियों रश्ते के आदेश अनुसार करना होगा। अं से साफ है कि अंर मीय असा मलूम होगा कि किसी धर्म निर्पेक्ष सरकार का ऐसे काम में न पड़ना ही ठीक है।



मरने पर सरकार उनके अन्तिम संस्कार से कहाँ तक सम्बन्ध रखते। ज्यादातर सरकारी आदमी छोटे छोटे पदों पर होते हैं। जिनके बारे में सरकार के कुछ सोचने की जरूरत नहीं समझी जाती। सबाल सिर्फ़ उन लोगों का रह जाता है जो बहुत ऊँचे पदों पर हों—जैसे जंगी लाइट, थल सेना, जल सेना और हवाई सेना के सेनापति, राइट पति, प्रधान मंत्री और दूसरे वज़ीर, और महकमों के सबसे बड़े अफसर, सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस और दूसरे जज। इसी तरह हर सूबे (राज) में वहाँ के गवर्नर, बड़े वज़ीर, दूसरे वज़ीर, हाई-कोर्ट के जज, यहां मिसाल के तौर से थोड़े से ही पदों के नाम लिये गए हैं। इनकी सूची और गिनती बहुत बड़ी हो सकती है।

मेरा तो विचार है कि अगर सरकार का मतलब रोब दाब जमाने वाली और ताकत के सहारे हुकूमत करने वाली संस्था न होकर सेवा या खिदमत करने वाली संस्था हो तो उसके लिये ऊँचे दर्जे के साइन्सी खोज करने वाले, कलाकार और ऊँचे दर्जे के साहित्यकार, वैद्य, हकीम या डाक्टर भी वैसे ही इज्जतशर होने चाहियें जैसे गवर्नर या वज़ीर, क्योंकि जनता के लिये इनका काम किसी तरह कम महत्व का नहीं होता। पर अगर इन सबके अन्तिम संस्कार का काम सरकार करने लगे तो उसे इसके लिये एक अलग महकमा ही बनाना पड़े और उसके लिये भी दिल्ली में एक वज़ीर हो, और हर सूबे (राज) में एक एक वज़ीर हो। इन वज़ीरों या मंत्रियों का काम कितना जटिल होगा, इसका विचार करते समय यह ध्यान में रखा जाय कि देस में किसी एक ही धर्म के आदमी नहीं हैं, हिन्दू

मरने पर सरकार उनके अन्तिम संस्कार से कहाँ तक सम्बन्ध रखे। ज्यादातर सरकारी आदमी चहोटे चहोटे पदों पर होते हैं। जिन के बारे में सरकार के कुछ सोचने की जरूरत नहीं समझी जाती। सबाल सिर्फ़ उन लोगों का रह जाता है जो बहुत ऊँचे पदों पर हों—जैसे जजगी लाइट, थल सेना, जल सेना और हवाई सेना के सेनापति, राइट पति, प्रधान मंत्री और दूसरे वज़ीर, और महकमों के सब से बड़े अफसर, सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस और दूसरे जज। इसी तरह हर सूबे (राज) में वहाँ के गवर्नर, बड़े वज़ीर, दूसरे वज़ीर, हाई-कोर्ट के जज, यहां मिसाल के तौर से थोड़े से ही पदों के नाम लिये गए हैं। इन की सूची और गिनती बहुत बड़ी हो सकती है।

मेरा तो विचार है कि अगर सरकार का मतलब रोब दाब जमाने वाली और ताकत के सहारे हुकूमत करने वाली संस्था न होकर सेवा या खिदमत करने वाली संस्था हो तो उसके लिये ऊँचे दर्जे के साइन्सी खोज करने वाले, कलाकार और आर्टिस्ट भी वैसे ही इज्जतशर होने चाहियें जैसे गवर्नर या वज़ीर, क्योंकि जनता के लिये इनका काम किसी तरह कम महत्व का नहीं होता। पर अगर इन सब के अन्तिम संस्कार का काम सरकार करने लगे तो उसे इसके लिये एक अलग महकमा ही बनाना पड़े और उसके लिये भी दली में एक वज़ीर हो, और हर सूबे (राज) में एक एक वज़ीर हो। इन वज़ीरों या मंत्रियों का काम कितना जटिल होगा, इसका विचार करते समय यह ध्यान में रखा जाय कि देस में किसी एक ही धर्म के आदमी नहीं हैं, हिन्दू



काम बाक़ी भी है, उसके लिये कैसे योग्य अधिकारी की जरूरत होगी, जो कठोर भी हो और कोमल भी, जो चतुर भी हो और मेहनती भी, और मक़सद पूरा करने के लिये जी जान से जुटने वाला हो. सरदार पटेल की ठीक ठीक जगह भरना कुछ सहज बात नहीं, पर हमें अपने देस के उजले भविष्य का यक़ीन है. जैसी समस्याएं सामने आवेंगी, उन्हें हल करने वाला नेता भी हमें मिल ही जायगा. इस आशावादी रहें और जो कुछ काम हमारे करने का हो, उसमें कमी न करें.

इन बातों को सोचते सोचते ही सरदार पटेल के फूल बहाए जाने की बात मन में आई. हिन्दुओं में यह परम्परा है कि जहां तक बस बले मुरदे को गंगा जमना के किनारे जलाया जाए, और यदि यह न हो सके तो उसकी हड्डियाँ तो इन नदियों में अवश्य ही बहाई जायें. ऐसा करने से हम मृतआत्मा को शान्ति मिलने का विश्वास करते हैं. यह कहा जा सकता है कि नेक काम करने वाले को खुद ही शान्ति मिल जायगी, फिर भी घर वालों की जैसी भावना होती है, उसी दिशा में वह अपना कर्ज पूरा करने का प्रयत्न करते हैं और जहां तक उनके इस काम से दूसरों को कोई हानि या तकलीफ न हो, हर आदमी को अपने अपने विश्वासों के मुताबिक काम करने की आजादी है.

पर सबाल यह पैदा होता है कि सरकार खुद इस काम में कहां तक हिरसा ले. खासकर जो आदमी सरकारी ओहदों पर हैं, उनके

सरदार पटेल ने कितना चमत्कार सा कर दिया. और अभी कितना ही काम बाक़ी है, अُس के लिये कितने योग्य अधिकारी की ضرورت होगी, जो क्लेवर भी हो और कोमल भी, जो चतुर भी हो और मेहनती भी, और मक़सद पूरा करने के लिये जी जान से जुटने वाला हो. सरदार पटेल की तेहक तेहक चमक बेहरना कितने सज्ज बात नहीं, पर हमें अपने देस के अजले भविष्य का यक़ीन है. जैसी समस्याएं सामने आने लगी, उन्हें हल करने والا निश्चय भी हमें मिल ही जायगा. हम आशावादी रहें और जो कुछ काम हमारे करने का हो, अُس में कमी न करें.

अन बातों को सोचते सोचते ही सरदार पटेल के फूल बहाए जाने की बात मन में आई. हिन्दुओं में यह परम्परा है कि जहां तक बस बले मुरदे को गंगा जमना के किनारे जलाया जाए, और यदि यह न हो सके तो अُس की हड्डियाँ तो इन नदियों में अवश्य ही बहाई जायें. ऐसा करने से हम मृतआत्मा को शान्ति मिलने का विश्वास करते हैं. यह कहा जा सकता है कि नेक काम करने वाले को खुद ही शान्ति मिल जायगी, फिर भी घर वालों की जैसी भावना होती है, उसी दिशा में वह अपना कर्ज पूरा करने का प्रयत्न करते हैं और जहां तक उनके इस काम से दूसरों को कोई हानि या तकलीफ न हो, हर आदमी को अपने विश्वासों के मुताबिक काम करने की आजादी है.

पर सवाल यह पैदा होता है कि सरकार खुद इस काम में कहां तक हिरसा ले. खासकर जो आदमी सरकारी ओहदों पर हैं, उनके



## सरकार के सोचने की बात

(भाई भगवान दास केला)

जो सरकारें तानाशाही नहीं होतीं, जो लोकशाही, लोक प्रिय, खिन्मेदार या जवाबदेह और धर्म निपेक्ष (ज्योदारी. सेकुलर) होती हैं, उन्हें बहुत सोच समझ कर चलना होता है. उनकी हर बात पर लोग यह विचार करते हैं कि वह इस कसौटी पर कहाँ तक ठीक बतर्ती है, जिसका उन्हें दावा है. हमारी आजाद भारत की नई सरकार अपने लिये इन गुणों का दावा करती है. इसलिये उसके वास्ते बहुत जरूरी है कि वह कोई ऐसा काम न करे जिससे देश-प्रेमियों के मन में उसकी तरफ से कोई शिकायत हो. यह विचार मेरे मन में सरदार पटेल की अस्थि विसर्जन या भस्म को गंगा में बहाने की घटना से आरहे है.

सरदार पटेल के अनेक गुणों की देस विदेशों में बरबा है. मेरे मन में उनके लिये खिचाव होने का एक खास कारन भी था. सन १९४८ में मैंने "देशी राजों की जन जागृति" पुस्तक लिखी थी. पिछली बार जब सरदार पटेल पिलानी (जयपुर) गए तो मैंने उनकी सेवा में वह पुस्तक भेंट की और मुझे इतनी खुशी हुई जितनी किसी बड़े से बड़े नेता को बहुत ही क्रीमती भेंट करके होती. जब मैंने सरदार पटेल के देहान्त का समाचार सुना तो मन पर मामूली से ज्यादा असर हुआ. तरह तरह के विचार मन में

## सरकार के सोचने की बात

(बैथली बेकवान दास केला)

जो सरकारें ताना शाही नहीं होतीं, जो लोक शाही, लोक प्रिय, धर्मदार या जवाबदार (ज्योदारी. सेकुलर) होती हैं, उन्हें बहुत सोच समझ कर चलना होता है. उन की हर बात पर लोग यह विचार करते हैं कि वह इस कसौटी पर कहाँ तक ठीक बतर्ती है, जिसका उन्हें दावा है. हमारी आजाद भारत की नई सरकार अपने लिये इन गुणों का दावा करती है. इसलिये उसके वास्ते बहुत जरूरी है कि वह कोई ऐसा काम न करे जिससे देश-प्रेमियों के मन में उसकी तरफ से कोई शिकायत हो. यह विचार मेरे मन में सरदार पटेल की अस्थि विसर्जन या भस्म को गंगा में बहाने की घटना से आरहे हैं.

सरदार पटेल के अनेक गुणों की दीस बलिसरों में चर्चा है. मेरे मन में उन के लिये कहेंगे होने का एक खास कारन भी था. सन १९४८ में मैंने "देशी राजों की जन जागृति" पुस्तक लिखी थी. पिछली बार जब सरदार पटेल पिलानी (जयपुर) गئے तो मैंने उनकी सेवा में वह पुस्तक भेंट की और मुझे इतनी खुशी हुई जितनी किसी बड़े से बड़े नेता को बहुत ही क्रीमती भेंट करके होती. जब मैंने सरदार पटेल के देहान्त का समाचार सुना तो मन पर मामूली से ज्यादा असर हुआ. तरह तरह के विचार मन में



अपनी तरफ से कुछ सचची देन दे सकेगा.

मालिक से बिनती है कि इस प्रयोग के करने वालों को वह ताकत दे जिससे वह उसे चाँटि की उंचाई तक ले जा सकें और क्या हिन्दुस्तान क्या बाहर के लोगों को सुमती दे कि वह इस दुनिया को गोला-बारूद का अखाड़ा न बनाकर प्रेम की बस्ती बनाएँ.

मैं अपनी तरफ से कुछ सचची देन दे सकूँगा .  
मालिक से बिनती है कि इस प्रयोग के करने वालों को वह ताकत दे जिससे वह उसे चाँटि की उंचाई तक ले जा सकें और क्या हिन्दुस्तान क्या बाहर के लोगों को सुमती दे कि वह इस दुनिया को गोला-बारूद का अखाड़ा न बनाकर प्रेम की बस्ती बनाएँ .

## ‘नया हिन्द’ की छमाही वैधी हुई बढ़िया जिल्दे

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर जिल्द का सिर्फ़ दस रुपया .

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दे खरीदने पर डाक खर्च माफ़ .

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, सुट्टीगंज,

इलाहाबाद.

## ‘नया हिन्द’ की चवथाई बन्धनी हूँ ब्रह्मा जलदिय

जुलाई सन १९५१ से दिसम्बर सन १९५० तक की .

‘चिमट हर जिल्द का हरफ़ दस रुपया’ .

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दिय खरीदने पर डाक खर्च माफ़ .

—मैनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, सुट्टीगंज,

इलाहाबाद .



अपनी तरफ़ मिला लेना चाहते हैं, क्योंकि इन देशों के पास आद-मियों की तादाद बहुत ज्यादा है। दुनिया दुख में तड़प रही है—ऊपर से यह लड़ाई का हौवा दुनिया को और परेशान कर रहा है।

इस सारे तूफान में सिर्फ़ एक जगह ऐसी मिलती है जहाँ एक दूसरे तरीके का ही तजरबा करने की कोशिश हो रही है। दुनिया में पैसे का बोल बाला है और पैसे वाले खुद मेहनत न करके मेहनत करने वालों को चूसा करते हैं। यह तजरबा मानो समाज को काया ही पलट देने वाला है जहाँ मेहनत को उसके ऊँचे दर्जे पर बिठा कर सभी से उसकी पूजा कराई जाती है और छोटे बड़े का कोई भेद नहीं है। यह तजरबा वर्षों से चार मील दूर पर धाम नदी के किनारे परधाम नाम के अपने आश्रम में पूज्य श्री विनोबा जी कर रहे हैं जिन्हें गांधी जी ने १९३६ वाले महायुद्ध के खिड़ने पर हिन्दुस्तान का पहला सत्याग्रही चुना था, जो हर तरह की लड़ाई के बिरोधी हैं, और जिन्होंने उनके की चोट पर कहा था कि इस लड़ाई में हिन्दुस्तान का पैसे या आदमी से मदद करना हाराम है। वह सत्याग्रही विनोबा आज पैसे का छेद बन्द करना चाहते हैं। स्वावलम्बन के इस यज्ञ पर सारे हिन्दुस्तान की निगाह है।

यही असली चीज़ है। अगर हमें अपना सर ऊँचा करना है, अगर अपने लाखों करोड़ों गरीबों को पेट भर अनाज देना है तो उसमें अमरीका या रूस से मदद नहीं मिलने वाली है। उसके लिये कोशिश चाहिये, अपनी मेहनत चाहिये, समाज का मौजूदा ढांचा

लेनी तरफ़ मल लेना चाहते हों, क्योंकि इन देशों के पास آدمियों की تعداد बहुत बड़ी है। दुनिया दुख में तड़प रही है—ऊपर से यह लड़ाई का हौवा दुनिया को और परेशान कर रहा है।

अस सारे तूफान में सिर्फ़ एक जगह ऐसी मिलती है जहाँ एक दूसरे तरीके का ही तजरबा करने की कोशिश हो रही है। दुनिया में पैसे का बोल बाला है और पैसे वाले खुद मेहनत न करके मेहनत करने वालों को चूसा करते हैं। यह तजरबा मानो समाज की काया ही पलट देने वाला है जहाँ मेहनत को उसके ऊँचे दर्जे पर बिठा कर सभी से उसकी पूजा कराई जाती है और छोटे बड़े का कोई भेद नहीं है। यह तजरबा वर्षों से चार मील दूर पर धाम नदी के किनारे परधाम नाम के अपने आश्रम में पूज्य श्री विनोबा जी कर रहे हैं जिन्हें गांधी जी ने १९३६ वाले महायुद्ध के खिड़ने पर हिन्दुस्तान का पहला सत्याग्रही चुना था, जो हर तरह की लड़ाई के बिरोधी हैं, और जिन्होंने उनके की चोट पर कहा था कि इस लड़ाई में हिन्दुस्तान का पैसे या आदमी से मदद करना हाराम है। वह सत्याग्रही विनोबा आज पैसे का छेद बन्द करना चाहते हैं। स्वावलम्बन के इस यज्ञ पर सारे हिन्दुस्तान की निगाह है।

यही असली चीज़ है। अगर हमें अपना सर ऊँचा करना है, अगर लाखों करोड़ों गरीबों को पेट भर अनाज देना है तो उसमें अमरीका या रूस से मदद नहीं मिलने वाली है। उसके लिये चाहिये, अपनी मेहनत चाहिये, समाज का मौजूदा ढांचा



दक्खिनी अमरीका तिजारती पहलू से उत्तरी अमरीका का मोहताज रहता है। लेकिन इस बार ब्राजील में जो चुनाव हुए तो राश्ट्रपति पद पर डाक्टर वर्गास चुने गए जो ३१ जनवरी १९५१ से काम संभालेंगे, अब अमरीका (यू. एस. ए.) को अन्देश है कि कहीं उसको कुछ अड़चन न पड़े।

सन १९५० में चुनाव बहुत मारके के रहे। तुर्की में राश्ट्रपति इस्मत अोनोनो की पार्टी बुरी तरह हारी। कई मिनिस्टर तक चुनाव में हार गए, ब्रिटेन में लेबर पार्टी जीती, मगर बहुत ही थोड़े वोटों से जीती। ६२५ में केवल ७ का बहुमत है। वोट लेते वक़्त अकसर तो अस्पतालों से मेम्बर बुलाए जाते हैं। लेकिन जिस बहादुरी और खूबी के साथ ब्रिटेन की लेबर सरकार अपने देस की नाव खे रही है वह तारीफ़ के लायक बात है। ब्रिटेन के अर्थ मन्त्री सर स्टैफ़ोर्ड क्रिस ने बीमारी के कारन इस्तीफ़ा दे दिया है।

अमरीका में भी चुनाव हुए, वहाँ की काँग्रेस में डिमोक्रेट और रिपब्लिक शो इलों का मुक़ाबला रहता है। अब तक डिमोक्रेट काफ़ी बहुमत में थे। लेकिन इस बार के चुनाव में उनकी ताक़त बहुत कुछ कम हो गई है, हालाँकि बहुमत अब भी है। इस चुनाव का असर १९५२ के राश्ट्रपति के चुनाव पर गहरा पड़ेगा।

१९५० के ख़तम होते होते सारी दुनिया में लड़ाई का डर है, लड़ाई का चरचा है। पच्छिमी देस अपनी ताक़त बढ़ा रहे हैं और पूरे के बल पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान बॉरिंगा पूरब के देसों को

की कूशिश की है।  
दक्खिनी अमरीके तिजारती पहलू से उत्तरी अमरीके का मुहताज रहता है।

लेकिन इस बार ब्राजील में जो चुनाव हुए तो राश्ट्रपति पद पर डाक्टर वर्गास चुने गए जो ३१ जनवरी १९५१ से काम संभालेंगे, अब अमरीके (यू. एस. ए.) को अन्देश है कि कहीं उसको कुछ अड़चन न पड़े।

सन १९५० में चुनाव बहुत मारके के रहे। तुर्की में राश्ट्रपति इस्मत अोनोनो की पार्टी बुरी तरह हारी। कई मिनिस्टर तक चुनाव में हार गए, ब्रिटेन में लेबर पार्टी जीती, मगर बहुत ही थोड़े वोटों से जीती। १२५ में केवल ७ का बहुमत है। वोट लेते वक़्त अकसर तो अस्पतालों से मेम्बर बुलाए जाते हैं। लेकिन जिस बहादुरी और खूबी के साथ ब्रिटेन की लेबर सरकार अपने देस की नाव खे रही है वह तारीफ़ के लायक बात है। ब्रिटेन के अर्थ मन्त्री सर स्टैफ़ोर्ड क्रिस ने बीमारी के कारन इस्तीफ़ा दे दिया है।

अमरीके में भी चुनाव हुए, वहाँ की काँग्रेस में डिमोक्रेट और रिपब्लिक दो दलों का मुक़ाबला रहता है। अब तक डिमोक्रेट काफ़ी बहुमत में थे। लेकिन इस बार के चुनाव में उनकी ताक़त बहुत कुछ कम हो गई है, हालाँकि बहुमत अब भी है। इस चुनाव का असर १९५२ के राश्ट्रपति के चुनाव पर गहरा पड़ेगा।

१९५० के ख़तम होते होते सारी दुनिया में लड़ाई का डर है, लड़ाई का चरचा है। पच्छिमी देस अपनी ताक़त बढ़ा रहे हैं और पूरे के बल पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान बॉरिंगा पूरब के देसों को



की चीज बन गई है। अभी मलाया के गवर्नर सलाह मशवरे के लिये लौटने गए भी थे।

दुनिया की छत नाम का देस—तिब्बत भी इस साल लोगों के ध्यान में आया क्योंकि कहा यह गया कि वहाँ नए चीन की सरकार ने हमला कर दिया है। मगर तिब्बत तो चीन का हिस्सा है ही। अब वहाँ शान्ति है और तिब्बत नए चीनी प्रजातन्त्र का बाजाब्ला एक हिस्सा बन गया है।

तिब्बत के दक्खिन में ही नैपाल नाम की रियासत है जो अंगरेजों को गोरखे नाम के सिपाही दिया करती है। वहाँ पर राजा नाम का है, राज प्रधान मन्त्री राना का है। इस राना राज के खिलाफ वहाँ भी विद्रोह छठा, राजा भागकर नई दिल्ली आ गए और राना ने उनके तीन साल के पोते को राजा बना दिया। यह विद्रोह राना ने काफी दबा लिया है पर जनता का यह विद्रोह पूरी तरह दबाना तो नासुमकिन ही है। राना के कुछ प्रतिनिधि हिन्दुस्तान की सरकार से बात करने आए थे। बात चीत अभी जारी है। यह तो साफ है कि राना की अन्धेरशाही के दिन लट गए।

दुनिया के दक्खिनी हिस्से की खबरें आम तौर पर कम आती हैं। आस्ट्रेलिया तो खुले आम ब्रिटेन व अमरीका का पकश ले रहा है। दक्खिनी अफ्रीका में चुनाव के बाद जो सरकार बनी उसके प्रधान मंत्री डाक्टर मलान हैं। यह सरकार रंग के फरक को इतना मानती है कि हिन्दुस्तानियों का वहाँ पर रहना मुहाल है। यू-

नया हलद सन् १९५०—सायिक नजर फरवरी सन् '५१

की चीज बन गयी है। अभी मलाया के कौन्सिलर मशवरे के लिये लौटने गये भी थे।

दुनिया की चेतना नाम का देस—तिब्बत भी इस साल लोगों के ध्यान में आया क्योंकि कहा यह गया कि वहाँ नए चीन की सरकार ने हमला कर दिया है। मगर तिब्बत तो चीन का हिस्सा है ही। अब वहाँ शान्ति है और तिब्बत नए चीनी प्रजातन्त्र का बाजाब्ला एक हिस्सा बन गया है।

तिब्बत के दक्खिन में ही नैपाल नाम की रियासत है जो अंगरेजों को गोरखे नाम के सिपाही दिया करती है। वहाँ पर राजा नाम का है, राज प्रधान मन्त्री राना का है। इस राना राज के खिलाफ वहाँ भी विद्रोह छठा, राजा भागकर नई दिल्ली आ गए और राना ने उनके तीन साल के पोते को राजा बना दिया। यह विद्रोह राना ने काफी दबा दिया है पर जनता का यह विद्रोह पूरी तरह दबाना तो नासुमकिन ही है। राना के कुछ प्रतिनिधि हिन्दुस्तान की सरकार से बात करने आए थे। बात चेतना अभी जारी है। यह तो साफ है कि राना की अन्धेरशाही के दिन लट गये।

दुनिया के दक्खिनी हिस्से की खबरें आम तौर पर कम आती हैं। आस्ट्रेलिया तो कहेले आम ब्रिटेन व अमरीका का पकश ले रहा है। दक्खिनी अफ्रीका में चुनाव के बाद जो सरकार बनी उसके प्रधान मंत्री डाक्टर मलान हैं। यह सरकार रंग के फरक को इतना मानती है कि हिन्दुस्तानियों का वहाँ पर रहना मुहाल है। यू-



सरकार का ऐलान कर दिया. हिन्दुस्तान ने उसको मान्यता दे दी है. पख्तूनिस्तान का सबाल इस साल नुमायां तौर पर सामने रहा. मगर लघर की खबरें कम आती हैं. दूसरे सारे नेता जैसे सरहदी गांधी और उनके भाई डाक्टर खां साहब वगैरा कैदखाने में बन्द हैं जिसकी वजह यह आन्दोलन ज्यादा बड़ा रूप नहीं ले सका.

चीन तो मानो नया जन्म ले रहा हो. नए सिर से वहां की सभी चीजों की तामीर हो रही है क्योंकि पिछले निजाम में हालत बहुत ही बुरी तरह बिगड़ गई थी. इस साल चीन व रूस के बीच एक सुलहनामा भी हुआ जिसके कारन पच्छिम को ताकतें चीन को रूस का पिटू समझने लगी हैं. इस साल चीन में भारतीय राजदूत बास बाक्रायदा कायम हो गया.

इन्डोचीन में लड़ाई जारी है. हाल की खबर यह है कि चीनी सिपाही भी कुछ पटुच रहे हैं, मगर यह खबर पक्की नहीं हुई. फ्रान्स अपना पूरा खोर वहां के जन आन्दोलन को दबाने में लगा रहा है. इसी तरह इन्डोनेशिया का एक पूरबी टापू पच्छिमी न्यूगिनी हालैन्ड वाले नहीं छोड़ रहे हैं और इस चीज में आस्ट्रेलिया वाले डचों के साथ हैं. समय की पुकार तो यही है कि योरप पूरी तरह एशिया के इस कोने को खाली कर दे लेकिन यह पुकार सुनी नहीं जा रही है. जून के महीने में पंडित नेहरू इन्डोनेशिया गए थे.

मलाया की हालत बहुत संगीन है. वहाँ पर कम्युनिस्टों की बढ़ती हुई ताकत का सामना करना बंगरेजी शासकों के लिये आफत

एक सवान्तों के कारन دل से एक नेहों हो पاتे. असुरानल ने ऐसी सरार का एलान कर दिया. हल्दस्त्रान ने अस को मानता दे दी है.

पख्तूनस्तान का साल अस साल नमायां طور پر سامने रहा. मगर अदर की खबरों कम आती हैं. दुसरे सारे नेहना चोस्ते सरحدی لاندھی اور ان کے بهائی دانکر خال صاحب رشودہ قید خانے میں بند ہیں جس کی وجہ سے یہ آندرون زیادہ بڑا روپ نہیں لے سکا. چمن تو مانو نیوا چلم لے रहा هو. نئے سرے سے وہاں کی سدھی چنزوں کی تعمیر ہو رہی ہے کیونکہ پچھلے نظام میں حالات بہت ہی بری طرح بگڑ گئی تھی. اس سال چین و روس کے بیچ ایک صلح نامہ بھی ہوا جس کے کارن بچیم کی طاقتوں چمن کو روس کا پتھو مکتھہنے لگی ہیں. اس سال چمن میں بہارتی راج دوت واس باقعدہ قائم ہو گیا.

انڈوچمن میں لوائی جادی ہے. حال کی خبر یہ ہے کہ چینی سپاہی بھی کچھ پہنچ رہے ہیں مگر یہ خبر یکی نہیں ہوئی. فرانس اپنا ہورا زور رہاں کے جن آندرون کو دبانے میں لگا رہا ہے. اس طرح انڈونیشیا کا ایک یورپی ڈیپو پچھمی نیو گنی ہالینڈ والے نہیں چھوڑ رہے ہیں اور اس چھوڑ میں آسٹریلیا والے قزاقوں کے ساتھ ہیں. سے کی پکار تو یہی ہے کہ یورپ پوری طرح ایشیا کے اس کوئے کو خالی کر دے لیکن یہ پکار سلی نہیں جا رہی ہے. جوں کے مہیلے میں پلڈت نہرو انڈونیشیا گئے تھے.

ملايا کی حالت بہت سنگین ہے. رہاں پر کمونسٹوں کی ہونگی ہوئی طاقت کا سامنا کرنا انگریزی شاسکوں کے لئے آلت



कोरिया में हार के कारन ट्रूमैन ने अपनी कांग्रेस से सोला लाख करोड़ डालर की मांग की है ताकि फौजी तैयारी की जाय. उबर ब्रिटेन के जनरल मान्टगुमरी ने यह बताया है कि पच्छिमी देशों को लाजमी भरती वाल कर देना चाहिये. अभी दिसम्बर के दूसरे हफ्ते में ब्रिटेन में पच्छिमी देशों के मंत्रियों की सभा में तै पाया कि जनरल आण्ड्रसन हावर को प्रधान सेनापति बनाया जाय. साथ ही साथ पच्छिमी जरमनी वालों की भी फौज खड़ी करने का बिचार है. ऐसी सूरत में पूरबी रूस और जरमनी बगैरा देस कैसे चुप रह सकेंगे. आज दुनिया लड़ाई की तैयारी कर रही है हालांकि सब ही असन के उपासक बनते हैं.

इस साल की खास बातों में शुमन पलान भी है. इसके अन्दर पच्छिमी योरप की मिल जुलकर खास तौर पर जरमनी और फ्रान्स की औद्योगिक तरक्की करने की कल्पना है. योरप के पच्छिम दक्खिन कोने में स्पेन नाम के देस की अक्छी चर्चा चली. अमरीका ने उसे एक बहुत बड़ी रक्कम दी है. ब्रिटेन ने स्पेन में अपना राज-दूत वास कायम किया है—मगर शायद ब्रिटेन को लेने के देने पड़ें क्योंकि स्पेन कहता है कि जिब्राल्टर हमारा है, हमें वापस मिलना चाहिये.

भूमध्य सागर के दक्खिन के प्रधान देस मिस्र में भी काफ़ी सरगर्मी इस साल रही. वहां के सम्राट का कहना है कि सूडान हमें दिया जाय और नहर स्वेज से ब्रिटिश फौज हटाई जायें. इस बात

कोरिया में हार के कारन ट्रूमैन ने अपनी कांग्रेस से सोला करोड़ डॉलर की मांग की है ताकि फौजी तैयारी की जाय. उबर ब्रिटेन के जनरल मान्टगुमरी ने यह बताया है कि पच्छिमी देशों को लाजमी भरती वाल कर देना चाहिये. अभी दिसम्बर के दूसरे हफ्ते में पच्छिमी जरमनी वालों की भी फौज खड़ी करने का बिचार है. ऐसी सूरत में पूरबी रूस और जरमनी बगैरा देस कैसे चुप रह सकेंगे. आज दुनिया लड़ाई की तैयारी कर रही है हालांकि सब ही असन के उपासक बनते हैं.

इस साल की खास बातों में शुमन पलान भी है. इसके अन्दर पच्छिमी योरप की मिल जुलकर खास तौर पर जरमनी और फ्रान्स की आर्थिक तरक्की करने की कल्पना है. योरप के पच्छिम दक्खिन कोने में स्पेन नाम के देस की अक्छी चर्चा चली. अमरीका ने उसे एक बहुत बड़ी रक्कम दी है. ब्रिटेन ने स्पेन में अपना राज-दूत वास कायम किया है—मगर शायद ब्रिटेन को लेने के देने पड़ें क्योंकि स्पेन कहता है कि जिब्राल्टर हमारा है, हमें वापस मिलना चाहिये.

भूमध्य सागर के दक्खिन के प्रधान देस मिस्र में भी काफ़ी सरगर्मी इस साल रही. वहां के सम्राट का कहना है कि सूडान हमें दिया जाय और नहर स्वेज से ब्रिटिश फौज हटाई जायें. इस बात



नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि चीनी फौजों के आगे कुछ न बलती देखकर अमरीका ने ऐटम बम इस्तेमाल करने की सोची। इस बात को सुन कर सारी दुनिया बेताब हो गई और ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ऐटली अमरीकन राइटपति ट्रूमैन से जाकर वार्शिंगटन में मिले और उन्हें जनमत किधर जा रहा है यह सुनाया। इसके पहले—फौजी तैयारी देखने—ट्रूमैन एक टापू पर जाकर मैकआर्थर से भी मिले थे, जिसके बाद वह हमला जनरल मैक आर्थर ने किया जिसका फल अब तक सुगत रहे हैं।

रुस ने जो यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति का स्थायी मेम्बर है, समिति का बार्डकाट छै सात महीने तक किया क्योंकि पुगने चीन के प्रतिनिधि का बैठना उसे क़बूल नहीं था। मगर अगस्त के महीने से जब प्रधान का पद संभालने की बारी रुस की थी तब से वह शरीक होने लगा है। रुस के ब्योडार से परेशान होकर अमरीका ने यह भी सोचा कि अपने पक्ष के देशों को लेकर यू. एन. ओ. के विधान में ऐसी तरमीमें कर ली जाएँ ताकि रुस के वोटो वोट के कारन उसके काम में कोई अड़चन नहीं पड़े। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस तजवीज के बारे में कहा था कि इसका मतलब तो यू. एन. ओ. को उत्तर एटलान्टिक डिफेंस कौन्सिल बना देना है जिस को सुन कर पन्डितजी सरकारों के अफसर गुरसे से लाज हो गए थे और बोले कि जवाहरलाल ने तो हद करदी कि जो बात रुस तक ने नहीं कही वह उन्होंने कह डाली। लेकिन जवाहरलाल ने उनके दिल का बोर खोल कर रख दिया यह वह खूब समझते हैं।

वफ़ारे ने फ़ैसल ने डारन अन पर एस न ससन =

नौबत یہاں تک پہنچ گئی کہ چینی فوجوں کے آگے کچھ نہ چلتی دیکھ کر امریکہ نے ایٹم بم استعمال کرنے کی سوچی۔ اس بات کو سن کر ساری دنیا بے تاب ہو گئی اور برطیتون نے پردھان منتری ایتلی امریکن راشنریٹی ٹرूमین سے جا کر واشنگٹن میں ملے اور انہیں جن مت کدھر جا رہا ہے یہ سنجھایا۔ اس کے پہلے فوجی تھاوی دیکھئے—ٹرूमین ایک ٹاپو پر جا کر مک آرتھ سے بھی ملے تھے، جسکے بعد وہ حملہ جانرل مک آرتھ نے کیا جس کا پھل اب تک بہکت رہے ہیں۔

روس نے جو یو. این. او. کی سرکشا سمیٹی کا استھائی ممبر ہے، سمیٹی کا بالی کات چھ سات مہینے تک کیا کیونکہ پڑنے چھن کے پرتی اددھی کا بہتھا اُسے قبول نہیں تھا۔ مگر اگست کے مہینے سے جب پردھان کا پد سنبھالنے کی باری روس کی تھی تب سے وہ شریک ہونے لگا ہے۔ روس کے بھوہار سے پریشان ہو کر امریکہ نے یہ بھی سوچا کہ اپنے پکھ کے دیسوں کو لیکر یو. این. او. کے ودھان میں ایسی ترمیمیں کر لی جائیں تاکہ روس کے ویٹو ووت کے کارن اُس کے کم میں کوئی اثرچن نہیں پڑے۔ پلڈت جوامر لال نہرو نے اس تجویز کے بارے میں کہا تھا کہ اس کا مطلب تو یو. این. او. کو اثر اتلانٹک ڈیفنس کونسل بنا دینا ہے جسکو سلکر پچھمی سرکاروں کے افسر فصے سے لال ہوئے تھے اور بولے کہ جوامر لال نے تو حد کر دی کہ جو بات روس تک نے نہیں کہی وہ انہوں نے کم ڈالی۔ لیکن جوامر لال نے اُن کے دل کا چور کھول کر دکھایا یہ وہ خرب سمجھتے ہیں۔



और जिसकी पूरी जिम्मेदारी जापान के फौजी बादशाह—अमरीकन जनरल मैकआर्थर—को सौंपी गई.

इस लड़ाई में कई उत्तर बढ़ाव आए. अमरीकन फौजों की शुरु में सफलता—फिर हार कर कोने में भाग आना—फिर “बड़ा दिन घर पर” मनाने वाला हमला और ३८ पड़ी रेखा के ऊपर तक बढ़ते जाना—इस मौके पर चीनी फौज का उत्तर कोरिया वालों का साथ देना और उनके आने से अमरीका की तैज के लिये जान बचाकर भागना ही एक सूत खिन्दा रहने की बची, और यह पीछे को हटना, लगातार इस्कीम के अनुसार हटना, अभी चल रहा है. चीन की फौजों ने ३८ पड़ी रेखा पार कर ली है और दक्खिन की तरफ बढ़ रही है.

कोरिया का मामला छिड़ जाने के बाद हमारे प्रधान मन्त्री ने स्टालिन और एचेसन को पत्र लिखे कि इस चीज को जयादा न बढ़ाया जाय और दुनिया में शान्ति क्रायम रखने की कोशिश की जाय. लेकिन मामला वैसा का वैसा ही रहा. इसके बाद हिन्दुस्तान ने इस मामले में दो बातें कहीं—

(१) नये चीन को यू. एन. ओ. में शामिल किया जाय.

(२) यू. एन. ओ. की फौजों ३८ पड़ी रेखा के उत्तर में न जाएँ.

अमरीका ने खालफर दोनों ही बातों को नामंजूर कर दिया जिस की बजह से यू. एन. ओ. भी उन्हें नहीं मान सकी और आज जब लोक-सकसैस की बैठकों में चीन की जगह पर पुराने हारे चीन की सरकार का प्रतिनिधि बैठा दीखता है तो मजाक मालूम होता है.

३० ————— ३१ ————— ३२ ————— ३३ ————— ३४ ————— ३५ ————— ३६ ————— ३७ ————— ३८ ————— ३९ ————— ४० ————— ४१ ————— ४२ ————— ४३ ————— ४४ ————— ४५ ————— ४६ ————— ४७ ————— ४८ ————— ४९ ————— ५० ————— ५१ ————— ५२ ————— ५३ ————— ५४ ————— ५५ ————— ५६ ————— ५७ ————— ५८ ————— ५९ ————— ६० ————— ६१ ————— ६२ ————— ६३ ————— ६४ ————— ६५ ————— ६६ ————— ६७ ————— ६८ ————— ६९ ————— ७० ————— ७१ ————— ७२ ————— ७३ ————— ७४ ————— ७५ ————— ७६ ————— ७७ ————— ७८ ————— ७९ ————— ८० ————— ८१ ————— ८२ ————— ८३ ————— ८४ ————— ८५ ————— ८६ ————— ८७ ————— ८८ ————— ८९ ————— ९० ————— ९१ ————— ९२ ————— ९३ ————— ९४ ————— ९५ ————— ९६ ————— ९७ ————— ९८ ————— ९९ ————— १०० —————

और जिसकी पूरी दायी जबाब के फौजी बादशाह—अमरीकन जनरल मैकआर्थर—को सौंपी ली.

अस लड़ाई में कई उत्तर बढ़ाव आये. अमरीकन फौजों की शुरु में सफलता—फिर हार कर कोने में भाग आना—फिर “बड़ा दिन घर पर” मनाने वाला हमला और ३८ पड़ी रेखा के ऊपर तक बढ़ते जाना—इस मौके पर चीनी फौज का उत्तर कोरिया वालों का साथ देना और उनके आने से अमरीका की तैज के लिये जान बचाकर भागना ही एक सूत खिन्दा रहने की बची, और यह पीछे को हटना, अभी चल रहा है. चीन की फौजों ने ३८ पड़ी रेखा पार कर ली है.

कोरिया का मामला छिड़ जाने के बाद हमारे प्रधान मन्त्री ने स्टालिन और एचेसन को पत्र लिखे कि इस चीज को जयादा न बढ़ाया जाय और दुनिया में शान्ति क्रायम रखने की कोशिश की जाय. लेकिन मामले वैसा का वैसा ही रहा. इसके बाद हिन्दुस्तान ने अस मामले में दो बातें कहीं—

(१) नये चीन को यू. एन. ओ. में शामिल किया जाय.

(२) यू. एन. ओ. की फौजों ३८ पड़ी रेखा के उत्तर में न जाएँ.

अमरीका ने खालफर दोनों ही बातों को नामंजूर कर दिया जिस की बजह से यू. एन. ओ. भी उन्हें नहीं मान सकी और आज जब लोक-सकसैस की बैठकों में चीन की जगह पर पुराने हारे चीन की सरकार का प्रतिनिधि बैठा दीखता है तो मजाक मालूम होता है.

३० ————— ३१ ————— ३२ ————— ३३ ————— ३४ ————— ३५ ————— ३६ ————— ३७ ————— ३८ ————— ३९ ————— ४० ————— ४१ ————— ४२ ————— ४३ ————— ४४ ————— ४५ ————— ४६ ————— ४७ ————— ४८ ————— ४९ ————— ५० ————— ५१ ————— ५२ ————— ५३ ————— ५४ ————— ५५ ————— ५६ ————— ५७ ————— ५८ ————— ५९ ————— ६० ————— ६१ ————— ६२ ————— ६३ ————— ६४ ————— ६५ ————— ६६ ————— ६७ ————— ६८ ————— ६९ ————— ७० ————— ७१ ————— ७२ ————— ७३ ————— ७४ ————— ७५ ————— ७६ ————— ७७ ————— ७८ ————— ७९ ————— ८० ————— ८१ ————— ८२ ————— ८३ ————— ८४ ————— ८५ ————— ८६ ————— ८७ ————— ८८ ————— ८९ ————— ९० ————— ९१ ————— ९२ ————— ९३ ————— ९४ ————— ९५ ————— ९६ ————— ९७ ————— ९८ ————— ९९ ————— १०० —————



दीका की गई तो अमरीका के अखबार आग बबूला हो गए और भारत वालों को भली बुरी सुनाने लगे।

एक दूसरी बड़ी कानफरेन्स दिल्ली में हुई--करमी. पत्रकार कानफरेन्स (Working Journalists Conference) जिसकी सशरत मराहूर, अखबार 'नेशनल हेरल्ड' के सम्पादक श्री चलापति राव ने की. अपने डंग की यह पहली सभा थी जिसमें सही तरीके पर अखबारी काम करने वालों ने अपनी माँग मुक्त के सामने पेश की और अपनी दिक्कतें भी बताईं.

### कोरिया

कोरिया एक छोटा सा टापू चीन के उत्तर पूरब में है जो मंचूरिया से सटा हुआ है. उसके दो हिस्से हैं--उत्तर, दक्खिन और बीच में ३८ पड़ी रेखा है. उत्तर में एक हुकुमत थी जिसकी हमदर्दी रूस से है, दक्खिन में दूसरी हुकुमत थी जिसकी हमदर्दी अमरीका से है--अमरीका की फौजें भी वहां थीं. कोरिया पर इस साल इतने बम गिरे कि हजारों लाखों जानें बली गईं, शहर के शहर नेस्त व नाबूह हो गए और एक से एक ज्यादा होवानी ज्यादतियों की गई हैं. यू. एन. को. ने यह फैसला किया कि उत्तर वालों ने दक्खिन पर हमला किया और वह इसलिये दोशी ठहराए गए. इसलिये उनका मुकाबला करने के लिये यू. एन. को. की तरफ से एक फौज भेजी गई जिसका बहुत बड़ा हिस्सा अमरीकन विपणियों का था

अस के दौरान मेहन जो अमरीके की नित्यी प्र हलदस्तान वालस्तान मी नुवब से तहका मी क्थी तो अमरीके के अखबार आग बबूले हो गئے اور بهارت वालों کو بهلی بروی صلانے لگے .

ایک دوسری بڑی کانفرنس دلی میں ہوئی--کرمی پتزر کانفرنس (Working Journalists Conference) جس کی صدارت مشہور اخبار 'نیشنل ہیرالڈ' کے سیمپادک شری چلاپتی راؤ نے کی . اپنے قہلک کی یہ پہلی سبھا تھی جس میں مستمع طریقے پر اخباری کام کرنے والوں نے اپنی ملک ملک کے سامنے بھس کی اور اپنی دلتیں بھی بتائیں .

### کوریا

کوریا ایک چھوٹا سا ڈاپو چین کے اتر پورب میں ہے جو منچوریا سے سٹا ہوا ہے . اس کے دو حصے ہیں--اُتر، دکن اور بھج میں ۳۸ پڑی رکھا ہے . اتر میں ایک حکومت تھی جسکی ہمداری روس سے ہے، دکن میں دوسری حکومت تھی جسکی ہمداری امریکہ سے ہے--امریکہ کی فوج بھی وہاں تھی . کوریا پر اس سال اتنے بم گرے کہ ہزاروں لاکھوں جانیں جاتی گئیں، شہر کے شہر نیست و نابود ہو گئے اور ایک سے ایک زیادہ جہازانی زیادتیاں کی گئی ہیں . یو. این. او. نے یہ فیصلہ کیا کہ اتر والوں نے دکن پر حملہ کیا اور وہ اسی لئے فوجی تہزائی گئے . اس لئے اُن کا مقابہ کرنے کے لئے یو. این. او. کی طرف سے ایک فوج بھی گئی جسکا بہت بڑا حصہ امریکن سپاہیوں کا تھا



उनका संगठन अच्छा बताया जाता है जिसे, सरकार का कहना है, उसने दबा दिया है।

सोशलिस्ट पार्टी का राजा कॉंग्रेस के बाद दूसरे नम्बर का माना जाता है, उसका संगठन हर सूबे में मौजूद है और उसके बोटी के नेता देस के पुराने तपे हुए सिपाही हैं, मगर श्री साने गुरुजी और श्री युसुफ मेहर अली के उठ जाने से उसे खबरदस्त चोट पहुंची है।

सोशलिस्टों का कहना है कि कॉंग्रेस गद्दी छोड़ दे, हम देस की बागडोर संभाल लेंगे, जगह जगह चुनाव में सोशलिस्टों ने हिस्सा लिया है, बम्बई और ट्रावनकोर में इनकी तगड़ी जीत हुई है।

हिन्दू महासभा अनोखा राग अलापने लगी है, अभी पूना में उसका सालाना इजलास हुआ है जिसमें उसने पुराने अखंड भारत की मांग की है।

सिक्ख समाज में मास्टर तारा सिंह की गिरफ्तारी से काफी हलबल था, लेकिन उनमें आपस में मतभेद अब भी बना है।

अजादी के बाद से हिन्दुस्तान के अन्दर मुसलिम लीग तो बिल्कुल ठंडी पड़ गई है, अब वह अपनी ज़रूरत फालतू समझ कर दूसरी पार्टियों में मिलने की कोशिश कर रही है।

### बुद्ध कानक्रेन्से

बाजकल कानक्रेन्से का तो जोर है, अगर देस की सब समाधियों बगैरा की सूची बनाने बैठें तो हैरान होकर काम छोड़ देना पड़ेगा, अब वह अपनी ज़रूरत फालतू समझ कर दूसरी पार्टियों में मिलने की कोशिश कर रही है।

सन् १९५०—एप्रिल नज़र फरवरी सन् ५१  
कन का सलकमन अचभा बदाया जाना है जसु 'सुकर' का क्हा है, 'अस' ने दबा दिया है।

सुशलसत पारुती का दरजे कलकुरिस के बाद दुसरे नम्बर का माना जाना है, 'अस' का सलकमन ह, सुवो मेहन मोजुद है और 'अस' के चोती के नेमा देिस के पुराने तेहे हूने सहाय हू, मगर शुरी साले गुरो जी और शुरी यूसुफ मेहर अली के 'अ' जाने से 'अ' ज़रूरत चोत पहुँची है।

सुशलसतों का क्हा है के कलकुरिस क्दी जेहो 'अ' हम देिस की बाग'दोर सलबहाल लीकेंगे, जेके जेके चला 'अ' सुशलसतों ने हसे लीा है, बसुती और तुराकुर मेहन 'अ' की त्कुरी जेत हूनी है, हलदो मेहा सलबहा अलुका 'अ' लापे लकी है, 'अभी' योना मेहन 'अस' का सालाने अजलास हवा है जस मेहन 'अस' ने पुराने अकलत बेहारी की मांग की है।

सुकर सलज 'अ' मेहन मास्टर तारा सलकमन की कुरफ्तारी से लाफी हलजल मेह, 'लेकिन' 'अ' मेहन 'अस' मेहन मत बेहद अब भी बना है।

आरुदी के बाद से हलदो सलकमन के अन्दर मास्टर अलक तुरे बालकल त्हेलुकी पुरी क्थी है, 'अ' 'अ' अलुकी ज़रूरत फालतू समझकर दुसरी पारुती मेहन मल्ले की कुरकश कर रही है।

### कलकुरी कलकुरी

अज कल कलकुरी का तुरे जुर है, 'अ' देिस की सब सलबातु शिरो की सुची बनाने बेहद मेहन तुरे जेहो 'अ' कर काम जेहो देिला बुरीका, लेकिन अलक आदह कलकुरी की चोचा कर देिला ज़रूरी है, अलकुरी के मेहल्ले



भाबर है. पाकिस्तान के मामले में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस को आगाह किया कि अगर आपको मेरा रास्ता मंजूर नहीं है तो आप खुशी से किसी दूसरे से अपनी तरह राय ले सकते हैं. कांग्रेस की नई बकिंग कमेटी का एलान नासिक के जलखे के २०-२५ रोज बाद हुआ. खुशी है कि इसमें पंडित जवाहर लाल नेहरू शामिल हैं. आचार्य कृपालानी ने 'डिमाक्रेटिक फ्रन्ट' नाम से एक अलग दल कांग्रेस के अन्दर बनाया है, बंगाल में डाक्टर प्रफुल्ल चन्द्र घोषा वगैरह एक अलग दल बनाकर कांग्रेस से अलग हो गए हैं. मद्रास के अन्दर भी टी. प्रकाशम मिनिस्ट्री के खिलाफ इलजाम लगा रहे हैं. जगह जगह कांग्रेस में फूट है और सत्ता पाने की चाह है.

### दूसरी पार्टियाँ

हमारे देस में आज एक आम रिवाज हो गया है कि रेल दुर्घटना हो या कहीं कुछ और उपद्रव हो तो वह कम्युनिस्टों के मत्थे मढ़ दिया जाता है. लेकिन यह जानते हुए भी हम यह नहीं कहते कि कम्युनिस्टों को जो प्रोत्साहन मिल रहा है उसका कारन देस की बड़बन्तजामी और उसकी गिरती हुई हालत है.

खबर है कि हैदराबाद रियासत के उत्तर पूरबी हिस्से तिलगाना में कम्युनिस्टों का काफी जोर है और सरकार भी उनकी बजाह से अधिक परेशान रहती है. इधर उत्तर प्रदेश के पूरबी हिस्से में भी

दलिया किया के देस ५ अक्टूबर १९५५ में कांग्रेस ने कांग्रेस मंजूर है. पाकिस्तान के मामले में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस को आगाह किया कि अगर आपको मेरा रास्ता मंजूर नहीं है तो आप खुशी से किसी दूसरे से अपनी तरह राय ले सकते हैं. कांग्रेस की नई बकिंग कमेटी का एलान नासिक के जलखे के २०-२५ रोज बाद हुआ. खुशी है कि इसमें पंडित जवाहर लाल नेहरू शामिल हैं. आचार्य कृपालानी ने 'डिमाक्रेटिक फ्रन्ट' नाम से एक अलग दल कांग्रेस के अन्दर बनाया है, बंगाल में डाक्टर प्रफुल्ल चन्द्र घोषा वगैरह एक अलग दल बनाकर कांग्रेस से अलग हो गए हैं. मद्रास के अन्दर भी टी. प्रकाशम मिनिस्ट्री के खिलाफ इलजाम लगा रहे हैं. जगह जगह कांग्रेस में फूट है और सत्ता पाने की चाह है.

### दूसरी पार्टियाँ

हमारे देस में आज एक आम रिवाज हो गया है कि रेल दुर्घटना हो या कहीं कुछ और उपद्रव हो तो वह कम्युनिस्टों के मत्थे मढ़ दिया जाता है. लेकिन यह जानते हुए भी हम यह नहीं कहते कि कम्युनिस्टों को जो प्रोत्साहन मिल रहा है उस का कारन देस की बड़बन्तजामी और उसकी गिरती हालत है.

खबर है कि हैदराबाद रियासत के उत्तर पूरबी हिस्से तिलगाना में कम्युनिस्टों का काफी जोर है और सरकार भी उनकी बजाह से अधिक परेशान रहती है. इधर उत्तर प्रदेश के पूरबी हिस्से में भी



शूकम्य आया कि उसकी सूरत ही नहीं पहचान में आती. हजारों की तादाद में जाते गये हैं, जानवर तो लाखों खतम हो गए होंगे और सम्पत्ति का नुकसान हुआ सो अलग.

### नासिक कांग्रेस

जनता की बेचैनी के कारन उसकी बुद्धि पर असर पड़ता है. और उसका रंग उसकी सामाजिक और राजनीतिक हालत पर बढ़ता है. वैसे की कमी हो या ख़ूबक की—आज भारत में चरित्र का स्तर ही गिर गया मालूम होता है. इसका नमूना हमारी स्वराज संस्थाएं हैं. न्यूनिस्पल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, यूनिवर्सिटी कौंसिल, कांग्रेस पार्टी—कोई भी क्यों न हों सब में विचित्र ढ़ल बन्दी चल रही है जिसका आधार जात पात, ऊँच नीच, स्वार्थ और परदमन है, सिद्धान्त नहीं. इन सबकी प्रतीक मानो हमारी कांग्रेस नाम की संस्था बन गई है जो आज सब तरह के रोगों की शिकार है. दूसरे ग्रान्तों में मिनिस्ट्रों का बनना हटना या मिनिस्ट्रियों का बदलना इसका सबूत है.

१९४८ के दिसम्बर में जयपुर कांग्रेस के बाद से इस साल सितम्बर में कांग्रेस का ५६ वां अधिवेशन नासिक में हुआ. कांग्रेस प्रधान के चुनाव के लिये तीन उम्मीदवार थे—आचार्य कृपालानी, श्री शंकर राव देव और राज रिशी पुरशांसम दास टंडन. बहुत ख़ोरदार मुकाबला रहा जिसमें श्री टंडन जी की जीत हुई. इस चुनाव के बाद से जयपुर तरह की शिकायतें हैं जिनकी सच्चाई का फ़ैसला तो

लिया हलद  
सन् १९००—एक نظر  
फरवरी सन् ०१  
बहुकम्प आया कि उसकी सूरत ही नहीं पहचान में आती. हजारों की तादाद में जाते गये हैं, जानवर तो लाखों खतम हो गये होंगे और सम्पत्ति का नुकसान हुआ सो अलग.

### नासिक कांग्रेस

जलता की ब्रेचिडली के बरान उसकी बढ्ढी प्रान्तर होता है. और अस का रंग उसकी सामाजिक और राज नीतिक हालत पर चोहता है. वैसे की कमी हो या ख़ूबक की—आज भारत में चरित्र का स्तर ही गिर गया मालूम होता है. इस का नमूना हमारी स्वराज संस्थान्तियाँ हैं. मेमोन्सिल बोर्ड, टैक्स्टरकट बोर्ड, यूनियोन्सुक्ती कौन्सल, कांग्रेस पार्टी—कौन्ती प्रान्तरों में सब में चक्कर ढ़ल बढ्ढी चल रही है जिस का अलहार जात पात, ऊँच निच, स्वार्थ और परदमन है, सद्धान्त नहीं. इन सब की प्रतीक मानो हमारी कांग्रेस नाम की संस्थान्तियाँ हैं जो आज सब तरह के रोगों की शिकार है. दूसरे प्रान्तों में मेमोन्सुक्ती का बनना हटना या मेमोन्सुक्ती का बदलना इस का सबूत है.

१९३८ के दिसम्बर में जे पुर कांग्रेस के बाद से इस साल सितम्बर में कांग्रेस का ५५ वां अधिवेशन नासिक में हुआ. कांग्रेस प्रधान के चुनाव के लिये तीन उम्मीदवार थे—आचार्य कृपालानी, श्री शंकर राव देव और राज रिशी पुरशांसम दास टंडन. बहुत ख़ोरदार मुकाबला रहा जिसमें श्री टंडन जी की जीत हुई. इस चुनाव के बाद से जयपुर तरह की शिकायतें हैं जिनकी सच्चाई का फ़ैसला तो



دہلی ہفت روزہ

انگریزی کی مشہور مثل ہے کہ مصدب اکیلے نہیں آتی۔ تو جہاں سڑک کی پریشاں دیوں سے چلتا ہے حال رہی ہے وہاں دوسری درگھٹناؤں نے بھی چلتا کو کافی حیران کیا۔ اول تو ہم ریل کی درگھٹناؤں کو لیں۔ سیکڑوں آدمی اس سال مرے ہیں۔ بڑی بڑی خاص خاص ریلوں پر درگھٹناؤں ہوتی ہیں لوگوں قاعدے سے جانچ ایک کی بھی نہیں کوئی کئی مغل سرائے کے پاس ایک ایک اپنی بڑی درگھٹنا ہوتی تھی جس کے سامنے بہار کی مشہور درگھٹنا بھکی پڑ جاتی ہے۔ اس معاملے میں چلے پر نہک چھوٹے کا کام ہمارے ریلوے منسٹر صاحب نے یہ کہہ کر کیا کہ حادثستان میں درگھٹناؤں پر تین و امریکہ کے مقابلے میں کم ہی ہوتی ہیں۔

ہوائی جہازوں کی بھی کئی دیکھتا ہوں ہوں جن میں کافی مہینوں ہوں اور دو تین تو ہم نے ایسے کبڑے کہ رہا کر اُنکی زبان اُچھتی ہے۔ قاتل شیو ہنکران پلے۔ مشہور گدات چائے والے اور شہری ہمارا ناتھ کچھرو؛ ایک پتھر کار اور راج کاجی بیروک ۔

قدوت نے بھی اپنی طرف سے کوئی کسر اُٹھا نہیں رکھی۔  
ہاڑھوں کی ایک طرف زیادتی، دوسری طرف دانی کا نہ ہر سدا  
عام چلن رہا۔ اُسکے علاوہ ۱۵ لکھت کو آسام میں تو ایسے زور کا



नया हिन्द

सन् १९५०—एक नजर

फरवरी सन् १९१

बर्दाश्त करना पड़ा. सरकार के सिलसिले में श्री शिव्वन लाल सबसेना का उपवास क्राबिल विक्र है.

सौ बातों की एक बात यह है कि आर्थिक हालत सन १९५० में बहुत ज्यादा बिगड़ी हुई रही. इंग्लैन्ड में जो हमारी धरोहर लाड़ाई के खाने में जमा हो गई थी उसको भी हमने काफ़ी खर्च कर डाला.

बुनयाबी हकों की छीछालेदर

शरनार्थी लोगों में असन्तोश हृद से ज्यादा है. मगर इस मामले में इस सच से इन्कार नहीं किया जायगा कि शरनार्थी सरकार का खरूरत से ज्यादा भरोसा करते हैं. उनका एक बड़ा हिस्सा खुद मेहनत करने से इनकार करता है लेकिन मांग पूरी करता है. मगर दूसरी तरफ़ सरकार खुद अपने वायदे नहीं निभा सकी जिसके कारन पिछले शरनार्थी मन्त्रो ने इस्तेफा दे डाला और उनकी जगह एक दूसरे सुकरर किये गए.

सरकार की परेशानी का सच्चा रूप तो ऐसी घटनाओं से मिलता है जो ब्रिटिश खमाने में होती थीं तो हम अपना गला फाड़ फाड़ कर हर तरह से बाँवला मचा डाला करते थे. जैसे सेलम की जेल में कैदियों पर गोली चलाना, ग्वालियर में विद्यार्थियों के जलूस पर पुलिस का फ़ैर करना और लाठी चलाना, सिक्ख नेता मास्टर बारासिंह की गिरफ्तारी, बम्बई में कपड़े मिलों के मजदूरों की हड़ताल में सरकार की चुप्पी. इनमें से बहुत से मामलों में

नया हल

सन् १९००—एक नजर

फरवरी सन् ०१

बर्दाश्त करना पड़ा. शक्र के मसले में शरी शब्दन लाल सेकसहेल का अपील वाला डकर है.

सो बातों की एक बात यह है कि आर्थिक हालत सन १९०० में बेहतरीन बकरी होती रही. अन्कालिड में जो हमारी धरोहर लाठी के खाने में जमा हो गई थी उसको भी हमने काफ़ी खर्च कर डाला.

बुनयाबी हकों की छीछालेदर

शरनार्थी लोगों में असन्तोश हृद से ज्यादा है. मगर इस मामले में इस सच से इन्कार नहीं किया जायगा कि शरनार्थी सरकार का खरूरत से ज्यादा भरोसा करते हैं. उनका एक बड़ा हिस्सा खुद मेहनत करने से इनकार करता है लेकिन मांग पूरी करता है. मगर दूसरी तरफ़ दूसरी तरफ़ सरकार खुद अपने वायदे नहीं निभा सकी जिसके कारन पिछले शरनार्थी मन्त्रो ने इस्तेफा दे डाला और उनकी जगह एक दूसरे सुकरर किये गए.

सरकार की परेशानी का सच्चा रूप तो ऐसी घटनाओं से मिलता है जो ब्रिटिश खमाने में होती हैं तो हम अपना गला फाड़ फाड़ कर हर तरह से बाँवला मचा डाला करते थे. जैसे सेलम की जेल में कैदियों पर गोली चलाना, ग्वालियर में विद्यार्थियों के जलूस पर पुलिस का फ़ैर करना और लाठी चलाना, सिक्ख नेता मास्टर बारासिंह की गिरफ्तारी, बम्बई में कपड़े मिलों के मजदूरों की हड़ताल में सरकार की चुप्पी. इनमें से बहुत से मामलों में







साल के अन्दर निकालना चाहती है, बाकी बाहर से लेने की सोच रही है। मगर कौन साई का लाल ऐसा है जो हिन्दुस्तान की खेती, बिजली और सड़कों बौरा की तरक्की के लिये अपनी जेब खाली करेगा। सरकार ने सारी उम्मीदें अमरीका से लगा रखी हैं। सब तो यह है कि यह योजना असल में आस्ट्रेलिया और इंग्लैन्ड ने हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, लंका, मलाया, बर्मियों के हित की खातिर बनाई है ताकि एक पंथ दो काज हों—खुद अपने माल के एवज में अमरीका का डालर मिले और हिन्दुस्तान बौरा पर एहसान रहे कि वहाँ की जनता को फायदा पहुँचाया। अगर ऐसी योजनाओं से भारत का कुछ लाभ हो सकता होता तो फिर अमरीका तो प्रशान्त महा-सागर का पानी सुखाकर टोकियों (जनरल मैकडार्थर का सदर मुकाम) तक सड़क ही बना लेता।

### खुराक का सवाल

जब पैसा पास न हो, या अगर हो और चीजें महँगी हों तो जनता को चैन कैसे मिल सकता है। हिन्दुस्तान के बाजारों में आज गेहूँ का ढाई मन का बौरा सौ रूपए में बिक रहा है। इसी आकत के कारन बिहार और मद्रास में तो लोगों की हालत लबे दम हो गई और अकाल पड़ जाने की खबरें भी आने लगीं। और तो और। मध्य प्रदेश जैसे गल्ले के घनी प्रदेश में भी अनाज की कमी पड़ गई है।

सरकार बहुत जोरों से आन्दोलन चलाती है कि “छूबू अनाज पैदा करो” मगर अनाज बराबर बाहर से मंगाना पड़ रहा है। अगले

साल के अन्दर निकालना चाहती है, बाقی बाहर से लेने की सोच रही है। मगर कौन माली का लाल ایسا ہے جو هندوستان کی کھیتی بجلی اور سوکوں وشیرہ کی ترقی کے لئے اپنی جیب خالی کریگا۔ سکار نے ساری اُمیدیں امریکہ سے لگا رکھی تھیں۔ سچ تو یہ ہے کہ یہ بیوجلا اصل میں آسٹریلیا اور انماہلڈ نے هندستان، پاکستان، لٹک، ملایا، ہونہو کے ہمت کی خاطر بنائی ہے تاکہ ایک ملکیہ دو کاج ہوں — خود اپنے مال کے عوض میں امریکہ کا قائلہ ملے اور هندستان وغیرہ پر احسان دے کہ وہاں کی چلتا کو فائدہ پہونچایا۔ اگر ایسی بیوجلاؤں سے بہارت کا کچھ لایہ ہو سکتا ہوتا تو پھر امریکہ تو پرشامت مہا ساگر کا پانی سکھا کر توکھو (جلول موک آرتھو کا صدر مقام) تک سوک ہی بلنا ایستا۔

### خوراک کا سوال

جب پیسہ پاس نہ ہو، یا اگر ہو اور چیزیں مہنگی ہوں تو چلتا کو چپن کیسے مل سکتا ہے۔ هندستان کے بازاروں میں آج کپہوں کا قہائی من کا بورا سو روپے میں تک رہا ہے۔ اسی آفت کے کارن بہار اور مدراس میں تو لوگوں کی حالت لب دم ہوگئی اور ’ک‘ بوجلانے کی خبریں بھی آنے لگیں۔ اور تو اور، مدیہ پردیس جیسے غلے کے دھلی پردیس میں بھی اناج کی کمی پڑ گئی ہے۔

سکار بہت زوروں سے آندولن چلاتی ہے کہ “خرب اناج پیدا کرو” مگر اناج بورا باہر سے ملانا پڑ رہا ہے۔ اگلے



हाइन्दुस्तान पर। नगाह डाल ता इस बात स काइ भा इन्कार नह। करेगा कि यह साल बहुत मुसीबत का गुजरा। अनाज की कमी दिन दिन ज्यादा डरावना रूप लेती जाती है, दूसरी तरफ चीखों की क्रीमों चढ़ती जा रही हैं। सन् १८३८ का एक रुपया आज के साढ़े चार रुपए के बराबर खरीद कर सकता था। भाव को बढ़ने से रोकने की सरकार ने काफ़ी कोशिश की, चोर बाजार खतम करने की भी कोशिश की, लेकिन सरकार की सारी कोशिशों का असर मुल्क पर कुछ नहीं होता।

माली हालत को सुधारने के लिये नेशनल एजनिंग कमीशन इस साल बनाया गया जिसके बनने के बारे में अलग राय रखने के कारन उस वक़्त जो नई दिल्ली में ख़ाना मन्त्री थे उन्होंने इस्तेफा दे दिया। सरकारी मुद्दकों के खर्चे घटने की जगह बढ़ रहे हैं, लोगों और डेलीगेशनों के बिदेस जाने का, सभाओं और जलसों का बाजार गरम है।

सूबों की सरकारें भी आर्थिक सवाल को मनमाने तरीके से हल करने की कोशिश कर रही हैं। स्कीमों के ढेर लग गए हैं, लाखों रुपया ऐसी स्कीमों में बहा दिया गया जो कुछ असें के बाद खतम कर दी गईं और हज़ारों रुपया तो इन स्कीमों की स्कीमिंग में ही डूब गया।

हाल ही में एक नई योजना—कोलम्बो योजना—पालियामेन्ट के अन्दर नए अर्थ मन्त्री ने पेश की है जिसमें १८४० करोड़ रुपए का खर्च है। इसमें से १००० करोड़ रुपए सरकार देस के अंदर से छे

हाइस्तान पर नज़ा़ डालें तो अस बात से कौन भी अन्कार नहीं करेगा कि ये साल बहुत मसबूत का लगा। आज की कमी दिन ज्यादा डरावना रूप लेती जाती है। दूसरी तरफ चीखों की क्रीमों चढ़ती जा रही हैं। सन् १९३९ का एक रुपया आज के साढ़े चार रुपए के बराबर खरीद कर सकता था। भाव को बढ़ने से रोकने की सरकार ने काफ़ी कोशिश की, चोर बाजार खतम करने की भी कोशिश की, लेकिन सरकार की सारी कोशिशों का अंतरा मुल्क पर कुछ नहीं होता।

माली हात को समारने के लिये नेशनल एजनिंग कमीशन अस साल बनाया गया जिस के बनने के बारे में अलग राय रखने के कारन अस वक़्त जो नई दली में ख़ाना मन्त्री थे उन्होंने इस्तेफा दे दिया। सरकारी मुद्दकों के खर्चे बढ़ने की जगह बढ़ रहे हैं, लोगों और डेलीगेशनों के बिदेस जाने का, सभाओं और जलसों का बाजार गरम है।

सूबों की सरकारें भी आर्थिक सवाल को मनमाने तरीके से हल करने की कोशिश कर रही हैं। स्कीमों के ढेर लग गए हैं, लाखों रुपया ऐसी स्कीमों में बहा दिया गया जो कुछ असें के बाद खतम कर दी गईं और हज़ारों रुपया तो इन स्कीमों की स्कीमिंग में ही डूब गया।

हाल ही में एक नई योजना—कोलम्बो योजना—पालियामेन्ट के अन्दर नए अर्थ मन्त्री ने पेश की है जिसमें १८४० करोड़ रुपए का खर्च है। इसमें से १००० करोड़ रुपए सरकार देस के अंदर से छे



यू. एन. ओ. की तरफ से आस्ट्रेलिया के एक बुजुर्ग जज सर ओबेन डिकसन आए और दो ठाई महीने तक दिल्ली, श्रीनगर और कराची की दौड़ भाग की मगर नतीजा कुछ नहीं निकला. लेकिन उन्होंने जो रिपोर्ट यू. एन. ओ. को दी है उससे यह साफ हो जाता है कि इस मामले में पहला क्रमूर पाकिस्तान का है. कश्मीर का सवाल अब यों ही पड़ा है. यू. एन. ओ. में इस पर बहस होने वाली थी पर न हो सकी. शायद अगले साल हो.

कश्मीर का मसला तै न हो सकने की वजह से दोनों मुल्कों के ज्योपारी सम्बन्ध भी बहुत कुछ बिगड़ गए. यहां से पाकिस्तान को कोबला नहीं दिया गया, वहां से यहां पटसन नहीं भेजी गईं. इसके अलावा उनके रुपए की क्रीमत हमारे रुपए से अलग है जिसकी वजह से बहुत ही ज्यादा दुश्वारी जनता को होती है. यह सवाल इन्टर नेशनल मानीटरी फंड की बैठक में तै होने वाला था मगर यूं ही पड़ा रह गया. इसी तरह से दूसरे सवाल—नहरों के पानी का सवाल और हिन्दुस्तान में आए हिन्दुओं की सम्पत्ति का सवाल भी लटक रहे गए.

इस सिलसिले में एक खास बात यह भी है कि जनवरी के महीने में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने नवाबजादा लियाकत अली खां को “आपस में नहीं लड़ेंगे” समझौता करने को कहा. इसकी बावत चिट्ठी पत्री साल भर चलती रही लेकिन पाकिस्तान ऐसे समझौते की कोई

नहीं. लिन. ओ. की तरफ से अस्ट्रेलिया के एक बزرग जज सर लोन टक्सन आँ और दो ठेहानी महीने तक दली, हरो, न्गर, ओर कराची की दौड़ भाग की म्गर, न्तेहजे क्चो न्हेन न्द. लोकरन ओनो ने जो रिपोर्ट यो. लिन. ओ. को दी है ओ से ये सवाफ होजाता है के ओस सवाल म्हेन येला क्स्वर पाक्स्तान का है. कश्मिर का सवाल ओ म्हेन ही पड़ा है. ओ. लिन. ओ. म्हेन ओस पर ब्कश होणे वाली तेही हो ने होस्की. शायद ओला साल हो.

कश्मिर का सल्ले एले ने हो सकले की वजे से दोनो मल्को के ज्योपारी सम्बन्ध भी ब्कश क्चो ब्गड़ ग्ये. येन से पाक्स्तान को कोल्ले न्हेन दिया ग्या, व्हा से येन प्कसन न्हेन होज्ती क्ती. ओस के एला ओ के दोने की क्मिस्त हमार (दोने से ओक है जस की वजे से ब्कश ही ज्हादा दुश्वारी जल्ता को होनी है. ये सवाल अ्न्टरनैश्नल मानीटरी फंड की ब्क्क म्मि एले होने वाला था म्गर यो ही पड़ा हो क्हा. ओसी एरु से दोसरो सवाल—न्हेन के पानी का सवाल ओर हल्दस्तान म्हेन आँ हल्दरो की सस्ती का सवाल भी लक्मे रहे क्ये.

ओस सल्ले म्हेन ओक खास बात ये भी है के जल्दो के म्हीने म्हेन पल्लत जोाहरो लाल न्हेन ने नोब रादा लाकत एली खा को “ओस मोन न्हेन लोबक्के” सज्जोते कोने को क्हा. ओसी बावत ज्चो म्हीने साल भर जल्ती रही लोकरन पाक्स्तान ओसे सज्जोते की कोनी क्दर न्हेन सज्जोता. दली सज्जोते के ओद भी नोब











ثابت ہوں۔

سن ۱۹۵۰ء پر نظر ڈالنے کے پہلے ذرا ۱۹۴۹ء کے ختم ہوتے ہوئے کیا صورت تھی یہ بھی سروسری طور سے دیکھ لیں۔ ہمارا دیس جو اگست ۱۹۴۷ء میں آزاد ہوا چکا تھا وہاں ابھی پرانے وعدے و قانون کے مطابق ہی کاربار چلتا تھا۔ ایسا وعدہاں میں کیا تھا مگر لاگو ہونا باقی تھا۔ ہندوستان کے یورپ میں انڈونیشیا نام کا دیس قہقہ لگو رہا کی حکومت سے مکت ہو چکا تھا اور انڈونیشیا پر جا نثار بن چکا تھا۔ اندر چین میں ہوجی منہ (کمونسٹ) اور باؤائی (راج شاہی) کے بیچ چھت پت جنگ چل رہی تھی اور فرانس کی سرکار کا عمل در آمد تھا۔ آگے اوپر چین کا شمال منگ کی سال کی لڑائی کے بعد اب کچھ چین پاسکا تھا اور مارتسے تنگ کی سرکار — لال چینی سرکار — یورپی طرح چین کی مانگ ہو گئی تھی۔ ہندوستان کے پچھم میں چاہیں — پاکستان اور ہندوستان کے بیچ کشمیر کے معاملے میں دل شکنی جو قیومہ سال سے چل رہی تھی جاری تھی۔ اس سوال پر یو۔ این۔ او۔ نے جو ایک کمیشن بٹھایا تھا وہ اپنی رپورٹ یو۔ این۔ او۔ کو دے ہی چکا تھا اور مہمکائی پرستار بھی سامنے آچکے تھے۔ انڈونستان اور اس پاس ایک الگ انڈان پردیس — پختونستان کی مانگ چل رہی تھی اور بادشاہ خاں پاکستانی سرکار کے نظر بلند قہدی تھے۔ عرب لیگ کی حالت ہمیشہ کے چھٹی — اوپر سے قہول اندر سے ہول — تھی اسرائیل زور مار رہا تھا کہ اس کے وجود کو مان

سن ۱۹۴۰ء پر نجر ڈالنے کے پہلے جہاں ۱۹۳۹ء کے ختم ہوتے ہوتے کیا صورت تھی یہ بھی سرسری طور سے دیکھ لیں۔ ہمارا دیس جو اگست ۱۹۴۷ء میں آزاد ہوا چکا تھا وہاں ابھی پرانے وعدے و قانون کے مطابق ہی کاربار چلتا تھا۔ ایسا وعدہاں میں کیا تھا مگر لاگو ہونا باقی تھا۔ ہندوستان کے یورپ میں انڈونیشیا نام کا دیس قہقہ لگو رہا کی حکومت سے مکت ہو چکا تھا اور انڈونیشیا پر جا نثار بن چکا تھا۔ اندر چین میں ہوجی منہ (کمونسٹ) اور باؤائی (راج شاہی) کے بیچ چھت پت جنگ چل رہی تھی اور فرانس کی سرکار کا عمل در آمد تھا۔ آگے اوپر چین کا شمال منگ کی سال کی لڑائی کے بعد اب کچھ چین پاسکا تھا اور مارتسے تنگ کی سرکار — لال چینی سرکار — یورپی طرح چین کی مانگ ہو گئی تھی۔ ہندوستان کے پچھم میں چاہیں — پاکستان اور ہندوستان کے بیچ کشمیر کے معاملے میں دل شکنی جو قیومہ سال سے چل رہی تھی جاری تھی۔ اس سوال پر یو۔ این۔ او۔ نے جو ایک کمیشن بٹھایا تھا وہ اپنی رپورٹ یو۔ این۔ او۔ کو دے ہی چکا تھا اور مہمکائی پرستار بھی سامنے آچکے تھے۔ انڈونستان اور اس پاس ایک الگ انڈان پردیس — پختونستان کی مانگ چل رہی تھی اور بادشاہ خاں پاکستانی سرکار کے نظر بلند قہدی تھے۔ عرب لیگ کی حالت ہمیشہ کے چھٹی — اوپر سے قہول اندر سے ہول — تھی اسرائیل زور مار رہا تھا کہ اس کے وجود کو مان







कार सारी दुनिया को सामने रख कर सोचना शुरू कर दें. उनकी यह किम्वदंता बेकार है कि वह बहुत थोड़े हैं. हां, वह इस मंडप में बहुत थोड़े हैं पर न दिल्ली में बहुत थोड़े हैं और फिर हिन्दुस्तान में तो थोड़े हैं ही नहीं. वन्हें यह समझ ही लेना चाहिये कि दुनिया में उन जैसों की गिनती इतनी ज्यादा है कि साल भर की मेहनत में सच्चे जो से लगातार काम करने पर दुनिया के ऐसे साहित्यकारों की गिनती करना मुश्किल हो जायगा जो सच्चे जो से यह चाहते हैं कि दुनिया एक है, दुनिया प्रेम से रहना चाहती है और इस दुनिया पर अहिंसा के इथियार से मानव हिंसा को जल्दी ही बहुत कम किया जा सकता है. तब साहित्यकार बहुत जल्दी इस दुनिया में इतनी चमक पैदा कर देंगे कि हिंसा का अंधरा दूर होगा और दुनिया को आगे राह साफ़ दीखने लगेगी.

साहित्यकार भलाईकार हैं और वन्हें भलाई के लिये उठना ही चाहिये.

२४. १२. '५०.

—भगवानदीन

(खुलासा तत्कालीन सभापति, साहित्यकार परिशद, दिल्ली.)

दे पाये वह वह ये नहीं — सच्चे —  
को सामने रक्के कर सोचना शुरू कर दें. उनकी यह किम्वदंता बेकार है कि वह बहुत थोड़े हैं. हां, वह इस मंडप में बहुत थोड़े हैं पर न दिल्ली में बहुत थोड़े हैं और फिर हिन्दुस्तान में तो थोड़े हैं ही नहीं. वन्हें यह समझ ही लेना चाहिये कि दुनिया में उन जैसों की गिनती इतनी ज्यादा है कि साल भर की मेहनत में सच्चे जो से लगातार काम करने पर दुनिया के ऐसे साहित्यकारों की गिनती करना मुश्किल हो जायगा जो सच्चे जो से यह चाहते हैं कि दुनिया एक है, दुनिया प्रेम से रहना चाहती है और इस दुनिया पर अहिंसा के इथियार से मानव हिंसा को जल्दी ही बहुत कम किया जा सकता है. तब साहित्यकार बहुत जल्दी इस दुनिया में इतनी चमक पैदा कर देंगे कि हिंसा का अंधरा दूर होगा और दुनिया को आगे राह साफ़ दीखने लगेगी.

साहित्यकार भलाईकार हैं और वन्हें भलाई के लिये उठना ही

चाहिये.

—भगवानदीन

२४-१२-५०

(खुलासा तत्कालीन सभापति, साहित्यकार परिशद, दिल्ली.)



सुबह का भूला शाम तक घेर लौट आए तो भूला नहीं माना जाता। अब तक का भूला हुआ मानव समाज आज अगर फिर अहिंसा की राह पर आ जाए तो भूला हुआ नहीं माना जायगा। और इसे भी मानव समाज की खुश किस्मती ही मानना चाहिये कि हिन्दु-स्तान ऐसे समय में राष्ट्रीय पैमाने पर अहिंसा के प्रयोग से आजाद हुआ, जबकि इस्लाम वन चुकी है। आकाश और समय आज जितने पहले एक बड़ा क्रिया वन चुकी है। मानव समाज की यह बढ़ती-बढ़ती ही सम-कामी नहीं सिद्ध है। पर मानव समाज की यह बढ़ती-बढ़ती भी माना चाहिये कि आज जितनी स्वार्थ-चेतना और राष्ट्र-चेतना भी अबसे पहले मानव में कभी नहीं जागी। वंश-चेतना पहले वंशों को लड़ाती थी। राष्ट्र-चेतना ने वंशों की लड़ाई कम की तो राष्ट्रों की लड़ाई छोड़ दी। और यों फिर बेहद वंशों को उजाड़ना शुरू कर दिया। राष्ट्र-चेतना से मानव संहार बढ़ा, घटा नहीं, यानी आज राष्ट्रीयता के मद में मस्त कुछ राष्ट्र-दूरे राष्ट्र को खतम करने में जरा भी आगा पीछा नहीं देखते। स्वार्थी साहित्यकार इस तरह से ऐसी आँख फेरता है कि उधर का नुकसान उसे कभी दिखाई नहीं देता। मानव-चेतना से ही मानव संहार कम होगा।

साहित्यकारों की यह परिशद छोटी है अगर साहित्यकारों के दिल छोटे हैं। इसकी कारवाई कपूर बन कर उड़ सकती है अगर इस परिशद के सदस्यों के दिल में आत्मविश्वास न हो। यही परिशद बहुत बड़ी है अगर इसमें जमा हुए साहित्यकारों के दिल बड़े हैं और

सबिह का बेहोला शाम तक लौट आते तो बेहोला नहीं माना जाता। अब तक का बेहोला मानो समाज आज अगर बेहोला अहिंसा की राह पर आ जाए तो बेहोला नहीं माना जायगा। और इसे भी मानो समाज की खुश किस्मती ही मानना चाहिये कि हिन्दु-स्तान ऐसे समय में राष्ट्रीय पैमाने पर अहिंसा के प्रयोग से आजाद हुआ, जबकि इस्लाम वन चुकी है। आकाश और समय आज जितने पहले मानव में कभी नहीं जागी। वंश-चेतना पहले वंशों को लड़ाती थी। राष्ट्र-चेतना ने वंशों की लड़ाई कम की तो राष्ट्रों की लड़ाई छोड़ दी। और यों फिर बेहद वंशों को उजाड़ना शुरू कर दिया। राष्ट्र-चेतना से मानो संहार बढ़ा, घटा नहीं, यानी आज राष्ट्रीयता के मद में मस्त कुछ राष्ट्र-दूरे राष्ट्र को खतम करने में जरा भी आगा पीछा नहीं देखते। स्वार्थी साहित्यकार इस तरह से ऐसी आँख फेरता है कि उधर का नुकसान उसे कभी दिखाई नहीं देता। मानो-चेतना से ही मानो संहार कम होगा।

साहित्यकारों की यह परिशद छोटी है अगर साहित्यकारों के दिल छोटे हैं। इसकी कारवाई कपूर बन कर उड़ सकती है अगर इस परिशद के सदस्यों के दिल में आत्मविश्वास न हो। यही परिशद बहुत बड़ी है अगर इसमें जमा हुए साहित्यकारों के दिल बड़े हैं और



आबाज ने सदा-शान्ति की पक्की नीब जरूर डाल दी होती, और अगले दूसरे आन्दोलन से उस पर इमारत बनती शुरू हो जाती.

आज लड़ाई की जड़ में, हथियारों के कारखाने इतने नहीं काम कर रहे जितनी वह भड़काने वाली कविताएं जो कमजोर और कायर सिपाही को तोप के मुँह में सिर डालने को तैयार कर देती हैं. जितना बीर रस तीर, तलवार, तमंचे पर छंडेला गया अगर उसका हज़ारवां हिस्सा भी प्रेम प्यार से भरे सत्याग्रह पर छिड़का गया होता तो आज लड़ाई मुल्कों के बीच की नहीं, प्रान्तों के बीच की भी बठ गई होती. वह भी तो साहित्यकार ही थे जिन्होंने घरब के जंगली बडुओं को मक्का की यात्रा के महीनों में इतने ऊंचे बरजे का अहिंसक बना दिया था जितने ऊंचे बरजे के अहिंसक महावीर और बुद्ध भी पेश नहीं कर पाए. ऐसा क्यों नहीं हो पाया? महावीर और बुद्ध के भक्त साहित्यकारों ने चक्रवर्ती राजाओं का इतना गुनगान किया जितना महावीर और बुद्ध का नहीं. यह कह कर वह अपनी सफाई पूरी नहीं दे सकते कि उन्होंने चक्रवर्ती राजाओं के गुन गाकर उन्हें मरने से पहले पूरा अक्किचन और अहिंसावादी बना दिया था. मरने से पहले सन्यास लेने की बात कह कर जबानी के भोग विलास में कमी की आशा करना जैसे बेकार है वैसे ही चक्रवर्ती को आखिरी समय में साधु बना दिखाकर जनता से यह आशा करना, कि वह जबानी में हिंसा से दूर भागेगी, बेकार है. साहित्यकारों की अब तक की पेसी भूलें ही कारन हैं कि अहिंसा का प्रयोग राश्ट्रीय पैमाने पर न हो पाया, अन्तराश्ट्रीय पैमाने की बात तो एक ओर.

नहीं बुरा. अगर ये प्रचार न हो होता तो साहित्यकारों की अन्ती आواز ने सदा-शान्ति की यकी नियो ضرूर قال دي होती, 'और अल्ले दुसरे आंदोलन से अस पर عسارت بدली شروع होगاتي.

آج لڙائي کي جڙو ميئن، هتھيارون کي کارخاني آنيئي نهين کلام کر وه چٽلي وه بهو کالے والي کړيټالنهو جو کمزور اور کابو سھامی کو ترب کي مله ميئن سرټالني کو تھار کر ديتي هين. چٽلا وه رس تير، تلوار، طلچي پر آنديا کيا اگر اس کا دواړون حصه بهي پريم پھار سے بهرے سټيگاږه پر چټکا کيا هوتا تو آج لڙائي ملکوئ کي بهيچ کي نهين، پړانټون کي بهيچ کي بهي آټه کټي هوتي، وه بهي تو ساهتيه کار هي تھ چټلوئ نه عرب کي چٽکلي بدواړون کو مکه کي ياترا کي سھڻوئ ميئن آنيئي اړنچي درجي کا اهلنسک بلما ديا تها چٽلئ اړنچي درجي کي اهلنسک سهارير اور بدھ بوي پيدا نهين کر پائے. ايسا کھون نهين مھاپيا؟ سهارير اور بدھ کي بهکت ساهتيه کارون نے چکرورتی راجار کا اتلا کن گلن کيا چٽلا سهارير اور بدھ کا نهين. يه کھکر وه اپلي صټائي هروي پړوي نهين دے سکتے که انھون نے چکرورتی راجار کي کن کاکړ انھين مرنے سے پہلے پورا اکلاچين اور اهلنسا وادي بنا ديا تها. مرنے سے پہلے سټيلاس لھلے کي بات کھکر جواني کي بهوگ ولس ميئن کسی کي آشا کړنا چيسے بھکار هے ويټے هي چکرورتی کو آخری صر ميئن سادھو بنا دکھا کر چٽلعا سے يه آشا کړنا، که وه جواني ميئن هلنسا سے دور بهائيگی، بھکار هے. ساهتيه کارون کي لب تک کي نهلي بهولھي هي کارن هون که اهلنسا کا پيوگ راشټريه پيمانے پر



सकता है, फिर लड़ाई छिड़ जाने पर दीपबंद की याद आ जाय, पर लड़ाई बन्द होने पर फिर वह भूल के गड्ढे में पटक दिया जायगा. और कबीर ? वह तो आज हिन्दुस्तान में ही नहीं, हिन्दु-स्तान से बाहर पहुँच गया है, और बड़े साहित्यकारों से टकरा ले रहा है. और कबीर पढ़ा लिखा क्या था. उसी के शब्दों में 'भसि काराद छुओ नहीं' यानी उसने काराज और सियाही को हाथ नहीं लगाया था. इस पर भी अगर साहित्यकार अपने अन्दर की शक्ति को न समझ पाए तो इसमें सिरजनहार का क्या दोष ?

( ५० )  
अमरीका के प्रसिद्ध ट्र मैन ने ऐटम बम फेंकने की बात कह कर साहित्यकारों को चुनौती दी, और उन्होंने उस चुनौती को स्वीकार किया. सौ फ्रीसदी नहीं, पचहत्तर फ्रीसदी नहीं, पचास फ्रीसदी नहीं सुरिकल से दस फ्रीसदी साहित्यकारों ने ऐटम बम के इस्तेमाल के खिलाफ आवाज उठाई और नतीजा आंखों के सामने है. ऐटम बम को हिंसा द्वेष और अनीति से बना हुआ हाइड्रोजन बम या कार्मिक किरनें नहीं दबा सकती, पर अहिंसा, सार्व भ्रम और नीति से रचा साहित्य इस ऐटम बम का दम घोंट सकता है.

### शांति की आवाज

दूसरी ओर स्टाकहोम से उठी शांति की आवाज साहित्यकारों की दूसरी चीज है. यह भी काफी सफल हो रही है. प्रचार यह भी हुआ है कि शांति आन्दोलन स्टालिन का उठाया हुआ है, उस स्टालिन का, जिसे कुछ लोग जंगल, पक्के रूसभक्त और दुनिया भर का तानाशाह बनने का लोभी कहते हैं. इस प्रचार का असर कम

है : होसकता है. और लोकी होकरने पर दीप चल्द की याद आजाँने' पर लोकी बल्द होरने पर १०१०१०१०१ के लड्डे मेहन पत्क दिया जाऊँगा. और कबीर ? वह तो आज हलदस्तान मेहन दी मेहन' हलदस्तान से बाहर होरनेज किया है' और बुरे साहेतेकारों से तकर ले रहा है. और कबीर पुरेमा लक्या कहाँ तها. 'सी के शब्दों मेहन 'मसी' कल्ल चहोर मेहन' येली 'अस ने कल्ल और सहाय को हात मेहन लाया तها. 'अस पर' येली 'अगर साहेतेकार अपे अन्दर की शक्ती को न सहेजे पाँते तो 'अस मेहन सर चन हार का किया दोरु' ?

( ५१ )  
अमरीके के प्रिडिक्टन्ट त्रिमेहन ने अरिंम बम बेहलकले की बात कह कर साहेतेकारों को चुनौती दी' और 'अनेहन ने 'अस चुनौती को सोवकार किया. 'सो फिदल्ली मेहन' पचहत्तर फिदल्ली मेहन' पचहत्तर फीदल्ली मेहन' मेहन से दस फीदल्ली साहेतेकारों ने अरिंम बम के अस्तेमाल के खलफ 'आर' अतहाँनी और नतिजे 'अनेहन के सामले है. अरिंम बम को हलसा दीवश और अनेहती से बना हुआ है. हाँते. रचन नम या कलसक कीनेहन मेहन दिया सकतेहन 'बुर' अलसा' सारु प्रीम और 'नेहती से रचा साहेते' अस अरिंम बम का दम कीवन्त सकता है.

### शान्ति की आवाज

दुसरी ओर अस्ताक हाम से अतही शान्ती की 'आर' साहेतेकारों की दुसरी चीज है. ये बेही कान्नी सेबल हो रही है. प्रचार ये बेही होा है की शान्ती 'अन्दरल अस्ताकी का अतहाया होा है' 'अस अस्ताकी का' जैसे कचे लोग चल्कचु' 'पके 'दस बेहकत और दुनिया बेहर का ताा शाह बल्ले का लोभी कहते हैं. 'अस प्रचार का 'त्र' कम



पञ्चा का ल लोंजय जिनमें यह दर्शाया गया था कि किस तरह मुँके नंगे गाँव के लोग सिपाही बन कर माल मलाई खा सकते और बढ़िया कपड़े पहन सकते हैं। इस चित्र नामधारी साहित्य ने हिन्दु-स्तानियों की नज़र उस ओर जाने दी नहीं दी कि उनको भूका और नंगा बनना किसने? और वह क्यों मजबूर हो कर सिपाही के काम में लगे। यह किसको नहीं मालूम कि दुनिया के दूसरे महायुद्ध में हिन्दुस्तान के खिले लायलपुर ने कम सिपाही दिये, यानी इतने कम कि उनकी ताबाद शायद तीन अंकों तक भी नहीं पहुँच पाई। यह क्यों? क्योंकि लायलपुर में लड़ने वाले जातियों के पास जमीनों के काफी सुरक्षे थे और उनको खाने पीने की कमी न थी। हाँ, हिसार खिले से सिपाही मिले। वहाँ की लड़ने वाली जातियाँ नंगी और भूकी थीं। वह पहली लड़ाई में शामिल नहीं हुई थीं, क्योंकि उस वक़्त उनके पास खाने पीने की कमी न थी। हाँ तो, साहित्यकार की यह धोकेबाजी बड़े कम आ जाती है। तब क्या उनको साहित्यकार ही कहा जाय? जब वह हितकार ही नहीं तो साहित्यकार कैसा? वह हित्यकार है इससे असहित्यकार है। भारा के लिहाज़ से कच्चीर को यह पंक्तियाँ—

भीनी भीनी बीनी चढ़िया,  
नौ इस मास साईं को लागे,  
ठोक ठोक के बीनी चढ़िया.

और दीपचंद की यह पंक्तियाँ —

बेटा हो जाना रंगलट.  
यहाँ नहीं मिलती फटी पनहियाँ,  
वहाँ मिलेंगे बूट.

तो प्रचंड बुरे मेलमेल हों। مثال के लिये लोथी के زمانे ने उन चंदों को ले लिये जिनमें ये दर्शा या कहा था कि कसूरच बुरे नलके लाँ के लोके सियाही बल्लू माल माली कहा सके और बुरिया किये येन सके हों। अस चक्र नाम देहाय साहेब ने हदस्तानियों की نظر अस और जाने ही नहीं दी कि उन को बुरा और नला बल्लू कस ने? और वे किये मजबूर होकर सियाही के काम में लगे। ये कसूरच नेन मेलमेल के दुनिया के दुसरे महायुद्ध में हदस्तान के खिले लाँ के लोके सियाही दिये। येनी अल्ले कम के उन की तदाल शायद तेन अंकों तक भी नहीं पहुँच पाई। यह क्यों? क्योंकि लायलपुर में लड़ने वाले जातियाँ नंगी और भूकी थीं। हाँ, हिसार खिले से सिपाही मिले। वहाँ की लड़ने वाली जातियाँ नंगी और भूकी थीं। वह पहली लड़ाई में शामिल नहीं हुई थीं, क्योंकि उस वक़्त उनके पास खाने पीने की कमी न थी। हाँ तो, साहित्यकार की यह धोकेबाजी बड़े कम आ जाती है। तब क्या उनको साहित्यकार ही कहा जाय? जब वह हितकार ही नहीं तो साहित्यकार कैसा? वह हित्यकार है इससे असहित्यकार है। भारा के लिहाज़ से कच्चीर को यह पंक्तियाँ—

भीनी भीनी बीनी चढ़िया,  
नौ इस मास साईं को लागे,  
ठोक ठोक के बीनी चढ़िया.

और दीप चंद की ये पंक्तियाँ—  
बेटा हो जाना रंगलट.  
यहाँ नहीं मिलती फटी पनहियाँ,  
वहाँ मिलेंगे बूट.



नया हिन्द

साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज करवरी सन् '५१

के सब साहित्यकार मिल कर कल यह आवाज उठा दें कि लड़ाई से बढ़कर कोई गुनाह नहीं तो लड़ाई रुक सकती है, बन्द हो सकती है और अगर उस आवाज को साहित्यकार गांव गांव और घर घर पहुंचा दें तो मुल्कों की बड़ी लड़ाई हमेशा के लिये घरती से उठ जा सकती है. साहित्यकार ऐसा क्यों नहीं करते ? इसका एक कारन तो यह है कि वह अपने अपने मुल्क के स्वार्थ में इतने भीगे हुए हैं कि दूसरे मुल्क के लिये उनके दिल में कोई जगह ही नहीं रह गई. दूसरा कारन यह है कि वह अपने अन्दर उस बड़ी शक्ति का विश्वास ही नहीं कर पाते जो यह चमत्कार दिखा सकती है.

साहित्यकार यह अच्छी तरह समझना है कि लड़ाई ख़ाली हथियारों से नहीं जीती जाती. अगर ऐसा होना तो जर्मनी की जीत दूसरी लड़ाई के शुरू होने के छै महीने बाद ही हो गई होती. वह तो दो बरस सारे योरप पर और कुछ अफ्रीका पर अपनी जीत का डंका बजा कर ऐसा पिटा कि आज पांच तने पड़ा मिमर रहा है. और यही हाल जापान का हुआ. ग़लत था सही चरता नया, अमरीका और कुछ हिन्दुस्तान के साहित्यकारों ने मिल कर यह सावित कर दिया था कि हिटलर और नाज़ी पार्टी न न्याय पर हैं और न उनकी इंसानियत से काम ले रहे हैं जितनी एक सिपाही में होनी चाहिये. और यही जापान के साथ किया गया. तब क्या यह सज़ा में नहीं आ सकता कि लड़ाई में जीत जुलूम और लूट मार की नहीं हुई, जीत हुई दिया और प्रेम की या दूसरे लपखों में अहिंसा की.

स्वार्थी साहित्यकार मौके का फायदा उठाकर ऐसे काम कर जाना

नया हलद साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज करवरी सन् '५१

के सब साहित्यकार मल्क कल ये आवाज दीज के लुआनी से बड़कर कुनी क़दा नहों तो लुआनी रक सक्ती है, बलद हो सक्ती है 'दर अस् आवाज को साहित्यकार ग़ल ग़ल लुआनी दीज तो मल्क की लुआनी हमेशा के लुमे देवती से अते जासक्ती है. साहित्यकार अिसा कवों नहों करे ? अस् का एक कारन तो ये है के व अले अले मल्क के सराफ़े मीन 'तले बेहमे होंगे' मेल के दूसरे मल्क के लुमे अने दल मेल कुनी जके ही नहों र क़दी. दूसरा कारन ये है के व अले अदर अस् लुआनी शक्ती का श्वास ही नहों कर पाते जो ये चमत्कार देखा सक्ती है.

साहित्यकार ये अच्ची तरह समझना है के लुआनी ख़ाली हथियारों से नहों जक्ती जाती. अइ अिसा होता तो जर्मनी की जित दूसरी लुआनी के शुरु होने के च़े महीने बाद ही हो गई होती. वह तो दो बरस सारे योरप पर अर क़च़े 'लुफ़्ते' दर अलेनी जित का डंका बजा कर हुआ. फ़लत़ा सचिख़ इटालीने अर क़च़े हन्दुस्तान के साहित्यकारों ने मिल के ये नाबत कर दिया तहा के हथियार लुआनी नहो नहो बर मेल अर नहो अलुनी असलत से काम ले रहे मेल जक्ती अले सहाय मेल हुनी चाहते. अर बेहो ज़ापान के साथे क़ी क़ी. नब क़ी ये समझ मेल नहों अस्कोना के लुआनी मेल ज़ोत ظلم अर लुआनी मार की नहों हुनी. जित हरी दिया अर योरप की या दूसरे लफ़्ठों मेल अहसा की.

स्वार्थी साहित्यकार मौके का फ़ावदे त़ीबा कर लुसे काम कर ज़ा है



५२८ गण नश भाग जा सकत. साहित्यकार अपन पथ के मोह में इतना फंसता है कि उसे यह याद ही नहीं रहता कि वह किससे क्या काम करवा रहा है. पंथों और गिरोहों के जाल में फंसे साहित्यकार कभी तो ऐसी ऐसी बेबुकी बात कह जाते हैं जिसके लिये पंथ के समझदार आदिमियों को बहुत शर्मिन्दा होना पड़ता है और फिर रामायण और महाभारत जैसे पवित्र ग्रंथों पर कभी कभी किसी को ऐसी कड़ी आलोचना करनी पड़ती है जिसकी वजह से समाज के कोरे भत्तों में बेमलब की भड़क पैदा हो जाती है.

साहित्यकार की जिम्मेदारियाँ

साहित्यकार को यह जानना चाहिये कि उसकी जिम्मेदारियां बहुत हैं और यह बहुत जिम्मेदारियां समाज ने उसके सिर पर ही नहीं थोप दीं। समाज साहित्यकार की ताकत से खूब बाकिर है, वह दिन को रात और रात को दिन कहने के लिये जनता को मजबूर कर सकता है। अब यह उनके हाथ का काम है कि वह दिन को दिन कहलवाए या दिन को रात। अगर साहित्यकारों ने दुनिया की पहली और दूसरी लड़ाई शुरू होने से पहले अपनी कलम को रोका होता, अपनी इद्रियों को क़ाबू में रखकर और अपने मन के घोड़े को लगाम लगाकर लिखा होता तो सिर्फ़ इतना ही न होता कि पहली और दूसरी लड़ाई अमल में ही न आती बल्कि यह भी होता कि बहुत से फ़ौजी इथियारों पर यह पाषण्दी लग जाती कि उनका इस्तेमाल आदिमियों के मारने के काम में न किया जाय, सिर्फ़ जानवरों तक ही महदूद रखा जाय। अब नोबेल इनामों में शान्ति का इनाम मौजूद है तब साहित्यकारों को यह विरवास हो ही जाना चाहिये कि अगर दुनिया

طرح بہلے نہیں مانے جا سکتے۔ ساتھہ کار اپنے پلنگہ کے مولا میں اتنا پھنسنا ہے کہ ایسے یہ یاد ہی نہیں رہتا کہ وہ کس سے کہا کام کروا رہا ہے۔ پلنگھوں اور گرہروں کے جال میں پھنسے ساتھہ کار کبھی تو ایسی ایسی بے تکی بات کہہ جاتے ہیں جسکے لئے پلنگھ کے سچھدار آدمیوں کو بہت شرمندہ ہونا پڑتا ہے اور پھر راسائن اور مہا بھارت جیسے پوتر گزنتھوں پر کبھی کبھی کسی کو ایسی کڑی آلوچلنا کرنی پڑتی ہے جسکی وجہ سے سماج کے کردے پھوٹکھوں میں بے مطلب کی بھڑک پیدا ہو جاتی ہے۔

ساتھ ساتھ کار کی فیس داریاں

ساتھیہ کار کو یہ جاننا چاہئے کہ اُس کی ذمہ داریاں بہت  
 ہیں اور یہ بہت ذمہ داریاں سناج نے اُس کے سر یوں ہی نہیں  
 تھوپ دیں۔ سناج ساتھیہ کار کی طاقت سے خوب واقف ہے۔ وہ  
 دن کو رات اور رات کو دن کہنے کے لئے چلتا کو مجبور کر سکتا  
 ہے۔ اب یہ اُن کے ہاتھ کا کام ہے کہ وہ دن کو دن کہلائیں یا دن  
 کو رات۔ اگر ساتھیہ کاروں نے دنیا کی پہلی اور دوسری لڑائی شروع  
 کرنے سے پہلے اپنی قلم کو روکا ہوتا، اپنی اندریوں کو قابو میں رکھ  
 کر اور اپنے من کے گھوڑے کو لجام لگا کر لکھا ہوتا تو صرف اتنا ہی  
 نہ ہوتا کہ پہلی اور دوسری لڑائی عمل میں ہی نہ آئیں بلکہ یہ  
 بھی ہوتا کہ بہت سے فوجی ہتھیاروں پر یہ پابندی لگ جاتی کہ  
 اُن کا استعمال آدمیوں کے مارنے کے کام میں نہ کیا جائے، صرف چاروں  
 تک ہی مستعمل رکھا جائے۔ جب نوبل انعاموں میں شانتی کا انعام  
 مقرر ہے تب ساتھیہ کاروں کو یہ رشواں ہو ہی جانا چاہئے کہ اگر دنیا



नया हिन्दू साहित्यकार (आदीब) का कर्ज करवरी सन् १५१

साहित्यकार का भीतरी रोग बढ़ता जाता है वैसे वैसे बाहरी द्वेष की आग ज्यादा ज्यादा बढ़ती चली जाती है, इसलिये वह साहित्य-कार जो हित करने के लिये खड़ा हुआ था दुनिया का अहित ज्यादा कर देता है, साहित्यकार ऐसा खोटा राक्षस फिर क्यों अपनाता है ?

यह मैं नहीं मानता कि साहित्यकार यह नहीं जानता कि आदमी के अन्दर की बुराइयां द्वेष (नकरत) की चिंगारी से बारूद की तरह भड़कने के लिये तैयार रहती हैं, और अगर वह इतना नहीं जानता तो साहित्यकार होने का अधिकारी नहीं। मानना यही पड़ेगा कि साहित्यकार जान बूझ कर उन बुराइयों को भड़काता है, ऐसा वह इसलिये करता है कि उसे अपनी मेहनत के पेड़ में तुरत फल मिलने दिखाई देता है। ठीक या नाठीक हमें यह बताया गया है कि शिवाबाबनी के बाबन कवित्त सुनकर शिवाजी लड़ने के लिये तैयार हो गए थे, साहित्यकार के लिये यह बात कितनी ललचाने वाली है, हो सकता है शिवाबाबनी वाली बात सबी न हो पर यह बात सच है कि वीरस की कविता इतनी असरदार हो सकती है कि वह बहुत जल्दी कमजोर और कायर दोनों को, सिर्फ लड़ाई के लिये नहीं, मर मिटने के लिये तैयार कर दे, जिसने सन् ४६-४७ के दंगों के दिनों कट्टर हिन्दू व मुस्लिम पत्रों को सिलसिलेवार पढ़ा है और उनमें निकले हुए कार्टूनों को देखा है वह इस बात का अन्दाजा लगा सकता है, सचमुच आदमी के अन्दर रहने वाला गुस्सा, घमंड, मक्कारी और लालच आसानी से भड़काए जा सकते हैं, इतना ही

लगा हल साहित्यकार (आदीब) का कर्ज करवरी सन् १५१

साहित्यकार का भीतरी रोग बढ़ता जाता है वैसे वैसे बाहरी द्वेष की आग ज्यादा ज्यादा बढ़ती चली जाती है, इसलिये वह साहित्य-कार जो हित करने के लिये खड़ा हुआ था दुनिया का अहित ज्यादा कर देता है, साहित्यकार ऐसा खोटा राक्षस फिर क्यों अपनाता है ?

यह मैं नहीं मानता कि साहित्यकार यह नहीं जानता कि आदमी के अन्दर की बुराइयां द्वेष (नकरत) की चिंगारी से बारूद की तरह भड़कने के लिये तैयार रहती हैं, और अगर वह इतना नहीं जानता तो साहित्यकार होने का अधिकारी नहीं। मानना यही पड़ेगा कि साहित्यकार जान बूझ कर उन बुराइयों को भड़काता है, ऐसा वह इसलिये करता है कि उसे अपनी मेहनत के पेड़ में तुरत फल मिलने दिखाई देता है। ठीक या नाठीक हमें यह बताया गया है कि शिवाबाबनी के बाबन कवित्त सुनकर शिवाजी लड़ने के लिये तैयार हो गए थे, साहित्यकार के लिये यह बात कितनी ललचाने वाली है, हो सकता है शिवाबाबनी वाली बात सबी न हो पर यह बात सच है कि वीरस की कविता इतनी असरदार हो सकती है कि वह बहुत जल्दी कमजोर और कायर दोनों को, सिर्फ लड़ाई के लिये नहीं, मर मिटने के लिये तैयार कर दे, जिसने सन् ४६-४७ के दंगों के दिनों कट्टर हिन्दू व मुस्लिम पत्रों को सिलसिलेवार पढ़ा है और उनमें निकले हुए कार्टूनों को देखा है वह इस बात का अन्दाजा लगा सकता है, सचमुच आदमी के अन्दर रहने वाला गुस्सा, घमंड, मक्कारी और लालच आसानी से भड़काए जा सकते हैं, इतना ही

लगा हल साहित्यकार (आदीब) का कर्ज करवरी सन् १५१



समाज के बन जावें तो न केवल तीसरी लड़ाई रुक जावेगी बल्कि 'दुनिया की लड़ाई' का खयाल ही इस धरती से उठ जायगा।

साहित्यकार यह क्यों नहीं सोचता कि वह छोटे गिरोह का बन कर इतना बड़ा नहीं हो सकता जितना बड़े गिरोह का बनकर हो सकता है, यह उसकी निरी भिन्नता है कि वह आगे बढ़ने में घबराता है, छोटे और बड़े गिरोह में छोटे बड़े होने के सिवा कोई और अन्तर नहीं होता। सारी दुनिया को भाई मानकर लिखने में दो बार दिन ही क्लम अटकैगी उसके बाद वह इस तेजी से दौड़ेगी कि साहित्यकार को अपने ऊपर ही 'अचरज होने लगेगा'। 'सब से प्रीत' की लीला ही ऐसी है।

### स्वार्थ, प्रकाश की ओट

साहित्यकार इस बात को अच्छी तरह समझना है कि स्वार्थ आत्मविश्वास के प्रकाश के चारों तरफ एक ऐसी ओट है जो विश्वास की चाल को रोक देती है, इसलिये जिस साहित्यकार के स्वार्थ का घेरा जितना छोटा होता है उसका साहित्य भी उतना ही कम असरदार होता है। फिर न जाने क्यों साहित्यकार यह सब जानते हुए न अपना घेरा बढ़ाता है, न उस ओट को ढाने की सोचता है, ओट कोई बुरी चीज नहीं अगर वह 'सिर्ज' सीमा बताने वाली हो, किसी साहित्यकार की पहुँच अगर दूर तक नहीं है तो यह बुरी बात नहीं, फिर इस परिधि, सीमा और ओट की बुराई क्यों? असल में परिधि, सीमा और ओट वाले साहित्यकार सौ पंखे सौ ऐसे ही मिलते हैं जो सीमा के भीतर की चीजों को एक निगाह से देखते हैं और सीमा से बाहर की चीजों को दूसरी निगाह से, इतना ही नहीं, जैसे जैसे

संज्ञा के बन जावें तो न केवल तीसरी लड़ाई रुक जावेगी बल्कि 'दुनिया की लड़ाई' का खयाल ही इस धरती से उठ जायगा।

साहित्यकार यह क्यों नहीं सोचता कि वह छोटे गिरोह का बन कर इतना बड़ा नहीं हो सकता जितना बड़े गिरोह का बनकर हो सकता है, यह उसकी निरी भिन्नता है कि वह आगे बढ़ने में घबराता है, छोटे और बड़े गिरोह में छोटे बड़े होने के सिवा कोई और अन्तर नहीं होता। सारी दुनिया को भाई मानकर लिखने में दो बार दिन ही क्लम अटकैगी उसके बाद वह इस तेजी से दौड़ेगी कि साहित्यकार को अपने ऊपर ही 'अचरज होने लगेगा'। 'सब से प्रीत' की लीला ही ऐसी है।

### स्वार्थ, प्रकाश की ओट

साहित्यकार इस बात को अच्छी तरह समझता है कि स्वार्थ आत्मविश्वास के प्रकाश के चारों तरफ एक ऐसी ओट है जो विश्वास की चाल को रोक देती है, इसलिये जिस साहित्यकार के स्वार्थ का घेरा जितना छोटा होता है उसका साहित्य भी उतना ही कम असरदार होता है। फिर न जाने क्यों साहित्यकार यह सब जानते हुए न अपना घेरा बढ़ाता है, न उस ओट को ढाने की सोचता है, ओट कोई बुरी चीज नहीं अगर वह 'सिर्ज' सीमा बताने वाली हो, किसी साहित्यकार की पहुँच अगर दूर तक नहीं है तो यह बुरी बात नहीं, फिर इस परिधि, सीमा और ओट की बुराई क्यों? असल में परिधि, सीमा और ओट वाले साहित्यकार सौ पंखे सौ ऐसे ही मिलते हैं जो सीमा के भीतर की चीजों को एक निगाह से देखते हैं और सीमा से बाहर की चीजों को दूसरी निगाह से, इतना ही नहीं, जैसे जैसे



## नया हिन्दू साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज करधरी सन् '५१

अपने बच्चे से होता है. बन्दर अपने भरे बच्चे को छाती से लगाये फिरता है. साहित्यकार अपने मुलक, धर्म और समाज की भलाई सोच सकता है सही पर यह मानकर कि उसका मुलक, समाज, धर्म और गिरोह मानव समाज का अंग है. कौन साहित्यकार है जो यह नहीं जानता कि आज कोई मुलक अपने आप में इतना पूरा नहीं है कि दूसरे मुलकों की मदद के बिना सुखी और जीता रह सके. हो सकता है आज अमरीका का कोई साहित्यकार यह कह बैठे कि उस का मुलक अमरीका ऐसा है जिसे किसी बात के लिये दूसरे मुलकों की तरफ ताकना नहीं पड़ेगा. और अगर हम उसकी बात को बिलकुल सच मान लें तब भी अमरीका के साहित्यकार के पास इस सबाल का क्या जवाब है कि अमरीका क्यों अपनी बनी हुई चीजों के लिये दुनिया भर में बाजार ढूँढ़ने भागता फिरता है और जगह जगह अपने हवाई अड्डे बनाने की फिक्र रखता है? और कुछ न भी सही, कम से कम, अमरीका अपने मुलक के वचाव की लातिर दूसरे मुलकों की मदद की जरूरत रखता है. जब अमरीका जैसे मुलक का यह हाल है और अमरीका में रहने वाले साहित्यकार की यह हालत है तब और मुलकों का तो कहना ही क्या! इसलिये जब जब साहित्यकार अपने आपको किसी एक मुलक से जोड़ बैठता है तब तब इतना ही नहीं होता कि उसके साहित्य में साहित्य की जान नहीं रह जाती बल्कि उसके साहित्य में कुसाहित्य की सारी बुगइयाँ आ जाती हैं. आज जो कुछ हो रहा है वह साहित्यकारों के इस वानर मोह का ही

## नया हलद साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज करधरी सन् '५१

लिये बच्चे से होता है. बन्दर अपने भरे बच्चे को छाती से लगाये फिरता है. साहित्यकार अपने मुलक, धर्म और समाज की भलाई सोच सकता है सही पर यह मान कर के उसका मुलक, समाज, धर्म और गिरोह मानव समाज का अंग है. कौन साहित्यकार है जो यह नहीं जानता कि आज कोई मुलक अपने आप में इतना पूरा नहीं है कि दूसरे मुलकों की मदद के बिना सुखी और जीता रह सके. हो सकता है आज अमरीका का कोई साहित्यकार यह कह बैठे कि उस का मुलक अमरीका ऐसा है जिसे किसी बात के लिये दूसरे मुलकों की तरफ ताकना नहीं पड़ेगा. और अगर हम उसकी बात को बिलकुल सच मान लें तब भी अमरीका के साहित्यकार के पास इस सबाल का क्या जवाब है कि अमरीका क्यों अपनी बनी हुई चीजों के लिये दुनिया भर में बाजार ढूँढ़ने भागता फिरता है और जगह जगह अपने हवाई अड्डे बनाने की फिक्र रखता है? और कुछ न भी सही, कम से कम, अमरीका अपने मुलक के वचाव की लातिर दूसरे मुलकों की मदद की जरूरत रखता है. जब अमरीका जैसे मुलक का यह हाल है और अमरीका में रहने वाले साहित्यकार की यह हालत है तब और मुलकों का तो कहना ही क्या! इसलिये जब जब साहित्यकार अपने आपको किसी एक मुलक से जोड़ बैठता है तब तब इतना ही नहीं होता कि उसके साहित्य में साहित्य की जान नहीं रह जाती बल्कि उसके साहित्य में कुसाहित्य की सारी बुगइयाँ आ जाती हैं. आज जो कुछ हो रहा है वह साहित्यकारों के इस वानर मोह का ही



के सिर न मढ़ें तो किसके सिर मढ़ें ? अगर साहित्यकार इस बुराई को अपने सिर नहीं लेता चाहते तब वह खुले खुले उन लेखकों को, जो दुनिया में इस तरह का बैरभाव फैलाने का काम कर रहे हैं, साहित्य के समाज से खारिज कर दें और अगर वह ऐसा नहीं कर सकते तो इस यूकंप की बुराई को अपने सिर लें. सफेद काराख पर हर काले हरफ को अगर साहित्य का नाम दे दिया जायगा तो भलाई की जगह बुराई ही फले फूलेगी. भलाई को फलने फूलने के लिये तो भली बातों को ही साहित्य मानना पड़ेगा और भले कामों के बखान से भरी हुई किताबें ही साहित्य की पुस्तकों का नाम पा सकेंगी. अगर साहित्य दुनियादारों का दुख दूर नहीं कर सकता तो न वह साहित्य कहलाने योग्य है और न जीते रहने योग्य.

### दुनिया में शान्ति की आवाज

यह साहित्यकार ही तो हैं जो घूम घूम कर दुनिया में 'शान्ति रहे' की आवाज उठा रहे हैं. वह पत्रकार साहित्य नहीं तैयार कर रहे जो संसार को लड़ने के लिये भड़का रहे हैं. वह विज्ञानी विज्ञान-साहित्य की बड़बारी नहीं कर रहे जो ऐसे हथियारों और ऐसे साधनों के बनाने में सीधे ना सीधे योग दे रहे हैं जो एक दिन समाज की बरबादी का कारन होंगे. हाँ, वह पत्रकार और विज्ञानी सच्चा साहित्य छोड़ जा रहे हैं जो आज इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उन की सारी विमागी मेहनत और सारी सूफू बूफू इस काम आवे कि आने वाली तीसरी लड़ाई शान्ति सम्मेलन का रूप ले ले. साहित्यकार अपने धर्म पर पूरा नहीं खतर सकता अगर उसे अपने मुल्क, अपने समाज, अपने धर्म या अपने गिरोह से ऐसा मोह है जैसा बन्दर को

के सर न मरोहें तो कस के सर मरोहें ? अगर साहित्यकार अस ब्रान्ति को अपने सर नहें लिना चाहते तब वे किले किले न लिखें कु' जो दुनिया में अस طرح का बैर भड़ा बैडिले का काम करे हें 'साहित्य के समाज से खारिज कर दिवें और अरु वे अिसा नहें कर सकते तो अस बेवकसप की ब्रान्ति को अपने सर लें. सफेद कलंड पर हर काले हरफ को अगर साहित्य का नाम दे दिया जायगा तो भलाई की जगह बुराई ही फले फूलेगी. भलाई को फलने फूलने के लिये तो भली बातों को ही साहित्य मानना पड़ेगा और भले कामों के बखान से भरी हुई किताबें ही साहित्य की पुस्तकों का नाम पा सकेंगी. अगर साहित्य दुनिया दारों का दुख दूर नहें कर सकता तो न वे साहित्य कहलाने योग्य है और न जीते रहने योग्य.

### दुनिया में शान्ति की आवाज

ये साहित्यकार ही तो हैं जो घूम घूम कर दुनिया में 'शान्ति रहे' की आवाज उठा रहे हैं. वे पत्रकार साहित्य नहें तैयार कर रहे जो संसार को लड़ने के लिये भड़का रहे हैं. वे विज्ञानी विज्ञान-साहित्य की बड़बारी नहीं कर रहे जो ऐसे हथियारों और ऐसे साधनों के बनाने में सीधे ना सीधे योग दे रहे हैं जो एक दिन समाज की बरबादी का कारन होंगे. हाँ, वे पत्रकार और विज्ञानी सच्चा साहित्य छोड़ जा रहे हैं जो आज इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उनकी सारी विमागी मेहनत और सारी सूफू बूफू इस काम आवे कि आने वाली तीसरी लड़ाई शान्ति सम्मेलन का रूप ले ले. साहित्यकार अपने धर्म पर पूरा नहें खतर सकता अगर उसे अपने मुल्क, अपने समाज, अपने धर्म या अपने गिरोह से ऐसा मोह है जैसा बन्दर को



कला का नतीजा है, और तीसरी बड़ी लड़ाई के शुरू करने में भी उन ही का हाथ रहेगा, पर ऐसा कहते हुए वह यह नहीं सोचते कि इस तरह की र्दों में घंघंड़ जगदा है, सचाई बहुत कम. माना, दियासलाई से आग भड़काई जा सकती है और वह जल्दी इतना जोर पकड़ सकती है कि उसको ठंडा करने के लिये इसकल की जरूरत पड़े. पर यह याद रहे कि समाज आग लगाने वाले को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाता है और आग बुझाने वाले पर फूल बरसाता है.

साहित्यकार, जो आग भड़काने का काम करता है, अपने धर्म से दूर पड़ जाता है. और साहित्यकार, जो आग लगाने में से भी भलाई निकाल कर आग लगाने वाले के लिये समाज के दिल से नफरत दूर करता है, अपने धर्म की शान बढ़ाता है, और ऐसा ही साहित्यकार उस प्रेम तार की रचना करता है, जो अगर काफ़ी बड़ा साबित हुआ, तो एक दिन सारा मानव समाज उसमें पिरोया जा सके.

साहित्यकार (अदीब) मानव समाज को बहुत ऊँचा उठा लाया है, पर उस ऊँचे ठे समाज की इस समय ऐसी हालत है जो उसकी मेहनत को कुछ ही दिनों में बेकार साबित कर सकती है. उसकी सारी मेहनत का एक नए ढंग का फल हुआ है. वह यह कि मानव समाज भलाई के लिहाज से या तो मुल्कों में बँट गया है या फिर जातियों में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जाति में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जाति में.

कला का नतीजा है, और तीसरी बड़ी लड़ाई के शुरू करने में भी उन ही का हाथ रहेगा, पर ऐसा कहते हुए वह यह नहीं सोचते कि इस तरह की र्दों में घंघंड़ जगदा है, सचाई बहुत कम. माना, दियासलाई से आग भड़काई जा सकती है और वह जल्दी इतना जोर पकड़ सकती है कि उसको ठंडा करने के लिये इसकल की जरूरत पड़े. पर यह याद रहे कि समाज आग लगाने वाले को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाता है और आग बुझाने वाले पर फूल बरसाता है.

साहित्यकार, जो आग भड़काने का काम करता है, अपने धर्म से दूर पड़ जाता है. और साहित्यकार, जो आग लगाने में से भी भलाई निकाल कर आग लगाने वाले के लिये समाज के दिल से नफरत दूर करता है, अपने धर्म की शान बढ़ाता है, और ऐसा ही साहित्यकार उस प्रेम तार की रचना करता है, जो अगर काफ़ी बड़ा साबित हुआ, तो एक दिन सारा मानव समाज उसमें पिरोया जा सके.

साहित्यकार (अदीब) मानव समाज को बहुत ऊँचा उठा लाया है, पर उस ऊँचे ठे समाज की इस समय ऐसी हालत है जो उसकी मेहनत को कुछ ही दिनों में बेकार साबित कर सकती है. उसकी सारी मेहनत का एक नए ढंग का फल हुआ है. वह यह कि मानव समाज भलाई के लिहाज से या तो मुल्कों में बँट गया है या फिर जातियों में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जाति में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जाति में.



के सिर न मढ़ें तो किसके सिर मढ़ें ? अगर साहित्यकार इस बुराई को अपने सिर नहीं लेना चाहते तब वह खुले खुले उन लेखकों को, जो दुनिया में इस तरह का वैराभाव फैलाने का काम कर रहे हैं, साहित्य के समाज से खारिज कर दें और अगर वह ऐसा नहीं कर सकते तो इस भूकंप की बुराई को अपने सिर लें। सफेद कारागार पर हर काले हरफ को अगर साहित्य का नाम दे दिया जायगा तो भलाई की जगह बुराई ही फले फूलेगी। भलाई को फलने फूलने के लिये तो भली बातों को ही साहित्य मानना पड़ेगा और भले कामों के बखान से भरी हुई किताबें ही साहित्य की पुस्तकों का नाम पा सकेंगी। अगर साहित्य दुनियादारों का दुख दूर नहीं कर सकता तो न वह साहित्य कहलाने योग्य है और न जीते रहने योग्य।

### दुनिया में शान्ति की आवाज

यह साहित्यकार ही तो हैं जो घूम घूम कर दुनिया में 'शान्ति रहे' की आवाज उठा रहे हैं। वह पत्रकार साहित्य नहीं तैयार कर रहे जो संसार को लड़ने के लिये भड़का रहे हैं। वह विज्ञानी विज्ञान-साहित्य की बढ़बारी नहीं कर रहे जो ऐसे हथियारों और ऐसे साधनों के बनाने में सीधे ना सीधे योग दे रहे हैं जो एक दिन समाज की बरबादी का कारन होंगे। हाँ, वह पत्रकार और विज्ञानी सच्चा साहित्य छोड़ जा रहे हैं जो आज इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उन की सारी विमायी मेहनत और सारी सूझ बूझ इस काम आवे कि आने वाली तीसरी लड़ाई शान्ति सम्मेलन का रूप ले ले। साहित्यकार अपने धर्म पर पूरा नहीं चतर सकता अगर उसे अपने मुल्क, अपने समाज, अपने धर्म या अपने गिरोह से ऐसा मोह है जैसा बन्दर को

के सर न मरोहें तो कस के सर मरोहें ? अगर साहित्यकार इस बुराई को अपने सर नहीं लिटा चाहते तब वे किले किले न लिखें जो दुनिया में अस्तर का बहर बहाव पैपाले का काम कर रहे हैं 'साहित्य के समाज से खारिज कर दें और अगर वे ऐसा नहीं कर सकते तो इस भूकंप की बुराई को अपने सर लें। सफेद कलंदर पर हर काले हरफ को अगर साहित्य का नाम दे दिया जायगा तो भलाई की जगह बुराई ही फले फूलेगी। भलाई को फलने फूलने के लिये तो भली बातों को ही साहित्य मानना पड़ेगा और भले कामों के बखान से भरी हुई किताबें ही साहित्य की पुस्तकों का नाम पा सकेंगी। अगर साहित्य दुनिया दारों का दुख दूर नहीं कर सकता तो न वह साहित्य कहलाने योग्य है और न जीते रहने योग्य।

### दुनिया में शान्ति की आवाज

ये साहित्यकार ही तो हैं जो घूम घूम कर दुनिया में 'शान्ति रहे' की आवाज उठा रहे हैं। वे पत्रकार साहित्य नहीं तैयार कर रहे जो संसार को लड़ने के लिये भड़का रहे हैं। वे विज्ञानी विज्ञान-साहित्य की बढ़बारी नहीं कर रहे जो ऐसे हथियारों और ऐसे साधनों के बनाने में सीधे ना सीधे योग दे रहे हैं जो एक दिन समाज की बरबादी का कारन होंगे। हाँ, वे पत्रकार और विज्ञानी सच्चा साहित्य छोड़ जा रहे हैं जो आज इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उनकी सारी धमाँ मेहनत और सारी सूझ बूझ इस काम आवे कि आने वाली तीसरी लड़ाई शान्ति सम्मेलन का रूप ले ले। साहित्यकार अपने धर्म पर पूरा नहीं चतरा अगर उसे अपने मुल्क, अपने समाज, अपने धर्म या अपने गिरोह से ऐसा मोह है जैसा बन्दर को



बना दिव साहित्यकार (अदीब) का फर्ज फरबरी सन् '५९

कला का नतीजा है, और तीसरी बड़ी लड़ाई के शुरू करने में भी जन ही का हाथ रहेगा, पर ऐसा कहते हुए वह यह नहीं सोचते कि इस तरह की डींग में घमंड ज्यादा है, सचाई बहुत कम. माना, दियासलाई से आग भड़काई जा सकती है और वह जल्दी इतना जोर पकड़ सकती है कि उसको ठंडा करने के लिये दमकल की जरूरत पड़े. पर यह याद रहे कि समाज आग लगाने वाले को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाता है और आग बुझाने वाले पर फूल बरसाता है.

साहित्यकार, जो आग भड़काने का काम करता है, अपने धर्म से दूर पड़ जाता है. और साहित्यकार, जो आग लगाने में से भी भलाई निकाल कर आग लगाने वाले के लिये समाज के दिल से नफरत दूर करता है, अपने धर्म की शान बढ़ाता है, और ऐसा ही साहित्यकार उस प्रेम तार की रचना करता है, जो अगर काफ़ी बड़ा साबित हुआ, तो एक दिन सारा मानव समाज उसमें पिरोया जा सके.

साहित्यकार (अदीब) मानव समाज को बहुत ऊँचा उठा लाया है, पर उस ऊँचे बड़े समाज की इस समय ऐसी हालत है जो उसको मेहनत को कुछ ही दिनों में बेकार साबित कर सकती है. उसकी सारी मेहनत का एक नए ढंग का फल हुआ है. वह यह कि मानव समाज भलाई के लिहाज से या तो मुल्कों में बँट गया है या फिर जातियों में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जात अपनी बढ़ती के जोम में समाज व्यवस्था के संतोल को बिगाड़

जात अपनी बढ़ती के जोम में समाज व्यवस्था के संतोल को बिगाड़

साहित्यकार (अदीब) का फर्ज फरबरी सन् '५९

कला का नतीजा है, और तीसरी बड़ी लड़ाई के शुरू करने में भी जन ही का हाथ रहेगा, पर ऐसा कहते हुए वह यह नहीं सोचते कि इस तरह की डींग में घमंड ज्यादा है, सचाई बहुत कम. माना, दियासलाई से आग भड़काई जा सकती है और वह जल्दी इतना जोर पकड़ सकती है कि उसको ठंडा करने के लिये दमकल की जरूरत पड़े. पर यह याद रहे कि समाज आग लगाने वाले को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाता है और आग बुझाने वाले पर फूल बरसाता है.

साहित्यकार, जो आग भड़काने का काम करता है, अपने धर्म से दूर पड़ जाता है. और साहित्यकार, जो आग लगाने में से भी भलाई निकाल कर आग लगाने वाले के लिये समाज के दिल से नफरत दूर करता है, अपने धर्म की शान बढ़ाता है, और ऐसा ही साहित्यकार उस प्रेम तार की रचना करता है, जो अगर काफ़ी बड़ा साबित होगा, तो एक दिन सारा मानव समाज उसमें पिरोया जा सके.

साहित्यकार (अदीब) मानव समाज को बहुत ऊँचा उठा लाया है, पर उस ऊँचे बड़े समाज की इस समय ऐसी हालत है जो उसको मेहनत को कुछ ही दिनों में बेकार साबित कर सकती है. उसकी सारी मेहनत का एक नए ढंग का फल हुआ है. वह यह कि मानव समाज भलाई के लिहाज से या तो मुल्कों में बँट गया है या फिर जातियों में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जात अपनी बढ़ती के जोम में समाज व्यवस्था के संतोल को बिगाड़

जात अपनी बढ़ती के जोम में समाज व्यवस्था के संतोल को बिगाड़



कोई साहित्यकार न इस आदर्श की बात को कहना चाहता है और न कहने की जरूरत समझता है. आदर्श बखानने वाला साहित्य आज आदर्श साहित्य नहीं हो सकता. आज के लिये काम का साहित्य वह है जो हमारी आज की उलझनों को सुलभाए और इस तरह सुलभाए कि हमारा अगला हर कदम जाने-अनजाने अपने आप आदर्श की ओर रुठता चला जाय.

### बलभन्ने पैदा कीं साहित्यकार ने

आज की समाजी और राजकाजी उलझनों साहित्यकार की पैदा की हुई हैं. आर्थिक और धार्मिक उलझनों में भी साहित्यकार का हाथ है, यह बात हम यह मानकर कह रहे हैं कि जो कुछ लिख गया वह साहित्य है, या जिसने जो कह डाला और कर डाला वह साहित्य है. जिसका नाम साहित्य है वह साहित्य नहीं. हम पहले बता आए हैं साहित्य बड़ी है जिससे मानव समाज का भला हो, और इस खयाल से जब हम यह कहते हैं कि आज की उलझनों साहित्यकार की पैदा की हुई हैं तब हम एक तरह से यही कहते हैं कि आज की उलझनों उस साहित्यकार की पैदा की हुई हैं जो नाम से साहित्यकार है पर काम और ईमान से नहीं. यह कहकर हम साहित्यकार के सिर बहुत बड़ी जिम्मेदारियों की पगड़ी बाँध रहे हैं, पर उसके सिवा हम यह पगड़ी बाँध भी किसके सिर ? क्योंकि हम तो हर भलाई करने वाले को साहित्यकार मानते हैं. हमारी राय में साधु और साहित्यकार आर्य और सज्जन एक ही अर्थ वाले शब्द हैं.

साहित्यकार चाहें तो आगा पीछा सोचे बिना यह कह सकते हैं कि दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई और दूसरी बड़ी लड़ाई इन ही की

कोई साहित्यकार न इस आदर्श की बात को कहना चाहता है और न कहने की जरूरत समझता है. आदर्श बखानने वाला साहित्य आज आदर्श साहित्य नहीं हो सकता. आज के लिये काम का साहित्य वह है जो हमारी आज की उलझनों को सुलभाए और इस तरह सुलभाए कि हमारा अगला हर कदम जाने-अनजाने अपने आप आदर्श की ओर रुठता चला जाय.

### अजहिलों पैदा कौन साहित्यकार ने

आज की समाजी और राज काजी अजहिलों साहित्यकार की पैदा की हों हों अजहिलों और अजहिलों में भी साहित्यकार का हाथ है, यह बात हम यह मान कर रहे हैं कि जो कुछ लिख दिया वह साहित्य है, या जिसने जो कहा और कर डाला वह साहित्य है. जिसका नाम साहित्य है वह साहित्य नहीं. हम पहले बता आये हैं साहित्यकार की पैदा की हुई हैं जो नाम से साहित्यकार है पर काम और ईमान से नहीं. यह कहकर हम साहित्यकार के सिर बहुत बड़ी जिम्मेदारियों की पगड़ी बाँध रहे हैं, पर उसके सिवा हम यह पगड़ी बाँध भी किसके सिर ? क्योंकि हम तो हर भलाई करने वाले को साहित्यकार मानते हैं. हमारी राय में साधु और साहित्यकार आर्य और सज्जन एक ही अर्थ वाले शब्द हैं.

साहित्यकार चाहें तो आगे पीछा सोचे बता ये कह सकते हैं कि

दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई और दूसरी बड़ी लड़ाई इन ही की



नवा हिन्दू साहित्यकार (अदीब) का दर्ज करवरी सन् १९१९ मानव समाज, सारे का सारा नहीं, तो उसका बहुत बड़ा हिस्सा देवता पुरुष बन गया होता।

देव पुरुष क्या है ?

देवपुरुष और देवसमाज से हमारा मतलब क्या है ? मतलब यही है कि जो आदमी जितना धन की तरफ कम भागता है, जितनी बल की कम इच्छा करता है, जितना नामवरी से बचता है, जितनी शक्ति जमाने की कम फिक्र करता है, उतना ही वह उस मंजिल की तरफ जा रहा है जहाँ पहुँचकर वह देवपुरुष कहलावे लगेगा। फिर उसको सारे मानवसमाज से ऐसा ही प्रेम हो जायगा मानो हर तरह वह अपने सगे हैं। इस मंजिल तक पहुँचने से पहले उसे किसी को किसी तरह भी सताने में तकलीफ होने लगेगी। और जब तकलीफ होने लगेगी तो वह तकलीफ में पड़ने का काम क्यों करेगा ? उसको यह हालत हो जायगी कि वह दुख पाने वाले और दुख देने वाले को एक प्यार की नजर से देखेगा। और फिर उसमें ऐसी शक्ति आ जायगी कि वह आसानी से दुख देने वाले और दुख पाने वाले दोनों में एक आपसी मोहब्बत पैदा कर सकेगा। यहाँ यह न समझना चाहिये कि दुख देने और सताने की बुराई आदमी में से बिलकुल निकल जायगी। ऐसा होने से पहले तो मानवसमाज का मतलब ही पूरा हो चुका होगा, क्योंकि हम पहले कह चुके हैं कि भलाई बुराई के बगैर सिद्धा नहीं रह सकती। बस तो यह दुख देने और सताने का काम या तो अपने लिये रह गया होगा या मानव समाज के

लिया हल साहचर्य कार (अदीब) का लुप्त करवरी सन् १९१९ मानव समाज, सारे का सारा नहीं, तो सारे का बहुत बड़ा हिस्सा देवता पुरुष बन गया होता।

देव पुरुष क्या है ?

देव पुरुष और देव समाज से हमारा मतलब क्या है ? मतलब यही है कि जो आदमी जितना धन की तरफ कम भागता है, जितनी बल की कम इच्छा करता है, जितना नामवरी से बचता है, जितनी शक्ति जमाने की कम फिक्र करता है, उतना ही वह उस मंजिल की तरफ जा रहा है जहाँ पहुँचकर वह देवपुरुष कहलावे लगेगा। फिर उसको सारे मानवसमाज से ऐसा ही प्रेम हो जायगा मानो हर तरह वह अपने सगे हैं। इस मंजिल तक पहुँचने से पहले उसे किसी को किसी तरह भी सताने में तकलीफ होने लगेगी। और जब तकलीफ होने लगेगी तो वह तकलीफ में पड़ने का काम क्यों करेगा ? उसकी यह हालत हो जायगी कि वह दुख पाने वाले और दुख देने वाले को एक प्यार की नजर से देखेगा। और फिर उसमें ऐसी शक्ति आ जायगी कि वह आसानी से दुख देने वाले और दुख पाने वाले दोनों में एक आपसी मोहब्बत पैदा कर सकेगा। यहाँ यह न समझना चाहिये कि दुख देने और सताने की बुराई आदमी में से बिलकुल निकल जायगी। ऐसा होने से पहले तो मानव समाज का मतलब ही पूरा हो चुका होगा, क्योंकि हम पहले कह चुके हैं कि भलाई बुराई के बगैर सिद्धा नहीं रह सकती। बस तो यह दुख देने और सताने का काम या तो अपने लिये रह गया होगा या मानव समाज के



बुराई को अपनी जगह देख उसमें अटकता नहीं और भले आदमी की भलाई से फायदा उठाने लगता है, यह क्या जादूगरी नहीं है ?

साहित्यकार (अदीब) यह अच्छी तरह समझता है कि भलाई बुराई के मेल का नाम दुनिया है, बड़ी से बड़ी भलाई में बड़ी से बड़ी बुराई छुँदी जा सकती और बड़ी से बड़ी बुराई में बड़ी से बड़ी भलाई छिपी मिल सकती है, यहां यह शक हो सकता है कि जब हर भलाई में बुराई और हर बुराई में भलाई रहती है तो किसी को बुरा , और भला कहने का मतलब क्या ? इस शक का जवाब है कि जब कोई आदमी एक बात की भलाई का इस्तेमाल जनता के लिये करता है और उसकी बुराई का इस्तेमाल अपनों के लिये या जनता के दुश्मनों के लिये करता है तो वह बात भली समझी जाती है और वह आदमी भला, ठीक इसी तरह जो आदमी एक बात की बुराई का इस्तेमाल जनता के लिये करता है और उसकी भलाई का इस्तेमाल अपनों के लिये या जनता के दुश्मनों के लिये करता है तो वह बात बुरी हो जाती है और उसका करने वाला बुरा आदमी मान लिया जाता है साहित्यकार इस बेहंगे पन को एक ढंग दे देता है और वह बुराई और भलाई का ऐसा ज्ञान करा देता है कि फिर भले आदमी की बुराइयां दूसरों को नहीं खटकती और बुरे आदमी की भलाईयां न वेकार पड़ी रहती हैं न छोटे दाबरे में रहती हैं, बल्कि सबके काम की हो जाती हैं, साहित्यकार की इसी कोशिश का एक दिन यह नतीजा होकर रहेगा कि आदमी देवतापुरुष कहलाने लगेगा, देवता शब्द उस साहित्यकार की देन है जो देव नहीं है, मानव समाज अभी देवसमाज का रूप नहीं ले पाया, अगर देवता शब्द देव साहित्यकार की देन होता तो

भोली को अपनी जगह देखो उस में 'तुम्हा' नहीं और भले आदमी की भोली से फायदा उठाने लगा है, ये क्या जादूगरी नहीं है ?

साहित्यकार (अदीब) ये अच्छी तरह समझता है कि भलाई बुराई के मेल का नाम दुनिया है, बड़ी से बड़ी भलाई में बड़ी से बड़ी बुराई छुँदी जा सकती और बड़ी से बड़ी भलाई में बड़ी से बड़ी भलाई छिपी मिल सकती है, यहां यह शक हो सकता है कि जब हर भलाई में बुराई और हर बुराई में भलाई रहती है तो किसी को बुरा , और भला कहने का मतलब क्या ? इस शक का जवाब है कि जब कोई आदमी एक बात की भलाई का इस्तेमाल जनता के लिये करता है और उस की बुराई का इस्तेमाल अपनों के लिये या जनता के दुश्मनों के लिये करता है तो वह बात भली समझी जाती है और वह आदमी भला, ठीक इसी तरह जो आदमी एक बात की बुराई का इस्तेमाल जनता के लिये करता है और उसकी भलाई का इस्तेमाल अपनों के लिये या जनता के दुश्मनों के लिये करता है तो वह बात बुरी हो जाती है और उसका करने वाला बुरा आदमी मान लिया जाता है, साहित्यकार उस पे देहकिये पन को एक बेहंगम दे देता है और बुराई और भलाई का ऐसा ज्ञान करा देता है कि बुरे भले आदमी की बुराइयां दूसरों को नहीं खटकती और बुरे आदमी की भलाईयां न वेकार पड़ी रहती हैं न छोटे दाबरे में रहती हैं, बल्कि सबके काम की हो जाती हैं, साहित्यकार की इसी कोशिश का एक दिन यह नतीजा होकर रहेगा कि आदमी देवतापुरुष कहलाने लगेगा, देवता शब्द उस साहित्यकार की देन है जो देव नहीं है, मानव समाज अभी देवसमाज का रूप नहीं ले पाया, अगर देवता शब्द देव साहित्यकार की देन होता तो



बना हिन्दू साहित्यकार (अदीब) का कर्षण फरवरी सन् '५१

आदमी को मजबूर कर देता है कि वह अपने को भला आदमी मानने जानने लगे और भलाई में लग जाय.

### बुराई में भलाई

साहित्यकार बुरे आदमी की भलाई को सामने लाकर बुरे के साथ जनता की हمدर्दी का मेल करा देता है. वह बुराई की जन-कारी को जनता के दिल में कुछ इस तरह बिठाता है कि जनता न तो उस बुराई को अपनाती है और न बुरे में उस बुराई को बुरा समझती है. बुराईयों को जनता ऐसे देखती है जैसे किसान खाद को और यही साहित्यकार का वह चमत्कार है जिसकी वजह से वह समाज में आदर पूजा की जगह बना लेता है. वह आदर पूजा क्यों न पाए, जब समाज उसकी मेहनत से अपने को ऊंचा उठा पाए.

साहित्यकार भले आदमी की बुराईयों को कुछ इस ढंग से जनता के सामने रखता है कि भले आदमी की शान में रतीभर फरक नहीं पड़ता. यह कुछ बढ़ कर कहना नहीं है कि साहित्यकार भले आदमी की बुराईयों को रोशनी में लाकर भी कुछ दूरजे तक भले आदमी के शान को बढ़ा ही देता है. यह इसलिये होता है कि भले आदमी के तारीफ करने वालों की निगाह तो उसकी बुराईयों पर पड़ती नहीं, और ऐब निकालने वालों की नजर सिर्फ बुराईयों पर पड़ती है. इस लिये ऐब निकालने वाला भले आदमी से बचता है और उसकी बुराई पर उतारू हो जाता है. साहित्यकार भले आदमी की बुराईयों को ढंग से रखने के कारन ऐब निकालने वालों में भी भले आदमी

साहित्यकार (अदीब) का फुर्र (परी) सन् '५१

आदमी को मजबूर कर देता है कि वह अपने को भला आदमी मानने जानने लगे और भलाई में लग जाय.

### बुराई में भलाई

साहित्यकार बुरे आदमी की भलाई को सामने लाकर बुरे के साथ जनता की हمدर्दी का मेल करा देता है. वह बुराई की जन-कारी को जनता के दिल में कुछ इस तरह बिठाता है कि जनता न तो उस बुराई को अपनाती है और न बुरे में उस बुराई को बुरा समझती है. बुराईयों को जनता ऐसे देखती है जैसे किसान खाद को और यही साहित्यकार का वह चमत्कार है जिसकी वजह से वह समाज में आदर पूजा की जगह बना लेता है. वह आदर पूजा क्यों न पाए, जब समाज उसकी मेहनत से अपने को ऊंचा उठा पाए.

साहित्यकार भले आदमी की बुराईयों को कुछ इस ढंग से जनता के सामने रखता है कि भले आदमी की शान में रतीभर फरक नहीं पड़ता. यह कुछ बढ़ कर कहना नहीं है कि साहित्यकार भले आदमी की बुराईयों को रोशनी में लाकर भी कुछ दूरजे तक भले आदमी के शान को बढ़ा ही देता है. यह इसलिये होता है कि भले आदमी के तारीफ करने वालों की निगाह तो उसकी बुराईयों पर पड़ती नहीं, और ऐब निकालने वालों की नजर सिर्फ बुराईयों पर पड़ती है. इस लिये ऐब निकालने वाला भले आदमी से बचता है और उसकी बुराई पर उतारू हो जाता है. साहित्यकार भले आदमी की बुराईयों को ढंग से रखने के कारन ऐब निकालने वालों में भी भले आदमी



रिश्ताने का काम उस वक़्त से जारी है जिस दिन से आदमी जानवरों से अलग हुआ. इसी बात को यूं भी कहा जा सकता है कि उस गाने ने, जिसमें समझदारी के साथ अपने साधियों की भलाई गूँथी गई थी, आदमी को जानवर से ऊँचा उठाया, या दूसरे शब्दों में साहित्य (आदब) ने आदमी को उस पशुपन से दूर किया जो उसे आगे बढ़ने से रोके हुए था.

### साहित्य का नाप

साहित्य को व्यापक मानों में लें तो वह किताबों से नहीं नापा जाता, अगर गाना साहित्य का हिस्सा है तो साहित्य गीतों से नहीं नापा जाता, अगर बजाना साहित्य है तो साहित्य बाजे के यंत्रों से नहीं नापा जाता, अगर चित्रकारी साहित्य है तो चित्रों की गिनती से साहित्य की तरक्की की परताल नहीं हो सकती, अगर मूर्ति बनाना साहित्य है तो मूर्तियों की बहुत बड़ी तादाद इस बात का सबूत नहीं है कि साहित्य बहुत आगे बढ़ चुका है. अगर विज्ञान साहित्य है तो पेटम बम और हाइड्रोजन बम इस बात के सबूत नहीं कि साहित्य अब घुटनों के बल न चल कर हिरन की तरह छलांगों मार रहा है. साहित्य की नाप कुछ दूसरी ही चीज़ें हैं.

सच्चा और तीखा साहित्यकार वही है जो बड़ी से बड़ी बुराई में बड़ी भलाई देख पाता है और उस भलाई का ही आदर करता है उसी के गीत गाता है और उसी को लेकर वह बुरे आदमी की समाज से जान पहचान कराता है. जो वह बुरे को भला आदमी बना कर दुनिया के सामने लाता है और अपने बर्ताव से उस बुरे

दुजहाने का काम उस वक़्त से जारी है जिस दिन से आदमी जानवरों से अलग हुआ. इसी बात को यूं भी कहा जा सकता है कि उस गाने ने, जिसमें समझदारी के साथ अपने साधियों की भलाई गूँथी गई थी, आदमी को जानवर से ऊँचा उठाया, या दूसरे शब्दों में साहित्य (आदब) ने आदमी को उस पशुपन से दूर किया जो उसे आगे बढ़ने से रोके हुए था.

### साहित्य का नाप

साहित्य को व्यापक मानों में लें तो वह किताबों से नहीं नापा जाता, अगर गाना साहित्य का हिस्सा है तो साहित्य गीतों से नहीं नापा जाता, अगर बजाना साहित्य है तो साहित्य बाजे के यंत्रों से नहीं नापा जाता, अगर चित्रकारी साहित्य है तो चित्रों की गिनती से साहित्य की तरक्की की परताल नहीं हो सकती, अगर मूर्ति बनाना साहित्य है तो मूर्तियों की बहुत बड़ी तादाद इस बात के सबूत नहीं है कि साहित्य बहुत आगे बढ़ चुका है. अगर विज्ञान साहित्य है तो पेटम बम और हाइड्रोजन बम इस बात के सबूत नहीं कि साहित्य अब घुटनों के बल न चल कर हिरन की तरह छलांगों मार रहा है. साहित्य की नाप कुछ दूसरी ही चीज़ें हैं.

सच्चा और तीखा साहित्यकार वही है जो बड़ी से बड़ी बुराई में बड़ी भलाई देख पाता है और उस भलाई का ही आदर करता है उसी के गीत गाता है और उसी को लेकर वह बुरे आदमी की समाज से जान पहचान कराता है. जो वह बुरे को भला आदमी बना कर दुनिया के सामने लाता है और अपने बर्ताव से उस बुरे



बस हिन्दू साहित्यकार (अदीब) का फर्क करवरी सन् '५१

आदमी को जितने भीतर तक पहुँचाते हैं और मन को साफ कर के अपने भीतर बैठे परमात्मा को झाँकने के लिये तैयार करते हैं उतने बड़े बड़े विद्वान कलाविदों की रचनाएं नहीं। साहित्यकार साहित्यकार नहीं रह जाता जब वह टीका और समालोचना के काम में लगता है, क्योंकि टीका में नवीन सिरजन नहीं रहता और समालोचना में भलाई का अंश पूरा नहीं रहता।

### इच्छा और प्रेम

साहित्यकार बनने से पहले आदमी में किसी से प्रेम होना जरूरी है, फिर चाहे वह अपनों से हो, अपने समाज से हो, अपने देस से हो, अपने राम से या अपने राम की रचना से हो। राम की रचना में वेद जैसे पशु पक्षी सभी आ जाते हैं। साहित्यकार के लिये दूसरी जरूरी चीज है उन सबके दुख दूर करने की इच्छा। बस यह इच्छा और प्रेम दोनों मिलकर उसके अन्दर सोई हुई भलाइयों को जगाते हैं और जगी हुई बुराइयों को सुलाते हैं। एक की बुराइयों को छोड़कर उसकी भलाई को प्रकाश में लाने की सब क्रियाएं साहित्य नाम पाती हैं। यों दूसरों का हित ही साहित्य है। दूसरों के हित में अपना हित है। दूसरों का हित सोच कर जो कुछ भी किया जाता है उसी का नाम श्रेष्ठ आचार है। वही अदब कहलाता है। इसलिये साहित्य को लोग अदब कहकर भी बोलते हैं। अब साहित्यकारों की गिन्ती बेहद बढ़ जाती है और पशु पक्षियों को सामने रखकर तो सभी आदमी

नया हल

साहित्यकार (अदीब) का फर्क करवरी सन् '५१

आदमी को जितने भीतर तक पहुँचाते हैं और मन को साफ कर के अपने भीतर बैठे परमात्मा को झाँकने के लिये तैयार करते हैं उतने बड़े बड़े विद्वान कलाविदों की रचनाएं नहीं। साहित्यकार साहित्यकार नहीं रह जाता जब वह टीका और समालोचना के काम में लगता है, क्योंकि टीका में नवीन सिरजन नहीं रहता और समालोचना में भलाई का अंश पूरा नहीं रहता।

### इच्छा और प्रेम

साहित्यकार बनने से पहले आदमी में किसी से प्रेम होना जरूरी है, फिर चाहे वह अपनों से हो, अपने समाज से हो, अपने देस से हो, अपने राम से या अपने राम की रचना से हो। राम की रचना में वेद जैसे पशु पक्षी सभी आ जाते हैं। साहित्यकार के लिये दूसरी जरूरी चीज है उन सबके दुख दूर करने की इच्छा। बस यह इच्छा और प्रेम दोनों मिलकर उसके अन्दर सोई हुई भलाइयों को जगाते हैं और जगी हुई बुराइयों को सुलाते हैं। एक की बुराइयों को छोड़कर उसकी भलाई को प्रकाश में लाने की सब क्रियाएँ साहित्य नाम पाती हैं। यों दूसरों का हित ही साहित्य है। दूसरों के हित में अपना हित है। दूसरों का हित सोच कर जो कुछ भी किया जाता है उसी का नाम श्रेष्ठ आचार है। वही अदब कहलाता है। इसलिये साहित्यकारों की गिन्ती बेहद बढ़ जाती है और पशु पक्षियों को सामने रखकर तो सभी आदमी



भलाई में लगते हैं. पढ़ना लिखना वनसे अलग भी रह सकता है. ऐसे साहित्यकार ही दुनिया के लिये कोई अमर चीज छोड़ जाते हैं, और वन साहित्यकारों में आप मुहम्मद साहब, नानक साहब, कबीर साहब, रैदास, मीरा को गिन सकते हैं. और भी इसी तरह के सन्तों की गिनती सच्चे साहित्यकारों में हो सकती है.

### साहित्य क्या है ?

बहु सब साहित्य है जिससे दुनिया का कुछ भलाई हुई. जिससे आदमी जानवरों से ऊंचा उठा, जिसके जरिये आदमी ने अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू पाना सीखा, अपने मन के घोड़े को लगाम लगाना जाना और अपने मन के सागर में उठती हुई तरंगों से काम लेने की कला निकाली.

अब साहित्यकार सिर्फ़ वह रह जाता है जो अपने साहित्य के जरिये मानव समाज को ऊंचा उठाए और उसी साहित्य की टेक बनाकर उसे फिर नीचे गिरने से रोके. उस साहित्यकार का समाज में ऊंचा मान होगा ही. ऊंचे स्थान पर पहुँचने से उसकी बिस्मय-रियां बेहद बढ़ जाती हैं और बिस्मयारियां घमंड से फूलने नहीं देतीं. अगर ऐसा साहित्यकार बमंडी है तब यही समझना चाहिये कि उसने अपनी बिस्मयारियों को ठीक ठीक नहीं पढ़ना. उसके साहित्य से दुनिया की इतनी भी भलाई नहीं हो सकती जितनी उसके लिखने में मेहनत लगी है.

जो साहित्यकार अपने पर क़ाबू रखकर, अपने को पहचानकर साहित्य रचना है वह असरदार होता है, वही वो मीरा के भजन

बैलानी में लگते हैं. पड़ेला लड़ेला उन से अलग भी रह सकता है. ऐसे साहित्यकार ही दुनिया के लिये कोई अमर चीज छोड़ जाते हैं. और उन साहित्यकारों में आप मुहम्मद साहब, नानक साहब, कबीर साहब, रैदास, मीरा को गिन सकते हैं. और भी इसी तरह के सन्तों की गिनती सच्चे साहित्यकारों में हो सकती है.

### साहित्य क्या है ?

वे सब साहित्य है जिस से दुनिया की कुछ बेहती हुई. जिस से आदमी जानवरों से ऊंचा उठा, इसके जरिये आदमी ने अपनी अन्द्रियों पर क़ाबू पाना सीखा. अपने मन के क़हरो के लक़ाम लगाना जाना और अपने मन में सागर में उठती हुई तरंगों से काम लेने की कला निकाली.

अब साहित्यकार का वरुण वे जाता है जो अपने साहित्य के जरिये मानसज को ऊंचा उठाए और उसी साहित्य की टेक बना कर उसे नीचे करने से रोके. उस साहित्यकार का समाज में ऊंचा मान होगा ही. ऊंचे स्थान पर पहुँचने से उसकी घमंड से फूलने नहीं देतीं. अगर ऐसा साहित्यकार ऊंचा उठा है तब यही समझना चाहिये कि उसने अपनी बिस्मयारियों को ठीक ठीक नहीं पढ़ना. उसके साहित्य से दुनिया की इतनी भी भलाई नहीं हो सकती जितनी उसके लिखने में मेहनत लगी है.

जो साहित्यकार अपने पर क़ाबू रखकर, अपने को पहचान कर साहित्य रचना है वह असरदार होता है, वही वो मीरा के भजन



## साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज

साहित्य (अदब) आदमी के ही हिस्से में आया, उस की ही देन है, और यह भी आदमी का कहना है कि साहित्य के बिना आदमी साफ़ बे पूँछ साँग का जानवर है. साहित्यकार (अदीब) ने ऐसी ऊँची बात कह तो डाली पर साँग पूँछ वाले जानवर को सामने रखकर, मेरी राय में, कोई आदमी ऐसा नहीं मिल सकता जो साहित्यकार न हो. जिस तरह पहाड़ की चोटी के पत्थरों में और तलहटी के पत्थरों में कोई अन्तर तो नहीं होता, पर राहगीर के लिये तलहटी के पत्थरों के पत्थर काम देते हैं उतने तलहटी के नहीं. इसलिये जितने चोटी के पत्थर काम देते हैं उतने तलहटी के नहीं. इसलिये चोटी के पत्थरों का मोल बढ़ जाता है और उनका अग्रना एक अलग बर्ग बन जाता है, ठीक इस तरह लिखे पड़े साहित्यकारों (अदीबों) का बर्ग बन गया है और उनको दुनिया में एक खास जगह मिल गई है क्योंकि वह राहगीर की राह में औरों के मुकाबले में ज्यादा मददगार साबित होते हैं.

साहित्यकार और लेखक दो अलग हैं. जिस लेखक को मैं साहित्यकार से अलग कर रहा हूँ वह लेखक वह नहीं है जिसे दुनिया बलक या कातिब नाम से पुकारती है. लेखक से मेरा मतलब है ऐसे प्रन्थकार जो दुनिया के लिये बड़ी बड़ी किताबें लिखकर छोड़ जाते हैं. मैं उनको लेखक नाम से सिर्फ़ इसलिये पुकारता हूँ कि

## साहित्ये कार (अदीब) का फ़र्ज

साहित्ये (अदब) आदमी के ही हिस्से में आया, उस की ही देन है, और यह भी आदमी का कहना है कि साहित्य के बिना आदमी साफ़ बे पूँछ साँग का जानवर है. साहित्ये कार (अदीब) ने ऐसी ऊँची बात कह तो डाली पर साँग पूँछ वाले जानवर को सामने रखकर, मेरी राय में, कोई आदमी ऐसा नहीं मिल सकता जो साहित्ये कार न हो. जिस तरह पहाड़ की चोटी के पत्थरों में और तलहटी के पत्थरों में कोई अन्तर तो नहीं होता, पर राहगीर के लिये तलहटी के पत्थरों के पत्थर काम देते हैं उतने तलहटी के नहीं. इसलिये जितने चोटी के पत्थर काम देते हैं उतने तलहटी के नहीं. इसलिये चोटी के पत्थरों का मोल बढ़ जाता है और उनका अग्रना एक अलग बर्ग बन जाता है, ठीक इस तरह लिखे पड़े साहित्यकारों (अदीबों) का बर्ग बन गया है और उनको दुनिया में एक खास जगह मिल गई है क्योंकि वह राहगीर की राह में औरों के मुकाबले में ज्यादा मददगार साबित होते हैं.

साहित्ये कार और लेखक दो अलग हैं. जिस लेखक को मैं साहित्ये कार से अलग कर रहा हूँ वह लेखक वह नहीं है जिसे दुनिया बलक या कातिब नाम से पुकारती है. लेखक से मेरा मतलब है ऐसे फ़र्ज कार जो दुनिया के लिये बड़ी बड़ी किताबें लिखकर छोड़ जाते हैं. मैं उनको लेखक नाम से सिर्फ़ इसलिये पुकारता हूँ कि





जिल्द १०

फरवरी सन् '५१

नम्बर २

नمبر १

फरवरी سن ۵۱

جلد ۱۰

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,  
'नयाहिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की मोली.

جالت آدمي، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،  
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

## गीत

(डाक्टर मसऊद हुसैन खाँ)

जीवन पथ पर

चल चल कर जब थक थक जाते  
तुम याद आते

चाहत इसकी, चाहत इसकी  
हर हर पल एक नई लुशी सी  
हँस हँस कर जब कुछ नहीं पाते

तुम याद आते

इसको पाऊँ, इसको पाऊँ  
तारे छूँ, चाँदको जा लूँ  
गिर गिर कर जब ठठ नहीं पाते

तुम याद आते

इससे खेळूँ, इससे खेळूँ  
इसको लेकर इसको लेकर  
पाऊँ भी जब कुछ नहीं पाते

तुम याद आते

## گیلتا

(ڈاکٹر مسعود حسین خان)

جیون پتہ پر

چل چل کر جب تھک تھک جاتے  
تم یاد آتے

چاہت اِس کی، چاہت اِس کی  
ہر ہر پل اک نئی خوشی سی  
ہنس ہنس کر جب کچھ نہیں پاتے

تم یاد آتے

اِس کو پالوں، اِس کو پالوں  
تارے چھووں، چاند کو جا لوں  
گِر گِر کر جب اُٹھ نہیں پاتے

تم یاد آتے

اِس سے کھیلوں، اِس سے کھیلوں  
اِس کو لے کر، اِس کو لے لوں  
پاگَر بھی جب کچھ نہیں پاتے

تم یاد آتے



“क्या हिन्दू”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द्र, भगवानदीन, मुखर्जन हसन, विरम्भरनाथ, सुन्दरलाल

₹ १६५० से ११५१

क्या किस से

सफा

- १—गीत—डाक्टर मसऊद हुसैन खां ... १०१
- २—साहित्यकार (अदीब) का फर्ज—भगवानदीन ... १०२
- ३—सन १९५०—एक नजर—भाई सुरेश रामभाई ... १२२
- ४—सरकार के सोचने की बात—भाई भगवानदास केला १४४
- ५—स्वार्थ की अनाली देन (कहानी)—भाई श्रीनाथ ... १५१
- ६—दुनिया का हाल—भाई इशरत अला मिहिकी ... १५७
- ७—राशन साथ (कविता)—इशरत ‘जिगर’ मुरादाबादी १६६
- ८—बच्चों की दुनिया—रत्न (कविता)—भाई महमूद; मेरा काम—भाई जाहिरुल अमीन; चालाकी (कहानी)—बहन अहमदी मक़तूल रिजवी; अक़्क़ा हो (कविता)—भाई चन्द्र नाथ मालवीय ... १७०
- ‘वारीश’ ... १७५
- ९—कुछ किताबें—लेनिन (जीवनी), महाजन, पूर्वोदय. हमारा गांधी वापन करो. ... १७५
- १०—हमारी राय—ट्रमैन साहब घबरा उठे—भगवानदीन; कोरिया का झमेला—भगवान दीन; कोटा दीन; कोरिया का झमेला—भगवान दीन; नेपाल के सम्मेलन के सभापति—भगवान दीन; नेपाल के सुधार—भगवानदीन, ठक्कर बापा—भगवानदीन १८६

क्रांत—हिन्दुस्तान में छं रुपया साल, बाहर इस रुपया साल में छं रुपया साल

मनेजर

“नया हल्द”

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

एडिटर—

ताराचन्द्र, भगवान दीन, मुखर्जन हसन, विरम्भरनाथ, सुन्दरलाल

₹ १६५० से ११५१

क्या किस से

सफा

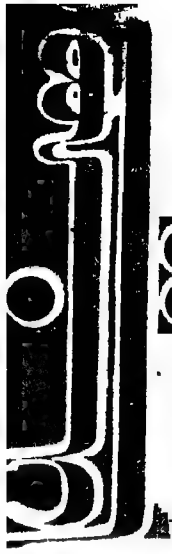
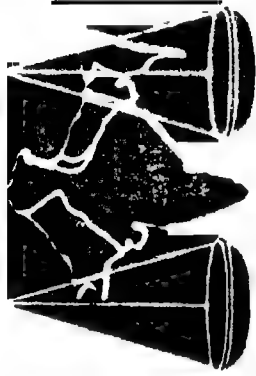
- १—गीत—डाक्टर मसऊद हुसैन खां ... १०१
- २—साहित्यकार (अदीब) का फर्ज—भगवानदीन ... १०२
- ३—सन १९५०—एक नजर—भाई सुरेश रामभाई ... १२२
- ४—सरकार के सोचने की बात—भाई भगवानदास केला १४४
- ५—स्वार्थ की अनाली देन (कहानी)—भाई श्रीनाथ ... १५१
- ६—दुनिया का हाल—भाई इशरत अला मिहिकी ... १५७
- ७—राशन साथ (कविता)—इशरत ‘जिगर’ मुरादाबादी १६६
- ८—बच्चों की दुनिया—रत्न (कविता)—भाई महमूद; मेरा काम—भाई जाहिरुल अमीन; चालाकी (कहानी)—बहन अहमदी मक़तूल रिजवी; अक़्क़ा हो (कविता)—भाई चन्द्र नाथ मालवीय ... १७०
- ‘वारीश’ ... १७५
- ९—कुछ किताबें—लेनिन (जीवनी), महाजन, पूर्वोदय. हमारा गांधी वापन करो. ... १७५
- १०—हमारी राय—ट्रमैन साहब घबरा उठे—भगवानदीन; कोरिया का झमेला—भगवान दीन; कोटा दीन; कोरिया का झमेला—भगवान दीन; नेपाल के सम्मेलन के सभापति—भगवान दीन; नेपाल के सुधार—भगवानदीन, ठक्कर बापा—भगवानदीन १८६

क्रांत—हिन्दुस्तान में छं रुपया साल, बाहर इस रुपया साल में छं रुपया साल

मनेजर



# हिन्दुस्तानी



इस नम्वर के ग्नास लेख —

साहित्यकार (अदीब) का कर्ज—भगवानदीन

सरकार के सांचे की बात—भाई भगवान दास केल

सन १९५० - एक नज़र—भाई मुरेश राम भाई

हमारी राय :—

ट्रेमैन साहब घबरा उठे—भगवानदीन

कोटा सम्मेलन के सभापति—भगवानदीन

ठकर बापा—भगवानदीन

गण, वर

फरवरी सन् १९५१

क्रीमत दस आला

हिन्दुस्तानी कलत्रा मोमाइटी. इलाहाबाद

हिन्दुस्तानी कलत्रा सुसादती. अलाबाद

सि फिरो के खास लिफ्ट ---

साहबकेदार (अदीब) का फ़रुज—भेगवान दीन

सरकार के सुचले की बात—भेगवान दास खेला

सन १९५० - एक नज़र—भेगवान दास खेला

भेगवान दास खेला

फ़रुज के साहब केदार खेला

कोटा सम्मेलन के सभापति—भेगवान दीन

ठकर बापा—भेगवान दीन

फ़रवरी सन् १९५१

क्रीमत दस आला



# भारत का विधान

## पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

‘भारत में अंगरेजी राज’ के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिम्मे विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप अपने वाले आम चुनाव में जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आमती के लिये कितने के आन्दोलन में हिन्दी में अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी माठ पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आमन नामहावरा भाषा, राज्यल अठपेजी बडा माइज. लगभग चार सौ पत्रे, कपड़े की मुन्दर जिल्द. कीमत केवल साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :—

मनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, मुद्रा गंज.

इलाहाबाद.

# भारत का उद्धान

## पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ.

‘भारत में अंगरेजी राज’ के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस उद्धान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप अपने वाले आम चुनाव में जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आमती के लिये कितने के आन्दोलन में हिन्दी में अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी माठ पत्रों की शब्दमाला दे दी गई है. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आमन नामहावरा भाषा, राज्यल अठपेजी बडा माइज. लगभग चार सौ पत्रे, कपड़े की मुन्दर जिल्द. कीमत केवल साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :—

मनेजर ‘नया हिन्द’

१४५, मुद्रा गंज.

इलाहाबाद.



प्रचार करता जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों।

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों बरतना का आपना।

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, समाओं, कानकरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, विरदारियों और किर्तों में आपस का मेल बढ़ाना।

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद खवाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दलाल गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंजर अली साखता, श्री बी० जी. खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० शिवधर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क्लासी मोहम्मद अब्दुल गफ्फार और श्री श्रीम प्रकाश पालीवाल।  
मेम्बरों के क्रायदों के लिये लिखिये।

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,  
१४५, मुट्टी गंज, इलाहाबाद।

नोट—सोसाइटी के नये क्रायदों के अनुसार मेम्बरों की फीस सिर्फ एक रुपया कर दी गई है। “नया हिन्दू” के जो गाइड मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ छे रुपया चन्ददा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा। अलग से मेम्बरों की फीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होमी मुफ्त ले सकेंगे वा ज्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे।

(१) एक ایسی هلدستانی فلیچر پوهان پوهان او پرچر کړنا جس مېن سب هلدستانی شامل هېږ .

(۲) ایکټا پوهانۍ ک لټۍ کتابسون، اخبارون، رسالون وغیره کا چپایلا .

(۳) پوهانۍ کپرون، کتاب کپرون، سپهارن، کانفرنسون، انکچرون ۽ سب دپرمون چاتون، پروډرېون او فیکتون ۽ سب آیس کا مهل پوهان

سوسائټي کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالجید خراجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالستق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سیکریٹری—پلڈت ملدارال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—  
ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر نازا چلدا، مولوی سید سیدمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کپور، مسٹر ایس. کے. ودرار، پلڈت بشمپور ناتھ، مہاتما بھگوان دین، ستہ ہونم چلدا وڈکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش بالہوال۔  
ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

ملدارال

سکریٹری، هلدستانی کلچر سوسائټی،  
۱۴۵، مٹھی کلچ، اہلہاد۔

نوٹ—سوسائټي کے لئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کرنی لگی ہے۔ ”نہا هلد“ کے جو لالک ممبر ملدا چاهیں ان کو صرف چھ روپیہ چلدا دینا ہی ممبر ملنا لیا جائیگا۔ انگ ۽ ممبری کی فیس دینا والے سوسائټي کی نکلی ہوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوئی ملد لے سکے گی ۽ زیادہ دام کی کتابیں اولہ ہر ایک روپیہ کم کرلے سکیگا۔



## हिन्द के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखाबट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ साठ सात अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महत्त्वा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं। भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये। क्रियत दो रुपये.

**मुख्य देश भक्त**—लेखक—श्री रतन लाल बंसल  
उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की खंजीरों से आजाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क्रियत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी शाकियों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान कुर्बान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो किरावादाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.  
सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ दारु रुपये.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री भार. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिल चस्पी रखते हैं, और भारत

## हिन्द के उद्धान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखाबट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ साठ सात अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महत्त्वा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं। भारत के उद्धान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिए. क्रियत दो रुपये.

**मुख्य देश भक्त**—लेखक—श्री रतन लाल बंसल  
उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की खंजीरों से आजाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क्रियत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

**आज के शहीद**—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी शाकियों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान कुर्बान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो किरावादाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.  
सुन्दर जिल्द और चिकने कागज पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ दारु रुपये.

**किसान की पुकार**—लेखक—श्री भार. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती बाड़ी से दिल चस्पी रखते हैं, और भारत



अलग अलग मिल सकती हैं .

पाँच से ज्यादा किताबें खरीदने वालों और बुकसेलरों को ३३ फ्रीसवी कमीशन दिया जायगा.

ढाक या रेल स्क्वैर हर हालत में गाहक के खिस्मे होगा .

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक--श्री मंजर अली सोख्ता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी कि कांग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांग्रेस वाले इक़मत से बाहर निकल कर एक लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछघण्टे पहले महात्मा जी ने कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर बह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ से उसे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख्ता ने की है जो गांधी बाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी बाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफे की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपये.

मिस्त्र का पता--जैनगर, 'नया हिन्द' १४५, सुट्टी गंज, इलाहाबाद.

एक एक मिल सकती हैं .

पान्च से زیادہ کتابوں خریدنے والوں اور بکسہلوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائے گا .

ঢাকা یا রেল স্কোয়ার هر حالت میں গাহক کے ذمہ ہوگا .

## مہاتما گاندھی کی وصیت

لکھک--شہری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سچھاو کے روپ میں 'لوک سہوک سنگھ' کا ایک نہا ودیان تیار کیا تھا . اس ودھان میں انہوں نے صلح شہی کمی کے کانگریس کا سارا سنگتھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سہوک سنگھ' بنا کر کام کریں .

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وا ودھان دیا کہ وا گاندھی جی کی طرف سے آئے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کردیں . یہ چھوٹا سا ودھان دیہی کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ویانکھیا گاندھی جی کے پرم بہکت شہری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی راڈ کو مسجھلے اور اپنلے والے دیہی کے لئے لکے لوکوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی راڈ کو مسجھلے کے لئے ایسا پوچھا بہت ضروری ہے . ۲۲۵ صلحے کی صلدر جلد بلدی کتاب کی قیمت صرف نو روپے .

میلے کا پتہ--منوجو 'نہا هلدا' ۱۴۵ 'مٹھی گنج' الد آباد.



नया हिन्दू

हमारी राय

जनवरी सन् १९१२

हमें लोगों के विश्वास पर हमला करने का कोई हक हासिल नहीं। मरने वाले के बेटी बेटे और रिश्तेदार पूरे आजाद होने चाहिये, और रहने कि वह अपने बुजुर्गों के पूज हरिद्वार सिराएं, त्रिवेनी में बहाएं या मानसरोवर पहुँचाएं और उसपर जिनना चाहें खर्च करें। जितनी बाहें स्पेशल ट्रेनें छोड़ें। हां, सरकार का रेल मुहकमा उन से पैसा ले कर हर तरह का सुभीता कर दे। पर एक सरकार जो बगोहारी सरकार होने का दावा करती है अगर वह इस तरह के कामों में हाथ बटाने लगे तो उंगली उठाने वालों को रोतने की हिम्मत किसकी हो सकती है।

रेल में, धर्मशाला में, स्कूलों में, घरों में हमने जा जा कर लोगों के ताने सुने। और हम किस मुँह से क्या जवाब देते। हम उनकी परबाह न करते अगर कम से कम इनादावाद के उन हिन्दुओं के तसल्ली हो गई हंती जो इस रसम पर सच्चे जी से विश्वास करते हैं। उनके ताने तो सुनकर हम एँठ कर रह गए। इनका कहना था कि जब धर्म की रसम ही अदा करनी थी तो निरा दिलावा क्यों किया देखने जाने वालों को आस तौर से और सिराने बाजों का खाम तौर से गंगा स्नान भी तो करना था। इस स्नान के वगैर बह हिन्दू जो सच्चे जी से हिन्दू हैं कैसे मान लें कि यह अस्थियों के फूट सिराने की रसम के पीछे सिराने वालों के दिल में धर्म का सच्चा भावना भी थी।

हम क्या जवाब देते। मन में यही कह कर रह गए कि सरकार इतना पैसा खर्च करके भी न इधर की रही न उधर की।

भगवान हमें समझ दें

—भगवानदीन

२७ १० १९०

नया हिन्दू

हमारी राय

जनवरी सन् १९१२

हमें लोगों के विश्वास पर हमला करने का कोई हक हासिल नहीं। मरने वाले के बेटी बेटे और रिश्तेदार पूरे आजाद होने चाहिये, और रहने कि वह अपने बुजुर्गों के पूज हरिद्वार सिराएं, त्रिवेनी में बहाएं या मानसरोवर पहुँचाएं और उसपर जिनना चाहें खर्च करें। जितनी बाहें स्पेशल ट्रेनें छोड़ें। हां, सरकार का रेल मुहकमा उन से पैसा ले कर हर तरह का सुभीता कर दे। पर एक सरकार जो बगोहारी सरकार होने का दावा करती है अगर वह इस तरह के कामों में हाथ बटाने लगे तो उंगली उठाने वालों को रोतने की हिम्मत किसकी हो सकती है।

दिल में, धर्मशाला में, स्कूलों में, घरों में हमने जा जा कर लोगों के ताने सुने। और हम किस मुँह से क्या जवाब देते। हम उनकी परबाह न करते अगर कम से कम इनादावाद के उन हिन्दुओं के तसल्ली हो गई हंती जो इस रसम पर सच्चे जी से विश्वास करते हैं। उनके ताने तो सुनकर हम एँठ कर रह गए। इनका कहना था कि जब धर्म की रसम ही अदा करनी थी तो निरा दिलावा क्यों किया। देखने जाने वालों को आस तौर से गंगा स्नान भी तो करना था। इस स्नान के वगैर बह हिन्दू जो सच्चे जी से हिन्दू हैं कैसे मान लें कि यह अस्थियों के फूट सिराने की रसम के पीछे सिराने वालों के दिल में धर्म का सच्चा भावना भी थी।

हम क्या जवाब देते। मन में यही कह कर रह गए कि सरकार इतना पैसा खर्च करके भी न उधर की रही न उधर की।

भगवान हमें समझ दें।

२१-१२-१०

—भगवान दीन



یہ کورا دراج نہیں ہے۔ اس کے پیچھے بڑے بڑے پلندوں کے لکھ ہوئے کرتوتوں نے ایک گہری دھرم بھارنا بھر دی ہے اور غلط یا صحیح یہوں سرانے والے یہ سبجہ ایتھے ہیں کہ یہوں سرانے سے جس آدمی کے یہوں سرانے گئے ہیں اُسکی آتما تر جائے گی یا سو رگ میں جگہ پائیگی۔ یہ بات ہم ہندوستانیوں میں آزادی گہری چلی گئی ہے کہ ہم اُسکے خلاف سوچ ہی نہیں سکتے۔ آج کے سدھارک پلندت کولہا ہی زور لٹائیں اور سبجہ ایتھں کہ یہ بھکار کی رسم ہے لوگ ماننے اور سبجہ لے کر تھار نہیں ہوں۔ اس طرح سے یہ ایک دین ہوم کی روڑھی ہے۔

کسی آدمی کے بھیجے یا رشتہ دار یہ ہمت نہیں کر سکتے کہ اس رسم کی طرف سے لاپرواہی کر جائیں۔ ہوسکتا ہے کہ کوئی سدھا رک اتنا پکا نکل آئے کہ وہ اسکی پروا نہ کرے۔ پر یہ وہ بھی نہیں کر سکتا کہ ان پولوں کو بین ہی چھترا دے کہونکہ ایسا کرنے سے ساج اگر کسی گردان ناپائے کو تیار نہیں ہوگا تو کیا سدا میں کوئی کور کسی نہ چھوڑ رکھتا۔ یہ ناستجہی سے بھری ہوئی رسم صرف ایسے بڑے آدمی ہی روک سکتے ہیں جو مرنے سے پہلے اپنے بھتی بھتیوں یا رشتے داروں کے نام ایسی لکھت چھوڑ جائیں کہ ان کی استہمیں کے بھول اس طرح گٹکا یا کسی نئی میں نہ سرائے جائیں اور چہاں آکا داہ ہوا ہو وہیں زمیں کے ساتھ ایک مہک ہونے کے لئے چھوڑ دیئے جائیں۔ کلگریسی لوقدروں سے 'جنہوں نے دیلی سرکار کی جگہ بیہوداری سرکار کی نہو ڈالی' ہمیں ایسی اُمد تھی کہ ان میں سے کوئی تو ایسی لکھت چھوڑے گا۔ اور جن لہقدروں پر ہمارے نٹاہ تھی یا ہ ان میں سے ایک ہمارے بھارے سوار پتھل بھی تھے۔ پر وہ کیا کرتے۔ اور مرنے والوں کی طرح انہیں یہ کب دھواس تھا کہ ان کا آخری وقت آگیا ہے۔ پر اس سے پہلے اس طرح کی کوئی مثال بھی تو ان کے سامنے نہیں تھی۔

यह कोरा रिवाज नहीं है। इस के पीछे बड़े बड़े पंडितों के लिले हुए ग्रन्थों ने एक गहरी धर्म भावना भर दी है और गलत या सही फूल सिराने वाले यह समझ लेते हैं कि फूल सिराने से जिस आदमी के फूल सिराए गए हैं उसकी आत्मा तर जाएगी या स्वर्ग में जगह पाएगी। यह बात हम हिन्दुस्तानियों में इतनी गहरी चली गई है कि हम इसके खिलाफ़ साब ही नहीं सकते आज के सुधारक पंडित कितना ही जोर लगाएँ और समझाएँ कि यह बेकार की रसम है, लोग मानने और समझने को तैयार नहीं हैं। इस तरह से यह एक दैन धर्म की रूढ़ि है।

किसी आदमी के बेटी बेटे या रिश्तेदार यह हिम्मत नहीं कर सकते कि इस रसम का तरफ़ से लापरवाही कर जाएं. हो सकता है कि कोई सुधारक इतना पक्का निकल आए कि वह इसकी परवा न करे. पर यह बह भी नहीं कर सकता कि उन फूलों को यूँ ही छित्रा दे क्योंकि ऐसा करने से समाज अगर उसकी गर्दन नापने को तैयार नहीं होगा तो कदा सुनी में कोई कौर कसर न छोड़ रखेगा. यह नासमझी से भरी हुई रसम सिर्फ़ ऐसे बड़े आदमी ही रोक सकते हैं जो मरने से पहले अपने बेटी बेटों या रिश्तेदारों के नाम ऐसी लिखत छोड़ जाएँ कि उनकी बस्थियों के फूल इस तरह गंगा या किसी नदी में न सिराए जाएँ और जहाँ उनका दाह हुआ हो वहीं जमीन के साथ एक मेक होने के लिये छोड़ दिये जाएं. कांग्रेसी लीडरों से, जिन्होंने दीनी सरकार की जगह ब्योहारी सरकार की नींव डाली, हमें ऐसी उम्मीद थी कि उन में से कोई तो ऐसी लिखत छोड़ेगा. और जिन लीडरों पर हमारी निगाह थी या है उन में से एक हमारे ध्यारे सरदार पटेल भी थे. पर वह क्या करते. और मरने वालों की तरह उन्हें यह कब विश्वास था कि उन का आखिरी वक्त आगया है. पर इससे पहले इस तरह की कोई मिसाल भी तो उनके सामने नहीं थी.

किसी आदमी के बेटी बेटे या रिश्तेदार यह हिम्मत नहीं कर सकते कि इस रसम का तरफ़ से लापरवाही कर जाएं. हो सकता है कि कोई सुधारक इतना पक्का निकल आए कि वह इसकी परवा न करे. पर यह बह भी नहीं कर सकता कि उन फूलों को यूँ ही छित्रा दे क्योंकि ऐसा करने से समाज अगर उसकी गर्दन नापने को तैयार नहीं होगा तो कदा सुनी में कोई कौर कसर न छोड़ रखेगा. यह नासमझी से भरी हुई रसम सिर्फ़ ऐसे बड़े आदमी ही रोक सकते हैं जो मरने से पहले अपने बेटी बेटों या रिश्तेदारों के नाम ऐसी लिखत छोड़ जाएँ कि उनकी बस्थियों के फूल इस तरह गंगा या किसी नदी में न सिराए जाएँ और जहाँ उनका दाह हुआ हो वहीं जमीन के साथ एक मेक होने के लिये छोड़ दिये जाएं. कांग्रेसी लीडरों से, जिन्होंने दीनी सरकार की जगह ब्योहारी सरकार की नींव डाली, हमें ऐसी उम्मीद थी कि उन में से कोई तो ऐसी लिखत छोड़ेगा. और जिन लीडरों पर हमारी निगाह थी या है उन में से एक हमारे ध्यारे सरदार पटेल भी थे. पर वह क्या करते. और मरने वालों की तरह उन्हें यह कब विश्वास था कि उन का आखिरी वक्त आगया है. पर इससे पहले इस तरह की कोई मिसाल भी तो उनके सामने नहीं थी.



मुल्क बना दिये जाएं कि वह यू. एन. ओ. में शामिल हो सकें. तभी तीसरी लड़ाई कुछ दिनों के लिये रुक सकती है.

नौस का इस्तेमाल सारी दुनिया और कानूनी बनाकर जब दूसरी लड़ाई को न रोक सकी तब पेट्रम बम को और कानूनी बनाकर तीसरी लड़ाई को कैसे रोक सकेगी. तीसरी लड़ाई को हमेशा के लिये रोकने की छतिर सब मुल्कों को बड़े त्याग की जरूरत पड़ेगी और उन सब को अपनी अपनी नेशन यानी राष्ट्र का मोह छोड़ना पड़ेगा.

हमारी '३८ पड़ी रेखा मिटाइये' का यही मतलब है कि राष्ट्रीयता छोड़िये, अंतर राष्ट्रीयता अपनाइये और विरव भाईचारे में बंधिये. तब और तभी तीसरी लड़ाई आप के पास आने की कभी न सोचेगी.

१८. १२. '५०

—भगवानदीन

## सरकार और सरदार के फूल—

गंगा के किनारे देह दाह का रिवाज बहुत पुराना है. जो धर्म बहुत सी बातों में हिन्दुओं से मेल खाते हैं पर गंगा के किनारे देह दाह में विश्वास नहीं करते वह भी इस रिवाज से इतने दूब गए हैं कि उनको भी अपने बड़े बूढ़ों की आस्थियां गंगा के किनारे ही जलाने के लिये ले जानी पड़ती हैं. हां, जो लोग गंगा से बहुत दूर रहते हैं वह कम से कम हड्डियों के फूल ही जाकर गंगा में सिरा खाते हैं.

अभी लोग देस के किसी कोने में क्यों न हों अपने प्यारों की आस्थियां हरिद्वार या त्रिवेनी ज़रूर पहुँचा देते हैं. बीच के दरजे के लोग भी अपनी आत्मा के हाथ भिजवा देते हैं. गंगा से दूर रहने

मुल्क बना दिये जानें कि वह यू. एन. ओ. में शामिल हो सकें. तभी तीसरी लड़ाई कुछ दिनों के लिये रुक सकती है.

नौस का इस्तेमाल सारी दुनिया और कानूनी बना कर जब दूसरी लड़ाई को न रोक सकी तब पेट्रम बम को और कानूनी बना कर तीसरी लड़ाई को कैसे रोक सके. तीसरी लड़ाई को हमेशा के लिये रोकने की छतिर सब मुल्कों को बड़े त्याग की जरूरत पड़ेगी और उन सब को अपनी अपनी नेशन यानी राष्ट्र का मोह छोड़ना पड़ेगा.

हमारी '३८ पड़ी रेखा मिटाइये' का यही मतलब है कि राष्ट्रीयता छोड़िये, अंतर राष्ट्रीयता अपनाइये और विश्व भाईचारे में बंधिये. तब और तभी तीसरी लड़ाई आप के पास आने की कभी न सोचेगी.

१८-१२-५०

—भगवानदीन

## सरकार और सरदार के फूल—

गंगा के किनारे देह दाह का रिवाज बहुत पुराना है. जो धर्म बहुत सी बातों में हिन्दुओं से मेल खाते हैं पर गंगा के किनारे देह दाह में विश्वास नहीं करते वह भी इस रिवाज से इतने दूब गए हैं कि उनको भी अपने बड़े बूढ़ों की आस्थियां गंगा के किनारे ही जलाने के लिये ले जानी पड़ती हैं. हां, जो लोग गंगा से बहुत दूर रहते हैं वह कम से कम हड्डियों के फूल ही जाकर गंगा में सिरा खाते हैं.

अभी लोग देस के किसी कोने में क्यों न हों अपने प्यारों की आस्थियां हरिद्वार या त्रिवेनी ज़रूर पहुँचा दिये. बीच के दरजे के लोग भी अपनी आत्मा के हाथ भिजवा दिये. गंगा से दूर रहने



طے نہیں ہو پائی تھے چوٹنی فوجوں جو کوریا میں لڑ رہی تھیں وہاں ایسی سوجھ بوجھ نہ تھی کہ وہ یا لال چدن کے آنکھ چراتے پر کئی ہوں یا لال چدن کے اشارے پر کئی ہوں۔ یا لال چدن کے حکم سے کئی ہوں۔) کیونکہ انہیں صاف یہ دکھائی دے رہا تھا کہ ملچھوریا کی آزادی خطرے میں ہے۔

چوتھا وقت لڑائی (دکھ کا) بھی ہو سکتا تھا جب چوٹنی فوجوں کے ساتھ اُترتی کوریا نے یو۔ این۔ او۔ کی فوجوں کو قدامت پھیلانا شروع کر دیا تھا۔ اگر اُسوقت ۳۸ بڑی دیکھا پر لکھنے کی بات چوٹنی لور کوریائی فوجوں سے کہی جا رہی ہے۔ یو۔ این۔ او۔ نے ۳۸ بڑی دیکھا پر لور آنے کی بات ایلی فوجوں سے کہی ہوتی تو یو۔ این۔ او۔ ساری دنیا کی پلچھوایت ہے۔ اُسکی کسی بات پر ہار نہیں ہو سکتی۔ اور اُسکی کہی ہوئی ہار نہیں ہو سکتی۔ پر یو۔ این۔ او۔ جب ایک کٹ کی بن جاتی ہے تب اُس کٹ کا مکھیا اپنی ہار کو یو۔ این۔ او۔ کی ہار ماننے لگتا ہے۔ بس اسی وجہ سے یو۔ این۔ او۔ ٹھیک وقت پر ٹھیک کام نہیں کر پاتی۔

۳۸ بڑی دیکھا بھادی جاتی ہے جب چمرل مہک آرتھر اُسکے اُتر میں ہوتے ہیں اور یو۔ این۔ او۔ کو ۳۸ بڑی دیکھا کی یاد آجاتی ہے جب چمرل مہک آرتھر ۳۸ بڑی دیکھا کے دکھن میں ہوتے ہیں یا ۳۸ بڑی دیکھا اُن کے دکھن میں ہوتے ہیں بھی اُنکی آنکھوں کے سامنے ہوتی ہے نہ کہ پیٹھ کے پیچھے۔

یو۔ این۔ او۔ اور اُسکی سرکشا سمیٹی اُتر بڑے بڑے چار پانچ ملکوں کو ہتھیار بنانے اور لڑائی کے لئے تیار کرانے سے نہیں روک سکتی تب کوریا میں لڑائی (دکھ) کی بات کہہ کر یا سچ سچ میچ لڑائی کو روک کر بھی تیسری لڑائی کو آنے سے نہیں روک سکتی۔ اب یہ وقت آگیا ہے جب ۳۸ بڑی دیکھا دوس اور امریکی دماغ سے نکلا دی جائے۔ ساتھ ہی ساتھ جاپان اور جرمنی ایسے

تھ نہیں ہوں ہو پاؤں کی چیچی چیچی جو کوریا میں لڑ رہی ہے وہاں وہاں اپنی سُرور پر اپنے آپ گئے ہیں یا لال چین کے آؤل چورنے پر گئے ہیں یا لال چین کے اشارے پر گئے ہیں، یا لال چین کے دکھن سے گئے ہیں۔) کیونکہ انہیں صاف یہ دکھائی دے رہا تھا کہ کی مچھوریا کی آزادی خطرے میں ہے۔

بویا بکت لڑائی روکنے کا وہ بھی ہو سکتا تھا جب چیچی چیچی کے ساتھ اُترتی کوریا نے یو۔ این۔ او۔ کی فوجوں کو قدامت پھیلانا شروع کر دیا تھا۔ اگر اس وقت ۳۸ بڑی دیکھا پر لکھنے کی بات چوٹنی لور کوریائی فوجوں سے کہی جا رہی ہے یو۔ این۔ او۔ نے ۳۸ بڑی دیکھا پر لور آنے کی بات ایلی فوجوں سے کہی ہوتی تو یو۔ این۔ او۔ ساری دنیا کی پلچھوایت ہے۔ اُسکی کسی بات پر ہار نہیں ہو سکتی۔ اور اُسکی کہی ہوئی ہار نہیں ہو سکتی۔ پر یو۔ این۔ او۔ جب ایک کٹ کی بن جاتی ہے تب اُس کٹ کا مکھیا اپنی ہار کو یو۔ این۔ او۔ کی ہار ماننے لگتا ہے۔ بس اسی وجہ سے یو۔ این۔ او۔ ٹھیک وقت پر ٹھیک کام نہیں کر پاتی۔

۳۸ بڑی دیکھا بھادی جاتی ہے جب چمرل مہک آرتھر اُسکے اُتر میں ہوتے ہیں اور یو۔ این۔ او۔ کو ۳۸ بڑی دیکھا کی یاد آجاتی ہے جب چمرل مہک آرتھر ۳۸ بڑی دیکھا کے دکھن میں ہوتے ہیں یا ۳۸ بڑی دیکھا اُن کے دکھن میں ہوتے ہیں بھی اُنکی آنکھوں کے سامنے ہوتی ہے نہ کہ پیٹھ کے پیچھے۔

یو۔ این۔ او۔ اور اُسکی سرکشا سمیٹی اُتر بڑے بڑے چار پانچ ملکوں کو ہتھیار بنانے اور لڑائی کے لئے تیار کرانے سے نہیں روک سکتی تب کوریا میں لڑائی (دکھ) کی بات کہہ کر یا سچ سچ میچ لڑائی کو روک کر بھی تیسری لڑائی کو آنے سے نہیں روک سکتی۔ اب یہ وقت آگیا ہے جب ۳۸ بڑی دیکھا دوس اور امریکی دماغ سے نکلا دی جائے۔ ساتھ ہی ساتھ جاپان اور جرمنی ایسے

تھ نہیں ہوں ہو پاؤں کی چیچی چیچی جو کوریا میں لڑ رہی ہے وہاں وہاں اپنی سُرور پر اپنے آپ گئے ہیں یا لال چین کے آؤل چورنے پر گئے ہیں یا لال چین کے اشارے پر گئے ہیں، یا لال چین کے دکھن سے گئے ہیں۔) کیونکہ انہیں صاف یہ دکھائی دے رہا تھا کہ کی مچھوریا کی آزادی خطرے میں ہے۔



रखकर घूँट ले लिया था. यह लड़ाई रोकने का प्रस्ताव या तो उस वक्ता होना चाहिये था जब अमरीकी फौजें यू. एन. ओ. का मंडा लिये ३८ पड़ो रेखा के पास पहुँचने वाली थीं और जिस वक्ता हिन्दुस्तान के प्रधान वजीर ने यू. एन. ओ. को यह सलाह दी थी. पर उस वक्ता जोस में आए मैकआर्थर के भरोसे पर यू. एन. ओ. ने अपनी फौजों को ३८ पड़ो रेखा पार करने दी और इससे भी पहले दक्खिनी कोरिया की फौजें ३८ पड़ो रेखा पार कर चुकी थीं. यह बिना हुकुम के ३८ पड़ो रेखा पार करने वाली फौजें किस के मानहत थीं. यह न कभी यू. एन. ओ. ने पूछा न सुरक्षा कौंसिल ने अगर यू. एन. ओ. ने उस वक्ता लड़ाई रोकने का प्रस्ताव पास किया होता और दक्खिनी कोरिया की फौजों को ३८ पड़ो रेखा के दक्खिन में बुला लिया होता तो सिर्फ कोरिया ही नहीं कई मुल्कों का जन संहार बच गया होता. और यू. एन. ओ. के साथ साथ अमरीका की इज्जत भी लोगों की निगाह में बहुत कुछ बढ़ गई होती और तीसरी लड़ाई छिड़ जाने का खतरा एक दम कम हो गया होता.

लड़ाई रोकने का दूसरा वक्त उस वक्ता भी कुछ अच्छा ही रहता जब उत्तरी कोरिया की फौजें मंचूरिया की हद्द से जा लगी थीं. पर उस वक्ता जीत के घमंड से भरे हुए जनरल मैकआर्थर कब सुरक्षा समिति को यह सलाह दे सकते थे कि लड़ाई रोक दी जाय.

थहा हलद  
हमारी राय  
जनवरी सन् १९११

”दुम्कर क्लेमन्ट ले लिया تھا. یہ لڑائی دوکو کا پرستاؤ یا تو اُس وقت ہونا چاہئے تھا جب امریکی فوجیں یو. این. او. کا جھلڈا لگے ۳۸ پڑی دیکھا کے پاس پہنچنے والی تھیں اور جس وقت ہلدستائن کے پردھان وزیر نے یو. این. او. کو یہ صلح دی تھی. پر اُس وقت دمس مہل آئے مہیک آرٹیر کے بہرے پر یو. این. او. نے اپنی فوجوں کو ۳۸ پڑی دیکھا پار کرنے دی اور اُس سے بھی پہلے دیکھی کوریا کی فوجیں ۳۸ پڑی دیکھا پار کر چکی تھیں. یہ بدعا حکم کے ۳۸ پڑی دیکھا پار کرنے والی فوجیں کس کے ماتحت تھیں یہ نہ کہیں یو. این. او. نے پوچھا نہ سرکشا کونسل نے. اگر یو. این. او. نے اُس وقت لڑائی دوکو کا پرستاؤ پاس کیا ہوتا اور دیکھی کوریا کی فوجوں کو ۳۸ پڑی دیکھا کے دیکوں مہل بلا لیا ہوتا تو صرف کوریا ہی نہیں کئی ملکوں کا جن سنگھار بچ گیا ہوتا. اور یو. این. او. کے ساتھ ساتھ امریکہ کی عزت بھی لوگوں کی نڈا مہل بہت کچھ بڑھ گئی ہوتی اور تیسری لڑائی چھو جانے کا خطہ ایک دم کم ہو گیا ہوتا.

لڑائی دوکنے کا دوسرا وقت اُس وقت بھی کچھ اچھا ہی رہتا جب اُتری کوریا کی فوجیں منچوریہ کی حد سے جا لگی تھیں. پر اُس وقت جیت کے ٹھلڈ سے بہرے ہوئے جنرل موک آرٹیر کب سرکشا سمیتی کو یہ صلح دے سکتے تھے کہ لڑائی روک دی جائے. تیسرا موقع لڑائی روک دینے کا یہ تھا جب ۱۰ ا. ۱۰



में शामिल नहीं हैं। जापान, जरमनी और कोरिया तो यों शामिल नहीं हैं कि वह अभी अजाद नहीं हैं और लालचीन यों शामिल नहीं है कि यू. एन. ओ. में बनी हुई एक गुट उसे यू. एन. ओ. में शामिल नहीं होने देना चाहती। जो मुल्क यू. एन. ओ. में शामिल हैं वह अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के हुकुम को न मानें तो उन्हें यू. एन. ओ. से खारिज कर देने की धमकी दी जा सकती है। पर जो मुल्क उसमें शामिल ही नहीं हैं उन पर धमकी कोई असर नहीं कर सकती। और इत्तफाक से इस वक्त जो मुल्क ३८ पड़ी रेखा पार कर रहे हैं वह यू. एन. ओ. के मेम्बर नहीं हैं। इसलिये तीसरी बड़ी लड़ाई ३८ पड़ी रेखा पर कभी भी जन्म ले सकती है। और जब यू. एन. ओ. ऐसे मुल्कों में दखल दे रहा है जो उसके मेम्बर भी नहीं हैं तब तो तीसरी लेड़ाई के जन्म लेने में और भी जल्दी हो सकती है वह क्यों रकी हुई है और कब तरु रुकी रहेगी इसका जवाब यहां नहीं दिया जा सकता। यहां हमें इस वक्त दूसरी ही बात कहनी है।

इस वक्त उत्तरी कोरिया को और चीनी फौजों को तरह मुल्कों के प्रस्ताव पर और बावन मुल्कों के हां करने पर यह हुकुम दिया गया है कि लड़ाई फौरन रोक दी जाय जिसके यह मानें हैं कि कोरियाई और चीनी फौजें ३८ पड़ी रेखा से आगे न बढ़ने पावें। इसमें कोई शक नहीं कि यह प्रस्ताव यू. एन. ओ. ने अच्छी नियत से पास किया। पर उस नियत पर अगर कोई उँगली उठाए तो उसे भी बुरी नियत वाला नहीं समझा जा सकता। दूध का जला अगर छाछ को फँक कर पिये तो उसमें छाछ फँकने वाले का क्रूर नहीं। उसका क्रूर है जिसने गरम दूध उसके मुँह लगाया था और उसने उसपर एतबार

में शामिल नहीं हैं। जापान, जरमनी और कोरिया तो यों शामिल नहीं हैं कि वह अभी अजाद नहीं हैं और लालचीन यों शामिल नहीं है कि यू. एन. ओ. में बनी हुई एक गुट उसे यू. एन. ओ. में शामिल नहीं होने देना चाहती। जो मुल्क यू. एन. ओ. में शामिल हैं वह अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के हुकुम को न मानें तो उन्हें यू. एन. ओ. से खारिज कर देने की धमकी दी जा सकती है। पर जो मुल्क उसमें शामिल ही नहीं हैं उन पर धमकी कोई असर नहीं कर सकती। और इत्तफाक से इस वक्त जो मुल्क ३८ पड़ी रेखा पार कर रहे हैं वह यू. एन. ओ. के मेम्बर नहीं हैं। इसलिये तीसरी बड़ी लड़ाई ३८ पड़ी रेखा पर कभी भी जन्म ले सकती है। और जब यू. एन. ओ. ऐसे मुल्कों में दखल दे रहा है जो उसके मेम्बर भी नहीं हैं तब तो तीसरी लेड़ाई के जन्म लेने में और भी जल्दी हो सकती है वह क्यों रकी हुई है और कब तरु रुकी रहेगी इसका जवाब यहां नहीं दिया जा सकता। यहां हमें इस वक्त दूसरी ही बात कहनी है।

इस वक्त उत्तरी कोरिया को और चीनी फौजों को तरह मुल्कों के प्रस्ताव पर और बावन मुल्कों के हां करने पर यह हुकुम दिया गया है कि लड़ाई फौरन रोक दी जाय जिसके यह मानें हैं कि कोरियाई और चीनी फौजें ३८ पड़ी रेखा से आगे न बढ़ने पावें। इसमें कोई शक नहीं कि यह प्रस्ताव यू. एन. ओ. ने अच्छी नियत से पास किया। पर उस नियत पर अगर कोई उँगली उठाए तो उसे भी बुरी नियत वाला नहीं समझा जा सकता। दूध का जला अगर छाछ को फँक कर पिये तो उसमें छाछ फँकने वाले का क्रूर नहीं। उसका क्रूर है जिसने गरम दूध उसके मुँह लगाया था और उसने उसपर एतबार



उत्तरी दक्खिनी कोरिया राजी से, धमकी घुड़की से या लड़ भिड़ कर कुछ ही दिनों में एक होजाएंगे. और फिर उस जापान से भी असमरीकियों को जल्दी भागना पड़ेगा जहाँ वह नवाबों की खिन्दगी बिना रहे हैं. उत्तरी दक्खिनी कोरिया का एक होना एक तरह से जापान में गुलामी की जंजीर को तोड़ने के आन्दोलन के लिये पहला कदम ही समझना चाहिये. असमरीका के दक्खिनी कोरिया में छाए रहने की यह सबसे पहली और जरूरी वजह है. और भी वजह हो सकती है. पर इस अकेली वजह ही ने ३८ पड़ी रेखा को बहुत बड़ा मान दे दिया है.

अगर सुरक्षा समिति की कचहरी में उत्तरी दक्खिनी कोरिया को बुलाकर तहकीकात शुरू हुई होती तो यह जरूर पता चल जाता कि उत्तरी कोरिया से रूस के हटने के दूरमं दिन से ही ३८ पड़ी रेखा छुट पुट हमलों के लिये बराबर पार होती रही. किसने पहले पार की और किसने कितनी बार पार की, इसकी ठीक ठीक तहकीकात अब बेहद मुश्किल है. मगर जब बड़ी कौजों का साथ लेकर उत्तरी कोरिया ने ३८ पड़ी रेखा को पार किया तभी ३८ पड़ी रेखा को पार करने की बात अखबारों में आई और जब असमरीका उत्तरी कोरिया की कौजों के मुकाबले में आया तब यह खबर कसबों तक पहुंची और यू. एन. आ. की सुरक्षा समिति के हुकुम निकालने के बाद से यह खबर गाँव गाँव में पहुंच गई.

यू. एन. ओ. कोरिया की घरेलू लड़ाई शुरू होने के समय ५९

अन्तरी दक्खिनी कोरिया राखी से 'दमकी लठ्ठकी से बालू क्रक्के' ही हथौ में 'एक होजायिगके'. ओर ओरूस जापान से भी असमरीका को जल्दी बहाल पेरिका जहाँ, वे नवाबों की खिन्दगी बिता रहे हों. अन्तरी दक्खिनी कोरिया का एक होना एक तरह से जापान में गुलामी की जंजीर को तोड़ने के आन्दोलन के लिये पहला कदम ही समझना चाहिये. असमरीका के दक्खिनी कोरिया में छाए रहने की यह सबसे से पहली और जरूरी वजह है. ओर भी वजह हो सकती है. पर इस अकेली वजह ही ने ३८ पड़ी रेखा को बहुत बड़ा मान दे दिया है.

अगर सुरक्षा समिति की कचहरी में उत्तरी दक्खिनी कोरिया को बुलाकर तहकीकात शुरू होती तो यह जरूर पता चल जाता कि उत्तरी कोरिया से रूस के हटने के दूसरे दिन से ही ३८ पड़ी रेखा छुट पुट हमलों के लिये बराबर पार होती रही. किसने पहले पार की और किसने कितनी बार पार की, इसकी ठीक ठीक तहकीकात अब बेहद मुश्किल है. मगर जब बड़ी कौजों का साथ ले कर उत्तरी कोरिया ने ३८ पड़ी रेखा को पार किया तभी ३८ पड़ी रेखा को पार करने की बात अखबारों में आई और जब असमरीका उत्तरी कोरिया की कौजों के मुकाबले में आया तब यह खबर कसबों तक पहुंची और यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के हुकुम निकालने के बाद से यह खबर गाँव गाँव में पहुंच गई.

यू. एन. ओ. कोरिया की लठ्ठकी लठ्ठकी शुरू होने के समय ५९

मलक ५



को दो हिस्सों में बाँट देगा. यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के कुछ मेम्बर ही ऐसे चमत्कारी साबित हुए कि उन्होंने कोरिया में ३८ पड़ी रेखा पर कोरिया के दो हिस्से कर दिये. उत्तरी कोरिया के हमले से ३८ पड़ी रेखा को कुछ समझदार ही जान पाए थे पर यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के बीच में पड़ने से ३८ पड़ी रेखा को अब गाँव वाले भी समझ गए हैं.

बिस तरह खरबूजे पर बनी हुई लकीरें यह नहीं बताती कि खरबूजे के अन्दर सन्तरे जैसी फाँकें हैं वैसे ही किसी देस के नक्शे पर खींची हुई खड़ी पड़ी लकीरें यह नहीं बताती कि वह देस इतने सुरबों में बाँटा हुआ है. यू. एन. ओ. के कुछ मेम्बरों ने बंटवारे का यह अजब ढंग निकाल कर कोरिया में हमेशा के लिये लड़ाई का बीज बो दिया. और फिर ३८ पड़ी रेखा पर कोरिया, कोरिया के रहने वालों के बीच नहीं बाँटा गया वह तो बाँटा गया अमरीका और रूस के बीच, जो उस वक़्त मजबूरी के दोस्त थे. उन दोनों की नैतिक खिन्दगी में अभीन आसमान का फ़रक़ है. उन दोनों में एक दूसरे के बीच सात समन्दर रहते हुए भी जब दोस्ती नहीं पाई जाती तो ३८ पड़ी रेखा के उत्तर दक्खिन बैठ कर उनमें दोस्ती की उम्मीद कैसे की जा सकती है. रूस कोरिया को कोरिया बासियों पर छोड़ कर ३८ पड़ी रेखा के उत्तर से हट भी गया और अपनी फ़ौजों को रूस ले भी गया तो इससे ३८ पड़ी रेखा के दक्खिन में छाबनी डाले पड़ी अमरीकी फ़ौजें रूस को अपना दोस्त कैसे समझ सकती थीं क्योंकि रूस की हद तो अब भी कहीं न कहीं कोरिया से मिली हुई है. अमरीकी यह ख़ब्र समझते थे कि उनके कोरिया से हटते ही

( १८ )

( १९ )

को दो حصों में बाँट दिया. यू. एन. ओ. की सरक़शा समिती के कुछे मمبر ही ایسے چمٹکاری ڈیٹ ہوئے کہ انھوں نے کوریا میں ۳۸ پڑی دیکھا پر کوریا کے دو حصے کر دیئے. ٹری کوریا کے حصے سے ۳۸ پڑی دیکھا کہ کچھ سمجھدار ہی جان پائے تھے پر یو. این. او. کی سرکّشا سمیٹی کے بیچ میں پڑنے سے ۳۸ پڑی دیکھا کہ اب گلوں والے بھی سمجھ گئے تھے.

جس طرح خربوزے پر پائی ہوئی لکیریں یہ نہیں بتاتیں کہ خربوزے کے اندر سلترے جیسی پھانکیں ہیں ویسے ہی کسی شے کے نقشے پر کھینچی ہوئی کڑی پڑی لکیریں یہ نہیں بتاتیں کہ وہ دیس اُنکے مربعوں میں بٹا ہوا ہے. یو. این. او. کے کچھ ممبروں نے بتواریے کا یہ عجیب ذھلک نکال کر کوریا میں ہمیشہ کیلئے لڑائی کا بیج بو دیا. اور پھر ۳۸ پڑی دیکھا پر کوریا، کوریا کے دہلی والوں کے بیچ نہیں بانٹا گیا وہ تو بانٹا گیا امریکہ اور روس کے بیچ، جو اسوقت مجبوری کے دوست تھے. اُن دونوں کی نیتک زندگی میں زمین آسمان کا فرق ہے. اُن دونوں میں ایک دوسرے کے بیچ سات سلدر رہتے ہوئے بھی جب دوستی نہیں پائی جاتی تو ۳۸ پڑی دیکھا کہ آخر دکھن بھٹھکر اُن میں دوستی کی امید کیسے کی جاسکتی ہے. روس کوریا کو کوریا باسیوں پر چھوڑ کر ۳۸ پڑی دیکھا کہ تُو سے ہٹ بھی گیا اور اپنی فوجوں کو روس لے بھی گیا تو اس سے ۳۸ پڑی دیکھا کہ دکھن میں چھوڑنی والے پڑی امریکی فوجیں روس کو اپنا دوست کیسے سمجھ سکتی تھیں کہونکہ روس کی حد تو اب بھی کہیں نہ کہیں کوریا سے ملی ہوئی ہے. امریکی یہ خوب سمجھتے تھے کہ اُنکے کوریا سے ہٹتے ہی،



अंगरेज जो छोटे मोटे ऐसे पटाले छोड़ गए थे जो अंगरेजों के चले जाने के बाद कभी भी फट सकते थे उनका फलीता निकाल कर उनकी बारूद से काम ले लेने का काम सरदार जैसे आदमी के हाथ ही हो सकता था. अगर हम सरदार को गुजरात की तीसरी बड़ी देन कहें तो ठीक ही होगा. एक स्वामी दयानन्द, दूसरे महात्मा गांधी और तीसरे सरदार खुद. भारत में जनता राज क्रायम होने में तीनों का ही हाथ है. और सरदार ने तो सौंप मरा न लाठी टूटी का जादू बिखाकर एक बार तो भारत के जनराज को ऐसी नींव पर खड़ा कर दिया है जहाँ से खिगाना बरा मुशकिल काम है.

( अब सरदार को याद करके किस की आँख से न आँसू ढुल पड़े होंगे ? )

( आइये भेद भाव मिटाकर सरदार की दी हुई इस व्योहारी सरकार को सच्चे मानों में व्योहारी बनाते हुए और हर तरह से एक नेशन के गुन अपनाते हुए सरदार की आत्मा को स्वर्ग में सुख शान्ति से रहने का अवसर दें सरदार के लिये यही सच्ची अर्द्धजलि होगी.

१८-१२-१५०

—भागवानदीन

## अड़तीस पड़ी रेखा मिटाइये--

— जिन लोगों ने जब अपने नकशों के काम के लिये खड़ी

अंगरेज जो चहत्ते मोंते लिये पंखाने चहत्ते तहे जो अंगरेजों के चले जाने के बाद कभी भी फट सकते थे उन का फलीता निकाल कर उनकी बारूद से काम ले लेने का काम सरदार जैसे आदमी के हाथ ही हो सकता था. अगर हम सरदार को गुजरात की तीसरी बड़ी देन कहें तो ठीक ही होगा. एक स्वामी दयानन्द, दूसरे महात्मा गांधी और तीसरे सरदार खुद. भारत में जनता राज क्रायम होने में तीनों का ही हाथ है. और सरदार ने तो सौंप मरा न लाठी टूटी का जादू बिखाकर एक बार तो भारत के जनराज को ऐसी नींव पर खड़ा कर दिया है जहाँ से खिगाना बरा मुशकिल काम है.

( अब सरदार को याद कर के किसी आँख से आँसू न डहल पड़े होंगे ? )

( आइये भेद भाव मिटाकर सरदार की दी हुयी इस व्योहारी सरकार को सच्चे मानों में व्योहारी बनाते हुये और हर तरह से एक नेशन के गुन अपनाते हुये सरदार की आत्मा को स्वर्ग में सुख शान्ति से रहने का अवसर दें सरदार के लिये यही सच्ची अर्द्धजलि होगी.

१८-१२-१५०

—भगवानदीन

## अड़तीस पड़ी रेखा मिटाइये--

भगवानदीन ने जब अपने नकशों के काम के लिये खड़ी

लकी



लेना चाहिये कि राजकारन के मैदान में अपने साथियों से इतने एकमेक रहना चाहिये जैसे दूध और पानी. वह कहने के लिये ही आलग हैं पर मौके पर दूध और पानी एक दूसरे पर जान देने के लिये तैयार रहते हैं.

सरदार ने गांधीजी को खूब समझ लिया था. तभी तो वह गांधीजी की कम से कम दुहाई पीटते थे. उन्होंने गांधीजी को बहुत पास से देखा था और यरवदा जेल में उनके पास रहकर उन की बन अच्छाइयों को जो सरदारी के लिये जरूरी थी इस तरह पिया था कि वह सरदार की रग रग में समा गई थी. उनको 'सरदार' जनता ने बनाया था और जनता किसी को सरदार यों ही नहीं कहने लगती. सरदार की पहली सिकत है कि वह सब को एक आँख में देखे. और यह सिकत उनमें बहुत काली थी. अगर इसकी जरा भी कमी होती तो पाकिस्तान बन जाने के बाद भारत में कभी ब्रयोहारी सरकार (सेकुलर गवर्मेन्ट) कायम न हो सकती और जो सरकार ब्रयोहारी न हो वह धरती में गड़ी पेड़ से कटी शाख से ज्यादा दिन दूरी नहीं रह सकती. यह बात सरदार खूब अच्छी तरह समझते थे.

देस की आजादी की खातिर पैसा त्यागना आसान है पर आदत जिसको समझदारों ने दूसरी प्रकृति का नाम दिया है छोड़ना मुशकिल है. और जो यह छोड़ सकता है वह क्या नहीं कर सकता. सरदार में यह ताकत थी और उन्होंने उससे काम लिया. नहीं तो बैरिस्टरी के नाते अंगरेजों की डाली हुई आदत उन्हें चैन लेने देती? वह दूसरा पाठ है जो जवान उनकी जीवनी से ले सकते हैं.

लेना चाहते कि राज करन के मीदान में अप्णे साहबों से अने एक मीक रहना चाहते चिसे दरेद ओर पानी. वे कहले के लैने ही अक हिस पर मोंते पर दरेद ओर पानी अक दुसरे पर जान दिने के लैने तैयार रहते हिस.

सरदार ने गान्धेजी की खूब समझ लिया था. तभी तो वे गान्धेजी की कम से कम देहाई पीटते थे. उन्होंने गान्धेजी को बहुत पास से देखा था और यरवदा जेल में उनके पास रहकर उन की बन अच्छाइयों को जो सरदारी के लैने जरूरी थे उस तरह पिया था कि वह सरदार की रग रग में समा गई थी. उनको 'सरदार' जनता ने बनाया था और जनता किसी को सरदार यों ही नहीं कहने लगती. सरदार की पहली सिकत है कि वे सब को एक आँख से देखें. और यह सिकत उनमें बहुत काली थी. अगर इसकी जरा भी कमी होती तो पाकिस्तान बन जाने के बाद भारत में कभी ब्रयोहारी सरकार (सेकुलर गवर्मेन्ट) कायम न हो सकती और जो सरकार ब्रयोहारी न हो वह धरती में गड़ी पेड़ से कटी शाख से ज्यादा दूरी नहीं रह सकती. यह बात सरदार खूब अच्छी तरह समझते थे.

देस की आजादी की खातर पैसे तहांना आसान है पर عادतें जिसको समझदारों ने दूसरी प्रकृती का नाम दिया है चहोڑना मुश्कल है. ओर जो ये چهوڑ سکتا ہے وہ کہا نہیں کر سکتا. سرदार میں یہ طاقت تھی اور انہوں نے اُس سے کام لیا. نہیں تو بھریستری کے ناتے انگریزوں کی ڈالی ہوئی عادتیں انہیں چہن لہلے دیتیں؟ یہ دوسرا پاتھ ہے جو جوان انکی جھوٹی سے لے سکتے ہوں.



जादू नहीं है। कोई खिलाफ़ क्रुद्धत्व चीख नहीं है। यह भी जरूरी नहीं कि जो महापुरुष योग का बड़ा जानकार हो वह राजकाज या दूसरे हर मैदान में भी उत्तना ही माहिर हो। कामिल या पूर्ण होना सिवाय भगवान के दूसरे किसी के लिये नहीं है। अलग अलग महापुरुषों के पैरो अगर अपने अपने बुजुर्गों को कामिल या निर्भ्रान्त मानने की जगह उन्हें इन्सान, करोड़ों इंसानों से बढ़कर इन्सान, मगर इन्सान मानने लगे तो हम सब सचाई के भी अधिक निकट हो जावें और दुनिया भर के महापुरुष हम सब के एक बराबर पूज्य और हम सब की थापी बन जावें। मानव समाज को एक करने में भी इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है।

इसी भावना के साथ हम श्रीअरविंद को दुनिया के महान से महान पुरुषों में गिनते हैं और चाहते हैं कि सारी दुनिया उनके जीवन, उनके उपदेशों और उनके बताए रास्ते से फायदा उठावे।

—सुन्दरलाल

## सरदार हमें छोड़ चल दिये—

हमें छोड़ने से कुछ ही दिन पहले हमारे प्यारे सरदार ने उन आदिमियों का भ्रम मिटा दिया था जो सरदार और नेहरू को दो देह और दो जान मानत थे। सरदार ने नेहरू को अपना सरदार कह कर अपनी सरदारी को चार चाँद लगा दिये थे। और रेडियो पर नेहरू ने जो जते मनकर यह शक करने वालों और न शक करने

जादू नहीं है। कौनो ख़ाफ़ قدرت चमक नहीं है। ये भी ضرूरी नहीं है जो महापुरुष योग का बड़ा जानकार हो वह राज काज या दूसरे हर मैदान में भी उत्तना ही माहिर हो। कामिल या पूर्ण होना सिवाय भगवान के दूसरे किसी के लिये नहीं है। अलग अलग महापुरुषों के पैरो अगर अपने अपने बुजुर्गों को कामिल या निर्भ्रान्त मानने की जगह उन्हें इन्सान, करोड़ों इंसानों से बढ़कर इन्सान, मगर इन्सान मानने लगे तो हम सब सचाई के भी अधिक निकट हो जावें और दुनिया भर के महापुरुष हम सब के एक बराबर पूज्य और हम सब की थापी बन जावें। मानव समाज को एक करने में भी इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है।

इसी भावना के साथ हम सरदार को दुनिया के महान से महान पुरुषों में गिनते हैं और चाहते हैं कि सारी दुनिया उनके जीवन, उनके उपदेशों और उनके बताए रास्ते से फायदा उठावे।

—सुन्दरलाल

## सरदार हमें चहोर चले—

हमें चहोरने से कुछ ही दिन पहले हमारे प्यारे सरदार ने उन आदिमियों का भ्रम मिटा दिया जो सरदार और नेहरू को दो देह और दो जान मानते थे। सरदार ने नेहरू को अपना सरदार कह कर अपनी सरदारी को चार चाँद लगा दिये थे। और रेडियो पर नेहरू ने जो जते मनकर यह शक करने वालों और न शक करने



आदमी की उमर बढ़ाने के लिये भी अभी तक और कोई चीज इतनी मद्दगार नहीं समझी जाती जितनी योग, रहन सहन, खान पान बगैरा में भी जो सुविधाएँ श्री अरविन्द को मिली हुई थीं वह दुनिया में शायद ही किसी दूसरे आदमी को हासिल हों। हमें खुद यह आशा थी कि श्री अरविन्द अभी बरसों और इस दुनिया में बने रहेंगे, इसलिये भी 78 वर्ष की आयु में अचानक उनका गुरदे के रोग से उठ जाना हमारे लिये और हमारे जैसे बहुत सों के लिये एक सबर-दस्त धक्का था।

हम कह चुके हैं कि श्री अरविन्द दुनिया के बड़े से बड़े आदमियों में से थे। इस देस के वह एक चमकते हुए तारे थे। उनके चले जाने का हमें और दुनिया के लाखों आदमियों को दुख है। वह एक आदमी ही नहीं एक संस्था थे, एक बहुत बड़ी और उपयोगी संस्था। साथ ही आज तक दुनिया का कोई भी महापुरुष, कोई भी पीर, पैगम्बर या अबतार न निर्भान्त यानी गलती से खाली हुआ न हो सकता है। मुहम्मद साहब बार बार कहा करते थे और कई बार अपनी गलतियाँ दिखाकर कहा करते थे कि मैं तुम लोगों की ही तरह एक इन्सान हूँ। कुरान तक में मुहम्मद साहब के लिये “तुम्हारी ही तरह एक इन्सान” यह शब्द बार बार आते हैं। मुहम्मद साहब ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं में अपनी गलतियों के लिये माफ़ी मांगा करते थे। गांधी जी अपनी किसी किसी गलती को हिमालय जैसी बड़ी गलती कहा करते थे। हिन्दू अवतारों तक की भूलें ग्रंथों में भरी पड़ी हैं। योग बहुत बड़ी चीज है। दुनिया के लिये वह एक

अवतार है और आने वाले अवतार मानव जगत् का जीवन

आदमी की उमर बढ़ाने के लिये अभी तक और कौन चीज अन्ध-मन्दगार नहीं समझी जाती जितनी योग। रहन सहन, खान पान बगैरा में भी जो सुविधाएँ श्री अरविन्द को मिली हुई थीं वह दुनिया में शायद ही किसी दूसरे आदमी को हासिल हों। हमें खुद यह आशा थी कि श्री अरविन्द अभी बरसों और इस दुनिया में बने रहेंगे, इसलिये भी 78 वर्ष की आयु में अचानक उन का गुरदे के रोग से उठ जाना हमारे लिये और हमारे जैसे बहुत सों के लिये एक सबर-दस्त धक्का था।

हम कह चुके हैं कि श्री अरविन्द दुनिया के बड़े से बड़े आदमियों में से थे। इस देस के वह एक चमकते हुए तारे थे। उनके चले जाने का हमें और दुनिया के लाखों आदमियों को दुख है। वह एक आदमी ही नहीं एक संस्था थे, एक बहुत बड़ी और उपयोगी संस्था। साथ ही आज तक दुनिया का कौन भी महापुरुष, कोई भी पीर, पैगम्बर या अवतार न निर्भान्त यानी गलती से खाली हुआ न हो सकता है। मुहम्मद साहब बार बार कहा करते थे और कई बार अपनी गलतियाँ दिखाकर कहा करते थे कि मैं तुम लोगों की ही तरह एक इन्सान हूँ। कुरान तक में मुहम्मद साहब के लिये “तुम्हारी ही तरह एक इन्सान” यह शब्द बार बार आते हैं। मुहम्मद साहब ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं में अपनी गलतियों के लिये माफ़ी मांगा करते थे। गांधी जी अपनी किसी किसी गलती को हिमालय जैसी बड़ी गलती कहा करते थे। योग बहुत बड़ी चीज है। दुनिया के लिये वह एक

अवतार है और आने वाले अवतार मानव जगत् का जीवन







जो आया उसने उसे अपने मतलब के लिये आसानी से दुह लिया. न केवल तरह तरह की एक दूसरे के खिलाफ फ़िलासफ़ियां ही गीता में से निकलती रही हैं, बल्कि उसी गीता से लोकमान्य ने कर्मयोग का उपदेश निकाल कर भूटे त्याग और वैराग्य के प्रपंचों को काटा, बही गीता अरविन्द बाबू ने बम फेंकने वाले नौजवानों के हाथों में दी और उसी गीता से महात्मा गांधी ने अपना अनासक्तियोग निकाल कर दिखलाया.

हम मानते हैं कि इसमें नीयत सबको शुद्ध थी और गीता ने समय के अनुसार सबकी इच्छाओं को पूरा किया. सन् 1919 में महात्मा गांधी के मैदान में आने के समय एक बार बापू ने कलकत्ते में पिछले समय के बहुत से क्रांतिकारियों को जमा करके उनसे अपना रास्ता बदल कर नये अहिंसा के मार्ग पर चलने की अपील की. बात बहुत सों के दिलों को ठीक लगी. श्री अरविन्द तक भी खबर पहुँचाई गई. और कम से कम उस समय एक बार उन्होंने अपने पिछले समय के साथियों को महात्मा गांधी के रास्ते को अपनाने और आचमाने के लिये हिम्मत दिलाई.

श्री अरविन्द योग बिद्या के बहुत बड़े जानकार थे. पिछले तीस बरस के अन्दर उनकी यह जानकारी और उनका अभ्यास कहा जाता है बेहद बढ़ गया था. हजारों आदमी उनके दर्शनों के लिये बेचैन रहते थे. योगी की हैसियत से उनका नाम देस बिदेसों में उजागर था. अपने आश्रम में एकान्त सेवन करते हुए उन्होंने राज-द्वार में नहीं के बराबर हिस्सा लिया. लेकिन जब कभी लिया तो उनका सुकाव अकसर महात्मा गांधी की राय के खिलार रहा.

जो आया उसे अपने मतलब के लिये आसानी से दुह लिया. न केवल तरह तरह की एक दूसरे के खिलाफ फ़िलासफ़ियां ही निकलती रहीं, बल्कि उसी गीता से लोकमान्य ने कर्मयोग का उपदेश निकाल कर भूटे त्याग और वैराग्य के प्रपंचों को काटा, बही गीता अरविन्द बाबू ने बम फेंकने वाले नौजवानों के हाथों में दी और उसी गीता से महात्मा गांधी ने अपना अनासक्तियोग निकाल कर दिखलाया.

हम मानते हैं कि इसमें नीयत सबकी इच्छाओं को पूरा किया. सन् 1919 में महात्मा गांधी के मैदान में आने के समय एक बार बापू ने कलकत्ते में पिछले समय के बहुत से क्रांतिकारियों को जमा करके उनसे अपना रास्ता बदल कर नये अहिंसा के मार्ग पर चलने की अपील की. बात बहुत सों के दिलों को ठीक लगी. श्री अरविन्द तक भी खबर पहुँचाई गई. और कम से कम उस समय एक बार उन्होंने अपने पिछले समय के साथियों को महात्मा गांधी के रास्ते को अपनाने के लिये हिम्मत दिलाई.

श्री अरविन्द योग बिद्या के बहुत बड़े जानकार थे. पिछले तीस बरस के अन्दर उनकी यह जानकारी और उनका अभ्यास कहा जाता है बेहद बढ़ गया था. हजारों आदमी उनके दर्शनों के लिये बेचैन रहते थे. योगी की हैसियत से उनका नाम देस बिदेसों में उजागर था. अपने आश्रम में एकान्त सेवन करते हुए उन्होंने राज-द्वार में नहीं के बराबर हिस्सा लिया. लेकिन जब कभी लिया तो उनका सुकाव अकसर महात्मा गांधी की राय के खिलार रहा.



सन् १९०७ में देस ने एक नई करवट ली थी. चारों तरफ एक नए जोश और नई बेदारी के आसार दिखाई देते थे. देस भर में जिन समाचार पत्रों ने इस बेदारी को पैदा करने में सबसे अधिक हिस्सा लिया उनमें पहिला नाम कलकत्ते के अंगरेजी दैनिक 'बन्देमातरम' का था. 'बन्देमातरम' देस के कोने कोने में पहुँचता था. उसके आग्रलेख रोजाना बड़े चाव और उत्साह के साथ पढ़े जाते थे. इनके आस लेखक अरविन्द बाबू थे. यह कहना बात बढ़ाकर कहना नहीं है कि सबसे अधिक अरविन्द बाबू और उनके बाद श्याम बाबू के लेखों ने उन दिनों हजारों नौजवानों के दिलों में देशभक्ति और बलिदान की वह आग सुलगाई जो अपना काम किये बिना नहीं बुझी और जो कहीं कहीं किसी कोने खुतरे में आज तक सुलगती हुई देखी जा सकती है.

सन् १९१० का वह दिन (अगर हम भूलते नहीं तो वह साल १९१० ही था) हमें अभी तक याद है जिस दिन अरविन्द बाबू ने हमेशा के लिये कलकत्ता छोड़ा. हमें उस दिन कई घन्टे उनके साथ रहने का मौका मिला था. राजकाज के मैदान में अरविन्द बाबू अपना काम कर चुके थे.

दर्शनशास्त्र (फिलॉसफी) और योग का श्री अरविन्द को शुरू से ही शौक था. हिन्दू धर्म और हिन्दूशास्त्र के वह ऊँचे दर्ज के विद्वान थे. 'बन्देमातरम' और उसके बाद 'कर्मयोगिन' में उनके कोई कोई लेख खासे फिलॉसफी भरे होते थे और दिलों पर गहरा असर

सन् १९०७ में दीस ने एक नई क्रांति ली थी. चारों तरफ एक नई जोश और नई बेदारी के आँदने फैलते थे. दीस में जन समाचारपत्रों ने इस बेदारी को पैदा करने में सब से अगेत काम किया. 'बन्देमातरम' दीस के कोने कोने में पहुँचता था. उसके आँदने हजारों नौजवानों के दिलों में देशभक्ति और बलिदान की वह आग सुलगाई जो अपना काम किये बिना नहीं बुझी और जो कहीं कहीं किसी कोने खुतरे में आज तक सुलगती हुई देखी जा सकती है.

सन् १९१० का वह दिन (अगर हम भूलते नहीं तो वह साल १९१० ही था) हमें अभी तक याद है जिस दिन अरविन्द बाबू ने हमेशा के लिये कलकत्ते छोड़ा. हमें उस दिन कई घन्टे उनके साथ रहने का मौका मिला था. राजकाज के मैदान में अरविन्द बाबू अपना काम कर चुके थे.

दर्शनशास्त्र (फिलॉसफी) और योग का श्री अरविन्द को शुरू से ही शौक था. हिन्दू धर्म और हिन्दूशास्त्र के वह ऊँचे दर्ज के विद्वान थे. 'बन्देमातरम' और उसके बाद 'कर्मयोगिन' में उनके कोई कोई लेख खासे फिलॉसफी भरे होते थे और दिलों पर गहरा असर



दूसरा घटना राजपूताने ही के एक छोटे से नरेश की है। उनका भी अरविन्द बाबू से सम्बन्ध था उस राजपूत नरेश ने राजपूताने के जैपुर, जोधपुर जैसे कई बड़े बड़े नरेशों को, जिनके साथ उनकी रिश्तेदारियाँ थीं, अंगरेजों के खिलाफ हथियार बन्द लड़ाई के लिये तैयार करने की कोशिश की। खाहिर है वह सपना केवल सपना ही था और सपना ही रहने वाला था। अंगरेज सरकार को पता चल गया। उस नरेश को उसके अपने अजमेर के किले में नजरबन्द कर दिया गया। नजरबन्दी की हालत में लेखक को उसी किले के अन्दर उनसे मिलने और रात भर साथ रहने का अवसर आया। उन्हें उस समय केवल एक ही धुन थी और वह थी किसी तरह नजरबन्दों से निकल कर दो सौ राजपूतों को साथ लेकर दिल्ली पर चढ़ाई करने की। ज्यूं त्यूं उन्हें समझाकर इस बेमतलब की कोशिश से रोका गया। हमने यह घटनाएँ केवल यह दिखाने के लिये दी हैं कि उस समय का वह आन्दोलन जिसके नेता अरविन्द बाबू थे सचमुच राष्ट्रीय आन्दोलन था। हमें इस रास्ते आजादी मिलने वाली न थी पर इसमें सन्देह नहीं कि जिन लोगों ने इस आन्दोलन में हिस्सा लिया उनमें से बहुत से सचचे दगगी और निश्चय ऊँचे से ऊँचे देशभक्त थे। इसमें भी सन्देह नहीं कि उनकी इन छोटी छोटी कोशिशों और कुरबानियों ने देस के बुझे हुए दिलों के अन्दर एक बार साहस और आशा की मलक पैदा कर दी। हमें इस सचाई को कभी नहीं भूलना चाहिये कि किसी भी महान कार्य में असफल लोगों की लाशें ही वह जीना बनाती हैं जिनपर पैर रखते हुए बाद में अपने बाले सफल योद्धा अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

दूसरी किम्ता राजपूताने ही के एक चोट से निरेश की है।  
 अُن का भी अरुन्द बाबू से सम्बन्ध था। अُس राजपूत निरेश ने राजपूताने के 'जोधपुर' जैसے कئی بڑے بڑے निरेशوں کو جن کے ساتھ اُنکی رشتے داریاں تھیں۔ انگریزوں کے خلاف ہتھیار بند لڑائی کے لئے تیار کرنے کی کوشش کی۔ ظاہر ہے وہ سنا کیوں سنا ہی تھا اور سنا ہی رہے والا تھا۔ انگریز سرکار کو پتہ چل گیا۔ اُس نیریش کو اُسکے اپنے اجداد کے قلعے میں نظر بند کر دیا گیا۔ نظر بندی کی حالت میں لیکچر کو کسی قلعے کے اندر اُن سے ملنے اور رات بھر ساتھ رہنے کا اُسر آیا۔ اُنہیں اُس سے کہوں ایک ہی دھن تھی اور وہ تھی کسی طاح نظر بندی سے نکل کر دوسرے राजपूतوں کو ساتھ لیکر دلی پر چڑھائی کرنے کی۔ جیوں 'ہیں' 'ہیں' سمجھا کر اُس نے مطالب کی کوشش سے روکا گیا۔ تم نے یہ کہتا ہوں کہول یہ دکھانے کے لئے دی ہر کہ اُس سے کا وہ آندوں جسکے نہتا ارونڈ بابو تھے سچ سچ راشتري آندوں تھا۔ ہمیں اُس راستہ آزادی ملنے والی نہ تھی پُر اُس میں سندیہ نہیں کہ جن لوگوں نے اُس آندوں میں حصہ لیا اُن میں سے بہت سے سچے نواگی اور نسلواتہ اُنچے سے اُنچے دیہں بہکت تھے۔ اُس میں بھی سندیہ نہیں کہ اُن کی اُن چوٹی چوٹی کوششوں اور قربانیوں نے دیس کے بچھے ہوئے دلوں کے اندر ایک بار ساہس اور آشا کی جھلک پیدا کر دی۔ ہمیں اس سچائی کو کبھی نہیں بھولنا چاہئے کہ کسی بھی مہان کاربہ میں آسہل لوگوں کی لاشیں ہی وہ زینہ بناتی ہیں جن پر پھر رکبتے ہوئے ہم آنے والے سپہل ہوندا لکھ لکھ تک پہنچتے ہیں۔



छोड़कर कालेज स्थावर के पास एक छोटे से मकान में रहते थे. वटाई पर सोते थे. उनका जीवन उस समय हृदय दर्जे का सादा था. उनसे बातें करने पर मालूम हुआ कि आजादी के लिये उस तरह का आन्दोलन, जिसे आम तौर पर क्रान्तिकारी आन्दोलन कहा जाता था और जिसका खास काम था विदेशी हाकिमों की गुप्त हत्याएं, इस देस में जन्म ले चुका था. अरविन्द बाबू उसके सबसे बड़े नेता थे.

उस समय का वह आन्दोलन कुछ चीज नहीं था. पढ़े लिखे लोगों, धनवानों और देसी नरेशों तक में बहुत से थे जो देस को आजाद करने के लिये बेचैन थे और जिन्हें कोई दूसरा रास्ता नहीं मूक रहा था. वो छोटी छोटी घटनाएं बयान करना यहाँ बेमौक़ा न होगा.

राजपूताने की एक बहुत बड़ी मिल के मालिक एक नौजवान मारवाड़ी थे. उनके दिल में देस की आजादी की लगन जागी. उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक से इच्छा प्रगट की कि मुझे अरविन्द बाबू के दर्शन करा दीजिये. लेखक ने उन्हें जवाब दिया. दर्शन मुफ्त में ही नहीं होते. इतने बड़े आन्दोलन के लिये धन की भी जरूरत है. उन मारवाड़ी सज्जन ने वादा किया कि मैं अपनी मिल का एक साल का पूरा मुनाफ़ा इस काम के लिये अरविन्द बाबू की भेंट कर दूंगा. ऐसा ही हुआ उस साल उनका मुनाफ़ा लगभग पौने दो लाख था. लेखक उन्हें लेकर कलकत्ते पहुँचा. दोनों अलग अलग गए. अलग अलग ठहरे और किसी तरह एक दिन शाम को एक साथ अरविन्द बाबू के यहाँ पहुँचे. उन्होंने साल के मुनाफ़े की पूरी रकम नक़्द

बाबू के नाम से जर्जों पर गज़ ही और बख़्त मिनट बात करके हम

( ( (

चुप कर कालेज स्कुल के पास एक छोटे से मकान में रहते थे. चट्टानों पर सोते थे. उन का जीवन उस से हद दर्जे का सादा था. उन से बातें करने पर मालूम हुआ कि आजादी के लिये उस तरह का आन्दोलन, जिसे आम तौर पर क्रान्तिकारी आन्दोलन कहा जाता था और जिसका खास काम था विदेशी हाकिमों की गुप्त हत्याएं, इस देस में जन्म ले चुका था. अरविन्द बाबू उसके सबसे बड़े नेता थे.

उस से का वह आन्दोलन कुछ चीज नहीं था. पढ़े लिखे लोगों, धनवानों और देसी नरेशों तक में बहुत से थे जो देस को आजाद करने के लिये बेचैन थे और जिन्हें कोई दूसरा रास्ता नहीं मूक रहा था. वो छोटी छोटी घटनाएं बयान करना यहाँ बेमौक़ा न होगा.

राजपूताने की एक बहुत बड़ी मिल के मालिक एक नौजवान मारवाड़ी थे. उन के दिल में देस की आजादी की लगन जागी. उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक से इच्छा प्रगट की कि मुझे अरविन्द बाबू के दर्शन करा दीजिये. लेखक ने उन्हें जवाब दिया. दर्शन मुफ्त में ही नहीं होते. इतने बड़े आन्दोलन के लिये धन की भी जरूरत है. उन मारवाड़ी सज्जन ने वादा किया कि मैं अपनी मिल का एक साल का पूरा मुनाफ़ा इस काम के लिये अरविन्द बाबू की भेंट कर दूंगा. ऐसा ही हुआ उस साल उन का मुनाफ़ा लगभग पौने दो लाख था. लेखक उन्हें लेकर कलकत्ते पहुँचा. दोनों अलग अलग गए. अलग अलग ठहरे और किसी तरह एक दिन शाम को एक साथ अरविन्द बाबू के यहाँ पहुँचे. उन्होंने साल के मुनाफ़े की पूरी रकम नक़्द

( ( (



# मामा

# साली



## श्री अरविन्द—

( श्री अरविन्द इस जमाने के बड़े खे बड़े आदमियों में से थे. देस में और विदेस में लाखों ही उन्हें भक्ति और श्रद्धा की निगाह से देखते थे. उनके प्रेमियों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और बौद्ध सब धर्मों के लोग शामिल थे. हिन्दुस्तान को उनपर खास गर्व था. पांच दिसम्बर को सबेरे उनकी अचानक मृत्यु के समाचार से लाखों को बड़ा शक्का लगा.

इस देस की आजादी के संग्राम में श्री अरविन्द का स्थान बहुत ऊँचा था. उस संग्राम के सच्चे इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा. सन 1905 में बंगाल के टुकड़े हो जाने के बाद इस देस में नई राष्ट्रीयता ने जन्म लिया. लोकमान्य तिलक उस आन्दोलन के प्रमुख नेता थे. सन 1907 के शुरू में लोकमान्य तिलक ने इन पंक्तियों के लेखक को सलाह दी कि वह कलकत्ते जाकर श्री अरविन्द घोष से मिले. लेखक कलकत्ते पहुँचा. अरविन्द बाबू उस समय बर्दवा की ऐश की नौकरी

## श्री अरुन्दा—

( श्री अरुन्दा इस زمانे के बड़े से बड़े आदमियों में से थे. देस में और विदेस में लाखों ही उन्हें भक्ति और श्रद्धा की निगाह से देखते थे. उनके प्रेमियों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और बौद्ध सब धर्मों के लोग शामिल थे. हिन्दुस्तान को उन पर खास गर्व था. पांच दिसम्बर को सबेरे उनकी अचानक मृत्यु के समाचार से लाखों को बड़ा शक्का लगा.

इस देस की आजादी के संग्राम में श्री अरुन्दा का स्थान बहुत ऊँचा था. उस संग्राम के सच्चे इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा. सन 1905 में बंगाल के टुकड़े हो जाने के बाद इस देस में नई राष्ट्रीयता ने जन्म लिया. लोकमान्य तिलक उस आन्दोलन के प्रमुख नेता थे. सन 1907 के शुरू में लोकमान्य तिलक ने इन पंक्तियों के लेखक को सलाह दी कि वह कलकत्ते जाकर श्री अरुन्दा केशव से मिले. लेखक कलकत्ते पहुँचा. अरुन्दा बाबू उस समय बर्दवा की ऐश की नौकरी



कर रहा होगा. शीनू बार बार 'हाँ' कहता रहा और बराबर खाता रहा. आखिर शामू ने शीनू से पूछा—"माई, पिछले साल तुम्हारी माता जी भी मरीं न, उनकी मृत्यु कैसे हुई?"

शीनू ने मुँह का और बिना चबाए निगला और पत्तल से एक और कौर लेकर मुँह में डाला और उसे चबाते चबाते कहा—"मेरी माँ?... मेरी माँ सुबह आठ बजे बीमार हुई और कोई एक घन्टे में उनकी मौत होगई."

शामू को ताज्जुब हुआ कि शीनू की माँ इतनी जल्दी कैसे मरीं! कुछ सोचकर उसने पत्तल की तरफ हाथ बढ़ाया. मगर, शीनू की उँगलियाँ पत्तल का बचा हुआ खाना बटोर रही थीं और पत्तल इतना साफ हो गया था मानो किसी ने पानी डालकर इसे कमी का धो रखा है.

( 'हिन्दुस्तानी प्रचार' से )

## चुटकुले

पुलिस—(एक आदमी से) तुम यह दुकान के ताले के साथ क्या कर रहे हो ?

आदमी—साहब, मुझे यह कुन्जी पड़ी हुई मिली है अब मैं इसे तमाम दुकानों के तालों पर लगा कर देख रहा हूँ ताकि जिसकी कुन्जी हो उसे दे दी जाए ?

x x x x x

मुसाफिर—ओ लड़के तेरी उमर क्या है ?

लड़का—जनाब, मेरी उमर घर में पाँच साल, स्कूल में चार

साल और रिल में तेहन साल होती है.

बच्चों की दुनिया . जलद्वी सन '५०

नया हल

क्र रहा होगा. शेल्वो बार बार 'हाँ' कहता रहा और बराबर खाता रहा. आखिर शामू ने शेल्वो से पूछा—"माई, पिछले साल तुम्हारी माता जी भी मरीं न, उनकी मृत्यु कैसे हुई?"

शेल्वो ने मुँह का और बिना चबाए निगला और पत्तल से एक और कौर लेकर मुँह में डाला और उसे चबाते चबाते कहा—"मेरी माँ?... मेरी माँ सुबह आठ बजे बीमार हुई और कोई एक घन्टे में उनकी मौत होगई."

शामू को تعجب हुआ कि शेल्वो की माँ इतनी जल्दी कैसे मरीं! कुछ सोच कर उस ने पत्तल की तरफ हाथ बढ़ाया. मगर, शेल्वो की उँगलियाँ पत्तल का बचा हुआ खाना बटोर रही थीं और पत्तल इतना साफ हो गया था मानो किसी ने पानी डाल कर उसे कमी का धो रखा है.

( 'हलदस्तानी प्रचार' से )

## चिन्तक

पोलिस—(एक आदमी से) तम ये दुकान के ताले के साथ क्या कर रहे हो ?

आदमी—साहिब, मुझे ये कुन्जी बड़ी होती मिली है अब मैं इसे तमाम दुकानों के तालों पर लगा कर देख रहा हूँ ताकि जिसकी कुन्जी हो उसे दे दी जाय.

x x x x x

مسافر—او لڑکے تیرا عمر کیا ہے ؟

لڑکا—چند سالہ، میری عمر گھر میں پانچ سال، اسکول میں چار سال اور ریل میں تھیں سال ہوتی ہے.



हमदारी  
अम्माँ की मृत्यु की बात सुनकर मैं बहुत दुखी हुआ।  
आखिर वह भयंकर रोग कैसे लगा ?”

शामू बानूनी था। कहने लगा—“कुछ न पूछो झोस्त,.....” कोई बहुत लम्बी कहानी कहना शुरू करने वाला जैसे शुरू करने के पहले तैयारी करता है, उसी तरह तैयारी करके—यानी, मुँह का कौर जल्दी जल्दी लाकर और हाथ का कौर पत्तल में ही डालकर वह अपनी अम्माँ की मृत्यु की दर्द भरी कहानी कहने लगा—“हाँ, रोग बड़ा भयंकर ही था भाई, और लगा भी इस तरह से कि किसी को पता तक न लगा कि वह बीमारी का शिकार हो रही हैं। एक दिन मैं किसी काम से बाहर गया हुआ था और दोपहर को जब घर आया तो देखता क्या हूँ.....” गहरी साँस लेकर वह कहता गया—“कि अम्माँ को बुखार चढ़ा हुआ है।”

श्रीनू पत्थल का खाना मछो खे खाता जाता और बीच बीच में दोस्त के मुँह की तरफ देखकर 'हाँ' कहता जाता। शामू खाने की बात बिलकुल ही भूल गया था। उसने बीसरी का रूप बदलने, बैयों को बुलाने, आखिर बड़े वैद्य को बुलाने शहर की तरफ जाने, उस वक्त रास्ते में हुई तकलीफों के मेलने वगैरा, माँ की आठ महीने की बीसारी, चिकित्सा और आखिरकार उनकी मौत, सब बातों कोई एक घंटे में कह डालीं। इतनी लम्बी कहानी कहकर शामू बहुत थक गया था। मगर उसे यह तसल्ली हो रही थी कि उसका दोस्त माँ के लिये की हुई सेवाओं की बात सुनकर मन ही मन उसकी तारीफ

کھانا شروع کرتے کرتے شہدو نے شامو سے کہا۔ ”دوست، سچ متج  
تسہاری اماں کی مورتیو کی بات سلکر میں داکھی ہوا۔ آخر  
وہ بھہلکر روگ کیسے لگا؟“

شیامو باتونی تھا۔ کہنے لگا—”کچھ نہ بوجھو دوست.....“

کوئی بہت لمبی کہانی کہنا شروع کرنے والا جیسے شروع کرنے کے  
 پہلے تیاری کرتا ہے، اُسی طرح تیاری کے—عملی‘ منہ کا کور  
 چلنی چلنی کھاکر اور ہاتھ کا کور بتل مٹھن غی کر کر دیا اپنی  
 امان کی مرتبہ کی درد بھری کہانی کہنے لگا—”ہاں، روگ بڑا  
 بھانگر ہی رہا بھائی، اور لگا بھی اُس طرح سے کہ کسی کو بتہ دک  
 نہ لگا کہ وہ بھیماری کا شکار ہو رہی ہیں۔ ایک دن مٹھن کسی کام  
 سے براہر گیا ہوا تھا اور دو پہر کو جب گھر آیا تو دیکھتا تھا ہوں...  
 “.....“ گھری سانس لیکر وہ کہتا تھا—”کہ امان کو بخار چڑھا  
 ہوا ہے۔“

شہلو پتیل کا اگھانا مزے سے کھاتا جاتا اور بھوج بھوج میں دوست کے منہ کی طرف دیکھ کر 'ہاں' کہتا جاتا . شامو کھانے کی بات پانکل ہی بھول کھا تھا . اُس نے بیساری کا روپ بدلنے 'ویدسوں کو بلانے' آخر بڑے وید کو بلانے شہر کی طرف جانے اُس وقت راستے میں ہوئی تکلیفوں کے چمھلنے وغیرہ' ماں کی آتھ مہلنے کی ہمساری' چکھسا اور آخر کار اُنکی موت' سب باتیں کوئی ایک گھنٹے میں کہ ڈالیں . اتنی لمبی کہانی کبک شامو بہت تھک گیا تھا . مگر ایسے یہ تسلی ہو رہی تھی کہ اُس کا دوست ماں کے لئے کی ہوئی سہاراں کی بات سلکھ من ہی من اُسکئی تعریف



बया हिनद

बबों की दुनिया

जनवरी सन् १९११

दोनों जब बड़े हुए, कमाई और घर गृहस्थी में लग गये, तो रोष दोनों मिलने का उन्हें मौका नहीं मिलता था। कभी सप्ताह में एक रोष मिलने में दो दिन, इसी तरह वह मिला करते थे। मगर, दिन, कभी महीने में दो दिन, उसी तरह और उसी ढंग से बातें जब मिलते, उसी पुराने ढंग से मिलते और उसी ढंग से बातें करते।

बड़े होने पर शामू बड़ा बातूनी निकला। और जितना शामू बातूनी निकला, उतना ही शीनू दबडू बन गया। शामू के सामने किसी छोटी सी बात की चर्चा कोई करे, वह उस सिलसिले में घंटों बोलता। मगर, शीनू ऐसा था कि कोई घंटों बोले। वह दो या तीन शब्द बड़ले में बोलता। इस बातूनी स्वभाव के कारन शामू को कई बार अपने मतलब से हाथ धोना पड़ा। और शीनू हालांकि कम बोलता था, फिर भी अपने हित का उसे हरदम खयाल रहता था।

एक दिन कुछ समय बाद दोनों दोस्त मिले। बहुत देर तक बातें हुईं। जब विदा होने लगे तो शीनू ने कहा—“दोस्त, कोई अच्छी बीष खाने की इच्छा हो रही है कई दिनों से। तुम नहीं मिले, इसी लिये कुछ इन्तजाम नहीं किया।”

शामू बोला—“अच्छा, तब हो जाय आज तुम्हारी इच्छा-पूर्ति। कबो तो शाम को फिर किसी जगह मिलें?”

शाम को दोनों मिले। दोनों ने एक एक रुपया लिया और बाजार से कई चीजें मंगाईं अलग अलग पत्तों पर खाना तो वह जानते ही

बच्चों की दुनिया जनवरी सन् १९११

नया हलद

दोनों जब बड़े हुए, कमाई और घर गृहस्थी में लग गये, तो रोष दोनों मिलने का उन्हें मौका नहीं मिलता था। कभी सप्ताह में एक रोष मिलने में दो दिन, इसी तरह वह मिला करते थे। मगर, दिन, कभी महीने में दो दिन, उसी तरह और उसी ढंग से बातें जब मिलते, उसी पुराने ढंग से मिलते और उसी ढंग से बातें करते।

बड़े होने पर शामू बड़ा बातूनी निकला। और जितना शामू बातूनी निकला, उतना ही शीनू दबडू बन गया। शामू के सामने किसी चहूती सी बात की चर्चा कोई करे, वह उस सिलसिले में घंटों बोलता। मगर, शीनू ऐसा था कि कोई घंटों बोले। वह दो या तीन शब्द बड़ले में बोलता। इस बातूनी स्वभाव के कारन शामू को कई बार अपने मतलब से हाथ धोना पड़ा। और शीनू हालांकि कम बोलता था, फिर भी अपने हित का उसे हरदम खयाल रहता था।

एक दिन कुछेक सेर बाद दोनों दोस्त मिले। बहुत देर तक बातें हुईं। जब विदा होने लगे तो शीनू ने कहा—“दोस्त, कोई अच्छी बीष खाने की इच्छा हो रही है कई दिनों से। तुम नहीं मिले, इसी लिये कुछ इन्तजाम नहीं किया।”

शामू बोला—“अच्छा, तब हो जाय आज तुम्हारी इच्छा-पूर्ति। कबो तो शाम को फिर किसी जगह मिलें?”

शाम को दोनों मिले। दोनों ने एक एक रुपया लिया और बाजार से कई चीजें मंगाईं अलग अलग पत्तों पर खाना तो वह जानते ही







महमूद ने कहना शुरू किया—“एक दिन मैं स्कूल के बहाने से सिनेमा चला गया। यह बात पिताजी तक पहुंची तो उन्होंने मुझे खूब पीटा और मैं गुस्से में आकर घर से निकल गया। फिर मारा मारा फिरता बम्बई आ पहुँचा। कुछ दिन तो मैंने भीक माँग कर गुजारे, फिर यह ठीक न लगा तो मैंने चोरी करना सीख लिया।

“एक दिन स्टेशन की तरफ चल पड़ा। देखा एक बड़ा शरनारथी पड़ा सो रहा है। मैंने आब देखा न ताब उसकी जेब पर कैंची चला दी। भाग ही रहा था कि बूढ़ा जाग पड़ा और चिल्लाने लगा—“चोर, चोर!” बस पुलिस वालों ने मुझे पकड़ लिया।” वह अभी पूरी बात कहने न पाया था कि मेरी आँख खुल गई और मैं पागलों की तरह “कहाँ है चोर, पकड़ो पकड़ो चोर को।” चिल्लाने लगा। मेरी बात सुनकर महमूद और रशीद ने हंसना शुरू किया। फिर मैंने कहा—“तुम सब इस जंगल में कैसे पहुँचे?” इस पर महमूद हँसने लगा, जोर जोर से खिल खिल खिल, और इधर मुझे गुस्सा आ रहा था। जी चाह रहा था कि एक धौल मार दूँ। इतने में रशीद ने कहा—“बात यह है कि जब हम तुम्हारे घर रेडियो पर “बाल सभा” का प्रोग्राम सुनने गए तो तुम्हारी माता जी ने रोते हुए कहा था कि ‘सुरेश घर से रुठकर कहीं चला गया है’। बस हम सब तुम्हारी खोज में चले आए।”

यह बात सुनते ही मैं घबराकर उठ खड़ा हुआ और साथियों के साथ घर की आँग चल पड़ा। देखा माता जी दरवाजे में खड़ी मेरा

महमूद ने कहना شروع किया—“एक दिन मैंने स्कूल के बहाने से सिनेमा चला किया। यह बात पिता जी तक पहुँची तो उन्होंने मुझे खूब पीटा और मैंने फुस फुस में आकर घर से निकल गया। फिर मारा मारा फिरता बम्बई आ पहुँचा। कुछ दिन तो मैंने भीक माँग कर गुजारे, फिर यह ठीक न लगा तो मैंने चोरी करना सीख लिया।

“एक दिन स्टेशन की तरफ चल पड़ा। देखा एक शरनारथी पड़ा सो रहा है। मैंने आँख देखा न ताँ अँस की जेब पर कैंची चला दी। भाग ही रहा था कि बूढ़ा जाग पड़ा और चिल्लाने लगा—“चोर, चोर!” बस पुलिस वालों ने मुझे पकड़ लिया।” वह अभी पूरी बात कहने न पाया था कि मेरी आँख खुल गई और मैं पागलों की तरह “कहाँ है चोर, पकड़ो पकड़ो चोर को।” चिल्लाने लगा। मेरी बात सुनकर महमूद और रशीद ने हंसना शुरू किया और मुझे गुस्सा आ रहा था। जी चाह रहा था कि एक धौल मार दूँ। इतने में रशीद ने कहा—“बात यह है कि जब हम तुम्हारे घर रेडियो पर “बाल सभा” का प्रोग्राम सुनने गए तो तुम्हारी माता जी ने रोते हुए कहा था कि ‘सुरेश घर से रुठकर कहीं चला गया है’। बस हम सब तुम्हारी खोज में चले आए।”

यह बात सुनते ही मैं घबराकर उठ खड़ा हुआ और साथियों के साथ घर की आँग देखा माता जी दरवाजे में खड़ी मेरा



बिताने कशमीर की ओर चल पड़ा है. स्टेशन पर भाई साहब ने बम्बई का टिकट खरीद लिया और देखते देखते धुआँ उड़ाती गाड़ी आ पहुँची. मैं और भाई साहब गाड़ी में बैठ गए. रेल छक छक करती ज़ली जा रही थी. बम्बई आ गया. हम उतर पड़े और एक होटल में ठहर गए.

शाम का सुन्दर समय था. भाई साहब किसी काम से बाहर गए हुए थे. मैं अकेला होटल की तीसरी माला में अपने कमरे में बैठा “नया हिन्द” के लिये कविता लिख रहा था. नीचे जो नज़र पड़ी तो क्या देखता हूँ कि एक लड़के को दो पुलिस वाले पकड़े जेल की तरफ़ लिये जा रहे हैं. मैंने लिखना बन्द कर दिया और भागा भागा नीचे आया, फिर पास जा कर उस लड़के को देखने लगा.

“बारे ! यह तो मेरा पुराना साथी महमूद है.” महमूद को इस हालत में देख कर मैं परेशान हो गया. लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि उसे बोरी करने पर पकड़ा गया है और ज़मानत पर बूट सकता है. मुझ से यह हालत देखी न गई कि मेरा साथी जेल में रहे और मैं बम्बई के होटल में मजे उड़ाऊँ. भागा भागा कमरे में गया. इतने में भाई साहब भी आ पहुँचे थे. मैंने उन्हें सारी कथा सुनाई और उन्होंने महमूद की ज़मानत की पूरी रकम बढ़ा कर दी, जिसकी बख़्श से मेरा साथी जेल से छोड़ दिया गया. जेल से सीधा वह मेरे पास आया और मैंने उसे गले लगा लिया. उसकी बाँखों से भाँस पड़ रहे थे. कुछ देर बाद मैंने पूछा—“बताओ तो महमूद ! तुम्हारी बख़्श हालत कैसे हुई ?”

यह कहकर मैं और जल प्या हूँ. अस्थिरता पर बेहती. صاحب ने बीस का तिकट ख़रीद लिया और देखते देखते देहलौ आती लगी. आँखें लगी. मैं और बेहती सावधान लगी. मैंने बिना कहे. रेल ज़क ज़क करती चली जा रही थी. बीस लगी. हम अँधेरे और एक होटल में ठहर गئے.

शाम का सुन्दर समय था. बेहती सावधान लगी. मैंने बिना कहे. रेल ज़क ज़क करती चली जा रही थी. बीस लगी. हम अँधेरे और एक होटल में ठहर गئے.

“आरे ! यह तो मेरा पुराना साथी महमूद है.” महमूद को इस हालत

में देखकर मैं परेशान हो गया. लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि उसे ज़ोरी करने पर पकड़ा गया है और ज़मानत पर ज़क ज़क करती चली जा रही है. मैंने उन्हें सारी कथा सुनाई और उन्होंने महमूद की ज़मानत की पूरी रकम बढ़ा कर दी, जिसकी बख़्श से मेरा साथी जेल से छोड़ दिया गया. जेल से सीधा वह मेरे पास आया और मैंने उसे गले लगा लिया. उसकी बाँखों से भाँस पड़ रहे थे. कुछ देर बाद मैंने पूछा—“बताओ तो महमूद ! तुम्हारी बख़्श हालत कैसे हुई ?”



## सपनों की दुनिया

(भाई नागराज प्रसाद)

गर्मी के दिन थे, चरती खूब तप रही थी. हमारे स्कूल सुबह के ओ. कोई डेढ़ बजे स्कूल से घर आया, थका थकाया, देखा, बाकेला राजू बैठा फटे कपड़ों की ठीक कर रहा है. मैंने पूछा—“राजू! माता जी कहाँ गई हैं?” वह कहने लगा—“बीबी अपनी बड़ी दीदी के हाँ मेहमान गई हैं.” फिर राजू ने मेरे सामने ठन्डी रोटी और बासी सालन रख दिया. मैंने राजू को गुस्से की नजर से देख कर कहा—“राजू, यह घर है या नरक, मैं स्कूल से जब घर आया हूँ, देखो तो घूप की क्या हालत है. यह सोच कर आया था कि घर पहुँच कर मखे का खाना खाऊँगा लेकिन यहाँ तो चौपट नगरी है.”

मैं अपनी बात पूरी भी न करने पाया था कि राजू ने बात काटते हुए कहा—“भैया जी, आपकी माता जी के जल्दी जाने से कोई ठीक इन्तजाम न हो सका. शान्ति से काम लीजिये. कल से सब मामला ठीक हो जाएगा.”

मगर मैं चुपचाप बाहर निकल खड़ा हुआ. राजू मुझे जाते देख कर भागा भागा आया और जाने से रोकने लगा. लेकिन मैंने बूढ़े राजू को एक तरफ ढकेल दिया और जंगल की तरफ निकल गया. कुछ दूर जाने के बाद मैं बहुत थक गया और अपनी थकन दूर करने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गया. ठन्डी हवा चल रही थी, मुझे नींद आने लगी. बाँलें मारी होने लगी और मैं सो गया. फिर मैंने

## सपनों की दुनिया

(बेहारी नाराज प्रसाद)

किसी के दिन थे, दुबरी खूब तप रही थी. हमारे स्कूल صبح के थे. कौन्ती तिये बच्चे स्कूल से लौ आया, तेका तेका, दिक्का, दिक्का राजू बेहता बेहते कपड़ों को तैय कर रहा है. मैंने पूछा—“राजू! माताजी कहाँ गئی हैं?” वह कहने लगा—“मौसी अली भोई दिदी के हाँ मेहमान गئی हैं.” फिर राजू ने मेरे सामने तैय रोटी और बासी सालन रख दिया. मैंने राजू को गुस्से की नजर से देख कर कहा—“राजू, यह घर है या नरक, मैं स्कूल से जब घर आया हूँ, देखो तो घूप की क्या हालत है. यह सोच कर आया था कि घर पहुँच कर मखे का खाना खाऊँगा लेकिन यहाँ तो चौपट नगरी है.”

मैं अपनी बात पूरी भी न करने पाया था कि राजू ने बात काटते हुए कहा—“भैया जी, आपकी माता जी के जल्दी जाने से कोई तैय इन्तजाम न हो सका. शान्ति से काम लीजिये. कल से सब मामले तैय होजाये गे.”

मगर मैं चुपचाप बाहर निकल खड़ा हुआ. राजू मुझे जाते देख कर भागा भागा आया और जाने से रोकने लगा. लेकिन मैंने बूढ़े राजू को एक तरफ ढकेल दिया और जंगल की तरफ निकल गया. कुछ दूर जाने के बाद मैं बहुत थक गया और अपनी थकन दूर करने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गया. ठन्डी हवा चल रही थी, मुझे नींद आने लगी. आँखें मारी होने लगी और मैं सो गया. फिर मैंने





एडीटर—श्रेम भाई

अधीकर—प्रियम बेहारी

## रेल का खेल

(बहन सुरैया बालो, पटना)

बाँवनी कैसी दूध सी बिखरी बाग की पत्ती पत्ती निखरी  
फरीया तू इंजन बनजा  
हम सब मिल बन जाएँ रेल  
आओ आओ खेलें खेल  
बन कर लैन निकलना सीखें सीधा रस्ता चलना सीखें  
ऊँच नीच का फर्क मिटाकर  
हम तुम वह सब कर लें मेल  
आओ आओ खेलें खेल  
बलती गाड़ी छक छक छक बोलता इंजन फक फक फक  
अपनी रेल है क्या अलबेली  
आग न पानी और न तेल  
आओ आओ खेलें खेल

‘बच्चों की दुनिया’ में छपने के बिये इस पते पर अपने लेख,  
कविताएँ और कथाएँ भिजवाइये—  
श्रेम भाई, एडीटर ‘बच्चों की दुनिया.’ (नया हिन्द) 235, मुराल  
पुरा हैराबाद इन्डियन.



## दिल का कहेल

(बेन त्रिया बालो, पटना)

आओ कहलें कहलें  
फेरुजा तू अन्जन बिन जा  
हम सब मिल बिन जाऊँ दल  
आओ कहलें कहलें  
नकला सुकियों सेंदहा रस्ते चला सुकियों  
आँख नुहा का फरक मंदा  
हम तू सब कर लें मेल  
आओ कहलें कहलें  
चलती गाड़ी छक छक छक बोलता अन्जन बिक बिक बिक  
अपनी रेल है क्या अलबेली  
आँख न पानी और न तेल  
आओ कहलें कहलें

‘बच्चों की दुनिया’ में छपने के लिये इस पते पर अपने लेख,  
कविताएँ और कथाएँ भिजवाइये—  
प्रियम बेहारी, अधीकर ‘बच्चों की दुनिया’ (नया हिन्द) 235, मुराल  
पुरा हैराबाद इन्डियन.



नया हिन्द

कुछ किताबें

जनवरी सन् '५१

विराजभारती चीनभवन ने हिन्दी में डाक्टर सन यात सेन की इस किताब को निकाल कर वस्तु की एक भारी मांग पूरी की है। चीनी इतिहास, कलचर, सभ्यता और साहित्य पर भी ऐसी किताबों की सख्त जरूरत है। चीन भारती और उसके डाइरेक्टर प्रोफेसर तान युन शान पिछले पचीस साल से चीन और भारत के बीच कलचरी संबंध बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी कोशिशों का नतीजा अब हमारे सामने आ रहा है। अगर चीन भारती चीन को भारत की जनता तक पहुँचा सके तो उसका मिशन पूरा हुआ करना नहीं।

इस किताब को पढ़ने से पता चलता है कि हिन्दुस्तान और चीन की समस्याएं, कलचर, सभ्यता, रहन सहन और सोचने के तरीक़े बेहद मिलते जुलते हैं। और हम दोनों का नफ़ा नुक़सान एक दूसरे के साथ बंधा हुआ है। इसलिये इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा लोग पढ़ें यह हमारी इच्छा है।

भातुचन्द्र वर्मा

आई हुई किताबें :-

राज भाषा—दो भाग, हिन्दी)

आदर्श जीवनियाँ ( हिन्दी )

परछाई ( उर्दू )

मुश्तक़ा ख़ान ( उर्दू )

नया हल्द

कुछ किताबें

जुलै सन् '५१

रशु भारती चीन भवन ने हल्दी में डाक्टर सन यात सेन की इस किताब को निकाल कर वस्तु की एक भारी मांग पूरी की है। चीनी इतिहास, कलचर, सभ्यता और साहित्य पर भी ऐसी किताबों की सख्त जरूरत है। चीन भारती और उसके डाइरेक्टर प्रोफेसर तान युन शान पिछले पचीस साल से चीन और भारत के बीच कलचरी संबंध बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी कोशिशों का नतीजा अब हमारे सामने आ रहा है। अगर चीन भारती चीन को भारत की जनता तक पहुँचा सके तो उसका मिशन पूरा हुआ करना नहीं।

इस किताब को पढ़ने से पता चलता है कि हिन्दुस्तान और चीन की समस्याएँ, कलचर, सभ्यता, रहन सहन और सोचने के तरीक़े बेहद मिलते जुलते हैं। और हम दोनों का नफ़ा नुक़सान एक दूसरे के साथ बंधा हुआ है। इसलिये इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा लोग पढ़ें यह हमारी इच्छा है।

—भगत चन्द्र वर्मा—

आई हुई किताबें :-

राज भाषा—दो भाग ( हल्दी )

आदर्श जीवनियाँ ( हल्दी )

परछाई ( उर्दू )

मुश्तक़ा ख़ान ( उर्दू )

मुश्तक़ा ख़ान ( उर्दू )



१०५५ भा. इस उसूल को समझाते हुए उन्होंने एक दूर पूरब संघ बनाने की भी इच्छा प्रगट की जिसमें वह चीन, बरमा, हिन्दुस्तान, ईरान और अफगानिस्तान को शामिल करना चाहते थे।

तीसरा सिद्धान्त है 'जीविका का सिद्धान्त' यह साम्यवाद के दर्शन और उसके तरीकों को गलत मानता है, लेकिन साम्यवाद के मकसद से सहमत है।

सन यात सेन की इस किताब का अनुवाद किया है श्री कुरन किंकर सिंह ने। यह विश्वभारती चीन-भवन, शान्तिनिकेतन में हिन्दी के प्रोफेसर हैं। अनुवाद अच्छा है। चीनी कहावतों और मुहावरों को हिन्दी का जामा पहनाने का काम बड़ी होशियारी से किया गया है। पर कुछ वाक्य बेनुके हैं, जैसे :—

“चीन एक शताब्दी से पश्चिमी देशों के प्रमुख के नीचे है।”  
“चीन ने अपनी प्राचीन प्रतिष्ठा को केवल एक रास्ते से प्राप्त नहीं किया था।” बरौरा. इस तरह के वाक्य जगह जगह आए हैं।

अनुवाद की भाषा बहुत बेमिल और मुश्किल है। इसे आसान बनाया जा सकता था। बेमौक़े बड़े बड़े संस्कृत के शब्द रख कर अनुवादक ने इस किताब को जनता के मतलब का नहीं रखा।

हिन्दुस्तान चीन का पड़ोसी है। पर हिन्दुस्तान की जनता चीन के बारे में बहुत कम जानती है क्योंकि जनता की भाषा में चीन के बारे में किताबें नहीं मिलतीं। आज भारत और चीन दोनों ने एक नई किन्दगी में इकट्ठा रखा है। भारत के लोग चीन को समझना चाहते हैं और चीन के लोग भारत को।

दुनिया की नौबत सचमुच बुरी है। . . . . .  
किया है। . . . . .  
संकेत बनाई की भी अच्छा प्रकट की जिस में उस देश में 'चीन' ब्रमा' . . . . .  
हल्दस्तान' ईरान और अफगानिस्तान को शामिल करना चाहते थे।

तीसरा सिद्धान्त है 'जीविका का सिद्धान्त' यह साम्यवाद के दर्शन और उसके तरीकों को गलत मानता है, लेकिन साम्यवाद के मकसद से सहमत है।

सन यात सेन की इस किताब का अनुवाद किया है श्री कुरन किंकर सिंह ने। यह विश्वभारती चीन-भवन, शान्तिनिकेतन में हिन्दी के प्रोफेसर हैं। अनुवाद अच्छा है। चीनी कहावतों और मुहावरों को हिन्दी का जामा पहनाने का काम बड़ी होशियारी से किया गया है। पर कुछ वाक्य बेनुके हैं, जैसे :—

“चीन एक शताब्दी से पश्चिमी देशों के प्रमुख के नीचे है।”  
“चीन ने अपनी प्राचीन प्रतिष्ठा को केवल एक रास्ते से प्राप्त नहीं किया है।” बरौरा. इस तरह के वाक्य जगह जगह आए हैं।

अनुवाद की भाषा बहुत बेमिल और मुश्किल है। इसे आसान बनाया जा सकता है। अनुवादक ने इस किताब को जनता के मतलब का नहीं रखा।

हिन्दुस्तान चीन का पड़ोसी है। पर हिन्दुस्तान की जनता चीन के बारे में बहुत कम जानती है क्योंकि जनता की भाषा में चीन के बारे में किताबें नहीं मिलतीं। आज भारत और चीन दोनों ने एक नई किन्दगी में इकट्ठा रखा है। भारत के लोग चीन को समझना चाहते हैं और चीन के लोग भारत को।



नयाँ हिन्दू

कुछ किताबें

जनवरी सन् १९११

करना, या विदेशी तैयार माल ब्योहार में लाने से इंकार करना, सरकार द्वारा चालू किया गया सिक्का ब्योहार करना.....

सरकार द्वारा चालू किया गया सिक्का ब्योहार करने लगे और "अगर भारत की नाई हमारे लोग भी असहयोग करने लगे और अगर कुल के आधार पर हम राष्ट्रीय एकता कायम कर सकें तो कोई बात नहीं, चाहे विदेशी लोग किसी तरह का कौजी, माली या आबादी सम्बन्धी दबाव क्यों न डालें, हम निडर रहेंगे।"

इस सवाल का जबाब देते हुए कि अगर चीन एक ताकतवर और संगठित कौम हो जाए तो उसका दूसरे देशों की तरफ क्या कर्ज होगा, सनयात सेन ने कहा :-

"सिर्फ अगर हम कमजोरों को उबारें और गिरि हुआओं को ऊँचा उठावें तो हम अपने राष्ट्र के दैवी कर्तव्य का पालन करेंगे. आज हम चीन को आगे ले जाने से पहले इस बात की प्रतिज्ञा करेंगे कि हम गिरि हुआओं को उठाएंगे और कमजोरों की सहायता करेंगे और जत्र हम मजबूत हो जाएंगे और शक्तिशालियों के राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व की आप बीती मुसीबतों पर शौर करेंगे और दूसरे निर्बल और कमगिनत लोगों को उसी तरह तकलीफ में पड़े हुए देखेंगे तो हम चठ खड़े होंगे और साम्राजवाद को खत्म कर देंगे."

आज चीन एशिया का सबसे ज्यादा ताकतवर और संगठित मुल्क है. उसकी खेदने में लगी हैं.

लोकाशाही का

करना' या बंदिसी तैयार माल ब्योहार में लाने से इंकार करना' बंदिसी जजुरों को तुरी देना' बंदिसी बेलक नोट न लेना' कौल जेहन सरकार द्वारा जालू किया सके ब्योहार करना.....

"अगर ब्योहार की ना'हें हमारे लोक भी असहयोग करने लगे तो अगर कुल के अहार पर हम राष्ट्रिय एकता कायम कर सकें तो कौनी बात नहें, चाहे बंदिसी लोक किसी तरह का कौजी, माली या आबादी सम्बन्धी दबाव क्यों न डालें, हम निडर रहेंगे."

अस सवाल का जवाब दिते हुऐ के अर जेहन एक टाकतवर और संकतमें त्रुम हो जाऐ तो अस का दुसरे देसों की टारफ किया फुरज होगा. सनयात सेन ने कहा :-

"सिर्फ अगर हम कमजूरों को आबायें और कुरे हूयों को अरुंजा अहारयें तो हम अने राश्ट्र के देसों कुरीबे का पालन करिगके. अज हम जेहन को अके ले जाऐ से पहले अस बात की परतका कर लिये के हम कुरे हूयों को अतहायिगके और कमजूरों की सहायता करिगके और जब हम मजबूत हो जायिगके और शक्तिशालियों के राज नीतक और आर्थिक प्रभित्व की आप बीतिये मजबूतों पर शूर करिगके और दुसरे नरबल और कम कलत लोकों को असै टाकलिय मेलों पुरे हूऐ देरबेरिगके तो हम तेह कुरे हूयों के और साम्राज राद को खतम कर दिगके."

अज जेहन अिशिया का सब से ज्यादा टाकतवर और संकतमें टाकत है. असै फुरजियें कुरिया से अमरिकी साम्राज रादियों को कहेदियेने मेंल लगी हेल.

टाकत सनयात सेन का दुसरा सदाकत तैयार लोक शाही का सदाकत.







था. जनता के भी यही तीन नारे थे. चीन का पहला लोकशाही विधान "जनता के तीन सिद्धान्त वाला विधान" कहा जाता है.

क्रान्ति से पहले चीन के लोग अपने देस की खतनी परबाह नहीं करते थे जितनी अपने परिवार की. उनमें कौमी जखवात की बेहद कमी थी और कौमी एकता जैसी कोई चीज थी ही नहीं. इस लिये वह बिदेसी साम्राजशाही से लोहा नहीं ले सकते थे. डाक्टर सन यात सेन ने चीन की जनता को राष्ट्रीयता का सिद्धान्त सिखा कर उनको अपने पैरों पर खड़ा किया.

चीन से बिदेसी बसर को निकालने के लिये उन्होंने दो रास्ते सुझाए. पहला, चीन के लोगों में कौमी भावना पैदा करना, दूसरा बिदेसियों के साथ असहयोग करना.

गांधी जी के असहयोग आन्दोलन का डाक्टर सन यात सेन पर काफी असर पड़ा. इस बारे में सन यात सेन लिखते हैं :—

"अगर हम सभी लोग जान जाएं कि हम शोशित हैं और इस हद तक आ पहुंचे हैं कि हमारा उबार होना नामुमकिन है और अगर हम संगठित होना चाहते हैं तो हमें पहले हर तरह के कुलों को कुल समुदाय में और तब इन कुल समुदायों को एक बड़े कौमी संघ में खरूर संगठित करना है. तभी हमारे पास कुछ कारगर तरीके हो सकते हैं जिनके जरिये हम बिदेसियों से मुकाबला कर सकते हैं. जिस हालात में हम अभी हैं, हम बिदेसियों से नहीं लड़ सकते क्योंकि हमारे पास संगठित समुदाय नहीं है. और संगठित समुदाय हो जाए—

—

तथा. जल्ता के भी यही तीन नारे थे. चीन का पहला लोक शाही विधान "जल्ता के तीन सिद्धान्त वाला विधान" कहा जाता है.

क्रान्ति से पहले चीन के लोग अपने देस की खतनी परबाह नहीं करते थे जितनी अपने परिवार की. उनमें कौमी जखवात की बेहद कमी थी और कौमी एकता जैसी कोई चीज थी ही नहीं. इस लिये वह बिदेसी साम्राज शाही से लोहा नहीं ले सकते थे. डाक्टर सन यात सेन ने चीन की जल्ता को राष्ट्रीयता का सिद्धान्त सिखा कर उन को अपने पैरों पर खड़ा किया.

चीन से बिदेसी अर को निकालने के लिये उन्होंने दो रास्ते सुझाए. पहला, चीन के लोगों में कौमी भावना पैदा करना, दूसरा बिदेसियों के साथ असहयोग करना.

गांधी जी के असहयोग आन्दोलन का डाक्टर सन यात सेन पर काफी असर पड़ा. इस बारे में सन यात सेन लिखते हैं :—

"अगर हम सभी लोग जान जाएं कि हम शोशित हैं और इस हद तक आ पहुंचे हैं कि हमारा उबार होना नामुमकिन है और अगर हम संगठित होना चाहते हैं तो हमें पहले हर तरह के कुलों को कुल समुदाय में और तब उन कुल समुदायों को एक बड़े कौमी संघ में खरूर संगठित करना है. तभी हमारे पास कुछ कारगर तरीके हो सकते हैं जिनके जरिये हम बिदेसियों से मुकाबला कर सकते हैं. जिस हालात में हम अभी हैं, हम बिदेसियों से नहीं लड़ सकते क्योंकि हमारे पास संगठित समुदाय नहीं है. और संगठित समुदाय हो जाए—

—



करके 'हुनर' साहब ने हिन्दी साहित्य की सच्ची सेवा की है. हिन्दी प्रेमियों को चाहिये कि वह इस संग्रह को अपनावें और इससे पूरा पूरा लाभ उठावें.

भानुचन्द्र वर्मा

## जनता के तीन सिद्धान्त

लेखक—डाक्टर सन यातसेन. अनुवादक—कृष्ण सिंह,  
निकलने वाले—चीन-भारती, शान्तिनिकेतन, मिलने का पता—  
ग्रन्थविज्ञान, भागलपुर (बिहार). लिखावट—नागरी, सफा—354,  
शम सादे हैं रुपए.

डाक्टर सनयात सेन चीन के 'बापू' थे. चीन में बादशाही खतम  
करके लोकशाही कायम करने का काम सन यात सेन ने किया. सन  
1911 की चीनी क्रान्ति के बही नेता थे.

यह किताब सन यात सेन के लेखनों का संग्रह है. इसमें उन्होंने  
ने जनता के इन तीन सिद्धान्तों को समझाया है जिन्हें वह "चीन  
की आजादी के सिद्धान्त" समझते थे. वह तीन सिद्धान्त हैं —  
राष्ट्रीयता का सिद्धान्त, लोकशाही का सिद्धान्त और जीविका का  
सिद्धान्त. इन्हीं तीन बुनियादी चमूलों पर सन यात सेन ने चीन की  
सब से पहली इनकलाबी पार्टी, कुओमिनटान्ग, का संगठन किया

'हज़र' साहब ने हल्दी साहिब की सच्ची सेवा की है. हल्दी  
प्रेमियों को चाहिये कि वह इस संग्रह को अपनावें और इससे पूरा पूरा  
लाभ उठावें.

—बिहारी चन्द्र वर्मा

## जनता के तीन सिद्धान्त

लेखक—डाक्टर सन यात सेन. अनुवादक—कृष्ण सिंह,  
निकलने वाले—चीन-भारती, शान्तिनिकेतन, मिलने का पता—  
ग्रन्थविज्ञान, भागलपुर (बिहार). लिखावट—नागरी, सफा—354,  
शम सादे हैं रुपए.

डाक्टर सन यात सेन के 'बापू' थे. चीन में बादशाही खतम  
करके लोक शाही कायम करने का काम सन यात सेन ने किया. सन  
1911 की चीनी क्रान्ति के बही नेता थे.

यह किताब सन यात सेन के लेखनों का संग्रह है. इसमें उन्होंने  
ने जनता के इन तीन सिद्धान्तों को समझाया है जिन्हें वह "चीन  
की आजादी के सिद्धान्त" समझते थे. वह तीन सिद्धान्त हैं —  
राष्ट्रीयता का सिद्धान्त, लोक शाही का सिद्धान्त और जीविका का  
सिद्धान्त. इन्हीं तीन बुनियादी अमूलों पर सन यात सेन ने चीन की  
सब से पहली अकलाबी पार्टी, कुओमिनटान्ग, का संगठन किया



आपनी बीबी से प्रेम हो गया है ! कहानी अच्छी है. बिलकुल नई चीज है. हँसते हँसते पेट फूलने लगता है.

इस संग्रह को पढ़ जाने पर ऐसा लगता है कि हिन्दी और उर्दू नाम की दो अलग अलग भाशाओं का बज्रू सिर्फ़ दिमागी कितूर है. इस संग्रह की कहानियाँ न संस्कृतमयी हैं न फारसीमयी—बह हैं हमारी रोष की बोलचाल की भाशा में जिसे बच्चे भी आसानी से समझ लें. जिन लोगों की यह शलव धारना है कि हिन्दी हिन्दू कलचर का प्रतीक है और उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहानियों को पढ़ पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियाँ कारगर साबित हो सकती हैं.

इस संग्रह में दो एक कमियाँ भी हैं. पहली यह कि सम्पादक ने अपने कलाकारों की खिन्दगी का एक छोटा मोटा स्केच भी न देकर पढ़ने वालों के साथ ज्यादती की है. ख्वाजा साहब कब पैदा हुए, कहां पैदा हुए, कब निधना शुरू किया, क्या किया लिखा, पढ़ने वाला इन बातों को जानना चाहेगा.

दूसरे, कहीं कहीं ऐसा मालूम होने लगता है कि सम्पादक लेखक की असली भाशा को कुछ बदला है. अगर ऐसा किया गया है तो सम्पादक को यह कह देना चाहिये था.

तीसरे, सम्पादक ने पुस्तक के शुरू में इस संग्रह के छे लेखकों को " उर्दू साहित्य के प्रतिनिधि लेखक " कहा है इस निगाह से इस संग्रह में कुछ न चन्द्र, राजेन्द्रमिह बेंदी, इसमतशाहिद लनीफ और

अब्ली भी से प्रेम हो गया है ! कहानी अच्छी है. बान्गल नुमी चन्द्र है. हल्ले हल्ले बेत भोल्ले लक़्ता है.

अस स्लक़्ते को प्रेम जाने प्र ऐसा लक़्ता है के हल्ले ओर उर्दू नाम की दो अलग अलग भाशाओं का बज्रू सिर्फ़ दिमागी कितूर है. इस संग्रह की कहानियाँ न संस्कृतमयी हैं न फारसीमयी—बह हैं हमारी रोष की बोलचाल की भाशा में जिसे बच्चे भी आसानी से समझ लें. जिन लोगों की यह शलव धारना है के हल्ले हल्ले कलचर का प्रतीक है ओर उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहानियों को पढ़ पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियाँ कारगर साबित हो सकती हैं.

— अस स्लक़्ते में दो अलग अलग भाशाओं का बज्रू सिर्फ़ दिमागी कितूर है. इस संग्रह की कहानियाँ न संस्कृतमयी हैं न फारसीमयी—बह हैं हमारी रोष की बोलचाल की भाशा में जिसे बच्चे भी आसानी से समझ लें. जिन लोगों की यह शलव धारना है के हल्ले हल्ले कलचर का प्रतीक है ओर उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहानियों को पढ़ पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियाँ कारगर साबित हो सकती हैं.

— अस स्लक़्ते में दो अलग अलग भाशाओं का बज्रू सिर्फ़ दिमागी कितूर है. इस संग्रह की कहानियाँ न संस्कृतमयी हैं न फारसीमयी—बह हैं हमारी रोष की बोलचाल की भाशा में जिसे बच्चे भी आसानी से समझ लें. जिन लोगों की यह शलव धारना है के हल्ले हल्ले कलचर का प्रतीक है ओर उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहानियों को पढ़ पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियाँ कारगर साबित हो सकती हैं.

— अस स्लक़्ते में दो अलग अलग भाशाओं का बज्रू सिर्फ़ दिमागी कितूर है. इस संग्रह की कहानियाँ न संस्कृतमयी हैं न फारसीमयी—बह हैं हमारी रोष की बोलचाल की भाशा में जिसे बच्चे भी आसानी से समझ लें. जिन लोगों की यह शलव धारना है के हल्ले हल्ले कलचर का प्रतीक है ओर उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहानियों को पढ़ पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियाँ कारगर साबित हो सकती हैं.

— अस स्लक़्ते में दो अलग अलग भाशाओं का बज्रू सिर्फ़ दिमागी कितूर है. इस संग्रह की कहानियाँ न संस्कृतमयी हैं न फारसीमयी—बह हैं हमारी रोष की बोलचाल की भाशा में जिसे बच्चे भी आसानी से समझ लें. जिन लोगों की यह शलव धारना है के हल्ले हल्ले कलचर का प्रतीक है ओर उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहानियों को पढ़ पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियाँ कारगर साबित हो सकती हैं.



बस कहानी है।

थह है 'मेरी दुनिया' यानी उन सब लोगों की दुनिया जो बीच के तबके के कहे जाते हैं, जहां न हंसी है न खुशी, न खिन्दगी न मौत, सिर्फ एक समस्या है—पेट की समस्या, सिर्फ एक खोज है—रोटी की खोज, इस कहानी को पढ़ने के बाद यह जी चाहने लगता है कि इस पूँजीवादी व्यवस्था को इतनी जोर का धक्का दे दिया जाए कि वह चकनाचूर हो जाए और फिर एक ऐसी नई दुनिया कायम की जाए जो सब की दुनिया हो, जहां न मैं किसी का लहू चूसूं न कोई मेरा लहू चूसे।

बौधी कहानी है शकीरुद्दौलत साहब की, नाम है 'भूत' इस में कुछ अनोखापन जरूर है पर चीज चमकी नहीं, डर वहम की एक अच्छी मिसाल पेश की गई है।

पांचवी कहानी है 'पंजाब का अलबेला' लेखक बलबन्त सिंह, अगर आप पंजाब के गांवों में आधी रात के वक़्त एक निहायत रंगीले मिजाज आदमी के साथ सफ़र करना चाहते हैं और पंजाब की जमीन और वहां के अलबेलों को समझना चाहते हैं तो इस कहानी को पढ़िये।

आखिरी कहानी है 'देढ़ी लकीर' लिखने वाले हैं सआदत इसन मन्दो, कहानी का नायक खिन्दगी को एक देढ़ी लकीर समझता है, वह अपनी बीबी को उसके घर से भगा ले जाता है क्योंकि उसे

लुकील और एक कता भी रहता है, सब की अिली दाचस्प कहानी है।

ये है 'मेरी दुनिया' यैली अं सब लुकील की दुनिया जो बीच के طبقे के कहे जाते हैं, जहां न हंसी है न खुशी, न खिन्दगी न मौत, सिर्फ एक समस्या है—पेट की समस्या, सिर्फ एक खोज है—रोटी की खोज, इस कहानी को पढ़ने के बाद यह जी चाहने लगता है कि इस पूँजीवादी व्यवस्था को इतनी जोर का धक्का दे दिया जाए कि वह चकनाचूर हो जाए और फिर एक ऐसी नई दुनिया कायम की जाए जो सब की दुनिया हो, जहां न मैं किसी का लहू चूसूं न कोई मेरा लहू चूसे।

चौथी कहानी है शफीक الرحمان صاحب की, नाम है 'बहुत' इस में कुछ अनोखापन जरूर है पर चीज चमकी नहीं, डर वहम की एक अच्छी मिसाल पेश की गई है।

पांचवी कहानी है 'पंजाब का अलबेला' लेखक बलबन्त सिंह, अगर आप पंजाब के गांवों में आधी रात के वक़्त एक निहायत रंगीले मिजाज आदमी के साथ सफ़र करना चाहते हैं और पंजाब की जमीन और वहां के अलबेलों को समझना चाहते हैं तो इस कहानी को पढ़िये।

आखिरी कहानी है 'देढ़ी लकीर' लिखने वाले हैं सआदत इसन मन्दो, कहानी का नायक खिन्दगी को एक देढ़ी लकीर समझता है, वह अपनी बीबी को उसके घर से भगा ले जाता है क्योंकि उसे



मांग और मुक्त पर लानत भेज, मुझे जी मर धिक्कार। क मत  
क्रूरजा उतारने के लालच में अपने इकलौते बेटे को मर्दी में मोंक  
दिया।”

हीरोशिमा पर एटम बम गिरता है। लड़ाई खत्म होती है पर  
दिलेर के बापस लौटने से पहले उसको बीबी घर से भाग जाती है।  
बच्चे को अनाथालय में छोड़ जाती है। हरा भरा चमन उजड़ जाता  
है पर शमशेर का कर्ज बना रहता है।

इस कहानी में क्रासिमी साहब ने जिस दुनिया की तसवीर खींची  
है उसे इतनी सच्ची उतारी है कि जैसे उस दुनिया के बीच वह खुद  
गुजर चुके हों।

अगर आप गरीबों की लाचारी, एक बाप की आह, एक नौ-  
जवान बीबी की तड़प से हमदर्दी रखते हैं तो इसे पढ़िये। और  
अगर आप इस दुनिया की बड़ी बड़ी समस्याओं को सुलमाने बैठे  
हैं तो कहानी के फिलासफर पटवारी की राय लेना न भूलिये।

तीसरी कहानी है 'मेरी दुनिया' लिखी है महेन्द्रनाथ ने।  
यह है आशियाना बिलडिंग में रहने वाले कुछ बाबुओं की  
कहानी—उन सब के जीवन की एक एक मलक. सब के सब बड़ी बड़ी  
छमंगें लेकर बम्बई में रहते हैं. किसी के सिर पर ऐक्टर बनने का  
जुनून सवार है, तो कोई फ़िल्म प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर बनना  
चाहता है. एक साहब बड़ी रंगीली तबियत के कवि हैं और एक साहब  
हैं क्लर्क जो मिर्क तरक्की पाने के लिये कोट और पैन्ट पहनते हैं और

एक तीली नेकटाई लगाते हैं जो उनके सुपरिन्टेन्डेंट को बहुत

क़रम आतले के लालच में लगे अक़रों बहते को बहती में ज़ेहनक  
वैसा।”

महोदय शोभा पर अंतिम बम करता है. लौती खत्म होती है पर दलहर  
के वापस लौटने से पहले अस्की बहोरी लहर से बहाक जाती है.  
बच्चे को अनाथालय में छोड़ जाती है. हरा भरा चमन लुप्त जाता है  
पर शमशेर का क़रज बना रहता है.

अस कहानी में क्रासिमी साहब ने जिस दुनिया की तस्वीर कियेलिखी  
है उसे अतली सच्ची आतरी है कि ज़ेहसे अस दुनिया के बहज व़े ख़ुद क़दर  
चुके हों.

अगर आप लहरों की लाचारी, एक बाप की आह, एक नौजवान  
बहोरी की लुपत से हमदारी रक़्ते हैं तो उसे पढ़ें. और अगर आप अस  
दुनिया की लुपत बहोरी ससुहायों को साज्जहाने बैठते हैं तो कहानी के  
फ़ला सडर पटवारी की रातले लियदाने पढ़लें.

तस्वीरी कहानी है 'मेरी दुनिया' लखी है महेन्द्रनाथ ने. ये है  
आशियाने बिलडिंग में रहने वाले क़ुछ बाबुओं की कहानी—अस सब के  
जहों की एक एक ज़ेहक. सबके सब बहोरी लुपतलें ले कर  
लुपतली में रहते हैं. किसी के सर पर अलक़्टर बलले का ज़ेहन सवार  
है, तो कूनी फ़िल्म प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर बल्ला च़ाहता है. एक साहब  
लुपतली तबियत के कूनी हों और एक साहब हों  
क़लक़ जो स़रफ़ त़रुकी पाने क़ल्लें कूत और लुपतलें बल्लें हों और  
एक लुपतली लुपतली लुपतली हों जो कूने स़ुपरिन्टेन्डेंट को बहुत



”... ۱۹۰۰ء میں اپنا بندوق آوار ہسپتال تازہ کر  
 کر دیتے ہیں۔“

”اور گوال اور بوندو اور جینب اور سکینا اور  
 لہنگے۔ اب ہم کرتے ہیں اور کان بکتے ہیں کہ پھر آپس میں نہ لویں گے۔  
 آپس میں نہ لویں گے۔“

یہ کہانی انہیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ہے، پہلے دن  
 سے بھری۔ پڑھتے ہیں بھاری۔ آپ بچوں کی زبان یاد آجاتی ہے۔  
 سن 47 کے درد ناک دن اور بھانک راتوں ہمارے دل اور دماغ  
 اور ہماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ہے۔

دوسری کہانی ہے ’ہیرو شیمہ سے پہلے‘ ہیرو شیمہ کے بعد۔  
 لیکچر ہیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے  
 ہیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے ’کلوتے بھگتے‘ دلہن کو فوج  
 میں بھرتی کرا دیتا ہے۔ ہیرو شیمہ پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی  
 اور امریکی فوجیں ہار رہی تھیں۔ اور جنہوں نے انکی ہار  
 کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ہیں وہ تیرپ آتھیں اور  
 دلہن کی بھری سے کہتا ہے:—

”نہ جانے کیا کچھ ہو چکا ہوگا۔ دعا کر بیٹی،  
 دعاؤں کا تانتا باندھ دے! اپنی دھانکوں مانگ کہ اللہ مہل  
 سے مدد مل جائے۔“

”اب میں اور کپال اور بلدو اور زلیب اور سکیٹہ اور سیٹا  
 سب تیرپ کرتے ہیں اور کان بکتے ہیں کہ پھر آپس میں نہ لویں گے۔  
 اب ہمیں معاف کر دیجئے اور لوٹ آئیے۔ آپ لوٹ آئیے گے  
 نہ یا پھر؟“

یہ کہانی انہیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ہے، پہلے دن  
 سے بھری۔ پڑھتے ہیں بھاری۔ آپ بچوں کی زبان یاد آجاتی ہے۔  
 سن 47 کے درد ناک دن اور بھانک راتوں ہمارے دل اور دماغ  
 اور ہماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ہے۔

دوسری کہانی ہے ’ہیرو شیمہ سے پہلے‘ ہیرو شیمہ کے بعد۔  
 لیکچر ہیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے  
 ہیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے ’کلوتے بھگتے‘ دلہن کو فوج  
 میں بھرتی کرا دیتا ہے۔ ہیرو شیمہ پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی  
 اور امریکی فوجیں ہار رہی تھیں۔ اور جنہوں نے انکی ہار  
 کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ہیں وہ تیرپ آتھیں اور  
 دلہن کی بھری سے کہتا ہے:—

”نہ جانے کیا کچھ ہو چکا ہوگا۔ دعا کر بیٹی،  
 دعاؤں کا تانتا باندھ دے! اپنی دھانکوں مانگ کہ اللہ مہل  
 سے مدد مل جائے۔“

یہ کہانی انہیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ہے، پہلے دن  
 سے بھری۔ پڑھتے ہیں بھاری۔ آپ بچوں کی زبان یاد آجاتی ہے۔  
 سن 47 کے درد ناک دن اور بھانک راتوں ہمارے دل اور دماغ  
 اور ہماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ہے۔

دوسری کہانی ہے ’ہیرو شیمہ سے پہلے‘ ہیرو شیمہ کے بعد۔  
 لیکچر ہیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے  
 ہیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے ’کلوتے بھگتے‘ دلہن کو فوج  
 میں بھرتی کرا دیتا ہے۔ ہیرو شیمہ پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی  
 اور امریکی فوجیں ہار رہی تھیں۔ اور جنہوں نے انکی ہار  
 کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ہیں وہ تیرپ آتھیں اور  
 دلہن کی بھری سے کہتا ہے:—

”نہ جانے کیا کچھ ہو چکا ہوگا۔ دعا کر بیٹی،  
 دعاؤں کا تانتا باندھ دے! اپنی دھانکوں مانگ کہ اللہ مہل  
 سے مدد مل جائے۔“

یہ کہانی انہیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ہے، پہلے دن  
 سے بھری۔ پڑھتے ہیں بھاری۔ آپ بچوں کی زبان یاد آجاتی ہے۔  
 سن 47 کے درد ناک دن اور بھانک راتوں ہمارے دل اور دماغ  
 اور ہماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ہے۔

دوسری کہانی ہے ’ہیرو شیمہ سے پہلے‘ ہیرو شیمہ کے بعد۔  
 لیکچر ہیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے  
 ہیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے ’کلوتے بھگتے‘ دلہن کو فوج  
 میں بھرتی کرا دیتا ہے۔ ہیرو شیمہ پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی  
 اور امریکی فوجیں ہار رہی تھیں۔ اور جنہوں نے انکی ہار  
 کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ہیں وہ تیرپ آتھیں اور  
 دلہن کی بھری سے کہتا ہے:—

”نہ جانے کیا کچھ ہو چکا ہوگا۔ دعا کر بیٹی،  
 دعاؤں کا تانتا باندھ دے! اپنی دھانکوں مانگ کہ اللہ مہل  
 سے مدد مل جائے۔“

یہ کہانی انہیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ہے، پہلے دن  
 سے بھری۔ پڑھتے ہیں بھاری۔ آپ بچوں کی زبان یاد آجاتی ہے۔  
 سن 47 کے درد ناک دن اور بھانک راتوں ہمارے دل اور دماغ  
 اور ہماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ہے۔

دوسری کہانی ہے ’ہیرو شیمہ سے پہلے‘ ہیرو شیمہ کے بعد۔  
 لیکچر ہیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے  
 ہیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے ’کلوتے بھگتے‘ دلہن کو فوج  
 میں بھرتی کرا دیتا ہے۔ ہیرو شیمہ پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی  
 اور امریکی فوجیں ہار رہی تھیں۔ اور جنہوں نے انکی ہار  
 کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ہیں وہ تیرپ آتھیں اور  
 دلہن کی بھری سے کہتا ہے:—

”نہ جانے کیا کچھ ہو چکا ہوگا۔ دعا کر بیٹی،  
 دعاؤں کا تانتا باندھ دے! اپنی دھانکوں مانگ کہ اللہ مہل  
 سے مدد مل جائے۔“

یہ کہانی انہیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ہے، پہلے دن  
 سے بھری۔ پڑھتے ہیں بھاری۔ آپ بچوں کی زبان یاد آجاتی ہے۔  
 سن 47 کے درد ناک دن اور بھانک راتوں ہمارے دل اور دماغ  
 اور ہماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ہے۔

دوسری کہانی ہے ’ہیرو شیمہ سے پہلے‘ ہیرو شیمہ کے بعد۔  
 لیکچر ہیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے  
 ہیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے ’کلوتے بھگتے‘ دلہن کو فوج  
 میں بھرتی کرا دیتا ہے۔ ہیرو شیمہ پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی  
 اور امریکی فوجیں ہار رہی تھیں۔ اور جنہوں نے انکی ہار  
 کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ہیں وہ تیرپ آتھیں اور  
 دلہن کی بھری سے کہتا ہے:—

”نہ جانے کیا کچھ ہو چکا ہوگا۔ دعا کر بیٹی،  
 دعاؤں کا تانتا باندھ دے! اپنی دھانکوں مانگ کہ اللہ مہل  
 سے مدد مل جائے۔“





कवि कास

## मेरी दुनिया

सम्पादक—श्री महमूद अहमद 'हुनर'

मिलने का पता—एसोशियेटेड पब्लिशर्स, शान्तिखुटीर, लूकर-

गंज, इलाहाबाद.

लिखावट नागरी, सफा—173, दाम सबा दो रुपए.

पुस्तक कहानियों का एक संग्रह है जिनके लेखक हैं चट्टू के नामी कलाकार—ख्वाजा अहमद अब्बास. अहमद नदीम कासमी, महेन्द्र नाथ, बलबन्त सिंह, शकीकुर्रहमान, सआदत हसन मन्टो. चुनाव अच्छा है. हर तरह की कहानियाँ हैं, रहस्य भी हैं, रोमान्स भी हैं, प्रेम भी हैं, हास्य भी हैं और हमारी रोज़मर्रा की समस्याएँ भी हैं.

कवि कास का कहानी "एक बच्चे का खत

## मेरी दुनिया

संपादक—श्री महमूद अहमद 'हुनर'

मिलने का पता—एसोशियेटेड पब्लिशर्स, शांति कूपर, लूकर-  
गंज, इलाहाबाद.

लिखावट—नागरी, सफा—173. दाम—सो दो रुपए.

पुस्तक कहानियों का एक संग्रह है जिनके लेखक हैं चट्टू के नामी कलाकार—ख्वाजा अहमद अब्बास. अहमद नदीम कासमी, महेन्द्र नाथ, बलबन्त सिंह, शकीकुर्रहमान, सआदत हसन मन्टो. चुनाव अच्छा है. हर तरह की कहानियाँ हैं, रहस्य भी हैं, रोमान्स भी हैं, प्रेम भी हैं, हास्य भी हैं, और हमारी रोज़मर्रा की समस्याएँ भी हैं.

ख्वाजा अहमद अब्बास की कहानी "एक बच्चे का खत

मेरे पास है. 173. दाम—सो दो रुपए.



हिन्दू सरकार के साथ नेपाल सरकार के प्रतिनिधियों की बातचीत के वे नतीजा रहने से पैदा हो गई है। और इस सिलसिले में पंडित नेहरू की यह बात याद रखने के लायक है कि हिन्दू नेपाल में एक बीघ का रास्ता चाहता था जिसमें पुराने बन्दोबस्त का तुरन्त ही जद्दोज्दारी हो जायता। लेकिन अगर यह रास्ता जल्द ही तलाश न कर लिया गया तो फिर इसकी खोज करना और इस पर चलना बहुत मुशकिल हो जायगा। मतलब यह कि अगर नेपाल के राना (प्रधान मन्त्री) खानदान ने अपनी तानाशाही न छोड़ी तो उन्हें वह सारे अधिकार और रियायतें छोड़ना पड़ेगी जो उन्होंने लगभग सौ बरस से अपने आपस में बाँट रक्खी हैं।

पंडित नेहरू ने यह भी कहा है कि हम न तो तीन साल के उस लड़के को राजा मानेंगे जिसे रानाओं ने गद्दी पर बिठा दिया है और न बाहर के किसी आदमी या राष्ट्र को नेपाल में कदम रखने और वहाँ के मामलों में गड़बड़ करने देंगे इस आगाही के तीन रुख हैं, एक तो रानाओं की तरफ, दूसरा बर्तानिया और अमरीका की तरफ जिनके आदमी गोरखे सिपाही भरती करने और “अजीब गरीब चिड़ियाँ तलाश करने के लिये” नेपाल जाते रहते हैं और तीसरे चीनी कम्युनिस्टों की तरफ जिन्होंने तिब्बत पर हमला किया है जिसकी सरहद नेपाल से मिली हुई है।

पर तिब्बत में चीनियों के आगे बढ़ने की पिछले कई हज़ारों से कोई ख़बर नहीं आई है। इसका एक बड़ा कारन तो वहाँ की सर्दी और बर्फ़ पड़ना है लेकिन एक दूसरा कारन यह भी हो सकता है कि चीन अपने बारे में हिन्द का हल देख कर तिब्बत के बारे में उसकी सलाह को थोड़ा बहुत मानने के लिये तैयार हो गया हो।

ٹانگریس کے دھارے نے جو زور پکڑا ہے اسکا ایک کارن وڈ نریشا ہے جو ہند سرکار کے ساتھ نیپال سرکار کے برقی نڈھوں کی بات چیت کے لیے نتیجہ دھلے سے بھدا ہوئی ہے۔ اور اُس سسٹے میں مذمت نہرو کی یہ بات یاد رکھنے کے لائق ہے کہ ہند نیپال میں ایک بھیج کا راستہ چاہتا تھا جس میں پرانے بلدوینست کو تربت ہی چڑ بھاد سے ختم نہ کیا جاتا۔ لیکن اگر یہ راستہ جلدی تلاش نہ کر لیا گیا تو پھر اس کی کھوج کرنا اور اس پر چلنا بہت مشکل ہو جائے گا۔ مطلب یہ ہے کہ نیپال کے وانا (پردھان ماتری) خاندان نے اپنی تانا شاہی نہ چھوڑی تو انہوں نے سارے اندھکار اور رعایتیں چھوڑنا پڑیں گی جو انہوں نے لگ بھگ سو برس سے اپنے آپس میں پالت رکھی ہیں۔

کی طرف چاہوں نے تبت پر حملہ کیا ہے جسکی سرحد نیپال  
 کھائے " نیپال جاتے وقتے ہیں اور تیسرے چھٹی کمونسٹوں  
 کو روکے سپاہی بھرتی کرنے اور "عجیب و غریب چیزیں" لاش کرنے  
 والوں کی طرف دوسرا پروٹاہمہ ور امریکہ کی طرف جانے آدمی  
 معاملوں میں گہرو کرنے دیئے۔ اس آگہی کے تین دن ہیں ایک  
 کے کسی آدمی یا واشٹر کو نیپال میں قدم رکھنے اور وہاں کے  
 کو روکے سپاہی بھرتی کرنے اور "عجیب و غریب چیزیں" لاش کرنے  
 والوں کی طرف دوسرا پروٹاہمہ ور امریکہ کی طرف جانے آدمی  
 معاملوں میں گہرو کرنے دیئے۔ اس آگہی کے تین دن ہیں ایک  
 کے کسی آدمی یا واشٹر کو نیپال میں قدم رکھنے اور وہاں کے

میں نے سوچا کہ اگر وہ میری طرف سے  
 کوئی خبر نہیں آتی ہے۔ اس کا ایک بڑا کارن تو رہاں کی سڑکی  
 اور پروف پڑنا ہے لیکن ایک دوسرا کارن یہ بھی ہوسکتا ہے کہ چین  
 اپنے بارے میں ہڈی کا رخ دیکھ کر قہر کے بارے میں اسکی صلاح  
 کو تھوڑا بہت مائل کیلئے تیار ہو گیا ہو۔



ज्यादा है. और इस फरक को दृष्टि और चर्चिल ऐटस बम की धमकी से पूरा करना चाहते हैं.

स्पेन के डिक्टेटर फ्रान्को से नातेदारी कायम कर के उस फरक को पूरा करने को एक और कोशिश हो रही है. मगर फ्रान्को ने बरतानिया से जिब्राल्टर की जो मांग की है उससे पतो चलता है कि यह सौदा खासा महंगा पड़ेगा. इसी तरह का एक सौदा पच्छिमी जर्मनी के अधिकारियों से किया जा रहा है जिनको एटलान्टिक सेना में जर्मन सैनिक भेजने को वाव न दी गई है. फ्रान्स यह वाव दते हिचकिचा रहा था इसलिये कि जर्मनी पहलो और दूसरी बड़ी लड़ाइयों में उसे बरबाद कर चुका है. पर अमरिका ने कुछ तो फ्रान्स को मदद और बचाव का यकीन दिला कर और कुछ जर्मन पलटनों की गिनती सुकरंर कर के उसे चुप कर दिया.

### नेपाल की गुटथी

नेपाल के महा-राजा के दिल्ली चले आने से उतकी गद्दी पर उनके तीन साल के पोंत के बिठा दिये जाने और उनके राज में कांग्रेस के बग़ावत शुरू कर देने से जो गुटथी पड़ गई थी वह अभी तक सुलभ नहीं सकी है. कांग्रेसी फौजों को सरकारी फौजियों ने केई जगह हरा दिया मगर कई जगह वह जीत भी गई. बीच में ममभौन क्रीएक उम्मीद पैदा हो गई थी जब नेपाल के प्रधान मंत्री ने अपने दोनो प्रतिनिधियों को हिन्द सरकार से बातचीत करने के लिये नई दिल्ली भजा था. मगर यह बातचीत बेनतीजा रही हिन्दुस्तान नेपाल की आजादी और मजबूती के लिये वहाँ के राज काज में जैसा सुधार कराना और

### जल्दोय सन १९१

### नया हल

زیادہ ہے۔ اور اس فرق کو ترمیم اور چارجل ایتم ہم کی دھمکی سے پورا کرنا چاہتے ہیں۔

اسپین کے ڈیکٹیٹر فرانکو سے ناتہ داری قائم کر کے اس فرق کو پورا کرنے کی ایک اور کوشش ہو رہی ہے۔ مگر فرانکو نے برطانیہ سے جبراً لٹرمی جو مالک کی ہے اس سے نڈہ چلتا ہے کہ یہ سردا خاصا مہنگا پڑے گا۔ اسی طرح کا ایک سردا بچھمی جرمینی کے ادھیکاروں سے کیا جا رہا ہے جنکو اتلانٹک سیلا میں جرمین سہلک بھجھنے کی دعوت دی گئی ہے۔ فرانس یہ دعوت دیتے ہچکچا رہا تھا اس لئے کہ جرمینی پہلی اور دوسری بڑی لیاہیوں میں اسے برباد کرچکا ہے۔ پر امریکہ نے کچھ نو فرانس کو مدد اور بچاؤ کا یقین دلا کر اور کچھ جرمین دلتوں کی کلتی مقرر کرکے اسے چپ کر دیا۔

### نیپال کی کٹھی

نیپال کے مہاراجہ کے دلی چلے آنے سے انکی کٹھی بڑان کے تین سال کے پونے کے ہتھا دئے جانے اور انکے راج میں کانگریس کے بڑاوت شروع کر دینے سے جو کٹھی پڑ گئی تھی وہ ابھی تک سلجھ نہیں سکی ہے۔ کانگریسی فوجوں کو سبکداری فوجوں نے کٹھی جگہ ہرا دیا مگر کٹھی جگہ وہ جہت ہوئی گئی۔ پہنچے مہوں مستحبوئے کی ایک امید پیدا ہوگئی تھی جب نیپال کے بردھان مندے نے اپنے دو بڑی ندھوں کو ہلد سبک سے بات چیت کرنے کیلئے نئی دلی بھجھا تھا۔ مگر یہ بات چیت بے نتیجہ رہی۔ ہلدستان بیدال کی آزادی اور مشبوتی کے لئے وہاں کے راج کاچ مہوں جھوسا سدھار کرا اور چلتا کو جاتے جتے دیا جاتا تھا۔



आई है.

संयुक्त राष्ट्रों का बड़ा दस्तावेज़, इसा तरह का एक ख़तर

### पहले योरप

अमरीका और चीन के ख़ास में कब तक और कहाँ तक तब-दीली होगी, यह अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन एटली ट्रुमैन बातचीत में अमरीका ने शायद बरतानिया की यह बात मान ली है कि जंगी तैयारियों में सब से पहले योरप पर ध्यान दिया जाए. इसलिये एंगलो अमरीकी प्रोपैगण्डे में चीन से ज्यादा रूस पर छोटें कसे जाते हैं और इसीलिये एटली ट्रुमैन मुलाकात के बाद एटला-न्टिक वाले मुल्कों में लड़ाई के सामान के लिये कच्चा माल जमा करने और बाँटने पर विचार किया जा रहा है और एटलान्टिक की एक फ़ौज बनाने और इसका कमान्डर मुक़र्रर करने की बात सोची जा रही है. जब तक यह तैयारियाँ पूरी नहीं होतीं उस वक़्त तक अमरीका और उस से ज्यादा बरतानिया चीन के साथ लड़ाई में उलझने से बचाव करेगा और मुमकिन है कि यह दोनों उसकी कोई न कोई बात मानने के लिये तैयार हो जाएँ. लेकिन बरतानिया और अमरीका योरप में जो तैयारियाँ कर रहे हैं अगर उनसे रूस को कोई बड़ा डर पैदा हो गया तो वह उनका ध्यान बाँटने के लिये चीन को यह सलाह देगा कि उन्हें कोरिया में उलझाए रक्खा जाए. और अगर रूस ने सोच लिया कि इन राष्ट्रों से उसे डर या सबेर लड़ना है तो मुमकिन है कि वह उन्हें अपनी तैयारियों पूरी करने का वक़्त न दे. इन राष्ट्रों के हिसाब से योरप में रूस की शक्ति कम से कई गुना

अमरीका और चीन के ख़ास में कब तक और कहाँ तक तब-दीली होगी, यह अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन एटली ट्रुमैन बातचीत में अमरीका ने शायद बरतानिया की यह बात मान ली है कि जंगी तैयारियों में सब से पहले योरप पर ध्यान दिया जाए. इस लिये एटलान्टिक की एक फ़ौज बनाने और अमरीका और अमरीका योरप में जो तैयारियाँ कर रहे हैं अगर उनसे रूस को कोई बड़ा डर पैदा हो गया तो वह उनका ध्यान बाँटने के लिये चीन को यह सलाह देगा कि उन्हें कोरिया में उलझाए रक्खा जाए. और अगर रूस ने सोच लिया कि इन राष्ट्रों से उसे डर या सबेर लड़ना है तो मुमकिन है कि वह उन्हें अपनी तैयारियों पूरी करने का वक़्त न दे. इन राष्ट्रों के हिसाब से योरप में रूस की शक्ति कम से कई गुना

### पहले योरप

अमरीका और चीन के ख़ास में कब तक और कहाँ तक तब-दीली होगी, यह अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन एटली ट्रुमैन बातचीत में अमरीका ने शायद बरतानिया की यह बात मान ली है कि जंगी तैयारियों में सब से पहले योरप पर ध्यान दिया जाए. इस लिये एटलान्टिक की एक फ़ौज बनाने और अमरीका और अमरीका योरप में जो तैयारियाँ कर रहे हैं अगर उनसे रूस को कोई बड़ा डर पैदा हो गया तो वह उनका ध्यान बाँटने के लिये चीन को यह सलाह देगा कि उन्हें कोरिया में उलझाए रक्खा जाए. और अगर रूस ने सोच लिया कि इन राष्ट्रों से उसे डर या सबेर लड़ना है तो मुमकिन है कि वह उन्हें अपनी तैयारियों पूरी करने का वक़्त न दे. इन राष्ट्रों के हिसाब से योरप में रूस की शक्ति कम से कई गुना



## نیا ہند

### دُنیا کا حال

جنوری سن ۵۱

ہیٹو چین پر بھی دھمکیاں دیں اور ان کے تازہ بیانیوں اور پچھلی حرکتوں کی بنیاد پر ایک سکس میں چین کے پرتوئید نے کہا ہے کہ لوائی بلدی کی تجویز ایک جال ہے جس کے ذریعہ امریکہ کوہیا میں اُتری فوجیں اور چینی ”والٹھروں“ کے ہاتھ باندھ کر خود کوہیا اور فارموسا کو ایلی زنجیر میں جکڑنا اور چین کو نقصان پہنچانا چاہتا ہے۔

چین کی یہ بات بالکل بے بنیاد نہیں کہی جاسکتی اور ابھی اُس پر دوش بھی نہیں لٹایا جاسکتا کہ وہ بلا وجہ لوائی کو بڑھاتا چاہتا ہے۔ اس لئے کہ اس کے برتی ندی نے کہا ہے کہ چین کی سرکار چینی والٹھروں کو کوہیا سے واپس بلا لینے کو تیار ہے اگر امریکہ فارموسا کو چھوڑ دے، کوہیا میں باغ کے دیس داخل نہ دیں اور چین کے ساتھ برابر والے کی طرح بات چیت کی جائے۔

یہ آخری بات سب سے زیادہ ضروری ہے۔ اگر چین کی یہ مانگ پوری ہو جائے تو فارموسا میں امریکہ نے جو حیثیت نہیں سناں پہلے چانگ لائی شپک کو دی تھی وہی چین کی نئی سرکار کو دی جا سکے گی اور کوہیا کے چھوڑے اور بدل ”پٹا اس لئے کہ وہاں اگر یو۔ این۔ آر۔ کی فوج کچھ دنوں کے لئے قی بھی رہی تو اس فوج کے کنٹرول میں چین بھی شپک رہے گا۔ اس طرح امریکہ اگر یو۔ این۔ او۔ میں چین کو شامل کر لے تو دنیا کی لوائی قتلے کی ایک صورت نکل سکتی ہے! دوسری طرف چین اگر اپنے سہیلوں کو، چلیوں و والٹھیر کہتا ہے۔ دیکھ لی کوہیا میں نہ ہوجائے تو ہندوستان کا کیا ہوگا۔

## نیا ہند

### دُنیا کا حال

جنوری سن ۵۱

ہیٹو چین پر بھی دھمکیاں دیں اور ان کے تازہ بیانیوں اور پچھلی حرکتوں کی بنیاد پر ایک سکس میں چین کے پرتوئید نے کہا ہے کہ لوائی بلدی کی تجویز ایک جال ہے جس کے ذریعہ امریکہ کوہیا میں اُتری فوجیں اور چینی ”والٹھروں“ کے ہاتھ باندھ کر خود کوہیا اور فارموسا کو ایلی زنجیر میں جکڑنا اور چین کو نقصان پہنچانا چاہتا ہے۔

چین کی یہ بات بالکل بے بنیاد نہیں کہی جاسکتی اور ابھی اُس پر دوش بھی نہیں لٹایا جاسکتا کہ وہ بلا وجہ لوائی کو بڑھاتا چاہتا ہے۔ اس لئے کہ اس کے برتی ندی نے کہا ہے کہ چین کی سرکار چینی والٹھروں کو کوہیا سے واپس بلا لینے کو تیار ہے اگر امریکہ فارموسا کو چھوڑ دے، کوہیا میں باغ کے دیس داخل نہ دیں اور چین کے ساتھ برابر والے کی طرح بات چیت کی جائے۔

یہ آخری بات سب سے زیادہ ضروری ہے۔ اگر چین کی یہ مانگ پوری ہو جائے تو فارموسا میں امریکہ نے جو حیثیت نہیں سناں پہلے چانگ لائی شپک کو دی تھی وہی چین کی نئی سرکار کو دی جا سکے گی اور کوہیا کے چھوڑے اور بدل ”پٹا اس لئے کہ وہاں اگر یو۔ این۔ آر۔ کی فوج کچھ دنوں کے لئے قی بھی رہی تو اس فوج کے کنٹرول میں چین بھی شپک رہے گا۔ اس طرح امریکہ اگر یو۔ این۔ او۔ میں چین کو شامل کر لے تو دنیا کی لوائی قتلے کی ایک صورت نکل سکتی ہے! دوسری طرف چین اگر اپنے سہیلوں کو، چلیوں و والٹھیر کہتا ہے۔ دیکھ لی کوہیا میں نہ ہوجائے تو ہندوستان کا کیا ہوگا۔



कोरिया की गुप्तता, मलेशिया जापान जिम में  
इसी लिये हिन्दुस्तान ने कहा था कि वह अपनी सेना  
दक्खिनी कोरिया के पर न भेजे नहीं तो हर है कि चीन उत्तरी  
कोरिया की तरफ से लड़ाई में आ जायगा: नेहरू सरकार की यह राय  
पूरी तरह सच्ची साबित हो चुका है और नेहरू की यह जान भी उतनी  
ही सच्ची मालूम होनी है कि लड़ाई के अलावा दूसरी मूरत यह है  
कि समझौते के लिये चीनचीन को जापान में एक दूसरे को  
बुरा भला न कहा जाए और अंतरिम नम इस्तेमाल करने की बात  
हमेशा के लिये खतम कर दी जाय

#### चीन का भड़कना

बातचीत का जिक्र पेंटली टेंग चीन में भी मौजूद था मगर  
इस एलान में यह भी कहा गया था कि हमला करने वाले को कोई  
मुँह भराई न दी जाए. अमेरिकी चीन को नई सरकार को  
मानने या उसे यू.एन. ओ. में शामिल करने को एक मुँह भराई  
समझता है. इसलिये अभी तक चीन को लिये मैदान नहीं तैयार  
हो सका है. बल्कि इस बीच में चीन के अड़कने और बातचीत से  
भागने का नया सामान हो गया है. चीन ने अमेरिका में कौमी  
खतरे का एलान करके जंग की तैयारियाँ पहले से ज्यादा जोर के  
साथ शुरु कर दी हैं. और पेंटली ने चीन देशों पर अपनी कौम से  
कहा है कि कम्युनिज्म के खतरे का हर तरह से मुकाबला करना चाहिये.  
इन दोनों के हमले का खासा दखल देस को तरफ है मगर उन्होंने कुछ

हिन्दुस्तान शुरु ही से अस बात पर जोर दे रहे थे कि चीन की  
सरकार को यू.एन. ओ. में शामिल कर लिया जाय, जिस में कोरिया की  
कम्युनिज्म के लिये अस बात चोट की जा सके. 'अस लिये हिन्दुस्तान  
ने यू.एन. ओ. से कहा था कि वे अपनी सेना दक्खिनी कोरिया के बार  
में भेजें. चीन ने कहा कि कोरिया की तरफ से लूटने में  
आजायगा. नेहरू सरकार की यह राय पूरी तरह सच्ची साबित हो चुकी है  
और नेहरू की यह बात भी अतनी ही सच्ची मालूम होती है कि चीन  
के एलावे दूसरी मूरत यह है कि समझौते के लिये बात चीन  
जाय. 'अस में एक दूसरे को बुरा भला न कहा जाय और अंतरिम  
इस्तेमाल करने की बात हमेशा के लिये खतम कर दी जाय.

#### चीन का भड़कना

बात चीन का फाँट लिये शुरु में अस बात पर जोर दे रहे थे कि चीन की  
सरकार को यू.एन. ओ. में शामिल कर लिया जाय, जिस में कोरिया की  
कम्युनिज्म के लिये अस बात चोट की जा सके. 'अस लिये हिन्दुस्तान  
ने यू.एन. ओ. से कहा था कि वे अपनी सेना दक्खिनी कोरिया के बार  
में भेजें. चीन ने कहा कि कोरिया की तरफ से लूटने में  
आजायगा. नेहरू सरकार की यह राय पूरी तरह सच्ची साबित हो चुकी है  
और नेहरू की यह बात भी अतनी ही सच्ची मालूम होती है कि चीन  
के एलावे दूसरी मूरत यह है कि समझौते के लिये बात चीन  
जाय. 'अस में एक दूसरे को बुरा भला न कहा जाय और अंतरिम  
इस्तेमाल करने की बात हमेशा के लिये खतम कर दी जाय.



ہے کہ یہ کاروائی تیسری ہوتی لڑائی کا اعلان سمجھ لی جاتی اور امریکہ چاہے اتنی دور تک جانے کے لئے تیار ہو جاتا مگر یورپانیہ اس سے گھبرا رہا تھا۔ اس لئے جبرل اسمبلی نے ابھی تک ایسا کوئی فیصلہ نہیں کیا ہے اور ہندوستان نے لڑائی بلدی کا پرستار نہیں کر کے یو۔ این۔ او۔ میں بحث کا رخ دوسری طرف پھیر دیا ہے۔

### ہندوستان کی ذہنی

ہندوستان لڑائی کو کچھ دنوں کے لئے ڈالڈھ نہیں بلکہ جھگڑے کو اچھی طرح چکانا بھی چاہتا ہے۔ اسی وجہ سے اس نے کوریا کی لڑائی کے شروع میں کہا تھا کہ جہن کو یو۔ این۔ او۔ میں شریک کر لیا جائے جس میں روس اور چین کے برقی ندھی دچھمکی اور دوسرے راشٹروں کے برقی ندھیوں کے ساتھ بیگمک سمجھتے کی صورتیں سوچ سکیں۔ اسی بات پر پچھلے دنوں ہند پارلیمینٹ میں پودھان ملٹری نہرو نے بھی زور دیا ہے۔

ہند پارلیمینٹ میں بدیسے معاملوں کی بحث میں پودھان ملٹری جو اہر لال نہرو نے کہا ہے کہ دور پوپ کے معاملے چین کو الگ دیکھ کر ہانگکی کے ساتھ طے نہیں کیے جا سکتے اگر ان کو طے کرنے کے لئے لڑائی کا راستہ اپنا لیا جائے تو بھی یہ معاملے طے نہیں ہو سکتے جب تک ان کو طے کرنے میں چین جیسے بڑے راشٹ کی سنگت نہیں ہوگی۔ چین ایک بڑا راشٹر ہونے کے علاوہ کوریا کا پوری بھی ہے اور جس طرح ہندوستان نہپال اور تبت کے معاملوں سے فانیجسپی لیتا ہے اسی طرح چین کو دیا میں جو کچھ ہو رہا ہے اس سے دور رہنا چاہیے۔

### نیا ہینڈ

ہونیا کا حال

جنوری سن ۱۹۱

ہے کہ یہ کاروائی تیسری ہوتی لڑائی کا اعلان سمجھ لی جاتی اور امریکہ چاہے اتنی دور تک جانے کے لئے تیار ہو جاتا مگر یورپانیہ اس سے گھبرا رہا تھا۔ اس لئے جبرل اسمبلی نے ابھی تک ایسا کوئی فیصلہ نہیں کیا ہے اور ہندوستان نے لڑائی بلدی کا پرستار نہیں کر کے یو۔ این۔ او۔ میں بحث کا رخ دوسری طرف پھیر دیا ہے۔

### ہینڈستان کی نیلی

ہینڈستان لڑائی کو کچھ دنوں کے لئے ڈالڈھ نہیں بلکہ جھگڑے کو اچھی طرح چکانا بھی چاہتا ہے۔ اسی وجہ سے اس نے کوریا کی لڑائی کے شروع میں کہا تھا کہ جہن کو یو۔ این۔ او۔ میں شریک کر لیا جائے جس میں روس اور چین کے برقی ندھی دچھمکی اور دوسرے راشٹروں کے برقی ندھیوں کے ساتھ بیگمک سمجھتے کی صورتیں سوچ سکیں۔ اسی بات پر پچھلے دنوں ہند پارلیمینٹ میں پودھان ملٹری نہرو نے بھی زور دیا ہے۔

ہینڈ پارلیمینٹ میں بدیسے معاملوں کی بحث میں پودھان ملٹری جو اہر لال نہرو نے کہا ہے کہ دور پوپ کے معاملے چین کو الگ دیکھ کر ہانگکی کے ساتھ طے نہیں کیے جا سکتے اگر ان کو طے کرنے کے لئے لڑائی کا راستہ اپنا لیا جائے تو بھی یہ معاملے طے نہیں ہو سکتے جب تک ان کو طے کرنے میں چین جیسے بڑے راشٹ کی سنگت نہیں ہوگی۔ چین ایک بڑا راشٹر ہونے کے علاوہ کوریا کا پوری بھی ہے اور جس طرح ہندوستان نہپال اور تبت کے معاملوں سے فانیجسپی لیتا ہے اسی طرح چین کو دیا میں جو کچھ ہو رہا ہے اس سے دور رہنا چاہیے۔



एक तरह का हमला समझता है और अपने बारे में अमरीका के इरादों पर शक करता है। इसी तरह का शक उसे कोरिया में यू. एन. ओ. की उस कारबाई पर भी है जो अमरीका के कहने से और एक अमरीकी जनरल की कमान में हो रही है। इसलिये कि कोरिया और चीन की सरहद मिली हुई है। यह शक अमरीका की उन चालों से और पक्के पड़ गये हैं जिनके जरिये वह चीन के कम्युनिस्ट राज को यू. एन. ओ. में आने से रोक रहा है। और इन चीनों चालों से चीन का यह नतीजा निकालना बहुत कुछ ठीक है कि कोरिया में अमरीका का हमला अकेले कोरिया वालों का मामला नहीं है।

### बहुस का नया रुख

चीनी प्रतिनिधि के शब्दों में "चीनी जनता यह देख कर कि कारमूसा हमले का शिकार हो गया है और कोरिया की लड़ाई की लपटें उसकी तरफ लपक रही हैं" वालंटियरों की हैसियत से कोरिया वालों की मदद को जा रही है। और, चीनी सरकार के पास कोई बजह नहीं है जिसकी बुनियाद पर वह इन लोगों को कोरिया जाने से रोके. सच तो यह है कि उनको रोकने की शक्ति अमरीका और यू. एन. ओ. के पास भी नहीं है. अगर होती तो जब चीन ने सुरक्षा समिति की उस माँग को कि चीनी फौजें कोरिया से हटाई जाएँ पूरा करने से मना कर दिया था तो यह मामला चौबीस घन्टे का नोटिस देकर जनरल एसेम्बली में पेश कर दिया जाता और एसेम्बली चीन के खिलाफ कोई कारबाई शुरू कर देती. इतना जरूर

से दोकले और वहाँ अपना सन्दरी अंदा बना लेने को जेहन अपे  
खلاف एक तरह का हसा सहजोत्पा है और अपे बारे में अमरीके  
के आदों पर शक करा है. असी तरह का शक असे कोरिया मी  
मो. लीन. ओ. की अस कारवाँ पर भी है जो अमरीके के कहने से  
लूरो एक अमरीकी जनरल की कमान में हो रही है. अस लने के कोरिया  
लूरो जेहन की सरحد मली होनी है ये शक अमरीके की अन चालों  
से पके पड़ेने में जेन के फीरे. वा जेहन के कम्युनिस्ट राज को  
मो. लीन. ओ. मीन आने से रोक रहा है. और अन तेमों बास से जेहन  
का ये नतीजे निकाला बेत कच्चे तीक है के कोरिया में अमरीके का  
हसा अकेले कोरिया वालों का हसा नही है.

### बेच का नया रुख

जेनी प्रती नही के शब्दों में "जेनी जेन्ता ये दिके, के  
कारमूसा हसा का शकार होक्या है और कोरिया की लरान की लीतेन अस की  
तरफ लीक रही में. "वाल्तियरों की हसित से कोरिया वालों की  
मदद को जा रही है. और जेनी सरका के पास कोनी रजे नही है  
जसकी बलियाद पर वा अन लूकों को कोरिया जाने से रोक. सेज तो ये है  
के अनो रोकले की शकती अमरीके और मो. लीन. ओ. के पास भी नही  
है. अलर होनी तो जेन जेन ने सरकसा सेहती की अस माला को के  
जेनी लूजेन कोरिया से हसती जेन जेन पूरा करे से मने को दिया तहा तो ये  
महामे जोरियस कहने का नोटिस दे के जनरल असली में येन को दिया  
जाना लूरो असली जेन के खलफ कोनी कारवाँ शुरु कर हितै. अंदा हसूर



### चीन की शर्तें

प्रस्ताव तो मन्जूर हो गया है मगर कमेटी की रिपोर्ट इस लेख के लिलते वक्त तक तैयार नहीं हुई है। रुस ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था और चीन के रेडियो ने कहा है कि शान्त सागर में शान्ति इसी वक्त क़ायम हो सकती है जब अमरीका की हमला करने वाली फ़ौजें कोरिया और फ़ारमूसा से हटाली जाएँ, चीन के चारों ओर घेरा डालने की तरकीबें रोक दी जाएँ और लड़ाई की तैयारियाँ बन्द कर दी जाएँ। इन बातों से कुछ लोगों ने यह नतीजा निकाला है कि यू. एन. ओ. की कमेटी, जिसमें ईरान, हिन्दुस्तान और कनाडा के प्रतिनिधि शामिल हैं, कोरिया में समझौते की राह नहीं निकाल सकेगी। मगर इसमें कमेटी के मेम्बरों का कोई दौरा नहीं है और न अकेले रुस और चीन का दोश है। चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि ने, जिसको सिर्फ़ फ़ारमूसा पर बहस में हिस्सा लेने के लिये सुरक्षा समिति में बुलाया गया है, अपने राइट की सफ़ाई बड़ी लियाक़त के साथ पेश की है।

उसकी यह बात बिलकुल ठीक है कि २७ जून से पहले जब कि अमरीका कोरिया की लड़ाई में शरीक हुआ और फ़ारमूसा के समन्दर में अपना बेड़ा भेजा, किसी को इस बात में ज़रा सा भी शक नहीं था कि फ़ारमूसा का टापू चीन का एक हिस्सा है। और इससे बहुत पहले लड़ाई के ज़माने में क़ाछिरा और मास्को के समझौतों में भी यह तय हो गया था कि फ़ारमूसा को जापान से लेकर चीन को वापस दिला दिया जाएगा। अमरीका के इम फैसले

### चीन की शर्तें

परस्ताव तो मंजूर हो गया है मगर कमेटी की रिपोर्ट इस लेख के लिलते वक्त तक तैयार नहीं होئی है। रुस ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था और चीन के रेडियो ने कहा है कि शान्त सागर में शान्ति इसी वक्त क़ायम हो सकती है जब अमरीका की हमला करने वाली फ़ौजें कोरिया और फ़ारमूसा से हटाली जाएँ, चीन के चारों ओर क़ेहरा डालने की तरकीबें रोक दी जाएँ और लड़ाई की तैयारियाँ बन्द कर दी जाएँ। इन बातों से कुछ लोगों ने यह नतीजा निकाला है कि यू. एन. ओ. की कमेटी, जिसमें ईरान, हिन्दुस्तान और कनाडा के प्रतिनिधि शामिल हैं, कोरिया में समझौते की राह नहीं निकाल सकेगी। मगर इसमें कमेटी के मेम्बरों का कोई दौरा नहीं है और न अकेले रुस और चीन का दोश है। चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि ने, जिसको सिर्फ़ फ़ारमूसा पर बहस में हिस्सा लेने के लिये सुरक्षा समिति में बुलाया गया है, अपने राइट की सफ़ाई बड़ी लियाक़त के साथ पेश की है।

अस की यह बात बिलकुल ठीक है कि २७ जून से पहले जब कि अमरीका कोरिया की लड़ाई में शरीक हुआ और फ़ारमूसा के समन्दर में अपना बेड़ा भेजा किसी को इस बात में ज़रा सा भी शक नहीं था कि फ़ारमूसा का टापू चीन का एक हिस्सा है। और इस से बहुत पहले लड़ाई के ज़माने में क़ाछिरा और मास्को के समझौतों में भी यह तय हो गया था कि फ़ारमूसा को जापान से लेकर चीन को वापस दिला दिया जाए। अमरीका के



हिन्दुस्तान इस कोशिश में सब से आगे है। हमारे प्रतिनिधि बंगल नरसिंह राव ने लेकसक्सेस में चीन की नई सरकार के पलची से कई बार बात चीत की और जिन दिनों ट्रुमैन और ऐडली की कानफ़रेंसें हो रही थीं, उन्हें दिनों में श्री राव के मकान पर एशिया के तेरह दैसों के प्रतिनिधियों ने जमा हो कर एक साथ चीन से अपील की कि वह इस बात का एलान कर दे कि उसको सेना उत्तरी कोरिया की सरहद पार कर दूखिनी कोरिया में नहीं जाएगी। अपील में कहा गया था कि ऐसा एलान हो जाने से एशियाई देसों को दूर पूरब का भगड़ा चुकने की तरकीब तलाश करने में आसानो हो जाएगी।

इस अपील का चीनी सरकार ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है और रूस के प्रतिनिधि ने यू. एन. ओ. में अपील करने वालों का मजबूत खामोश था जब जनरल मैकआर्थर ने दुश्मनी कोरिया उस वक़्त खामोश थे जब जनरल मैकआर्थर ने दुश्मनी कोरिया से उत्तरी कोरिया पर चढ़ाई की थी। फिर भी बंगाल नरसिंह राव ने कहा है कि चीन के प्रतिनिधि से उन्हें मालूम हुआ है कि चीनी सरकार इस अपील पर गौर कर रही है और चाहती है कि कोरिया की लड़ाई जल्दी से जल्दी खतम हो जाए। शायद इसी बुनियाद पर हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि ने यू. एन. ओ. में यह प्रस्ताव रक्खा कि तीन आदमियों की एक कमेटी उन बातों की खोज करे जिनकी बुनियाद पर कोरिया में लड़ाई बन्दी का समझौता हो चुके।

بہی ہو۔ این۔ او۔ میں اس کے لئے کوشش ہو رہی ہے اور ہڈیوں  
اس کوشش میں سب سے آگے آگے ہے۔ ہمارے پوتے نڈھی بنگلہ نرسنگ  
واؤ نے ایک سکس میں چان کی نئی سڑک کے ایجنسی سے کئی  
بار بات چیت کی اور چان دنوں ترمیم اور لہائی کی کانفرنس  
ہو رہی تھیں انہیں دنوں میں شری راؤ کے مکان پر ایشیا کے تھوڑے  
دیسوں کے پوتے نڈھیوں نے جمع ہو کر ایک ساتھ چان سے ایہل کی  
کہ وہ اس بات کا اعلان کر دے کہ اس کی سہما تری کوریا کی سرحد  
پار کر ڈھکی کوریا میں نہیں جائے گی۔ ایہل میں کہا گیا تھا کہ ایسا  
اعلان ہوجانے سے ایشیائی دیسوں کو دور یورپ کا جو گڑ چانے کی  
ترکیمیں تلاش کرنے میں آسانی ہو جائے گی۔

اس ایپل کا چھلکا سرکار نے ابھی تک کوئی جواب نہیں دیا ہے اور دوس کے پرتی ندھی نے یو. این. او. مہر ایپل کرنے والوں کا مذاق اڑایا ہے اس لئے کہ اُن مہر سے ادھک تر لوگ اس وقت خاموش تھے جب جابرل مہک آرتھز نے دکھائی کوریا سے اتنی کوریا پر چھوٹائی کی تھی۔ پھر یہی بالکل نرسنگہ ڈو نے کہا ہے کہ چھن کے پرتی ندھی سے انہیں معلوم ہوا ہے کہ چھلکی سرکار اس ایپل پر غور کر رہی ہے اور چاہتی ہے کہ کوریا کی لڑائی جلدی سے جلدی ختم ہو جائے۔ شاید اسی بلیداک پیر ہلستان کے پرتی ندھی نے یو. این. او. مین یہ پرستاؤ دکھا کہ تین آدمیوں کی ایک کمیٹی اُن باتوں کی کھوج کرے جلدی بلیداک پر کوریا مہر لڑائی بلیدی کا مستجوبہ ہو سکے۔



यू. एन. ओ. और उत्तरी कोरिया का नहीं है बल्कि इस में एक तरफ अमरीका है और दूसरी तरफ चीन. जब तक अमरीका चीन की नई सरकार को अपने बराबर मानने और बिठाने के लिये तैयार नहीं होता उस वक़्त तक चीन किसी बातचीत के लिये तैयार नहीं होगा.

अमरीका अभी तक चीन के बारे में अपनी हट पर जमा हुआ है. दुमैन ऐटली बात चीत के बाद उस के बिट्रेस मी डीन एचसन ने अपनी पलियामेंट में कहा है कि वनको सरकार अपने जतन भर यू. एन. ओ. में चीन को नहीं आने देंगे. हॉ अगर यू. एन. ओ. के मेम्बर बहुमत में चीन को शरीक करने का समर्थन करें तो अमरीका अपना खास वोट 'विटो' इस्तेमाल नहीं करेगा. लेकिन यू. एन. ओ. के मेम्बर अपनी राजनैतिक छोर आर्थिक मजबूरियों की वजह से अमरीका की मरजी के खिलाफ नहीं जा सकते. छोटे रश्यों का तो कहना ही क्या खुद बरतानिया भी अमरीका को नाराज नहीं कर सकता और प्रधान मंत्री ऐटली ने वाशिंगटन से वापस आकर कोरिया में यू. एन. ओ. की सेना के अमरीकी कमान्डर जनरल मैकआर्थर की कारवाइयों की तारीफ़ और समर्थन का जिन शब्दों में जिक्र किया है वह बचाव मंत्री के उस वयान के बिलकुल चलते हैं जिस में उन्होंने जनरल मैकआर्थर की टीका की थी.

### समझौते की कोशिश

समझौते की कोशिश कोरिया की लड़ाई को समझौते के जरिये

नया हल दुनिया का हाल जलूरी सन् '५१

५०. लोन. ओ. और अतरी कोरिया का नहीं है बल्कि इस में एक तरफ अमरीका है और दूसरी तरफ चीन. जब तक अमरीका चीन की नई सरकार को अपने बराबर मानने और बिठाने के लिये तैयार नहीं होता उस वक़्त तक चीन किसी बातचीत के लिये तैयार नहीं होगा.

अमरीका अभी तक चीन के बारे में अपनी हट पर जमा हुआ है. दुमैन ऐटली बात चीत के बाद उस के बिट्रेस मी डीन एचसन ने अपनी पलियामेंट में कहा है कि वनको सरकार अपने जतन भर यू. एन. ओ. में चीन को नहीं आने देंगे. हॉ अगर यू. एन. ओ. के मेम्बर बहुमत में चीन को शरीक करने का समर्थन करें तो अमरीका अपना खास वोट 'विटो' इस्तेमाल नहीं करेगा. लेकिन यू. एन. ओ. के मेम्बर अपनी राजनैतिक छोर आर्थिक मजबूरियों की वजह से अमरीका की मरजी के खिलाफ नहीं जा सकते. छोटे रश्यों का तो कहना ही क्या खुद बरतानिया भी अमरीका को नाराज नहीं कर सकता और प्रधान मंत्री ऐटली ने वाशिंगटन से वापस आकर कोरिया में यू. एन. ओ. की सेना के अमरीकी कमान्डर जनरल मैकआर्थर की तारीफ़ और समर्थन का जिन शब्दों में जिक्र किया है वह बचाव मंत्री के उस वयान के बिलकुल चलते हैं जिस में उन्होंने जनरल मैकआर्थर की टीका की थी.

### समझौते की कोशिश

समझौते की कोशिश कोरिया की लड़ाई को समझौते के जरिये खत्म



और बरतानिया में इस मामले पर अच्छा खासा भेद भाव है। और यह कि अमरीका कोरिया की लड़ाई को जिस ढंग से चलाना चाहता है, बरतानिया उसके खिलाफ है। खुद प्रधान मंत्री पेटली ने अमरीका जाने से पहले पलियामेन्ट में कहा था कि उनकी सरकार चाहती है कि कोरिया की लड़ाई खतम हो जाए और कोरिया के बारे में कोई समझौता हो जाए। उन्होंने चीन के साथ बरतानिया और दूसरे राष्ट्रों की दोस्ती को भी इस सिलसिले की एक कड़ी बताया था और दुनिया के इस हिस्से में एक पायदार समझौते की आशा जाहिर की थी।

#### वाशिंगटन की बात चीन

अपने इन विचारों को उन्होंने ट्रुमैन के सामने किस ढंग से पेश किया और उनको कहाँ तक क़ायल किया या खुद अपने विचारों में कितनी तबदीली का इसका ठीक ठीक हाल उस बयान से नहीं मालूम होता जो वाशिंगटन की बातचीत खतम होने के बाद जारी किया गया है। उस बयान में एक तरफ़ यह कहा गया है कि हमला करने वाले को कोई मुँह भरवाई नहीं दी जाएगी तो दूसरी तरफ़ यह भी बताया गया है कि बात चीन के खरिये लड़ाई खतम की जा सकती है। लेकिन उस बयान में यह मान लिया गया है कि चीन की नई सरकार को अधिकारी मानने और उसे यू. एन. ओ. में शरीक करने के मामले में अमरीका और बरतानिया एक राय नहीं हो सके, ऐसी सूरा में कोरिया का मगड़ा बात चीन के खरिये तय होना बहुत मुश्किल है। इसलिये कि यह मगड़ा अब उत्तरी और दक्खिनी कोरिया का या

और ब्रिटानिये में उस मामले पर अच्चा खासा बिहद बहाव है। और ये कि अमरीके कोरिया की लڑائی کو جس تھنگ سے چلانا چاہتا ہے: برطانیہ اُس کے خلاف ہے۔ خود برطمان مغتری ایٹمی نے امریکہ جانے سے نہیں پارایا، مملت میں کہا تھا کہ اُن کی سرکار چاہتی ہے کہ کوریا کی لڑائی ختم ہو جائے اور کوریا کے بارے میں کوئی سمجھوتہ ہو جائے۔ انہوں نے چین کے ساتھ برطانیہ اور دوسرے راشٹروں کی دوستی کو بھی اُس سلسلے کی ایک کڑی بتایا تھا اور دنیا کے اُس حصے میں ایک پائدار سمجھوتے کی آشا ظاہر کی تھی۔

#### واشنگتن کی بات چیت

اپنے ان وچاروں کو انہوں نے ٹرومن کے سامنے کس قدرنگ سے بھی کہا اور ان کو کہاں تک قائل کیا یا خود اپنے وچاروں میں کتنی تبدیلی کی اُس کا تھپک تھپک حال اُس بیان سے نہیں معلوم ہوتا جو واشنگتن کی بات چیت ختم ہونے کے بعد جاری کیا گیا ہے۔ اُس بیان میں ایک طرف یہ کہا گیا ہے کہ حملہ کرنے والے کو کوئی ملہ بہرائی نہیں دی جائے گی تو دوسری طرف یہ بھی بتایا گیا ہے کہ بات چیت کے ذریعے لڑائی ختم کی جاسکتی ہے۔ لیکن اُس بیان میں یہ مان لیا گیا ہے کہ چین کی نئی سرکار کو ادھمکائی ماننے اور اُسے یو. این. او. میں شریک کرنے کے معاملے میں امریکہ اور برطانیہ ایک رائے نہیں ہوسکے۔ ایسی صورت میں کوریا کا جھگڑا بات چیت کے ذریعے طے ہونا بہت مشکل ہے۔ اُس لئے کہ یہ جھگڑا اب اتنی اور دھمکی کوریا کا یا



बात का डर है कि अगर चीन की नई सरकार से कोई समझौता नहीं हो सका तो कोरिया की लड़ाई दूर दूर तक फैल जाएगी.

एटली का डर

दर असल यही डर था जो ट्रुमैन की ऐटमी घमकी के बाद ऐटली को लन्दन से वाशिंगटन ले गया. और बरतानिया के इम डर में अचभे की कोई बात नहीं है. एक तो इस लिये कि अगर कोरिया में ऐटम बम गिराया गया तो पूरब के तमाम देसों की जनता पच्छिमी राश्ट्रों के खिलाफ हो जाएगी. और दूसरे इमलिये कि अगर कोरिया की लड़ाई इतनी बढ़ी कि अमरीका को ऐटम बम इस्तेमाल करने की नौबत आगई तो रूस भी चुप नहीं रहेगा वह कोरिया में चीन को खुल्लम खुल्ला मदद देने के अलावा पच्छिमी राश्ट्रों का ध्यान इटाने और उनको परेशान करने के लिये योरप में भी छेड़ छाड़ शुरू कर देगा. वहाँ इन राश्ट्रों की शक्ति रूस से बहुत कम है. और इसीलिये बरतानिया के पिछले प्रधान मन्त्री विन्स्टन चर्चिल ने ऐटली के अमरीका जाने वक्त्र यह आगाही दी थी कि कम्युनिस्ट राश्ट्र पच्छिमी राश्ट्रों को एशिया में उलझाकर योरप में घावा करना चाहते हैं. इसलिये जहाँ तक हो सके कोरिया के मसले पर चीन से कोई बड़ी लड़ाई मोल न ली जाए.

यह खयाल अकेले चर्चित का या उनकी दोरी पारती का नहीं

ہم سکا تو کوہیا کی لڑائی دور دور تک پھل جاتھگی۔

١٢٨

در اصل یہی تر تھا جو ترمین کی ایٹمی دھمکی کے بعد  
ایٹمی کو لندن سے واشنگٹن لے گیا۔ اور برطانیہ کے اس تر میں  
اجنبیہ کی کوئی بات نہیں ہے۔ ایک تو اس لئے کہ کوریا میں  
ایٹم بم گرایا گیا تو یورپ کے تمام دیسوں کی جلتا بچھمی  
واشٹروں کے خلاف ہو جائے گی۔ اور دوسرے اس لئے کہ اگر کوریا  
کی پوائنٹی اتنی بڑی کہ امریکہ کو ایٹم بم استعمال کرنے کی نوبت  
آئی تو اس میں چپ نہیں رہے گا وہ کوریا میں چین کو کلم  
کہلا مدد دینے کے علاوہ بچھمی واشٹروں کا دھماکا ہٹانے اور ان کو  
پریشان کرنے کے لئے یورپ میں بھی چھوڑ چھا شروع کر دے گا۔  
وہاں ان واشٹروں کی شکتی دوس سے بہت کم ہے۔ اور اسی لئے  
برطانیہ کے بچھلے پردہان ملتوی و نستان چچل نے ایٹمی کے  
امریکہ جاتے وقت یہ آکھی دی تھی کہ کمپونست واشٹر بچھمی  
واشٹروں کو ایشیا میں التجا کر یورپ میں دھوا کرنا چاہتے ہیں۔  
اس لئے جہاں تک ہو سکے کوریا کے مسئلے پر چین سے کوئی برقی  
لڑائی مول نہ لی جائے۔

یہ خیال اکھٹے چوڑل کا یا ان کی ترویج پارٹی کا نہیں تھا بلکہ لندن، سکاٹلینڈ اور وائٹ ہاؤس کے درمیان تھا۔



# दुनिया का हाल



# दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीकी)

ट्रुमैन की धमकी

कोरिया की लड़ाई का पाँसा पलटते देख कर अमरीका के प्रधान ट्रुमैन साहब ने ३० नवम्बर को यह धमकी दी थी कि वहाँ अगर खरबत समझौता गई तो एटम बम गिरा दिया जायगा. इस धमकी का हल चीन और रूस की तरफ था मगर इन दोनों पर इस का कोई असर नहीं हुआ. यू. एन. ओ. में रूस अपने पुराने तेवर के साथ अमरीका पर यह इलजाम लगा रहा है कि वह कोरिया के बारे में साम्राज्यी इरादे रखता है और यह माँग कर रहा है कि कोरिया से यू. एन. ओ. की फौजें हटा ली जाएँ. यही माँग चीन की भी है और उसकी फौजें यू. एन. ओ. की फौजों को उत्तरी कोरिया से निकालने के बाद अब दक्खिनी कोरिया में दाखिल हो रही हैं. बरतानिया के प्रधान मन्त्री ने अपनी पार्लियामेन्ट में कहा है कि खरबल मैकडार्थर कोरिया में चीन के धावे को रोक देंगे और यू. एन. ओ. की फौजें वहाँ जमी रहेंगी. मगर इसके साथ ही उनको इस

(बहाली छशरत एली सदियती)

त्रुमैन की देहकी

कोरिया की लड़ाई का पासे पलटते दिक्कर अमरीके के प्रदे अन त्रुमैनन صاحب ने ३० नवम्बर को ये देहकी दी त्हे के वहाँ अर ضرूरत सज्हे लुत्ती तो अलतम भे गुरा दया जाले का. अस देहकी का रल जेन और रूस की طرف त्हा मगर अन दोनन पर अस का कुरी अत्र न्हेन हूा. भू. अलन. ओ. में रूस अले प्राने त्हेर के सान्हे अमरीके पर ये अनम लगा रहा हे के रे कोरिया के बारे में साम्राज्यी अरदे र्हेता हे और ये मानक को रहा हे के कोरिया से भू. अलन. ओ. की फुज्जन ह्दाली जालें. येी मानक जेन की येी हे और अस की फुज्जन भू. अलन. ओ. की फुज्जन को अत्री कोरिया से न्काले के बेद अब दक्खि कोरिया में दाखल हू रही हलें. बरताने के प्रदेदान मल्लन ने अल्ले पारलामल्लत में कहा हे के जलरल मल्ल अत्र अत्र कोरिया में जेन के देहार को रोक दल्ले और भू. अलन. ओ. की फुज्जन वहाँ जमी रहल्लगी. मगर अस के सान्हे ही अन्को अस



शील तब तक बहाँ बड़ी नहीं जब तक जुलूस के साथ की मिट्टी के तेल की मशालें बिलाई पड़ती रहीं। जुलूस जब आँवों से झोझल हो गया तब भी उसके नारे सुनाई देते रहे। सब से पहले हबीब की आवाज आती थी उसके बाद दूसरे लोगों की जिनमें रहमान का कर्करा स्वर सब पर छाया रहता था।

दूसरे दिन शील जब रशीदा के घर पहुँची तो रशीदा के पिता किसी काम से बाहर चले गए और थोड़ी देर बाद जब हबीब ने दरवाजे पर दस्तक दी और बाहर से कहा कि मैं आ सकता हूँ तो शील ने बाहर आकर हँसते हुए कहा—“रशीदा कह रही है कि वह आप से परदा करती है।”

हबीब भी हंस पड़ा। बोला—“मैं तो उनका हाल पूछने आया था। मैं अब हरनामपूर जा रहा हूँ। वहाँ अमन सभा का जलसा होने वाला है।”

जीवन एक सवारी है जिसे सुस्त चलने वाला तेज चलाना चाहे तो झलगा हो जाती है और तेज चलने वाला धीरे धीरे चलाना चाहे तो उस से भी अलग होजाती है।

—खलील जिब्रान

लिया हल्ल  
पड़ोसी  
जुलूस में 'अ'

हेल तब तक रवाल कहर, रवाल जब तक जलूस के साथ की मत्ती के तेल की मशालें दकनै पड़ती रवाल। जलूस जब आँवों से झोझल हो गया तब भी उसके नारे सुनाई देते रहे। सब से पहले हबीब की आवाज आती थी उसके नारे सुनाई देते रहे। सब से पहले हबीब की आवाज आती थी उसके नारे सुनाई देते रहे।

x x x x x

दूसरे दिन शील जब रशीदा के घर पहुँची तो रशीदा के पिता किसी काम से बाहर चले गئے और थोड़ी देर बाद जब हबीब ने दरवाजे पर दस्तक दी और बाहर से कहा कि मैं आ सकता हूँ तो शील ने बाहर आकर हँसते हुए कहा—“रशीदा कह रही है कि मैं आप से परदा करती हूँ।”

हबीब भी हल्ल पड़ा। बोला—“मैं तो उन का हाल पूछने आया था। मैं अब हरनाम पुर जा रहा हूँ। रवाल अमन सभा का जलसा होने والا है।”

जिब्रान ایک سواری ہے جسے سست چلنے والا تیز چلانا چاہے تو الگ ہو جاتی ہے اور تیز چلنے والا دھیرے دھیرے چلانا چاہے تو اُس سے بھی الگ ہو جاتی ہے۔

—خلیل جبران



२८ ११॥ नहा हान दगः”

“हिन्दू मुस्लिम एक होः”

“हिन्दू मुस्लिम एक हों”

“किरका परस्ती का नाश होः”

“किरका परस्ती का नाश होः”

“गौब की एकता खिन्दाबाद !”

“गौब की एकता खिन्दाबाद !”

( २६ )  
खोर से चिल्लाने में रशीदा के माथे का खून फिर तेजी से बहने लगा. हवीब ने यह देख कर सब को चुप कराते हुए रशीदा से कहा—“अच्छा अब तुम आराम करो. मैं यहाँ से जुलूस बनाकर दूसरे गौब में जा रहा हूँ. तुम्हारा काम खतम हुआ. अब हम अपना काम करेंगे. आज रात में कई गौबों को बचाना है.”

श्याम बाबू यह सुनकर बोले—“नहीं, अभी एक काम और बाकी है. आप लोग एक बार और नारा लगाइये. देवी रशीदा खिन्दाबाद !”

सब लोगों ने पूरे जोश से नारा लगाया—“देवी रशीदा खिन्दाबाद !”

और फिर यह हमलाभावों की भीड़ एक राज काजी सभा की तरह वहाँ से जुलूस का रूप लेकर रात के अंधेरे में दूसरे गौब को चली गई और रशीदा, उसके पिता, श्याम बाबू, श्याम बाबू की फत्ती और

— २७ —

“हम दाना नहीं होंगे दिलके.”

“हल्लो मुस्लिम एक हों.”

“हल्लो मुस्लिम हों.”

“फुर्क़े पोस्तों का नाश हो.”

“फुर्क़े पोस्तों का नाश हो.”

“ग़लों की अिकता खिन्दाबाद !”

“ग़लों की अिकता खिन्दाबाद !”

ज़ोर से चले में रशीदे के माथे का खून पहर तूफ़ान से बहने लगा. हवीब ने ये देख सब को चुप कराते हुये रशीदे से कहा—“अच्छा अब तुम आराम करो. मैं यहाँ से जुलूस बना कर दूसरे ग़लों में जा रहा हूँ. तुम्हारा काम खतम हो. अब मैं अपना काम करिग़े. आज रात में कई ग़लों को बचाना है.”

श्याम बाबू ये सुन कर बोले—“नहीं, अभी अिक काम और बाक़ी है.

अप लुक अिक बार और नमरे लक़ाईये. दीवरी रशीदे खिन्दाबाद !”

सब लुग़ों ने पूरे जोश से नमरे लक़ाया—“दीवरी रशीदे खिन्दाबाद !”

और पहर ये हमले आरों की भीड़ एक राज क़ाजी सभा की तरह वहाँ से जुलूस का रूप लेकर रात के अंधेरे में दूसरे ग़लों को चली गई और रशीदे, उसके पिता, श्याम बाबू, श्याम बाबू की फत्ती और



यह सोचना चाहिये कि गाँव में ऐसी बात उठी कैसे. और क्या फिर अगर किसी ने हमें बहकाया तो हम बहक जाएँगे. क्या फिर अगर किसी ने आकर यह कह दिया कि भारत में किसी जगह दंगा हो रहा है तो हम फिर इसी तरह इन्सानियत से दूर हो कर हवान बन जाएँगे. यह समझ रखिये कि किसी बेगुनाह को नुकसान पहुँचाना इस्लाम में सब से बड़ा गुनाह है. अगर अपनी यहाँ बसने वाले कम गिनती वाले हिन्दुओं को हम से जरा भी कस्ट पहुँचा तो हम अपने देस का कोई भला नहीं करेंगे बल्कि उसके नाम पर कलंक लगाएँगे और अपने मजहब को भी बदनाम करेंगे. हमें दुनिया भर से कोई मतलब नहीं. भारत में अगर मुसलमानों पर कोई जुल्म होता है तो बसे भारत सरकार रोकेगी. वहाँ के मुसलमानों का बदला यहाँ के हिन्दुओं से ले कर हम वहाँ के मुसलमानों का कोई भला नहीं कर सकते बल्कि उनका नुकसान ही करेंगे. यहाँ की खबरें सुनकर वहाँ के हिन्दुओं को भारत के फिरका परस्त और अधिक भड़काएँगे. यह शैतानी चक्कर कमी खतम न होगा. अगर हमें अपने मजहब से सुहृदवत है तो हम अपने यहाँ के गैर मुस्लिमों को ज्यादा से ज्यादा सुखी रख कर ही मजहब का नाम ऊँचा कर सकते हैं. ऐसा करने से ही हमारे देस का नाम भी ऊँचा होगा. अब आप लोग बनाइये कि आप ने क्या फ़ैसला किया. क्या गाँव में दंगा होना अच्छा है?"

"नहीं!" सब लोगों ने कहा.

"क्या आप अपने देस में हिन्दुओं को नुकसान पहुँचाना पसन्द

ये सोजला चाहते के गाँव में ऐसी बात अत्थी कैसे. और क्या फिर किसी ने हमें बहकाया तो हम बहक जायेंगे. क्या फिर अगर किसी ने आकर यह कह दिया कि भारत में किसी जगह दंगा हो रहा है तो हम पुरासी तरह इन्सानियत से दूर हो कर हवान बन जाएँगे. यह समझ रखिये कि किसी बेगुनाह को नुकसान पहुँचाना इस्लाम में सब से बड़ा गुनाह है. अगर अपने यहाँ बसने वाले कम गिनती वाले हिन्दुओं को हम से जरा भी कस्ट पहुँचा तो हम अपने देस का कोई भला नहीं करेंगे बल्कि उसके नाम पर कलंक लगाएँगे और अपने मजहब को भी बदनाम करेंगे. हमें दुनिया भर से कोई मतलब नहीं. भारत में अगर मुसलमानों पर कोई जुल्म होता है तो बसे भारत सरकार रोकेगी. वहाँ के मुसलमानों का बदला यहाँ के हिन्दुओं से ले कर हम वहाँ के मुसलमानों का कोई भला नहीं कर सकते बल्कि उनका नुकसान ही करेंगे. यहाँ की खबरें सुनकर वहाँ के हिन्दुओं को भारत के फिरका परस्त और अधिक भड़काएँगे. यह शैतानी चक्कर कत्तम न होगा. अगर हमें अपने मजहब से सुहृदवत है तो हम अपने यहाँ के गैर मुस्लिमों को ज्यादा से ज्यादा सुखी रख कर ही मजहब का नाम ऊँचा हो गा. अब आप लोग बनाइये कि आप ने क्या फ़ैसला किया. क्या गाँव में दंगा होना अच्छा है?"

"नहीं!" सब लोगों ने कहा.

"क्या आप अपने देस में मुसलमानों को नुकसान पहुँचाना पसन्द

करिये?"



माताजी को और उसके साथ ही उसकी नजर जब रहमान और हबीब पर पड़ी तब वह चौंक कर उठ बैठी. शील उसे संभालती ही रही पर वह एकदम उठ कर खड़ी हो गई.

उसे देख कर उसके पिता के चेहरे पर लुशी दौड़ गई और श्याम बाबू उसके पास पहुँच कर बोले—“बेटा, तुम आराम करो. तुम्हें बहुत चोट आ गई है.”

हबीब ने भी कहा—“तुम लेट जाओ रशीदा. अब तुम्हारे खड़े रहने की जरूरत नहीं.”

रशीदा की समझ में कुछ न आया. उसने कहा—“श्याम चाचा को बचाओ.”

हबीब ने कहा—“हम लोगों ने तय कर लिया है कि गाँव में दंगा न होने देगे. मैंने श्याम चाचा से माफ़ी माँग ली है.”

रशीदा ने भीड़ पर निगाह डाली तो सब लोग फिर चिल्लाए—  
“हम गाँव में दंगा न होने देंगे.”

यह सुनकर रशीदा के चेहरे पर पहले संतोश की एक लहर दौड़ती दिखाई दी फिर उस के होठों पर मुस्कराहट आई लेकिन तुरन्त ही वह गंभीर हो कर बोली—“अगर आपने किसी वक्ती (बनिक) जोश में आकर यह फैसला किया है कि आप गाँव में दंगे की आग भड़काने न देंगे तो मैं इसे काफ़ी नहीं समझती.” फिर वह जरा रुकी और शील के कन्धों का सहारा लेकर बोली—“हमें ठंडे दिल से

की आँखें कौल क्ली. अस्ने आिक बार शील को दिकहा प्पर सिल सी मताना जी को ओर अस्के सानो ही अस्की न्जर जब रहमान ओर हबिब प्पर प्पर तब ओ चोन्क को त्थे बिदत्ती. शील अस्के सलबालती ही रही प्पर ओ आिक दम अत्थेको कोही हो क्ली.

अस्के दिकेको अस्के प्पेता के च्चेरे प्पर खोशी दुरो क्ली ओर शिआम बाबु अस्के पास प्पेनाच को बोले—“पेत्ता” तम आराम करो. त्थेपिस बाबत चोत्त क्ली है.”

हबिब ने भी कहा—“तम लिट जाओ रशिदे. अब त्थेहारे कोरे रहले की ضرुरत न्हेपस.”

रशिदे की प्पेत्ते मोस कोचो न्हे आया. अस्ने कहा—“शिआम चाचा को बचाओ.”

हबिब ने कहा—“हम लोकोस ने प्पे को लिया है के कोस मोस दन्दा न्हे होले दिन्के. मोस ने शिआम चाचा से म्पेत्ती मान्क ली है.”

रशिदे ने बेपुपर प्पर न्काह डाली तो सब लोकोस प्पर चोले—“हम कोस मोस दन्दा न्हे होले दिन्के.”

ये सलको रशिदे के च्चेरे प्पर प्पेले सलत्तुरी की आिक ल्हेर दुरोती दिकहाँती ली प्पर अस्के होन्तरो प्पर मुस्कराहत्त आती लिक्कन त्रन्स ही ओ क्लेपेपर हो को बोली—“ओर आप ने कसी रक्ती (चिन्क) जोश मोस ओर ये फिवेले किया है के आप कोस मोस दन्के की ओक बेपुके न्हे दिन्के तो मोस अस्के क्ली न्हेपस. प्पेत्ता.” ओर ओ डुरा की ओर शील के कल्लहोस का सहेारा ल्हेको बोली—“हमोस त्थेल्दे दल से







आत्मा को अधिक शान्ति मिलेगी."

लोगों ने बड़े अचरज के साथ देखा कि श्याम बाबू अपनी पत्नी और लड़की के साथ उनके सामने खड़े हैं। उनके चेहरे पर खरा भी डर या घबराहट की झलक नहीं है। उनकी वूही पत्नी और शीला ने शुरू कर रशीदा को संभाल लिया। हबीब उठ कर खड़ा हो गया और बोला—“बाबा, मुझ से भूल हुईं मैं अन्या हो गया था। मुझे माफ़ कर दीजिये।”

श्याम बाबू बोले—“नहीं वेदा, मैं यह नहीं चाहता कि हमारे कारन तुम पर कोई संकट आए या गाँव की एकता भंग हो। अभी कल तक मैं भी अपने को इस गाँव का बासी समझता था। पाकिस्तान को अपना देस मान लिया था और हिन्दू सभा वालों के कहने पर भी मैंने अपनी जन्म भूमि को छोड़ना मंजूर नहीं किया। पर आज मालूम हुआ कि यह मेरी भूल थी। अगर दो चार दिन में सदियों का संबंध टूट सकता है तो मैं खुद ऐसी दुनिया में रहना पसन्द नहीं करता। अगर तुम नहीं मार सकते तो मैं अपने गाँव के सब से बहादुर मुसलमान को बुलाता हूँ जिसने अपनी समझ में रशीदा की जान ही ले ली थी। आओ वेदा रहमान, मैं खड़ा हूँ। तुम मुझे मार सकते हो। कल तक तुम जिसको अपनी चाची कहते थे उसकी हत्या कर सकते हो और अपनी बहन के खून में भी हाथ रंग सकते हो। आओ! भाइयो, रास्ता छोड़ो और रहमान को आने दो।”

सब की निगाह एक दम रहमान की तरफ़ उठ गई पर रहमान की निगाह खमीन पर गड़ गई थी। लोगों को रहमान के कठोर चेहरे

हमारी आत्मा को अहक शान्ति मिले ली।

लोगों ने बड़े अचरज के साथ देखा कि श्याम बाबू अपनी पत्नी और लड़की के साथ उनके सामने खड़े हैं। उनके चेहरे पर खरा भी डर या घबराहट की झलक नहीं है। उनकी वूही पत्नी और शीला ने शुरू कर रशीदा को संभाल लिया। हबीब उठ कर खड़ा हो गया और बोला—“बाबा, मुझ से भूल हुईं मैं अन्या हो गया था। मुझे माफ़ कर दीजिये।”

श्याम बाबू बोले—“नहीं वेदा, मैं यह नहीं चाहता कि हमारे कारन तुम पर कोई संकट आए या गाँव की एकता भंग हो। अभी कल तक मैं भी अपने को इस गाँव का बासी समझता था। पाकिस्तान को अपना देस मान लिया था और हिन्दू सभा वालों के कहने पर भी मैंने अपनी जन्म भूमि को छोड़ना मंजूर नहीं किया। पर आज मालूम हुआ कि यह मेरी भूल थी। अगर दो चार दिन में सदियों का संबंध टूट सकता है तो मैं खुद ऐसी दुनिया में रहना पसन्द नहीं करता। अगर तुम नहीं मार सकते तो मैं अपने गाँव के सब से बहादुर मुसलमान को बुलाता हूँ जिसने अपनी चाची कहते थे उसकी हत्या कर सकते हो और अपनी बहन के खून में भी हाथ रंग सकते हो। आओ वेदा रहमान, मैं खड़ा हूँ। तुम मुझे मार सकते हो। कल तक तुम जिसको अपनी चाची कहते थे उसकी हत्या कर सकते हो और अपनी बहन के खून में भी हाथ रंग सकते हो। आओ! भाइयो, रास्ता छोड़ो और रहमान को आने दो।”

सब की निगाह एक दम रहमान की तरफ़ उठ ली पर रहमान की निगाह खमीन पर गड़ गई थी। लोगों को रहमान के कठोर चेहरे



रशीदा को गिरते देख कर उसके पिता तुरन्त उसे संभालने को झपटे पर उनसे भी पहले हबीब पहुँच गया और रशीदा के सर को अपने हाथों पर रख कर बैठ गया. रशीदा के माथे से खून बह रहा था. हबीब का सारा गुस्सा उसके ताजे खून के साथ जैसे बह गया. जो काम रशीदा की बातें न कर सकी थीं वह उसकी बेहोशी और खामोशी ने किया. हबीब की आँखों में आँसू भर आए. उसने एक निगाह रशीदा के सुन्दर मुखड़े पर डाली और फिर भीड़ की तरफ देखते हुए बोला—“यह ठीक कह रही थी. हम सब गलती पर थे.”

“तुम अब गलती पर हो.” भीड़ में से रहमान बड़बड़ाया—  
 “तुम से उसकी सगाई हो चुकी है इसलिये तुम उसका साथ दे रहे हो. माइयो, क्या देखते हो. लगा दो घर में आग.”

पर रहमान की बात पर किसी भाई ने ध्यान न दिया. सब वैसे ही चुप चाप खड़े रशीदा के गिरे हुए बेहोश शरीर को देखते रहे.

रहमान फिर चिल्लाया—“तुम सब को क्या हो गया है. क्या देख रहे हो. लेलो कलकत्ते का बदला. लगा दो घर में आग.”

“आग लगाने की जरूरत नहीं भाइयो मैं हाजिर हूँ, मेरी पत्नी और मेरी लड़की भी हाजिर हैं. तुम अगर हमें मार कर अपना जो ठंडा करना चाहते हो तो उठाओ अपनी तलवारें. मुझे नहीं पता था कि तुम हमारे ऐसे दुश्मन बन जाओगे कि अपने ही धर्म की एक जबला पर हाथ उठाने में भी लाज न आएगी. मुझे दुख है कि हमारे

नया हिन्द पृष्ठ ५१

रश्मिदा को कर्ते दिक्र अस्के पचा त्रन्त अस्के सल्लहल्ले को जौहते  
 पर अन् से भी पहले हबिब पहल्ले क्हा ओर रश्मिदा के सर को अल्हे हातहो  
 पर दिक्र बिन्त क्हा. रश्मिदा के मातह से खून बह रहा त्हा ! हबिब का  
 सारा खूब अस्के ताजे खून के सातह जेस्से बह क्हा. जे कल रश्मिदा  
 की बातहो नह कोर सकी त्हेहो वः अस् की बिहोशी ओर खामोशी ने  
 क्हा. हबिब की आंखहो में आंसो बह गئے. अस् ने अिक नः  
 रश्मिदा के सल्लह म्कहः पर डाली ओर बहर बहर की طرف दिक्रते  
 होतह बोला—“ये त्हेहिक कः र्ही त्ही. हम सब खल्लु पर त्हे.”

“तम अब खल्लु पर हो.” बिन्त में से रहमान बड़बड़ाया—  
 “अस्की सल्लह होखी हे इसल्ले तम अस् का सातह दः र्हे हो.  
 बहाल्लो क्हा दिक्रते हो लका दो क्हर में अक्.”

पर रहमान की बात पर कस्ी बहाली ने देह्यान नह दिया. सब  
 वःसे ही जेब जेप कःते रश्मिदा के कर्ते होतह बिहोश शरीर को  
 दिक्रते रहे.

रहमान पहर चालिया—“तम सिक्र क्हा होक्हा हे. क्हा दिक्र र्हे हो.  
 ले लो कलकत्ते का बदल्ले. लगा दो क्हर में अक्.”

“अक् लगाने की जरूरत न्हीन बना. में में हाजिर हूँ, मेरी पत्नी  
 पत्नी ओर मेरी लड़की भी हाजिर हे. तम अक् जेब मार कर अपना जो  
 ठंडा कर्ना चाहते हो तो त्हाओ अली तलवारें. म्हे न्हेहो पत्ते त्हा  
 कः तम हमारे अस्से दुश्मन बन जाओगे कः अल्हे ही धर्म की अिक  
 बः हातह आतहो में भी लाज नह आंक्की. म्ज्हे दक् हे कः हमारे  
 कल्ले हमारी बिन्ती रश्मिदा को जौत आंक्की. बिन्त हबिब त्हा !



बेटी की बातें सुनकर उनका हृदय गद गद हो उठा था। हबीब भी अपनी होने वाली जीवन संगिनी की बातें सुनकर अपने मन में खुश हो रहा था। मगर एक झूठा घमंड उसे उसकी बातें मानने के खिलाफ उकसा रहा था। वह पुरुष था और इसलिये औरत के सामने द्वार मान लेना वह अपनी मर्दानगी का अपमान समझता था। भीड़ के लोगों में सीधे सादे मुसलमान भी थे और कुछ ऐसे लोग भी थे जो इस मौके से लाभ उठाकर लूट मार करके अपना घर भर लेना चाहते थे। पहली तरह के मुसलमानों पर रशीदा की सीधी सच्ची बातों का पूरा असर हुआ। उनमें से बहुतों को श्याम बाबू के वह पहरान याद आए जो उन्होंने गाढ़े वस्त्र पर किये थे। उन्होंने यह भी सोचा कि इस्लाम की तालीम पाते वक्त उन्होंने कभी यह नहीं पढ़ा कि अपने पड़ोसियों को मारना चाहिये। उनके दिमाग उन्हें पढ़ने लगे, उनके दिल का जोश सदै पड़ने लगा मगर वह लोग जो श्याम बाबू का घर लूटने के लालच में भीड़ के साथ हो गए थे उनके दिल और दिमाग पर रशीदा की बातों का कोई असर नहीं हुआ। ऐसे ही लोगों में गाँव का मशहूर बदमाश रहमान भी था। यह देखकर कि रशीदा ने अपनी बात जारी रखी तो दंगे की आग बुझ जा। एगी और हो सकता है कि यहां कि शान्ति बढ़कर सारे गाँव और खिले में फैल जाए, उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाकर रशीदा पर फेंका। निराना सही लगा और पत्थर रशीदा के सिर पर पड़ा। बहुत कोशिश करने पर भी रशीदा न संभल सकी। उसका सर चकरा गया, बन्दूक हाथ से छूट गई और वह जमीन पर गिर पड़ी।

[illegible]



साथ रिआयत न करूँगी चाहे वह कोई हो. कोई यह न समझे कि मैं किसी रिश्ते नाते का खायल करूँगी. मैं साफ़ कहती हूँ कि अगर किसी को हिन्दुओं पर इसलिये गुस्सा है कि वह भारत में मुसलमानों को सता रहे हैं तो वह भारत जाकर उनसे लड़े. यह कहना भूट है कि भारत में मुसलमानों के लिये ज़मीन तंग हो चुकी है. आप लोगों को भूलना नहीं चाहिये कि मुसलमानों की जान बचाने के लिये ही भारत के सब से बड़े नेता महात्मा गांधी ने अपनी जान की भेंट दे दी. आज भी वहाँ पंडित नेहरू और सरदार पटेल बार बार कह रहे हैं कि भारत हिन्दू राज नहीं बन सकता. और फिर अगर वहाँ के हिन्दू कोई बुराई करते हैं तो इसके माने यह कब हुए कि हम भी वही शलती करें. क्या हमारे पैगम्बर ने अपने प्यार से दुश्मनों को दोस्त नहीं बनाया ? आखिर आप क्यों अपने मजहब के नाम पर कलंक लगाने को यों तैयार हैं ? क्यों आप कुरान और हदीस की तालीम को कुछ बहकाने वालों के फंसे में फँसकर पैरों तले रौंदना चाहते हैं ? बोलिये, जवाब दीजिये. आप मुझे दलील से कायल कर दीजिये, मैं कायल हो गई तो आप से पहले श्याम चाचा के खून में हाथ रंग लूँगी. बताइये अल्लाह या उसके रसूल ने अपने पड़ोसी की जान लेने का कहाँ हुक्म दिया है ?”

रसीदा परदे में रहने वाली लड़की थी, उसने बहुत ज्यादा शिशा भी न पाई थी और गैर मर्दों के सामने तो कभी खुल कर बात भी न की थी. पर उस समय उसकी बातें सुनकर सभी दंगे

۳۳  
۳۴  
۳۵

ساتھ ولایت نہ کر دینی چاہے وہ کوئی ہو۔ کوئی یہ نہ سمجھے کہ میں کسی  
وہشتہ ذات کا خہال کر دینی۔ میں صاف کہتی ہوں کہ اگر کسیکو ہندوؤں  
پر اس لئے فصد ہے کہ وہ بھارت میں مسلمانوں کو ستا رہے ہیں  
تو وہ بھارت چا کر ان سے لڑے۔ یہ کہنا جھوٹ ہے کہ بھارت میں  
مسلمانوں کے لئے زمین تلگ ہو چکی ہے۔ آپ لوگوں کو بھولنا نہیں  
چاہئے کہ مسلمانوں کی جان بچانے کے لئے ہی بھارت کے سب سے  
بڑے نہتہ مہاتما گاندھی نے اپنی جان کی بے قیمت دیدی۔ آج بھی  
وہاں بلذت نہو اور سردار پتیل بار بار کہہ رہے ہیں کہ بھارت ہندو  
وچ نہیں بن سکتا۔ اور پھر اگر وہاں کے ہندو کوئی برائی کرتے  
ہیں تو اس کے معنی یہ کب ہوئے کہ ہم بھی وہی غلطی کریں۔  
کیا ہمارے پیغمبر نے اپنے پیار سے دشمنوں کو دوست نہیں بلایا؟  
آخر آپ کہیں اپنے مذہب کے نام پر کلنگ لٹانے کو یوں تیار ہیں؟  
کہیں آپ قرآن اور حدیث کی تعلیم کو کچھ بھکانے والوں کے پھندے  
میں پھنس کر پتھروں تلے روندنا چاہتے ہیں؟ بولئے، جواب  
دیجئے۔ آپ مجھے دلیل سے قائل کر دیجئے۔ میں قائل ہو سکتی تو  
آپ سے پہلے شہام چاچا کے خون میں ہاتھ رنگ لوں گی۔ پتلیائے  
اللہ یا اس کے رسول نے اپنے پیڑوسی کی جان لینے کا کہاں حکم  
دیا ہے؟“

رشدہ پڑے میں دھلے والی لہکی تھی، اُس نے بہت زیادہ  
 ہکھا بھی نہ پائی تھی اور شہر مردوں کے سامنے تو کبھی کھل کر  
 بات بھی نہ کی تھی۔ ہر اُس سے اُسکی باتیں سنکر سبھی دنگ تھے  
 کہ یہ اتنی منہجھ ہوتی تو دلگ سے بڑا ہر کام نہایت کدس د۔



उस से कहा कि मैं तुन्हें ही याद कर रहा था भाई, तुम अपनी तलवार भूल गए थे, वह वहीं रखी है जहाँ तुमने रखी थी। यह है वह भिसाल जो मेरे सामने है। आप उन्हीं हज़रत को अपना रखल मानते हैं और उनके क़दमों पर चलने से कतराते हैं। आप ठंडे दिल से सोचिये कि श्याम चाचा, उनकी बूढ़ी घर वाली और उनकी मासूम लड़की ने आप का क्या बिगाड़ा है। क्या कभी उन्होंने गाँव के ख़िलाफ़ कोई काम किया है ? क्या गाँव का स्कूल श्याम बाबा की ही कोशिशों का फल नहीं है ? क्या उन्होंने वह स्कूल सिर्फ़ हिन्दुओं के लिये खुलवाया था ? क्या बाड़ी के हर मुसलमान पर उनका कोई न कोई एहसान नहीं है ? क्या..... ?”

“बन्द करो अपना लेक्चर ! हम कुछ सुनना नहीं चाहते, तुन्हें क्या पता कि कलकत्ते में किस तरह मुसलमान मारे जा रहे हैं, भारत की ख़मीन मुसलमानों पर तंग हो चुकी है। उन्हीं मारते वक्त कोई हिन्दू यह नहीं देखता कि यह बूढ़ा है या जवान, मर्द है या औरत या बच्चा। हम रास्ता छोड़ दो। नहीं तो मुझे ख़बरदारी तुन्हें हटाना पड़ेगा।” हबीब पूरे जोश से चिल्ला कर बोला।

रशीदा की बातों से भीड़ का जोश जितना ठंडा पड़ा था, हबीब की बात से उसना ही बढ़ गया। भीड़ ने कहा—“रास्ता छोड़ दो, नहीं हम आग लगा देंगे।”

रशीदा ने बन्दूक को और मजबूती से पकड़ लिया और कड़क कर बोली—“खबरदार जो किसी ने आगे क़दम बढ़ाया। मैं किसी के

चहरे पर कौरी نف़रत तھی نہ کرواھت بلکہ انھوں نے مسکرا کر اس سے کہا کہ میں تمھیں ہی یاد کر رہا تھا بھائی، تم اپنی تالوار بھول گئے تھے، وہ وہیں رکھی ہے جہاں تم نے رکھی تھی۔ یہ ہے وہ مثال جو میرے سامنے ہے۔ آپ انھیں حضرت کو ایسا رسول مانتے ہیں اور انکے قدموں پر چلنے سے کتراتے ہیں۔ آپ تھلڈے دل سے سوچتے کہ شیاہ چاچا، انکی پورھی کھر والی اور ان کی معصوم لڑکی نے آپ کا کیا بگاڑا ہے۔ کیا کبھی انھوں نے گاؤں کے خلاف کوئی کام کیا ہے ؟ کیا گاؤں کا اسکول شیاہ چاچا کی ہی کوششوں کا پھل نہیں ہے ؟ کیا انھوں نے وہ اسکول صرف ہلڈروں کے لئے کھلویا تھا ؟ کیا بازی کے ہر مسلمان پر انکا کوئی نہ کوئی احسان نہیں ہے ؟ کیا..... ؟”

”بلڈ کرو اپنا لیکنجر ! ہم کچھ سٹلٹا نہیں چاہتے، تمھیں کیا پتہ کہ کلکتے میں کس طرح مسلمان مارے جا رہے ہیں، بھارت کی زمین مسلمانوں پر تلگ ہو چکی ہے۔ انھیں مارتے وقت کوئی ہلڈو یہ نہیں دیکھتا کہ یہ پورے یا جوان، مرد ہے یا عورت یا بچہ۔ تم راستہ چھوڑ دو۔ نہیں تو مجھے زبردستی تمھیں ہٹانا پڑے گا۔“ حبیب پرورے جوش سے چلا کر بولا۔

رشدیدہ کی باتوں سے بھڑکا جوش جتنا تھلڈا پڑا تھا، حبیب کی بات سے اتنا ہی بڑھ گیا۔ بھڑکے کہا—”راستہ چھوڑ دو، نہیں ہم آگ لگا دیں گے۔“

رشدیدہ نے بلندوق کو اور مضبوطی سے پکڑ لیا اور کڑک کر کہی — ”خبردار جو کسی نے آگے قدم بڑھایا۔ میں کسی کے



सामने आ गया और कड़क कर बोला—“आप अपनी बेटी को मना कीजिये, नहीं तो हम आप के घर में आग लगा देंगे।”

इसके पहले कि रशीदा के बाप कुछ जवाब देते, रशीदा ने खुद ही कड़क कर कहा—“यह कहते हुए आप को शर्म तो नहीं आती होगी. दर असल आप ही जैसे बहादुर इसलाम और पाकिस्तान के नाम को रोशन करने वाले हैं. बाह क्या शानदार कारनामा होगा आप का और आप के इन साथियों का कि आप एक मुसलमान के घर में सिर्फ इसजिये आग लगाएंगे कि उसमें तीन ऐसे इस्लामों ने पनाह ले रखी है जिन के पूजा करने का टंग आप में जुदा है, जो अल्लाह को ईश्वर कहते हैं. बताइये तो इसके मिवा उनका क्या कसूर है ? आप आग लगाना चाहते हैं, शौक से लगाइये, आप अपने पड़ोसियों की जान लेना इसलाम की सेवा समझते हैं और मैं पैगम्बर इसलाम की उस सीख पर चलना चाहती हूँ कि अगर घर में शरन लेने वाला मेरे साथ दुश्मनी भी करे तब भी मैं अपना कर्ज न भूलूंगी. आप को याद नहीं कि एक बार हजरत (मुहम्मद साहब) के पास एक यहूदी आया और कहा कि मैं रात को ठडरना चाहता हूँ. हजरत ने यह जानते हुए भी कि यहूदी उनकी जान के दुश्मन हैं, उसे अपने यहाँ जगह दी. यहूदी का पेट खराब था. रात को उसने हजरत का बिस्तर भी गन्दा कर दिया और यह सोच कर कि सुबह हजरत उस पर नाराज न हों, वह सुबह होने से पहले ही बाहों से भाग गया. जल्दी में उसकी तलवार छूट गई थी. दिन चढ़े बाह अपनी तलवार लेने के लिये जब आया तो उसने देखा कि

सामने आ गया और कड़क कर बोला—“आप अपनी बेटी को मना कीजिये, नहीं तो हम आप के घर में आग लगा देंगे।”

इसके पहले कि रशीदा के बाप कुछ जवाब दें, रशीदा ने खुद ही कड़क कर कहा—“यह कहते होते आप को शर्म तो नहीं आती होगी. दर असल आप ही जैसे बहादुर इसलाम और पाकिस्तान के नाम को रोशन करने वाले हैं. बाह क्या शानदार कारनामा होगा आप का और आप के इन साथियों का कि आप एक मुसलमान के घर में सिर्फ इसलाम की सेवा समझते हैं और मैं पैगम्बर इसलाम की उस सीख पर चलना चाहती हूँ कि अगर घर में शरन लेने वाला मेरे साथ दुश्मनी भी करे तब भी मैं अपना कर्ज न भूलूंगी. आप को याद नहीं कि एक बार हजरत (मुहम्मद साहब) के पास एक यहूदी आया और कहा कि मैं रात को ठडरना चाहता हूँ. हजरत ने यह जानते हुए भी कि यहूदी उनकी जान के दुश्मन हैं, उसे अपने यहाँ जगह दी. यहूदी का पेट खराब था. रात को उसने हजरत का बिस्तर भी गन्दा कर दिया और यह सोच कर कि सुबह हजरत उस पर नाराज न हों, वह सुबह होने से पहले ही बाहों से भाग गया. जल्दी में उसकी तलवार छूट गई थी. दिन चढ़े बाह अपनी तलवार लेने के लिये जब आया तो उसने देखा कि



५९ वाष का लाग धक्का देने लगे. दीन की दीवार में दीन का दरवाजा कितनी देर ठहरता. आखिर दरवाजा निकल गया. मगर दीन के उस दरवाजे के बाद एक और दरवाजा था. यह दरवाजा उतना कमजोर न था कि कुछ लोगों के धक्के देने से टूट सकता. यह दरवाजा जानदार था. रशीदा के बाप और मजहबी दीवानों ने देखा कि रशीदा हाथ में बन्दूक लिये खड़ी है. कुछ देर तो लोग एक दम भौंचक्के होकर रशीदा को देखते रहे जो बन्दूक ताने बिल-कुल सिपाही सी दिखाई दे रही थी. आखिर रशीदा के बाप ने कहा—“यह क्या बचपना है बेटी, बताओ शयम और उसके घर वाले कहाँ हैं?”

रशीदा ने कहा—“मैं नहीं जानती.”

एकएक भीड़ में से हबीब सामने आ गया और बोला—“भूट क्यों बोलती हो, यह क्यों नहीं कहती कि उन्हें घर में ज़िपा रक्खा है.”

फिर कई आदमी बिल्हाए—“हम जवाब चाहते हैं.”

रशीदा का चेहरा गुस्से से लाल हो गया. उसने बन्दूक की नाल भीड़ की तरफ़ तान कर कहा—“जवाब मैं दूंगी, मगर आप लोग पीछे हट जाइये.”

“हम नहीं हटेंगे.” भीड़ चीली. इस बार हबीब की आवाज भी उसमें मिली थी. फिर हबीब आगे बढ़ कर रशीदा के बाप के

लोक देका दिले लके. तूँ की दिया में तूँ का दुराज़ कल्लु धर त्हेरुता. آخر दुराज़ नकल किया. मगर तूँ के अँस दुराज़ के बाद एक लुर दुराज़ त्हा. ये दुराज़ अँता कदुर न्हे त्हा के कच्चे लुर के देके दिले से तुरत सक्ता. ये दुराज़ जानदार त्हा. रशेदे के बाप ओर मधुमी धोतनो ने दिकहा के रशेदे हाते में बल्दुर लुँ कडु है. कच्चे धेर तुर लोक एक धम धोतन के हो कुर रशेदे को दिकहे रहे जो बल्दुर ताले बालक सहायी सी दिकहे दे रहे तुरी. آخر रशेदे के बाप ने कहा—“ये किया बचपना है बेटी! बताओ शयम ओर अँस के कुर वाले कहाँ हैं?”

रशेदे ने कहा—“मैं नहीं जानती.”

एकिक ५५५ में से चडिब साले आँका ओर बोला—“जिहोत कियों बोलु हो ये कियों नहीं कितें के अँहें कुर में में चहा रकहा है.”

५५५ कूँ आँमी जाले—“हम जवाब चाहते हैं.”

रशेदे का चेहरा फूसे से लाल हो गया. अँस ने बल्दुर की नाल ५५५ की तरफ़ तान कर कहा—“जवाब में दूँगी, मगर आप लुर धोतने हट जाँहें.”

“हम नहीं हटेंगे.” ५५५ जेहती. अँस बार चडिब की आवाज भी अँस में मली न्ही. ५५५ चडिब ओर बोह कुर रशेदे के बाप के



जाओ. नहीं तो मुझ से बुरा कोई न होगा!" और वह कह कर रशीदा लम्बे ऋद्धम नापती अपने घर आ गई. शीत के परिवार को पिछले दरवाजे से अपने कमरे में बुला कर दरवाजा बन्द कर दिया और खुद पिता के कमरे से बन्दूक उठा, उसमें गोली भर कर एक सैनिक की तरह द्वार पर आ डटी. वह भीड़ का इन्तजार कर रही थी कि आवाज आई—"काफिर भाग गए."

आवाज तेज होती गई. शोर बढ़ता गया और धीरे धीरे रशीदा के घर के निकट भी आ गया. रशीदा सचेत हुई. उसने बन्दूक उठा ली और दरवाजे की ओर कान लगा कर खड़ी हो रही.

"आप अपनी बेटी को मना लें. नहीं तो आप भी काफिर करार दिये जाएंगे." एकाएक आवाज आई.

यह आवाज हवीब की थी. लेकिन रशीदा डरी नहीं वह निर्भिकता से अपने पिता के आने का इन्तजार करने लगी.

अचानक उसके पिता ने दालान के दरवाजे के पास आ कर पुकारा—"रशीदा! रशीदा! दरवाजा खोलो."

"रशीदा दरवाजा नहीं खोल सकती अब्बा! आप जो कुछ कहना चाहते हों, वहीं से कहिये. मैं सब सुन रही हूँ."

"अरे तमाम लोग खड़े हैं. अगर दरवाजा न खोलेगी तो मेरी जान आफत में पड़ जायगी."

"अब्बा! आप मेरे अब्बा हैं! और इन लोगों में भी जाने कितने अब्बा और भाई हैं, लेकिन इम्सानियत पर खंजर उठाने वालों से सम्मानित न हो सकते हैं."

जाओ. लम्बे तो मुझे से बराकौनी ले होका!" और ये कहकर रशीदा लम्बे लपेटी अपने केश आँकली. शूल के पिरवार को पछले दरवाजे से अपने कमरे में बला कर दरवाजा बन्द कर दिया और खुद पिता के कमरे से बन्दूक उठा. अस्मों कौली, भर कर एक सैनिक की तरह दरवाजा उठा. वह भीड़ का इन्तजार कर रही थी कि आवाज आई—"काफिर भाग गए."

आवाज तेज होती कूली, शोर बढ़ता गया और धीरे धीरे रशीदा के कमरे के निकट भी आया. रशीदा सचेत हुयी. अस्मों बन्दूक उठा ली और दरवाजे की ओर कान लगा कर कौली हो रही.

"आप अपनी बेटी को मना लें. नहीं तो आप भी काफिर करार दिये जाएंगे." एकाएक आवाज आई.

ये आवाज हवीब की थी. लेकिन रशीदा डरी नहीं वह निर्भिकता से अपने पिता के आने का इन्तजार करने लगी.

अचानक उसके पिता ने दालान के दरवाजे के पास आकर पुकारा—"रशीदा! रशीदा! दरवाजा खोलो."

"रशीदा दरवाजा नहीं खोल सकती आ! आप जो कुछ चाहते हैं, वहीं से कहिये. मैं सब सुन रही हूँ."

"अरे तमाम लोग खड़े हैं. अगर दरवाजा न खोलेगी तो मेरी जान आफत में पड़ जायगी."

"अब! आप मेरे आब हैं! और उन लोगों में भी जाने कितने आब और भाई हैं, लेकिन 'इंसानियत' पर खंजर उठाने वालों से सम्मानित न हो सकते हैं."



बटा : हमनः कसा का क्या बगवाड़ा है.

“बस यही तो मैं सुनना नहीं चाहती चाचा. इस समय कुछ न सुनूँगी. आप मेरे घर चलिए. वहाँ मैं सब ठीक कर लूँगी.”

“तू औरत है. क्या करेगी ?”

“बेसा न सोचो चाचा ! औरत सब कुछ कर सकती है. अपनी जान रहते तो आप लोगों पर आँच न आने देंगी, आप चलिए तो.”

शील के भी कहने पर श्याम बाबू अपने परिवार के साथ घर से बाहर निकल पड़े. बाहर आ कर रशीदा ने खुद मकान में ताला बन्द किया और जल्दी जल्दी सब को साथ लेकर अपने घर की ओर बढ़ी. अभी दस बज्ज ही जा पाई थी कि किसी ने कठोर आवाज में पूछा—“कौन है ! ठहर जा नहीं तो गोली मार दूँगा !”

रशीदा के दिल पर साँप लोट गया. उसके मन में एक अजीब सी हलचल उठ रही थी कि उस आदमी ने सामने आ कर अपनी टाच की रोशनी रशीदा के चेहरे पर फेंकते हुए पूछा—“तुम रशीदा ?” फिर श्याम बाबू की ओर देख कर कहा—“इन कार्फ़िरो के साथ तुम कहाँ....रशीदा ?”

रशीदा ने पहचान लिया. यह हबीब था. उसके साथ रशीदा की सगाई हो चुकी थी. रशीदा कुछ शरमा सी गई. मगर फिर क्रोध ही उसे अपने फ़र्ज का खयाल आया. अपने भरोसे पर घर से निकले हुए तीन इन्सानों का खयाल आया और वह कुछ रुक रुक कर बोली—“बह कार्फ़िर सही लेकिन इन्सान हैं, पक्की सी हैं. तुम मेरे सामने से हट

”तुम भी तो मैं सफ़ा नहीं जाँचती चाचा. तू से कुछ न सुनूँगी. तू मेरे घर चले. वहाँ मैं सब ठीक कर लूँगी.”

“तू औरत है. क्या करेगी ?”

“बेसा न सोचो चाचा ! औरत सब कुछ कर सकती है. अपनी जान रहते तो आप लोगों पर आँच न आने देंगी, आप चलिए तो.”

शील के भी कहने पर श्याम बाबू अपने परिवार के साथ घर से बाहर निकल पड़े. बाहर आ कर रशीदा ने खुद मकान में ताला बन्द किया और जल्दी जल्दी सब को साथ लेकर अपने घर की ओर बढ़ी. अभी दस बज्ज ही जा पाई थी कि किसी ने कठोर आवाज में पूछा—“कौन है ! ठहर जा नहीं तो गोली मार दूँगा !”

रशीदा के दिल पर साँप लोट गया. उसके मन में एक अजीब सी हलचल उठ रही थी कि उस आदमी ने सामने आ कर अपनी टाच की रोशनी रशीदा के चेहरे पर फेंकते हुए पूछा—“तुम रशीदा ?” फिर श्याम बाबू की ओर देख कर कहा—“इन कार्फ़िरो के साथ तुम कहाँ....रशीदा ?”

रशीदा ने पहचान लिया. यह हबीब था. उसके साथ रशीदा की सगाई हो चुकी थी. रशीदा कुछ शरमा सी लगी. मगर फिर क्रोध ही उसे अपने फ़र्ज का खयाल आया. अपने भरोसे पर घर से निकले हुए तीन इन्सानों का खयाल आया और वह कुछ रुक रुक कर बोली—“बह कार्फ़िर सही लेकिन इन्सान हैं, पक्की सी हैं. तुम मेरे सामने से हट



“ज्यादा बात करने का वक़्त नहीं, जल्दी से श्याम चाचा और अम्मा को साथ लेकर चल।”

“क्यों, आखिर बात भी तो कुछ हो ! कोई कारन ?”

“कारन पूछ रही है, अरे जल्दी नहीं करोगी तो हार जाओगी ! मैं तुम्हारी सहेली नहीं, बल्कि इस समय एक सगी बहिन के नाते सहायता करने के लिये आई हूँ।”

“सहायता ?”

“पागल ! सारे गाँव में जालिमों ने तहलका मचा रक्खा है और अब थोड़ी देर में तेरे घर का नम्बर आ जायगा. बात करने का समय नहीं है, जल्दी कर.”

“लेकिन तुम्हारे घर अन्धा...” शील ने दबी ज़बान से कहा.

“अन्धा तो खुद उस गिरोह में शामिल हैं, तू उनकी या किसी और की फ़िक्र न कर, तेरी रशीदा तुम्हें जरूर बचाएगी.”

“नहीं रशीदा ! अपनी जान के लिये मैं तुम्हें मुसीबत में नहीं डालना चाहती. फिर तू अकेली कर भी क्या सकती है ?”

“पागल मत बन, मुझे अन्दर आने दे.” और यह कहती हुई रशीदा घर में घुस गई.

शील भी उसके पीछे पीछे अपराधी की तरह चल पड़ी. भीतर आकर रशीदा ने देखा कि शील की माँ और उसके पिता अपने भगवान के सामने बैठे अपने जीवन की रक्षा के लिये प्रार्थना कर रहे हैं. रशीदा ने उनसे भी कहा—“अरे चाची, जल्दी मेरे घर आओ नन्हे घर पर हमला होने वाला है.”

“बलाए बात कर ले का वक़्त नहीं. जल्दी से श्याम चाचा और अम्मा को साथ लेकर चल.”

“क्यों ? अख़िर बात भी तो कुछ हो ! कौन कारन ?”

“कारन पूछ रही है. अरे जल्दी नहीं करोगी तो हार जाओगी ! मैं तुम्हारी सहेली नहीं, बल्कि इस सप्ताह एक सगी बहिन के नाते सहायता करने के लिये आई हूँ.”

“पागल ! सारे गाँव में तहलका मचा रक्खा है और

अब तूही दीवार में तबरे क़ोर का नम्बर आया. बात कर ले का सप्ताह नहीं है. जल्दी कर.”

“लेकिन तुम्हारे क़ोर आया.....” शील ने दबी ज़बान से कहा.

“आ तो खुद उस क़ोर में शामिल हो. तू अन्की भा क़सी और की फ़िक्र न कर. तूही रशीदा तुम्हें जरूर बचाएगी.”

“नहीं रशीदा ! अपनी जान के लिये मैं तुम्हें मुसीबत में नहीं डालना चाहती. फिर तू अकेली कर भी क्या सकती है ?”

“पागल मत बन, मुझे अन्दर आने दे.” और यह कहती हुई रशीदा क़ोर में घुस गई.

शील भी उसके पीछे पीछे अपराधी की तरह चल पड़ी. भीतर आकर रशीदा ने देखा कि शील की माँ और उसके पिता अपने भगवान के सामने बैठे अपने जीवन की रक्षा के लिये प्रार्थना कर रहे हैं. रशीदा ने उनसे भी कहा—“अरे चाची, जल्दी मेरे घर आओ नन्हे घर पर हमला होने वाला है.”



के नाम पर कलंक न लगने देगी. वह उस घनी रात की चौड़ी छाती को सौंदर्यती शील के दरवाजे पर जब पहुँची तो चारों ओर सन्नाटा ही सन्नाटा था. दरवाजे पर शील की गाय खड़ी जमाही ले रही थी. उसने दरवाजे पर थाप दी—खट खट.....

खट खट की आवाज शील के कानों में जाकर अटक रही. वह अब तक जाग रही थी. दरवाजे पर आवाज सुनते ही शील के भ्रान्त सूख गये. उस ने सहमी हुई दृष्टि से माँ की ओर देखा और घबरा कर बोली—“माँ ! बदमाश आ गये !”

यह आवाज दरवाजे की दरार से होकर रशीदा के कानों में पड़ी तो उसने जोर से चीखते हुए कहा—“अरी शील ! दरवाजा तो खोल. जल्दी कर नहीं तो जान पर आ बनेगी.”

“रशीदा !” माँ ने डर कर और चौंक कर पूछा.

“हाँ रशीदा है. वह हम लोगों को.....”

“नहीं...नहीं बेटी ! वह ऐसा नहीं कर सकती. वह तो तेरी सहेली है. देख किसी पर अविश्वास करना ही आपस के प्रेम को खोना है. ऐसा नहीं सोचते बेटा ! जा दरवाजा खोल दे. लेकिन तुरन्त बन्द भी कर ले.”

शील भी दरअसल यही कहने जा रही थी. वह माँ के भोले पन पर उस समय भी हँसे बिना न रह सकी और अपनी माँ के पास से उठ कर दरवाजे पर आगई. किवाड़ खोल दिया और पूछा—  
“इतनी रात गए तुम कैसे.....रशीदा ?”

“अच्छी तरह समझी है. ....”  
“असल के नाम पर कलंक न लगने देगी. वह उस घनी रात की चौड़ी छाती को सौंदर्यती शील के दरवाजे पर जब पहुँची तो चारों ओर सन्नाटा ही सन्नाटा था. दरवाजे पर शील की गाय खड़ी जमाही ले रही थी. उसने दरवाजे पर थाप दी—खट खट.....”

कहत कहत की आवाज शील के कानों में जाकर अटक रही. वह अब तक जाग रही थी. दरवाजे पर आवाज सुनते ही शील के भ्रान्त सूख गये. उस ने सहमी हुई दृष्टि से माँ की ओर देखा और घबरा कर बोली—“माँ ! बदमाश आ गये !”  
यह आवाज दरवाजे की दरार से होकर रशीदा के कानों में पड़ी तो उसने जोर से चीखते हुए कहा—“अरी शील ! दरवाजा तो खोल. जल्दी कर नहीं तो जान पर आ बनेगी.”

“रशीदा !” माँ ने डर कर और चौंक कर पूछा.  
“हाँ रशीदा है. वह हम लोगों को.....”

“नहीं...नहीं बेटी ! वह ऐसा नहीं कर सकती. वह तो तेरी सहेली है. देख किसी पर अविश्वास करना ही आपस के प्रेम को खोना है. ऐसा नहीं सोचते बेटा ! जा दरवाजा खोल दे. लेकिन तुरन्त बन्द भी कर ले.”

शील भी दरअसल यही कहने जा रही थी. वह माँ के भोले पन पर उस समय भी हँसे बिना न रह सकी और अपनी माँ के पास से उठ कर दरवाजे पर आगई. किवाड़ खोल दिया और पूछा—  
“इतनी रात गए तुम कैसे.....रशीदा ?”



“ तो आओ मेरे साथ चलो. पहले हम लोगों ने मछुआ बाड़ी पर हमला करने की तैयारी की है. उसके बाद अपने गाँव के काफ़िरों को समझौते. ”

“ बल्लो ! लेकिन घर में कह तो दूँ. ”

“ अरे इसकी क्या ज़रूरत है ? ”

“ अच्छी बात है. ” कहकर रशीदा के पिता रसूल के साथ चल पड़े.

रशीदा उन दोनों मजहबी दीवानों की समझ पर सन ही मन भुँसलाकर अपने कमरे में लौट आई. रशीदा को ऐसा लगा जैसे आज का इंसान इतना आगे बढ़ कर भी बहुत पीछे है. और दूसरे छन जब उसकी नज़र अपने पड़ोसी श्याम बाबू के मकान की ओर घूमी तो उसने सोचा, इस सीधे सादे स्वभाव वाले श्याम चाचा की हिफाज़त कैसे होगी. मेरी सहेली शील की लाज कैसे बचेगी. अब देर करना ठीक नहीं. वह लोग मछुआ बाड़ी गए हैं. मछुआ बाड़ी यहाँ से दूर नहीं है. इस गाँव से लगभग दो चार कलाँग की दूरी है. रशीदा बठ बैठी. जल्दी से कमरे के बाहर निकल कर बैठक में आई. एक बार चारों ओर देख. आइट लेकर घर में निकल पड़ी और लम्बे क्रदम बढ़ती शील के मकान के दरवाजे पर पहुँच गई

मोहना गाँव बंगाल देस के एक कोने में बसा था. इस गाँव में लगभग पन्चानवे फ़ीसदी मुसलमान थे और बाकी हिन्दू. सदियों से दोनों मेल जोल से रहने आए थे. लेकिन कुछ गुमराह करने वाले आद-

“ तो ओ महो साने चलो. पहले हम लोगों ने मछुआ बाड़ी पर हमला करने की तैयारी की है. उसके बाद अपने गाँव के काफ़िरों को समझौते. ”

“ चलो ! लेकिन कब मेल में तो दूँ. ”

“ अरे उसकी क्या ज़रूरत है ? ”

“ अच्छी बात है. ” कहकर रशीदा के पिता रसूल के साने चल पड़े.

रशीदा उन दोनों मजहबी दीवानों की समझ पर सन ही मन जहलजहल कर अपे कदरे मेल लोट आئی. रशीदा को ऐसा लगा जैसे आज का इंसान आज के बोह कर भी बहुत पीछे है. और दूसरे जब उसकी नज़र अपे पड़ोसी श्याम बाबू के मकान की ओर लघूमी तो असले मोजा अस सधदे साने मोहार वाले श्याम चाचा की حفاظत कीसे होगी. मोहो समझी शील की लज कीसे बचेगी. अब दीर करना तेहक नहो. ओ लोग मछुआ बाड़ी गئے हैं. मछुआ बाड़ी येहा से दूर नहो. है. अस गाँव से लक बेहक दो चार फ़लाँग की दूरी है. रशीदा अत्ते पीतही. जल्दी से कदरे के बाहर नکل कर बेहतक मेल आئی. लक बार चारों ओर देख. अहत लेकर कदरे से नکل पड़ी ओर लम्बे क्रदम मोहानो शील के मकान के दारोअे पर पहुँचकगी.

मोहना गाँव बंगाल देस के एक कोने में बसा था. इस गाँव में मेल लक बेहक पन्चानवे फ़ीसदी मुसलमान थे और बाकी हन्दो. सदियों से दोनों मेल जोल से रहने आئے थे. लेकिन कुछ कदरे कदरे करने



जल्द। सा। कबाड़ खाल कर दालान का बाहर दवा. रसूल चाचा। खड़  
थे और उनके पास ही उसके अब्बा. दोनों आपस में धीरे धीरे कुछ  
बातें कर रहे थे. अब्बा और रसूल चाचा की बातें सुनने के लिये  
उसने कान लगा दिये. उसके अब्बा ने अपने साथीकी तरफ अपना  
छूरा तान कर कहा—“मैं सब कहता हूँ उसकी जान ले लूँगा.”

“हाँ, मुल्ला जी ने यह भी कहा है कि जो आदमी जिस काफिर  
को मारेगा वह उसके माल असबाब का मालिक होगा. तुम्हारे हिस्से  
में यह पड़ोस का मकान है.”

“पड़ोस का मकान ?” रशीदा के पिता ने चौंक कर पूछा.

“हाँ ! यही जो पड़ोस में श्याम रहता है न, उसको मारने के  
बाद तुम्हें उसकी सारी जायदाद दे दी जायगी. और उसकी बेटी शील  
के साथ तुम जिससे कहोगे उसके साथ निकाह कर दिया जायगा.”

“लेकिन... शील तो रशीदा की सहेली है.”

“जिसे तुम सहेली और साथी समझते हो वह सब तुम्हारे  
दुश्मन हैं. जानते हो मुल्ला साहब की बात न मानने वाला भी  
काफिर समझा जायगा. इसलिये देर न करो. भीड़ तैयार है. तुम  
किसी बहाने श्याम का दरवाजा खोलकर उसे मार डालो.”

“लेकिन.....”

“लेकिन लेकिन कुछ नहीं. यह तुम्हारी कमजोरी है. मैं जा रहा  
हूँ.” यह कहकर रसूल जब लौटने लगा तो रशीदा के पिता ने बौड़  
कर कहा—“नहीं नहीं रसूल. मैं उसे क्रल करूँगा. अपने मसबब  
और मुल्ला साहब की बेइज्जती नहीं कर सकता.”

ले जानसी से नौज देहल में दालन में पाहर दीकन. रसूल चाचा देहरे  
तहें और उनके पास ही उसके आबा. दोनों आपस में धीरे धीरे कुछ  
बातें कर रहे थे. आबा और रसूल चाचा की बातें सुनने के लिये  
ने कान लगा दिये. आस के आबा ने अपने साथी की तरफ अपना  
कोर कहा—“मैं सब कहता हूँ उसकी जान ले लूँगा.”

“हाँ, मुल्ला जी ने यह भी कहा है कि जो आदमी जिस काफिर को  
मारिगा वह उसके माल असबाब का मालिक होगा. तुम्हारे हिस्से में  
पड़ोस का मकान है.”

“पड़ोस का मकान ?” रशीदा के पिता ने चौंक कर पूछा.  
“हाँ ! यही जो पड़ोस में श्याम रहता है न, उसको मारने के  
बाद तुम्हें उसकी सारी जायदाद दे दी जायगी. और उसकी बेटी  
शील के साथ तुम जिस से कहोगे उसके साथ निकाह कर दिया जायगा.”

“लेकिन..... शील तो रशीदा की सहेली है.”  
“जिसे तुम सहेली और साथी समझते हो वह सब तुम्हारे दुश्मन  
हैं. जानते हो मुल्ला साहब की बात न मानने वाला भी  
काफिर समझा जायगा. इसलिये देर न करो. भीड़ तैयार है. तुम  
किसी बहाने श्याम का दरवाजा खोलकर उसे मार डालो.”

“लेकिन.....”

“लेकिन लेकिन कुछ नहीं. यह तुम्हारी कमजोरी है. मैं जा रहा  
हूँ.” यह कहकर रसूल जब लौटने लगा तो रशीदा के पिता ने बौड़  
कर कहा—“नहीं नहीं रसूल. मैं उसे क्रल करूँगा. अपने मसबब  
और मुल्ला साहब की बेइज्जती नहीं कर सकता.”



पद्मोत्तरी

(भाई 'सागर' बालपुरी)

घर का काम काज खतम करने के बाद रशीदा अपने कमरे में आकर पड़ रही. नींद के लिये उसने बार बार करबटें भी लीं, पर नींद जैसे उससे कोसों दूर थी. रशीदा अपने कमरे की खिड़की से बाहर देख रही थी कि एकएक उसके अन्ना ने पुकारा — “अरो रशीदा बेदो ! सो गई क्या ?”

“नहीं अन्ना ! अभी नौद कहाँ ?” कहती हुई रसीदा अपने बिस्तर से उठ बैठी और कमरे का दरवाजा खोल कर बाहर आ गई. बाहर आकर उसने देखा कि उसके पिता अजीब से रूप में खड़े थे. बन्दे देखते ही वह घबराकर बोली — “यह सब क्या है अन्ना ?”

“अरे ! यह सब तू नहीं जानती ? आज गाँव से सारे कफ़िरो को निकाल देने का इरादा किया गया है।” फिर दलान की ओर मुँह करके बोले—“ तू जाकर लेट रह, मैं खाना खाने के बाद करीम के यहाँ जा रहा हूँ, देख होशियारी के साथ सोना.” यह कहते हुए रशदा के पिता चले गए.

रशीदा अपने अन्धे की आँखों पर खोजकर भीतर चली आई और फिर चारपाई पर पड़ रही. वह कुछ सोचना चाहती थी कि

三

(بھائی، 'ساکر' ہالو پوری)

کھو کا کام کالج ختم کرنے کے بعد رشیدہ اپنے کمرے میں آکر پڑھتی تھی۔ نیند کے لئے اُس نے بار بار کڑواہٹیں بھی لیں، یہ نیند جیسے اُس سے کوسوں دور تھی۔ رشیدہ اپنے کمرے کی کھڑکی سے باہر دیکھ رہی تھی کہ ایکایک اُسکے ابا نے پکارا۔ ”اُبی رشیدہ بھتی ! سو گئی کیا؟“

”نہیں اب! ابھی نیند کہاں؟“ کہتی ہوئی رشیدہ اپنے بستر سے اُٹھ بیٹھی اور کمرے کا دروازہ کھول کر باہر آگئی۔ باہر آکر اُس نے دیکھا کہ اُسکے بتا عجب سے درپ مہیں کمرے تھے۔ انہیں دیکھتے ہی وہ گھبرا کر بولی۔ ”یہ سب کیا ہے اب؟“

”ارے ! یہ سب تو نہیں جانتی ؟ آج گاؤں سے سڑے کافروں کو نکال دینے کا ارادہ کیا تھا ہے۔“ پھر دالان کی اُرد منہ کر کے بولے۔

”تو جاگڑ لیمٹ رہ۔ مہمں کھانا کھانے کے بعد کربہ کے پینسں جڑ رہا ہوں۔ دیکھ ہوشیاری کے ساتھ سونا۔“ یہ کہتے ہوئے رشیدہ کے بچا چلے گئے۔

دشمنده اپنے ابا کی عقل پر کھینچ کر روٹی چسپی آئی اور یہاں چاروں کو یہ روٹی دے کر کہہ دیا کہ تم لوگ سو جاؤ۔



करने वाले मजदूर थे, इसलिये उसके हकदार भी मजदूर ही होते थे. राबर्ट ओवेन अब कम्यूनिज्म को और बढ़ा. इसपर अधिकारी हलकों में उसकी नामवरी को बड़ा धक्का लगा. फिर भी उसने किसी की परवाह नहीं की और ढंके की चोट पर एलान किया कि समाज की सबसे बड़ी बुराइयाँ जाती सम्पत्ति, मजदूर और शही की आज कल की प्रथा है. वह इंग्लैंड के मजदूर आन्दोलन का रहनुमा हो गया और उस जमाने के हर समाजी आन्दोलन के साथ राबर्ट ओवेन का नाम आता है.

इन खयाली समाजवादियों की खास कमजोरी क्या थी? वह हमेशा एक सी कायम रहनेवाली सचाई, में जो, वक्त और मुकाम की हदों से परे थी और जिसमें आदमी को तरक्की पसन्द बनाने वाले उसूल की कमी थी, यकीन करते थे. इसपर यह ताजुब की बात नहीं थी कि इस तरह के हर समाजवाद के बानी की आखिरी सचाई, तर्क और इंसान दूसरे बानी की आखिरी सचाई, तर्क और इंसान से अलग थे और वह सिर्फ इस बात पर मुनहसर था कि कौन बानी कितना सुलझा हुआ है, जो बार हज़ार साल पहिले भी पैदा होता तो अपने दिमाग से असली सचाई जान सकता था.

( बाकी फिर )

सुझा दिया कि ये सब धोन्डिये बते हैं के पिट में किया. लेकिन چونکہ پونجی پیدا کرنے والے مزدور تھے. اس لئے اسکے حقدار بھی مزدور ہی ہوتے تھے. رابرٹ اوون آپ کمونزم کی اور بڑھا. اس پر دھکاکوں حلقوں میں اُسکی ناموری کو بڑا دھکا لگا. پھر بھی اُس نے کسی کی پرواہ نہیں کی اور ذنکے کی چوٹ پر اعلان کیا کہ سماج کی سب سے بڑی پرانییاں ذاتی سمپتی. مذعب اور شادی کی اچکل کی پر تھیا ہے. یہ انگلیخت کے مزدور آندولن کا معلما ہو گیا اور اُس زمانے کے ہر سماجی آندولن کے ساتھ رابرٹ اوون کا نام آتا ہے.

اِن خيالي سماج واديوں کی خاص کمزوری کيا تھی؟ وہ ہميشہ اہک سی قائم رھنے والی سچائی مہوں جو وقت اور مقام کی حدوں سے پرے تھی اور جس مہوں آدمي کو ترقی پسند بلانے والے اصول کی کمی تھی، يقين کرتے تھے. اس پر یہ تعجب کی بات نہیں تھی کہ اس طرح کے ہر سماج واد کے بانی کی آخری سچائی، ترک اور انصاف دوسرے بانی کی آخری سچائی، ترک اور انصاف سے الگ تھے اور وہ صرف اس بات پر منحصر تھا کہ کون بانی کتلا سلجھا ہوا ہے، جو چار ہزار سال پہلے بھی پیدا ہوتا تو اپنے دماغ سے اصلی سچائی جان سکتا تھا.

( باقی ہے )



में बढ़कर जटिल, पेचीदा और मक्कारी से भरी हुई और बनाबंदी हो गई. इतना ही नहीं उन्होंने ने समाज में प्रगतिवादी उसूल को जगह दी.

फ्रान्स की तरह ही इंग्लैन्ड में भी ख़याली समाजवाद का जन्म हुआ. यहाँ भाप से मशीनों के चलाने और मशीनों से नई मशीनों के बनाने की ईजाद ने पैदावार को बहुत तरक्की दे दी थी और पुरानी कारीगरी और कला का दरजा नये साइंसी उद्योग ने ले लिया था. इसी समय एक २६ साल का पैदायशी नेता राबर्ट ओवेन सामने आया. सन् १८०० से १८२६ तक वह स्कॉटलैन्ड के न्यूलैनाक शहर में एक सूती कारख़ाने का सामीदार डायरेक्टर रहा, जिसमें उसने दूसरे कारख़ानों की निरन्तर ज़्यादाह आसानियाँ दीं. २५०० आदिमियों की उसकी आदर्श नई आबादी में शराबख़ोरी, पुलिस, मजिस्ट्रेट, मुक़दमेबाज़ी, दान बख़िना का नाम भी नहीं था. उसने बच्चों का स्कूल खोला, जिसमें २ बरस की उम्र से बच्चे भरनों किये जाने थे जहाँ दूसरे कारख़ानों में १३-१४ घन्टे काम लिया जाता था, वहाँ राबर्ट-ओवेन के कारख़ाने में साढ़े दस घन्टे ही काम लिया जाता था. एक बार कपास की कमी से कारख़ाना चार महोने बन्द रहा. तब भी उसके कारख़ाने के मजदूरों को तनखाह मिलती रही. इन सब बानों के हों हुए भी कारख़ाने के मालिकों का बड़ा फ़ायदा हुआ. फिर भी उस अपने मजदूरों की जिद्गी से संतोश नहीं था. उसने हिसाब करके देखा कि उसके २५०० मजदूर उस वक़्त तक उतना पैदा कर रहे थे, जो पचास साल पहले ६०००० आदिमी पैदा करते थे.

में बड़कर जटिल 'पेचीदा' और मक्कारी से भरी हुई और बनाबंदी हो लगी. अन्त ही नेहमें अन्हों ने सजा में पुरकती, दामि अवुल कु जगह दी.

फ्रान्स की तरह ही अंग्लैण्ड में भी ख़याली सजा, राद का जल्म हुआ. येहा येहपा से मशहूर के चलने और मशहूर से नूती मशहूर के बंदाने की अलजा ने पैदावार कु बेत तुरती दीदी तेहि और पुरानी कारीगरी और कला का दर्जा नूते सान्सी अदीक ने ले लीहा तेहा. असी से अलक २९ साल का पैदावूती नेहता राबर्ट औरन सान्सी आया. सन १८०० से १८२६ तक रा अलक लीड के न्यूलैनाक शहर में अलक सूती कारखाने का सजाही दार डायरेक्टर रहा. जिस में अलक ने दूसरे कारखानों की नसमत ज़्यादा तेहलल दील. २५०० अदीमों की अलकी आदरू नूती आदामी में शराब खोरी. पुरलस 'मजिस्ट्रेट' मूदमे बाज़ी 'दान दक़्कला का नाम येहि नेहमें तेहा. अल ने बच्चों का अलकुल केहला जिस में दु बरस की उम्र से बच्चे भरनों किये जाने थे जहाँ दूसरे कारखानों में १३-१४ घन्टे काम लिया जाता था, वहाँ राबर्ट-ओवेन के कारखाने में साढ़े दस घन्टे ही काम लिया जाता था. एक बार कपास की कमी से कारखाना चार महोने बन्द रहा. तब भी उसके कारखाने के मजदूरों को तनखाह मिलती रही. इन सब बानों के हों हुए भी कारखाने के मालिकों का बड़ा फायदा हुआ. फिर भी उस अपने मजदूरों की जिद्गी से संतोश नहीं था. उसने हिसाब करके देखा कि उसके २५०० मजदूर उस वक़्त तक उतना पैदा कर रहे थे, जो पचास साल पहले ६०००० आदिमी पैदा करते थे.



गई था। इसका उत्तर अगला ही आकाशवाणी कार्यक्रम की हकूमत (रेन आक्रा टेरर) कहा जाता है, से यह भी साबित हो गया था कि मजदूर भी इन्कलाब की रहनुमाई करने की योग्यता नहीं रखता। फिर नेता कहाँ से आते। सेन्ट साइमन का मत था कि साइन्स और उद्योग का एक ऐसा धार्मिक गंठ बन्द हो, जो 'नई ईसाइयत' के ख्याल से प्रभावित हो। जाहिर है कि यह एकता ब्योपारियों और पढ़े लिखे लोगों की एकता ही हो सकती थी और फारन्सीसी इन्कलाब की रहनुमाई भी इन्हीं के जरिये हुई थी। फिर भी सेन्ट साइमन इस नतीजे पर पहुँच चुके थे कि सबसे बड़ी समस्या मेहनत कश लोगों की है। उन्होने यहाँ तक (सन १८०२ में) माना कि 'आतंकवादियों का शासन' दरअसल गैर-सरमायादारों (Non Possessing Classes) का शासन था १८१६ तक वह इस हद तक पहुँच गये कि राजनीत को पैदावार का इल्म बतलाया। यह राजनीत से अर्थ नीत को बड़ा मानना था। जिसमें राज को ख़तम कर देने का भाव भी छिपा था।

फर्रियर ने फ्रान्सीसी इन्कलाब के बिचले तबक़े के नेताओं के बिचारों का गहरा भंडा फोड़ किया, औरतों की आजादी को आम आजादी का मापदण्ड (मेयार) माना, इतिहास को ऐसे अलग अलग ख़मानों में बाँटा जिसमें एक ख़माने में जंगली ढंग से राज होता था और राज का मालिक बाप के बाद बेटा ही होता था, और दूसरे ख़माने को सभ्य माना और कहा कि बहरी ख़माने में समाज की जो बुराई बिल्कुल सादी शकल में थी, वह सभ्य ख़माने

(यहाँ आँकड़ों) कहा जाता है 'से ये भी ثابت होया था कि मज़दूर भी क़लाब की रहनुमाई करने की योग्यता नहीं रखता'। पुर नितना कहाँ से ते। सीमांत सान्स का मत निताने सान्स और आदियोग का आरिसा हारमक क़ा बल्लहन हो 'जो 'नयी एसिआनित' के ख़याल से आकाशवाणी हो। एतान्दर हे कि ये आरिक्ता बिदुआरिओ और बड़े लक़े लोकोन न आरिक्ता ही हो सकती त्थी और फ्रान्सीसी आँक़लाब की रहनुमाई भी एतान्दर के फ़रिये होनी त्थी। पुर भी सीपल्ट सान्स अस नैपिचि : पुरिच चक़े त्थे कि सभ से बड़ी समिया म्मदलत क़श लोकोन की आँक़ल लै यिहाँ तक (सन १८०२ मीन) मताना कि 'आँक़ल वारिओन शादन' दरवल फ़ेदर सरोमिओ दारुन Non Possessing Classes का शासन त्था। १९१६ तक एतान्दर अस हद तक पहुँच क़ै 'राज नित को बिदुआर का एलम बतलाया। ये राज नित से आँक़ल नित : बड़ा मताना त्था' जिस मीन राज को ख़तम कर दिखे का भाव भी त्था त्था।

फर्रियर ने फ्रान्सीसी आँक़लाब के बिचले तबक़े के नितानों वचारों का क़हरा बिहन्दा पुरो किया। एतान्दरों की आरिक्ता को आम आरिक्ता का मताने दन्दा (मेयार) मताना 'आँक़ल को आरिक्ता लक़ मताने मीन आँक़ल जसमोन आरिक्ता मताने मीन जसमली दमक़ 'राज होना त्था और राज का मालक बान्प के बिद बिहन्दा ही होना त्था' (दुसरे मताने को सभिये मताना और कहा कि वक्षी मताने मीन साज की जो बुराई बालक़ सादी शक़ल मीन त्थी 'ये सभिये मताने



को नया रूप देकर, मुलामी को नेस्त नाबूद करने वाली हालत पैदा करने के बाद भी मुलामी को कायम रक्खा. समाज के एक छोर पर बन्द व्योगी यानी सनअती सरमायादार, जिनके हाथ में देस बिदेस की सम्पत्ति इकट्ठा होने लगी थी, और दूसरे छोर पर अनगिनत मजदूर, जिनकी जिन्दगी गरीबी, मुसीबत, कठिनाई और पीड़ितों की जिन्दगी थी, नजर आए. और अभी यह पूँजीवाद की शुरुआत की जिन्दगी थी. क्रान्ति के सिलसिले में इस नये तबक़े का मजदूरों से संघर्ष भी हुआ और फ़रान्सीसी और अंगरेजों के इन्क़लाब के आविरी सबसे बड़े क्रान्तिकारी नेताओं रोबेस्पियर और क्रामवेल को इन्हीं अथकृत्रे मजदूरों से बल मिला, मगर अभी बल्लत नहीं आया था, जब या तो इनकी निजात की लड़ाई कामयाब होती या इस निजात का ठीक ठीक रास्ता ही सोचा जा सकता. अभी पूँजीवाद की असली, शकल और उसकी बुनियाद पर चलने वाली तबक़ावाराना जंग और भी साफ़ साफ़ सामने आने को थी. इसीलिये ख़याली समाजवादियों को अविकसित हालतों के मुताबिक़ ही कृत्रे समाजवादी ग़यालों की शरन लेनी पड़ी—दिमागी माथा पच्ची से बहुत कुछ रास्ता निकाला. फिर भी उसकी सीमाएँ साफ़ थीं.

पूँजीवाद ने दो तबक़े पैदा किये थे—पूँजीवादी और मजदूर. सेन्ट साइमन ने इन दोनों तबक़ों को ठीक ठीक समझने में मूल की. उनके 'मजदूरों' में व्योपारी और बैंक के मालिक भी शामिल थे. उनके 'आलसियों' में सिर्फ़ पूँजीवादी ही नहीं बल्कि पढ़े लिखे लोगों का

को नया रूप दे कर, غلامی کو نهست نابود کرنے والی حالت پیدا کرنے کے بعد بھی غلامی کو قائم رکھا. سماج کے ایک چہرے پر چمک اُٹھیں وہی پہلی صنعتی سرمایہ دار، جن کے ہاتھ میں دیس بديس کی سمیٹي اٹکھا ہونے لگی تھی، اور دوسرے چہرے پر انگلست مزدور، جنکی زندگی قریبی، مسیبت، کتھلائی اور بیوتوں کی زندگی تھی. نظر آئے. اور ابھی یہ پونجی وان کی شروعات کی زندگی تھی. کرانٹی کے سلسلے میں اِس نے طبعے کا مزدوروں سے سلگھ رہا بھی ہوا اور فرانسہسی اور انگریزوں کے انقلاب کے آخری سب سے بڑے کونڈکاري نیتاؤں (رويسپير اور کرامويل کو ان ہی اُدھ کچے مزدوروں سے بل ملا، مگر ابھی وقت نہیں آیا تھا، جب یا تو ان کی نجات کی لڑائی کامیاب ہوتی یا اس نجات کا تھک تھوک راستہ ہی سوچا جا سکتا.. ابھی پونجی واد کی اصلی شکل اور اُسکی بنياد پر چلنے والي طرقة وارنہ جنگ اور بھی صاف صاف سامنے آنے کو تھی. اسی لئے خيالی سماج واديوں کو 'وکست حالاتوں کے مطابق ہی کچے سماج وادي خيال' کی شون پہلی پڑی—دماغی ماتھا پچتی سے بہت کچھ راستہ نکالا، پھر بھی اُس کی سيمہ نہیں صاف تھیں.

پونجی واد نے دو طبقے پیدا کئے تھے۔ پونجی وادي اور مزدور. سيمٹ سائمن نے ان دونوں طبقوں کو تھیک تھیک سمجھنے میں بھول کی. اُن کے 'مزدوروں' میں بیوپاری اور بھلک کے مالک بھی شامل تھے. اُن کے 'آسديوں' میں صرف پونجی وادي ہی نہیں بلکہ پڑھے لکھے لوگوں کا



आखिर में सेन्ट साइमन, फ्रूरियर, राबर्ट ओवेन जैसे ख्याली (यूटो-पियन) समाजवादियों का नाम आता है. शुरू के ख्याली विचारक साधुओं की तरह खिन्दगी बिता देने के क़ायल थे. मगर मोरले और मैब्ली के उसूल दरअसल साम्यवादी थे. सेन्ट साइमन अभी तक दरमियानी तबक़े की ज़रूरत मानता था. फ्रूरियर और राबर्ट ओवेन उनसे आगे गये. फिर भी यह तीनों ही आखिरी ख्याली समाजवादों अपने को सारे इन्सानों का नुमाइन्दा मानते थे. किसी के सामने सिर्फ़ मजदूरों की ही आज़ादी का सवाल नहीं था. फ़रान्स के बीच के तबक़े की क़ान्ति के नेताओं की तरह यह भी तर्क और स्थायी यानी दायमी इन्साफ़ को मानते थे. हाँ उनमें और इनमें ज़मीन आसमान का फ़रक़ यह ज़रूर था कि जहाँ बीच के तबक़े के फ़रान्सीसी नेताओं ने सरमायादारी दुनिया को तर्क भरा, न्याय भरा उसकी तरक्की का रास्ता बताया था, वहाँ इन लोगों ने उसे इन्साफ़ से बिल्कुल पर मानकर उसका पूरी तरह भंडा फोड़ दिया. सरमायादारी इन्क़लाब के नेताओं ने दुनिया को तीन बड़े नारे उसूल) दिये—आज़ादी, बराबरी और भाईचारे का रिश्ता. क़ान्ति के बाद यह देखा गया कि अगरचे फ़रान्सीसी समाज सामन्तवादी समाज (जर्मिंदारी प्रथा का रूप) से अगली सीढ़ी पर चढ़ गया था. फिर भी जहाँ तक सभी आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के रिश्ते का ताल्लुक था, वह अब भी कोसों दूर थी.

नई पूँजीवादी दुनिया में एक नए तरह की अशान्ति, लूट,

सहलत सान्ति, फ़ूरियर, राबर्ट और जेम्स खियाली (यूटोपियन) सजा वadio का नाम आता है. शुरू के खियाली सजा वadio सadio की तरह खियाली सजा वadio के क़ायल थे. मगर मोरले और मैब्ली के उसूल दरअसल मैब्ली के उसूल दरअसल साम्यवादी थे. सेन्ट साइमन अभी तक दरमियानी तबक़े की ज़रूरत मानता था. फ्रूरियर और राबर्ट और जेम्स खियाली सजा वadio के क़ायल थे. हाँ उनमें और इनमें ज़मीन आसमान का फ़रक़ यह ज़रूर था कि जहाँ बीच के तबक़े के फ़रान्सीसी नेताओं ने सरमायादारी दुनिया को तर्क भरा, न्याय भरा उसकी तरक्की का रास्ता बताया था, वहाँ इन लोगों ने उसे इन्साफ़ से बिल्कुल पर मानकर उसका पूरी तरह भंडा फोड़ दिया. सरमायादारी इन्क़लाब के नेताओं ने दुनिया को तीन बड़े नारे उसूल) दिये—आज़ादी, बराबरी और भाईचारे का रिश्ता. क़ान्ति के बाद यह देखा गया कि अगरचे फ़रान्सीसी समाज सामन्तवादी समाज (जर्मिंदारी प्रथा का रूप) से अगली सadio की सीढ़ी पर चढ़ गया था. फिर भी जहाँ तक सभी आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के रिश्ते का ताल्लुक था, वह अब भी कोसों दूर थी.

नई पूँजीवादी दुनिया में एक नए तरह की अशान्ति, लूट,



अराजकतावाद के अलावा दूसरे स्कूल व्यक्तिगत सम्पत्ति को पूरी तरह स्वतन्त्र कर देने के हक में नहीं हैं। यहाँ यह कह देना भी जरूरी है कि यह दोनों स्कूल भी व्यक्तिगत सम्पत्ति को इस हद तक छठाने के हक में नहीं हैं कि किसी के डाहंग रूम की कुर्सियों को जो चाहे छठा ले जाए। दर असल यह उनके अनुरार दुशमनों का भूटा प्रचार है। और प्रचार इससे भी गन्दा किया जाता है।

दूसरी बात है समाजवाद क़ायम करने के साधन के बारे में मतभेद. इसमें भी कम्युनिस्टों और अराजकतावादियों के अलावा सभी समाजवादी मोटे तौर से सुधारवादी हैं. सुधारवाद अमली तज़रबे और पालिथेमेंटों में क़ानून के जरिये व्यक्तित्व सम्पत्ति नष्ट करने और समाजवाद क़ायम करने को कहते हैं.

इतिहास पर एक नजर—खयाली समाजवाद.

यूरप में कम से कम यूनान के मशहूर फिलासफर अफ्लातून के बज़त से समाजवाद का नाम सुना जा रहा है. अफ्लातून का समाज वाद भलों का समाजवाद (Aristocratic Communism) था. उनका ख़याल था कि फ़िलासफ़ों को सारी मिलकियत पर मिल जुल कर अधिकार करना चाहिये. यह व्यक्तिगत सम्पत्ति का उदय काल था. इसलिये अफ़्लातून के यूनानी शहरी राज (सिटी स्टेट) का आधार गुलामी का रिवाज था. जिसमें बराबरी का डर जा देने का सवाल ही नहीं उठना था. अफ़्लातून ने फ़िलासफ़ों के लिये मिले जुले ढंग से शाही (कम्युनिटी आफ़ वाइज्ज) की भी सलाह दी थी.

## आज के जमाने के समाजवाद की शुरुआत इतिहास के बिचले

اور اچھٹا راہ کے علاوہ دوسرے اسکول ویٹکی گت مہیتی کو پوری طرح ختم کر دینے کے حق میں نہیں ہیں۔ یہاں یہ کہ دینا بھی ضروری ہے کہ یہ فیوض اسکول بھی ویٹکی گت مہیتی کو اس حد تک اُٹھانے کے حق میں نہیں ہیں کہ کسی کے توڑ ٹھک ورم کی کمرہوں کو جو چاہے اُٹھالے جائے۔ دراصل یہ اُن کے اندر دشمنوں کا چھوٹا پرچار ہے۔ اور پرچار اُس سے بھی گندہ کیا جاتا ہے۔

فوسری ہاٹ ہے سماج واں قائم کرنے کے سادھن کے بارے میں مت بھید۔ اُس میں بھی کمپنسنسٹوں اور اراجکھا وادیاں کے نلاوے سادھی سماج وادی موتے طور سے سدھار وادی ہن۔ سدھار واں مایا تجربے اور پارہامینڈتوں میں قانون کے ذریعے ویکتی کمیت مہیتی نشست کرنے اور سماج واں قائم کرنے کو کہتے ہن۔

انتہاس پر ایک نظر خدیجی سماج واد

یورپ میں کم سے کم یونان کے مشہور فلاسفہ افلاطون کے وقت سے  
ساج واد کا نام سنا جا رہا ہے۔ افلاطون کا ساج واد بھوس کا ساج  
(Aristocratic Communism) تھا۔ 'نکا خیر' تھا کہ  
سفروں کو ساری ملکیت پر مل جل کر ادھکار کرنا چاہئے۔ یہ  
عقیدہ کثرت سہیتی کا اُدرے کا تھا۔ اس لئے افلاطون کے یونانی  
راج (سقی استقامت) کا آدھار غلامی کا راج تھا۔ حسیں برابری  
درجہ دیئے کا سوال ہی نہیں اُٹھتا تھا۔ افلاطون نے فلاسفوں کے  
میں ملے جلے قلعہ سے شادی (کھوتی آف وایوز) کی بھی صلاح  
نہی۔

آج کے زمانے کے سماج واد کی شروعات انتہاس کے پہلے لا کے



यन) समाजवादियों का नाम आता है। शुरू के ख्याली विचारक (युद्धों की तरह जिन्दगी बिता देने के कायल थे। मगर मोरले और स्त्री के उसूल दरअसल साम्यवादी थे। सेन्ट साइमन अभी तक मियानी तबक्रे की जरूरत मानता था। फ्रूरियर और राबर्ट ओवेन (से आगे गये। फिर भी यह तीनों ही आखिरी ख्याली समाजवादों पने को सारे इन्सानों का मुमाइन्दा मानते थे। किसी के सामने फर्क मजदूरों की ही आजादी का सवाल नहीं था। फरान्स के बीच के रक्के की क्रान्ति के नेताओं की तरह यह भी तर्क और स्थायी यानी यमी इन्साफ को मानते थे। हाँ उनमें और इनमें जमीन आसमान फरक यह जरूर था कि जहाँ बीच के तबक्रे के फरान्सोसी नेताओं सरमायादारी दुनिया को तर्क भरा, न्याय भरा उसकी तरक्की का स्ता बताया था, वहाँ इन लोगों ने उसे इन्साफ से बिल्कुल पर नकर उसका पूरी तरह भंडा फोड़ दिया। सरमायादारी इन्कलाव नेताओं ने दुनिया को तीन बड़े नारे (उसूल) दिये—आजादी, एबरी और भाईचारे का रिश्ता। क्रान्ति के बाद यह देखा गया कि गरचे फरान्सोसी समाज सामन्तवादी समाज (जमींदारी प्रथा का प) से अगली सीढ़ी पर चढ़ गया था, फिर भी जहाँ तक सभी आजादी, बराबरी और भाईचारे के रिश्ते का ताल्लुक था, वह व भी कोसों दूर थी।

नई पूँजीवादी दुनिया में एक नए तरह की अशान्ति, लूट, ना मफटी, होइ और संघर्श नजर आया, जिसने पुरानी गुलामी

वर्गों का नाम आता है। शुरू के ख्याली विचारक (युद्धों की तरह जिन्दगी बिता देने के कायल थे। मगर मोरले और स्त्री के उसूल दरअसल साम्यवादी थे। सेन्ट साइमन अभी तक मियानी तबक्रे की जरूरत मानता था। फ्रूरियर और राबर्ट ओवेन (से आगे गये। फिर भी यह तीनों ही आखिरी ख्याली समाजवादों पने को सारे इन्सानों का मुमाइन्दा मानते थे। किसी के सामने फर्क मजदूरों की ही आजादी का सवाल नहीं था। फरान्स के बीच के तबक्रे के फरान्सोसी नेताओं सरमायादारी दुनिया को तर्क भरा, न्याय भरा उसकी तरक्की का स्ता बताया था, वहाँ इन लोगों ने उसे इन्साफ से बिल्कुल पर नकर उसका पूरी तरह भंडा फोड़ दिया। सरमायादारी इन्कलाव नेताओं ने दुनिया को तीन बड़े नारे (उसूल) दिये—आजादी, एबरी और भाईचारे का रिश्ता। क्रान्ति के बाद यह देखा गया कि गरचे फरान्सोसी समाज सामन्तवादी समाज (जमींदारी प्रथा का प) से अगली सीढ़ी पर चढ़ गया था, फिर भी जहाँ तक सभी आजादी, बराबरी और भाईचारे के रिश्ते का ताल्लुक था, वह व भी कोसों दूर थी।

नई पूँजीवादी दुनिया में एक नए तरह की अशान्ति, लूट, ना मफटी, होइ और संघर्श नजर आया, जिसने पुरानी गुलामी



अराजकतावाद के अलावा दूसरे स्कूल व्यक्तिगत सम्पत्ति को पूरी तरह ख़तम कर देने के हक़ में नहीं हैं. यहाँ यह कह देना भी ख़तरा है कि यह दोनों स्कूल भी व्यक्तिगत सम्पत्ति को इस हद तक उठाने के हक़ में नहीं हैं कि किसी के डाइंग रूम की कुर्सियों को जो चाहे उठा ले जाए. दर असल यह उनके अनुसार दुशमनों का भूटा प्रचार है. और प्रचार इससे भी गन्दा किया जाता है.

दूसरी बात है समाजवाद क़ायम करने के साधन के बारे में मतभेद. इसमें भी कम्युनिस्टों और अराजकतावादियों के अलावा सभी समाजवादी मोटे तौर से सुधारवादी हैं. सुधारवाद ज़मली तज़रबे और पार्लियामेन्टों में क़ानून के ज़रिये व्यक्तिगत सम्पत्ति नष्ट करने और समाजवाद क़ायम करने को कहते हैं.

#### इतिहास पर एक नज़र—ख़याली समाजवाद

यूरोप में कम से कम यूनान के मशहूर फ़िलासफ़र अफ़लातून के बज़त से समाजवाद का नाम सुना जा रहा है. अफ़लातून का समाजवाद भलों का समाजवाद (Aristocratic Communism) था. उनका ख़याल था कि फ़िलासफ़रों को सारी मिलकियत पर मिल जुल कर अधिकार करना चाहिये. यह व्यक्तिगत सम्पत्ति का उदय काल था. इसलिये अफ़लातून के यूनानी शाहरी राज (सिटी स्टेट) का आधार शुलामी का रिवाज था. जिसमें बराबरी का दर्जा देने का सवाल ही नहीं उठता था. अफ़लातून ने फ़िलासफ़रों के लिये मिले जुले ढंग से शादी (कम्युनिटी आफ़ वाइल्ड) की भी सलाह दी थी.

आज के ज़माने के समाजवाद की शुरुआत इतिहास के बिचले

लौकिकतावाद के علاवे दूसरे स्कूल विकृति क़त्त समिती को यूरोपीय طرح ख़तम कर दिने के हक़ में नहीं हैं. यहाँ यह कह देना भी ख़तरा है कि यह दोनों स्कूल भी व्यक्तिगत सम्पत्ति को ख़तम करने के हक़ में नहीं हैं कि किसी के डाइंग रूम की कुर्सियों को जो चाहे उठा ले जाए. दर असल यह उनके अनुसार दुशमनों का भूटा प्रचार है. और प्रचार इससे भी गन्दा किया जाता है.

दूसरी बात है समाजवाद क़ायम करने के साधन के बारे में मतभेद. इसमें भी कम्युनिस्टों और अराजकतावादियों के अलावा सभी समाजवादी मोटे तौर से सुधारवादी हैं. सुधारवाद ज़मली तज़रबे और पार्लियामेन्टों में क़ानून के ज़रिये व्यक्तिगत सम्पत्ति नष्ट करने और समाजवाद क़ायम करने को कहते हैं.

#### इतिहास पर एक नज़र—ख़याली समाजवाद

यूरोप में कम से कम यूनान के मशहूर फ़िलासफ़र अफ़लातून के समाजवाद का नाम सुना जा रहा है. अफ़लातून का समाजवाद भलों का समाजवाद (Aristocratic Communism) था. उनका ख़याल था कि फ़िलासफ़रों को सारी मिलकियत पर मिल जुल कर अधिकार करना चाहिये. यह व्यक्तिगत सम्पत्ति का उदय काल था. इसलिये अफ़लातून के यूनानी शाहरी राज (सिटी स्टेट) का आधार शुलामी का रिवाज था. जिसमें बराबरी का दर्जा देने का सवाल ही नहीं उठता था. अफ़लातून ने फ़िलासफ़रों के लिये मिले जुले ढंग से शादी (कम्युनिटी आफ़ वाइल्ड) की भी सलाह दी थी.

आज के ज़माने के समाजवाद की शुरुआत इतिहास के बिचले



अपना राय आह्वय करता है कि कोई भी फरीक चाहे अपनी, इन बहसों में यह ज़रूरी नहीं रहा है कि कोई भी फरीक चाहे दूसरे फरीक की बात की पूरी अहमियत समझता रहा हो। मिसाल के लिये समाजवाद का वह स्कूल कोई वखनदार बात नहीं कहता जिसके मुताबिक समाजवादी समाज में व्यक्ति का कोई दर्जा नहीं रह जाता या व्यक्ति को अपनी शख्सियत पूरी तरह खतम कर देनी होती है। इसी तरह वह व्यक्तिवादी जो समाजवाद की मुखालफत सिर्फ इस लिये करता रहा है कि उसमें व्यक्तित्व को बिलकुल ही कुचल दिया जाता है वह समाजवाद को नहीं समझ सकता।

जो हो, उसूल खयाल से समाजवाद की यही आधारशिला (बुनियादी पत्थर) है—यानी समाज सभी व्यक्तियों के लिये है, दो बार व्यक्तियों के लिये नहीं। इसलिये समाज में ऐसे निजाम की जरूरत है, जिसमें हर एक को अपने लगने बढ़ने, तालीम लेने, सुखी खिन्दगी हिताने का बराबर का मौका मिले। और समाजवाद की वह आखिरी दूरे तक जाने वाली किस्म, जिसे कम्युनिज्म कहते हैं, इस बात में सभी समाजवादों से सहमत है।

कई तरह के समाजवादियों के विचारों में दो खास फरक हैं। एक यह कि कौन सा ऐसा समाज हो सकता है, जिसमें ऊपर कहा गया निजाम कायम किया जा सकता है। दूसरा यह कि ऐसा समाज कैसे कायम किया जा सकता है। सब ही समाजवादी व्यक्तिगत सम्पत्ति के खिलाफ रहे हैं। मगर समाजवाद के दो स्कूल कम्युनिज्म और

हैं। उन بحثوں میں یہ ضروری نہیں رہا ہے کہ کوئی بھی فریق چاہے اپنی 'چاہے دوسرے فریق کی بات کی پوری اہمیت سمجھتا رہا ہو۔ مثال کے لئے سماج واد کا وہ اسکول کوئی وزن دار بات نہیں کہتا جس کے مطابق سماج وادی سماج میں ویکٹیو کا کوئی درجہ نہیں رہ جاتا یا ویکٹیو کو اپنی شخصیت پوری طرح ختم کر دینی ہوتی ہے۔ اسی طرح وہ ویکٹیو وادی جو سماج واد کی مخالفت صرف اس لئے کرتا رہا ہے کہ اس میں ویکٹیو کو بالکل ہی کچل دیا جاتا ہے وہ سماج واد کو نہیں سمجھ سکا۔

جو ہو 'اصولی خیال سے سماج واد کی یہی اگھار شا (پہلو) ہے—یعنی سماج سبھی ویکٹیو کے لئے ہے 'دو چار ویکٹیو کے لئے نہیں۔ اس لئے سماج میں ایسے نظام کی ضرورت ہے 'جس میں ہر ایک کو اپنے 'گئے بڑھنے' تعلیم لہانے ' سکھنے زندگی بتانے کا برابر کا موقع ملے۔ اور سماج واد کی وہ آخری درجہ تک جانہوالی قسم 'جسے کمپونزم کہتے ہیں اس بات میں سبھی سماج وادوں سے سہمت ہے۔

کئی طرح کے سماج وادیوں کے وچاروں میں دو خاص فرق ہیں۔ ایک یہ کہ کون سا ایسا سماج ہو سکتا ہے 'جس میں اوپر کہا گیا نظام قائم کیا جا سکتا ہے۔ دوسرا یہ کہ ایسا سماج کیسے قائم کیا جا سکتا ہے۔ سب ہی سماج وادی ویکٹیو گت سہمتی کے خلاف رہے ہیں۔ مگر سماج واد کے دو اسکول کمپونزم اور



## समाजवाद—सोशलिज्म

( भाई ऑकारनाथ शास्त्री )

इस सुरखी पर विचार करते वक़्त सबसे पहिले यह विचार आता है कि समाजवाद क्या है ? यह सवाल इसलिये मुश्किल होता है कि समाजवाद एक क्रिस्म का नहीं है. मराठूर अंग्रेज लेखक ता है कि समाजवाद एक क्रिस्म का नहीं है. मराठूर अंग्रेज लेखक इलर ने अपनी 'हिस्ट्री आफ सोशलिस्ट थॉट्स' नाम की किताब ५०० से ज्यादा क्रिस्म के समाजवाद के वजूद में आने की बात खी है. और यह किसी के लिये ताजुब की बात नहीं है. फिर ने क्रिस्म के समाजवाद की तारीफ़ एक या दो जुमलों में करना से आसान हो सकता है.

फिर भी इन सभी क्रिस्मों में कोई बात मिलती जुलती मौजूद नहीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता. और सब से बड़ी बात जो इनमें, कसर पाई जाती है वह है व्यक्तिवाद के खिलाफ़ उस उसूल का वजूद, जो समाज में व्यक्ति यानी फ़र्द को समाज से छोटा दर्जा देता है. समाजवाद में, खासकर नये क्रिस्मों के समाजवाद में समाज को व्यक्ति से ऊँचा दर्जा देते हुए बताया गया है कि समाज के आम फ़ायदे के लिए कुछ इंसानों के हक़ों और स्वार्थों को क़ुरबानी देना जा सकती है.

कि

## समाजवाद—सोशलज़्म

( भाई अंकारनाथ शास्त्री )

अस सरखी पर वज़ार करते वक़्त सब से पहले ये वज़ार आता है कि समाजवाद क्या है ? ये सवाल अस लिये मुश्किल हो जाता है कि समाजवाद एक क्रिस्म का नहीं है. مشهور अंग्रेज़ लेखक लिटलर ने अपनी 'हिस्ट्री ऑफ़ सोशल्टी थॉट्स' नाम की किताब में ५०० से ज्यादा क्रिस्म के समाजवाद के वज़ाह में आने की बात लिखी है. और ये किसी के लिये تعجب की बात नहीं है. ये अन्ते क्रिस्म के समाजवाद की تعريف एक या दो जुमलों में करना क़मसे आसान हो सकता है.

ये भी अन सभे क्रिस्मों में कौनो बात मिलती जलती मौजूद नहीं है, अिसा नहीं कहा जा सकता. और सब से बड़ी बात जो इन में अन्तर पाली जाती है वो है वियक्तिवाद के ख़िलाफ़ अस अूल का वज़ाह, जो समाज में वियक्ति यानी फ़र्द को समाज से छोटा दर्जा देता है. समाजवाद में, खास कर नूँ क्रिस्मों के समाजवाद में, समाज को वियक्ति में से अन्जा दर्जा देते हुँ बतलाया गया है कि समाज के आम फ़ाँदे के लिये कुछ इंसानों के हक़ों और सवारथों की क़ुरबानी की जा सकती है.

कि



समा बुलाइ गई थीं तो उसमें शरीक होने के लिये घरती के कोने कोने से प्रेमी पहुँचे. पर अमरीकी और बरतानी सरकार ने उनको जाने की इजाजत न दी.

आजकल अमन प्रस्ताव का काम और तेज हो चला है. आइये अब हम अपने देस पर भी नजर डालें. हमारे इस भारत में भी अमन के प्रेमियों की गिनती बहुत बड़ी बढ़ी है.

आज बापू का देस, सत्य के पुजारी की जन्म भूमि अमन चाहती है. यही वजह है कि लेखक, कर्तक, मजदूर, किसान और विद्यार्थी पूरी उमंग और लगन के साथ इस बात का विरवास करते हुए दस्तखत कर रहे हैं कि "मैं अपनी जन्म भूमि को, गाँवों व गौतम की जमीन को, अशोक व अकबर की जमीन को खून से शपादार न बनाऊँगा और न ही भारत को दूसरा हिरोशिमा और नागासाकी बनने दूँगा. मैं अमन चाहता हूँ, भारत का हर बासी अमन चाहता है. बापू भी तो अमन चाहते थे. तभी तो उन्हें दुनिया अधिसा के देवता और अमन के हामी के नाम से याद करती है." हमें अपने बतन से प्यार है, बतन की गलियों से प्रेम है, हम नहीं चाहते कि भारत में भी कोरिया के से भयानक रूप पैदा हों. हम अमन चाहते हैं और घरती के हर भाई को हमारा यही एक संदेश है कि "हम अमन चाहते हैं."

बापू के प्रेमी और स्वतंत्र भारत के बासी अमन चाहते हैं.

"अमन प्रस्ताव की जय"

सबها बलाई मँगी नहीं तो आस में शरीक होने के लिये देहरी के कोने कोने से प्रेमी पहुँचे. पर अमरीकी और बरतानी सरकार ने उन को जाने की इजाजत न दी.

आज کل امن پرستاروں کا کام اور تیز ہو چلا ہے. انہیں اب ہم اپنے دھیس پر بھی نظر ڈالیں. ہمارے اس بھارت میں بھی امن کے پرستوں کی گنتی بہت بڑی چڑھی ہے.

آج بایو کا دیس، ستیہ کے پجاری کی جنم بھومی امن چاہتی ہے. یہی وجہ ہے کہ ایہیک، فنکار، کلرک، مزدور، کسان اور دیہاتی پوری املک اور لگن کے ساتھ اس بات کا وشواس کرتے ہوئے دستخط کر رہے ہیں کہ "میں اپنی جنم بھومی کو، گندھی و گوتم کی زمین کو، اھوک و کپور کی زمین کو خون سے داغ دار نہ بنائوں گا اور نہ ہی بھارت کو دوسرا ہیدروشیما اور ناگاساکی بنائے دوں گا. میں امن چاہتا ہوں، بھارت کا ہر واسی امن چاہتا ہے. بایو بھی تو امن چاہتے تھے. تھی تو انہیں دنیا اھلسا کے دیوتا اور امن کے حامی کے نام سے یاد کرتی ہے. " ہمیں اپنے وطن سے پیار ہے، وطن کی گلیوں سے پرہم ہے، ہم نہیں چاہتے کہ بھارت میں بھی کوپا کے سے بھانک روپ پیدا ہوں. ہم امن چاہتے ہیں اور دھرتی کے ہر بھائی کو ہمارا یہی ایک سلیبس ہے کہ "ہم امن چاہتے ہیں."

بایو کے پریمی اور سونلتر بھارت کے باسی امن چاہتے ہیں.

"امن پرستاروں کی جے"



मनवा कर के रहेंगे, हमें कितनी ही कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़े, बट जाएंगे. मिस्टर वि.वियम ने इस बात को धोर देकर कहा कि एक सिपाही भी, एक इबाई जहाज भी और एक डालर भी एशिया न भेजा जाए, और एशिया के देशों के खिलाफ डालरी हतकंदों को दोब्बा जाए जो उन देशों की आजादी को जोंक की तरह चिमटे रह कर खतम करना चाहते हैं.

अमरीकी काँग्रेस में कोरियन जनता पर ऐटम बम डालने का प्रस्ताव आया तो उसे पास करने की बहुत कोशिश की गई पर कोई पाँच लाख मखदूरों के लीडर ने जब अपना बयान काँग्रेस में दिया तो सब ठण्डे पड़ गये, जिसमें उसने कोरियन जनता के खिलाफ ऐटम बम के इस्तेमाल को पास करने पर अपने राम और गुरसे का इस्तेहार किया और जंग के भूतों की जी खोलकर बुलाई की और अमन पर अपना भाशन दिया.

अमरीकी सरकार ने जनता को डराया, धमकाया और अब भी यह धमकियाँ जारी हैं कि अगर वह "अमन प्रस्ताव" पर दस्तखत करेंगे तो उन्हें देश से निकाल बाहर किया जाएगा और गिरफ्तार कर के मुकदमा चलाया जाएगा. आखिर जुलाई में किला डेलक्रिया के नौ लोगों को इसलिये गिरफ्तार किया गया कि वह स्ट्राकहम प्रस्ताव पर जनता के दस्तखत ले रहे थे ऐसी ही सख्तियां जारी हैं. न्युयार्क में पुलिस ने उस आम जलसे के न करने का हुक्म दिया जो लेबर कानफरेन्स अमन सोसायटी न्युयार्क की तरफ से २ अगस्त

मनवा कर के रहेंगे, हमें कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़े, बट जाएंगे. मिस्टर विलम ने इस बात को जोर दे कर कहा कि एक सिपाही भी, एक इबाई जहाज भी और एक डालर भी एशिया न भेजा जाए, और एशिया के देशों के खिलाफ डालरी हतकंदों को दोब्बा जाए जो उन देशों की आजादी को जोंक की तरह चिमटे रह कर खतम करना चाहते हैं.

अमरीकी काँग्रेस में कोरियन जनता पर ऐटम बम डालने का प्रस्ताव आया तो उसे पास करने की बहुत कोशिश की गئی पर कौन पानेज लाओ मोदवोरों के लीडर ने जब अपना बयान काँग्रेस में दिया तो सब तैदफे यो कैंडे जिस में स ने कोरियन जनता के खलफ अयम बम के अस्तेमाल को पास करने पर अहे फम ओर फसे का अظهार किया ओर जंग के भूतों की जी क्हेल कर भूराँनी की ओर अमन पर अयना भेशाशन दिया.

अमरीकी सरकार ने जलता को डराया. देहसकिया ओर अब भी ये देहसकियां जारी हैं कि अगर वो "अमन प्रस्ताव" पर दस्तेखत करीस के तो अनीस दीस से नकाल बाहर किया जादीगा ओर कुरन्तार करके मक्दमे चलाया जादीगा. अखर जोलाई मेंस फलाल्दिया के नो लोकोस को इस लूँ कुरन्तार किया क्हेा के वो अस्ताक हाम प्रस्ताव पर जलता के दस्तेखत ले रहे तेहे अीसी ही सख्तियां जारी हैं. न्हेोयार्क मेंस प्रोलेस ने अूस आम जलसे के न करने का हकम दिया जो लीडर कानफरेन्स अमन सोसायटी न्हेोयार्क की طرف से २ अगस्त को हुणे वाला त्हेा. अखर अूस दान कोमू, पलदरे ह्वा



डना हम लिकन  
 "कारखानों के नुमाइन्दे शरीक है."

आजादी के प्रस्ताव में विगेड के सूरमाओं ने, जिन्होंने स्पेन की न अमरीकी साम्राजशाही की जंगी पालिसी को बुरा कहा है और ट्रूमैन के इस दखल देने की स्पेन में हर हिटलर के दखल देने से विवक्षा है.

शिकागो के नौखानों की एक सभा ने स्टाकहोम अपील पर अट्टाईस हजार دستخط جمع किये हैं.

न्यूयॉर्क के सेंट्रल पार्क में जगह जगह यह नारे मोटे मोटे अबरों में लिखे पाए गये—"कोरिया छोड़ दो."

अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी की नेशनल कमेटी ने एक बयान में सरकार से इस बात की माँग की है कि "कोरिया की भयानक जंग बन्द कर दी जाय और सिक्योरटी काँसिल में आषाद चीन के नुमाइन्दे को जगह दी जाय. फिर कोरिया का मसला शान्ति के साथ निपटा लिया जाए."

अमरीका की मध्यूर कान-फरेन्स ने भी, जो आजकल अमन प्रस्ताव का काम कर रही है, ट्रूमैन के फ़ैसले को अच्छा नहीं समझा और कोरिया छोड़ दो का नारा लगाया.

मिस्टर विलियम फास्टर, प्रधान अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने एक बयान में कहा है कि "कोरिया छोड़ दो" प्रस्ताव को हम

( ५१ ) बुरे बुरे कारखानों के नानन्दे शरीक हैं.

अब्रहम लंकेन ब्रिगेड के सूरमाओं ने, जिनहों ने اسپेन की آزادی के پرستار में बुरी फ़र्कता से حصه लिया تھا. کوریا میں امریکی سامراج شاہی کی جنگی پالیسی کو برا کہا ہے اور ترورمیں کے اس دخل دیدے کو اسپین میں ہر ہفتہ کے دخل دیدے سے ملایا ہے.

شکلو کے نوجوانوں کی ایک سبھا نے استغاثہ ہام اپیل پر اتھائیس ہزار دستخط جمع کئے تھوں.

نہیوارک کے سائٹل پارک میں جگہ جگہ یہ نعرے مارتے مارتے اکھڑوں میں لکھے پائے گئے—"کوریا چھوڑ دو"

امریکی کمپونست پارٹی کی نیشنل کمیٹی نے ایک بیان میں سوڈا سے اس بات کی مانگ کی ہے کہ "کوریا کی بھیانک جنگ بند کر دی جائے اور سکيورٹی کونسل میں آزاد چین کے نمائندے کو جگہ دی جائے. پھر کوریا کا مسئلہ شانتی کے ساتھ نہی لیا جائے."

امریکہ کی مؤدور کانفرنس نے بھی 'جو آج کل امن پرستار کا کام کر رہی ہے' ترورمیں کے فیصلے کو اچھا نہیں سمجھا اور کوریا پر دو کا نعرہ لگایا.

مستور وایم فاسٹر 'پردہان امریکی کمپونست پارٹی نے اپن لیک بیان میں کہا ہے کہ "کوریا پرستار کو ہم



## امرن پرستار قاتل دیسوں میں

(بھائی وقار خاں، حیدرآباد دکن)

جب سے کوریا میں یدھ شروع ہوا ہے تب سے دھرتی کے کولے میں یدھ کے خلاف امرن کا پرستار پاس ہو رہا ہے۔ اب تک چالیس دیسوں میں دس لاکھ سے اوپر لوگوں نے استیفاہام کے امرن پرستار پر دستخط کئے ہیں۔ ان میں سے لگ بھگ پانچ لاکھ دستخط کوریا میں امریکی چڑھائی کے بعد ہوئے ہیں۔ امریکی چلنا بھی ایسی شہمتی ہو اور نڈرتا سے امرن پرستار کے کام کو سہیل بنانے میں لگی ہے۔ کٹھنالیان بھانک مدہ کھولے انہیں قرا دھی ہیں۔ پروہ براہر اپنا کام کئے جا رہے ہیں۔ قاتل دیس امریکہ میں امرن پرستار سے پریم رکھنے والی کوروزں چلنا نے کوریا میں امریکی فوجوں کے دھلے کے خلاف تہراؤ پاس کئے اور ”ہارلیم“ میں جلسہ ہوا اور ”کوریا چہرہ دار“ کے نعرے لگائے گئے۔ ”ہارلیم“ نیویارک سٹی کا ایک پرولتاریہ محفلہ ہے جہاں بہت کر کے کالے نیگرو (حشوی) رہتے ہیں۔ اس جلسے میں بہت سے ذیلی کورٹ افریقن چلنا سہوا، ہارلیم لیڈر کاؤنسل اور دوسری سہواؤں کے موجود تھے۔

کامریڈنیال رامسن نے بھاشن دیا اور کہا کہ ”کوریا سے امریکی فوجیں ہٹالی جائیں اور کورین چلنا کو آپ اپنا سدھار کر کے لئے چہرہ دیا جائے۔ امریکہ کو ہر حصہ مدہ اس کا ہے۔“

## अमन प्रस्ताव डालर देसों में

(भाई विक्रम खलील, हैदराबाद इस्लाम)

जब से कोरिया में युद्ध शुरू हुआ है तब से धरती के कोने कोने में युद्ध के खिलाफ अमन का प्रस्ताव पास हो रहा है। अब एक बालीस देसों में दस लाख से ऊपर लोगों ने स्ट्राकहाम के अमन प्रस्ताव पर दस्तखत किये हैं। इनमें से लगभग पांच लाख दस्तखत कोरिया में अमरीकी चढ़ाई के बाद हुए हैं। अमरीकी जनता भी अपनी शक्ति भर और निडरता से अमन प्रस्ताव के काम को सफल बनाने में लगी है। कठिनाइयों भयानक मुँह खोलें उन्हें डरा नहीं है। पर वह बराबर अपना काम किये जा रहे हैं। डालर देस प्रमरीका में अमन प्रस्ताव से प्रेम रखने वाली करोड़ों जनता ने कोरिया में अमरीकी फौजों के रहने के खिलाफ ठहराव पास किये और 'हारलियम' में जलसा हुआ और 'कोरिया छोड़ दो' के नारे लगाये गये। 'हारलियम' न्यूयार्क सिटी का एक प्रोलतारी मोहल्ला है। यहाँ बहुत करके काले नीगरो (हन्शी) रहते हैं। इस जलसे में बहुत डेलीगेट अफ्रीकन जनता सभा, हारलियम लेबर कौंसिल और इसरी सभाओं के मौजूद थे।

कामरेड पाल राबसन ने भाशन दिया और कहा कि 'कोरिया से अमरीकी फौजें हटा ली जाएँ, और कोरियन जनता को आप



ले तो यह मिले बन्द हो जाएँगी और पूँजीवादी की पूँजी उसके लिये मिट्टी सी हो जायगी। आज की राजनीत पुरानी राजनीत नहीं रह गई है। आज का साम्राजवाद असल में पूँजीवाद का आगे बढ़ा हुआ स्वरूप है। गांधीजी चले से अगर पूँजीवाद की ही जड़ पर हमला कर सकते थे तो निश्चय ही साम्राजवाद भी कैसे टिकता। यह चर्चा तो एक प्रतीक (संज्ञक) था। गांधीजी ग्राम उद्योगों के जरिये सभी पूँजीवादी मशीनों के खिलाफ थे। उन्होंने चले को इसलिये अपनाया कि भोजन, कपड़ा और मकान में कपड़ा ही एक ऐसी चीज है जिस पर मशीनों का सबसे ज्यादा असर पड़ा है। गांधीजी की सादगी आदमी की दूसरी जरूरतों का हल थी।

## हिन्दुस्तानी

भाषा के बारे में भी गांधीजी अपनी 'पीर पराई जाने रे' वाली अहिंसा को काम में लाने से न चूके. हिन्दुस्तानी ख़बान की कल्पना इसकी सब से बड़ी मिसाल थी. हिन्दुस्तान में हिन्दी ही एक ऐसी ख़बान थी जो राष्ट्रभाषा हो सकती थी. हिन्दी में संस्कृत के शब्दों को लाकर लोगों ने उसकी शकल जिस तरह बदलने की कोशिश शुरू कर दी थी, गांधीजी उसके विरोधी थे. गांधीजी का ख़याल था कि राष्ट्रभाषा आम फ़हम ख़बान होनी चाहिये न कि कुछ पंडितों की. उनका कहना था कि हिन्दी और उर्दू के मेल से न्यौं न कोई ऐसी भाषा ढूँढ निकाली जाय जिसमें न संस्कृत के कड़े शब्द हों और न फ़ारसी या अरबी के. वैसे फ़ारसी और अरबी के बहत से शब्द हिन्दी ने पचा ही रखे हैं. थोड़े से और ले लेने से

ہو جائیگی اور پونجی والی کی پونجی اس کے لئے مٹی سی ہو جائیگی۔ آج کی راج نیت پرانی راج نیت نہیں رہ گئی ہے۔ آج کا سامراج واد اصل میں پونجی واد کا آگے بڑھا ہوا قدم ہے۔ گاندھی جی چرخے سے اگر پونجی واد کی جڑ پر حملہ کر سکتے تھے تو نیشنلزم ہی سامراجवाद بھی کیسے تکتا۔ یہ چرخہ تو ایک پرتیک (مظہر) تھا۔ گاندھی جی کرام ادیبوں کے ذریعے سبھی پونجی وادی مشیہوں کے خلاف تھے۔ انہوں نے چرخے کو اس لئے اُبلایا کہ بھجی، کپڑا اور مکان میں کپڑا ہی ایک ایسی چیز ہے جس پر مشیہوں کا سب سے زیادہ اثر پڑا ہے۔ گاندھی جی کی سادگی آدمی کی دوسری ضرورتوں کا حل تھی۔

فندستاری

بہاشا کے بارے میں بھی گاندھی جی اپنی 'پیپر پرائی جانے دے' والی اہلسا کو کام میں لانے سے نہ چو کہے . ہندوستانی زبان کی گلیڈا اس کی سب سے بڑی مثال تھی . ہندوستان میں ہندی ہی ایک ایسی زبان تھی جو راسٹر بہاشا ہو سکتی تھی . ہندی میں سلسکرت کے شبدوں کو لاگو لیگوں نے اُسکی شکل جس طرح بدلنے کی کوشش شروع کر دی تھی ' گاندھی جی اُس کے 'روشنی تھے . گاندھی جی کا خیال تھا کہ راسٹر بہاشا عام فہم زبان ہونی چاہئے نہ کہ کچھ پلڈتوں کی . اُن کا کہنا تھا کہ ہندی اور اُردو کے مہل سے کہوں نہ کوئی ایسی بہاشا تھونڈہ نکالی جائے جس میں نہ سلسکرت کے کوئے شبد ہوں اور نہ فارسی یا عربی کے . ویسے فارسی اور عربی کے مہمت سے شبد ہندی نے بچا ہی رکھے ہیں . تھوڑے سے اور لے لیئے سے



। सादा चेक देने पर तैयार हो गये. वह आत्मबल के आगे दुर्नि-  
गाभी साक्ष्यों को ओछी समझते थे. बात भी दूर असल ठीक ही है.  
कैसी बरपोक आदमी के हाथ में तलवार उसकी कुछ मदद नहीं कर  
सकती. वह इससे आगे की बात सोचते थे और उनका खयाल था कि  
वह आदमी उससे ज्यादा मजबूत है जो खाली हाथ किसी तलवार वाले  
आदमी के सामने जा कर खड़े होने की हिम्मत कर सके. यही  
आत्मबल था जिससे हिरोशिमा में ऐटम बम गिरने के बाद गांधी  
जी ने कहा था कि मैं ऐटम बम के सामने झकेले खड़ा हो सकता हूँ.  
यह तो हुई गांधी जी की अहिंसा की एक मलक. लेकिन हमें तो इस  
पहलू पर गौर करना है कि गांधी जी के जीवन के और सभी पह-  
लुओं में अहिंसा का क्या स्थान है.

चरखा  
गांधी जी चरखे को अहिंसा का अंग मानते थे. जब से  
उन्होंने मुल्क की आजादी की आवाज उठाई, उन्होंने चरखे की भी  
बात उठाई. वह कहा करते थे कि चरखा हमें एक साल के अंदर  
स्वराज दिला सकता है. हमने उनकी यह बात न मानी या जितनी  
मानी भी वह अपनी खुदगर्जी की शकल में मानी नहीं तो आज के  
पँजीबाद का दरअसल अहिंसात्मक हल चरखा ही है. मिलों के  
खुल जाने के बाद जिस तरह धन कुछ लोगों के पास जमा होने लगा  
और जिसके नतीजे में आम लोगों का खून चूसा जाने लगा उसका  
माक्सवादी इलाज तो थी क्रान्ति. माक्सवादियों का खयाल है कि बिना  
खून बहाये पँजीबाद से जान छूट ही नहीं सकती लेकिन गांधीजी

हालातों को अचھی سمجھتے تھے . بات بھی در اصل تھپک ہی ہے .  
کسی دیڑوک آدمی کے ہاتھ میں تلوار اُسکی کچھ مدد نہیں کر سکتی .  
وہ اس سے آگے کی بات سوچتے تھے اور اُنکا خیال تھا کہ وہ آدمی اُس  
سے زیادہ مضبوط ہے جو خالی ہاتھ کسی تلوار والے آدمی کے سامنے  
جانر کھڑے ہونے کی ہمت کر سکے . یہی اُتم بل تھا جس سے  
ہیروزشہما میں ایٹم بم گرنے کے بعد لگدشی جی نے کہا تھا کہ میں ایٹم  
بم کے سامنے اکیلے کھڑا ہو سکتا ہوں . یہ تو ہوئی لگدھی جی کی  
اھلسا کی ایک جھلک . لیکن ہمیں تو اُس پہلو پر غور کرنا ہے  
کہ لگدھی جی کے جیہوں کے اور سبھی پہلوؤں میں اھلسا کا کیا  
استھان ہے .

### چرخہ

گاندھی جی چرخے کو اھلسا کا انگ مانتے تھے . جب سے انہوں  
نے ملک کی آزادی کی آواز اُٹھائی ، انہوں نے چرخے کی بھی بات  
اُٹھائی . وہ کہا کرتے تھے کہ چرخہ ہمیں ایک سال کے اندر سواراج  
دلا سکتا ہے . ہم نے اُنکی یہ بات نہ مانی یا جتنی مانی بھی وہ  
اپنی خود فرضی کی شکل میں مانی نہیں تو آج کے یوننجی واد  
کا دراصل اھلساتدک حل چرخہ ہی ہے . ملوں کے کھل جانے کے  
بعد جس طرح دھن کچھ لوگوں کے داس جمع ہونے لگا اور جس کے  
نتیجے میں عام لوگوں کا خون چوسا جانے لگا اُس کا مارکس وادی  
علاج تو نہیں کرانتی . مارکس وادیوں کا خیال ہے کہ بلا خون بہائے  
یوننجی واد سے جان چھوٹ ہی نہیں سکتی . لیکن گاندھی جی  
تو اھلسا کے پیروکار تھے . وہ اُس بات کی سب مانتے تھے .







वह घाट है जिसको आजादी के महान लीडर, नेकी और एकता के नेता ने पार करके "परलोक" का सफर किया। और सब के सब उस घाट से अपने लीडर और सलाहकार, अपने हमदर्द और राम-गुप्ता का दामन छोड़ कर और आग में उसको मौक कर अपने अपने घरों को वापस लौटे।

हाथ मलते और आँसू टपकते,  
बड़ास उदास, निडाल निडाल  
रामगीन रामगीन, स्वामेश स्वामेश  
जैसे कोई चीज खोकर या जैसे लुट लुटा कर,  
बेशक वह एक मोती था। अनमोल मोती—भारत भंडार का,  
जिसको खो दिया।

और बड़ा धन था आजाद शासन का—मगर अफसोस वह हाथ से जाता रहा—अब हाथ मलने के सिवा चारा क्या ?

३० जनवरी बेटे के हाथ से बाप के कल्ल का दिन है और भारत के यतीम होने का,

इसी दुर्घटना और बड़ी दुर्घटना के लिहाज से  
३० जनवरी, आजाद भारत के इतिहास का तारीखी दिवस है और आजादी की किताब का एक खूनी वरक,

३१ जनवरी को जब वह महात्मा राजघाट पर आग में जल रहा था और हर तरफ संदल ही संदल बस रहा था, उसी धुआँधार और खुरशबू दार किजा में हमने देखा :

एकता का मंडा गिर रहा था।

प्रेम का सूरज डूब रहा था।

जिसका मतलब यह कि महात्मा जी के जीवन के साथ साथ

जिसका मतलब यह कि महात्मा जी के जीवन के साथ साथ

वह कहत है जसको आज़ादी के महान लीडर, नेकी और एकता के नेता ने पार कर के "परलोक" का सफर किया। और सब के सब उस घाट से अपने लीडर और सलाहकार, अपने हमदर्द और राम-गुप्ता का दामन छोड़ कर और आग में उसको मौक कर अपने अपने घरों को वापस लौटे।

हात मलते और आँसू टपकते

आदस आदस, निडाल निडाल

रामगीन रामगीन, स्वामेश स्वामेश

जैसे कौनी चीज खोकर या जैसे लुट लुटा कर,

बेशक वह एक मोती था। अनमोल मोती—भारत भंडार का,  
जसको खो दिया।

और बड़ा धन था आजाद शासन का—मगर अफसोस वह हात से जाता

रहा—आप हात मलने के सिवा चारा क्या ?

३० जनवरी बेहमे के हात से बाप के कल्ल का दिन है और भारत के यतीम होने का,

इसी दुर्घटना और बड़ी दुर्घटना के लिहाज से

३० जनवरी, आजाद भारत के इतिहास का तारीखी दिवस है और आजादी की किताब का एक खूनी वरक,

३१ जनवरी को जब वह महात्मा राज घाट पर आग में जल रहा था और हर तरफ संदल ही संदल बस रहा था, उसी धुआँधार और खुरशबू दार फसा में हम ने देखेका :

एकता का जहलदा क्र रहा था।

प्रेम का सूरज डूब रहा था।

जस का मतलब ये के महत्ता जी के जेवोन के साथ साथ  
ले बेही अिला जेवोन खतम कर दिया।



पात का भेद भाव न हो.

जिसमें प्रेम की व्यास हो. जिसमें एकता की चाह हो और समता की आबाख हो.

यह है सही इंसानियत का मेयार और शुद्ध जीवन का विकास !  
इसी के अन्दर आत्म विकास है और सत्य का प्रकाश !

महात्मा गांधी की खिंदगी बड़ी सीधी सादी थी. यह कहना ठीक कि उनकी खिंदगी सादगी में बिलकुल खादी थी. वह जिधर जाहते वही खा मोशी से गुजर जाते थे. वह अपने साथ टीम टाम न रखते थे न शान शौकत के बेकार और बनावटी सामान—मगर महात्मा की भस्म का खुल्लस शानदार था—सारी सरकार, सारा दूरबार, सारी फौज और सारी क्रीम अपने अपने रंगों से इसको रौनक दिये हुए थी. उसकी शान बढ़ाए हुए थी. मीलों तक मखलूक की रेज पेज थी. और बाढ़ बेसी लगी थी जैसे इंसानों का समन्दर ठाटें मार रहा हो. पानी की बाढ़ में जैसे मौज के ऊपर मौज चढ़ती है वैसे ही इंसानों की इस बाढ़ में आदमी के ऊपर आदमी चढ़ रहा था. क्योंकि बाढ़ का जोश लमहे लमहे बढ़ रहा था.

बढ़ भी एक अजीब समौ था .

और अजीब कैफियत का आनन्द !

३१ जनवरी जयन्ता नदी के लिये बड़ा ही शानदार और यादगार दिन था. उस दिन मिले जुले जुलूसों और क्रीमों प्रूणों के साथ उसके राखण्ट पर क्रीम के बाप की सबारी बड़े ठाठ बाठ से बहूंची—बही

में जल पात का भीद भाड़ा नेह .

जिस में प्रेम की प्यास हो . जिस में अपना की जहा हो  
लुभ सखा की आरा हो .

ये है सखि आनन्द का मयार और शद्ध जेहों का र्कास !  
इसी के अन्दर आत्म र्कास है और सद्ध का पुरकास !

महात्मा गान्धी की زندगी बड़ी सद्धी सद्धी थी . ये कहेा  
कहेा के अ की زندगी सद्धी में बालक केहादी थी . वे जद्ध  
जाहते बड़ी खा मोशी से कडर जाते थे . वे अपे सान्ने प्रेम का ने  
रकते थे ने हान शौकत के प्रकाश और पलायनी सामान—मगर  
महात्मा की भस्म का खुल्लस शानदार था—सारी सरकार, सारा दूरबार,  
सारी लुभ और सारी क्रीम अपे अपे रङ्गों से इसको रौनक  
दिये हुए थी. उसकी शान बढ़ाए हुए थी. मीलों तक मखलूक  
की रेज पेज थी. और बाढ़ बेसी लगी थी जैसे इंसानों का समन्दर  
ठाटें मार रहा हो. पानी की बाढ़ में जैसे मौज के ऊपर मौज  
चढ़ती है वैसे ही इंसानों की इस बाढ़ में आदमी के ऊपर  
आदमी चढ़ रहा था. किونके बाढ़ का जोश लमहे लमहे बढ़ रहा था.  
बढ़ भी एक अजीब सल था .

और अजीब कैफियत का आनन्द !

३१ जनवरी जयन्ता नदी के लिये बड़ा ही शानदार और यादगार दिन  
था. उस दिन मिले जुले जुलूसों और क्रीमों के सान्ने उस के राज  
कहंत पर क्रीम के बाप की सबारी बड़े ठाठ बाठ से बहूंची—बही



नया हिन्द ३० जनवरी और ३१ जनवरी जनवरी सन् '५१

बहु हो दिक्स बहिंसा के लिखे हिन्द की तारीख में हिंसा दिक्स है.

राष्ट्र पिता अब हमारे बीच में नहीं, माता की गोदी में भी नहीं. न उसके शरीर का कोई भी भाग क्लौस के पास है मगर उसके अनमोल शब्द और सुनहरे संदेश मौजूद हैं. क्लौस की रहबरी के लिये और रोशनी दिलाने के लिये—क्योंकि वह सच्चे हैं और सच्चाई अमर है सो वह बाली रहने वाले हैं और अपनी रोशनी क्लायम रखने वाले—इसलिये आवश्यकता है अच्छा उनका उपयोग करने की. जिसने जितना अच्छा उनका उपयोग किया उतना ही अच्छा उसने अपनी जिम्मेदारी को समझा और अपने कर्तव्य को पहचाना. इसीमें उसका भला है और इसी में उसका आदर्श है वरना केवल वह गन्दी मिट्टी का एक पुतला है—नापाक और नाकारा !

इंसान खत्म हो जाता है और उसका शरीर भी. उसकी बोटी बोटी भी और हड्डी हड्डी भी—कुछ भी बाली नहीं रहता. इसलिये कि इंसान और उसके शरीर का हर तत्व भौतिक है और फ़ानी यानी नाशवान—बाली रहने वाली कोई चीज है तो वह नेकी है. नेकी अमर है और नेकी ही पाक खिंदगी का पवित्र जौहर है.

यह जौहर क्या है ?

शुद्ध जीवन और सत्य के प्रकाश का सार

नया हल्द ३० जनवरी और ३१ जनवरी जनवरी सन् '५१

ये दो दिवस हल्दा के लिये हल्द की तारीख में हल्दा दिवस हैं.

शायद बता अब हमारे बीच में नहीं, माता की गोदी में भी नहीं. न उस के शरीर का कोई भी भाग क्लौस के पास है मगर उस के अंदर शुद्ध और—नहरे सल्लेख मौजूद हैं. क्लौस के लिये और रोशनी दिलाने के लिये—क्योंकि वह सच्चे हैं और सच्चाई अमर है सो वह बाली रहने वाले हैं और अपनी रोशनी क्लायम रखने वाले—इसलिये आवश्यकता है अच्छा उनका उपयोग करने की. जिसने जितना अच्छा उनका उपयोग किया उतना ही अच्छा उसने अपनी जिम्मेदारी को समझा और अपने कर्तव्य को पहचाना. इसीमें उसका भला है और इसी में उसका आदर्श है वरना केवल वह गन्दी मिट्टी का एक पुतला है—नापाक और नाकारा !

इंसान खत्म हो जाता है और उस का शरीर भी. उस की बोटी बोटी भी और हड्डी हड्डी भी—कुछ भी बाली नहीं रहता. इस लिये कि इंसान और उस के शरीर का हर तत्व भौतिक है और फ़ानी यानी नाशवान—बाली रहने वाली कोई चीज है तो वह नेकी है. नेकी अमर है और नेकी ही पाक खिंदगी का पवित्र जौहर है.

ये जौहर क्या है ?

शुद्ध जीवन और सत्य के प्रकाश का सार

इसी के अंदर जन्दा अत्मा की प्यार है .



पर उजाला फैलाए हुए था।

३० जनवरी महात्मा जी की खिन्दगी का वह यादगार दिन है कि जिस दिन उन्होंने "हे राम" कह कर इस किरकेशरी दुनिया से अपने जीवन का नाता तोड़ा।

रेडियो ने दिल्ली से बुरी तरह रोना पीटना शुरू किया। अपनी बेकरारी की हालत में, बेताबाना चीख पुकार से सारे संसार में मातम की लहरें दौड़ा कर राम की गूँज मचा दी। भूगोल मातमी लहरों में घिर गया।

३० जनवरी को इस दुर्घटना से देख देस राम के बादल छाये और आकाश आकाश राम की छाहें चढ़ीं।

३० जनवरी को एकता के प्रचारक ने वीरता के साथ "बिरला हाउस" के अन्दर "यमराज" का स्वागत किया।

इसी तारीख उस ने मौत की गोली खाई और गोली खाने के इस मिनट बाद "शहादत का जाम" पिया।

३० जनवरी को अहिंसा के उपदेशक ने उपदेश स्थान के "लान" पर खूनी स्नान किया—और

३१ जनवरी को राजघाट के मैदान में अग्नि स्नान लिया।

३० जनवरी अहिंसा के प्रचारक के लिये खून का दिन था—और

३१ जनवरी आग का दिन !

पर अजाला पहेलाने हुये न्हा ।

३० जल्दोरी मेहतमा जी की زندगी का र्द یادگار دن ه كه جس هن آنهوں نے "ه رام" كهكر اس فرقه دارى دنيا سے اپه جملوں كا ناتا توڑا .

دیتیمو نے دلی سے بری طرح روننا پیتلنا شروع کیا . اپنی بے قراری کی حالت میں 'بے تابانہ چیخ پکار سے سارے سلسار میں ماتم کی لہریں دوڑا کر ہم کی کونج مچا دی . بھوکول ماتمی لہروں میں کھر لیا .

۳۰ جلدوری کو اس درگھٹنا سے دیس دیس ہم کے بادل چھائے اور آکاش آکاش ہم کی آهیں جڑھوں .

۳۰ جلدوری کو ایگھٹا کے پرچارک نے ویرتا کے ساتھ "برلا هاؤس" کے اندر "یرراج" کا سوالت کیا .

اسی تاریخ اس نے موت کی گولی کھائی اور گولی کھانے کے دس ملت بعد "شهادت کا جام" پیا .

۳۰ جلدوری کو اهلسا کے ایدیشک نے ایدیش استھان کے "لن" پر خونى اسنان کیا—اور

۳۱ جلدوری کو راج کھات کے مھدان میں اگلی اسنان لیا .

۳۰ جلدوری اهلسا کے پرچارک کے لئے خون کا دن تھا—اور

۳۱ جلدوری آگ کا دن !



## ३० और ३१ जनवरी

( भाई अब्दुल हलीम अंसारी )

३० जनवरी सारी दुनिया के लिये मातम का दिन था इसलिये कि इसी दिन दुनिया की एक महान हस्ती अपनी महान अभिलाशा के साथ दुनिया से उठी।

अपने खून के निशान इस हिंसक दुनिया में छोड़ कर

इस बदकार ब फिरकेश्वर दुनिया की बदकारियों और उसके अत्याचारियों से मुंह मोड़ कर.

हिन्दुस्तान उसका जन्म स्थान था. इसलिये हिन्दुस्तान के लिये खास तौर पर उसका सोग और मातम, उसका शोक और गम अधिक !

ठीक इसी तीस की शाम को दुशमन ने महात्मा गांधी का काम तमाम किया और महात्मा जी ने बलिदान का पद पाकर शहीदों में नाम किया.

३० जनवरी को एकता और इसानियत के दुशमन ने "एकता" पर "शूट" किया और "इंसानियत" का खून किया—गोया बदी के ज़ेतान ने नेकी पर बार किया और वह सफल हुआ.

## ३० और ३१ जनवरी

( भाई अब्दुल हलीम अंसारी )

३० जनवरी सारी दुनिया के लिये मातम का दिन था इस लिये कि इसी दिन दुनिया की एक महान हस्ती अपनी महान अभिलाशा के साथ दुनिया से उठी.

अपने खून के निशान इस हिंसक दुनिया में छोड़ कर

इस बदकार व फिरकेश्वर दुनिया की बदकारियों और उस के अत्याचारियों से मुंह मोड़ कर.

हिन्दुस्तान उस का जन्म स्थान था. इस लिये हिन्दुस्तान के लिये खास तौर पर उस का सोग और मातम, उस का शोक और गम अधिक !

ठीक इसी तीस की शाम को दुश्मन ने महात्मा गांधी का काम तमाम किया और महात्मा जी ने बलिदान का पद पाकर शहीदों में नाम किया.

३० जनवरी को एकता और इसानियत के दुश्मन ने "एकता" पर "शूट" किया और "इंसानियत" का खून किया—गोया बदी के ज़ेतान ने नेकी पर बार किया और वह सफल हुआ.

लेकिन शैطان पर दुनिया ने हाथ . طرف .



५९ इतन स काम न चलगा, आप का अपन अनन्त चलत रह  
का मन भी फेरना पड़ेगा और इन्हें ऐसा बना देना पड़ेगा कि वह  
आप की पूजा करते करते हम से इतना प्यार करने लगें कि हमारे  
दुनिया से जाने के बाद आप के पैरों में यह हमें भी कहीं जगह देकर  
देसे ही हमारे गीत गाते रहें जैसे आज हम आप के गा रहे हैं.

बापू, हम निर्दोश हैं. हमारा दिल साफ है और उसी साफ दिली  
के साथ हम बोलते हैं :

महात्मा गांधी की जय !

३०-११-५०.

—भगवानदीन

मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की आर्थिक  
अवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उसमें कोई बिना खाने और  
कपड़े के न रहने पावे. दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुजर  
बसर के लिये काफ़ी मिलना ही चाहिये. यह आदर्श तभी पूरा  
होगा जब जिन्दगी की बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने के साधनों पर  
जनता का अधिकार रहेगा.

यह साधन सबको बेरोक टोक के मिलने चाहिये. उन्हें  
दूसरों को बढ़ने के लिये लेन देन की चीज़ें हरगिज़ नहीं बनने  
देना चाहिये.

—महात्मा गांधी

हर अन्तरे से कम न चलेगा. अन्तर्गत अन्तरे से इन ५ मन भी  
बढ़ना पड़ेगा और इन्हें ऐसा बना देना पड़ेगा कि वे अपनी गुजर करने  
हम से अन्तः प्रेम करने लगे, हमारे दुनिया से जाने के बाद उनके  
पैरों में ये हमें भी कहीं जगह दे दे, जैसे हमारे लोभ  
कामें हमें जैसी आज हम आप के गा रहे हैं.

बापू, हम निर्दोश हैं. हमारा दिल साफ है और उसी साफ दिली  
के साथ हम बोलते हैं :

महात्मा गांधी की जय !

—भगवानदीन

३०-११-५०

मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की आर्थिक  
अवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उसमें कोई बिना खाने और  
कपड़े के न रहने पावे. दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुजर  
बसर के लिये काफ़ी काम मिला चाहिये. यह आदर्श तभी पूरा होगा जब  
जिन्दगी की बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने के साधनों पर जनता का  
अधिकार रहेगा.

ये साधन सब को बے रोक टोक के मिलने चाहिये. उन्हें  
दूसरों को बढ़ने के लिये लेन देन की चीज़ें हरगिज़ नहीं बनने  
देना चाहिये.

—महात्मा गांधी



हर घर में माँ अपने बेटे बेटियों को चुपके से आलमारी खोल कर बिस्कुट चुराते देख कर मचाती हैं। असल में इस तरह के शोर और गुस्से के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है। यह बात बच्चे भी समझते हैं और आप तो जानते ही हैं। भारत की आज की सरकार कोई अंगरेजों सरकार की तरह झूठी माई बाप बनी हुई नहीं है। वह तो सच्चे माँ में माई बाप है। उसकी हर धमकी के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है। तब ही तो हम निडर होकर अपने उस खेल कूद में लगे रहते हैं जिसे आप चोर बाजारी कहते हैं।

बापू, हम आपके अनुयाई हैं यानी आपके पीछे पीछे रहने वाले। आप अपने जीने जो जो काम कर गये उन की नकल कर के अगर हम बहुत से वैसे ही काम कर डालें तो यह आप से आगे बढ़ जाना होगा और ऐसी बेअदबी हम कैसे कर सकते हैं। और आप भी शायद इस बेअदबी को गवारा न करेंगे। लोग हम से बर्न भेद कर शादी करने को कहते हैं। यह तो आप से आगे बढ़ना होगा। जो आप कर गये यानी जो आप के सामने हो गया वह ठीक, हमें मंजूर, पर हम पीछे चलने वाले होकर यानी आप के अनुयाई होकर आगे कैसे बढ़ सकते हैं। न जाने इस छोटी सी बात को भारत बासी क्यों नहीं समझ पाते और आये दिन हमको वे मतलब बताते रहते हैं।

बापू, आप हमें सुखमय छोड़ गये हैं और सुख छोड़ कर अब

हर कदम मोड़ मानें। आप भीत-भीत में चोपके से सारी कदम भर भस्म चुराते देखकर मचाती हैं। असल में इस तरह के शोर और गुस्से के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है। यह बात बच्चे भी समझते हैं और आप तो जानते ही हैं। भारत की आज की सरकार कोई अंगरेजों सरकार की तरह झूठी माई बाप बनी हुई नहीं है। वह तो सच्चे माँ में माई बाप है। उसकी हर धमकी के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है। तब ही तो हम निडर होकर अपने उस खेल कूद में लगे रहते हैं जिसे आप चोर बाजारी कहते हैं।

( ३० )

बापू, हम आप के अनुयायी हैं यानी आप के पीछे पीछे रहने वाले। आप भीत-भीत में चोपके से सारी कदम भर भस्म चुराते देखकर मचाती हैं। असल में इस तरह के शोर और गुस्से के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है। यह बात बच्चे भी समझते हैं और आप तो जानते ही हैं। भारत की आज की सरकार कोई अंगरेजों सरकार की तरह झूठी माई बाप बनी हुई नहीं है। वह तो सच्चे माँ में माई बाप है। उसकी हर धमकी के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है। तब ही तो हम निडर होकर अपने उस खेल कूद में लगे रहते हैं जिसे आप चोर बाजारी कहते हैं।

बापू, आप हमें सुखमय छोड़ गये हैं और सुख छोड़ कर अब



बेटी से एक गुड़िया मोल ले लेता है और भाई पांच रुपये दे कर अपनी छोटी बहन से उस की बानई हुई मिट्टी की पूरी मोल ले लेता है, बस इसी तरह का आनन्द आज आप के बनावे भारत-घर में हो रहा है, कुछ पागल इस को बोर बाजार और काला बाजार कह कर पुकारते हैं मानो वह हिसाब पी गये हों।

बापू, घर में भूट बोलना कोई भूट बोलना है ? भूटी कहानियाँ सुना कर हम खुश होते हैं और सुनने वाले बच्चे हंसते हैं और कभी कभी तो उस से बड़ी सीख लेते हैं, यह भूट बोलना भूट बोलना नहीं है, यह तो सच से भी बढ़ कर काम की चीज है इसलिये साथ ही है, घर की चोरी को कब किसने चोरी माना है, मालन चोर भगवान के देस में आपसी चोरी को चोरी कहना नास्तिकता नहीं, वो क्या ? बस बापू यह हम पर उंगली उठाने वाले या तो पक्के नास्तिक हैं नहीं तो फिर सिर फिरे हैं.

बापू, रही यह बात कि कभी हमारे बड़े नेता यानी आपके पास पास रहे नेता, चोर बाजारी का शोर मचा देते हैं और साथ साथ वह भी कहते हैं कि हम कानून बना कर इस चोर बाजारी का जल्द खातमा कर देंगे। इस से कहीं आप यह न समझ बैठना कि भारत में सबकुछ ऐसी चोर बाजारी चल रही है जो बुरा है और जिसे दूर करना ही चाहिये। बापू हमारे नेताओं के इस शोर को बस आप इतना ही महत्व दें जितना बशोदा के उस शोर को जो वह कुरान जी को रही चुराते देख कर मचाया करती यों या जिस तरह आज भी

سے ایک ٹوکرا مول لے لیجی ہے اور بھائی جانچ دیکھ دے کر اپنی چھوٹی بہن سے اُس کی بدلائی ہوئی مٹی کی دوپڑی مول لے لیجی ہے۔ بس اسی طرح کا آئندہ آج آپ کے بدلئے بھارت۔ کھڑے ہو رہا ہے۔ کچھ ہائل اسکو چور بازار اور کالا بار کھ کر نکارتے ہیں مرنے والے حسیب بھی گئے ہیں۔

ہاپو، کھر، مہن جھوٹ بولنا کوئی جھوٹ بولنا ہے؟ جھوٹی کہانیاں سنا کر ہم خوبس ہوتے ہیں اور سناٹے والے بچے دھستے ہیں اور کبھی کبھی تو اُس سے بڑی سیکھ لیتے ہیں۔ یہ جھوٹ بولنا جھوٹ بولنا نہیں ہے۔ یہ تو سچ سے بھی بڑھکر کلم کی جھوڑ ہے اُس لئے سچ ہو ہے۔ کھر کی چھڑی کو کب کس نے چھڑی مانا ہے۔ ماکھن چھڑ بھکھان کے دیس مہن آسوی چھڑی کو چھڑی کہنا ناستکتا نہیں تو کیا ہے؟ بس ہاپو یہ ہم پر اُتلی اُتھانے والے یا تو یکے ناستک ہوں نہوں تو پھر سو پھرے ہیں۔

ہائیو، دھبی، یہ بات کہ کبھی کبھی ہمارے بڑے نیٹھا یعنی آپ کے آس پاس رہے نہیٹا، چور بازار، کا شور مچا دیتے ہیں اور ساتھ ساتھ یہ بھی کہتے ہوں کہ ہم قانون بنا کر اس چور بازار کا جلد خاتمہ کر دینگے۔ اس سے کہیں آپ یہ نہ سمجھ ہیٹھلا کہ بہارت میں سچ سچ ایسی چیز بازاری چل رہی ہے جو ہری ہے اور جسے دور کرنا ہی چاہئے۔ ہائیو ہمارے نیٹاؤں کے اس شور کو بس آپ گونا گویا مہتو دیں جیٹھا یسودا کے اس شور کو جو وہ کرشن جی کو مھی چرات دیکھ کر مچھلیا کرتی تھیں یا جس طرح آج بھی



अर्थात् तो यह झूट बात होगी या नहीं ? ठीक इसी तरह से इस भरे पूरे देश में आलसी ही यूँ से भर जाने का शोर मचाते हैं न कि मेहनती. ठीक इसी तरह से इस अनेकों कपड़ा मिल वाले देश में नंगे रहने का क्या काम ? अगर कोई नंगा है तो इस में उसी का कुछ झूठ होगा. हाँ, एक बात हम और कह देना चाहते हैं कि जब हमारा देश आज से भरपूर है तब हम बाहर से क्यों अनाज तो हम उंगली उठाने वालों के लिये यह बता देना चाहते हैं कि हम बाहर से अनाज या तो उन मुलकों पर दिया कर के मंगते हैं जिन मुलकों में वह अनाज न खप कर यों ही बरबाद हो जाता या इस गरज से मंगते हैं कि फल अगर तीसरी लड़ाई छिड़ गई तो यह अनाज हमारे बड़ा काम आयेगा. यह उंगली उठाने वाले न सींचते समझते हैं, न राज के हथकण्डों से बाकिर हैं, सिर्फ शोर मचाना और उंगली उठाना जानते हैं.

बापू, जिस घर में हर एक को यह आजादी हो कि वह जो जी में आये उठाये खाये वह घर कितना सुखी होना चाहिये. बापू, आप तो जेल में रहे हैं, आप को यह माखम हो है कि वहाँ बीड़ी का एक बन्दल एक दूरी के बदले में मिलता है और इसी तरह कितनी ही चीजों के मेल में अनाप शनाप दास होते हैं. और क्या इससे कोई ऊँची दुख मानता है. वह तो दो दूरी दे कर भी बीड़ी का एक बन्दल खरीदने

सच्चे तो ये जेहोत बात हरी या नहीं ? तबिक इसी तरह से इस पूरे देश में असी असी भूक से मर जाने का शोर मचाते हैं न कि मेहनती. तबिक इसी तरह से इस अनेकों कपड़ा मिल वाले देश में नंगे रहने का क्या काम ? अगर कोई नंगा है तो इस में उसी का कुछ झूठ होगा. हाँ, एक बात हम और कह देना चाहते हैं कि जब हमारा देश आज से भरपूर है तब हम बाहर से क्यों अनाज मंगते हैं ? तो अंगली उठाने वाले ये बता देना चाहते हैं कि हम बाहर से अनाज या तो उन मुलकों पर दिया कर के मंगते हैं जिन मुलकों में वह अनाज न खप कर यों ही बरबाद हो जाता या इस गरज से मंगते हैं कि फल अगर तीसरी लड़ाई छिड़ गई तो यह अनाज हमारे बड़ा काम आयेगा. यह उंगली उठाने वाले न सींचते समझते हैं, न राज के हथकण्डों से बाकिर हैं, सिर्फ शोर मचाना और उंगली उठाना जानते हैं.

बापू, जिस घर में हर एक को यह आजादी हो कि वह जो जी में आये उठाये खाये वह घर कितना सुखी होना चाहिये. बापू, आप तो जेल में रहे हैं, आप को यह माखम हो है कि वहाँ बीड़ी का एक बन्दल एक दूरी के बदले में मिलता है और इसी तरह कितनी ही चीजों के मेल में अनाप शनाप दास होते हैं. और क्या इससे कोई ऊँची दुख मानता है. वह तो दो दूरी दे कर भी बीड़ी का एक बन्दल खरीदने के लिये तैयार रहता है. आज भारत एक घर बन गया है. सब







है कि लोग हम पर कितनी ही उंगली उठाये हम उन की ओर रा भी ध्यान नहीं देते इसलिये आप यह न समझें कि हम चिकने दे हैं और हमारे ऊपर बूँद नहीं रुकती. हम तो जिस काम में लगे हैं सचचे जी से लगे हुए हैं और हमारे सामने हमेशा यही बातें रहती हैं कि किस तरह हम अपने देस को दुनिया की नज़रों में ऊँचा उठावें, और किस तरह राष्ट्रपिता आप को दुनिया में ज़ा की चीज़ बना दें. यह दो काम कुछ कम काम नहीं हैं. इन में जो रहने से अगर हम सत्य और अहिंसा को बिलकुल भूल जायें तो क्या बुरा करते हैं. सत्य और अहिंसा से भी तो यही होना कि देस मशहूर होता और आप का नाम जग में रोशन होना पर जब कह देंगे काम सत्य और अहिंसा के बिना हो रहे हैं तब यह उनकी भूल है जो हमारी ओर उंगली उठाते हैं या हमारी भूल है जो हम उन उंगली उठाने वालों की परवाह नहीं करते. बापू, अब आप ही समझ लीजिये कि हम चिकने घड़े हैं या कोरे घड़े.

बापू, आप हमको एक बहुत बड़े देस का राज दे गये. एक बड़ी मजबूत सरकार को निकाल बाहर करने का यश दे गये, सत्रह आरब की लेनदारी की साहूकारी हमारे हाथ में छोड़ गये और हमें आजाद ही नहीं बना गये बल्कि हमारे पात्रों में दुश्मने बना काँटों की भी अपने जंतों की निकाल बाहर कर गये. यह दूसरी बात है कि उन कांटों को खतम न कर के मकान के एक कोने में पक्ष

ये है कि लोग हम पर कितनी ही उंगली उठावें हम उन की ओर ध्यान नहीं देते इसलिये आप यह न समझें कि हम चिकने दे हैं और हमारे ऊपर बूँद नहीं रुकती. हम तो जिस काम में लगे हैं सचचे जी से लगे हुए हैं और हमारे सामने हमेशा यही बातें रहती हैं कि किस तरह हम अपने देस को दुनिया की नज़रों में ऊँचा उठावें, और किस तरह राष्ट्रपिता आप को दुनिया में ज़ा की चीज़ बना दें. यह दो काम कुछ कम काम नहीं हैं. इन में लगे रहने से अगर हम सत्य और अहिंसा को बिलकुल भूल जायें तो क्या बुरा करते हैं. सत्य और अहिंसा से भी तो यही होना कि देस मशहूर होता और आप का नाम जग में रोशन होना पर जब कह देंगे काम सत्य और अहिंसा के बिना हो रहे हैं तब यह उनकी भूल है जो हमारी ओर उंगली उठाते हैं या हमारी भूल है जो हम उन उंगली उठाने वालों की परवाह नहीं करते. बापू, अब आप ही समझ लीजिये कि हम चिकने घड़े हैं या कोरे घड़े.

बापू, आप हम को एक बहुत बड़े देस का राज दे गये. एक बड़ी मजबूत सरकार को निकाल बाहर करने का यश दे गये, सत्रह आरब की लेनदारी की साहूकारी हमारे हाथ में छोड़ गये और हमें आजाद ही नहीं बना गये बल्कि हमारे पात्रों में दुश्मने बना काँटों की भी अपने जंतों की निकाल बाहर कर गये. यह दूसरी बात है कि उन कांटों को खतम न कर के मकान के एक कोने में पक्ष



## बापू से

बापू, अगर आप हमको कमखोर, गरीब, अज्ञानी और दास छोड़ जाते तो हम कम से कम उस दिन तक जब तक हम बलवान, अमीर, ज्ञानी और आजाद न हो जाते जरूर आप की अहिंसा अपनाये रहते और शक्ति भर सच्चाई पर भी डटे रहते. आपस में मिल जुल कर रहते और उन सैकड़ों बुराइयों से दूर रहते जो हम में से बहुतों में आज जड़ पकड़ गई हैं, और जो दो बार दस बच रहे हैं उन में भी वह बुराइयाँ जड़ जमाने की सोच रही हैं. आप के रहते, इस में शक नहीं, हमने बेहद मेहनत की, तकलीफें उठाई, पर यह पता नहीं कि उन तकलीफों के उठाने की तह में आप का डर था या समाज का डर था या दूसरे मुल्कों की लानत मलामत का खयाल था. अगर हमने दिल की उमंग से इस तरह की मेहनत की होती, जिसे आज हमारे देसबासी तपस्या कह कर पुकारते हैं तो आज हम इस गिरी हुई हालत में न होते, और न अपनों को अपने पर उकाने का मौक़ा देते. अपनी मेहनत से कमाई हुई चीज़ों के साथ बरबाद कुछ और होता है और दान में मिली या तरके में पाई चीज़ों के साथ और. बाप से पाये दुशाले से, अपनी कमाई से खरीदे जूते को पोछने की बात किस को नहीं मालूम.

हम लोग भी आज आप के तप त्याग के बल से मिले राज के साथ जो ब्योहार कर रहे हैं उसे देख कर दूसरे लोग अगर हम पर देशी छठायें तो शायद आप भी उसे बेजा न कहेंगे. पर बापू सच बात

## बापू से

बापू, अगर आप हमको कमखोर, गरीब, अज्ञानी और दास छोड़ जाते तो हम कम से कम उस दिन तक जब तक हम बलवान, अमीर, ज्ञानी और आजाद न हो जाते जरूर आप की अहिंसा अपनाये रहते और शक्ति भर सच्चाई पर भी डटे रहते. आपस में मिल जुल कर रहते और उन सैकड़ों बुराइयों से दूर रहते जो हम में से बहुतों में आज जड़ पकड़ गई हैं, और जो दो बार दस बच रहे हैं उन में भी वह बुराइयाँ जड़ जमाने की सोच रही हैं. आप के रहते, इस में शक नहीं, हमने बेहद मेहनत की, तकलीफें उठाई, पर यह पता नहीं कि उन तकलीफों के उठाने की तह में आप का डर था या समाज का डर था या दूसरे मुल्कों की लानत मलामत का खयाल था. अगर हम ने दिल या दूसरे मुल्कों की लानत मलामत का खयाल था. अगर हम ने दिल की अमलक से इस तरह की मेहनत की होती. जिसे आज हमारे देसबासी तपस्या कह कर पुकारते हैं तो आज हम इस गिरी हुई हालत में न होते, और न अपनों को अपने पर उकाने का मौक़ा देते. अपनी मेहनत से कमाई हुई चीज़ों के साथ बरबाद कुछ और होता है और दान में मिली या तरके में पाई चीज़ों के साथ और. बाप से पाये दुशाले से, अपनी कमाई से खरीदे जूते को पोछने की बात किस को नहीं मालूम.

( ५ )



जो अपने ऊपर रखे गये एतबार को सब साबित करता है, जो अपने बचन का पालन करता है, वह सच्चा मुसलमान है। जो खुदा के जीवों पर रहस करता है, खुदा उस पर रहस करता है।

जिसके हाथ या जवान से इंसानों को जरा भी चोट नहीं पहुंचती, वह सच्चा मुसलमान है।

बुरा आलिस या विद्वान इंसानों में सब से बुरा और भला आलिस इंसानों में सब से अच्छा इंसान है।

जब इन्सान व्यभिचार या सिना करता है तो ईमान उसे छोड़ देता है।

जो व्यभिचार या चोरी करता है, जो शराब पीता है, या लूट पाट करता है, या राबन करता है वह मोमिन नहीं है। इसलिये ए इंसान सावधान रह ! सावधान रह !!

अपने आप पर क़ाबू पाने का जिहाद सब से बम्दा जिहाद है। मुसलमान या ग़ैर मुसलमान जिस किसी पर भी जुलम हो उसकी मदद के लिये दौड़ जाओ।

उपवास और संयम (जन्त) से मेरे अनुयाई ब्रह्मचारी बनेंगे।

औरत मर्द का आधा अंग है। जो अपने ज्ञान या इलम पर अमल करते हैं वह ही सच्चे आलिस हैं।

पाक (सती) औरत दुनिया की सबसे कीमती चीज है। अपनी औरत को नेक सलाह दो। अगर वह भली होगी तो तुम्हारी सलाह मानेगी। बुरे विचारों से बचो। अपनी शरीफ औरत को गुलाम की तरह मत माओ।

जो अपने ओर रुक के अस्तिदा को सिच थाबत करता है, जो अपने दोस्ती का पालन करता है, वह सच्चा मुसलमान है।

जो खुदा के जलूस पर रहम करता है, खुदा उस पर रहम करता है। जिस के हाथ या जवान से अस्तिदा को डरा नहीं जूत नहीं पहुँचती, वह सच्चा मुसलमान है।

बुरा जालिम या डरान अस्तिदा में सब से बुरा और भला जालिम जालिम सब से अच्छा अस्तिदा है।

जब अस्तिदा व्यभिचार या जना करता है तो अस्तिदा उसे छोड़ देता है।

जो व्यभिचार या चोरी करता है, जो शराब पीता है, या लूट पाट करता है, या खून करता है वह मोमिन नहीं है। इसलिये ए इंसान सावधान रह ! सावधान रह !!

अपने आप पर क़ाबू पाने का ज़ेहाद सब से बम्दा ज़ेहाद है। मुसलमान या ग़ैर मुसलमान जिस किसी पर भी ज़लम हो उस की मदद के लिये दूरो ज़ाओ।

अबो अस ओर सज़म (ज़िष्ट) से मियरे अनोयायि, ब्रह्मचारी बल्लो के :  
मूरत मूरत का आदहा अलक है।

जो अपने क़िदान या ज़लम पर ज़लम करते हैं वह ही सच्चे ज़लम हैं। ज़लम (सती) मूरत दन्हाकी सब से फ़ोस्ती ज़िष्ट है।

अबो मूरत को नेक ज़लम दो। अग़र वह बेहली होगी अतो त्सेहादी ज़लम माने की। बुरे ज़ाओरों से बचो। अबो शरीफ मूरत को ज़लम की ज़लम मत माओ।

(१९ जुलूसी सन १९११)





खिला १०

जनवरी सन् '५१

नम्बर १

नम्बर १

जनवरी सन् '५१

खिला १०

जात आदमी, प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली,  
'नया हिन्द' पढ़ेंगे घर घर लिये प्रेम की मोलियों.

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,  
'नया हिन्द' पढ़ेंगे घर घर लिये प्रेम की मोलियों.

## बापू की बानी

अपने लिये जो चीज चाहता है, वही चीज जब तक अपने भाई के लिये भी नहीं चाहता, तब तक कोई सच्चा सुसलमान नहीं कहा जा सकता.

जो अपने लिये या दूसरों के लिये काम नहीं करता, उसे खुदा की तरफ से कोई इनाम नहीं मिलता.

जो झूठ बोलता है, जो वचन देकर उसे तोड़ता है और अपने पर भरोसा करने वाले के साथ दगा करता है वह मेरा नहीं बल्कि मुझ से गहारी करने वाला है.

## बापू की बानी

अपने लिये जो चीज चाहता है, वही चीज जब तक अपने भाई के लिये भी नहीं चाहता, तब तक कोई सच्चा सुसलमान नहीं कहा जा सकता.

जो अपने लिये या दूसरों के लिये काम नहीं करता, उसे खुदा की तरफ से कोई इनाम नहीं मिलता.

जो झूठ बोलता है, जो वचन देकर उसे तोड़ता है और जो पर भरोसा करने वाले के साथ दगा करता है, वह मेरा नहीं बल्कि मुझ से गहारी करने वाला है.



## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

जनवरी १९५१

क्या किस से

सफा

१—बापू की बानी	...	...	१
२—बापू से—भगवानदीन	...	...	३
३—३० और ३१ जनवरी—भाई अब्दुल हलीम अन्सारी	...	...	१०
४—गांधी जी और अहिंसा—भाई ज्ञानचन्द	...	...	१५
५—अमन प्रसाद डालर देमों में—भाई विकार खलील	...	...	२०
६—समाजवाद - सोशलिज्म—भाई ओंकार नाथ शास्त्री	...	...	२४
७—पड़ोसी ( कहानी )—भाई 'सागर' बाबूपुरी	...	...	३१
८—दुनिया का हाल—भाई इशरत अलों सिद्दीकी	...	...	५१
९—बुछ कितने—मेरी दुनिया, जनता के तीन मिहान्त	...	...	६४
१०—बच्चों का दुनिया—रेल का खेल (कविता)—बहन सुंरया बानो, सपनों की दुनिया ( कहानी )—भाई नाग राज प्रसाद. एक घन्टे में मौत ( कहानी )—भाई सी. आर. नानप्पा, चुटकुले	...	...	७५
११—हमारी राय—श्री अरविन्द—सुन्दर लाल. सरदार हमें छोड़ चल दिये—भगवान दीन. ३८ पड़ी रेखा मिटाइये—भगवान दीन, सरकार और सरदार के फूल—भगवान दीन	...	...	८३

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

एडिटर—

दारा जलद, भगवान दीन, मظهر حسن, बशिर नाथ, सुन्दर लाल

जनवरी १९५१

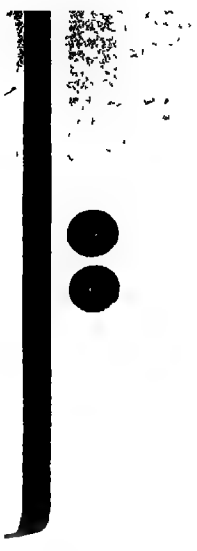
क्या किस से

صفحة

१—बापू की बानी	...	...	१
२—बापू से — भगवान दीन	...	...	३
३—२० और २१ जनवरी — भाई عبدالکلم انصاری	...	...	१०
४—गंधी जी और अहंसा — भाई गिजान जलद	...	...	१५
५—अमन प्रसाद डालर देमों में — भाई وقار خلیل	...	...	२०
६—समाजवाद - وشیزم — भाई اونکر ناٹھ شاستری	...	...	२४
७—पड़ोसी ( कहानी ) — भाई 'सागर' बाबूपुरी	...	...	३१
८—दुनिया का हाल — भाई عشرت علی صدیقی	...	...	५१
९—बुछ कितने — मेरी दुनिया, जनता के तीन मिहान्त	...	...	६४
१०—बच्चों की दुनिया — रेल का खेल ( कविता ) — बहन शूरया बानो, सपनों की दुनिया ( कहानी ) — भाई नाग राज प्रसाद. एक घन्टे में मौत ( कहानी ) — भाई सी. आर. नानप्पा, चुटकुले	...	...	७५
११—हमारी राय — श्री अरविन्द—सुन्दर लाल, सरदार हमें छोड़ चल दिये — भगवान दीन. ३८ पड़ी रेखा मिटाइये — भगवान दीन, सरकार और सरदार के फूल — भगवान दीन	...	...	८३

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल





## इस नम्बर के खास लेख —

बापू से — भगवान्‌दोन

समाजवाद - सोशलिज्म — आंकार नाथ शास्त्री

पड़ोसी ( कहानी ) — 'सागर' बालू पुरी

हमारा राय :—

श्री अरविन्द — सुन्दरलाल

सरदार हमें छोड़ चल दिये — भगवान्‌दोन

सरकार और सरदार के फूल — भगवान्‌दोन

## सं नंबर के खास लेख —

बापू से — बेकान्‌दोन

समाजवाद - सोशलिज्म — अन्कर नाथ शास्त्री

पड़ोसी ( गैहानी ) — 'सागर' बालू पुरी

हमारा राय :—

श्री अरविन्द — सुन्दरलाल

सरदार हमें छोड़ चल दिये — बेकान्‌दोन

सरकार और सरदार के फूल — बेकान्‌दोन

क्रीमत दस आना

क्रीमत दस आना



۲۴۲	...	( قانکر ) ہر چن لال ورن
۲۱۰	...	آواز یہ آتی ہے..... ( کہتا ) ( بھائی ) ہوش بلگرامی ہویم آرد سنگیت ہماری رائے —
۸۳	...	ہری آوند — سندور لال
۹۰	...	سردار ہمدن چہر چل دیئے — بھگوان دین
۹۲	...	اڑتیس بڑی دیکھا متائیئے — بھگوان دین
۹۸	...	سرکار و سردار کے بھول — بھگوان دین
۱۸۶	...	ترومہن صاحب کھمرا تھے — بھگوان دین
۱۹۲	...	کورنیا کا جھپٹے — بھگوان دین
۱۹۸	...	کٹے سیرلر کے سبھا پتی — بھگوان دین
۱۹۹	...	نہیال کے سدھار — بھگوان دین
۲۰۱	...	تھکر پڑیا — بھگوان دین
۲۷۲	...	چین اور ایگریسری کی سند — بھگوان دین
۲۷۹	...	ہلدو کوڈل — بھگوان دین
۲۸۲	...	امانت مہن خوات — بھگوان دین
۲۸۳	...	امریکہ جاپانی ملتحاتہ — بھگوان دین
۲۸۷	...	دوک تھامی پابندی ریل — بھگوان دین
۲۸۸	...	پلسیتی پر دوک آرد سرکار — بھگوان دین
۲۹۱	...	ایمانداری کا اعنام — بھگوان دین
۲۹۳	...	کیڑے اور انج کی کسی آرد سرکار — بھگوان دین
۲۹۵	...	دیکھیں کی ماں — پایا — سرپھں دام بھائی

۱	...	( مہاتما ) گاندھی پاپو کی باتی
۱۵	...	( بھائی ) کھان چند گاندھی جی اور اہلسا
۲۱۶	...	( بھائی ) محبوب رشوی دوس پر ایک سرپھی نظر
۲۳۸	...	( بھائی ) مصعود مکمل ترکی نے گاؤں ایک جھلک
۱۰۱	...	( قانکر ) مسعود حسین خاں گیت
۲۰۹	...	( بھائی ) منظر علی سوختہ اہلسانک انقلاب کا راستہ ( ۱ )
۵۱۵	...	“ “ “ “ ( ۲ )
۲۰۶	...	( بھائی ) نوری اسفند یادی سرتیج بہادر سبدر
۲۰	...	( بھائی ) وقار خلیل امن پوستاو قار دیصوں مہن
۲۵۷	...	( آچاریہ ) ونوبا بہارے نکاری لکھوات آرد آردو



۱۶۹	...	جنتا کے تھن سدھانت
۱۷۷	...	لیہن ( جھونی )
۱۷۹	...	مہاجن
۱۷۹	...	مورورہے
۱۸۵	...	ہسار گاندھی دپس کرو
۲۶۵	...	اچھی کہانیاں
۲۶۶	...	ہسار دیس
۲۶۶	...	کسان کی پکار
۲۶۶	...	میتھے بول
۲۶۸	...	پلیج تنقیر کی کہانیاں
۲۶۸	...	بھارت کی آواز
۲۶۸	...	بھارت کی سرکاری بھاشا ہندی
۲۶۹	...	ہچکچاں
۳۶۹	...	شری رام چرت مانس
۳۷۰	...	ساز لوزاں
۳۷۳	...	دوپا ولی
۳۷۱	...	نہا سامتھہ
۳۷۲	...	لٹی بھامی
۳۷۳	...	پڑانے خدا
۵۷۷	...	مشعل
۵۷۸	...	ہساری آدم جاتیاں
		( بھائی ) کشورال مشرو والا
۲۵۳	...	بھاشا کی کتھلائی
۳۵۷	...	شدہ بیوہار آندولن
۸۷۵	...	دیس کے لئے شراب پیو
۵۰۱	...	نہا ہلدی کی ضرورت — ایک اہل
		( بھائی ) 'سوامی' مارہروی
۳۹۹	...	دیتے ترے اندھارے ( کویتا )
		( بھائی ) سہد خواجہ
۲۲۹	...	حیدر آباد میں راتب بندی
		ش
		( بھائی ) شادی رام جہشی
۱۰۳	...	انسان ( کویتا )
		( بھائی ) شری ناتھ
۱۵۱	...	سورجہ کی انوکھی دین ( کہانی )
		ع
		( بھائی ) عبداللہ مصری
۵۳۳	...	بھارت کے مسلمان
		( بھائی ) عبدالعلیم انصاری
۱۰	...	۳۰ آور ۳۱ جنوری
۵۱۰	...	حکومت کی زندگی جلتا ہے
		( بھائی ) حافظ ( عبداللہ 'پکتا' )
۳۳۶	...	لیکھا کا نمبر ( کویتا )
		( بھائی ) عشرت علی صدیقی
۵۱	...	دنہا کا حال
۱۵۷	...	" "
		ک
		کچھ کتابیں —
		مولی دنہا



صفحہ	پ	صفحہ	بھائی ( عزیز قیس )
۳۱۳ ...	( بھائی ) پردیشی کلا کاروان گڑک	۳۶۴ ...	رامو ، راجو ، دیوں محمد ( کپیتا )
۳۹۹ ...		۳۶۵ ...	( بھائی ) وی . کے . پاتھک نقدوٹا کا روپ ( کہانی )
۱۶۹ ...		۳۶۸ ...	( بھائی ) وقار خلیل سانیکل کی کہانی
۳۵۱ ...		۵۸۰ ...	( بھائی ) شکشارتھی ، سہیاک 'للا' آؤ گھومیں ( کپیتا )
۱۶۹ ...		۵۸۱ ...	( کداری ) ملو بہن گلدھی بایو نے درزی کا کام کیا
۳۵۱ ...		۸۲ ...	چنگلے
۳۵۳ ...		۳۶۸ ...	”
۳۵۳ ...		۵۸۳ ...	”
۳۵۳ ...		۵۹۳ ...	( بھائی ) بہان چندو بھارت آؤ چڑن کا کلچری مہل
۳۵۳ ...		۱۴۴ ...	( بھائی ) بھگوان داس کلا سرکار کے سوچنے کی بات
۳۵۱ ...		۲ ...	بھگوان دیون
۳۵۱ ...		۱۰۶ ...	بایو سے
۳۵۱ ...		۲۰۴ ...	سانیکھ کار ( ادیب ) کا فیوض اھلکار
۱۲۲ ...		۲۳۱ ...	چوانو ( ۱ )
۳۳۸ ...		۳۶۳ ...	چوانو ( ۲ )
		۵۳۷ ...	خونی درانی ( کہانی ) ( بھائی ) بے لاگ
			ہلد و انا ، کا



۷۵ ...  
۷۶ ...  
۷۹ ...  
۱۷۰ ...  
۱۷۱ ..  
۱۷۳ ...  
۱۷۶ ....  
۲۵۷ ...  
۲۵۸ ...  
۲۹۱ ...  
۳۹۲ ....  
۳۹۳  
۳۹۵ ....

ریل ۵ دھڑل ( کویتا )  
( بھائی ) ناگراج پرساد  
سینوں کی دنیا ( کہانی )  
( بھائی ) سو . آر . نانہا  
ایک کھلتے مہن موت  
( بھائی ) مستحود  
سورج ( کویتا )  
( بھائی ) ظاہر الامین  
مہرا کلم  
( مہن ) احمدی . مقبول رضوی  
چالکی ( کہانی )  
( بھائی ) چندر ناتھ مالویہ ' واپس ' .  
اچھا ہو ( کویتا )  
بچوں کا شاعر  
ایلی بڑی مہن سے .....! ( کویتا )  
( بھائی ) سمیع مرزا جھڑا بادی  
انکوتی کی سزا ( کہانی )  
( بھائی ) مسلم بھائی  
آرام کی ضرورت  
( بھائی ) افتخار احمد ' اقبال ' .  
شادی کے گیت  
( بھائی ) شہنل سنگھ  
چھٹی کا دن ( کہانی )  
( مہن ) دردانہ انصاری  
ناک مچولی ( کہانی )

## ”نیا ہند“

جلد ۱۰

( جنوری سن ۱۹۵۱ سے جون سن ۱۹۵۱ )

## لیکھک اور اُنکے مضمون

آ

( سو ) آرتھر مور  
لال چہن  
( بھائی ) آشاد  
چہن آر امریکہ  
جنگ کی جڑیں

الف

( بھائی ) اوم پرکاش پالہوال  
الہ آباد سے کلہا کساری تک  
( بھائی ) ارنکار ناتھ شامدڑی  
مساج وک—سوشلزم

ب

بچوں کی دنیا—  
لیکھک دنیا پاتھ



## श

- (भाई) शादी राम जोशी  
इनसान (कविता)  
(भाई) शीनाथ  
स्वार्थ की अनोखी देन (कहानी)

## स

- (भाई) मस्तानन्द सरस्वती  
बटवारे के खंडहरों का फिर बनाव  
(भाई) 'सागर' बालूपुरी  
पड़ोसों (कहानी)  
(भाई) सुरेश रामभाई  
सन १९१०—एक नजर  
आहमदाबाद की कांग्रेस बैठक  
शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन

## सुन्दरलाल

- हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी  
कहानी पहलू  
'नया हिन्दू' की ज़रूरत—एक अपील  
(भाई) सैयद खन्नाजा  
हैदराबाद में रातिब बन्दी  
(भाई) 'स्वामी' मारहरवी  
दिये तरं अधियारे (कविता)

## ह

- (डाक्टर) हरचरन लाल वर्मान

संख्या	संख्या	(भाई) हाशिमलप्रभा प्रेम और संगीत हमारी राय—	संख्या
...	२१०	...	...
...	८३	श्री अरविन्द—सुन्दरलाल	...
...	६०	सरदार हमें छोड़ चल दिये—भगवानदीन	...
...	६२	अड़तीस पड़ी रेखा मिटाइये—भगवानदीन	...
...	६८	सरकार और सरदार के फूल—भगवानदीन	...
...	१८६	द्रुमैन साहब घबरा उठे—भगवानदीन	...
...	१६२	कोरिया का झमेला—भगवानदीन	...
...	१६८	कोटा सम्मेलन के समापति—भगवानदीन	...
...	१६६	नैपाल के सुधार—भगवानदीन	...
...	२०१	ठक्कर बापा—भगवानदीन	...
...	२७२	चीन और 'प्रेमसूरी' की सतह—भगवानदीन	...
...	२७६	हिन्दू कोड बिल—भगवानदीन	...
...	२८२	अमान में खयानत—भगवानदीन	...
...	२८४	अमरीका जापानी सुलहनामा—भगवानदीन	...
...	२८७	राक शामी पावन्दी बिल—भगवानदीन	...
...	२८८	बनस्पति पर रोक और सरकार—भगवानदीन	...
...	२६१	ईमानदारी का इनाम—भगवानदीन	...
...	...	कपड़े और अनाज की कमी और सरकार—	...
...	२६३	भगवानदीन	...
...	२६५	दुनियाँ की माँ—बापा—सुरेश रामभाई	...
...	३७५	दिल्ली पाम कानफरेन्स पर रोक—सुन्दरलाल	...
...	२६०	सत्याग्रह की गूँज—भगवानदीन	...
...	३६५	एक नया राश्ट्रीय छतरा—सुन्दरलाल	...
...	३६८	विनावा जो की सर्वोदय यात्रा—सुरेश रामभाई	...
...	४००	एक समस्या—भगवानदीन	...



शान्ति के गीत	...	अहंकार	...
( भाई ) शीतल सिंह	३६२	जवानो ( १ )	३३१
छुट्टी का दिन ( कहानी )	...	जवानो ( २ )	४२३
( बहन ) दुर्दाना अन्सारी	३६३	खूनो दुअत्री ( कहानी )	४३७
नाक मिचौली ( कहानी )	...	( भाई ) भान चन्द्र	४६३
( भाई ) अजीब 'कैसी'	४६५	भारत और चीन का कलचरो मेल	...
रामू, राजू, दीन मोहम्मद ( कविता )	४६४		
( भाई ) बी. के. पाठक	...	( डाक्टर ) मसऊद हुसैन ख़ाँ	१०१
निडरता का रूप ( कहानी )	४६५	गीत	...
( भाई ) विकार खलील	...	( भाई ) महमूद मक़ल	३३८
साइकिल की कहानी	४६८	तुरकी के गाँव की एक झलक	...
( भाई ) शिवाथी, सम्पादक 'लल्ला'	...	( भाई ) मुजीब रिज़वी	२१६
आओ घूमें ( कविता )	५८०	रूस पर एक सरसरी नज़र	...
( कुमारी ) मनु बहन गांधी	...	( भाई ) मंज़र अली सोखता	४०६
बापू ने दरजी का काम किया	५८१	अहिंसात्मक इनक़लाब का रास्ता ( १ )	५१५
चुटकुले	८२	" "	...
" "	३६८		
( भाई ) बेलाग	५८३	व	...
हिन्द की एक राजकाजी मांकी	...	( भाई ) विकार खलील	२०
	२३५	अमन प्रस्ताव डालर देशों में	...
	...	( आचार्य ) विनोबा भावे	२५७
	...	नागरी लिखावट और सरदू	३५८
	...	चरखा बनाम सर्व धर्मी प्रार्थना	...
	...	सर्वोदय समाज का सन्देश	५७३

## भ

( भाई ) भगवान दास केला  
सरकार के सोचने की बात



पञ्चतन्त्र का कहना है।

भारत की आवाज  
भारत की सरकारी भाषा हिन्दी  
हिचकियाँ  
श्री राम चरित मानस  
साखे लरजों  
रूपवली  
नया साहित्य  
नई बीमारी  
पुराने छुदा  
मशाल  
हमारी आदिम जातियाँ

5

(महात्मा) गांधी  
बापू की बानी

प

(भाई) वरन सरन नाब  
जब ब्याप्या नया जमाना (कविता)

15

(भाई) जवाहर लाल नेहरू  
राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप  
(हज़रत) 'जिगर' मुरादाबादी  
रोशन साया (कविता)

10

(भाई) तनवीर नक़वी  
बंजारा (कविता)

(भाई) नूरी असफन्दयारी  
सर तेज बहादुर सपल

5

(भाई) परदेशी  
कलाकार वानगोक

12

बच्चों की दुनिया—

(बहन) सुरैया बानी

## रेल का खेल (कविता)

(भाई) नागराज प्रमाद

मपनों की दुनिया (कहानी)

(भाई) सी. आर. नानप्या

एक घन्टे में मील

(भाई) महामुदः

सुरज (कविता)

(भाई) जाहिरूल अमीन

मेरा काम

( वहन ) अहमदी मक़बूल रिजवी

## आनाकी ( कहानी )

(भाई) चन्द्रनाथ मालवीय 'वारिश'

अच्छा हो (कविता)

## बच्चों का शायर

अपनी बड़ी बहन से...! (कविता)

(भाई) ममी मित्रां हेदराबादी

अंगूठी की सखा , कहानी )

...

...

...

232

...

...

...

2  
:

29

...

...

2

...

253

...

...



## “नया हिन्द”

जिल्द १०

( जनवरी सन १९५१ से जून सन १९५१ )

## लेखक और उनके जन्ममूल

अ

- ( भाई हाफिज ) अताउल्ला ‘यकता’  
यकता का नारा ( कविता )
- ( भाई ) अब्दुल हलीम अन्सारी  
३० और ३१ जनवरी  
हकूमत की खिन्दगी जनता से  
( भाई ) अब्दुल्ला मिस्त्री  
भारत के मुसलमान

आ

- ( भाई ) आशा राम  
चीन और अमरीका  
जंग की लड़ें
- ( सर ) आर्थर मूर  
हाल चीन

सफा

- ... ३३६
- ... १०
- ... ११०
- ... ५४३
- ... २४५
- ... ४३०
- ... ४४७

ओ

- ( भाई ) ओम प्रकाश पालीवाल  
इलाहाबाद से कन्या कुमारी तक
- ( भाई ) ओंकार नाथ शास्त्री  
समाजवाद—सोशलिज्म

क

- ( भाई ) किशोर लाल मशरूवाला  
भाशा की कठिनाई  
शुद्ध ब्याहार आन्दोलन  
देस के लिये शराब पियो  
कुछ किताबें—  
मेरी दुनिया  
जनता के तीन सिद्धान्त  
लेनिन ( जीवनी )  
महाजन  
पूर्वोदय  
हमारा गांधी बापस करो  
अच्छी कहानियाँ  
हमारा देस  
किसान की पुकार  
मीठे बोल

... ११  
... १५७

... २२२

... २४

... २५३

... ४५७

... ५७५

... ६४

... ६६

... १७७

... १७८

... १७९

... १८५

... २६५

... २६६

... २६६

... २६६



